

# पालि-हिन्दी शब्दकोश

(प्रथम भाग, द्वितीय खण्ड)  
(आ - ईहित)



नव नालन्दा महाविहार  
मानित विश्वविद्यालय  
नालन्दा (बिहार)

बुद्ध महापरिनिर्वाणब्द 2552

2009 ई.

# पालि-हिन्दी शब्दकोश



# पालि-हिन्दी शब्दकोश

[प्रथम भाग, द्वितीय खण्ड]

[आ – ईहित]

प्रधान सम्पादक

डॉ. रवीन्द्र पंथ

सम्पादक-मण्डल

डॉ. उमा शंकर व्यास

डॉ. मौलिचन्द प्रसाद



नव नालन्दा महाविहार

मानित विश्वविद्यालय

नालन्दा (बिहार)

बुद्धमहापरिनिर्वाणब्द 2552

2009 ई.



मूल्य : 800.00 रुपये

© 2009, नव नालन्दा महाविहार, मानित विश्वविद्यालय, नालन्दा (बिहार), भारत

इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है.

आइ.एस.बी.एन. 81-88242-16-0  
978-81-88242-16-1

प्रकाशक

निदेशक, नव नालन्दा महाविहार, मानित विश्वविद्यालय, नालन्दा 803111, बिहार (भारत)  
(संस्कृति विभाग, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान)

फोन : 06112-281672

फैक्स : 06112-281505

मुद्रक : पैरागोन इंटरप्राईजिज, नई दिल्ली, 110002, फोन 011-23280295

# Pāli-Hindī Dictionary

[ Vol. I, Part II ]

[ ā – īhita ]

*Chief Editor*

Ravindra Panth

*Board of Editors*

Dr. Uma Shankar Vyas

Dr. Maulichand Prasad



**Nava Nalanda Mahavihara**

Deemed University

Nalanda (Bihar)

2552 Mahāparinirvāṇa year of the Buddha

2009

Price : Rs. 800.00

© 2009, Nava Nalanda Mahavihara, Deemed University, Nalanda (Bihar), India

No part of this dictionary be reproduced without the prior permission of the publisher.

ISBN 81-88242-16-0

978-81-88242-16-1

Published by

The Director, Nava Nalanda Mahavihara, Deemed University, Nalanda 803111, Bihar, India

An autonomous institute under the Ministry of Culture, Government of India

Phone : 06112-281672

Fax : 06112-281505

Printed by Paragon Enterprises, New Delhi 110002, Phone 011-23280295

नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा  
के  
संस्थापक-निदेशक स्व. भिक्षु जगदीश काश्यप  
की  
स्मृति में  
उनके जन्म शताब्दी-समारोह के अवसर पर  
सादर समर्पित



*Dedicated to  
Most Ven. Late Bhikkhu Jagdish Kashyap  
the founder Director of  
Nava Nalanda Mahavihara,  
Nalanada  
on the Occasion of his  
Birth Centenary Celebration*





R.L. BHATIA  
Governor, Bihar



सत्यमेव जयते

RAJ BHAVAN  
PATNA-800 022

Date: February 12, 2009

## MESSAGE

I am extremely delighted to know that the second part of the first volume of *Pali-Hindi Dictionary* is going to be published by Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda.

I hope, this dictionary will be very useful for the students, researchers and teachers of Pali, Buddhist studies and others.

I wish success of the publication of Dictionary and believe that it will further enrich the lexicon of our national language Hindi.

(R.L. Bhatia)



## नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

### प्रस्तावना

पालि-हिन्दी शब्दकोश के प्रथम भाग, प्रथम खण्ड का औपचारिक रूप से विमोचन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा कुशीनगर में 2 मई, 2007 को भगवान् बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण महोत्सव के समापन-समारोह के अवसर पर किया गया था तथा इसे विद्वानों एवं जनसामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया जा चुका है। हमें विश्वास है कि हिन्दी भाषा में पालि-शब्दकोश के संकलन के प्रथम गम्भीर प्रयास के रूप में सुधीजनों तथा ज्ञान-पिपासु सामान्य जनों ने इसे अपनी स्वीकृति अवश्य प्रदान की होगी। अब प्रथम भाग का द्वितीय खण्ड विद्वज्जनों तथा बुद्धवचनमृत के पान में अभिरत जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

प्रस्तुत शब्दकोश पालि-शब्दों तथा उनके अर्थों की सुदीर्घ शृंखलामात्र नहीं है जैसा कि संभवतः इस के साधारण शीर्षक से ध्वनित होता है। वस्तुतः किसी भी भारतीय भाषा में पालि-शब्दकोश-संरचना के वर्तमान काल तक के इतिहास में पहली बार इसके साहित्य में किसी शब्दविशेष के वास्तविक प्रयोग के आधार पर उस शब्द के अर्थ का निर्धारण करने का प्रयास इस शब्दकोश में किया गया है। इसकी अट्ठकथाओं एवं टीकाओं के निर्वचनों के आलोक में अधिकतर शब्दों की व्युत्पत्ति तथा उन के एकाधिक अर्थों का निर्वचन करते हुए उस शब्द के प्रयोग के सन्दर्भ-स्थलों के अंकन के साथ-साथ मूल पालि-स्रोतों से अनेक उद्धरण देने के प्रयास भी किए गए हैं।

इस शब्दकोश में दिए गए पालि-उद्धरण मुख्य रूप से म्यां-मां के छद्दसंगायन संस्करण पर आधारित विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी (महाराष्ट्र) द्वारा प्रकाशित पालि-वाङ्मय के संस्करणों से यथावत् लिए गए हैं। अतः हम विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी के प्रति हार्दिक कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं। जिन यशस्वी अट्ठकथाकारों एवं टीकाकारों के निर्वचनों के आधार पर इस शब्दकोश में शब्दों का अर्थविनिश्चय किया जा सका है, उनके प्रति हम हार्दिक श्रद्धाभाव प्रकट करते हैं। आधुनिक शब्दकोशों के सुधी सम्पादकों तथा मरम्मरट्ट-बुद्धसासन-समिति द्वारा प्रकाशित "तिपिटक पालि-म्यामाभिधान" नामक शब्दकोश के सम्पादक भदन्त उ. पञ्जिस्सराभिवंस के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं। स्व. भदन्त जगदीश काश्यप एवं पूज्य सत्यनारायण गोयनका जी के प्रति विनम्र श्रद्धाभाव व्यक्त करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इन का प्रेरक व्यक्तित्व एवं धर्मचर्या ही इस शब्दकोश के प्रणयन का प्रमुख प्रेरणास्रोत है।

महाविहार की नियन्त्री परिषद् के अध्यक्ष-सह-कुलाधिपति बिहार के महामहिम राज्यपाल महोदय इस परियोजना की सफल परिणति में प्रेरणास्रोत हैं। हम उनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हैं। इस शब्दकोश की परियोजना को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन विभाग ने उदारता एवं तत्परता

## xiv

के साथ अनुदान स्वीकृत किया है। विभाग के सम्माननीय सन्त्री, सचिव एवं अन्य पदाधिकारियों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

इस शब्दकोश के प्रथम भाग के प्रथम खण्ड के सम्पादकमण्डल के सदस्य डा. सुकोमल चौधुरी तथा डा. ब्रज मोहन पाण्डेय 'नलिन' के प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। इस खण्ड के संकलन में भी हमें इन विद्वानों से प्रेरणा प्राप्त हुई है। स्व. श्यामदेव द्विवेदी ने इस खण्ड की पाण्डुलिपि के कुछ अंशों का संशोधन कर एवं विषयवस्तु को व्यवस्थित कर के हमें अनुगृहीत किया है। उनके प्रति हम सम्मान प्रकट करते हैं। नव नालन्दा महाविहार के रजिस्ट्रार डा. एस. पी. सिन्हा ने इस परियोजना के कार्यान्वयन में तत्परतापूर्वक अमूल्य सहयोग दिया है। उन्हें धन्यवाद दिये बिना हम अपना कर्तव्य पूरा नहीं समझेगे।

इस खण्ड की पाण्डुलिपि तैयार करने में शोधसहायक स्व. मुरारी मोहन कुमार सिन्हा, डा. चिरंजीव कुमार आर्य, डा. विश्वजीत प्रसाद सिंह, श्री सच्चिदानन्द सिंह, भिक्षु प्रज्ञापाल और श्री विनोदानन्द झा का योगदान है, जिसके लिए उन्हें साधुवाद देना अनिवार्य है। श्री राजेश कुमार जायसवाल ने पाण्डुलिपि का कम्प्यूटर टंकण पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग के साथ किया है। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। पैरागॉन इण्टरप्राइजेज, नई दिल्ली के संचालक भी स्वच्छ, सुन्दर मुद्रण एवं गेट-अप के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

स्खलन पर दुर्जन हंसते हैं पर सज्जन समाधान करते हैं। आशा है, सुधी पाठक इसकी न्यूनताओं को बतलाते हुए अपना बहुमूल्य सुझाव देकर हमें अनुगृहीत करेंगे ताकि आगामी खण्डों में उन सुझावों के अनुरूप अपेक्षित सुधार किया जा सके।

नव नालन्दा महाविहार  
(मानित विश्वविद्यालय), नालन्दा  
बुद्धाब्द - 2552  
ई. सन. दिसम्बर 2008

रवीन्द्र पंथ  
निदेशक और प्रधान सम्पादक  
एवं  
सम्पादकमण्डल

*Namo Tassa Bhagavato Arahato Sammāsambuddhassa*

## Preface

The first part of the first volume of Pali-Hindi Dictionary was released by the former President of India, H.E. Dr. A.P.J. Abdul Kalam on the occasion of the concluding function of the historic 2550<sup>th</sup> Mahaparinirvana celebration of Lord Buddha at Kusinagar on 2<sup>nd</sup> of May 2007. It is already in the market. Scholars of Pāli and Buddhism as well as the common readers welcomed it as the first serious attempt for the compilation of a Pāli-Hindi Dictionary. We feel immense pleasure in placing the second part of it before the world of scholars as well as those common readers who have deep interest in understanding the words of the Buddha.

This dictionary is not simply a long string of Pali words and their meanings, as its unassuming name might suggest. Attempt is made here for the first time in the history of Pali lexicography to extract the meaning of a word from its actual usage in literature. Thus it explains the grammatical formation of each word and its various shades of meaning, enumerates the place of its occurrence and provides copious citations from original Pali texts.

The Pali extracts quoted herein have been taken from Vipassana Visodhana Vinyasa, Igatpuri (Maharashtra) edition, based fully on the Chaṭṭha-Saṅgāyana recension of Pali Canonical books and their commentaries. We have taken these extracts without any alteration irrespective of the merits and demerits of these readings.

We express once again our sincere gratitude to the great exegetes of the Pāli scriptural texts who are the principal sources for the etymologies and meanings of words entered herein. We are also thankful to the compilers of modern Dictionaries as well as to the editor of the Tipiṭaka Pāli MYĀNMĀBHIDHĀNA. We express our sense of high respect to Late Ven. Jagadish Kaśyapa and honourable Sri Satyanārāin Goenkā who remain to be the source of inspiration for the compilation of this Dictionary.

His Excellency the Governor of Bihar, who is also the Chancellor of Mahavihara, has taken personal interest in the compilation of it. We are grateful to His Excellency.

The Minister, the Secretary of Culture & Tourism, Govt. of India, have liberally sanctioned grants to materialize this project. We are thankful to them.

We thank Prof. Sukomal Chaudhuri and Dr. Braj Mohan Pāndey 'Nalin', members of the editorial board of the Volume I, Part I of it. They inspired us for the compilation of this part also. Late Shyāmdēo Dwivedī corrected and rearranged the matter of a portion of it. We express high regards for him. Dr. S.P. Sinha, Registrar, Nava Nālandā Mahāvihāra has proffered valuable co-operation. We deem it fit to thank him.

The manuscript of this part was prepared by Late Murān Mohan Kumār Sinha, Dr. Chirañjeev Kumār Ārya, Dr. Vishwajit Prasad Singh, Bhikshu Prajñāpāl and Shri Vinodānanda Jhā. Thanks are

**xvi**

due to them. Shri Rājesh Kumār Jaiswal did the computer-typing of the complete manuscript for which he deserves our thanks. Paragon Enterprises, New Delhi too is worthy of thanks for its fine printing and attractive get-up.

Fools laugh at blundering but wise men set it right. We hope, learned scholars and vigilant readers will intimate us its shortcomings so that we may avail of their suggestions in the volumes to come.

Nava Nālandā Mahāvihāra,  
(Deemed University), Nalanda  
Buddha Era – 2552  
Christian Era – January, 2009

Dr. R. Panth  
Director and Chief Editor  
&  
Members of the Editorial Board

## शब्दकोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

1. शब्दों का क्रम विन्यसन पालि-व्याकरणों में उल्लिखित देवनागरी वर्णमाला के अकारादि वर्णों के क्रम के अनुरूप किया गया है।
2. ह्रस्व-स्वर-परवर्ती अनुस्वार-(निगृहीत) युक्त शब्द का विन्यसन ह्रस्व स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के तुरन्त बाद में किया गया है, जैसे कि अकारादि शब्दों का प्रारम्भ 'अ' शब्द के साथ किया गया है तथा इनके उपरान्त परवर्ती अनुस्वार-युक्त 'अंस' आदि का विन्यसन हुआ है।
3. संज्ञा-शब्दों का प्रातिपदिक-रूप रख कर उसके आगे पु. या स्त्री. या नपुं. लिखकर उसके विशिष्ट लिंग को दर्शाया गया है, जैसे कि अंस के तुरन्त बाद पु. लिखकर आगे उसके अंस, अंसेन एवं अंसे आदि रूप उल्लिखित किये गये हैं।
4. विशेषण-शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे त्रि. लिख दिया गया है, जैसे कि अंसव, अकक्कस, अक्खात, त्रि. आदि।
5. क्रियाविशेषण के रूप में व्यवहृत निपातों के आगे क्रि. वि. लिखा गया है तथा संज्ञा अथवा विशेषणों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषणों को उस संज्ञा अथवा विशेषण के ही अन्तर्गत दर्शाया गया है जैसे, 'पर' के अन्तर्गत परं या परेन अथवा 'समीप' के अन्तर्गत समीपं या समीपे को रखकर क्रि. वि. लिख दिया गया है।
6. किसी भी एक शब्द के अलग-अलग अर्थों को अरबिक क्रमांक देकर दर्शाया गया है तथा उद्धरणों के उल्लेख में भी अरबिक अंकों का ही प्रयोग किया गया है। जैसे — 'अधिवत्थ' में (पृ. 231) 1.क., 1.ख. इत्यादि और दी. नि. 2.76; म. नि. 2.251 इत्यादि।
7. उद्धरणों के लिए विषयना-विशोधन-विन्यास, इगतपुरी के वर्ष 1993 से 1998 तक मुद्रित संस्करण को ही प्रमुख आधार बनाया गया है क्योंकि इसी संस्करण में पालि-तिपिटक, अट्ठकथाएँ तथा अधिकतर मूलटीकाएँ एवं अनुटीकाएँ उपलब्ध हैं। इसी संस्करण के सन्दर्भ का अंकन सम्बद्ध उद्धरण के तुरन्त बाद किया गया है। जैसे — 'अधिवत्थं खो मे ... अम्बपालिया गणिकाय भत्तं', दी. नि. 2.76।
8. वि. वि. वि. इगतपुरी के संस्करण में सन्दर्भ उपलब्ध न रहने की स्थिति में केवल रोमन, नालन्दा अथवा अन्य उपलब्ध संस्करण के सन्दर्भ का ही अंकन उद्धरण के उपरान्त कर दिया गया है। उदाहरणार्थ महावंस, दीपवंस, वृळ्वंस, दाठावंस, गन्धवंस, सासनवंस, सद्धम्मोपायन, मोग्गल्लान-व्याकरण, कच्चायन-व्याकरण, सद्धनीति, अभिधानप्पदीपिका आदि ग्रन्थों के उद्धरण अन्य उपलब्ध संस्करणों से दिये गये हैं।
9. वि. वि. वि. एवं रोमन संस्करणों के बीच उपलब्ध पाठान्तर को संकेताक्षर पाठा. लिखकर सूचित किया गया है, जैसे कि 'अञ्जन' के अन्तर्गत 'अञ्जनारहो' का पाठा. अच्चनारहो।
10. गद्यभाग से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में सम्बद्ध संस्करणों की पृष्ठ संख्या दी गयी है परन्तु थेरगाथा, थेरीगाथा, धम्मपद, सुत्तनिपात, दीपवंस, महावंस, खुद्दकपाठ, उदान, वृळ्वंस, सद्धम्मोपायन, अभिधानप्पदीपिका, सद्धम्मसंगहो, अभिधम्मावतार, नामरूपपरिच्छेद, परमत्थ-विनिच्छय, सच्च्यसङ्केप, खुद्द सिक्खा, विनयविनिच्छय, उत्तरविनिच्छय, गन्धवंस, जिनचरित, जिनालंकार, अनागतवंस, तेलकटाहगाथा, थूपवंस, दाठावंस, वुत्तोदय, सुबोधालंकार, सच्च्यसंगहो जैसे गाथा-संग्रहों के उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में गाथा-



## xviii

संख्या का उल्लेख हुआ है। *सुतनिपात* के गद्यभाग के सन्दर्भों का सङ्केत पू. का उल्लेख कर तथा गाथाओं का संकेत गाथा-संख्या द्वारा किया गया है।

11. जातक की गाथाओं एवं अष्टकथा दोनों से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भ जातक-अष्टकथा की पृष्ठ-संख्या द्वारा सङ्केतित किये गये हैं।
12. विनय एवं अभिधम्म के विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों के निहितार्थ के स्पष्टीकरण हेतु यत्र-तत्र संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गयीं हैं।
13. पालि-शब्दों के संस्कृत-समानान्तर कोष्ठक [ ] के अन्तर्गत सङ्केतित कर दिये गये हैं।
14. प्रायः मूल-शब्दों की संक्षिप्त व्युत्पत्ति शब्द के उपरान्त ही दे दी गयी है।
15. मूल-शब्द से व्युत्पन्न उस शब्द के विविध प्रयोगों को प्रायः (क) उसी मूलशब्द के अन्तर्गत पड़ी रेखा — के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि भगवन्तु के भगवा, भगवता, भगवति आदि विभिन्न विभक्तियों के पदों को मूल प्रातिपदिक भगवन्तु के ही अन्तर्गत रखा गया है. (ख) समस्त पदों को मूल-शब्द के ही अन्तर्गत पड़ी रेखा — के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि बोधि के अन्तर्गत — रुक्ख, 'बोधिरुक्ख' का सूचक है।
16. विभिन्न धातुओं से निष्पन्न क्रियारूपों को सम्बद्ध धातु के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप के ही अन्तर्गत रखा गया है, जैसे कि गाम् (जाना) धातु से व्युत्पन्न विविध कालों, भावों एवं कृत्प्रत्ययान्त रूपों को 'गच्छति' शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। यत्र तत्र कुछ क्रियारूपों को स्वतन्त्र प्रविष्टि के अन्तर्गत भी रखा गया है।
17. उपसर्गयुक्त धातुओं के रूप पृथक् रूप से उपसर्ग के आदिवर्ण की क्रम-स्थिति के अनुरूप विन्यस्त किये गये हैं।
18. उद्धरणों को तिरछे (Italics) टंकण में प्रस्तुत किया गया है।
19. संकेतसूची 'क' के अन्तर्गत व्याकरण आदि के विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों के सङ्केताक्षर उल्लिखित है जबकि संकेत-सूची 'ख' में सन्दर्भ-ग्रन्थों के नामों के सङ्केतक प्रस्तुत किये गये हैं।
20. पालि-साहित्य में उल्लिखित उपाख्यानों, प्रयुक्त छन्दों, अलङ्कारों, विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों एवं भौगोलिक शब्दों आदि के सामान्य व्याख्यानों को शब्दकोष के अन्त में विभिन्न परिशिष्टों के रूप में जोड़ दिये जाने की योजना है।
21. शब्दकोश के शब्द-व्युत्पत्तिपरक संक्षिप्त निर्देशों में हिन्दी-भाषी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-व्याकरणों में गृहीत पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे कि बुद्धो के व्युत्पत्ति-परक निर्वचन में प्र. वि., ए. व. तथा गच्छति के लिए वर्त., प्र. पु., ए. व. लिखा गया है। पारिभाषिक शब्दों की संकेताक्षर-सूची में व्याकरण के इन पारिभाषिक शब्दों के पालि-समानान्तर भी दे दिए गए हैं।
22. यद्यपि आधुनिक हिन्दी-लेखन में परसवर्ण के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होने की प्रवृत्ति बनती है परन्तु शब्दकोश के हिन्दी-निर्वचनों में दोनों का प्रयोग हुआ है।
23. चन्द्रविन्दु के स्थान पर अनुस्वार का ही प्रयोग हुआ है।

## xix

## शब्दकोश में प्रयुक्त संकेतक-चिह्न

- = एक से अधिक सम्बद्ध उद्धरणों के बीच पूर्ण समानता का सूचक चिह्न.
- ≠ सम्बद्ध उद्धरणों के बीच आंशिक समानता का सूचक चिह्न.
- समास के पूर्वपद में व्याख्येय शब्द की स्थिति को सूचित करने वाला तथा प्रत्येक उद्धरण के पूर्व में दिया हुआ चिह्न.
- । सम्बद्ध शब्द की समास के उत्तरपद में विद्यमानता सूचक चिह्न.
- ... सम्बद्ध उद्धरण की अपरिसमाप्ति का संकेतक चिह्न.
- √ धातु का चिह्न.
- + योग-सूचक चिह्न.
- ( ) लघु-कोष्ठक का चिह्न., जिसमें सम्बद्ध शब्द की व्युत्पत्ति, समानान्तर अथवा पाठान्तर आदि अन्तर्निविष्ट किये गये हैं.
- [ ] बृहत्-कोष्ठक का चिह्न जिसमें व्याख्येय पालि-शब्द का समानान्तर संस्कृत अथवा बौद्धसंस्कृत शब्द अन्तर्निविष्ट कर प्रस्तुत किये गये हैं.
- विवेच्य शब्द के विवेचन के अन्त में प्रयुक्त पूर्ण-विराम-चिह्न.

## XX

## शब्दकोश में पालि-शब्दों के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला का स्वरूप

स्वरः— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

मात्राः— . , ि , िी , उ , ू , े , ो

व्यञ्जनः— क, ख, ग, घ, ङ

(अ-सहित) च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं(निगृहीत)

## प्रस्तुत कोश में प्रयुक्त वर्ण-क्रम

कच्चायन-व्याकरण में 8 स्वरों एवं 33 व्यञ्जनों सहित कुल 41 वर्णों का उल्लेख है। शब्दकोश में इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। यहां ल के बाद ळ का प्रयोग दिया गया है, जो पश्चिमी विद्वानों के क्रम का अनुकरण है। इस शब्दकोश के प्रथम खण्ड में इस क्रम-विन्यास का अनुसरण नहीं हो सका है। इस त्रुटि का परिमार्जन इस खण्ड में तथा आगे के खण्डों में किया जा रहा है।

## शब्दों का वर्णानुरूप क्रम-विन्यास निम्नलिखित रूप में किया गया है

अ, अं, आ, इ, इं, ई, उ, उं, ऊ, ए, ओ

## संकेत-सूची

## क. व्याकरण-संबंधी पारिभाषिक शब्द

संकेत सूची	पारिभाषिक-शब्द	पालि पारिभाषिक-शब्द	रोमन (अंग्रेजी) पारिभाषिक शब्द
अ.	अव्यय	अव्यय	Indeclinable
अक. क्रि.	अकर्मक क्रिया	अकम्मक क्रिया	Intransitive Verb
अद्य.	अद्यतन भूत	अज्जतनी विभक्ति	Aorist
अन्त.	अन्तरगत		Included
अनद्य.	अनद्यतन भूत	हीयत्तनी विभक्ति	Imperfect
अनि.	अनियमित		Irregular
अनु.	अनुज्ञा (लोट्)	पञ्चमी विभक्ति	Imperative mood
अप.	अपपाठ	अपपाठो	Corrupt reading
अव्ययी. स.	अव्ययीभाव समास	अव्ययीभाव-समासो	Adverbial compound
अ. मा.	अर्धमागधी	अर्धमागधी	Ardha-māgadhī
अलु. स.	अलुक् समास	अलुक्-समासो	Non-obsolete compound
आग.	आगम	आगमो	Augmentation
आत्मने.	आत्मनेपद	अत्तनोपद	Middle Conjugation
आलं. प्र.	आलंकारिक प्रयोग		Figurative use
आ. श.	आदत्त शब्द		Borrowed Word
इच्छा.	इच्छार्थक (सनन्त)	इच्छित	Desiderative
इत. द्व.	इतरेतर द्वन्द्व	इतरीतर द्वन्द्व	Individual Copulative or Aggregative Compound
उ. प.	उत्तर पद	उत्तर पद	Later Member (of a compound)
उ. पु.	उत्तम पुरुष	उत्तम-पुरिस	First Person
उप.	उपसर्ग	उपसर्ग	Prefix
उप. रा.	उपपद-समास	उपपद समास	
ऊ. द्रष्ट.	ऊपर द्रष्टव्य		See above
ए. व.	एक वचन	एकवचन	Singular Number
औप.	औपचारिक		Formal
क.	कर्ता	कर्तुकारक	Agent, Nominative case
क. ना.	कर्तृनाम	कर्तरि नाम	Agent noun
कर्तृ. वा.	कर्तृ वाच्य	कर्तुकारक	Active Voice
कर्म. वा.	कर्म वाच्य	कम्मकारक	Passive Voice
कर्म. स.	कर्मधारय समास	कम्मधारय-समास	Adjectival compound
कार.	कारक	कारक	Case
काला.	कालातिपत्ति	कालातिपत्ति	Conditional
क्रि. प.	क्रिया पद	आख्यातपद	Verbal formation
क्रि. ना.	क्रिया-नाम	आख्यातपद	Verbal noun
क्रि. रू.	क्रिया-रूप	क्रिया रूप	Verbal form
क्रि. वि.	क्रिया-विशेषण	क्रिया-विसेसन	Adverb
कृद.	कृदन्त	कितकनाम	Primary derivative
गा.	गाथा	गाथा	Verse
च. वि.	चतुर्थी विभक्ति	चतुर्थी विभक्ति	Dative
टि.	टिप्पणी		Foot Note
टी.	टीका	टीका	Commentary

## xxii

त.	तद्धित	तद्धित	Secondary Derivative
तदे.	तदेव	तदेव	<i>Ibid.</i> , As above
तत्पु.	तत्पुरुष	तत्पु.रिस	Determinative Compound
त. भ.	तद्भव		Derived from Sanskrit
त. स.	तत्सम		Similar to Sanskrit
तुल.	तुलनीय	तुलनीय	To be compared
तुल. वि.	तुलनात्मक विशेषण		Adjectives of Comparison
तु. वि.	तृतीया-विभक्ति	तृतीया-विभक्ति	Instrumental case
त्रि.	त्रिलिङ्ग	त्रिलिङ्गक	Adjective
द्व. स.	द्वन्द्व-समास	द्वन्द्व-समास	Couplative compound
			co-ordinate compound
दृष्ट.	दृष्टव्य	दृष्टव्य	See
द्वि. व.	द्विवचन		Dual number
द्वि. वि.	द्वितीया विभक्ति	द्वितीया-विभक्ति	Accusative
द्वि. स.	द्विगु-समास	द्विगु समास	Numerical compound
न. तत्पु.	नञ्-तत्पुरुष-समास	न-तत्पु.रिस	Negative
न. ब.	नञ्-बहुब्रीहि	न बहुब्रीहि	Negative adjectival compound
नपुं.	नपुंसक-लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	Neuter Gender
ना. धा.	नाम्धातु	नाम्धातु	Denominative
ना. प.	नामपद	नामपद	Substantive noun
ना. रू.	नामरूप	नामरूप	Declension
निपा.	निपात	निपात	Particle
निभि. कृ.	निमित्तार्थक कृदन्त	निमित्तार्थक कितक	Dative Infinitives
निधे.	निषेधार्थक	निषेधपरिदीपक	Negative
नी.	नीचे		Below
प.	पद	पद	Derived form
पर. प.	परस्मैपद	परस्मैपद	Active Form
प. वि.	पञ्चमी विभक्ति	पञ्चमी-विभक्ति	Ablative
परो.	परोक्ष	परोक्ष विभक्ति	Perfect Tense
पाठा.	पाठान्तर	पाठान्तर	Variant reading
पारि.	पारिभाषिक	पारिभाषिक	Technical
पुं.	पुंलिङ्ग	पुंलिङ्ग	Masculine Gender
पू. का. कृ.	पूर्व-कालिक कृदन्त	पुब्बकालिक कितक	Absolutive
पूर. सं.	पूरणार्थक संख्या	पूरणार्थक	Ordinals
पू. स.	पूर्व-सर्ग		Prefix
पृ.	पृष्ठ	पिष्ठ	Page
प्रति रू.	प्रतिरूपक	पटिरूपक	Counterpart
प्र. पुं.	प्रथम पुरुष	पठम पुरिस	Third Person
प्र. वि.	प्रथमा-विभक्ति	पठमा विभक्ति	Nominative
प्रा. भा. आ. भा.	प्राचीन भारतीय आर्य भाषा		Old Indo-Aryan Language
प्रा. स.	प्रादि समास		
प्रेर.	प्रेरणार्थक	कारित	Causative
ब. स.	बहुब्रीहि समास	बहुब्रीहि-समास	Relative or Attributive Compound
ब. व.	बहुवचन	अनेकवचन	Plural Number
बौ. सं.	बौद्ध संस्कृत		Buddhist Hybrid Sanskrit
भवि.	भविष्यत्काल	अनागता विभक्ति, भविस्सन्ती विभक्ति	Future Tense
भाय.	भाववाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	Abstract Noun

## xxiii

भा. वा.	भाववाच्य	भावकारक	Passive Voice (Intransitive Verbs)
भूत.	भूतकाल	अतीतकाल	Past Tense
भू. क. कृ.	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त		Past Passive Participle
भू. ग.	भ्यादिगण	भूयादिगण	First Conjugation
म. पु.	मध्यम पुरुष	मज्झिमपुरिस	Second Person
म. भा. आ. भा.	मध्य भारतीय आर्यभाषा		Middle Indo-Aryan Language
मा.	मात्रिका	मातिका	Matrix
मि. सा.	मिश्र सादृश्य		False analogy
ला. अ.	लाक्षणिक अर्थ		Secondary Meaning
ला. प्र.	लाक्षणिक प्रयोग		Secondary Usage
लि.	लिङ्ग	लिङ्ग	Gender
लु.	लुप्त	लुत्	Elided
व.	वचन	वचन	Number
वर्त.	वर्तमान-काल	पच्युप्पन्ना विभक्ति	Present Tense
वर्त. कृ.	वर्तमानकालिक कृदन्त	वर्तमानकालिक कर्तरि कितक	Present Participle (Active)
वि.	विभक्ति	विभक्ति	Case-affixes
वि. अ.	विशेष अर्थ		Special meaning
विधि.	विधिलिङ्ग	सत्तमी-विभक्ति	Optative or Potential mood
विप.	विपरीतार्थक		Antonym
वि. प्र.	विविध प्रयोग		Different Usages
विलो.	विलोम		Opposite
विशे.	विशेषण	विससन	Adjective
व्य. सं.	व्यक्तिवाचक संज्ञा		Personal Name
व्यु.	व्युत्पन्न / व्युत्पत्ति	निष्पन्न	Derived
व्यु. अ.	व्युत्पत्तिपरक अर्थ		Etymological meaning
व्यु. रू.	व्युत्पन्न रूप		Derived form
वै.	वैदिक	वेदिक	Vedic
श.	शब्दः	सदसो	Literally
शा. अ.	शाब्दिक अर्थ		Literal meaning
ष. वि.	षष्ठी विभक्ति	छद्मी-विभक्ति	Genitive Case
सं.	संस्कृत	सकृत	Sanskrit
सं. कृ.	संभाव्य कृदन्त		Potential Passive Participle
संपा.	संपादित	संसोधित	Edited
संबो.	संबोधन	आलपन	Vocative Case
संस्क.	संस्करण		Edition
सं. रू.	संक्षिप्त-रूप	सङ्क्षिप्त-रूप	Abbreviated Form
स.	समास	समास	Compound
सक. क्रि.	सकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	Transitive Verb
सत्त्व.	सत्त्वनाम		Substantive noun
सप्त. वि.	सप्तमी विभक्ति	सत्तमी विभक्ति	Locative case
समा.	समानान्तर		Parallel
समाना.	समानार्थक	तुल्यार्थक	Synonym
समा. द्व.	समाहार-द्वन्द्व समास	समाहारद्वन्द्व समास	Aggregative Co-ordinate compound
स. उ. प.	समास-उत्तर-पद	समासुत्तरपद	Later member of a compound
स. प.	समस्त-पद	समासपद	Compound-word
स. पू. प.	समास-पूर्वपद	समासपुष्पपद	First member of a compound
सर्व.	सर्वनाम	सब्बनाम	Pronoun

## xxiv

स्त्री. स्था.	स्त्रीलिङ्ग स्थानापन्न	इत्थिलिङ्ग	Feminine gender Substitute
------------------	---------------------------	------------	-------------------------------

## ख. सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

संकेत सूची	ग्रन्थों के नाम	प्रकाशन	सन्
अ. नि.	अङ्गुत्तर निकाय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अङ्ग.	अङ्गकथा		
अना. वं.	अनागत वंस	जें. पा. टे. सो., लन्दन	1886
अनु. टी.	अनुटीका		
अप.	अपदान	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अभि. अव.	अभिधम्मवतार	पालि परिषेण, पटपडगंज, दिल्ली	1987
		वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अभि. टी.	अभिनयटीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अभि. ध. वि.	अभिधम्मत्थविभाविनी	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अभि. ध. स.	अभिधम्मत्थसङ्गहो	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
अभि. प.	अभिधानपदीपिका	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि. प. सू.	अभिधानपदीपिका सूची	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि. पि.	अभिधम्म पिटक		
अमर.	अमरकोष	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2001
अर्थ. वि.	अर्थविनिश्चय सूत्र	काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना	1971
अव. श.	अवदानशतक	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1958
अष्टा.	अष्टाध्यायी	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, भाग 1, 2	1962
इतिवृ.	इतिवृत्तक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
उत्त. वि.	उत्तरविनिच्छय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
उदा.	उदान	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
उप. प.	उपरिपण्णास	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
एकवख.	एकवखरकोस	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
	(अभिधानपदीपिका)		
कङ्का. टी.	कङ्कावितरणी-टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
	(पातिमोक्ख-टीका)		
कथा.	कथावत्थु	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
क. व.	कच्चायन-वण्णना	जें. रा. ए. सो. ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1910-12
क. वु.	कच्चायन वृत्ति	जें. रा. ए. सो. ऑफ बंगाल, कलकत्ता, पृ. 1 से 339	1871
क. व्या.	कच्चायन-व्याकरण	तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी	1981
खु. पा.	खुदकपाठ	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
खु. सि.	खुदसिक्खा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
ग. वं.	गन्धवंस	पा. टे. सो., लन्दन	1896
चरिया.	चरियापिटक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
चूळनि.	चूळनिदेस	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
चूळव.	चूळवंग	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
चू. वं.	चूलवंस	पा. टे. सो., लन्दन	1980
छ. सं.	छद्दसंगायन	म्यां-मा	
जें. पा. टे. सो.	जैर्नल ऑफ पालि टेक्स्ट	लंदन	
	सोसाइटी		
जा.	जातक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
जि. च.	जिनचरित	जें. पा. टे. सो., लन्दन	1904-05



## XXV

जिना.	जिनालंकार	जॅ. पा. टे. सो., लन्दन	1894
ति. प.	तिकपट्टान	पा. टे. सो., लन्दन	1996
तेल.	तेलकटाहगाथा	जॅ. पा. टे. सो., लन्दन	1884
		महाबोधि सभा, सारनाथ	1948
थू. वं.	थूपवंस	पा. टे. सो., लन्दन	1935
		रा. ए. सो. ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1945
थेरगा.	थेरगाथा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
थेरीगा.	थेरीगाथा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
दा. वं.	दाठावंस	टरुम्बनर एण्ड कम्पनी, लुडगेट हिल, लन्दन	1874
दिव्या.	दिव्यावदान	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1959
दी. नि.	दीघनिकाय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
दी. वं.	दीपवंस	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
ध. प.	धम्मपद	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
ध. स.	धम्मसङ्गणि	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
धातु.	धातुकथा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
धा. पा.	धातुपाठ (पालि-महाव्याकरण)	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
धा. मं.	धातुमञ्जूसा (क. व्या.)	तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी	1962
ना. रू. प.	नामरूप परिच्छेद	पा. टे. सो., लन्दन	1913-14
		पाति परिवेण, पटपडगंज, दिल्ली	1988
ना.	नालन्दा-संस्करण	नालन्दा	1956
नेत्ति.	नेत्तिप्पकरण	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
प. प. अह.	पञ्चप्पकरण अट्टकथा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
प. म.	पज्जमधु	जॅ. पा. टे. सो., लन्दन	1887
पटि. म.	पटिसम्भिदामग्ग	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पट्टा.	पट्टान	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पर. वि.	परमत्थ विनिच्छय	पाति परिवेण, पटपडगंज, दिल्ली	1992
		वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
परि.	परिवार	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पा. इ. डि.	पालि-इंग्लिश डिक्शनरी	मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली	2001
पाचि.	पाचितिय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पाति.	पातिमोक्ख		
पारा.	पाराजिक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पु. टी.	पुराणटीका (अभि. अव.)	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पु. प.	पुग्गलपञ्जति	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पे. व.	पेतवत्थु	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
पेटको.	पेटकोपदेस	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
बाला.	बालावतार	बौद्धभारती, वाराणसी	1996
बु. वं.	बुद्धवंस	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
म. नि.	मज्झिमनिकाय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
म. प.	मज्झिमपण्णास (म. नि.)	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
म. बो. वं.	महाबोधिवंस	पा. टे. सो., लन्दन	1891
म. भा.	महाभाष्य, भाग 1-2	डेक्कन एज्युकेशन सोसाइटी, पुणे	1952
म. व.	महावस्तु	पेरिस,	1882-97
		मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1970
म. वं.	महावंस	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
म. वं. टी.	महावंसटीका	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1971
महाटी.	महाटीका (विसुद्धि.)	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
महानि.	महानिदेस	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998

## xxvi

महाभा.	महाभारत, भाग 1-19	भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पुणे	1958
महाव.	महावग्ग	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
भि. प.	मिलिन्दपञ्च	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
मू. टी.	मूलटीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
मू. प.	मूलपण्यास (म. नि.)	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
मू. सि.	मूलसिक्खा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
मो. प. प.	मोग्गल्लान-पञ्जिका- पदीप (पालि-महाव्याकरण)	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो. पु.	मोग्गल्लान-वुत्ति (पालि-महाव्याकरण)	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो. व्या.	मोग्गल्लान व्याकरण	विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर	1985
यम.	यमक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
रा. ए. सो. ब.	रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल	कोलकता	
रो.	रोमन	पालि टेक्स्ट सोसाइटी, लन्दन	
रु. सि.	रूपसिद्धि	कोलम्बो (सिं)	1915
रुपा. वि.	रूपारूपविभाग	पालि परिषेण पटपडगंज, दिल्ली	1987
ललित.	ललितविस्तर	मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा	1958
लीन. (दी. नि. टी.)	लीनत्थप्पकासना	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वज्जिर. टी.	वज्जिरबुद्धि टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वि. पि.	विनय पिटक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वि. व.	विमानवत्थु	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वि. वि. टी.	विमति-विनोदनी-टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वि. सङ्ग. अट्ठ.	विनय-सङ्गह-अट्ठकथा	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
विन. वि.	विनयविनिच्छय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
विन. वि. टी.	विनयविनिच्छय टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
विभ.	विभङ्ग	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वि. वि. वि.	विषयना-विशोधन विन्यास	इगतपुरी	
विसुद्धि.	विसुद्धिमग्गो	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
वुत्तो.	वुत्तोदय (रिसर्च वोल्यूम भाग 1)	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1960
स. नि.	संयुत्तनिकाय	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
सच्च.	सच्चसङ्केप	जें. पा. टे. सो., लन्दन, पृ. 1-25 तक	1917-19
सद्.	सद्दनीति	ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लन्दन	1928
सद्धम्म.	सद्धम्मसङ्गहो	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1981
सद्धम्मो.	सद्धम्मोपायन	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	1983
सद्धर्म.	सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्र	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1960
सा. वं.	सासनवंस	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1981
सा. सं.	सारसङ्गहो	कोलम्बो (सिं)	1914
सारत्थ. टी.	सारत्थदीपनी-टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
सार. प. टी.	सारत्थपकासनी-टीका	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
सि.	सिआमी संस्करण		
सिं.	सिंहली संस्करण		
सु. नि.	सुत्तनिपात	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
सु. पि.	सुत्तपिटक	वि. वि. वि., इगतपुरी	1998
सुबोधा.	सुबोधाालङ्कार	लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली	1973
हत्थ. व. (सिंहली)	हत्थयनागल्लविहारवंस	सिलोन (श्रीलङ्का)	1900

आ

1

आकङ्क्षति

आ<sup>1</sup> वर्णमाला का एक स्वर, कण्ठस्थानीय 'अ' स्वर का दीर्घ मात्रा वाला रूप, व्याकरण में 'सुस्पष्ट' पहचान कराने की दृष्टि से 'आकार' के रूप में भी प्रयुक्त - आ ई ऊ ए ओ इति दीर्घा नाम, क. व्या. 5.

आ<sup>2</sup> अ., पदपूर्णार्थक निपा., विशिष्ट अर्थ का बोधक न होकर वचनों के अलङ्करणमात्र के लिए प्रयुक्त - तत्थ यदानमञ्जतीति यं आ नं मञ्जतीति पदच्छेदो, आ ति निपातमत्तं, सद्. 3.891.

आ<sup>3</sup> अ., उप. [आ], क्रि. प. अथवा ना. प. से पूर्व में अनेक अर्थों को सूचित करने वाला एक उप., प्रमुख सङ्केतित अर्थ - आसदोभिमुखीभावे उद्धकम्मे तथेव च, मरियादाभिविधिसु परिस्सजन पत्तिसु, इच्छायं आदिकम्मे च निवासे गहणे पि च, अह्नेन च समीपादिअत्थेसु पि पवत्तति, सद्. 3.880; निवासाहानगहणकिच्छेसत्थनिवत्तिसु, अप्पसादासि-सरणपतिह्माविमहादिसु, अभि. प. 1181; क. अभिमुखीभाव, किसी की ओर उन्मुख होना, उपस्थिति - किं नु खो महासमणो नागच्छतीति? महाव. 33; दहरस्स युविनो चापि आगमो च न विज्जति, जा. अद्. 4.95; ख. ऊर्ध्वकर्म, ऊपर की ओर - तुरिता पब्बतमारुहं, सु. नि. 1020; आरुहन्तो पुनप्पुनं, सद्दम्मो. 188; तस्स किर महापथविया एकयोजनतिगावुतप्पमाणं नभं पूरेत्वा आरोहनकालो ..., जा. अद्. 1.79-80; ग. मर्यादा, पृथक्करणीय या उपसंहारक सीमा, तक, जहाँ तक है वहाँ तक - तैसु येन केनचि परिचित्तो आकण्ठप्पमाणं भुज्जित्वा टितो, अ. नि. अद्. 3.71; आ पब्बता खेतं, सद्. 3.703; जब तक कि - तत्थ अनिप्फन्नताति महाराज, याव अत्तो इच्छितं न निप्फज्जति, ताव पण्डितो अधिवासेय्य, जा. अद्. 6.211; घ. अभिविधि, आरम्भिक सीमा, 'से', 'को लेकर', 'में से', 'से दूर' (प. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ वियोजक निपा. के रूप में) - आकुमारं यसो कच्चायनस्स, सद्. 3.880; आ सहस्सेहि पञ्चहीति, जा. अद्. 7.37; आपुत्तपुत्तेहि पमोदथहोति, जा. अद्. 4.146; आपुत्तपुत्तेहीति याव पुत्तानमि पुत्तेहि पमोदथ ..., तदे.; ङ. अधिकता, पूर्णता ङ.1. लिपटाव की पूर्णता - एतं आलिङ्गन्तो विय गाळहं पीळेतवा ..., जा. अद्. 1.271; ङ.2. प्राप्ति की पूर्णता, पूरी तरह - अहञ्चमि आपत्तिं आपन्नो, महाव. 219; ङ.3. इच्छा की पूर्णता - यं सङ्गो आकङ्क्षति विहारं वा ..., महाव. 134; ङ. 4. प्रारम्भ या आदिकर्म की पूर्णता - सो वीरियं आरभति अप्पत्तस्स पत्तिया ..., अ. नि. 3(1).154; ङ.5. आमन्त्रण

या अभिमुखीभाव की पूर्णता - याव आमन्तये जाती, मिते च सुहदज्जने, जा. अद्. 7.157; ङ.6. वास की पूर्णता - सम्बाधो घरावासो रजोपथो, दी. नि. 1.55; ङ.7. निकटता या समीपता की पूर्णता - बोधिसत्तो नातिदूरे नाच्चासन्ने गच्छन्तो ..., जा. अद्. 2.127; ङ.8. कुछ-कुछ, थोड़ा-थोड़ा - भुसो किरियं धारेतीति आधारो, सद्. 3.709; आकळारो, मो. व्या. 3.13; निवासाहानगहण किच्छेसत्थनिवत्तिसु, अभि. प. 1181.

आकङ्क्ष पु., [आकांक्ष], आकांक्षा करने वाला, प्रयास कर रहा, उत्सुक - ... इमे वत्तारो धम्मे आकङ्क्षन्ते नत्थञ्जं किञ्चि कातब्बं, अ. नि. टी. 3.318; पाठा. आकङ्क्षन्ते, आकङ्क्षकाकङ्क्ष कङ्गागङ्गाखागहक, जिना. 101; - सुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 3(2).109 110; - वग पु., अ. नि. के दसक निपात का आठवां वर्ग, अ. नि. 3(2).109-125; अ. नि. टी. 3.315-321.

आकङ्क्षति आ + ङकङ्क्ष का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकांक्षति/आकांक्षते], लालसा करता है, चाहता है, कामना करता है, अपेक्षा करता है, जरूरत महसूस करता है - यं सङ्गो आकङ्क्षति विहारं वा अङ्गयोगं वा पासादं वा हम्मियं वा गुहं वा, महाव. 134-35; - ते उपरिवत्, आत्तने. - सीसन्हातो चयं पोसो, पुष्पमाकङ्क्षते यदि, अप. 1.408; - सि म. पु., ए. व. - सचे आकङ्क्षसि, निसीदाति, म. नि. 2.372; तस्सत्थो - "पुच्छ यदि आकङ्क्षसि, न मे पञ्चविस्सज्जने भारो अत्थि", म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).171; - ह्मामि उ. पु., ए. व. - अज्जतिथियपुब्बो इमस्मिं धम्मविनये आकङ्क्षामि उपसम्पदं, महाव. 88; - न्ति प्र. पु., ब. व. - बुद्धा पन ... हेडा वा उपरि वा यं यं ठानं आकङ्क्षन्ति, तं सब्बं सरन्तियेव, पारा. अद्. 1.120; - थ म. पु., ब. व. - सचे आकङ्क्षथ, भुज्जथ, नो चे तुम्हे भुज्जिस्सथ, म. नि. 1.17; सचे आकङ्क्षथाति यदि इच्छथ, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).101; - कङ्क्षं वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - धम्मविज्जाणमाकङ्क्षं, तं भजेथ तथाविधं, थेरगा. 1033; - ङन्तेन तृ. वि., ए. व. - इमे वत्तारो धम्मे आकङ्क्षन्ते नत्थञ्जं किञ्चि कातब्बं, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).167; - न्ता पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ब. व. - गिहीनं उपनामेन्ति, आकङ्क्षन्ता बहुत्तरं, थेरगा. 937; - मानो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - आकङ्क्षमानोति इच्छमानो, पारा. 391; - नेन तृ. वि., ए. व. - आकङ्क्षमानेन भिक्खुना पटिग्गहेतब्बानि, पारा. 352; - स्स ष. वि., ए.

## आकङ्क्षपटिबद्ध

2

## आकङ्क्षति

व. - इति आकङ्क्षमानस्त, सद्धम्मस्स चिरद्विदि, उदा. अट्ट. 2; - नानं ष. वि., ब. व. - पुञ्ञं आकङ्क्षमानानं, सङ्गो वे यजतं मुखन्ति, सु. नि. 574; - द्वेय्य विधि., प्र. पु. ए. व. - सचे आकङ्क्षेय्य भुञ्जेय्य, नो चे आकङ्क्षेय्य अप्पहरिते वा छड्ढेय्य, महाव. 209; आकङ्क्षेय्य चेति इदं कस्मा आरद्धं? सीलानिसंसदस्सनत्थं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).165; - द्विस्सति भवि., प्र. पु. ए. व. - यं वितक्कं आकङ्क्षिस्सति तं वितक्कं वितक्केस्सति, म. नि. 1.172; - स्ससि उपरिवत्, म. पु. ए. व. - सौ त्वं, वच्छ, यावदेव आकङ्क्षिस्ससि - ..., म. नि. 2.172; - द्वित त्रि., भू. क. कृ. [आकांक्षित], इच्छित, अभीष्ट, चाहा गया - यं ... इच्छितं, यं आकङ्क्षितं, यं अधिप्पेतं, यं अभिपत्थितं ..., दी. नि. 1.105.

आकङ्क्षपटिबद्ध त्रि., [आकांक्षाप्रतिबद्ध], शा. अ. आकांक्षा या कामना के साथ जुड़ा हुआ, इच्छा या कामना का विषयीभूत, ला. अ. जवनचित्त द्वारा जाना गया, आलम्बन के प्रति रुचि उत्पन्न होने के अनन्तर चित्त द्वारा गृहीत - द्वा पु. प्र. बि. व. व. - तस्स मे ते धम्मा ... आकङ्क्षपटिबद्धा ..., पटि. म. 166; आकङ्क्षपटिबद्धाति रुचिआयत्ता, पटि. म. अट्ट. 2.74; सब्बे धम्मा ... आकङ्क्षपटिबद्धा ..., पटि. म. 368; आकङ्क्षपटिबद्धाति रुचिआयत्ता, आवज्जनानन्तरं जवनआणेन जानातीति अत्थो, पटि. म. अट्ट. 2.237.

आकङ्क्षना स्त्री. [आकांक्षा], इच्छा, कामना - सति अज्झत्तविकखेपा, कङ्क्षना बहिद्धाविकखेपपत्थना, पटि. म. 158; अज्झत्तं विकखेपो अज्झत्तविकखेपो, तस्स आकङ्क्षना अज्झत्तविकखेपाकङ्क्षना, पटि. म. अट्ट. 2.67.

आकङ्क्षा स्त्री. [आकांक्षा], इच्छा, रुचि - आकङ्क्षा रुचि वुत्ता, अभि. प. 163.

आकङ्क्षितपमाणिक त्रि., व. स. [आकांक्षितप्रामाणिक], इच्छित प्रमाण वाला, मनचाही लम्बाई चौड़ाई वाला - पच्चत्थरणमुखघोळा, आकङ्क्षितपमाणिका, खु. सि. 42; तेन वुत्तं आकङ्क्षितपमाणिकाति इच्छितपमाणिकाति अत्थो, खु. सि. पु. टी. 92.

आकङ्क्षिय त्रि., [आकांक्ष्य], आकांक्षा करने योग्य, चाह करने योग्य - इमिना दुतियेन आकङ्क्षियेन धम्मेन समन्नागतो होति, पेटको. 255.

आकङ्क्षियन्ति आ +क्कङ्क्ष से व्यु., आकंक्षा के ना. धा. का वर्त., प्र. पु. ब. व., आकांक्षा या इच्छा, जैसा करते हैं - ये केचि अरहन्ता इन्द्रियभावनं आकङ्क्षियन्ति, पेटको. 295.

आकङ्क्षी त्रि. [आकांक्षी], कामना या आकांक्षा करने वाला - तस्मा सम्पदमाकङ्क्षी, सम्पन्नत्थूध पुग्गलो, अ. नि. 3(1).71; इमिना दुतियेन आकङ्क्षियेन धम्मेन समन्नागतो होति, पेटको. 255.

आकङ्क्षेय्यसुत्त नपु., म. नि. का छाठा सुत्त, म. नि. 1.41-45; - वण्णना स्त्री., इस नाम वाले सुत्त की अट्टकथा या व्याख्या, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).163-174.

आकङ्क्षति आ +क्कङ्क्ष का वर्त., प्र. पु. ए. व. [आकर्षति], शा. अ.1. खींचता है या घसीटता है, पकड़ता है या बलपूर्वक ग्रहण करता है - येन येनत्थिका होति, तं तं आकङ्क्षतियेवाति अत्थो, जा. अट्ट. 1.399; आमसति ... आकङ्क्षति पतिकङ्क्षति ..., पारा. 175; - द्वित्वा पू. का. कृ. - तं गीवायं उंसमानं हनुकट्टिकेन आकङ्क्षित्वा ..., जा. अट्ट. 1.256; - द्वितब्बे त्रि., सं. कृ., सप्त. वि., ए. व. - यथा हि सत्तहि युगेहि आकङ्क्षितब्बे सकटे ..., ध. स. अट्ट. 128; ला. अ.1. सम्पादित या उत्पन्न करता है, खींच कर ले आता है - न्ति वर्त., प्र. पु. ब. व. - ... ठप्पेत्वा उद्धच्चसहगतं सेसानि एकादसेव पटिसन्धिं आकङ्क्षन्ति ..., ध. स. अट्ट. 300; - ति वर्त., प्र. पु. ए. व. - यो च महाराज, वातो यच्च पित्तं ... सकं सकं वेदनं आकङ्क्षति, मि. प. 138; - द्वेय्य विधि., प्र. पु. ए. व. - आकङ्क्षेय्याति अत्तनो अभिमुखं कङ्क्षेय्य, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).169; शा. अ.2. अपनी ओर खींचता है - न्ति वर्त., प्र. पु. ब. व. - तथा हि गावो नवबुद्धे देवे भूमियं घायित्वा घायित्वा आकासाभिमुखा हुत्वा वातं आकङ्क्षन्ति, ध. स. अट्ट. 348; - न्तो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - तदा हि भगवा आकासगङ्गां ओतारेन्तो विय पथवोजं आकङ्क्षन्तो विय ..., म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.19; आवड्ढतीति ... अत्तनो सरीरं इतो चित्तो आकङ्क्षन्तो आवड्ढति, उदा. अट्ट. 93; ला. अ. 2. चूसता है, निचोड़ लेता है, आत्मसात् कर लेता है - द्वित्वा पू. का. कृ. - तेपि बोधिसत्तस्स नब्बेन आकङ्क्षित्वा पानीयं पिवनकाले सब्बे तीरे निसिन्नाव पिविसु, जा. अट्ट. 1.173; शा. अ. 3. बलपूर्वक या जबर्दस्ती घसीटता है, बलपूर्वक अपनी ओर खींचता है - ङ्खन्ते वर्त. कृ., पु., द्वि. वि. ब. व. - तंसदिसे पन द्वे निरयपाले संसवके नाम गूथनिरये पक्खिपितुं आकङ्क्षन्ते पस्सित्वा ..., वि. व. अट्ट. 190; ... मद्दिं जटासु गहेत्वा आकङ्क्षित्वा भूमियं उत्तानकं पातेत्वा ..., जा. अट्ट. 7.309; शा. अ. 4. खींचकर बाहर निकालता है, निचोड़ता है - ङ्हाहि अनु., म. पु. ए. व.

## आकङ्क्षित

3

## आकङ्क्षित

— 'तया ददुहानतो त्वञ्जेव मुखेन विसं आकङ्क्षाही'ति, जा. अ. 1.298; — **ङितुं** निमि. कृ. — बाळिसिको तं आकङ्क्षितुं असक्कोन्तो विन्तेसि, जा. अ. 1.460; **ला. अ. 3.** तात्पर्य या सारार्थ निकालता है, निष्कर्ष निकालता है — **ङित्वा** पू. का. कृ. — पञ्चहि निकायेहि अत्थञ्च कारणञ्च आकङ्क्षित्वा ..., ध. प. अ. 1.302; **शा. अ. 5.** हटा देता है, दूर कर देता है — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — अवकस्सन्तीति परिसं आकङ्क्षन्ति विजटेन्ति एकमन्तं उस्सारेन्ति, अ. नि. अ. 3.308; — **ङेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. — तासं चे, आवुसो, नळकलापीनं एकं आकङ्क्षेय्य, एका पपतेय्य, स. नि. 1(2).100; **ला. अ. 4.** आकर्षित या मोहित कर लेता है, प्रभाव डाल देता है, मन को जीत लेता है — **ङिस्सन्ति** भवि., प्र. पु., ब. व. — ... अहं येनिच्छिक्कं यदिच्छक्कं यावदिच्छक्कं आकङ्क्षिस्सन्ति परिकङ्क्षिस्सन्ति, पाचि. 191; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — ... अतनो रूपसिरिया लोकस्स लोचनानि आकङ्क्षन्तो ..., जा. अ. 2.228; **ला. अ. 5.** (धनुष को) झुकाता है, तानता है या खींचता है — **ङि** अद्य., प्र. पु., ए. व. — सो पटिच्छन्ने उत्वा धनुं आरोपेत्वा खुरप्पं सन्नहित्वा आकङ्क्षि, जा. अ. 4.299; — **ङित्वा** पू. का. कृ. — ... धनुं आरोपेत्वा आकङ्क्षित्वा तज्जेसि, जा. अ. 7.290; **ला. अ. 6.** लकीर खींचता है — **मानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — एवं इमेहि कारणेहि महामग्गे सोळस लेखा आकङ्क्षमानो निसीदि, जा. अ. 1.87, पाठा. कङ्क्षमानो; **ला. अ. 7.** ऐंट देता है, निचोड़ता है (वाद में) उखाड़ देता है — **ङित्वान** पू. का. कृ. — आकङ्क्षित्वान इसयो, योदयिस्सन्ति तं सदा, अप. 1.65; — **ङिस्सामि** भवि., उ. पु., ए. व. — एवमेवाहं समणं गीतमं वादेन वादं आकङ्क्षिस्सामि ..., म. नि. 1.294.

**आकङ्क्षन** नपुं., आ +क्ङ्क्ष से व्यु., क्रि. ना. [आकर्षण], अपनी ओर बलपूर्वक खींचना, बल के साथ घसीटना (धनुष को) खींचना या झुकाना — **कङ्क्ष** आकङ्क्षने, स. 2.357; **आकङ्क्षनङ्गेन** सीधसोता सरिता वियाति सरिता, ध. स. अ. 390; 'अयं अतिघावती'ति आकङ्क्षनं वा नत्थि, स. नि. अ. 3.305; — **समत्थता** स्त्री., भाव. [आकर्षण-समर्थता], अपनी ओर खींच लेने की क्षमता — **विरुद्धेति** कम्म जवापेत्ता पटिसन्धिआकङ्क्षनसमत्थताय निब्बत्तमूले जाते, स. नि. अ. 2.62.

**आकङ्क्षनक** त्रि., [आकर्षणक], खींचकर पास ले आने वाला, घसीट कर ले आने वाला, बलपूर्वक खींचने वाला

— कं पु., द्वि. वि., ए. व. — ओहारिनन्ति चतूसु अपायेसु आकङ्क्षनकं, स. नि. अ. 1.130.

**आकङ्क्षनपरिकङ्क्षन** नपुं., द्व. स. [आकर्षण-परिकर्षण], खींचातानी, विभेद, फूट — **सप्पपोतको** विय च आकङ्क्षनपरिकङ्क्षनओधूनननिद्धननादिना उपक्कमेन अधिमत्तं दुक्खमनुभवति, विसुद्धि. 2.127; **अभिमुखं कङ्क्षनं आकङ्क्षनं**, परितो समन्ततो कङ्क्षनं परिकङ्क्षनं, विसुद्धि. महाटी. 2.186, तस्स माता लभति आकङ्क्षनपरिकङ्क्षनं गाहं सामिनो उपनयनं कातुंन्ति, मि. प. 153.

**आकङ्क्षनभाव** पु., [आकर्षणभाव], अपनी ओर खींचकर ले आने की दशा, प्रबल शक्ति — वं द्वि. वि., ए. व. — ... कतकम्मस्स आकङ्क्षनभावं जत्वा न अपगच्छि, ध. प. अ. 2.38.

**आकङ्क्षनयन्त** नपुं., तत्पु. स. [आकर्षणयन्त्र], (जल आदि को) खींच कर ले आने वाला उपकरण या यन्त्र — **करकटको** वुच्चति गोणे वा योजेत्वा हत्थेहि वा गहेत्वा दीघवरतादीहि आकङ्क्षनयन्तं, चूळव. अ. 52.

**आकङ्क्षनविकङ्क्षन** नपुं., द्व. स. [आकर्षणविकर्षण], अपनी ओर खींचना और चारों ओर ढकेल देना, खींचातानी, खींचाखींची — **सारम्भा** जायतेति अहं त्वन्ति आकङ्क्षनविकङ्क्षनं करेन्तस्स ... कोधो जायति, जा. अ. 4.25; **इमप्पि ... यत्थ ... वधबन्धनआकङ्क्षनविकङ्क्षनादीहि** महादुक्खं अनुभवमानं परसतियेव, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).351.

**आकङ्क्षना** स्त्री., [आकर्षण, नपुं.], खींच कर ले आना — **आकङ्क्षना** नाम आविञ्छना, पारा. 174.

**आकङ्क्षापेति** आ +क्ङ्क्ष के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकर्षयति], खिंचवाता है, अन्दर से बाहर निकलवाता है — **मि** उ. पु., ए. व. — **दङ्गसप्पं** आवाहेत्वा ददुहानतो तेनेव विसं आकङ्क्षापेमी'ति, जा. अ. 1.297; — **हि** अनु., म. पु., ए. व. — **सप्पं** आवाहेत्वा विसं आकङ्क्षापेही'ति, जा. अ. 1.297-98.

**आकङ्क्षित** त्रि., आ +क्ङ्क्ष का भू. क. कृ. [आकृष्ट], **शा. अ. 1.** वह, जिसे खींचकर लाया गया है — **मातुञ्च** अङ्गस्मिमहं निसिन्नो, आकङ्क्षितो सहसा तेहि देव, जा. अ. 4.408; **पण्डुरज्जं** गहेत्वान ततो आकङ्क्षितेहि पि, चू. वं. 78.76; **शा. अ. 2.** वह (धनुष), जिसे खींचा गया है या झुकाया गया है — **आकङ्क्षजियस्स** धनुदण्डस्स विय ... अन्तोवङ्गपादता, दी. नि. टी. (लीन.) 3.98; **विकासिताति** आकङ्क्षिता, जा. अ. 7.48; **ला. अ.** वह, जिसे नष्ट कर दिया गया है, अभिभूत, पराभूत — ... वातवेगेन आकङ्क्षिता नस्सिंसु, जा. अ. 3.223.

## आकङ्क्षीयति

4

## आकप्पसम्पन्न

**आकङ्क्षीयति/आकङ्क्षियति** आ +क्कङ् के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकृष्यते], खींचा जाता है, खींच कर या घसीट कर ले जाया जाता है — न तत्थ सुखाभिसङ्गेन आकङ्क्षीयति, ध. स. अहु. 219; तत्थ संहरीतीति विपस्सनाय अभावतो तण्हादिद्वीहि आकङ्क्षियति, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.178; — द्वियन्तस्स वर्त. कृ., पु., प. वि., ए. व. — वंसनाढस्स ... साखाजटाजटितस्स आकङ्क्षियन्तस्स गरुकं होति आगमनं दन्धं, मि. प. 113; — द्वियमानं वर्त. कृ., आत्मने., पु., द्वि. वि., ए. व. — विकस्समानन्ति अतानं आकङ्क्षियमानं तत्थ निरये पस्सिस्ससि, जा. अहु. 7.136; — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अनापति मनुस्सेहि आकङ्क्षीयमाना गच्छति, पाचि. 301; आकङ्क्षियमाना गच्छतीति अङ्कारकमनुस्सेहि सयं वा आगन्त्वा दूतं पेसेत्वा ... गच्छति, पाचि. अहु. 170.

**आकङ्क्षेति** आ +क्कङ् का वर्त., प्र. पु., ए. व., अपनी ओर खींचता है, मोहित करता है, लुभाता है, निचोड़कर बाहर की ओर खींच लेता है — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — ... लोकस्स लोचनानि आकङ्क्षेन्तो नगरं ... पापुणि, जा. अहु. 2.228; — य्युं विधि., प्र. पु., ब. व. — न लब्धा तथा पब्बजितु न्ति बाहायमि गहेत्वा आकङ्क्षेय्युं पारा. अहु. 1.156.

**आकण्ठतो** अ., प. वि., प्रतिरू. निपा. [आकण्ठतः], कण्ठपर्यन्त, गले तक, भरपेट — आकण्ठतो वत पिवेय्य मरीचि तोयं, तेल. 58.

**आकण्ठप्पमाणं** अ., क्रि. वि. [आकण्ठप्रमाणं], उपरिवत् — तेसु येन केनचि परितित्तो आकण्ठप्पमाणं भुज्जित्वा ठितो, अ. नि. अहु. 3.71.

**आकति** स्त्री., [आकृति], एक छन्द का नाम, जिस में निबद्ध रचना के प्रत्येक पाद में बाईस वर्ण रहते हैं तथा जिस का एकमात्र प्रमेद भद्रक (भद्रक) कहलाता है — भा नरना रनाथ च गुरुद्वसकं विरमा हिभद्रकमिदं, वुत्तो. 105.

**आकतिगण** पु., केवल व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द [आकृतिगण], व्याकरण के किसी विशेष नियम द्वारा व्युत्पादित या रचित उदाहरणों में से कुछ का समूह — गावी, गो; आकतिगणोयं, मो. व्या. 3.27; पिसोदरादीनं सदानं आकतिगणभावतो वुत्तं 'पिसोदरादिपक्षपलक्षणं गहेत्वा'ति, सारत्थ. टी. 1.264.

**आकप्प** पु., [आकल्प], वेशभूषा, अलंकरण, सजावट, बाहरी आकार, बाह्य शारीरिक चेष्टा, हाव-भाव, बरताव, व्यवहार, चाल-ढाल — आकप्पो वेसो नेपच्छं अभि. प. 282; आकप्पोति गमनादिआकारो, ध. स. अहु. 353; 1. वेशभूषा, सजावट, परिधान, बाहरी चालढाल — प्पो पु., प्र. वि., ए. व. — ... इमस्स चीवरग्गहणं पत्तग्गहणं सरकुत्ति आकप्पो च एवरूपो नाम होतु, ध. स. अहु. 17; — प्पेन तु. वि., ए. व. — आकप्पेन, भिक्षवे, पुरिसो इत्थिं बन्धाति, अ. नि. 3(1).38; आकप्पेनाति निवासनपारुपनादिना विधानेन, अ. नि. अहु. 3.216; — प्पं द्वि. वि., ए. व. — आकप्पं सरकुत्तिं वा, न रज्जो सदिसमाचरे, जा. अहु. 7.187; 2. बरताव, व्यवहार, आचरण — अनाकप्पसम्पन्नाति न आकप्पेन सम्पन्ना, समणसारूप्याचारविरहिताति अत्थो, महाव. अहु. 247; 'हत्थपादमुखसण्ठानेहि च आकप्पेन च मातापुत्ता एकसदिसायेवा'ति आहंभु, जा. अहु. 1.280; 3. रीति-रिवाज, तौर-तरीका — किंछन्दा किमधिप्पाया, किमाकप्पा भविस्सरे थेरगा. 950; आकप्पाति च वेसगहणादिवारित्तास्तिवन्तोति अत्थो थेरगा. अहु. 2.305; 4. अभिप्राय, प्रवृत्ति, इच्छा — सत्थापि ... मनुस्सलोकं आगमनत्थाय आकप्पं दस्सेसि, अ. नि. अहु. 1.102.

**आकप्पकुत्त** पु., [आकल्पकुत्त], हाव-भाव, चेष्टा, उत्तम आकार-प्रकार — अथ ने ब्राह्मणगामतो निक्खम्म दासगामद्वारेन गच्छन्ते आकप्पकुत्तवसेन दासगामवासिनो सज्जानिसु, अ. नि. अहु. 1.142.

**आकप्पसम्पत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आकल्पसम्पत्ति], भव्य आकृति, उत्तम स्वरूप — त्तिं द्वि. वि., ए. व. — ... पुनर्दिवसे आकप्पसम्पत्तिं कत्वा भिक्षाचारवत्तेन नगरं पाविसि, जा. अहु. 1.311.

**आकप्पसम्पदा** स्त्री., तत्पु. स. [आकल्पसम्पत्], उपरिवत् — आकप्पसम्पदा ... परिवारसम्पदा ..., अ. नि. 1(1).53; आकप्पसम्पदाति चीवरग्गहणादीनो आकप्पस्स सम्पत्ति, अ. नि. अहु. 1.368.

**आकप्पसम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [आकल्पसम्पन्न], सुन्दर वेशभूषा को धारण करने वाला, उत्तम हावभाव या शारीरिक चेष्टाओं से विभूषित, उत्तम आचरण वाला — दुत्तभो, भिक्षवे, बुद्धपब्बजितो निपुणो, दुत्तभो आकप्पसम्पन्नो, अ. नि. 2(1).72; न आकप्पसम्पन्नो होति न वत्तसम्पन्नो, अ. नि. 2(1).242; आकप्पसम्पन्नोति समणाकप्पेन सम्पन्नो, अ. नि. अहु. 3.85; सो सद्धिपस्सिकत्थेरो विय आकप्पसम्पन्नो ..., जा. अहु. 4.304.

## आकम्पयन्ति

5

## आकार

आकम्पयन्ति आ + कम्प के प्रेर. का वर्त. प्र. पु. ब. व. [आकम्पयन्ति], हिलाते हैं, चञ्चल बना देते हैं — नाकम्पयन्ति सकलापि च लोकधाम्ना, चित्तं सदापगतपापकिलेससत्त्वं, तेल. 95; — स्थित त्रि., भू. क. कृ. [आकम्पित], हिला दिया गया, चञ्चल या अस्थिर बना दिया गया — पद्मता समनादिंसु, मही पकम्पिता अहु, जा. अहु. 7.372, पाठा. पकम्पिता.

आकर पु., [आकर], शा. अ. खान, खदान — आकरो रतनुष्पादनाय, मि. प. 322; 'सुवण्णायतन-रजतायतन'न्तिआदीसु आकरो, ध. स. अहु. 186; गुणान् आकरो वीरो, अप. 2.161; ला. अ. 1. उत्पत्ति-स्थल, उद्भव-स्थल — ... एवरूपानं पण्डितानं आकरस्स उद्धान्दानभूतस्स ..., जा. अहु. 6.290; ला. अ. 2. क्षेत्र, किसी वस्तु में समृद्ध क्षेत्र — चक्खु फस्सायतनन्ति सुवण्णादीनं सुवण्णादिआकरो विय ... इमेहि सत्तहि विज्जाणेहि सहजातानं सत्तन्नं फस्सानं समुद्धान्नेन आकरोति आयतनं, अ. नि. अहु. 2.157; स. उ. प. के रूप में इत्था., कमला., गन्था., गुणा., इरिता., धना., पमुखा., मकरा., मोक्खा., रतना., सब्बा., सुवण्णा. के अन्त. द्रष्ट.

आकरद्ध पु., तत्पु. स. [आकार्थ], खान या खदान का अर्थ, उत्पत्ति-स्थान का आशय — ङ्गेन तु. वि., ए. व. — फस्सायतनानीति विपाकफस्सानं आकरङ्गेन आयतनानि, अ. नि. अहु. 2.156.

आकरुप्पन्न त्रि., तत्पु. स. [आकरोत्पन्न], खान में उत्पन्न, खदान से प्राप्त — न्नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ततो आकरुप्पन्नं, ततो यंकिञ्चि, ..., वि. व. अहु. 10.

आकळार त्रि., [आकडार], थोड़े से या कुछ कुछ भूरे रंग वाला — रो पु., प्र. वि., ए. व. — ईसकं उण्हं कदुण्हं पनायको, ... आकळारो, आबद्धो, मो. व्या. 3.13.

आकरस्स/आकास पु., [आकर्ष], शा. अ. अपनी ओर खींचने वाला चुम्बक, ला. अ. तृष्णा — सो प्र. वि., ए. व. — तण्हा हि रुपादीन आकासन्तो 'आकासो'ति वुच्चति, महानि. अहु. 353; पाठा. आकासो.

आकरस्सन नपुं., [आकर्षण], अपनी ओर खींचना, खिंचाव — तो प. वि., ए. व., उपरिवत्.

आकरस्सति/आकासति आ + क्स का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकर्षति], अवकृष्ट करता है, अपनी ओर खींचता है, अपने पास खींच कर ले जाता है — याय तण्हाय रूपं आकरस्सति समाकरस्सति गण्हाति परामसति ... तंकारणा

आकासं वुच्चति तण्हा, महानि. 319; 'आकासती'ति 'आकरस्सती'ति च दुविधो पाठो, महानि. अहु. 353.

आकार<sup>1</sup> पु., [आकार], वर्णमाला में दीर्घ मात्रा वाला 'आ' स्वर, प्रायः व्याकरणविवेचनों के सन्दर्भ में प्रयुक्त — अ एव अकारो एवं आकारो, ... लकारो, क. व्या. 606; अन्तोकरणत्थो हि अयं आकारो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).66; — लोप पु., तत्पु. स. [आकारलोप], 'आ' स्वर का लोप — पो प्र. वि., ए. व. — पदातवेति पआदातवे, सन्धिवसेन आकारलोपो वेदितव्वो, जा. अहु. 1.188.

आकार<sup>2</sup> पु., आ + क्कर से व्यु., क्रि. ना. [आकार], शा. अ. अच्छी तरह से करना, ला. अ. 1. संकेत, इशारा, निशानी, चेहरे का रंग-ढंग, जिस से मनुष्य के भीतरी विचारों तथा मनोवृत्ति का पता लग सके, मानसिक भावों को प्रकाशित करने वाली शारीरिक चेष्टा या हाव-भाव — रो प्र. वि., ए. व. — आकारो त्विङ्गितं इङ्गो, अभि. प. 764; — रं द्वि. वि., ए. व. — अयं हत्थादीनं आकारो चक्खुविज्जेय्यो होति, ध. स. अहु. 128; तस्साकारं विदित्वान्, तत्थाहोसि कुतूहलं, म. वं. 30.23; ... थेरं पुनप्पुनं ववत्थापनत्थाय आकारमकासि, म. वं. टी. 495 (ना.) — रेन तु. वि., ए. व. — तत्थं तितं भागिनेय्यं, आकारेन निवेदयि, म. वं. 31.51; ... एकेन कायविकारेन जानापयी ति अत्थो, म. वं. टी. 527 (ना.); ला. अ. 2. लक्षण, खास पहचान कराने वाला चिह्न, विशेषता, प्रभेदक तथ्य, गुण — तो प. वि., ब. व. — आकारतो च वोकारतो च आसयज्जासयस्स अधिमुत्तिसमन्नागतानं, पेटको. 190; — रा प्र. वि., ब. व. — ते हि ते, गहपति, आकारा, ते लिङ्गा, ते निमित्ता यथा तं गहपतिस्साति, म. नि. 2.24; ... गिहिब्यज्जनानि तस्स गिहिभावं पाकटं करोन्तीति आकारा, म. नि. अहु. (म.प.) 2.28; ... आकारा वुच्चन्ति वेदनादीनं अज्जमज्जं असदिससभावा, दी. नि. अहु. 2.81; — रेहि तु. वि., ब. व. — येहि आकारेहि येहि लिङ्गेहि येहि निमित्तेहि पाराजिकस्स धम्मस्स अज्जापत्ति होति, तेहि आकारेहि तेहि लिङ्गेहि तेहि निमित्तेहि ..., चूळव. 402; येहि ... एत्थ मग्गेमग्गपटिपादनादीसु आकारादिसज्जा वेदितव्वा, चूळव. अहु. 123; ला. अ. 3. रूप, शक्ल-सूरत, आकृति, मुखाकृति, चेहरा, आकार — रो प्र. वि., ए. व. — आकारो कारणो वुत्तो सण्णाने इङ्गितेपि च, अभि. प. 981; धम्मसवेगवसेनपि अयमाकारो लभतेव, उदा. अहु. 3.; — रं द्वि. वि., ए. व. — पीठसप्पी ... रज्जो आकारं अत्ता



## आकार

6

## आकार

... पतिद्वारेषि, पे. व. अ. 247; तस्मिं पन गेहे गेहसामिनी इत्थि सद्धा पसन्ना थेरस्स आकारं सत्त्वखेत्वा ..., वि. व. अ. 21; ला. अ. 4. अवस्था, स्थिति, दशा, प्रकृति - रं द्वि. वि., ए. व. - तस्मिं वारे अक्कन्तपदानञ्च धनुदण्डस्स च जियाय च सरस्स च आकारं परिगणहेय्य, विसुद्धि. 1.145; आकारन्ति धनुजियासरानं गहिताकारं, विसुद्धि. महाटी. 1.164; - रा प्र. वि., ब. व. - सूदेन विय च आकारा परिगणहेतब्बा, विसुद्धि. 1.145; - रे द्वि. वि., ब. व. - एवमयमि अधिगतक्खणे भोजनादयो आकारे गहेत्वा ... होति, विसुद्धि. 1.145; पुब्बे ज्ञानस्स अधिगतक्खणे केच्चसाधके भोजनादिगते आकारे, विसुद्धि. महाटी. 1.165; - तो प. वि., ए. व. - जीरणताति इमिना आकारतो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).224; ला. अ. 5. कारण, हेतु, प्रयोजन, अपिप्राय - रो प्र. वि., ए. व. - आकारो कारणे वुत्तो सण्ठाने इङ्गितेपि च, अभि. प. 981; - रा ब. व. - के पनायस्मतो आकारा, के अन्वया, येनायस्मा एवं वदेसि, म. नि. 1.400; आकाराति कारणानि, अन्वयाति अनुबुद्धियो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).280; ... अज्जा सब्बापि पजा इमस्स कतस्स आकारमत्तमि न जज्जा न जानिस्सन्ति, जा. अ. 5.212; ला. अ. 6. तरीका, प्रभेद, साधन, धर्मोपदेश की पद्धति या प्रकार (परियाय), अनुव्यञ्जन - रो प्र. वि., ए. व. - आकारो जानितब्बोति सद्धो आकारतो जानितब्बो, परि. 316; सो च एवं भद्दो आकारो न सम्मा अप्पणिहिततन्नो पुब्बे अकतपुञ्जस्स वा होति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).9; - रं द्वि. वि., ए. व. - ... 'अक्कोच्छिम'न्ति आदिकं आकारं ये उपनयन्ति, जा. अ. 3.432; नानुव्यञ्जनगाहीति किले सानं अनुअनुव्यञ्जनतो ... हत्थपादसितहसितकथितविलोकितादिभेदं आकारं न गण्हाति, विसुद्धि. 1.20; - रेन तू. वि., ए. व. - सब्बज्जुभासितमि पटिकिज्जपित्वा सस्सतो लोको इदमेव सच्चं मोघमज्जन्ति इमिना आकारेन अभिनिविसतीति इदं सच्चाभिनिवेशो, ध. स. अ. 401; - स्स ष. वि., ए. व. - ... जाणुप्पादनादिनो आकारस्स दस्सनत्थं ..., विसुद्धि. 1.262; - रे सप्त. वि., ए. व. - भगवता धम्मं देसितं आजानामीति आदीसु आकारे, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).5; - रा प्र. वि., ब. व. - येसं ते येव सद्धादयो आकारा सुन्दरा, ते स्वाकारा, स. नि. अ. 1.176; - रानं ष. वि., ब. व. - इमेसञ्चि चतुन्नामि आकारानं अज्जतरमि करोन्तेन गहितयेव होति सरणगमनं,

अ. नि. अ. 2.17; - रेसु सप्त. वि., ब. व. - तथद्वादीसु द्वादससु आकारेसु विसुं विसुं एकेन सङ्गहो ... एकसङ्गहता, पटि. म. अ. 1.39; - रेहि तू. वि., ब. व. - रूपं अरुपस्स ... एकादसहि आकारेहि पच्चयो होति, अभि. अव. 176; दसहाकारेहि मनसिकारकोसत्त्वं इच्छितब्बन्ति, विभ. अ. 53; ला. अ. 7. पक्ष, तथ्य, संघटक अंग, अन्तर्निर्विष्ट भाग - रा प्र. वि., ब. व. - ये पज्जास आकारा सासने निदिद्धा, पेटको. 193; क. ज्ञान-दर्शन के उदय में हेतुभूत बारह तथ्य - रानं ष. वि., ब. व. - ... द्वादसन्नं आकारानं वसेन उपपन्नजाणसङ्घातं दस्सनं, स. नि. अ. 1.327; ख. प्रज्ञा, चित्त, स्मृति आदि के प्रभेद - रेहि तू. वि., ब. व. - ... यजमानस्स सोळसहाकारेहि चित्तं सन्दस्सेसि, दी. नि. 1.123; 'सत्तरसहाकारेहि, महासज्ज, सति उपपज्जती'ति, मि. प. 86; ग. प्रतीत्यसमुत्पाद के बीस आकार या अङ्ग - तो प. वि., ए. व. - ... वीसताकारं तिसन्धिं पटिच्चसमुप्पादं सब्बाकारतो जानाति, विसुद्धि. 1.192; आकारतो ति सरुपतो अवुत्तापि तस्मिं तस्मिं सङ्गहे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्कारादिगहणेहि पकासीयन्तीति आकारा, अतीतहेतुआदीनं वा पकारा आकारा, ततो आकारतो, विसतिविधा होन्ति अतीतहेतुपञ्चकादिभेदतो, विसुद्धि. महाटी. 1.210; घ. शरीर के बतीस भाग - रो पु. प्र. वि., ए. व. - ... अज्झत्तकेसादिको वृत्तिसाकारो कायो वुत्तो, उदा. अ. 153; ङ. धातुओं के बयालीस आकार - रेहि तू. वि., ब. व. - द्वा चत्तालीसाय आकारेहि एवं वित्थारेन धातुयो सभावतो उपलक्खयन्तो ..., नेत्ति. 63; च. इन्द्रियों के चौसठ प्रकार - रेहि तू. वि., ब. व. - चतुसङ्घिया आकारेहि ... खये जाणं, पटि. म. 3; चतुसङ्घिया आकारेहीति अद्दसु मग्गफलेसु एकेकस्मिं अद्दन्नं - अद्दन्नं इन्द्रियानं वसेन चतुसङ्घिया आकारेहि, पटि. म. अ. 1.45; 8. विभाग, खण्ड, अंग, संशोधन, छ प्रकार के व्यञ्जनपदों (अक्खर, पद, व्यञ्जन, आकार, निरुत्ति एवं निहेस) में एक - तेसं नो, भन्ते, आयस्मता महाकच्चाणेन इमेहि आकारेहि इमेहि पदेहि इमेहि व्यञ्जनेहि अत्थो विभत्तो'ति, म. नि. 1.162; इमेहि आकारेहीति इमेहि कारणेहि पपञ्चुप्पत्तिया पाटियेक्ककारणेहि चेव वट्टविवट्टकारणेहि च, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).392; - अकोविद त्रि., कारण एवं अकारण का ज्ञान न रखने वाला - दो पु. प्र. वि., ए. व. - वत्थुं विपत्तिं आपत्तिं, निदानं आकारकोविदो पुब्बापरं न जानाति, परि. 313; तत्थ आकारअकोविदोति कारणाकारणे अकोविदो,

## आकार

7

## आकार

परि. अड्ड. 211; - रत्थ पु., तत्पु. स. [आकारार्थ], आकार, स्वरूप या नमूना का अर्थ, 'इस स्वरूप का', 'इस तरह का' अर्थ - त्थो प्र. वि., ए. व. - यो पन एवन्ति च मेति च वुच्चमानो आकारत्थो, उदा. अड्ड. 13; - थेन. तृ. वि., ए. व. - तत्थ आकारत्थेन एवं सदेन एतमत्थं दीपेति. दी. नि. अड्ड. 1.28; - त्थे सप्त. वि., ए. व. - आकारत्थे प्रकारत्थे विभागत्थे तेहि आकारादीहि वज्जिते ... होति, सट्. 3.804; - कोविद त्रि., तत्पु. स. [आकारकोविद], कारणों या प्रयोजनों को जानने वाला - निदान आकारं कोविदो, पुब्बापरं च न जानाति, परि. 313; पाठा. आकारकोविदो - दस्सन नपुं., तत्पु. स. [आकारदर्शन], आकार-प्रकार या स्वरूप का सङ्केत, प्रकार या पद्धति को दिखलाना - नं प्र. वि., ए. व. - इदञ्चि उद्दिसेनेन ... पेतानं अत्तनो जातीनं धोमनाकारदस्सनं, पे. व. अड्ड. 23; - दस्सनक त्रि., आकार या स्वरूप को दिखलाने वाला, आकार या स्वभाव का संकेतक - का पु., प्र. वि., व. व. - ... कामस्सादसंयुक्ताकारदस्सनका अभिनया, स. नि. अड्ड. 3.141; - नानत्त नपुं., भाव. [आकारनानात्व], आकार या स्वरूप की अनेकता या विविधरूपता - तेन तृ. वि., ए. व. - आकारनानत्तेन पन वेनेय्यवसेन च उपचयो ... नत्थि, ध. स. अड्ड. 359; - तो प. वि., ए. व. - आकारनानत्ततो पन वेनेय्यवसेन च उपचयो सन्ततीति उद्देसदेसना कता, विसुद्धि. 2.76; 'आकारनानत्ततोति जातिरूपस्स पवत्तिआकारभेदतोति अत्थो, विसुद्धि. महादी. 2.96; - वुत्तमाकारनानता, वेनेय्यानं वसेन वा, अभि. अव. 90; - निदस्सन नपुं., तत्पु. स. [आकारनिदर्शन], आकार या स्वरूप का प्रकाशन, उदाहरण का संकेत - नं प्र. वि., ए. व. - ... एत्थ आकारत्थेन एवं सदेन दातब्बाकारनिदस्सनं कतं होति, खु. पा. अड्ड. 165; - निदेस पु., तत्पु. स. [आकारनिर्देश], स्वरूप, आकार-प्रकार अथवा पद्धति का विवेचन - सो प्र. वि., ए. व. - तेनस्सायं आकारनिदेसो, स. नि. अड्ड. 2.10; तस्स नानाकारनिदेसो, दी. नि. अड्ड. 1.29; - निरोध पु., तत्पु. स. [आकारनिरोध], जन्म की कारणभूत (इच्छा आदि) मानसिक प्रवृत्तियों का निरोध या समाप्ति - धा प. वि., ए. व. - आकारनिरोधा दण्डनिरोधो, पेटको. 239; - पज्जति स्त्री., तत्पु. स. [आकारप्रज्ञप्ति], आकार-प्रकार का संकेत या संसूचन - ति प्र. वि., ए. व. - एवन्ति हि अयमाकारपज्जति, दी. नि. अड्ड. 1.29; - परिच्छेद पु.,

तत्पु. स. [आकारपरिच्छेद], दशाओं या अवस्थाओं का निश्चायन अथवा परिशीलन, अवस्थाओं का निर्धारण - दं द्वि. वि., ए. व. - इतिपीति इमिना तेसं पण्डितादिआकारपरिच्छेदं दस्सेति, अ. नि. अड्ड. 2.142; - परिवितक्क पु., तत्पु. स. [आकारपरिवितर्क], कारणों के विषय में अनुचिन्तन, अवस्था या दशा के विषय में सोच-विचार - वको प्र. वि., ए. व. - या तथाभूतस्स खन्ति रुचि पेक्खना आकारपरिवितक्को दिट्ठिनिज्झायना अभिप्पसन्ना, पेटको. 255; - वक्केन तृ. वि., ए. व. - मा आकारपरिवितक्केन, अ. नि. 1(1).217; मा आकारपरिवितक्केनाति सुन्दरमिदं कारणन्ति एवं कारणपरिवितक्केनपि मा गण्हित्थ, अ. नि. अड्ड. 2.176; - वका प. वि., ए. व. - अज्जत्र अनुस्सवा अज्जत्र आकारपरिवितक्का ..., म. नि. 3.21; - पवत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आकारप्रवृत्ति], अवस्थाओं का प्रकाशन, स. प. के अन्त. - लक्खणादितो पनेत्थ हिताकारप्पवत्तिलक्खणा मेत्ता, ध. स. अड्ड. 237; - पुक्का स्त्री., तत्पु. स. [आकारपृच्छा], आकार-प्रकारों या अवस्थाओं के विषय में प्रश्न - च्छा प्र. वि., ए. व. - आकारपुक्काति गिहिलिङ्गे वा तिथियलिङ्गे वा पब्बजितलिङ्गे वा, परि. 325; - भावनिदेस पु., तत्पु. स. [आकारभावनिर्देश], आकार-प्रकारों तथा भावों के विषय में कथन या इनका विवेचन - सा प्र. वि., व. व. - मज्जना मज्झिततन्ति आकारभावनिदेसा, ध. स. अड्ड. 397; - वचन नपुं., तत्पु. स. [आकारवचन], रूप की अवस्थाओं को कहने वाला शब्द - नं प्र. वि., ए. व. - पठमं लक्खणवचनं, दुतियं आकारवचनं, विसुद्धि. 1.340; - विकार पु., तत्पु. स. [आकारविकार], रूप या इसकी अवस्थाओं में आने वाला विकार - रो प्र. वि., ए. व. - आकारविकारो कायविज्जति, विसुद्धि. 2.75; चित्तसमुद्धानाय ... रूपकायं ... भवितुं समत्थो एको आकारविकारो अत्थि, अयं विज्जति नाम, ध. स. अड्ड. 128; - सङ्घात त्रि., व. स. [आकारसंख्यात], आकार नाम वाला, आकार नाम से प्रसिद्ध - तेहि तृ. वि., व. व. - एतेहि पन वीसतिया आकारसङ्घातेहि अरेहि वीसतिआकारान्ति वेदितब्बं, विसुद्धि. 2.212; - सण्ठान नपुं., तत्पु. स. [आकारसंस्थान], आकार और इसका ढांचा - ना प. वि., ए. व. - यस्मा विनापि आकारसण्ठाना आरम्भणस्स ... पाकटं होति, स. नि. अड्ड. 2.260; - समूह पु., [आकारसमूह], अनेक अवस्थाओं या लक्षणों का समूह स.

## आकारण

8

## आकास

प. के अन्त. — अथा खो कायानुपस्सी अनिच्चदुक्खान्तअसुभाकारसमूहानुपस्सीयेवाति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).253; — सम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आकारसम्पत्ति], विशिष्ट प्रकार के लक्षणों या अवस्थाओं की प्राप्ति अथवा स्थिति — या ष. वि., ए. व. — तेनस्स अनुव्यञ्जनसम्पत्तिया आकारसम्पत्तिया च अभावं दस्सेति, उदा. अट्ट. 299; — सहित त्रि., अनेक विशेषताओं से युक्त — तं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — तं वा तस्सा आकारसहितं वचनं अनुस्सरन्तो, उदा. अट्ट. 138; — राभिहित त्रि., आकार या स्वरूप द्वारा अभिव्यक्त — आकाराभिहितस्स निब्वचनं निरुति, महानि. अट्ट. 3; — रार पु. [आकारार], आकार रूपी अर या चक्रनाभि — वीसति आकारारं विसुद्धि. 2212.

आकारण नपुं. स्वरूप, चिह्न कारण, हल्का फुल्का चिह्न — जेन तु वि., ए. व. — आकारणेन जानामि जा. अट्ट. 1260; आकारणेन जानामीति तस्मा इमिना कारणेन जानामि जा. अट्ट. 1261.

आकारवती स्त्री., [आकारवती], कारण वाली, सहेतुका, सकारणा — नत्थि खो नो भन्ते, कोचि मनापो सत्था यस्मिं नो आकारवती सद्धा पटिलद्धाति, म. नि. 2.71; तत्थ आकारवतीति कारणवती सहेतुका, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 2.84; अयं वुच्चति, आकारवती सद्धा दस्सनमूलिका, म. नि. 1.402; आकारवतीति कारणं परियेसित्वा गहितत्ता सकारणा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).282.

आकास' पु./नपुं. [आकाश, आ + काश् से व्यु., प्रभा से, प्रदीप्त क्षेत्र], 1. क. व्युत्पत्तिपरक अर्थ, 1. ऐसा क्षेत्र, जिस में न हल चलाया जा सके, न खरोंचा जा सके — आकासोति नभं, तं हि न कस्सतीति आकासो, कसितुं विलेखितुं न सक्को ति अत्थो, सद. 2.442; 2. वह क्षेत्र, जिसे न जोता जा सके, न तोड़ा जा सके, न काटा जा सके — न कस्सति न निकस्सति, कसितुं छिन्दितुं भिन्दितुं वा न सक्काति आकासो, पटि. म. अट्ट. 1.69; 3. वह, जिसे घात-प्रतिघात रहित होने के कारण खींचा या घसीटा न जा सके — अप्पटिघट्टनट्टेन न कस्सतीति आकासो, विभ. अट्ट. 66; 1. ख. परम्परा में प्राप्त शा. अ., 1. पु., आसमान, आच्छादनरहित अथवा न ढकी हुई खुली जगह, वायु के प्रवाहित होने का पथ, तारापथ, सुरपथ, आदित्यपथ, नभमण्डल, शून्य या खाली क्षेत्र, गगन — अन्तलिक्खं खमादिच्चपथोअं गगनाम्बरं, वेहासो चानिलपथो आकासो नित्थियं नभं देवो वेहायसो तारापथो सुरपथो अयं अभि. प. 45-46; आकासो अम्बरं अयं अन्तलिक्खं अयं

नभं, वेहासो गगनं देवो खं आदिच्चपथो पि व. तारापथो च नक्खत्तपथो रविपथो पि च, वेहायसं वायुपथो अपथो अनिलज्जसं, सद. 2.442; तुल. अमर. 1.2.1 3; 1. ग. प्रयोग — सो पु., प्र. वि., ए. व. — सेव्यथापि, राहुल, आकासो न कत्थचि पतिद्वितो, म. नि. 2.94; यथाहं आकासो व अब्यापज्जमानो ..., सु. नि. 1071; — सं' नपुं. प्र. वि., ए. व. — आकासमेव किर नेसं छदनं अहोसि, ध. प. अट्ट. 2.124; — सं' पु. द्वि. वि., ए. व. — आकासं वा अद्भुलिया निदिसन्तेन ... होति, सु. नि. अट्ट. 1.87; — सेन तु. वि., ए. व. — तापसो आकासेन चरितुकामो तं गहेत्वा ..., जा. अट्ट. 2.85; — स्स ष. वि., ए. व. — 'आकासरस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी'ति यं वदेसि, मि. प. 356; — सा प. वि., ए. व. — मज्जमाना गारवजाता आकासा ओरुह पथवियं अद्वासि, स. नि. अट्ट. 1.39; — तो उपरिवत् — ... कत्वा पस्समाना आकासतो ओतरित्वा भूमियं ठत्वाति अत्थो, स. नि. अट्ट. 1.60; — से / म्हि सप्त. वि., ए. व. — नानापुष्कं गहेत्वान, आकासम्हि समोकिरिं, अप. 1.111; 1. घ. आकाश के तीन प्रभेदों के लिए परिच्छेदा., कसिणुग्घाटिमा. तथा अजटा. के अन्त. द्रष्ट. — तत्थ तिविधो आकासो परिच्छेदाकासो, कसिणुग्घाटिमाकासो, अजटाकासो, प. प. अट्ट. 189 90; 1. ङ. आकाश अनन्त है अथवा पर्यवसानरहित है — ... अनन्तो आकासोति आकासानञ्चायतनूपगो, दी. नि. 1.30; 1. च. आकाश अतिविशाल या महान् है — आकासो महन्तो, सो एकोयेव, अ. नि. अट्ट. 1.346-47; 1. छ. आकाश अस्पृष्ट अथवा स्पर्श न किए जाने योग्य है — यथा आकासो अफुट्टाकासो, अप. अट्ट. 1.300; 1. ज. आकाश समेटा नहीं जा सकता — सवत्तेय्यपि वे, महाराज, आकासो किलज्जमिव, मि. प. 266; 1. झ. आकाश अनिदर्शन या रूप-रहित है — अयत्थि आकासो अरूपी अनिदस्सनो, म. नि. 1.180; 1. ञ. आकाश एवं निर्वाण, दोनों अकर्मज, अहेतुज एवं असंस्कृत धर्म हैं — आकासो अकम्मजो अहेतुजो अनुतुजोति, मि. प. 250; आकासो असङ्गतो, निब्वानं असङ्गतन्ति ?, कथा. 274; 2. कुछ विचारकों द्वारा पांचवें महाभूत के रूप में परिकल्पित तत्त्व — आकासं इन्द्रियानि सङ्गमन्ति, म. नि. 2.192; स. उ. प. के रूप में अजटा., कण्णच्छिदा., कसिणुग्घातिमा., जलदा., थलजला., तुच्छा., निस्सटा., परिच्छिन्ना., परिच्छेदा., सम्बुद्धसासना., सुनीला. के अन्त. द्रष्ट.; 3. नपुं., काल्पनिक खेलपट्टी को मन में रखकर

## आकाश

9

## आकाशगति

खेला जाने वाला चौसर या चौपड़ का खेल, केवल मुख से मोहरों को खेलपट्टी पर चलाने की बात कहते हुए खेला जा रहा जुए का खेल — आकासन्ति अद्वपददसपदेसु विय आकासेयेव कीळन्, दी. नि. अ. 1.78; आकासेपीति अद्वपददसपदेसु विय आकासेयेव कीळन्ति, पारा. अ. 2.185; आकासेयेव कीळन्तीति "अयं सारी असुकपदं मया नीता, अयं असुकपदं"ति, केवलं मुखेनेव वदन्ता आकासेयेव जूतं कीळन्ति, सारस्थ. टी. 2.330.

**आकास**<sup>२</sup> पु., [आकर्ष], इच्छा, लोभ, आसक्ति, (रूप आदि की ओर मन को खींचने वाली) तृष्णा — आकासं न सितो सिया, सु. नि. 950; तण्हा हि रुपादीनं आकासनतो आकासोति वुच्चति, सु. नि. अ. 2.259.

**आकासकथा** स्त्री. [आकाशकथा], आकाश-विषयक विवेचन, आकाश के सम्बन्ध में विवाद — इदानी आकासकथा नाम होति, प. प. अ. 189.

**आकासकसिण** पु./नपुं. [बौ. सं. आकाशकृत्स्न], ध्यान-प्रक्रिया में चित्त को एकाग्र करने हेतु निर्दिष्ट कर्मस्थानों में से एक, चित्त के आलम्बन के रूप में आकाश का एक सीमित अंश या खण्ड, परिच्छिन्न आकाश तथा इसे आलम्बन बनाकर किया जा रहा ध्यान — यच्च आकासकसिणं यच्च विज्जाणकसिणं, अयं विपस्सना, नेत्ति. 74; आकासकसिणं भावेति, अ. नि. 1(1).56; आकासकसिणन्ति परिच्छेदाकासो, तदारम्भणञ्च ज्ञानं, पटि. म. अ. 1.69; आकासकसिणन्ति पन कसिणुण्णाटिममाकासमि, तं आरम्भणं कत्वा पवत्तकञ्चापि, भित्तिच्छिन्नादीसु अञ्जतरस्मिं गहेतब्बनिमित्तपरिच्छेदाकासमि, तं आरम्भणं कत्वा उप्यन्नं चतुक्कपञ्चकज्ज्ञानमि वुच्चति, ध. स. अ. 231; — **समापत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशकृत्स्नसमापत्ति], आकाश-कसिण को आलम्बन बनाने वाले चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति — ... पकतिया आकासकसिणसमापत्तिया लाम्भी होति, पटि. म. 378; आकासकसिणसमापत्तियाति परिच्छेदाकासकसिणं उप्पादिताय चतुत्थज्ज्ञानसमापत्तिया, पटि. म. अ. 2.250; स. उ. प. के रूप में परिच्छेदा. के अन्त. द्रष्ट.

**आकासगङ्गा** स्त्री., [आकाशगङ्गा], क. देव नदी, स्वर्ग से बहने वाली एक नदी, ख. हिमालय के अनंतत नामक सरोवर से दक्षिण की ओर बहने वाली नदी, ग. आकाश में बहते हुए पुनः पृथ्वी पर उतर कर बहने वाली गङ्गा नदी — मन्दाकिनी तथाकासगङ्गा सुरनदीप्यथ, अभि. प. 27; आकासेन सद्दि योजनानि गतद्धाने "आकासगङ्गा"ति वुच्चति,

सु. नि. अ. 2.146; — य ष. वि., ए. व. — सतततित्तकं ति ध्रुवतित्तकं ... सद्दियोजनिकाय आकासगङ्गाय पतितद्धाने ..., म. वं. टी. 476(ना.); — ज्ञतो प. वि., ए. व. — आकासगङ्गतो भस्समानं उदकं विय निरन्तरं कथं पवत्तेति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).151; — त्वं द्वि. वि., ए. व. — तदा हि भगवा आकासगङ्गां ओतारन्तो विय पथवोजं आकङ्कन्तो विय ..., दी. नि. अ. 3.141; — **गतिसोभा** स्त्री., तत्पु. स. [आकाशगङ्गागतिशोभा], आकाश से उतर रही गङ्गा के प्रवाह की शोभा — भं द्वि. वि., ए. व. — ... आकासगङ्गागतिसोमं अभिमवमाना ..., म. नि. अ. (उप.प.) 3.158; — **पतितद्धान** नपुं., [आकाशगङ्गापतनस्थान], गङ्गा नदी के आकाश से धरती पर गिरने का स्थान — नै सप्त. वि., ए. व. — आकासगङ्गापतितद्धाने सतततित्तकं, म. वं. 29.5; अनोत्तदहतो निक्खन्ताय सद्दियोजनिकाय आकासगङ्गाय पतितद्धाने, म. वं. टी. 476(ना.); 2. स्त्री., व्य. सं., श्रीलङ्का के राजा पराक्रमबाहु (प्रथम) द्वारा बारहवीं सदी में बनवाई गई एक नहर या मातिका — आकासगङ्गानामाय मातिकाय महन्तिया, चू. वं. 79.25.

**आकासगत** 1. त्रि., [आकाशगत], आकाश की ओर गया हुआ, आकाश में स्थित, अत्यधिक फैला हुआ या खुला हुआ — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आकासङ्गं नाम भण्डं आकासगतं होति, पारा. 55; — ता पु., प्र. वि., ब. व. — आकासङ्गा आकासगता, अप. अ. 1.112; — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — हत्थेन पन गहेत्वा अन्तोवत्थुस्मिमि आकासगतं करोन्तस्स पाराजिकमेव, पारा. अ. 1.259; — ते पु., द्वि. वि., ब. व. — चत्तारो पादे आकासगते कत्वा ..., म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).36; — तेसु सप्त. वि., ब. व. — चतूसु पादेसु आकासगतेसु गमनं पच्छिज्जति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).37; — **विज्जाण** नपुं., कर्म. स. [आकाशगतविज्ञान], आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन बनाने वाला अरुपध्यान का चित्त — आकासगतविज्जाणं, दुतियरूप्यचक्खुना, अभि. अव. 1017; 2. नपुं., आकाश, आकाश या अन्तरिक्ष में अन्तर्भूत कोई भी तत्त्व — यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं, ध. स. 637; आकासोव आकासगतं, खेळगतादि विय, आकासोति वा गतन्ति 'आकासगतं', ध. स. अ. 358.

**आकासगति** स्त्री., [आकाशगति], आकाश में गमन, आसमान में उड़ान — तिं द्वि. वि., ए. व. — जहिंसु आकासगति विहङ्गमा, दाठा. 1.45(से.).

## आकासगब्ध

10

## आकासद्वकविमान

**आकासगब्ध** पु., तत्पु. स. [आकाशगर्भ], आकाश के भीतर, आकाशमार्ग - **ब्धे** सप्त. वि., ए. व. - आकासधातुया आकासगब्धे गच्छं गच्छन्तो ..., अप. अहु. 1.240.

**आकासगमन** नपुं., तत्पु. स. [आकाशगमन], 1. आकाश में चलना, आकाश में उड़ान भरना - पवित्रनो आकासगमनं विजहिंसु, उदा. अहु. 119; 2. हांथी को मरवाने की एक चाल - तस्स आकासगमनं नाम कारणं करोहीति, मि. प. 192.

**आकासगामी** त्रि., [आकाशगामिन], आकाश में गमन करने वाला, अन्तरिक्ष में विचरने वाला - नं पुं, ष. वि., ब. व. - अधगामिनन्ति आकासगामीनं, स. नि. अहु. 1.114.

**आकासगोत** पु., 1. राजगृह का एक चिकित्सक - त्तो प्र. वि., ए. व. - अहसा खो आकासगोतो वेज्जो भगवन्तं दूरतोव अगच्छन्तं, महाव. 292; 2. त्रि., आकाश गोत्र वाले एक ब्राह्मण का गोत्र-नाम - सज्जयो महाराज, ब्राह्मणो आकासगोतोति, म. नि. 2.335.

**आकासङ्गण** नपुं., तत्पु. स. [आकाशाङ्गण], खुला आंगन, खुली जगह - णे सप्त. वि., ए. व. - यत्थ उपरिच्छदनं परिरूपेणो वा नत्थि, तादिसे आकासङ्गणे, उदा. अहु. 198.

**आकासचर** त्रि., [आकाशचर], आसमान में चलने वाला, आसमान में विचरने वाला - रो पु., प्र. वि., ए. व. - चक्करतनं पुरस्सत्वा आकासचरो, बु. वं. अहु. 235.

**आकासचारिक** त्रि., आकाश या अन्तरिक्ष में गमन करने में सक्षम - को पु., प्र. वि., ए. व. - एको आकासचारिको तापसो, जा. अहु. 1.329; - देव पु., आकाश में गमन करने में रक्षम देवता - वा प्र. वि., ब. व. - वलाहकनामके देवकाये उप्पन्ना आकासचारिकदेवा, स. नि. अहु. 2.315.

**आकासचारी** त्रि., [आकाशचारिन्], उपरिवत् - री पु., प्र. वि., ए. व. - निब्वन्ति आकासचारी सीघजवो उपरि कूटागारसण्ठानो, वि. व. अहु. 6; - रिनो ब. व. - आकासचारिनो मयन्ति, जा. अहु. 5.370; - नी स्त्री., प्र. वि., ए. व. - जातदिवसेयव ... आकासचारिनी करणुका ..., जा. अहु. 7.234.

**आकासचेतिय** नपुं., तत्पु. स. [आकाशचैत्य], पर्वत-शिखर या बहुत ऊंचाई पर बना हुआ चैत्य - पञ्चतसिखरे कतचेतियं आकासचेतियंति वुत्तं, विसुद्धि. महाटी. 1. 157; आकासे नगमुद्धनि कतं चेतियं आकासचेतियं, म. वं. टी. 393(रो.); - यङ्गण पु., तत्पु. स. [आकाशचैत्याङ्गण], ऊंचे पर्वत शिखर पर स्थित चैत्य का आंगन - णो प्र.

वि., ए. व. - तस्स आकासचेतियस्स अङ्गणो बालुकपरिच्छेदो आकासचेतियङ्गणो ..., म. वं. टी. 393 (रो.); - णे सप्त. वि., ए. व. - आकासचेतियङ्गणे सुखेन आरोहनत्थाय, तदे.

**आकासच्छदन** त्रि., ब. स. [आकाशाच्छादनक], केवल आकाश के आच्छादन वाला, पूरी तरह से खुला हुआ, ऐसा आवास, जिसकी छत केवल आकाश है - नं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आकासं छदनमस्साति आकासच्छदनं, म. नि. अहु. (म.प.) 2.203; घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तैमासं आकासच्छदनं अट्ठासि, न देवोतिवस्सीति, मि. प. 210.

**आकासज्झासय** त्रि., ब. स. [आकाशाध्यासय], आकाश की आवश्यकता को अनुभव करने वाला, आकाश की इच्छा रखने वाला - यं नपुं., प्र. वि., ए. व. - एवमेव घानमपि आकासज्झासयं वातूपनिस्सयगन्धगोचरं, घ. स. अहु. 348.

**आकासद्व** त्रि., [आकाशस्थ], आकाश या दिव्य लोकों में स्थित, आकाश या अन्तरिक्ष से जुड़ा हुआ, ऊपर की ओर स्थित - द्वा पु., प्र. वि., ब. व. - आकासद्वाति आकासे विमानादीसु ठित्ता, बु. वं. अहु. 50; - द्वं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आकासद्वं नाम भण्डं आकासगतं होति, पारा. 55; - द्वा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - एसा पन, महाराज, पपटिका न भूमद्वा न आकासद्वा, मि. प. 176; - द्वाणि नपुं., प्र. वि., ब. व. - पथविगतानि च ते रतनानि आकासद्वानि च सयमेव उपगच्छिस्सन्ति, मि. प. 265 - क त्रि., उपरिवत् - द्दका पु., प्र. वि., ब. व. - तेसं हत्थतो आकासद्वका देवा गहेत्वा साधुकीळितं कीळिसु, स. नि. अहु. 1.249; आकासद्वकभूमद्वकरतनानि सक्तेजोभासितानि अहेसुं, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.136.

**आकासकद्वदेवता / आकासद्वदेवता** स्त्री., कर्म. स. [आकाशस्थदेवता], स्वर्ग में रहने वाला देवता, दिव्य लोकों में स्थित दैवी प्राणी - ता' प्र. वि., ए. व. - बोधिसत्तो आकासद्वदेवता अहोसि, जा. अहु. 1.476; - ता' प्र. वि., ब. व. - तासं देवतानं आकासद्वदेवता मित्ता होन्ति, खु. पा. अहु. 96; ... पथविद्वकनागा च आकासद्वकदेवता च, अ. नि. अहु. 2.33; - नं ष. वि., ब. व. - आकासद्वकदेवतानं ताव मनुस्सगन्धो योजनसत्ते ठित्तानं आबार्थं करोति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).309.

**आकासद्वकविमान** नपुं., कर्म. स. [आकाशस्थविमान], आकाश में स्थित प्रासाद या भवन, दिव्य भवन या आवास, दैवी वाहन - नं द्वि. वि., ए. व. - ... बीरणिया देवधीताय

## आकासतल

11

## आकासपदुम

आकासद्वकविमानं दिस्वा, जा. अड्ड. 6.139; — ना प्र. वि., ब. व. — आकासद्वकविमाना इमेति वदति, जा. अड्ड. 6.149; — नानि द्वि. वि., ब. व. — इदानीं पन आकासद्वकविमानानि परस्सन्तेन ..., जा. अड्ड. 6.149.

आकासतल नपुं, तत्पु. स. [आकाशतल], किसी भव्य भवन या महल की सबसे ऊपरी छत, किसी भी भवन की चपटी छत — लं द्वि. वि., ए. व. — आकासतलं आगन्त्वा महाद्वाराभिमुखोव अहोसि, स. नि. अड्ड. 1.275; — ले सप्त. वि., ए. व. — राजमहैसी गरुभाय आकासतले रज्जा ... निस्सिन्ना होति, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.230; सूरियो ... उद्वाय आकासतले ठितं चन्दं उल्लोकेत्वा ... गतो, स. नि. अड्ड. 1.275.

आकासति आ + व्कास का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकाशते], चमकता है, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देता है, प्रकाशित होता है, प्रदीप्त होता है — 'आकासतीति 'आकस्सतीति' व दुविधो पाठो, महानि. अड्ड. 353; — न्तं' / मानं वर्त. कृ., परस्मै. / आत्मने. — ब्रह्मा वाळमिगाकिण्णं, आकासन्तव दिस्सति, जा. अड्ड. 6.106; आकासन्तन्ति आकासमानं, पकासमानन्ति अत्थो तदे., — न्तं' आकास+अन्त के योग से व्यु. [आकाशान्त], आकाश का छोर — आकासन्तवाति एतं वनं आकासस्स अन्तो विय हुत्वा दिस्सति, जा. अड्ड. 6.106.

आकासत्त नपुं, भाव. [आकाशत्व], खालीपन, रिक्तता, अभाव — त्तं प्र. वि., ए. व. — आकासत्तं, अभावत्तन्ति उपचरितभेद सामज्जं, मो. व्या. 4.59.

आकासधातु स्त्री., कर्म. स. [आकाशधातु], 1. धर्मों के बहुविध विभाजन में छ धातुओं में से एक धातु के रूप में स्वीकृत आकाश-तत्त्व, रूप नामक धर्म का परिच्छेदक-तत्त्व — 'छ धातुयो — पथवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, आकासधातु, विज्जाणधातु', दी. नि. 3.196; आकासधातूति असम्फुड्धातु, अ. नि. अड्ड. 2.156; — लक्खणादितो पन रूपपरिच्छेदलक्खणा आकासधातु, ध. स. अड्ड. 358; आकासधातु परिच्छेदरूपं नाम, अभि. ध., स. 42; न कस्सतीति अकासो, अकासोयेव आकासो, निज्जीवड्धेन धातु वाति आकासधातु, अभि. वि. टी. 177; चक्खायतनं ... आकासधातु ... पञ्चवीसति रूपकोट्टासाति न जानाति, अ. नि. अड्ड. 3.351; या ष. वि., ए. व. — आकासधातुया असम्फुड्दलक्खणं, अ. नि. अड्ड. 1.87; 2. आकाश, अन्तरिक्ष, आसमान — या तृ. वि., ए. व. — गच्छ

आकासधातुयाति आकासेन गच्छन्तो, अ. नि. अड्ड. 3.17; — निदेस पु., तत्पु. स. [आकाशधातुनिर्देश], आकाशधातु के विषय में व्याख्यान — से सप्त. वि., ए. व. — आकासधातुनिदेसे न कस्सति, न निकस्सति, कसितुं वा छिन्दितुं वा भिन्दितुं वा न सक्काति आकासो, ध. स. अड्ड. 358; — निस्सित त्रि., तत्पु. स. [आकाशधातुनिश्चित], आकाश-धातु पर आधारित सम्पूर्ण उपादारूप — आकासधातुं न अत्ततो उपगच्छिं न व आकासधातुनिस्सितं अतानं, म. नि. 3.80; आकासधातुनिस्सितपदे पन अविनिभोगवसेन सब्बम्पि भूतुपादारूपं आकासधातुनिस्सितं नाम, म. नि. अड्ड. (उप.प.) 3.64-65.

आकासन नपुं, आ + व्कस से व्यु., क्रि. ना. [आकर्षण], अपनी ओर खींच कर ले आना — तण्हा हि रूपादीनं आकासनतो आकासो'ति वुच्चति, सु. नि. अड्ड. 2.259.

आकासनभगत त्रि., तत्पु. स. [आकाशनभगत], आसमान में चल रहा, आकाश में उड़ रहा, आकाश-नामक नभमण्डल में जा रहा — ता पु., प्र. वि., ब. व. — दिसोदिसं ओकिरन्ति, आकासनभगता मरु बु. वं. 2.50; आकासनभगताति आकाससङ्घाते नभसि गता, बु. वं. अड्ड. 102.

आकासनिमित्त नपुं, तत्पु. स. [आकाशनिमित्त], आकाश का चिह्न या आलम्बन — गोचर त्रि., ब. स., आकाश को अपना आलम्बन बनाने वाला (प्रथम अरुपध्यान का चित्त) — रे सप्त. वि., ए. व. — ... आकासनिमित्तगोचरे विज्जाणे चित्तं उपसंहरतो, विसुद्धि. 1.315; आकासनिमित्तं गोचरो एतस्साति आकासनिमित्तगोचरं, तस्मिं आकासनिमित्तगोचरे पटमारूप्यविज्जाणे, विसुद्धि. महाटी. 1.366.

आकासनिस्सित त्रि., तत्पु. स. [आकाशनिश्चित], आकाश पर आश्रित, आकाश के सहारे विद्यमान — ता पु., प्र. वि., ब. व. — ये आकासनिस्सिता पाणा ते न खादेय्युं, स. नि. 1(2).88; आकासनिस्सिताति डंसमकसकाककुललादयो, स. नि. अड्ड. 2.97.

आकासन्त पु., तत्पु. स. [आकाशान्त], आकाश का छोर, आकाश का एक शिरा, संसार का अन्तिम छोर — न्तं प्र. वि., ए. व. — ब्रह्मा वाळमिगाकिण्णं, आकासन्तव दिस्सति, जा. अड्ड. 6.106; आकासन्तवाति एतं वनं आकासस्स अन्तो विय हुत्वा दिस्सति, जा. अड्ड. 6.106.

आकासपदुम नपुं, तत्पु. स. [आकाशपदम], एक पुष्पयुक्त पौधा — मा प्र. वि., ब. व. — ओगताकासपदुमा, महिया पुष्पमुग्गतं, थेरीगा. अड्ड. 175.

## आकासफुट्ट

12

## आकासानञ्चायतन

**आकासफुट** त्रि., तत्पु. स. [आकाशस्पृष्ट], शा. अ., आकाश को स्पर्श कर रहा, आसमान को छू चुका, ला. अ., आकाश को अपना आलम्बन बना चुका - टे नपुं. सप्त. वि., ए. व. - आकासफुटे विज्ञाणे विज्ञाणञ्चायतनचित्तं अप्पेति, विसुद्धि. 1.321; आकासफुटे विज्ञाणेति कसिणुग्घाटिमाकासं फरित्वा पवत्ते पठमारुणविज्ञाणे आरम्भणभूते ..., विसुद्धि. महाटी. 1.376.

**आकासभूत** त्रि., [आकाशभूत], आकाश के समान अनाच्छादित, आसमान की भांति खुला हुआ, बाधा रहित, बे-रोक-टोक - ता पु., प्र. वि., ब. व. - आकासभूता तेपज्ज, धुवं बुद्धो भविस्ससि, बु. वं. 2.105; आकासभूताति ते कुट्टकवाटपब्बता आयरणं तिरोकरणं कातुं असक्कोन्ता, अजटाकासभूताति अत्थो, बु. वं. अट्ट. 1.16.

**आकासमण्डल** नपुं., [आकाशमण्डल], शा. अ., नभमण्डल, आकाश का घेरा, ला. अ., आकाश को आलम्बन बनाकर किए जा रहे आकाशकसिण-ध्यान में देखा गया आकाशमण्डल - लं प्र. वि., ए. व. - पटिभागनिमित्तमाकासमण्डलमेव हुत्वा उपह्वाति, वड्डियमानञ्च वड्डति, विसुद्धि. 1.167.

**आकासवासी** त्रि., [आकाशवासिन्], आकाश में बसने वाला, अन्तरिक्ष में रहने वाला - सिनो पु., प्र. वि., ब. व. - ओसधीतिणवासी च, ये च आकासवासिनो अप. 2.98.

**आकासविज्ञाण** नपुं., कर्म. स. [आकाशविज्ञान], आकाश-विषयक चित्त, आकाश को आलम्बन बनाने वाला अरूपध्यान का चित्त - णं द्वि. वि., ए. व. - तं पनाकासविज्ञाणं, अक्त्वा मनसा पुन, अभि. अच. 10.11.

**आकाससदिस** त्रि., [आकाशसदृक्], आकाश जैसा (विस्तृत, अनाच्छादित या अलिप्त) - सो पु., प्र. वि., ए. व. - यससा वित्थतो वीरो, आकाससदिसो, मुनि. अप. 2.160; सेन तू वि., ए. व. - आकाससमेनाति अलग्गनट्टेन चैव अपलिबुद्धट्टेन च आकाससदिसेन, अ. नि. अट्ट. 3.104.

**आकाससन्निस्सय** पु., तत्पु. स. [आकाशसन्निश्चय], आकाश का स्पष्ट आधार, - यं द्वि. वि., ए. व. - तत्थ'आकाससन्निस्सित'न्ति आकाससन्निस्सयं लद्धाव उपपज्जति ..., घ. स. अट्ट. 3.18.

**आकाससन्निस्सित** त्रि., [आकाशसन्निश्चित], आकाश पर आधारित, आकाश पर आश्रित (स्रोत-विज्ञान) - तं नपुं. प्र. वि., ए. व. - एवमेव स्रोतं तम्पे बिलज्झासयं आकाससन्निस्सितं कण्णच्छिद्दकूपकेयेव अज्झासयं करोति,

घ. स. अट्ट. 348; ..., आकाससन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उपपज्जति स्रोतविज्ञाणं, घ. स. अट्ट. 3.18.

**आकाससम** त्रि., [आकाशसम], आकाश के समान (अलिप्त, व्यापक, अप्रतिबाधित) - मं, नपुं. प्र. वि., ए. व. - तदाकाससमं चित्तं, अज्झत्तं सुसमाहितं, धेरगा, 1.159; - मेन तू. वि., ए. व. - आकाससमेनाति अलग्गनट्टेन चैव अपलिबुद्धट्टेन च आकाससदिसेन, अ. नि. अट्ट. 3.104;

... तदारम्भणञ्च सत्त्वावन्तं लोक आकाससमेन चेतसा विपुलेन ... अब्बाबज्जेन फरित्वा विहरिस्सामाति, म. नि. 1.180; - चित्त त्रि., ब. स. [आकाशसमचित्त], आकाश के समान स्वच्छ एवं निर्मल मन वाला - स्स पु. घ. वि., ए. व. - आकाससमचित्तस्स, निप्पपञ्चरस्स ज्ञायिनो, अप. 1.250; - मानस त्रि., ब. स., आकाश के समान (स्वच्छ एवं आलम्बन-रहित) चित्त वाला - सो पु., प्र. वि., ए. व. - निप्पपञ्चो निरालम्बो, आकाससममानसो, अप. 2.16.

**आकाससुत्त** नपुं., स. नि. के अनेक सुतों का शीर्षक, स. नि. 2(2).214; 215; 3(1).60.

**आकासातिक्कम** पु., तत्पु. स. [आकाशातिक्रम], (आलम्बन रूप में) आकाश का अतिक्रमण, आकाश को पार कर जाना - तो प. वि., ए. व. - एतासु हि ..., आकासातिक्कमतो दुतिया, घ. स. अट्ट. 253.

**आकासानञ्च** नपुं., आकास + अनन्त + च, अथवा आकास + आनञ्च के योग से व्यु. [आकासानन्त्य], आकाश की अनन्तता, अन्तरहित या सीमारहित आकाश - ज्वं प्र. वि., ए. व. - आकासानन्तोयेव आकासानञ्चं, पटि. म. अट्ट. 1.78; आकासं अनन्तं आकासानन्तं, आकासानन्तमेव आकासानञ्चं, घ. स. अट्ट. 248; आकासञ्च तं अनन्तञ्चाति आकासानन्तं ... आकासानन्तमेव आकासानञ्चं, सकत्थे भावपच्चयवसेन, अभि. वि. टी. 93.

**आकासानञ्चायतन** नपुं., तत्पु. स., आकास + आनञ्च + आयतन के योग से व्यु. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतन], 1. आकाश की अनन्तता का वह क्षेत्र, जो चार अरूप ध्यानों में प्रथम अरूप ध्यान वाले चित्त का आलम्बन रहता है, 2. अरूप ब्रह्मलोकों में प्रथम का नाम, क्योंकि इसमें निवास करने वाले प्राणियों को आकाश की अनन्तता का बोध हो जाता है अथवा वे प्रथम अरूप ध्यान को भावित किए हुए होते हैं, 3. नौ अनुपुब्बविहारों/समापत्तियों के बीच पांचवां अनुपुब्बविहार तथा विविध विमोक्षों में से एक - नं प्र. वि., ए. व. - आकासानञ्चायतनं ... अनन्तं, आकासं अनन्तं

## आकाशानञ्चायतन

13

## आकाशानञ्चायतन

आकाशानन्तं आकाशानन्तमेव आकाशानञ्चं, तं आकाशानञ्चं  
अधिष्ठानद्वयेन आयतनमस्स ससम्पयुत्तधम्मस्स ज्ञानस्स देवानं  
देवायतनमिवाति आकाशानञ्चायतनं, विसुद्धि. 1.321; अयं  
आकाशानञ्चायतनकम्मद्वाने वित्थारकथा, विसुद्धि. 1.321;  
4. आकाश की अनन्तता का क्षेत्र (आकिञ्चञ्चायतन)  
अरुपध्यान भी है और अरुपध्यान की भावना करने वाले  
चित्त का आलम्बन भी -- आकाशानञ्चायतनं  
समतिक्कम्माति पुब्बे वुत्तयेन ज्ञानमि आकाशानञ्चायतनं  
आरम्भणमि ..., पटि. म. अट्ठ. 2.143; सब्बसो रूपसञ्ज्ञानं  
समतिक्कमा ... नान्तसञ्ज्ञानं अमनसिकारा अनन्तो  
आकासोति, आकाशानञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरति, दी.  
नि. 1.163-64; 5. आकाशानन्त्यायतन-ध्यान को प्राप्त  
योगी के चित्त में समस्त रूप संज्ञाएं निरुद्ध हो जाती हैं  
— नं द्वि. वि., ए. व. — आकाशानञ्चायतनं समापन्नस्स  
रूपसञ्ज्ञा निरुद्धा होति, अ. नि. 3(1).218; 6. क्या  
आकाशानञ्चायतन असंस्कृत धर्म है? — आकाशानञ्चायतनं  
असङ्गतं, कथा. 271; आकाशानञ्चायतनं ... कुसलतो च  
विपाकतो च किरियतो च, अभि. अव. 104; 7.  
आकाशानन्त्यायन के सम्बन्ध में अनेक मिथ्यादृष्टियां हैं —  
आकाशानञ्चायतनं समापन्नस्स सतो रूपसङ्गता  
सञ्ज्ञामनसिकारा विसेसाय संवत्तन्तीति न युज्जति देसना,  
नेत्ति. 24; आकाशानञ्चायतनं आकाशानञ्चायतनतो  
सञ्ज्ञानाति, ... सञ्जत्ता ... मज्जति, ... अपरिञ्जातं तस्माति  
वदामि, म. नि. 1.3; — कम्मद्वान नपुं., विसुद्धि. के एक  
खण्ड-विशेष का शीर्षक, विसुद्धि. 1.316-321; —  
किरियचित्त नपुं., तत्पु. स.  
[आकाशानन्त्यायतनक्रियाचित्त], आकाश की अनन्तता को  
आलम्बन बनाने वाला अरुपभूमि का क्रियाचित्त —  
आकाशानञ्चायतनकिरियचित्तं, ..., इमानि चत्तारिपि  
अरूपावचरकिरियचित्तानि नाम, अभि. ध. स. 5; —  
कुसलचित्त नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनकुशलचित्त], आकाश की अनन्तता को  
आलम्बन बनाने वाले अरुप भूमि के चार कुशलचित्तों में  
प्रथम चित्त — आकाशानञ्चायतनकुसलचित्तं, ... इमानि  
चत्तारिपि अरूपावचरकुसलचित्तानि नाम, अभि. ध. स. 5;  
अथ वा आकाशानञ्चं आयतनं अस्साति आकाशानञ्चायतनं,  
ज्ञानं तेन सम्पयुत्तं कुसलचित्तं  
आकाशानञ्चायतनकुसलचित्तं, अभि. ध. वि. टी. 93; —  
कुसलवेदना स्त्री., तत्पु. स.  
[आकाशानन्त्यायतनकुशलवेदना], आकाश की अनन्तता

को आलम्बन बनाने वाले अरुपध्यान के प्रथम चित्त में  
उदित कुशल वेदना — आकाशानञ्चायतनकुसलवेदना  
सुखुमा आकाशानञ्चायतनकुसलवेदना ओकारिका ..., विम.  
अट्ठ. 16; — खन्ध पु., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनस्कन्ध],  
स्कन्ध या राशि के रूप में आकाशानन्त्यायतन-नामक प्रथम  
अरुपध्यान अथवा इस ध्यान वाला चित्त — न्धे सत्त. वि.,  
ए. व. — आकाशानञ्चायतनखन्धो विपस्सन्तस्स  
विपस्सनुपेक्खा आरम्भणवसेन आकाशानञ्चायतननिरिस्सिता,  
म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.198; — चित्त नपुं., कर्म. स.  
[बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनचित्त], अरुपध्यान का वह  
चित्त, जो आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन  
बनाता है — तस्सेवं ... पथवीकसिणादीसु रूपावचरचित्तं  
विय आकासे आकाशानञ्चायतनचित्तं अप्पोति, विसुद्धि. 1.317;  
— ज्ञान नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनध्यान],  
वह अरुपध्यान, जिसमें आकाश की अनन्तता पर चित्त को  
एकाग्र किया जाता है — नेन तृ. वि., ए. व. — वुत्तप्पकारेन  
हि आकाशानञ्चायतनज्झानेन सम्पयुत्तं पठमं  
विज्जाणञ्चायतनादीहि दुतियततियचतुत्थानि, विसुद्धि. 2.80;  
— धातु स्त्री., कर्म. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनधातु],  
ध्यान के आलम्बन के रूप में अनन्त आकाश (नामक  
तत्त्व) — ..., आकाशानञ्चायतनधातु, ... सत्त धातुयोति,  
आकाशानञ्चायतनमेव आकाशानञ्चायतनधातु, स. नि.  
अट्ठ. 2.118; — निस्सित त्रि., तत्पु. स. [बौ. सं.  
आकाशानन्त्यायतननिश्चित], आकाशानन्त्यायतन-नामक ध्यान  
अथवा इस ध्यान के आलम्बन पर आश्रित — ता स्त्री., प्र.  
वि., ए. व. — उपेक्खा नानत्ता नान्तसिता, ..., उपेक्खा  
एकत्ता एकत्तसिता, उपेक्खा ... आकाशानञ्चायतननिरिस्सिता,  
म. नि. 3.268; यस्मा पन द्वे वा तीणि वा  
आकाशानञ्चायतनानि वा विज्जाणञ्चायतनादीनि वा नत्थि,  
तस्मा एकत्तं एकत्तसितं विभजन्तो अत्थि, भिक्खवे, उपेक्खा  
आकाशानञ्चायतननिरिस्सितातिआदिमाह, म. नि. अट्ठ.  
(उप.प.) 3.198; — भव पु., कर्म. स. [बौ. सं.  
आकाशानन्त्यायतनभव], आकाशानन्त्यायतन-ध्यान-चित्त के  
विपाक के रूप में प्राप्त इसी नाम वाला भव (जन्म,  
अस्तित्व) — आकाशानञ्चायतनूपगोतिआदीसु पन  
आकाशानञ्चायतनभवं उपगोति, दी. नि. अट्ठ. 1.103;  
— भूमि स्त्री., कर्म. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनभूमि],  
अरूपावचर भूमि का एक प्रभेद, अरुपध्यान की भावना कर  
रहे चित्त की वह अवस्था, जिसमें आकाश की अनन्तता पर  
चित्त को एकाग्र किया जाता है — आकाशानञ्चायतनभूमि



## आकासानञ्चायतन

14

## आकासानन्त

विज्ञाणञ्चायतनभूमि ... वेति अरुपभूमि चतुर्बिधा होति, अभि. ध. सं. 32; - विपाकचित्त नपुं, तत्पु. सं. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनविपाकचित्त], यह चित्त, जो आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन बनाकर की गई ध्यानभावना के विपाक के रूप में उदित होता है, अरुपभूमि के चार प्रकार के विपाकचित्तों में प्रथम - आकासानञ्चायतनविपाकचित्तं, ... इमानि चत्तारिपि अरूपावचरविपाकचित्तानि नाम, अभि. ध. सं. 5; - सञ्ज्ञा स्त्री, तत्पु. सं. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसञ्ज्ञा], आकाश की अनन्तता पर ध्यान करते हुए प्राप्त होने वाला संज्ञा-ज्ञान - ज्ञं द्वि. वि., ए. व. - ... पथवीसञ्ज्ञं, आकासानञ्चायतनसञ्ज्ञं पटिच्च मनसि करोति एकत्वं, तस्स आकासानञ्चायतनसञ्ज्ञाय चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिद्वति अधिमुच्चति, म. नि. 3.149; - य तु. वि., ए. व. - आकासानञ्चायतनसञ्ज्ञाय पथवीसञ्ज्ञं ..., म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.112; - सञ्ज्ञी त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसञ्ज्ञि], आकाश की अनन्तता के विषय में संज्ञा-ज्ञान को प्राप्त कर चुका - ज्ञी पु., प्र. वि., ए. व. - तथारूपो समाधिपटिलाभो यथा ... न आकासानञ्चायतने आकासानञ्चायतनसञ्ज्ञी अस्स, अ. नि. 3(2).6; - समापत्ताधिमुत्त त्रि., तत्पु. सं. [आकाशानन्त्यायतनसमापत्त्यधिमुक्त], आकाशानन्त्यायतन नामक अरुप ध्यान की प्राप्ति के निमित्त स्वयं को पूरी तरह से लगाया हुआ - त्तो पु., प्र. वि., ए. व. - चतुत्थज्ज्ञानाधिमुत्तो आकासानञ्चायतनसमापत्ताधिमुत्तो ... धिमुत्त, चूळनि. 154; - समापत्ति स्त्री, तत्पु. सं. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसमापत्ति], 1. प्रथम अरुपध्यान की प्राप्ति, आकाश की अनन्तता पर चित्त की समता एवं एकाग्रता की प्राप्ति - अयम्पि खां आकासानञ्चायतनसमापत्ति अभिसङ्गता अभिसञ्चेतयिता, म. नि. 2.15; आकासानञ्चायतनमेव समापत्ति आकासानञ्चायतनसमापत्ति, पटि. म. अट्ठ. 1.78; 2. नौ प्रकार की समाधि-चर्याओं अथवा ध्यानाभ्यासों में आठवीं - नवहि समाधिचरियाहीति ... आकासानञ्चायतनसमापत्ति ... समाधिचरिया, पटि. म. 91; - समापत्तिपटिलामत्थ पु., तत्पु. सं. [आकाशानन्त्यायतनप्रतिलाभार्थ], आकाशानन्त्यायतन नामक अरुपध्यान की प्राप्ति का प्रयोजन - त्थाय च. वि., ए. व. - सो ... अनङ्गणे ... आकासानञ्चायतनसमापत्तिपटिलामत्थाय चित्तं अभिनीहरति

अभिनिन्नामेति आरुप्यमग्सङ्गीति, महानि. 204; - समापत्तिविमोक्ख पु., तत्पु. सं. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसमापत्तिविमोक्ष], आकाशानन्त्यायतन नामक अरुप ध्यान की प्राप्ति से मिलने वाला विमोक्ष - अयं आकासानञ्चायतनसमापत्तिविमोक्खो, पटि. म. 225; - सहगत त्रि., तत्पु. सं. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसहगत], आकाशानन्त्यायतन नामक अरुपध्यान से युक्त या परिपूर्ण - ता पु., प्र. वि., ब. व. - ... आकासानञ्चायतनसहगता सञ्ज्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति, अ. नि. 3(1).248; - सुखमसच्चसञ्ज्ञी त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसूक्ष्मसत्यसञ्ज्ञि], आकाशानन्त्यायतन नामक अरुपध्यान में सूक्ष्म सत्य का संज्ञा-ज्ञान प्राप्त किया हुआ - ज्ञी पु., प्र. वि., ए. व. - आकासानञ्चायतनसुखमसच्चसञ्ज्ञीयेव तस्मिं समये होति, दी. नि. 1.164.

आकासानञ्चायतनूपग त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनोपग], आकाशानन्त्यायतन नामक प्रथम अरुपध्यान के विपाक के बल से अरूपी ब्रह्मलोक में उत्पन्न (देव) - गो पु., प्र. वि., ए. व. - अज्जो अत्ता ... अनन्तो आकासोति आकासानञ्चायतनूपगो, दी. नि. 1.30; आकासानञ्चायतनूपगोति आदीसु पन आकासानञ्चायतनभवं उपगतोति, एवमत्थो वेदितव्वो, दी. नि. अट्ठ. 1.103; - गं नपुं, प्र. वि., ए. व. - अत्थि आकासानञ्चायतनूपगं कम्मन्ति ? आमन्ता, कथा. 272; - गा पु., प्र. वि., ब. व. - आकासानञ्चायतनूपगा देवा दीघायुका चिरद्वितिका सुखबहुलाति, म. नि. 3.146, अत्थि आकासानञ्चायतनूपगा सत्ताति, कथा. 272; आकासानञ्चायतनं उपगच्छन्तीति आकासानञ्चायतनूपगा, अभि. ध. वि. टी. 153; - गो पु. द्वि. वि., ब. व. - हेइतो आकासानञ्चायतनूपगे देवे परियन्तं करित्वा उपरितो नेवसञ्ज्ञानासञ्ज्ञायतनूपगे देवे अन्तोकरित्वा यं एतस्मिं ..., पटि. म. 77; आकासानञ्चायतनूपगोति आकासानञ्चायतनसङ्घातं भवं उपगते, पटि. म. अट्ठ. 1.245; - गानं पु. ष. वि., ब. व. - ... आकासानञ्चायतनूपगानं देवानं सहव्यतं उपपज्जति, अ. नि. 1(1).301; आकासानञ्चायतनूपगानं, भिक्खवे, देवानं वीसति कप्पसहस्सानि आयुष्माणं, अ. नि. 1(1).301.

आकासानन्त पु./नपुं, कर्म. सं. [अनन्ताकाश], अनन्त आकाश, आकाश के तीन प्रभेदों में कसिणुग्घातमाकाश

## आकाशानिलम्पभेद

15

## आकिञ्चञ्ज

नामक प्रभेद, दस कसिणों में से एक — आकासञ्च तं अनन्तञ्चाति आकासानन्तं, कसिणुग्घाटिमाकासो, अभि. ध. वि. टी. 93; आकासो अनन्तो आकासानन्तो, पटि. म. अट्ट. 1.77.

आकाशानिलम्पभेद त्रि., ब. स. [आकाशानिलप्रभेद], आकाश एवं वायु के प्रभेदों वाला (शब्द) — दो पु., प्र. वि., ए. व. — आकाशानिलम्पभेदो देहनिस्सितो चित्तजसदो येव वण्णत्तमुपगतो सदो, सद. 3.603-04.

आकाशामिमुख त्रि., [आकाशामिमुख], आकाश की ओर अभिमुख, आसमान की ओर देख रहा — खो पु., प्र. वि., ए. व. — तथा हि गावो नववुद्धे देवे भूमिं प्रायित्वा प्रायित्वा आकाशामिमुखो हुत्वा वातं आकञ्चन्ति, स. नि. अट्ट. 3.109.

आकासारम्भण त्रि., ब. स. [आकाशालम्बनक], वह ध्यान भावना, जिसमें चित्त का आलम्बन आकाश रहता हो — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ... आकासारम्भणं आकासानञ्चायतनं, विसुद्धि. 1.330.

आकासुक्खिपिय पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, जो आकाश की ओर पुष्पों को फेंक देता था — इत्थं सुदं आयस्मा आकासुक्खिपियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.244.

आकासुपनिस्सय पु., तत्पु. स. [आकाशोपनिश्रय], शब्द के आधार या आश्रय के रूप में आकाश, आकाश का आश्रय — सोतायतनं निस्साय इद्वसम्मतं सदायतनं आलम्बित्वा आकासुपनिस्सयं लभित्वा मनोधातावज्जनानन्तरं एव उप्पज्जति ... सोतविज्जाणं, रूपा. 153, 155 (रो.).

आकिञ्च नपुं., संभवतः आकिञ्ज का अप., अकिञ्चनता की मनोदशा, अरूपध्यान का तृतीय चरण — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — आकिञ्चं नेवसञ्जञ्च, समापज्जि यथक्कमं, अप. 2.209.

आकिञ्चञ्ज 1. नपुं., भाव. [आकिञ्चन्य], शा. अ., कुछ भी शेष न रहने की अवस्था, अकिञ्चनता, समस्त धनसम्पत्ति से रहित होना — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — आकिञ्चञ्जं पत्थयानो, ब्राह्मणो मन्तपारगू, सु. नि. 982; आकिञ्चञ्जन्ति अकिञ्चनभावं परिगृह्यकरणविवेकन्ति वुत्तं होति, सु. नि. अट्ट. 2.271; ला. अ. 1. अरूपावधर-ध्यान की तीसरी अवस्था, जिसमें ध्यान करने वाले साधक का चित्त अधिक सूक्ष्म हो जाता है तथा उसे अनन्त आकाश

एवं अनन्त विज्ञान के रूपरहित आलम्बन स्थूल प्रतीत होने लगते हैं, इस अवस्था में साधक 'नहीं हैं', 'नहीं हैं', 'शून्य है, शून्य है', 'खाली है, खाली है', इस प्रकार की अनुपश्यना करते हुए अनन्त-विज्ञान के विषय में 'कुछ नहीं है' या 'नस्थि किञ्चि' की भावना करता है। दूसरे शब्दों में 'विज्जाणञ्चायतन' के विज्ञान का अभाव है, अन्तर्धान है तथा कुछ भी नहीं है, यह देखता है। इस ध्यान में उपेक्षा एवं एकाग्रता, ये दो ध्यानाङ्ग ही रहते हैं — एत्थं पन नास्स किञ्चनन्ति अकिञ्चनं ... अकिञ्चनस्स भावो आकिञ्चञ्जं, आकासानञ्चायतनविज्जाणापगमस्सेतं अधिवचनं, ध. स. अट्ट. 250; तत्थ आकिञ्चञ्जायतनं किञ्चनं आरम्भणं अस्स नत्थीति आकिञ्चञ्जं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).249; नास्स पटमारूपस्स किञ्चनं अप्पमतकं अन्तमसो भङ्गमतम्पि अवसिद्धं अत्थीति अकिञ्चनं तस्स भावो आकिञ्चञ्जं, पटमारूपविज्जाणाभावो, अभि. ध. वि. टी. 93; नत्थि किञ्चीति नत्थि नत्थि, सुञ्जं सुञ्जं, विवित्तं विवित्तन्ति एवं मनसिकरोन्तोति वुत्तं होति, विसुद्धि. 1.324; ला. अ. 2. निर्वाण, जिसमें किसी भी प्रकार के क्लेश चित्त में शेष नहीं रह जाते, चार आर्यमार्ग एवं आर्यफल — निब्बानम्पि आकिञ्चञ्जं, स. नि. अट्ट. 3. 137; मग्गफलानि ... किलेसानं नत्थिताय आकिञ्चञ्जानि, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).249; 2. त्रि., अकिञ्चनता के साथ जुड़ा हुआ, किसी भी प्रकार के आलम्बनों से रहित, क्लेशरहित, बाधारहित — ज्जा' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आकिञ्चञ्जा चेतोविमुत्ति, म. नि. 1.378; आरम्भणकिञ्चनस्स अभावतो आकिञ्चञ्जा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).248; — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — यदेव तत्थ सच्चं तदभिज्जाय आकिञ्चञ्जयेव पटिपदं पटिपन्नो होति, अ. नि. 1(2).205; आकिञ्चञ्जयेव पटिपदन्ति किञ्चनभावविरहितं निष्पलिबोधं निग्गहणमेव पटिपदं ..., अ. नि. अट्ट. 2.358; — ज्जा' प्र. वि., ब. व. — आकिञ्चञ्जा चेतोविमुत्तियो, म. नि. 1.379; आकिञ्चञ्जा चेतोविमुत्तियो नाम नव धम्मा आकिञ्चञ्जायतनञ्च मग्गफलानि च, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1.1(1).249; — चेतोविमुत्ति स्त्री., कर्म. स. [आकिञ्चन्यचेतोविमुत्ति], चार लोकोत्तर मार्ग, चार आर्य फल एवं आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की अवस्था वाले कुल नौ धर्म — आकिञ्चञ्जा चेतोविमुत्तियो नाम नव धम्मा आकिञ्चञ्जायतनं मग्गफलानि च, स. नि. अट्ट. 3.136; पाठा. आकिञ्चञ्ज, चेतोविमुत्ति, — सम्भव पु.,

## आकिञ्चञ्जसुत्त

16

## आकिञ्चञ्जायतनपटिसंयुत्त

तत्पु. सं. [आकिञ्चन्यायतनसंभव], आकिञ्चन्य के आलम्बन को उत्पन्न करने वाला कर्माभिसंस्कार - वो प्र. वि., ए. व. - आकिञ्चञ्जासम्भवोति वुच्चति आकिञ्चञ्जायतनसंवत्तनिको कम्माभिसंस्कारो, वूळनि. 155; - वं द्वि. वि., ए. व. - आकिञ्चञ्जसम्भवं जत्वा, ... सु. नि. 1121; आकिञ्चञ्जसम्भवं जत्वाति आकिञ्चञ्जायतनजनकं कम्माभिसंस्कारं जत्वा किन्ति पलिबोधो अयन्ति, सु. नि. अहु. 2.293.

आकिञ्चञ्जसुत्त नपुं. सं. नि. के दो सुत्तों का शीर्षक, सं. नि. 2(1).234; 2(2).261.

आकिञ्चञ्जाभिनिवेश त्रि., ब. सं. [आकिञ्चन्याभिनिवेश], अकिञ्चनभाव में अथवा शून्यता में चित्त की प्रवृत्ति या झुकाव रखने वाला - सा पु., प्र. वि., ब. व. - अकिञ्चनभावे निग्गहणभावे चित्तं एतेसं अभिनिविसतीति आकिञ्चञ्जाभिनिवेशा, अ. नि. अहु. 3.122.

आकिञ्चञ्जायतन नपुं., [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतन], 1. अरूपध्यान के चार आलम्बनों में तीसरा आलम्बन, जिसमें अनन्त विज्ञान के अकिञ्चनभाव को चित्त का आलम्बन बनाया जाता है, 2. अकिञ्चनभाव कर्मस्थान वाला तीसरा अरूपध्यान - नं<sup>१</sup> प्र. वि., ए. व. ... एत्थ पन नास्स किञ्चनन्ति अकिञ्चनं, ... अकिञ्चनस्स भावो आकिञ्चञ्जं, आकासानञ्चायतनविज्जाणापगमस्सेतं अधिवचनं, तं आकिञ्चञ्जं अधिद्वानद्वेन आयतनमस्स ज्ञानस्स ... आकिञ्चञ्जायतनं, विसुद्धि. 1.324; नत्थि किञ्चीति आकिञ्चञ्जायतनं नेय्यन्ति, म. नि. 1.372; - नं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. - सब्बसो विज्जाणञ्चायतनं समतिक्कम्म नत्थि किञ्चीति आकिञ्चञ्जायतनं उपसम्पज्ज विहरेय्य, म. नि. 1.52; आकिञ्चञ्जायतनं ... आकिञ्चञ्जायतनपरियोसाना सत्त समापत्तियो मं जानापेस्सि, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).75; - सञ्जग्गन्ति आकिञ्चञ्जायतनं वुच्चति, कस्मा? लोकियानं किच्चकारकसमापत्तीनं अग्गत्ता, आकिञ्चञ्जायतनसमापत्तियहिं ठत्वा नेवसञ्जाना सञ्जायतनमपि निरोधमपि समापज्जन्ति, दी. नि. अहु. 1.277; आकिञ्चञ्जायतनन्ति इदमस्स चतुब्बिधमारम्भणं, अभि. अव. 6; चतुत्थस्स ज्ञानस्स विपाको, आकासानञ्चायतनं आकिञ्चञ्जायतनं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, इमे धम्मा नवत्तब्बारम्भणाति हि वुत्तं, अभि. अव. 104; स्स ष. वि., ए. व. - आकिञ्चञ्जायतनस्स लाभिं ...

समुदाचरन्ति, पटि. म. 32; - कम्मद्वान नपुं., तत्पु. सं. [आकिञ्चन्यायतनकर्मस्थान], अकिञ्चनता का कर्मस्थान, कर्मस्थान या आलम्बन के रूप में विज्ञान का अकिञ्चनभाव - ने सप्त. वि., ए. व. - अय आकिञ्चञ्जायतनकम्मद्वाने वित्थारकथा, विसुद्धि. 1.324.

आकिञ्चञ्जायतनकिरियाचित्त नपुं., तत्पु. सं. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनकिरियाचित्त], अरूपावचर भूमि के चार प्रकार के क्रियाचित्तों में अकिञ्चनभाव को ध्यान का आलम्बन बनाने वाला तथा विपाक उत्पन्न न करने वाला तृतीय चित्त - आकासानञ्चायतनकिरियचित्तं, विज्जाणञ्चायतनकिरियचित्तं आकिञ्चञ्जायतनकिरियचित्तं, नेवसञ्जानासञ्जायतनकिरियचित्तञ्चेति इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकिरियचित्तानि नाम, अभि. ध. सं. 5.

आकिञ्चञ्जायतनकुसलचित्त नपुं., तत्पु. सं. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनकुशलचित्त], अरूपावचर भूमि का तीसरा कुशलचित्त, जिसका आलम्बन अकिञ्चनभाव होता है - तं प्र. वि., ए. व. - आकासानञ्चायतनकुसलचित्तं, विज्जाणञ्चायतनकुसलचित्तं, आकिञ्चञ्जायतनकुसलचित्तं नेवसञ्जानासञ्जायतनकुसलचित्तञ्चेति इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकुसलचित्तानि नाम, अभि. ध. सं. 5.

आकिञ्चञ्जायतनचित्त नपुं., कर्म. सं. [आकिञ्चन्यायतनचित्त], अरूपावचरभूमि का तृतीय चित्त - तं प्र. वि., ए. व. - महग्गतविज्जाणस्स सुञ्जविवित्तनत्थिभावे आकिञ्चञ्जायतनचित्तं अप्पेति, विसुद्धि. 1.323.

आकिञ्चञ्जायतनधातु स्त्री., [बौ. सं. आकिञ्चञ्जायतनधातु], धातु के रूप में अकिञ्चनभाव का क्षेत्र - यायं, भिक्षु. आकिञ्चञ्जायतनधातु - अयं धातु विज्जाणञ्चायतनं पटिच्च पञ्जायति, सं. नि. 1(2).132.

आकिञ्चञ्जायतननिरिस्सित त्रि., तत्पु. सं. [आकिञ्चन्यायतननिरिस्सित], अकिञ्चनभाव पर आश्रित या उस से सम्बद्ध - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अत्थि, भिक्षवे, उपेक्खा आकासानञ्चायतननिरिस्सिता ... अत्थि आकिञ्चञ्जायतननिरिस्सिता, म. नि. 3.268.

आकिञ्चञ्जायतनपटिसंयुत्त त्रि., तत्पु. सं. [आकिञ्चन्यायतनप्रतिसंयुक्त], उपरिवत् - ताय स्त्री., ष. वि., ए. व. - आकिञ्चञ्जायतनपटिसंयुत्ताय च पन कथाय कच्छमानाय न सुस्सूसति, म. नि. 3.40.

## आकिञ्चज्जायतनभव

17

## आकिञ्चज्जायतनसमापत्ति

आकिञ्चज्जायतनभव पु., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनभव], चार प्रकार के अरूपी ब्रह्मलोकों में जन्म, अरूपध्यान के चार चित्तों के विपाक के बल से चार अरूपी ब्रह्माओं के रूप में जन्मग्रहण — वं द्वि. वि., ए. व. — *तत्थ ज्ञानं निब्बत्तेत्या आकिञ्चज्जायतनभवं उपगता आकिञ्चज्जायतननूपगा, चूळनि.* अहु. 56.

आकिञ्चज्जायतनभूमि स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनभूमि], अरूपावचर ध्यान की चार भूमियों में से तृतीय, ध्यानयुक्त चित्त की वह अवस्था, जिसमें अनन्त आकाश एवं अनन्त विज्ञान के अकिञ्चन-भाव या शून्यता की भावना की जाती है — *आकासानञ्चायतनभूमि विज्जाणञ्चायतनभूमि ; आकिञ्चज्जायतनभूमि नेवसज्जानासज्जायतनभूमि षैति अरूपभूमि चतुब्बिधा होति, अभि. ध. स. 32.*

आकिञ्चज्जायतनलामी त्रि., [आकिञ्चन्यायतनलामिन्], अरूपध्यान में अकिञ्चनभाव की विपश्यना करने वाला — नो पु., ष. वि., ए. व. — *नत्थि किञ्चीति परस्सतीति विज्जाणाभावविपरस्सेन नत्थि किञ्चीति परस्सतो, आकिञ्चज्जायतनलामिनोति वृत्तं होति, सु. नि. अहु. 2.293.*

आकिञ्चज्जायतनसंयोजन नपुं., तत्पु. स./कर्म. स. [आकिञ्चन्यायतनसंयोजन], संयोजन या बन्धन के रूप में अकिञ्चनभाव का कर्मस्थान, अकिञ्चनभाव का मानसिक बन्धन — नेन तृ. वि., ए. व. — *आकिञ्चज्जायतनसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तो, नेवसज्जानासज्जायतननाधिमुत्तो पुरिसपुग्गलोति, म. नि. 3.41.*

आकिञ्चज्जायतनसंवर्तनिक त्रि., [आकिञ्चन्यायतनसंवर्तनिक], अकिञ्चन भाव के आयतन या आलम्बन की ओर ले जाने वाला (कर्म का अभिसंस्करण) — को पु., प्र. वि., ए. व. — *... आकिञ्चज्जासम्भवोति वुच्चति आकिञ्चज्जायतनसंवर्तनिको कम्माभिसङ्गारो, चूळनि. 155.*

आकिञ्चज्जायतनसज्जा स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा], आकिञ्चन्य के विषय में (उपादानयुक्त) संज्ञा-ज्ञान — *या व आकिञ्चज्जायतनसज्जा ... एस सक्कायो यावता सक्कायो, म. नि. 3.49; नेवसज्जानासज्जायतनं समापन्नस्स आकिञ्चज्जायतनसज्जा निरुद्धा होति, स. नि. 2(2).213; — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — आकिञ्चज्जायतनसज्जं पटिच्च मनसि करोति एकत्तं, म. नि. 3.150; ... नेवसज्जानासज्जायतनसज्जाय आकिञ्चज्जायतनसज्जं, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.112;*

— य — सप्त. वि., ए. व. — *... तस्स आकिञ्चज्जायतनसज्जाय ... आकिञ्चज्जायतनसज्जायाति पज्जानाति, म. नि. 3.150; — सहगत त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगत], आकिञ्चन्य के आलम्बन की संज्ञा से युक्त तं नपुं., प्र. वि., ए. वि. — यस्मिं समये ... विज्जाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चज्जायतनसज्जासहगतं सुखस्स व पहाना ..., ध. स. 267, 503, 581; तस्मिं आकिञ्चज्जायतनं पवत्ताय सज्जाय सहगतन्ति आकिञ्चज्जायतनसज्जासहगतं, ध. स. अहु. 250.*

आकिञ्चज्जायतनसज्जी त्रि., [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञिन्], आकिञ्चन्य के आयतन या ध्यान के प्रति संज्ञा-ज्ञान रखने वाला — *न आकिञ्चज्जायतने आकिञ्चज्जायतनसज्जी अस्स, अ. नि. 3(2).6; 8; 287.*

आकिञ्चज्जायतनसप्पाय त्रि., ब. स. [बौ. स. आकिञ्चन्यायतनसाम्प्रेय], आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की प्राप्ति में हितकर या उपयुक्त — *या स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अयं, भिक्खावे, दुतिया आकिञ्चज्जायतनसप्पाया पटिपदा अक्खायति, म. नि. 3.47.*

आकिञ्चज्जायतनसमापत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसमापत्ति], शा. अ., आकिञ्चन्य के आयतन अथवा कर्मस्थान की प्राप्ति, ला. अ., नौ प्रकार की समापत्तियों या समाधिचर्याओं में से एक — *नवहि समाधिचरियाहीति ... पठमं ज्ञानं ... चतुत्थं ज्ञानं समाधि चरिया, ... आकिञ्चज्जायतनसमापत्ति ... समाधिचरिया, पटि. म. 91; आकिञ्चज्जायतनसमापत्ति विज्जाणञ्चायतनसज्जाय वुद्धाति, पटि. म. 222; — त्तिं द्वि. वि., ए. व. — आकिञ्चज्जायतनसमापत्तिं ... पटिलामत्थाय वितक्को च विचारो च पीति च सुखञ्च ... पटि. म. 223; — या' प. वि., ए. व. — आकिञ्चज्जायतनसमापत्तिया वुद्धहित्वा नेवसज्जानासज्जायतनं समापज्जि, दी. नि. 2.116; — या' ष. वि., ए. व. — ... आकिञ्चज्जायतनसमापत्तिया ... इमे बहिद्धानुद्धानपटिप्पस्सद्धी चत्तारो विमोक्खा, पटि. म. 224; — विमोक्खा पु., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसमापत्तिविमोक्ष], आकिञ्चन्य आलम्बन वाले अरूपध्यान की प्राप्ति से मिलने वाला विमोक्ष, 68 प्रकार के विमोक्षों में एक, क्खो, प्र. वि., ए. व. — अपि च अद्भुसहि विमोक्खा ... आकिञ्चायतनसमापत्ति*

## आकिञ्चज्जायतनसहगत

18

## आकिण्ण

विमोक्खो, नेवसज्जानासज्जायतनसमापत्ति विमोक्खो, पटि. म. 221; — **लाभी** त्रि., आकिञ्चन्य आलम्बन वाले तृतीय अरूप-ध्यान की प्राप्ति का लाभ पाने वाला — **भी** पु., प्र. वि., ए. व. — *आकिञ्चज्जायतनसमापत्तिलाभी आचरियांति*, आह, जा. अट्ट. 1.388-89.

**आकिञ्चज्जायतनसहगत** त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसहगत], आकिञ्चन्य के आयतन या आधार से युक्त, आकिञ्चन्य के आलम्बन वाला (जवनसंज्ञा एवं आवज्जनचित्त) — ता पु., प्र. वि., ब. व. — *आकिञ्चज्जायतनसहगता सज्जामनसिकारा समुदाचरन्ति*, पटि. म. 32.

**आकिञ्चज्जायतनसुखुमसच्चसज्जा** स्त्री., तत्पु. स., अकिञ्चनता के कर्मस्थान में अन्तर्निहित सूक्ष्म सत्य का ज्ञान — *आकिञ्चज्जायतनसुखुमसच्चसज्जा तस्मिं समये होति*, दी. नि. 1.164.

**आकिञ्चज्जायतनाधिमुत्त** त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनाधिमुत्त], अकिञ्चन-भाव के ध्यानालम्बन या ध्यान की ओर पूरी तरह से स्वयं को लगाया हुआ, आकिञ्चन्य के आयतन की प्राप्ति हेतु समर्पित — **तो** पु., प्र. वि., ए. व. — ... *इधेकच्चो पुरिसपुग्गलो आकिञ्चज्जायतनाधिमुत्तो अस्स, आकिञ्चज्जायतनाधिमुत्तस्स खो, सुनक्खत्त, पुरिसपुग्गलस्स तप्पतिरूपी चेव कथा सण्ठाति*, म. नि. 3.40.

**आकिञ्चज्जायतनूपग** त्रि., [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनोपग], तृतीय अरूप-ध्यान की अवस्था में पहुंचा हुआ, अनन्त-विज्ञान के आलम्बन का अतिक्रमण कर 'कुछ भी नहीं है' अथवा 'शून्य है' की अनुपश्यना करने वाला — **गो** पु., प्र. वि., ए. व. — *अज्जो अत्ता सब्बसो विज्जाणज्जायतनं समतिक्कम्म 'नत्थि किञ्ची'ति आकिञ्चज्जायतनूपगो*, दी. नि. 1.30; — **गा** ब. व. — *अत्थावुसो, आकिञ्चज्जायतनूपगा देवा, इदं सज्जानं अग्गं*, अ. नि. 1(2).187; — **गं** नपुं., प्र. वि., ए. व. — ... *यं तंसंवत्तनिकं विज्जाणं अस्स आकिञ्चज्जायतनूपगं*, म. नि. 3.47.

**आकिञ्चज्जायतनूपपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनोपपत्ति], आकिञ्चन्य के आयतन या आलम्बन बनाने वाले तृतीय अरूप-ध्यान के विपाक के प्रभाव से अरूपी ब्रह्मलोक में उत्पत्ति या जन्म — **या** च. वि., ए. व. — *नायं धम्मो निब्बिदाय ... संवत्तति, यावदेव आकिञ्चज्जायतनूपपत्तियाति*, म. नि. 1.224; *यावदेव*

*आकिञ्चज्जायतनूपपत्तियाति याव सहिकप्पसहस्सायुपरिमाणे आकिञ्चज्जायतनभवे उपपत्ति, तावदेव संवत्तति, न ततो उद्धं*, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).75.

**आकिञ्चज्जाभिनिवेस** त्रि., ब. स. [बौ. सं. आकिञ्चन्याभिनिवेश], अकिञ्चनभाव की ओर सुदृढ़ झुकाव या प्रवृत्ति रखने वाला — **सा** पु., प्र. वि., ब. व. — *आकिञ्चज्जाभिनिवेसा*, अ. नि. अट्ट. 3.122.

**आकिञ्चज्जासमापत्तिका** त्रि., ब. स., आकिञ्चन्य ध्यान की प्राप्ति-स्वरूप उदित होने वाली, चतुर्थ अरूप ध्यान की अनेक हानियों (आदीनवों) में एक — **का** पु., प्र. वि., ए. व. — *आकिञ्चज्जासमापत्तिका ते धम्मानुसमापत्तिका एतस्सा च भूमियं सातानं बालपुथुज्जनानं अनेकविधानि दिट्ठिगतानि उपपज्जन्ति*, पेटको. 266.

**आकिण्ण** त्रि., आ +√किर का भू. क. कृ. [आकीर्ण], शा. अ. 1. अत्यधिक भरा हुआ, खचाखच भरा हुआ, प्रचुर, परिपूर्ण, समृद्ध, संकुल, 2. बिखरा हुआ, फैला हुआ, विपुल, छितराया हुआ, **ला.** अ., संप्रभग्रस्त, अव्यवस्थित, शिथिल, अपवित्र, भीड़-भाड़ के साथ — *सकिण्णाकिण्ण सङ्कुला*, अभि. प. 720; — **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. — *विपुलमि हि 'आकिण्ण'न्ति वुच्चति*, सु. नि. अट्ट. 2.101; *एण्य्यपसदाकिण्णन्ति एण्य्यमिगेहि च पसदमिगेहि च आकिण्णं*, जा. अट्ट. 7.309; — **ण्णा** पु., प्र. वि., ब. व. — *आकिण्णाति परिपुण्णा*, जा. अट्ट. 5.264; — **ण्णं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — ... *आकिण्णं संकिलिद्धं वाचं न भण्य्य*, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.202; — **ण्णानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. — *आकिण्णानीति पक्खित्तानि*, अ. नि. अट्ट. 2.99; — **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. — ... *गामन्ते विहरति आकिण्णो भिक्खूहि ...*, स. नि. 2(2).40; *भगवा एतरहि आकिण्णो विहरति ... विहरामि देवपुत्तेहि*, अ. नि. 1(1).314; *आकिण्णो दुक्खं न फासु विहरति*, उदा. 114; — **ण्णे** नपुं. सप्त. वि., ए. व. — *'वने वाळमिगाकिण्णे, कच्चि हिंसा न विज्जती'ति*, जा. अट्ट. 5.315; *एण्य्यपसदाकिण्णं, नागसंसेवितं वनं*, जा. अट्ट. 7.308; — **कम्मन्त** त्रि., ब. स. [आकीर्णकर्मन्त], अपरिशुद्ध कर्म करने वाला, दारुण कर्म करने वाला — **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. — *एवं आकिण्णकम्मन्तो, कस्मा एसो न वुच्चती'ति*, स. नि. 1(1).237; *आकिण्णकम्मन्तोति एवं अपरिसुद्धकम्मन्तो*, स. नि. अट्ट. 1.262; *तत्थ आकिण्णकम्मन्तोति कक्खळकम्मन्तो दारुणकम्मन्तो*, जा. अट्ट. 3.270; — **जनमनुस्स** त्रि.,

## आकिण्ण

19

## आकिरित्त

तत्पु. स. [जनमनुष्याकीर्ण], लोगों की भीड़ से भरा हुआ - ... आकिण्णजनमनुस्सं पुथुखत्तियब्राह्मणवेस्ससुद्धं ..., मि. प. 2; - तण्डुल त्रि., तत्पु. स. [तण्डुलाकीर्ण], चावलों से भरपूर - ले पु., सप्त. वि., ए. व. - महति ... उदकसम्पुण्णे आकिण्णतण्डुले हेहत्तो अग्गि ... सन्तापेति, मि. प. 124; - त्त नपुं., भाव. [आकीर्णत्व], भरपूर होना, भरपूर होने की अवस्था - त्ता प. वि., ए. व. - आकिण्णत्ता विहारस्स पुस्समानस्स तस्स सा, म. वं. 19.77; - दोस त्रि., ब. स. [आकीर्णदोष], दोषों से भरा हुआ - सो पु., प्र. वि., ए. व. - सो सचे आकिण्णदोसोव होति, आयतिं सवरे न तिड्ढति, महाव. अद्. 280; - मनुस्स त्रि., ब. स. [आकीर्णमनुष्य/मनुष्याकीर्ण], मनुष्यों से भरा हुआ, भीड़-भाड़ वाला - स्सानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. - फीतानि आकिण्णमनुस्सानि सम्पन्नबलवाहनानि तीणि नगरानि पस्सामि, जा. अद्. 4.152; - यक्ख त्रि., ब. स. [आकीर्णयक्ष/यक्षाकीर्ण], यक्षों से भरा हुआ - क्खा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - देवानं आळकमन्दा ... फीता च बहुजना च आकिण्णयक्खा च सुभिक्षा च, दी. नि. 2.110-11; - लुद्ध त्रि., ब. स. [आकीर्णलुब्ध/लुब्धाकीर्ण], लोभियों, लम्पटों या दुष्टजनों से भरा हुआ, अत्यधिक पापी - दो पु., प्र. वि., ए. व. - आकिण्णलुद्धो पुरिसो, धातिघेलं व मक्खितो, जा. अद्. 3.270; आकिण्णलुद्धोति बहुपापो गाळहपापो वा ..., स. नि. अद्. 1.262; - लोम त्रि., ब. स. [आकीर्णलोम], अत्यधिक घने या उलझे हुए बालों वाला - मं द्वि. वि., ए. व. - 'आकिण्णलोमं खो ते भगिनीति, पारा. 193; आकिण्णलोमन्ति जटितलोमं, पारा. अद्. 2.123; - वरलक्खण त्रि., ब. स. [आकीर्णवरलक्षण/वरलक्षणाकीर्ण], उत्तम लक्षणों से युक्त - णो पु., प्र. वि., ए. व. - पिण्डाय अभिहारेसि, आकिण्णवरलक्खणो, सु. नि. 410; आकिण्णवरलक्खणोति सरीरे आकिरित्त्वा विय उपितवरलक्खणो विपुलवरलक्खणो वा, सु. नि. अद्. 2.101; - वालिका स्त्री., कर्म. स. [आकीर्णवालुका], अत्यधिक या प्रचुर मात्रा में बिखेरी हुई बालू - य सप्त. वि., ए. व. - महाचैतियतले आकिण्णवालिकाय बहुतरा भिक्खू अरहतं पत्ताति, स. नि. अद्. 3.216; - विहार पु., तत्पु. स., भीड़-भाड़ में आनन्द लेते हुए रहना - रो प्र. वि., ए. व. - तत्थ सङ्गणिकविहारो होति आकिण्णविहारो, अ. नि. 1(2).97; 98; - विहारता स्त्री., भाव., भीड़-भाड़ के बीच रहने की प्रवृत्ति - य तु.

वि., ए. व. - सो ताय आकिण्णविहारताय उक्कण्ठितो ... विहरामि, ध. प. अद्. 1.35.

आकिरण नपुं., आ + रकिर से व्यु., क्रि. ना. [आकिरण], चारों ओर बिखेर देना, इधर-उधर छितरा देना, फैला देना - वट्ठु आकिरणे, सद्. 2.534.

आकिरति आ + रकिर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकिरति], 1. चारों ओर फैला देता है, बिखेर देता है, ऊपर की ओर छितरा देता है, 2. भर देता है, ढेर लगा देता है - कबळे कबळे सूपं आकिरति, मि. प. 217; सो इमस्मिं सासने कचवरं आकिरति, ध. प. अद्. 1.310; - सि म. पु., ए. व. - रजमाकिरत्ती अहिताय, सन्ते गरहसि किब्बिसकारी, सु. नि. 670; - न्ति प्र. पु., ब. व. - ... देवता दिव्वं ओजं पत्ते आकिरन्ति, मि. प. 217; - ते वर्त., आत्मने., प्र. पु., ए. व. - भिय्यो आकिरते रजं, स. नि. 1(1).58; आकिरते रजन्ति अतिरेकं उपरि किलेसरजं आकिरति, स. नि. अद्. 1.97; - न्तो वर्त., कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - अञ्जस्स भाजने आकिरन्तो ओमसति, पाचि. 258; - न्ते सप्त. वि., ए. व. - ... उदके आकिरन्ते अल्लतं वा पल्लवितहरितभावो वा न भवेय्य, मि. प. 151; ... पिण्डपातं ..., आकिरन्तेपि अतिक्कन्तेपि न जानन्ति, पाचि. 256; - न्ती स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ... पत्ते आकिरन्ती हत्थानञ्च ... अग्गहेसि, पारा. 16; - तु अनु. प्र. पु., ए. व. - ... वालुकं आहरित्वा इमस्मिं ठाने आकिरतु, उदा. अद्. 22; - र म. पु., ए. व. - इधं मे पत्ते आकिराति, पारा. 16; - थ ब. व. - इधं न आकिरथाति आकिरित्तं, पाचि. अद्. 109; - रेय्युं विधि., प्र. पु., ब. व. - एकस्मा सकटतो रतनं गहेत्वा एकस्मिं सकटे आकिरेय्युं, मि. प. 224; - रि अद्य., प्र. पु., ए. व. - साधूति सो पटिस्सुत्त्वा, दानं विपुलमाकिरि, पे. व. 176; - रिं अद्य., उ. पु., ए. व. - पुराणपुलिनं वालुकं छड्ढत्वा सुद्धं पण्डरं पुलिनं आकिरिं सन्थरि अप. अद्. 2.39; - रिसु प्र. पु., ब. व. - न सब्बधज्जानिपि आकिरिसु, पे. व. 456; - रित्त्वा पू. का. कृ. - ... पादपंसूनि गहेत्वा उपरिमुद्धनि आकिरित्त्वा ..., चूळव. 335; - तब्बा सं. कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - पच्छिं पन गहेत्वा सलाका पीठके आकिरित्तं, चूळव. अद्. 101; - तब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. - इधं न आकिरथाति आकिरित्तं, पाचि. अद्. 109.

आकिरित्त नपुं., आ + रकिर के भू. क. कृ. का भाव. [आकीर्णत्व], भरपूर होना, पूर्ण रूप से भरा हुआ होना -

## आकिरियन्ति

20

आकोटन

ता प. वि., ए. व. — तस्मिं सकटे धञ्जस्स पन आकिरितता धञ्जसकटन्ति जनो वोहरति, मि. प. 169.

**आकिरियन्ति** आ + किरि के कर्म. वा. का वर्त. कृ., पु., प्र. वि. व. [आकीर्यन्ते], चारों ओर से भर दिए जाते हैं, परिव्याप्त कर दिए जाते हैं, प्रकाशित किए जाते हैं — तस्मिं तस्मिं सङ्गहे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्गारादिगहणेहि पकासीयन्तीति आकारा, विसुद्धि. महाटी. 1.210; ... अतीतादीसु तत्थ तत्थ आकिरियन्तीति आकारा, अभि. ध. वि. टी. 210; ते हि अञ्जमञ्जविधुरेन वेदयितारूपेण आकिरियन्ति पञ्जायन्तीति आकाराति वुच्चन्ति, दी. नि. टी. (लीन.) 2.89.

**आकुच्छ / आगुण्ड** पु., गोह — गोधा कुण्डोप्यथो कण्ण जलूका, अभि. प. 622; पाठा. आकुच्च; — च्छा प्र. वि., ब. व. — आकुच्छा पचलाका च, जा. अड्ड. 7.306; आकुच्छाति गोधा, जा. अड्ड. 7.307.

**आकुड्ड** त्रि., आ + कुस् का भू. क. कृ. [आकुष्ट], निन्दित, डांटा या फटकारा गया — एवं सीलितो, रक्खितो, खन्तो, आकुड्डो, रुड्डो, ... अमतो, मो. व्या. 5.60.

**आकुमारं** अ., [आकुमारं], कुमार अवस्था तक, कौमार्य—अवस्था—पर्यन्त — अभिविधिम्हि आकुमारं यसो कच्चायनस्स, सद. 3.880.

**आकुल** त्रि., [आकुल], 1. भरा हुआ, परिपूर्ण, खचित, प्रभावित, प्रभाव से ग्रस्त, स. प. के अन्त. — ला पु., प्र. वि., ब. व. — ... संसिखितधब्धिजालामालाकुला समन्ता, मि. प. 149; एको किर पुरिसो चण्डसोताय बाळमच्छाकुलाय नदिया पारं गन्तुकामो ..., अ. नि. अड्ड. 2.350; 2. घबराया हुआ, विक्षुब्ध, उद्विग्न, बेचैन, विपत्ति में फंसा हुआ, व्याकुल — लं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — सुजा थोकं आकुलं विय हुत्वा ..., ध. प. अड्ड. 1.239; यथा पन आकुलं तन्तं कज्जियं दत्वा कोच्छेन पहटं तत्थ तत्थ गुळकजातं होति गण्ठिबद्धं स. नि. अड्ड. 2.84; तस्मिं सलाकणं आकुलं करोत्ते ..., जा. अड्ड. 1.129.

**आकुलक** त्रि., आकुल से व्यु., व्याकुल, बेचैन — धम्मस्स ... एवमयं पजा तन्ताकुलकजाता कुलगण्ठिकजाता ... नातिवत्ति, दी. नि. 2.43.

**आकुलता** स्त्री., आकुल का भाव. [आकुलता], व्याकुलता, बेचैनी, विपत्ति — य प. वि., ए. व. — तं चण्डमीनाकुलताय आकङ्कित्वा अनयव्यसनं पापेति, स. नि. अड्ड. 2.273.

**आकुलभाव** पु., तत्पु. स. [आकुलभाव], घबराहट, व्याकुलता, भौचक्कापन — वो प्र. वि., ए. व. — दिसाडाहोति ...

दिसाकालुसियं अग्गिसिखूमसिखादीहि आकुलभावो विय दी. नि. अड्ड. 1.84.

**आकुलयन्तो** आकुल के ना. धा. का वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., भरता सा हुआ, विखराता सा हुआ — आलोळयमानो वालिकाकचवरानि आकुलयन्तो, विसुद्धि. महाटी. 1.118.

**आकुलव्याकुल** त्रि., [आकुलव्याकुल], बुरी तरह से घबराया हुआ या बेचैन — ला पु., प्र. वि., ब. व. — एवं सत्ता इमाय तण्हाय परियोनद्धा आकुलव्याकुला न सक्कोत्ति, अ. नि. अड्ड. 2.382; तत्थ ... एवमादिद्वित्तिसकुलपभेदा किमयो आकुलव्याकुला ... निवसन्ति, खु. पा. अड्ड. 44.

**आकुलसमाकुल** त्रि., आपस में एक दूसरे से उलझे हुए, बुरी तरह से फंसे हुए — ला पु., प्र. वि., ब. व. — ... एते पुष्पूगगफलूपगुरुक्खा अञ्जमञ्जं सङ्गहसाखताय परिणामिता आकुलसमाकुला, जा. अड्ड. 7.161.

**आकुलाकुल** त्रि., बुरी तरह से बेचैन या घबराहट से पीड़ित — लो पु., प्र. वि., ए. व. — बोधिरत्तो ... विसिञ्जिभूतो आकुलाकुलो तुरित्तुरितो ... यज्जि, मि. प. 208; — ला ब. व. — महावाता ... आकुलाकुला वायन्ति ... विनमन्ति, मि. प. 124.

**आकोटक** पु., देवों या देवपुत्रों का एक वर्ग विशेष — को प्र. वि., ए. व. — अथ खो ... देवपुत्ता असमो च सहलिय नीको च आकोटको च ... येन भगवा तेनुपसङ्गमिसु, स. नि. 1(1).80; पच्चभासीति अयं आकोटको इमं स नग्गनिरिसिरिकानं ..., स. नि. अड्ड. 1.113.

**आकोटन'** नपुं., आ + कुट से व्यु., क्रि. ना., कूटना, पीटना, खटखटाना, दबाना, प्रहार करना — नेन त्. वि., ए. व. — आकोटितपच्चाकोटितानीति एकस्मिं पस्से पाणिना वा मुग्गरेन वा आकोटनेन आकोटितानि ..., स. नि. अड्ड. 2.211; तस्स आकोटनेन सद्दो निव्वत्तित्वा यथागतिगमनपथमत्थकं गच्छति, मि. प. 281; ... पथवियं आकोटनवसेन सम्पत्तिमट्ठं, स. नि. 3.51; — कखम त्रि., कूटने-पीटने को सहन करने में सक्षम — मो पु., प्र. वि., ए. व. — मक्कटच्छापको रङ्गक्खमो हि खो, नो आकोटनक्खमो, नो विमज्जनक्खमोति, म. नि. 2.54; आकोटनक्खमोति सविज्जाणकस्स ताव आकोटनफलकं ठपेत्वा कुच्छियं आकोटितस्स कुच्छि भिज्जति, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.68; — फलक नपुं., तत्पु. स., कूटने-पीटने के लिए प्रयुक्त तख्ता या फलक — के सप्त. वि., ए. व. — आकोटनक्खमोति सविज्जाणकस्स ताव

## आकोटन

21

## आख्यात / अख्यात

आकोटनफलकं ठपेत्वा ... भिज्जाति, म. नि. अ. 2.68.

आकोटन<sup>२</sup> त्रि., कूटने-पीटने वाला, कुटाई पिटाई करने वाला, उत्पीडक - नी स्त्री., प्र. वि., ए. व. - पञ्जा आकोटनी राज, तत्थ अत्ताव सारथि, जा. अ. 7.142; ... सिन्धवे आकोटत्वा निवारणपतोदयद्धि विय पञ्जा आकोटनी होतु, जा. अ. 7.144.

आकोटना स्त्री., पीटना, प्रहार करना - ... यथा, महाराज, आकोटना, एवं वितक्को दहब्बो, मि. प. 64.

आकोटापेति आ + कृट् के प्रेर. का वर्त. प्र. पु., ए. व., पिटवाता है, बजवाता है - अञ्जातिकाय ... पुराणचीवरं धोवापेति रजापेति आकोटापेति, पारा. 316; - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - ... युद्धभरि आकोटापेत्तो तं ठानं अगमासि, जा. अ. 3.319; - त्वा पू. का. कृ. - ... बलिभरि आकोटापेत्वा युद्धाय गतो, जा. अ. 3.138; - पेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - यो पन भिक्षु अञ्जातिकाय भिक्षुनिया पुराणचीवरं धोवापेय्य वा रजापेय्य वा आकोटापेय्य वा, निरसगियं पावेतियंति, पारा. 316.

आकोटित त्रि., आ + कृट् का भू. क. कृ., पीटा गया, कूटा गया, प्रहार किया गया, खटखटाया गया - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - कंसथालं आकोटितं पच्छा अनुरवति अनुसन्दहति, मि. प. 64; ... चन्दफलकं वा सारफलकं वा आकोटितं विसमाणि, म. नि. अ. 2.68; (मू.प.) 1(1).403; आकोटितञ्चेव परिवत्तेत्वा पुनपुन आकोटितञ्च, म. नि. अ. 2.68; - तानि पु., प्र. वि., ब. व., (लिङ्ग का विपर्यय) - ... तत्थ यानि तानि रुक्खानि दह्बानि सारवन्तानि तानि कुठारिपासेन आकोटितानि कक्खळं पटिनदन्ति, अ. नि. 3(1).18; वासिया आकोटितखीरुक्खो विय अहोसि, जा. अ. 1.290; - पच्चाकोटित त्रि., बार बार पीटा गया या पछाड़ा गया (वस्त्र) - तानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. - ... भगवतो मातुच्छापुत्तो आकोटितपच्चाकोटितानि चीवरानि पारुपित्वा ..., स. नि. 1(2).254.

आकोटेति / आकोट्टेति आ + कृट् के प्रेर. का वर्त. प्र. पु., ए. व. [बौ. सं. आकोटयति], 1. कूटता है, पीटता है, प्रहार करता है, चोट पहुंचाता है, रौंदता है - सत्तमयुगे ... आदाय सब्बपुरिमतो पड्ढाय पतोदलद्धिया गोणे आकोटेति, ध. स. अ. 128; - न्ति ब. व. - ब्राह्मणो च ... अञ्जमञ्जं आकोटेत्ति, पे. व. अ. 47; - यन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - आकोटयन्तो ते नैति, सिविराजस्स

पेक्खतो, जा. अ. 7.318; 326; - न्ती वर्त. कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अथेका ... आदाय यद्धिया भूमिं आकोटेन्ती आगच्छि, जा. अ. 3.251; - टियमानो कर्म. वा. वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. - रुक्खो ... छिद्वावछिद्वा वाते पहरन्ते आकोटियमानो विय अह्वासि, जा. अ. 3.434; - हि अनु., म. पु., ए. व. - आकोटेहीति आणापेति, पारा. 316; - थ ब. व. - पाणिना आकोटेथ ... लेड्डना ... दण्डेन ... सत्थेन ... ओधुनाथ सन्धुनाथ निद्धुनाथ, दी. नि. 2.250; - य्य विधि., प्र. पु., ए. व. - यो आकोटेय्य, आपत्ति दुक्कटस्साति, चूळव. 259; - सि अच., प्र. पु., ए. व. - इमं भिक्षुं आकोटेसीति, चूळव. 358; आकोटेसीति उक्खितं फरसुं निग्गहेतुं असक्कोत्तो मनुस्सानं ... छिन्दि, पाचि. अ. 22; - सुं ब. व. - पाणिना आकोटेसुं ... ओधुनिसु सन्धुनिसुं निद्धुनिसु, दी. नि. 2.250; - तुं निमि. कृ. - पाणिना आकोटेतुन्ति, महाव. 377; - त्वा पू. का. कृ. - घोरा इमे, नयिमे भिक्षूति - आकोटेत्वा पक्कमिसु, चूळव. 360; - त्वान उपरिवत् - आकोटयित्वानाति अप्पोठेत्वा, वि. व. अ. 269; - तब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - न च तेन सामणरो आकोटेत्तब्बो, चूळव. 259; 2. खटखटा कर (द्वार के साथ) - ... द्वारं आकोटेत्वा कुटुम्बिकस्स गेहं अगमासि, जा. अ. 1.233; 3. ठोक-बजाकर (मिट्टी के बर्तनों के पक्केपन की जांच के लिए) - यथा पक्कभाजनेसु कुम्भकारो भिन्नाछिन्नजज्जरानि पवाहेत्वा एकतो कत्वा सुपक्कानेव आकोटेत्वा आकोटेत्वा गण्हाति, म. नि. अ. 2.68; (उप.प.) 3.122.

आकोमारं अ. [आकौमारं], बच्चों तक, कुमारों तक - आ कोमारा यसो कच्चायनस्स आकोमारं, स. 3.749.

आखु पु., [आखु], बिल खोदने वाला चूहा - मूसिको त्वाखु उन्दुरो, अभि. प. 618.

आखेटक पु., [आखेटक], शिकारी - खेटति, आखेटको खेटो 'उक्खेटितो', समुक्खेटितोपि, स. 2.352.

आख्या स्त्री., [आख्या], नाम, संज्ञा - सञ्जाख्याक्का समञ्जा चाभिधानं नाममद्वयो, अभि. प. 114.

आख्यात / अख्यात त्रि., [आख्यात], शा. अ., सुप्रसिद्ध, विख्यात, कहा गया, उपदिष्ट - भासितं लपितं वृत्ताभिहिताख्यातजप्तिता, अभि. प. 755; स. उ. प. के रूप में, - स्वा., भली-भांति कहा गया, सम्यक् प्रकार से उपदिष्ट - ते सप्त. वि., ए. व. - होति यथा तं स्वाक्खाते धम्मविनये सुप्पवेदितं ..., म. नि. 1.97; ला.



## आख्यातकण्ड

22

## आख्यातिकपद

अ., (व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में), क्रिया, काल, पुरुष, वचन एवं वाच्य के अर्थों को प्रकाशित करने वाला पद, क्रियापद — *किरियं अक्खायती आख्यातं किरियापदं*, सद्. 3.811; *किरियं आख्याति कथेती ति आख्यातं*, सद्. 2.326; — *तेन तू. वि., ए. व. — अयं अभिहितकता आख्यातेन कथितता*, सद्. 3.691; — *स्स ष. वि., ए. व. — क्रियाभिधानता एवं आख्यातस्सेव लक्षणं*, सद्. 1.25; — *तो प. वि., ए. व. — आख्याततो च नामपदतो च वचनस्स ... सेकारागमो होति*, सद्. 3.842; — *ते सप्त. वि., ए. व. — स्यादयो नामे, त्यादयो आख्याते*, सद्. 3.642; — *सु ब. व. — अविभक्तिकनिदेशो नामिकेसूपलभ्यति, नाख्यातेसू ति विज्जेय्यं*, सद्. 1.15.

आख्यातकण्ड पु., रू. सि. के छठे अध्याय का शीर्षक (ए. ग्रूनवेडेल द्वारा संपादित तथा 1883 ई. में बर्लिन से प्रकाशित).

आख्यातकण्ड पु., 1. क. व्या. के छठे अध्याय का शीर्षक, इसमें 408 से 525 तक संख्या वाले सूत्र अन्तर्भूत हैं; 2. सद्. के पच्चीसवें परिच्छेद का शीर्षक, सद्. 3.811-844; — *स्मिं सप्त. वि., ए. व. — सो पनाख्यातकप्पस्मिं वित्थारेनागमिस्सतीति*, सद्. 1.3.

आख्यातज्जू त्रि., [आख्यातज्जू], आख्यात या क्रिया के प्रयोगों में कुशल — *हि तू. वि., ब. व. — धीरेहि आख्यातज्जूहि लक्खितं*, सद्. 1.25.

आख्यातत्त नपुं., भाव. [आख्यातत्त्व], आख्यात होना, क्रियासूचक पद होना — *त्तं प्र. वि., ए. व. — एत्था पि आख्यातत्तं विगच्छति*, सद्. 3.831; — *त्ते सप्त. वि., ए. व. — गहादितो यथारहं आख्यातत्ते नामत्ते च प्प ण्हा*, सद्. 3.825.

आख्यातपच्चय पु., तत्पु. स. [आख्यातप्रत्यय], क्रि. रू. बनाने वाले ति, न्ति आदि प्रत्यय तथा भू-आदि-गणों के विकरण-प्रत्यय — *या प्र. वि., ब. व. — तत्रा पि आख्यातपच्चया दुक्खि विकरणपच्चय नोविकरणपच्चयवसेन*, सद्. 1.2.

आख्यातपद नपुं., तत्पु. स. [आख्यातपद], क्रिया, काल, पुरुष, वचन एवं वाच्य के अर्थों को कहने वाला क्रियापद — *दं प्र. वि., ए. व. — कृसति वेदयति विजानातीति एवमादिकं किरियापधानं आख्यातपदं*, नेत्ति. अद्. 163; ... *विहरतीति एत्थ वीति उपसंगपदं, हरतीति आख्यातपदन्ति* ..., म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).5; — *देन*

*तू. वि., ए. व. — तत्थ पठमपुरिसो आख्यातपदेन तुल्याधिकरणे* ..., सद्. 1.21.

आख्यातभाव पु., आख्यात का भाव. [आख्यातभाव], क्रियापद होने की अवस्था — *वो प्र. वि., ए. व. — अज्जासिकोण्डज्जो ति नामं, एत्थ हि आख्यातभावो अन्तर्धायति*, सद्. 3.831. आख्यातविभक्ति स्त्री., तत्पु. स. [आख्यातविभक्ति], क्रिया के कालों, पुरुषों, वचनों आदि को विभाजित करके प्रकाशित करने वाले प्रत्यय या विभक्ति-चिह्न, ति, न्ति आदि आख्यात-प्रत्यय — *यो प्र. वि., ब. व. — ... दसधा आख्यातविभक्तियो ठपिता*, सद्. 1.56.

आख्यातसद पु., तत्पु. स. [आख्यातशब्द], धातुओं से निष्पन्न तथा क्रिया आदि को कहने वाला शब्द — *स्स ष. वि., ए. व. — भू धातुतो निष्फन्नाख्यातसदस्स नेव विसेसकरो*, सद्. 1.4.

आख्यातसागर पु., तत्पु. स. [आख्यातसागर], क्रिया-पदों का सागर, अत्यधिक संख्या में क्रियापदों से परिपूर्ण — *रं द्वि. वि., ए. व. — आख्यातसागरमथज्जतनीतरङ्गं*, क. व्या. 3.1.

आख्याति आ + रू.ख्या का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आख्याति], कहता है, घोषणा करता है, विज्ञापित करता है — *तत्थ किरियं अक्खायतीति आख्यातं किरियापदं*, सद्. 3.811; पाठा. अक्खायतीति.

आख्यातिक त्रि., [आख्यातिक], कालों, वाच्यों एवं पुरुषों का आख्यान या कथन करने वाला (क्रियापद) — *कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — किरियालक्षणं आख्यातिकं अलिङ्गभेदं इति*, सद्. 1.27; — *स्स ष. वि., ए. व. — तत्र आख्यातिकस्स किरियालक्षणतत्सूचिका त्यादयो विभक्तियो*, सद्. 1.13; — *के सप्त. वि., ए. व. — तथा प्याख्यातिके तस्स तब्बोहारो निरुत्तियं*, सद्. 1.21; — *का पु., प्र. वि., ब. व. — कत्थचाख्यातिका होन्ति कत्थचि पन नामिका*, सद्. 1.181.

आख्यातिकपद नपुं., कर्म. स. [आख्यातिकपद], क्रियापद, कालों, वाच्यों एवं पुरुषों का अर्थ कहने वाला 'गच्छति' आदि पद — *दं प्र. वि., ए. व. — ... चाख्यातिकपदं तिकारकं*, सद्. 1.10; *आख्यातिकपदं नाम ... सकम्मकम्मकं* ..., सद्. 1.12; — *तो प. वि., ए. व. — यं ... आदिसु कत्थचि पनाख्यातिकपदतो*, सद्. 2.511; — *दे सप्त. वि., ए. व. — आख्यातिकपदे भावकारकवोहारो निरुत्तियं निस्साय गतो*, सद्. 1.10; — *दानि प्र. वि., ब. व. — तस्मा जातीति आदीनि आख्यातिकपदानि दिद्वानि येव*

## आख्यान

23

## आगच्छति

होन्ति नयवसेन, सद्. 2.351; - दानं ष. वि. ब. व. -  
... असम्बन्धनीयता आख्यातिकपदान्, सद्. 1.7.

**आख्यान** नपुं., आ +ख्या से व्यु., क्रि. ना. [आख्यान].  
कथन, विज्ञापन, संसूचन, उद्घोषणा - नं प्र. वि., ए. व.  
- वेतना सञ्ज्ञानं आख्यानं कथनं, सद्. 2.542; तं खो  
पनाति इत्थम्भूताख्यानत्वे उपयोगवचनं सु. नि. अद्. 2.147.  
**आख्यायिका** स्त्री., [आख्यायिका], ग्यारह वर्णमात्रा वाला  
एक अर्धसमवृत् छन्द, जिसके प्रथम एवं तृतीय पादों में दो  
तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण हों तथा द्वितीय एवं  
चतुर्थ पादों में एक जगण, एक तगण, फिर एक जगण  
तथा दो गुरु वर्ण हों - आख्यायिका ता विसमे जगा गो  
जता जगा गो तु समेथ पादे, वुत्तो. 111.

**आख्यायिका** स्त्री., [आख्यायिका], कहानी, कथा, ऐतिहासिक  
कथा - आख्यायिकोपलद्धत्वा पबन्धकम्पना कथा, अभि.  
प. 113.

**आगच्छति** आ +गम का वर्त, प्र. पु., ए. व. [आगच्छति].  
शा. अ., आता है, आ पहुंचता है, समीप में आ जाता है,  
वापस लौट कर आ जाता है - किं नु खो महासमणो  
नागच्छतीति ?, महाव. 33; - सि म. पु., ए. व. - कुतो  
व त्वं, भिक्षु आगच्छसीति, पारा. 227; दी. नि. 2.254;  
- च्छामि उ. पु., ए. व. - 'नाहं, भन्ते, पादेनागच्छामि,  
रथेनाहं आगतोस्मीति, मि. प. 23; - न्ति प्र. पु., ब. व.  
- नो चे आगच्छन्ति, अज्ज मे उपोसथोति अधिद्धातब्बो,  
महाव. 157; - च्छाम उ. पु., ब. व. - याव मय  
आगच्छाम, ताव ... इधेव वसाति ..., जा. अद्. 4.3; -  
च्छ / च्छाहि अनु. म. पु., ए. व. - 'तं जीविता वोरोपेत्वा  
इमिना मग्गेन आगच्छाति, चूलव. 329; आगच्छाहीति  
वत्तब्बो, महाव. 120; - तु प्र. पु., ए. व. - 'यस्सायस्मतो  
अत्थो सो आगच्छतूति, महाव. 100, 117; यो तस्स  
भगवतो धम्मं रोचोसि सो आगच्छतूति, चूलव. 340; - थ  
म. पु., ब. व. - 'ते जीविता वोरोपेत्वा इमिना मग्गेन  
आगच्छथाति, चूलव. 329; 'मम पचत्तो आगच्छथाति  
पुरत्तो अहोसि, ध. प. अद्. 2.404; - च्छेय्य विधि., प्र. पु.,  
ए. व. - इध पुरिसो आगच्छेय्य उक्खित्तसिको, म. नि.  
2.46; - च्छेय्यासि म. पु., ए. व. - 'त्वं तत्थ  
आगच्छेय्यासीति सङ्केतं कत्वा अगमासि, ध. प. अद्.  
1.359; - च्छेय्यं उ. पु., ए. व. - ... गन्त्वा ... धम्मस्स  
सुणित्वा आगच्छेय्यन्ति, ध. प. अद्. 2.63; - च्छेय्यं प्र.  
पु., ब. व. - ते विवदमाना तव सन्तिके आगच्छेय्यं, मि.

प. 46; - न्तो वर्त. कू., पु., प्र. वि., ए. व. - ...  
अञ्जतरो पुरिसो तस्स सकटसत्थस्स पिड्डितो पिड्डितो  
आगच्छन्तो येन आळारो कालामो तेनुपसङ्गमि, दी. नि.  
2.99; सो एकदिवसं हानतित्थं न्हत्वा नत्वा आगच्छन्तो  
..., ध. प. अद्. 1.3; - न्तं उपरिवत्, द्वि. वि., ए. व. -  
अदसंसु खो ... दूरतोव आगच्छन्तं, महाव. 12; - न्तिया  
उपरिवत्, स्त्री., ष. वि., ए. व. - चण्डकाली ... भिक्षुनिया  
आगच्छन्तिया ..., पाचि. 308; - मानं वर्त. कू., आत्मने.  
पु., द्वि. वि., ए. व. - ... धम्मं देसेन्तो तं आगच्छमानं  
अदस ..., ध. प. अद्. 1.392; - माना पु., प्र. वि., ब. व.  
- आगच्छमाना च ते भिक्षू अत्तनोव इद्धिया आगच्छंसु,  
सु. नि. अद्. 2.83; - आगा / आग / आगमा / आगमि /  
आगच्छि / आगच्छि अद्य., प्र. पु., ए. व., वह आया,  
वापस आया, समीप में पहुंचा - अनद्धितो ततो आगा, जा.  
अद्. 3.142; आगाति अम्हाकं गेहं आगतो, तदे., कुम्भीरो  
राजगहिको, सोपागा समिति वनं, दी. नि. 2.188; यदा च  
सरसम्पन्नो, मोरो बावेरुमागमा, जा. अद्. 3.108; 'अत्थाय  
वत मे बुद्धो, वासायाळविमागमा, सु. नि. 193; 'सद्धिपित्तान  
तं मग्गं, खिप्पं सावत्थिमागमीति, ध. प. अद्. 1.12;  
अत्थाय वत मे अज्ज, इधागच्छि रथेसमो, जा. अद्. 4.336;  
आगच्छि ते सन्तिके नागराजा, सु. नि. 381; -  
आगा / आगमा / आगमि अद्य., म. पु., ए. व. -  
समुग्गहीतेसु पमोहमागा, सु. नि. 847; इधागमा ब्रह्मो तदिह  
ब्रूहीति, जा. अद्. 3.303; मा त्वं नलाटेन मच्चुं गहेत्वा  
आगमि, जा. अद्. 5.219; -  
आगमं / आगमासिं / आगमिं / आगच्छिं अद्य., उ. पु.,  
ए. व. - कङ्खी वेचिकिच्छी आगमं, सु. नि. 515 ओघातिगं  
पुट्टमकाममागमं, सु. नि. 1102; अकाममागमन्ति निक्कामं  
भगवन्तं पुच्छितु आगतोहि, सु. नि. अद्. 2.290; ... नयिमं  
लोकं पुनागमासिं, अ. नि. 2(2).227; एकाहं धारयित्वान,  
भवनं पुनरागमिं, अप. 2.99; तम्हा काया चवित्तान, आगच्छिं  
तिदसं पुरं, अप. 1.286; - आगू / आगुं / आगमुं /  
आगमंसु / आगच्छुं / आगच्छिंसु अद्य., प्र. पु., ब. व.  
- यामुना धतरद्वा च, आगू नागा यसस्सिनो, दी. नि.  
2.190; अथागुं नागसा नागा, तदे.; अथागमुं सोळस भोजपुत्ता,  
जा. अद्. 5.166; अथागमुन्ति ... मम सन्तिकं आगता, जा.  
अद्. 5.167-168; सद्धिसहस्सो राजानो ... सन्तिकं आगमंसु,  
जा. अद्. 7.273; सब्बे जना समागमं, आगच्छुं मम  
सन्तिकं, अप. 2.45; ... 'मयं मागण्डियाय ज्ञातका'ति

## आगच्छति

24

## आगत

आगच्छिषु, ध. प. अ. 1.127; - आगमित्थ अद्य, म. पु. ब. व. - 'रोहिणि, कस्मा नागमित्था'ति, ध. प. अ. 2.174; (वचन-विपर्यय); - आगम्ह / आगम्हा / आगमम्ह / आगमिम्ह अद्य, उ. पु. ब. व. - यं तं सरणमागम्ह, इतो अद्भिमि चक्षुम, सु. नि. 575; न रक्खसीनं वसमागमिम्हसे, जा. अ. 1.449; - मिस्सति / मेस्सति / चिस्सति भवि, प्र. पु. ए. व. - यो इमाहि चतूहि दिसाहि आगमिस्सति समणो वा ..., दी. नि. 1.89; ज्ञातकापिस्स 'पच्छतो आगमिस्सतीति सज्जाय यानं पाजेत्ता गमिंसु, ध. प. अ. 1.354; सो च मया भगवा निमन्तितो इमिना मग्गेन आगच्छिस्सतीति, चूळव. 286; - स्ससि म. पु. ए. व. - मज्जे ओक्कन्तसत्तं ... माताय आगमिस्ससि, जा. अ. 6.252; - मिस्सं / चिस्साणि उ. पु. ए. व. - न चापि ते अस्सममागमिस्सं, पारा. 226; तेन सद्धिं आगच्छिस्सामि, ध. प. अ. 1.9; पत्तचीवरं पटिच्छापेत्ता आगच्छिस्सामीति, जा. अ. 3.408; - मिस्सन्ति / चिस्सन्ति प्र. पु. ब. व. - सद्येपि एततो भिय्यो, आगमिस्सन्ति इत्थियो, स. नि. 1(1).215; कथञ्चि नाम भदन्ता मया पहिते न आगच्छिस्सन्ति, महाव. 183; - मिस्साम / चिस्साम उ. पु. ब. व. - मयं पच्छतो सणिकं आगमिस्सामाति ... अहोसि, ध. प. अ. 1.354; - न्तु / चित्तु निमि. कृ. - अवेलो ... मम सम्मुखीभाव आगन्तुं ..., दी. नि. 3.9; न इमं पदेसं अरहति आगच्छितुन्ति, सु. नि. अ. 1.140; - आगम् / आगन्त्वा / आगन्त्वा न पू. का. कृ. - दिवा च आगन्त्वा अतिवेलचारी, स. नि. 1(1).232; ... येन मे आगन्त्वा आरोचेय्याथ, दी. नि. 2.240; गामा अरज्जमागम्, ततो गेहं उपाविसि, थेरगा. 34; द्वारबाहासु तिष्ठन्ति, आगन्त्वा न सकं घरं, खु. पा. 7.1; - गन्तब्ब / गमनीय सं. कृ. - न, भिक्खवे, एकतो आगन्तब्बं, महाव. 120; आगमनियेन कथिते पन सुज्जतो वा फस्सो ..., स. नि. अ. 3.137; ला. अ., (किसी स्थिति को या अवस्था को) प्राप्त करता है, घटित होता है, जन्म को प्राप्त करता है, आ पहुंचता है - यं अज्जतरो सत्तो तम्हा काया चवित्वा इत्थत्तं आगच्छति, दी. नि. 1.16; ... मे तं भयभैरवं आगच्छति, म. नि. 1.27; पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिद्धो अकन्तो अमनापो ..., अ. नि. 2(1).96; - ते उपरिवत्, आत्मने. - पुरा आगच्छते एतं, अनागतं महब्भयं, थेरगा. 978; - सि म. पु. ए. व. - सचे त्वं सत्तरत्तेन नागच्छसि ममन्तिके, जा. अ. 6.252; - न्ति

प्र. पु. ब. व. - ततो चुता इत्थत्तं आगच्छन्ति, अ. नि. 2(1).28; - थ म. पु. ब. व. - देवानमागच्छथ पारिचरियं, दी. नि. 2.201; - च्छेय्य विधि., प्र. पु. ए. व. - न च वत्, नो जाति आगच्छेय्याति, म. नि. 3.299; - मेय्यासि म. पु. ए. व. - यत्थ पपतेय्यासि तत्थेव मरणं आगमेय्यासि, स. नि. 3(2).427; - च्छेय्युं प्र. पु. ब. व. - 'न च वत् नो सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासधम्मा आगच्छेय्युन्ति, दी. नि. 2.230; - माना वर्त. कृ., स्त्री., प्र. पु. ए. व. - आगच्छमाना कस्स आगता'ति, जा. अ. 1.139; - गमा / गमासि अद्य, प्र. पु. ए. व. - ..., मा कज्जि पापमागमा'ति, जा. अ. 2.121; मा कज्जि पापमागमा ति एतेसु कज्जि एकं सत्तमि पापं तामकं दुक्खं मा आगमा, मा आगच्छतु, मा पापुणातु ..., तदे., ततो चुताहं वेदेह, वज्जीसु कुलमागमा, जा. अ. 7.126; 'तस्मा अहंपोसथं पालयामि, रागो ममं मा पुनरागमासी'ति, जा. अ. 4.294; धातुयो दुक्खतो दिस्वा, मा जातिं पुनरागमि, थेरीगा. 14; - गमिम्ह उ. पु. ब. व. - पुनो सब्बे मनुस्सत्तं, अगमिम्ह ततो चुता, अप. 2.117; पाठा. अगमिम्ह - गमिस्सति / गच्छिस्सति भवि, प्र. पु. ए. व. - आगमिस्सति मे पापं, आगमिस्सति मे भयं, जा. अ. 3.370; ... भयन्ति वितुत्रासभयमि मे आगमिस्सति, न सक्का नागन्तुं, जा. अ. 3.370; एकच्चो'मनापा नु खो मे यागु आगच्छिस्सति मनापं अन्तरखज्जकन्ति वा तण्हापरितस्सनाय परितस्सति, म. नि. अ. (म.प.) 2.276; - मिस्सन्ति प्र. पु. ब. व. - 'इमस्सापि मे अत्तभावस्स एवमेव जराब्बाधिमरणानि आगमिस्सन्ती'ति अत्तभावं अनिच्चतो पस्सि, ध. प. अ. 2.64; - न्तु निमि. कृ. - भयन्ति वितुत्रासभयमि मे आगमिस्सति, न सक्का नागन्तुं, जा. अ. 3.370; - न्त्वा / न्त्वान पू. का. कृ. - देवलोका इधागन्त्वा, मातुकुच्छिं उपागते, अप. 1.359; आगन्त्वा न मनुस्सत्तं, सोणो नाम भविस्सति, अप. 1.93.

आगत' शा. अ. 1. त्रि., आ + गम का भू. क. कृ. [आगत], वह, जो कहीं पर आ चुका है या पहुंच चुका है, पहुंचा हुआ, आ चुका, रास्ता पार कर चुका - तो पु., प्र. वि., ए. व. - कतमेन त्वं, महासमण, मग्गेन आगतो, महाव. 35; त्यस्सु यदा मं जानन्ति, सक्को'देवानमागतो, दी. नि. 2.212; अप्पकिलमथेन च अहं, भन्ते, अद्धानं आगतो, चूळव. 24; सोहं सक्को सहस्सक्खो, आगतोस्मि

## आगत

25

## आगतमग्गाभिमुख

तवन्तिके, जा. अ. 4.288; शा. अ. 2. नपुं. आगमन, आना - तं प्र. वि., ए. व. - 'आगच्छन्तु भिक्षू इच्छामि भिक्षूनं आगतं न्ति, महाव. 187; तत्थ स्वागतन्ति सुआगमनं, म. नि. अ. (उप.प.) 3.162; - कारण नपुं. तत्पु. स. [आगमनकारण], आगमन का कारण - ... अत्तनो आगतकारणं कथत्वा ..., मि. प. 16; - नन्दन त्रि., वह, जिसका आगमन आनन्ददायक हो - नो पु., प्र. वि., ए. व. - तादिसो त्वं आगतनन्दनो गमनसोचनो, म. नि. अ. (उप.प.) 3.162; - पटिपाटी स्त्री., तत्पु. स., आगमन का क्रम - टिया त्. वि., ए. व. - 'कथं नु खो चीवर पटिवीसो दातब्बो, आगतपटिपाटिया नु खो उदाहु यथा बुद्ध'न्ति, महाव. 370; - वेला स्त्री., तत्पु. स. [आगमनवेला], आ पहुँचने का समय - यं सप्त. वि., ए. व. - एवं सन्तेपि यथा बोधिमण्डे मारो आगतवेलायमेव निवत्तो ..., स. नि. अ. 1.283; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट., सा., स्वा., दुरा., अदुरा. के अन्तः; शा. अ. 3. त्रि., वापस आया हुआ, प्रत्यावर्तित - तो पु., प्र. पु., ए. व. - 'सोहं एतादिसं हित्वा, पुञ्जायमिह इधागतो ...', जा. अ. 4.321; - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - चिरप्पवासिं पुरिसं, दूरतो सोत्थिमागतं, ध. प. 219; ला. अ. 1. यहाँ पर विद्यमान, इस समय तक यहाँ पर पहुँचा हुआ, किसी विशेष स्थिति या दशा में पड़ा हुआ, अपने ऊपर आ पड़ा - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - द्वे पुग्गला बाला - यो च अनागतं भारं वहति, यो च आगतं भारं न वहति, परि. 240; आगतं भारं न वहतीति थेरो थेरकच्चं न करोति, परि. अ. 163; थेरो समानो ... आगतं भारं न वहति नाम, अ. नि. अ. 2.56; - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आगतो इमं सद्धम्मन्ति, म. नि. 1.59; अधुनागतो इमं धम्मविनयं ..., ध. प. अ. 1.54; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - कथं पनिमे विहङ्गा, तव हत्थत्तमागता, जा. अ. 5.3; ला. अ. 2. पुनर्जन्म को प्राप्त - स्स ष. वि., ए. व. - यस्स मग्गं न जानासि, आगतस्स गतस्स वा, थेरगा. 127; 128; - तो पु., प्र. वि., ए. व. - दीपङ्कस्स ... पादमूले ... अभिनीहारसमिद्धितो पमुति तथागतो ... अमुञ्चन्तोयेव आगतो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).120; अथ किञ्चरहि इधागतो ?, स. नि. 1(1).176; ला. अ. 3. किसी पर आ पड़ा, घटित, किसी के द्वारा प्राप्त किया गया - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तप्पक्खतो हि भयमागतं ममं, जा. अ. 5.73; ... इच्चस्स एवमागतं होति, म. नि.

3.339; - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आगच्छमाना कस्स आगताति, जा. अ. 1.139; स. उ. प. के रूप में उच्छापता. एवं उस्मा. के अन्तः द्रष्ट.; ला. अ. 4. परम्परा से चला आ रहा, पारम्परिक, समुद्घाटित या प्रकाशित, कण्ठस्थ किया हुआ, समझ में आया हुआ, पूर्ण रूप से जाना हुआ - तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - तीणि पिटकानि सह पटिसम्भिदाहियेव आगतानि, ध. प. अ. 1.141; - तं ए. व. - इमस्स नेव सुतं आगतं होति, नो सुतविमङ्गो, चूळव. 208; तस्स पब्बज्जाविधानं पाळियं आगतमेव, अ. नि. अ. 1.236; स. उ. प. के रूप में अधुना., अभिनवा., काला., देसा., अन्वया., कुलवंसा., परम्परा., अनुक्कमा., सुत्ता. के अन्तः द्रष्ट.; - ठान नपुं., कर्म. स. [आगतस्थान], परम्परा में प्राप्त स्थल या सन्दर्भ - नं द्वि. वि., ए. व. - ते भिक्षू देसनाय नेव आगतद्धानं, न गतद्धानं अदसंसु, अ. नि. अ. 2.229; - ने सप्त. वि., ए. व. - चतूसु मग्गेसु जाणन्ति आगतद्धाने मग्गे, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).59.

आगतपाक पु., [आगतपाक], एक दानदाता, जो आने वाले अतिथियों को उनकी रुचि के अनुसार भोजनों का दान दिया करता था - को प्र. वि., ए. व. - एको अत्तनो दानग्गे आगतागतजनं पुच्छित्वा यागुखज्जकादीसु यस्स यं पटिभाति, तस्स तं अदासि, तस्स तेनेव कारणेन आगतपाकोति नामं जातं, अ. नि. अ. 1.194-95.

आगतपुब्ब त्रि., ब. स. [आगतपूर्व], वह स्थान, जहाँ कोई पहले भी आ चुका है, पूर्वकाल में देखा जा चुका स्थान - ब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आगतपुब्बा नु खो, भन्ते, तेन अय्येन सावत्थीति ?, महाव. 384.

आगतफल त्रि., ब. स. [आगतफल], वह, जिसने पहले ही फल का लाभ पा लिया है, फल को प्राप्त कर चुका/चुकी, आर्यफल को प्राप्त कर चुका - ला स्त्री., प्र. वि., ए. व. - सद्धेय्यवचसा नाम आगतफला अभिसमेताविनी विज्जातसासना, पारा. 294; तत्थ आगतं फलं अस्साति आगतफला पटिलद्धसोतापत्तिफलाति अत्थो, पारा. अ. 2.195; - लो पु., प्र. वि., ए. व. - यो सो, महानाम्, अरियसावको आगतफलो विज्जातसासनो, अ. नि. 2(2).6; अरियफलं अस्स आगतन्ति आगतफलो, अ. नि. अ. 3.91.

आगतमग्गाभिमुख त्रि., तत्पु. स. [आगतमार्गाभिमुख], जिस मार्ग से होकर आया है उसी की ओर मुड़ा हुआ, पार

## आगतविस

26

## आगन्ता

किए हुए मार्ग की ओर अभिमुख — खं पु., द्वि. वि., ए. व. — ... रथं निवत्तापेत्वा आगतमग्गाभिमुखं कत्वा ..., जा. अहु. 7.367; — खी स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सा इत्थिमायाकुसलताय तापसं अनुपसङ्गमित्वा आगतमग्गाभिमुखी पायासि, जा. अहु. 5.152; — नि नपुं., प्र. वि., ब. व. — ... रथसहस्सानि आगतमग्गाभिमुखानेव ठपापेत्वा ..., जा. अहु. 7.365.

**आगतविस** त्रि., ब. स. [आगतविष], तीव्र विष वाला (सर्प), चार प्रकार के तेज विष वाले सर्पों या उनके समान मनुष्यों में से एक, जिसका विष तुरन्त आ जाता है या चढ़ जाता है परन्तु लम्बे समय तक पीड़ित नहीं करता — सं पु., द्वि. वि., ए. व. — तत्थ आसीविसम्पि मं सन्तन्ति मं आगतविसं समानं, जा. अहु. 2.200; — सो पु., प्र. वि., ए. व. — आगतविसो न घोरविसो, घोरविसो न आगतविसो, आगतविसो च घोरविसो च, नेवागतविसो न घोरविसो, ... चत्तारो आसीविसा, अ. नि. 1(2).127; ... आसीविसो ताव यस्स विसं आसुं आगच्छति सीधं फरति, घोरं पन न होति, चिरकालं न पीळेति — अयं आगतविसो नो घोरविसो ..., प. प. अहु. 74; दसमे आगतविसो न घोरविसोति यस्स विसं आगच्छति, घोरं पन न होति, चिरकालं न पीळेति, अ. नि. अहु. 2.323.

**आगतागम** त्रि., ब. स. [आगतागम], आगमों का पूर्ण ज्ञान पा चुका व्यक्ति, आगमों में पूर्णरूप से निष्णात — मो पु., प्र. वि., ए. व. — 'एसो खो, महाराज, उपासको बहुस्सुतो आगतागमो कामेसु वीतरागो' ति, पावि. 209; — मा ब. व. — आगतागमाति दीघादीसु यो कोचि आगमो आगतो एतेसन्ति आगतागमा, अ. नि. अहु. 3.121; ... पञ्च निकाया पञ्च आगमा नाम, एतेसु आगमेसु येसं एकोपि आगमो आगतो पगुणो पवत्तितो, ते आगतागमा नाम, अ. नि. अहु. 2.89; ... बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा ..., दी. नि. 2.95.

**आगति** स्त्री., सदा गति के साथ ही प्रयुक्त [आगति], शा. अ., आगमन, आने की क्रिया — तिं द्वि. वि., ए. व. — ... न च नेसं जानाम आगतिं वा गतिं वा, म. नि. 1.211; आगतिं वा गतिं वाति इमिना नाम ठानेन आगच्छन्ति, अमुत्र गच्छन्तीति इदं नेसं न जानाम, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).65; ला. अ., पुनर्जन्म, भवचक्र में आगमन (मृत्यु अर्थ वाले गति के साथ) — ..., अङ्गीरस्स गतिं आगतिं वा, पे. व. 279; सो मं अवेदी गतिमागतिञ्च, जा. अहु. 4.295;

सो मं अवेदीति सो मम इदानी गन्तब्बद्धानञ्च गतद्धानञ्च ... सब्बं मं ... कथेसीति अत्थो, जा. अहु. 4.296; — ति प्र. वि., ए. व. — अथ खो यावता सत्तानं आगति गतिं भुति उपपत्तिं सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति, अ. नि. 2(1).51; नतिया असति आगतिगति न होति, म. नि. 3.319; — गति स्त्री., द्व. स. [आगतिगति], शा. अ., आगमन एवं गमन, ला. अ., जन्म एवं मृत्यु — ति प्र. वि., ए. व. — नतिया असति आगतिगति न होति, उदा. 165; आगतिगति न होतीति पटिसन्धिवसेन इध आगति आगमनं भुतिवसेन गति इतो परलोकगमनं पेच्चभावो न होति न पवत्तति, उदा. अहु. 323; — या सप्त. वि., ए. व. — आगतिगतिया असति भुतूपपातो न होति, उदा. 165.

**आगद / आगदन** पु./नपुं., आ +√गद से व्यु., क्रि. ना. [आगद], स्पष्ट रूप से बोला गया वचन, वाणी, कथन, तथागत शब्द के आठ प्रकार के निर्वचनों में से छठे निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त — दो पु., प्र. वि., ए. व. — गदत्थो हेत्थ गतसदो, एवं तथवादिताय तथागतो, अपि च आगदनं आगदो, वचनन्ति अत्थो, दी. नि. अहु. 1.62; यञ्च तथेव होति, तस्स गदनतो च 'तथागतो' ति वुच्चति, खु. पा. अहु. 155; टि. — अहु. के अनुसार तथागत के उ. प. में प्रयुक्त 'गत' शब्द 'गद' का अर्थ प्रकाशित करता है, फलस्वरूप जो धर्म वस्तुतः जैसा है, उसे उसी रूप में बोलने वाला ही 'तथागत' (तथागद) कहलाता है.

**आगन्तब्बता / आगन्तब्बद्धानता** स्त्री., निब्बान के सन्दर्भ में प्रयुक्त, आ +√गम के सं. कृ. का भाव. [आगन्तव्यत्व, नपुं./आगन्तव्यस्थानत्व, नपुं.], शा. अ., आगमन-योग्य दशा में होना, ला. अ., संसार में आने योग्य अर्थात् जन्म ग्रहण करने योग्य रहना — य तु. वि., ए. व. — एवं तस्मिम्पि आयतने निब्बाने कुतोचि आगतिं आगमनं नेव वदामि आगन्तब्बद्धानताय अभावतो, उदा. अहु. 318; तस्मि आयतनं गामन्तरतो गामन्तरं विय न आगन्तब्बताय न आगति, उदा. अहु. 318.

**आगन्ता** आ +√गम का क. ना., पु., प्र. वि., ए. व. [आगन्ता], शा. अ., आने आने वाला, आ पहुँचने वाला — ता पु., प्र. वि., ए. व. — इदानी सो इधागन्त्वा, अतिथी युत्तसेवको, जा. अहु. 2.345; अप. आगन्त्वा, इदानी कतिपाहस्सेव सो ... इध अतिथि हुत्वा आगतो भविरस्सति, तदे., ला. अ., पुनः आने वाला, पुनर्जन्म ग्रहण करने वाला — बह्मा आगन्ता इत्थत्तं, यदि वा अनागन्ता

## आगन्तु

27

## आगन्तुक

इत्थत्तन्ति, म. नि. 2.339; — रो व. व. — ... देवा  
अनागन्तारो इत्थत्तं, म. नि. 2.338.

**आगन्तु** पु. केवल गाथाओं में ही प्राप्त, प्रायः आगन्तुक शब्द  
द्वारा व्याख्यात, क. नया-नया आने वाला, अपरिचित,  
अतिथि — पुमे अतिथि आगन्तु, पाहुना वेसिकायथ, अभि.  
प. 424; — न्तु द्वि. वि., ए. व. — एवं यो सं निरंकत्वा,  
आगन्तुं कुरुते पियं, जा. अष्ट. 3.355; ... यो सकं पोरणं  
अज्झत्तिकं जनं नीहरित्वा पहाय ... आगन्तुकं पियं करोति  
..., जा. अष्ट. 3.356; ख. बाहरी, स्थूल, आकस्मिक — ना  
पु./नपुं, तृ. वि., ए. व. — आगन्तुना दुक्खसुखेन फुडो,  
जा. अष्ट. 6.186; आगन्तुनाति न अज्झत्तिकेन, तदे.

**आगन्तुक** त्रि., आगन्तु से व्यु. [आगन्तुक], शा. अ.,  
अकस्मात् या अपने आप आ पहुंचने वाला, बिना बुलाए  
आने वाला, भूला भटका — एकस्मि आगन्तुकमनुस्मानं  
वसनङ्गानं, जा. अष्ट. 6.159; ला. अ. 1. नवागन्तुक  
अपरिचित, अतिथि, अभ्यागत — का पु., प्र. वि., ब. व. —  
अथस्स ... गतस्स आगन्तुका लद्धसक्कारा युज्झिस्सन्तीति  
पोरणकयोधा न युज्झिंसु, जा. अष्ट. 3.354; अतिथि नो ते  
होन्तीति ते अम्हाकं आगन्तुका, नवका पाहुनका होन्तीति  
अत्थो, दी. नि. अष्ट. 1.232; दुविधा हि आगन्तुका अतिथि  
अभ्यागतोति, वि. व. अष्ट. 18; — कागार/घर पु., तत्पु.  
स. [आगन्तुकागार], अतिथियों या यात्रियों के ठहरने का  
स्थान, यात्री-निवास, मुसाफिर-खाना, धर्मशाला — रं द्वि.  
वि., ए. व. — सेव्यथापि, भिक्खवे, आगन्तुकागारं, स. नि.  
2(2).215; आगन्तुकागारन्ति पुज्जत्थिकेहि नगरमज्जे कतं  
आगन्तुकघरं यत्थ राजराजमहामत्तेहिपि सक्का होति निवासं  
उपगन्तुं, स. नि. अष्ट. 3.173; — दण्डक पु., तत्पु. स.  
[आगन्तुकदण्डक], यात्रियों का डण्डा या छड़ी, चलने-  
फिरने के समय प्रयुक्त छड़ी — के सप्त. वि., ए. व. —  
... महापातिप्पमाणं पुप्फं आगन्तुकदण्डके ठपेत्वा छत्तं विय  
गहेत्ता, दी. नि. अष्ट. 2.170; — पुरिस पु., कर्म. स.  
[अगन्तुकपुरुष], अकस्मात् आ गया पुरुष, पथिक, राहगीर  
— सो प्र. वि., ए. व. — यथा च आगन्तुकपुरिसो अगतपुब्बं  
पदेसं गतो ..., विभ. अष्ट. 22; तं पुब्बे उप्यन्तानं आवज्जनादीनं  
गेहभूते चक्खुद्वारे आगन्तुकपुरिसो विय होति, विभ. अष्ट.  
337; — भाव पु., [आगन्तुकभाव], अकस्मात् आ जाने की  
अवस्था, अपने आप पहुंच जाना — ... एवं आगन्तुकभाववसेन  
असम्मोहसम्पज्जं वेदितव्वं, विभ. अष्ट. 337; स. नि.  
अष्ट. 3.224; ला. अ. 2. (विनय के विशेष सन्दर्भ में)

किसी विहार में आ पहुंचने वाला वह भिक्षु जो दूसरी सीमा  
में रहता है, तथा जो आवासिक, नेवासिक या गामिक भिक्षु  
नहीं है — को पु., प्र. वि., ए. व. — आगन्त्वा गच्छती ति  
आगन्तुको (भिक्षु), क. व्या. 571; — का व. व. —  
आगन्तुका भिक्खू उज्जायन्ति खिव्यन्ति विपाचेन्ति, महाव.  
147, 148; ते आगन्तुका भिक्खू नेवासिकेहि भिक्खूहि सद्धिं  
पटिसम्मोदमाना ..., म. नि. 2.129; — कस्स पु., च. वि.,  
ए. व. — आगन्तुकस्स दानं देति, गमिकस्स दानं देति,  
गितानस्स दानं देति ..., अ. नि. 2(1).36; — कानं ष. वि.,  
ब. व. — ... आवासिका भिक्खू पस्सन्ति आगन्तुकानं ...,  
महाव. 173; — किलमथो पु., प्र. वि., ए. व., तत्पु. स.  
[आगन्तुककलमथ], मार्ग से चल कर आने में प्राप्त कष्ट  
या थकावट — यो खो इमेसं आगन्तुकानं भिक्खून्  
आगन्तुककिलमथो सो पटिप्पस्सद्धो, महाव. 407; — थेर  
पु., कर्म. स. [आगन्तुकस्थविर], दूसरी सीमा से आने  
वाला अर्थात् उस विहार में निवास न करने वाला स्थविर  
— रानं च. वि., ब. व. — ते आगन्तुकथेरानं ओवादे उत्त्वा  
सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणन्ति, अ. नि. अष्ट. 3.161;  
— दान नपुं, तत्पु. स. [आगन्तुकदान], विहार के बाहर  
से आने वाले भिक्षुओं को दिया जाने वाला दान — नं द्वि.  
वि., ए. व. — राजगहवासिनो द्वेपि तयोपि बहूपि एकतो  
हुत्वा आगन्तुकदानं अदंसु, ध. प. अष्ट. 1.46; प. व. अष्ट.  
46; — नानि प्र. वि., ब. व. — सत्तमे आतिथेय्यानीति  
आगन्तुकदानानि, अ. नि. अष्ट. 2.62; — पटिसन्धार  
पु., तत्पु. स., आने वाले भिक्षु या अतिथि का सौहार्दपूर्ण  
स्वागत — रो प्र. वि., ए. व. — आगन्तुकं पन भिक्खुं  
दिस्वा आगन्तुकपटिसन्धारो कातब्बोव, विसुद्धि. 1.180; —  
भत्त नपुं, तत्पु. स., विहार में बाहर से आए हुए भिक्षुओं  
के लिए दान में दिया गया भोजन — तं प्र. वि., ए. व.  
— तेन पन पिण्डपातिकेन सङ्गभत्तं उदेसभत्तं ... आगन्तुकभत्तं  
... वारकभत्तं न्ति एतानि जुहस भत्तानि न सादितब्बानि,  
विसुद्धि. 1.63; — तं द्वि. वि., ए. व. — इच्छामहं, भन्ते,  
सङ्गस्स यावजीवं वस्सिकसाटिकं दातुं, आगन्तुकभत्तं दातुं,  
गमिकभत्तं दातुं, महाव. 382; अधिवासेन्तु मे, भन्ते, थेरा  
स्वातनाय आगन्तुकभत्तं, चूळव. 35; — महाथेर पु.,  
कर्म. स. [आगन्तुकमहास्थविर], विहार में बाहर से आया  
हुआ महास्थविर, बाहर से आया हुआ वरिष्ठ सम्माननीय  
भिक्षु — रा प्र. वि., ब. व. — आवासिका मयं एत्थुप्यन्नं  
लामं न लभाम, निच्चं आगन्तुकमहाथेराव लभन्ति, चूळव.

## आगन्तुक

28

## आगम

अट्ट. 65; - वत्त नपुं, कर्म. स. [आगन्तुकवत्त], बाहर से आने वाले भिक्षुओं के आचरण के लिए निर्धारित विनय-नियम - त्तं प्र. वि., ए. व. - वस्सावासे पन अत्थि आगन्तुकवत्तं, अत्थि आवासिकवत्तं, चूळव. अट्ट. 67; इदं आगन्तुकवत्तं नाम जानितब्बं, जा. अट्ट. 3.426; - विसय पु., कर्म. स. [आगन्तुकविषय], आनुषङ्गिक या गौण रूप से उपस्थित विषय, आचरण में अव्यवहृत विषय - येन तृ. वि., ए. व. - एवमेव आचिण्णविसये तस्स रागं आगन्तुकविसयेन नीहरित्वा ..., उदा. अट्ट. 139; - साला स्त्री., तत्पु. स. [आगन्तुकशाला], बाहर से आने वालों या राहगीरों के विश्राम के लिए निर्मित आवास, पान्थ-निवास, धर्मशाला, मुसाफिर-खाना - यो द्वि. वि., ब. व. - आगन्तुकानमत्थाय आरामे द्वादसापि च तिसागन्तुकसालायो द्वे सतं चेव कारयि, चू. वं. 79.20; तथागन्तुकसालायो एकपञ्चासमेव च, चू. वं. 79.22; तथागन्तुकसालायो सत्तासीति अकारयि, चू. वं. 79.63; ला. अ. 3. त्रि., बाह्य, अतिरिक्त, आकस्मिक, प्रासङ्गिक या गौणरूप से प्राप्त - केहि पु., तृ. वि., ब. व. - पभस्सरमिदं, भिक्खवे, चित्तं, तच्च खो आगन्तुकेहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिद्धं, अ. नि. 1(1).13; - कथा स्त्री., कर्म. स. [आगन्तुककथा], प्रसङ्ग-प्राप्त विषय या मुख्य विषय से हटकर कही जा रही कोई दूसरी बात, अप्रासङ्गिक बात - थं द्वि. वि., ए. व. - बहिद्धा कथं अपनामेस्सतीति बहिद्धा अज्जं आगन्तुककथं आहरन्तो पुरिमकथं अपनामेस्सति, अ. नि. अट्ट. 2.174; एवं आगन्तुककथावसेन बहिद्धा कथं अपनामेतीति वेदितब्बं, अ. नि. अट्ट. 2.181; - पट्ट पु., कर्म स., चीवर को सुसज्जित करने हेतु ऊपर से लगाई गई पट्टी - द्दं द्वि. वि., ए. व. - चीवरमण्डनत्थाय नानासुत्तकेहि सतपदीसदिसं सिब्बन्ता आगन्तुकपट्ठं तपेन्ति, पारा. अट्ट. 1.232; - भवङ्ग नपुं, कर्म. स. [आगन्तुकभवङ्ग], भवङ्गचित्त का एक प्रभेद, कामावचरभूमि के तृतीय कुशलचित्त के जवन-क्षण का असदृश विपाकचित्त - ङ्गं प्र. वि., ए. व. - पटिसन्धिचित्तेन असदिसत्ता 'आगन्तुकभवङ्ग'न्ति च पुरिमनयेनेव 'तदारम्मण'न्ति च, ध. स. अट्ट. 308; इदम्पि वुत्तनयेनेव 'आगन्तुकभवङ्ग' 'तदारम्मण'न्ति च द्वे नामानि लभति, तदे.; सन्धिया असमानत्ता, द्वे नामानिस्स लभरे, 'आगन्तुकभवङ्ग'न्ति, 'तदारम्मणक'न्ति च, अभि. अव. 394; विशेष अर्थ द्रष्ट. भवङ्ग के अन्तः; - मल पु., कर्म. स. [आगन्तुकमल], बाहर से आ जाने वाला मैल, ऊपरी मैल

- लेहि तृ. वि., ब. व. - वत्थस्स आगन्तुकमलेहि किलिद्धभावो विय चित्तस्स रागादिमलेहि संकिलिद्धभावो, उदा. अट्ट. 231; - रज पु./नपुं, कर्म. स. [आगन्तुकरजस], बाहर से आई हुई धूल या गन्दगी, बाहर से आई हुई मलिनता - जं नपुं, प्र. वि., ए. व. - रजन्ति आगन्तुकरजं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).379; रजोति आगन्तुकरजं, बु. वं. अट्ट. 127.

आगन्तुकता स्त्री., भाव, आगन्तुक होने की अवस्था - य तृ. वि., ए. व. - ... पच्चयवेकल्लताय आगन्तुकताय च रूपं न समुद्भापेति, विभ. अट्ट. 22; ... आगन्तुकन्ति अत्तनो आगन्तुकतायपि रूपं न समुद्भापेति, विभ. अट्ट. 22; - सुत्त नपुं, स. नि. 3(1) के बलकरणीयवर्गों के 11वें सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1), 62-63.

आगन्त्वा द्रष्ट. आगच्छति के अन्तः.

आगम पु., [आगम], शा. अ. आगमन, आ पहुंचना, प्राप्ति, उपलब्धि, पहुंच - मो प्र. वि., ए. व. - 'दहरस्स युविनो चापि, आगमो च न विज्जति, जा. अट्ट. 4.95; चरेय्य खीरमतोव, नत्थि मच्चुस्स आगमोति, स. नि. 1(1).128; नत्थि ततोनिदानं पापं, नत्थि पापस्स आगमो, दी. नि. 1.46; म. नि. 2.194; ताहि सद्धिं रमन्तानं कथं दुक्खागमो सिया, सद्धम्मो. 249; - माय च. वि., ए. व. - तस्मा न सङ्गे मरणागमायाति, जा. अट्ट. 7.20; तत्थ मरणागमायाति मरणस्स आगमाय, तदे.; सवे च जज्जा अविसद्धमतनो, न ते हि मय्हं सुखागमाय, जा. अट्ट. 4.202; विशेष अर्थ क. वापस लौटाना, प्रत्यावर्तन, ऋण की वापसी, कर्ज का भुगतान - मो प्र. वि., ए. व. - न पण्डिता तस्मिं इणं ददन्ति, न हि आगमो होति तथाविधम्हा, जा. अट्ट. 7.135; - मं द्वि. वि., ए. व. - अक्कोसति यथाकामं आगमञ्चस्स इच्छति, जा. अट्ट. 6.206; - मे सप्त. वि., ए. व. - यदि पनाय्या आगमे जुण्हे वस्सं उपगच्छेय्युन्ति, महाव. 182; विशेष अर्थ ख. जन्म, उत्पत्ति, मूल, किसी विशिष्ट धार्मिक परम्परा से सम्बद्ध शास्त्र या शाखा, परम्परागत धर्म-ग्रन्थ या सिद्धान्त, परम्परा, धार्मिक विषयों का ज्ञान, शास्त्र-कुशलता - ... न आगमो पुच्छितब्बो, परि. 311; न आगमोति 'दीघभाणकोसि त्वं मज्झिमभाणको'ति एवं आगमो न पुच्छितब्बो, परि. अट्ट. 209; अनुस्सवा वुड्ढतो आगमा वा, जा. अट्ट. 4.399; को दीघरत्तं सिप्पाचरियकुलं पयिरुपासित्वा आगमतो पयोगतो च हत्थिसिप्पादीसु किं सिप्पं सिक्खि, उदा. अट्ट. 165; ... आगमो नाम अन्तमसो

## आगमन

29

## आगमन

ओपम्मवगमतस्सपि बुद्धवचनस्स परियापुण्णं, विसुद्धि. 2.69; स. उ. प. के रूप में अप्पा. तक्का., विदिता., सुगता. के अन्त. द्रष्ट.; - धर त्रि., [बौ. सं. आगमधर], केवल आगमों (शास्त्रों या पिटकों) का विशेषज्ञ - रो पु., प्र. वि., ए. व. - 'सीलवा लज्जी कुक्कुच्चको बहुस्सुतो आगमधरो वंसानुरक्खको'ति, स. नि. अट्ट. 1.228; - रा ब. व. - अथागमधरा थेरा दीपेस्मिं विरला इति. चू. वं. 84.26; विशेष अर्थ ग. धर्म-ग्रन्थ, पिटक, पांच निकाय - मो/मा प्र. वि., ए./ब. व. - आगतागमाति एको निकायो एको आगमो नाम ... पञ्च निकाया पञ्च आगमा नाम ..., अ. नि. अट्ट. 2.89; आगतागमाति दीघादीसु यो कोचि आगमो आगतो एतेसन्ति आगतागमा, अ. नि. अट्ट. 3.121; आगमने तु दीघादिनिकायस्मिं च आगमो, अभि. प. 951; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट., आगता., अट्टत्ता., मज्झिमा. के अन्त.; - मट्टकथा स्त्री., तत्पु. स., निकायों पर लिखी गई अट्टकथा - यं सप्त. वि., ए. व. - आगमट्टकथाय पन असद्धिये न कम्मतीति सट्ठाबल'न्ति आदि वृत्तं, सट्. 2.438; - सु ब. व. - अत्थं पकासयिस्सामि, आगमट्टकथासुपि, ध. स. अट्ट. 3; - पिटक नपुं. सुत्तपिटक का ही अन्य नाम, पांच निकायों अथवा आगमों का संग्रहभूत पिटक - कं द्वि. वि., ए. व. - आगमपिटकं नाम अकसु सुत्तसम्मत्तं, दी. वं. 4.21; आगमपिटकं सब्बं सिक्खापेसि निरन्तरं, दी. वं. 7.30; विशेष अर्थ घ. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, अतिरिक्त अक्षर का समावेश - तेसु बुद्धि-लोपागम-विकार-विपरीतादेसा च, सट्. 3.808; यवमदनतरळा चागमा, क. व्या. 35; गो सरे पुथस्सागमो क्यचि, क. व्या. 42; स. उ. प. के रूप में अनुनासिका, आदि., उत्तरा., मज्झा., वण्णा., सनिग्गहीता. के अन्त. द्रष्ट..

आगमन नपुं, आ + गम से व्यु., क्रि. ना. [आगमन]. शा. अ. आना, बाहर से वापस आ जाना, आ पहुंचना - नं प्र. वि., ए. व. - महत्थिय आगमनं अहोसि, जा. अट्ट. 5.143; भवतं इदं इधागमनं स्वागतमेव, जा. अट्ट. 5.345; तुम्हाकं ... आगमनं पच्चासीसन्तीति आह, ध. प. अट्ट. 1.38; क. इध (यहां पर) के साथ अनेक स्थलों पर प्रयुक्त, यहां पर आगमन, यहां पर आना - नं प्र. वि., ए. व. - अत्थिकवतो खो पन ते अम्बट्ट, इधागमनं अहोसि, दी. नि. 1.79; ... ताव बहुकिच्चस्स बहुकरणीयस्स यदिदं इधागमनन्ति, दी. नि. 2.198; - नाय च. वि., ए. व. - इमं परियायं अकासि

यदिदं इधागमनाय, म. नि. 1.321; ख. स. उ. प. के रूप में, गमना.- (सूर्य एवं चन्द्रमा का) जाना और आना, (अस्त होना एवं उदय होना) - नं प्र. वि., ए. व. - गमनागमनमपि दिस्सति, वण्णधातु उभयेत्य वीथियो, जा. अट्ट. 4.55; नरिन्दा.- [नरेन्दागमन], राजा का आगमन - नरिन्दागमनं वंसं, कित्तियिस्सं सुणाथ मे, दी. वं. 1.2; ला. अ. 1. वापस लौटकर आना, वापसी, प्रत्यावर्तन - सत्थापि सत्तप्पकरणानि देसेत्वा मनुस्सलोकं आगमनत्थाय आकप्पं दस्सेसि, अ. नि. अट्ट. 1.102; मिगवं गहेत्वा मुच्चस्सु, कत्वा आगमनं पुन, ... कतं मे पोरिसादेन, मम आगमनं पुन, चरिया. 392; ला. अ. 2. पुनर्जन्म, पुनः भव में आगमन, कर्मों का अनिवार्य प्रतिफल - नाय च वि., ए. व. - यस्स दरथजा न सन्ति केचि, ओरं आगमनाय पच्चयासे, सु. नि. 15; यस्स गमनं आगमनं गमनागमनं कालंगति भवामवो चुति च उपपत्ति च निब्बत्ति च भेदो च जाति च जरामरणञ्च नत्थि ..., महानि. 232; - तो प. वि. - अयञ्च एतदगमसन्निकखेपो नाम चतुहि कारणोहि लभति अट्टप्पत्तिता आगमनतो चिण्णवसितो गुणातिरेकतोति, अ. नि. अट्ट. 1.101, 104, 108; ला. अ. 3. मार्ग या फल की प्राप्ति - नं प्र. वि., ए. व. - आगमनं पन दुविधं विपस्सनागमनं मग्गागमनञ्च, विसुद्धि. 2.305; - तो प. वि., ए. व. - सो हि आगमनतो सगुणतो आरम्मणतोति तीहि कारणोहि नाम लभति, ध. स. अट्ट. 265; नेन. त्. वि. ए. व. ... पच्चनीकेन वा सगुणेन वा आरम्मणेन वा आगमनेन वा, पटि. म. अट्ट. 2.137; स. उ. प. के रूप में, अपुना., अभब्बा., अपाथा., सरणा. के अन्त. द्रष्ट.; - कारण नपुं, तत्पु. स. [आगमनकारण], आने का कारण - णं द्वि. वि., ए. व. - किं भन्ते, आगतत्थाति आगमनकारणं पुच्छि, पे. व. अट्ट. 69; - काल पुं, तत्पु. स. [आगमनकाल], आने का समय, आ पहुंचने का काल - ते सप्त. वि., ए. व. - तत्थेव उत्वा आगमनकाले पच्चुग्गमनं कत्वा, ..., ध. प. अट्ट. 1.36; - दिट्ठिक त्रि., ब. स. [आगमनदृष्टिक], अच्छे कर्म का सुखद फल आगे मिलेगा, ऐसा विश्वास रखने वाला, कर्म तथा इसके विपाक पर श्रद्धा रखने वाला - सहत्था देति, अनपविद्धं देति, आगमनदिट्ठिको देति, अ. नि. 2(1).161; अनपविद्धं दानं देति, आगमनदिट्ठिको दानं देति, म. नि. 3.72; आगमनदिट्ठिकोति 'अनागतभवस्स पच्चयो भविस्सती'ति कम्मञ्च विपाकञ्च सदहित्वा देतीति, अ. नि. अट्ट. 3.54;



## आगमनक

30

## आगमि

— दिवस पु., तत्पु. स. [आगमनदिवस], आने का दिन — सं द्वि. वि., ए. व. — महाजनों तुम्हाकं दस्सनकामो, आगमनदिवसं वो जानितुं इच्छतीति, अ. नि. अष्ट. 1.102; — नन्दन त्रि., [आगतनन्दन], वह, जिसका आगमन मन में आनन्द उत्पन्न कर दे — नो पु., प्र. वि., ए. व. — एकस्मिं आगते नन्दन्ति, गते सोचन्ति तादिसो त्वं आगमननन्दनो गमनसोचनो, दी. नि. अष्ट. 2.191; — पटिपदा स्त्री., तत्पु. स. [आगमनप्रतिपत्], फल की प्राप्ति का मार्ग, उपाय या तरीका — दा प्र. वि., ए. व. — आगमनपटिपदा नाम खन्धादिवसेन बहहि मुखेहि सक्का कथेतुं जा. अष्ट. 4.238; — पथ पु., तत्पु. स. [आगमनपथ], (राग आदि मलों के) आने का मार्ग — थो प्र. वि., ए. व. — रजोपथोति रागरजादीनं उद्धानद्धानन्ति महाअट्टकथायं वृत्तं, आगमनपथोतिपि वदन्ति, दी. नि. अष्ट. 1.148; — मग्ग पु., तत्पु. स. [आगमनमार्ग], आने का मार्ग — रगे सप्त. वि., ए. व. — तस्स किर गामस्स बहि भगवतो आगमनमग्गे ब्राह्मणानं परिभोगभूतो एको उदयानो अहोसि, उदा. अष्ट. 3.07; — वस पु., तत्पु. स., आ जाने के कारण — सेन तृ. वि., ए. व. — तस्मा अन्तोअप्पनायमेव आगमनवसेन पटिपदाविसुद्धि, विसुद्धि. 1.143; — विपत्ति स्त्री. प्र. वि., ए. व. — चण्डालकुले वाति आदीहि आगमनविपत्ति चेव पुब्बुप्पन्नपच्चयविपत्ति च दस्सिता, स. नि. अष्ट. 1.143; — सद्धा स्त्री., तत्पु. स., अभिनीहार (बुद्धत्व-प्राप्ति हेतु लिए गए दृढ़ संकल्प) के समय से ही चली आ रही बोधिसत्त्वों की श्रद्धा — तत्थ सब्बज्जुबोधिसत्तानं सद्धा अभिनीहारतो पट्टाय आगतत्ता आगमसद्धा नाम, अ. नि. अष्ट. 3.27; — सील त्रि., ब. स. [आगमनशील], आने वाला — लो पु., प्र. वि., ए. व. — सकदागामीति सकिदेव इमं लोकं पटिसन्धिग्गहणवसेन आगमनसीलो दुतियफलद्धो, उदा. अष्ट. 249; ... ठितोपि पटिसन्धिग्गहणवसेन इमं मनुस्सलोकं आगमनसीलो, इतिवु. अष्ट. 264; — नाकार पु., तत्पु. स. [आगमनाकार], वापस लौटने का स्वरूप या तौर-तरीका — रं द्वि. वि., ए. व. — राजा अत्तनो आगमनाकारं सब्बं वित्थारतो कथेसि, जा. अष्ट. 1.257.

आगमनक त्रि., आने आने वाला, भविष्य — ... तस्स तस्स पज्जस्स उपरि आगमनवादपथं, म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.171.

आगमनीय/आगमनिय त्रि., आ + गम का सं. कृ. [आगमनीय], वह स्थान जहां आ पहुंचना चाहिए, प्राप्त किए जाने योग्य, सम्बद्ध, प्रापक — येन तृ. वि., ए. व. — आगमनियेन कथिते पन सुज्जतो वा फस्सो ..., म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2) 261; स. नि. अष्ट. 3.135; स. उ. प. के रूप में अना., ओरगा., तीणिसरणा., सरणा. आदि के अन्त. द्रष्ट.; — कथा स्त्री., तत्पु. स. [आगमनिककथा], आगमन फल-प्राप्ति की ओर ले जाने वाला कथन — अपरा आगमनियकथा नाम होति, स. नि. अष्ट. 3.135; — गुण पु., तत्पु. स. [आगमनिकगुण], श्रमण-जीवन के फल की प्राप्ति का गुण — णं द्वि. वि., ए. व. — कतकिच्चभावं पारं पत्तो परिजानामीति महाबोधिपत्तद्धे अत्तनो आगमनीयगुणं दस्सेति, अ. नि. अष्ट. 3.4; — ठान नपुं., कर्म. स. [आगमनिकस्थान], मार्ग की उत्पत्ति का स्थान, वह स्थान, जहां मार्ग की उत्पत्ति होती है — ने सप्त. वि., ए. व. — इति अयं सद्धारुपेक्खा आगमनीयद्धाने ठत्वा अत्तनो अत्तनो मग्गस्स नामं देति, विसुद्धि. 2.304; यतो मग्गो आगच्छति, तं आगमनीयद्धानं, तस्मिं आगमनीयद्धाने, विसुद्धि. महाटी. 2.447; — पटिपदा स्त्री., कर्म. स. [आगमनिकप्रतिपत्], फल की प्राप्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग — दा प्र. वि., ए. व. — आगमनीयपटिपदा पन न कथिता, म. नि. अष्ट. (उप.प.) 3.9; — दं द्वि. वि., ए. व. — पापुणन्तस्स आगमनियपटिपदं सन्धायेतं वृत्तं, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2) 79; — पुब्बभागपटिपदा स्त्री., तत्पु. स. [आगमनिकपूर्वभागप्रतिपत्], (अर्हत) फलप्राप्ति के पूर्वभाग में अनुसरणीय मार्ग — दा प्र. वि., ए. व. — कित्तकेन नु खो तण्हासद्ध्यविमुत्तस्स खीणासवस्स सद्धेपतो आगमनियपुब्बभागपटिपदा होतीति, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2) 193; — दं द्वि. वि., ए. व. — संखित्तेन खीणासवस्स पुब्बभागपटिपदं पुच्छितो सत्त्वहुकं कत्वा ..., म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2) 195; — सद्धा स्त्री., कर्म. स. [आगमनिकश्रद्धा], अभिनीहार के समय से ही चली आ रही बोधिसत्त्वों की श्रद्धा — ... तत्थ आगमनीयसद्धा सब्बज्जुबोधिसत्तानं होति, दी. नि. अष्ट. 2.107.

आगमयति/आगमयमान द्रष्ट. आगमेति के अन्त.

आगमा द्रष्ट. आगच्छति के अन्त.

आगमि द्रष्ट. आगच्छति के अन्त.

## आगमिक

31

## आगामी

**आगमिक** पु., [आगमिक], आगमों (निकायों में आगत वचनों) का ज्ञाता या अध्येता — कानं ष. वि., ब. व. — इदानी आगमिकानं कोसल्लजननत्थं पदसमोधानवसेन नामिकपदमाला बुच्चते, सद्. 1.258.

**आगमे** आगहे के स्थान पर अप., आ + गृह का विधि., प्र. पु., ए. व., ग्रहण करे, ले ले — यो जातरूपं रजतं, छड्ढेत्वा पुनरागमे, थेरीगा. 343; ... पुनरागमेति यो पुगलो सुवण्णं रजतं अज्जमि वा किञ्चि धनजातं छड्ढेत्वा पुन तं गणहेय्य ..., थेरीगा. अद्. 266.

**आगमेति** आ + गम के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आगमयति]. शा. अ., आने देता है, ला. अ., प्रतीक्षा करता है, आशा करता है, प्रतीक्षा में रुक जाता है, प्राप्त करता है — वुरादिगणं पत्तस्स आपुब्बस्स इमस्स आगमेति आगमयति आगमेत्तो आगमयमानोति, सद्. 2.462; 18; (प्रायः द्वि. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ प्रयुक्त) — लटुकिंका सकुणिका पूतिलताय बन्धनेन बद्धा तत्थेव वधं वा बन्धं वा मरणं वा आगमेति, म. नि. 2.122; आगमेतीति उपेति, म. नि. अद्. (म.प.) 2.118; — न्ति ब. व. — ... परिपाकं आगमेन्ति पण्डिता, मि. प. 44; — मयामसे उ. पु., ब. व., आत्मने. — कालमागमयामसेति कालकिरियं आगमेस्साम्, जा. अद्. 6.106; — हि अनु., म. पु., ए. व. — आगमेहि महाराज, पितरं आमन्तयामहन्ति ..., जा. अद्. 3.222; आगमेहि महाराज, मा मं विज्झि रथेसम्, जा. अद्. 4.231; — तु प्र. पु., ए. व. — आगमेतु, मन्ते, भगवा धम्मस्सामी, महाव. 462; — थ म. पु., ब. व. — आगमेथ, आवुसो, याव रत्ति विभायति, महाव. 98; — न्तु प्र. पु., ब. व. — आगमेन्तु किर भोन्तो, ..., म. नि. 2.384; — ग्याथ विधि., म. पु., ब. व. — मुहुत्तं आगमेय्याथ, याव जानामि तं मनं, चरिया. 56; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — ... तदनु रूपं कालं आगमेत्तो भिक्खं गहेत्वा ... , स. नि. अद्. 3.221; — न्तानं च/प. वि., ब. व. — भिक्खवे, नागमेन्तानं नाकामा भागं दातुन्ति, महाव. 371; — मयमानो वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. — उक्कुटिकं निसिन्ना आगमयमानो मुचिक्तो पपति, महाव. 213; — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — तेन खो पन समयेन अज्जतरो थेरो भत्तग्गे वच्चितो आगमेसि, चूळव. 355; — भिंसु ब. व. — ... थेरा आगमिसु, म. नि. अद्. (मू.प.)

1(2).291; — मित्थ/मेत्थ म. पु., ब. व. — किस्स तुम्हे नागमित्था'ति, महाव. 371; — स्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — 'अज्जण्हो भन्ते, आगमेही'ति बुच्चमानो नागमेस्सतीति, पारा. 334 35; — तुं निमि. कृ. — नाहं सक्कोमि भवन्ते सत्त वस्सानि आगमेतुं, दी. नि. 2.180; परिपक्के जाणे न सक्का निमेसन्तरमि आगमेतुं, मि. प. 186; — त्वा पू. का. कृ. — ... निसिन्ना भविस्सन्ती'ति विन्तेत्वा थोकं आगमेत्वा ..., जा. अद्. 1.11; कवाटं आकोटेत्वा मुहुत्तं आगमेत्वा, चूळव. 350; — तब्ब सं. कृ. — बुद्धानमस्स आगमेतब्बन्ति, महाव. 56.

**आगम्म** आ + गम का पू. का. कृ., केवल गाथाओं में ही प्राप्त [आगम्य], 1. आ कर, पहुंच कर — वेस्सवणो इधगम्म, निब्बापेसि, महाजनं अप. 1.152; कुतो नु आगम्म अनोमदस्सने, उपपन्ना त्वं भवन् मम इदं, वि. व. 153; कुतो नु साम आगम्म, कस्स वा पहितो तुवं, जा. अद्. 6. 94; 2. क्रि. वि. के रूप में तथा सन्धाय, आरब्ध, निस्साय एवं पटिच्च के पर्यायवाचक शब्द के रूप में प्रयुक्त [बौ. सं. आगम्य], सन्दर्भ से, कारण से, साधन से, सहारा लेकर, आश्रय लेकर — ते च भोन्तो समणब्राह्मणा किमागम्म किमारब्ध सस्सतवादा ..., दी. नि. 1.11; यानि छ नेक्खम्मसितानि सोमनस्सानि तानि निस्साय तानि आगम्म ..., म. नि. 3.267; वेहायसं गम्ममागम्माति ... आकासे पवत्तं पदवीतिहारं पटिच्च निस्साय, जा. अद्. 5.15; अप्येव नाम तवमि आगम्म पियवाचं लभेय्यामा'ति, जा. अद्. 5.417.

**आगामिय** त्रि., [आगमिक], आ पहुंचने वाला, अपरिचित आगन्तुक — सम्भागागियभित्खूहि, धम्मं देसापयित्थ च, चू. वं. 44.148.

**आगामी** त्रि., [आगमिन], शा. अ., आने वाला, आगे आ पहुंचने वाला, ला. अ. 1. प्राप्त करने वाला, प्राप्तिकर्ता, पुनर्जन्म पाने वाला — ... आगामी होति, आगन्ता इत्थत्तं, अ. नि. 1(1).80; — मिनो पु., प्र. वि., ब. व. — आगामिनो होन्ति आगन्तारो इत्थत्तं, अ. नि. 1(2).185; स. उ. प. के रूप में अना., सकदा. के अन्त. द्रष्ट.; ला. अ. 2. ले जाने वाला, प्राप्त कराने वाला — नगरं सकलं चेव इधगमि च अज्जसं, म. वं. 31.33; ला. अ. 3. भविष्यकाल, आगे आने वाला समय — आगामिकाले दीघत्ते पभावे च मतायति, अभि. प. 875.

## आगारिकमित्र

32

आघात

**आगारिकमित्र/अगारिकमित्र** पु., कर्म. स. [आगारिकमित्र], गृहस्थ मित्र — मित्राति द्वे मित्रा — अगारिकमित्तो च अनागारिकमित्तो च, चूळनि. 218.

**आगाळ** त्रि., आ + गृहाह का भू. क. कृ. [बौ. सं. आगाह], बहुत गहरा, अत्यन्त तीव्र, कठोर, बहुत अधिक दृढ़, कर्कश — ळहाय पु., च. वि., ए. व. — तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्षुणो आकङ्गमानो सङ्गो आगाळहाय चेत्य्य, परि. 244; आगाळहाय चेत्य्याति आगाळहाय दळ्ढभावाय चेत्य्य, तज्जनीयकम्मादिकतस्स वत्तं न पूरयतो इच्छमानो सङ्गो उक्खेपनीयकम्मां करेय्याति अत्थो, परि. अहु. 166; — ळहेन नपुं. तृ. वि., ए. व. — आगळहेनाति गाळहेन कक्खळ्हेन, अ. नि. अहु. 2.233; इधेकच्चो पुग्गलो आगळहेनपि वुच्चमानो फरुसेनपि वुच्चमानो अमनापेनपि वुच्चमानो ..., प. प. 140; आगाळहेनाति अतिगाळहेन मम्मच्छेदकेन थद्धवचनेन, पु. प. अहु. 63.

**आगिलायति** आ + गिला का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आग्लायति], कुछ कुछ पीड़ा उत्पन्न करता है, हलका दर्द देता है, थकावट या अवसाद उत्पन्न करता है — पिड्ढि मे आगिलायति, तमहं आयमिस्सामीति, चूळव. 340; दी. नि. 3.167; अपि मे पिड्ढि आगिलायति बहिद्धारकोड्ढके वितस्स कथापरियोसानं आगमयमानस्साति, अ. नि. 3(1).178; यदा च तेसं हृदयं आगिलायति, किस्मिच्चिदेव वा जिगुच्छा उप्पज्जाति, खु. पा. अहु. 50.

**आगिलायन** नपुं. आ + गिला से व्यु., क्रि. ना. [आग्लपन], थकावट, दर्द, पीड़ा — उपादिन्नकसरीरञ्च नाम 'नो आगिलायतीति न वत्तब्बं, तस्मा चिरं निस्सज्जाय सज्जातं अप्पकम्पि आगिलायनं गहेत्वा एवमाह, म. नि. अहु. (म.प.) 2.21.

**आगु** नपुं., [आगस], पाप-कर्म, दुष्कर्म, अकुशल-कर्म, अपराध, अपुण्यकर्म — अपुञ्जाकुसलं कण्हं कलुसं दुरितायु च, अभि. प. 84; आगु वुत्तमपराधो, करो तु वलिमुच्चत्तै, अभि. प. 355; आगु पापापराधेषु के तुम्हि चिह्ने धजो, अभि. प. 1064; — गुं द्वि. वि., ए. व. — आगुं किर महाराज, अकरि कम्मदुक्कटं, जा. अहु. 6.100; अपि च, उदायि, यो ... आगुं न करोति कायेन वाचाय मनसा, तमहं नागोति ब्रूमीति, अ. नि. 2(2).60; आयुन्ति पापकं लामकं अकुसलधम्मं, अ. नि. अहु. 3.113; — किरिया स्त्री., तत्पु. स., पापकर्म, अकुशलकर्म — विमलत्ता वा आगुं न करोति, तेन अकाचो, आगुकिरिया हि उपघातकरणतो

काचोति वुच्चति, सु. नि. अहु. 2.124; — चारी त्रि., [आगस्कारिन्], पाप कर्म करने वाला, पापी, दुष्ट (केवल चोर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त) — रि पु., द्वि. वि., ए. व. — सेय्यथापि, भिक्षवे, चोरं आगुचारिं गहेत्वा रज्जो दस्सेय्युं ..., स. नि. 1(2).88; 111; महानि. 297; ... राजानो चोरं आगुचारिं गहेत्वा विविधा कम्मकारणा कारेन्ते ..., म. नि. 3.203; आगुचारिन्ति पापकारि अपराधकारकं, अ. नि. अहु. 2.1; चतुत्थे आगुचारिन्ति पापचारि दोसकारकं, स. नि. अहु. 2.99.

**आगोत्तमुं/आगोत्रमुं** अ., अव्ययी. स., आ+गोत्रभू से व्यु., गोत्रभू-नामक अवस्था की प्राप्ति तक (आसव शब्द के निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त) — आसवेहीति आभवग्गं आगोत्रमुं सवनतो पवत्तन्तो, उदा. अहु. 75; अथ वा आगोत्रमुं आभवग्गं वा सवन्तीति आसवा, उदा. अहु. 141; विशेष तात्पर्य के लिए द्रष्ट. गोत्रभू के अन्त. (आगे).

**आगोत्रमुतो** अ., क्रि. वि., आ + गोत्रभू से व्यु., गोत्रभू नामक अवस्था की प्राप्ति-पर्यन्त (आसव शब्द के व्याख्यान के सन्दर्भ में प्रयुक्त) — आसवाति आरम्भणवसेन आगोत्रमुतो, आभवग्गतो च सवना, विसुद्धि. 2.322.

**आघात** पु., आ + गृहण से व्यु. [आघात], शा. अ., हत्या, प्रहार, ला. अ., क्रोध, द्वेष, प्रतिशोध का भाव, शत्रुता या वैमनस्य का भाव — कोधाघाता कोप-रोसा, व्यापादोन्भिरद्धि च, अभि. प. 164; — तो प्र. वि., ए. व. — ... भिक्षुणो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो, अ. नि. 2(1).174; तिब्बो आघातो ... भविस्सतीति बलवकोपो ... पच्चुपड्डितो भविस्सति, दी. नि. अहु. 3.34; अयञ्चरहि देवदत्तस्स भगवति पठमो आघातो अहोसि, चूळव. 326; — तेन तृ. वि., ए. व. — सो तेन आघातेन महति गरुं सिलं गहेत्वा ..., मि. प. 138; स. उ. प. के रूप में, अना. — त्रि., ब. स., आघात से राहत, प्रबल क्रोध या द्वेष की भावना से रहित — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — 'मेत्तं नु खो मे वित्तं पच्चुपड्डितं सन्नह्यचारीसु अनाघातं, अ. नि. 3(2).66; अनाघातन्ति आघातविरहितं, विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो, अ. नि. अहु. 3.309; खग्गा. — पु., तत्पु. स. [खड्गाघात], तलवार का प्रहार — खग्गाघातद्विधाभूतवेरिविग्गहभिसं, चू. वं. 72.110; बद्धा. — त्रि., ब. स. [बद्धाघात], अत्यन्त प्रबल द्वेष-भाव से युक्त — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — तदा नं जण्णकप्परमुड्डीहि

## आघातन

33

## आघातवग्ग

पहरतेव यथा तं पुरिमजातीसु बद्धाघाता, वि. व. अ. 174; विहता. - त्रि., ब. स. [विहताघात], द्वेषभाव को नष्ट कर चुका या उससे मुक्त हो चुका - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो, अ. नि. अ. 3.309; समुच्छिन्ना. - त्रि., ब. स. [समुच्छिन्नाघात], उपरिवत् - तो पु., प्र. वि., ए. व. - अनागामिमग्गेन सब्बसो पहीनत्ता एनुण्णकोधो समुच्छिन्नाघातो, उदा. अ. 157; - करणरस त्रि., ब. स., प्रतिहिंसा भाव या द्वेषभाव को उत्पन्न कर देने का काम करने वाला - सो पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ कुञ्जानलक्खणो कोहो, चण्डिककलक्खणो वा, आघातकरणरसो, दुस्सनपच्चुपट्टानो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).113; - डपना स्त्री., तत्पु. स., प्रतिहिंसा-भाव या द्वेषभाव की स्थापना, द्वेषभाव को उत्पन्न करना - ना प्र. वि., ए. व. - सण्ठपनाति सब्बतोभागेन पुनप्पुनं आघातडपना, विम. अ. 464.

आघातन नपुं., 1. आ + वहन से व्यु. करणार्थक कृ. ना. [आघातन], वध-स्थान, वध्य-शिला, शूली, कसाई-खाना, पशुओं के वध के लिए प्रयुक्त काष्ठपट्टिका - नं प्र. वि., ए. व. - आघातनं वधद्वानं, सूणा तु अधिकोद्वनं, अभि. प. 521; आघातनन्ति धम्मगमिका वुच्चति, पारा. अ. 2.41; - नं द्वि. वि., ए. व. - ... संहिपुत्तं महन्तेनारक्खेन आघातनं नेत्वा असिना सीसं छिन्दित्वा ..., जा. अ. 3.51; - ने सप्त. वि., ए. व. - ... दक्खिणतो नगरस्स आघातने सीसं छिन्दथाति, दी. नि. 2.240; - ना प. वि., ए. व. - तुडो आयुक्खया होति, मुत्तो आघातना यथा, थेरगा. 711; 2. नपुं., भाव. अर्थ में व्यु., मृत्यु - ... किमागम्म किमारब्ध उद्धमाघातनिका सञ्जीवादा उद्धमाघातनं सञ्जि अत्तानं पञ्जयेन्ति ..., दी. नि. 1.26; ... आघातनं वुच्चति मरणं, ..., दी. नि. अ. 1.101; 3. मृत्यु का क्षेत्र, विपत्ति का स्थल - विसमूलं आघातनं, थेरगा. 418; सत्तानं ब्यसनुप्पत्तिद्वानताय आघातनं कम्मं किलेसं वा ..., थेरगा. अ. 2.90; स. उ. प. के रूप में गवा. - नपुं., तत्पु. स., गाय के वध का स्थान, कसाई-खाना - नं प्र. वि., ए. व. - चङ्गमो लोहितेन फुटो होति, सेय्यथापि गवाघातनं, महाव. 253; महा. - त्रि., अत्यधिक पीड़ा-दायक - नं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तुम्हाकं सासनं नाम, महाआघातनं नामेतं, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).169; - भण्डिका स्त्री., वधशिला - य सप्त. वि., ए. व. - ... दक्खिणद्वारेन निथ्यमानो विद्य आघातनभण्डिकाय

वपितसीसो विद्य मूले उत्तासितो, दी. नि. अ. 2.57; गच्छथेतस्स आघातनभण्डिकायं ठपेत्वा, सीसं छिन्दथाति, स. नि. अ. 3.69; - निस्सित त्रि., वधशिला के निकट में स्थित या उस से सम्बद्ध - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - अब्भाघातनिस्सितं वा होति, आघातननिस्सितं वा होति, सुसाननिस्सितं वा होति, पारा. 231; - पच्चुपट्टित त्रि., तत्पु. स., वध करने हेतु या मार दिए जाने के लिए सामने उपस्थित, मृत्यु का विषयीभूत - तो पु., प्र. वि., ए. व. - वज्जबन्धनबद्धो लोकसन्निवासो आघातनपच्चुपट्टितो, पटि. म. 117; आघातनपच्चुपट्टितोति मरणधम्मगण्डिकत्तानं उपेच्च तितो, पटि. म. अ. 2.18; - नामिमुख अ., क्रि. वि., वध-स्थल की ओर - खं द्वि. वि., ए. व. - सिङ्घाटकं सिङ्घाटकं विचरापेत्वा कसाहि ताळेन्तो आघातनाभिमुखं नेति, पे. व. अ. 5.

आघातपटिविनय पु., तत्पु. स. [आघातप्रतिविनय], द्वेषभाव का उपशमन, द्वेषभाव का उपशमन करने वाले मेत्ता, करुणा, उपेक्षा, अमनसिकार तथा कर्मस्मरण जैसे धर्म - या प्र. वि., ब. व. - पञ्चिमे, आवुसो, आघातपटिविनया यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो, अ. नि. 2(1).174; नवयिमे, भिक्खवे, आघातपटिविनया, अ. नि. 3(1).218; दुतियस्स पठमे आघातं पटिविनेन्ति वूपसमेन्तीति आघातपटिविनया, अ. नि. अ. 3.57.

आघातपटिविनयसुत्त नपुं., अ. नि. के दो ऐसे सुत्त, जिन में द्वेषभाव के उपशमन कराने वाले पांच अथवा नौ धर्मों अथवा उपायों का विवरण है - ते सप्त. वि., ए. व. - इदं पञ्चकनिपाते आघातपटिविनयसुत्ते विथारेतब्बं, विसुद्धि. 1.289; अ. नि. 2(1).175-77, 3(1).218.

आघातबन्धन नपुं., तत्पु. स. [आघातबन्धन], द्वेषभाव के साथ बंध जाना, द्वेष-भाव के साथ लगाव - नं प्र. वि., ए. व. - इदं पठमं देवदत्तस्स बोधिसत्ते आघातबन्धनं, जा. अ. 1.120.

आघातमत्त नपुं., कर्म. स. [आघातमात्र], थोड़ा सा भी द्वेषभाव, अत्यन्त अल्पमात्र में द्वेष भाव - त्तं प्र. वि., ए. व. - तस्मिं काले सीलवमहाराजा चोररञ्जो आघातमत्तमि नाकासि, जा. अ. 1.256.

आघातवग्ग पु., अ. नि. के उस वग्ग का शीर्षक, जिसमें कुल दस सुत्त हैं तथा जिसका नामकरण द्वेषभाव का उपशमन कराने वाले पांच धर्मों के प्रकाशक दो

## आघातवत्थु

34

आचमति

आघातपटिविनयसुत्तो के नामों के आधार पर किया गया है, अ. नि. 2(1).174-188.

**आघातवत्थु** नपुं., तत्पु. स. [आघातवस्तु], द्वेषभाव, द्वेषभाव को मन में उदय कराने वाली नौ अथवा दस बातें (धर्म) या कारण — स्मिं सप्त. वि., ए. व. — कोपनेय्येति पटिघट्टानीये सब्बस्मिम्पि आघातवत्थुस्मिं न कुप्पति न दुस्सति ..., उदा. अट्ठ. 200; — त्थूनि प्र. वि., ब. व. — नवयिमानि, भिक्खवे, आघातवत्थूनि, अ. नि. 3(1).217; नवमे आघातवत्थूनीति आघातकारणानि, अ. नि. अट्ठ. 3.274; — त्थूसु सप्त. वि., ब. व. — सो सीहोव सदेसु आघातवत्थूसु कुज्झितुकामताय न सन्तसति, सु. नि. अट्ठ. 1.100; — पदट्ठान त्रि., ब. स. [आघातवस्तुपदस्थान], वह अकुशल मनोभाव, जिसका समीपतम कारण द्वेष हो, द्वेष को समीपतम कारण बनाने वाला — ड्ढानो पु., प्र. वि., ए. व. — दुस्सनपच्चुपट्ठानो लद्धोकासो विय सपतो, आघातवत्थुपदट्ठानो, अभि. अव. 27; — समुट्ठान त्रि., ब. स. [आघातवस्तुसमुत्थान], द्वेषभाव के कारण मन के भीतर उठने वाला — नो पु., प्र. वि., ए. व. — ... रागो च नवआघातवत्थुसमुट्ठानो दोसो च ..., जा. अट्ठ. 3.358; — सम्भव त्रि., ब. स. [आघातवस्तुसम्भव], उपरिवत् — वो पु., प्र. वि., ए. व. — यथा वेस, एवं नवविधआघातवत्थुसम्भवो व्यापादो, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).178; — वं पु., द्वि. वि., ए. व. — खन्तिस्वरेन सीतादीनि खमन्तोपि तंतआघातवत्थुसम्भवं कोधं विनेति, सु. नि. अट्ठ. 1.9.

**आघातविनय** पु., द्वेषभाव का उपशमन — या प्र. वि., ब. व. — द्वे आघातविनया, साकच्छम साजीवतो पज्जं, अ. नि. 2(1).188.

**आघातविनयनरस** त्रि., ब. स. [आघातविनयनरस], वह कुशल धर्म (मनोभाव), जिसका सार-तत्त्व द्वेषभाव का उपशमन करना हो — सो पु., प्र. वि., ए. व. — अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय, आघातविनयरसो, परिट्ठाहविनयरसो वा चन्दनं विय, ध. स. अट्ठ. 172.

**आघातविनयपच्चुपट्ठान** त्रि., ब. स. [आघातविनयप्रत्युपस्थान], द्वेषभाव के उपशमन से उदित होने वाली (मेता-भावना), द्वेषभाव का उपशमन कराने वाला/वाली — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — हितूपसंहाररसा, आघातविनयपच्चुपट्ठाना, सत्तानं मनापभावदस्सनपदट्ठाना, विसुद्धि. 1.308; ध. स. अट्ठ. 237.

**आघातविरहित** त्रि., तत्पु. स. [आघातविरहित], द्वेषभाव से रहित — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अनाघातन्ति आघातविरहितं, विक्खम्मनेन विहताघातन्ति अत्थो, अ. नि. अट्ठ. 3.309.

**आघातित** त्रि., आघात के ना. धा. से व्यु., [आघातित], शा. अ., बुरी तरह से चोट पहुंचाया गया या पीटा गया, ला. अ., पीड़ित, विषयीभूत — तो पु., प्र. वि., ए. व. — नवहि आघातवत्थूहि आघातितो, उदा. अट्ठ. 114; नवहि आघातवत्थूहि आघातितो लोकसन्निवासोति, पटि. म. 118; आघातितोति घट्टितो, पटि. म. अट्ठ. 2.27; — ता ब. व. — अज्जमज्जेहि ब्यारुद्धेति अज्जमज्जं सत्ता विरुद्धा पटिविरुद्धा आहता पच्चाहता आघातिता पच्चाघातिता, महानि. 302; — मन त्रि., ब. स. [आघातितमन], पीड़ित अथवा द्वेष से दूषित मन वाला — ना पु., प्र. वि., ब. व. — ते तिस्थिया दुड्ढमना विरुद्धमना पटिविरुद्धमना आहतमना पच्चाहतमना आघातितमना पच्चाघातितमना वदन्ति ..., महानि. 44; आघातितमनाति विहिंसावसेन आघातितं मनं एतेसन्ति आघातितमना, पच्चाघातितमनाति उपसग्गवसेनेव ..., महानि. अट्ठ. 149.

**आघातुक** त्रि., [आघातक], प्रहार करने को उत्सुक, चोट या हानि पहुंचाने की मनोवृत्ति वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — आहननसीलो आघातुको, करणसीलो कारुको, क. व्या. 538; सद्द. 3.846.

**आघातेति** आघात का ना. धा. [आघातयति], द्वेषभाव से भर देता है, द्वेषभाव से पीड़ित करा देता है — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — चित्तं आघातेन्तो उपपन्नोति चित्तस्स आघातो, महानि. अट्ठ. 256; — त्वा पू. का. कृ. — निरये कोकालिको भिक्खु उपपन्नो सारिपुत्तमोग्गत्तानेसु चित्तं आघातेत्त्वाति, स. नि. 1(1).178.

**आघान** नपुं., आ + घा से व्यु., क्रि. ना. [आघ्राण], गन्ध को सूंघना, गन्ध को नाक द्वारा अनुभव करना — सिधि आघाने, आघान घानेन गन्धानुभवनं, सद्द. 2.334.

**आचमति** आ + च्म का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचमति], आचमन करता है, हथेली पर जल लेकर पीता है, कुल्हा करता है, गटकता है — जातिमन्ततापसो पातोव गज्जं ओरुह उदकं आचमति, जटा धोवति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.61; — न्ति ब. व. — तिमिरपिङ्गला अभन्तरे ... महाउदकधारा आचमन्ति धमन्ति च, भि. प. 244; —

## आचमन

35

## आचमेति

मितुं निमि. कृ. - वन्ते अहं आचमितुं न उरसह, थेरगा. 1128; पाठा. आवमितुं.

आचमन नपुं. आ + चम से व्यु., क्रि. ना. [आचमन]. धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर जल द्वारा मुख एवं समस्त शरीर की शुद्धि करना, हथेली पर जल लेकर घूट-घूट करके पीना, मलत्याग के उपरान्त जल द्वारा मलद्वार को धोना - वत्थुकम्मं वत्थुपरिकम्मं आचमनं न्हापनं जुहनं वमनं विरेचनं .... दी. नि. 1.10; आचमनन्ति उदकेन मुखसुद्धिकरणं, दी. नि. अट्ट. 1.86; स. उ. प. के रूप में उदका- नपुं. तत्पु. स. [उदकाचमन], जल द्वारा मुख को धोना - नानि प्र. वि., ब. व. - कुहना वड्डण्डा च उदकाचमनानि च, स. नि. 2(2).124; उदकाचमनानि याति उदकेन मुखपरिमज्जनानि, स. नि. अट्ट. 3.43; सुद्धिका. - नपुं. कर्म. स. [शुद्धिकराचमन]. शुद्ध कर देने हेतु किया गया आचमन या जल का पान - नं द्वि. वि., ए. व. - केचि उत्तरन्ति केचि उत्तरित्वा सुद्धिआचमनं करोन्ति, उदा. अट्ट. 60; स. पू. प. के रूप में नोदक - नपुं. तत्पु. स. [आचमनोदक], आचमन के लिए प्रयुक्त जल, धार्मिक अनुष्ठान में मुखशुद्धि एवं शरीरशुद्धि के लिए पान किया जाने वाला जल, शौचक्रिया में मलद्वार को धोने के लिए प्रयुक्त जल - कं द्वि. वि., ए. व. - आचमेहीति आचमनोदकं देहि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.246; - उदकावसेस पु., तत्पु. स. [आचमनोदकावशेष], शौचक्रिया में प्रयुक्त जल का बचा हुआ भाग - सं द्वि. वि., ए. व. - ... भिक्षु एकदिवसं वच्चकुटिं पविट्ठो ... आचमनोदकावसेसं भाजने तपेत्ताव निक्खमि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 1(2).287; जा. अट्ट. 3.429.

आचमनकुम्भी स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आचमनकुम्भी], शौचालय के बाहर शौचक्रिया में उपयोग हेतु रखा हुआ जल से भरा मटका - म्भी प्र. वि., ए. व. - आचमेति आचमयति आचमनकुम्भी, सट्. 2.556; - म्भिं द्वि. वि., ए. व. - आचमनकुम्भी न होति ... अनुजानामि, भिक्षवे आचमनकुम्भिन्ति, चूळव. 263; - या सप्त. वि., ए. व. - सचे आचमनकुम्भिया उदकं न होति, आचमनकुम्भिया उदकं आसिञ्चितब्बं, महाव. 54; चूळव. 370, 367.

आचमनथालक नपुं. तत्पु. स., शुद्ध करने हेतु प्रयुक्त जल का पात्र - कं द्वि. वि., ए. व. - परिक्रारदापेसि आचमनथालकं, सीमाविवादविनिच्छय कथा, 28.8(रो.).

आचमनपादुका स्त्री., तत्पु. स. [आचमनपादुका], पैरों को धोने के लिए रखा गया लकड़ी का तख्ता या पीढ़ा - कं द्वि. वि., ए. व. - तिस्सो पादुका धुवड्डानिया असङ्गमनियायो - वच्चपादुकं, पस्सावपादुकं, आचमनपादुकन्ति, महाव. 264; दुक्खं निसिन्ना आचमेन्ति ... अनुजानामि, भिक्षवे, आचमनपादुकन्ति, आचमनपादुका पाकटा होन्ति, चूळव. 263; - य सप्त. वि., ए. व. - आचमनपादुकाय ठितेन उब्भजितब्बं, चूळव. 366.

आचमनसरावक पु., तत्पु. स., विहार के शौचालय (वच्चकुटी) के बाहर रखे पानी से भरे मटके से पानी निकालने हेतु प्रयोगों में लाया जाने वाला पात्र - को प्र. वि., ए. व. - आचमनसरावको न होति ... अनुजानामि, भिक्षवे, आचमनसरावकन्ति, चूळव. 263; - के सप्त. वि., ए. व. - चपुचपुकारकम्पि आचमेन्ति, आचमनसरावकेपि उदकं सेसेन्ति, चूळव. 366.

आचमापेन्ति आ + चम के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ब. व., आचमन कराते हैं, शौचक्रिया के उपरान्त धुलवाते हैं - ततो पड्ढाय नं नेव नहापेन्ति न च आचमापेन्ति, जा. अट्ट. 6.8.

आचमेति / आचमयति आ + चम के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचमयति], हाथ पैर आदि धोने के बाद अपने मुख का प्रक्षालन करता है, धोता है, शौचक्रिया के उपरान्त प्रक्षालन करता है - आपुब्बो चमुधातु धोवने वत्तति, आचमेति आचमयति, आचमनकुम्भी, सट्. 2.556; - सि म. पु., ए. व. - ... वच्चं कत्वा न आचमेसीति, चूळव. 365; - न्ति प्र. पु., ब. व. - दुक्खं निसिन्ना आचमेन्ति ..., चूळव. 263; - यमानो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - ... विसं चिक्खस्सन्तो उद्धमसो आचमयमानोति, मि. प. 152; - य्य विधि., प्र. पु., ए. व. - यो नाचमेय्य आपत्ति दुक्कटस्साति, चूळव. 365; - मित्वा पू. का. कृ. - नाचमेय्य सचे वच्चं कत्वा यो सलिले सति, ... आचमित्वा सरावेपि, सेसेतब्बं न तूदकं, विन. वि. 2938-2939; - स्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - कथञ्चि नाम भिक्षु वच्चं कत्वा न आचमेस्सतीति, चूळव. 365; - तुं निमि. कृ. - भिक्षू हिरियन्ति आचमेतुं ..., चूळव. 263; - यित्वान / यित्वा पू. का. कृ. - सयं आचमयित्वान, दत्त्वा सकेहि पाणिभि, अ. नि. 2(2).52; सयं आचमयित्वानाति अत्तनाव हत्थपादे धोवित्वा मुखं विक्खालेत्वा, अ. नि. अट्ट. 3.110; ततो हि सो आचमयित्वा लिच्छवि, थेरस्स दत्तान

## आचय

36

## आचरति

युगानि अद्भु. पे. व. 569; आचमयेत्वाति हत्थपादधोवनपुष्पकं मुखं विस्त्रालेत्वा, पे. व. अद्भु. 208.

**आचय** पु., आ + चि से व्यु. [आचय]. शा. अ., चयन, एकत्रीकरण, राशि, ढेर या पुञ्ज बना देना, अस्तित्व में ला देना — यं द्वि. वि., ए. व. — अञ्जनानं खयं दित्वा, उपचिकानञ्च आचयं, ध. प. अद्भु. 1.264; — यो प्र. वि., ए. व. — ... कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो, ध. स. अद्भु. 91; तदुभयं एकज्झं गहेत्वा आचयो लक्खणं एतस्माति आचयलक्खणो, विसुद्धि. महाटी. 2.95; यो आयतनानं आचयो सो रूपस्स उपचयो, ध. स. 641; आचयोति निब्बत्ति, ध. स. अद्भु. 359; ला. अ., वृद्धि, विकास, विपुलभाव — दिस्सति, भिक्खवे, इमस्स चातुमहाभूतिकस्स कायस्स आचयोपि अपचयोपि ..., स. नि. 1(2).84; आचयोति वुद्धि, अपचयोति परिहानि, स. नि. अद्भु. 2.86; ततो एव आचयसङ्गाता चया अपेतत्ता, निब्बाणं अपेतं चयाति अपचयो, ध. स. अद्भु. 91; — गामी त्रि., [आचयगामिन], आचय (वृद्धि) के निष्पादक अथवा आचय की ओर ले जाने वाले सास्रव कुशलधर्म एवं अकुशल धर्म — भिनो व. व. — ... तस्स कारणं हुत्वा निष्पादनकभावेन तं आचयं गच्छन्ति, यस्स वा पवतन्ति तं पुग्गलं यथावुत्तमेव आचयं गमेन्तीतिपि आचयगामिनो, ध. स. अद्भु. 91; तिस्सो पटिसम्भिदा सिया आचयगामिनो, सिया नेवाचयगामिनापचयगामिनो, विभ. 344; — मी पु., प्र. वि., ए. व. — कामावचरं कुसलं सविपाकं आचयगामीतिआदिका पुच्छा परवादस्स, पटिज्जा च पटिक्खेपो च सकवादस्स, प. प. अद्भु. 198; कतमो च, भिक्खवे, आचयगामी धम्मो ? मिच्छादिद्धि ... मिच्छाविमुत्ति — अयं वुच्चति, भिक्खवे, आचयगामी धम्मो, अ. नि. 3(2). 210; अत्थि आचयगामी, अत्थि अपचयगामी, अत्थि नेवाचयगामिनापचयगामी, विभ. 18; — भित्तिक नपु., तत्पु. स., ध. स. की दसवीं तिकमातिका, जिसमें आचयगामी, अपचयगामी तथा नेवाचयगामि-नापचयगामी धर्मों का परिगणन है — के सप्त. वि., ए. व. — आचयगामित्तिके कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो, ध. स. अद्भु. 91.

**आचयापचय** पु., द्व. स. [आचयापचय], वृद्धि एवं हानि, विकास एवं क्षय — यो प्र. वि., ए. व. — एवं इमस्स कायस्स आचयापचयो होति, म. नि. 1.304; आचयापचयो होतीति वड्ढि च अवड्ढि च होति, म. नि. अद्भु. (मू.प.) 1(2).182.

**आचरण** नपु., आ + चर से व्यु., क्रि. ना. [आचरण], चाल चलन, व्यवहार — अज्झाचारोति अधिद्वहित्वा आचरणं, नेति. अद्भु. 234; द्रष्ट. अज्झाचार; — क त्रि., आचरण से व्यु., — किलेसविरहितं पु., द्वि. वि., ए. व., आचरण में दुष्प्रभाव डालने वाले या आचरण में प्रभाव डालने वाले क्लेशों से मुक्त — अनाचरियकन्ति आचरणककिलेसविरहितं, स. नि. अद्भु. 3.47.

**आचरति** आ + चर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचरति], क. आचरण करता है, व्यवहार में उतारता है, कुशल या अकुशल कर्म करता है — ... भिक्खु उपसम्पन्नसमनन्तरा अनाचारं आचरति, महाव. 63; अनाचारं आचरतीति पण्णत्तिवीतिक्कमं करोति, महाव. अद्भु. 253; विलोममाचरति अकिच्चकारिनी, जा. अद्भु. 5.432; ... सिक्खति आचरति समाचरति समादाय सिक्खति, महानि. 373; — रेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — यो आचरेय्य, यथाधम्मो कारेतब्बोति, चूळव. 264; विसमाय पणिधिया हेतु विसमं न चरेय्य न आचरेय्य न समाचरेय्य न समादाय वत्तेय्याति, महानि. 30; — रि अद्य., प्र. पु., ए. व. — दद्धं समादाय समत्तमाचरे, दी. नि. 3.109; — रिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — एवरुपं अनाचारं आवरिस्सतीति ..., महाव. 108; — रिस्सामि उ. पु., ए. व. — सोहं तदेव पुनप्पुनं, वटुमं आचरिस्सामि सोभने, जा. अद्भु. 3.365; — रे विधि., प्र. पु., ए. व. — मालं न धारे न च गन्धमाचरे, मज्जे छमायं व सयेथ सन्थते, अ. नि. 1(1).244; — रेय्य — यो आचरेय्य परदारमलङ्घनीयं, घोरञ्च विन्दति सदा व्यसनं च नेकं, तेल. 80; — रितब्ब त्रि., सं. कृ. — न, भिक्खवे, विविधं अनाचारं आचरितव्वं, चूळव. 264; — रित त्रि., भू. क. कृ. [आचरित], वह, जिसका व्यावहारिक जीवन में पालन किया गया है या अनुसरण किया गया है, व्यवहार में उतारा हुआ, व्यवहृत — तो पु., प्र. वि., ए. व. — मा त्वं अधम्मो आचरितो, अस्मा कुम्भमेवाभिदाति, पाचि. 278; जा. अद्भु. 3.25; विशेष अर्थ क. प्रयोग करता है, व्यवहार में लाता है — रे विधि., प्र. पु., ए. व. — मालं न धारे, न च गन्धमाचरे, सु. नि. 403; आकप्पं सरकुत्तिं वा, न रज्जो सदिसमाचरे, जा. अद्भु. 7.187; विशेष अर्थ ख. परस्त्री-गमन करता है — रेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — यो आचरेय्य परदारमलङ्घनीयं, तेल. 80.

## आचरिनी

37

## आचरियकिच्च

आचरिनी स्त्री., भिक्षुणीसङ्घ में रहने वाली आचार्य नारी – निं / नीं द्वि. वि., ए. व. – गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति, पाचि. 303-304, 433; – निया च. / ष. वि., ए. व. – उपज्झायाय आपत्ति पाचितियस्स, गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स, पाचि. 440.

आचरिय पु., [आचार्य, बौ. सं., आचरिय / आचारिय], सामान्य अर्थ, शिक्षक, अध्यापक, विविध शिल्पों एवं विद्याओं की शिक्षा देने वाला शिक्षक, घोड़ों एवं हाथियों आदि का प्रशिक्षक – गामणीयो तु मातङ्गहयाद्याचरियो भवे, अभि. प. 368; – येन त्. वि., ए. व. – ... सब्बसिप्पानि उग्गण्हित्वा आचरियेन अनुज्जातो ..., जा. अट्ठ. 3.206; असुकाचरियेन कतोतिपि जानाति, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2)240; – य संबो., ए. व. – इच्छामहं आचरिय, सिप्पं सिक्खितुं न्ति, महाव. 466; – या प्र. वि., ब. व. – आचरियाव जानन्ति, कम्मं सुकतदुक्कटं, जा. अट्ठ. 3.249; – येसु सप्त. वि., ब. व. – ... सिप्पस्स कारणा आचरियेसु सगारवा ..., महाव. 260; विशेष अर्थ 1. उपनयन कराने वाला तथा वेदों एवं वेदाङ्गों की शिक्षा देने वाला ब्राह्मण आचार्य – उपनीयाथ वा पुब्बं वेदमज्झापये द्विजो, यो साङ्गं सरहस्सं वाचरियो ब्राह्मणेसु सो, अभि. प. 411; अहं तस्स आचरियब्राह्मणो, जा. अट्ठ. 1.299; – स्स ष. वि., ए. व. – “अहं इमं मन्तं आचरियस्स उपकारको हुत्वा लभिस्सामी”ति चिन्तेत्वा ..., जा. अट्ठ. 4.180; – या प्र. वि., ब. व. – “तुम्हें किं करिस्सथा”ति तुम्हें पन आचरियाति, जा. अट्ठ. 4.439; विशेष अर्थ 2. आचार-विचार की शिक्षा देने वाला (पिता, कुटुम्बीजन, मित्र आदि), पथप्रदर्शक – यो प्र. वि., ए. व. – ... तस्मा इदानीपि नो आचारसिक्खापनेन आचरियो भवाति आह, जा. अट्ठ. 5.378; आचरियन्ति आचारे सिक्खापनतो इध पिता आचरियो ति अधिप्पेतो, जा. अट्ठ. 4.160; आचरियो ति कुटुम्बिकस एस्स मय्हं आचारसिक्खापको आचरियो, जा. अट्ठ. 4.335; विशेष अर्थ 3. बौद्ध भिक्षुसङ्घ में प्रव्रजित अथवा उपसम्पदा-प्राप्त भिक्षु को उपाध्याय के अभाव में निःश्रय प्रदान करने वाला तथा नव-दीक्षित भिक्षुओं को आचार एवं अच्छे व्यवहार की प्रायोगिक शिक्षा देने वाला भिक्षु-शिक्षक – यो प्र. वि., ए. व. – आचरियो भिक्खवे, अन्तेवासिकम्हि पुत्तयितं उपट्ठापेस्सति, महाव. 68; ... आचारसमाचारसिक्खापको आचरियो नाम कोचि नत्थि, पे. व. अट्ठ. 219; – यं द्वि. वि., ए. व. –

अनुजानामि, भिक्खवे, आचरियं, महाव. 68; ... आचरियन्ति आचारसमाचारसिक्खापनकं आचरियं अनुजानामि, महाव. अट्ठ. 254; – म्हा प. वि., ए. व. – छयिमा, भिक्खवे, निस्सयपटिप्पस्सद्धियो आचरियम्हा, महाव. 80; – यानं ष. वि., ब. व. – इदं अम्हाकं आचरियानं भविस्सति, चूळव. 289; एवं अम्हाकं आचरियानं उग्गहो परिपुच्छाति, पाचि. 154; विशेष अर्थ 4. ध्यान के लिए कर्मस्थान प्रदान करने वाला कल्याणमित्र, योग-शिक्षक – स्स ष. वि., ए. व. – कम्मट्ठानं गहेत्वा, आचरियस्स सन्तिके, अभि. अव. 836; स. उ. प. के रूप में, अट्ठकथा., इस्सासा., उद्देसा., उपज्झाया., उपसम्पदा., ओवादा., कच्चायना., कम्मवाचा., गणा., गन्था., / गन्था., गुत्तिला., दिसापामोक्खा., धनुग्गहा., धम्मपाला., धम्मा., निस्सया., पच्छा., पब्बज्जा., पा., पिट्ठि., पीठा., पुब्ब., पोराणा., बुद्धघोसा., महा., मातङ्ग-हयाद्या., योग., रथा., लाखा., लेखा., लोका., वजिरबुद्धा., वत्थुविज्जा., वळञ्जनका., सत्था., सिलोका., हत्था. आदि के अन्त. द्रष्ट.

आचरियक नपुं., आचरिय से व्यु. [आचार्यक], आचार्यवाद, आचार्यभाव, पारम्परिक सिद्धान्त, शिल्प, व्यवसाय, आचार्यों द्वारा किया गया शिक्षण या अध्यापन, मत, विश्वास – कं द्वि. वि., ए. व. – सकं आचरियकं उग्गहेत्वा आचिकखन्ति ..., दी. नि. 2.80; आचरियकन्ति आचरियभाव आचरियवादं दी. नि. अट्ठ. 3.13; एके समणब्राह्मणा इस्सरकुत्तं ... आचरियकं अगगञ्जं पज्जपेन्ति, दी. नि. 3.20; सकं आचरियकं सयं अभिज्जा सच्चिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्याति, म. नि. 1.223; सकं आचरियकन्ति अत्तनो आचरियसमयं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2)74; – के सप्त. वि., ए. व. – दक्खा परियोदातसिप्पा सके आचरियके नहापितकम्मे, महाव. 325; आचरियकेति आचरियकम्मे, पारा. अट्ठ. 1.230.

आचरियकम्म नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकर्म], आचार्य का कर्म या शिल्प, आचार्य या शिक्षक द्वारा ज्ञात या गृहीत व्यवसाय – म्मे सप्त. वि., ए. व. – आचरियकेति आचरियकम्मे, पारा. अट्ठ. 1.230; ... सुसिक्खितो अनवयो सके आचरियके कुम्भकारकम्मे परियोदातसिप्पो, पारा. 47-48.

आचरियकिच्च नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकृत्य], आचार्य द्वारा किए जाने योग्य कृत्य, शिक्षक द्वारा करणीय कार्य – च्वं प्र. वि., ए. व. – आचरियकिच्चं उपज्झायकिच्चं ... समानाचरियकिच्चं – इदं किच्चं नो अधिकरणं चूळव. 203.



## आचरियकुल

38

## आचरियनय

**आचरियकुल** नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकुल], एक ही आचार्य से शिक्षा-प्राप्त शिष्यों की परम्परा या उनका समूह, आचार्य का परिवार, एक मतवाद अथवा एक शाखा के अनुयायियों का समूह, धार्मिक शाखा या निकाय — **लानि** प्र. वि., ब. व. — **अङ्गारस निकायातिपि, अङ्गारसाचरियकुलानीतिपि एतेसंयैव नामं**, प. प. अङ्ग. 102; — **ले सप्त. वि., ए. व. — ... किमञ्जत्र अवुसितत्ताति आचरियकुले असंवुद्धा दी. नि. अङ्ग. 1.206; सिक्खितोति दस द्वादस वस्मानि आचरियकुले उग्गहितसिप्पो, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(1).364; — लं द्वि. वि., ए. व. — ... नगरं पविसित्वा आचरियकुलं गन्त्वा आचरियं वन्दित्वा ...**, जा. अङ्ग. 5. 455; **एवं अम्हाकं आचरियकुलं निस्साय निय्यानिकं भविस्सति, चूलव. अङ्ग. 112; — स्स ष. वि., ए. व. — सा मे आचरियकुलस्स अवण्णो अहोसी ति. अ. नि. 1(2).129.**

**आचरियकुलवादकथा** स्त्री., म. वं. के पांचवें परिच्छेद की प्रारम्भिक तरह गाथाएं, जिसमें सम्राट् अशोक के काल तक विकसित बौद्ध भिक्षुसंघ की अङ्गारह शाखाओं का उल्लेख है — **आचरियकुलवादकथा निड्डिता, म. वं. (पृ.) 56.**

**आचरियकेवट्ट** पु., ब्रह्मदत्त के पुरोहित का नाम — **टो प्र. वि., ए. व. — आचरियकेवट्टोपि केवलं नलाटे वणं कत्वा वरति. जा. अङ्ग. 6.235.**

**आचरियगरुत्त** नपुं., भाव. [आचार्यगुरुत्व], आचार्यों की महिमा, आचार्यों की श्रेष्ठता — **त्ता प. वि., ए. व. — आचरियगरुत्ता कथिकं न परिभवति, महानि. अङ्ग. 7.**

**आचरियगाथा** स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यगाथा], आचार्यों के मुख से निकला वचन, परम्परागत सिद्धान्त को प्रकाशित करने वाला कथन — **य तृ. वि., ए. व. — इमाय आचरियगाथाय तमत्थं साधेन्ति, स. नि. अङ्ग. 2.236.**

**आचरियगुण** पु., तत्पु. स. [आचार्यगुण], आचार्यों में पाए जाने योग्य गुण, ऐसे गुण, जो किसी भी आचार्य में अवश्य होने चाहिए — **णा प्र. वि., ब. व. — आचरियानं पञ्चवीसति आचरियगुणा, तेहि गुणेहि आचरियेन सम्मा पटिपज्जितब्बं, मि. प. 105.**

**आचरियगुत्तिल** पु., कर्म. स., (वीणा-वादन आदि) गन्धर्व शिल्पों में दक्ष आचार्य, एक आचार्य, जो वीणा-वादन जैसे गन्धर्व शिल्प में दक्ष थे — **लो प्र. वि., ए. व. — सारिपुत्त थेरो बुद्धघोसाचरियो आचरियगुत्तिलो ति वा महोसधपण्डितो, सङ्ग. 3.751; इतो किर सत्तमे दिवसे आचरियगुत्तिलो च अन्तेवासिकमूसिलो च ...**, जा. अङ्ग. 2.210.

**आचरियचतुक्क** नपुं., [आचार्यचतुष्क], आचार्य एवं अन्तेवासिक के परस्पर-सम्बन्ध विषयक चार विनय-नियम — **वक्के सप्त. वि., ए. व. — आचरियचतुक्केपि एतेव नयो परि. अङ्ग. 171.**

**आचरियद्धान** नपुं., तत्पु. स. [आचार्यस्थान], आचार्य का पद, आचार्य की पदवी अथवा स्थिति — **ने सप्त. वि., ए. व. — उदको रामपुत्तो सब्रह्मचारी मे समानो आचरियद्धाने मं उपेसि, म. नि. 1.226.**

**आचरियदक्खिणा** स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यदक्षिणा], आचार्य को देय दक्षिणा — **णं द्वि. वि., ए. व. — आचरियधनन्ति आचरियदक्खिणं आचरियभागं, अ. नि. अङ्ग. 3.67.**

**आचरियधन** नपुं., तत्पु. स. [आचार्यधन], आचार्य को दक्षिणा के रूप में देय धन — **नं द्वि. वि., ए. व. — अञ्जतिथिया आचरियस्स आचरियधनं परियेसिस्सन्ति, म. नि. 2.17; आचरियधनं परियेसिस्सन्तीति अञ्जतिथिया हि यस्स सन्तिके सिप्पं उग्गण्हन्ति तस्स, सिप्पुग्गण्हतो पुरे वा पच्छा वा अन्तरन्तरे वा गेहतो नीहरित्वा धनं देन्ति, म. नि. अङ्ग. (म.प.) 2.11; 'पच्छा धम्मेन भिक्खं चरित्वा आचरियधनं आहरिस्सामी ति. जा. अङ्ग. 4.201.**

**आचरियधनु** नपुं., कर्म. स., अत्यन्त उत्तम कोटि का धनुष, दृढ़ धनुष — **नुं द्वि. वि., ए. व. — दळ्हधम्मिनीति दळ्हधनुनो, उत्तमप्पमाणं आचरियधनुं धारयमानो, स. नि. अङ्ग. 1.236.**

**आचरियधम्मपाल** पु., कर्म. स., प्रसिद्ध अट्टकथाकार, आचार्य धम्मपाल — **लो प्र. वि., ए. व. — बदरतिथ्यविहारवासी आचरियधम्मपालो पन, सङ्ग. 1.230.**

**आचरियधम्मपालत्थेर** पु., कर्म. स., उपरिवत् — **रेन तृ. वि., ए. व. — आचरियधम्मपालत्थेरेन पनेत्थ इदं वुत्तं सारत्थ. टी. 1.33; आचरियधम्मपालत्थेरेन वुत्तं यावदेवाति इमिना समानत्थं यावदेति इदं पदं न्ति, सारत्थ. टी. 1.37; आचरियधम्मपालत्थेरेनपि नेत्तिपकरणद्वकथायं एवमेतरस सुत्तङ्गसङ्गहोव कथितो, सारत्थ. टी. 1.84.**

**आचरियनय** पु., तत्पु. स. [आचार्यनय], स्थविरवादी परम्परा के आचार्यों की वह पद्धति, जो व्याख्यानों के स्रोत के रूप में पिटकों एवं अट्टकथाओं की पद्धतियों के अतिरिक्त तीसरी ग्राह्य पद्धति है — **येन तृ. वि., ए. व. — अट्टकथामुत्तकेन पन आचरियनयेन अपरापि छ पञ्जत्तियो, प. प. अङ्ग. 27, 28; पाळिमुत्तकेन पन अट्टकथानयेन अपरापि छ पञ्जत्तियो, प. प. अङ्ग. 26.**

## आचरियन्तेवासिक

39

## आचरियमति

आचरियन्तेवासिक पु., द्व. स., भिक्षु आचार्य एवं उसकी देखरेख में रहने वाला भिक्षु शिष्य – केसु सप्त. वि., ब. व. – एस नथो आचरियन्तेवासिकेसुपि, पारा. अ. 2.60; आचरियन्तेवासिकेसु हि यो यो न सम्मा वत्तति, तस्स तरस्स आपत्ति, महाव. अ. 254.

आचरियन्तेवासी पु., द्व. स., आचार्य एवं शिष्य – सी प्र. वि., ब. व. – इतिह ते उभो आचरियन्तेवासी अज्जमज्जस्स उज्जुविपच्चनीकवादा, दी. नि. 1.2.

आचरियपरम्परा स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यपरम्परा], आचार्यों की परम्परा, शिक्षकों की लगातार चली आ रही पीढ़ियों में सुरक्षित सिद्धान्त, परम्परा से प्राप्त मतवाद – रा प्र. वि., ए. व. – आचरियपरम्परा खो पनस्स न सुग्गहिता होति न सुमनसिकता न सूप्पधारिताति इदं ततियं, परि. 255; पारा. अ. 1.183; ... एत्थ आचरियपरम्पराति आचरियानं विनिच्छयपरम्परा, सारत्थ. टी. 2.43; – य तृ. वि., ए. व. – उपालित्थेरमादिं कत्वा आचरियपरम्पराय याव ततियसङ्गीति ताव अभत्तं, पारा. अ. 1.24; एकसो गहितोति अनुस्सवेन वा आचरियपरम्पराय वा इतिकिराय वा, स. नि. अ. 3.238; खुद्दकपाठो आदि आचरियपरम्पराय वाचनामग्गं आरोपितवसेन न भगयता कुतवसेन, खु. पा. अ. 3.

आचरियपाचरिय पु., [आचार्यप्राचार्य], 1. शिक्षक एवं शिक्षकों का भी शिक्षक, आचार्य एवं प्राचार्य, वह, जो स्वयं आचार्य है तथा आचार्यों का भी आचार्य है, 2. बहुत से देवों एवं मनुष्यों को बुद्ध के धर्माभूत का पान कराने के कारण आचार्य तथा श्रद्धावान् श्रावकों के लिए प्राचार्य – यो प्र. वि., ए. व. – सोणदण्डो बहूनं आचरियपाचरियो तीणि माणवकसतानि मन्ते वाचेति, दी. नि. 1.99; भवज्झि चङ्गी बहूनं आचरियपाचरियो, म. नि. 2.385; बहूनं आचरियपाचरियोति भगवतो एकेकाय धम्मदेसनाय चतुरासीतिपाणसहस्सानि अपरिमाणापि देवमनुस्सा मग्गफलामत्तं पिबन्ति, तस्मा बहूनं आचरियो, सावकविनेय्यान् पाचरियोति, म. नि. अ. (म.प.) 2.296; दी. नि. अ. 1.230; – येहि तृ. वि., ब. व. – ब्राह्मणेहि वुद्धेहि महल्लकेहि आचरियपाचरियोहि सद्धिं कथासल्लापो होति, दी. नि. 1.78; आचरियपाचरियोहीति आचरियोहि च तेसं आचरियोहि च, दी. नि. अ. 1.205; – यानं प. वि., ब. व. – पुब्बकानं आचरियपाचरियानं नटानं भासमानानं, स. नि. 2(2).295; आचरियपाचरियानन्ति आचरियानञ्जेव आचरियाचरियानञ्च, सु. नि. अ. 2.156; – येसु सप्त.

वि., ब. व. – मज्झिमोपीति मज्झिमेसु आचरियपाचरियेसु एकोपि, ... दी. नि. अ. 1.302.

आचरियपुत्त/आचरपुत्त पु., एक पुरोहित का पुत्र (सरम्भ) – तो प्र. वि., ए. व. – आचरपुत्तो सुविनीतरूपो, सो नेसं पञ्चानि वियाकरिस्सतीति, जा. अ. 5.134.

आचरियपूजक त्रि., [आचार्यपूजक], आचार्यों या गुरुजनों का सम्मान करने वाला, आचार्यों के प्रति सम्मानभाव से जुड़ा हुआ – को पु., प्र. वि., ए. व. – अहं ते सरणं होमि, अहमाचरियपूजको, वि. व. 328; जा. अ. 2.211; उपतिस्सो सब्बकालमपि आचरियपूजकोव, थेरगा. अ. 2.319.

आचरियब्राह्मण पु., कर्म. स. [आचार्यब्राह्मण], ब्राह्मण जाति में उत्पन्न शिक्षक, ब्राह्मण आचार्य – णं द्वि. वि., ए. व. – आचरियब्राह्मणं एतदवोच 'सज्झापेहि खो, त्वं ब्राह्मण, इमं दारकं मन्तानीति', मि. प. 9.

आचरियभरिया स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यभार्या], आचार्य की पत्नी, शिक्षक की पत्नी – या प्र. वि., ए. व. – माताति वा मातुच्छाति वा मातुलानीति वा आचरियभरियाति वा गरूनं दाराति वा, दी. नि. 3.53; अ. नि. 1(1).68; – यं द्वि. वि., ए. व. – आचरियभरियं सखिं, मातुलानि पितुच्छकिं, यदा लोके गमिस्सन्ति, जा. अ. 4.164; – य च. वि., ए. व. – अधिवासेतु ... अम्हाकं आचरियभरियाय वेरहच्चाणिगोत्ताय ब्राह्मणिया स्वातनाय भत्तन्ति, स. नि. 2(2).127.

आचरियभाग पु., तत्पु. स. [आचार्यभाग], शिक्षक को दिया जाने वाला शुल्क, आचार्य को देय दक्षिणा – गो प्र. वि., ए. व. – थेरो 'आचरियभागो नामाय'न्ति कप्पियवसेन गाहापेत्ता पुष्कपूजं अकासि, पारा. अ. 2.61; 'अयं ते आचरियभागो'ति सहस्सं अदासि, ध. प. अ. 1.143; – गं द्वि. वि., ए. व. – आचरियधनन्ति आचरियदक्खिणं आचरियभागं, अ. नि. अ. 3.67.

आचरियमग पु., तत्पु. स. [आचार्यमार्ग], आचार्यों द्वारा ग्रहण किया गया मार्ग या आचार-व्यवहार, आचार्यों के कथन का प्रकार – ग्गो प्र. वि., ए. व. – आवुसो, तथा पठमं कथितो एव आचरियमग्गो, विसुद्धि. 1.94; आचरियमग्गोति आचरियानं कथामग्गो, विसुद्धि. महाटी. 1.110.

आचरियमति स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यमति], शिक्षक का विचार अथवा आचार्य का स्पष्टीकरण – या तृ. वि., ए. व. – तस्मा आचरियमतिया सुतं अपटिवाहेत्वा सुतमेव

## आचारियमत

40

## आचरियवाद

पमाणं कतब्बं स. नि. अहु. 2.236; - गं सप्त. वि., ए. व. - आचरियमतिकोति आचरियमतियं नियुत्तो तस्मा अनतिवत्तनतो, विसुद्धि. महाटी. 1.112; - क. त्रि. ब. स., आचार्य के विचार का अनुसरण करने वाला, आचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का अनुयायी, - को पु., प्र. वि., ए. व. - एवरुपो हि तन्तिधरो वसानुरक्खको पवेणीपालको आचरियो आचरियमतिकोव होति, न अत्तनोमतिको होति, विसुद्धि. 1.97; आचरियमतिकोति आचरियमतियं नियुत्तो ..., विसुद्धि. महाटी. 1.112.

**आचरियमत** त्रि., ब. स., वह. जो शील आदि में आचार्य जैसा हो चुका है, पांच वर्षों से अधिक समय से उपसम्पदा प्राप्त भिक्षु आचार्य-पद पाने योग्य व्यक्ति - तो पु., प्र. वि., ए. व. - अवस्सिकस्स छब्बस्सो आचरियमतो, महाव. अहु. 346; आचरियमतोति सीलादिना आचरियप्पमाणो, विसुद्धि. महाटी. 1.333; - त्तेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - आचरियेसु आचरियमत्तेसु उपज्झायेसु उपज्झायमत्तेसु अनुपाहनेसु चङ्गममानेसु सउपाहनेन चङ्गमितब्बं, महाव. 260; उपज्झाये उपज्झायमत्तेसु आचरिये आचरियमत्तेसु सब्बत्थ अनधिकरणेन भवितुं अनवसेसकारिना, मि. प. 351.

**आचरियमहयुग** पु., [आचार्यमहायुग], आचार्यों की बहुत पुरानी पीढ़ी - गा प्र. वि., ब. व. - अत्थि कोचि तेविज्जानं ब्राह्मणानं याव सत्तमा आचरियामहयुगा येन ब्रह्मा सक्खिदिद्दोति ?, दी. नि. 1.216; एकाचरियपाचरियोपि, याव सत्तमा आचरियमहयुगापि, म. नि. 2.388.

**आचरियमुद्दि** स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यमुष्टि], शा. अ., आचार्य की बन्द मुद्दी, ला. अ., विद्यादान या ज्ञान देने में शिक्षक की अनुदार प्रवृत्ति, अपने ज्ञान को अपने तक सीमित रखने की आदत, अपने पास रहस्य छिपाकर शिष्यों को विद्या न देने की प्रवृत्ति - द्वि प्र. वि., ए. व. - नत्थानन्द, तथागतस्स धम्मसे आचरियमुद्दि, दी. नि. 2.78; आचरियमुद्दीति ... दहरकाले कस्सचि अकथेत्वा पच्छिमकाले मरणमञ्चे निपन्ना पियमनापत्त अन्तेवासिकस्स कथेन्ति ..., दी. नि. अहु. 2.123; नत्थानन्द तथागतस्स धम्मसे आचरियमुद्दीति, मि. प. 145; ... न ते अत्थि आचरियमुद्दीति वुत्तं होति, सु. नि. अहु. 2.90; - द्वि द्वि. वि., ए. व. - बोधिसत्ता नाम सिप्पं वाचेन्ता आचरियमुद्दि न करोन्ति, जा. अहु. 2.186; - ता स्त्री., भाव., पक्षपातयुक्त होकर शिक्षक द्वारा सभी को विद्या का रहस्य न बतलाना - य तृ. वि., ए. व. - अम्हाकं, महाराज ..., आगतं

पोराणमन्तपदं अत्थि, तं मयं आचरियमुद्दिताय न कस्सचि भगिम्हा, सु. नि. अहु. 2.50.

**आचरियलेस** पु., [आचार्यलेश], आचार्य का बहाना, आचार्य के रखने का दिखावा ढोंग या पाखण्ड - सो प्र. वि., ए. व. - आचरियलेसो नाम इत्थन्नामस्स अन्तेवासिको दिद्दो होति, पारा. 266.

**आचरियवंस** पु., तत्पु. स. [आचार्यवंश], आचार्यों की परम्परा, आचार्यों का वंश या पीढ़ियाँ, आचार्यों के बाद, धार्मिक शाखा - सेन तृ. वि., ए. व. - आचरियवंसेन अधिप्पाया करणुत्तरियताय, ... आचरियवंसोति आचरियवादो, मि. प. 148; पारा. अहु. 1.179.

**आचरियवच** नपुं., तत्पु. स. [आचार्यवचस], आचार्य का वचन, आचार्य की शिक्षा - चो प्र/द्वि. वि., ए. व. - इदं तदाचरियवचो, पारासरियो यदब्रवि, जा. अहु. 2.169; जा. अहु. 3.138; इदं तं आचरियस्स वचनं, तदे., स. उ. प. के रूप में - पुब्बाचरिय- नपुं., तत्पु. स. [पूर्वाचार्यवचस], पूर्व-काल के आचार्यों का वचन - चो प्र. वि., ए. व. - सब्बे ते अप्पटिक्खिप्पा, पुब्बाचरियवचो इदं, जा. अहु. 2.306; पुब्बाचरियवचो इदन्ति पुब्बाचरिया वुच्चन्ति मातापितरो, इदं तेसं वचनं, जा. अहु. 2.307.

**आचरियवत्त** नपुं., तत्पु. स. [आचार्यव्रत], अपने आचार्य के प्रति अन्तेवासी का उचित व्यवहार, आचार्य के प्रति शिष्य का कर्तव्य - त्तं प्र. वि., ए. व. - निस्सयन्तेवासिकेन हि याव आचरियं निस्साय वसति, ताव सब्ब आचरियवत्तं कातब्बं, महाव. अहु. 254; एवं आचरियवत्तं कत्वा ..., ध. प. अहु. 1.54.

**आचरियवाद** पु., तत्पु. स. [आचार्यवाद], शा. अ., आचार्यों का सिद्धान्त, आचार्यों की शिक्षा, ला. अ. 1. अहुकथा, - दो प्र. वि., ए. व. - आचरियवादो नाम धम्मसङ्गाहकोहि पञ्चहि अरहन्तसतेहि ठपिता पाळिविनिमुत्ता ओक्कन्तविनिच्छयप्पवत्ता अहुकथातन्ति, पारा. अहु. 1.180; - दं द्वि. वि., ए. व. - सुत्तं, सुत्तानुत्तोमं, आचरियवादं अत्तनोमतित्ति, पारा. अहु. 1.179; ला. अ. 2. मतवाद, धार्मिक निकाय, शिल्पस्थानों अथवा विद्यास्थानों की शाखा, आचार्यों द्वारा स्थापित सिद्धान्त - दं द्वि. वि., ए. व. - सकं आचरियकन्ति अत्तनो आचरियवादं, स. नि. अहु. 3.282; ला. अ. 3. थेरवाद सहित बौद्धधर्म की विभिन्न शाखाएं अथवा निकाय, थेरवाद, महासाधिक, गोकुलिक, एकव्यावहारिक, प्रज्ञप्तिवादी, बाहुलिक, चैत्यवाद,

## आचरियसमय

41

## आचरियुपासन

महिशासक, वज्जिपुत्तक, धम्मउत्तरीय, भद्रयानिक, छान्नागारिक, सम्भितिय, सब्बत्थिवाद, धम्मगुत्तिक, कस्सपीय, सङ्गन्तिक, सुत्तवाद नामक अठारह शाखाओं को आचार्यवाद कहा गया है; - दा प्र. वि., ब. व. - अञ्जाचरियवादा तु ततो ओरं अजायिसुं म. वं. 5.2; तथाचरियवादा च भिन्नरूपा न विज्जरे, चू. वं. 37.227; - दो प्र. वि., ए. व. - अनोत्तरन्तो असमेन्तो च गारख्हाचरियवादा न गहेतब्बो, पारा. अट्ट. 1.180; - दं द्वि. वि., ए. व. - अकंसाचरियवादं ते महासङ्घिकनामकं, म. वं. 5.4.

आचरियसमय पु., तत्पु. स. [आचार्यसमय], आचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त या विषय - यं द्वि. वि., ए. व. - सकं आचरियकन्ति अतनो आचरियसमयं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).74; - ये सप्त. वि., ए. व. - तत्थ आचरियकेति आचरियसमये, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.162.

आचरियसादिस त्रि., ब. स. [आचार्यसदृक], आचार्य जैसा, आचार्यों के समान - सा पु., प्र. वि., ब. व. - पदकस्म वेय्याकरणा, जप्पे आचरियसादिसा, सु. नि. 600.

आचरियसुद्धि स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यशुद्धि], आचार्यों की परम्परा की विशुद्धि, आचार्यों की विशुद्ध पीढ़ी - अतनो मतिं पहाय आचरियसुद्धिया वत्ता होति ..., पारा. अट्ट. 1.184.

आचरिया स्त्री., [आचार्या], भिक्षुणीसङ्घ में प्रवेश पा रही भिक्षुणी की शिक्षिका - सङ्गमित्तायुपज्झाया धम्मपाला ति विस्सुता, आचरिया आयुपाला, काले सासि अनासवा, म. वं. 5.208.

आचरियाचरिय पु., तत्पु. स. [आचार्याचार्य], आचार्य का आचार्य, शिक्षक का शिक्षक - यो प्र. वि., ए. व. - यथा आचरियो च आचरियाचरियो च पाळिञ्च परिपुच्छञ्च वदन्ति, पारा. अट्ट. 1.184; - यानं ष. वि., ब. व. - आचरियपाचरियानन्ति आचरियानञ्जेव आचरियाचरियानञ्च, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.157; अ. नि. अट्ट. 2.139.

आचरियानी स्त्री., आचरिय + आनी [आचार्यानी], शिक्षक की पत्नी, आचार्य की पत्नी - मातुलादितो भरियायमानी होन्ति, मातुलानी; करुणानी; गहपतानी; आचरियानी, मो. व्या. 3.33.

आचरियानुसिद्धि स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यानुश्रुति], आचार्य द्वारा दिया गया अनुशासन या निर्देश, आचार्य की शिक्षा - या तृ. वि., ए. व. - यथा, महाराज, अन्तेवासिको आचरियानुसिद्धिया विज्जं पञ्जाय सच्छिकरोति, मि. प. 295; दक्खो मालाकारो नानापुष्करासिम्हा आचरियानुसिद्धिया पच्चत्तपुरिसकारेन ..., मि. प. 315.

आचरियासम पु., कर्म. स. [आचार्यसम], श्रेष्ठ आचार्य, उत्तम आचार्य - भो प्र. वि., ए. व. - अधिकखरवण्णानि ... न बुद्धवचना नीति दीपेताधरियासमो रूप. 2.86(रो.).

आचरियुग्गह पु., तत्पु. स. [आचार्योद्ग्रह], आचार्य से ग्रहण किया गया या सीखा गया शास्त्र, आचार्य से गृहीत कर्मस्थान - हो प्र. वि., ए. व. - उग्गहेतब्बतो उग्गहो ... आचरियतो उग्गहो आचरियुग्गहो, विसुद्धि. महाटी. 1.309; पवेणिया आगतो आचरियुग्गहोव गहेतब्बो, कुरुन्दियं पन लोकवज्जे आचरियुग्गहो न वट्ठति, पाचि. अट्ट. 117; एत्थ गारख्हा आचरियुग्गहो न गहेतब्बो, तदे.; - हं द्वि. वि., ए. व. - भिक्खुसङ्घो कतमाचरियानं उग्गहो, अतनो आचरियुग्गहञ्जेव वदतु, विसुद्धि. 1.94.

आचरियुपज्झाय पु., इत. द्व. स. ब. व. में ही [आचार्योपाध्याय], आचार्य एवं उपाध्याय - या प्र. वि., ब. व. - नो चे अम्हाकं आचरियुपज्झाया गमिस्सन्ति, महाव. 100; तं आचरियुपज्झाया उपट्ठहन्ता नासक्खिंसु अरोगं कातुं, महाव. 278; - येहि तृ. वि., ब. व. - न, भिक्खवे, आचरियुपज्झायेहि अनुजानितब्बा, महाव. 149; - यानं प. वि., ब. व. - ... पञ्च वरसानि आचरियुपज्झायानं सन्तिके वसित्वा ..., घ. प. अट्ट. 2.301; - येसु सप्त. वि., ब. व. - तेन खो पन समयेन भिक्खू आचरियुपज्झायेसु पक्कन्तेसुपि विभन्तेसुपि ..., महाव. 79; - क त्रि., आचार्य एवं उपाध्याय से सम्बन्धित, आचार्य एवं उपाध्याय वाला - आचरियुपज्झायकस्सिस्सद्धिविहारिवत्तानिपि सब्बसोव विन. वि. 2915; - वत्त नपुं., तत्पु. स. [आचार्योपाध्यायग्रत], आचार्य एवं उपाध्याय के प्रति सद्धिविहारिक एवं अन्तेवासिक का उचित व्यवहार, शिक्षकों के प्रति शिष्यों का कर्तव्य - तं प्र. वि., ए. व. - बोधिवत्तं वा आचरियुपज्झायवत्तं वा योनिसोमनसिकारो वा नत्थि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.159; - त्तानि द्वि. वि., ब. व. - आचरियुपज्झायवत्तानि पानीयपरिभोजनीयउपसंथा गारजन्ताधरादिवत्तानि च साधुकं करोति, जा. अट्ट. 1.430; - या स्त्री., द्व. स. [आचार्योपाध्याया], भिक्षुणी की आचार्या एवं उपाध्याया नामक दो शिक्षिकाएं - याहि तृ. वि., ब. व. - तस्मा अस्सा आचरियुपज्झायाहि विहारं गन्त्वा सङ्गाहकपक्खे ठितो, चूळव. अट्ट. 30.

आचरियुपासन नपुं., तत्पु. स. [आचार्योपासना, स्त्री.], आचार्य की सेवा सुश्रूषा, शिक्षक की सेवा - नं प्र. वि., ए. व. - अत्थि मे, महाराज, आगमो अधिगमो ... परिपुच्छा आचरियुपासनं, मि. प. 122.

## आचरियूपदव

42

## आचार

**आचरियूपदव** पु., तत्पु. स. [आचार्योपद्व], आचार्य के चित्त में उदित क्लेशों से जनित विपत्ति – वो प्र. वि., ए. व. – *एवं सन्तौ, खो, आनन्द, आचरियूपदवो होति, एवं सन्तं अन्तेवासूपदवो होति ...*, म. नि. 3.158; – *वेन तू. वि., ए. व. – आचरियूपदवेनाति अमन्तरे उप्पन्नेन किलेसूपदवेन आचरियस्सुपदवो*, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.121.

**आचल** त्रि., अचल के स्थान पर अप. [अचल], रिथर, अडिग – ला स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *ताहं भूमिमनुष्यतो, ठिता सद्धम्ममाचला*, अप. 1.51.

**आचाम** पु., [आचाम], शा. अ., पानी का झाग या फेन, उबाते हुए चावल या भात का झाग, वर्तन की तलहटी पर लगी हुई भात की पपड़ी. ला. अ., अरुचिकर अथवा अस्वादिष्ट खाद्य, भात का मांड – मो प्र. वि., ए. व. – *निस्सावो च तथा चामो*, अभि. प. 466; *आचामोति भत्तउक्खलिकाय लग्गो जामकओदनो, तं छड्डित्तद्धानतोव गहेत्वा खादति*, दी. नि. अहु. 1.264; म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).358; *भुत्वा आचामकुण्डकन्ति ... एत्थ आचामो वुच्चति ओदनवसेसं*, जा. अहु. 2.241; – *मं द्वि. वि., ए. व. – या ते अदासि आचामं, पसत्रा सेहि पाणिभि*, वि. व. 186.

**आचामकज्जिक** नपुं., कर्म. स. [आचामकाज्जिक], चावल का खट्टा तरल पेय, कांजी – *आचामकज्जिकलोणूदकन्तिपि वदन्ति*, वि. व. अहु. 79.

**आचामकुण्डक** नपुं., कर्म. स., चावल की लाल रंग की भूसी से तैयार किया हुआ पेय, स्नान करते समय प्रयोग में लाया जाने वाला चावल का चूर्ण – कं प्र. वि., ए. व. – *बहु तत्थ महाब्रह्मो, अपि आचामकुण्डकं*, जा. अहु. 2. 241; ध. प. अहु. 2.188; *भुत्वा तिणपरिघासं, भुत्वा आचामकुण्डकं*, ध. प. अहु. 2.188.

**आचामकुम्भी** स्त्री., तत्पु. स. [आचामकुम्भी], नहाने-धोने के लिए पानी से भरा मटका – भी प्र. वि., ए. व. – *आचामकुम्भी सोवण्णा उज्जुहो च अहू तहिं*, म. वं. 27.40.

**आचामदान** नपुं., तत्पु. स. [आचामदान], चावल की भूसी की पपड़ी का दान, मांड का दान – स्स ष. वि., ए. व. – *एतस्सायामदानस्स, कलं नाग्घति सोळसिन्ति एतस्स एताय दिन्नस्स आचामदानस्स फलं सोळसभागं कत्वा ...*, वि. व. अहु. 83.

**आचामदायिकविमानवण्णना** स्त्री., वि. व. अहु. के एक स्थल का शीर्षक, वि. व. अहु. 80 83;

*आचामदायिकाविमानवण्णना निद्धिता*, वि. व. अहु. 83.

**आचामदायिकविमानवत्थु** नपुं., वि. व. के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, वि. व. 185-194.

**आचामदायिका** स्त्री., [आचामदायिका], भात की पपड़ी या मांड का दान करने वाली स्त्री – का प्र. वि., ए. व. – *तत्थ सा सुखिता नारी, मोदताचामदायिकाति*, वि. व. 189; *मोदताचामदायिकाति आचाममत्तदायिका, सापि नाम पच्चमे कामसग्गे दिब्बसम्पत्तिया मोदति*, वि. व. अहु. 82.

**आचाममक्ख** त्रि., ब. स. [आचामभक्ष], भात की पपड़ी का भोजन करने वाला (तपस्वी) – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कणभक्खो वा होति, आचाममक्खो वा होति, पिज्जाकमक्खो वा होति*, दी. नि. 1.150; महानि. 309.

**आचामेहि** आ + चम के प्रेर. का अनु., म. पु., ए. व., केवल अनु., म. पु., ए. व. में ही प्रयुक्त, आचमन कराओ, मुंह हाथ धुलाओ – *एहि, मल्लिके, आचमेहीति*, म. नि. 2.321; *आचमेहीति आचमनोदकं देहि*, म. नि. अहु. (म.प.) 2.246.

**आचार** पु., आ + चर से व्यु., [आचार], 1. आचरण, व्यवहार, चाल-चलन, प्रथा, रीति-रिवाज, जीवनयापन करने का प्रकार, लोकाचार – रं द्वि. वि., ए. व. – *आचारं इसिं ब्रूहि, तं सुणोम वचो तयाति*, स. नि. 1(1).273; *आचारन्ति यस्मिं जनपदे वसामि, तत्थ वसन्तो यथा आचारं जनपदचारितं सिक्खेय्यं जानेय्यं ...*, जा. अहु. 4.198; – *रेन तू. वि., ए. व. – पापाचाराति पापकेन आचारेन समन्नागता*, पाचि. 322; 2. अच्छा आचरण, पवित्र आचरण, सदाचार (अनाचार के विलो. के रूप में प्राप्त), क. तीन प्रकार के अवीतिकर्मों (विनय नियमों के अनुत्तंघन में एक), ख. सम्पूर्ण शीलसंवर, ग. सम्पक् आजीव – रो प्र. वि., ए. व. – *आचारगोचरसम्पन्नोति अत्थि आचारो*, विभ. 276; *विसुद्धि. 1.17; कायिको अवीतिकम्मो वाचसिको अवीतिकम्मो, कायिकवाचसिको अवीतिकम्मो, अयं वुच्चति आचारो, विसुद्धि. 1.17; सब्बोपि शीलसंवरो आचारो, तदे. ... न अज्जतरज्जतरेन वा ... मिच्छाआजीवेन जीवितं कप्पेति, अयं वुच्चति आचारो, तदे. 3. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, इधर-उधर या समीप में विचरण – ... अधि सि ठा वसानं पयोगे तप्पनाचारेसु च दुतिया, काले, सद्ध. 3.717; तप्पनाचारेसु नदिं पिवति गामं चरति इच्चादि, तदे. स. उ. प. के रूप में, अतन्दिता, अना., अरिया., अवेक्खिता., आजीवसीला., इच्छा., इस्सा., एवा., ओळारिका.,*

## आचारअक्य

43

## आचारगोचरसम्पन्न

कुसला, खुदा, चित्ता, दुरा, पटा, पतिता, पसस्था, पापा, भिक्या, भिन्ना, मिच्छा, मुत्ता, लामका, लुदा, विपस्सना, विसेवना, विस्सहा, वेत्ता, वेदिका, संकस्सरा, सद्धम्मा, साधुजना, सीला, के अन्त, द्रष्ट.

आचारअक्य पु., म्यां मां का एक स्थविर, जिसे थेर परम्परा में स्थान प्राप्त नहीं हो सका — यो प्र. वि., ए. व. — तस्मिञ्च काले 'वाह्मं अक्यो', 'आचारअक्यो' ति द्विन्नं भिक्खून् च लोकधम्मेषु छेकताय द्वे विहारे कत्वा अदासि, सा. वं. 99.

आचारअरिय त्रि., तत्पु. स. [आचारार्थ], सदाचार के कारण आर्य अथवा उत्तम, आचार विचार में उत्तम, विशुद्ध जीवनवृत्ति वाला — यो पु., प्र. वि., ए. व. — अरियोति चत्तारो अरिया आचारअरियो लिङ्गअरियो दस्सनअरियो पटिवेधअरियोति, जा. अहु. 2.34; अरियोति आचारअरियो अरियस्साति आचारअरियस्स, जा. अहु. 3.312; अरियोति इध आचारअरियो अधिपेतो, जा. अहु. 4.260; — येहि त्. वि., ब. व. — ... अरियणवेदिते ति ये राजानो आचारअरियेहि धम्मिकराजूहि पवेदिते दसविधे राजधम्मे रता, जा. अहु. 3.391.

आचारउपचारञ्जू त्रि., [आचारोपचारज्ञ], सदाचार एवं विनम्र शिष्टाचार का ज्ञाता — ञ्जू पु., प्र. वि., ए. व. — आचारउपचारञ्जू धम्मानुच्छविसवरं, अप. 1.353.

आचारकिरिया स्त्री., तत्पु. स. [आचारक्रिया], शिष्टाचार एवं सदाचार का अभ्यास, अच्छा आचरण — सु सप्त. वि., ब. व. — वत्ते गुणे पटिपत्ति, आचारकिरियासु च, अप. 1.342, 347.

आचारकुलपुत्त पु., तत्पु. स. [आचारकुलपुत्र], सदाचार या उत्तम आचरण के कारण सत्पुरुष — तो प्र. वि., ए. व. — कुलपुत्तेनाति द्वे कुलपुत्ता आचारकुलपुत्तो जातिकुलपुत्तो च, स. नि. अहु. 2.44; ... कुलपुत्तोति आचारकुलपुत्तो, अ. नि. अहु. 3.3; — ता प्र. वि., ब. व. — कुलपुत्ताति आचारकुलपुत्ता, स. नि. अहु. 1.180; — त्तानं व. वि., ब. व. — सब्बसंयव इमेसं कुलपुत्तानन्ति ब्रह्मचरियचिण्णकुलपुत्तानं, दी. नि. अहु. 2.237.

आचारकुसल त्रि., तत्पु. स. [आचारकुशल], सदाचार का पालन करने में कुशल — लो पु., प्र. वि., ए. व. — पटिसन्धारवुत्त्यस्स, आचारकुसलो सिया, ध. प. 376; आचारकुसलोति सीलमि आचारो, वत्तपटिवत्तमि आचारो,

तत्थ कुसलो सिया, छेको भवेय्याति अत्थो, ध. प. अहु. 2.346; — लेन पु., त्. वि., ए. व. — वुत्ताचारविपत्तीति, आचारकुसलेन सा, विन. वि. 3105.

आचारकोसल्ल नपुं., भाव. [आचारकौशल्य], सदाचार में कुशलता — तो प. वि., ए. व. — ततो पटिसन्धारवुत्तितो च आचारकोसल्लतो च ..., ध. प. अहु. 2.346.

आचारगुणसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [आचारगुणसम्पन्न], सदाचार एवं उत्तम गुणों से परिपूर्ण — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — आचारगुणसम्पन्नो, वत्तसीलसमाहितो, बु. वं. 23.13.

आचारगोचर पु., द्व. स. [आचारगोचर], सदाचार तथा आचरण का क्षेत्र, उत्तम आचरण एवं सात्विक प्रवृत्ति — रे सप्त. वि., ए. व. — ते पन आचारगोचरे एकतो कत्वा दस्सेतुं, जा. अहु. 2.26; आचारगोचरे युत्तो, आजीवो सोधितो अगारहो, थेरगा. 590; युत्तद्धानभूतेन गोचरेन च युत्तो सम्पन्नो, सम्पन्नआचारगोचरोति अत्थो, थेरगा. अहु. 2.178; स. उ. प. के रूप में, पाप.- त्रि., पापमय आचरण एवं प्रवृत्तियों वाला — रं पु., द्वि. वि., ए. व. — पापिच्छं पापसङ्गप्पं, पापआचारगोचरं, सु. नि. 282; — रे पु., द्वि. वि., ब. व. — निद्धमित्तान पापिच्छे, पापआचारगोचरे, स. नि. अहु. 2.44.

आचारगोचरनिदेस पु., तत्पु. स. [आचारगोचरनिर्देश], आचार एवं गोचर का व्याख्यान — से सप्त. वि., ए. व. — आचारगोचरनिदेसे किञ्चापि भगवा समणाचरं समणगोचरं कथेतुकामो ..., विभ. अहु. 316.

आचारगोचरसम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आचारगोचरसम्पत्ति], उत्तम आचरण के अभ्यास की संपत्ति, सदाचार के अनुसरण का धन — ति प्र. वि., ए. व. — एतन्ति आचारगोचरसम्पत्ति आजीवपारिसुद्धि इन्द्रियेषु युत्तद्वारताति एतं तयं, थेरगा. अहु. 2.179.

आचारगोचरसम्पन्न त्रि., [बौ. सं. आचारगोचरसम्पन्न], शा. अ., सदाचार (उत्तम आचरण) तथा इसके उचित क्षेत्र से युक्त, ला. अ., उत्तम आचरण वाला तथा उत्तम आचरण वाले तीन क्षेत्रों में विचरण करने वाला, उत्तम आचरण के सतत अभ्यास में लगा हुआ — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — सो एवं पब्बजितो समानो पातिमोक्खसंवरसंवृतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो, दी. नि. 1.55; आचारगोचरसम्पन्नोति आचारेन चैव गोचरेन च सम्पन्नो,

## आचारदिष्टि

44

## आचारविपत्ति

दी. नि. अ. 1.149; महानि. अ. 96; आचारगोचरसम्पन्नोति इदमस्स पातिमोक्खसंवरस्स उपकारकधम्मपरिदीपनं महानि. अ. 94; आचारगोचरसम्पन्नोति मिच्छाजीवपटिसेधकेन न वेद्धुदानादिना आचारेन, ... पाचि. अ. 47; इति इमिना च आचारेन इमिना च गोचरेन उपेतो ... तेन वुच्चति आचारगोचरसम्पन्नोति, विसुद्धि. 1.18; - न्ना पु. प्र. वि. ब. व. - पातिमोक्खसंवरसंवृता विहरथ आचारगोचरसम्पन्ना अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्साविनो, म. नि. 1.41; आचारगोचरसम्पन्नाति आचारेन च गोचरेन च सम्पन्ना, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).164-165.

**आचारदिष्टि** स्त्री., द्व. स. [आचारदृष्टि], उत्तम आचरण एवं सम्पक् दृष्टि - विषयक अतिक्रमण या अपराध - या तृ. वि., ए. व. - सीलविपत्तिया चोदेति, अथो आचारदिष्टिया, परि. 304; आचारदिष्टियाति आचारविपत्तिया चेव दिष्टिविपत्तिया च, परि. अ. 204; तुल. आचारविपत्ति.

**आचारपञ्जति/आचारपण्णति** स्त्री., तत्पु. स. [आचारप्रज्ञप्ति], उत्तम आचरण के विषय में विनय की शिक्षा, सदाचार-विषयक आज्ञा या निर्देश - ति प्र. वि., ए. व. - ओवाददायके निस्साय आचारपण्णतिविनयो वा सुसिखितो न भवेय्य, जा. अ. 3.326; केवलं तत्थ सिक्खा संयमो नियमो सीलगुणआचारपण्णति अत्थरसो धम्मरसो विमुत्तिरसो, मि. प. 183; पुब्बभागपटिपदाति च सीलं आचारपञ्जति धुतङ्गसमादानं याव गोत्रभुतो सम्मापटिपदा वेदितव्वा, दी. नि. अ. 2.152; - सिक्खापद नपुं., तत्पु. स. [आचारप्रज्ञप्तिशिक्षापद], विनय के वे शिक्षापद, जिनमें उत्तम आचरण से सम्बन्धित आज्ञा या निर्देश दिए गए हैं - दं प्र. वि., ए. व. - भिक्खूनं मेत्तचित्तेन आचारपञ्जतिसिक्खापदं, कम्मद्धानकथनं धम्मदेसना तेपिटकमपि बुद्धवचनं मेत्तं वचीकम्मं नाम, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).289.

**आचारपटिपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आचारप्रतिपत्ति], उत्तम आचरण को व्यवहार में उतारना, व्यवहार में सदाचार का अनुसरण, सदाचार की वास्तविक पूर्णता - ति प्र. वि., ए. व. - आचारपटिपत्ति ते, बाह्वं खो मम रुच्चति, अप. 1.373; स. प. के अन्तः, यदि तत्थ बुद्धपुत्ता आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिमेधवस्स अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं ..., मि. प. 135.

**आचारवत्त** नपुं., [आचारवृत्त], सदाचार, उत्तम आचरण का व्रत या पवित्र कृत्य, उत्तम जीवनवृत्ति - तेन तृ. वि., ए. व. - विनीतवत्तन्ति विनीतेन आचारवत्तेन समन्नागतं, जा. अ. 5.405.

**आचारवन्तु** त्रि., आचार + वन्तु से व्यु. [आचारवत्], सदाचारी, उत्तम आचरण का पालन करने वाला - वा पु., प्र. वि., ए. व. - ... सचे पन जातिकुलपुत्तो आचारवा होति, स. नि. अ. 2.44.

**आचारविकार** पु., तत्पु. स. [आचारविकार], सदाचार का हास, उत्तम आचरण में गड़बड़ी का आ जाना - रं द्वि. वि., ए. व. - नानावण्णपटिमण्डितञ्च तालवण्टं गहेत्वा आचारविकार आपज्जिसु, सा. वं. 96.

**आचारविद्विगम** पु., श्रीलङ्का में अनुराधपुर से तीन योजन दूर पूर्वोत्तर दिशा में स्थित एक प्राचीन गांव का नाम - म्हि सप्त. वि., ए. व. - आचारविद्विगमम्हि सोळसकरिसे तत्ते, म. वं. 28.13; नगरतो तियोजनमत्थके द्वाने पुब्बउत्तरकण्णे आचारविद्विगमे तियामरत्तिं, थू. वं. 219-220(रो.).

**आचारविनय** पु., तत्पु. स. [आचारविनय], उत्तम - आचरण सम्बन्धी नियम - यं द्वि. वि., ए. व. - विनयन्ति 'एवं अभिक्कमितव्व'न्तिआदिकं आचारविनयं न जानाति, ओवादञ्च न सम्पटिच्छति, जा. अ. 4.217.

**आचारविपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आचारविपत्ति], चार प्रकार की विपत्तियों में दूसरी, पातिमोक्खसुत्त में निर्दिष्ट थुल्लच्चय, पाचितिय, पाटिदेसनीय, दुक्कट एवं दुब्भासित नामक अपराध, उत्तम आचरण का हास या हानि, सदाचार के पालन में असफलता या विमुखता - ति प्र. वि., ए. व. - थुल्लच्चयं, पाचितियं पाटिदेसनीयं, दुक्कटं, दुब्भासितं, अयं आचारविपत्ति, महाव. 242; वुत्ताचारविपत्तीति, आचारकुसलेन सा, विन. वि. 3105; - तिं द्वि. वि., ए. व. - अथाचारविपत्तिं चे, पटिच्छादेति दुक्कटं, उक्त. वि. 175; - या तृ. वि., ए. व. - सीलविपत्तिया वा ठपेसि, आचारविपत्तिया वा ठपेसि, महाव. 242; अमूलिकाय सीलविपत्तिया ... अमूलिकाय आचारविपत्तिया पातिमोक्खं ठपेति - इमानि द्वे अधम्मिकानि पातिमोक्खद्वयपानि, चूलव. 399; सीलविपत्तिया वा आचारविपत्तिया वा अत्तानं उक्कसेतुकामताय वा परं वम्भेतुकामताय वा न उपवदेय्य, स. नि. अ. 3.73; - चोदना स्त्री., पातिमोक्ख में प्रज्ञप्त (पाराजिक एवं पाचितिय) गम्भीर अपराधों को छोड़ शेष

## आचारविपन्न

45

## आचारशीलगुणवत्तपटिपत्ति

अपराधों के विषय में अपराधी भिक्षु को प्रेरक वचन कहना, डांटना फटकारना अथवा पापकर्म की निन्दा करना — अवसेसानं वसेन आचारविपत्तिचोदना ..., पारा. अष्ट. 2.157; — पच्चय पु., कारण के रूप में पाराजिक एवं पाचित्तिय के अतिरिक्त शेष अपराध — या प. वि., ए. व. — आचारविपत्तिपच्चया एकं आपत्तिं आपज्जति, परि. 201; — पुच्छा स्त्री., [आचारविपत्तिपुच्छा], आचारविपत्ति अर्थात् थुल्लपच्चय आदि अपराधों के विषय में प्रश्न — विपत्तिपुच्छाति — सीलविपत्तिपुच्छा, आचारविपत्तिपुच्छा, दिट्ठिविपत्तिपुच्छा, आजीवविपत्तिपुच्छा, परि. 324.

**आचारविपन्न** त्रि., तत्पु. स. [आचारविपन्न], उत्तम आचरण से रहित, अच्छे आचरण से विहीन, पाराजिक एवं पाचित्तिय को छोड़ शेष पांच प्रकार की आपत्तियों में फंसा हुआ — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — अधिसीलं सीलविपन्नो होति, अज्झाचारे आचारविपन्नो होति, महाव. 82; परि. 244; इतरे पञ्चापत्तिकखन्धे आपन्नो अज्झाचारे आचारविपन्नो नाम, महाव. अष्ट. 258; आचारविपन्नो नाम पञ्च आपत्तिकखन्धे आपन्नो, परि. अष्ट. 166.

**आचारविहार** पु., तत्पु. स. [आचारविहार], उचित व्यवहार, सदाचारमयी जीवनवृत्ति — रे सप्त. वि., ए. व. — राजा तस्माचारविहारे पसीदित्वा तं निमन्तापेत्वा पासादतले पत्तञ्जे निसीदापेत्वा, ... जा. अष्ट. 3.310.

**आचारसंयम** पु., स. प. के अन्त. प्राप्त [आचारसंयम], आचरण के विषय में संयम, सदाचार परायण होने के लिए प्रयास स. प. के. रूप में — यावता लोके सुगतागमपरियत्तिआचारसंयमसीलसंवरगुणा, सब्बे ते भिक्षुसङ्गमुपगता भवन्ति, मि. प. 185.

**आचारसमाचारसिक्खापक / सिक्खापनक** त्रि., ('आचरिय' शब्द के सर्वाधिक मान्य निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त), उत्तम आचरण एवं व्यवहार की शिक्षा देने वाला (आचार्य) — को पु., प्र. वि., ए. व. — नत्थि आचरियो नामाति आचारसमाचारसिक्खापको आचरियो नाम कोचि नत्थि, पे. व. अष्ट. 219; — कं द्वि. वि., ए. व. — अनुजानामि भिक्षवे आचरियन्ति आचारसमाचारसिक्खापनकं आचरियं अनुजानामि, महाव. अष्ट. 254.

**आचारसम्पत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आचारसम्पत्ति], उत्तम आचरण रूपी सम्पदा, अत्यन्त उत्तम आचरण, आचरण में उच्चता — तिं द्वि. वि., ए. व. — आचारसम्पत्तिञ्च

आणबलञ्च सुचिभावञ्च जानाति, जा. अष्ट. 7.186; — या तृ. वि., ए. व. — एवं वुत्तभिक्षुसारुण्यआचारसम्पत्तिया, उदा. अष्ट. 182.

**आचारसम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [आचारसम्पन्न], सदाचारी, उत्तम आचरण एवं व्यवहार का अनुसरण करने वाला, सभी के प्रति उचित सम्मानभाव आदि रखने वाला — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — अपिच यो भिक्षु सत्थरि सगारवो सपत्तिस्सो सब्बाचारीसु ... अयं वुच्चति आचारसम्पन्नो, उदा. अष्ट. 182; यो भिक्षु ... भोजने मत्तञ्जू जागरियानुयुत्तो सत्तिसम्पज्जनेन समन्नागतो अपिच्छो ... गरुचितीकारबहुलो विहरति, अयं वुच्चति आचारसम्पन्नो, इतिवु, अष्ट. 269; ... एवं सीलसम्पन्नो, एवं आचारसम्पन्नोति आदिगुणकथनं परम्मुखा मेत्तं वचीकम्मं नाम होति, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).139; 'अयं सीलवा गुणवा लज्जिपेसलो आचारसम्पन्नोति वा नत्थि, म. नि. अष्ट. (उप.प.) 3.202; — न्नेन पु., तृ. वि., ए. व. — 'अहं कं निस्साय एवं आचारसम्पन्नेन पुत्तेन वियोगं पत्तोति?', ध. प. अष्ट. 2.104; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — एत आचारसम्पन्नस्स अरियस्स कल्याणं उत्तमवचनं, जा. अष्ट. 4.383.

**आचारसिक्खापन** नपुं., तत्पु. स., उत्तम आचरण की शिक्षा, सदाचार का सिखलाना — नेन तृ. वि., ए. व. — तस्मा इदानिपि नो आचारसिक्खापनेन आचरियो भवाति आह, जा. अष्ट. 5.378.

**आचारशील** नपुं., कर्म. स. [आचारशील], 'चतुक्क' शीर्षक में शील के विभाजनों में से एक, सामाजिक रीति रिवाज, परम्परा से चली आ रही सामाजिक प्रथा, सामाजिक व्यवहार से सम्बद्ध नियम — लं प्र. वि., ए. व. — कुलदेसपासण्डानं अत्तनो अत्तनो मरियादाचारितं आचारशीलं, विसुद्धि. 1.16; कुलदेसपासण्डम्मो हि आचारशीलंति अधिपेतं, विसुद्धि. महाटी. 1.35.

**आचारशीलगुणवत्तपटिपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आचारशीलगुणवत्तपटिपत्ति], आचारशीलों, गुणों एवं व्रतों आदि का व्यवहार में पालन — यदि तत्थ बुद्धपुत्ता आचारशीलगुणवत्तपटिपत्तिमेघवरस्सं अपरापरं अनुपबन्धापेयुं अभिवस्सापेयुं, मि. प. 135; — या तृ. वि., ए. व. — योगिना योगावचरेन आचारशीलगुणवत्तपटिपत्तिया आगमाधिगमे पटिसत्ताने, मि. प. 357.



## आचारसीलसम्पन्न

46

## आचिकखति

**आचारसीलसम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [आचारशीलसम्पन्न].  
**शा. अ.**, आचारशील से सम्पन्न, विशेष अर्थ, इक्कीस प्रकार के वर्जित जीविका-साधनों से जीविकोपार्जन न करने वाला तथा चार मार्गफलों में प्राप्त शीलों से परिपूर्ण (व्यक्ति) - न्नो पु., प्र. वि., ए. व. - आचारसीलसम्पन्नो, निसे अग्गीव भासति, जा. अ. 4.387; - न्ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - तस्सेका धीता अभिरूपा पासादिका आचारसीलसम्पन्ना हिरोत्तप्यसमन्नागता केवलं निव्वप्यहसितमुखा, जा. अ. 1.393; - न्ने पु., सप्त. वि., ए. व. - आचारसीलसम्पन्ने, सीतिभूते अनासवे, जा. अ. 3.364; आचारसीलसम्पन्नेति एकवीसतिया अनेसनाहि जीविककप्यनं अनाचारो नाम, तस्स पटिपक्खेन आचारेन चेव मग्गफलेहि आगतेन सीलेन च समन्नागते, जा. अ. 3.365.

**आचारहीन** त्रि., तत्पु. स. [आचारहीन], सदाचार या उत्तम आचरण का अनुसरण न करने वाला, दुराचारी, दस प्रकार के हीन व्यक्तियों में एक - नो पु., प्र. वि., ए. व. - आचारहीनो, महाराज, पुग्गलो, ... पे. ... कम्महीनो महाराज, पुग्गलो ... पे. ... पयोगहीनो महाराज पुग्गलो लोकस्मिं ओज्जातो अवज्जातो हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अबितीकतो, मि. प. 267.

**आचिकखक** त्रि., आ + चिकख / चकख से व्यु., कहने वाला, घोषित करने वाला, निर्देश या सङ्केत देने वाला - को पु., प्र. वि., ए. व. - चिकखति आचिकखति अयाचिकखति, आचिकखको, चकखति, चकखु, स. 2.332.

**आचिकखति** आ + चिकख / चिकख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचष्टे / आचक्षते / आख्याति], कहता है, उपदेश देता है, दरसाता है, विज्ञापित करता है, प्रतिपादित करता है, प्रकाशित करता है, विभाजित करके स्पष्ट करता है, सूचित करता है, व्याख्या करता है, घोषणा करता है - आचिकखतीति कथेति, देसेतीति दस्सेति, पज्जापेतीति जानापेति, पडपेतीति आणमुखे ठपेति, विवरतीति विवरित्वा दस्सेति, विभजतीति विभागतो दस्सेति, उत्तानीकरोतीति पाकटं करोति, स. नि. अ. 2.36; आचिकखति नाम पुड्डो भणति - "एवं देहि", पारा. 190; - सि म. पु., ए. व. - अच्छेरमाचिकखसि पुज्जसिद्धिं, जा. अ. 7.133; - से आत्मने., म. पु., ए. व. - पथं आचिकखसे तुवं, अप. 1.81; पथं आचिकखसेति, ... निब्बानाधिगमनुपायं आचिकखसे कथेसि देसेसि विभजि उत्तानि अकासीति अत्थो, अप. अ. 2.48; - कखामि उ. पु., ए. व. - आचिकखामीति कथेमे, अ. नि. अ. 2.348; - न्ति प्र. वि., ब. व. - यं तं अरिया आचिकखन्तीति पदनिर्देसे पन ... देसेन्तीति आदीनि सब्बानेव अज्जमज्ज वेवचनानि, विभ. अ. 350; - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - अत्थं आचिकखन्तोपि यथा सो न जानाति, सु. नि. अ. 1.143 44; आनन्दथेरेन पुड्डो सितकारणं आचिकखन्तो आह, ध. प. अ. 2.44; - न्ती उपरिवत्, स्त्री. - एवं पन तेन इसिना पुच्छिता उब्बसी अत्तना अधिप्पेतं ब्रह्मदत्तं आचिकखन्ती ..., पे. व. अ. 143; - तु अनु., प्र. पु., ए. व. - आचिकखतु च मे, भन्ते. भगवा दुक्खं, स. नि. 1(2).20; - कख म. पु., ए. व. - आचिकख मे तं यमहं विजज्जन्ति, जा. अ. 3.318; - कखाहि उपरिवत् - "आनन्दसेद्धिं पुत्तस्स ते पज्ज महानिधियो आचिकखाही"ति आचिकखापेत्वा सहहापेसि, ध. प. अ. 1.265; - कखथ म. पु., ब. व. - "भन्ते, आचिकखथा"ति भिक्षुसङ्घं पुच्छति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).149; "मातरं मे आचिकखथा"ति पुच्छित्वा ... "त मे आचिकखथा"ति आह, ध. प. अ. 2.81; - कखेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - मूळहस्स वा मग्गं आचिकखेय्य, पारा. 6; मग्गं आचिकखेय्याति हत्थे गहेत्वा एस मग्गोति वदेय्य, पारा. अ. 1.129; - कखेय्याथ विधि., म. पु., ब. व. - "सचे मे, भन्ते, पब्बज्जिते निस्सये आचिकखेय्याथ, अभिरमेय्यामहं, महाव. 65; - किख अ. पु., ए. व. - अथ खो आयस्सा अज्जुको तं ओकासं तस्स दारकस्स आचिकखि, पारा. 79; - किखं अ. पु., ए. व. - अहज्झि कस्सचि नाचिकखि, चरिया. 403; - किखंसु अ. पु., प्र. पु., ब. व. - तस्स भिक्षू पटिकव्वेव निस्सये आचिकखंसु, महाव. 65; - किखस्सा काला., प्र. पु., ए. व. - सचे तथा सत्था नाचिकखिस्सा ..., उदा. अ. 100; - किखतुं निमि. कृ. - लब्भा सोवण्णमयाय लड्डिया धज्जपुज्जोपि सुवण्णपुज्जोपि आचिकखितुन्ति, कथा. 189; अनुजानामि, भिक्षवे, उपसम्पादेन्तेन वत्तारो निस्सये आचिकखितुं ..., महाव. 65; - किखतब्ब त्रि., सं. कृ. - उपज्जायेन आचिकखितब्बं एवं धोवेय्यासीति, महाव. 59-60; - किखत्वा / किखत्वान पू. का. कृ. - ... वन्दित्वा तं पवति आचिकखित्वा ..., उदा. अ. 145; आचिकखित्वान तं मग्गं निब्बुता ते ससावकाति, बु. व. 28.20; - किखयमान त्रि., वर्त. कृ., कर्म. वा. - ने सप्त. वि., ए. व. - तथागतं एवं आचिकखयमानं देसियमानं ... न जानाति न

## आचिकखन

47

## आचिण्ण

परस्सति, स. नि. 2(1).126; — मानं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — तन्ति आचिकखयमानं तमेव कम्मं, तं वा मम वचनं, थेरीगा. अहु. 293; — **कखापेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ. — ते पञ्च महानिधियो आचिकखाहीति आचिकखापेत्वा सहहापेसि, ध. प. अहु. 1.265; — **चिकिखत्त** त्रि., भू. क. कृ. [आचष्ट/आख्यात], उदघोषित, कथित, बतलाया गया — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — पवेदितन्ति वेदितं पवेदितं आचिकिखत्तं देसितं पञ्जापितं पट्टपितं विवटं विभत्तं उत्तानीकत्तं पकासितन्ति, महानि. 137; **महं ताव तया आचिकिखत्तं**, ध. स. अहु. 317; — ते सप्त. वि., ए. व. — सचे आचिकिखत्ते पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स, पाचि. 111; — **मग्ग** पु., कर्म. स. [आख्यातमार्ग], उपदिष्ट मार्ग, कथित मार्ग — **ग्गेन** तृ. वि., ए. व. — तेन आचिकिखत्तमग्गेन गच्छन्तो पुन पन्नरसयोजनप्पमाणे ठाने अञ्जं तापसं दिस्वा ..., पे. व. अहु. 133; — **सज्जा** स्त्री., कर्म. स. [आख्यातसंज्ञा], बतलाया हुआ ज्ञान — **य** तृ. वि., ए. व. — द्वे हंसपोतका पितरा आचिकिखत्तसज्जाय तत्थ गन्त्वा ..., जा. अहु. 2.31.

**आचिकखन/आचिकखण** नपुं., आ + चिकख/चिकख से व्यु., क्रि. ना. [आचक्षण/आख्यान], कथन, उदघोषणा, प्रतिपादन, कुछ पूछे जाने पर उत्तर के रूप में कथन — नं प्र. वि., ए. व. — **आचिकखनं** नाम पुट्टस्स 'एवं देहि एवं देन्ता सामिकस्स पिया भविस्ससि, मत्तापा चा'ति भणनं, कट्ठा. अभि. टी. 214; स. प. के रूप में — **ओभासेय्याति** अवभासेय्य वण्णावण्ण याचनआयाचनपुच्छनपटिपुच्छन **आचिकखणा-**नुसासनअक्कोसनवसेन नानप्पकार असद्धम्मवचनं वदेय्य, कट्ठा. अहु. 131; अपिचेत्तं बुद्धानं अनाचिण्णं, यं अनागतस्स ईदिसस्स वत्थुस्स आचिकखनं, उदा. अहु. 212; — **णे** सप्त. वि., ए. व. — बोधिसत्तस्स पन सीलरक्खणआचिकखणं सज्जं अक्त्वा, जा. अहु. 3. 393; आचरियसमो सत्तानं कुसलसिक्खापने, सुवेसकसमो सत्तानं खेमपथमाचिकखणं, मि. प. 188.

**आचिकखणा/आचिकखना** स्त्री., उपरिवत्, शा. अ., विस्तृत व्याख्या, स्पष्ट रूप से निर्वचन, सूचना, **विशेष** अर्थ, भगवान बुद्ध द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्य, अष्टांगिक मार्ग आदि का विभाजन करके तथा एक एक अंगों का नाम लेकर कहा गया कथन — **आचिकखना** नाम पुट्टो भणति — एवं मरस्सु ... ताय आचिकखनाय मरिस्सामीति दुक्खं वेदनं उप्पादेति ..., पारा. 93; तत्थ अतीतं आरब्ध अत्थि

ओदिस्सआचिकखना, पाचि. अहु. 171; **दुक्खस्स अरियसच्चस्स आचिकखना** देसना पञ्जापना पट्टपना विवरणा विमज्जना उत्तानीकम्मं, म. नि. 3.297; **आचिकखनाति** देसेतब्बानं सच्चादीनं इमानि नामानीति नामवसेन कथना, ... अथ वा आचिकखनाति देसनादीनं छन्नं पदानं मूलपदं, पटि. म. अहु. 2.169.

**आचिकिखत्तु** पु., आ + चिकिख से व्यु., क. ना. [आचष्ट/आख्यातृ], कहने वाला, प्रतिपादित करने वाला, सङ्केतक, प्रकाशक — **तारं** द्वि. वि., ए. व. — 'इमं गहेत्वा सुखेन जीवा'ति आचिकिखत्तारं विय, ध. प. अहु. 1.309. **आचिण्ण** त्रि., आ + चरण का भू. क. कृ. [आचीर्ण], 1. बार बार किया गया — **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. — **आचिण्णन्ति** अभिण्हसो कत्तं, एकवारं कत्तापि वा अभिण्हसो समासेवित्, अभि. ध. वि. टी. 154; 2. सामान्य स्वभाव के रूप में व्यवहार में उतारा हुआ, सामान्य या सुपरिचित आचरण — **ण्णं** उपरिवत् — **अनाचिण्णं** तथागतैन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, आचिण्णं तथागतैन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, महाव. 476; चूळव. 195; 344; **अरियाचरितन्ति अरियेहि बुद्धादीहि आचिण्णं**, जा. अहु. 3.366; — **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. — अपि च ... सब्बञ्जुबोधिसत्तानं एस आचिण्णो समाचिण्णो पोराणकमग्गो, जा. अहु. 4.364; — **ण्णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. — "महाराज, याचना हि नामेसा कामभोगीनं गिहीनं आचिण्णा, जा. अहु. 3.312; — **ण्णानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. — **इमानेव हि द्वे भोजनानि वट्टे सत्तानं आचिण्णानि**, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).4; 3. नपुं. निर्धारित परिपाटी या रीति, व्यवहार में लाई गई परम्परा — **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. — **मातापितुपोसकं** नाम पोराणकपण्डितानं आचिण्णमेवा'ति, स. नि. अहु. 1.232; **इदमेव हि पोराणानं आचिण्णं**, स. नि. अहु. 1.241; 4. त्रि. आचरण या अनुसरण करने वाला — **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. — **कुक्कुरादिवताचिण्णो कुक्कुरादि सहव्यत्तं**, सद्धम्मो. 90; 5. नपुं. तौर तरीका, अभ्यास, आदत, स्वभाव — **ण्णं** प्र. वि., ए. व. — **आचिण्णं खो पनेत्तं बुद्धानं भगवन्तानं आगन्तुकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदितुं**, महाव. 66; **आचिण्णं खो पनेत्तं वस्सवुद्धानं भिक्खून् भगवन्तं दस्सनाय उपसङ्गमितुं**, पारा. 108; **आचिण्णं निगण्टस्स नाटपुत्तस्स पञ्जपेतु'न्ति**, म. नि. 2.39; 6. स. प. के अन्त. प्राप्त, पूर्व में किया गया आचरण, पूर्वोदाहरण — **आवासानुमताचिण्णममथितं जलोमि च**, म. वं. 4.10;

## आचिण्णकप्प

48

## आचिनाति

आवासानुमताचिण्णं ति आवासकप्पं अनुमतिकप्पं  
आचिण्णकप्पं चा ति अत्थो, म. वं. टी. 122 (ना.); स. उ.  
प. के रूप में अना., दीघरत्ता., पब्बज्जा., पुब्बा., बुद्धा.,  
ब्रह्मचरिया., योग्गा., लोका., सावका., सुत्तकारा. के अन्त.  
द्रष्ट.

आचिण्णकप्प पु., पूर्वकाल में प्रचलित व्यवहार या आचरण  
का सही होना, द्वितीय बौद्ध-सङ्गीति के समय की दस  
विवाद वस्तुओं में एक, पूर्वकालीन उदाहरणों पर आधारित  
आचरण – ष्यं द्वि. वि., ए. व. – आवासानुमताचिण्णं ति  
आवासकप्पं अनुमतिकप्पं आचिण्णकप्पं चा ति अत्थो, म.  
वं. टी. 122 (ना.); आचिण्णकप्पं ... 'यं उपज्झायाचरियेहि  
कतं कप्पियं वा अकप्पियं वा तं तेहि कतत्ता येव कातुं  
वट्ठीति' इमं आचिण्णकप्पं च, म. वं. टी. 123 (ना.); –  
प्पेन तृ. वि., ए. व. – ते पोराणकेन आचिण्णकप्पेन  
भिक्षू पत्तिस्त्वा उपधावन्ति, महाव. 99; – प्पो प्र. वि., ए.  
व. – दस वत्थूनि दीपेन्ति – ... कप्पति आचिण्णकप्पो,  
... कप्पति जातरूपरजतन्ति, चूलव. 463; आचिण्णकप्पो  
खो आवुसो, एकच्चो कप्पति, एकच्चो न कप्पतीति, चूलव.  
470.

आचिण्णचङ्क्रमण त्रि., ब. स. [बौ. सं. आचीर्णचक्रमण].  
चक्रमण करने में अभ्यस्त – नो पु., प्र. वि., ए. व. –  
थेरो आरद्धवीरियो आचिण्णचङ्क्रमनो, तस्मा पक्खिमयामे  
चङ्क्रमनं ओतरि, ध. प. अड्ड. 1.12.

आचिण्णपरिचिण्ण त्रि., सतत रूप में आचरण किया गया,  
लगातार व्यवहार में अनुसरण किया हुआ, बार बार अभ्यास  
किया हुआ – ता नपुं., भाव., प. वि., ए. व. – तस्मा अहं  
दीघरत्तं मेत्ताभावनाय आचिण्णपरिचिण्णत्ता अवकोधनो  
जातोति, जा. अड्ड. 2.163.

आचिण्णविसय पु., कर्म. स. [आचीर्णविषय]. सुपरिचित  
विषय, पहले से अच्छी तरह जानी हुई वस्तु या विषय –  
ये सप्त. वि., ए. व. – एवमेव आचिण्णविसये तस्स रागं  
आगन्तुकविसयेन नीहरत्वा ..., उदा. अड्ड. 139.

आचिण्णसमाचिण्ण त्रि., कर्म. स. [आचीर्णसमाचीर्ण], बार-  
बार आचरण किया हुआ, वह, जिसका अभ्यास व्यापक रूप  
में या भली-भांति किया गया है, स्वभाव या आदत का अङ्ग  
बन चुका – ण्णो पु., प्र. वि., ए. व. – अयञ्जि  
कबळीकारो आहारो नाम इमेसं सत्तानं अपायलोकेपि  
देवमनुस्सलोकेपि आचिण्णसमाचिण्णोव, म. नि. अड्ड. (मू.प.)  
1(2).140; गणवासो नामायं वट्ठे आचिण्णसमाचिण्णो

नदीओतिण्णउदकसदिसो, म. नि. अड्ड. (उप.प.) 3.114;  
अपिच सतं पण्डितानं सब्बज्जुबोधिसत्तानं एस आचिण्णो  
समाचिण्णो पोराणकमगो, जा. अड्ड. 4.364.

आचित 1. त्रि., आ + चि का भू. क. कृ. [आचित], ऊपर  
तक फैला हुआ, परिष्कृत – आचित निचितं भवे अभि.  
प. 701; – ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. – मंसलोहिताचिताति  
मंसं च लोहितेन च आचिता, दी. नि. अड्ड. 3.101;  
मंसलोहिताचिता तयोत्थता, उपरिचरणसोभना अड्ड. दी.  
नि. 3.116; – तं नपुं., प्र. वि., ए. व. – अन्तलिखेति  
आकासे 'अलङ्कृतमणिकञ्चनाचित'न्तिपि पाठो, वि. व.  
अड्ड. 151; 2. त्रि., राशीकृत, पुञ्जीभूत, उत्पन्न कराया  
गया, प्रादुर्भूत कराया गया – ता स्त्री., प्र. वि., ब. व. –  
एवमेव तेभूमककुसलेन चिता व्रुतिपटिसन्धियो, ध. स.  
अड्ड. 258; पाठा. चिता; सोपि अपरिमितमसङ्खयेय्यकप्पे  
समाचितकुसलमूलो ब्राह्मणकुलकुलीनो ..., भि. प. 326;  
स. उ. प. के रूप में, मासा. त्रि., तत्पु. स., उड्ड से  
भरा हुआ – तं नपुं., प्र. वि., ए. व. – मासाचितं मज्जेति,  
म. नि. 1.416; तस्स मे कायो गरुको अकम्मज्जो मासाचितं  
मज्जे, अ. नि. 3(1).153; – त नपुं., भाव., परिपूर्णता,  
भरपूर होना, सञ्चित होना, पुञ्जीभूत होना – ता प. वि.,  
ए. व. – कतत्ता आचितत्ता च, गङ्गा भागीरथी अयं, अप.  
2.8, 77.

आचिनाति आ + चि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचिनोति],  
शा. अ., ढेर लगा देता है, पुञ्जीभूत बना देता है, ला.  
अ., (कुशल अथवा अकुशल कर्मों की) वृद्धि कर देता है,  
पुञ्जीभूत करके या बहुत बड़े ढेर के रूप में उत्पन्न कर  
देता है, घटित कराता है – अयं वुच्चति, भिक्षवे, भिक्षु  
नेवाचिनाति न अपचिनाति, ..., स. नि. 2(1).84; अपचिनाति  
नो आचिनातीति वट्ठं विनासेति, नेव चिनाति, स. नि. अड्ड.  
2.262; नेव चिनातीति न वट्ठेति, स. नि. टी. 2.213;  
नेवाचिनतीति कुसलाकुसलानं पहीनत्ता तेसं विपाकं न  
वट्ठेति, महानि. अड्ड. 70; तेभूमकुसलं वट्ठस्मिं  
व्रुतिपटिसन्धियो आचिनाति वट्ठेतीति आचयगामी नाम होति,  
ध. स. अड्ड. 258; – नं / नन्तो वर्त., कृ., पु., प्र. वि., ए.  
व. – बालो पूरति पापस्स, थोकं थोकम्पि आचिनन्ति,  
ध. प. 121; एवं बालपुग्गलो थोकं थोकम्पि पापं आचिनन्तो  
करोन्तो वट्ठन्तो पापस्स पूरतियेवाति अत्थो, ध. प. अड्ड.  
2.10; – नतो उपरिवत्, ष. वि., ए. व. – एवमाचिनतो  
दुक्खं, आरा निब्बान वुच्चति, थेरगा. 795.

## आचीयति

49

आजव

आचीयति/आचिय्यति आ +चि के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचीयते], ढेर लगा दिया जाता है, बढ़ा दिया जाता है, पुञ्जीभूत कर दिया जाता है — न चीयती तस्स नरस्स पापं, सचे न चेतेति व्हाय तस्स, जा. अहु. 5.7; पाठ. चीयति, आचयगामित्तिके कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो, ध. स. अहु. 91; — यन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — आचेय्यमानोति मंसलोहितेहि आचियन्तो वज्जन्तो, तरुणोव हुत्वाति अत्थो, जा. अहु. 5.7.

आचेर पु., [आचार्य], आचार्य, शिक्षक, अध्यापक, द्वि. वि., ए. व. — अहं पतिञ्च पुत्ते च, आचेरमिव माणवो, जा. अहु. 7.338; तत्थ आचेरमिव माणवोति वत्तसम्पन्नो अन्तेवासिको आचरियं विय पटिजग्गति, जा. अहु. 7.339; — र सम्बो., ए. व. — अत्तानमेव गरहासि एत्थ, आचेर यं तं निखणन्ति सोभेति, आचेर यं तन्ति आचरिय, येन कारणेन तं निखणन्ति सोभे, जा. अहु. 4. 222.

आचेरक नपु., [आचार्यक], अध्ययन का विषय, शिल्प-स्थान, विद्या की विशेष शाखा, व्यवसाय, सिद्धान्त, मतवाद — म्हि — के सप्त. वि., ए. व. — सगारवो वुद्धतरसु भिक्खुसु, आचेरकम्हि च सके विसारदो, महाव. 483; आचेरकम्हि च सकेति अत्तनो आचरियवादे, महाव. अहु. 411; धम्मिं कथं भासति सच्चनामो, सकस्मिमाचेरके अप्पमतोति, पे. व. 554.

आज्ज पु., [बौ. सं. आजन्य], अच्छी नस्ल वाला घोड़ा (बैल या हांथी), अपने स्वामी के अभिप्राय, संकेत या इशारे को ठीक से समझने वाला घोड़ा — ज्जो प्र. वि., ए. व. — आजज्जो कुरुते वेगन्ति सारथिस्स चित्तरुचितं कारणं आजाननसभावो आजज्जो, जा. अहु. 1.181; आजज्जोति आजानीयो जातिमा कारणाकारणानं आजाननको, थेरगा. अहु. 1.69; — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — अल्लरोहितमच्छं वा आजज्जं वा आजज्जरथं वा उसमं वा गाविं वा कपिलं वा, खु. पा. अहु. 95; स. उ. प. के रूप में, कुज्जरा.- पु., कर्म. स. [बौ. सं. कुज्जराजन्य], अच्छी नस्ल का हाथी, मालिक के सङ्केतों को समझने वाला समझदार हांथी — तं कुज्जराजज्जहयानुचिण्णं, पावेक्खि अन्तेपुरमरियसेट्ठोति, जा. अहु. 7.182; पुरिसा.- पु., कर्म. स. [पुरुषाजन्य], उत्तम प्रकृति का पुरुष — ज्ज संबो., ए. व. — नमो ते पुरिसाजज्ज, नमो ते पुरिसुत्तम, दी. नि. 3.149; सु. नि.

549; — ज्जो प्र. वि., ए. व. — दुल्लभो पुरिसाजज्जो, न सो सब्बत्थ जायति, ध. प. 193.

आजज्जजातक पु., एक जातक का शीर्षक, जा. अहु. 1.181-182.

आजज्जयुत्त त्रि., ब. स. [आजन्ययुक्त], वह रथ, जिसमें अच्छी नस्ल वाले घोड़े लगाए हुए हों, अच्छी नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा (रथ) — त्तो पु., प्र. वि., ए. व. — यथा हि आजज्जयुत्तो रथो 'आजज्जरथो'ति वुच्चति, कट्ठा. अहु. 217; — त्ता ब. व. — आजज्जयुत्ता च रथा तवेव, सक्कोहमस्मी तिदसानमिन्दो, जा. अहु. 5.19.

आजज्जरथ पु., तत्पु. स. [आजन्यरथ], ऊंची नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ — थो प्र. वि., ए. व. — यथा हि आजज्जयुत्तो रथो 'आजज्जरथो'ति वुच्चति, कट्ठा. अहु. 217; सक्कस्स देवानमिन्दस्स सहस्सयुत्तो आजज्जरथो, स. नि. 1(1).260; — थं द्वि. वि., ए. व. — पुत्तस्स आजज्जरथं, कज्जाय मणिकुण्डलं, जा. अहु. 2.353; सहस्सयुत्तं आजज्जरथं पहिणिससामि, म. नि. 2.276.

आजज्जवळवा स्त्री., कर्म. स., अच्छे नस्ल की घोड़ी — य' ष. वि., ए. व. — अथस्सा रतिभागसमनन्तरे आजज्जवळवाय गम्भवुडानं अहोसि, ध. प. अहु. 1.223; अ. नि. अहु. 1.305; — यं सप्त. वि., ए. व. — इमस्मिं पन गेहे आजानेय्यवळवाय विजाताय सज्जम्पि अकत्वा निसीदितुं नाम अयुत्तन्ति, ध. प. अहु. 1.225; पाठ. आजानेय्यवळवा. आजज्जसंयुत्त त्रि., तत्पु. स. [आजन्यसंयुक्त], ऊंची नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ — त्ता पु., प्र. वि., ब. व. — रथा वाजज्जसंयुत्ता, सदा पातुभवन्ति मे, अप. 2.53; — त्ते पु., सप्त. वि., ए. व. — रथे चाजज्जसंयुत्ते, सुकते चित्तसिब्बने, सु. नि. 302, 306.

आजज्जहय पु., कर्म. स. [आजन्यहय], अच्छी नस्ल का घोड़ा — येहि त्. वि., ब. व. — कुज्जराजज्जहयानुचिण्णन्ति कुज्जरेहि च आजज्जहयेहि च अनुचिण्णं परिपुण्णं, जा. अहु. 7.183.

आजव पु., आ +वज्जु से व्यु. [आजव, बौ. सं. आजवंजव], शा. अ., वेग, तेज धारा, तेजी से बह रहा प्रवाह, ला. अ., पुनर्जन्म के समय से ही मन की धारा में तेजी से दौड़ रही तृष्णा — वं द्वि. वि., ए. व. — गेधं ब्रूमि महोघोति, आजवं ब्रूमि जप्पनं, सु. नि. 951; आजवं ब्रूमि जप्पनन्ति, आजवं 'जप्पना'ति ब्रूमि, महानि. 320; आजवन्ति आपटिसन्धितो जवति धावतीति आजवं, वट्ठमूलताय पुनअवे

## आजवनद्व

50

## आजानिय

पटिसन्धिदानतण्हायेतं अधिवचनं, महानि. अट्ट. 353; किञ्च भिय्यो – अवहननद्वेन ओघोति च आजवनद्वेन आजवन्ति च, सु. नि. अट्ट. 2.259.

आजवनद्व पु. तत्पु. स. [आजवनार्थ], वेग के साथ दौड़ने का अर्थ – द्वेन तृ. वि., ए. व. – ओघोति च आजवनद्वेन आजवन्ति, सु. नि. अट्ट. 2.259.

आज्ञान नपुं. आ + ज्ञा से व्यु., क्रि. ना. [आज्ञान], सुस्पष्ट ज्ञान, अच्छी समझ – तो प. वि., ए. व. – दुतियं आजाननतो इन्द्रियद्वसम्भवतो च अज्जिन्द्रियं, विसुद्धि. 2.118; आजाननतोति पठममग्गेन दिट्ठमरियादं अनतिक्रमत्वाव जाननतो, विसुद्धि. महाटी. 2.173; – ने सप्त. वि., ए. व. – ज्ञातानं एव धम्मानं पुन आजानने अज्जाताविभावे इन्द्वं कारेतीति अज्जाताविन्द्रियं तदे. – क त्रि. ठीक से जानने वाला / वाली – कं नपुं. प्र. वि., ए. व. – अज्जिन्द्रियन्ति आजाननकं इन्द्रियं, ध. स. अट्ट. 280; तेन मग्गेन ज्ञातानं चतुसच्चधम्मानमेव जाननतो इन्द्रियद्वसम्भवतो च आजाननकं इन्द्रियं अज्जिन्द्रियं, पटि. म. अट्ट. 1.75-76; – नत्थिक त्रि., [आज्ञानार्थिक], सुस्पष्ट ज्ञान पाने की इच्छा रखने वाला – को पु., प्र. वि., ए. व. – अज्जत्थिको ति आजाननत्थिको, पे. व. अट्ट. 195.

आजानाति आ + ज्ञा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आजानाति], ठीक से जानता है, अच्छी तरह से समझता है, सीखता है, अनुभव करता है – वेदो ति विदति सुखुममि कारणं आजानातीति वेदो, सद. 2.390; – न्ति ब. व. – उपमायपिधेकच्चे विज्जू पुरिसा भासितस्स अत्थं आजानन्ति, म. नि. 3.190; – सि म. पु., ए. व. – न त्वं इमं धम्मविनयं आजानासि, अहं इमं धम्मविनयं आजानामि, किं त्वं इमं धम्मविनयं आजानिस्ससि, दी. नि. 1.59; म. नि. 2.205-206; एवं वित्थारेन अत्थं आजानासि, म. नि. 3.101; – मि उ. पु., ए. व. – यथा यथाहं भन्ते भगवता धम्मं देसितं आजानामि, महाव. 253; – थ म. पु., ब. व. – तुम्हेंपि मे, भिक्षुवें, एवं धम्मं देसितं आजानाथ, म. नि. 1.186; – म उ. पु., ब. व. – यथा खो मयं आवुसो, भगवता धम्मं देसितं आजानाम, महाव. 391; – नं / न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – को सोत्थिमाजानमि धावजेय्याति, जा. अट्ट. 5.27; एवाभिजानं परमन्ति जत्त्वा, महानि. 60; एवं अभिजानन्तो आजानन्तो विजानन्तो पटिविजानन्तो ..., तदे.; – न्तेन तृ. वि., ए. व. – यथा

तं सुतवता सावकेन सम्मदेव सत्थुसासनं आजानन्तेन, म. नि. 1.207; – मानो वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. – धम्मञ्च सेट्ठं अभिजानमानो, सु. नि. 1070; पाठा. अभिजानमानो; – हि अनु. म. पु., ए. व. – आजानाहि निग्गहं यदि तत्तं दहति, मि. प. 44; – नेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. – विसमे पञ्च नीवरणे विसमाति जानेय्य आजानेय्य ..., महानि. 29; – नेय्युं ब. व. – मया सखित्तेन भासितस्स एवं वित्थारेन अत्थं आजानेय्युं ..., म. नि. 3.107; – नेय्याथ म. पु., ब. व. – अपि नु तुम्हें परेसं सुभासितं दुब्भासितं आजानेय्याथाति ?, दी. नि. 1.3; – नेय्याम उ. पु., ए. व. – यथा मयं ... वित्थारेन अत्थं आजानेय्यामाति, म. नि. 1.359; – ज्जासि अद्य., प्र. पु., ए. व. – यदा भगवा अज्जासि यसं कुत्तपुत्तं कल्लचित्तं ..., महाव. 20; – ज्जासिं अद्य., उ. पु., ए. व. – अज्जासिं खो अहं आनन्द, म. नि. 3.257; – निंसु अद्य., प्र. पु., ब. व. – सासनं आजानिंसूति अनुसिद्धिं जानिंसु, अ. नि. अट्ट. 3.181; – निस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. – को इमं धम्मं खिप्पमेव आजानिस्सतीति, महाव. 10; – निस्सामि उ. पु., ए. व. – भगवतो सन्तिके एतस्स भासितस्स अत्थं आजानिस्सामीति, म. नि. 2.225; – निस्ससि म. पु., ए. व. – किं त्वं इमं धम्मविनयं आजानिस्ससि, दी. नि. 1.7; – निस्सन्ति प्र. पु., ब. व. – इमे नो सुभासितदुब्भासितं आजानिस्सन्तीति, स. नि. 1(1).257; – निस्सथ म. पु., ब. व. – आजानिस्सथ मे तन्ति ?, म. नि. 2.156; – निस्साम उ. पु., ब. व. – भगवतो सन्तिके एतस्स भासितस्स अत्थं आजानिस्सामाति, म. नि. 1.118; – ज्जातुं / नितुं निमि. कृ. – दूरतोपि खो मयं आवुसो, आगच्छाम ... एतस्स भासितस्स अत्थमज्जातुं म. नि. 1.18; विज्जू पटिबला सुभासितदुब्भासितं ... अजानितुं पारा. 189; – मज्जाय / नित्वा पू. का. कृ. – कस्स त्वं धम्ममज्जाय, गिरं भाससि एदिसिं, थेरीगा. 317; – ज्जेय्य / नितब्ब त्रि., सं. कृ. – अज्जेय्योति आजानितब्बो, अ. नि. अट्ट. 3.116; – ज्जात त्रि., भू. क. कृ. – अज्जातमेतं अविसय्हसाहि, जा. अट्ट. 5.8.

आजानिय / आजानीय / आजानेय्य पु. / त्रि., [बौ. सं. आजनिय / आजानीय / आजानेय / आजानेय्य], ऊँची नस्ल का घोड़ा, बहुत अच्छा घोड़ा, आज्ञा को समझने वाला घोड़ा, क. उत्तम अश्व, अच्छी नस्ल का सधा हुआ घोड़ा – भेदो अस्ततरो तस्साजानीयो तु कुलीनको, अभि. प.

## आजानिय

51

## आजानीयवत

369; - यो प्र. वि., ए. व. - आजानियेको पन किं करिस्सति ..., जा. अहु. 7.166; - या ब. व. - आजानीयाव जातिया, सिन्धवा सीधवाहना, जा. अहु. 7.362; परमा वा अग्गा सेद्धा आजानीया सब्बालङ्कारेहि अलङ्कता हया अस्सा, वि. व. अहु. 62; - ये द्वि. वि., ए. व. - आजानीयमदासहन्ति आजानीयं उत्तमजातिसिन्धवं अहं अदासिं पूजेसिन्ति अत्थो, अप. अहु. 2.75; - ये द्वि. वि., ब. व. - आजानीयेव जातिया सिन्धवे सीधवाहने, जा. अहु. 7.257; ख. अच्छी नस्ल वाला बैल, गज, एवं चौपाया - अत्थि नु खो एतेसं गुन्नं अन्तरे इमानि सकटानि उत्तारेतुं समत्थो उसभाजानीयोति ..., जा. अहु. 1.193; आजानीयोति हत्थी वा होतु अस्सादीसु अज्जतरो वा, यो कारणं जानाति, अयं आजानीयोव चतुप्पदानं सेद्धोति अत्थो, स. नि. अहु. 1.31; ग. उत्तम गुणों एवं ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण उत्तम अश्व के समान बुद्ध एवं क्षीणास्रव शिष्य - आजानीयो वत्, भो, समणो गोतमो, स. नि. 1(1).32; ब्यत्तपरिघयट्ठेन कारणाकारणजाननेन वा आजानीयो, स. नि. अहु. 1.72; भगवापि युगे युतो सुदन्तआजानीयो विय एतकं पस्सन्तो गच्छति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.275; घ. सामणेरों को प्रशिक्षित करने के कारण अनुरुद्ध थेर के लिए प्रशिक्षक के तात्पर्य में प्रयुक्त - आजानीयेन आजज्जो, थेरगा. 433; आजानीयेनाति पुरिसाजानीयेन ... कतकिच्चेन अनुरुद्धेन ... सुद्ध वा आजज्जो कारितो दमितो, थेरगा. अहु. 2.95; ङ. कारण एवं अकारण का अच्छी तरह से ज्ञान रखने वाला आचार्य - आचरियो नो, आवुसो, उज्जु आजानीयो, विसुद्धि. 1.95; कारणाकारणस्स आजाननतो आजानीयो, विसुद्धि. महाटी. 1.111; स. उ. प. के रूप में - अस्सा.- पु., सधा हुआ उत्तम नस्ल का घोड़ा, सिन्धी घोड़ा - यो प्र. वि., ए. व. - अस्साजानीयो उसभाजानीयो पुरिसाजानीयो खीणासवोति, स. नि. अहु. 2.253; उसमा.- पु., कर्म. स., ऊंची नस्ल का प्रशिक्षित सांढ - उपरिवत्, गन्धहत्था.- पु., कर्म. स., ऊंची नस्ल का बलवान हाथी - सेय्यथापि नाम गन्धहत्थाजानियो दीघरत्तं सुपरिदन्तो, दी. नि. 2.130; निसमा.- पु., कर्म. स. [ऋषभाजानीय], शा. अ., उत्तम नस्ल का सांढ, ला. अ., मनुष्यों के बीच में सर्वोत्तम (बुद्ध) - पूजितं देवसङ्गेन निसभाजानियं यथा, अप. 1.198; पुरिसा.- पु., कर्म. स., उत्तम प्रकृति वाला पुरुष, आस्रवों को क्षीण कर चुका तथा प्रज्ञाविमुक्ति को प्राप्त अर्हत् - ये द्वि. वि., ब. व. - ... भदे अस्साजानीये

देसेस्सामि तयो च भदे पुरिसाजानीये, अ. नि. 3(1).207; - या प्र. वि., ब. व. - इमे खो, भिक्खवे, तयो भदा पुरिसाजानीयाति, अ. नि. 3(1).210; - महा पु., कर्म. स., भद्र प्रकृति का, अच्छी नस्ल का, स्वामी के हित एवं अहित को समझने वाला अश्व - ओरस्सं पुत्तं भदाजानीयसदिसकिच्चताय आजानीयन्ति, थेरगा. अहु. 1.123; महा.- पु., कर्म. स., महान ज्ञानी एवं संयमी - महाजानियो खो आकारो कालामो, ..., म. नि. 1.229; सिन्धवा.- पु., कर्म. स., सिन्धु देश का उत्तम अश्व - ... पदं कोट्टेन्तो सिन्धवाजानीयो विय गच्छति, स. नि. अहु. (म.प.) 1(2).151.

आजानीयझायित नपुं., तत्पु. स., हित एवं अहित को ठीक से जानने वाले सिन्धी घोड़े जैसा ध्यान - आजानीयझायितं खो, सद्ध, ज्ञाय, मा खलुङ्गझायितं, अ. नि. 3(2).291; कथञ्च सद्ध आजानीयझायितं होतीति कथं कारणाकारणं जानन्तस्स सिन्धवस्स झायितं होति, अ. नि. अहु. 3.342.

आजानीयट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आजानीयस्थान], कारण एवं अकारण (हित अथवा अहित) को ठीक से जानने वाले का स्थान या अवस्था, हित अहित को भलीभाँति जानने वाला अश्व अथवा ऊंचे ज्ञान एवं संयम वाला व्यक्ति - ने सप्त. वि., ए. व. - अनाजानीयेव समाने आजानीयठाने उपिम्ह, म. नि. 2.33; अहो वत्तं मं मनुस्सा आजानीयट्ठाने उपेय्युं, अ. नि. 3(2).141 42.

आजानीयपरिमज्जन नपुं., तत्पु. स. [आजानीयपरिमार्जन], हित एवं अहित को जानने वाले सिन्धी घोड़े की मालिश - नं द्वि. वि., ए. व. - आजानीयपरिमज्जनञ्च परिमज्जेय्युंति, अ. नि. 3(2).142, 144.

आजानीयभोजन नपुं., तत्पु. स. [आजानीयभोजन], ऊंची नस्ल वाले सिन्धी घोड़े को दिया जाने वाला भोजन - नं द्वि. वि., ए. व. - आजानीयेव समाने आजानीयभोजनं भोजिम्ह, म. नि. 2.33; आजानीयभोजनञ्च भोजेय्युं, अ. नि. 3(2).142.

आजानीयलण्ड नपुं., तत्पु. स., ऊंची नस्ल वाले सिन्धी घोड़े की लोद - स्स ष. वि., ए. व. - आजानीयलण्डस्स गन्धं घायित्वा एकोपि हत्थी नदिं ओतरितुं न उस्सहि, जा. अहु. 2.16.

आजानीयवत् नपुं., तत्पु. स. [आजानीयवत्त], कारण एवं अकारण के पूर्ण ज्ञाता होने की अवस्था, ऊंचे नस्ल वाले घोड़े के स्वभाव से युक्त होना, उच्चता, उत्तम प्रकृति -

## आजानीयसदिस

52

## आजीव

ता प्र. वि., ए. व. - आजानीयो वत्त, भो समणो गोतमो, आजानीयवता च समुप्पन्ना ... अधिवासोति अविहज्जमानोति, स. नि. 1(1).32.

आजानीयसदिस त्रि., उत्तम प्रकृति या स्वभाव वाले (उत्तम अश्व) जैसा - स संबो., ए. व. - इसिनिसभाति इसीसु निसम आजानीयसदिस, वि. व. अट्ट. 220.

आजानीयसद् पु., तत्पु. स. [आजानीयशब्द], ऊंचे नस्ल वाले सिंधी घोड़े की हिनहिनाहट, उत्तम अश्व की आवाज - दो प्र. वि., ए. व. - ... जातस्स स्थसदो व आजानीयसदो धजसदो व समन्ता असनिपातसदो विय अटोसि, स. नि. अट्ट. 1.300.

आजानीयसुसूपमा स्त्री./त्रि., 1. उच्च कुल वाले सिंधी अश्व के बड़े या शिशु की उपमा, 2. उच्चकुलीन छोटे अश्व की उपमा से युक्त, बड़े की उपमा वाता - मं पु., द्वि. वि., ए. व. - तेन समयेन अहुवत्थ यदा खो अहं आजानीयसुसूपमं धम्मपरियायं देसेसिं, म. नि. 2.117; आजानीयसुसूपमं धम्मपरियायं देसेसिन्ति तरुणाजानीयउपमं कत्वा धम्मं देसयि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.113.

आजानीयस्स पु., कर्म. स. [आजानीयाश्व], हित एवं अहित को जानने वाला उत्तम नस्ल का घोड़ा, मालिक के इशारों को समझने वाला सिंधी घोड़ा - स्सं द्वि. वि., ए. व. - तत्थ आजज्जन्ति इमं आजानीयस्सज्च मणिय्याति, जा. अट्ट. 7.165.

आजानेय्यप्पमाण त्रि., ब. स. [आजानीयप्रमाण], उच्चकुलीन घोड़े की लम्बाई चौड़ाई वाला - णं पु., द्वि. वि., ए. व. - गम्भपातनसमत्थं घोररूपं आजानेय्यप्पमाणं काळवण्णं महाकण्हसुनखं मापेत्वा, जा. अट्ट. 4.162.

आजानेय्यवळ्वा स्त्री., कर्म. स. [आजानीयवडवा], ऊंचे नस्ल की उत्तम घोड़ी, सिंधी घोड़ी - य सप्त. वि., ए. व. - इमस्मिं पन गेहे आजानेय्यवळ्वाय विजाताय सज्जमि अकत्वा ..., घ. प. अट्ट. 1.225; अ. नि. अट्ट. 1.306.

आजायति आ + ज्ञन का वर्त. प्र. पु., ए. व. [आजायते], उत्पन्न होता है, जन्म लेता है - रे आत्मने., ब. व. - सचे एन्ति मनुस्सत्तं, अट्टं आजायरे कुत्ते, स. नि. 1(1).40.

आजि स्त्री., [आजि], युद्ध, लड़ाई, संघर्ष, रणक्षेत्र - आजित्थी आहवो युद्धमायोधनं च संयुगं, अभि. प. 399.

आजिर नपुं. आजि से व्यु., [अजिर], आंगन, क्षेत्र, प्रदेश; केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, कुच्छि. - कोरव का क्षेत्र या प्रदेश - रं द्वि. वि., ए. व. - कुच्छिआजिरं कारेसि

कुच्छिआळिन्दमेव च, म. वं. 35.3; घरा. - घर का आंगन - रे सप्त. वि., ए. व. - घरे ओहीयित्वा घराजिरे ठत्ता, विसुद्धि. 1.139.

आजीव पु. [आजीव], 1. जीविका, जीविका कमाने का साधन, व्यवसाय, धन्धा - आजीवो वत्तनं वाथ कसिकम्मं कसीत्थियं, अभि. प. 445; - वो प्र. वि., ए. व. - एतं आगम्म जीवन्तीति आजीवो, विसुद्धि. 1.29; - स्स ष. वि., ए. व. - अम्हाकम्पि दुल्लब्धं, ये मयं आजीवरस्स हेतु पुत्तदारस्स कारणा सेनाय आगच्छामाति, पाचि. 142; - सत्त नपुं. द्व. स. सौ प्रकार के जीविका कमाने के साधन - ते प्र. वि., ब. व. - एकूनपज्जास आजीवसतेति एकूनपज्जास आजीववुत्तिसतानि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.165; 2. जीवनवृत्ति - वो प्र. वि., ए. व. - परिसुद्धो मे आजीवो परियोदातो असकिलिद्धोति, चूळव. 322; अ. नि. 2(1).116; - वेन तृ. वि., ए. व. - तेन कम्मेन तेन आजीवेन हत्थियायी वा अस्सयायी, अ. नि. 2(2).21; 3. जीविका कमाने के उचित साधन, विनय नियमों के अनुरूप जीवनयापन, विनय-अनुमोदित जीवनवृत्ति - वो प्र. वि., ए. व. - मा मे आजीवो भिज्जीति आजीवभेदभया तं भेसज्जं पज्जहि न उपजीवि, मि. प. 217; - वं द्वि. वि., ए. व. - नेव भिन्देय्यमाजीवो, वज्जमानोपि जीवितंति, मि. प. 336; स. उ. प. के रूप में; खेत्ता. - त्रि., ब. स., खेती से जीविका कमाने वाला, किसान - वो पु., प्र. वि., ए. व. - खेत्ताजीवो कस्सकोथ, अभि. प. 447; गणना. - त्रि., ब. स., गणना करके जीविका कमाने वाला - वानं च./ष. वि., ब. व. - गणकाणं गणनाजीवानं दिस्सति, म. नि. 3.50; जाया. - पु., आर्यमार्ग के अनुसरण की जीवनवृत्ति, उत्तम आचरण से युक्त जीवन, स. प. के रूप में - सो वोदानलवखणो जायाजीवप्पवत्तिरसो मिच्छाजीवप्पहानपच्चुपडानो, घ. स. अट्ट. 260; परिसुद्धा. - त्रि., ब. स. [परिशुद्धाजीव], परिशुद्ध जीवनवृत्ति वाला - वो पु., प्र. वि., ए. व. - अपरिसुद्धाजीवो समानो 'परिसुद्धाजीवोम्ही'ति पटिजानाति, चूळव. 322; - ताय स्त्री., भाव, तृ. वि., ए. व. - ताय व पन परिसुद्धाजीवताय नेवत्तानुक्कसेस्साम न परं वम्भेस्सामाति, म. नि. 1.344; मिन्ना. - त्रि., ब. स., नष्ट हो चुके जीविका के साधन वाला, वह, जिसका जीविका का साधन टूट गया है - वो पु., प्र. वि., ए. व. - परिसूतो अचित्तीकतो, मिन्नाजीवोत्वेव सद्धं गच्छति, मि. प. 215; मिच्छा. - पु., कर्म. स.,

## आजीवक

53

## आजीवद्वमकसील

जीविका कमाने का अनुचित साधन – वेन तृ. वि., ए. व. – ते एवरुपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति, दी. नि. 1.8; **सम्बहुला** – त्रि., जीविका के भिन्न भिन्न प्रकार के साधन अपनाने वाला, जीविका कमाने के प्रचुर साधनों वाला – वो पु., प्र. वि., ए. व. – किं पनायं सम्बहुलाजीवो सब्बं संभक्खेति, दी. नि. 3.31; **सम्मा** – पु., तत्पु. स. [सम्यगाजीव], जीविका कमाने के विशुद्ध साधन, शुद्ध जीवनवृत्ति – वेन तृ. वि., ए. व. – मिच्छाआजीवं पहाय सम्माआजीवेन जीवितं कप्पेति, दी. नि. 2.234; **सुद्धा** – त्रि., ब. स. [शुद्धाजीव], परिशुद्ध जीविकासाधन अपनाने वाला, अच्छी या पवित्र जीवन-वृत्ति वाला – वे पु., द्वि. वि., ब. व. – मित्ते भजस्सु कल्याणे, सुद्धाजीवे अतन्दिते, ध. प. 376; **साधुजीविताय सुद्धाजीवे**, ध. प. अट्ट. 2.346.

**आजीवक/आजीविक** पु., आजीव से व्यु. [आजीवक], बुद्ध के समय का एक प्रमुख एवं सम्मानित धार्मिक सम्प्रदाय, इसके अनुयायी गृहत्यागी श्रमण थे तथा अचेलक या नग्न रहते थे. इसके एक प्रमुख आचार्य मक्खलि गोसाल को बौद्ध साहित्य में कट्टर नियतिवादी अथवा अक्रियावादी बतलाया गया है, आजीवक संभवतः बौद्धों के कट्टर प्रतिद्वन्दी थे – को प्र. वि., ए. व. – आजीवकोति नगसमणको, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).161; **आजीवकोति नगपरिब्बाजको**, अ. नि. अट्ट. 3.87; – कं द्वि. वि., ए. व. – नाभिजानामि कच्चि आजीवकं सग्गूपगं अज्जत्र एकेन, म. नि. 2.159; – केन तृ. वि., ए. व. – महापुरिसो ... वाराणसिं गच्छन्तो ... उपकेनाजीवकेन समागच्छि, सु. नि. अट्ट. 1.217; – स्स च./ष. वि., ए. व. – ... धम्मं सोतुकामा आजीवकस्स एतमत्थं कथेत्वा, ध. प. अट्ट. 1.211; – क संबो, ए. व. – आजीवकाति आजीवहेतु पब्बजित पटुड्ढतापस, जा. अट्ट. 2.316; – का प्र. वि., ए. व. – आजीवका वा यदि वा निगण्ठा, सु. नि. 383; – के द्वि. वि., ब. व. – ... आजीवके उय्योजेसि, पाचि. 300; – कानं ष. वि., ए. व. – ... आजीवकानं मिच्छातपं आरब्ध कथेसि, जा. अट्ट. 1.470; – केसु सप्त, वि., ब. व. – ... विम्बिसारस्स आतिसालोहितो आजीवकेसु पब्बजितो होति, पाचि. 103; – **पब्बज्जा** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवकप्रव्रज्या], आजीवक के रूप में दीक्षा, आजीवकों के सम्प्रदाय में दीक्षा लेना, आजीवक की दीक्षा – ज्जं द्वि. वि., ए. व. – आजीवकपब्बज्जं पब्बजित्वा अचेलको

अहोसि, जा. अट्ट. 1.373; **हत्था दङ्गाति आजीविकपब्बज्जं पब्बजितकाले उण्हपिण्डपातपटिग्गहणे हत्थापि किरस्स दङ्गा**, जा. अट्ट. 3.477; – **सावक** पु., तत्पु. स. [आजीवकश्रावक], आजीवकों का शिष्य या अनुयायी – को प्र. वि., ए. व. – अथ खो अज्जतरसो आजीवकसावको गहपति येनास्मा आनन्दो तेनुपसङ्गमि, अ. नि. 1(1).248; – स्स च. वि., ए. व. – अज्जतरस्स आजीवकसावकस्स महामत्तस्स सङ्गमत्तं होति, चूलव. 294; – **केहि** तृ. वि., ब. व. – अज्जतरसो उपासको सम्बहुलोहि आजीवकसावकोहि सद्धिं उय्यानं अगमासि, चूलव. 250; – सुत्त नपुं, अ. नि. का एक सुत्त, अ. नि. 1(1).248-49; – **सेय्या** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवकशय्या], आजीवकों के लिए शय्या अथवा शयन का स्थान – य्यं द्वि. वि., ए. व. – अथ खो सो पुरिसो दण्डितो भिक्खुनूपस्सयस्स अविदूरे आजीवकसेय्यं कारापेत्वा आजीवके उय्योजेसि, पाचि. 300.

**आजीवकारण** नपुं, तत्पु. स., आजीविका का कारण, जीविकोपार्जन के लिए – णा प. वि., ए. व. – आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उत्तपति, परि. 202; **तत्थ अज्जाजीवेति आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खु उत्तरिमनुस्सधम्मं उत्तपति**, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.24; **आजीवहेतूति आजीवकारणा जीविकापकतो हुत्वा ...**, थेरगा. अट्ट. 2.399.

**आजीवद्वमकसील** नपुं, कर्म. स., शील का एक प्रमेद, आदिब्रह्मचरियकशील, ब्रह्मचर्य-जीवन या भिक्षु-जीवन के प्रारम्भ में ही तीन प्रकार के शारीरिक कर्मों, चार प्रकार के वाणी के पापकर्मों तथा एक प्रकार के जीविकोपार्जन के अनुचित साधन से चित्त की विरति कराने वाला आदिभूत शील – सुपरिसुद्धानि तीणि कायकम्मानी चत्तारि वचीकम्मानी, सुपरिसुद्धो आजीवोति इदं आजीवद्वमकं, विसुद्धि. महाटी. 1.31; **इमं कुसलं धम्मन्ति इमं अनवज्जं आजीवद्वमकसीलं**, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).276; – लं द्वि. वि., ए. व. – एवं आजीवद्वमकसीलं सोधेत्वा अनोमानदीतीरतो तिसयोजनप्पमाणं सत्ताहेन अगमा राजगहं बुद्धो, सु. नि. अट्ट. 2.101; **तिविधं कायदुच्चरितं पहाय उभयसुचरितं पूरेन्तस्सेव यस्मा आजीवद्वमकसीलं पूरेति**, अ. नि. अट्ट. 1.391; – स्स ष. वि., ए. व. – मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभावभूतन्ति आदिब्रह्मचरियकं आजीवद्वमकसीलस्सेतं अधिवचनं, विसुद्धि. 1.12.



## आजीवति

54

## आजीवविपत्ति

**आजीवति** आ + जीव का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आजीवति], जीता है, जीवन चलाता है, जीवनयापन करता है, के सहारे जीता है – न पापकं आजीवं आजीवति, म. नि. 2.225; – मानो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – याय चेतनाय मिच्छाजीवं आजीवमानो किरियं करोति नाम, ध. स. अट्ट. 263.

**आजीवन** नपुं., [आजीवन], पूरे जीवन भर – पिण्डो आजीवने देहे पिण्डने गोळकं मतो, अभि. प. 1017.

**आजीवपच्चयापत्ति** स्त्री., तत्पु. स., जीविका कमाने या जीवन को चलाने के कारण होने वाला अपराध – ति प्र. वि., ए. व. – आजीवपच्चयापत्ति छब्बधाति पकासिता, विन. वि. 3106; द्रष्ट. आजीवविपत्ति.

**आजीवपारिसुद्धि** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवपरिशुद्धि], कुशल काय-कर्म एवं कुशल वाक्-कर्म करते हुए जीवनयापन, दोषरहित अथवा विशुद्ध साधनों के सहारे जीविका कमाना – द्वि प्र. वि., ए. व. – आजीवपरिसुद्धि धम्मनेव समेन पच्चयुत्पत्तिमतकं, स. नि. अट्ट. 3.258; – द्विं द्वि. वि., ए. व. – कुसलं कायकम्मं, कुसलं वचीकम्मं, आजीवपरिसुद्धमिं खो अहं थपति, सीलस्मिं वदामि, म. नि. 2.228; – सील नपुं., शीलों के अनेक प्रभेदों में एक – परियेद्धिसुद्धि नाम आजीवपारिसुद्धि सीलं, पारा. अट्ट. 2.247; – धम्म पु., तत्पु. स. [आजीवपरिशुद्धिधर्म], जीविका की विशुद्धि से सम्बन्धित धर्म – म्मे सप्त. वि., ए. व. – आजीवपारिसुद्धिधम्मे वा दसविधसुचरित्तधम्मे वा बुद्धानं चारित्तधम्मे वा, सु. नि. अट्ट. 1.120.

**आजीवपारिसुद्धिशील** नपुं., तत्पु. स. [आजीवपरिशुद्धिशील], शील के चतुर्विध प्रभेदों में एक प्रभेद, जीविका कमाने के लिए बुद्ध द्वारा कहे गए छ शिक्षा-पदों का उत्त्लंघन किए बिना जीविका कमाना, जीविका कमाने के बुरे या अनुचित साधनों से मन को विलग रखना लं, नपुं., प्र. वि., ए. व. – या पन आजीवहेतुपज्जतानं छन्नं सिक्खापदानं वीतिकमस्स, ... पापधम्मानं वसेन पवत्ता मिच्छाजीवा विरति, इदं आजीव पारिसुद्धि सीलं, विसुद्धि. 1.16; परियेद्धिसुद्धि नाम आजीवपारिसुद्धि सीलं, पारा. अट्ट. 2.247; इदं आजीवपारिसुद्धि सीलं नाम, जा. अट्ट. 1.266.

**आजीवपारिसुद्धी** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवपरिशुद्धि], जीविका कमाने के साधनों की पवित्रता, पवित्र जीवनवृत्ति – द्वी

प्र. वि., ए. व. – आजीवपारिसुद्धी च सीलं पच्चयनिरसितं, सद्धम्मो. 342.

**आजीवपूरण** नपुं., जीविकोपार्जन के पवित्र नियमों या साधनों की पूर्णता – णं प्र. वि., ए. व. – मनोद्वारे आजीवपूरणं नाम नत्थि, ध. स. अट्ट. 263.

**आजीवमण्डक** नपुं., तत्पु. स., जीवनयापन के लिए आवश्यक वस्तुएं या सामग्री – कं द्वि. वि., ए. व. – अत्तनो आजीवमण्डकं गवेसमानो दिसा ववत्थापेतुं ... जा. अट्ट. 1.306.

**आजीवभेद** पु., तत्पु. स., जीविकोपार्जन-सम्बन्धी साधनों का नष्ट हो जाना या छिन्न भिन्न हो जाना – दो प्र. वि., ए. व. – मनोद्वारे आजीवभेदो नाम नत्थि, ध. स. अट्ट. 263; स. पू. प. के रूप में – मा मे आजीवो भिज्जी ति आजीवभेदभया त भेसज्जं पजहि न उपजीवि, मि. प. 217.

**आजीवमुख** नपुं., तत्पु. स. [आजीवमुख], जीवनयापन के साधन, व्यवसाय, कृषि आदि जीविकासाधन – खानि द्वि. वि., ब. व. – यानि तानि कसिवाणिज्जानि इणदानं उज्जाचरियाति आजीवमुखानि, जा. अट्ट. 4.381.

**आजीववार** पु., तत्पु. स., जीविकोपार्जन से सम्बन्धित खण्ड, जीविका के उपार्जन का अवसर – रे सप्त. वि., ए. व. – आजीववारे अपरिसुद्धाजीवाति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).122.

**आजीवविपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवविपत्ति], चार प्रकार की विपत्तियों में एक, 1. जीविका कमाने के अनुचित साधनों को अपनाना, 2. आजीविका के लिए भिक्षु या भिक्षुणी द्वारा किए गए छ प्रकार के अनुचित व्यवहार या अननुमोदित आचरण – अयं सा आजीवविपत्ति सम्मता, परि. 280; ... अयं छहि सिक्खापदेहि सङ्गहिता आजीवविपत्ति नाम चतुत्था विपत्ति सम्मताति ..., परि. अट्ट. 188; वत्तस्सो विपत्तियो – सीलविपत्ति, आचारविपत्ति, दिट्ठिविपत्ति, आजीवविपत्ति, परि. 249; इध भिक्खवे, एकच्चो मिच्छाआजीवो होति, मिच्छाआजीवेन जीविकं कप्पेति, अयं वुच्चति, भिक्खवे आजीवविपत्ति, अ. नि. 1(1).305; – चोदना स्त्री., जीविका कमाने के लिए गृहीत अनुचित साधनों के विषय में आज्ञा या निर्देश – आजीवहेतु पज्जतानं छन्नं सिक्खापदानं वसेन आजीवविपत्तिचोदना वेदितब्बा, पारा. अट्ट. 2.157; – पच्चय पु., तत्पु. स., जीविका-उपार्जन के अनुचित साधनों के ग्रहण करने के कारण – या प. वि., ए. व. –

## आजीवविपन्न

55

## आजीविकभय

आजीवविपत्तिपच्चया छ आपत्तियों आपज्जति, परि. 202; — पुच्छा स्त्री., तत्पु. स. [आजीवविपत्तिपृच्छा], आजीव विपत्ति के विषय में प्रश्न, मिथ्या-आजीव के विषय में प्रश्न — आचारविपत्तिपुच्छा, दिङ्गिविपत्तिपुच्छा, आजीवविपत्तिपुच्छा, परि. 324.

आजीवविपन्न त्रि., तत्पु. स. [आजीवविपन्न], सम्यक्-आजीव की स्थिति से रहित, विशुद्ध जीवनवृत्ति से रहित, जीविका उपार्जन के विशुद्ध साधन नहीं अपनाने वाला — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — मिच्छादिङ्गिको व होति, आजीवविपन्नो व, परि. 339.

आजीवविसुद्धि स्त्री., तत्पु. स. [आजीवविसुद्धि], जीविका की शुद्धि — आजीवविसुद्धिपरियोसानस्स सीलस्स उपनिस्सयो होति, परि. अहु. 210-11.

आजीववृत्ति स्त्री., जीविका का साधन, व्यवसाय, जीवनयापन के लिए आवश्यक कामधन्दा — सतानि नपु., प्र. वि., ब. व. — एक सौ प्रकार के जीविकोपार्जन के साधन, एक सौ प्रकार के व्यवसाय — एकूनपञ्चास आजीवकसत्तेति एकूनपञ्चासआजीवकवृत्तिसतानि, दी. नि. अहु. 1.134; म. नि. अहु. (म.प.) 2.165.

आजीवसंवर पु., तत्पु. स., जीवनवृत्ति के विषय में ग्रहण किया गया संयम, जीवकोपार्जन में संयम — रो पु., प्र. वि., ए. व. — दसयिमे, भिक्खवे, धम्मा सरीरुद्धा ... कायसंवरो, वचीसंवरो, आजीवसंवरो, पोन्नोभविको भवद्धारो, अ. नि. 3(2).73.

आजीवसम्पदा स्त्री., तत्पु. स. [आजीवसम्पत्], उत्तम जीवनवृत्ति, जीविका कमाने के अच्छे तरीकों की प्राप्ति, सम्यक्-आजीवता, सम्यक्-आजीव होकर जीवन जीना — इध, भिक्खवे, एकच्चो सम्माआजीवो होति, सम्माआजीवेन जीविकं कप्पोति अयं वुच्चाति, भिक्खवे, आजीवसम्पदा, अ. नि. 1(1).306; कम्मन्तसम्पदा, आजीवसम्पदा दिट्ठिसम्पदा, अ. नि. 1(1).305; का सम्पत्तीति या चस्स सीलसम्पदा चेव आजीवसम्पदा च, दी. नि. अहु. 1.190; या चस्स सीलसम्पदा च आजीवसम्पदा च, सा सम्पत्ति, अ. नि. अहु. 2.21.

आजीवसीलाचारविपन्न त्रि., तत्पु. स., सम्यक्-आजीव, शीलों एवं उत्तम आचरण से रहित — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — आजीवसीलाचारविपन्नोपि ब्राह्मणो भवेय्य, म. नि. अहु. (म.प.) 2.306.

आजीवसुद्धि स्त्री., तत्पु. स. [आजीवसुद्धि], सम्यक्-आजीव होने की दशा, विशुद्ध जीवनवृत्ति, जीविका-उपार्जन के

लिए अपनाए गए साधनों की पवित्रता — द्विं द्वि. वि., ए. व. — सम्पस्सतन्ति सम्मा आजीवसुद्धिं पस्सत्तं, सु. नि. अहु. 1.119; आजीवसुद्धिं रक्खेय्य अकरोन्तो अनेसन्, सदम्मो. 392.

आजीवहेतु अ., च. वि., प्रतिकू. निपा., जीविका पाने के निमित्त — आजीवहेतूति जीविकनिमित्तं, विसुद्धि. महाटी. 1.48; आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असत्तं अमूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उत्तपति, परि. 202; विसुद्धि. 1.22; आजीवहेतु आजीवकारणा — भिक्खु उत्तरिमनुस्सधम्मं ... नयेन परिवारे पञ्जत्तानि छ सिक्खापदानि, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.24; — क त्रि., जीविकोपार्जन के कारण उत्पन्न या उदित — यं पन नआजीवहेतुकं चतुब्धिं वचीदुच्चरितं भासन्ति, ध. स. अहु. 264; — पञ्जत्त त्रि., जीविका कमाने के सन्दर्भ में कहा गया या बतलाया गया (शिक्षापद) — तानं नपु., ष. वि., ब. व. — या पन आजीवहेतुपञ्जत्तानं छन्नं सिक्खापदानं वीतिकमस्स, विसुद्धि. 1.16; — तेहि नपु., तृ. वि., ब. व. — आजीवेनपि चोदेतीति आजीवहेतुपञ्जत्तेहि छहि सिक्खापदेहि चोदेति, परि. अहु. 204.

आजीविक<sup>1</sup>/आजीविका नपु., (स.प. में)/स्त्री., [बौ. सं. आजीवक/आजीविका], जीविका कमाने के आवश्यक साधन — य तृ. वि., ए. व. — आजीविकाय पकतो अभिभूतोति अत्थो, म. नि. अहु. (म.प.) 2.129; आजीविकापकताति आजीविकाय उपहुता अभिभूता, स. नि. अहु. 2.267; — पकत त्रि., अहु. में प्रायः आजीविका + अपकत रूप में व्याख्यात, वह, जिसका प्रत्येक व्यवहार केवल जीविका कमाने मात्र के लिए है, दरिद्र, दुर्गतिग्रस्त, केवल जीविका कमाने में लगा हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आजीविकाय पकतो अभिभूतोति अत्थो, म. नि. अहु. (म.प.) 2.129; — ता ब. व. — ते ... राजाभिनीता ... नाजीविकापकता अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता, म. नि. 2.136.

आजीविक<sup>2</sup> पु., द्रष्ट. आजीवक के अन्तः.

आजीविकपब्बजा स्त्री., द्रष्ट. आजीवक<sup>2</sup> के अन्तः.

आजीविकभय नपु., तत्पु. स. [आजीविकाभय, बौ. सं. आजीविकभय], पांच प्रकार के भयों में से एक, जीविका कमाने के सन्दर्भ से उत्पन्न जीविकोपार्जन-सम्बन्धी भय, जीविकोपार्जन के कारण उत्पन्न भय — यं प्र. वि., ए. व. — आजीविकभयं, असिलोकभयं, परिससारज्जभयं,

## आजीविकसेय्या

56

आठपित

मरणभयं दुग्गतिभयं, अ. नि. 3(1).182; आजीविकाभयान्ति जीवितवृत्तिभयं, अ. नि. अहु. 3.259; आजीविकभयमि दुक्खं, मरणभयमि दुक्खं, मि. प. 189.

आजीविकसेय्या स्त्री., द्रष्ट. आजीविक के अन्त.

आजीविकापकत त्रि., द्रष्ट. आजीविका के अन्त.

आजीविनी / आजीविका / आजीवकिनी स्त्री., [आजीविका], आजीवक संप्रदाय की अनुयायिनी स्त्री – किनियो प्र. वि., ब. व. – आजीवका आजीवकिनियो, अ. नि. 2(2).93; आजीवका आजीवकिनियो सुक्काभिजातीति वदति, दी. नि. अहु. 1.135; आजीवका आजीविनियो अयं सुक्काभिजातीति वदन्ति, स. नि. अहु. 2.303.

आजीवी त्रि., केवल स. उ. प. में प्राप्त [आजीविन], (के सहारे) जीने वाला, जीवनयापन करने वाला, स. उ. प. में – मन्तस्साजीविनो- पु., प्र. वि., ब. व., प्रज्ञा के सहारे जीवन यापन करने वाले बुद्धिमान मन्त्री – मन्तस्साजीविनोति मन्ता वुच्चति पज्जा, तं निस्सयं कत्वा ये जीवन्ति पण्डिता महामत्ता, तेसं एतं नाम, दी. नि. अहु. 3.32; अमच्चा पारिसज्जा गणकमहामत्ता अनीकट्ठा दोवारिका मन्तस्साजीविनो सन्निपतित्वा, दी. नि. 3.47; लूखाजीवि – पु., द्वि. वि., ए. व., रूक्ष या कष्टदायक पद्धति से जीवन जीने वाला – मं पन तपस्सि लूखाजीविं कुलेसु न सक्करोन्ति, दी. नि. 3.31; लूखाजीविन्ति अचेलकादिवसेन वा धुतङ्गवसेन वा लूखाजीवि, दी. नि. अहु. 3.20; सुद्धा. ... वि – पु., द्वि. वि., ए. व., विशुद्ध जीवन-वृत्ति वाला – तं वे देवा पसंसन्ति, सुद्धाजीविं अतन्दितं, घ. प. 366.

आजीवुपायविपत्ति स्त्री., तत्पु. स., जीविका के उपार्जन में उत्पन्न विपत्ति या संकट – कसिरवुत्तिकेतिआदीहि आजीवुपायविपत्ति, स. नि. अहु. 1.143.

आज्जव / अज्जव नपुं., [आर्जव], सरलता, सीधापन – उज्जुनो भावो अज्जवं, इच्चेवमादि, क. व्या. 404; उज्जुनो भावो अज्जवन्ति व, सह. 3.807.

आट पु., [आटि / आडि], एक पक्षी, जिसकी चोंच लकड़ी की चम्मच के समान होती है – आटो दब्बिमुखद्विजो, अभि. प. 637; – टा प्र. वि., ब. व. – आटाति दब्बिसण्ठानमुखसकुणा, जा. अहु. 7.309.

आटक नपुं., पिशाच प्रदेश की आठ प्रकार की धातुओं में से एक – कं प्र. वि., ए. व. – मोरक्खकं, पुथुकं, मलिनकं, चपलकं, सेलकं, आटकं, भल्लकं, दूसिलोहन्ति अहु पिशाचलोहानि नाम, विभ. अहु. 60.

आटानाटा स्त्री., उत्तरकुरु जनपद के एक नगर का नाम – आटानाटा कुसिनाटा परकुसिनाटा, नाटसुरिया परकुसिटनाटा, दी. नि. 3.152; एकजिहस नगरं आटानाटा नाम आसि, दी. नि. अहु. 3.134; आटानाटानामाति इत्थिलिङ्गवसेन लद्धनामं नगरं आसि, दी. नि. टी. 3.142. आटानाटिय त्रि., [बौ. सं. आटानाटिक], आटानाटा नामक नगर से सम्बद्ध – या स्त्री., प्र. वि., ए. व. – अयं खो सा, मारिस, आटानाटिया रक्खा भिक्खून् भिक्खुनीन् उपासकान् ... फासुविहारय, दी. नि. 3.154; आटानाटियन्ति आटानाटनगरे बद्धता एवंनामं, दी. नि. अहु. 3.131.

आटानाटियपरित नपुं., आटानाटिय-सुत्त का परित्राण या सुरक्षा, आटानाटिय-सुत्त का सुरक्षादायक मन्त्रकवच, अनेक परित्राणकारी सुत्तों की सूची में से एक – सेय्यथिदं, रतनसुत्तं मेत्तसुत्तं ... मोरपरितं ... आटानाटियपरितं अहुलिमालपरितं, मि. प. 151; स. प. के अन्त.; आटानाटियपरितमोरपरितधजग्गपरित – रतनपरितादीनज्झि एत्थ आणा पवतति, अ. नि. अहु. 1.343; विभ. अहु. 406.

आटानाटियसुत्त नपुं., दी. नि. के पाथिक वग्न का एक सुत्त, जिसमें भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं, भिक्षुणियों एवं उपासकों के लिए उत्तरकुरु जनपद की सुद्ध सुरक्षा जैसे उत्तम सुरक्षा साधनों का उपदेश दिया है, दी. नि. 3.147-165; एवं मे सुतन्ति आटानाटियसुत्तं, दी. नि. अहु. 3.129; – ते सप्त, वि., ए. व. – तस्मा कुवेरो वेस्सवणोति वुच्चति, वुत्तच्चेतं आटानाटियसुत्ते, सु. नि. अहु. 2.91; – वण्णना स्त्री., दी. नि. के आटानाटियसुत्त की अहुकथा, दी. नि. अहु. 3.129-138.

आठपना / अठपना स्त्री., आ + ष्टा के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आस्थापना], व्यवस्थित कराना, निर्धारण कराना, रखवाना, स्थापित कराना, आदरपूर्वक रखाना, प्रारम्भ से विन्यस्त कराना – यो एवरुपो उपनाहो ... अठपना ठपना सण्ठपना अनुसंसन्दना ... अयं वुच्चति उपनाहो, पु. प. 124; या एवरुपा इरियपथस्स ठपना आठपना सण्ठपना भाकुटिका भाकुटियं, महानि. 164; आठपनाति आदिडपना, आदरेन वा ठपना, महानि. अहु. 269.

आठपित त्रि., आ + ष्टा के प्रेर. का भू. क. कृ. [आस्थापित], स्थापित किया हुआ, रखाया हुआ, ठीक से व्यवस्थित किया हुआ – तो पु. प्र. वि., ए. व. – योपि भुजिरसो मातरा वा पितरा वा आठपितो होति, पारा. अहु. 1.289; – तं पु.

## आठपेतुं

57

## आणत्ति

द्वि. वि., ए. व. — मानुसं मातरापि वा पितराठपितं वापि, अवहारो न विज्जति, विन. वि. 217.

आठपेतुं आ + षठा के प्रेर. का निमित्त. कृ. [आस्थापयितुं]. अच्छी तरह से स्थापित करने के निमित्त, ठीक से रखवाने के निमित्त — लब्धा पथवी केतुं विक्केतुं आठपेतुं ओचिनिनुं विचिनिनुंति ?, कथा. 293.

आडम्बर पु., [आडम्बर], युद्धभेरी, बिगुल, स. प. के अन्त. — लज्जितानेकपज्जुन्नगज्जिताडम्बरेहि च, चू. वं. 85.44.

आणक / आनक पु., [आनक, आनयति उत्साहवत्करोति], बड़ा सैनिक ढोल, नगाड़ा, एक ढोल का नाम, मृदंग — दसारहानं आनको नाम मुदिङ्गो अहोसि, स. नि. 1(2).243; आनकोति एवलद्धनामो मुदिङ्गो, स. नि. अड्ड. 2.201; — स्स प. वि., ए. व. — ... यं आनकरस्स मुदिङ्गस्स पोराणं पोक्खरफलकं अन्तराधायि, स. नि. 1(2).243; — के सप्त. वि., ए. व. — तस्स दसारहा आनके पटिते अज्जं आणि ओदहिंसु, तदे..

आण्डान नपुं., [आज्ञास्थान], प्रभुत्व का क्षेत्र, प्रभुत्व का स्थान — नं द्वि. वि., ए. व. — रक्खसस्स च आण्डानं न ओतरि ..., जा. अड्ड. 1.271.

आणत्त त्रि., आ + षा के प्रेर. का भू. क. कृ. [आज्ञप्त / आज्ञापित], वह, जिसे आज्ञा या आदेश दिया गया, निर्दिष्ट, वह नियम, जिसका विधान निर्दिष्ट किया गया है, विहित, पूजा गया, निवेदित — त्तो पु., प्र. वि., ए. व. — रज्जा आणत्तो अम्हाकं किर, भणे, विजिते भदियनगरे मेण्डको गहपति पटिवसति, महाव. 318; सो आणत्तो अहं तथाति, पारा. 62; — त्ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अपि चाहं हिम्योव गहपतिना आणत्ता, चूलव. 180; — त्तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — हिम्यो किर मे पितरा आणत्तं कम्मं निष्कादेहीति पहिणि, ध. प. अड्ड. 1.103; — त्तेन पु., तृ. वि., ए. व. — न भिक्खवे, थेरेन आणत्तेन अगिलानेन न गन्तब्बं, महाव. 146; — स्स पु., प. वि., ए. व. — सचे आणत्तस्सेव मातापितरो, सोव आनत्तरियं फुसति, पारा. अड्ड. 2.41; — त्ते सप्त. वि., ए. व. — सकिं आणत्ते पन तस्मिं बहुकेपि द्वारे निक्खमन्ते ..., कट्ठा. अड्ड. 197; — त्ता पु., प्र. वि., ब. व. — थेरेन आणत्ता नवा भिक्खू न गच्छन्ति, महाव. 146; — त्तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — वत्तारि पटाकानि आणत्तानि गमिस्सन्ति, मि. प. 99; — त्ते द्वि. वि., ए. व. — ... आणत्ते यत्तके आणत्तो घातेति, पारा.

अड्ड. 2.41; — काल पु., कर्म. स. [आज्ञप्तकाल], निर्दिष्ट समय, निर्धारित किया गया समय — लो प्र. वि., ए. व. — रज्जा आणत्तकालो विय कम्मरज्जा वट्टसन्निरिसितपुथुज्जनं गहेत्वा ..., स. नि. अड्ड. 2.99; — पुरिस पु., कर्म. स. [आज्ञप्तपुरुष], वह पुरुष, जिसे आज्ञा दी गई है अथवा आदेश दिया गया है, प्रयोज्य कर्ता — कारेति इच्चादिसु पन आणत्तपुरिसादयो कत्तुकम्मं नाम, सद्. 3.692.

आणत्ति स्त्री., आ + षा के प्रेर. से व्यु. [आज्ञप्ति], 1. आज्ञा, आदेश, विधान — त्ति प्र. वि., ए. व. — आणत्तियं यत्थ आणत्ति नत्थि, कट्ठा. अड्ड. 282; — त्तिं द्वि. वि., ए. व. — निहेसकारीति यदि तस्स निहेसं आणत्तिमेव सेसो यो कोचि पुरिसो करोति, जा. अड्ड. 5.226; — या तृ. वि., ए. व. — साणत्तिकं धोवाति आदिकाय आणत्तिया, कट्ठा. अड्ड. 161; — यं सप्त. वि., ए. व. — आणत्तियं यत्थ आणत्ति नत्थि, कट्ठा. अड्ड. 282; 2. क्रिया-पद की प. वि. द्वारा प्रकाशित आज्ञा, अनुज्ञा, आख्यात-पञ्चमी का एक अर्थ — आणत्त्यासिद्धेनुत्तकाले पञ्चमी, क. व्या. 417; आणत्तियेव पञ्चमी, परि. 253; 3. व्याकरण में उल्लिखित छ कालों में से एक — अतीतानागत-पञ्चुप्यन्नाणत्ति-परिकम्प-कालातिपत्तिवसेन पन छ, सद्. 1.20; क. स. उ. प. के रूप में — अनियमिता. - कर्म. स. [अनियमिताज्ञप्ति], अबाध्यकारी आदेश — त्ति प्र. वि., ए. व. — पस्साति अनियमिताणत्ति, स. नि. अड्ड. 1.72; यथाणत्तिवसेन-पु., तृ. वि., ए. व., आदेश के अनुसार, निर्देश या आज्ञा के अनुरूप — यथाणत्तिवसेनेव कत्तब्बं सत्थु सासनं सद्धम्मो. 354; ख. स. पू. प. के रूप में: — त्यत्थ पु., तत्पु. स. [आज्ञप्त्यर्थ], आज्ञा का अर्थ, आदेश का अर्थ — त्ये सप्त. वि., ए. व. — आणत्त्यत्थे च आसिद्धत्थे च अनुत्तकाले पञ्चमी विभक्ति होति, क. व्या. 417; — कर पु., सन्देशवाहक, आज्ञा का अनुपालन करने वाला दूत — रो पु., प्र. वि., ए. व. — इधागतोति तेसं उभिन्नामि अहं दूतो आणत्तिकरो रज्जो च अस्मि पहितो, जा. अड्ड. 2.360; — कालिक त्रि., व्या. के सन्दर्भ में प्रयुक्त, क्रिया के छ कालों में आणत्तिकाल से सम्बद्ध — पञ्चमीविभक्ति आणत्तिकालिका, सद्. 1.50; — क्खण पु., तत्पु. स. [आज्ञप्तिक्षण], आदेश देने का क्षण — णे सप्त. वि., ए. व. — आणापकस्स आणत्तिक्खणे आणत्तस्स च मारणक्खणेति, पारा. अड्ड. 2.42; — नियाम पु., निर्देश या आदेश में विद्यमान नियम — मेन तृ. वि.,

## आणत्तिक

58

आणा

ए. व. - गहेत्वान तं खादि यावदत्थन्ति थेरेन आणत्तिनियामेन उच्छुं गहेत्वा, पे. व. अहु. 225; - नियामक पु., आदेश देने में कार्यरत मुख्य निर्धारक तत्त्व या तरीका - का प्र. वि., ब. व. - किरियाविसेरोति इमे, छ आणत्तिनियामका ति. खु. पा. अहु. 20; - परिकप्पिका स्त्री., आणत्ति (लोट) एवं परिकप्पिक (विधिलिङ) नामक दो आख्यात विभक्तियां - का स्त्री., प्र. वि., ब. व. - दुवे विभक्तियो तत्थ, आणत्तिपरिकप्पिका, सद्. 1.50; - भत्त नपुं., केवल निर्देश, मात्र आदेश - तेन तू. वि., ए. व. - तत्थ इमिना पठमेन ठानेनाति इमिना आणत्तिभत्तेनेव ताव पठमेन कारणेन, म. नि. अहु. (मू.प.) 2.37; - मूलक त्रि., ब. स. [आज्ञप्तिमूलक], वह, जिसकी जड़ आदेश या आज्ञा में है, आज्ञा या आदेश से उत्पन्न - अत्तना कतमूलकेन वा आणत्तिमूलकेन वा पुब्बेकतेन वा, ..., अ. नि. अहु. 2.154; - वचन नपुं., तत्पु. स. [आज्ञप्तिवचन], आज्ञा के अर्थ को कहने वाला वचन - नानि प्र. वि., ब. व. - पञ्चमीविभक्त्यन्तानि पदानि आणत्तिवचनानि, सद्. 1.50; - वसेन क्रि. वि., आज्ञा के कारण से - तत्थ आणत्तिवसेन पुब्बपयोगो वेदितब्बो, कङ्का. अहु. 121; - वार पु., विनय के निर्देश या आदेश देने का क्रम या बारी - रेसु सप्त. वि., ब. व. - इतो परेसु चतूसु आणत्तिवारेसु पठमे ताव सो गन्त्वा पुन पच्चागच्छतीति, पारा. अहु. 1.297.

आणत्तिक त्रि., आणत्ति से व्यु. [आज्ञप्तिक], शा. अ., आज्ञा अथवा आदेश के साथ जुड़ा हुआ, आज्ञा, आदेश अथवा निर्देश के कारण घटित या होने वाला, विशेष अर्थ 1. पु., प्राणि-हत्या के छ प्रयोगों में से एक, दूसरे को आज्ञा देकर कराई गई हत्या - को प्र. वि., ए. व. - पाणातिपातस्स छपयोगा - साहत्थिको, आणत्तिको, निस्संगियो, थावरो, विज्जामयो इद्धिमयोति, पारा. अहु. 2.37; आणत्तिको नाम 'असुकस्स भण्ड अवहरा'ति अज्जं आणापेति, कङ्का. अहु. 120; 'आणत्तिको'ति अज्जं आणापेत्तस्स 'एवं विज्झित्वा वा पहरित्वा वा मारेही'ति आणापनं, पारा. अहु. 2.37; आणत्तिकोति 'असुकं नाम मारेही'ति अज्जं आणापेत्तस्स आणापनं, कङ्का. अहु. 124; 2. स्त्री., आज्ञा, निर्देश, आदेश - या तू. वि., ए. व. - सत्थु आणत्तिया अज्जतरस्स थेरस्स सत्तिके पब्बजि, अ. नि. अहु. 1.200; पाठा. आणत्तिया, स. उ. प. के रूप में, - साणत्तिकं नपुं., प्र. वि., ए. व., वाणी द्वारा दी गई आज्ञा के कारण होने वाला - ... अयमेत्थ अनुपज्जति, साधारणपज्जति,

साणत्तिकं, हरणत्थाय गमनादिकं पुब्बपयोगे दुक्कटं, कङ्का. अहु. 123; आणत्तिकं वाचाचित्तो समुद्भाति, कङ्का. अभि. टी. 196; स. पू. प. के रूप में, - पयोगकथा स्त्री., आज्ञा के कारण होने वाले प्राणातिपात आदि के प्रयोगों का कथन - अधिद्वायाति मात्तिकावसेन आणत्तिकपयोगकथा निद्धिता, पारा. अहु. 2.44.

आणपन / आणापन नपुं., [आज्ञापन], आज्ञा, विनय का विधानात्मक निर्देश या शिक्षा, आदेश - नं प्र. वि., ए. व. - अज्जं आणापेत्तस्स आणापनं, कङ्का. अहु. 124; कस्माति चे आणपनं, परिकप्पो च सच्चतो, सद्. 1.51.

आणपयति द्रष्ट. आणापेति के अन्तः.

आणा स्त्री., [आज्ञा], 1. शा. अ., आज्ञा, आदेश, निर्देश, राजकीय आदेश - णा प्र. वि., ए. व. - आणा च सासन ज्ञेयं, उदानं तु च बन्धनं, अभि. प. 354; रज्जे आणाधनमिस्सरियं, भोगा सुखा दहरिकासि, थेरीगा. 466; केन कारणेन अरहतो काये आणा नप्पवत्तति इस्सरियं वा, मि. प. 237; - णं द्वि. वि., ए. व. - सचेपि मे सभावे कथिते आणं करेय्य, जा. अहु. 4.182; पेसुज्जकारकस्स आणं कारेत्वा, जा. अहु. 1.258; - य' तू. वि., ए. व. - अथ वा भगवतो आणाय अच्छरासम्भोगसङ्गाताय ..., उदा. अहु. 140; - य' प. वि., ए. व. - यदि ते तात, अय्यको तुम्हे ब्राह्मणस्स हत्थतो आणाय बलसा मुधा गण्हाति, मि. प. 263; विशेष अर्थ, दण्ड, मृत्युदण्ड - सचेपि मे सभावे कथिते आणं करेय्य ..., जा. अहु. 4.182; ... पेसुज्जकारकस्स आणं कारेत्वा ..., जा. अहु. 1.258; 'सचे तस्मिं खणे नागच्छसि, आणं ते करिस्सामी'ति, ध. प. अहु. 1.252; स. उ. प. के रूप में, - जिनाणाय तू. वि., ए. व., बुद्ध की आज्ञा द्वारा - उपोसथादिकम्मत्थ जिनाणाय जनाधिप, म. वं. 15.181; सम्बुद्धा- बुद्ध की आज्ञा - य तू. वि., ए. व. - सम्बुद्धाणाय अन्तोहि वसिरस्सामि जुतिन्धर, म. वं. 15.182; स. पू. प. के रूप में, - करण नपुं., दण्ड को लागू करना, दण्डविधान का प्रयोग, दण्डदान - णं प्र. वि., ए. व. - आगन्तुकपुरिस्सस्स गेहस्सामिकेसु तुण्हीमासिनेसु आणाकरणं न युत्तं, दी. नि. अहु. 1.159; म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1)273; - करणमय नपुं., दण्डविधान का भय, दण्ड दिए जाने का डर - येन तू. वि., ए. व. - तव आणाकरणमयेन तयि सिनेहेन मातापितूनं न कथेसि, जा. अहु. 6.304; - वखेत्त नपुं., तीन प्रकार के बुद्धक्षेत्रों में से एक, वह क्षेत्र, जहां तक बुद्ध की आज्ञा

## आणादेसना

59

## आणापेति

अथवा विनयशिक्षा का प्रसार है तथा जहां अनेक परित्तों का अनुभाव है -- त्तं प्र. वि., ए. व. -- आणाखेत्तं कोटिसत्तसहस्सचक्कवाळपरियन्तं, पटि. म. अ. 1.295; पारा. अ. 1.119; दी. नि. अ. 3.72; कोटिसत्तसहस्सचक्कवाळं पन आणाखेत्तं नाम, म. नि. अ. (उप.प.) 3.81; -- त्तं सप्त. वि., ए. व. -- ... सब्बसत्तानं अत्थाय परित्ते कत्ते आणाखेत्ते ..., विसुद्धि. महाटी. 2.47; -- चक्क नपुं., बुद्ध के प्रभाव या महिमा का क्षेत्र, बुद्ध की वह आज्ञा या शिक्षा, जो चक्र की भांति अप्रतिहत रूप से सर्वत्र और सर्वदा चलती रहती है, चक्र के समान अप्रतिहत गति वाली बुद्ध की आज्ञा -- वकं प्र. वि., ए. व. -- तुम्हाकं धम्मचक्कं होतु, अम्हाकं आणाचक्कं न्ति पटिज्जमकासि, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2). 175; मय्हं आणाचक्कं, तुम्हाकं धम्मचक्कं होतु, पारा. अ. 1.9; खु. पा. अ. 77; आणाचक्कन्ति आणायेव अप्पटिहतवुत्तिया पवत्तनद्धेन चक्कन्ति आणाचक्कं, सारत्थ. टी. 1.51.

**आणादेसना** रत्त्री. विनय के विधिपरक एवं निषेधपरक बुद्धवचन, विनयपिटक में संगृहीत बुद्धवचन -- एत्थ हि विनयपिटकं आणारहेन भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना, पारा. अ. 1.17; ध. स. अ. 23.

**आणापक** पु., [आज्ञापक, बौ. सं. आणपक], आज्ञा देने वाला -- को प्र. वि., ए. व. -- आणापयत्ती ति आणापको, क. व्या. 643; आणापको अत्तानं सन्धाय आणापेति, इतरो अज्जं तादिसं मारेति आणापको मुच्चति, पारा. अ. 2.43; -- कं द्वि. वि., ए. व. -- आणत्तो च 'अयमेव ईदिसो' ति आणापकमेव मारेति, पारा. अ. 2.43; -- केन तृ. वि., ए. व. -- ... सो आणत्तो यो आणापकेन 'इत्थन्नामो' ति अक्खातो, पारा. अ. 2.44; -- स्स ष. वि., ए. व. -- आणापकस्स च अवहारकस्स च आपत्ति पाराजिकस्स, पारा. 62.

**आणापन** नपुं., आ + √आ के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आज्ञापन]. आज्ञा, आदेश -- नं प्र. वि., ए. व. -- आणापयते आणापनं, क. व्या. 643; कारिते ... आणापयते आणापनं, स. 3.865; 'एवं विज्झित्वा वा पहरित्वा वा मारेही' ति आणापनं, पारा. अ. 2.37; एकस्स बन्धनं आणापनवसेन विहिंसावितक्को, उदा. अ. 176.

**आणापयति** द्रष्ट. आणापेति के अन्त.

**आणापवत्तन** नपुं., तत्पु. स. [आज्ञाप्रवर्तन], दण्ड देने की आज्ञा को लागू करना -- वसोति आणापवत्तनं, स. नि.

अ. 1.90; -- नेन तृ. वि., ए. व. -- यो कोवि राजा जनपदतो धम्मिकं बलिं उद्धरापेत्वा आणापवत्तनेन दानं ददेय्य, मि. प. 258.

**आणापवत्तिज्ञान** नपुं., तत्पु. स. [आज्ञाप्रवृत्तिस्थान], आज्ञा के प्रसार का क्षेत्र, वह स्थान, जहां तक आदेश या आज्ञा का प्रसार एवं प्रभाव पाया जाए -- नं प्र. वि., ए. व. -- एवं एकेकस्स रज्जो आणापवत्तिज्ञानं, महाव. अ. 393; -- स्स ष. वि., ए. व. -- राजा अत्तनो आणापवत्तिज्ञानस्स केदारसीमं गन्त्वा सत्थारं वन्दित्वा परिदेवमानो ..., स. नि. अ. 3.9.

**आणापातिमोक्ख** नपुं., पातिमोक्ख के पाठ के दो प्रकारों में से एक, जिसमें सङ्घ की आज्ञा के रूप में पातिमोक्ख के पाठ या उपोसथ आदि सङ्घकर्मों को करने को कहा गया हो -- 'सुणानु मे, भन्ते, सङ्घो' ति आदिना नयेन वुत्तं आणापातिमोक्खं नाम, क. व्या. अभि. टी. 145; -- क्वं प्र. वि., ए. व. -- अनुदिट्ठं पातिमोक्खन्ति अन्वद्धमासं आणापातिमोक्खं अनुदिट्ठं अहोसि, पारा. अ. 1.141; सङ्घो' ति आदिना नयेन वुत्तं आणापातिमोक्खं नाम, क. व्या. अ. 100; दुविधज्झि पातिमोक्खं आणापातिमोक्खं ओवादपातिमोक्खन्ति, उदा. अ. 243.

**आणापित** त्रि., आ + √आ के प्रेर. का भू. क. कृ. [आज्ञापित], वह (दण्डविधान आदि) जिसके लिए आज्ञा दिलाई गई है, वह (व्यक्ति), जिसे कुछ करने को आज्ञा प्रदान कराई गई है -- तो पु., प्र. वि., ए. व. -- आवुसो छन्न, ब्रह्मदण्डो आणापितो' ति, चूळव. 460; आणापिता नरिन्देन, मुनिनो पियगारवा, म. वं. 29.18; -- त्त नपुं., भाव., आज्ञा दिलाया जाना -- त्ता प. वि., ए. व. -- कुटिपुरिसे येव उपादाय आणापितत्ता सब्बे सन्निपतन्तू' ति, मि. प. 148.

**आणापेति** आ + √आ के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आज्ञापयति, बौ. सं. आणापेति], आज्ञा देता है, निर्देश देता है, विधान कराता है, आदेश दिलाता है, दण्डविधान कराता है -- यस्स खो मं भगवा आणापेति, महाव. 270; आणापको अत्तानं सन्धाय आणापेति, पारा. अ. 2.43; -- मि उ. पु., ए. व. -- छन्नस्स भिक्षुनो ब्रह्मदण्डं आणापेमि, चूळव. 459; -- न्ति प्र. पु., ब. व. -- तस्स दण्डं आणापेन्ति, मि. प. 25, -- न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. -- ... सचे पन अत्तानं सन्धाय आणापेत्तोपि ओकासं नियमेति, पारा. अ. 2.43; -- न्तं द्वि. वि., ए. व. -- अकत्वा परम्पराय आणापेत्तं समणसत्तं समणसहस्सं वा

## आणाबल

60

## आणिचोळ

होतु, पारा. अद्. 1.297; - न्तेन पु., तृ. वि., ए. व. - आणापेन्तेन च "अमुकस्मिं नाम ओकासे तेलं वा बट्टि वा कपल्लिका वा अत्थि, तं गहेत्वा करोही"ति वत्तब्बो, महाव. अद्. 323; - तु अनु., प्र. पु., ए. व. - साधु देवो जीवकं वेज्जं आणापेतु, महाव. 365; - हि म. पु., ए. व. - त्वयेव छन्नस्स भिक्षुनो ब्रह्मदण्डं आणापेही"ति, चूळव. 459; - थ म. पु., व. व. - "आणापेथ, भन्ते, किं करोमी"ति, पारा. अद्. 1.9; - य्य विधि., प्र. पु., ए. व. - न अज्जं आणापेय्य, पाचि. 383; - य्यासि म. पु., ए. व. - अथ त्वं पुरिसे आणापेय्यासि, दी. नि. 2.242; - सि अद्य., प्र. पु., ए. व. - अथेकं बलसम्पन्नं योधं आणापेसि, स. नि. अद्. 3.100; - सुं ब. व. - अथ खो कोसिनारका मल्ला पुरिसे आणापेसुं, दी. नि. 2.119; - स्सामि भवि., उ. पु., ए. व. - तस्मा "न हत्थेसु च पादेसु च बन्धं कत्वा आणापेस्सामी"ति बन्धं आणापेसि, पारा. अद्. 1.235; - तब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - सचे पन कुसितो होति, पुनप्युन आणापेतब्बो, पाचि. अद्. 19; - तुं निमि. कृ. - थेरेन भिक्षुना नवं भिक्षुं आणापेतुन्ति, महाव. 146.

**आणाबल** नपुं. तत्पु. स. [आज्ञाबल], आज्ञा का बल, अधिकारी के आदेश का बल, स. प. के अन्त., - दुब्बलेति सरिरबलभोगबलआणाबलविरहिते, जा. अद्. 6.128.

**आणाबाहुल्ल** नपुं. तत्पु. स. [आज्ञाबाहुल्य], आज्ञा की बहुलता, आदेश से भरपूर होना - तो प. वि., ए. व. - भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना, पारा. अद्. 1.17; ध. स. अद्. 23.

**आणामेद** पु., तत्पु. स. [आज्ञामेद], आज्ञा का निष्प्रभावी हो जाना, आदेश का भङ्ग हो जाना - दाय च. वि., ए. व. - चक्कभेदायाति आणामेदाय, पारा. अद्. 2.174.

**आणारह** त्रि., [आज्ञार्ह], आज्ञा देने में सक्षम, आदेश देने हेतु अधिकृत, अधिकारसम्पन्न - हेन तृ. वि., ए. व. - एत्थ हि विनयपिटकं आणारहेन भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना, पारा. अद्. 1.17; ध. स. अद्. 23.

**आणावीतक्कम** पु., तत्पु. स. [आज्ञाव्यतिक्रम], आज्ञा का अतिक्रमण, विनय में संगृहीत बुद्ध के आज्ञापरक वचनों का उल्लंघन - मन्तरायिक त्रि., आज्ञा के उल्लंघन में विधन उपस्थित करने वाला - का पु., प्र. वि., ब. व. - सत्त आपत्तिक्खन्धा आणावीतक्कमन्तरायिका नाम, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2)9.

**आणावोहारपरमत्थदेसना** स्त्री., तत्पु. स., विधिपरक एवं निषेधपरक आज्ञा के रूप में विनयपिटक, व्यावहारिक एवं लोकप्रिय शैली में सुतपिटक तथा गम्भीर शैली में अभिधम्म के रूप में परमार्थधर्मा का उपदेश - एतानि हि तीणि पिटकानि यथाक्कमं आणावोहारपरमत्थदेसना, पारा. अद्. 1.17; ध. स. अद्. 23.

**आणि** स्त्री., [आणि/आणी], स्थ या वाहन के धुरे की कील, अक्षकील, खूटी - णि प्र. वि., ए. व. - एते खो सज्जहा लोके, स्थत्ताणीव यायतो, दी. नि. 3.146; - णिं द्वि. वि., ए. व. - तस्स दसारहा आनके घटिते अज्जं आणि ओदहिंसु, स. नि. 1(2)243; - या तृ. वि., ए. व. - यथा आणिया सतियेव रथो याति, दी. नि. अद्. 3.127; तच्छन्तो आणिया आणिं निहन्ति बलवा यथा, थेरगा. 744; - यो द्वि. वि., ब. व. - आणियो कोट्टेत्ता कतं, उदा. अद्. 342; - णीनं ष. वि., ब. व. - आणीनं सट्ठाटमत्तमेव अवसेसं अहोसि, स. नि. अद्. 2.202; स. उ. प. के रूप में, पटा.-स्त्री., पलंगों एवं आसनो के नीचे एवं ऊपर लगाई हुई कांटी या कील - पदरसज्चितं होति, पटाणि दिन्ना होति, पाचि. 68; विसमा.-स्त्री., असमान कांटी या कील, भिन्न माप वाली कांटी - तत्थ फलकं विय वित्तं, फलके विसमाणी विय अकुसलवित्तका, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1)404; सारदारु.-स्त्री., टोस लकड़ी पर लगाई गई कांटी या कील - या तृ. वि., ए. व. - ततो सुखुमतराय सारदारुआणिया, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1)403; सुखुमा.-स्त्री., कर्म. स., सूक्ष्म कांटी, बारीक कांटी - या तृ. वि., ए. व. - सुखुमाणिया ओळारिकाणिनीहरणं विय असुभभावनादीहि, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1)404.

**आणिकोटि** स्त्री., तत्पु. स. [आणिकोटि], कांटी या कील का शिरा अथवा किनारा - या तृ. वि., ए. व. - ततो रथे आणिकोटिया आणिकोटिं पहरन्ते, दी. नि. अद्. 2.176.

**आणिगण्डिकाहत** त्रि., तत्पु. स., कांटियों या खूंटियों तथा गांठों से कुरूप कर दिया गया, जोड़ों एवं भरावों द्वारा भद्दा, कुरूप या शोभारहित बना दिया गया - तो पु., प्र. वि., ए. व. - सो पच्छा भिन्नो वा छिद्दो वा आणिगण्डिकाहतो वा अप्यग्घो होति, पारा. अद्. 1.246; दी. नि. अद्. 1.162; आणिगण्डिकाहतोति आणिना, गण्डिया च हतसोभो, विसुद्धि. महाटी. 1.120.

**आणिचोळ** त्रि., ब. स., वह, जिसके वस्त्र सदा खुंटी पर टंगे रहते हैं या तैयार रहते हैं - ळा स्त्री., प्र. वि., ए.

## आणिचोळक

61

आतत्त

व. — ध्रुवचोळाति निचपक्खित्ताणिचोळा, पारा. अट्ट. 2.122.

आणिचोळक नपुं., जांधिया, जांध पर बांधा जाने वाला कम माप वाला वस्त्र — कं द्वि. वि., ए. व. — अनुजानामि, भिक्षवे, आणिचोळकन्ति, चोळकं निपतति, चूळव. 434; सदा आणिचोळकं सेवसीति वृत्तं होति, पारा. अट्ट. 2.122.

आणिद्वार नपुं., कर्म. स. [आणिद्वार], कांटी जैसा छोटा द्वार, निचला द्वार, संकीर्ण द्वार, परकोटे से घिरे हुए नगर की छोटी खिड़की जैसा द्वार — रं प्र. वि., ए. व. — आणिद्वारं नाम पाकारबद्धस्स नगरस्स खुदकद्वारं, थेरगा. अट्ट. 2.57; — रे सप्त. वि., ए. व. — ओलग्गेस्सामि ते चित्त, आणिद्वारेव हत्थिनं, थेरगा. 355.

आणिमंस नपुं., तत्पु. स. [आणिमांस], स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय का मांस — सिखरणीति बहिनिकखन्तआणिमंस, पारा. अट्ट. 2.122.

आणिमण्डव्य पु., एक तपस्वी — व्यो प्र. वि., ए. व. — ततो पड्डाय मण्डव्यो आणिमण्डव्यो नाम जातो, जा. अट्ट. 4.28; भरिया विसाखा, पुत्तो राहुलो, आणिमण्डव्यो सारिपुत्तो, कण्हदीपायनो पन अहमेव अहोसिन्ति, जा. अट्ट. 4.33.

आणिरक्ख पु., रथ या वाहन की धुरी की कांटियों या कील की रक्षा करने वाला, आणी का रक्षक — क्खा प्र. वि., ब. व. — एको सारथि योधको, आणिरक्खा दुवे जना, विन. वि. 1571.

आणिरक्खक पु., उपरिवत् — का प्र. वि., ब. व. — रथरक्खा नाम रथस्स आणिरक्खका, दी. नि. टी. 1.194.

आणिसंघाट पु., तत्पु. स. [आणिसङ्घात], कांटियों या कीलों का ढांचा — टो प्र. वि., ए. व. — आणिसङ्घाटोव अवसिरिस्स, स. नि. 1(2).243; आणिसङ्घाटोव अवसिरिस्सीति सुवण्णादिमयानं आणीनं सङ्घाटमत्तमेव अवसेसं अहोसि, स. नि. अट्ट. 2.202.

आणिसुत्त स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(2). 243.

आण्य नपुं., [आर्ण्य], ऋणग्रस्तता, कर्ज में डूबे रहने की दशा — इसिस्स भावो आरिस्सं, इणस्स भावो आण्यं, उस्सभस्स भावो आस्सं, क. व्या. 404; इसिनो भावो आरिस्सं, इणस्स भावो आण्यं, सद. 3.807.

आतङ्क पु., [आतङ्ग], मानसिक विपत्ति, व्यथा, रोग, पीड़ा, वेदना, त्रास, डर, आशंका — ङ्को प्र. वि., ए. व. — आतङ्को

आमयो व्याधि, गदो रोगो रुजापि च, अभि. प. 323; आतंको रोगतापेसु, मातंगो सपचे गजे, अभि. प. 1045; आतङ्कोति किच्छजीवितकरो रोगो, उदा. अट्ट. 99; — ता स्त्री., भाव. [आतङ्गता], आतंक का भाव, डरावनापन — अप्पातङ्कतञ्च लहुद्वानञ्च बलञ्च फासुविहारञ्च, म. नि. 1.176; म. नि. 2.109; स. उ. प. के रूप में, निरा. त्रि., ब. स. [निरातङ्ग], आतङ्क से मुक्त, भयमुक्त, व्यथामुक्त — ज्ञानं प. वि., ब. व. — महाराज, निरातङ्गानं लोहितकानं अन्तरे करुम्मकं नाम सालिजाति, मि. प. 235; रोगा. पु., रोग के कारण उत्पन्न कष्ट या व्यथा — को प्र. वि., ए. व. — तमेनं अञ्जतसे गाळ्हो रोगातङ्को फुसति, अ. नि. 1(2).202; स. पू. प. के रूप में, — फस्स पु., तत्पु. स. [आतङ्गस्पर्श], रोग या व्याधि का प्रभाव — स्सेन तू. वि., ए. व. — आतङ्गस्सेन खुदाय फुट्ठो, सीतं अतुण्हं अधिवासयेय्य, सु. नि. 972; आतङ्गस्सेनाति रोगफस्सेन, सु. नि. अट्ट. 2.265.

आतङ्गति आ + वृत्तङ्क का वर्त., प्र. पु., ए. व., विपत्ति या दुर्गति में रहता है — तंकति आतंकति आतंको, आतंको ति किच्छजीवितकरो रोगो, सद. 2.322.

आतङ्गी त्रि., [आतङ्गिन्], रुग्ण, बीमार, व्याधि से पीड़ित — ङ्गिन् पु., प. वि., ब. व. — आतङ्गिन् यथा कुस्लो भिसक्को, जा. अट्ट. 5.79; आतङ्गिन्ति गिलानानं, जा. अट्ट. 5.79.

आतत नपुं., आ + वृत्तन का भू. क. कृ. [आतत], फैलाया हुआ, विशेष अर्थ, ऐसा ढोल, जिसका एक पार्श्व ही चमड़े से ढका हुआ हो — आततं येव विततं, आततविततं घनं अभि. प. 139; आततं नाम चम्मावनद्धेसु भेरियादिसु तलेक्कयुत्तं, अभि. प. 140; तथ आततं नाम चम्पपरियोनद्धेसु भेरिआदीसु एकतलतूरियं, अ. नि. अट्ट. 3.232.

आततवितत नपुं., ऐसा वाद्य, जो पूरी तरह से तांत से बंधा हुआ हो, पणव-नामक वाद्ययन्त्र — आततविततं सव्वविनद्धं पणवादिक्, अभि. प. 141; आततविततं नाम तन्तिबद्धपणवादि, म. वं. टी. 479(ना.).

आततायी त्रि., [आततायिन्], वह जिसका धनुष (दूसरों को कष्ट देने हेतु) तना हुआ हो, विशेष अर्थ, हत्यारा, अपराधी, क्रूर, डकैत — विहत्यो व्याकुलो चाथ, आततायी वधुद्युतो, अभि. प. 736.

आतत्त त्रि., आ + वृत्तप का भू. क. कृ. [आतत्त], पूरी तरह से तपाया हुआ, अत्यधिक उष्ण, सूखा, आदीप्त — छातो



## आतन्वती

62

आतप्प

आतन्वरूपोरि, कुतोसि कथं गच्छति, ... आतन्वरूपोति सुखसरीरो, जा. अट्ट. 5.63-64.

**आतन्वती** आ + रन्त का वर्त. कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व., फैलाती हुई, उत्पन्न करती हुई - राजहंसीविलासं आतन्वती, हत्थ. वं. 31.30

**आतप** पु., आ + रन्त से व्यु. [आतप], शा. अ., धूप, सूर्य के कारण उत्पन्न सन्ताप या गर्मी, तेज प्रकाश, ला. अ., उत्साह, पराक्रम, विरोधियों को तपा देने की शक्ति - पो प्र. वि., ए. व. - अथोभासो पकासो चालोकोज्जोतातपा समा, अभि. प. 37; यं छाया जहति तं आतपो फरति, यं आतपो जहति तं छाया फरति, म. नि. 3.22; थलं छाया आतपो आलोको अंधकारो, ध. स. 617(मा.); - पं द्वि. वि., ए. व. - ... आतपं तप्पन्तो निदायति, जा. अट्ट. 2.298; - पेन तृ. वि., ए. व. - आतपेन सुखकदमो फलति, पाचि. अट्ट. 19; - पे सप्त. वि., ए. व. - निबुत्तिं नाधिगच्छामि, अग्गिदब्बाव आतपेति, पे. व. 38; स. प. में, - कठिनातपतापित त्रि., तत्पु. स., अत्यधिक तेज धूप के द्वारा तपाया या गर्म किया हुआ - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - अथोकासगतं सत्तं, कठिनातपतापितं, अप. 1.379; पच्छा. - त्रि., ब. स., पीछे के भाग में विद्यमान धूप वाला (स्थान), पिछवाड़े की ओर की धूप वाला (स्थान) - पे नपुं., सप्त. वि., ए. व. - पञ्चमवग्गस्स पठमे पच्छातपेति पासादच्छायय पुरत्थिमदिंसं पटिच्छन्ता पासादस्स पच्छिमदिंसाभागे आतपो होति, तस्मिं ठाने ..., स. नि. अट्ट. 3.271; बाला. - पु., प्रातःकाल की कम प्रचण्ड धूप - पं द्वि. वि., ए. व. - तं एकदिवसं पातोव तोरणगे निसीदित्वा बालातपं तपमानं एको सकुणो नखपञ्जरेन अग्गहेसि, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).239; बालसूरिया. - पु., प्रातःकालीन सूर्य की धूप - पं द्वि. वि., ए. व. - अञ्जतरस्मिं पब्बतपादे सीहो बालसूरियातपं तप्पमानो निपन्नो होति, सु. नि. अट्ट. 1.100; मन्दा. - पु., कर्म. स. [मन्दातप], मन्द धूप, अल्प मात्रा में उष्ण धूप - पे सप्त. वि., ए. व. - उण्होदके महापेत्वा मन्दातपे विसज्जापेसि, ध. प. अट्ट. 1.182; वाता. - पु., द्र. स., हवा और धूप - पे द्वि. वि., ब. व. - वातातपे उंससरीसपे च, सु. नि. 52; - सुरिया. पु., सूर्य की गर्मी, सूर्य की धूप - पो प्र. वि., ए. व. - आतपोति सूरियातपो, स. नि. अट्ट. 2.258.

**आतपड्डपन** नपुं., तत्पु. स. [आतपस्थपन], (उत्पीडित करने हेतु) धूप में रखा देना, धूप में खड़ा करा देना, स.

प. के अन्तः, -- परिसमज्झगणमज्झादीसु आतपटपनपसुओकिरणादीहि विप्पकारं पापेन्तो पच्छतो पच्छतो अनुबन्धान्ति, अ. नि. अट्ट. 3.117; खुथिपासा हि आतपावड्डानादिना च आतापनं, विसुद्धि. महाटी. 2.186.

**आतपता** स्त्री., आतप का भाव., दाहकता, जलनशीलता, गर्मी - तं द्वि. वि., ए. व. - छाया आतपतं यन्ति रित्ततज्ज महासरा, सद्धम्मो. 123.

**आतपतापन** नपुं., तत्पु. स. [आतपतापन], धूप की गर्मी - ने सप्त. वि., ए. व. - घरेवाहं तिले जाते, दिस्वानातपतापने अप. 2.252.

**आतपत्त** नपुं., [आतपत्र], धूप से रक्षा करने वाला छाता, छत्र - आतपत्तं तथा छत्तं, रज्जं तु हेममासनं, अभि. प. 357; तत्र छत्तन्ति आतपत्तं, सद्ध. 2.542; - क नपुं., उपरिवत् - के सप्त. वि., ए. व. - मिड्डन्ते परिभण्डन्ते, अट्ठे वा आतपत्तके, खु. सि. 5.7.

**आतपवारण** नपुं., तत्पु. स. [आतपवारण], शा. अ., धूप का निवारण, धूप से बचाव, ला. अ., छाता, स. प. के अन्तः, - आधारयुं आतपनवारणाधिकं अदिस्समाना व नमहि देवता, दा. वं. 1.28; - हि सप्त. वि., ए. व. - सो धातुं अत्तसिरसा समुब्बहन्तो ठत्वा समुस्सितसितातपवारणमहि, दा. वं. 5.35.

**आतपसुक्ख** त्रि., तत्पु. स. [आतपशुष्क], धूप में सूखा हुआ, धूप द्वारा सुखाया गया - क्खं नपुं., प्र. वि., ए. व. - वनपुष्कं आतपसुक्ख, अङ्गारपक्कं चारकबद्धो इच्चेवमादि, सद्ध. 3.757-58.

**आतपाभाव** पु., तत्पु. स. [आतपाभाव], धूप का अभाव, छाया - छाया तु आतपाभावे पटिबिम्बे पभाय च, अभि. प. 953.

**आतप्प** नपुं., आ + रन्त से व्यु. [आतप्य], कुशल कर्मों को करने हेतु वीर्य या पराक्रम, कठोर प्रयास, दृढ़ शक्ति, सम्यक् प्रधान - उस्साहातप्पपग्गोहा वायामो च परक्कमो, अभि. प. 156; - प्यं प्र. वि., ए. व. - तुम्हेहि किच्चमातप्यं, ध. प. 276; जससरणं, भिक्खवे अजानंता ... पे. ... आतप्यं करणीयं ... पे. ... स. नि. 1(2).117; आतपन्ति कुसलकम्मवीरियं, जा. अट्ट. 6.36; - प्यं द्वि. वि., ए. व. - ... एकच्चो समणो वा ब्राह्मणो वा आतप्पमन्वाय ... दी. नि. 1.11; - प्पाय च. वि., ए. व. - आतप्पायाति वीरियकरणत्थाय, दी. नि. अट्ट. 3.194; तुल. आताप.

## आतप्यकरणीयसुत्त

63

आतापेति

आतप्यकरणीयसुत्त नपुं. अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(1).178.

आताप पुं. आ + तप से व्यु. [आताप], शा. अ., भीषण गर्मी, तीव्र ताप या उष्णता, ला. अ., प्रबल वीर्य, अत्यधिक उत्साह, दृढ़ पराक्रम, प्रबल प्रयास, सम्यक् व्यायाम - पो प्र. वि., ए. व. - आतापो विरिये भागे, सीमाय ओधि च, अभि. प. 1135; आतापो बुच्चति किलेससन्तापनद्वेन वीरियं, उदा. अहु. 36; आतापोति तीसु भवेसु किलेसे आतापेतीति आतापो, वीरियस्सेतं नाम, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).254; यो चेतसिको वीरियारम्भो ... सम्मावायामो अयं बुच्चति आतापो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).255; कायरस्स च वित्तस्स च आतापो परितापो ढानचङ्कमनिसज्जासयनाहारपरिग्गहो, मि. प. 287; - पेन तृ. वि., ए. व. - इमिना आतापेन उपेतो समुपेतो ..., महानि. 278; स. उ. प. के रूप में, - वीरिया. पु., वीर्य का पराक्रम - पेन तृ. वि., ए. व. - आतापीति वीरियातापेन समन्नागतो, स. नि. अहु. 1.180.

आतापन नपुं. आ + तप के प्रेर. से व्यु. क्रि. ना. [आतापन], शा. अ., पूरी तरह से जला देना, ला. अ., उत्पीड़न, भस्मीकरण, नाश, विध्वंस - नं प्र. वि., ए. व. - खुप्पिपासा हि आतपावड्डानादिना च आतापनं, विसुद्धि. महाटी. 2.186; - नेन तृ. वि., ए. व. - इदानी तुम्हेहि किलेसानं आतापनेन आतप्यन्ति, ध. प. अहु. 2.232; - स्स ष. वि., ए. व. - अनातापी अनोतापीति किलेसानं आतापनस्स वीरियस्स अभावेन अनातापी, इतिवु. अहु. 305; - द्व पु., तत्पु. स. [आतापनार्थ], वीर्य का अर्थ, पूरी तरह से जला देने का तात्पर्य - द्वेन तृ. वि., ए. व. - सत्तमे अनातापीति किलेसानं आतापनद्वेन आतापो, इतिवु. अहु. 91; - परितापनद्व पु., तत्पु. स. [अतापनपरितापनार्थ], आतापन एवं परितापन का अर्थ या अभिप्राय, भूख, प्यास, धूप में खड़ा होने तथा पञ्चाग्नि में झुलसाने का अभिप्राय - द्वेन तृ. वि., ए. व. - वीरियञ्चि किलेसानं आतापनपरितापनद्वेन आतापोति बुच्चति, विसुद्धि. 1.4; - परितापनानुयोग पु., तत्पु. स. [आतापनपरितापनानुयोग], आतापन एवं परितापन में लगाव, जलाने एवं झुलसाने अथवा शरीर को पीड़ा देने वाली क्रिया में लगाव - गं द्वि. वि., ए. व. - इति एवरुपं अनेकविहितं कायरस्स आतापनपरितापनानुयोगमनुयुत्तो विहरति, अ. नि. 1(1).334.

आतापिय त्रि., उत्साही, प्रबल वीर्य से सम्पन्न, सम्यक् व्यायाम अथवा चार सम्यक् प्रधानों का अभ्यास करने वाला - यो पु., प्र. वि., ए. व. - आतापियो संवरती सतीमा, उदा. 110; आतापियोति वीरियवा, उदा. अहु. 192; तस्स सहायभूतानं सम्मावायामसतीनं अस्थिताय आतापियो सतिमा, उदा. अहु. 192; तं सब्बजानिं कुसलो विदित्वा, आतापियो ब्रह्मचरियं चरेय्याति, उदा. 123.

आतापी त्रि., आताप से व्यु. [आतापिन], उपरिवत् - पी पु., प्र. वि., ए. व. - आतापीति कायिकचेतसिकसङ्घातेन वीरियातापेन आतापी, म. नि. अहु. (म.प.) 2.76; दी. नि. अहु. 1.270; आतापीति वीरियवा, वीरियञ्चि किलेसानं आतापनपरितापनद्वेन आतापोति बुच्चति तदस्स अत्थीति आतापी, विसुद्धि. 1.4; एको वूपकडो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो, दी. नि. 1.159; आतापीति कायिकचेतसिकसङ्घातेन वीरियातापेन आतापी, दी. नि. अहु. 1.270; म. नि. अहु. (म.प.) 2.76; - पिना तृ. वि., ए. व. - इदं भिक्खवे, पठमं अनागतभयं सम्परस्समानेन ... भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं ..., अ. नि. 2(1).95; - पिनो<sup>1</sup> ष. वि., ए. व. - आतापिनो ज्ञायतो ब्राह्मणस्स, महाव. 2; आतापिनोति सम्पप्पधानवीरियवतो, महाव. अहु. 227; - पिनो<sup>2</sup> पु., प्र. वि., ब. व. - तग्ध मयं भन्ते, अप्पमत्ता आतापिनो पहितत्ता विहरामाति, महाव. 473; - पीनं पु., ष. वि., ब. व. - ... एवं अप्पमत्तानं आतापीनं पहितत्तानं विहरन्तानं ..., म. नि. 1.271.

आतापेति आ + तप के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आतापयति], शा. अ., बुरी तरह से तपाता या झुलसा देता है, ला. अ., उत्पीड़ित कराता है, दूसरों को कष्ट पहुंचवाता है, व्यथित कराता है - सो अत्तानं सुखकामं दुक्खपटिक्कूलं आतापेति परितापेति, म. नि. 2.4; उसुकारो तेजनं द्वीसु अलातेसु आतापेति परितापेति उज्जुं करोति कम्मनियं, म. नि. 3.11; - न्ति ब. व. - ... विसममोज्जेनेन कायं आतापेन्तीति, मि. प. 288; - य्य विधि, प्र. पु., ए. व. - अत्थाय उसुकारो तेजनं द्वीसु अलातेसु आतापेय्य परितापेय्य उज्जुं करेय्य ..., म. नि. 3.11; - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - सच्चिकरोतीति कथं अत्तानं आतापेन्तो परितापेन्तो सच्चिकरोति ?, स. नि. अहु. 3. 146; - त्वा पू. क. कृ. - ते कायज्ज वित्तज्ज आतापेत्वा ढानचङ्कमनिसज्जासयनाहारं परिग्गहेत्वा ..., मि. प. 288.

## आतिथेय्य

64

## आतुर

आतिथेय्य नपुं, अतिथि से व्यु. [आतिथेय], अतिथियों के लिए देय उपहार, अतिथि के स्वागत में भेंट किया जाने वाला उपहार - **य्यं** प्र. वि., ए. व. - *अयं धम्मपरियायो भणितो इदं ते होतु आतिथेय्यन्ति*, अ. नि. 2(2).207; *इदं ते होतु आतिथेय्यन्ति इदमेव धम्मभणनं तव अतिथिपण्णाकारो होतु*, अ. नि. अड्ड. 3.172; - **य्यानि** ब. व. - *सत्तमे आतिथेय्यानीति आगन्तुकदानानि*, अ. नि. अड्ड. 2.62; स. उ. प. के रूप में, **आमिसा**. अतिथि के लिए धन, संपत्ति अथवा वस्तुओं का उपहार, **धम्मा** - अतिथि के लिए धर्म का उपहार - **य्यं** प्र. वि., ए. व. - *ट्रेमानि, भिक्खुवं, आतिथेय्यानि ... आमिसातिथेय्यञ्च धम्मातिथेय्यञ्च*, अ. नि. 1(1).113.

**आतिसार** पु., अतिसार से व्यु. [आतिसार], अतिसार या पेचिश के रोग का विषय, पेचिश रोग का शिकार - **रो** प्र. वि., ए. व. - *वसातीनं विसयो (देसो) वासातो, एवं कुन्तो, साकुन्तो, आतिसारो*, क. व्या. 354.

**आतु** पु., संभवतः मातु के मि. सा. पर निर्मित, पिता - *भिक्खुस्स आतुमारी, भिक्खुस्स मातुमारी, वरं ते, म. नि. 2.121; आतुमारी मातुमारीति एत्थ आतूति पिता, मातूति माता, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.118.*

**आतुम/आतुमन्तु** पु., [आत्मन्], आत्मा, स्वयं, अपने आप, आत्मभाव - **मा** प्र. वि., ए. व. - *राजा ब्रह्मा सखा अत्ता आतुमा सा पुमा रहा, सद्. 1.153; आतुमा वुच्चति अत्ता, महानि. 49; अप्पातुमोति आतुमा वुच्चति अत्ताभावो*, अ. नि. अड्ड. 2.218; - **मानं** द्वि. वि., ए. व. - *अनरियधम्मं कुसला तमाहु, यो आतुमानं सयमेव पाव, सु. नि. 788; यो आतुमानं सयमेव पावाति यो एवं अत्तानं सयमेव वदति, सु. नि. अड्ड. 2.216; - मे सप्त. वि., ए. व. - तत्थ आतुमेति अत्तनि, पे. व. अड्ड. 144.*

**आतुम** पु., थेरगा. की एक गीति के रचयिता एक स्थविर का नाम, ... आतुमो थेरो ... थेरगा. 72; *अथ इमस्मिं बुद्धप्पादे सावत्थियं सेट्ठिपुत्तो हुत्वा निब्बत्ति, आतुमोतिस्स नाम अहोसि, थेरगा. अड्ड. 1.172.*

**आतुमा** स्त्री., [बौ. सं. आदुमा], कुसीनारा एवं सावत्थी के मध्यवर्ती क्षेत्र में अवस्थित एक प्राचीन नगर - **यं** सप्त. वि., ए. व. - *तेन खो पन समयेन अज्जतरो बुद्धपब्बजितो आतुमायं पटिवसति नहापितपुब्बो*, महाव. 325; - **य** प. वि., ए. व. - *अथ खो, पुक्कुस, आतुमाय महाजनकायो निक्खमित्वा, दी. नि. 2.100; - वत्थु* नपुं, आतुमा नगर

का क्षेत्र - **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. - *अयं किरेंसो खन्धके आगते आतुमावत्थुस्मिं नहापितपुब्बको बुद्धपब्बजितो ... दी. नि. अड्ड. 2.171.*

**आतुर** त्रि., [आतुर], रुग्ण, बीमार, पीड़ित, व्यथित, प्रभावित, दयनीय स्थिति में पहुंचा हुआ, चोटिल, दुर्बल - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बधिरो सुतिहीनोथ गिलानो व्याधितातुरा, अभि. प. 322; आतुरो हायं, गहपति, कायो अण्डभूतो परियोनद्धो, स. नि. 2(1).2; आतुरो हायन्ति आतुरो हि अयं, ... निच्चपगघरणद्धेन आतुरोयेव, स. नि. अड्ड. 2.220; आतुरो त्यानुपुच्छामीति बाळहगिलानो हुत्वा अहं तं अनुपुच्छामि, जा. अड्ड. 6.93; - रं द्वि. वि., ए. व. - आतुरन्ति जरातुरं दी. नि. अड्ड. 2.41; आतुरं बहुसङ्गयं, यस्स नत्थि धुवं विति, थेरगा. 769; - रा प्र. वि., ब. व. - आतुराति एकन्तमरणधम्मताय आतुरा आसन्नमरणा ..., जा. अड्ड. 3.174; - रेन तू वि., ए. व. - किं वने राजपुत्तेन, आतुरेन करिस्ससि, जा. अड्ड. 5.85; - स्स ष. वि., ए. व. - आतुरस्साति जरातुरो रोगातुरो किलेसातुरोति तयो आतुरा, स. नि. अड्ड. 1.254; - रे सप्त. वि., ए. व. - अधने आतुरे जिण्णे, चरिया. अड्ड. 75; - रेसु सप्त. वि., ब. व. - आतुरेसु मनुस्सेसु, विहराम अनातुरा, ध. प. 198; स. उ. प. के रूप में, **अना**. - त्रि., [अनातुर], रोगमुक्त, स्वस्थ, अपीड़ित - रे सप्त. वि., ए. व. - अनातुरे पन उभयम्पेतं सक्कोति, जा. अड्ड. 1.350; **किलेसा** - त्रि., [क्लेशातुर], क्लेशों द्वारा पीड़ित - स्स ष. वि., ए. व. - आतुरस्सानुसिक्खतोति कामपत्थनावसेन किलेसातुरस्स, तस्स च फलेन दुक्खातुरस्स च, उदा. अड्ड. 286; **किलेसदुक्खा**. - त्रि., तत्पु. स. [क्लेशदुःखातुर], क्लेशजनित दुःख से ग्रस्त - रानं पु., ष. वि., ब. व. - अत्तपरितापने च अत्तीनेहि किलेसदुक्खातुरानं अनुसिक्खन्तोहि, सयञ्च किलेसदुक्खातुरेहि, उदा. अड्ड. 287; **खुप्पिपासा**. - त्रि., तत्पु. स. [क्षुत्पिपासातुर], भूख एवं प्यास से पीड़ित - रा पु., प्र. वि., ब. व. - ते खुप्पिपासातुरा विरळ्ळयायं निसीदिसु, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).220; **पेता हि नेकवस्सानि खुप्पिपासातुरा पि च**, सद्धम्मो. 507; **जरा** - त्रि., तत्पु. स. [जरातुर], बुढ़ापे से पीड़ित - रं पु., द्वि. वि., ए. व. - आतुरन्ति जरातुरं दी. नि. अड्ड. 2.41; **दुक्खा**. - त्रि., तत्पु. स. [दुःखातुर], दुःख से पीड़ित - स्स पु., ष. वि., ए. व. - तस्स च फलेन दुक्खातुरस्स*

## आतुरकाय

65

## आतुरीमृत

च उभयथापि पटिकाराभिलासाय किलेसफले अनुसिक्खतो, उदा. अ. 286; जिण्णा. — त्रि., बूढ़ा एवं रोगी, स. प. में. — अपरो जिण्णातुरमतपब्बजितसङ्घातनिमित्ते दिस्वा, उदा. अ. 208; वेदना. — त्रि., तत्पु. स. [वेदनातुर], पीड़ा से ग्रस्त — रो पु., प्र. वि., ए. व. — सो वेदनातुरो आकासे ठातुं असक्कोन्तो भूमियं पति, उदा. अ. 199; सोका. — त्रि., तत्पु. स. [शोकातुर], शोक से ग्रस्त — रं पु., द्वि. वि., ए. व. — सोकातुरं तत्थ तत्थ अस्सासेन्ता महाजनं, म. वं. 3.13.

आतुरकाय त्रि., ब. स. [आतुरकाय], रोगग्रस्त शरीर वाला, वह, जिसका शरीर अस्वरथ या रुग्ण है — यो पु., प्र. वि., ए. व. — अहमस्मि भन्ते, जिण्णो बुद्धो महल्लको अद्धगतो वयोअनुप्पत्तो आतुरकायो अभिक्खणातङ्को, स. नि. 2(1)2; आतुरकायोति गितानकायो, स. नि. अ. 2.220; — येहि पु., तृ. वि., ब. व. — नानप्पकाररोगदुक्खाभिपीळितताआतुरकायेहि महाजनेहि, उदा. अ. 43; — या पु., प्र. वि., ब. व. — खीणासवा आतुरकाया अनातुरचित्ता, स. नि. अ. 2.225.

आतुरचित्त त्रि., [आतुरचित्त], राग, द्वेष एवं मोह से ग्रस्त चित्त वाला — त्तो पु., प्र. वि., ए. व. — आतुरकायो चेव होति आतुरचित्तो च, स. नि. 2(1)3; एवं खो, गहपति, आतुरकायो चेव होति आतुरचित्तो चाति कायो नाम बुद्धानम्पि आतुरोयेव, स. नि. अ. 2.225; एवं आतुरचित्तो खो पनेस मीयमानो निरयेयेव निब्बत्तिस्सति, जा. अ. 1.208; — तेहि पु., तृ. वि., ब. व. — नानाविधकिलेसव्याधिपीळितता आतुरचित्तेहि देवमनुस्सेहि ..., उदा. अ. 43; स. उ. प. के रूप में, अना. — त्रि., ब. स. [अनातुरचित्त], राग, द्वेष एवं मोह से मुक्त चित्त वाला (अर्हत) — ता पु., प्र. वि., ब. व. — खीणासवा आतुरकाया अनातुरचित्ता, सत्तं सखा नेव आतुरचित्ता, न अनातुरचित्ताति वेदितब्बा, स. नि. अ. 2.225; — ता स्त्री., भाव., चित्त की राग, द्वेष एवं मोह से युक्त अवस्था — तं द्वि. वि., ए. व. — भजमाना पन अनातुरचित्ततयेव भजन्तीति, स. नि. अ. 2.225.

आतुरता स्त्री., आतुर का भाव. [आतुरता], रुग्णता, बीमारी, विपत्ति, व्याकुलता, परेशानी — अद्धहि खलु, सम्म पुण्णमुख, ठानेहि इत्थी सामिकं अवजानाति — दलिदता आतुरता, जिण्णता, सुरासोण्डता मुद्धता पमत्तता, सब्बकिच्चेसु अनुवत्तनता, सब्बधनअनुप्यदाने, जा. अ. 5.430; — य प. वि., ए. व. — ताय आतुरताय इच्छित्तिच्छित्तकखणो

आगन्तुं, स. नि. अ. 2.220; — ता प्र. वि., ब. व. — ... तिस्सो आतुरता होन्ति, तदे., स. उ. प. रूप में, जरा./ व्याधा./ मरणा. — स्त्री., तत्पु. स., वृद्धावस्था की विपत्ति, रोगों की व्यथा, मृत्यु का संकट — विसेसेन पनस्स जरातुरता व्याधातुरता मरणातुरताति तिस्सो आतुरता होन्ति, स. नि. अ. 2.220; किलेसा. रोगा. — स्त्री., तत्पु. स., क्लेशों द्वारा उत्पन्न किया गया कष्ट, रोगों से उत्पन्न कष्ट — य तृ. वि., ए. व. — आतुरन्ति जरातुरताय रोगातुरताय किलेसातुरताय च निच्चातुरं, म. नि. अ. (म.प.) 2.213; सोका. — स्त्री., शोक के कारण उत्पन्न व्याकुलता — य तृ. वि., ए. व. — रज्जो वचनं सुत्वा वियोगं असहमाना सोकातुरताय ..., पे. व. अ. 139; — त्त नपुं., भाव. [आतुरत्त्व], उपरिवत् — त्तं प्र. वि., ए. व. — सत्तिसंभज्जनरसं, आतुरत्तन्ति गच्छति, ना. रू. प. 116. आतुरन्न नपुं., तत्पु. स. [आतुरान्न], शा. अ., विपत्तिग्रस्त व्यक्ति के लिए भोजन, ला. अ., मृत्यु के समय का भोजन, मरणकाल का भोजन — न्नानि द्वि. वि., ब. व. — ... अयज्जि आतुरन्नानि भुज्जति, आतुरन्नानीति मरणभोजनानि, जा. अ. 1.195; मा सालूकस्स पिहयि, आतुरन्नानि भुज्जति, जा. अ. 2.345.

आतुररूप त्रि., ब. स. [आतुररूप], वह, जिसका शरीर दुःखदायक पीड़ा से पीड़ित है, पीड़ाग्रस्त शरीर वाला — पो पु., प्र. वि., ए. व. — आबाधिकोहं दुक्खितो गितानो, आतुररूपोहिं सके निवेसने, वि. व. 1220; ध. प. अ. 1.21; आतुररूपोति दुक्खवेदनाभितुन्नकायो, वि. व. अ. 279.

आतुरस्सर पु., कर्म. स. [आतुरस्सर], पीड़ा से भरा स्वर, पीड़ा से जनित स्वर, कराह — रं द्वि. वि., ए. व. — सा अट्टिकसङ्घालिका अट्टस्सर आतुरस्सरं करोतीति अत्थो, पारा. अ. 2.88; स. नि. अ. 2.192.

आतुरित त्रि., [आतुरित], रोग से पीड़ित, वृद्धावस्था से पीड़ित, क्लेशों या राग, द्वेष आदि चित्तमलों से ग्रस्त — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — उच्चारपस्सावं करोन्ति, गेलज्जेन आतुरितानि सयन्ति, मतानि पतन्ति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2)34.

आतुरितकाल पु., तत्पु. स. [आतुरितकाल], पीड़ित या व्यथित होने का काल — ते सप्त. वि., ए. व. — एकं बुद्धन्तरम्पि खुप्पिपासाहि आतुरितकालेपि, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1)303.

## आतुरीभूत

66

आदर

आतुरीभूत त्रि., रोगों आदि से पीड़ित, विपत्तिग्रस्त, क्लेशों से ग्रस्त - ता पु., प्र. वि., ब. व. - आतुरीभूता पुग्गला, विसुद्धि. महाटी. 2.171.

आतुरीयति आतुर के ना. धा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. - रुग्ण होता है, पीड़ित होता है, ग्रस्त हो जाता है, प्रभावित होता है, बाधायुक्त हो जाता है - सरोपि उपहञ्जति, कण्ठोपि आतुरीयति, म. नि. 3.283; आतुरीयतीति आतुरो होति गैलञ्ज्यत्तो साबाधो, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.203; निवातसेनासने वसन्तो अतिविय पितरोगादीहि आतुरीयति, खु. पा. अहु. 117.

आतोच्च त्रि./नपुं., [आतोद्य], शा. अ., चारों ओर से ताड़ित, अच्छी तरह से पीटा गया, ला. अ., एक विशेष प्रकार का वाद्य - ज्जं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आतोच्चं तु च वादितं वादितं वज्जमुच्चते, अभि. प. 142.

आथब्बण त्रि., [आथर्वण], अथर्ववेद के साथ जुड़ा हुआ, अथर्ववेद में विहित कर्मकाण्डों को करने वाला - णं पु., द्वि. वि., ए. व. - आथब्बणं सुपिणं लक्खणं, नो विदहे अथोपि नक्खत्तं, सु. नि. 933; आथब्बणन्ति आथब्बणिकमन्तपयोगं, सु. नि. अहु. 2.256; - का पु. प्र. वि., ब. व. - आथब्बणिका आथब्बणं पयोजेत्ति, पारा. अहु. 2.37.

आथब्बणपयोग पु., तत्पु. स. [आथर्वणप्रयोग], अथर्ववेद के मन्त्रों का व्यावहारिक प्रयोग - गं द्वि. वि., ए. व. - ततियो न निसेधेत्वा आथब्बणपयोगं सन्धाय उपकङ्कन्तिपि अपकङ्कन्तिपीति आह, दी. नि. अहु. 1.275.

आथब्बनवेद पु., कर्म. स. [अथर्ववेद], अथर्ववेद, अथर्ववेद का मन्त्र - दं द्वि. वि., ए. व. - आथब्बनवेदं पन पणीतज्झासया न सिक्खन्ति, सद्. 2.390.

आथब्बणिक त्रि., [आथर्वणिक], अथर्ववेद में विहित कर्मकाण्डों को करने वाला पुरोहित, अथर्ववेद के मारण, उच्चाटन आदि के मन्त्रों का ज्ञाता या प्रयोक्ता - का पु., प्र. वि., ब. व. - आथब्बणिका किर आथब्बणं पयोजेत्वा सत्तं सीसच्छिन्नं, दी. नि. अहु. 1.275; आथब्बणिका आथब्बणं पयोजेत्ति, महानि. 280; - कादि त्रि., वह समूह, जिसके आदि में अथर्ववेद के मन्त्रों के ज्ञाता हों - दीनं पु., ष. वि., ब. व. - आथब्बणिकादीनं विय मन्तपरिजप्पनपयोगो विज्जामयो, इतिवु. अहु. 202; - मन्तपयोग पु., तत्पु. स., अथर्ववेद के मन्त्रों का व्यावहारिक प्रयोग - गं द्वि. वि., ए. व. - आथब्बणन्ति आथब्बणिकमन्तपयोगं, सु. नि. अहु. 2.256.

आद पु., [आद], ग्रहण स्वीकरण, खाने वाला, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, दाया., वन्ता., विद्यासा. के अन्त. द्रष्ट.

आदत्ते आ +√दा का वर्त., प्र. पु., ए. व., आत्मने. [आदत्ते], स्वयं ग्रहण करता है, लेता है, स्वीकार करता है - यस्मा वा अपेति, यस्मा वा भयं जायते, यस्मा वा आदत्ते, तं कारकं अपादानसञ्जं होति, क. व्या. 2.73; यस्मादपेति भयमादत्ते वा तदपादानं नाम, बाला. 49; "आदत्ते कुरुते पेटे" इच्चादिनयदस्सना, सद्. 2.319.

आददाति आ +√दा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आददाति], ले लेता है, पकड़ लेता है, ग्रहण करता है, स्वीकार करता है - सद्धो दानं ददाति देति, सीलं आददाति आदेति इमानि सुद्धकत्तुपदानि, सद्. 2.367; आपुब्बवसेन ग्रहणञ्च वदन्तो ददाति देति आददाति आदेति दानं आदानन्ति सनामपदानि सुद्धकत्तुपदानि जनयति, सद्. 2.368; - तु अनु., प्र. पु., ए. व. - एवं "आददातु, आददेय्य", इच्चादि सब्बं नेय्यं, आदेतु आदेय्य इच्चादि यथारहं योजेतब्बं, सद्. 2.373.

आदधान त्रि., आ +√धा का वर्त. कृ., आत्मने. [आदधान], रखने वाला, उत्पन्न करने वाला, प्रदायक, आपूरक - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - वन्दामि चक्खवरलक्खणं आदधानं, रस. 1.7; सोस्सामि धम्मं सिवमादधानं, रस. 2.23.

आदपयति/आदपेति आ +√दा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., ग्रहण कराता है, लेने हेतु प्रेरित करता है - समादपेतीति तत्थ लक्खणारम्मणिकं विपस्सनं सम्मा आदपेति, उदा. अहु. 293; सीलं आदपेति समादपेति, सद्. 2.367; कारिते आदपेति समादपेति आदपयति समादपयति, सद्. 2.480; - न्ति ब. व. - ये धम्ममेवादपयन्ति सन्तो, म. नि. 2.314; ये सन्तो सप्पुरिसा धम्मयेव आदपेन्ति समादपेन्ति गण्हापेन्ति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.243; - त्वा पू. का. कृ. - समादपेसीति तदत्थं समादपेत्वा कथेसि, दी. नि. अहु. 1.241.

आदयति √अद के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदयति], खिलवाता है - खादादीनं पयोज्जे कत्तरि दुतिया न होति, खादयति देवदत्तेन, आदयति देवदत्तेन, मो. व्या. 2.6.

आदर पु., [आदर], सम्मान, उचित व्यवहार, अच्छी देख-भाल, सत्कार, सेवा-टहल - रो प्र. वि., ए. व. - दशति

## आदरता

67

## आदान

आदरति अनादरति, आदरो अनादरो, सद्. 2.426; तस्मा हितत्थकामेन, कातब्बो एत्थ आदरो अभि. अव. 1407; ... एतस्स आदरोति अनादरो, इतिवु. अद्. 92; - रं द्वि. वि., ए. व. - ... सवने आदरं जनेति, स. नि. अद्. 1.8; - रेन तृ. वि., ए. व. - ... धम्मं आदरेन अस्सुणन्तो ..., स. नि. अद्. 1.9; क. स. उ. प. के रूप में, अना.- पु., आदर का अभाव, असम्मान - रेन तृ. वि., ए. व. - पापे अनादरेणापि सततं वत्तते मनो, सद्धम्मो. 21; सज्जातधम्मस्सवना. - त्रि. ब. स., वह, जिसके मन में धर्म को सुनने के लिए आदरभाव हो - रो पु. प्र. वि., ए. व. - अतिविय साधुरुपा गाथा भविस्सन्तीति सुद्धतरं सज्जातधम्मस्सवनादरो हुत्वा ..., जा. अद्. 5.487; ख. स. पू. प. के रूप में; - कारी पु., सम्मान अथवा आदर करने वाला - री प्र. वि., ए. व. - असक्कच्चकारीति न सुकतकारी, न आदरकारी, अ. नि. अद्. 3.139; - जननत्थ पु., तत्पु. स. [आदरजननार्थ], सम्मान के भाव को उत्पन्न करने का प्रयोजन - त्थं द्वि. वि., ए. व. - तं अनामसित्वा तत्थ अभिरतियं आदरजननत्थं अभिरम, नन्द, अभिरम, नन्दाति, उदा. अद्. 139; - जात त्रि., सम्मान या श्रद्धाभक्ति को प्राप्त करने वाला - ता पु. प्र. वि., ब. व. - देवापि मनुस्सापि आदरजाता अतिविय पिहयन्तीति, उदा. अद्. 162; - दस्सन नपुं., तत्पु. स. [आदरदर्शन], सम्मान के भाव का प्रकाशन - आदरदस्सनत्थं घेत्थ आमैडितवसेन वुत्तं पे. व. अद्. 242; - दीपन नपुं., तत्पु. स. [आदरदीपन], उपरिवत् - भिक्खून् तप्परभावतो सवने आदरदीपनेन सक्कच्चसवनं दस्सेति, उदा. अद्. 316; - रहित त्रि., तत्पु. स. [आदररहित], आदरभाव या सम्मानभाव को अप्राप्त - तो पु., प्र. वि., ए. व. - ओत्तप्पस्स अभावेन सब्बहाचारीसु आदररहितो, इतिवु. अद्. 135; - विरहित त्रि., तत्पु. स., उपरिवत् - ता पु., प्र. वि., ए. व. - विरमिस्साम एवरुपाति एवं आदरविरहिता ..., सु. नि. अद्. 1.265.

आदरता स्त्री., आदर से व्यु., भाव. [आदरत्व, नपुं.], आदरभाव, निषे., रूप में स. उ. प. में ही प्राप्त; अना. - अनादरभाव, तिरस्कारभाव, उपेक्षाभाव - ता प्र. वि., ए. व. अनादरियनिद्वेसे ओवादस्स अनादियनवसेन अनादरभावो अनादरियं, अनादरियनाकारो अनादरता, विभ. अद्. 471.

आदरति आ +√दर से व्यु., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आद्रियते], आदर करता है, आदर किया जाता है - दरति आदरति अनादरति, आदरो अनादरो, सद्. 2.426.

आदहति आ +√धा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदधाति], शा. अ., ला कर रख देता है, किसी पर निर्धारित कर देता है, ला. अ. 1. अग्नि के सन्दर्भ में, प्रज्वलित करता है, परचाता है, 2. चित्त के सन्दर्भ में, स्थिर करता है, ठीक से रखता है, आलम्बन पर रखता है - समाधीति चित्तं समं आदहति आरम्भणे उपेतीति समाधि, बु. वं. अद्. 55; - हामि उ. पु., ए. व. - समादहामीति सम्मा आदहामि, सुद्ध आरोपेमीति अत्थो, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).396; - हन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - वेस्सानरमादहानोति वेस्सानरं अग्निं आदहन्तो, जा. अद्. 7.49; - हि अद्य., प्र. पु., ए. व. - सहस्सबाहु असमो पथव्या, सोपि तदा आदहि जातवेदन्ति, जा. अद्. 7.47; - हित्वा पू. का. कृ. - सूचिघटिकं दत्त्वाति अग्गळसूचिञ्च उपरिघटिकञ्च आदहित्वा, उदा. अद्. 242.

आदा/आदाय आ +√दा का पू. का. कृ. [आदाय], ले कर, ग्रहण कर - इतो आदाय कमण्डलुं जा. अद्. 6.102; पाठा. - आदा, निषे., अनादा, नहीं लेकर - अनादा चे भिक्खु पुराणसन्धतस्स सामन्ता ..., पारा. 350; अनादा चे ... सुगतविदधित्ति अनादियित्वा ..., तदे.

आदाति आ +√दा का अद्वितीयकृतरूप, वर्त., प्र. पु., ए. व. [आददाति], ग्रहण करता है, ले लेता है - तब्ब त्रि., सं. कृ., ले लेना चाहिए - ब्बा पु., प्र. वि., ब. व. - द्वे भागा सुद्धकाळकानं एळकलोमानं आदातब्बा ततियं ओदातानं चतुत्थं गोचरियानं, पारा. 343; - ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अज्जतरं दुब्बण्णकरणं आदातब्बं पाचि. 162.

आदातु त्रि., आ +√दा से व्यु., क. ना. [आदातृ], ग्रहण करने वाला, लेने वाला - ता पु., प्र. वि., ए. व. - तं अदिन्नं थेय्यसङ्घातं आदाता होति, म. नि. 1.359.

आदान नपुं., आ +√दा से व्यु., क्रि. ना. [आदान], शा. अ., ग्रहण कर लेना, ले लेना, स्वीकरण, पकड़ लेना, प्राप्ति - इमस्मिं पन भुवादिगणे दानं वदन्तो आपुब्बवसेन गहणञ्च वदन्तो ... दानं आदानन्ति सनामपदानि सुद्धकत्तुपदानि जनयति, सद्. 2.368; - नं प्र. वि., ए. व. - सब्बं सकस्स आदानं, अनादानं तिणस्स चाति ..., जा.

## आदान

68

## आदाननिकखेपन

अद्द. 3.100-101; - नेन त्त्वि, ए. व. - एत्थ आदिकेनाति आदानेन गहणेन, स. नि. अद्द. 2.179; विशेष अर्थ, 1. भोजन-ग्रहण, तृणभक्षण - नानि द्वि. वि., ब. व. - अज्ज मे सत्तमा रत्ति, अददानि उपासतो, जा. अद्द. 5.367; तत्थ अददानीति आदानानि, गोचरगहणद्वानानीति अत्थो, जा. अद्द. 5.367; विशेष अर्थ 2. आसक्ति, विषयभोगों के प्रति लगाव, पुनर्जन्म का ग्रहण - नं<sup>1</sup> प्र. वि., ब. व. - दिस्सति ... इमस्स चातुमहाभूतिकस्स कायरस्स आचयोपि अपचयोपि आदानमिपि निक्खेपनमिपि, स. नि. 1(2).84; अग्गिस्स आदानं यूपस्स उस्सापनं महप्फलं होति महानिर्वासंति, अ. नि. 2(2).191; आदानन्ति निब्बन्ति, स. नि. अद्द. 2.86; तत्थ आदानन्ति पटिसन्धि, विसुद्धि. 2.252; - नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - आदानं पजहतो पटिनिस्सग्गानुपस्सनावसेन जाता धम्मा अज्जमज्ज नातिवत्तन्तीति ..., पटि. म. 28; आदानन्ति निब्बत्तनवसेन किलेसानं, अदोसदस्साविताय सङ्गतारम्मणस्स वा आदानं, पटि. म. अद्द. 1.113; - तो प. वि., ए. व. - पटिनिस्सग्गानुपस्सनाय आदानतो वित्तं मोचेन्तो अस्ससति चेव पस्ससति च, विसुद्धि. 1.271; आदानतोति निच्चादिवसेन गहणतो, पटिसन्धिगहणतो वाति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो, विसुद्धि. महाटी. 1.323; - स्स प. वि., ए. व. - पटिनिस्सग्गानुपस्सनाय आदानस्स ..., पटि. म. 41; - नेसु सप्त. वि., ब. व. - आदानेसु विनेय्य छन्दरागं, सु. नि. 366; आदानेसु ... तेसु उपधीसु न सारमेति, सु. नि. अद्द. 2.87; स. उ. प. के रूप में; अदिन्ना.- नपुं., तत्पु. स. [अदत्तादान], शा. अ., जो कुछ प्रसन्नता के साथ नहीं दिया गया है, उसे चोरी, डकैती, घूसखोरी, ठगी आदि द्वारा छीन लेना, विशेष अर्थ, तीन प्रकार के शारीरिक पापकृत्यों में से दूसरा पापकृत्य - न्नं प्र. वि., ए. व. - अकुसलकम्मपथेसु पाणातिपातो अदिन्नादानं मिच्छाचारो मुसावादो मिच्छदिट्ठीति, अभि. अव. 172; अना.- नपुं., आदान का निषे. [अनादान], अग्रहण, नहीं लिप्तता - ना प. वि., ए. व. - सादानेसु अनादानाति सगहणेसु सत्तेसु च ... अग्रहणा, स. नि. अद्द. 1.308; भारा.- नपुं., तत्पु. स. [भारादान], भार को ग्रहण करना, भार को ढोना - नं प्र. वि., ए. व. - भारादानं दुखं लोके, भारनिकखेपनं, सुखं, स. नि. 2(1).25; सत्था.- नपुं., तत्पु. स. [शस्त्रादान], शस्त्रों को रखना - रूपाधिकरणं दण्डादानं - सत्थादानं - कलह - विग्गह - विवाद - तुवंतुवं - पेसुज्ज -

मुसावादा, म. नि. 2.80; सब्बगेहा.- नपुं., तत्पु. स. [सर्वगेहादान], समस्त गृहों का ग्रहण - नं प्र. वि., ए. व. - याव कळीरच्छेज्जं सब्बगेहादानं उभतोपक्खे याव सत्तमकुला समुग्घातोति, मि. प. 186; सा.- नपुं., आदान या ग्रहण करने योग्य - नेसु सप्त. वि., ब. व. - सादानेसु अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं, ध. प. 406.

आदानकाल पु., तत्पु. स. [आदानकाल], ग्रहण या स्वीकार करने का उपयुक्त समय, स्वीकार्यता - लं द्वि. वि., ए. व. - महाजनस्स आदानकालं गहणकालं जानित्वाव ब्याकरोतीति अत्थो, म. नि. अद्द. (म.प.) 2.80.

आदानगन्थ पु., तत्पु. स., आसक्ति की गांठ, तृष्णा की गांठ - थं द्वि. वि., ए. व. - आदानगन्थं गथितं विसज्ज, आसं न कुब्बन्ति कुहिञ्चि लोके, सु. नि. 800; चतुब्धिपि रूपादीनं आदायकत्ता आदानगन्थं अत्तो वित्तसत्ताने गथितं बद्धं अरियमग्गसत्थेन विसज्ज छिन्दित्वा, सु. नि. अद्द. 2.221.

आदानगहण नपुं., तत्पु. स. [आदानग्रहण], आसक्ति की पकड़, लगाव या तृष्णा की दृढ़ पकड़, स. प. के अन्तः; - कायद्वारे आदानगहणमुज्जनचोपनानि प्रापेत्वा, म. नि. अद्द. (मू.प.) 1(2).259; स. नि. अद्द. 3.132; कायद्वारे आदानगहणमुज्जनचोपनपत्ता अट्ठकामावचरकुसलचेतना, म. नि. अद्द. (म.प.) 2.39.

आदानतण्हा स्त्री., तत्पु. स. [आदानतृष्णा], ग्रहण करने की तृष्णा, तृष्णा-उपादान, रूप आदि के प्रति मन का दृढ़ लगाव, रूप-तृष्णा, वेदनातृष्णा आदि तृष्णाएं - ण्हं द्वि. वि., ए. व. - आदानतण्हं विनयेथ सब्बं, सु. नि. 1.109; तत्थ आदानतण्हन्ति रूपादीनं आदायिकं गहणतण्हं, तण्हुपादानन्ति वुत्तं होति, सु. नि. अद्द. 2.291.

आदाननिकखेप पु., द्व. स. [आदाननिकषेप], ग्रहण एवं परित्याग, ले लेना और छोड़ देना - पे सप्त. वि., ए. व. - आरज्जको नागो हत्थिदमकरस्स आदाननिकखेपे वचनकरो होति ओवादप्पटिकरो ..., म. नि. 3.174; - पेहि त्त्वि, ब. व. - इधलोकतो परलोकं आदाननिकखेपेहि अपरापरं धावति संसरतीति अत्थो, उदा. अद्द. 192.

आदाननिकखेपन नपुं., द्व. स. [आदाननिकषेपण], शा. अ., लेना और छोड़ देना, ग्रहण एवं परित्याग, ग्रहण एवं विसर्जन, ला. अ., जन्मग्रहण एवं जन्म का अन्त या मृत्यु - नं प्र. वि., ए. व. - हत्थेसु, भिक्खवे, सति

## आदानपटिनिस्सग्ग

69

आदाय

आदाननिकखेपनं होति, सु. नि. अहु. 1.181; हत्थेसु भिक्खवे सति आदाननिकखेपनं पञ्जायति, स. नि. 2(2).175; तत्थ आदानन्ति पटिसन्धि निक्खेपनन्ति चुति, विसुद्धि. 2.252; - तो प. वि., क्रि. विरो. - आदाननिकखेपनतो, वयोवुद्धत्थयामितो, विसुद्धि. 2.252; आदाननिकखेपनतोति भवरस्स गहणविस्सज्जनतो, जातितो भरणतो चाति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 2.380.

आदानपटिनिस्सग्ग पु., द्व. स. [आदानप्रतिनिर्गम], ग्रहण एवं अग्रहण, लेना एवं त्याग देना, आसक्ति एवं अनासक्ति, निर्वाण, जिसमें समस्त लगावों का त्याग हो जाता है - ग्गे सप्त. वि., ए. व. - आदानपटिनिस्सग्गे, अनुपादाय ये रता, ध. प. 89; आदानपटिनिस्सग्गेति आदानं वुच्चति गहणं, तस्स पटिनिस्सग्गसङ्घाते अगहणे चतूहि उपादानेहि किञ्चि अनुपादयित्वा ये रताति अत्थो, ध. प. अहु. 1.338; आदानपटिनिस्सग्गेति गहणपटिनिस्सग्गसङ्घाते निब्बाने, अ. नि. अहु. 3.334.

आदानवट्ठि स्त्री., औषधियों के लेप से युक्त पट्टी - ट्टि प्र. वि., ए. व. - वच्चमग्गे भेसज्जमक्खिता आदानवट्ठि वा वेळुनाळिका वा वट्ठति, महाव. अहु. 354; आदानवत्तीति आनहवत्ति, वजिर. टी. 440.

आदानसङ्ग पु., तत्पु. स., सांसारिक आसक्तियों की ओर मन का झुकाव, अर्थलिप्सा, लोभ - आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले आदानसङ्गहेतुञ्च इमं पजं मच्चुधेय्ये लग्गं ततो वीतिकमित्तुं असमत्थं इति पेक्खमानो ..., सु. नि. अहु. 2.291; चूळनि. अहु. 41.

आदानसत्त पु., कर्म. स., आसक्ति या लगाव की मनोवृत्ति वाला प्राणी - त्ते सप्त. वि., ए. व. - आदानसत्ते इति पेक्खमानोति आदानसत्ता वुच्चन्ति ये रूपं आदियन्ति उपादियन्ति ..., चूळनि. 138; आदानसत्ते इति पेक्खमानो, सु. नि. 1.110; आदातब्बडेन आदानेसु रूपादीसु सत्ते सब्बलोके ... आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले, सु. नि. अहु. 2.291.

आदानसील त्रि., ब. स. [आदानशील], स्वभाव से ही आसक्त, लालची अथवा तृष्णामयी प्रकृति वाला, केवल दूसरों से ले लेने वाला - ला पु. प्र. वि., ब. व. - अदानसीला न च देन्ति कस्सचि, सु. नि. 247; अदानसीलाति अदानपकतिका, आदानाधिमुत्ता असंविभागरताति अत्थो, ... केवे पन 'आदानसीला' तिपि पठन्ति, केवल गहणसीला, कस्सचि पन किञ्चि न देन्तीति, सु. नि. अहु. 1.264.

आदानाधिप्पाय त्रि., ब. स. [आदानाभिप्रायक], वह, जिसका अभिप्राय दूसरों से छीनना है, दूसरों की धन-सम्पदा आदि को ले लेने की इच्छा रखने वाला - यो पु., प्र. वि., ए. व. - चोरो, भिक्खवे, आदानाधिप्पायो अप्यं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति, अ. नि. 2(1).147; आदानाधिप्पायोति इदानि गहेतुं सक्खिस्सामि, इदानि सक्खिस्सामीति एवं गहणाधिप्पायो, अ. नि. अहु. 3.50; - या ब. व. - चोरा, खो, ब्राह्मण, आदानाधिप्पाया गहनूपविचारा सत्थाधिड्डाना, अ. नि. 2(2).76; परमण्डस्स आदाने अधिप्पायो एते सन्ति आदानाधिप्पाया, अ. नि. अहु. 3.122.

आदानाभिनिविट्ठ त्रि., तत्पु. स. [आदानाभिनिविष्ट], दूसरों की सम्पत्ति आदि को ले लेने का मानसिक अभिप्राय रखने वाला - ट्टे पु., सप्त. वि., ए. व. - आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले ... इति पेक्खमानो, चूळनि. अहु. 41; सु. नि. अहु. 2.291.

आदापेति आ +√दा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., ग्रहण कराता है, आसक्ति या लगाव उत्पन्न कराता है - एवं एव च दापेति आदापेतीति आदीनि पि यथारहं, सद्. 2.374.

आदाय<sup>1</sup> आ +√दा का सं. कृ. [आदाय], 1. लेकर, ग्रहण कर, स्वीकार कर, चयन कर - उद्दिस्स, उद्दिस्सित्वा, आदाय आदयित्वा, क. व्या. 599; अपरस्सन्तो एकंसेन आदाय वोहरेय्यं, म. नि. 2.80; भरित्वा तुवरमादाय, सङ्गस्स अददिं अहं, अप. 1.234; भरित्वा तुवरमादायाति तुवरअट्ठिं मुग्गकलयसदिसं तुवरअट्ठिं भज्जित्वा, अप. अहु. 2.181; 2. प्रायः इसका प्रयोग क्रि. वि. अथवा उप. के रूप में भी प्राप्त, साथ, साथ में लेकर - तथा पि नयमादाय कथितत्ता अकोपिया, सद्. 1.24; पुब्बण्हसमयं निवासेत्त्वा पत्तचीवरमादाय येन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स कम्मन्तो तेनुपसङ्गमि, सु. नि. (पू.) 96; आदाय अग्गिं मम देहि वित्तं, जा. अहु. 7.56; एत्तकं याचित्वा आदाय पक्कामि, जा. अहु. 1.119.

आदाय<sup>2</sup> पु., किसी धार्मिक आस्था का ग्रहण, धार्मिक विश्वास का स्वीकरण - गहणवसेन आदायो, महानि. अहु. 115; विभ. अहु. 309; - यं द्वि. वि., ए. व. - यञ्च कथेन्तो सकं आदायं अत्तनो आचरियवाद् न हापेति, महाव. अहु. 411; स. उ. प. के रूप में तथागता, बुद्धा. के अन्त. द्रष्ट.

आदाय<sup>3</sup> आ +√दा का पू. का. कृ. [आदाय], खींच कर, तान कर, बांध कर - आदाय पत्तिं पराविरियधातिं, चापे



## आदायक

70

आदास

सरं किं विचिकिच्छसे तुयं, जा. अष्ट. 4.243; एतं पत्तसहितं सरं वापे आदाय सन्नहिता, जा. अष्ट. 4.243.

**आदायक** त्रि., आ + रदा से व्यु. [आदायक], लेने वाला, ग्रहण करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — मच्छरिनोति अञ्जसं अदायका, जा. अष्ट. 6.129; पाठा. आदायका; स. उ. प. के रूप में; तदा. त्रि., उसका (पूर्वनिर्दिष्ट का) आदान या ग्रहण कराने वाला — परपरिगहितसञ्जिन्नो तदादायक उपक्कमसमुद्गापिका थ्येय्यचेतना अदिन्नादानं, स. नि. अष्ट. 2.128; **मूला-** त्रि., कायिक एवं वाचिक, इन दो प्रकार की आपत्तियों (अपराधों) के मूल को ग्रहण करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — सियापि मूलादायका भिक्खु पुनक्कम्माय उक्कोट्युं, चूलव. 473.

**आदायच्छक्क** नपुं., महाव. के कठिनखन्धक में संगृहीत एक वस्तु का शीर्षक, महाव. 334-335.

**आदायपन्नरसक** नपुं., महाव. के कठिनखन्धक के एक वस्तु का शीर्षक, महाव. 336.

**आदायसत्तक** नपुं., महाव. के कठिनखन्धक की एक विनयवस्तु, महाव. 332.

**आदायी** त्रि., [आदायिन्], लेने वाला, ग्रहण करने वाला, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, **अदिन्ना-** — न दी हुई वस्तु को ले लेने वाला — यिनो पु., प्र. वि., ब. व. — अदिन्नं आदियन्तीति अदिन्नादायिनो, स. नि. अष्ट. 2.127; **दिन्ना-** — केवल दी हुई वस्तु, धन आदि को लेने वाला — यी पु., प्र. वि., ए. व. — अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतो होति दिन्नादायी दिन्नापाटिकङ्घी, म. नि. 1.240; **वरा-** — त्रि., उत्तम वस्तु या भाव को ग्रहण करने वाला — यी पु., प्र. वि., ए. व. — सारादायी च होति वरादायी च कायस्स, अ. नि. 2(1).74; ततियो वरादायीति उत्तमस्स वरस्स आदायको, अ. नि. अष्ट. 3.31; **सारा-** त्रि., सार-तत्त्व को ग्रहण करने वाला — यी पु., प्र. वि., ए. व. — सारादायी च होति वरादायी च कायस्स, अ. नि. 2(1).74. **आदायिवल्ली** स्त्री., एक लता का नाम — हि तृ. वि., ब. व. — कदम्बपुष्पमादायि — वल्लीहि, विततं अहु, म. वं. 17.31; **आदायिवल्ली** ति हियवल्ली वुच्चति, म. वं. टी. 339 (ना.); पाठा. आदारिवल्ली.

**आदास** पु., [आदर्श], दर्पण, आईना, मुंह देखने का शीशा — सो प्र. वि., ए. व. — दीपो पदीपो पज्जोतो, पुमे त्वादास-दप्पना, अमि. प. 316; तं किं मज्जसि, राहुल, किमस्थियो आदासो ति ?, म. नि. 2.85; 'यतो च खो,

महाराज, आदासो सिया, आभा सिया, मुखं सिया, जायेय्य अत्ताति, मि. प. 54; — सं द्वि. वि., ए. व. — ततो आदासमादाय, सरीरं पच्चवेक्खिस्सं, थेरगा. 169; — से सप्त. वि., ए. व. — अथेकदिवसं केवद्धो आदासे मुखं ओलोकेत्तो, जा. अष्ट. 6.237; — स्स ष. वि., ए. व. — अथ खो यतो कुतोचि छाया आगन्त्वा आदासस्स आपातमुपगच्छति, मि. प. 275; — सेहि तृ. वि., ब. व. — अथ नं राजा आदासेहि परिक्खिपापेसि, म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.272; स. प. के अन्तः, — कञ्चना. पु., तत्पु. स. [काञ्चनादर्श], सोने से मढ़ा हुआ आईना, सुनहरी पट्टियों से सज्जित दर्पण, सुनहरा आईना — अनुलिप्पित्वा सुपरिमज्जितकञ्चनादाससन्निभोति दस्सेतुं हेमवण्णन्ति, थेरीगा. अष्ट. 261; मुखं जालाभिहतपदुमं विय मलगहितकञ्चनादासमण्डलं विय च विरुपं होति, जा. अष्ट. 1.481; स. उ. प. के रूप में; **सब्बकायिका-** — पु., कर्म. स., सम्पूर्ण शरीर को दिखलाने वाला आईना — सं द्वि. वि., ए. व. — अथस्सा दिब्बं सब्बकायिकादासं पुरतो ठपयिस्सु, स. नि. अष्ट. 3.248; **काव्या-** — पु., तत्पु. स., काव्यरूपी आईना, संस्कृत अलङ्कार-शास्त्र का आचार्य दण्डी द्वारा रचित "काव्यादर्श" नामक एक ग्रन्थ — से सप्त. वि., ए. व. — काव्यादासे च त्वंमुखं कमलेने'व तुल्यं नाञ्जेन केनची'ति, सद्. 1.289; **धम्मा-** — पु., धर्मरूपी आईना या दर्पण — सं द्वि. वि., ए. व. — धम्मादासन्ति धम्ममयं आदासं, येनाति येन धम्मादासेन समन्नागतो, स. नि. अष्ट. 3.311; **पसन्ना-** — पु., कर्म. स. [प्रसन्नादर्श], स्वच्छ दर्पण, साफ-सुथरा आईना — से सप्त. वि., ए. व. — तस्स दानस्स फलेन इध निब्बत्तोति पसन्नादासे मुखनिमित्तं विय सब्बं पुस्मिजातिकिरियं, जा. अष्ट. 3.361; **विमला-** पु., कर्म. स. [विमलादर्श], दागों, मलों या ६ ाब्बों से रहित आईना, निर्मल एवं स्वच्छ दर्पण — सं द्वि. वि., ए. व. — इध पन, महाराज, सिनिद्धसमसुमज्जितसप्प भासविमलादासं सण्हसुखुमगेरुकचुण्णेन अपरापरं मज्जेय्युं, मि. प. 136; **सुवण्णा-** — पु., तत्पु. स. [सुवर्णादर्श], सुनहरा आईना, सोने की तरह चमकमाता आइना — सो गन्त्वा बोधिसत्तस्स सुवण्णादासफुल्लपदुमसरिसरिकं मुखं दिस्वा ..., जा. अष्ट. 3.145; स. पू. प. के रूप में, — तल — नपुं., तत्पु. स. [आदर्शतल], आईना की ऊपरी सतह, दर्पण का ऊपरी तल — लं प्र. वि., ए. व. — तथा आदासतलं विय चक्खुधातु, मुखं विय रूपधातु, विम. अष्ट.

## आदासक

71

आदि

74; सुवण्णमयं आदासतलं विय वड्ढा च सुच्छवि च, जा. अड्. 5.196; — दण्डसण्ठान त्रि., ब. स. [आदर्शदण्डसंस्थान], आईना के मूठ या हैण्डल जैसी बनावट वाला — नानि नपु., प्र. वि., ब. व. — आदासदण्डसण्ठानानि, महावासिदण्डसण्ठानानीतिपि एके, खु. पा. अड्. 38; — दन्तथरु पु., तत्पु. स., हाथी-दांत से बनाई हुई आईना की मूठ — तं नून कक्कूपनिसेवितं मुख्यं, आदासदन्ताथरूपच्चवेक्खितं, जा. अड्. 5.292; — पञ्च नपु., तत्पु. स. [आदर्शप्रश्न], दी. नि. के सामञ्जसफलसुत्त में परिगणित बुद्धकालीन विद्याओं में वह विद्या, जिसमें किसी के खोने आदि के प्रश्नों का उत्तर आईना द्वारा दिलाया जाता था — उहं प्र. वि., ए. व. — हत्थाभिजप्पनं हनुजप्पनं कण्णजप्पनं आदासपञ्च कुमारिकपञ्चं देवपञ्चं आदिच्चपट्टानं, दी. नि. 1.10; आदासपञ्चहन्ति आदासे देवतं ओतारेत्वा पञ्चपुच्छनं, दी. नि. अड्. 1.85; — मयभित्ति स्त्री., तत्पु. स., कांच की दीवार, वह दीवार जो आईनों से भरी हो — ना तृ. वि., ए. व. — पवरेनापरेनापि आदासमयभित्तिना, आदासमण्डपेनापि सदा तं उपसोभितं, चू. वं. 73.119; — मण्डप पु., श्रीलङ्का के पुलत्थिनगर का एक भवन — पेन तृ. वि., ए. व. — आदासमण्डपेनापि सदा तं उपसोभितं, चू. वं. 73.119; — मण्डल नपु., तत्पु. स., गोल आकार वाला आईना, आईना का मण्डल या घेरा — स्स ष. वि., ए. व. — तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्घमुतावेळुरियस्स वण्णनिभा, ध. स. 617(मा.).

आदासक पु., आदास से व्यु., आईना, छोटा सा दर्पण, सुन्दर दर्पण — कं द्वि. वि., ए. व. कोच्चं पसादं अज्जनिज्ज, आदासकज्ज गण्हित्वा, थेरीगा. 413.

आदासमुखकुमार पु., वाराणसी के एक प्राचीन राजा का नाम — रो प्र. वि., ए. व. — तेनस्स नामगगहणादिवसे आदासमुखकुमारोति नामं अकंसु, जा. अड्. 2.247.

आदाहनड्डान नपु., [आदाहनस्थान], शा. अ., वह स्थान, जहां कुछ भी जलाया जाए, दाहस्थल, ला. अ., श्मशान, दाह-क्रिया का स्थल — ने सप्त. वि., ए. व. — मम पुत्तस्स अरहतो आदहनड्डाने चित्तकं चित्तकट्टानं अहं अगमासिन्ति अत्थो, अप. अड्. 2.189; पाठा. आदहनड्डान.

आदि पु./त्रि., [आदि], 1. प्रारम्भ, आधार, कारण, प्रथम, सबसे पहला, अग्र, मुख्य, प्रधान, प्रमुख — दि प्र. वि., ए. व. — जिघज्जं चरिमं पुब्बं, त्वग्ग पठममादिसो, अभि. प.

715; आदि चेत्तं चरणज्ज, मुख्यं सज्जमसंदरो, परि. 286; तत्रायमादि भवति, इध पज्जस्स भिक्खुनो, ध. प. 375; तत्रायमादि भवतीति तत्र अयं आदि, इदं पुब्बट्ठानं होति, ध. प. अड्. 2.346; आदि सीलं पतिट्ठा च, कल्याणनज्ज मातुक्, थेरगा. 612; — दिं द्वि. वि., ए. व. — यथा पन नक्खत्तदिवसे बन्धनागारे बद्धो पुरिसो नक्खत्तस्स नेव आदिं, न मज्झं, न परियोसानं पस्सति, म. नि. अड्. (मू.प.) 1(2).214; नेव आदिं मनसि करोतीति नेव पुब्बपट्टपनं मनसि करोति, अ. नि. अड्. 2.98; — दीनि द्वि. वि., ब. व. — तत्थ तत्थ कसिगोरक्खादीनि करोन्ते मनुस्से गोगणे सुनखेति, जा. अड्. 2.105; इमे छाताति वुत्ता सा तण्डुला दीनि निदिसि, भक्खित्तानं वाणिजानं, नावड्ढं विविधं बहुं, म. वं. 7.24; — ना तृ. वि., ए. व. — मुग्गरादिनानावुधहत्था अरज्जं पविसित्वा, जा. अड्. 1.154; — स्स ष. वि., ए. व. — आदिसस् तीणि लक्खणानि, पटि. म. 162; — म्हि सप्त. वि., ए. व. — ... आदिमि वा मज्झे वा परियोसाने वा अप्पमत्तकम्पि सारं अदिस्वा ..., मि. प. 9; 2. प्रायः स. उ. प. के अन्तः, ना. प. अथवा त्रि. के रूप में, क. ना. प. के रूप में; — दि प्र. वि., ए. व. — रज्जो चक्कवत्तिस्स चक्करतनादि ..., खु. पा. अड्. 139; — दयो ब. व. — उदाहु धम्मनुरस्सतिआदयोपीति पुच्छि, ध. प. अड्. 2.261; ख. त्रि. के रूप में — दि प्र. वि., ए. व. — अस्सासपस्सासादिचुण्णिकजातअट्टिकपरियोसानो कायो वुत्तो, म. नि. अड्. (मू.प.) 1(1).253; — दिनो नपु. द्वि. वि., ब. व. — तण्डुलादीनि निदिसि, म. वं. 7.24; — म्हि सप्त. वि., ए. व. — तत्थ विसमेति विसमे कायकम्मादिमि निविट्ठा, जा. अड्. 4.60; — दीहि तृ. वि., ब. व. — एको दीपको नानपकारेहि अम्बपनसादीहि फलरुक्खेहि सम्पन्नो, जा. अड्. 1.268; — दीनं ष. वि., ब. व. — पारगङ्गाय अम्बलबुजादीनं मधुरफलानं अन्तो नत्थि, जा. अड्. 2.131; 3. किसी लम्बे स. प. के उत्तर पद के रूप में — ... मुग्गरादिनानावुधहत्था अरज्जं पविसित्वा ..., जा. अड्. 1.154; न बहुजनो अनिच्चादिवसेन विपस्सति, ध. प. अड्. 2.100; 4. किसी उद्धरण के अन्त में 'ति' अथवा 'ति एवं' के साथ इत्यादि के अर्थ का सूचक, क. असमस्त रूप में, — 'यावता, भिक्खवे, सत्ता अपदा वा ... पे. ... तथागतो तेसं अगमक्खायतीति आदि, खु. पा. अड्. 142; बाहुलिकातिआदि धम्मदायादे वुत्तं, म. नि. अड्. (मू.प.) 1(1).161; ख. स. प. रूप में, — एतं न

## आदिअक्षर

72

## आदिकम्मिक

साधारणदारस्सा<sup>१</sup>तिआदिवचनं अत्रवि, जा. अ. 7.180; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. उणा., संयोगा. के अन्त.

**आदिअक्षर** नपुं. कर्म. स. [आद्यक्षर], प्रथम अक्षर, वर्ण या पंक्ति का प्रथम अक्षर — **रानि** प्र. वि., ब. व. — **एकेकं गाथं वत्थुकामेहि उच्चारितानं तासं गाथानं आदिअक्षरानि**, पे. व. अ. 244.

**आदिअत्थ** त्रि., ब. स. [आद्यर्थक], आदि के अर्थ को प्रकट करने वाला (शब्द) — **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. — **इतिसहो आदिअत्थो पकारत्थो वा**, उदा. अ. 174.

**आदिअन्तवन्ता** स्त्री., आदिअन्तवन्तु का भाव., आदि या प्रारम्भ तथा अन्त से युक्त रहना, उदय एवं व्यय के स्वभाव वाला होना — **य त्** वि., ए. व. — **आदिअन्तवन्तायाति पुब्बापरकोटिवन्ताय, उदयव्यय धम्मतीति अत्थो**, विसुद्धि. महाटी. 2.370.

**आदिआगम** पु., तत्पु. स. [आद्यागम], किसी भी शब्द के प्रारम्भ में किसी वर्ण का आगम — **मो** प्र. वि., ए. व. — **आदिआगमो ताव — वुत्तो भगवता, मुत्तमो इच्चेवमादि**, क. व्या. 406.

**आदिआदेस** पु., तत्पु. स. [आद्यादेश], किसी शब्द के प्रारम्भ में किसी वर्ण के स्थान पर आया हुआ अन्य वर्ण — **सो** प्र. वि., ए. व. — **आदिआदेसो ताव — यूनं इच्चेवमादि**, क. व्या. 406.

**आदिकं** त्रि., [आदिक], 1. प्रथम, प्रारम्भ का, सबसे पहला, इत्यादि — **कं** नपुं. द्वि. वि., ए. व. — **पञ्चसतेहि पुत्तेहि फलं पापुणि आदिकं**, म. वं. 12.21; **फलं पापुणि आदिकं ति सपुत्तदारो सोतापत्तिफलं पापुणी ति**, म. वं. टी. 274 (ना.); — **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. — **न मे आचरियो अत्थी<sup>२</sup>ति आदिका गाथायो च वित्थारेत्तब्बा**, विसुद्धि. 1.199; — **केन त्** वि., ए. व., क्रि. वि., प्रारम्भ में ही, तुरन्त ही, प्रथम प्रयोग में ही — **सचे, भन्ते, न सककुण्णय्यं आदिकेनेव आहतुं**, म. नि. 2.64; **आदिकेनेव ओपिलवतीति एत्थ आदिकेनाति आदानेन गहणेन**, स. नि. अ. 2.179; 2. स. उ. प. में, त्रि., आदि शब्द के ही अर्थ में, इत्यादि — **कं<sup>१</sup>** नपुं. प्र. वि., ए. व. — **यं मनुस्सानं वोहारुपगं अलङ्कारपरिभोगूपगञ्च जातरुपरजतमुत्तामणिवेळुरिय पवाळलोहितङ्कमसारगल्लादिकं**, खु. पा. अ. 136; — **कं<sup>२</sup>** पु., द्वि. वि., ए. व. — **तत्थ वण्णागमो वण्णविपरिययोतिआदिकं निरुत्तिलक्खणं गहेत्वा ...**, विसुद्धि. 1.202; **आदिकन्ति आदिसहेन वण्णविकारो, वण्णलोपो**,

**धातुअत्थेन नियोजनञ्चाति इमं तिविधं लक्खणं सङ्गहाति**, विसुद्धि. महाटी. 1.239; — **को** पु., प्र. वि., ए. व. — ... **नयेन वुत्तो अविज्जादिको पच्चयाकारो**, उदा. अ. 31; — **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. — **उप्पलवण्णाथेरिआदिका महासाविका अनेकेहि भिक्खुनिसतेहि ...**, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).98; — **स्स ष** वि., ए. व. — **वुत्तो अनापत्तिनयो पनेवं, अवतुकामस्स तथादिकस्स**, विन. वि. 310; — **कानं ष** वि., ब. व. — **बीजरुक्खादिकानं च, पुब्बा कोटि न नायति**, अभि. अव. 1249; — **केसु** सप्त. वि., ब. व. — **पुब्बे दुक्खादिकेसु च**, अप. 2.284; — **के** सप्त. वि., ए. व. — **उपसगो दिस्सति पादिकेपि च**, अभि. प. 1033.

**आदिकत्तु** पु., कर्म. स. [आदिकर्तृ], किसी भी काम को अथवा किसी भी प्रवृत्ति को प्रारम्भ करने वाला, कर्म की उत्पत्ति को प्रारम्भ करने वाला — **त्ता** प्र. वि., ए. व. — **अकुसलानं धम्मानं आदिकत्ता पुब्बङ्गमो**, पारा. 22; **आदिकत्ता पुब्बङ्गमोति सासनं सन्ध्याय वदति**, पारा. अ. 1.171.

**आदिकप्प** पु., कर्म. स. [आदिकल्प], प्रथम कल्प, संसार की सृष्टि-प्रक्रिया का पहला युग — **म्हि** सप्त. वि., ए. व. — **आदिकप्पम्हि राजूनं दस्सेन्तो चरियं विय, चू. वं. 51.2.**

**आदिकम्म** नपुं. कर्म. स., 'आ' एवं 'प' उप. के अर्थों के व्याख्यानक्रम में प्रयुक्त [आदिकर्मन], शा. अ. किसी कर्म का प्रारम्भ, किसी भी कर्म का प्रारम्भिक चरण, विशेष अर्थ, ध्यान-भावना का प्रारम्भिक चरण — **आभिमुख्यसमीपादिकम्मातिङ्गनपत्तिसु**, अभि. प. 1180; **आदिभूतं योगकम्मं आदिकम्मं**, विसुद्धि. महाटी. 2.4; — **म्मे** सप्त. वि., ए. व. — **आदिकम्मे भुसत्थे च सम्भवो तिण्ण तित्तिसु**, अभि. प. 1162; — **त्थ** पु., तत्पु. स., कर्म को आरम्भ करने का अर्थ — **त्थे** सप्त. वि., ए. व. — **आदिकम्मत्थे पकारो दडुब्बो**, पटि. म. अ. 1.249.

**आदिकम्मिक** त्रि., आदिकम्म से व्यु. [आदिकर्मिक], शा. अ., कर्म को पहले पहल करने वाला, किसी कर्म को प्रारम्भ से ही करने वाला, किसी काम की नई नई शुरुआत करने वाला, ला. अ., (विनय के विशेष सन्दर्भ में) विनय-आपत्ति में आपतित होने वाला, सङ्गकर्म का प्रारम्भ कराने वाला — **को** पु., प्र. वि., ए. व. — **अदिन्पुब्बमञ्जेसं, भविस्सं आदिकम्मिको**, अप. 1.332; **पुब्बे अभावितभावनो आदिकम्मिको योगावचरो इद्धिविकुब्बनं सम्पादेस्सतीति**, ध. स. अ. 231; **तस्मिं वत्थुस्मिन्ति परिवारे आगतत्ता**

## आदिकम्मिकयोगी

73

## आदिच्च

देवदत्तो आदिकम्मिको, पारा. अहु. 2.176; - केन तू. वि., ए. व. - सीले पतिष्ठितेन पयोगसुद्धेन आदिकम्मिकेन कुलपुत्तेन ..., खु. पा. अहु. 29; - स्स पु., ष. वि., ए. व. - आदिकम्मिकस्साति आदितो कतयोगकम्मस्स, अभि. ध., वि. टी. 143; - का पु., प्र. वि., ब. व. - इध पन आदिकम्मिका अज्जमज्ज जीविता वोरपितभिक्षु, पारा. अहु. 2.55; - कानं ष. वि., ब. व. - तथापि आदिकम्मिकानं बोज्झङ्गेषु असम्मोहत्थं ..., म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).89; - कुलपुत्त पु., कर्म. स. [आदिकर्मिककुलपुत्त], किसी कार्य को प्रारम्भ करने वाला उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति, काम को प्रारम्भ से ही करने वाला उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति - ता प्र. वि., ब. व. - आदिकम्मिककुलपुत्ता पन परिकम्मं कत्वाव सरन्ति, पारा. अहु. 1.118; - तैन, तू. वि., ए. व. - तत्थ इमिना आदिकम्मिककुलपुत्तेन पठमं गणनाय ..., पारा. अहु. 2.21; - त नपुं., भाव. [आदिकर्मिकत्व], किसी काम को प्रारम्भ करने वाला होना - ता प. वि., ए. व. - धनियत्थेरस्स आदिकम्मिकत्ता अनापत्ति, पारा. अहु. 1.231; - पुग्गल पु., कर्म. स. [आदिकर्मिकपुद्गल], कर्म को प्रारम्भ करने वाला व्यक्ति, संघ कर्म को प्रारम्भ कराने वाला विनय-आपत्ति में आपत्तित भिक्षु - ला प्र. वि., ब. व. - भिक्षुनं पातिमोक्खस्मिं, आदिकम्मिकपुग्गला, विन. वि. 3121; - भिक्षु पु., कर्म. स. [आदिकर्मिकभिक्षु], कर्म को प्रारम्भ करने वाला भिक्षु - ना तू. वि., ए. व. - तं सम्पादेतुकामेन, आदिकम्मिकभिक्षुना, अभि. अव. 1076; - नो ष. वि., ए. व. - तथा उम्मत्तकस्सापि, आदिकम्मिकभिक्षुनो, विन. वि. 1690.

आदिकम्मिकयोगी पु., भावना के कर्म को ग्रहण करने वाला योगी - गिना तू. वि., ए. व. - न लिङ्गविसभागहि, आदिकम्मिकयोगिना, भावेतब्बा मतसत्ते, ना. रू. प. 1397.

आदिकम्मी त्रि., [आदिकर्मिन्], शा. अ., प्रारम्भ करने वाला, किसी भी काम को पहले पहल करने वाला, ला. अ., (विनय के सन्दर्भ में) किसी विनय-आपत्ति में पहले पहल आपत्तित होने वाला, पहले पहल अपराध करने वाला - म्मिनो पु., ष. वि., ए. व. - तथेवासादियन्तस्स, जानन्तस्सादिकम्मिनो, विन. वि. 36; सब्बस्सपि च सीलादिं, वदतो आदिकम्मिनो, विन. वि. 938; अविहेसेतुकामस्स, अकीलस्सादिकम्मिनो, विन. वि. 1653.

आदिकर त्रि., [आदिकर], प्रारम्भ करने वाला - रो पु., प्र. वि., ए. व. - आदिकरो पुग्गलो जानितब्बो, परि. 236;

आदिकरोति सुदिन्नत्थेरादि आदिकम्मिको, परि. अहु. 159; अना. - त्रि., आदिकर का निषे., प्रारम्भ न करने वाला, अनुप्रज्ञप्ति जैसे संघकर्म को करने वाला - रो पु., प्र. वि., ए. व. - अनादिकरोति मक्कटिसमणादि अनुपज्जातिकारको, परि. अहु. 159.

आदिकल्याण त्रि., ब. स. [आदिकल्याण], प्रारम्भ में ही कल्याणकारक, आरम्भ में ही शुभ - णो पु., प्र. वि., ए. व. - 'अरहत्तमग्गो आदिकल्याणो चेव होति लक्खणसम्पन्नो च', पटि. म. 164; - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - 'पठमं ज्ञानं आदिकल्याणञ्चेव होति लक्खणसम्पन्नञ्च', पटि. म. 162; - णा पु., प्र. वि., ब. व. - ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्बज्जनं ..., पावि. 75.

आदिकल्याणता त्रि., आदिकल्याण का भाव. [आदिकल्याणता], प्रारम्भ में ही कल्याणमय अथवा हितकारक होना - ता प्र. वि., ए. व. - सीलेन च तेसं पटिपत्तिया आदिकल्याणता दस्सिता, थेरगा. अहु. 1.11-12; सीलेन च सासनस्स आदिकल्याणता पकासिता होति, विसुद्धि. 1.5; तत्थ सब्बगुणेहि अग्गभावतो, इतरबोधिद्वयमूलताय च पठमाय बोधिया आदिकल्याणता, विसुद्धि. महाटी. 1.254.

आदिकाल पु., कर्म. स. [आदिकाल], प्राचीन समय - तो प. वि., ए. व. - यस्स पन आदिकालतो पमुति अन्वयवसेन सो एव जनपदो निवासो, सु. नि. अहु. 2.103; - लत्थ पु., तत्पु. स., प्राचीन काल का अर्थ या तात्पर्य - त्थे सप्त. वि., ए. व. - खोति पदपूरणमत्ते अवधारणे आदिकालत्थे वा निपातो, अ. नि. अहु. 1.14; सु. नि. अहु. 2.111; पटि. म. अहु. 2.119.

आदिग्गहण नपुं., तत्पु. स., 'आदि' शब्द का ग्रहण या प्रयोग - णेन तू. वि., ए. व. - आदिग्गहणेन अज्जस्मा पि सिमं-नानं इकार-आकारादेसा होन्ति, क. व्या. 181.

आदिच्च' पु., 'अदिति' से व्यु. [आदित्य], अदिति का पुत्र, सूर्य - आदिच्चो सूरियो सूर्यो, सतरसि दिवाकरो, अभि. प. 62; - च्चो प्र. वि., ए. व. - नक्खतानं मुखं चन्दो, आदिच्चो तपतं मुखं, महाव. 323; सु. नि. 574; मज्झे समणसङ्गस्स, आदिच्चो च विरोचसि, थेरगा. 820; सु. नि. 555; यथा आदिच्चो उग्गच्छन्तो सब्बं तमगतं विधमेत्वा, थेरगा. अहु. 2.260-61; आदिच्चो वुच्चति सूरियो, महानि. 251; - च्चं द्वि. वि., ए. व. - अङ्गीरसं पस्स विरोचमानं, तपन्तमादिच्चमेवन्तलिक्खेति, स. नि. 1(1).99; - स्स

## आदिच्च

74

## आदिच्चबन्धु

ष. वि., ए. व. — आदिच्चस्स, भिक्खवे, उदयतो एतं पुब्बइमं एतं पुब्बनिमित्तं, यदिदं—अरुणुग्गं, स. नि. 3(1):122; — च्चे सप्त. वि., ए. व. — अनुग्गतमिह आदिच्चे, पनादो विपुलो अहु, अप. 1.261; स. उ. प. के रूप में; तरुणा. — पु., कर्म. स. [तरुणादित्य], प्रातःकालीन सूर्य — सप्पम त्रि., ब. स., प्रातःकालीन सूर्य के समान आभा वाला — भे सप्त. वि., ए. व. — फुल्लारविन्दसंकासे, तरुणादिच्चसप्पमे, अप. 2.202; नरा. — पु., तत्पु. स. [नरादित्य], सूर्य के समान तेजस्वी मनुष्य — च्च संबो., ए. व. — पणमामि नरादिच्च, आदिच्चकुलकेतुकं, अप. 2.202; बाला. — पु., कर्म. स., प्रातःकालीन सूर्य — बालादिच्चपभापुञ्जसंनिभे सुमनोहरे, चू. वं. 74.212; बुद्धा. — पु., कर्म. स., बुद्धरूपी सूर्य, सूर्य के समान देदीप्यमान आभा से युक्त बुद्ध — च्चे सप्त. वि., ए. व. — बुद्धादिच्चे अनुदिते सिद्धिमग्गावभासके, सद्धम्मो. 14; अवैकल्लमनुस्सत्तं बुद्धादिच्चाभिमण्डितं, सद्धम्मो. 17; — च्चोदय पु., तत्पु. स., बुद्धरूपी सूर्य का उदय — यो प्र. वि., ए. व. — बुद्धादिच्चोदयो चापि मतो अच्चन्तदुल्लभो, सद्धम्मो. 40; सरदा. — पु., तत्पु. स., शरद ऋतु का शीतल सूर्य — सदिस त्रि., शरत्कालीन सूर्य जैसा — सं द्वि. वि., ए. व. — सरदादिच्चसदिसं, रंसिजालसमुज्जलं, अप. 2.206.

आदिच्च<sup>१</sup> त्रि., आदित्य गोत्र वाला, सूर्यवंशी — च्चा पु., प्र. वि., ब. व. — आदिच्चा नाम गोत्तेन, साकिया नाम जातिया, सु. नि. 425.

आदिच्च<sup>२</sup> पु., तमिल देश का एक अधिकारी — तदा आदिच्चदमिच्चाधिकारीति समञ्जितो, चू. वं. 76.39.

आदिच्चकुलकेतुक त्रि., सूर्यवंश की पताका को फहराने वाला — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — पणमामि नरादिच्च, आदिच्चकुलकेतुकं, अप. 2.202.

आदिच्चगोत्र त्रि., ब. स., सूर्यवंशी, सूर्य के गोत्र वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — अहं कोण्डञ्जगोत्तो, अहं आदिच्चगोत्तो ति मानं करोति, विभ. अहु. 440.

आदिच्चन्वय पु., तत्पु. स. [आदित्यान्वय], सूर्य वंश, सूर्य से प्रारम्भ होने वाली कुलपरम्परा — मण्डन त्रि., सूर्यवंश को शोभित करने वाला — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — देवी पि सुत्वा तं सब्बं आदिच्चन्वयमण्डना, चू. वं. 63.11.

आदिच्चपथ पु., तत्पु. स. [आदित्यपथ], सूर्य के जाने का मार्ग, आकाश, अन्तरिक्ष — थो प्र. वि., ए. व. — अन्तलिक्खं

खमादिच्चपथोब्बं गगनाम्बरं, अभि. प. 45; वेहासो गगनं देवो खमादिच्चपथो पि च, सद्. 2.442; — थे सप्त. वि., ए. व. — हंसादिच्चपथे यन्ति, आकासे यन्ति इद्धिया, ध. प. 175; इमे हंसा आदिच्चपथे आकासे गच्छन्ति, ध. प. अहु. 2.101.

आदिच्चपाक/आदिच्चपक्क पु./त्रि., तत्पु. स., सूर्य की उष्णता या उसके द्वारा पकाया गया या तैयार किया गया — को पु., प्र. वि., ए. व. — एत्थ मधुकपुष्फरसो अग्निपाको वा होतु आदिच्चपाको वा, महाव. अहु. 361; — कं द्वि. वि., ए. व. — आदिच्चपाकं कत्वा परिरसावेत्वा गहितं सत्ताहकालिकं होति, पारा. अहु. 2.264; वट्टतादिच्चपाकं तु, अग्निपक्कं न वट्टति, विन. वि. 2687; — केन पु., तृ. वि., ए. व. — आतपे आदिच्चपाकेन पचित्वा परिरसावेत्वा, महाव. अहु. 361; महानि. अहु. 321; ततो आदिच्चपाकेन पचित्वा पक्कपयोधनिका विय तिड्ढति, स. नि. अहु. 1.247; — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — एतानि सब्बानि ... कतानि आदिच्चपाकानि वा ... यामकालिकानि नाम, कद्दा. अहु. 220.

आदिच्चपारिचरिया स्त्री., तत्पु. स. [आदित्यपरिचर्या], सूर्य की उपासना, सूर्यपूजा — या प्र. वि., ए. व. — आदिच्चपद्धानन्ति जीविकत्थाय आदिच्चपारिचरिया, दी. नि. अहु. 1.85.

आदिच्चबन्धु<sup>१</sup> पु., [आदित्यबन्धु], सूर्य का भाई-बन्धु, सूर्य वंश में उत्पन्न, सूर्यवंशी (बुद्ध की एक उपाधि) — न्धु प्र. वि., ए. व. — सक्कसीहो तथा सक्कमुनि चादिच्चबन्धु च, अभि. प. 5; 'गोतमो, आदिच्चबन्धू'ति गोत्ततो च पसिद्धो, सद्. 1.73; तस्मा बुद्धो आदिच्चबन्धूति, महानि. 251; — नं/न्धुनं द्वि. वि., ए. व. — तण्हासल्लरस हन्तारं, वन्दे आदिच्चबन्धुनन्ति, स. नि. 1(1):222; आदिच्चबन्धुनन्ति आदिच्चबन्धुं सत्थारं दसबलं वन्दामीति वदति, स. नि. अहु. 1.245; — ना तृ. वि., ए. व. — ते तोसिता चक्खुमता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना, सु. नि. 1134; — नो ष. वि., ए. व. — नाकासिं सत्थु वचनं, बुद्धरस्सादिच्चबन्धुनो, वि. व. 242; वचनं अनुगन्धानं तस्सेवादिच्चबन्धुनो, सद्धम्मो. 74.

आदिच्चबन्धु<sup>२</sup> पु., व्य. सं., एक प्रत्येक बुद्ध का नाम — स्स ष. वि., ए. व. — आदिच्चबन्धुस्स वचो निसम्म, एको चरे खग्गविसाणकप्पो, सु. नि. 54; अप. 1.9; येन कारणेन फस्सयेति एतं आदिच्चबन्धुस्स पच्चेकबुद्धस्स वचो निसम्म, सु. नि. अहु. 1.83; अप. अहु. 1.144.

## आदिच्चरंसि

75

## आदित्त

आदिच्चरंसि स्त्री., तत्पु. स. [आदित्यरश्मि], सूर्य की किरण – हि तृ. वि., ब. व. – उत्सापिताहि नेकाहि वारितादिच्चरंसिहि, चू. वं. 85.6; – सावरण त्रि., सूर्य की किरणों को ढक लेने वाला अथवा उनसे रक्षा करने वाला – णं नपुं., द्वि. वि., ए. व. – आदिच्चरंसावरणं, को एति सिरिया जलं, जा. अहु. 7.63; जा. अहु. 5.314.

आदिच्चरंसी पु., व्य. सं., आनन्द की आचार्य-परम्परा से सम्बद्ध एक स्थविर – नो च. वि., ए. व. – कुलविहारं नाम पारेवारविहारं आदिच्चरंसिनो नाम थेरस्स अदासि, सा. वं. 80.

आदिच्चवंस पु., तत्पु. स. [आदित्यवंश], 1. सूर्य से प्रारम्भ वंश-परम्परा, सूर्यवंश, 2. त्रि., सूर्यवंशी – सो पु., प्र. वि., ए. व. – तत्थ आदिच्चवंसो, ओक्काकराजवंसोति जानितब्बं, ततो सज्जातताय साकिया आदिच्चयोत्ताति, थेरगा. अहु. 2.89; – से सप्त. वि., ए. व. – आदिच्चवंसे सम्भूतत्ता आदिच्चो बन्धु एतस्साति, थेरगा. अहु. 1.87.

आदिच्चवणसंकास त्रि., [आदित्यवर्णसंकाश], सूर्य के समान देदीप्यमान या चमकीला – सा स्त्री., प्र. वि., ए. व. – आदिच्चवणसङ्कासा, हेमचन्दनगन्धिनी, जा. अहु. 5.149.

आदिच्चसन्ताप पु., तत्पु. स. [आदित्यसन्ताप], सूर्य की गर्मी, कड़ी धूप – पेन तृ. वि., ए. व. – सूरियसन्तापेति आदिच्चसन्तापेन, चरिया. अहु. 215.

आदिच्चसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1).122.

आदिच्चानुपरिवत्तन नपुं., तत्पु. स., सूर्य के पीछे पीछे घूमना स. प. के अन्त. – सो दुक्खं विहरतीति पञ्चातपतप्पनमरुधपात-पतनादिच्चानुपरिवत्तन-उक्कुटिकप्पधानादीनि अनुयुज्जतो दिट्ठे, अ. नि. अहु. 1.361.

आदिच्चुपद्धान नपुं., तत्पु. स. [आदित्योपस्थान], सूर्यपूजा, सूर्य की उपासना – नं प्र. वि., ए. व. – देवपङ्कं आदिच्चुपद्धानं महत्पद्धानं, दी. नि. 1.10; आदिच्चुपद्धानन्ति जीविकत्थाय आदिच्चपारिचरिया, दी. नि. अहु. 85.

आदितो अ., आदि से व्यु. प. वि., प्रतिरू. निपा. [आदितः], 1. प्रारम्भ से ही – आदिप्पभूतीहि तो वा होति; आदो, आदितो; मज्झतो अन्ततो, पिड्डितो पस्सतो मुखतो, मो. व्या. 4.98; सो आदितो पद्दाय असप्पायभावं कथेसि, जा. अहु. 1.450; तस्स आदितो पभुति अत्थसंवण्णनं आरभिस्सामि, खु. पा. अहु. 3; 2. सर्वप्रथम, पहले पहल – या

महाकस्सपादीहि महाथेरेहि आदितो, म. वं. 5.1; अथादितो पनेकं वा, द्वे वा तीणिपि सत्त वा, विन. वि. 2004; आदितो पन भिक्खुस्स, चतूस्वन्तिमवत्थुसु उत्त. वि. 569; इमस्मि सङ्गारलोके सिक्खितब्बधम्मेषु सीलं आदितो सिक्खेय्य, थेरगा. अहु. 2.186; 3. स. उ. प. के रूप में, आदि से, से प्रारम्भ होने वाला – रज्जा कातञ्जुजा तेन थूपकारापनादितो, म. वं. 26.24; नो च द्वादितो नग्धि, क. व्या. 67; मनोवितक्के अस्सादादितो यथाभूतं जानन्तो, उदा. अहु. 192; लक्खणादितो पन विजाननलक्खणं चित्तं, घ. स. अहु. 158.

आदित्तं त्रि., आ + दीप का भू. क. कृ. [आदीप्त/आदीपित], धधक रहा, जल रहा, प्रज्वलित, अत्यधिक चमक रहा – आदित्ते गब्बिते दित्तो, पिड्डं तु चुण्णितेपि च, अभि. प. 1075; – त्तो पु., प्र. वि., ए. व. – आभुसो दिप्पतीति आदित्तो, उच्चतीति उत्तो, विसंसेन विच्चती ति विवित्तो, क. व्या. 582; चक्खुसम्पस्सो आदित्तो ... मनोसम्पस्सो आदित्तो, महाव. 39; आदित्तो लोकसन्निवासोति, पटि. म. 115; आदित्तोति दुक्खलक्खणवसेन पीळायोगतो सन्तापनट्ठेन आदीपितो ... आदित्तोति रागादीहियेव आदित्तो, पटि. म. अहु. 2.13; – त्ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. – ससागरन्ता पथवी, आदिन्ता विय होति मे, अप. 1.43; – त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. – सब्बं भिक्खवे, आदित्तं, महाव. 39; य उदकं तदेव आदित्तं, जा. अहु. 3.453; आदित्तं वत्त रागग्गि, तण्हानं विजितं तदा, बु. वं. 353; आदित्तं वेत्त वा सीसं वा अज्झुपेक्खित्वापि, स. नि. अहु. 1.40; – त्तेन तृ. वि., ए. व. – मुखं विवरित्वा आदित्तेन सम्पज्जलितेन सजोतिभूतेन, म. नि. 3.224; येन केनचि अन्तमसो लोहखण्डेनपि आदित्तेन कप्पियं कातब्बं, पाचि. अहु. 28; – तो प. वि., ए. व. प्रज्वलित अवस्था में – कामे आदित्तो दिस्वा, जातरूपानि सत्थतो, थेरगा. 790; वत्थुकामे किलेसकामे च एकादसहि अग्गीहि आदित्तभावतो दिस्वा, थेरगा. अहु. 2.254; आदित्ततोहं समथेहि युत्तो, पञ्जाय दच्छं तदिदं कदा मे, थेरगा. 1102; आदित्तोति एकादसहि अग्गीहि आदित्तभावतो, थेरगा. अहु. 2.394; – स्मिं सप्त. वि., ए. व. – आदित्तस्मिं अगारस्मिं, यं नीहरति भाजनं, स. नि. 1(1).35; – त्ताय स्त्री., सप्त. वि., ए. व. – आदिन्ताय लोहपथविया उत्तानकं निपज्जापेत्वा, जा. अहु. 1.484; – त्ता पु., प्र. वि., ब. व. – अत्थस्सा तयो भवा आदिन्ता गेहा विय गीवाय बद्धकुणपं विय च उपट्ठहिसु, घ. प. अहु. 2.64-65.

## आदित्त

76

## आदित्तभवत्तय

**आदित्त**<sup>2</sup> नपुं., आदि का भाव., केवल स. प. में ही प्राप्त [आदित्व], आदि में या प्रारम्भ में रहना; **अचिन्तिया**. – नपुं., [अचिन्त्यादित्व], अचिन्तनीय आदि की अवस्था – **अचिन्तियादित्तमुपागतो यो**, जिना. 4; **कुसलादित्तसाधक** – त्रि., कुशल-भाव के प्रारम्भभाव का निष्पादक – **को पु.**, प्र. वि., ए. व. – **धम्मानं कुसलादीनं, कुसलादित्तसाधको**, अभि. अव. 543; **तस्मा हि कुसलादीनं, कुसलादित्तसाधको**, अभि. अव. 546.

**आदित्तक** त्रि., आदित्त से व्यु. [आदीप्तक], धधक रहा, जल रहा, प्रज्वलित – **को पु.**, प्र. वि., ए. व. – **एवं आदित्तको लोको, जराय मरणेन च**, स. नि. 1(1).35.

**आदित्तगेहसदिस** त्रि., [आदीप्तगेहसदृक], जलते हुए या आग से धधक रहे घर जैसा – **सा पु.**, प्र. वि., ब. व. – **तयो भवा आदित्तगेहसदिसा खायिंसु**, जा. अष्ट. 1.71.

**आदित्तघर** नपुं., कर्म. स. [आदीप्तगृह], आग से धधक रहा घर – **तो प.** वि., ए. व. – **पुन डह्णितुमिच्छसीतिआदित्तघरतो नीहटमण्डं विय**, स. नि. अष्ट. 1.270.

**आदित्तचेल** त्रि., ब. स., वह, जिसके वस्त्र आग से जल रहे हों – **लो पु.**, प्र. वि., ए. व. – **आदित्तचेलो वा आदित्तसीसो वा ...**, अ. नि. 1(2).108; **स्स ष. वि., ए. व. आदित्तचेलसिरसूपमो मुनि. भङ्गानुपस्सी अमतस्स पतियाति**, पटि. म. अष्ट. 1.220.

**आदित्तछारिका** स्त्री., कर्म. स., तपता हुआ या धधक रहा अंगारा – **कसङ्गात** त्रि., धधक रहे अंगारे जैसा – **तेन पु.**, तृ. वि., ए. व. – **आदित्तछारिकसङ्गातेन कुक्कुळेन विय**, जा. अष्ट. 3.395.

**आदित्तजातक** नपुं., जातक संख्या 424 का शीर्षक, जा. अष्ट. 3.414-418.

**आदित्तदेसना** स्त्री., "सभी कुछ आदीप्त है या धधक रहा है" इस उपदेश से युक्त महाव. का 'आदित्तपरियाय' नामक सुत्त, इसे आदित्तसुत्त की संज्ञा से भी अभिहित किया गया है। संयुक्तनिकाय में तीन आदित्तसुत्त हैं। प्रथम आदित्तसुत्त जेतवन में बुद्ध के सम्मुख एक देवता द्वारा उच्चरित है। दूसरा आदित्तसुत्त श्रावस्ती में उपदिष्ट हुआ था। तीसरा आदित्तसुत्त, जो आदित्तपरियायसुत्त के नाम से भी जाना जाता है, गया में उपदिष्ट हुआ। उपर्युक्त सुत्तों की विषय-वस्तु प्रायः समान है। इस सुत्त की चर्चा जा. अष्ट. 1.91 तथा 4.161 में भी आई है। अ. नि. अष्ट. 1.82 व 1.227 में और थेरगा. अष्ट. 2.69 में भी इस सुत्त का

जिक्र आया है; – नं द्वि. वि., ए. व. – **आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानोति आदित्तदेसनं ओलोकेन्तो**, महानि. अष्ट. 372.

**आदित्तपण्णकुटी** स्त्री., कर्म. स. [आदीप्तपर्णकुटी], जलती हुई फूस की झोपड़ी – **तेसं आदित्तपण्णकुटि विय तयो भवा उपड्डहिंसु**, स. नि. अष्ट. 2.171; अ. नि. अष्ट. 1.141.

**आदित्तपण्णसाला** स्त्री., कर्म. स. [आदीप्तपर्णसाला], उपरिवत् – **ला प्र. वि., ए. व. – मयं भणे आदित्तपण्णसाला विय तयो भवाति पच्चजिम्हा**, अ. नि. अष्ट. 1.142; – लं द्वि. वि., ए. व. – **अत्तानं आदित्तपण्णसालं पविद्धं विय च मज्झमानो**, जा. अष्ट. 1.142.

**आदित्तपरियाय** पु./नपुं., महाव. तथा स. नि. में संगृहीत वह उपदेश, जिसमें उपमा द्वारा रूप, वेदना आदि को राग, द्वेष एवं मोह की अग्नि से प्रज्वलित बतलाया गया है – **यो पु.**, प्र. वि., ए. व. – **कतमो च भिक्खवे, आदित्तपरियायो, धम्मपरियायो**, स. नि. 2(2).172; – यं द्वि. वि., ए. व. – **'आदित्तपरियायं वो, भिक्खवे, धम्मपरियायं देसेस्सामि**, स. नि. 2(2).172; **आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानो**, महानि. 365; **उपसम्पन्नो आदित्तपरियायावसाने अरहत्तं**, स. नि. अष्ट. 2.191; – **येन तृ. वि., ए. व. – निमित्तग्गाहो'तिआदिना आदित्तपरियायेन वेदितब्बा**, अ. नि. अष्ट. 3.129; – **देसना** स्त्री., तत्पु. स., आदित्तपरियाय का उपदेश – नं द्वि. वि., ए. व. – **एवं आदित्तपरियायदेसनं सुत्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं ...**, अप. अष्ट. 2.281; – **य तृ. वि., ए. व. – गयासीसे निसीदापेत्वा आदित्तपरियायदेसनाय अरहत्ते पतिट्ठापेत्वा**, जा. अष्ट. 1.91; बु. वं. अष्ट. 22; ध. प. अष्ट. 1.52; – **सुत्त नपुं.**, महाव. तथा स. नि. में संगृहीत वह सुत्त, जिसमें रूप, वेदना, चक्षु, श्रोत आदि को राग, द्वेष एवं मोह की अग्नि से प्रज्वलित बतलाया गया है – **आदित्तपरियायसुत्तं निद्धितं**, महाव. 40; **आदितागारसदिसे कत्वा दस्सेतुं बट्ठीतीति आदित्तपरियायसुत्तं देसेसि**, अ. नि. अष्ट. 1.227; **गयासीसे आदित्तपरियायसुत्तपरियोसाने जटिलसहस्सं अरहत्ते पतिट्ठापेसि**, अ. नि. अष्ट. 1.82.

**आदित्तभवत्तय** नपुं., कर्म. स. [आदीप्तभवत्तय], कामभव, रूपभव एवं अरूपभव, इन तीन भवों का दाह या जलन – **रागादीहि एकादसहि अग्गीहि आदित्तं भवत्तयसङ्गातं अङ्गारकासुयेव**, उदा. अष्ट. 290; पाठा. आदित्तं भवत्तयसङ्गातं.

## आदित्तवग्ग

77

## आदिपरियोसान

आदित्तवग्ग पु., स. नि. के एक वग्ग का शीर्षक, स. नि. 1(1).35-41.

आदित्तसीस त्रि., ब. स. [आदीप्तशीर्ष], वह, जिसका शिर आग से जल रहा है — सो पु., प्र. वि., ए. व. — चरेय्यादित्तसीसोव, नत्थि मच्चुस्स नागमो'ति, स. नि. 1(1).128; महानि. 32; यथा च उद्धमानो मत्थके आदित्तसीसो तस्स निब्बापनत्थाय वीरियं आरभति, स. नि. अहु. 1.45; — सूपम त्रि., ब. स. [आदीप्तशीर्षोपम], आग से जल रहे शिर जैसा — मं पु., द्वि. वि., ए. व. — धम्मदायादभाव आकङ्कमानो आदित्तसीसूपमं पच्चवेक्खित्वा, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).102.

आदित्तसुत्त नपुं., स. नि. के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 1(1).35-36; 2(1).65-66; 2(2).18-19; द्रष्ट. आदित्तदेसना.

आदितागार पु., कर्म. स. [आदीप्तागार], आग की लपटों से जल रहा घर — सदिस त्रि., आग से जल रहे घर जैसा — से पु., द्वि. वि., ब. व. — इमेसं तयो भवे आदितागारसदिसे कत्वा, अ. नि. अहु. 1.227.

आदिदीघ त्रि., व्याकरण-ग्रन्थों में प्रयुक्त [आदिदीर्घ], प्रारम्भ में दीर्घ अथवा बृहत्, ऐसा शब्द जिसका प्रथम स्वर दीर्घ हो — घो पु., प्र. वि., ए. व. — आदिदीघो ताव — पाकारो, नीवारो, पासादो, पाकटो, पातिमोक्खो, पाटिकङ्को इच्चेवमादि, क. व्या. 405; तत्थ आदिदीघो ताव, पाकारो, नीवारो पासादो इच्चादि, सह. 3.807.

आदिदीपक अलंकारशास्त्र के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [आदिदीपक], दीपक नामक अलङ्कार के तीन प्रभेदों में से वह प्रभेद, जिसमें गाथा का आदि पद अन्य तीन पदों का उपकारक रहे — दीपकं नाम तं चादिमज्झन्तविसयं तथा, सुबोधा. 230; (बौद्धलङ्कारशास्त्रम्, नाम से प्रकाशित).

आदित्र त्रि., आ + रदा का भू. क. कृ. [आदत्त], ले लिया गया, ग्रहण कर लिया गया, स्वीकार किया गया — त्रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — एवं पञ्चङ्गसमन्नागतं खो, उपाति, अत्तादानं आदित्रं, चूळव. 409; अत्थि खो पन मया अदित्रं आदित्रं अहम्महि आपायिको, स. नि. 2(2).305; — त्रे सप्त. वि., ए. व. — आदित्रे अनादित्रसज्जी, आपति दुक्कटस्स, पाचि. 163; — कप्पक पु., ग्रहण करने के लिए अनुमोदित — का प्र. वि., ब. व. — अदसा रजितायेव, वट्टतादित्रकप्पका, विन. वि. 578; — तिणकड्डसाखापलास त्रि., तृणों, लकड़ियों, शाखाओं एवं पत्तों को पकड़ चुका — सो

पु., प्र. वि., ए. व. — यथा, महाराज, महतिमहाअगिकखन्धो आदित्रतिणकड्डसाखापलासो परियादित्रभक्खो, मि. प. 279; — दण्ड त्रि., ब. स. [आदत्तदण्ड], शा. अ., दण्ड को धारण किया हुआ, ला. अ., वह, जो अपने दासों आदि को दण्ड-विधान देता हो — ण्डो पु., प्र. वि., ए. व. — यो पन आदिन्नदण्डो हुत्वा ..., जा. अहु. 2.195; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — परा नादित्रदण्डस्स, परेसं अनिकुब्बतो ..., जा. अहु. 2.195; — ण्डानं ष. वि., ब. व. — राजूनं आदित्रदण्डानं आदित्रसत्थानं एवरूपं खन्तिसोरच्चं भविस्सति, महाव. 470; — पुब्ब त्रि., पूर्वकाल में ग्रहण किया गया — ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तिणसलाकमत्तमि अदित्रं नादित्रपुब्बं, जा. अहु. 1.421; — सत्थ त्रि., ब. स. [आदत्तशस्त्र], शस्त्र को ग्रहण किया हुआ — त्थानं पु., ष. वि., ब. व. — राजूनं आदित्रदण्डानं आदित्रसत्थानं एवरूपं खन्तिसोरच्चं भविस्सति, महाव. 470.

आदित्रत्त नपुं., आदित्र का भाव. [आदत्तत्त्व], ग्रहण किया जाना — ता प. वि., ए. व. — समं आदित्रत्ता समाधि, विसमं अनादित्रत्ता समाधि, पटि. म. 44; एसितत्ता नेसितत्ता, आदित्रत्ता अनादित्रत्ता पटिपन्नत्ता नप्पटिपन्नत्ता ..., पटि. म. अहु. 1.201.

आदित्रवन्तु त्रि., आ + रदा का भू. क. कृ. [आदत्तवत्], वह, जो ग्रहण कर चुका है या पकड़ चुका है, पकड़ लिया, ग्रहण कर लिया — वा पु., प्र. वि., ए. व. — सीहबाहुनरिन्दो सो सीहं आदित्रवा इति, म. वं. 7.42; तत्थ आदित्रवा इती ति सीहं गहितं वा इति सो सीहबाहुनरिन्दो सीहलो नाम जातो ति अत्थो, म. वं टी. 223(ना.).

आदिपद नपुं., कर्म. स., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [आदिपद], समास का प्रथम पद, प्रथम स्थान या अवस्था, किसी सन्दर्भविशेष में प्रयुक्त प्रथम शब्द — दं द्वि. वि., ए. व. — अज्झस्मि परियाये आरद्धे आदिपदं गहेत्वाव पदभाजनं करीयति, ध. स. अहु. 189; — स्स ष. वि., ए. व. — इदं केवलं पुच्छाय आगतस्स आदिपदस्स पच्चुद्धरणमत्तमेव, परि. अहु. 138; — दानं ब. व. — तत्थ सतिसम्बोज्झन्तिआदिना नयेन वुत्तानं सत्तत्रं आदिपदानं, अ. नि. अहु. 1.376.

आदिपरियोसान नपुं., समा., द्व. स. [आदिपर्यवसान], आदि एवं अन्त — नं प्र. वि., ए. व. — एकस्स मज्झं पाकटं होति, न आदिपरियोसानं, पटि. म. अहु. 2.83.



## आदिपाद

78

## आदिब्रह्मचरियक

**आदिपाद पु.**, श्रीलङ्का के प्राचीन शासकों के एक उच्च पदाधिकारी की शासकीय उपाधि — दो प्र. वि., ए. व. — आदिपादो व सो तस्मा हुत्वा रज्जं विचारयि, चू. वं. 48.31.

**आदिपादकजम्बु स्त्री.**, श्रीलङ्का के एक प्राचीन स्थान का नाम — आदिपादकजम्बु ति विस्तुतमि पदेसके, चू. वं. 61.15.

**आदिपादकपुत्रागखण्ड पु.**, श्रीलङ्का के रोहण-क्षेत्र के एक स्थान का नाम — नाम त्रि., आदिपादपुत्रागखण्ड नाम वाला — म मिह नपुं., सप्त. वि., ए. व. — आदिपादकपुत्रागखण्डनाममिह ठानके, चू. वं. 75.14.

**आदिपाराजिकुड्डान त्रि., ब. स.**, प्रथम पाराजिक से उत्पन्न होने वाला — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आदिपाराजिकुड्डाना अयन्ति परिदीपिता, उत्त. वि. 340.

**आदिपुब्बङ्गम त्रि.**, पूर्ववर्तियों में प्रथम, प्रारम्भ में ही पूर्ववर्ती — मं नपुं., प्र. वि., ए. व. — मूलनिदानं पतमं आदिपुब्बङ्गमं धुरं दी. वं. 4.32; — मो पु., प्र. वि., ए. व. — आदिपुब्बङ्गमो असि, तस्स दानस्सिदं फलं, अप. 1.338.

**आदिपुरिस पु.**, तत्पु. स. [आदिपुरुष], प्रथम व्यक्ति, पहला पुरुष, प्रथम पुरुष (व्या. के सन्दर्भ में) — सो प्र. वि., ए. व. — यज्जि लोके अच्छरियिद्वानं बोधिसत्तोव तत्थ आदिपुरिसोति, पटि. म. अट्ठ. 1.299; — वाचक त्रि., प्रथम पुरुष का अर्थ कहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — द्वेधा वा वत्तमानायं आदिपुरिसवाचको अत्थो भवे ति एतस्स भवती ति पि युज्जति, सट्ठ. 1.33.

**आदिपोत्थकी पु.**, राजा के भण्डारगृह का अधिकारी — की प्र. वि., ए. व. — अस्समण्डलत्तिस्थाद्वो कित्तिनामादिपोत्थकी, चू. वं. 72.27; — किं द्वि. वि., ए. व. — ततो रक्खाधिकारिं च सामन्तं चादिपोत्थकिं, चू. वं. 72.160; क्यानगामे नियोजेत्वा कित्तिनामादिपोत्थकिं, चू. वं. 72.207.

**आदिप्पति आ +दिपि का वर्त.**, प्र. पु., ए. व. [आदीप्यते], प्रकाशित होता है, चमकता है, जलता है — न्ति ब. व. — अयञ्च महापथवी सिनेरु च पब्बतराजा आदिप्पन्ति पज्जलन्ति एकजाला भवन्ति, अ. नि. 2(2).239.

**आदिप्पन नपुं.**, आ +दिपि से व्यु., क्रि. ना., प्रकाशित होना, प्रभास्वर होना, जाज्वल्यमान होना, तेज प्रभा वाला होना — तो प. वि., ए. व. — आदिप्पनतो पन आदिच्चो, लीन. (दी.नि.टी.) 3.137.

**आदिब्रह्मचरिय नपुं.**, ब्रह्मचर्य अथवा आर्यमार्ग के प्रारम्भ में ही पालनीय शील, ब्रह्मचर्य-जीवन की पूर्णता हेतु प्रारम्भ में ही पालनीय प्राणातिपात से विरति आदि पांच, आठ या दश शील — आदिब्रह्मचरियं तु तदञ्जं सीलमीरितं, अभि. प. 431; ब्रह्मचरियस्स अरियस्स मग्गस्स आदिमिह तदत्थाय च चरितव्वता आदिब्रह्मचरियं, अभि. प. सूची. 37; — यं प्र. वि., ए. व. — आदि ब्रह्मचरियस्साति आदिब्रह्मचरियं, विसुद्धि. महाटी. 1.30; — यं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — तिण्णविचिकिच्छो खो पन सो भगवा विगतकथं कथो परियोसितसङ्कप्पो अज्झासयं आदिब्रह्मचरियं, दी. नि. 2.165; आदिब्रह्मचरियं पटिजानन्ति, तेसाहमस्मि, म. नि. 2.434; आदिब्रह्मचरियन्ति ब्रह्मचरियस्स आदिभूता उप्पादका जनकाति एवं पटिजानन्तीति वुत्तं होति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.318 — येन त्. वि., ए. व. — करणत्थे पट्ठवत्तवचनं, अधिकासयेन उत्तमनिस्सयभूतेन आदिब्रह्मचरियेन पेराणब्रह्मचरियभूतेन च अरियमग्गेन, दी. नि. अट्ठ. 2.225.

**आदिब्रह्मचरियक त्रि.**, [बौ. स. आदिब्रह्मचर्यक], भिक्षुजीवन के आधारभूत शीलों से सम्बद्ध, ब्रह्मचर्य के मार्ग के आदि में अथवा पूर्वभाग में आया हुआ, बुद्ध की त्रिविध शिक्षाओं में आदिभूत शील की शिक्षा के साथ सम्बद्ध — को पु., प्र. वि., ए. व. — आदिब्रह्मचरियकोति मग्गब्रह्मचरियस्स आदि पुब्बभागप्पटिपत्तिभूतो, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.180; आदिब्रह्मचरियकोति सिक्खत्तयसङ्गहस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतो, अ. नि. अट्ठ. 3.197; — यिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आदिब्रह्मचरियिकाति मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभूतानं चतुन्नं महासीलानमेतं अधिवचनं, अ. नि. अट्ठ. 2.392; — य च/प. वि., ए. व. — आदिब्रह्मचरियकायाति सेक्खपण्णतियं विनेतुं न पटिबलोति अत्थो, महाव. अट्ठ. 259; — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — नादिब्रह्मचरियकन्ति सिक्खत्तयसङ्गातस्स सासनब्रह्मचरियकस्स न आदिमत्तं, अधिसीलसिक्खामत्तम्पि न होति, दी. नि. अट्ठ. 1.280; न आदिब्रह्मचरियकन्ति ब्रह्मचरियस्स आदिमत्तम्पि पुब्बभागसीलमत्तम्पि न होति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.103; — का पु., प्र. वि., ब. व. — नेते, भिक्खवे, वितक्का अत्थसंहिता नादिब्रह्मचरियका ..., स. नि. 3(2).481; — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — अत्थसंहितानि, भिक्खवे, धम्मचेतियानि आदिब्रह्मचरियकानी ति, म. नि. 2.333.

## आदिभावभूत

79

## आदिय

आदिभावभूत त्रि., [आदिभावभूत]. आदि में या प्रारम्भिक अवस्था में विद्यमान - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - मग्नब्रह्मचरियस्स आदिभावभूतन्ति आदिब्रह्मचरियकं, विसुद्धि. 1.12; आदिभावभूतन्ति आदिमिह भावेतब्बतं निष्फादेतब्बतं भूतं एतं आदिभावभूतं, विसुद्धि. महाटी. 1.31.

आदिभिक्षा स्त्री., कर्म. स. [आदिभिक्षा]. प्रथम भिक्षादान. सर्वोत्तम भिक्षादान - क्खं द्वि. वि., ए. व. - हट्ठो हट्ठेन चित्तेन, आदिभिक्षमदासहं अप. 1.46; आदिभिक्षं पठमं आहारं बुद्धभूतस्स अहं अदासिन्ति सम्बन्धो, अप. अट्ठ. 1.308.

आदिभूत त्रि., [आदिभूत]. 1. व्याकरण के सन्दर्भ में, किसी भी शब्द के आदि में आया हुआ - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - वेदानमादिभूतं सा, सावित्री तिपदं सिया, अभि. प. 417; - तानं पु., ष. वि., ब. व. - इ-उ इच्चेतेसं आदिभूतानं मा बुद्धिं होति, क. व्या. 403; 2. मूलभूत पूर्ववर्ती, प्रारम्भ में ही अथवा प्रथम स्थान में रहने वाला - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आदिकम्मिको नाम यो तस्मिं तस्मिं कम्मे आदिभूतो, पारा. अट्ठ. 1.216; यो तस्मिं तस्मिं वत्थुस्मिं आदिभूतो, सो आदिकम्मिको, कट्ठा अट्ठ. 118; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - न आदिब्रह्मचरियकन्ति सिक्खत्तयसङ्गहितस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतं न होति, दी. नि. अट्ठ. 3.89; निब्बिदानुलोमजाणेषु विथ आदिभूतं मुञ्चितुकम्यताजाणं अगगहेत्ता, पटि. म. अट्ठ. 2.111; स. उ. प. के रूप में संयोग- त्रि., तत्पु. स. संयुक्त अक्षर-समूह के आदि में आया हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - संयोगादिभूतो नकारो निग्गहीतमापज्जते, क. व्या. 609; स. पू. प. के रूप में, - तं नपुं., भाव. [आदिभूतत्व]. आदिभूत होना, प्रारम्भ में आना - त्ता प. वि., ए. व. - जाणस्स पटिपत्तिमलविसोधकत्तेन पटिपत्तिया आदिभूतत्ता, पटि. म. अट्ठ. 1.8; मुदुभूतो हि पुब्बभागसमाधि आदिभूतत्ता समं एसति, विसमं नेसति नाम, पटि. म. अट्ठ. 1.201.

आदिमग्ग पु., तत्पु. स. [आदिमार्ग]. मार्ग का प्रथम चरण, स्रोतपत्ति-मार्ग - दिट्ठयादिमग्गो जाणक्खिक्खणलद्धिस्सु दस्सनं, अभि. प. 888; - ग्गो प्र. वि., ए. व. - आदिमग्गो तयो पाका, आरुप्पा च तथूपरि, अभि. अव. 267; - ग्गेन तु. वि., ए. व. - आदिमग्गेन संयुत्तं, जाणन्ति जाणदस्सनं, अभि. अव. 1338.

आदिमज्झ नपुं., समा. द्व. स. [आदिमध्य], आदि एवं मध्य, किसी अक्षरसमूह का आदि एवं मध्य - ज्झं' प्र.

वि., ए. व. - एकस्स परियोसानं पाकटं होति, न आदिमज्झं, ... पटि. म. अट्ठ. 2.82; - ज्झं' द्वि. वि., ए. व. - सो सज्झायं करोन्तो आदिमज्झयेव पस्सति, ... इमस्स सिप्पस्स आदिमज्झमेव पस्सामि, नो परियोसानन्ति, खु. पा. अट्ठ. 157; - ज्झेसु सप्त. वि., ब. व. - अन्ते पज्जायमाने आदिमज्झेसु अपज्जायमानेसु ..., ध. प. अट्ठ. 2.321; स. पू. प. के रूप में, - कथापरियोसानं नपुं., समा. द्व. स., किसी भी कथा का प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त - नं द्वि. वि., ए. व. - आनन्दो गिज्झराजा कुणालस्स आदिमज्झकथापरियोसानं विदित्वा ..., जा. अट्ठ. 5.445; - ज्झन्तसोभण त्रि., ब. स., आदि. मध्य एवं अन्त में शुभ - णं पु., द्वि. वि., ए. व. - सुत्तानं तं धम्मवरं, आदिमज्झन्तसोभणं अप. 2.152; - ज्झन्तमाव पु., प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त की अवस्था - वेसु सप्त. वि., ब. व. - आदिमज्झन्तमावेसु ये अनत्थावहा इमे, सद्धम्मो. 99; - परियोसानं नपुं., समा. द्व. स. [आदिमध्यपर्यवसान], प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त - नं' प्र. वि., ए. व. - तत्थ अत्थि देसनाय आदिमज्झपरियोसानं, अत्थि सासनस्स, अ. नि. अट्ठ. 2.164; - नं' द्वि. वि., ए. व. - अत्तनो सिप्पस्स आदिमज्झपरियोसानं ओलोकेन्तो, नि. प. 9; - ने सप्त. वि., ए. व. - कुहिं इमस्स सुत्तस्स सब्बानि सच्चानि पस्सितब्बानि, आदिमज्झपरियोसानेति ? नेति. 20; - ज्झुत्तर त्रि., आदि. मध्य एवं अन्त में आने वाला - रेसु सप्त. वि., ब. व. - तेसु आदिमज्झुत्तरेसु जिनवचनानुपरोधेन क्वचि बुद्धिं होति, क्वचि लोपो होति, क. व्या. 406; सट्ठ. 3.808-809.

आदिमनसिकार पु., तत्पु. स., मन द्वारा आलम्बन को ग्रहण करने की प्रारम्भिक अवस्था - रेन तु. वि., ए. व. - थेरस्स अन्तेवासिका आदिमनसिकारेनेव दिट्ठिीनं समुच्छेदप्पहानं होतीति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 1(1).191.

आदिमलय पु., श्रीलङ्का के शासक विजयबाहु प्रथम के एक सेनापति का नाम - विस्सुतो आदिमलयनामेन बलनायको, चू. वं. 59.4.

आदिमुख नपुं., घर का द्वार-कक्ष, प्रवेशकक्ष - खं प्र. वि., ए. व. - चतुद्वारे च तत्थेव, आदिमुखमकारयि, म. वं. 35.119.

आदिय' 1. त्रि., आ + √दा के कर्म. वा. का सं. कृ. [आदेय], शा. अ., ग्राह्य, स्वीकार्य, वह, जिसे ग्रहण किया जाए, ला. अ., ग्राह्यता का कारण - यो पु., प्र.

## आदिय

80

## आदियति

वि., ए. व. — अयं पञ्चमो भोगान् आदियो, अ. नि. 2(1).42; — या पु., प्र. वि., ब. व. — पञ्चिमे, गृहपति, भोगान् आदिया, अ. नि. 2(1).41; पञ्चमस्स पठमे भोगान् आदियाति भोगान् आदातब्बकारणानि, अ. नि. अ. 3.22; — ये पु., द्वि. वि., ब. व. — ... इमे पञ्च भोगान् आदिये आदियतो ..., अ. नि. 2(1).42; 2. आ+दर का सं. कृ., आदरणीय, सम्मान करने योग्य — ये स्त्री., संबो. ए. व. — भोति अय्ये, भोति कञ्जे, भोति घरादिये, क. व्या. 114, 242. आदिय' त्रि., [आद्य], प्रारम्भ वाला, आदि में विद्यमान — येन पु., तृ. वि., ए. व. — आदियेनेव ते मद्दि, दुक्खं नक्खातुमिच्छिस्सं, जा. अ. 7.344; तत्थ आदियेनेवाति आदिकेनेव, तदे., — या स्त्री., प. वि., ए. व. — आदिया थूलमूलानि खुदकानितराहि तु, म. वं. 18.44; आदिया थूलमूलानि ति तासु मूललेखाय तावदेव बुब्बुका हुत्वा दसमहामूलानि निक्खमित्वा ओतरं ति सम्बन्धो, म. वं. टी. 354(ना.).

आदियसुत्त अ. नि. का एक सुत्त, अ. नि. 2(1).41-42. आदियति' आ + ददा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदत्ते/आदियते?], शा. अ., ले लेता है, ग्रहण कर लेता है, प्राप्त करता है, अपना बना लेता है, स्वीकार कर लेता है, पकड़ लेता है, अपना लेता है — आपुब्बो गृहणे, अदिन्नं आदियति, स. 2.480; चोरो नाम यो पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्गातं आदियति, पारा. 53; लोके अदिन्नमादियति, परदारुञ्च गच्छति, ध. प. 246; यथा च रसलोलो अन्धो भत्ते उपनीते यकिञ्चि समक्खिकमपि निम्माक्खिकमपि आमिसं आदियति, जा. अ. 5.362; — न्ति ब. व. — न ते भवं अट्टममादियन्ति, सु. नि. 232; तेसं निरुद्धता अत्थङ्गतता न अट्टमं भवं आदियन्ति, सु. नि. अ. 1.249; आदियन्ति च निरस्सजन्ति चाति पलिबोधं करोन्ति च विस्सज्जेन्ति च खिपन्ति च, महानि. अ. 172; — न्तो/मानो पु., वर्त., कृ., प्र. वि., ए. व. — आदियन्तचतुक्के पादं वा अतिरेकपादं वा सहत्था आदियन्तो गरुकं आपज्जति, परि. अ. 171; इमं खो अहं अत्तादानं आदियमानो लभिस्सामि ..., चूळव. 408; — य अनु., म. पु., ए. व. — आदिय, भो, निक्खिप, भो'ति, म. नि. 3.174; — न्तु अनु., प्र. पु., ब. व. — आदियन्तु खो भिक्खुनियो उदकसुद्धिन्ति, पाचि. 357; — थ अनु., म. पु., ब. व. — ... यानि इमस्मिं सत्थे महासारानि पणियानि, तानि आदियथा'ति, दी. नि. 2.255; — ये/येय्य विधि.,

प्र. पु., ए. व. — पाणं न हज्जे न चदिन्नमादिये, अ. नि. 1(1).244; यो पन भिक्खु अदिन्नं थेय्यसङ्गातं आदियेय्य, पारा. 51; — येय्यं उ. पु., ए. व. — अहज्जेव खो पन परस्स अदिन्नं थेय्यसङ्गातं आदियेय्यं, स. नि. 3(2).420; — येय्याम ब. व. — यंनून मयमि परेसं अदिन्नं थेय्यसङ्गातं आदियेय्यामा'ति, दी. नि. 3.48; — यि अद्य., प्र. पु., ए. व. — सच्चं किर त्वं धनिय, रज्जो दारुनि अदिन्नं आदियी'ति, पारा. 50; — यिं उ. पु., ए. व. — अनेकगुणसम्पन्नं, पक्कफलमादियिं, वु. वं. 296; — यिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — कथञ्चि नाम आयस्मा धनियो कुम्भकारपुत्तो रज्जो दारुनि अदिन्नं आदियिस्सती'ति, पारा. 50; — यिस्ससि म. पु., ए. व. — कथञ्चि नाम त्वं मोघपुरिस, रज्जो दारुनि अदिन्नं आदियिस्ससि, तदे., — यिस्सामि/यिस्सं उ. पु., ए. व. — हन्त्वानिमं हृदयमानयिस्सन्ति, जा. अ. 7.202; — यिस्सन्ति प्र. पु., ब. व. — ... उदाहु आदियिस्सन्ती'ति, मि. प. 144; — यिस्साम उ. पु., ब. व. — तिण्हानि सत्थानि कारापेत्वा येसं अदिन्नं थेय्यसङ्गातं आदियिस्साम, दी. नि. 3.49; — दिय/यित्वा पू. का. कृ. — तम्माक विज्जञ्च सुतञ्च आदिय, जा. अ. 2.187; अनापत्तिआदियित्वा परिभुज्जति, पाचि. 163; ला. अ. 1., आश्रय लेता है, सहारा लेता है, मान बैठता है, (प्रायः अधिकरण शब्द के साथ प्रयुक्त) — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — कम्मन्तं कारेति, अधिकरणं आदियति पामोक्खेसु भिक्खूसु पटिविरुद्धो होति, अ. नि. 2(1).161; एत्थ सासनं सोधेतुकामो भिक्खु यं अधिकरणं अत्तना आदियति, चूळव. अ. 124; — न्ति ब. व. — यस्सं परिसायं भिक्खू अधिकरणं आदियन्ति ..., अ. नि. 1(1).90; — यिस्साम भवि., उ. पु., ब. व. — इमं अधिकरणं आदियिस्साम, चूळव. 468; ला. अ. 2., हाथ में ले लेता है, निष्पादित करता है (केवल निषे., वर्त. कृ. के रूप में प्रयुक्त रहने पर) — अनादियन्तं पु., वर्त. कृ. का निषे., द्वि. वि., ए. व., नहीं करने वाले को — सय्हानि कम्मनि अनादियन्तं, सु. नि. 256, तस्स कम्मनि अनादियन्तं करणत्थाय असमादियन्तं, अथ वा चित्तेन तत्थ आदरमत्तमपि अकरोन्तं, सु. नि. अ. 1.271; ला. अ. 3., मन में ले आता है, मानता है, सहमत होता है, ध्यान देता है — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — राजा आह किं ते तत्थ बलं अत्थि, को वा ते वचनं आदियति अनुम्मतो, मि. प. 128; — यि अद्य., प्र. पु., ए. व. — ... तस्सा वचनं

## आदियति

81

## आदिविकार

नादियि, ध. प. अष्ट. 2.176; — अनादियित्वा पू. का. कृ., निषे., नहीं मान कर — सङ्गभेदो'तिआदीहि ओवदितोपि सत्थु वचनं अनादियित्वा पक्कन्तो आयस्सन्तं आनन्दं राजगहे पिण्डाय चरन्तं दिस्वा, ध. प. अष्ट. 1.82; ला. अ. 4., (किसी की) आज्ञा को मानता है, आज्ञाकारी होता है, अनुसरण करता है, वशवर्ती हो जाता है — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — सा नेव सस्सुं आदियति, न ससुरं आदियति, न सामिकं आदियति, अ. नि. 2(2).229; न ससुरं आदियतीति वचनं न गण्हाति, अ. नि. अष्ट. 3.178; — न्ति ब. व. — नेव महाराजानं आदियन्तीति वचनं न गण्हन्ति, आणं न करोन्ति, दी. नि. अष्ट. 3.136; ला. अ. 5., दृढतापूर्वक पकड़ लेता है, किसी विचार या धारणा के साथ स्वयं को जोड़ देता है — अनादियानं पु., वर्त. कृ., निषे., द्वि. वि., ए. व. — तं ब्राह्मणं दिङ्मिनादियानं, केनीध लोकस्मिं विकप्पयेय्य, सु. नि. 808; तं ब्राह्मणं दिङ्मिनादियन्तं अगण्हन्तं अपरामसन्तं अनभिनिवेसन्तन्ति, महानि. 80; — यिस्सन्ति भवि., प्र. पु., ब. व. — उक्कलेस्सन्ति नु खो मम सावका मया विसज्जापीयमाना ममच्चयेन खुद्धानुखुद्धानि सिक्खापदानि, उदाहु आदियिस्सन्तीति, नि. प. 144.

**आदियति** व्यु. संधिघ. आ +√दा अथवा आ +√दर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदियते], 1. आदर करता है, सम्मान करता है, प्रतिष्ठा करता है, 2. स्वयं को पूरी तरह से लगा देता है, मन लगाता है, 3. आदियति के ही अर्थों में — अनादरो नाम सङ्गं वा गणं वा पुग्गलं वा कम्मं वा नादियति, पाचि. 294; एकपुग्गलं वा तं कम्मं वा न आदियति, न अनुवत्तति, न तत्थ आदरं जनेतीति अत्थो, पाचि. अष्ट. 166; — यि अद्य., प्र. पु., ए. व. — एवम्पि खो आयस्सा उदायी विसाखाय मिगारमातुया वुच्चमानो नादियि, पारा. 293; नादियीति तस्सा वचनं न आदियि, न गण्हि, न वा आदरमकासीति अत्थो, पारा. अष्ट. 2.194; — यिस्सन्ति भवि., प्र. पु., ब. व. — नादियिस्सन्तुपज्जाये, खल्लुङ्को विय सारथिं, थेरगा. 976; नादियिस्सन्तुपज्जायेति उपज्जाये आचरिये च आदरं न करोन्ति, तेसं अनुसासनियं न तिहन्ति, थेरगा. अष्ट. 2.313; — अनादियित्वा पू. का. कृ. का निषे., अनादर करके, स्वीकार न करके — अथ खो सो यक्खो तं यक्खं अनादियित्वा, उदा. 113; अनादियित्वाति आदरं अकत्वा, तस्स वचनं अगगहेत्वा, उदा. अष्ट. 199.

**आदियनमुख** त्रि., ब. स., कही गई बात पर तुरन्त विश्वास कर लेने वाला, भोलाभाला, कान का कच्चा — खो पु., प्र. वि., ए. व. — आदेय्यमुखोति आदियनमुखो गहणमुखोति अत्थो, अ. नि. अष्ट. 3.51; सहहनइन हि आदानेन एस आदियनमुखोति वुत्तो, तदे.

**आदियनवत्थु** नपुं., न दी गई वस्तु को ग्रहण कर लेने के अपराध से सम्बद्ध एक सिक्खापद — स्मिं सप्त. वि., ए. व. — रज्जो दारुणि अदिन्नं आदियनवत्थुस्मिं पज्जत्तं, कङ्का. अष्ट. 123; सावत्थियं अज्जतरं भिक्खुनि आरब्ध जतुमहुकसादियनवत्थुस्मिं पज्जत्तं, कङ्का. अष्ट. 300.

**आदियापेति** आ +√दा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., ग्रहण कराता है, स्वीकार कराता है — न अदिन्नं आदियति, न अदिन्नं आदियापेति, न अदिन्नं आदियतो समनुज्जो होति, दी. नि. 3.35.

**आदियाम** पु., तत्पु. स., रात्रि का प्रथम याम — मे सप्त. वि., ए. व. — आदियामे नमस्सामि, मज्झिमे अथ पच्छिमे, अप. 1.50.

**आदिरस्स** त्रि., ब. स., व्याकरण में प्रयुक्त [आदिहस्स], वह वर्णसमूह, जिस का आदिस्वर ह्रस्व हो — स्सो पु., प्र. वि., ए. व. — आदिरस्सो ताव — पगेव इच्चेवमादि, क. व्या. 405; तत्थ आदिरस्सो — पगेव इच्चादि, सद्. 3.808.

**आदिराज** पु., कर्म. स. [आदिराजन], प्रथम राजा, श्रीलङ्का का प्रथम शासक — जा प्र. वि., ए. व. — तस्मियेव वस्से सीहकुमारस्स पुत्तो तम्बपणिदीपस्स आदिराजा विजयकुमारो, पारा. अष्ट. 1.51; भागीरथानन्ति पन पाठे भागीरथो नाम आदिराजा, थेरगा. अष्ट. 2.144.

**आदिलोप** पु., व्याकरण में प्रयुक्त [आदिलोप], प्रथम वर्ण का लोप, आदिभूत वर्ण का लोप — पो प्र. वि., ए. व. — आदिलोपो ताव — तालीसं इच्चेवमादि, क. व्या. 406; कालिङ्गो इच्चादि, आदिलोपो तालीसं इच्चादि, सद्. 3.809.

**आदिवण्ण** पु., कर्म. स. [आदिवर्ण], प्रथम वर्ण, आदिभूत वर्ण — स्स ष. वि., ए. व. — चत्तालीससदस्स गणने परियापन्नस्स आदिवण्णस्स लोपो होति, सद्. 3.800; — ण्णानं ब. व. — क्वचादिवण्णानमेकस्सरानं द्वेभावो, क. व्या. 460.

**आदिविकार** पु., तत्पु. स., व्याकरण का परिभाषिक शब्द, किसी शब्द के प्रथम या आदि वर्ण में ध्वनि-परिवर्तन — रो प्र. वि., ए. व. — आदिविकारो ताव — आरिस्सं, आसमं

## आदिविपरीत

82

## आदिसर

आण्यं इच्चेवमादि, क. व्या. 406; तत्थ उत्तरआगमो वेदत्सं  
इच्चादि आदिविकारो आरिस्यं आसमं इच्चादि, सद्. 3.810.  
आदिविपरीत पु., तत्पु. स., व्याकरण का पारिभाषिक शब्द,  
आदि-स्वर का रूपान्तरण या परिवर्तन – तो प्र. वि., ए.  
व. – आदिविपरीतो ताव – उग्गते सुरिये, उग्गच्छति  
इच्चेवमादि, क. व्या. 406; यानि तानि इच्चादि, आदिविपरीतो  
उज्जातं 'दहरो ति न उज्जातब्बो ऊहतो; रजो' इच्चादि,  
सद्. 3.810.

आदिविसोधनद्द पु., तत्पु. स., आदिभूत धर्म के विशोधन  
का तात्पर्य, सर्वप्रथम आए हुए धर्म की विशुद्धि का अर्थ –  
ड्ढेन तू. वि., ए. व. – ... आधिपतेय्यड्ढेन आदिविसोधनड्ढेन  
अधिमतड्ढेन, अधिद्वानड्ढेन, परियादानड्ढेन, पतिट्ठापकड्ढेन,  
पटि. म. 209; आदिविसोधनड्ढेनाति कुसलानं धम्ममं  
आदिभूतस्स सीलस्स विसोधनड्ढेन, पटि. म. अद्. 2.129.

आदिवुद्धि/आदिवुद्ध स्त्री., केवल व्याकरण के सन्दर्भ में  
प्रयुक्त [आदिवृद्धि], किसी भी शब्द के आदिस्वर की वृद्धि  
– द्वि प्र. वि., ए. व. – आदिवुद्धि ताव – आभिधम्मिको,  
वेनतेय्यो इच्चेवमादि, क. व्या. 406; तत्थ आदिवुद्धि ताव;  
आभिधम्मिको इच्चादि, सद्. 3.809.

आदिव्यञ्जन नपु., व्याकरण में ही प्रयुक्त [आदिव्यञ्जन],  
विसंयुक्त व्यञ्जनों में आदिभूत व्यञ्जन ध्वनि – स्स ष.  
वि., ए. व. – आदिसरस्स वा असंयोगन्तस्स  
आदिव्यञ्जनस्स वा सरस्स वुद्धि होति, क. व्या. 402.

आदिसति आ +√दिस का वर्त., प्र. पु., ए. व.  
[आदिशति/आदिशते], 1. संकेत करता है, प्रदर्शित  
करता है, कहता है, वर्णन करता है, उद्घोषित करता है,  
सूचित करता है, भविष्यवाणी करता है, भविष्य की ओर  
संकेत करता है – यो अतीतं आदिसति, (इच्चायस्मा  
पोसालो) अनेजो छिन्नसंसयो, सु. नि. 1118; चूळनि. 148;  
यो भगवा अत्तनो च परेसज्ज एकमि जाति न्तिआदिभेदं  
अतीतं आदिसति, सु. नि. अद्. 2.293; चूळनि. अद्. 44;  
– न्ति ब. व. – लक्खणपाठका लक्खणं आदिसन्ति,  
महानि. 281; – न्तं पु. वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. –  
समणं ब्राह्मणं वा कं, आदिसन्तं पम्भुनं, थेरगा. 751;  
आदिसन्तन्ति देसेन्तं, थेरगा. अद्. 2.241; – सि अद्य., प्र.  
पु., ए. व. – ... जत्था हत्थेन आदिसि, म. वं. 5.52; –  
सित्वा पू. का. कृ. – एवं तं तं आदिसित्वा निमित्तमनुयुत्ता  
विहरन्ति, दी. नि. अद्. 1.82; 2. अनुमान करता है, दूसरे

के मन की बात को भांपता है – ति वर्त., प्र. पु., ए. व.  
– इध, केवट्ट, भिक्खु परसत्तानं परपुग्गतानं चित्थमि  
आदिसति, दी. नि. 1.197; आदिसतीति कथेति, दी. नि.  
अद्. 1.291; – न्तं वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. –  
चेतसिकमि आदिसन्तं ..., दी. नि. 1.197; 3. दान अथवा  
उपहार को संकेतित करता है, दान अथवा उपहार प्रदान  
करता है – सन्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. – इमे दायका दानं  
दत्त्वा पुब्बपेतानं आदिसन्ति, मि. प. 271; – स अनु., म.  
पु., ए. व. – एतं अच्छादयित्त्वा, मम दक्खिणमादिसि, पे.  
व. 62; ... ममदक्खिणमादिसाति एतं उपासकं ... तं  
दक्खिणं मय्हं आदिस पत्तिदानं देहि, पे. व. अद्. 42; –  
सेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. – ... दारुणं कम्मं कत्त्वा  
पुब्बपेतानं आदिसेय्य 'इमस्स मे कम्मस्स विपाको पुब्बपेतानं  
पापुणातू' ति, मि. प. 272; – सेय्यासि म. पु., ए. व. –  
तज्ज भिक्खुसङ्घं परिविसित्वा मम दक्खिणं आदिसेय्यासि,  
अ. नि. 2(2).207; – सी अद्य., प्र. पु., ए. व. – कुटियो  
अन्नपानज्ज, मातु दक्खिणमादिसी, पे. व. 123; – सिंसु/सुं  
ब. व. – ... भिक्खुसङ्घस्स महादानं दत्त्वा तस्सा  
दक्खिणमादिसिंसु, पे. व. अद्. 46; – सिस्साभि भवि.,  
उ. पु., ए. व. – पदक्खिणज्ज कत्त्वा, आदिसिस्सामि  
दक्खिणं, थेरीगा. 309; – सित्त्वा पू. का. कृ. – वापाय  
आदिसित्त्वा, पब्बजिं अनगारियं, थेरीगा. 312.

आदिसद् पु., कर्म. स. [आदिशब्द], 'आदि' शब्द – दो प्र.  
वि., ए. व. – आदिसद्दोयं प्रकारे वत्तते, रु. सि. 147(रो.);  
– हेन तू. वि., ए. व. – आदिसद्देन सब्बपेते दुक्खवेदनाय  
सहगता, अ. नि. अद्. 1.343; एतस्स पुरिमेन आदिसद्देन  
अनन्तरेन च सस्सतसद्देन सम्बन्धो होति, स. नि. अद्.  
2.32; – लोप पु., तत्पु. स. [आदिशब्दलोप], आदिशब्द  
का लोप – पो प्र. वि., ए. व. – एत्थ आदिसद्दलोपो  
कतोति वेदितब्बो, पटि. म. अद्. 2.74.

आदिसन नपु., आ +√दिस से व्यु., क्रि. ना., संकेत,  
अनुमान, निर्वचन, व्याख्यान – नं प्र. वि., ए. व. – अथ  
वा इति एवं आदिसनं आदेसनापाटिहारियन्ति आदेसनसद्दो  
पाठसेसं कत्त्वा पयुज्जितब्बो, पटि. म. अद्. 2.286.

आदिसर पु., तत्पु. स. [आदिस्वर], किसी भी शब्द में आया  
हुआ प्रथम स्वर – स्स ष. वि., ए. व. – आदिसस्स वा  
असंयोगन्तस्स आदिव्यञ्जनस्स वा सरस्स वुद्धि होति  
सणकारे पच्चये परे क. व्या. 402; आदि-मज्झ-उत्तरसरानं  
क्वचि दीघ-रस्सत्तं, सद्. 3.807.

## आदिस्स

83

## आदीनव

आदिस्स<sup>1</sup>/आदिय त्रि., आ + दिस से व्यु., सं. कृ. [आदेश्य]. शा. अ., संकेतित किए जाने योग्य, ला. अ., निन्दनीय – अहमि तेन न आदियो भवेय्यं, म. नि. 1.17; पाठा. आदिस्सो; – या/स्सा पु. प्र. वि., ब. व. – तुम्हेपि तेन आदिया भवेय्याथ, म. नि. अ. 2. (मू.प.) 1(1).99.

आदिस्स<sup>2</sup> आ + दिस का पू. का. कृ. [आदेश्य], 1. संकेत करके, निर्देश करके, 2. द्वि. वि. में अन्त होने वाले नाम के उपरान्त प्रयुक्त होने पर, के विषय में, के सन्दर्भ में, दृष्टि में रखकर – तासं इत्थीनं वचमगं पस्सावमगं आदिस्स वण्णमि भणति अवण्णमि भणति, पारा. 188, 191; कल्याणमितता मुनिना, लोक आदिस्स वण्णिता, थेरीगा. 213; लोक आदिस्स वण्णिताति कल्याणमित्ते अनुगन्तवन्ति सत्तलोकं उदिस्स ..., थेरीगा. अ. 199; 3. क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त होने पर तथा दुहरा कर प्रयुक्त होने पर, पुनः पुनः व्यवस्थापित करके, यह है अथवा वह है, इस तरह से सूचित करके, विशिष्ट स्वरूप को संकेतित करके अथवा अभिव्यक्त करके – आदिस्स जम्मनं ब्रूहि, गोतं ब्रूहि सलक्खणं, सु. नि. 1024; तत्थ आदिस्साति कतिवस्सोति एवं उदिस्स, सु. नि. अ. 2.274; विनय परियत्तिया वण्णं भासति, आदिस्स आदिस्स आयस्मतो उपालिस्स वण्णं भासति, चूळव. 298; आदिस्स आदिस्साति पुनपुनं ववत्थपेत्वा विसुं विसुं कत्वा, पाचि. अ. 133.

आदीन नपुं., [आदेश्य], अत्यधिक दीनता, संकटमयी अवस्था, दुःख – नं. द्वि. वि., ए. व. – आदीनवो ति आदीनं दुक्खं वाति अधिगच्छति एतेना ति आदीनवो दोसो, स. 2.480; अथ वा आदीनं वाति गच्छति पवत्ततीति आदीनवो, विसुद्धि. 2.247; पटि. म. अ. 2.292.

आदीनव पु./नपुं., [आदीनव], विपत्ति, दुष्परिणाम, भय, खतरा, अनित्य, दुःख एवं अनात्म इन के रूप में विद्यमान दोष – भावोधिमुत्ति छन्दोथ, दोसो आदीनवो भवे अभि. प. 766; – वो प्र. वि., ए. व. – दिस्वानस्स आदीनवो पातुरहोसि, महाव. 19; आदीनवो पातुरहु, थेरगा. 269; ... तत्थ मे अनेकाकारआदीनवो दोसो पातुरहोसि, थेरगा. अ. 2.3; ... आदितो ताव दोसे आदीनवो, विसुद्धि. 1.283; आदीनवो दद्दब्बो पाणघातादिवसेन दिद्दधम्मिकसम्परायिकादिअन्तथमूलभावतो, विसुद्धि. महाटी. 1.330; – वं द्वि. वि., ए. व. – आदीनवं सम्मसिता भवेसु, सु. नि. 69; आदीनवं सम्मसिता भवेसूति ताव अनुधम्मचरितसङ्घाताय

विपस्सनाय अनिच्चाकारादिदोसं तीसु भवेसु समनुपस्सन्तो, सु. नि. अ. 1.98; – वे सप्त. वि., ए. व. – कथं भयतुपड्डाने पज्जा आदीनवे जाणं?, पटि. म. 52; – तो प. वि., ए. व. – सुज्जतो अनत्ततो आदीनवतो विपरिणामधम्मतो असारकतो ..., पटि. म. 406; पवत्तिदुक्खताय दुक्खस्स च आदीनयताय आदीनवतो, पटि. म. अ. 2.292; – वा प्र. वि., ब. व. – संविज्जन्तस्स इधेकच्चे आदीनवाति, म. नि. 1.400; ताव एकच्चे मानातिमानादयो आदीनवा न संविज्जन्ति ..., म. नि. अ. 2. (मू.प.) 1(2).279; – वेहि तू. वि., ब. व. – इमेहि आदीनवेहि अयं ज्ञानपरिहानि, पेटको. 267; स. उ. प. के रूप में; अदिद्वा.- पु., नहीं देखी गयी व्यथा, विपत्ति अथवा दोष – वं द्वि. वि., ए. व. – न च सक्का किञ्चि अदिद्वादीनवं पहातुं, विसुद्धि. 1.283; अनेका.- पु., अनेक प्रकार की विपत्तियां, संकट अथवा दुःख – ... तापसपब्बज्जूपगमनेन अनेकादीनवाकुला गहड्ढभावा अभिनिक्खमित्वा गतोति, चरिया. अ. 125; अविज्जापटिच्छादिता.- पु., अज्ञान के द्वारा प्रतिच्छादित होने के कारण उत्पन्न दोष, दुःख अथवा विपत्ति – वे सप्त. वि., ए. व. – तदेवं पवत्तमानं तण्हाअविज्जानं अप्पहीनत्ता अविज्जापटिच्छादितादीनवे, विम. अ. 154; कामा.- पु., कामनाओं के कारण उत्पन्न दुःख, विपत्ति या दोष, कामभोगों में अन्तर्निहित दुःख या विपत्ति – वेन – तू. वि., ए. व. – एवं कामादीनवेन तज्जेत्वा नेक्खम्मे आनिसंसं पकासेसि, उदा. अ. 231; दिद्वा.- पु., दिखलायी दे रही विपत्ति, दुःख अथवा दोष – तो प. वि., ए. व. – अथेवं दिद्वादीनवतो दोसतो चित्तं विवेचनत्थाय ... मेत्ताभावना आरभितब्बा, विसुद्धि. 1.283-284; आरुप्पानेव जायन्ते, दिद्वादीनवतो किए, अभि. अव. 262; निरा.- त्रि., दीनता, दुःख या संकट से मुक्त – वो पु., प्र. वि., ए. व. – भिक्खुसङ्घो निरादीनवो अपगतकाळको सुद्धो सारे पतिङ्गितो, पारा. 10; पटिच्छन्ना.- त्रि., वह, जिसका दोष ढका हुआ हो, प्रतिच्छन्न, दुःख, दोष एवं विपत्ति वाला – वे पु., सप्त. वि., ए. व. – अविज्जाय पटिच्छन्ना-दीनवे विसयो पन्, अभि. अव. 596; बहु.- त्रि., अत्यधिक दोषों, संकटों एवं विपत्तियों से परिपूर्ण – वो पु., प्र. वि., ए. व. – बहुदुक्खो खो अयं कायो बहुआदीनवो?, अ. नि. 3(2).91; सा.- त्रि., दुःख, संकट या विपत्ति ये युक्त – वो पु., प्र. वि., ए. व. – न तं विदूति न तं जानन्ति, एवं सादीनवो अयंति, महाव.

## आदीनवजात

84

## आदीनवपरियेसना

अ. 408; टि., पालि-तिपिटक में आदीनव के तीन प्रकार के समूहों का उल्लेख है - 1. शील से संबंधित पांच प्रकार के आदीनव - *इमे खो, गहपतयो, पञ्च आदीनवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया*, महाव. 303; 2. मादक वस्तुओं के सेवन के छः प्रकार के आदीनव या दुष्परिणाम - *इमे खो, गहपतिपुत्त, छ आदीनवा सुरा - मेरय - मज्झिमाद्वयानुयोगे*, दी. नि. 3.138; 3. राजाओं के अन्तःपुरों में प्रवेश आदि से प्राप्त होने वाले आदीनव या दुःख - *दसयिमे, भिक्खवे, आदीनवा राजन्तेपुरप्पवेसने*, पाचि. 210.

**आदीनवजात** त्रि., दुर्गतिग्रस्त, विपत्ति से पीड़ित, उत्पीड़ित - *ते पु., सप्त. वि., ए. व. - उपद्वजातेति आदीनवजाते*, चूलनि. अ. 71.

**आदीनवजाण** नपुं., [आदीनवज्ञान], बुरे परिणाम अथवा दुष्परिणामों की पहचान, दीनता अथवा बुरी अवस्था का ज्ञान - *णं प्र. वि., ए. व. - सम्मसनजाणं ... आदीनवजाणं ... अनुलोमजाणञ्चेति दस विपस्सनाजाणानि*, अभि. ध. स. 66; *तस्सेवं पस्सतो आदीनवजाणं नाम उपपन्नं होति*, विसुद्धि. 2.283; *दिट्ठभयानं आदीनवतो पेक्खणवसेन पवत्तं जाणं आदीनवजाणं*, अभि. ध. वि. टी. 232; - *स्स ष. वि., ए. व. - जाणन्तिआदि पन आदीनवजाणस्स पटिपेक्खजाणदस्सनत्थं वुत्तं*, पटि. म. अ. 1.221.

**आदीनवता** स्त्री., आदीनव का भाव. [आदीनवत्व], विपन्नता, दुःख से ग्रस्त होने अथवा उत्पीड़ित होने की अवस्था - *य तू. वि., ए. व. - पवत्तिदुक्खताय दुक्खस्स च आदीनवताय आदीनवतो*, पटि. म. अ. 2.292.

**आदीनवत्त** नपुं., आदीनव का भाव., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त [आदीनवत्व], उपरिवत्, **दिट्ठा**:- संकट या विपत्ति के दिखलायी देने की अवस्था - *त्ता प. वि., ए. व. - कलहकारके किरस्स दिट्ठादीनवत्ता समग्गासिनो*, म. नि. अ. (उप.प.) 3.152; *रूपा. - नपुं., रूप से संबंधित विपत्ति अथवा दोष - त्ता प. वि., ए. व. - अथस्स परिविदितरूपादीनवत्ता पथवीकसिणादीसु अज्जतरं उग्घाटेत्वा ...*, स. नि. अ. 3.207; **सुपरिविदिता**. - उपरिवत्, विपत्ति या दोष से अच्छी तरह से परिचित रहना - *त्ता प. वि., ए. व. - तासो उपपज्जि भेरवोति सुपरिविदितादीनवत्ता भयानको चित्तुत्तासो उदपादि*, चरिया. अ. 198.

**आदीनवदस्स** त्रि., बुरी अवस्था, संकट अथवा भय को दिखलाने वाला - *सो पु., प्र. वि., ए. व. - अनादीनवदस्सोति यं भगवा इदानीं सिक्खापदं पञ्जपेत्तो आदीनवं दस्सेस्सति*, पारा. अ. 1.164.

**आदीनवदस्सन** नपुं., तत्पु. स. [आदीनवदर्शन], विपत्ति, संकट अथवा हानियों को देखना - *नं प्र. वि., ए. व. - सप्पे आदीनवदस्सनं विय आदीनवानुपस्सनाजाणं*, पटि. म. अ. 1.27; - *नेन तू. वि., ए. व. - भयदस्सनेन समये अभयसज्जाय आदीनवदस्सनेन अस्सादसज्जाय*, म. नि. अ. (पू.प.) 1(1).26; - *जाण नपुं., हानि, विपत्ति या संकट का दर्शन तथा ज्ञान - णं प्र. वि., ए. व. - आदीनवानुपस्सनाति भयतुपद्धानवसेन उपपन्नं सब्भवादीसु आदीनवदस्सनजाणं*, पटि. म. अ. 1.90.

**आदीनवदस्सावी** त्रि., विपत्ति अथवा संकट को देखने वाला - *वी पु., प्र. वि., ए. व. - तं अगधितो अमुच्छितो अनज्झापन्नो आदीनवदस्सावी निस्सरणपज्जो परिभुज्जति*, दी. नि. 3.33; म. नि. 2.36; स. नि. 1(2).174; *आदीनवदस्सावीति अनेसनापतियच्च गधितपरिभोगे च आदीनवं पस्समानो*, स. नि. अ. 2.146; - *विनो प्र. वि., ब. व. - इमे पञ्च कामगुणे गथिता ... आदीनवदस्साविनो निस्सरणपज्जा परिभुज्जन्ति*, म. नि. 1.233.

**आदीनवदस्सिता** स्त्री., आदीनवदस्सी से व्यु., भाव., संकट या विपत्ति को देखने या जानने की क्षमता, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त; **अना**:- संकट या विपत्ति को नहीं देख सकने की अवस्था - *य तू. वि., ए. व. - ते दूस्तो वज्जेत्ता सङ्गारे यथाभूतं पस्सतो च तत्थ अनादीनवदस्सिताय*, उदा. अ. 282.

**आदीनवदस्सी** त्रि., [आदीनवदर्शिन], संकट या विपत्ति को देखने की क्षमता रखने वाला, - *स्सी पु., प्र. वि., ए. व. - सो अतहिताय पटिपन्नो पण्डितो कुसलो ब्यत्तो आदीनवदस्सी*, पेटको. 303.

**आदीनवपटिच्छादक** त्रि., संकट, विपत्ति अथवा हानि को आच्छादित कर लेने वाला - *कं पु., द्वि. वि., ए. व. - अमोहेन तेस्सेव आदीनवपटिच्छादकं मोहं धुनाति*, विसुद्धि. 1.80; *आरक्खदुक्खपराधीनवुत्तिवोरभयादि आदीनवपटिच्छादकं*, विसुद्धि. महाटी. 1.98; - *का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अविज्जाति तत्थेव आदीनवपटिच्छादिका अविज्जा*, थेरगा. अ. 2.399.

**आदीनवपरियेसना** स्त्री., तत्पु. स. [आदीनवपर्येषणा], विपत्ति अथवा संकट की खोज या तलाश - *नं द्वि. वि.,*

## आदीनवविभावना

85

आदु

ए. व. — वायोधातुयाहं, भिक्खवे, आदीनवपरियेसनं अचरिं, स. नि. 1(2).155; लोकस्साहं, भिक्खवे, आदीनवपरियेसनं अचरिं, अ. नि. 1(1).292.

आदीनवविभावना स्त्री., दुष्परिणामों का प्रकाशन, बुरे परिणामों को प्रकट करना — नं द्वि. वि., ए. व. — इमं उदानन्ति इमं पापकिरियाय नित्सेधनं आदीनवविभावनञ्च उदानं उदानेसि, उदा. अ. 240.

आदीनवसञ्जा स्त्री., तत्पु. स. [आदीनवसंज्ञा], संकट, हानि अथवा बुरे परिणामों से संबंधित संज्ञा-ज्ञान, पांच प्रकार की संज्ञाओं में से एक — ञ्जा प्र. वि., ए. व. — असुभसञ्जा, मरणसञ्जा, आदीनवसञ्जा आहारे पटिकूलसञ्जा, सम्बलोके अनभिरतसञ्जा, अ. नि. 2(1).74; सत्त सञ्जा — अनिच्चसञ्जा, अनत्तसञ्जा, असुभसञ्जा, आदीनवसञ्जा, पहानसञ्जा, विरागसञ्जा, निरोधसञ्जा, दी. नि. 3.199, 233; — परिचित त्रि., दुःख या विपत्ति की संज्ञा से परिचित — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आदीनवसञ्जापरिचितञ्च नो चित्तं भविस्सति, अ. नि. 3(2).89.

आदीनवानिसंस पु., द्व. स. [आदीनवानिशंस], हानि अथवा लाभ, विपत्ति अथवा दुःख — से द्वि. वि., ब. व. — थेरोपिस्स पवत्तिनिवत्तीसु आदीनवानिसंसे विभावेन्तो धम्मं देत्तेसि, उदा. अ. 251; सहसा समेच्चाति सहसा आदीनवानिसंसे अविचारेत्वा समवायेन अनुपविट्ठा सप्पविट्ठा, वि. व. अ. 285; — दस्सन नपुं., विपत्ति एवं लाभ का दर्शन, अच्छे या बुरे परिणामों को देखना, संकटों अथवा लाभों का दर्शन — नं प्र. वि., ए. व. — ... आनिसंसस्स च दस्सनं आदीनवानिसंसदस्सनं, विसुद्धि. महाटी. 1.66; — नेन तू. वि., ए. व. — इदानी कोधे अकोधे च आदीनवानिसंसदस्सनेन धम्मं कथेन्तो, ... थेरगा. अ. 2.98.

आदीनवानुपस्सना स्त्री., तत्पु. स. [आदीनवानुपश्यन], दीनतामयी स्थिति, दीनता से भरी अवस्था या दशा के विषय में विचार, दुष्परिणामों अथवा संकटों का अनुभव — ना प्र. वि., ए. व. — आदीनवानुपस्सनाति भयतुपद्धानवसेन उप्पन्नं सम्बभवादीसु आदीनवदस्सनञ्जाणं, पटि. म. अ. 1.90; — नं द्वि. वि., ए. व. — आदीनवानुपस्सनं भावेन्तो आलयाभिनिवेसं पज्जहति, विसुद्धि. 2.263; — य तू. वि., ए. व. — आदीनवानुपस्सनाय आलयाभिनिवेसं ..., पटि. म. 40; — जाण नपुं., दैन्य अवस्था की अनुभूति का ज्ञान, दुष्परिणामों से संबंधित विचार का ज्ञान — णं प्र. वि., ए.

व. — सप्पे आदीनवदस्सनं विय आदीनवानुपस्सनाञ्जाणं, पटि. म. अ. 1.27.

आदीनवानुपस्सी त्रि., सारहीनता की अवस्था अथवा बुरे परिणामों को ठीक से देखने वाला, विपत्ति की स्थिति का अनुभव करने वाला — स्सी पु., प्र. वि., ए. व. — इति इमस्मिं काये आदीनवानुपस्सी विहरति, अ. नि. 3(2).91; आदीनवानुपस्सी हि तिदसिन्दोपभोजिये, सद्धम्मो. 411; — स्सिनो पु., ब. वि., ए. व. — तस्स असारतस्स असंयुतस्स असम्मूहस्स आदीनवानुपस्सिनो विहरतो आयतिं पञ्चुपादानकखन्धा अपचयं गच्छन्ति, म. नि. 3.348.

आदीपन नपुं., आ +√दीप से व्यु., क्रि. ना. [आदीपन], व्याख्यान, प्रकाशन, स्पष्ट करना, प्रज्वलन — नं द्वि. वि., ए. व. — एकमन्तं उपाविसिन्ति न ताव कट्ठानि आदित्तानीति तेसं आदीपनं उदिकखन्तो थोकं एकमन्तं निसीदिं, चरिया. अ. 103.

आदीपनीय त्रि., आ +√दीप से व्यु., सं. कृ., व्याख्या करने योग्य, प्रकाशित करने योग्य — यं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — यं तं ओपम्मोहि आदीपनीयं कारणोहि मं सञ्जापेहि, यथा अत्थिधम्मं ओपम्मोहि आदीपनीयं, ति. मि. प. 252.

आदीपित त्रि., आ +√दीप से व्यु., आदीप का भू. क. कृ. [आदीपित], धधक रहा, जाज्वल्यमान, आग की लपटों में जल रहा — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सब्बो आदीपितो लोको, सब्बो लोको पष्पीतो, स. नि. 1(1).157; आदित्तोति दुक्खलक्खणवसेन पीळायोगतो सन्तापनद्वेन आदीपितो, पटि. म. अ. 2.13; — त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आदीपितं दारु तिणेन मिस्सं, जा. अ. 7.52.

आदीपितता स्त्री., आदीपित से व्यु., भाव, आदीप्त होना, जाज्वल्यमान होना, धधकते हुए रहना — य तू. वि., ए. व. — तेहियेव पुनप्पुनं आदीपितताय पदीपितो, थेरीगा. अ. 191.

आदीयति आ +√दा का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदीयते], ग्रहण किया जाता है, स्वीकार किया जाता है, ले लिया जाता है — सद्धेन दानं दीयति, सीलं आदीयति समादीयति, स. 2.367; पठमं आदीयती ति आदि, उदकं दद्याती ति उदधि, क. व्या. 553.

आदु/अदु अ., पुष्टि अथवा जोर देने के अर्थ को प्रकट करने वाला, निपा., संभवतः उदाहु का ही संक्षिप्तीकृत श्रष्ट स्वरूप, 1. वियोजक प्रश्न के द्वितीय घटक के रूप में अथवा के अर्थ में प्रयुक्त निपा. — निब्बायि सो आदु



## आदेति

86

## आदेस

सउपादिसेसो, यथा विमुक्तो अहु तं सुणोम, थेरगा. 1283; यथा विमुक्तो ति किं अनुपादिसेसाय निब्बानघातुया यथा असेक्खा, उदाहु उपादिसेसाय यथा सेक्खाति पुच्छति, सेसमेत्थ पाकटमेव, सु. नि. अहु. 2.76; तत्थ अदूति निपातो, जा. अहु. 3.441; देवतानुसि गन्धब्बो, अदु सक्को पुरिन्ददो, वि. व. 971; अदु सक्को पुरिन्ददोति उदाहु पुरे ददाती ति, वि. व. अहु. 217; 2. वारत्तव में, ठीक यही, निश्चित रूप से, परन्तु, तब - अदु पज्जा किमत्थिया, निपुणा साधुचिन्तिनी ... तत्थ अदूति निपातो, जा. अहु. 3.441; अदु चापं गहेत्त्वान्, खग्ग बन्धिय वामतो, जा. अहु. 7.324; जा. अहु. 3.300; अदूति नामत्थे निपातो, पज्जा नाम किमत्थियाति अत्थो, जा. अहु. 6.272.

आदेति आ + देव का वर्त, प्र. पु., ए. व. [आददाति/आदते], लेता है, ग्रहण करता है, स्वीकार करता है, प्राप्त करता है, किसी विचार को ग्रहण करता है - आपुब्बवसेन गहणञ्च वदन्तो ददाति ... आदेति दानं आदानन्ति, सद्. 2.368; कतिमि रजमादेति, कतिमि परिसुज्झती ति, ... पज्चमि रजमादेति, पज्चमि परिसुज्झती ति, स. नि. 1(1)4; पज्चहि पन नीवरणेहेव किलेसरजं आदियति गणहाति परामसति, स. नि. अहु. 1.23; - न्ति प्र. पु., ब. व. - एवं असारोहि धनेहि सारं, पुज्जानि कत्वान् बहूनि पज्जा, आदेन्ति, बाला पन कामहेतु, बहूनि पापानि करोन्ति मोहा, म. वं. 35.127; - य्य विधिं, प्र. पु., ए. व. - अदेय्याति आदियेय्य, न-कारेन योजेत्वा न गण्हीति अत्थो, जा. अहु. 3.259; - तु अनु., प्र. पु., ए. व. - आदेतु सीहदायी ति सहस्सं सो पचरयि, म. वं. 6.24; - थ म. पु., ब. व. - अमतं आदेथ भिक्खवो ति, मि. प. 305.

आदेय्यरूप त्रि., ग्रहण करने योग्य स्वरूप वाला, स्वीकार करने योग्य जाति वाला - पं नपुं, द्वि. वि., ए. व. - यदा न परस्सन्ति समेक्खमाना, आदेय्यरूपं पुरिसस्स वित्तं, जा. अहु. 5.442; आदेय्यरूपन्ति गहेतब्बजातिकं, जा. अहु. 5.443.

आदेय्यवचन त्रि., ब. स., ग्रहण करने योग्य वचनों को बोलने वाला, प्रभावशाली वाणी को बोलने वाला - नो पु., प्र. वि., ए. व. - आदेय्यवचनो होमि, न धंसेमि यथा अहं, अप. 1.355; मुसावादनवितीया सत्तानं पमाणभूतो होति पच्चयिको थेतो आदेय्यवचनो, चरिया. अहु. 281; - ता स्त्री., भाव., वचनों का दूसरों द्वारा स्वीकरणीय या ग्राह्य होना - आदेय्यवचनता आनिसंसो, दी. नि. अहु. 3.110;

- वाक्यवचन त्रि., ग्रहण करने योग्य वाक्यों और वचनों को बोलने वाला - नो पु., प्र. वि., ए. व. - आदेय्यवाक्यवचनो, ब्रह्मा उज्जु पतापवा, अप. 1.392; - वाच त्रि., बहुत लोगों द्वारा ग्रहण करने योग्य या सुनने योग्य मधुर वचन बोलने वाला - चो पु., प्र. वि., ए. व. - अनाथपिण्डको गहपति बहुमित्तो होति बहुसहायो आदेय्यवाचो, चूळव. 286; आदेय्यवाचो ति तस्स वचनं बहू जना आदियितब्बं सोतब्बं मज्जन्तीति अत्थो, चूळव. अहु. 62; आदेय्यवाचो होति, दी. नि. 3.131; आदेय्यवाचो होती ति गहेतब्बवचनो होति, दी. नि. अहु. 3.109.

आदेव पु., आ + देव से व्यु., विलाप, रोना, चिल्लाना, अवसाद - वो प्र. पु., ए. व. - अज्जतरज्जतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स अज्जतरज्जतरेन दुक्खधम्मं फुट्ठस्स आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना, दी. नि. 2.228; एवं आदिस्स आदिस्स देवन्ति परिदेवन्ति एतेनाति आदेवो, दी. नि. अहु. 2.349; - वं द्वि. वि., ए. व. - आदेवं परिदेवं ... न करेय्य न जनेय्य ..., महानि. 273.

आदेवति आ + देव का वर्त, प्र. पु., ए. व., विलाप करता है, रोता है, खिन्न होता है - देवति आदेवति परिदेवति, आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना आदेवित्तं परिदेवित्तं, सद्. 2.440.

आदेवन नपुं, आ + देव से व्यु., क्रि. ना., शोक-विलाप की क्रिया, रोने-चिल्लाने की क्रिया - आदेवं परिदेवं आदेवं परिदेवं आदेवित्तं परिदेवित्तं वाचा पलापं विष्पलापं ... लालप्पायनं लालप्पायित्तं ... नाभिनिब्वत्तेय्य, महानि. 273.

आदेवनेय्य त्रि., आ + देव से व्यु., सं. कृ., शोक-विलाप करने योग्य - य्यो पु., द्वि. वि., ब. व. - परिदेवनेय्येति आदेवनेय्ये परिदेवनेय्येति - एते वितक्के परिदेवनेय्ये, महानि. 373; आदेवनेय्येति विसेसेन देवनिज्ये, महानि. अहु. 377.

आदेस पु., आ + देस से व्यु., [आदेश], 1. संकेत, सूचना, दिशा-निर्देश, आज्ञा, विधानात्मक आदेश - गेहादेसो पमाहीनपसादनिग्गताच्चये, अभि. प. 1165; - सं द्वि. वि., ए. व. - आदेसं नापसादेन्तो राजिनो दीघदस्सिनो, चू. वं. 72.201; 2. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, स्थानापन्न, किसी दूसरे वर्ण, वर्णसमूह या ध्वनि का स्थानापन्न - अभि इच्चेतस्स सरे परे अब्भो आदेसो होति, क. व्या. 44; क्वचि विपरीतो होति, क्वचि आदेसो होति, सद्. 3.809.

## आदेसिका

87

## आधान

आदेसनविधा स्त्री., तत्पु. स., दूसरों के चित्तों को जानने का एक प्रकार या पद्धति — सु सप्त. वि., ब. व. — यथा भगवा धम्मं देसेति आदेसनविधासु, चतरस्सो इमा, भन्ते, आदेसनविधा, दी. नि. 3.76; — घा द्वि. वि., ब. व. — इदानी ता आदेसनविधा दस्सेन्तो चतरस्सो इमाति आदिमाह, दी. नि. अट्ठ. 3.62.

आदेसना आ + दिस से व्यु., क्रि. ना. [आदेशन], शा. अ. संकेतन, इशारा, सूचित करना, ला. अ., किसी के चरित्र के विषय में अनुमान करना, दूसरे के मन को पढ़ना, भविष्यवाणी करना — ना प्र. वि., ए. व. — आदेसनाति परस्स वित्ताचारं जत्वा कथनं आदेसनापाटिहारियं, बु. वं. अट्ठ. 44; इद्धिआदेसनानुसासनीभेदेन तेसु च एकेकस्स विसयादिभेदेन विविधं बहुविधं वा, उदा. अट्ठ. 9; इद्धि आदेसनानुसासनीसमुदाये भवं एकेकं पाटिहारियन्ति वुच्चति, तदे., — नं द्वि. वि., ए. व. — इतरेसु पन आदिस्सनवसेन आदेसनं, अनुसासनवसेन अनुसासनी, पटि. म. अट्ठ. 2.284.

आदेसनापाटिहारिय नपुं., तत्पु. स. [आदेशनप्रातिहार्य], दूसरे के चित्तों को जानने की अलौकिक शक्ति, एक प्रकार का ऋद्धिबल या मानसिक बल — यं प्र. वि., ए. व. — इद्धिपाटिहारियं, आदेसनापाटिहारियं, अनुसासनीपाटिहारियं, दी. नि. 1.196; अ. नि. 1(1).198, 199; अथ वा इति एवं आदिसनं आदेसनापाटिहारियन्ति आदेसनसदो पाठसेसं कत्वा पयुज्जितब्बो, पटि. म. अट्ठ. 2.286; — येन तू. वि., ए. व. — इमं खो अहं केवट्ट, ... आदेसनापाटिहारियेन अट्ठीयामि हरायामि जिगुच्छामि, दी. नि. 1.198; — यानुसासनी स्त्री., दूसरों के चित्तों को जानकर उन चित्तों के अनुरूप दी गई शिक्षा — नी., प्र. वि., ए. व. आदेसनापाटिहारियानुसासनी नाम एवम्पि ते मनो, तथापि ते मनोति एवं परस्स वित्तं जानित्वा तदनुरूपा धम्मदेसना, चूळव. अट्ठ. 110; — निया तू. वि., ए. व. — अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो आदेसनापाटिहारियानुसासनिया भिक्खू धम्मियाकथाय ओवदि अनुसासि, चूळव. 340; — योजना स्त्री., दूसरों के चित्तों का ज्ञान कराने वाले ऋद्धिबल एवं मानसिक बल के साथ सन्बन्ध या जोड़ — य तू. वि., ए. व. — इति अनुसासनीपाटिहारियन्ति एत्थ आदेसनापाटिहारिययोजनाय विय योजना कातब्बा, पटि. म. अट्ठ. 2.286.

आदेसभूत त्रि., व्याकरण में प्रयुक्त, वह, जो किसी का स्थानापन्न बना दिया गया है — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — पावचने आदेसभूते उकारे परे निच्चं वकार-रकारागमो होति, सट्ठ. 3.830.

आदेससर पु., तत्पु. स. [आदेशस्वर], किसी अन्य के स्थान पर आया हुआ स्वर — एकवचनद्वाने येव सागमो भवति आदेससरपरत्ता, सट्ठ. 1.123.

आदेसिका स्त्री., [आदेशिका], संकेत देने वाली स्त्री, इशारों से बतलाने वाली नारी — का प्र. वि., ए. व. — आपणादेसिका सा तु देवित्तं तस्स पत्थयि, म. वं. 5.59; तेन वुत्तं आपणादेसिका सातु ... पे. ... अतिमनोरमंति, म. वं. टी. 164(ना.).

आदो अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., आदि शब्द का सप्त. वि., ए. व. [आदौ], प्रारम्भ में — पलापोनत्थिका गिरा, आदो भासनमालापो, विलापो तु परिद्वो, अभि. प. 123; आदि इच्चैतस्मा स्मिन्वचनस्स अंओ च आदेसा होन्ति वा, आदिं, आदो, क. व्या. 69; लोहपासादमादो व कासी पासादमुत्तमं, चू. वं. 37.62; आदो थुत्तच्चयं तेसु दुतिये च पराजयो, विन. वि. 164.

आधातब्ब त्रि., आ + धा का सं. कृ. [आधातव्य], ठीक से रखने योग्य, स्थापित करने योग्य — ता स्त्री., भाव., ठीक से रखा जाना — तं द्वि. वि., ए. व. — को पनायं समाधानद्धो? सम्मदेव आधातब्बता, उदा. अट्ठ. 158; यथा गन्धकरण्डके कासिकवत्थं आधातब्बतं उपेतब्बतं गच्छति, प. प. अट्ठ. 65.

आधातुकाम त्रि., ब. स., स्थापित करने की इच्छा करने वाला, आग को परचाने की कामना करने वाला — मो प्र. वि., ए. व. — तथागता पुच्छितब्बा — अहज्झि, भन्ते अग्गिं आदातुकामो, यूपं उस्सापेतुकामो, अ. नि. 2(2).192; पाठा. आदातुकामो.

आधान आ + धा से व्यु., क्रि. ना. [आधान], अनेक स्थलों में आदान के साथ व्यामिश्रित, 1. नपुं., स्थापना, रखा जाना, प्राप्ति, स्थापित करना, निष्पन्न करना, बीच में रख देना, धरोहर, (आग को) जलाना — नं प्र. वि., ए. व. — एकांरम्मणे चित्तचेतसिकानं समं सम्मा च आधानं, उपनन्ति वुत्तं होति, विसुद्धि. 1.83; भो गोतम, अग्गिस्स आदानं यूपस्स उस्सापनं महप्फलं होति महानिसंसंति, अ. नि. 2(2).191; अग्गिस्स आदानन्ति यज्जयजनत्थाय नवस्स मङ्गलग्गिनो आदियनं, अ. नि. अट्ठ. 3.168; 2. त्रि., वह,

## आधानगाही

88

आधारक

जिसे मजबूती के साथ रखा गया है या जमा किया गया है — आधानं बुच्चति दळ्हं सुद्धं ठपितुं तथा कत्वा गण्हातीति आधानगाही, दी. नि. अट्ट. 3.21; आधानं गण्हन्तीति आधानगाही, आधानन्ति दळ्हं बुच्चति, दळ्हगाहीति अत्थो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).198; स. उ. प. के रूप में उदकां, कण्टकां, पुष्पां, मुखां, युगां, सां. तथा. के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आधानगाही त्रि., [आधारग्राहिन्]. शा. अ., अपने लिए या अपना आधार ग्रहण करने वाला, ला. अ., अपनी बात पर अड़ा रहने वाला, जिद्दी — ही पु., प्र. वि., ए. व. — भिक्षु सन्दिद्धिपरमासी होति आधानगाही दुष्पटिनिस्सग्गी, चूळव. 197; आधानगाहीति दळ्हगाही, परि. अट्ट. 154; आधानं गण्हन्तीति आधानगाही, आधानन्ति दळ्हं बुच्चति, दळ्हगाहीति अत्थो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).198; — हिस्स पु., ष. वि., ए. व. — ... सन्दिद्धिपरमासि — आधानगाहि — दुष्पटिनिस्सग्गिस्स पुरिसपुग्गलस्स, म. नि. 1.56; विलो. अनाधानगाही, अपनी बात पर न अड़ने वाला, जिद्दीपन से मुक्त, हठधर्मिता से मुक्त — 'असन्दिद्धिपरमासी अनाधानगाही सुप्पटिनिस्सग्गी भविस्सामा'ति चित्तं उप्पादेतब्बं, म. नि. 1.55. 58.

आधाय आ + धा से व्यु., सं. कृ. [आधाय], ठीक से रखकर, अच्छी तरह स्थापित करके — भिक्षुना दन्तेभिदन्तमाधाय जिक्काय तालुं आहच्च चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हितब्बं, म. नि. 1.171; दन्तेभिदन्तमाधायति हेद्दादन्ते उपरिदन्तं ठपेत्वा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).185. आधार पु., [आधार], 1. वह, जिस पर कोई भी वस्तु या व्यक्ति स्थित हो, ग्रहण करने वाला, खड़े होने की जगह, 2. कारण, चर्चा में आया हुआ विषय — मञ्चाधारो पटिपादो, मञ्चङ्गे त्वटनिस्थियं, अभि. प. 309; आधारो चाधिकरणे पत्ताधारे लवालके, अभि. प. 1011; अधिष्ठितियमाधारे ठानेधिद्वानमुच्चते, अभि. प. 1032; — रो प्र. वि., ए. व. — 'नायं कायो इमस्स अच्चन्तसन्तस्स पणीततमस्स अरियधम्मस्स आधारो भवितुं युत्तो'ति, उदा. अट्ट. 235; — रं द्वि. वि., ए. व. — महता मणिना एकं आधारं दन्तधातुया, चू. वं. 82.11; — रे सप्त. वि., ए. व. — उदमणिको पूरो उदकस्स समतित्तिको काकपेय्यो आधारे उपितो, म. नि. 3.139; — तो प. वि., ए. व. — नदीनं आधारतो पटिसरणतो च सागरो'मुख'न्ति बुत्तो, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.285; 3. व्या. के विशेष सन्दर्भ में, सप्त. वि.

के अर्थ अधिकरण का सूचक — रो प्र. वि., ए. व. — यो आधारो तं ओकाससञ्जं होति, क. व्या. 280; — रे सप्त. वि., ए. व. — आधारे वेतं भुम्भवचनं, थेरगा. अट्ट. 1.156; स. उ. प. के रूप में, जला- पु., जल का आधार, जलाशय, पोखर — जलासयो जलाधारो, गम्भीरो रहदो स च, अभि. प. 677; तदा- पु., उसका आधार या सहारा — परिकप्पादिवसेन निष्पादेतब्बस्स विधिनो पि नामं कप्पो पन तदाधारत्ता तद्धितन्ति पबुच्चति, सद्. 3.783; तिदिवा- पु., तीन प्रकार के स्वर्गों का आधार (सुमेरु) — सिनेरु मेरु तिदिवाधारो नेरु सुमेरु च, अभि. प. 26; दण्डा- पु., छड़ी का सहारा, डण्डे का आधार — रे सप्त. वि., ए. व. — भूमि- आधारके दारुदण्डाधारे सुसज्जिते, खु. सि. 68; निरा- त्रि., बिना आधार वाला, असहाय — निराधारजनाधारो जरादुब्बलजन्तुसु, चू. वं. 87.45; पत्ता- पु., पात्रों का आधार — पत्ताधारपिधानेसु तालवण्टे च बीजने, खु. सि. 271; मञ्चा- पु., पतंग का पैर — रो प्र. वि., ए. व. — मञ्चाधारो पटिपादो, मञ्चङ्गे त्वटनिस्थियं, अभि. प. 309; सम्बन्धद्वया- पु., सम्बन्ध अर्थ का आधार — रे सप्त. वि., ए. व. — सम्बन्धद्वयाधारे छट्ठी विभत्ति होति, सद्. 3.722; सासना- पु., तत्पु. स., बुद्ध के धर्म एवं सद्गुण का सहारा — पुब्बे लङ्कादीपा ते नरवरपवरा सासनाधारभूता, चू. वं. 99.182; सुता- त्रि., जो कुछ धर्मग्रन्थों से सुना है, उसे आधार बनाने वाला — रो पु., प्र. वि., ए. व. — धम्मकामो सुताधारो, भवेय्य परिपुच्छको, जा. अट्ट. 7.180; स. पू. प. के रूप में, — त नपु., भाव. [आधारत्व], आधार-भाव, सहारा होना — ता प. वि., ए. व. — सम्मासम्बुद्धकप्पानं आधारत्ता च निच्चसो, चू. वं. 64.31; — परिकप्प त्रि., आधार जैसा — प्यो पु., प्र. वि., ए. व. — सुणन्तानं आधारसुति च आधारपरिकप्पो च होति येव, सद्. 1.125; — प्तत त्रि., आधार-भाव को प्राप्त — उभयथापि पणुणं आधारप्पत्तं करोन्तो धारोति नाम, स. नि. अट्ट. 2.66; — भाव पु., [आधारभाव], आधार होना — संधस्स दानकिरियाय आधारभावतो 'संधे', सद्. 1.125.

आधारक त्रि., सहारा देने वाली कोई भी वस्तु, 1. पु., पैर रखने वाला पीढ़ा — को प्र. वि., ए. व. — आधारको पत्तापिधानं, तालवण्टं, बीजनी चट्कोटकं, पच्छि, यद्धिसम्मुञ्जनी मुद्धिसम्मुञ्जनीति, चूळव. अट्ट. 82; तथागतस्स सेतच्छतं निसीदनपल्लङ्को आधारको पादपीठन्ति इमानि पन चत्तारि अनग्धानेव अहेसुं, ध. प. अट्ट. 2.66; — कं द्वि. वि., ए.

## आधारण

89

## आधावति

व. - थेय्यचित्तेन कुम्भिया आधारकं वा उपत्थम्भनलेडुके वा अपनेति, पारा. अट्ट. 1.256; कारयित्वा ततो तस्स आधारकं पुन भूपति, चू. वं. 82.11; - के सप्त. वि., ए. व. - हत्थे आधारके वापि, पत्तं ऊरुसु वा ठितं, विन. वि. 1277; 2. नपुं., उपरिवत् - आधारकं मया दिन्नं, सिखिनो लोकबन्धुनो, अप. 1.215; - कानि प्र. वि., ब. व. - भिक्खून् आसनानि च आधारकानि च पथाविं भिन्दित्ता उड्डहन्तू ति चिन्तेसि, जा. अट्ट. 1.43; 3. पु., पुस्तक रखने वाली काष्ठपीठिका या लकड़ी की तख्ती, रिहल - के सप्त. वि., ए. व. - एकं पोत्थकं विचित्रवण्णे आधारके उपेत्वा सुसिक्खितोहि चत्तूहि पञ्चहि माणवेहि पुच्छिते पुच्छिते पञ्चे कथेसि, जा. अट्ट. 3.206; सयं पन अट्ट वा दस वा पण्डितवादिनो गहेत्वा मनोरमे आधारके रमणीयं पोत्थकं उपेत्वा, जा. अट्ट. 4.266-267; स. उ. प. के रूप में अना., किरिया., दण्डका., दारु., पत्ता., भूमि., मणि., यड्ढि. रुक्खा., वडा., वलया., सधम्मा., सासना. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, - कट्ट पु. आधार होने का अर्थ - निस्जजपचनादिकिरियानं आधारकट्टेन आधारो, सद. 3.709; - सङ्केपगमन पु., प. वि., ए. व. - आधारकसङ्केपगमनतो हि पट्ठाय छिदं विट्ठम्पि अविट्ठम्पि वट्ठितियेव, चूळव. अट्ट. 52.

आधारण नपुं., आ + धर के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आधारण], शा. अ., मजबूती से पकड़ना, दृढ़ता के साथ ग्रहण करना, सहारा देना, ला. अ., बरकरार रखना, मन में धारण करना, उचित रख-रखाव - तदेव आधारणउपनिबन्धनसमत्थता गति नाम, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).364; पच्छा आगतपरिसं अस्सवनसुस्सवन आधारण दल्लहीकरणादीनि वा सन्धाय तदत्थ दीपकमेव च, सु. नि. अट्ट. 2.114; - लक्खण त्रि., सहारा देने या आधार बनने के लक्षण से युक्त - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आधारणलक्खणं ओकासकारकं, सद. 3.711.

आधारदायक पु., व्य. सं., एक भिक्षु का नाम - को प्र. वि., ए. व. - इत्थं सुदं आयस्मा आधारदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.215.

आधारपटिग्गाहकभाव पु., तत्पु. स. [आधारप्रतिग्राहक-भाव], आधार या आश्रय होना - वेन तू. वि., ए. व. - तत्थापि तादिसेसु ठानेसु द्वे अधिप्पाया भवन्ति आधारपटिग्गाहकभावेन भूमसम्पदानानं, इच्छितब्बत्ता, सद. 1.218.

आधारभाव पु., [आधारभाव], आधारभूत अवस्था, सहारा देने वाली दशा या तथ्य - वो प्र. वि., ए. व. - उपधारणं मुसो धारणं पतिट्ठानवसेन आधारभावो, सद. 2.564; कुसलानं धम्मानं पतिट्ठानवसेन आधारभावोति अत्थो, विसुद्धि. 1.8; उदा. अट्ट. 180; - वं द्वि. वि., ए. व. - उप्पज्जमानस्स पयोगस्स निस्सयं आधारभावं उपगता विय हुत्वा कतमे धम्मा पच्चया होन्तीति अत्थो, परि. अट्ट. 215; - वेन तू. वि., ए. व. - कथ्थनामत्तसिद्धेन रूपेन अवयवानं आधारभावेन पज्जापीयति, उदा. अट्ट. 19; - पच्चुपट्ठान त्रि., सहारा देने वाला अथवा कारणभूत - नं नपुं., प्र. वि., ए. व. - वक्खुविज्जाणरस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं, दट्ठ कामतानिदानकम्मजभूतपदट्ठानं, अभि. अव. 84; सोतविज्जाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं सोतुकामतानिदान-कम्मजभूतपदट्ठानं, ध. स. अट्ट. 346; आधारभावपच्चुपट्ठानं निस्सयपच्चयभावतो, विसुद्धि. महाटी. 2.85.

आधारभूत त्रि., [आधारभूत], वह, जो किसी का सहारा बना हो, खम्भा, सहारा - तो पु., प्र. वि., ए. व. - सुताधारोति सुतस्स आधारभूतो, जा. अट्ट. 7.181; - तैसु पु. सप्त. वि., ब. व. - तथा तैसु आधारभूतेसु पटिहत्तो सट्ठारत्तोको विहज्जति, सु. नि. अट्ट. 1.181.

आधाररूप त्रि., [आधाररूप], आधार के आकार या स्वरूप से युक्त (भिक्षा-पात्र को रखने के लिए बनाया गया आधार) - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - अमस्सुजातो अपुराणवण्णी, आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठे, जा. अट्ट. 5.192; आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठेति कण्ठे च पनस्स अम्हाकं भिक्खाभाजनद्वपनं पत्ताधारसदिसं पिळ्ळन्धनं अत्थीति मुत्ताहारं सन्धाय वदति, जा. अट्ट. 5.195.

आधारवलय नपुं., [आधारवलय], सहारा देने वाला या रक्षा करने वाला कंगन - यं द्वि. वि., ए. व. - तस्स हेट्ठा असनि-उपदव विट्ठंसनत्थं आधारवलयमिवकत्वा अनग्धं वजिरचुम्बटकं च पूजेसी ति अत्थो, म. वं. टी. 623; (ना.).

आधारित त्रि., आ + धर के प्रेर. का भू. क. कृ. [आधारित], रखा हुआ, सहारा पाया हुआ - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - यथा, महाराज, इमं उदकं वातेन आधारितं, एवं तस्मि उदकं वातेन आधारितंति, मि. प. 71.

आधावति आ + धाव का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आधावति], किसी की ओर अभिमुख होकर तेजी से दौड़ता है, घबराकर इधर-उधर दौड़ता है - धावति विधावती, आधावति

## आधावन

90

## आधिपच्च

परिधावति, धावको, सद्. 2.440; मिगो मनुस्से दिस्वा कम्पमानो मरणभयतज्जितो अन्तोनिवेसनङ्गणे आधावति परिधावति, जा. अद्. 1.160; — न्ति ब. व. — अस्सस्सपि पुरतो धावन्ति, स्थस्सपि पुरतो धावन्तिपि आधावन्तिपि उस्सेत्तेन्तिपि, अप्फोटेन्तिपि, चूळव. 22; — न्तियो वर्त. कृ., स्त्री., प्र. वि., ब. व. — ... चक्कवालमुखवट्टियाव आधावन्तियो ..., दी. नि. अद्. 2.151; — वित्ता पू. का. कृ. — माता तस्स आधावित्वा परिधावित्वा विचरणकाले अज्जं पुत्तं लभि, थेरगा. अद्. 1.212; आधावित्वा विधावित्वा कीळनकाले पन लोभनीयवयस्मिं वा ठितकाले दारकं ओलोकेत्वा, अ. नि. अद्. 2.100; सो पनस्सा दारको आधावित्वा परिधावित्वा कीळनवये ठितो कालमकासि, अ. नि. अद्. 1.280.

आधावन नपुं., आ + धाव से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. आधावन], तेज दौड़, बहुत तेजी के साथ दौड़ना — नेन तृ. वि., ए. व. — कुप्पति सीतेन उण्हेन जिघच्छाय विपासाय अतिभुत्तेन ठानेन पधानेन आधावनेन उपक्कमेन कम्मविपाकेन, नि. प. 138; — परिधावन नपुं., द्व. स., इधर-उधर, भाग-दौड़, भटकाव-भरी दौड़ — न प्र. वि., ए. व. — अवीचिमहानिरये निब्बत्तसत्तस्स हि अपरापरं आधावनपरिधावनं होतियेव, जा. अद्. 3.213; — विधावन नपुं., द्व. स., इधर से उधर हो रही दौड़ — नेन तृ. वि., ए. व. — अथस्सा आधावनविधावनेन कीळितुं समत्थकालतो पट्ठाय पदवारे पदवारे पटुमपुष्कं उट्ठासि, अ. नि. अद्. 1.259.

आधि पु., [आधि], व्यथा, बीमारी, कष्ट — पेमं सिनेहो स्नेहो थ वित्तीळा धिसज्जिता, अभि. प. 173.

आधिकरण / अधिकरण नपुं., [अधिकरण], आधार, कारण, हेतु — णं प्र. वि., ए. व. — किमाधिकरणं यक्ख, चक्काभिनिहतो अहंन्ति, जा. अद्. 4.4.

आधिक्य नपुं., अधिक से व्यु. भाव. [आधिक्य], प्रचुरता, अधिकता, श्रेष्ठता — समीपपूजासादिस्से दोसक्खानोपपत्तिसु, भुसत्थापगमाधिक्यपुब्बकम्मनिवत्तिसु, अभि. प. 1185.

आधिगच्छति / अधिगच्छति अधि + गम का वर्त, प्र. पु., ए. व., छन्द के कारण अधिगच्छति के स्थान पर आधिगच्छति के रूप में प्रयुक्त [अधिगच्छति], प्राप्त करता है — यं गिहिरस्सपि तदत्थजोतकं, पब्बज्जम्पि च तदाधिगच्छति, दी. नि. 3.113; तदाधिगच्छतीति एत्थ आ-

कारो निपातमत्तन्ति आह "तं अधिगच्छती"ति, लीन. (दी. नि. टी.) 3.99.

आधिपच्च नपुं., अधिपति से व्यु., भाव. [आधिपत्य], सर्वोच्च शासक होना, बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्वामी होना, शक्ति-सम्पन्नता — च्वं प्र. वि., ए. व. — आधिपच्चन्ति अधिपतिभावो, खत्तियमहासालादिभावेन सामिकभावोति अत्थो, खु. पा. अद्. 183; — च्वं द्वि. वि., ए. व. — सो तं कम्मं खेपेत्वा तं इद्धिं तं यस्स तं आधिपच्चं आगामी होति आगन्ता इत्थत्तं, अ. नि. 2(2).205; — च्वेन तृ. वि., ए. व. — सब्बलोकाधिपच्चेनाति न एकस्मिं एतके लोके नागसुपण्णवेमानिकपेतेहि सद्धिं, सब्बस्मिं लोके आधिपच्चेन, ध. प. अद्. 2.109; — म्हि सप्त. वि., ए. व. — "दक्खे उट्ठान सम्पन्ने आधिपच्चम्हि ठापये"ति, जा. अद्. 7.192; स. उ. प. के रूप में इस्सरिया- नपुं., उपरिवत् — च्वं द्वि. वि., ए. व. क्रि. वि. १., पूर्ण आधिपत्य के साथ — तेन खो पन समयेन राजा माग्धो सेनियो बिम्बिसारो असीतिया गामसहस्सेसु इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारोति, महाव. 251; देवानं तावतिसानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेन्तो उट्ठानवीरियस्स वण्णवादी भविस्सति, स. नि. 1(1).251; पच्चेका- नपुं., तत्पु. स., हरेक व्यक्ति का स्वामी होना — च्वं द्वि. वि., ए. व. — ये वा पन कुलेसु पच्चेकाधिपच्चं कारेन्ति, बुद्धियेव पाटिकट्ठा, नो परिहानि, अ. नि. 2(1).71; मूलरज्जा- नपुं., तत्पु. स., मूल राज्य पर स्वामित्व — च्वं प्र. वि., ए. व. — मूलरज्जाधिपच्चं तं अहं निन्दाकरं न हि, चू. वं. 63.21; लंका- नपुं., तत्पु. स., लंका का आधिपत्य या स्वामित्व — च्वं प्र. वि., ए. व. — लंकाधिपच्चं इदं अप्पतरं मं आसि बुद्धो गुणोहि विविधोहि पमाणसुज्जो, दा. वं. 6.17; सब्बलोका- नपुं., तत्पु. स., समस्त लोकों का स्वामित्व या स्वामी होना — च्वेन तृ. वि., ए. व. — सब्बलोकाधिपच्चेन सोतापत्तिफलं वरं, ध. प. 178; स. पू. प. के रूप में — ज्ञान नपुं., तत्पु. स., आधिपत्य का स्थान अथवा अवस्था, स्वामित्व, प्रभुता — ने सप्त. वि., ए. व. — "दक्खे उट्ठान सम्पन्ने, आधिपच्चम्हि ठापये"ति ... तस्सा तादिसा आधिपच्चज्ज्ञाने न ठपेतब्बा, जा. अद्. 7.192-193; — परिवार पु., द्व. स., आधिपत्य या शक्ति तथा प्रशंसा — रो प्र. वि., ए. व. — आधिपच्चपरिवारो, सब्बमेतेन लब्धति, खु. पा. 8.11; — भूत त्रि., वह, जो अधिपति या स्वामी बन गया है या बना दिया गया है, प्रमुखता को प्राप्त, प्रधानीभूत — तं प्र. वि.,

## आधिपतेय्य

91

## आधूत

ए. व. - यच्च सक्कादीनं तस्मिं तस्मिं देवनिकाये  
आधिपच्चभूतं इस्सरिय, उदा. अहु. 127; - सङ्गात त्रि.,  
अधिपत्य या स्वामित्व के रूप में विख्यात - तेन पु., तृ.  
वि., ए. व. - अपि च आधिपच्चसङ्गातेन इस्सरियद्वेनपि  
एतानि इन्द्रियानि, पटि. म. अहु. 1.76; - सभाव त्रि.,  
स्वामी या अधिपति के स्वभाव वाला - तो प. वि.,  
ए. व. - चत्तारोधिपती वृत्ता आधिपच्चसभावतो, ना. रू.  
प. 166.

आधिपतेय्य नपुं., [बौ. सं. आधिपतेय, सं. आधिपत्य], 1.  
प्रधानता, प्रमुखता, महत्व, प्रभाव - य्यं प्र. वि., ए. व. -  
अनिच्चतो मनसिकरोतो अधिमोक्खबहुलस्स कतमिन्द्रियं  
आधिपतेय्यं होति, पटि. म. 234; - य्यं द्वि. वि., ए. व.  
- ... इमस्मा लोका परलोकं गतं दिब्बं आयुवण्णसुखयस  
- आधिपतेय्यं ध. प. अहु. 2.171; - य्येन तृ. वि., ए.  
व. - ... नाधिपतेय्येन दिब्बे अट्ठीयथ हरायथ जिगुच्छथ,  
अ. नि. 1(1).137; - य्येहि तृ. वि., ब. व. -  
आयुवण्णयससुखआधिपतेय्येहि ... उक्कारेहि कामगुणेहि  
समपितस्स समङ्गीभूतस्स, चरिया. अहु. 154; 2. त्रि.,  
शासक, प्रमुख, प्रधान - य्यो प्र. वि., ए. व. - दुक्खतो  
मनसिकरोतो पस्सद्विबहुलस्स कतमो विमोक्खो आधिपतेय्यो  
होति, पटि. म. 243; - य्या पु., प्र. वि., ब. व. - किं  
अधिपतेय्या सब्बे धम्मा, अ. नि. 3(1).158; - य्यानं  
ष. वि., ब. व. - आधिपतेय्यानन्ति अधिपतिद्वानं  
जेड्ढकद्वानं करोन्तानं, अ. नि. अहु. 2.254; स. उ. प. के  
रूप में कम्मा, किंमा, छन्दा, तण्हा, दस्सना,  
धम्मा, पञ्ञा, विमंसा, विरिया, सता, समाधा. के अन्त.  
द्रष्ट.

आधिपतेय्यहु पु., तत्पु. स., प्रधानता अथवा प्रमुखता को  
प्रकाशित करने वाला अर्थ, मार्ग के पांच अर्थों में से  
एक - द्वो प्र. वि., ए. व. - मग्गस्स निय्यानद्वो  
हेतुद्वो दस्सनद्वो आधिपतेय्यद्वो भावनद्वो, पटि. म. 108;  
284; अधिपतिभावेन आधिपतेय्यद्वोति, पटि. म. अहु. 1.82;  
- द्वं द्वि. वि., ए. व. - मग्गस्स निय्यानद्वं हेतुद्वं  
दस्सनद्वं आधिपतेय्यद्वं भावेन्तो, पटि. म. 101; - द्वेन तृ.  
वि., ए. व. - सति आधिपतेय्यद्वेन अभिज्जेय्या, पटि. म. 20.  
आधिपतेय्यत्त नपुं., आधिपतेय्य का भाव, अधिपति या  
अधिपतिप्रत्यय की अवस्था - त्ता प. वि., ए. व. -  
अनत्तानुपस्सनाय विपस्सनाक्खणेपि पज्जिन्द्रियस्सेव  
आधिपतेय्यत्ता, पटि. म. अहु. 2.148.

आधिपतेय्यपच्चय पु., [अधिपतिप्रत्यय], अधिपति प्रत्यय  
अथवा अधिपति प्रत्यय से उत्पन्न - ता, स्त्री. भाव.  
अधिपति-प्रत्यय होने की अवस्था, तृ. वि., ए. व. - तत्थ  
चक्खु आधिपतेय्यपच्चयताय पच्चयो, नेत्ति. 67; चित्तस्स  
इन्द्रियानि पच्चयो आधिपतेय्यपच्चयताय मनसिकारो, पेटको.  
281.

आधिपतेय्यसंवत्तनिक त्रि., प्रधानता या प्रमुखता की स्थिति  
को प्राप्त कराने वाला या उस स्थिति तक ले आने वाला  
- तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आधिपतेय्यसंवत्तनिकं  
आयस्मता वुत्तेन कुम्मारपुत्तेन कम्मं उपचितन्ति, दी. नि.  
2.103; आधिपतेय्यसंवत्तनिकन्ति जेड्ढकभावसंवत्तनिकं, दी.  
नि. अहु. 2.146.

आधिपतेय्यसङ्गात त्रि., आधिपतेय्य नाम वाला - तेन पु.  
तृ. वि., ए. व. - वतुत्थवग्गस्स पठमे सुखञ्च तं  
सहजातानं आधिपतेय्यसङ्गातेन इन्द्वेन इन्द्रियञ्चाति  
सुखिन्द्रियं स. नि. अहु. 3.269.

आधियति आ + धा का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., शा.  
अ., ठीक से रखा जाता है, सुव्यवस्थित रूप में रखा  
जाता है, ला. अ., सुदृढ़ बनाया जाता है, एकाग्र किया  
जाता है - चित्तं समाधियतीति चित्तं सम्मा आधियति  
अपितं विय अचलं तिड्ढति, म. नि. अहु. (मू.प.)  
1(1).183; चित्तं समाधियतीति आरम्भणे सम्मा आधियति  
सुद्ध उपितं ठपियति, स. नि. अहु. 3.235; समाधियतीति  
सम्मा आधियति, निच्चलं हुत्वा आरम्भणे ठपीयति, विभ.  
अहु. 296.

आधीन त्रि., अधीन का अप. [अधीन], वशवर्ती,  
नियंत्रण में रखने वाला - नं नपुं., प्र. वि., ए. व.  
- यं खलु धम्ममाधीनं वसो वत्तति किञ्चनं, जा. अहु.  
5.346.

आधुनिक त्रि., अधुना से व्यु. [आधुनिक], वर्तमान समय में  
विद्यमान, इस समय में मौजूद - कानं ष. वि., ब. व. -  
विरचितो आधुनिकानं अनुगहाय, रूपा. 147(रो.).

आधुयमान त्रि., आ + धू अथवा धू के कर्म. वा. का वर्त.  
कृ., हिलाया-डुलाया जा रहा, कम्पित किया जा रहा, मन्द  
गति से प्रवाहित किया जा रहा - आधुयमान-  
मलयाचलकाननन्तो, दा. वं. 5.33(रो.).

आधूत आ + धू का भू. क. कृ. [आधूत], प्रकम्पित,  
हिलाया-डुलाया गया, विक्षोभित किया गया, कांप रहा -  
तो पु., प्र. वि., ए. व. - धूतो आधूतचलिता, निसितं तु

## आधेय्य

92

## आनञ्ज

च तेजितं, अभि. प. 744; - तं नपुं. प्र. वि., ए. व. - वातेरितं सालवनं, आधुतं दिजसेवितं, वि. व. 692; आधुतन्ति मन्देन मालुतेन सणिकसणिकं विधूपयमानं, वि. व. अहु. 147.

**आधेय्य'** त्रि., आ + धा का सं. कृ. [आधेय]. क. वह, जिसे किसी आधार पर रखा जाय, उचित रूप में रखे जाने योग्य, ठीक से स्थापित किये जाने योग्य - **य्यं** नपुं. प्र. वि., ए. व. - तस्स तं वचनं आधेय्यं गच्छति, गच्छकरण्डकेव नं कासिकवत्थं, पु. प. 142; आधेय्यं गच्छतीति ... एवं उत्तमङ्गे सिरस्मिं हृदये च आधातब्बतं ठपेतब्बतस्मि गच्छति, प. प. अहु. 65; **ख.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में - वह, जिसे आधार पर स्थापित किया जाय - **य्येन** तृ. वि., ए. व. - तत्थ ... आधेय्येन पत्थटो होति, सद्. 3.709-10; - **भूत** त्रि., वह, जो किसी आधार पर रखा गया हो - ते पु., सप्त. वि., ए. व. - तेन आधारभूतेन वत्थुना सप्पि आनेति इति आधेय्यभूते सप्पिहि आनीते, सद्. 3.925; - **मुख** त्रि., कान का कच्चा, भोला-भाला, तुरन्त विश्वास कर लेने वाला - **खो** पु., प्र. वि., ए. व. - दत्त्वा अवजानाति, संवासेन अवजानाति आधेय्यमुखो होति, लोलो होति, मन्दो मोमूहो होति, अ. नि. 2(1).155; आधेय्यमुखोति पाळिया पन ठपितमुखोति अत्थो, अ. नि. अहु. 3.51-52; आधेय्यमुखोति आदितो धेय्यमुखो, पठमवचनस्मिं येव ठपितमुखोति अत्थो, प. प. अहु. 93; अ. नि. टी. 3.45.

**आधेय्य'** त्रि., संभवतः उप. अधि से व्यु., निजी, अपना, अपने अधीन रहने वाला, अपने उत्तरदायित्व के रूप में विद्यमान, पूर्णतया अपनी निजी धरोहर, ठीक से संजो कर रखने योग्य - **य्यं** नपुं. प्र. वि., ए. व. - यो तत्थ भिक्षु व्यत्तो पटिवलो तस्साधेय्यं पातिमोक्खन्ति, महाव. 145; अत्थि चेतसिकं दुक्खं, तवाधेय्यं अरिन्दम, अप. 1. 334; - **य्या** पु., प्र. वि., व. व. - चत्तारि सामञ्जफलानि चतस्सो पटिसम्भिता तस्सो विज्जा छळमिज्जा केवलो च समणधम्मो सब्बे तस्साधेय्या होन्ति, मि. प. 323.

**आन** नपुं. [आन], भीतर की ओर खींची जा रही वायु, प्राणवायु, आश्वास - नं प्र. वि., ए. व. - अथो अपानं परस्सासो, अस्सासो आनमुच्चते, अभि. प. 39; आनन्ति अस्सासो, नो परस्सासो, पटि. म. 165; तत्थ आनन्ति अस्सासो, थेरगा. अहु. 2.158; आनन्ति अभन्तरं पविसन

वातो, पटि. म. अहु. 2.64; द्रष्ट. अपान, आपान, उदान, एवं पान.

**आनञ्च** नपुं., अनन्त से व्यु., भाव. [आनन्त्य], काल, स्थान एवं संख्या की अनन्तता या असीमता, प्रचुरता, अधिकता - **अनन्तमेव आनञ्चं**, विसुद्धि. 1.322; चूळनि. अहु. 56; पटि. म. अहु. 1.78; स. उ. प. के रूप में, **आकासा./विज्जाणा-** नपुं., आकास की अनन्तता, विज्ञान की अनन्तता - **ञ्चं** प्र. वि., ए. व. - **आकासानन्तमेव आकासानञ्चं**, विसुद्धि. 1.321; **विज्जाणं आनञ्चं विज्जाणानञ्चन्ति अवत्त्वा विज्जाणञ्चन्ति वुत्तं**, विसुद्धि. 1.322.

**आनञ्ज/आनेज्ज/आनेञ्ज** 1. नपुं. [बौ. सं. आनञ्ज/आनेज्ज], शा. अ., अविचल होना, अविक्षिप्तता, अचंचलता, अप्रतिहतता, **ला. अ.**, ध्यान-भावना द्वारा लाई गई चार अरूप-ध्यान की चार प्रकार की कुशल चेतना - **ञ्जं** प्र. वि., ए. व. - ... न इज्जति न फन्दति न चलतीति आनेञ्जं, अभि. अव. पु. टी. 79; **अनोनं चित्तं कोसज्जे न इज्जतीति - आनेञ्जं**, पटि. म. 377; उदा. अहु. 150; ... **ओभासगतं चित्तं अविज्जन्धकारे न इज्जतीति आनेञ्जं**, पटि. म. 377; - **ञ्जं** द्वि. वि., ए. व. - **आनेञ्जं समापज्जतीति आकासानञ्चायतानानेञ्जं समापज्जति**, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.41; - **स्स प. वि.**, ए. व. - **आनेञ्जसप्पायाति आनेञ्जस्स चतुत्थज्झानस्स सप्पाया**, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.41; स. उ. प. के रूप में, **कम्मा-** नपुं., कुशलकर्म-विषयक स्थिरता अथवा अविचल-भाव - **ञ्जेन** तृ. वि., ए. व. - **कम्मानेञ्जेन कम्मविज्जाणं, विपाकानेञ्जेन विपाकविज्जाणं उपगतं होति**, स. नि. अहु. 2.69; - **ततिया-** नपुं., तृतीय अरूपध्यान के चित्त की स्थिर अवस्था - **ञ्जे** सप्त. वि., ए. व. - **इमस्मिं ततिय आनेञ्जे विपस्सनावसेन ओसक्कना कथिता**, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.42; **दुतिया-** नपुं., अरूपध्यान के दूसरे चित्त की अविचल अवस्था, द्वितीय ध्यान में अविचल स्थिति - **ञ्जे** सप्त. वि., ए. व. - **इति इमस्मिं दुतिय आनेञ्जे विपस्सनावसेन ओसक्कना कथिता**, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.41; **पठमक-** नपुं., प्रथम अरूप ध्यान के चित्त की अविचल अवस्था - **ञ्जे** सप्त. वि., ए. व. - **इति इमस्मिं पठमकआनेञ्जे समाधिवसेन ओसक्कना कथिता**, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.41; **विपाका-** नपुं., अरूप ध्यान के विपाक चित्तों की अविचल अवस्था -

ञ्जेन तृ. वि., ए. व. — विपाकानेञ्जेन विपाकविज्ञाणं उपगतं होति, स. नि. अहु. 2.69; 2. त्रि., अविचल, स्थिर, चंचलता से रहित, गतिरहित — ञ्जो पु., प्र. वि., ए. व. — चत्तारो सतिपट्टाना चत्तारो विहारा दिब्बो ब्रह्मा अरियो आनेञ्जो चत्तारो, पेटको. 328; — ञ्जं पु., द्वि. वि., ए. व. — इधाहं, आवुसो, सप्पिनिकाय नदिशा तीरे आनेञ्जं समाधिं समापन्नो, पारा. 145; आनेञ्जं समाधिं अनेजं अचलं कायवाचाविफन्दविरहितं चतुत्थज्ञानसमाधिं, पारा. अहु. 2.92; — ञ्जेन पु., तृ. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन भगवा आनेञ्जेन समाधिना निसिन्नो होति, उदा. 97; आनेञ्जसमाधिनाति चतुत्थज्ञानपादकं न अगगफलसमाधिना, उदा. अहु. 149; स. पू. प. के रूप में. — कथा- स्त्री., आनेञ्ज या अविचल स्थिति के विषय में कथन — आनेञ्जकथा, कथा. 495-496; इदानि आनेञ्जकथा नाम होति, प. प. अहु. 279; — कारण- नपुं., हांथी को अविचल या अचल बना देना, स्थिरीकरण — णं द्वि. वि., ए. व. — सो आनेञ्जं कारणं कारियमानो नेव पुरिमं पादे घोपेति न पछिमे पादे घोपेति, म. नि. 3.174; तोमरहत्था मनुस्सा परिवारेत्वा आनेञ्जकारणं कारेन्ति, जा. अहु. 1.397; — कारित त्रि., स्थिर या अचल बने रहने के लिए सुशिवित (हाथी) — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सुभानुरुपो आयासि, आनेञ्जकारितो विय, अप. 1.23; आनेञ्जकारितो वियाति तोमरादीहि कारितो आनेञ्जो हत्थी विय, अप. अहु. 1.238; — पटिसंयुत त्रि., स्थिरता या अचल स्थिति के साथ जुड़ा हुआ — ताय स्त्री., तृ. वि., ए. व. — आनेञ्जपटिसंयुताय च पन कथाय कळम्मानाय न सुत्सूसति, म. नि. 3.39; आनेञ्जपटिसंयुतायाति आनेञ्जसमापत्तिपटिसंयुताय, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.34; — प्त त्रि., [बौ. सं. आनेञ्ज्यप्राप्त], अविचल अथवा अबाधित अवस्था को प्राप्त — तो पु., प्र. वि., ए. व. — कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु आनेञ्जपत्तो होति?, अ. नि. 1(2).212; — त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अमिस्सीकतमेवरस चित्तं होति, ठितं, आनेञ्जपत्तं, वयञ्जस्सानुपस्सति, महाव. 256; आनेञ्जपत्तन्ति अचलनपत्तं, महाव. अहु. 345; — पत्ति स्त्री., अविचल अवस्था की प्राप्ति, नित्यभाव में स्थिति — ... निच्चलभावेन अवहानं आनेञ्जपत्तिं विसुद्धिं, महाटी. 2.7; — मय त्रि., स्थिरता अथवा अचलभाव से भरा हुआ — या पु., प्र. वि., ब. व. — तिविधा सङ्गारा पुञ्जमया अपुञ्जमया आनेञ्जमया, तप्पच्चया विज्ञाणं, पेटको. 306;

— विहारसमापत्ति स्त्री., तत्पु. स., अचल अथवा अकम्पित अवस्था की प्राप्ति — भगवता सद्धिं आनेञ्जविहारसमापत्तिधम्मपरिभोगेन एकपरिभोगा अहेसुं, सु. नि. अहु. 2.43; ध. प. अहु. 2.305; — वोहार पु., आनेञ्ज शब्द का व्यवहार में सामान्य प्रयोग — रो प्र. वि., ए. व. — आरम्भणविभागेन चतुब्धिं अरुपावचरञ्जानन्ति एतेसं पञ्चत्रं ज्ञानानं आनेञ्जवोहारो, उदा. अहु. 150; — संयोजन नपुं., तत्पु. स., नीचे के छ ध्यानों की छ प्रकार की समापत्तियों के साथ लगाव या बन्धन — नेन तृ. वि., ए. व. — आनेञ्जसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तो आकिञ्चञ्जायतनाधिमत्तो पुरिसपुग्गलोति, म. नि. 3.40; आनेञ्जसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तोति आनेञ्जसमापत्ति संयोजनेन विसंसद्धो, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.34; — सङ्गार पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आनेञ्ज्याभिसंस्कार], ध्यान-भावना द्वारा उदित चार अरूप ध्यानों की चार प्रकार की कुशल चेतना — रो प्र. वि., ए. व. — तथेवानेञ्जसङ्गारो, अरुपावचरभूमियं, अभि. अव. 575; तथेवानेञ्जसङ्गारो, एकारूपभवे पुन, तदे.; तथेवानेञ्जसङ्गारो न इञ्जति न फन्दति न चलतीति आनेञ्जं, आनेञ्जञ्च तं सङ्गारो चाति आनेञ्जसङ्गारो अभि. अव. पु. टी. 1.79; भावनावसेनेवपवता चतस्सो अरुपावचरकुसलचेतना आनेञ्जाभिसङ्गारो नाम, अभि. अव. अभि. टी. 2.64; — सञ्जा स्त्री., अविचलता अथवा ध्यान भावना को प्राप्त चित्त की स्थिरता या चेतना — या च सम्परायिका रूपसञ्जा, या च आनेञ्जसञ्जा — सब्बासञ्जा, म. नि. 3.47; — सञ्जी त्रि., अचलभाव अथवा ध्यान में प्राप्त चित्त के अविचल भाव की चेतना से युक्त — ङ्गिनो पु., च. वि., ए. व. — आनेञ्जसञ्जिनो असञ्जायतनं समापन्नस्स आकिञ्चञ्जायतनसहगता मनसिकारा समुदाचरन्ति, पेटको. 267; — सप्पाय त्रि., चित्त की स्थिरता पाने में लाभदायक या हितकर — या स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अयं भिक्खवे, पठमा आनेञ्जसप्पाया पटिपदा अक्खायति, म. नि. 3.46; इति, खो, आनन्द, देसिता मया आनेञ्जसप्पाया पटिपदा, देसिता आकिञ्चञ्जायतनसप्पाया पटिपदा, म. नि. 3.49; — समाधि पु., अविचल-भाव लाने वाला ध्यान, चित्त की स्थिरता से युक्त समाधि, चौथे अरूप-ध्यान की समाधि — ना तृ. वि., ए. व. — इमानि च पञ्च भिक्खुसतानि सब्बेव आनेञ्जसमाधिना निसीदिन्हाति, उदा. 98; आनेञ्जसमाधिनाति चतुत्थज्ञानपादकं न



## आनण्य / आणण्य

94

आनन

अग्नफलसमाधिना, उदा. अहु. 149; आनेज्ज समाधिन्ति अनेजं अचलं कायवाचाविष्कन्दविरहितं चतुत्थज्जानसमाधिं, पारा. अहु. 2.92; - समापत्ति स्त्री., अविचल-भाव या चित्त स्थिरता की प्राप्ति, चार अरूप ध्यानों के अविचल कुशल चित्तों की प्राप्ति - ना तू. वि., ए. व. - आयस्मन्तं यसोजं सत्था पक्कोसित्वा आनेज्जसमापत्तिना पटिसन्धारमकासि, थेरगा. अहु. 1.389; - समापत्तिसंयोजन नपुं., अरूप ध्यानों में चार कुशल चेतनाओं की प्राप्ति - नेन तू. वि., ए. व. - विसंयुतोति आनेज्जसमापत्तिसंयोजनेन विसंसद्दो, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.34; - ज्जाधिमुत्त त्रि., चित्त की स्थिरता की प्राप्ति-हेतु पूरी तरह से लगा हुआ - तो पु. प्र. वि., ए. व. - विज्जति यं इधेकच्चो पुरिसपुग्गलो आनेज्जाधिमुत्तो अस्स, म. नि. 3.39-40; - रस पु., ष. वि., ए. व. - आनेज्जाधिमुत्तस्साति किलेससिञ्चनविरहितासु हेट्ठिमासु छसु समापत्तीसु अधिमुत्तस्स तन्निवस्स तग्गरुनो तप्पभारस्स, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.35; - ज्जाभिसङ्गार पु., स्थिर अवस्था का संग्रह, अरूप ध्यान-भावना द्वारा चार प्रकार की कुशल चेतनाओं का संग्रह - रो प्र. वि., ए. व. - तयो सङ्गारा - पुज्जाभिसङ्गारो, अपुज्जाभिसङ्गारो, आनेज्जाभिसङ्गारो, दी. नि. 3.174; आनेज्ज निच्चलं सत्तं विपाकभूतं अरूपमेव अभिसङ्गारोतीति आनेज्जाभिसङ्गारो, दी. नि. अहु. 3.164; - रेन तू. वि., ए. व. - अपुज्जाभिसङ्गारो पुज्जाभिसङ्गारेन च आनेज्जाभिङ्गारेन च सुज्जो, पटि. म. 353; - ज्जूपग त्रि., आनेज्ज की अवस्था के समीप पहुंचा हुआ - गं नपुं., प्र. वि., ए. व. - ठानमेतं विज्जति यं तंसंवत्तनिकं विज्जाणं अस्स आनेज्जूपगं, म. नि. 3.46; आनेज्जूपगंति कुसलानेज्जसभावूपगतं अस्स, तादिसमेव भवेय्याति अत्थो, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.41.

आनण्य / आणण्य नपुं., भाव. [आनृण्य], ऋण से मुक्ति की अवस्था, कर्ज से छुटकारे की हालत - ण्यं प्र. वि., ए. व. - क्वचि न भवति आनण्यं, सद्. 3.625; सेय्यथापि महाराज, यथा आणण्यं यथा आरोग्यं यथा बन्धनामोक्खं, दी. नि. 1.65; 'सेय्यथापि, महाराज आणण्यन्ति एत्थ भगवा पहीनकामच्छन्दनीवरणं आणण्यसदिसं, सेसानि ओरोग्यादिसदिसानि कत्वा दस्सेति, दी. नि. अहु. 1.174; - रस ष. वि., ए. व. - तस्स चतुरोद्यतिणस्स पिययन्ति

इणायिका विय आणण्यस्साति अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठापेसि, सु. नि. अहु. 2.229; - निदान त्रि., ऋणमुक्ति के कारण उत्पन्न अथवा उदित - नं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - ततो निदानन्ति आणण्यनिदानं, दी. नि. अहु. 1.172; - परिभोग पु., तत्पु. स. [आनृण्यपरिभोग], ऋणमुक्ति की अवस्था का उपभोग - गो प्र. वि., ए. व. - सो इणपरिभोगस्स पच्चनीकत्ता आणण्यपरिभोगो वा होति, दायज्जपरिभोगेयेव वा सङ्गं गच्छति, विसुद्धि. 1.41; एवं इणपरिभोगयुतो लोकतो निस्सरितुं न लभतीति तप्पटिपक्खत्ता सीलवतो पच्चवेत्थितपरिभोगो आणण्यपरिभोगोति आह, विसुद्धि. महाटी. 1.69.

आनत त्रि., आ + णन्त का भू. क. कृ. [आनत], शा. अ., थोड़ा सा झुका हुआ, ला. अ., विनम्र, विनत - अथद्वतानतीसाकोति सखिलसम्मोदभावसङ्घाताय अथद्वताय अनतईसो थोकनतईसोति अत्थो, जा. अहु. 7.143.

आनन नपुं., [आनन], मुख, चेहरा - वदनं तु मुखं तुण्डं वत्तं लपनमाननं, अभि. प. 260; वत्तं पज्जाननाचारे, धज्जङ्गे सुखुमे कणो, अभि. प. 1047; वदनं लपनं तुण्डं मुखंमस्सञ्च आननं, सद्. 2.386; - ने सप्त. वि., ए. व. - आनने नं गहेत्वा, मण्डले परिवत्तये, जा. अहु. 2.81; तं अस्सं आनने गहेत्वा असमण्डले परिवत्तये, जा. अहु. 2.81; स. उ. प. के रूप में, पमुदिता.- त्रि., ब. स. [प्रमुदितानन], प्रसन्न मुख वाला - नो पु., प्र. वि., ए. व. - मेत्तचित्तो कारुणिको, सदापमुदिताननो, अप. 2.158; पटिसंफुलिता. - त्रि., प्रीति से प्रफुल्लित अथवा खिले हुए मुख वाला - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - गुणोघायतनीभूतं पीति सम्फुल्लिताननं, अप. 2.125; रविदित्तिहरा. - त्रि., ब. स. [रविदीप्तिहरानन], सूर्य की चमक को भी फीका कर देने वाले तेजस्वी मुख वाला - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - सिरीनिलयसङ्गारं, रविदित्तिहराननं, अप. 2.126; विकता. - त्रि., ब. स. [विकृतानन], विकृत मुख वाला - ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ततो जराभिभूता सा, विवण्णा विकतानना, अप. 2.217; विमला. - त्रि., ब. स. [विमलानन], निर्मल मुख वाला - नो पु., प्र. वि., ए. व. - वीरो कमलपत्तक्खो, ससङ्खविमलाननो, अप. 2.111; सोण्णा. - त्रि., ब. स. [सुवर्णानन], सोने के समान चमकदार मुख वाला - नो पु., प्र. वि., ए. व. - सोण्णाननो जिनवरो, समणीव सिलुच्चयो, अप. 2.160.

## आननीय

95

## आनन्तरिक

आननीय त्रि. आ + नी का अनियमित सं. कृ., बांधे जाने योग्य, पकड़कर लाए जाने योग्य – यो पु., प्र. वि., ए. व. – न रागपासेन हि आननीयो, समन्त. 428(रो.).

आनन्तरिक/आनन्तरिय/अनन्तरित त्रि., अनन्तर से व्यु., 1. सद्यः-पूर्ववर्ती अथवा सद्यः-परवर्ती, तुरन्त पहले आया हुआ, तुरन्त बाद में आया हुआ, अव्यवहित, आनुक्रमिक – स्स पु., ष. वि., ए. व. – पकतत्तस्स समानसंवासकस्स समानसीमाय तितस्स अन्तमसो आनन्तरिकस्सापि भिक्खुनो विज्जापेन्तस्स सङ्गमज्जे पटिककोसना रुहति, महाव. 419; आनन्तरिकस्साति अत्तनो अनन्तरं निसिन्नस्स, महाव. अहु. 403; – तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. – तत्थ अब्बोकिष्णानीति खत्तियादिजातिअन्तरेहि अवोमिस्सानि अनन्तरितानि, उदा. अहु. 156; 2. तुरन्त, सद्यः या तत्काल (समाधि एवं मग के विशेषण के रूप में प्रयुक्त) फलदायक – कं पु., द्वि. वि., ए. व. – यं बुद्धसेहो परिवण्णयी सुचिं, समाधिमानन्तरिकज्जमाहु, खु. पा. 6.5; यच्च अत्तनो पवत्ति समनन्तरं नियमेनेव फलपदानतो 'आनन्तरिकसमाधी'ति आहु, न हि मग्गसमाधिहि उप्पन्ने तस्स फलुप्पत्ति निसेधको कोचि अन्तरायो अत्थि, खु. पा. अहु. 144; समाधिमानन्तरिकज्जमाहुति यं अत्तनो पवत्तिसमनन्तरं नियमेनेव फलपदानतो आनन्तरिकसमाधीति आहुति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 2.457; 3.क. पु., ('पुगल' शब्द के साथ अथवा उसके विना भी प्रयुक्त) पांच प्रकार के जघन्य पापकर्मों का तुरन्त फल प्राप्त करने वाला व्यक्ति – को प्र. वि., ए. व. – असञ्चिच्च मातरं जीविता दोरोपेत्वा आनन्तरिको होति, कथा. 477; – स्स च. / ष. वि., ए. व. – आनन्तरियस्स पुगलस्स अत्थि अन्तरा भवोति?, कथा. 302; – का प्र. वि., ब. व. – पच्च पुगला आनन्तरिका, पु. प. 119; 3.ख. नपुं., ('कम्म' शब्द के साथ अथवा इसके विना प्रयुक्त) तुरन्त फल देने वाले पांच प्रकार के गम्भीर पापकर्म – यं प्र. वि., ए. व. – अथ नं यस्मा आनन्तरियकम्मं नाम कम्मपथप्पत्तं, प. प. अहु. 270; ... जीविता दोरोपेत्तस्स कम्म आनन्तरियं होति, अ. नि. अहु. 1.340; – यं द्वि. वि., ए. व. – ... मनुस्सभूत मातरं वा पितरं वा मारेन्तो आनन्तरियं फुसति, तदे., येन तृ. वि., ए. व. अयं आनन्तरियेन मातुघातककम्मेन मातुघातको, महाव. अहु. 289; – यानं ष. वि., ब. व. – पच्चन्मिपि आनन्तरियानं कत्ता एकेन कम्मेन निरये निब्बत्तति, अ. नि.

अहु. 2.105; 4. नपुं., भाव. [आनन्तर्य], शा. अ., निरन्तरता, लगातारपन, सातत्य, अत्यधिक सामीप्य, अव्यवहित पूर्ववर्तिता, ला. अ., तुरन्त विपाक देने वाली मार्गसमाधि – अथ इति कत्थचि पञ्चानन्तरियाविकिन्नाधिकारन्तरेसु पि, सह. 3.891; – यं द्वि. वि., ए. व. – सो इमेसं पच्चन्नं इन्द्रियानं मुदुत्ता दन्धं आनन्तरियं पापुणाति आसवानं खयाय, अ. नि. 1(2).172; आनन्तरियन्ति अनन्तरविपाकदायकं मग्गसमाधिं, अ. नि. अहु. 2.340; स. पू. प. के रूप में, – कम्म – नपुं., इसी जन्म में सद्यः फल देने वाले पांच प्रकार के जघन्य पाप कर्म, पांच प्रकार के गम्भीर पापकर्म – म्मं प्र. वि., ए. व. – देवदत्तेन पठमं आनन्तरियं कम्म उपचितं, चूळव. 332; – म्मेन तृ. वि., ए. व. – कम्मावरणे नाति पच्चविधेन आनन्तरियकम्मेन, पटि. म. अहु. 2.10; – स्स ष. वि., ए. व. – नियतमिच्छादिद्विया सद्धिं आनन्तरियकम्मस्सेतं नाम, दी. नि. अहु. 3.158; – दीपन नपुं., निरन्तरता का प्रकाशन – कम्मस्सकत्तादीपनत्थं, पच्चत्तपुरिसकारदीपनत्थं, आनन्तरियदीपनत्थं, ब्रह्मविहार दीपनत्थ ... लोकसम्मुतिया अप्पहानत्थञ्चाति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).148; तस्मा भगवा आनन्तरियदीपनत्थं पुगलकथं कथेति, अ. नि. अहु. 1.79; – धम्म पु., गुरु-गम्भीर पापकर्म – म्मा प्र. वि., ए. व. – तत्थ पच्चानन्तरियधम्मा कम्मन्तरायिका नाम, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).9; – वत्थु नपुं., पांच अत्यन्त गम्भीर पापकर्म – त्थूनि प्र. वि., ब. व. – तत्थ आनन्तरियवत्थूनि नाम गरुणि भारियानि, प. प. अहु. 270; – स्मिं सत्त. वि., ए. व. – आनन्तरियवत्थुस्मिं आनन्तरियकं वदे, विन. वि. 286; – सदिस त्रि., पांच प्रकार के आनन्तरिय कर्मों जैसा (गम्भीर पापकर्म) – सो पु., प्र. वि., ए. व. – महासावज्जो हि अरियूपवादो आनन्तरियसदिसो, पारा. अहु. 1.124; – सं नपुं., प्र. वि., ए. व. – कम्मं पन भारियं, आनन्तरियसदिसमेव, अ. नि. अहु. 1.341; – सदिसत्त नपुं., भाव., आनन्तरिय कर्मों के साथ समानता – ता प. वि., ए. व. – महासावज्जो हि अरियूपवादो, आनन्तरियसदिसत्ता, विसुद्धि. 2.54; – समाधि पु., मार्ग-समाधि – यथा मग्गसमाधि आनन्तरिकसमाधीति बुच्चति, थेरीगा. अहु. 110; – म्हि सत्त. वि., ए. व. – अविकखेपपरिसुद्धता आसवसमुच्छेदे पञ्चा आनन्तरिकसमाधिहि जाणं, पटि. म. 2.

## आनन्तरियक

96

आनन्द

आनन्तरियक त्रि., आनन्तरिय से व्यु., सद्यः विपाक देने वाले पांच प्रकार के गम्भीर पाप-कर्मों से युक्त अथवा इन्हे करने वाला - का पु., प्र. वि., ब. व. - एवमिमस्मिं दुके ये च पुगला पञ्चानन्तरियका, प. प. अहु. 36; - कं नपु., द्वि. वि., ए. व. - आनन्तरियवत्थुस्मिं, आनन्तरियकं वदे, विन. वि. 286; आनन्तरियकं कम्मं, आपज्जति कथं नरो, उक्त. वि. 741; मातरं पितरं हन्त्वा, नान्तरियकं फुसे, उक्त. वि. 744.

आनन्द पु., [आनन्द], प्रसन्नता, हर्ष, आह्लाद सन्तुष्टि का भाव, प्रीतिभाव - न्दो प्र. वि., ए. व. - आनन्दो प्रमुदामोदा सन्तोसो नन्दि सम्मदो, अभि. प. 87; तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उपिलावितत्तं करणीयन्ति, मि. प. 178; को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति, ध. प. 146; आनन्दो च प्रमोदो च, सदाहसितकीळितं, मातरं परिचरित्वान्, लब्धमेतं विजानतो, जा. अहु. 5.324; महाराजकुले तस्मिं आनन्दो च महा अहु. म. वं. 22.59; - न्दं द्वि. वि., ए. व. - आनन्दं तुष्टिं जननतो आनन्दो नाम पच्चेकेबुद्धोति अत्थो, अप. अहु. 2. 183; स. उ. प. के रूप में, गिरिमा. - पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम - न्दो प्र. वि., ए. व. - तेन खो पन समयेन आयस्मा गिरिमानन्दो आबाधिको होति दुक्खितो बाळ्हगिलानो, अ. नि. 3(2).90; निरा. - त्रि., ब. स. [निरानन्द], आनन्दरहित, प्रसन्नता से रहित - न्दो पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ सेसिं निरानन्दो, अनूना दस रतियो, जा. अहु. 5.65; स. पू. प. के रूप में, - कर त्रि., [आनन्दकर], आनन्द का भाव उत्पन्न करने वाला, मन में प्रमोद भर देने वाला - रं पु., द्वि. वि., ए. व. - ते थेरा थेरमानन्दं आनन्दकरमब्रवुं, म. वं. 3.23; - छण पु., आरुन्धदायक महोत्सव या क्रियाकल्प - णं द्वि. वि., ए. व. - कञ्चनलताविनद्धं आनन्दभेरिं चरापेत्वा आनन्दछणं आचरिसु, जा. अहु. 7.375; - जनन त्रि., आनन्द को उत्पन्न कर देने वाला - नी स्त्री., प्र. वि., ए. व. - येन जातासि कल्याणी, आनन्दजननी मम, दी. नि. 2.195; 197; - ने पु., सप्त. वि., ए. व. - सत्तमो अभिसम्बुद्धे सत्थरि सक्ककुलानन्दजनने भगवन्तं अनुपब्बजन्ता निक्खमिंसु, मि. प. 117; - जात त्रि., आनन्द से भरपूर, प्रमुदित, प्रफुल्ल - तो पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ आनन्दीति आनन्दजातो, जा. अहु. 5.488; - ते पु., द्वि. वि., ब. व. - आनन्दजाते तिदसगणे पतीते, सक्कज्ज

इन्दं सुचिवसने च देवे, सु. नि. 684; - मेरी स्त्री., आनन्द उत्पन्न करने वाला नगाड़ा - रिं द्वि. वि., ए. व. - कञ्चनलता विनद्धं आनन्दभेरिं चरापेत्वा आनन्दछणं आचरिसु, जा. अहु. 7.375; आनन्दभेरिकालोयं, किं वो अस्सूहि पुत्तिका, अप. 2.201; - रूप त्रि., ब. स., आनन्द से परिपूर्ण स्वभाव वाला, प्रमुदित प्रकृति से युक्त - पो पु., प्र. वि., ए. व. - आनन्दो वत्त, भो, आनन्दरूपो, वत्त भो हेतुरुपं भन्ते, म. नि. 2.339; आनन्दरूपोति आनन्दसभावो, म. नि. अहु. (म.प.) 2.257; - सोमनस्स नपु., द्व. स., आनन्द एवं सौमनस्य - स्सा प्र. वि., ब. व. - पियजातिका हि खो भन्ते आनन्दसोमनस्सापियप्पभविका ति, म. नि. 2.316; 317.

आनन्द' पु., व्य. सं., बुद्ध के प्रमुख उपद्वाक (परिचारक) शिष्य - न्दो प्र. वि., ए. व. - धम्मभण्डागारिको च आनन्दो द्वे समाथ च अभि. 436; क. जन्म से सम्बन्धित विवरण के लिए द्रष्ट., अ. नि. अहु. 1.219-226; थेरगा. अहु. 2.349-363; अप. अहु. 1.316-322; ख. बुद्ध के चचेरे भाई, पिता अमितोदन तथा माता मृगी - सक्ककुलप्पसुतो चायं आयस्मा तथागतस्स भाता बूळपितुपुत्तो, पारा. अहु. 1.7; खु. पा. अहु. 75; आनन्दत्थेरो अमितोदनस्स, सो भगवतो कनिट्ठो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).373; ग. बुद्ध की शरण जाने वाले छ शाक्यकुलीन क्षत्रिय-कुमारों में एक - छ यिमे, महाराज, खतियकुमारा भदियो च अनुरुद्धो च आनन्दो च भगु च किमितो च, मि. प. 117; घ. उनके उपाध्याय का नाम बेलद्वसीस - आयस्मतो आनन्दस्स उपज्झायस्स आयस्मतो बेलद्वसीसस्स थुल्लकच्छाबाधो होति, महाव. 277; ङ. बुद्ध के बहुश्रुत एवं स्मृतिमान् शिष्यों में अग्रगण्य - एतदग्गं, भिक्खवे मम सावकानं भिक्खून् बहुस्सुतानं यदिदं आनन्दो ..., अ. नि. 1(1).33; च. पूर्व-जन्मों की अनुस्मृति के अभिज्ञाबल से सम्पन्न - आयस्मा च आनन्दो ... जातिस्सरा जातिं सरन्ति, एवं अभिजानतो सति उपपज्जति, मि. प. 86; छ. शारिपुत्र के साथ प्रगाढ़ स्नेह - सारिपुत्तत्थेरो च आनन्दत्थेरो च अज्जमज्जं ममायिंसु, दी. नि. अहु. 3.82; 'तुह्मप्पि नो, आनन्द, सारिपुत्तो रुच्चतीति, स. नि. 1(1).78; ज. आनापानसति, इद्धि, कल्याणमित्र, निरोध, बोज्झङ्ग, लोक, वेदना, चार सतिपट्ठानों, सुज्ज तथा बुद्ध के मौन के विषय में बुद्ध के साथ संलाप एवं प्रश्न - एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच - 'अत्थि नु खो, भन्ते

एकधम्मो भाविता बहुलीकतो चत्तारो धम्मे परिपूरेति ..., स. नि. 3.398-399; अभिजानामि ख्वाहं, आनन्द, इद्धिया मनोमयेन कायेन ब्रह्मलोकं उपसङ्गमिताति, स. नि. 3(2).353; सकलमेव हिदं, आनन्द, ब्रह्मचरियं – यदिदं कल्याणमित्ता कल्याणसहायता कल्याणसम्पद्वृत्ता, स. नि. 1(1).105; आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – 'निरोधो निरोधो'ति, भन्ते, बुच्चति, स. नि. 2(1).24; कथं भाविता आनन्द, सत्त बोज्झा कथं बहुलीकता विज्जाविमुत्तिं परिपूरेन्ति?, स. नि. 3(2).402; कितावता नु खो, भन्ते, लोकोति बुच्चतीति. यं खो, आनन्द, पलोकधम्मं, अयं बुच्चति अरियस्स विनये लोको, स. नि. 2(2).59; ... आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – कतमा नु खो, भन्ते, वेदना ..., स. नि. 2(2).216; कथं भाविता चानन्द, चत्तारो सतिपड्डाना कथं बहुलीकता सत्त बोझं परिपूरेन्ति?, स. नि. 3(2).401; आनन्द, सुज्जं अत्तेन वा अत्तनियेन वा तस्मा सुज्जो लोकोति बुच्चति, स. नि. 2(2).60; झ. शारिपुत्र के साथ धर्म संलाप – एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो आयस्सन्तं सारिपुत्तं एतदवोच, अ. नि. 1(2).193; ज. एकान्त में निवास के लिए इच्छा प्रकट की – एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – ... यमहं भगवतो धम्मं सुत्वा एको वूपकड्डो अप्पमत्तो ... विहरेय्यन्ति, स. नि. 2(2).60; ट. भिक्षुणीसंघ की स्थापनाहेतु बुद्ध से याचना – 'साधु, भन्ते, लभेय्य मातुगामो तथागतप्यवेदिते धम्मविनये अगारस्मा अनगारियं पब्बज्जन्ति, चूळव. 416; ठ. पूर्वजन्म में बुद्ध के लिए प्राणत्याग किया – एतरहि कथाय ... पुब्बोपि आनन्दो मय्हं जीवितं परिच्यजियेवा'ति वत्वा अतीतं आहरि, जा. अड्ड. 3.257; ड. बुद्ध-परिनिर्वाण के अवसर पर आनन्द की मनःस्थिति – आयस्मा आनन्दो विहारं पविसित्वा कपिसीसं आलम्बित्वा रोदमानो ठितो ... सत्थु च मे परिनिब्बानं भविस्सति, दी. नि. 2.108; ढ. आनन्द द्वारा अर्हत्व-प्राप्ति – आनन्दत्थेरो अत्तनो अरहत्तप्यत्तिं आपेतुकामो भिक्खूहि सद्धिं नागतो ... आनन्दत्थेरस्स आसन्नं टपेत्वा निसिन्ना, दी. नि. अड्ड. 1.11; ण. प्रथम धर्म-सङ्गीति में धर्म-कथिक के रूप में चयन – अयं भन्ते, आयस्मा आनन्दो ..., बहु च अनेन भगवतो सन्निके धम्मो च, विनयो च परियत्तो, तेन, हि भन्ते, थेरो आयस्सन्तमपि आनन्दं उच्चिनत्तू'ति, चूळव. 453; त. प्रथम धर्म-संगीति के अवसर पर आनन्द की भर्त्सना – अथ खो थेरा भिक्खू आयस्सन्तं

आनन्द एतदवोचुं – इदं ते, आवुसो आनन्द, दुक्कटं, यं त्वं भगवन्तं न पुच्छि, चूळव. 457; थ. जीवन के अन्तिम वर्ष – एकं समयं आयस्मा आनन्दो सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे अचिरपरिनिब्बुते भगवति, दी. नि. 1.180; द. आनन्द का निर्वाण – आनन्दत्थेरसदिसा पन अमतपुब्बपदेसे परिनिब्बयन्ति, घ. प. अड्ड. 1.305; आनन्दत्थेरोपि सीलादिगुणेहि चेव इमस्मिं सुत्ते आगतगुणेहि च थेरो विय अभिज्जातो पाकटो महा, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).145; घ. प्रतिमा में आनन्द – आनन्दपटिमं नेत्वा पुरं कत्वा पदविखणं, चू. वं. 51.80; न. बहुश्रुत (परमज्ञानी) – अयं पन आनन्दो बहुस्सुतो तिपिटक धरो, स. नि. अड्ड. 2.109; प. धर्म की रक्षा करने वाला – आनन्दो नाम नामेन, धम्मारक्खो तव मुने, अप. 1.41; फ. धर्म के भण्डारपाल – ... धम्मभण्डागारिको आयस्मा आनन्दो निसीदि, स. नि. अड्ड. 2.76; ब. उपद्वाक (परिचारक) आनन्द – आनन्दो नामुपद्वाको, उपद्विस्सतिमं जिन्, बु. वं. 2.67; म. श्रावक (शिष्य) के रूप में आनन्द – यो सो बुद्ध उपद्वासि, आनन्दो नाम सावको, अप. 1.283; म. सम्बुद्ध, आनन्द – आनन्दो नाम सम्बुद्धो, सयम्भू अपराजितो, अप. 1.240; य. यशस्वी आनन्द – पुन देय्यासि सम्बुद्धं, आनन्दस्स यसस्सिनो, अप. 1.335; 'आनन्दा'ति आदिको सङ्गीति अनारुहो पाळिधम्मो एव तथा दस्सितो, दी. नि. टी. 2.142; भन्ते आनन्द, अ. नि. 3(1).235; निसीदतु भवं आनन्दो, म. नि. 2.191; आवुसो आनन्द, परिस्स, स. नि. 1(2).197.

आनन्द<sup>2</sup> पु., व्य. सं., पदमुत्तर बुद्ध के पिता, एक क्षत्रिय राजा – न्दो प्र. वि., ए. व. – नगर हंसवती नाम, आनन्दो नाम खत्तियो, सुजाता नाम जनिका, पदमुत्तरस्स सत्थुनो, बु. वं. 12.19; यम्हि काले महावीरो, आनन्दं उपसङ्गमि, पितुसन्निक उपगन्त्वा, आहनी अमतदुन्दुभिं, बु. वं. 12.5; – न्दं हि. वि., ए. व. – तत्थ आनन्दं उपसङ्गमीति पितरं आनन्दराजानं सन्धाय वुत्तं, बु. वं. अड्ड. 221; – महाराजा पु., कर्म. स., आनन्द नामक महाराज – यदा पन आनन्दमहाराज वीसतिया पुरिससहस्सहि वीसतिया अमच्चोहि च सद्धिं पदमुत्तरस्स सम्मासम्बुद्धस्स सन्निके मिथिलनगरे पातुरहोसि, बु. वं. अड्ड. 221.

आनन्द<sup>3</sup> पु., गृही अवस्था में विद्यमान तिष्य बुद्ध के पुत्र का नाम – न्दो प्र. वि., ए. व. – सुभदानामिका नारी, आनन्दो नाम अत्रजो, बु. वं. 19.18; – कुमार पु., कुमार आनन्द

## आनन्द

98

## आनन्दि

— रे सप्त. वि., ए. व. — सो चत्तारि, निमित्तानि दिस्वा सुभदादेविया पुते आनन्दकुमारो उप्पत्ते सोनुत्तरं नाम अनुत्तरं तुरङ्गवरमारुह महाभिनिक्रमनं निक्रमित्वा पब्बजि, बु. वं. अहु. 261.

आनन्द\* पु., एक प्रत्येकबुद्ध का नाम — न्दो प्र. वि., ए. व. — आनन्दो नाम सम्बुद्धो, सयम्भू अपराजितो, अप. 1.240; आनन्दं तुङ्गिं जननतो आनन्दो नाम पच्चेकबुद्धोति अत्थो, अप. अहु. 2.183.

आनन्द\* पु., एक गृधराज का नाम — न्दो प्र. वि., ए. व. — तदा आनन्दो नाम गिज्झाराजा दसहस्सगिज्झपरिवारो गिज्झपब्बते पटिवसति, जा. अहु. 5.419; 445; 447; 454; सु. नि. अहु. 2.83.

आनन्द\* पु., समुद्र की पांच सौ योजन आकार की एक बड़ी मछली, विशालकाय महामत्स्य — न्दो प्र. वि., ए. व. — महामच्छा तिमि तिमिङ्गलो तिमिरपिङ्गलो, आनन्दो च तिमिन्दो च अज्झारोहो महातिमि, अभि. प. 673; अतीतस्मिङ्गि काले महासमुद्रे छ महामच्छा अहेसुं तेसु आनन्दो तिमिनन्दो अज्झारोहोति इमे तयो मच्छा पञ्चयोजनसत्तिका, जा. अहु. 5.459; — मच्छ पु., आनन्द नामक मछली — च्छं द्वि. वि., ए. व. — चतुप्पदा सीहं राजानं अकंसु, मच्छा आनन्दमच्छं सकुणा सुवण्णहंसं, जा. अहु. 1.204.

आनन्दकुमार पु., 1. मङ्गलबुद्ध का सौतेला भाई — रो प्र. वि., ए. व. — वेमातिकभाता किरस्स आनन्दकुमारो नाम ... सत्थु सन्निकं अगमासि, जा. अहु. 1.40; अप. अहु. 1.41; 2. पु., उम्मग-जातक के कथानक का एक पोत-शिल्पी — रं द्वि. वि., ए. व. — गङ्गातीरं पन पत्वा आनन्दकुमारं पक्कोसापेत्वा ... पेत्तेसि, जा. अहु. 6.255.

आनन्दचेतिय नपुं., बुद्धपूर्वकालीन एक चैत्य का नाम, आनन्द यक्ष द्वारा प्रतिष्ठापित एक विहार — ये सप्त. वि., ए. व. — एकं समयं भगवा भोगनगरे विहरति आनन्दचेतिये, अ. नि. 1(2).194; आनन्दचेतियेति आनन्दयक्खस्स भवनद्धाने पतिवित्तविहारो, अ. नि. अहु. 2.353.

आनन्दथेर पु., व्य. सं. 1. अनुराधपुर महाविहार (श्रीलङ्का) का एक भिक्षु, अभिधम्म पर मूलटीका का लेखक — रो प्र. वि., ए. व. — अभिधम्मटीकं पन आनन्दथेरो अकासि, सा. वं. 31; 2. काञ्चीपुर का एक स्थविर, छपद के चार सहायकों में से एक — रेन तृ. वि., ए. व. — किञ्चिपुरवासिना

आनन्दथेरेन ..., सा. वं. 38; 44; 63; 64; 3. अभिधम्म की मधुसारत्थदीपनी-नामक मूलटीका का लेखक, श्रीलङ्का में हंसावती-नामक स्थान का निवासी एक स्थविर — रो प्र. वि., ए. व. — हंसावतीनगरवासी पन आनन्दथेरो मधुसारत्थदीपनिं नाम अभिधम्मटीकाय संवण्णनं ..., सा. वं. 45.

आनन्दबोधि पु., आनन्द द्वारा रोपा गया बोधि-वृक्ष — छि प्र. वि., ए. व. — सो पन आनन्दथेरेन रोपितत्ता 'आनन्दबोधी'ति जातो, जा. अहु. 2.266.

आनन्दयक्ख पु., एक यक्ष का नाम — स्स ष. वि., ए. व. — आनन्दयक्खस्स भवनद्धाने पतिवित्तविहारो, अ. नि. अहु. 2.353.

आनन्दवग्ग पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक जिसमें स्थविर आनन्द से सम्बद्ध विवरण हैं, अ. नि. 1(1).246-259.

आनन्दसुत्त नपुं., स. नि. तथा अ. नि. के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 1(1).218; 231; 2(1).24; 35; 36-37; 96-97; 172-73; 2(2).365-366; 3(2).356-357; 357; 398-402; 403; 427-429; अ. नि. 1(1).156-158; 2(1).124-125; 2(2).74-75; 3(1).234 235; 3(2).62 63; 126-129.

आनन्दसुरिय पु., म्यां-मां के एक राजकुमार का नाम — यो प्र. वि., ए. व. — आलोडहयजसू रज्जो पुत्तो आनन्दसुरियो नाम, सा. वं. 86(नां.).

आनन्दसेट्ठि पु., श्रावस्ती का एक अत्यधिक समृद्ध एवं महाकृपण सेठ — सावत्थियं किर आनन्दसेट्ठि नाम चत्तालीसकोटिविभवो, महामच्छरी अहोसि, घ. प. अहु. 1.264-266; — वत्थु नपुं., घ. प. अहु. के एक कथानक का शीर्षक, घ. प. अहु. 1.264-266.

आनन्दा स्त्री., राजा ओक्काक की पांच पुत्रियों में से एक — ... पञ्च धीतरो पिया, सुप्पिया, आनन्दा, विजिता, विजितसेनाति, दी. नि. अहु. 1.209.

आनन्दाचरिय पु., सच्चसङ्केप के लेखक श्रीलङ्का के भिक्षु चुल्ल धम्मपाल के आचार्य आनन्द — स्स ष. वि., ए. व. — आनन्दाचरियस्स जेह्दसिस्सो चुल्लधम्मपालो नामाचरियो सच्चसङ्के पं अकासि, गा. वं. 60(रो.).

आनन्दि आ + नन्द का अद्य., प्र. पु., ए. व., आनन्दित हुआ, प्रसन्न हुआ — आनन्दि वित्ता सुमना, जा. अहु. 7.374; आनन्दि वित्ता पपीता, तदे.; आनन्दि वित्ता सुमनाति ... अतिविय नन्दीति अत्थो, जा. अहु. 7.375.

## आनन्दित

99

## आनापान

आनन्दित त्रि., आनन्द से व्यु. [आनन्दित], प्रसन्न, प्रमुदित, खुश – तो पु., प्र. वि., ए. व. – एवं आनन्दितो होतु, सह दारेहि लुद्धको, जा. अद्भ. 4.377; – ता ब. व. – ... ब्रह्मकायिका, आनन्दिता विपुलमकसु घोसं, बु. वं. 1.6; आनन्दिताति पमुदितहृदया, सञ्जातपीतिसोमनस्सा हुत्वाति अत्थो, बु. वं. अद्भ. 37; – ते पु., द्वि. वि., ब. व. – सब्बेव जातके आनन्दिते पमुदिते करोन्तो जातोति, अ. नि. अद्भ. 1.223; – जन त्रि., लोगों को आनन्दित कर देने वाला – नाहि स्त्री., तृ. वि., ब. व. – अनोमाहि अनेकाहि आनन्दितजनाहि च पुष्पदीपिकाभक्तपूजाहि, चू. वं. 85. 69-70.

आनन्दिय त्रि., आ +√नन्द का सं. कृ., आनन्द प्राप्त करने योग्य, आनन्द देने योग्य, आनन्द से परिपूर्ण उत्सव – यं नपुं., द्वि. वि., ए. व. – आनन्दिय आचरिसु, रमणीये गिरिब्बजे, जा. अद्भ. 7.374; आनन्दियं ... रमणीये ... आनन्दछणं आचरिसु, जा. अद्भ. 7.375.

आनन्दी त्रि., [आनन्दिन], प्रसन्न, आनन्द के भाव से परिपूर्ण, खुश, प्रमुदित – न्दिनो<sup>1</sup> पु., प्र. वि., ब. व. – तत्र चे तुम्हे अस्सथ आनन्दिनो सुमना उयिलाविता तुम्ह येवस्स तेन अन्तरायो, दी. नि. 1.3; – न्दिनो<sup>2</sup> पु., ष. वि., ए. व. – आनन्दिनो तस्स दिसा भवन्ति, थेरगा. 555; आनन्दिनो पमोदवन्तो पीतिवन्तो भवन्ति, थेरगा. अद्भ. 2.160.

आनमना स्त्री., आ +√नम से व्यु., क्रि. ना. [आनमन], झुक जाना, पीछे की ओर से झुक जाना, आगे की ओर झुक जाना – कायसङ्गारेहि या कायस्स आनमना विनमना सन्नमना पणमना इञ्जना ... एकम्पना, पटि. म. 177; आनमनाति पच्छतो नमना, पटि. म. अद्भ. 2.103.

आनय 1. त्रि., आ +√नी का अनियमित सं. कृ., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त [आनेय], ले आने योग्य, ठीक से लाने योग्य – यं नपुं., प्र. वि., ए. व. – अनुपट्टहन्तमि सुखुम सुआनयं होति, पटि. म. अद्भ. 2.104; 2. आ +नी का अनु., म. पु., ए. व. [आनय], ले आ, आनेति के अन्त. द्रष्ट.

आनयति आ +√नी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आनयति], ले आता है, आनेति के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आनयन नपुं., आ +√नी से व्यु. नियमित क्रि. ना. [आनयन], ले आना, पास में ले जाना, खींच कर ले आना – नं प्र. वि., ए. व. – यक्खभवनं आनयनञ्च एकक्खण्येव अहोसि, स. नि. अद्भ. 1.292; थेरानं परम्परवत्सेन संघट्टेत्वा आनयनं एवेत्थ अधिप्येतं, सा. वं. 69(ना.); – नेन तृ. वि., ए. व. – एवं पुनप्पुनं आनयनेन सन्निपातो चिरेनेव अहोसि, उदा. अद्भ. 253; – कारण नपुं., तत्पु. स., लाए जाने का कारण, पकड़ कर ले आने का कारण – णं द्वि. वि., ए. व. – पण्डितस्स आनयनकारणं करिस्सामीति, जा. अद्भ. 6.199; – वक्कम नपुं., तत्पु. स. [आनयनक्रम], लाए जाने का क्रम – दीनानि वीतिनामेन्तो धातूनानयनक्कम्पं, चू. वं. 74.183; – पच्चुपट्ठान त्रि., ब. स., ले आए जाने के काम को उदित कराने वाला – नो पु., प्र. वि., ए. व. – आरम्भणे चित्तस्स आनयनपच्चुपट्ठानो, ध. स. अद्भ. 160.

आनाह नपुं., बांधने वाला बन्धन – आदानवत्तीति आनहवत्ति, वजिर. टी. 440.

आनापान/आणापान/आणापाण नपुं., द्व. स. [प्राणापान], आश्वास एवं प्रश्वास, श्वास का अन्दर आना एवं बाहर निकलना, श्वास-प्रक्रिया – नं<sup>1</sup> प्र. वि., ए. व. – आनापानं मोहचरितस्स वितक्कचरितस्स च, अभि. ध. स. 63; आनञ्च अपानञ्च आनापानं, अभि. ध. वि. टी. 225; 226; – नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. – आनापानं अनुपस्सति, स. नि. अद्भ. 3.301; – ने<sup>3</sup> सप्त. वि., ए. व. – आनापाने परिच्छेदाकासे, स. नि. अद्भ. 1.197; – ने<sup>3</sup> द्वि. वि., ए. व. – पल्लङ्गं आयुजित्वा आनापाने परिगगहेत्वा पठमज्झानं निब्बत्तेसि, जा. अद्भ. 1.68; – नेसु सप्त. वि., ब. व. – आनापानेसु सति आनापानस्सतीति, पटि. म. अद्भ. 2.74; – चतुत्थज्झान नपुं., आश्वास-प्रश्वास को आलम्बन बनाने वाला चतुर्थ ध्यान – नं द्वि. वि., ए. व. – आनापानचतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा ..., पारा. अद्भ. 2.11; – ज्झान नपुं., आश्वास एवं प्रश्वास पर ध्यान (चित्त-एकाग्रता) – नं द्वि. वि., ए. व. – यदिच्छकन्ति कसिणज्झानं वा आनापानज्झानं वा बच्चविहारज्झानं वा असुमज्झानं ... इच्छति, प. प. अद्भ. 33; – निमित्त नपुं., ध्यान के निमित्त (आलम्बन) के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास – तं<sup>4</sup> प्र. वि., ए. व. – यस्मा आनापाननिमित्तं तारकरूपमुत्तावलिकादिसदिसं हुत्वा पज्जायति, स. नि. अद्भ. 3.296; – तं<sup>4</sup> द्वि. वि., ए. व. – आनापाननिमित्तं

## आनापानवग्ग

100

## आनापानसतिकथा

ताव वड्ढयतो वातरासियेव वड्ढति, विसुद्धि. 1.110; - पब्ब नपुं. आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त को एकाग्र करने की समयावधि अथवा कालखण्ड - ब्बं प्र. वि., ए. व. - तैसु आनापानपब्बं आनापानस्सतिवसेन विसुं कम्मद्धानयेव, विसुद्धि. 1.231; आनापानपब्बन्ति आनापानकम्मद्धानावधि, विसुद्धि. महाटी. 1.281; - परिग्गाहक त्रि., आश्वास एवं प्रश्वास पर (चित्त की एकाग्रता) पूर्ण नियन्त्रण करा देने वाला, आश्वास एवं प्रश्वास को अधिक या कम लम्बाई आदि के रूप में ग्रहण करने वाला - काय स्त्री., तृ. वि., ए. व. - आनापानपरिग्गाहिकाय सतिया सद्धिं सम्पयुतो समाधि, स. नि. अहु. 3.300; आनापानपरिग्गाहिकायाति दीघरस्सादिविसेसेहि सद्धिं अस्सासपस्सासे परिक्खज्जगाहिकाय, विसुद्धि. महाटी. 1.294; - नारम्मण नपुं. ध्यान के आलम्बन के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास - स्स ष. वि., ए. व. - भिक्खुनो आनापानारम्मणस्स सुद्ध परिग्गाहितता, विसुद्धि. 1.280, 289, तत्थ कारणमाह आनापानारम्मणस्स सुद्ध परिग्गाहितताति विसुद्धि. महाटी. 1.326.

आनापानवग्ग पु., स. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, स. नि. 3(1).150-157.

आनापानसंयुत नपुं., स. नि. के एक संयुत का शीर्षक, स. नि. 3(2).382-409.

आनापानसति स्त्री., [बौ. सं. आनापानस्मृति], आश्वास एवं प्रश्वास की श्वसन-प्रक्रियाओं के विषय में चित्त की एकाग्रता एवं समभाव में अवस्थिति, श्वास प्रक्रिया पर चित्त को स्थिर करना, आश्वास एवं प्रश्वास की स्वाभाविक क्रियाओं को आलम्बन बनाने वाली स्मृति, दस प्रकार की अनुस्मृतियों एवं संज्ञाओं में एक के रूप में उपदिष्ट - ति प्र. वि., ए. व. - तत्थ आनन्ति अस्सासो अपानन्ति पस्सासो अस्सासपस्सास निमित्तारम्मणा सति आनापानसति, थेरगा. अहु. 2.158; आनापाने आरम्भ उप्पन्ना सति आनापानस्सति अस्सासपस्सासनिमित्तारम्मणाय सतिया एतं अधिवचनं, अ. नि. अहु. 1.354; आनापानस्सतीति आनापाने सति, तं आरम्भ पवत्ता सति, अस्सासपस्सासपरिग्गाहिका सतीति अत्थो, इतिवु, अहु. 233 34; ... आनापानस्सति उपसमानुस्सतीति इमा दस अनुस्सतियो, विसुद्धि. 1.108; - तिं द्वि. वि., ए. व. - आनापानस्सतिं, राहुल, भावनं भावेहि, म. नि. 2.91; - या' तृ. वि., ए. व. - एवं भाविताय ... आनापानस्सतिया एवं बहुलीकताय ... फलं पाटिकद्धं, स. नि. 3(2).384; - या' ष. वि., ए. व. -

आनापानस्सतिया च पभावना न होति, पारा. अहु. 2.17; आनापानस्सतियं वा समाधि आनापानस्सतिसमाधीति एवमेत्थ अत्थोवैदितब्बो, पारा. अहु. 2.9; - यो प्र. वि., व. व. - तत्थ आनापानस्सतियो यथा बुद्धेन देसिता, पटि. म. अहु. 2.74; स. प. के रूप में, दसानुस्सतिदसकसिणवत्तु धातुववत्थानब्रह्मविहारानापानसतिप्पभेदानि बहूनि निब्बानोरोहणकम्मद्धानानि सन्ति, पारा. अहु. 2.8; - कम्मद्धान नपुं., ध्यान के आलम्बन के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त की एकाग्रता - नं प्र. वि., ए. व. - अथ वा यस्मा ... विसेसाधिगमदिहधम्मसुखविहारपदद्धानं आनापानस्सतिकम्मद्धानं ... ज्ञानस्स, पटि. म. अहु. 2.81, 86; - पठमज्ज्ञान नपुं., आश्वास एवं प्रश्वास (आनापान) पर स्मृति अथवा चित्त की जागरूकता से युक्त प्रथम ध्यान - नं द्वि. वि., ए. व. - भवेय्य नु खो एतं आनापानस्सतिपठमज्ज्ञानं बुज्जनत्थाय मग्गोति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).187; - भावना स्त्री., आनापान (आश्वास एवं प्रश्वास) पर स्मृति की जागरूकता द्वारा की गई समाधिभावना अथवा चित्तविशुद्धि - नं द्वि. वि., ए. व. - मुहुस्सतिस्स असम्पजानस्स आनापानस्सतिभावनं वदामीति, पारा. अहु. 2.26; - य ष. वि., ए. व. - आनापानस्सतिभावनाय आनिसंसं दस्सेतुं वुत्तं, पटि. म. अहु. 2.99; - समाधि पु., आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त की जागरूकता के साथ की जा रही समाधि - धि प्र. वि., ए. व. - आनापानस्सतिसमाधि भावितो बहुलीकतो सन्तो ... वूपसमेति, पारा. 83; आमन्तेत्वा च पन भिक्खूनं अरहत्तप्पतिया पुब्बे आचिक्खन्तो असुभकम्मद्धानतो अज्जं परियायं आचिक्खन्तो आनापानस्सतिसमाधिंति आह, पारा. अहु. 2.8; - धिं द्वि. वि., ए. व. - यं भगवा आनापानस्सतिसमाधिं भासेय्य, स. नि. 3(2).392; - ना तृ. वि., ए. व. - आनापानस्सतिसमाधिना ..., भगवा वस्सावासं बहुलं विधसीति, स. नि. 3(2).395; - स्स ष. वि., ए. व. - आनापानस्सतिसमाधिरस्स, भिक्खवे, भावितत्ता बहुलीकतता ... वा, स. नि. 3(2).386; - सहगत त्रि., आश्वास-प्रश्वास पर चित्त की जागरूकता से युक्त - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - आनापानस्सतिसहगतं उपेक्खासम्बोज्झं भावेति ..., स. नि. 3(2).383.

आनापानसतिकथा स्त्री., पटि. म. अहु. के आनापानसति - विषयक एक भाग का शीर्षक, पटि. म. अहु. 2.64-112.

## आनापानसतिकथा

101

## आनिसंस

आनापानसतिसुत्त नपुं, म. नि. का आनापानसति-विषयक एक सुत्त. म. नि. 3.124-132.

आनापानसुत्त नपुं, स. नि. का आनापान-विषयक एक सुत्त. स. नि. 3(1).157.

आनापेति / आणापेति आ + नी के प्रेर. का वर्त. प्र. पु. ए. व. लाए जाने हेतु प्रेरित करता है, बुलवाता है — पेमि उ. पु. ए. व. — तेनाहं गरहभयभीतो तमेव आणापेमीति, जा. अ. 1.138; ध. प. अ. 2.43; — पेन्तो वर्त. कृ. पु. प्र. वि. ए. व. — 'यंकारणा जेडकं ठपेत्वा कनिडं आणापेन्तो जेड्वापचायिककम्मं न करोसी'ति, जा. अ. 1.138; — न्ता तदे. ब. व. — तै च सयं आनेन्तापि अज्जेहि आणापेन्तापि आनेन्तियेवाति वेदितब्बा, पारा. अ. 1.214; — हि अनु. म. पु. ए. व. — ब्राह्मण, दारुगहे गणकं आणापेहीति, पारा. 49; तं तव परिसाय आणापेहीति, सु. नि. अ. 2.92; — नेय्यासि विधि. म. पु. ए. व. — ततो तं अपरिगहितत्ता आनेय्यासि, जा. अ. 5.213; — पेय्यं विधि. उ. पु. ए. व. — आनापेय्यं रज्जहेतु सुमितं भातरं मम, म. वं. 8.2; — सि अद्य. प्र. पु. ए. व. — सो 'साधु भगिनी'ति यक्खे आणापेसि, सु. नि. अ. 2.92; — स्सति भवि. प्र. पु. ए. व. — एवं किर वुत्ते राजा तं आणापेस्सति, ध. प. अ. 1.258; — पेत्वा पू. का. कृ. — ते अत्तो समीपं आणापेत्वा उपट्ठातुमेव युत्तं, म. नि. अ. (उप.प.) 3.208; — पयित्वा पू. का. कृ. — आनापयित्वा मतिमा नानापासण्डिके विसुं, म. वं. 5.36; — पयित्वान पू. का. कृ. — चोरे आनापयित्वान रहस्सेन पलापिय, म. वं. 36.80; — पिय पू. का. कृ. — पेसेत्वाचरिये राजा तं आनापिय पोसयि, म. वं. 22.63; — तुं निमि. कृ. — महाबोधिं च थेरिं च आनापेतुं महीपति, म. वं. 18.1.

आनाय पु., [आनाय], मछली पकड़ने में प्रयुक्त जाल — थियं कुवेणि कुमिनं आनायो जालमुच्चते, अभि. प. 521.

आनिसंस पु., [आनृशंस्य, बौ. सं. अनुशंस/आनुशंस/आनृशंस], लाभ, कल्याण, शुभ फल, लाभप्रद परिणाम, पुण्य, पुरस्कार, शुभ गुण, उत्तम लक्षण — सो प्र. वि. ए. व. — आनिसंसो गुणो वाथ, अभि. प. 767; सुचेतसो अनिस्सितो तदानिसंसोति, स. नि. 1(1).55; तदानिसंसोति अरहत्तानिसंसो, स. नि. अ. 1.94; ... को आनिसंसो पाटिकद्धोति, अ. नि. 1(1).74; — सं द्वि. वि. ए. व. —

किं पन त्वं विसाखे, आनिसंसं सम्पस्समाना तथागतं अट्ठ वरानि याचसीति, महाव. 384; ... नेक्खम्मे आनिसंसं पकासेसि, महाव. 20; — सा प्र. वि. ब. व. — जातकबुद्धवंसादीसु दस्सिताकारा आनिसंसा, चरिया. अ. 299; — से द्वि. वि. ब. व. — बोधिसत्तोपि पच्छतो गमने बहू आनिसंसं अदस, जा. अ. 1.107; आनिसंसं अनेकेपि, पवत्तयति योगिनो, अभि. अव. 1337; — सानं, ष. वि. ब. व. दायकेनानिसंसानं, अनेकेसमनेन च, आदिमग्गेन संयुत्तं ..., अभि. अव. 1338; स. उ. प. के रूप में, अट्ठा, अनुमोदना, अनुस्सरणा, अनेका, अप्पमादा, अभिज्जा, अरज्जा, अरहत्ता, अविष्पटिसारा, आदीनवा, आवसथा, आवासा, इतिवादपमोक्खा, उदारा, आरम्भा, कठिना, किमा, गुणा, दाना, निब्बाना, निब्बिदाविरागा, पज्जाभावना, पलिबोधा, पामुज्जा, फला, बिम्बा, महा. मेत्ता, यथाभूतजाणदस्सना, सट्ठा, सीला आदि के अन्त. द्रष्ट.; ख. स. पू. प. के रूप में, — कथामुख नपुं, लाभ के विषय में कहे गए कथनों का प्रारम्भ — खं प्र. वि. ए. व. — इति सीलस्स विज्जेय्यं, आनिसंसकथामुखन्ति, विसुद्धि. 1.11. — चीवर नपुं, कठिनचीवर नामक संघकर्म में प्राप्त चीवर-विषयक विशिष्ट सुविधा या लाभ, कठिनचीवर नामक संघकर्म में प्राप्त चीवर — रं द्वि. वि. ए. व. — यो पन आनिसंसचीवरं आदाय पक्कमति, कट्ठा. अभि. टी. 257; — त नपुं, आनिसंस का भाव. [आनृशंसत्त्व], लाभ की स्थिति, हितकरता, लाभप्रदता, कल्याणकारी होना — ता प. वि. ए. व. — मग्गो हि समथविपरस्सनानं आनिसंसत्ता विसंसोति वुत्तो, पटि. म. अ. 2.73; — दस्सन नपुं, हितों या लाभों का दिखलाई देना — नेन तृ. वि. ए. व. — सीलसम्पत्तिया च आनिसंसदस्सनं, अ. नि. अ. 3.317; — दस्सावी त्रि., लाभ अथवा हित को देखने वाला — वी पु. प्र. वि. ए. व. — सट्ठारे च ... निब्बाने च आनिसंसदस्सावी होतीति?, कथाव. 328; — विस्स पु., ष. वि. ए. व. — आनिसंसदस्साविस्स संयोजनानं प्हानन्ति, कथा. 327; — विनो पु., च./ष. वि. ए. व. — अयमानिसंसो वीरियस्साति एवं आनिसंसदस्साविनोपि उप्पज्जति, विम. अ. 264; — दस्साविता स्त्री, भाव., लाभ अथवा हित को देखने की अवस्था — ता प्र. वि. ए. व. — येन ... नेक्खम्मे आनिसंसदस्साविता हेतु, पेटको. 289; — परिच्छेद पु., तत्पु. स., लाभ अथवा हित की सीमा अथवा सुनिश्चित मात्रा — दं द्वि. वि. ए. व. —



## आनिसंसदस्सावीकथा

102

## आनीत

आनिसंसपरिच्छेदं, तस्स सीलस्स को वदे, विसुद्धि. 1.10; - परिवार त्रि., ब. स., लामों से परिपूर्ण - रं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - अहानिसंसपरिवारं भङ्गानुपरसनाआणं बलपत्तं होति, विसुद्धि. 2.280; - फल नपुं., तत्पु. स., पुण्य-कर्मों का फल - लं प्र. वि., ए. व. - सब्बदुक्खकणयो आनिसंसफलं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).142; अपिय निच्चतो अनुपगमनादिवसेन पेत्तस्स आनिसंसफलं वेदितव्यं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).143; - महन्तता स्त्री., भाव., पुण्य-कर्मों अथवा कल्याणों की महानता - तं द्वि. वि., ए. व. - पुनापीपुञ्जवत्थूनं आनिसंसमहन्तत्तं, किञ्चि मत्तं भणित्तामि सुद्धानं बुद्धिमोदकं, सद्धम्मो. 263; - मूलक त्रि., ब. स., कठिन-चीवर नामक संघकर्म में विशेष लाभ के रूप में प्राप्त चीवर - के नपुं., सप्त. वि., ए. व. - निद्वितचीवरं निद्विते आनिसंसमूलके चीवरे, कट्ठा. अभि. टी. 252; - मूलचीवर नपुं., कठिनचीवर नामक संघ-कर्म के अवसर पर विशेष लाभ के रूप में प्राप्त चीवर - रं द्वि. वि., ए. व. - यदि पन आनिसंसमूलचीवरं आदाय बहिसीमागतो ..., कट्ठा. अभि. टी. 257; - विभावन त्रि., लाभ एवं हानि को प्रकाशित करने वाला - नं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - आदीनवानिसंसविभावनं इमं उदानं उदानेसीति, उदा. अहु. 87.

आनिसंसदस्सावीकथा स्त्री., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 327-328.

आनिसंसवग्ग पु., अ. नि. के अनेक वर्गों का शीर्षक, अ. नि. 2(2).141-144; 3(2).1-12.

आनिसंससुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(2).141.

आनिसद/आणिसद नपुं., व्यु. संदिग्ध, संभवतः आ + नि + सद् से व्यु., शा. अ., शरीर का वह भाग जिसके सहारे नीचे बैठा जाए, ला. अ., पुट्टा अथवा पीछे वाला भाग, नितम्ब, चूतड़ - दं प्र. वि., ए. व. - एवमेवस्सु मे आनिसदं ... उन्तावनतो होति तायेवप्पाहारताय, म. नि. 1.114; बोधिसत्तस्स ... आनिसदं मज्झे गम्भीरं होति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).362; - दं द्वि. वि., ए. व. - उभोहि हत्थेहि आणिसदं पहरित्वा कूपे खिपित्वा, जा. अहु. 3.385; - दा प. वि., ए. व. - ... उदकचिक्खल्लो उद्धित्वा याव आनिसदा पहरति, महाव. अहु. 365; क. स. उ. प. के रूप में, महा- त्रि., बहुत विशाल नितम्बों वाला - दो पु., प्र. वि., ए. व. - भट्टकटिको वा

महाआनिसदो वा उद्धनकूटसदिसोहि ... समन्नागतो, महाव. अहु. 295; ख. स. पू. प. के रूप में, - दड्ढि नपुं., नितम्बों की हड्डी - ड्ढिनि प्र. वि., ब. व. - आनिसदद्वीनि हेट्ठामुखठपितसप्पफणसण्ठानानि, खु. पा. अहु. 37; - द्विका स्त्री., उपरिवत् - का प्र. वि., ए. व. - पावळा वुच्चति आनिसदद्विका, दी. नि. अहु. 3.10; - त्तच पु., ब. स., नितम्बों की त्वचा - चो प्र. वि., ए. व. - आनिसदत्तचो उदकपूरितपटारिस्सावनसण्ठानो, खु. पा. अहु. 34; - मंस नपुं., तत्पु. स., नितम्ब-प्रदेश का मांस, चूतड़ों का मांस - सं प्र. वि., ए. व. - अनिसदमंसं उद्धनकोटिसण्ठानं, खु. पा. अहु. 35; - सोहि तू. वि., ब. व. - आनिसदमंसोहि अच्चुग्गतेहि समन्नागतो, महाव. अहु. 295.

आनीत त्रि., आ + नी से व्यु., भू. क. कृ. [आनीत], समीप में ले आया गया, पास में पहुंचा दिया गया - आहटो आमतानीता, अभि. प. 749; - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आपणा मक्कटच्छापको किणित्वा आनीतो, म. नि. 2.53; अम्हेहि पठमं काको आनीतो, जा. अहु. 3.108; - ते पु., सप्त. वि., ए. व. - सीसेनादाय आनीते चङ्गोटम्हि सुवण्णये, म. वं. 31.87; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - पुब्बे आनीता केनचिदेव करणीयेन पक्कमिंसु, उदा. अहु. 253; - तेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - अत्तना आनीतेसु गच्छेसु, सा. वं. 125(ना.); - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - तस्स अत्थाय वेसी आनीता अहोसि, महाव. 27; - ताय स्त्री., तू. वि., ए. व. - एवं अहं भरियायानिताय, थेरगा. 72; आनीतायाति यथा वंसो वड्ढितग्गो वंसन्तरेसु संसद्ध साखापसाखो वेत्तुगुम्बतो दुन्नीहरणीयो होतीति, थेरगा. अहु. 1.172; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - पियसासनं देवि आनीतंति, स. नि. अहु. 2.215; - तं द्वि. वि., ए. व. - सकिं आनीतं पानीयं सब्बं पिवति, चूलव. अहु. 116; - ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. - आधेय्यभूते सप्पिम्हि आनीते, सद्ध. 3.925; - तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - तुय्यमेवेतानि मया आनीतानीति, ध. प. अहु. 1.157; स. उ. प. के रूप में, करमरा. - त्रि., जीते गए अथवा अधीनस्थ प्रदेश से लाया गया - तो पु., प्र. वि., ए. व. - दासो नाम अन्तोजातो धनक्कीतो करमरानीतो, पाचि. 301; करमरानीतो नाम तिरोरद्धं विलोपं वा कत्वा उपलापेत्वा वा तिरोरद्धतो भुजिरसमानुसकानि आहरन्ति ..., महाव. अहु. 268; स. पू. प. के रूप में, - त नपुं., आनीत का भाव, ले आया हुआ होना - ता प.

## आनीय

103

## आनुभाव

वि., ए. व. - ... सीहळदीपतो आनीतत्ता ततो लद्धो, सा. वं. 125.

आनीय आ +नी का पु. का. कृ. [आनीय], पास ला कर, समीप ला कर - जिनगीवडि ..., थेरस्स सारिपुत्तस्स, सिस्सो आनीय चेतिये, म. वं. 1.38.

आनीयत आ +नी के कर्म. वा. का अनु., म. पु., व. व., लाने हेतु प्रेरित किया जाए - तावतिका आनीयतन्ति, दी. नि. 2.180.

आनीयति आ +नी का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आनीयते], ले आया जाता है, समीप में पहुंचा दिया जाता है - मानो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - पाणो गलप्पवेठकेन आनीयमानो दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति, म. नि. 2.37; - नेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - थेरेन हि ... अज्जेसु आनीयमानेसु, उदा. अ. 253.

आनुकूल्य/अनुकूल्य नपुं., अनुकूल का भाव. [आनुकूल्य], अनुकूलता, उपयुक्तता, कृपा, मित्रता - आनुकूल्यं तु सद्धं च, अभि. प. 1147; - ल्यं प्र. वि., ए. व. - किच्चाविरोधनरसा, अनुकूल्यन्ति गच्छति, ना. रू. प. 97.

आनुद्धम त्रि., [अनुष्टुम], अनुष्टुप नामक छन्द के वर्ग के अन्तर्गत आने वाला - मेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - आनुद्धमेन अस्सा, छन्दो बद्धेन गणियमाना तु, चूळनि. अ. 131; गणना उत्तरस्सायं, छन्दसानुद्धमेन तु, उत्त. वि. 969.

आनुत्तरिय/अनुत्तरिय नपुं., अनुत्तर का भाव. [बौ. सं. अनुत्तर्य], 1. प्रधानता, सर्वश्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वश्रेष्ठ कल्याण, सर्वोच्च प्राप्य - यं प्र. वि., ए. व. - अपरं पन, भन्ते, एतदानुत्तरियं, यथा भगवा धम्मं देसेति कुसलेसु धम्मं, दी. नि. 3.75; आनुत्तरियन्ति अनुत्तरभावो, दी. नि. अ. 3.59; 2. त्रि., भव्य, सर्वोत्तम, बेजोड़, अनुपम - या स्त्री., प्र. वि., ए. व. - या वा पनेतासं सज्जानं परिसुद्धा परमा अग्गा अनुत्तरिया अक्खायति, म. नि. 3.18; अनुत्तरिया अक्खायतीति असदिशा कथीयति, म. नि. अ. (उप.प.) 3.11.

आनुपुब्ब नपुं., अनु + पुब्ब से व्यु., भाव. [बौ. सं. आनुपूर्वी, स्त्री.], नियमसङ्गत क्रम, नियमितता - ब्वं प्र. वि., ए. व. - किमानुपुब्बं पुरिसो, किं वतं किं समाचारं, थेरगा. 727.

आनुपुब्बता स्त्री., अनुपुब्ब से व्यु., भाव., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, पूर्वापरक्रम, गणना. - स्त्री., गणनाक्रम,

गणना में पूर्वापरक्रम - ततियन्ति गणनानुपुब्बता ततियं, ध. स. अ. 220; पदा. - स्त्री., पदों का पूर्वापरक्रम - इच्चाति ... अक्खरसमवायो ब्यञ्जनसिलिद्धता पदानुपुब्बतापेतं, महानि. 101.

आनुपुब्बिक त्रि., अनुपुब्ब से व्यु., [आनुपूर्विक], नियमित, क्रमबद्ध - गोणसद्धो ... वत्तिच्छानुपुब्बिका सट्ठपटिपत्तीति वचनतो गोसद्धोति विसुं ... पक्खित्तो, स. 1.105-06; - कथानुभाव पु., एक के बाद दूसरे के क्रम में अथवा क्रमशः आगे बढ़ने वाले क्रम में दिए गए धर्मोपदेश का प्रभाव अथवा बल - वेन तृ. वि., ए. व. - आनुपुब्बिकथानुभावेन विक्खम्भितनीवरणतं सन्धाय वुत्तं, दी. नि. अ. 1.248.

आनुपुब्बी स्त्री., [आनुपूर्वी], नियमित क्रम, उचित सिलसिला - अनुक्कमो परियायो अनुपुब्बयपुमे कमो, अभि. प. 429; - बी प्र. वि., ए. व. - तत्रायमानुपुब्बी, नवविधसुत्तन्तपरियेद्धीति, नेति. 2; - बियं सप्त. वि., ए. व. - आनुपुब्बियं-अनुजेद्धं, मो. व्या. 3.2.

आनुभाव/अनुभाव पु., [आनुभाव], गौरव, महिमा, बल, महत्ता, चमक दमक, शान, भव्यता, शक्ति, सामर्थ्य, प्रभाव - वो प्र. वि., ए. व. - पभावो ति, पकारतो भवती ति पभावो, सो यमानुभावो येव, स. 1.69; अनुभावो एव आनुभावो, पभावो महन्तो आनुभावो येसं ते महानुभावा, सारत्थ. टी. 1.42; गहपतिस्स नत्थि सा इद्धि वा आनुभावो वा, अ. नि. 1(1).273; नत्थि सा इद्धि ... सो वा आनुभावो नत्थि, अ. नि. अ. 2.213; - वं द्वि. वि., ए. व. - एतु वदतु ब्याहरतु परस्सामिस्सानुभावन्ति, अ. नि. 1(2).36; - वेन तृ. वि., ए. व. - कासिकोसलानं, मल्लिके, आनुभावेन कासिकचन्दनं पच्चनुभोमं, म. नि. 2.320; - वा प्र. वि., ब. व. - सतानं सोत्थिभावापादनादयो आनुभावा विभावेतब्बा, चरिया. अ. 215; स. प. के रूप में, किलेसगहनपच्चवेक्खणानुभावेनापि, ... एवं चित्तं नमि, स. नि. अ. 1.174; स. उ. प. के रूप में, - खण पु., तत्पु. स., प्रभाव, शक्ति अथवा महिमा का क्षण - णे सप्त. वि., ए. व. - आनुभावखणे तस्स, पच्चयानमभावतो, अभि. अव. 717; आनुभावखणुपादे जातिया पन लब्धति, अभि. अव. 715; - दीपक त्रि., प्रभाव अथवा महिमा को प्रकाशित करने वाला - कं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - अरियमग्गस्स आनुभावदीपकं वुत्तप्पकारं उदानं

## आनुभावता

104

आनेति

उदानेसीति, उदा. अड्ड. 41; — धर त्रि., प्रभाव अथवा महिमा को धारण करने वाला — रा पु., प्र. वि., ब. व. — जुतिधराति आनुभावधरा, स. नि. अड्ड. 1.162; — पकासन नपुं., तत्पु. स., प्रभाव अथवा महत्त्व का प्रकाशन — नानि प्र. वि., ब. व. — अरियमग्गस्स आनुभावप्पकासनानि ... भासितानि, उदा. अड्ड. 41; — महत्त नपुं., तत्पु. स., अनुभाव अथवा प्रभाव की महत्ता — तं द्वि. वि., ए. व. — मनोजवन्ति इमिना आनुभावमहत्तं, वि. व. अड्ड. 11; — महन्तता स्त्री., भाव., तत्पु. स., प्रभाव की महत्ता — महानुभावता नाम आनुभावमहन्तता, चरिया. अड्ड. 300; — विजाननत्थ पु., प्रभाव को ठीक से जानने का प्रयोजन या उद्देश्य — त्थं द्वि. वि., क्रि. वि. — जाणदस्सनविसुद्धिया आनुभावविजाननत्थं, विसुद्धि. 2.316; आनुभावविजाननत्थन्ति सतिपट्ठानपारिपूर्ति आदिकस्स आनुभावस्स बोधनत्थं, विसुद्धि. महाटी. 2.460; — विभावना स्त्री., प्रभाव अथवा महिमा का व्याख्यान अथवा प्रकाशन — ना प्र. वि., ए. व. — सेसपारमिनिद्वारणा आनुभावविभावना च ... वेदितब्बाति, चरिया. अड्ड. 182; — सम्पन्न त्रि., अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण — त्रं पु., द्वि. वि., ए. व. — आनुभावसम्पन्नं एकं मणिक्खच्चं अहस, जा. अड्ड. 2.84; — त्रेन पु., तृ. वि., ए. व. — तत्थ जुतीमताति आनुभावसम्पन्नेन, जा. अड्ड. 5.401; — रस ष. वि., ए. व. — पंसुकूलिक एवं आनुभावसम्पन्नस्स ... निसीदितुन्ति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).280; — त्रा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — विज्झाटवियं आनुभावसम्पन्ना रुक्खदेवता हुत्वा निव्वत्ति, पे. व. अड्ड. 37.

आनुभावता स्त्री., आनुभाव का भाव., केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त, प्रभाव-परिपूर्णता, प्रभावमयी स्थिति; अप्पा.- स्त्री., कर्म. स., कम प्रभावमयी स्थिति — तथा हिस्स अङ्गलक्खणानुसारेण अप्पानुभावता दिस्सति, चरिया. अड्ड. 229; दिब्बा. — स्त्री., दिव्य प्रभाव वाली स्थिति — तेसञ्च दिब्बानुभावताति एवमादयो महारत्तस्स गुणानुभावा वेदितब्बाति, चरिया. अड्ड. 72; महा.- स्त्री., महान् प्रभावमयी स्थिति — अच्चरियं आवुसो, ... महानुभावता, यत्र हि नाम तथागतो ... जानिस्सति, म. नि. 3.161.

आनुभाववन्तु त्रि., द्युति, आभा अथवा महत्त्व से परिपूर्ण, प्रभाव से भरपूर — त्तो पु., प्र. वि., ब. व. — आनुभाववन्तो,

अरहत्तमग्गजाणजुतिया खन्धादिभेदेधम्मं जोतेत्वा टिताति, ध. प. अड्ड. 1.338.

आनुभावी त्रि., स. उ. प. में प्रयुक्त, प्रभाव अथवा महत्त्व से परिपूर्ण, सब्बा., सभी प्रकार से महिमामय अथवा प्रभावशाली — वी पु., प्र. वि., ए. व. — सब्बानुभावी च वसी किमत्थं, जा. अड्ड. 7.53; सो पन यदि सब्बानुभावी च वसी च, जा. अड्ड. 7.55.

आनुरुद्धि पु., अनुरुद्ध की पुरुष सन्तान — दक्खस्स अपच्चं (पुत्तो) दक्खि, दक्खस्स अपच्चं (पुत्तो) वा, एवं दोणि ... आनुरुद्धि, क. था. 349.

आनेज/आनेज्ज, आनेज्ज त्रि., दृढता, स्थिरता, राग आदि से अप्रभावित रहने की स्थिति, द्रष्ट. अनेज के अन्त. (पीछे). आनेज्जता स्त्री., आनेज्ज का भाव., निश्चल भाव से चित्त का अवस्थान — इध च पहीनत्तायेव अरुपसमापतीनं आनेज्जता सन्तविमोक्खता च वुत्ता, ध. स. अड्ड. 246.

आनेज्जसप्पायसुत्त नपुं., व्य. सं. म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक — आनेज्जसप्पाय सुत्त निद्धितं छट्ठं, म. नि. 3.46-49; — वण्णना स्त्री., म. नि. अड्ड. में आनेज्जसप्पायसुत्त की अड्डकथा का शीर्षक — आनेज्जसप्पायसुत्तवण्णना निद्धिता, म. नि. अड्ड. (उप.प.) 3.38-45.

आनेति/आनयति आ + नी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आनयति], पास में ले आता है, किसी स्थान पर ले आता है, उपलब्ध करा देता है, वापस ले आता है, — अतीतयोब्बनो पोसो, आनेति तिम्बरुत्थनिं सु. नि. 110; आनेति परिगण्हाति, सु. नि. अड्ड. 1.137; — सि म. पु., ए. व. — थेरो त्वं मं अत्तनो वसं आनेसीति पुन निवत्तित्वा ..., जा. अड्ड. 3.31; — मि/यामि उ. पु., ए. व. — इमं पण्डितं गहेत्वा आनेमीति, जा. अड्ड. 6.159; — स्सामि भवि., उ. पु., ए. व. — आनेस्सामि सके पुत्ते, जा. अड्ड. 7.324; — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — भिक्खू नानादिस्स नानाजनपदा पब्बज्जापेक्खे च उपसम्पदापेक्खे च आनेन्ति, महाव. 26; — स्साम भवि., उ. पु., ब. व. — अत्तना समानजातियकुलतो ते दारिकं आनेस्साम ..., जा. अड्ड. 4.272; — त्तो वर्त., कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — रथे सुभे, आनयन्तो ..., म. वं. 19.33; आनयन्तोति आहरापयन्तो, म. वं. टी. 364 (ना.); — त्ता प्र. वि., ब. व. — सयं आनेन्तापि, पारा. अड्ड. 1.214; — हि/नय अनु. म. पु., ए. व. — त्वं ब्राह्मण, आपणा मक्कटच्छापकं किणित्वा आनेहि, म. नि. 2.53; 'तं

## आनेति

105

आप

मे ब्राह्मणमानया'ति, जा. अद्. 5.185; - न्तु प्र. पु., ब. व. - आनेन्तेतं पभावतिन्ति, आनेन्तु एतं जा. अद्. 5.291; - थ म. पु., ब. व. - अमुकं नाम पाणं आनेथा'ति, म. नि. 2.37; - य्य विधि., प्र. पु., ए. व. - सो हिंसितो आनेय्य पुन इधा'ति, जा. अद्. 2.203; - नये प्र. पु., ए. व. - 'तञ्च देसं न पस्सामि, यतो सोदरियमानये'ति, जा. अद्. 1.295; - य्यासि म. पु., ए. व. - थेरं विस्सामेत्वा आनेय्यासि, जा. अद्. 3.31; - य्याथ म. पु., ब. व. - मम सत्तिके आनेय्याथ असुरपुरन्ति, स. नि. 1(1).255; - य्याम उ. पु., ब. व. - सचे, भन्ते, अय्यो दायेय्य आनेय्याम मयं तं कुमारिक इमस्स कुमारकस्सा'ति, पारा. 200; - सि' अद्य., प्र. पु., ए. व. - आनयी भरतो लुद्धो, जा. अद्. 3.383; उपासिकं परिगहेत्वा आनेसि, महाव. 294; - सि' म. पु., ए. व. - 'कुतो नु भवं भारद्वाज, इमे आनेसि दारकं, जा. अद्. 7.354; - नेसिं / नयिं अद्य., उ. पु., ए. व. - आनयिं रासिं अकासिन्ति, अथो, अप. अद्. 2.189; राजानं मम वसमानेसिं, चरिया. अद्. 176; - नेसुं / नयुं अद्य., प्र. पु., ब. व. - सोणं कोळिविसं सिविकाय आनेसुं, महाव. 251; तथा तेषानयुं योधं, म. वं. 23.99; - यिम्ह अद्य., उ. पु., ब. व. - न गत्वा आनयिम्ह, थू. वं. 30 (रो.); - स्सामि / नयिस्सामि भवि., उ. पु., ए. व. - आपणा मक्कटच्छापकं किणित्वा आनेस्सामि, म. नि. 2.53; आहरिस्सामीति आनयिस्सामि, बु. वं. अद्. 188; अहं अज्जं पजापतिं आनेस्सामी'ति, पाचि. 109; - स्सति प्र. पु., ए. व. - चोरेहि नीते दारकं आनेस्सती'ति, पारा. 80; को विधुरमिध मानयिस्सती'ति, जा. अद्. 7.154; पस्सितुम्पि नं कोचि न लभति, तं को इध आनयिस्सतीति वदति, जा. अद्. 7.154; - स्ससि म. पु., ए. व. - जम्बुदीपे जेड्ढकं सुतसोमराजानं सचे नानेस्ससि, चरिया. अद्. 226; ... इमे मनुस्से, नानादिट्ठिके नानयिस्ससि ते'ति, जा. अद्. 3.148; संसारमोचकादयो पनेत्थ कुसलसज्जिनो ते त्वं कथं आनयिस्ससि, जा. अद्. 3.148; - स्साम उ. पु., ब. व. - ते दारिकं आनेस्सामा'ति वदिंसु, चरिया. अद्. 182; मयं तं रागपासेन, ... बन्धित्वा आनयिस्साम, स. नि. 1(1).146; - तुं / नयितुं निमि. कृ. - अहमि सक्कुणेय्यं अचेत्तं पाथिकपुत्तं इमं परिसं आनेतुन्ति, दी. नि. 3.14; सक्का आनयितुं कण्ह, यं पेतमनुसोचसी'ति, जा. अद्. 4.77; - नेत्वा / नयित्वा पू. का. कृ. - गितानो भिक्खु ... सहमज्झे आनेत्वा, महाव.

150; आनयित्वा चुदसियं ..., म. वं. 19.39; - नेतब्बा सं. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. - अत्थारकुसला खन्धकभाणकथेरापरियेसित्वा आनेतब्बा, महाव. अद्. 366.

आप पु./नपुं., [आपस्, नपुं.], शा. अ., जल, पानी, ला. अ., चार महाभूतों में आप-नामक एक महाभूत या भूतरूप, प्रक्षरण-लक्षण युक्त रूपधर्म, तरलता, स्नेहत्व एवं पिण्डीकरणत्व आदि के गुणों के रूप में आपोधातु रूपधर्मों में विद्यमान स्नेहत्व एवं बन्धनत्व के गुण - क. पर्याय, - आपो परं जलं वारि पानीयं सलिलं दकं, अण्णो नीरं वनं वालं तोयमम्बू दकं च कं, अभि. प. 661; पानीय मुदकं तोयं जलं पाथो च अम्बु च, दकं कं सलिलं वारि आपो अम्भो पपम्पि च, नीरञ्च केबुक् पानि अमतं एतमेव च, आपोनामानि एतानि आगतानि ततो ततो, सद्. 2.408; तुल. अमर. 1.10, 3-4; ख. व्युत्पत्ति, - आपं व्यापने, आपुणाति आपो (जो रूपधर्मों में व्याप्त हो जाए, फैल जाए, भर जाए, वह आप है), सद्. 2.494; विस्सन्दनभावेन तं तं ठानं अप्पोतीति आपो, विसुद्धि. 1.340; ग. प्रयोग, 1. पु., - पो प्र. वि., ए. व. - आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति, दी. नि. 1.49; लक्खणससम्भारारम्मणसम्पुतिवसेन चतुब्धिओ आपो, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).33; 2. नपुं., - पो प्र. वि., ए. व. - ओमत्तं पन आपो अधिमत्तं ..., सद्. 1.108; आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति, दी. नि. 1.49; - पं / पो द्वि. वि., ए. व. - आपं आपतो सज्जानाति, म. नि. 1.2; आपं आपतोति एत्थापि लक्खणससम्भारारम्मण सम्पुतिवसेन चतुब्धिओ आपो, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).33; आपो सिञ्चं यजं उस्सेति यूयं, जा. अद्. 4.269; - पेन त्. वि., ए. व. - आपेन फरणं आपोफरणं नाम, म. नि. अद्. (उप.प.) 3.105; - स्स प. वि., ए. व. - आपस्स आपत्तेन अननुभूतं, म. नि. 1.413; - तो प. वि., ए. व. - आपं आपतो सज्जानाति, म. नि. 1.2; - सिमं सत्त. वि., ए. व. - आपस्मिं मज्जाति, म. नि. 1.2; - पा प्र. वि., ब. व. - किं कयिरा उदपानेन, आपा चे सब्बदा सियुं उदा. 162; - पेसु सत्त. वि., ब. व. - सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खणं, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).126; - पो स्त्री., प्र. वि., ब. व. - अज्जा एव सो जनपदो, गङ्गाय पन या उत्तरेन आपो, तासं अविदूरत्ता उत्तरापो'तिपि वुच्चति, सु. नि. अद्. 2.145; स. प. के अन्तर्गत -

## आपक

106

## आपज्जति

आपमुखेन दस्सितं गिलानपच्चयं, सु. नि. अहु. 2.96; स. उ. प. के रूप में अहुत्तरा, उत्तरा, खारा, मिगतण्हिका, स्नेहना. के अन्त. द्रष्ट.

**आपक/आपग** पु./स्त्री., [आपगा], नदी, झरना, पानी को ले जाने वाली नदी – गं द्वि. वि., ए. व. – अथ दक्खिासि आपगं, जा. अहु. 7.278; आपगन्ति उदकवाहनदिआवहुं, जा. अहु. 7.279; – का प्र. वि., ब. व. – लेणतोयवतियं आपका, जा. अहु. 5.450; आपकाति आपगा, अयमेव वा पाठो, जा. अहु. 5.452; – के द्वि. वि., ब. व. – ... वन्दाम्, सुपत्तिथे च आपके, जा. अहु. 7.327; आपकेति सुपत्तिथाय नदिया अधिवत्था देवतापि वन्दाम्, जा. अहु. 7.328.

**आपकरणीय** त्रि., जल द्वारा किए जाने योग्य – यं नपुं. द्वि. वि., ए. व. – तेन आपेन आपकरणीयं करोतीति?, कथा. 121.

**आपगरहक** त्रि., जल की निन्दा करने वाला – का पु., प्र. वि., ब. व. – ... पथवीगरहका ..., आपगरहका आपजिगुच्छका, म. नि. 1.410.

**आपगा** स्त्री., [आपगा], नदी, झरना – सबन्ती निन्नागा सिन्धु सरिता आपगा नदी, अभि. प. 681; – गं द्वि. वि., ए. व. – यथा नरो आपगमोतरित्वा, महोदकं सलिलं सीघस्रोतं ..., सु. नि. 321; तत्थ आपगन्ति नदिं, सु. नि. अहु. 2.58; – यं सप्त. वि., ए. व. – सालगमापगायं तु सेतुं तालीसयद्धिकं, चू. वं. 86.41; – गा प्र. वि., ब. व. – आपकाति आपगा, अयमेव वा पाठो, जा. अहु. 5.452; तुल. आपक; – कूल नपुं., [आपगाकूल], नदी का तट – लं द्वि. वि., ए. व. – सोमेनि आपगाकूलं, मम लेणस्स पच्छतो, धेरगा. 309.

**आपजिगुच्छक** त्रि., जल से घृणा करने वाला – का पु., प्र. वि., ब. व. – ... पठवीगरहका पथवीजिगुच्छका, आपगरहका आपजिगुच्छका, म. नि. 1.410.

**आपज्जति** आ +रपद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपघते], 1.क. प्राप्त कर लेता है, किसी स्थिति या अवस्था में जा पहुंचता है, प्रविष्ट हो जाता है, लिप्त हो जाता है, निष्पादित करता है – ... तं आपत्तिं आपज्जति, चूळव. 10; पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति, चूळव. 225; सम्मोहं आपज्जतीति विसञ्जी विय सम्मूळो होति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).369; – सि म. पु., ए. व. – चीवरे

विकप्पं आपज्जसीति, पारा. 327; कुलेसु चारितं आपज्जसीति, पाचि. 135; – न्ति प्र. पु., ब. व. – ते पच्छा विघातं आपज्जन्तीति, महाव. 257; – थ म. पु., ब. व. – धम्मिकानं ... पच्छा खीयनधम्मं आपज्जथाति, पाचि. 202; – ते प्र. पु., ए. व., आत्मने. – करोन्तोव पनापत्तिं, कथमापज्जते, उक्त. वि. 458; – न्तो/मानो वर्त. कू., पु., प्र. वि., ए. व. – अत्तानं कप्पेन्तो विकप्पेन्तो विकप्पं आपज्जन्तो, महानि. 258; आपत्तिं आपज्जमानोपि ..., ध. प. अहु. 1.34; – ज्जतो/न्तस्स ष. वि., ए. व. – तरस्स तं धम्मं पज्जाय पविचिनतो पविचरतो परिवीमंसमापज्जतो आरद्धं होति वीरियं असत्त्वीनं, विभ. 256; खीयनधम्मं आपज्जन्तस्स पाचितियं, परि. 37; – ज्जन्ता/माना पु., प्र. वि., ब. व. – पब्बजिता आपत्तिं आपज्जन्ता ..., महानि. 186; आपज्जन्ताति अनगारिका सत्तसु आपत्तिक्खन्धेसु अज्जतरं आपज्जमाना, महानि. अहु. 282; – न्ते द्वि. वि., ब. व. – ब्यसनं आपज्जन्ते, उदा. 154; – न्तानं ष. वि., ब. व. – पाराजिकानि चत्तारि, आपज्जन्तानमेकतो, उक्त. वि. 564; – न्तेसु सप्त. वि., ब. व. – विसुं पनापज्जन्तेसु अयमेव विनिच्छयो, उक्त. वि. 565; – मानं पु., द्वि. वि., ए. व. – अकुसलं आपज्जमानं ..., अ. नि. 1(1).71; – ना वर्त. कू., स्त्री., प्र. वि., ए. व. – दिट्ठानुगतिं आपज्जमाना, दी. नि. 3.63; – ज्जाहि अनु., म. पु., ए. व. – वक्खुन्दिरे संवरं आपज्जाहि, म. नि. 3.51; – थ म. पु., ब. व. – पटिसत्त्ताणे, भिक्खवे, योगमापज्जथ, स. नि. 2(1).15; – ज्जेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. – बुद्धिं विरुद्धिं वेपुल्लं आपज्जेय्याति, महाव. 407; – ज्जेय्यं उ. पु., ए. व. – अकुसलं आपज्जेय्यं, अ. नि. 1(1).71; – ज्जेय्युं प्र. पु., ब. व. – अनयव्यसनं आपज्जेय्युं, स. नि. 1(2).134; – ज्जेय्याथ म. पु., ब. व. – तुद्धिं आपज्जेय्याथ, म. नि. 1.343; – जिज्/पादि अद्य., प्र. पु., ए. व. – द्वे सङ्गादिसेसा आपत्तियो आपज्जि हेमासप्पटिच्छन्नायो, चूळव. 131; अन्तरा वोसानं आपादि, चूळव. 342; – जिज्? म. पु., ए. व. – चीवरे विकप्पं आपज्जीति, पारा. 385; – जिज्/पादि उ. पु., ए. व. – ... एकं आपत्तिं आपज्जिं, चूळव. 98; भिय्यो पत्तोममापादिं अरज्जे विहाराय, म. नि. 1.23; – जिज्/पादुं प्र. पु., ब. व. – न विविधा पाणा संघातं आपज्जिसु, दी. नि. 1.125; भीता सन्तासमापादुं, स. नि. 2(1).80; – जिज्थ म. पु., ब. व. – मायस्मन्तो

## आपज्जति

107

## आपज्जापेति

विवाद आपज्जित्थाति, म. नि. 3.25; - जिम्हा उ. पु. ब. व. - गारहं आवुसो, धम्मं आपज्जिम्हा असप्पायं पाचि. 234; - जिजस्सति भवि, प्र. पु. ए. व. - उस्सुक्कं आपज्जिस्सति, चूलव. 288; - स्ससि म. पु. ए. व. - चीवरे विकप्पं आपज्जिस्ससि, पारा. 327; - स्सामि उ. पु. ए. व. - आपत्तिं आपज्जिस्सामीति तुण्हीभूतो सङ्गं विहेसेति, पाचि. 55; - स्सन्ति प्र. पु. ब. व. - बुद्धिं विरुद्धिं वेपुल्लं आपज्जिस्सन्ति, महाव. 51; - स्सथ म. पु. ब. व. - बुद्धिं विरुद्धिं वेपुल्लं आपज्जिस्सथ, म. नि. 1.176; - स्साम उ. पु. ब. व. - न मदं आपज्जिसाम, ... न पमादं आपज्जिस्साम, म. नि. 1.210; - स्स काला, म. पु. ए. व. - हि त्वं, ... अप्पमादं आपज्जिस्स, ध. प. अट्ठ. 2.76; - स्सथ तदे, आत्मने. - नामरूपं बुद्धिं विरुद्धिं वेपुल्लं आपज्जिस्सथाति, दी. नि. 2.49; - जिजतुं निमि. कृ. - तस्सा हि ... कायससग्गं आपज्जितुं परि. अट्ठ. 244; - ज्ज / ज्जित्वा पू. का. कृ. - संसारमापज्ज परमराय, म. नि. 2.270; सो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा, पाचि. 47; - तब्ब सं. कृ. - ब्बो पु. प्र. वि. ए. व. - असतिअमनसिकारो आपज्जितब्बो, म. नि. 1.170; - ब्बं पु. द्वि. वि. ए. व. - तस्मिं पुग्गले विस्सासं आपज्जितब्बं मज्जन्ति, म. नि. 1.133; - ब्बा स्त्री., प्र. वि. ए. व. - आपत्तिं न आपज्जितब्बा, चूलव. 10; - ब्बं नपुं., प्र. वि. ए. व. - देसेत्वा ... आयत्तिं संवरं आपज्जितब्बं, म. नि. 2.86-87; 2.क. आपत्ति या विनय-नियमों के विपरीत आचरण करता है, अपराध कर बैठता है, (आपत्ति में) ग्रस्त या पीड़ित हो जाता है - ज्जति / ज्जते वर्त., प्र. पु. ए. व. - आपज्जति यावतकेसु वत्थुसु, महाव. 484; करं आपज्जते नरो, उक्त. वि. 459; - ज्जरे आत्मने, वर्त., प्र. पु. ब. व. - आगन्तुको तथावासि-कोपि आपज्जरे उभो, उक्त. वि. 553; - ज्जन्तो वर्त. कृ., पु. प्र. वि. ए. व. - सकवाचाय कायेन, पसुतो च अचित्तको, आपज्जन्तो, परि. 252; - ज्जेय्य विधि., प्र. पु. ए. व. - सचे पन अहुत्तिमत्तस्य आकासे तिहेय्य न आपज्जेय्य, परि. अट्ठ. 160; 1.ख. विनय-शिक्षा-पदों का उल्लंघन कर बैठता है, शिक्षापदों में निर्दिष्ट नियमों का अतिक्रमण करने लगता है - सो यानि तानि खुद्धानुखुद्धानि सिक्खापदानि तानि आपज्जतिपि बुद्धातिपि, अ. नि. 1(1).263; यं विनापि वित्तेन आपज्जति, तं अचित्तकं, पारा. अट्ठ. 1.216, 1.ग.

व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, रूप को प्राप्त करता है, किसी दशा में परिवर्तित होता है या उसके साथ घुल मिल जाता है, वर्त., प्र. वि. ए. व. - न्पुपच्चयस्सन्तो अत्तमापज्जति, सद. 3.647; पञ्चादीनं सङ्ख्यानमन्तो अत्तमापज्जते सु-नं-हि इच्चेतेसु परेसु, क. व्या. 90; - न्ति प्र. पु. ब. व. - नपुंसकानि लिङ्गानि सिम्हि रस्सं आपज्जन्ति, सद. 3.646; - न्ते तदे, आत्मने. - घो रस्समापज्जते संसासु एकवचनेसु विभत्तादेसेसु, क. व्या. 66; सिस्मिं अनपुंसकानि लिङ्गानि न रस्समापज्जन्ते, क. व्या. 85; 1.घ. परिणत होता है, तार्किक रूप प्रतिफलित होता है अथवा घटित होता है - ... अभिधम्माविरोधो आपज्जति, पारा. अट्ठ. 2.98; ..., दुक्खस्स च सुखपटिविरुद्धन्ति ज्ञानमग्गफलसुखस्स, अनवज्जपच्चय परिभोगसुखस्स च तेसं अधम्मभावो आपज्जतीति एवं वत्तब्बा, नेत्ति. टी. 70.

आपज्जन नपुं., आ + √पद से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. आपद्यन], आ फंसना, पहुंच, प्राप्ति, तार्किक परिणति, प्रवेश, अन्तर्भाव - नं प्र. वि. ए. व. - अथ वा आपत्तीति आपज्जनं होति, पारा. अट्ठ. 1.208; ... आपत्तिया आपज्जनं दट्ठब्बं, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.36; - नेन तृ. वि. ए. व. - ... अनुप्पादधम्मत्तं आपज्जनेन खीणा ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).135; - ने सप्त. वि. ए. व. - एवरूपं आपत्ति आपज्जने ..., कथिता, अ. नि. अट्ठ. 2.208; स. उ. प. के रूप में, अना. - नपुं., निषे., अप्राप्ति, प्रभावित नहीं होना, अग्रस्तता - नं प्र. वि. ए. व. - अगगारिकविनयो नाम सत्तापत्तिकखन्ध अनापज्जनं, खु. पा. अट्ठ. 108; दिट्ठानुगति. - नपुं. मिथ्यादृष्टि के जाल में आ फंसना - ने सप्त. वि. ए. व. - ... अज्जेसं पुञ्ञकामानं दिट्ठानुगतिआपज्जने नियोजनञ्च, खु. पा. अट्ठ. 91; - द्विरुत्तमावा. नपुं., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, द्वित्व की प्राप्ति - विसेसाभावतो द्विरुत्तमावापज्जनतो च, सद. 1.265; हत्थपरामसना. - नपुं., हाथ के स्पर्श की प्राप्ति - भण्डकस्स कारणा हत्थपरामसनापज्जनं विय ..., स. नि. अट्ठ. 3.63; - क त्रि., प्राप्त करने वाला, ग्रस्त होने वाला, अपराध से पीड़ित - का पु. प्र. वि. ब. व. - परदारचारितं आपज्जनका, स. नि. अट्ठ. 2.142.

आपज्जापेति आ + √पद के प्रेर. का वर्त., प्र. पु. ए. व. [आपादयति], प्राप्त कराता है, संपन्न कराता

## आपज्जितु

108

## आपणुग्घाटन

है — योजनं गतो ... वत्तव्वतं आपज्जापेति, ध. स. अट्ट. 127.

**आपज्जितु** त्रि., आ +√पद से व्यु., क. ना., प्राप्त करने वाला, ग्रस्त होने वाला, फंस जाने वाला, ग्रस्त, प्रभावित — ता पु., प्र. वि., ए. व. — सरतायस्मा एवरुपि आपतिं आपज्जिताति?, चूळव. 183; एत्थ सरतु आयस्मा एवरुपि आपतिं आपज्जिता, आयस्मा एवरुपिया आपतियाति अयमत्थो, चूळव. अट्ट. 37; एवरुपि गरुकं आपतिं आपज्जिता, चूळव. 214.

**आपटिसन्धितो** अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., प्रतिसन्धि अथवा पुनर्जन्म के क्षण से लेकर — आपटिसन्धितो ज्वति धावतीति आजवं, महानि. अट्ट. 353.

**आपण'** पु./नपुं., [आपण], शा. अ., विक्री के लिए लाई गई वस्तुएं, ला. अ., दुकान, बाजार — णो प्र. वि., ए. व. — तु आपणो पण्यवीथिका, अभि. प. 213; आपणो कारापितो होति, महाव. 185; — णं द्वि. वि., ए. व. — आपणं पसारंति, चूळव. 431; नानाभण्डानं अनेकविधं आपणं पसारंति, चूळव. अट्ट. 130; — णा/तो प. वि., ए. व. — कंसपाति आभता आपणा वा कम्मरकुला, म. नि. 1.32; आपणतो वा कंसपातिकारकानं कम्मरानं घरतो वा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).151; — णे सप्त. वि., ए. व. — आपणे निसिन्नो पण्डितवाणिजो, जा. अट्ट. 3.71; — णा प्र. वि., ब. व. — सब्बापणा पसारितनियामेनेव टिता, जा. अट्ट. 4.442; — णे द्वि. वि., ब. व. — यथापसारिते आपणे व ... पहाय, जा. अट्ट. 6.36; — णेहि तृ. वि., ब. व. — कल्याणिनामनगरी रुचिरापणोहि, चू. वं. 91.5; — णेसु सप्त. वि., ब. व. — आपणेसु हि सविज्जाणकम्मि अविज्जाणकम्मि मक्कटादिकीकनभण्डकं विविकणन्ति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.67-68; — णानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. — वीथिया उभतो पस्से आपणानि पसारिय, म. वं. 34.76; स. प. के अन्तः, — धुत्तस्स आपणसमीपेन गच्छति, जा. अट्ट. 1.280; स. उ. प. के रूप में, अगदा, अन्तरा, ओदनिका, ओसधा, गन्धा, दुस्सा, धज्जा, पुष्पा, फला, मध्वा, मालाकारा, रतना, सब्बगन्धा, सब्बा. एवं सा. के अन्तः द्रष्टः.

**आपण'** नपुं./पु., व्य. सं., अंगदेश का एक निगम — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं वरमानो येन आपणं तदवसरि, महाव. 321; ... येन आपणं नाम अङ्गतरापानं निगमो तदवसरि, सु. नि. 164; तदवसरीति

आपणबहुलताय सो निगमो "आपणो" त्वेव नामं तमि, सु. नि. अट्ट. 2.147; — णे सप्त. वि., ए. व. — ... अङ्गतरापेसु आपणे नाम ब्राह्मणगामे ब्राह्मणकुले निव्वसित्वा ..., थेरगा. अट्ट. 2.259.

**आपणद्वार** नपुं., तत्पु. स. [आपणद्वार], दुकान का प्रवेश-द्वार — रं द्वि. वि., ए. व. — आपणद्वारं गन्त्वा, जा. अट्ट. 1.281; — रेन तृ. वि., ए. व. — एको पन पुरिसो आपणद्वारेन आगच्छन्तो ..., ध. प. अट्ट. 1.299; — रे सप्त. वि., ए. व. — आपणद्वारे पतितकं, परि. अट्ट. 173.

**आपणफलक** नपुं., तत्पु. स. [आपणफलकी], सामानों को रखने हेतु दुकान में लगायी गई लकड़ी की तख्ती या पट्टा — के सप्त. वि., ए. व. — एककुलस्स आपणफलकं पञ्चमासकं भण्डं दुद्धपितं दिस्वा ..., पारा. अट्ट. 1.294.

**आपणबहुलता** स्त्री., भाव. [आपणबहुलता], दुकानों की अधिकता अथवा प्रचुरता — य तृ. वि., ए. व. — आपणबहुलताय सो निगमो ... तमि, सु. नि. अट्ट. 2.147.

**आपणमुख** नपुं., तत्पु. स. [आपणमुख], शा. अ., दुकान का अगला भाग, ला. अ., दुकान, स. प. के रूप में, — तस्मिं किर वीसति आपणमुखसहस्सानि विभक्तानि अहेसुं, सु. नि. अट्ट. 2.147.

**आपणसाला** स्त्री., [आपणशाला], दुकान वाला घर — आपणसाला कारापिता होति, महाव. 185.

**आपणसुत्त** नपुं., स. नि. का एक सुत्त, स. नि. 3(2).300-302.

**आपणिक** पु., [आपणिक], दुकानदार, व्यापारी, व्यवसायी — कयविककयिको सत्थवाहापणिकवाणिजा, अभि. प. 469; — को प्र. वि., ए. व. — अथ खो सो उपासको येन सो आपणिको तेनुपसङ्गमि, पाचि. 336; — कं द्वि. वि., ए. व. — उपसङ्गमित्वा त आपणिकं एतदवोच, पाचि. 336; — स्स ष. वि., ए. व. — आपणिकस्स तण्डुलमुद्धिं थेय्यचित्तो अवहरि, पारा. 76; स. उ. प. के रूप में गन्धा, धम्मा, पुष्पा, फला, मधु. के अन्तः द्रष्टः.

**आपणुग्घाटन** नपुं., तत्पु. स. [आपणोद्घाटन], दुकान को खोलना — नं द्वि. वि., ए. व. — कस्सका कसिकम्मं वाणिजा आपणुग्घाटनं ... पयोजेन्ति, दी. नि. अट्ट. 2.195.

## आपतति

109

## आपत्ति

आपतति आ +पत् का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपतति], आ धमकता है, अचानक दूट पड़ता है, तेजी से आ पहुंचता है, आ जाता है, किसी ओर अभिमुख होकर उड़ता है - सि म. पु., ए. व. - पहद्वरूपो आपतसि, जा. अहु. 6.280; आपतसीति आगच्छसि, तदे.; - न्तं वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. - तमापतन्तं दिस्वान, जा. अहु. 5.356; - न्तोसु सप्त. वि., व. व. - रूपसदगन्धरसफोद्वद्धधम्मोसु आपतन्तेसु, मि. प. 337; - न्ती स्त्री., प्र. वि., ए. व. - धेनु वेगेन आपतन्ती, उदा. अहु. 75; - ती अद्य., प्र. पु., ए. व. - दण्डमादाय नैसादो, आपती तुरितो भुसं, जा. अहु. 5.356; - तिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - धनपालको हत्थी आपतिस्सति, मि. प. 199; - तित्वा/त्वान पू. का. कृ. - आपातं परिपातं, आपतित्वा आपतित्वा परिपतित्वा परिपतित्वा, उदा. अहु. 290; कच्चि यन्तापतित्वान्, दण्डेन समपोथयि, जा. अहु. 5.344; आपतित्वानाति उपधावित्वा, जा. अहु. 5.345.

आपतन नपुं., आ +पत् से व्यु., क्रि. ना., आ गिरना - नाय च. वि., ए. व. - सभण्डा उपगच्छन्ति, वस्सस्सापतनाय ते, अप. 1.365.

आपत्त नपुं., आप का भाव. [आपत्त्व], जल का स्वभाव, जलत्व, तरलता - तेन तृ. वि., ए. व. - आपस्स आपत्तेन अननुभूतं म. नि. 1.413.

आपत्तञ्जभागिय त्रि., दूसरी आपत्ति से सम्बद्ध - यं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आपत्तञ्जभागियं वा होति अधिकरणञ्जभागियं वा, पारा. 263; - स्स ष. वि., ए. व. - आपत्तञ्जभागियं वा होति अधिकरणञ्जभागियं वाति आदिमाह, या च सा अवसाने आपत्तञ्जभागियस्स अधिकरणस्स वसेन चोदना वुत्ता, पारा. अहु. 2.167.

आपत्ताधारता स्त्री., भाव., आपत्ति के विषय में उत्पन्न विवाद का आधारभाव, सात प्रकार की आपत्तियां - आपत्ताधारता चेव, किच्चाधिकरणमि च, विन. वि. 2760; आपत्ताधारता नाम, सत्त आपत्तियो मता, विन. वि. 2762.

आपत्ताधिकरण नपुं., तत्पु. स., भिक्षुजीवन में किए गए अपराधों या आपत्तियों से सम्बन्धित वैधानिक मुद्दा या मामला, चार प्रकार के अधिकरणों में से एक - णं प्र. वि., ए. व. - अधिकरणं नाम घत्तारि ... -विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं, पारा. 256;

पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणंति एवं आपत्तियेव आपत्ताधिकरणं, पारा. अहु. 2.163; - स्स ष. वि., ए. व. - छ आपत्तिसमुद्धाना आपत्ताधिकरणस्स मूलं, चूलव. 199; आपत्ताधिकरणस्स छ, चूलव. अहु. 176; - पच्चया अ., प. वि., प्रतिकू. निपा., आपत्ति-विषयक विवाद-विषय के कारण - आपत्ताधिकरणपच्चया वतस्सो आपत्तियो आपज्जतीति, परि. अहु. 199.

आपत्तानापत्ति स्त्री., द्व. स., आपत्ति (अपराध) एवं अनापत्ति (अपराध का अभाव) - त्ति प्र. वि., ए. व. - विवादाधिकरणं आपत्तानापत्तीति ? विवादाधिकरणं न आपत्ति, परि. 290; - त्तिं द्वि. वि., ए. व. - आपत्तानापत्तिं न जानाति, परि. 255; 345; परि. अहु. 166.

आपत्ति स्त्री., [आपत्ति], शा. अ., आकर कहीं पर गिर जाना, आ गिरना, प्राप्ति, प्रवेश, आ पहुंचना - यथा पनस्स हेतुपच्चयपरियेसनापत्ति होति, विसुद्धि. महाटी. 2.346; ... आपत्तीति आपज्जनं होति, पाराजिकस्साति पाराजिकम्मस्स, पारा. अहु. 1.208; आपत्ति पाराजिकस्साति पाराजिकसङ्घाता आपत्ति अस्स, पाराजिकसज्जितस्स वा वीतिक्कमस्स आपज्जनं उत्तपनन्ति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 1.48; कतमं आपत्ति नो अधिकरणं? सोतापत्ति समापत्ति अयं आपत्ति नो अधिकरणं, चूलव. 203; - तो प. वि., ए. व. - दसहाकारेहि पेसुज्जं उपसंहरति - जातितोपि ... आपत्तितोपि ..., पाचि. 20; ला. अ. क., केवल स. प. में प्राप्त, तार्किक दोष में आ फंसना, अयुक्तियुक्तता में आपत्तित हो जाना - न पटिपत्तिया वज्झभावापत्ति अभावपापकत्ताति चे, विसुद्धि. 2.137; निब्बानस्सेव अणुआदीनमि निच्चभावापत्तीति चे, विसुद्धि. 2.138; - तो प. वि., ए. व. - सब्बत्थ सब्बदा सब्बेसञ्च एकसदिसभावापत्तितो, विसुद्धि. 2.232; ला. अ. ख., भगवान् बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त तथा पातिमोक्ख, सुत्तविभङ्ग एवं खन्धको में संगृहीत विनय-शिक्षा पदों का उल्लंघन, विनय-विपरीत आचरण (अपराध) में आपतन या आ फंसना, विनयमातिका के अनुसार, पाराजिक, संघादिसेस, पाचितिय, पाटिदेसनीय एवं दुक्कट नामक पांच आपत्तियां परिगणित - तत्थ कतमा पञ्च आपत्तियो ? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति पाचितियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुक्कटापत्ति, परि. 188; पदमाजनीय विमङ्ग के अनुसार, पाराजिक, संघादिसेस, थुल्लच्चय, पाचितिय, पाटिदेसनीय,



## आपत्ति

110

## आपत्तिकोद्भास

दुष्कट एवं दुष्भासित नामक 7 आपत्तियां परिगणित – तत्थ कतमा सत् आपत्तियो ? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति, थुल्लच्चयापत्ति, पाचित्तियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुष्कटापत्ति, दुष्भासितापत्ति—इमा सत् आपत्तियो, परि. 189; पञ्च आपत्तियोति मातिकाय आगतवसेन वृत्ता, सत्ताति विभङ्गे आगतवसेन, परि. अहु. 152; तत्थ सङ्घादिसेसोति सजातिसाधारणं, आपत्तीति सब्बसाधारणं, चूलव. अहु. 22; एत्थ अकुसलन्ति आपत्ति अधिप्पेता, आपत्ति आपन्नोति अत्थो, अ. नि. अहु. 2.11; यस्स सिया आपत्ति, सो आविकरेय्य, परि. अहु. 229; सन्ती आपत्ति आविकातब्बा, महाव. 131; एका आपत्ति एकाहप्पटिच्छन्ना, एका आपत्ति द्वीहप्पटिच्छन्ना, चूलव. 126; – त्तिं द्वि. वि., ए. व. – द्वीहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – कायेन वा आपज्जति वाचाय वा आपज्जति, परि. 239; सन्ति आपत्तिं नाविकरेय्य, सम्पज्जानमुसावादस्स होति, महाव. 131; – या' तृ. वि., ए. व. – छब्बगिया भिक्खू अनोकासकत भिक्खुं आपत्तिया घोदेन्ति, महाव. 143; – या<sup>2</sup> ष. वि., ए. व. – अज्जतरों भिक्खु आपत्तिया अदस्सने उक्खित्तको विब्भमि, महाव. 124; आपत्तिया अदस्सने च अप्पटिकम्मे, परि. अहु. 179; – या<sup>3</sup> / तो प. वि., ए. व. – द्वीहाकारेहि आपत्तिया वुद्धाति – परि 239; आपत्तितो वा आपत्तिं सङ्गमति, परि. 316; – यं/या सप्त. वि., ए. व. – सब्बज्जेतं आपत्तियं युज्जति, पारा. अहु. 1.217; असन्तिया आपत्तिया तुण्ही भवेतब्बं, महाव. 130; – यो प्र. वि., ब. व. – तस्स होन्ति आपत्तियो पटिच्छन्नायोपि अप्पटिच्छन्नायोपि ..., चूलव. 153; सो पुन उपसम्पन्नो ता आपत्तियो नच्चोदेति, चूलव. 149; – तीहि तृ. वि., ब. व. – सचे मयं इमाहि आपत्तीहि अज्जमज्जं कारेस्साम, चूलव. 192; – तीनं ष. वि., ब. व. – पञ्चन्नं आपत्तीनं अज्जतरं आपत्तिं पस्सति, पारा. अहु. 185; – तीहि प. वि., ब. व. – ते भिक्खू ताहि आपत्तीहि वुद्धिता होन्ति, चूलव. 195; – तीसु सप्त. वि., ब. व. – एकच्चासु आपत्तीसु निब्बेमतिको, एकच्चासु आपत्तीसु वेमतिको, चूलव. 153; टि., यह शब्द स्थविरवादी विनय की शब्दावली का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका प्रयोग सोतापत्ति, समापत्ति जैसे शब्दों में आ पहुँचना, प्रवेश अथवा प्राप्ति हैं परन्तु विनय में इस शब्द का विशेष अर्थ पातिमोक्ख, विभङ्ग एवं खन्धकों में संगृहीत बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त सिक्खापदों का अतिक्रमण तथा तज्जन्य अपराध से ग्रस्त हो जाना है।

पातिमोक्ख नियमों के अनुसार पाराजिक, सङ्घादिसेस, निस्सगियपाचित्तिय, पाचित्तिय तथा पाटिदेसनीय नामक पांच आपत्तियां हैं, इन पांचों के अतिरिक्त थुल्लच्चय, दुष्कट एवं दुष्भासित, इन तीन अन्य आपत्तियों का भी विनय में उल्लेख है। इन आठ आपत्तियों में पाराजिक एवं पाचित्तिय, ये दो गरुकापत्ति (अधिक गम्भीर अपराध) हैं तथा शेष 6 लहुकापत्ति (हल्के अपराध) बतलाए गए हैं; स. उ. प. के रूप में अचित्तका, अत्था, अदुद्गल्ला, अनयव्यसना, अनवसेसा, अना, अन्तरा, अपरा, अप्पटिकम्मा, अभूतारोचना, थुल्लच्चया, दुष्कटा, दुद्गल्ला, दुष्भासिता, पाचित्तिया, पाटिदेसनीया, पाराजिका, पुनपुनअज्झाचारा, पुब्बा, पुरिसा, मूला, लहुका, विकारा, सङ्घादिसेसा, सम्पटिकम्मा, सभागा, सावसेसा, सोता. के अन्त. द्रष्ट.

**आपत्तिअङ्गवस** नपुं., किसी भी अपराध अथवा शिक्षापदों के उल्लंघन के कारण – सेन तृ. वि., ए. व. क्रि. वि. – न आपत्तिअङ्गवसेन, महाव. अहु. 258.

**आपत्तिआपज्जनक** त्रि., विनय अपराधों में आपत्तित, पाराजिक आदि अपराधों का आरोपी – कं पु., द्वि. वि., ए. व. – तं आपत्तिआपज्जनक आपन्नपुग्गलं, उदा. अहु. 249-50.

**आपत्तिकर** त्रि., पाराजिक आदि आपत्तियों को उत्पन्न कराने वाला – रा पु., प्र. वि., ब. व. – आपत्तिकरा धम्मा जानितब्बा, परि. 238; आपत्तिकरा धम्मा जानितब्बातिआदिहि एक्कतरिकनये आपत्तिकरा धम्मा नाम छ आपत्तिसमुद्धानानि, परि. अहु. 158; – रं नपुं., प्र. वि., ए. व. – दिवा पटिसल्लीयन्तस्स पन परिवत्तकद्वारमेव आपत्तिकरं, पारा. अहु. 1.225.

**आपत्तिकुसलता** स्त्री., भाव., आपत्तियों (विनय-अपराधों) के ज्ञान के विषय में कुशलता – ता प्र. वि., ए. व. – आपत्तिकुसलता च आपत्तिवुद्धानकुसलता च, अ. नि. 1(1).101; एकादसमे आपत्तिकुसलाति पञ्चन्नञ्च सत्तन्नञ्च आपत्तिक्खन्धानं जाननं, अ. नि. अहु. 2.55.

**आपत्तिकुसलभाव** पु., उपरिबत्त, – वो प्र. वि., ए. व. – या तास आपत्तीनं आपत्तिकुसलता पज्जा पजाननाति एवं वुत्तो आपत्तिकुसलभावो, दी. नि. अहु. 3.146.

**आपत्तिकोद्भास** पु., तत्पु. स., आपत्तियों का एक विशेष भाग – सं द्वि. वि., ए. व. – तत्तिये आपन्नो होति

## आपत्तिक्खन्ध

111

## आपत्तिनिदान

कञ्चिदेव देसन्ति कञ्चि आपत्तिकोड्ढासं आपन्नो होति, अ. नि. अड्ड. 3.297.

**आपत्तिक्खन्ध** पु., [बौ. सं. आपत्तिस्कन्ध]. आपत्तियों की श्रेणी अथवा वर्ग, जिसमें पांच अथवा सात आपत्तियां परिगणित हैं — न्धो प्र. वि., ए. व. — सत्तन्न आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो, परि. 2; सो आपत्तिक्खन्धो अनियतोति वुच्चति, परि. अड्ड. 192; — धानं ष. वि., ब. व. — पञ्चन्नं वा आपत्तिक्खन्धानं अज्जतरा आपत्ति, महाव. 131; — न्धं द्वि. वि., ए. व. — सुद्धकन्ति सङ्गादिसेसं विना लहुकापत्तिक्खन्धमेव, चूळव. अड्ड. 35; — न्धेन त्. वि., ए. व. — ... एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता-दुक्कटापत्तिक्खन्धेन, परि. 85; — न्धे सप्त. वि., ए. व. — भिक्खुनो पच्छिमस्मिं आपत्तिक्खन्धे यथापटिच्छन्ने परिवासं ..., चूळव. 149; पच्छा छादितत्ता पन पच्छिमस्मिं आपत्तिक्खन्धेति वुत्तं, चूळव. अड्ड. 35; — न्धा प्र. वि., ब. व. — पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, चूळव. 196; — न्धेसु सप्त. वि., ब. व. — ... यस्स सत्तसु आपत्तिक्खन्धेसु आदिहि वा अन्ते वा सिक्खापदं भिन्नं होति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).293; — न्धानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — यं देसितनन्तजिनेन तादिना आपत्तिक्खन्धानि विवेकदस्सिना, परि. 394; यानि सत्थारा सत्त आपत्तिक्खन्धानि देसितानि, परि. अड्ड. 238.

**आपत्तिगणना** स्त्री., आपत्तियों अथवा विनय में प्रज्ञप्त अपराधों की गणना — ना प्र. वि., ए. व. — वत्थूनं गणनायस्स, आपत्तिगणना सिया, विन. वि. 705; 706.

**आपत्तिगामी** त्रि., आपत्ति में आपत्ति, विनय-निर्दिष्ट अपराधों को करने का आरोपी, भिक्षुसंघ से सम्बद्ध अपराध को करने वाला वह भिक्षु जिसने अभी तक पाप का स्वीकरण नहीं किया है — नियो स्त्री., प्र. वि., ब. व. — तस्मिं ... भिक्खुनियो कम्मप्पत्तायोपि आपत्तिगामिनियोपि, चूळव. 424.

**आपत्तिजनक** त्रि., आपत्तियों अथवा पापों को जन्म देने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — अनारुळ्हेसु सङ्गीतिं आपत्तिजनकाति हि, विन. वि. 904.

**आपत्तिदिट्ठि** त्रि., आपत्ति को आपत्ति के रूप में देखने वाला — द्वि पु., प्र. वि., ए. व. — सो तस्सा आपत्तिया

आपत्तिदिट्ठि होति, महाव. 457; — नो पु., प्र. वि., ब. व. — अज्जे भिक्खू तस्सा आपत्तिया आपत्तिदिट्ठिनो होन्ति, महाव. 457.

**आपत्तिदेसना** स्त्री., तत्पु. स., आपत्ति अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराध का स्वीकरण — नं द्वि. वि., ए. व. — ... इदं सन्धाय वुत्तं न आपत्तिदेसनं, चूळव. अड्ड. 133; ... आपत्तिदेसनासङ्घातानं विनयकम्मानमेतं अधिवचनं, परि. अड्ड. 222; — किच्च नपुं., तत्पु. स., आपत्ति के स्वीकरण का कार्य — च्वं प्र. वि., ए. व. — उद्विस्स ... भुत्तस्स पच्छा जत्वा आपत्तिदेसनाकिच्चं नाम नत्थि, पारा. अड्ड. 2.173; — पटिग्गहण नपुं., तत्पु. स., आपत्ति के स्वीकरण का अनुमोदन या पुष्टि — णेसु सप्त. वि., ब. व. — आपत्तिदेसनापटिग्गहणेसु पनेत्थ अयं पाळि, पारा. अड्ड. 2.202.

**आपत्तिनान्त** नपुं., भाव. [आपत्तिनानात्व], भिक्षु द्वारा किए गए अपराधों की विविधता, — त्तं प्र. वि., ए. व. — अत्थि आपत्तिनान्तं, नत्थि वत्थुस्स नानता, उक्त. वि. 557; 561.

**आपत्तिनान्तता** स्त्री., भाव. [आपत्तिनानात्व]. आपत्तियों या भिक्षुसङ्घीय अपराधों की अनेकता अथवा विविधता — ता प्र. वि., ए. व. — वत्थुनान्तता अत्थि, ... आपत्तिनानता, उक्त. वि. 557, 558, 559; अत्थि नेव वत्थुनान्तता नो आपत्तिनान्तता, परि. 250; भिक्खुस्स च भिक्खुनिया च अज्जमज्जं कायसंसर्गं भिक्खुस्स सङ्गादिसेसो भिक्खुनिया पाराजिकन्ति एवं आपत्तिनान्तताव होति, परि. अड्ड. 170.

**आपत्तिनिकाय** पु., तत्पु. स., [बौ. सं. आपत्तिनिकाय], आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराधों का वर्ग या समुच्चय, बहुत सारे अपराध — यो प्र. वि., ए. व. — अयं सङ्गादिसेसो नाम आपत्तिनिकायोति एवमेत्थ सम्बन्धो वेदितब्बो, पारा. अड्ड. 2.98; — स्स ष. वि., ए. व. — तस्सेव आपत्तिनिकायस्स नामकम्मं अधिवचनं, पारा. 150; सङ्गादिसेसोति इमस्स आपत्तिनिकायस्स नामं, पारा. अड्ड. 2.98.

**आपत्तिनिदान** त्रि., ब. स., आपत्तियों के कारण उत्पन्न, भिक्षुसङ्घीय अपराधों से उदित — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आपत्ताधिकरणं आपत्तिनिदानं ..., परि. 289; आपत्ति निदानं अस्साति आपत्तिनिदानं, परि. अड्ड. 199.

## आपत्तिनिरोध

112

## आपत्तिमय

**आपत्तिनिरोध** पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपत्तिनिरोध], आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराधों की समाप्ति या उपशमन — धं द्वि. वि., ए. व. — आपत्तिनिरोधं न जानाति, परि. 254; निरोधन्ति अयं आपत्तिं देसनाय निरुज्झति, वृषसम्मति, अयं बुद्धानेनाति एवं आपत्तिनिरोधं न जानाति, परि. अष्ट. 176; — गामी त्रि., आपत्तियों के निरोध को प्राप्त कराने वाला, अपराधों के उच्छेद की स्थिति की ओर ले जाने वाला — निं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति, परि. 254; सत्त समथे अजानन्तो पन आपत्तिनिरोधगामिनिपटिपदं न जानाति, परि. अष्ट. 176.

**आपत्तिपच्चय** त्रि., ब. स., आपत्ति अथवा अपराध के कारण से उत्पन्न — या स्त्री., प्र. वि., ब. व. — आपत्तिपच्चया बुत्ता, कति आपत्तियो पन, आपत्तिपच्चया बुत्ता, चतस्सोव महोस्सिना, उत्त. वि. 290.

**आपत्तिपटिग्गह** पु., तत्पु. स., आपत्तियों या अपराधों की आत्मस्वीकृति — हो प्र. वि., ए. व. — ... एवं आपत्तिपटिग्गहो पटिग्गहो नाम, कङ्का. अष्ट. 245.

**आपत्तिपटिग्गहण/आपत्तिप्पटिग्गहण** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आपत्तिप्रतिग्रहण], उपरिवत् — णं प्र. वि., ए. व. — ततो आपत्तिप्पटिग्गहणञ्च निस्सट्ठचीवरदानञ्च ..., कङ्का. अष्ट. 154; — णे सप्त. वि., ए. व. — आपत्तिपटिग्गहणे पन अयं विसेसो, यथा ... आपत्तिपटिग्गाहको भिक्षु अत्तिं ठपेति, पारा. अष्ट. 2.203.

**आपत्तिपटिग्गाहक** त्रि., अपराध-स्वीकरण को स्वीकार करने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — यथा गणस्स निस्सज्जित्वा आपत्तिया देसियमानाय आपत्तिपटिग्गाहको भिक्षु अत्तिं ठपेति, पारा. अष्ट. 2.203; — केन पु., तृ. वि., ए. व. — आपत्तिपटिग्गाहकेनापि सुणन्तु मे आयस्मन्ता ... कङ्का. अष्ट. 154; — के पु., सप्त. वि., ए. व. — देसेतीति आपत्तिपटिग्गाहके सभागपुग्गले सति ... देसेतियेव, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).295.

**आपत्तिपरिच्छेद** पु., तत्पु. स., आपत्ति या अपराध की सुनिश्चित सीमा — अप्पटिच्छन्नायोति आदीसु आपत्तिपरिच्छेदवसेन परिमाणायो वेव अप्पटिच्छन्नायो चाति अत्थो, चूळव. अष्ट. 35; — विरहित त्रि., अपराध का विनिश्चय करने में अक्षम — तो पु., प्र. वि., ए. व. — अपदानं वुच्चति परिच्छेदो, आपत्तिपरिच्छेदविरहितोति अत्थो, महाव. अष्ट. 404.

**आपत्तिपरियन्त** 1. पु., तत्पु. स., आपत्तियों या भिक्षु द्वारा किए गए अपराधों का उपशमन या अन्त — न्तं द्वि. वि., ए. व. — सो आपत्तिपरियन्तं न जानाति, रत्तिपरियन्तं जानाति, चूळव. 142; ततो आपत्तिपरियन्तं न जानाति, रत्तिपरियन्तं न जानातीति आदिना नयेन सुद्धन्तपरिवासो दस्सितो, चूळव. अष्ट. 34; 2. त्रि., आपत्तियों अथवा अपराधों तक परिसीमित — न्ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अत्थि भिक्षुसम्मति आपत्तिपरियन्ता, न कुलपरियन्ता, पाधि. 48.

**आपत्तिपरिवास** पु., तत्पु. स., आपत्ति में आपतित हो जाने के कारण निर्धारित अवधि के लिए परीक्ष्यमाण स्थिति में रहने का दण्ड — सं द्वि. वि., ए. व. — ते नेव तिथियपरिवासं वसन्ति, न आपत्तिपरिवासं, ... वसन्ति, दी. नि. अष्ट. 3.40.

**आपत्तिपुच्छा** स्त्री., [आपत्तिपृच्छा], आपत्ति के विषय में पूछ-ताछ — च्छा प्र. वि., ए. व. — ... मातिकाय च विभङ्गे च आगतापत्तिपुच्छा, परि. अष्ट. 152.

**आपत्तिबहुका** स्त्री., कर्म. स., आपत्तियों की बहुलता, बहुत सारी आपत्तियाँ — का प्र. वि., ए. व. — आपत्तिबहुका जेय्या, पुत्तप्पुनं निपज्जने, विन. वि. 2248.

**आपत्तिबहुल** त्रि., ब. स., बहुत सारे अपराध करने वाला, अपराध करते रहने की प्रकृति वाला — लो पु., प्र. वि., ए. व. — भिक्षु बालो होति अब्बतो आपत्तिबहुलो अनपदानो, महाव. 419; आपत्तिबहुलोति, सापत्तिककालोवस्स बहु, सुद्धो निरापत्तिककालो अप्पोति अत्थो, म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.110; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — बालस्स अब्बत्तस्स आपत्तिबहुलस्स तज्जनीयकम्मं करोन्तेन, चूळव. अष्ट. 2; — ला पु., प्र. वि., ब. व. — सापत्तिका वाति आपत्तिबहुला, महानि. अष्ट. 189; — ता स्त्री., भाव., आपत्तियों की अधिकता अथवा अनेकता — ता प्र. वि., ए. व. — आपत्तिद्वाने पन धारावच्छेदवसेन पयोगबहुलताय आपत्तिबहुलता वेदितब्बा, पारा. अष्ट. 2.183.

**आपत्तिमय** नपुं., तत्पु. स., आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घीय अपराधों का भय — यानि प्र. वि., ब. व. — चत्तारिमानि, ... आपत्तिभयानि, अ. नि. 1(2).276; आपत्तिभयानीति, इमानि चत्तारि आपत्तिं निस्साय उप्पज्जनकभयानि नामाति, अ. नि. अष्ट. 2.392; — वग्ग पु., अ. नि. के एक वग्ग का शीर्षक जिसमें भिक्षुसङ्घ के अपराधों से उत्पन्न भयों का विवरण है, अ. नि. 1(2).275-282.

## आपत्तिमयसुत्त

113

## आपत्तिसञ्ज्ञा

आपत्तिमयसुत्त नपुं, व्य. सं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(2).276-278.

आपत्तिभाव पुं, तत्पु. सं., आपत्ति अथवा अपराध की अवस्था — वो प्र. वि., ए. व. — ... *सब्बापत्तीनं साधारणो आपत्तिभावो*, पारा. अहु. 2.169; — वं द्वि. वि., ए. व. — ... *आपत्तिभावं न जानासीति*, महाव. अहु. 406.

आपत्तिभीरु त्रि., आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घीय अपराधों से डरने वाला — ना पुं, तृ. वि., ए. व. — *आपत्तिभीरुना निच्चं वत्थुब्बं परिमण्डलं*, विन. वि. 1871; — क त्रि., उपरिवत् — केन तृ. वि., ए. व. — *तस्मा आपत्तिभीरुकेन ... मंसं पटिग्गहेतब्बं*, पारा. अहु. 2.173; म. नि. अहु. (म.प.) 2.35.

आपत्तिभेद पुं, तत्पु. सं. [आपत्तिभेद], अपराधों का भेद-प्रभेद, आपत्तियों का वर्गीकरण — दो प्र. वि., ए. व. — *इतरस्स पन सब्बो आपत्तिभेदो पटमसिक्खापदे वुत्तो*, पाचि. अहु. 87, 176; — दं द्वि. वि., ए. व. — *एवं वत्थुवसेन च चित्तवसेन च आपत्तिभेदं दस्सेत्वा ...*, पारा. अहु. 1.298.

आपत्तिमूल नपुं, तत्पु. सं. [आपत्तिमूल], आपत्ति अथवा अपराध का मूल उदगम-स्थल — लानि प्र. वि., ब. व. — *कति आपत्तिमूलानि, पञ्जतानि महेसिना*, उत्त. वि. 876; 877.

आपत्तिमोक्ख पुं, तत्पु. सं. [आपत्तिमोक्ष], आपत्तियों से मुक्ति — क्खो प्र. वि., ए. व. — *एवं एकस्स सतियापि आपत्तिमोक्खो होतीति*, पारा. अहु. 2.215.

आपत्तिलेस पुं, दस प्रकार के लेसों में से एक, लघु आपत्ति में आपतित भिक्षु को पाराजिक जैसी गम्भीर आपत्ति का आरोप लगाने वाले भिक्षु का अपराध — सो प्र. वि., ए. व. — *आपत्तिलेसो नाम लहुकं आपत्तिं आपज्जनो दिट्ठो होति तच्चे पाराजिकेन चोदेति अस्समणोसि, असक्थपुत्तियोसि ... पे ... आपत्ति वाचाय ...*, पारा. 265; ... *लेसो नाम दस लेसा — जातिलेसो, नामलेसो, गोत्तलेसो, लिङ्गलेसो, आपत्तिलेसो, पतलेसो, वीवरलेसो उपज्झायलेसो, आचरियलेसो, सेनासनलेसो*, पारा. 264; द्रष्ट. लेस के अन्त.

आपत्तिवस्स नपुं, तत्पु. सं., आपत्तियों की वर्षा, सङ्घीय अपराधों की झड़ी या प्रचुरता — स्सं द्वि. वि., ए. व. — *ततो ... आपत्तिवस्सं किलेसवस्सं अतिविय वस्सति*, उदा. अहु. 249.

आपत्तिविनिच्छय<sup>1</sup> पुं, तत्पु. सं. [आपत्तिविनिश्चय], विनय में निर्दिष्ट अपराधों का स्पष्ट निश्चय — यो प्र. वि., ए.

व. — *अयं पन आदितो पट्टाय वित्थारेन आपत्तिविनिच्छयो*, पारा. अहु. 2.183.

आपत्तिविनिच्छय<sup>2</sup> पुं, व्य. सं., पञ्चासामी महाथेर द्वारा लिखित विनय-आपत्ति-विषयक एक ग्रन्थ का नाम — यं द्वि. वि., ए. व. — *रञ्जो ... अभियाचितो सो येवाहं अक्खरविसेधनिं नाम गन्धं आपत्तिविनिच्छयं नाम गन्धञ्च तथा सङ्करञ्जा चोदितो ... अकासिं*, सा. वं. 141(नां).

आपत्तिविसेस पुं, तत्पु. सं., आपत्तियों का विशिष्ट भाव, विनय में निर्दिष्ट अपराधों की विशिष्ट रूप से पहचान — सो प्र. वि., ए. व. — *वत्थुविसेसेन पनेत्थ कम्मविसेसो च आपत्तिविसेसो च होती ति*, पारा. अहु. 2.42.

आपत्तिवुद्धान<sup>1</sup> नपुं, तत्पु. सं., आपत्तियों से ऊपर उठ जाना, आपत्तियों से विमुक्ति या छुटकारा — नं प्र. वि., ए. व. — *इमं आपत्तिं आपज्जित्वा बुद्धानुकामस्स यं तं आपत्तिवुद्धानं ...*, पारा. अहु. 2.99; *आपत्तिवुद्धानत्थं तुरित्तुरितो छन्दजातो न होति*, म. नि. अहु. (म.प.) 2.110; — *कुसलता स्त्री*, आपत्तियों से विमुक्त हो जाने की अवस्था के ज्ञान में कुशलता — ता प्र. वि., ए. व. — *आपत्तिकुसलता च आपत्तिवुद्धानकुसलता च*, अ. नि. 1(1).101; *आपत्तिवुद्धानकुसलताति देसनाय वा कम्मवाचाय वा आपत्तीहि बुद्धानजानन्ति*, अ. नि. अहु. 2.55; — *ता स्त्री*, भाव., आपत्तियों से विमुक्ति की अवस्था — ता प्र. वि., ए. व. — *सा वो भविस्सति अज्जमज्जानुलोमता आपत्तिवुद्धानता विनयपुरेक्खारता*, महाव. 211; *आपत्तिवुद्धानता विनयपुरेक्खारताति आपत्तीहि बुद्धानभावो विनयं पुरतो कत्वा, चरणभावो*, महाव. अहु. 336.

आपत्तिवुद्धान<sup>2</sup> नपुं, द्व. सं., स. प. के अन्त. ही प्रयुक्त, आपत्ति (अपराध) तथा उससे छुटकारा — *आपत्तिवुद्धानपदस्स कोविदोति आपत्तिवुद्धानकारणकुसलो*, महाव. अहु. 411.

आपत्तिसङ्ग्रह पुं, तत्पु. सं., नौ प्रकार के संग्रहों में से एक, 'आपत्ति' शीर्षक के अन्दर शिक्षापदों का संग्रह — हो प्र. वि., ए. व. — *नवसङ्ग्रहा — वत्थुसङ्ग्रहो, विपत्तिसङ्ग्रहो, आपत्तिसङ्ग्रहो, निदानसङ्ग्रहो, पुग्गलसङ्ग्रहो, खन्धसङ्ग्रहो, समुद्धानसङ्ग्रहो, अधिकरणसङ्ग्रहो, समथसङ्ग्रहो ति*, परि. 414; *यस्मा पन सत्तहापत्तीहि मुत्तं एकसिक्खापदमपि नत्थि, तस्मा सब्बानि आपत्तिया सङ्ग्रहितानीति एवं आपत्तिसङ्ग्रहो वेदितब्बो*, परि. अहु. 265.

आपत्तिसञ्ज्ञा स्त्री, तत्पु. सं., आपत्ति के विषय में चेतना अथवा ज्ञान — य तृ. वि., ए. व. — *अनापत्ति पन*

## आपत्तिसञ्जी

114

आपदा

आपत्तिसञ्जायपि अनापत्तिसञ्जायपि ... होति, चूळव. अद्. 19.

आपत्तिसञ्जी त्रि., आपत्ति (विनय-अपराध) के रूप में जानने वाला — ङ्गी पु., प्र. वि., ए. व. — यो च आपत्तिया आपत्तिसञ्जी, यो च अनापत्तिया अनापत्तिसञ्जी ..., परि. 240; आपत्ति च होति आपत्तिसञ्जी च, चूळव. अद्. 19.

आपत्तिसन्दस्सना स्त्री., तत्पु. सं., आपत्ति को अच्छी तरह से दरसाना अथवा प्रकाशित करना, वत्थुसन्दस्सना के अन्तः चार प्रकार की चोदनाओं में से एक — ना प्र. वि., ए. व. — आपत्तिसन्दस्सना नाम त्वं मेथुनधम्मपाराजिकापत्ति आपन्नोति एवमादिनयप्पवत्ता, पारा. अद्. 2.158.

आपत्तिसभागता स्त्री., आपत्ति से समानता, आपत्ति जैसा होना — ता प्र. वि., ए. व. — अत्थि वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता, ..., परि. 250; असाधारणापत्तियं नेव वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता, परि. अद्. 170; अत्थापत्तिसभागता, नत्थि वत्थुसभागता, उक्त. वि. 566.

आपत्तिसभागत्त नपुं., भाव., उपरिवत् — तं प्र. वि., ए. व. — सियापत्तिसभागत्तं, न च वत्थुसभागता, उक्त. वि. 569.

आपत्तिसमुद्धान नपुं., तत्पु. सं., आपत्तियों की उत्पत्ति कराने वाले छ धर्म, विनय में निर्दिष्ट अपराधों अथवा आपत्तियों को उठाने वाले छ प्रकार के धर्मों में से कोई एक — नेन तू. वि., ए. व. — आपत्तिसमुद्धानेन कति आपत्तियो आपज्जति?, परि. 194; तत्तियेन आपत्तिसमुद्धानेन पञ्च आपत्तियो आपज्जति, परि. अद्. 173; — ना पु., प्र. वि., ब. व. — तत्थ कतमे छ आपत्तिसमुद्धाना, परि. 189; — नानि प्र. वि., ब. व. — छ आपत्तिसमुद्धानानि मूलानि, परि. 207; ... आपत्तिकरा धम्मा नाम छ आपत्तिसमुद्धानानि, परि. अद्. 158; — नानं ष. वि., ब. व. — छत्रं आपत्तिसमुद्धानानं कतिहि समुद्धानेहि समुद्धानीति?, परि. 2.

आपत्तिसमुद्धानगाथा स्त्री., परि. के उस गाथा-संग्रह का शीर्षक, जिसमें आपत्तियों को उत्पन्न कराने वाले धर्मों का उल्लेख है, परि. 198-200.

आपत्तिसमुद्धानसीसकथा स्त्री., उक्त. वि. के उस भाग का शीर्षक, जिसमें आपत्तियों का उदय कराने में कारणभूत छ धर्मों का विवरण है, उक्त. वि. 325-423.

आपत्तिसमुदय पु., तत्पु. सं., आपत्तियों की उत्पत्ति का कारण — यं द्वि. वि., ए. व. — आपत्तिसमुदयं न जानाति,

परि. 254; — यो प्र. वि., ए. व. — समुदयन्ति छ आपत्तिसमुद्धानानि आपत्तिसमुदयो नाम, परि. अद्. 176. आपत्तिसमूह पु., तत्पु. सं., आपत्तियों का समूह, अपराधों का ढेर — स्स ष. वि., ए. व. — तस्सेव आपत्तिनिकायस्साति तस्स एव आपत्तिसमूहस्स, पारा. अद्. 2.99.

आपत्तिसामन्त 1. त्रि., वह, जिसकी सीमा कोई आपत्ति हो — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — द्वे सामन्तानि खन्धसामन्तञ्च आपत्तिसामन्तञ्च, म. नि. अद्. (उप.प.) 3.32; 2. क्रि. वि. के रूप में प. वि. में प्रयुक्त, लगभग आपत्ति में आपतित होने जा रहा — उपज्जायो आपत्तिसामन्ता भणमाणो निवारेत्तब्बो, महाव. 52; आपत्तिसामन्ता ... आपत्तिया आसन्नवाचं भणमानो, महाव. अद्. 248.

आपथ पु., आगमन का पथ, आने का अथवा उत्पन्न होने का स्थान — थो प्र. वि., ए. व. — रजोपथोति रागदोसमोहरजानं आपथो, आगमनमुद्धानन्ति अत्थो, सं. नि. अद्. 3.309.

आपदा स्त्री., [आपद, बौ. सं. आपद], विपत्ति, बुरी एवं दुःख भरी अवस्था, भय से परिपूर्ण स्थिति — विपत्ति चापदा, अभि. प. 385; — दा प्र. वि., ए. व. — ... विपत्ति आपदाति वुच्चति, पारा. अद्. 1.235; — दं द्वि. वि., ए. व. — बोद्धुमरहन्ति आपदं, जा. अद्. 5.335; तस्मा ते आपदं बोद्धुमरहन्ति, जा. अद्. 5.337; — य/दे सप्त. वि., ए. व. — ... उप्पन्नाय आपदाय अत्था भविस्सति, जा. अद्. 4.147; यो मित्तो मित्तमापदे, न चजे ..., जा. अद्. 5.334; दुक्खमापज्जि विपुलं, तस्मिं पठममापदे, जा. अद्. 5.344; — दा प्र. वि., ब. व. — या ता होन्ति आपदा अग्गितो ... दायादतो, अ. नि. 1(2).78; — नं ष. वि., ब. व. — ... धनपरिच्चायं कत्वा तासं आपदानं मग्गं पिदहाति निवारेति, अ. नि. अद्. 2.306; — सु सप्त. वि., ब. व. — सति ... आपदासु यावदत्थन्ति, चूळव. 260; आपदासूति वाळमिगादयो वा दिस्वा मग्गमूळो वा दिस्वा ओलोकेतुकामो हुत्वा दवडाहं वा उदकोधं वा आगच्छन्तं दिस्वा ... वट्ठति, चूळव. अद्. 57; — यो मित्तोति यो मित्तो आपदासु मित्तं न चजे, जा. अद्. 5.336; — पासु अनि., सप्त. वि., ब. व. — आपासु मे युद्धपराजितस्स, जा. अद्. 2.262; तत्थ आपासूति आपदासु, तदे.; — दत्थ पु., सङ्कटकाल के निमित्त — त्थाय च. वि., ए. व. — देवगहदारुणि नगरपटिसङ्कारिकानि आपदत्थाय निक्खित्तानि, पारा. 49; आपदत्थाय निक्खित्तानीति अग्गिदाहेन वा पुराणभावेन वा

## आपन्न

115

## आपस्सेन

पटिराजू परुन्धानादिना वा  
गोपुरद्वालकराजन्तेपुरहस्थिसालादीनं विपत्ति आपदाति वुच्यति  
... पारा. अड्ड. 1.235; - बुज्झनं नपुं. विपत्ति का ज्ञान  
- नं प्र. वि., ए. व. - पदं हेतुति यसमहतं वा जाणमहतं  
वा पत्तानं अत्तनो आपदबुज्झनं नाम पदं कारणं, जा. अड्ड.  
5.337.

आपन्न त्रि., आ + प + न् + कृ. [आपन्न], 1. कर्तुं.  
वा., शा. अ., आ पहुँचा हुआ, ला. अ. क., किसी  
अवस्था अथवा स्थिति में प्राप्त, ख. विनयसम्मत अपराधों  
में आपतित (विपत्ति से) पीड़ित या ग्रस्त - आपन्नो  
त्वापदम्पत्तो, अभि. प. 743; - त्रो पु., प्र. वि., ए. व. -  
... आपत्तिं आपन्नो होति, महाव. 157; इत्थन्नामं आपत्तिं  
आपन्नो, चूळव. 216; आपत्तिं त्वं, आवुसो, आपन्नो, महाव.  
409; - त्रं पु., द्वि. वि., ए. व. - तच्च सत्थं अदसं सु  
अनयव्यसनं आपन्नं, दी. नि. 2.255; - त्रेन पु., तृ. वि.,  
ए. व. - अज्जेन पाराजिकं आपन्नेन पुट्ठेन, पारा. अड्ड.  
2.151; - स्स ष. वि., ए. व. - सभागसङ्गादिसं आपन्नस्स  
पन सन्तिके आवि कातु न वट्ठति, चूळव. अड्ड. 21; - त्रे  
पु., सप्त. वि., ए. व. - ... अप्पोस्सुक्कभावं आपन्ने  
भगवति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).175; - त्रा पु., प्र. वि.,  
ब. व. - द्वे भिक्खू सङ्गादिसं आपन्ना होन्ति, चूळव. 161;  
- त्रेसु सप्त. वि., ब. व. - तुम्हेसु अप्पोस्सुक्कतं आपन्नेसु  
खत्तिवसं सो उपच्छिज्जिस्सति, ध. प. अड्ड. 1.258; - त्रा  
स्त्री., प्र. वि., ए. व. - भिक्खुनी पटमापत्तिकं धम्मं आपन्ना  
निस्सारणीयं सङ्गादिसं सन्ति, पाचि. 305; - त्रं नपुं., प्र.  
वि., ए. व. - ... चीवरं विकप्पं आपन्नं निस्सगियं, पारा.  
329; - त्रानि ब. व. - पञ्चमत्तानि देवतासत्तानि उस्सुक्कं  
आपन्नानि होन्ति ..., उदा. 73; 2. कर्म. वा. में, वह, जिसे  
प्राप्त कर लिया गया है, विहित, कृत, सम्पादित - त्रा  
स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आपन्नाति अट्ठपरियोसाने आपन्ना,  
कह्वा. अड्ड. 285; - त्रं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - पच्छा  
आपन्नमापत्तिं, समोधाय विधानतो, विन. वि. 526; - त्राय  
स्त्री., ष. वि., ए. व. - आपन्नाय आपत्तिया मूलायपटिकस्सेने  
कते, चूळव. अड्ड. 33; 3. पु., किया जा चुका अपराध,  
आपत्ति - त्रं द्वि. वि., ए. व. - छादेति जानमापन्नं, खु.  
सि. 5(गा. 20); यो भिक्खु ... एवं वत्थुवसेन वा जानमापन्नं  
आपत्तिं याव छादेति, खु. सि. पु. टी. 87; स. उ. प. के  
रूप में अदया, अना, उरसुका, दया, विवादा, सोता. के  
अन्त. द्रष्ट.

आपन्नत्त नपुं., आपन्न का भाव. [आपन्नत्व], प्राप्त होने या  
ग्रस्त होने की अवस्था - ता प. वि., ए. व. - ...  
अज्जाणेन आपन्नता तस्सा आपत्तिया मोक्खो नत्थि, पाचि.  
अड्ड. 134; पुरिमकअत्तभावे जायाय सद्धिं पमादं आपन्नताति,  
ध. प. अड्ड. 2.75.

आपन्नपुग्गल पु., कर्म. स. [आपन्नपुद्गल], अपराध कर  
चुका व्यक्ति, आपत्ति में आपतित या उससे ग्रस्त व्यक्ति -  
लं द्वि. वि., ए. व. - ... तं आपत्तिआपज्जनकं आपन्नपुग्गलं  
... तेमेति, उदा. अड्ड. 249-250.

आपन्नभाव पु., अपराध-ग्रस्तता, आपत्ति में आ फँसने की  
दशा - वं द्वि. वि., ए. व. - ... आपत्तिं वा आपन्नभावं  
आजनन्तोयेव ... पुच्छति, पाचि. अड्ड. 31; ... आपत्तिं  
आपन्नभावं जानाहीति वा वदतु, चूळव. अड्ड. 21; - वेन  
तृ. वि., ए. व. - तस्स हि आपत्तिं आपन्नभावेनपि दोसो,  
अ. नि. अड्ड. 2.12.

आपन्नसत्ता स्त्री., ब. स. [आपन्नसत्त्वा], गर्भवती नारी, वह  
स्त्री, जिसकी कोख में शिशु-प्राणी पहुँच चुका है -  
गरुगभापन्नसत्ता च गम्भिनी, अभि. प. 239; गम्भिनिवग्गस्स  
पटमसिक्खापदे - आपन्नसत्ताति कुच्छिपविट्ठसत्ता, पाचि.  
अड्ड. 210; - त्तं द्वि. वि., ए. व. - पोस मन्ति आपन्नसत्तमेव  
मं छड्ढेत्वा पब्बजितो, उदा. अड्ड. 58; - त्तानं च./ष.  
वि., ब. व. - यथा आपन्नसत्तानं, भारमोरोपनं धुवं, जा.  
अड्ड. 1.26.

आपपसंसक त्रि., [आपप्रशंसक], जल की प्रशंसा करने  
वाला व्यक्ति, पानी का गुणगान करने वाला व्यक्ति - का  
पु., प्र. वि., ब. व. - ये पन ... पथवीपसंसका पथवाभिनन्दिनो  
आपपसंसका ... बह्माभिनन्दिनो, म. नि. 1.410.

आपयति आप के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्राप्त  
कराता है, ला देता है, पहुँचा देता है - आपेति आपयति,  
आपो, सद्. 2.553; - ये विधि., प्र. पु., ए. व. - को तेसं  
गतिमापयेति, जा. अड्ड. 6.53; गतिमापयेति को मं तेसं  
पच्चेकबुद्धानं निवासद्धानं पापेय्य, गहेत्वा गच्छेय्याति अत्थो,  
जा. अड्ड. 6.53.

आपवण नपुं., आ + प + वण से व्यु., क्रि. ना. [आप्रवण],  
ढलान, झुकाव, उतार, पार्श्वभाग - खुदि आपवणे, खुन्दति,  
सद्. 2.381.

आपस्सेन नपुं., अपस्सेन का सन्धिविकारजनित रूपान्तरण,  
अप + आ + सि से व्यु., केवल स. उ. प. में प्राप्त  
[अपाश्रयण], सहारा, तकिया, आधार, टिकने का उपकरण,

## आपाक

116

## आपाथ

स. उ. प. के रूप में, चतुरा. — त्रि., ब. स., चार प्रकार के सहायों वाला — नो पु., प्र. वि., ए. व. — सो हि चतुरापरसेनो सद्वायेकं पटिसेवति, ... अधिवासेति, ... परिवज्जेति, ... विनोदेति ति, सु. नि. अद्. 2.96.

आपाक पु., आ + पच से व्यु. [आपाक], चूल्हा, भट्टा. स. उ. प. के रूप में, — कुम्भकारापाक पु., कुम्हार का भट्टा, आवां — का प. वि., ए. व. — पुरिसो कुम्भकारपाका उण्हं कुम्भं उद्धरित्वा समे भूमिभागो पटिसिस्सेय्य, स. नि. 1(2).74.

आपाटली त्रि., [आपाटल], (पाटलि-नामक एक वृक्ष का) पीत-रक्त, प्याजी अथवा गुलाबी रंग वाला (पुष्प) — लिं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — अपाटलिं अहं फुप्फं उज्जितं सुमहापथे, धूपहि अभिरोपेसिं, अप. 1.119; पाठा. अपाटलिं. आपाणकोटिकं अ., अव्ययी. स. [आप्राणकोटिकं], अन्तिम सांस लेने तक, प्राण निकलने तक, मृत्यु पर्यन्त — भिक्षू पस्सामि यावजीवं आपाणकोटिकं परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरिये चरन्ते, म. नि. 2.330; तत्थ आपाणकोटिकन्ति पाणोति जीवितं, तं मरियादं अन्तो करित्वा, मरणसमयेपि चरन्तियेव, तं न वीतिक्कमन्तीति वुत्तं होति, "आपाणकोटिकन्तिपि पाठो, आजीवितपरियन्तन्ति अत्थो, म. नि. अद्. (म.प.) 2.251.

आपाणकोटियं अ., उपरिवत् — आपाणकोटिया आपाणकोटियं कपच्चयस्स यकारादेसो, सद्. 3.749.

आपातपरिपातं अ., क्रि. वि., किसी की ओर उन्मुख होकर गिरते हुए, चारों ओर उड़कर गिरते हुए — सम्बहुला अधिपातका तेसु तेलप्पदीपेसु आपातपरिपातं अनयं आपज्जन्ति, उदा. 154; आपातपरिपातन्ति आपातं परिपातं, आपतित्वा आपतित्वा परिपतित्वा परिपतित्वा, अभिमुखपातञ्जेव परिभमित्वा पातञ्च कत्वाति अत्थो, उदा. अद्. 290.

आपातलिका स्त्री., [आपातलिका], वेतालीय जाति के छन्द का एक प्रभेद, जिसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में छ वर्ण एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में आठ वर्ण रहते हैं — आपातलिका कथिता यं भगान्ते यदि पुब्बमिवञ्चं, वुत्तो. 30 (पु. 165).

आपाथ पु., आ + पथ के प्रेर. से व्यु. [आपाथ], इन्द्रियों एवं चित्त का विषय, आलम्बन अथवा क्षेत्र, क. प्रायः गच्छति, आगच्छति एवं उपगच्छति के साथ प्रयुक्त होने पर; विषय बन जाता है, सुस्पष्ट हो जाता है, प्रायः

इन्द्रियवाचक, चित्तवाचक एवं संज्ञावाचक षष्ठी-विभक्त्यन्त अथवा सप्तमी-विभक्त्यन्त नामों के पश्चात् प्रयोग में प्राप्त — ... चक्खुविज्जेय्या रूपा चक्खुस्स आपाथं आगच्छन्ति, महाव. 256; धम्मे आवज्जन्तस्स आपाथं अनागतधम्मो नाम नत्थीति, म. नि. अद्. (उप.प.) 3.62; अतीतं ... धम्मा सब्बाकारेन बुद्धस्स भगवतो जाणमुखे आपाथं आगच्छन्ति, पटि. म. 368; आपाथं आगच्छन्तीति ओसरणं उपेन्ति, पटि. म. अद्. 2.237; ख. कभी कभी, ष. वि./सप्त. वि. में अन्त होने वाले नामों के बिना भी प्रयोग में प्राप्त — बाहिरा च रूपा न आपाथं आगच्छन्ति, म. नि. 1.251; एवं ताव दिट्ठवसेन रूपारम्भणं आपाथमागच्छति, ध. स. अद्. 118; तीणि महाभूतानि एकप्यहारेनेव आपाथं आगच्छन्ति, ध. स. अद्. 364; ग. अन्य क्रि. रू. के साथ भी यदा-कदा प्रयुक्त — आपाथं न वज्जन्ति ये, ते धम्मारम्भणा होन्ति, अभि. अव. 301; सम्मासम्बुद्धस्स रूपं इमेसं अक्खीनं आपाथं करोहीति, पारा. अद्. 1.32; आपाथं करोहीति सम्मुखं करोहि, गोचरं करोहीति अत्थो, सारत्थ. टी. 1.112; आपाथकनिसादी होतीति मनुस्सानं आपाथे दस्सन्धाने निसीदति, दी. नि. अद्. 3.20; आपाथे पतितं अत्तनो वा परस्स वा साटकवेठनादिवत्थुकं रूपारम्भणं, स. नि. अद्. 2.116; ... भिक्षुनो जाणमुखे एतापथो, एवं आपाथं गच्छामीति वुत्तं होती, म. नि. अद्. (मू. प.) 1(2).282; स. उ. प. के रूप में अना., एता., चक्ख्वा. के अन्त. द्रष्ट.; — काल पु., तत्पु. स., विषय या क्षेत्र बनने का समय, सुस्पष्ट रूप से प्रकट होने का काल — ले सप्त. वि., ए. व. — तेनेव हिस्स आपाथकाले विय विमदनकालेपि कथेत्तस्स विय सुणन्तस्सापि सम्मुखीभावतो ... वुत्तं, वि. व. अद्. 195; — गत त्रि., [आपाथगत], इन्द्रियों अथवा चित्त द्वारा गृहीत या ज्ञात, पकड़ में आया हुआ — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — कनिट्ठमापाथगतं गहेत्वा, जा. अद्. 4.147; — ते सप्त. वि., ए. व. — चक्खुद्वारे पन रूपे आपाथगते भवङ्गचलनतो उद्धं सककच्चिं निष्फादनवसेन आवज्जनादीसु उपपज्जित्वा ..., म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).273; चक्खुद्वारे पन रूपे आपाथगते इड्ढे मे आरम्भणे रागो उपपन्नो, विभ. अद्. 37; — तानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. — तपेत्वा आपाथगतानि रूपादीनि, विभ. अद्. 383; — तेसु सप्त. वि., ए. व. — घानद्वारादीसु पन गच्चादीसु आपाथगतेसु एको एवं परिग्गहं पड्ढपेति, विभ. अद्. 38; — गतत्त नपुं., भाव. [आपाथगतत्त्व], आपाथ में अथवा इन्द्रियों आदि की पकड़ के अन्दर रहना

## आपाथक

117

## आपादेति

— ता प. वि., ए. व. — तत्थ असम्भित्ता चक्खुस्स, आपाथगतत्ता रूपान्, आलोकसन्निरित्तं, मनसिकारहेतुकं ..., ध. स. अ. 318; — गम पु., गम से व्यु., आपाथ अथवा विषय बन जाना, आलम्बनत्व — मेन त्. वि., ए. व. — असम्भेदेन चक्खुस्स, रूपापाथगमेन च, ... जायते चक्खुविज्जाणं, अभि. अव. 69; — गमन नपुं., उपरिवत् — नं प्र. वि., ए. व. — एवं पच्चुप्पन्नरूपादीनं चक्खुपसादादिघट्टनञ्च भवङ्गचलनसमत्थताय मनोद्वारे आपाथगमनञ्च अपुब्बं अचरिम् एकक्खणेयेव होति, ध. स. अ. 117-118; — ने सप्त. वि., ए. व. — ... अत्तनो आपाथगमने सति ... अत्थो, उदा. अ. 290; — ह्वान नपुं., तत्पु. स. [आपाथस्थान], दृष्टिपथ में आया हुआ स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — आपाथकज्झायीति मनुस्सानं आपाथद्वाने समाधिसमापन्नो ... ज्ञायी, विसुद्धि. महाटी. 1.50; — दस त्रि., आपाथ+दिस से व्यु., दृष्टिपथ में आए हुए सभी कुछ को देखने वाला — सो पु., प्र. वि., ए. व. — गहपति, अरियसावको महापज्जो पुथुपज्जो आपातदसो पज्जासम्पन्नो, अ. नि. 1(2).78; पाठा. आपातदसो; — मत्त त्रि., [आपाथमात्र], वह, जो इन्द्रियों अथवा चित्त के आलम्बन मात्र के रूप में है, केवल विषय, केवल गोचर — ता पु., प्र. वि., ए. व. — अज्जत्र अभिनिपातमत्ताति अज्जत्र आपातमत्ता, विम. 363; पाठा. आपातमत्ता; — रमणीय त्रि., तत्पु. स. [आपाथरमणीय], आपाथ अथवा इन्द्रियों के गोचर के रूप में मनोहर एवं आकर्षक, इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किए जाते ही मनोहारी — तो प. वि., ए. व. — भगवतो एव वा वचनं अभिक्कन्तं ... आपाथरमणीयतो, ... आह, उदा. अ. 233-34.

आपाथक पु., आपाथ से इसी शब्द के अर्थ में व्यु. — के सप्त. वि., ए. व. — ... आपाथके जनस्स पाकटट्टाने ज्ञायी, विसुद्धि. महाटी. 1.50; — ज्झायी त्रि., लोगों की दृष्टि के सामने ही ध्यान लगाने का ढोंग रचने वाला — यी पु., प्र. वि., ए. व. — ... समाहितो विय सेय्यं कप्पेति, आपाथकज्झायीव होति, महानि. 164; आपाथकज्झायीव होतीति सम्मुखा आगतानं मनुस्सानं ज्ञानं समापज्जन्तो विय सन्तभावं दस्सेति, महानि. अ. 269; — निसादी त्रि., लोगों के दृष्टिपथ में बैठने वाला, लोगों के आमने सामने बैठने वाला — दी प्र. वि., ए. व. — तपस्सी आपाथकनिसादी होति, दी. नि. 3.31; आपाथकनिसादी होतीति मनुस्सानं आपाथे दस्सनद्वाने निसीदति, दी. नि. अ. 3.20.

आपाद पु., आ +पद से व्यु. [आपाद], प्राप्ति, अवाप्ति, परिग्रह, पारिश्रमिक — दो प्र. वि., ए. व. — अनापादासूति आपादानं आपादो, परिगृह्यते अत्थो, जा. अ. 4.160.

आपादक 1. त्रि., आ +पद से व्यु., उत्पन्न करने वाला, ले जाने वाला — कं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — अभिज्जापादकं चतुत्थज्झानं समापज्जित्वा ..., वि. व. अ. 4; 2. नपुं., शिशु की देख-रेख करने वाला, संरक्षक, प्रतिपालक — का पु., प्र. वि., ए. व. — बहुकारा, मातापितरो पुत्तानं आपादका पोसका इमस्स लोकस्स दस्सेतारो, अ. नि. 1(1).78; आपादकाति वड्ढका अनुपालका, अ. नि. अ. 2.28; — दिका स्त्री., धाय, धात्री, उपमाता, पालने-पोसने वाली नारी — का प्र. वि., ए. व. — बहूपकारा, भन्ते, महापजापति गोतमी भगवतो मातुच्चा आपादिका पोसिका खीरस्स दायिका, म. नि. 3.303; आपादिकाति संवड्ढिका, तुम्हाकं हत्थपादेसु हत्थपादकिच्चं असाधेन्तेसु हत्थे च पादे च वड्ढेत्वा पटिजग्गिकाति अत्थो, म. नि. अ. (उप.प.) 3.232-33; तस्स बुद्धस्स मातुच्चा, जीवितापादिका अयं, अप. 2.206.

आपादित त्रि., आ +पद के प्रेर. का भू. क. कृ. [आपादित], 1. पूरा किया जा चुका, प्राप्त हो चुका, निष्पादित, प्राप्त कराया जा चुका — तो पु., प्र. वि., ए. व. — संवेगमापादितोति, महानि. 301; घटितोति, घटनमापादितो, महानि. अ. 381; ... पूतिभावं आपादितरुक्खो विय ..., स. नि. अ. 3.77; उक्खित्तभण्डिकभावं आपादितेति अत्थो, महाव. अ. 385; 2. पाला या पोसा गया, भरण-पोषण किया गया — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आपादितोति उपज्जबलितो पटिपादितो, महानि. अ. 228; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ... जीवितं आपादितं पालितं ... पवत्ति, अ. नि. अ. 2.100; — त नपुं., आपादित का भाव. [आपादितत्व], प्राप्त कराया गयी अवस्था अथवा स्थिति — ता प. वि., ए. व. — ... अनुप्यतिधम्मत्तं आपादितत्ता ... अत्थो, उदा. अ. 38.

आपादेति आ +पद का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपादयति], 1. (किसी विशेष स्थिति अथवा अवस्था को) प्राप्त कराता है अथवा उसमें पहुंचा देता है, निष्पादित कराता है — सो अभिक्कमन्तो पटिक्कमन्तो बहू खुद्दके पाणं सङ्गात् आपादेति, म. नि. 2.45; ... वधं आपादेति, म. नि. अ. (म.प.) 2.42; — न्ति व. व. — ... यावजीवं परिपुण्ण परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्ति, अज्झानञ्च आपादेन्तीति, स. नि. 2(2).118; आपादेन्तीति पवेणं पटिपादेन्ति, दीधरत्तं



## आपादेतु

118

## आपानीय

अनुबन्धापेत्ति, स. नि. अहु. 3.39; - न्ता पु., वर्त. कृ., प्र. वि., व. व. - बहू खुदके पाणे सङ्गात आपादेन्ताति, महाव. 181; आपादेन्ताति विनासं आपादेन्ता, महाव. अहु. 330; - य्यु विधि., प्र. पु., व. व. - इदानी अनुबन्धित्वा अनयव्यसनं आपादेय्यन्ति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).121; - सि अद्य., प्र. पु., ए. व. - सुवीरो ... देवानमिन्द्रस्स पटिस्सुत्वा पमादं आपादेसि, स. नि. 1(1).250; आपादेसीति पमादं अकासि, स. नि. अहु. 1.297; - सिं उ. पु., ए. व. - माहं खुदके पाणे विसमगते सङ्गातं आपादेसिन्ति, म. नि. 1.112; म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).358-59; - स्सामि भवि., उ. पु., ए. व. - अनयव्यसनं आपादेस्सामि वज्जी ति, दी. नि. 2.56; आपादेस्सामीति पापायिस्सामि, दी. नि. अहु. 2.95; - तुं निमि. कृ. - फातिं कातुन्ति वड्ढिं आपादेतुं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).156; - दीयति कर्म. वा., प्र. पु., ए. व. [आपाद्यते], प्राप्त कराया जाता है, पहुंचाया जाता है - विक्खिप्पपेति विक्खिपीयति विक्खेयं आपादीयति, पटि. म. अहु. 2.68; 2. पालन-पोषण कराता है, देखभाल कराता है - य्यं विधि., उ. पु., ए. व. - यूनूनाहं इमं दारकं अस्समं नेत्वा आपादेय्यं पोसेय्यं वड्ढेय्यन्ति, दी. नि. 2.252; आपादेय्यन्ति निष्कादेय्यं आयुं वा पापुणापेय्यं, दी. नि. अहु. 2.361; 3. ला. अ., तात्पर्य अथवा आशय के रूप में ग्रहण करता है - त्वा पू. का. कृ. - अयमेत्थ ... जायं अत्थतो आपादेत्वा ..., सु. नि. अहु. 2.169.

आपादेतु त्रि., आ +√पद के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना., प्रतिपालक, पोषक, बलवर्धक, प्राप्त कराने वाला - ता पु., प्र. वि., ए. व. - सेय्यथापि जातस्स आपादेता, एवं माग्गत्तानो, म. नि. 3.297; आपादेताति पोसेता, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.228.

आपान' नपुं., आ +√पा से व्यु., क्रि. ना. [आपान], 1. एक साथ बैठकर पीने का स्थान, मधुशाला, मदिरालय, 2. पानगोष्ठी, मद्यपों की मण्डली - आपानं पानमण्डलं, अभि. प. 534; आमुसं पिवन्त्यस्मिन्ति आपानं, आगन्त्वा पिवन्ति एत्थाति वा, अभि. प. सूची (पु.) 38(रो.); - नं द्वि. वि., ए. व. - मयं सुरापातियं विसज्जीकरणं भेसज्जं पक्खिपित्वा आपानं सज्जेत्वा निसीदित्वा ..., जा. अहु. 1.259.

आपान' पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक वज्जिराजा का नाम - कदलीवाटमापानं तिपहं हिमियानकं, चू. वं. 90.33.

आपानकमनुस्स पु., कर्म. स., पियक्कड मनुष्य, मदिरापान के व्यसन से पीड़ित आदमी - स्सो प्र. वि., ए. व. - ... आपानकमनुस्सो विय आचरिपुपज्जायादिको कल्याणमित्तो, स. नि. अहु. 2.105.

आपानभूमि स्त्री., तत्पु. स. [आपानभूमि], मधुशाला, मदिरालय, एक साथ मिल बैठकर मदिरा पीने वाला स्थान - मिं द्वि. वि., ए. व. - ... तेसं आपानभूमिं गन्त्वा तेसं किरियं ओलोकेत्वा अयं सुरा इमेहि इमिना नाम कारणेन योजिताति जत्वा ..., जा. अहु. 1.260; ... सेतच्छतञ्च आपानभूमिञ्च वत्थं ... दस्सेसि, जा. अहु. 5.281; - यं सप्त. वि., ए. व. - ... उदककीळं कीळित्वा उय्यानं गन्त्वा आपानभूमियं निसीदि, ध. प. अहु. 2.45.

आपानमण्डप पु., तत्पु. स. [आपानमण्डप], खुली हुई मधुशाला, सुरापान के निमित्त तैयार किया गया मण्डप - पं द्वि. वि., ए. व. - उय्याने आपानमण्डपं कारेत्वा, जा. अहु. 6.221; ... संवसित्वा सुरापानमण्डपं गन्त्वा ... पिवि, जा. अहु. 4.425.

आपानमण्डल नपुं., तत्पु. स. [आपानमण्डल], मदिरापान के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला एक गोलाकार क्षेत्र, सुरापान के निमित्त प्रयुक्त गोलाकार स्थल - लं प्र. वि., ए. व. - सकलं तुम्बिनीवनं वित्तलतावनसदिसं, महानुभावस्स रज्जो सुसज्जितं आपानमण्डलं विय अहोसि, जा. अहु. 1.63; अयं मे दारकानं आपानमण्डलं भविस्सति, कीळाभूमि भविस्सति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).266; - लं द्वि. वि., ए. व. - ... आपानमण्डलं सज्जेत्वा निसिन्ना केवलं इमं सुरं वण्णेथ, जा. अहु. 1.260.

आपानीय त्रि., आ +√पा का सं. कृ., शा. अ., अच्छी तरह से पीने योग्य, पानी के साथ जुड़ा हुआ, ला. अ., वह, जिसमें पानी या मदिरा को पिया जाए - यो पु., प्र. वि., ए. व. - यस्मा पनेत्थ आपं पिवन्ति, तस्मा आपानीयोति बुच्चति, स. नि. अहु. 2.105; - स्स नपुं., ष. वि., ए. व. - आपानीयकं सोति आपानीयस्स मधुरपानकस्स भरितकंसो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).271; - कंस पु., तत्पु. स., शा. अ., कांसे का वह पात्र जिससे जल पिया जा सके, ला. अ., सुरापात्र, जाम - सो प्र. वि., ए. व. - आपानीयो य सो कंसो चाति आपानीयकंसो सुरामण्डसरकस्सेतं नामं, स. नि. अहु. 2.105; सेय्यथापि, भिक्खवे आपानीयकंसो वण्णसम्पन्नो गन्धसम्पन्नो रससम्पन्नो, म. नि. 1.397; आपानीयकंसोति आपानीयस्स मधुरपानकस्स

## आपापेति

119

## आपुच्छति

भरितकंसो, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).271; — सं द्वि. वि., ए. व. — अपि नु सो पुरिसो अमुं आपानीयकंसं पिदेय्य ... म. नि. 3.45; — सेन तु. वि., ए. व. — आपानीयकंसेन निमन्तनपुरिसो विय लोके ... निमन्तकजगो, स. नि. अष्ट. 2.105; — सप्ति. सप्त. वि. ए. व. तथ यथा आपानीयकंसहि गुणे च आदीनवे च आरोचिते ... भविस्सति, स. नि. अष्ट. 2.105. आपापेति आ + प + व आप का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आप्रापयति], प्राप्त कराता है, स्थिति-विशेष में पहुंचाता है — किलेसपरिखाहतो मुत्तो सब्बसत्ते अस्सासेति, सन्तभाव आपापेति, अप. अष्ट. 2.98.

आपाभिनन्दी त्रि., [आपाभिनन्दिन्], आप-तत्त्व का अभिनन्दन करने वाला, जल-तत्त्व में आनन्द लेने वाला — न्दिनो पु., प्र. वि., ब. व. — ... अहेसुं ..., तथा पुब्बे समणब्राह्मणा लोकरिं पथवीपसंसका पथवाभिनन्दिनो, आपपसंसका आपाभिनन्दिनो, म. नि. 1.410.

आपायिक त्रि., अपाय से व्यु. [बौ. सं. आपायिक], तिरच्छान, निरय (नरक), पेटिविसय (प्रेतयोनि) तथा असुरकाय, इन चार प्रकार की दुःखद गतियों अथवा अवस्थाओं के साथ जुड़ा हुआ, चार प्रकार की दुःखभरी योनियों में जन्म लेने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — अपायेसु जातो आपायिको, क. व्या. 404; असद्धम्मोहि ... देवदत्तो आपायिको नरयिको कप्पहो अतैकिच्छो, चूळव. 342; अपाये निब्बत्तिस्सतीति आपायिको, चूळव. अष्ट. 110; — का व. व. — इति आपायिकापि नानत्तकाया एकत्तसज्जिनोत्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति, अ. नि. अष्ट. 3.166; कति आपायिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना, परि. 394; — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आपायिकं दुक्खं उपलब्धीति, कथा. 51; — स्स नपुं., ष. वि., ए. व. — आपायिकस्स दुक्खस्स पटिसवेदी उपलब्धीति?, कथा. 51; — के नपुं., द्वि. वि., ब. व. — दिङ्घिसम्पन्नो पुग्गलो आपायिके रूपे रज्जेय्याति?, कथा. 382; — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — अपाये भवानि आपायिकानि आदिसदेन तदज्जं सब्बसंसारदुक्खं सङ्गहाति, विसुद्धि. महाटी. 1.37; — कानं नपुं., ष. वि., ब. व. — आपायिकानं ठानानं दुग्गतिवेदनियानं अप्पहाना ... वदामि, म. नि. 1.353; आपायिकानं ... अपाये निब्बत्तापकानं कारणानं, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).221; — दुक्ख नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. आपायिकदुःख], दुःखदायक योनियों में जन्म ग्रहण करने से प्राप्त दुःख — क्वं द्वि. वि., ए. व. — ... दुक्खं आपायिकदुक्खं अनुभवन्ति, पे. व. अष्ट. 51.

आपायिकवग्ग पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 1(1).300-308; अ. नि. अष्ट. 2.224-227.

आपायिकसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(1).300.

आपिलति द्रष्ट. अपिलपित के अन्त.

आपीयति आ + र्पा के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपीयते], ठीक से पिया जाता है, पूरी तरह पी लिया जाता है अथवा सोख लिया जाता है — अप्पोति आपियति अप्पायतीति वा आपो, विसुद्धि. 1.354; अप्पोति, आपीयति, अप्पायतीति वा आपो, पटि. म. अष्ट. 1.69; आपीयतीति सोसीयति, पियीयतीति केचि, विसुद्धि. महाटी. 1.416.

आपुच्छ / आपुच्छा आ + वृप्पुच्छ का पू. का. कृ., पूछ कर, अनुमति लेकर — ..., भणति आपुच्छहं गमिस्सामि, थेरीगा. 416; 418; भणति आपुच्छहं गमिस्सामीति अहं तुम्हे आपुच्छत्वा यत्थ कत्थचि गमिस्सामीति सो मम सामिको ... भणति, थेरीगा. अष्ट. 290.

आपुच्छक त्रि., आ + वृप्पुच्छ से व्यु., पूछने वाला, अनुमति ले कर काम करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — आपुच्छका च परियेसन्तापि अदिस्वा सब्ब आपुच्छिता अम्हेहीति सज्जिनो होन्ति, महाव. अष्ट. 270.

आपुच्छकरणनिदेस पु., खु. सि. के सत्रहवें खण्ड का शीर्षक, खु. सि. 22-23.

आपुच्छति आ + वृप्पुच्छ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपुच्छति], 1. पूछता है, प्रश्न करता है — परिनिब्बानाय च सत्थारं आपुच्छति, उदा. अष्ट. 349; — चिं अद्य, उ. पु., ए. व. — धम्मराजं उपगम्म, आपुच्छिं पज्जमुत्तमं, अप. 1.99; आपुच्छिं पज्जमुत्तमन्ति उत्तमं खन्धायतनधातुसच्चसमुप्पादादिपटिसंयुतं पज्जं अपुच्छन्ति अत्थो, अप. अष्ट. 2.67; — च्छु / चिंसु प्र. पु., ब. व. — आयस्मन्तं सारिपुत्तं उत्तरि पज्जं अपुच्छुं, म. नि. 1.60; आयस्मन्तं सारिपुत्तं उत्तरि पज्जं अपुच्छिंसु, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).215; 2. अनुमति लेता है, अनुमोदन प्राप्त करता है, स्वीकृति प्राप्त करता है — सापेक्खो गन्त्वा तत्थ ठितो आपुच्छति, पाचि. 63; — च्छामि उ. पु., ए. व. — सङ्गं भन्ते इमस्स दारकस्स भण्डुकम्मं आपुच्छामीति, महाव. अष्ट. 270; — चि अद्य, प्र. पु., ए. व. — ... ब्राह्मणं पच्चुग्गन्त्वा परिक्रारगगहणं आपुच्छि, जा. अष्ट. 7.311; सो तत्थेव दण्डं छड्ढेत्या पत्तचीवरपटिगगहणं आपुच्छि, ध. प. अष्ट. 1.37; राजा अनुभागो अत्थि, अनापुच्छिच्चा खादितुं

## आपुच्छन

120

## आपुष्णता

न युतन्ति महाथेरं आपुच्छि, स. नि. अष्ट. 3.70; — छि अद्य. प्र. पु. ए. व. — नागराज, चिरं वसिम्ह, गमिस्सामाति आपुच्छि, जा. अष्ट. 4.423; 3. (प्रायः तृ. वि. में अन्त होने वाले नामपद के साथ प्रयुक्त) निवेदित करता है, स्वागत करता है, सत्कृत करता है — छि अद्य. प्र. पु. ए. व. — पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि, पानीयेन आपुच्छि, महाव. 407; — छित्त्वा पू. का. कृ. — ... भिक्षुं दिस्वा पिण्डपातेन आपुच्छित्त्वा, ध. प. अष्ट. 2.61; — न्ति प्र. पु. ब. व. — सम्बहुता ... आचरियुपज्झाये न आपुच्छन्ति, महाव. 149; गामप्यवेसनमि आपुच्छन्तियेव, चूळव. अष्ट. 7; — च्छं पु. वर्त. कृ. प्र. वि. ए. व. — आपुच्छं गच्छति, पाचि. 63; — न्तेन पु. वर्त. कृ. तृ. वि. ए. व. — गामप्यवेसनं आपुच्छन्तेनापि ... वत्तब्बं, महाव. अष्ट. 271; — च्छाहि अनु. म. पु. ए. व. — तेन हि तं आपुच्छाहीति, ध. प. अष्ट. 1.5; — च्छथ म. पु. ब. व. — मा मं गामप्यवेसनं आपुच्छथाति, चूळव. अष्ट. 6; — च्छाम उ. पु. ब. व. — तस्स भण्डुकम्मं आपुच्छामाति ... वड्ढति, महाव. अष्ट. 270; — च्छेय्यं विधि, उ. पु. ए. व. — यंनूनाहं पटिकच्चेव आपुच्छेय्यन्ति, महाव. 365; — च्छिंसु प्र. पु. ब. व. — ... आचरियुपज्झाये न आपुच्छिंसु, महाव. 149; — च्छिस्सामि भवि. उ. पु. ए. व. — भिक्षुं दिस्वा आपुच्छिस्सामीति, पाचि. अष्ट. 111; — च्छिस्साम ब. व. — चारिकं घरणत्थाय आपुच्छिस्साम, पारा. अष्ट. 1.151; — च्छितुं निमि. कृ. — दिड्डहानतो पड्डाय आपुच्छितुंयेव वड्ढति, महाव. अष्ट. 250; — च्छित्त्वा / त्वान / तून / च्छ पू. का. कृ. — सति करणीये आनन्तरिकं भिक्षुं आपुच्छित्त्वा गन्तुन्ति, चूळव. 355; आपुच्छित्वान आगच्छिं, यं मय्हं सकमस्समं, चरिया. 403(गा.95); अपुच्छितून गच्छं, थेरीगा. 428; सेनासनं आपुच्छा पक्कमितब्बं, चूळव. 354; — तब्बो सं. कृ. पु. प्र. वि. ए. व. — भिक्षु न होति, सामणेरो आपुच्छितब्बो, चूळव. 354; एत्थ भिक्षुमिह सति भिक्षु आपुच्छितब्बो, पाचि. अष्ट. 38; — तब्बं नपुं. प्र. वि. ए. व. — गमनकाले सब्बहेपि आपुच्छितब्बं, पाचि. अष्ट. 39; — तब्बा पु. प्र. वि. ब. व. — पब्बजितापि आपुच्छितब्बाव, महाव. अष्ट. 277.

आपुच्छन नपुं. आ + पुच्छ से व्यु. क्रि. ना. [आपृच्छन], अनुमति अथवा अनुमोदन प्राप्त करने की क्रिया, विदाई के लिए अनुनय — पुच्छना नन्दनानि च, अभि. प. 760; — नं प्र. वि. ए. व. — आपुच्छनं पन वत्तं, पाचि. अष्ट. 39;

— ने सप्त. वि. ए. व. — पुन आपुच्छने किच्चं, नत्थीति, परिदीपितं, विन. वि. 2943; — नेसु ब. व. — एस नयो सब्बआपुच्छनेसु, महाव. अष्ट. 271; — काल पु. तत्पु. स. [आपृच्छनकाल], विदाई लेने हेतु निवेदन करने का समय — ते सप्त. वि. ए. व. — सत्ताहच्चयेन पुन आपुच्छनकाले ... वदन्तो, जा. अष्ट. 6.292; — किच्च नपुं. तत्पु. स. [आपृच्छनकृत्य], विदाई लेने हेतु अनुमति मांगने का काम — च्वं प्र. वि. ए. व. — नत्थि इमस्सापुच्छनकिच्चं, महाव. अष्ट. 278; — विधि पु. तत्पु. स. [आपृच्छनविधि], अनुमति मांगने का तरीका — धि प्र. वि. ए. व. — तत्रायं आपुच्छनविधि —, महाव. अष्ट. 270; — नाकार पु. तत्पु. स., अनुमति प्राप्त करने की क्रिया का स्वरूप — रं द्वि. वि. ए. व. — तस्स आपुच्छनाकारं अनुजानामि, ... वण्णयिस्साम, महाव. अष्ट. 238.

आपुच्छा आ + पुच्छ का पू. का. कृ., पूछ कर, अनुमति अथवा अनुमोदन को पाकर — ... सेनासनं आपुच्छा पक्कमितब्बं, चूळव. 354; अनुजानामि, भिक्षवे, सन्तं भिक्षुं आपुच्छा कुलानि पयिरुपासितुं पाचि. 137.

आपुच्छापेति आ + पुच्छ का प्रेर., वर्त., प्र. पु. ए. व., विदा पाने हेतु अनुमति दिलाता है, पुछवाता है, पूछने हेतु प्रेरित करता है — एवमिमे सीलादीहि वड्ढिस्सन्तीति सभारे कातुकामो आपुच्छापेति, स. नि. अष्ट. 2.226; — तुं निमि. कृ. — आपुच्छामाति आदिना नयेन आपुच्छापेतुं वड्ढति, महाव. अष्ट. 270; — त्वा पू. का. कृ. — नो चे दहरभिक्षुं पेसेत्वा आपुच्छापेत्वा पब्बाजेतब्बो, महाव. अष्ट. 278.

आपुच्छित आ + पुच्छ का भू. क. कृ., पूछा जा चुका, अनुमति को प्राप्त किया हुआ, अनुमोदित — तो पु. प्र. वि. ए. व. — अपलोकिताति आपुच्छितो, स. नि. अष्ट. 2.226; — ता ब. व. — अपलोकिता वा ... आपुच्छिता, अ. नि. अष्ट. 3.210; — सज्जा स्त्री. तत्पु. स., “यह बात अनुमोदित है” इस प्रकार की चेतना — ज्जा प्र. वि. ए. व. — अनापुच्छिते आपुच्छितसज्जा ..., आपति पाचितियस्स, पाचि. 373.

आपुणाति आप का वर्त., प्र. पु. ए. व. [आप्नोति/आप्नुते], प्राप्त करता है, पहुंच जाता है — आपुणाति आपो, सद. 2.494.

आपुष्णता स्त्री., आ + पुष/पूर के भू. क. कृ. का भाव. [आपूर्णता], परिपूर्णता, हर तरह से परिपूर्ण होना — आपुष्णता न सत्तिलेन जलालयस्स, तेल. 23.

## आपुत्तपुत्तेहि

121

## आपोधातु

आपुत्तपुत्तेहि अ., पुत्रों के भी पुत्रों तक - आपुत्तपुत्तेहि पमोदथत्तोति, जा. अद्. 4.146; आपुत्तपुत्तेहीति याव पुत्तानमि पुत्तेहि पमोदथ, नत्थि वो इमस्मिं ठाने भयन्ति, जा. अद्. 4.146.

आपुस्सदत्त नपुं., आप + उस्सद का भाव., जलमयता, तरलता से भरपूर रहने की दशा - त्ता प. वि., ए. व. - चक्खुं ... आपुस्सदत्ता पग्घरति, ध. स. अद्. 342.

आपूपिक त्रि., अपूप से व्यु. [आपूपिक], पुओं को खाने वाला - कं नपुं., प्र. वि., ए. व. - णिक - अचित्ता आपूपिकं, संकुलिकं, मो. व्या. 4.68; - को पु., प्र. वि., ए. व. - आपूपिकोति एत्थ अपूपसदेन अपूपखादनं विय ..., सारत्थ. टी. 1.71; ... अपूपमक्खनसीलो आपूपिकोति, विभ. मू. टी. 68.

आपूरति आ + पूर / पूर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपूर्यते], भरपूर हो जाता है, पूर्ण हो जाता है, ऊपर तक भर जाता है, बढ़ जाता है, वृद्धि को प्राप्त करता है - आपूरति यस्सो तस्स, सुक्कपक्खेव चन्दिमाति, दी. नि. 3.138; जा. अद्. 4.25; उदेति आपूरति वेति चन्दो, जा. अद्. 3.133; - राभि उ. पु., ए. व. - तथा अहमि अज्ज तथा दिन्नेहि गमवरादीहि आपूरामीति, जा. अद्. 4.90; - थ अद्य., प्र. पु., ए. व. - आपूरथ तेन मुहुत्तकेन, जा. अद्. 4.399.

आपूरेति आ + पूर का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपूरयति], भर देता है, परिपूर्ण कर देता है - त्तो पु., वर्त. कू., प्र. वि., ए. व. - महता जयघोसेन आपूरेन्तो दिसादिसं, चू. वं. 72.300; भेरिकाहलनादेन आपूरेन्तं दिसादिसं, चू. वं. 75.104.

आपेति आप का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपयति], प्राप्त कराता है, पहुंचा देता है, बढ़ा देता है - आपेति सहजातरूपानि पत्थरति, आपायति वा ब्रूहेति वज्जेतीति आपो, अभि. ध. वि. टी. 174; तेजो तेजेति रुयानि, आपो आपेति पालना, अभि. अव. 81.

आपेसि / आपेसी / अपेसि स्त्री., कांटेदार झाड़ी से बनाया हुआ लकड़ी का फाटक - सिं द्वि. वि., ए. व. - कोट्ठकं अपेसिं यमककवाटं तोरणं पलिघन्ति, चूळव. 281; अपेसीति दीघदारुहिं खाणुके पवेसेत्वा कण्टकसाखाहि विनन्धित्वा कतं द्वारथकनकं, चूळव. अद्. 62.

आपोकसिण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आपकृत्स्न], ध्यान-प्रक्रिया में चित्त को एकाग्र करने हेतु निर्दिष्ट दस प्रकार के कर्मस्थानों में से एक, चित्त की एकाग्रता के लिए

आलम्बनभूत आप-धातु - णं प्र. वि., ए. व. - तत्थ यच्च पथवीकसिणं यच्च आपोकसिणं एवं सब्बं, नेत्ति. 74; आपोकसिणन्ति आपोकसिणज्झानं आपोकसिनकम्मद्धानं वा विसुद्धिं, महाटी. 1.183; आपोकसिणं अभिज्जेय्यं पटि. म. 7; - णं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - आपोकसिणमेको सज्जानाति ..., दी. नि. 3.214; - णे सप्त. वि., ए. व. - इदानि पथवीकसिनणानन्तरे आपोकसिणे वित्थारकथा होति, विसुद्धि. 1.163; - समापत्ति स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आपकृत्स्नसमापत्ति], आप-धातु के कर्मस्थान पर चित्त की एकाग्रता वाले ध्यान की प्राप्ति - या ष. वि., ए. व. - एकतिया आपोकसिणसमापत्तिया लाभी होतीति, पटि. म. 378; - णारम्मण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आपकृत्स्नालम्बन], ध्यान-प्रक्रिया के क्रम में आप-धातु का आलम्बन - णं द्वि. वि., ए. व. - महानदिं ओलोकेत्वा आपोकसिणारम्मण-ज्ञानं निब्बत्तेत्वा, जा. अद्. 1.300.

आपोकाय पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपकाय], आप-धातु, आपस्कन्ध के समुच्चय रूप में आप-महाभूत - यो प्र. वि., ए. व. - कतमे सत्त?, पथवीकायो, आपोकायो, तेजोकायो, वायोकायो, सुखे, दुक्खे, जीवे सत्तमे, दी. नि. 1.50; - यं द्वि. वि., ए. व. - आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति, दी. नि. 1.49.

आपोगत त्रि., जल की अवस्था में विद्यमान, आप के स्वभाव को प्राप्त, जलमय, पानीदार, पनीला, पनसर - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - यं अज्झतं पच्चत्तं आपो आपोगतं उपादित्रं, म. नि. 1.247; आपोधातुनिदेसे आपोगतन्ति सब्बआपेसु गतं अल्लेयूसभावलक्खणं, म. नि. अद्. (मू.प.)1(2).126; आपो आपोगतन्ति आदीसु आबन्धनवसेन आपो तदेव आपोसभावं गतत्ता आपोगतं नाम, विभ. अद्. 60.

आपोधातु स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आपोधातु], तरलता, प्रघरण (पिघल कर बहना) अथवा संसंजन का मूलभूत भौतिक धर्म, रूपधर्मों को आपस में बांध कर रखने वाला तथा सिग्घता के स्वभाव वाला एक महाभूत, क. छ प्रकार की धातुओं में से एक - छ. धातुयो पथवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, आकासधातु, विज्जाणधातु, दी. नि. 3.196; ख. चार महाभूतों की सूची में भी एक महाभूत के रूप में निर्दिष्ट - चत्तारो महाभूता अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सेय्यथिदं पथवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातूति, दी. नि. 1.199; ग. तरलता, द्रव्यशीलता एवं रूपधर्मों को

## आपोधातु

122

## आपोसङ्ग्रहित

बांध कर एक साथ रखना, इसके प्रमुख लक्षण — *यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनतं रूपस्स* — इदं तं रूपं आपोधातु, ध. स. 651; *अयोपिण्डादीनि हि आपोधातु आबन्धित्वा बद्धानि करोति*, ध. स. अट्ट. 365; *यो द्वादससु कोट्टासेसु आबन्धनभावो, अयं आपोधातु*, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).36; *आपोधातुया आबन्धनलक्षणं, विसुद्धि*. 1.340; घ. प्राणियों के भौतिक शरीर में मूत्र आदि की तरलता के रूप में तथा आबन्धन के स्वभाव से युक्त धातु के रूप में उल्लिखित — *अत्थि इमस्मिं काये पथवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातूति*, दी. नि. 2.217; *इति लसिका नाम इमस्मिं सरीरे पाटियेक्को कोट्टासो अचेतनो अब्याकतो पुञ्ञो निरस्सतो यूसभूतो आबन्धनाकारो आपोधातूति*, विसुद्धि. 1.353; ङ. आपोधातु आध्यात्मिक एवं बाह्य, इन दो प्रभेदों में वर्णित — *आपोधातु सिया अज्झात्तिका, सिया बाहिरा*, म. नि. 1.247; — तु प्र. वि., ए. व. — *आपोधातु चे हिदं ... एकन्तसुखा अभविस्स ... नयिदं सत्ता वायोधातुया निबिन्देय्यु*, स. नि. 1(2).158; — तु द्वि. वि., ए. व. — *यं आपोधातुं पटिच्च ... पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं अयं वायोधातुया अस्सादो*, स. नि. 1(2).154; — या तृ. / प. वि., ए. व. — *अयं आपोधातुया अस्सादोति अयं आपोधातुनिरस्सयो अस्सादो*, स. नि. अट्ट. 2.135; *यथाभूतं सम्मप्यज्जाय दिस्वा आपोधातुया निबिन्दति, आपोधातुया चित्तं विराजेति*, म. नि. 2.92; *यो आपोधातुया ... उप्पादो ठिति अभिनिब्बति पातुभावो, दुक्खस्सेसो उप्पादो रोगानं ठिति जरामरणस्स पातुभावो*, स. नि. 1(2).158; — *क्खोभवसेन*, क्रि. बि. पु., तत्पु. स., आप-धातु के अत्यधिक प्रकोप हो जाने के कारण से — *सरीरबन्तरे आपोधातुक्खोभवसेन वा अज्जाधातुक्खोभवसेन वा ... महानि*. अट्ट. 373; — *निदेस* पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपोधातुनिर्देश], आप-धातु-विषयक व्याख्यान — *से सप्त. वि., ए. व. — आपोधातुनिदेसे आपोगतन्ति सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्षणं*, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).126; — *प्यकोप* पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपोधातुप्रकोप], आप-धातु का प्रकोप, आप-धातु-विषयक गड़बड़ी — *पेन तृ. वि., ए. व. — आपोधातुप्यकोपेन, होति पूतिमुखेव सो, ध. स. अट्ट. 335; — सदिस* त्रि., ब. स. [बौ. सं. आपोधातुसदृक], आप धातु जैसा — *सो पु. प्र. वि., ए. व. — नन्दिरागो सिनेहण्डेन आपोधातुसदिसो*, स. नि. अट्ट. 2.241.

**आपोपग्वरण** त्रि., पानी के रिसाव से युक्त, आपधातु की स्निग्धता एवं तरलता से युक्त, आपधातु के कारण रिसाव अथवा द्रवनशीलता से युक्त — *णो पु., प्र. वि., ए. व. — आपोपग्वरणो कायो, सदा सन्दति पूतिकं, थेरगा.* 568; *अयं कायो आपोधातुया सदा पग्वरणसीलो, थेरगा.* अट्ट. 2.169.

**आपोफरण** नपुं., तत्पु. स. [आपस्फरण], जल का आप्लावन, आप-धातु से चारों ओर से परिपूर्ण रहना, स्निग्धता अथवा तरलता से व्याप्त होना — *णं प्र. वि., ए. व. — आपोफसिणं समापज्जित्वा आपेन फरणं आपोफरणं नाम*, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.105.

**आपोमय** त्रि., आप + मय से व्यु., जलमय, जल ही जल वाला — *मनादीनमापादीनं च ओ होतुत्तरपदे, मये च मनोसेट्ठा, मनोमया, रज्जोत्तलं रज्जोमयं आपोगतं, आपोमयं अनुयन्ति दिसोदिसं*, मो. व्या. 3.59.

**आपोरस** पु., तत्पु. स. [आपोरस], जल का स्वाद, जल का गुण — *सं द्वि. वि., ए. व. — यच्च आपोरसं उपादियति, पटि.* म. 128; *आपोरसन्ति ... आपस्स च सम्पदं, पटि.* म. अट्ट. 2.43; — *सिनेह* पु., तत्पु. स., जल के रस या स्वाद के प्रति स्नेह अथवा तृष्णा — *हे सप्त. वि., ए. व. — निग्रोधस्स खन्धजा नाम पारोहा आपोरससिनेहे सति जायन्ति*, सु. नि. अट्ट. 2.36.

**आपोसंवट्ट** पु., तत्पु. स. [आपरसंवर्त], जलप्रलय अथवा जल द्वारा (लोक का) अन्त — *तयो संवट्टा-तेजोसंवट्टो आपोसंवट्टो, वायोसंवट्टोति*, पारा. अट्ट. 1.119; *आपोसंवट्टवसेन वज्जमाना कुप्पति*, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).123; — *काल* पु., तत्पु. स. [आपरसंवर्तकाल], जल-प्रलय का समय — *ले सप्त. वि., ए. व. — आपोसंवट्टकाले पन कोटिसतसहस्सवक्कवाळं उदकपूरमेव होति*, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).126.

**आपोसङ्ग्रहित** त्रि., तत्पु. स. [आपरसंगृहीत], आबन्धनत्व नामक रूपधर्म द्वारा एकजुट किया हुआ, जल-तत्त्व द्वारा एक साथ समञ्जित किया हुआ — *ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — तेजोधातु पथवीपतिट्ठिता आपोसङ्ग्रहिता वायोवित्थम्भिता इमं कायं परिपाचेति*, विसुद्धि. 1.355; *वायोधातु पथवीपतिट्ठिता आपोसङ्ग्रहिता तेजानुपालिता इमं कायं वित्थम्भेति*, विसुद्धि. 1.356; *सङ्ग्रहिताति यथा न विष्पकिरति, एवं आबन्धनवसेन सम्यिण्डित्वा गहिता*, विसुद्धि. महाटी. 1.418.

## आपोसज्जा

123

## आबद्धत

आपोसज्जा स्त्री., तत्पु. स. [आपस्संज्ञा], आप-धातु-विषयक सज्ञा - ज्ञा प्र. वि., ए. व. - परित्ता पथवीसज्जा भाविता होति, अप्पमाना आपोसज्जा, दी. नि. 2.83; आपोसज्जादीसुपि एसेव नयो अ. नि. अहु. 3.342.

आपोसज्जी त्रि., आप धातु के विषय में ज्ञान रखने वाला, "यह आप धातु है" इस प्रकार का ज्ञान रखने वाला - ज्जी पु., प्र. वि., ए. व. - यथा नेव पथवियं पथविसज्जी अस्स, न आपस्मिं आपोसज्जी अस्स, अ. नि. 3(2).6.

आपोसन्निस्सय पु., तत्पु. स. [आपस्सन्निश्रय], जल पर निर्भरता, आबन्धन-स्वभाव आप-धातु का आश्रय अथवा अवलम्बन - येन त्. वि., ए. व. - आपोसन्निस्सयेनापि समनक्कारहेतुना, अभि. अव. 504.

आपोसन्निस्सित त्रि., तत्पु. स. [आपस्सन्निश्रित], जल पर निर्भर रहने वाला, आप-धातु पर आश्रित अथवा उसके साथ जुड़ा हुआ - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - असम्भित्ता जिह्वाय आपथगतता रसानं, आपोसन्निस्सितं मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्यज्जति जिह्वाविज्जाणं, ध. स. अहु. 319; तत्थ आपोसन्निस्सितं न्ति जिह्वातेमनं आपं लद्धाव उप्यज्जति, न विना तेन, ध. स. अहु. 319.

आपोसमाव पु., तत्पु. स., जल का स्वभाव, आप-धातु का स्वभाव - वं द्वि. वि., ए. व. - तदेव आपोसभावं गतत्ता आपोगतं नाम, विभ. अहु. 60.

आपोसम त्रि., जल जैसा/जैसी, आप-धातु के समान - मं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - आपोसमं भावं भावेहि, म. नि. 2.94.

आप्यच्चय पु., आ + पच्य, केवल व्याकरणों के सन्दर्भ में प्रयुक्त [टाप्प्रत्यय], पु. के अकारान्त नामों की स्त्री. बनाने हेतु विहित तद्धित प्रत्यय 'आ' - यो प्र. वि., ए. व. - अकारन्ततो आप्यच्चयो होति, क. व्या. 237.

आफुसति आ + व्फुस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्पृशति], प्राप्त कर लेता है, पास में जा पहुंचता है, (के साथ) जुड़ जाता है - सिं अद्य., उ. पु., ए. व. - तत्थेवहं समथसमाधिमाफुसिं सायेव मे परमनियामता अहु. वि. व. 145; वि. व. अहु. 65; आफुसिं अधिगच्छिं, वि. व. अहु. 67.

आबज्झ आ + व्बन्ध का पू. का. कृ. [आबध्य], अच्छी तरह से बांध कर - आबज्झ नच्चिया कटिया निसदम्हि अबच्चिसुं, म. वं. 23.6; आबज्झा ति आबच्चित्वा, म. व. टी. 407(नां).

आबद्ध त्रि., आ + व्बन्ध का भू. क. कृ. [आबद्ध], पूरी तरह से बन्धन में बंधा हुआ, बन्धनग्रस्त - द्दो पु., प्र. वि., ए. व. - न्हारुसुत्तकेन मत्थलुङ्गे आबद्धो, ध. स. अहु. 342; ... वल्लीहि आबद्धो वितो, स. नि. अहु. 3.74; - द्दा' ब. व. - ... मय्हं देसनाजाले परियापन्ना, एतेन आबद्धा, दी. नि. अहु. 1.108; - द्दा' स्त्री., प्र. वि., ए. व. - बहि चस्स गता वङ्गसाखा नानावल्लीहि आबद्धा, स. नि. अहु. 3.74; - द्दं नपुं., प्र. वि., ए. व. - द्वीहि पदेहि आबद्धं होति उपरि सकलसुत्तं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).70; - द्दानि ब. व. - नपि तीणि अद्विसत्तानि जानन्ति मयं न्हारुहि आबद्धानीति, खु. पा. अहु. 36; स. उ. प. के रूप में एका., दया., नाना., बुन्दिका., समन्ता., सिनेहा. के अन्त. द्रष्ट.; - कच्छ त्रि., ब. स., वह, जिसने अपनी कमर के इर्द-गिर्द कच्छा, धोती या लुंगी को कसकर बांध लिया है - च्छो पु., प्र. वि., ए. व. - युद्धाय आबद्धकच्छो सो गतो पल्लववालकं, चू. वं. 72.220; - परिकरण त्रि., ब. स. [आबद्धपरिकर], सभी तरह से तैयार, सभी तैयारियों को पूरा कर चुका - णेन पु., त्. वि., ए. व. - ... सब्बकालं युत्तप्पयुत्तेन भवितव्वं आबद्धपरिकरणेन, चरिया. अहु. 287; - पटिबद्धसहायक त्रि., बिलग न होने योग्य, पूरी तरह से जुड़ा रहने वाला - कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - तानि किर द्वेपि ... आबद्धपटिबद्धसहायकानेव अहेसुं, ध. प. अहु. 1.52; - पुप्फवटंसक पु., कर्म. स., अच्छी तरह से बांधा गया फूलों का गुच्छ - को प्र. वि., ए. व. - सुद्ध पीळत्वा आबद्धपुप्फवटंसको विय, दी. नि. अहु. 2.149; - वङ्गसाखा स्त्री., कर्म. स., अच्छी तरह से (किसी के द्वारा) बांध दी गई टेढ़ी शाखा - खा प्र. वि., ए. व. - ... बहिद्धा वल्लीहि आबद्धवङ्गसाखा विय ... ददुब्बो, स. नि. अहु. 3.76; - सिनेह त्रि., ब. स., अत्यधिक स्नेह करने वाला, सुदृढ़ स्नेह करने वाला - हो पु., प्र. वि., ए. व. - कुटुम्बिको गुणवसेन तिस्साय आबद्धसिनेहो ... अद्दासि, पे. व. अहु. 71.

आबद्धता स्त्री., आबद्ध का भाव. [आबद्धता], बंधा हुआ होना, जुड़ा हुआ होना, बन्धनग्रस्त रहना - य त्. वि., ए. व. - उपचिकाहि वन्तखेळसिनेहेन आबद्धताय सत्तसत्ताहं देवे वस्सन्तेपि न विप्पकिरियति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).33.

आबद्धत्त नपुं., आबद्ध का भाव. [आबद्धत्व], उपरिवत् - ता प. वि., ए. व. - ... बहिद्धा वल्लीहि आबद्धत्ता य गङ्गं

## आबन्ध

124

## आबाध

ओतरित्वा, स. नि. अहु. 3.74; ताय आबद्धता तानि बद्धानि नाम होन्ति, ध. स. अहु. 365; एतं ... सद्धिं एकाबद्धता रक्खति, पारा. अहु. 1.255.

**आबन्ध** पु., आ + √बन्ध से व्यु. [आबन्ध], बन्धन, अनेक प्रकार का बन्धन, जञ्जीर - न्धं द्वि. वि., ए. व. - वडुमाबन्धमिच्चैवं, तेभूमकमनादिकं, पटिच्चसमुप्पादोति, पडुपेसि महामुनि, अभि. ध. स. 57; - न्धे ब. व. - बन्धे विबन्धे आबन्धे लग्गे लगिते पलिवुद्धे बन्धने पोटीयित्वा, महानि. 71; आबन्धोति अनेकविधेन बन्धे, महानि. अहु. 185.

**आबन्धति** आ + √बन्ध का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आबन्धति], बांध देता है, किसी के साथ जोड़ देता है, एक साथ मिला देता है - आपोधातु पन पथवीधातुमि तेजोवायोधातुयोपि अफुसित्वाव आबन्धति, ध. स. अहु. 366; - न्धती स्त्री., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - ... संसूचकेन अङ्गविखना आबन्धती विय ओलोकेत्वा, उदा. अहु. 138; - माना स्त्री., वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. - न्हारु सरीरवन्तरे अङ्गीनि आबन्धमाना टिता, विभ. अहु. 55; - न्धेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - यदि फुसित्वा आबन्धेय्य फोडुब्बायतनं नाम भवेय्य, ध. स. अहु. 366; - न्धित्वा पू. का. कृ. - आभुजित्वाति आबन्धित्वा, पारा. अहु. 2.12; - न्धितव्वानि सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ब. व. - आबन्धनानी ति हत्थिअस्सरथेसु आबन्धितव्वानि भण्डानि च गण्ठथ, जा. अहु. 5.310.

**आबन्धन** 1. नपुं., आ + √बन्ध से व्यु., क्रि. ना. [आबन्धन], प्रगाढ़ बन्धन, मजबूत गांठ, जोड़, समंजन, सुसंगति - नं प्र. वि., ए. व. - आबन्धनमापोधातु, ना. रु. परि. 498; - तो प. वि., ए. व. - अपरापरभावाय विननतो आबन्धनतो ससिब्बनतो वानन्ति ... विसंयुत्तं, पारा. अहु. 1.168; 2. त्रि., वह, जिसे बांधा जाए, बांधा जा रहा, बन्धनक्रिया का विषयीभूत, बांधा जाने योग्य - आबन्धनानि गण्ठथ, जा. अहु. 5.310; आबन्धनानीति हत्थिअस्सरथेसु आबन्धितव्वानि भण्डानि च गण्ठथ, जा. अहु. 5.310; - ड पु., तत्पु. स. [आबन्धनार्थ], बांधे जाने का अर्थ - डेन तु. वि., ए. व. - आबन्धनडेन जातियेव जातिपरिवड्ढो, दी. नि. अहु. 1.149; - ता स्त्री., भाव., आपस में बांध कर रखना - या आबन्धनता, सा आपोधातु, खु. पा. अहु. 57; - धातु स्त्री., आप-धातु, रूप धर्मों को आपस में बांधकर रखने वाला आप-नामक महाभूत - आपोधातूति आबन्धनधातु, स.

नि. अहु. 2.134; - भाव पु., आपस में बांध कर रखने की दशा - वो प्र. वि., ए. व. - यो द्वादससु कोट्ठासेसु आबन्धनभावो, अयं आपोधातु, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).36; यो आबन्धनभावो वा द्रवभावो वा, अयं आपोधातु, विसुद्धि. 1.342; - लक्खण नपुं., तत्पु. स., आपस में बांध कर रखने का लक्षण - णं प्र. वि., ए. व. - य आबन्धनलक्खणं, अयं आपोधातु, विसुद्धि. 1.341; - वल्ली स्त्री., तत्पु. स., बांधने वाली डोरी - वल्लिं द्वि. वि., ए. व. - वल्लित्ति आबन्धनवल्लिं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).128; - समय पु., तत्पु. स., बांधे जाने का समय, बन्धन में लाए जाने का काल - यो प्र. वि., ए. व. - पुत्तो मे वयप्पत्तो, घरावारेनस्स आबन्धनसमयोति, अ. नि. अहु. 1.301; - नाकार त्रि. आपस में बांध कर रखने वाले स्वरूप अथवा आकार वाला - रो प्र. वि., ए. व. - यूसभूतो आबन्धनाकारो आपोधातूति, विभ. अहु. 61; - रं द्वि. वि., ए. व. - द्वादससु कोट्ठासेसु यूसगतं उदकसङ्घातं आबन्धनाकारं आपोधातूति ववत्थपेति, विसुद्धि. 1.343.

**आबाध** आ + √बाध से व्यु., [आबाध], शा. अ. रोग, बीमारी, विपत्ति, व्यथा, दुर्गति, संकटमय अवस्था, दुख भरा अनुभव - आतङ्गो आमयो व्याधि गदो रोगो रुजापि च, गेलञ्जाकल्लमाबाधो ..., अभि. प. 323; बाधति विबाधति, आबाधो, आबाधति चित्तं विलोळेतीति आबाधो, सद्. 2.394; आबाधो ति विसभागवेदना वुच्चति या एकदेसे उपपज्जित्वा सकलसरीरं अयपट्टेन बन्धित्वा विय गण्हाति, सद्. 2.322; आबाधोति योकोचि रोगो, विसुद्धि. 1.93; विसभागवेदनुपपत्तिया ककचेनेव चतुइरियापथं छिन्दन्तो आबाधतीति आबाधो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).213; - धो प्र. वि., ए. व. - सचे खो मयं गिलानं ठाना चावेस्साम, आबाधो वा अभिवड्ढिस्सति, महाव. 150, 152, 214; यस्स कण्डु वा ... आबाधो, कायो वा दुग्गन्थो, महाव. 277; पाचि. 226; आबाधोति महापिळ्काबाधो वुच्चति, पाचि. अहु. 143; - धं द्वि. वि., ए. व. - आबाधं, ते देव, परस्सामाति, महाव. 361; अत्थकामस्स गिलानुपट्टाकस्स यथाभूतं आबाधं नाविकत्ता होति, महाव. 394; - धेन तु. वि., ए. व. - भिकखून् सारदिकेन आबाधेन फुड्डानं यागुपि, महाव. 274; अबाधेनाति सरदकाले उपपन्नेन पिताबाधेन, महाव. अहु. 351; - धा / तो प. वि., ए. व. - अपरेन समयेन तम्हा आबाधा मुच्चेय्य, दी. नि. 1.64; न दानिमे इमम्हा आबाधा वुड्ढिस्सन्तीति, दी. नि. 2.239; पेसुज्जं उपसंहरति-

## आबाध

125

## आबाधिक

... आबाधतोपि, पाचि. 20; - रस ष. वि., ए. व. - आबाधस्स लसुणं भेसज्जं, चूळव. अहु. 57; - घे सप्त. वि., ए. व. - आबाधं मे समुप्पन्ने, सति मे उदपज्जथ, थेरगा. 30; आबाधं मे समुप्पन्नेति ..., थेरगा. अहु. 1.94; - घा प्र. वि., ब. व. - सन्ति ते एवरूपा आबाधा, महाव. 120; - धानं प. वि., ब. व. - तिकिच्छका, विरेचनं देन्ति पित्तसमुद्धानानपि आबाधानं पटिघाताय, अ. नि. 3(2).185; ला. अ. क. दस प्रकार के पलिबोधों में से एक - आवासो च कुलं लाभो, गणो कम्मञ्च पञ्चमं अद्धानं जाति आबाधो, गन्थो इद्धीति ते दसाति, पारा. अहु. 2.19; ला. अ. ख. 3, 5, 6, 8 एवं 48 प्रकारों में निर्दिष्ट - मनुस्सेसु तयो आबाधा भविस्सन्ति, दी. नि. 3.55; मनुस्सा पञ्चहि आबाधोहि ... वदन्ति, महाव. 91; मगधेसु पञ्च आबाधा उस्सन्ना होन्तीति मगधनामके जेनपदे मनुस्सानञ्च अमनुस्सानञ्च पञ्च रोगा उस्सन्ना बुद्धिप्पता फातिप्पता होन्ति, महाव. अहु. 263; 238; मनुस्सानं छळेव आबाधा अहेसुं-सीतं, उण्हं जिघच्छा, पिपासा, उच्चारो, पस्सावो, अ. नि. 2(2).266; पित्तसेहवातसन्निपातउतुविपरिणामविसमपरिहारउपक्कमकम्मविपाकवसेन अहुविधो आबाधो, पटि. म. अहु. 1.81; विविधा आबाधा उपपज्जन्ति, सेय्यथिदं - चक्षुरोगो सोतरोगो ... पित्तसमुद्धाना आबाधा सेहसमुद्धाना आबाधा वातसमुद्धाना आबाधा सन्निपातिका आबाधा उतुपरिणामजा आबाधा विसमपरिहारजा आबाधा ओपक्कमिका आबाधा कम्मविपाकजा आबाधा सीतं उण्हं जिघच्छा पिपासा उच्चारो पस्सावोति, अ. नि. 3(2).91; स. उ. प. के रूप में अना., अन्तगण्ठा., अप्पमत्तका., अप्पा., अमनुस्सिका., उदरवाता., उदरा., कायचित्ता., कायडाहा., कायिका., कुच्छिविकारा., गण्डा., गरुका., घरदित्रका., चक्षुरोगा., चेतसिका., थुल्लकच्छा., थुल्लकच्छु., पण्डुरोगा., पादखीला., पित्ता., बह्हा., भगन्दला., मधुमेहा., महा., लोहितपक्खन्दिका., वम्मिका., विसभागा., विसमा., सब्बा., सा., सीसा. के अन्त. द्रष्टः - ता स्त्री., आबाध का भाव., रुग्णता, रोगग्रस्त होना, विपत्ति अथवा बाधा से पीड़ित होना, स. उ. प. में प्रयुक्त - अत्तभावस्स पित्तपकोपादीनं वसेन साबाधा, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.8; - प्पच्चया अ., क्रि. वि., बाधा, विपत्ति अथवा रोग के कारण से, बाधा, विपत्ति अथवा रोग होने की स्थिति में - अनुजानामि, आबाधप्पच्चया सम्बाधे लोमं संहरापेत्ति, चूळव. 255; आबाधप्पच्चया लसुणं खादितुं, चूळव. 262; - भूत

त्रि., रोगग्रस्त, रोग का शिकार - तो पु., प्र. वि., ए. व. - अयं ..., कायो रोगभूतो ... आबाधभूतो, म. नि. 2.188; - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - सो त्वं इमं कायं रोगभूतं गण्डभूतं ... आबाधभूतं, म. नि. 2.188; - समझी त्रि., रोगग्रस्त, रोगी - झी पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ आबाधिकोति आबाधसमझी, वि. व. अहु. 279.

आबाधति आ + बाध का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आबाधते], पीड़ा देता है, चुभता है - न मं किञ्चि आबाधतीति, म. नि. 2.187; ... चतुइरियापथं छिन्दन्तो आबाधतीति आबाधो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).213.

आबाधन नपुं., आ + बाध से व्यु., क्रि. ना. [आबाधन], कष्ट, चोट, पीड़ा, हानि, तकलीफ, रोग - नाथ च. वि., ए. व. - आबाधनाय पीळनाय, अ. नि. अहु. 3.275; - तो प. वि., ए. व. - सरीरस्स आबाधनतो, थेरगा. अहु. 1.94; - इ पु., तत्पु. स. [आबाधनार्थ], पीड़ाप्रद होने का अर्थ अथवा आशय - डेन तू. वि., ए. व. - आबाधनडेन आबाधो होति, अ. नि. अहु. 3.281; आबाधडेनाति विबाधनडेन, रोगडेन वा, विसुद्धि. महाटी. 1.55; पाठा. आबाधडेन; - दुक्ख नपुं., तत्पु. स., पीड़ा का दुख, रोग का दुख - क्खं प्र. वि., ए. व. - कायस्स आबाधनदुक्खं दुक्खं, पटि. म. अहु. 1.127.

आबाधिक त्रि., [बौ. सं. आबाधिक], रोगी, बीमार, व्याधि से पीड़ित - को पु., प्र. वि., ए. व. - पुरिसो आबाधिको अस्स दुक्खितो बाळहगिलानो, दी. नि. 1.64; ... आबाधतीति आबाधो, स्वास्स अत्थीति आबाधिको, दी. नि. अहु. 1.172; इरियापथभञ्जनकेन विसभागाबाधेन आबाधिको, अ. नि. अहु. 3.59; - कं द्वि. वि., ए. व. - न त्वं अइस मनुस्सेसु इत्थिं वा पुरिसं वा आबाधिकं, म. नि. 3.219; - रस ष. वि., ए. व. - तं तेनेव आबाधेन आबाधिकस्स वट्ठति, न अञ्जस्स, पारा. अहु. 2.268; - का पु., प्र. वि., ब. व. - ते अपरेन समयेन आबाधिका होन्ति, दी. नि. 2.239; - कानं पु., च./ष. वि., ब. व. - इदं ओसधं येन केनचि आबाधेन आबाधिकानं देथाति, जा. अहु. 6.157; - कं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - ... भगिनि पस्सेय्य आबाधिकं, म. नि. 1.123; आबाधिकन्ति ब्याधिकं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).372; - त नपुं., भाव. [आबाधिकत्त], व्याधिग्रस्तता, रुग्णता, बीमारी - ता प. वि., ए. व. - थेरस्स आबाधिकत्ता, स. नि. अहु. 2.278; - भाव पु., उपरिवत् - वं द्वि. वि., ए. व. - सत्थु



## आबाधिकिनी

126

आमत

आबाधिकभावं आचिक्खित्वा, ध. प. अट्ट. 2.417.

आबाधिकिनी स्त्री, आबाधिक से व्यु., रुग्ण नारी, बीमार स्त्री - नी प्र. वि., ए. व. - इत्थन्नामा, भिक्खुनी आबाधिकिनी दुक्खिता बाळहगिलाना, अ. नि. 1(2).166.

आबाधित त्रि., आ +√बाध का भू. क. कृ. [आबाधित], पीड़ित, रोगग्रस्त, विपत्ति से ग्रस्त, कष्ट में पड़ा हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - अरहं सुगतो लोकं, वातेहाबाधितो मुनि, थेरगा. 185.

आबाधेति आ +√बाध का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आबाधयति], पीड़ा अथवा कष्ट देता है, हानि पहुंचाता है, व्यथा उत्पन्न कराता है - न्ति प्र. पु., ब. व. - उंसादयो 'मं आबाधेन्ती'ति ... अत्थो, थेरगा. अट्ट. 1.96; - यित्थ अट्ट., प्र. पु., ब. व. - मा, हेव चिरवासिस्स कुमारस्स किञ्चि आबाधयित्थाति, स. नि. 2(2).312; - धियमान त्रि., कर्म. वा. का वर्त. कृ. - नानं पु., ष. वि., ब. व. - तेन आबाधियमानानं पृथुज्जनानं तत्थ पटिघुप्पत्तितो, पटि. म. अट्ट. 1.127.

आमाधातु स्त्री, कर्म. स., प्रकाशमान धातु, सुस्पष्ट रूप से व्यक्त हो रही धातु - रूपधातुयेव हि आमाधातु, विसुद्धि. 2.114.

आमंकर त्रि., आभा या चमक को उत्पन्न करने वाला - रो पु., प्र. वि., ए. व. - आमंकरो पमंकरो धम्मोभासपज्जोतकरोति च बुद्धा, नेत्ति. 45.

आमज्जति आ +√भज्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व., 1. टिका देता है, (का) सहारा दे देता है, 2. भग्न कर देता है, मोड़ देता है - न्ति प्र. पु., ब. व. - विविधा आमज्जन्ति भारं ओलम्बन्ति तेनाति व्याभङ्गी विधं, अ. नि. टी. 3.2; विविधं भारं आमज्जन्ति ओलम्बन्ति एत्थाति व्याभङ्गी काजं, म. नि. टी. (म.प.) 196.

आमह त्रि., आ +√भास का भू. क. कृ. [आभासित, बौ. सं., आभाष्ट], कथित, उच्चारित, बोल दिया गया, कह दिया गया - ह्वं नपुं., प्र. वि., ए. व. - दुट्ठ आमहं भासितं लपितन्ति दुरामहं, परि. अट्ट. 193.

आमण्डन नपुं., आ +√भण्ड से व्यु., क्रि. ना. [आभण्डन], सुनिश्चित करना, भण्डाफोड़ कर देना - ने सप्त. वि., ए. व. - लभ आमण्डने, सट्ट. 2.556.

आमत त्रि., आ +√भर का भू. क. कृ., प्रायः आहत एवं आगत के स्थान पर भी प्रयुक्त [आभृत], समीप ले आया गया, ले जाया गया, पहुंचा दिया गया, हस्तान्तरित किया गया, आनीत - आहतो आमतानीता, अभि. प. 749; - तो पु., प्र. वि., ए. व. - गामतो सप्पिकुम्भो आमतो, महाव. अट्ट. 360; आहितोति आमतो, जालितो, सु. नि. अट्ट. 1.24; - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - भिक्खू उपनन्दत्थेरेन आमतं पत्तचीवररासिं दिस्वा, जा. अट्ट. 3.293; - तेन पु., तृ. वि., ए. व. - न मे तथा आभतेन पण्णाकारेन अत्थो, जा. अट्ट. 4.96; - ते पु., सप्त. वि., ए. व. - महाब्रह्मुना आभते अरहद्धजे गहितमत्तेयेव वस्ससद्धिकत्थेरो विय ..., अ. नि. अट्ट. 1.116; - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - कसपाति आभता ... परियोनद्धा, म. नि. 1.32; आभताति आनीता, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).151; - तं स्त्री. द्वि. वि., ए. व. - अत्तनो आमतं कटच्छुभिक्षं दापेसि, घ. प. अट्ट. 2.126; - ताय स्त्री., ष. वि., ए. व. - इदं तावेत्थ धम्मदेसनत्थं आभताय उपमाय संसन्दनं, स. नि. अट्ट. 3.102; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - इदं ... आयस्मन्तं उदिस्स चीवरचेतापन्नं आभतं, पारा. 335; आभतन्ति आनीतं, पारा. अट्ट. 2.229; - तं द्वि. वि., ए. व. - अहन्त्वा धनमाभतं, अप. 2.232; - तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - तेसं आभतेन येन केनचि यापेत्तोपि ... होति, स. नि. अट्ट. 2.145; - तो प. वि., ए. व. - परिभण्डकरणत्थाय आभततो गहितन्ति एके, स. नि. अट्ट. 2.285; - स्स ष. वि., ए. व. - त्वं मया आभतस्स उप्पत्तिं मा पुच्छ, जा. अट्ट. 3.296; - तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - तेहि पन नानप्पकारानि फलाफलानि आभतानि, जा. अट्ट. 1.431; - तानि द्वि. वि., ब. व. - आभतानि तिणादीनि एत्थ निक्खिप, स. नि. अट्ट. 2.73; - तेहि नपुं., तृ. वि., ब. व. - अत्तनो खज्ज-भोज्जेहि तेहि तेहाभतेहि च, सन्तप्पेसि, ससङ्गं तं, म. वं. 15.72; 106; क. स. उ. प. के रूप में अत्थवसा, अना, अपा, आचरियपरम्परा, आज्ञाया, कपाला, काला, दुरा, परम्परा, मलया, यथा, रत्ता, ख. स. पू. प. के रूप में, - त्त नपुं., आमत का भाव. [आभृतत्व], ले आया जाना - त्ता प. वि., ए. व. - उज्जे ... उज्जाचरियाय आभतत्ता ... अभिरता, थेरगा. अट्ट. 1. 299; - पक्ख पु., कर्म. स. [आभृतपक्ष], लाया हुआ पक्ष - क्खे सप्त. वि., ए. व. - आभतपक्खे पन इदं संसन्दनं, स. नि. अट्ट. 3.102; - पण्णाकार पु., कर्म. स., लाया

## आभतामत

127

## आभरण

हुआ उपहार अथवा सौगात — रेन तृ. वि., ए. व. — एतत्कालं देवमनुस्सोहि आभतपण्णाकारेनेव दानं अदासि, ध. प. अट्ट. 1.295; — भाजन नपुं, कर्म. स. [आभृतभाजन], लाया गया पात्र — नानि द्वि. वि., ब. व. — ... आभतभाजनानि पूरेत्वा गच्छति, जा. अट्ट. 1.336; स. उ. प. के रूप में, — मंस नपुं, लाया गया मांस — सं द्वि. वि., ए. व. — अत्तनो अभतं मंसं द्वे कोट्टासे कत्वा, जा. अट्ट. 1.457; — मूल नपुं, लाई गई जड़ — लं प्र. वि., ए. व. — आभतमूलं बहु, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.202; — सक्कार पुं, श्रद्धा-स्वरूप लाया गया भोजन — रं द्वि. वि., ए. व. — तुम्हेहि आभत सक्कारं कुसग्गेन जिह्मग्गे ठपेत्वा, ध. प. अट्ट. 1.284.

आभतामत त्रि., आभत + आभत के योग से व्यु. [आभृताभृत]. समय समय पर लाया गया — तं नपुं, द्वि. वि., ए. व. — तुम्हेहि आभतामतं तुम्हाकं गेहमेव नेथा<sup>१</sup>ति आह, जा. अट्ट. 3.16; — मंस नपुं, कर्म. स., समय समय पर लाया हुआ मांस — सं द्वि. वि., ए. व. — ब्यग्घेन आभतामतमंसं खादको कूटजटिलो<sup>२</sup>ति, जा. अट्ट. 4.310.

आभरण नपुं, आ + षरण से व्यु., क्रि. ना. [आभरण], शा. अ., वह, जिसे धारण किया जाए अथवा ले आया जाए, ला. अ., आभूषण, साज सजावट — विभूसनं चाभरणं अलङ्कारो पिलन्धनं, अग्नि. प. 283; — णं<sup>१</sup> प्र. वि., ए. व. — सीलमभरणं सेट्ठं, थेरगा., 614; गुणसरीरोपसोभनद्धेन आभरणं, थेरगा. अट्ट. 2.188; परस्स सीसे आभरणं विय दट्ठब्बो, विसुद्धि. 1.208; — णं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. — आभरणं ओमुञ्चित्वा, चूळव. 318; आभरणं ओमुञ्चित्वाति महालतं नाम नवकोटिअग्घनकं अलङ्कारं अपनेत्वा, पाचि. अट्ट. 139; — णेन तृ. वि., ए. व. — अभिनिप्पीळनाय वत्थेन वा आभरणेन वा सद्धिं पीळयतो, पारा. अट्ट. 2.111; — णा प्र. वि., ब. व. — गम्हा च विलेपना च आभरणा च पिलन्धना च, महानि. 279; गीवादीसु पिळन्धनआभरणा च ..., महानि. अट्ट. 334; — णानि द्वि. वि., ब. व. — ... आभरणानि पिळन्धन्तो अत्तमनो अहोसि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.46; — णेहि तृ. वि., ब. व. — आभरणेहि सद्धिं सत्तरतनपूरानि सकटानि उभोसु परस्सेसु पेसेसि, जा. अट्ट. 7.269; क. स. उ. प. के रूप में, अङ्गदा., अङ्गुल्या., अपेता., आमुत्तमाला., आमुत्तहत्था., दारा., दिब्बकुसुमा., दिब्बा., धारिता., नाना., पटिमा., पीता., पुप्फा., ब्रह्मा., माला., मालागुणा., मुत्ता.,

रत्तङ्गा., राजा., वत्था., विचित्तवत्था., विमट्ठा., सब्बा., सोण्णवण्णङ्गा., हत्था. के अन्त. द्रष्ट.; स्व. स. पू. प. के रूप में, — जात नपुं, [आभरणजात], विशेष प्रकार का अलंकार या आभूषण — तं प्र. वि., ए. व. — ... सुवण्णवण्णं आभरणजातं, स. नि. अट्ट. 2.177; — णत्थ पुं, तत्पु. स. [आभरणार्थ], साज-सजावट अथवा अलंकरण का प्रयोजन — त्थाय च. वि., ए. व. — न सक्का एस आभरणत्थाय उपनेत्तुं, स. नि. अट्ट. 2.202; आभरणत्थाय सो मं मारेतुकामो अहोसी<sup>३</sup>ति, ध. प. अट्ट. 1.370; — त्थिका स्त्री., प्र. वि., ब. व., आभूषण अथवा अलंकार का प्रयोजन रखने वाली — सचे तुम्हे आभरणत्थिका, इमानि गण्हथ, स. नि. अट्ट. 2.177; — मण्ड नपुं, तत्पु. स., जेवर-जवाहरात, सजाने संवारने हेतु प्रयुक्त उपकरण — ण्ड<sup>४</sup> प्र. वि., ए. व. — आभरणभण्डमेव वा इध वस्म<sup>५</sup>न्ति अधिप्पेतं, जा. अट्ट. 7.184; — ण्डं<sup>६</sup> द्वि. वि., ए. व. — अत्तनो आभरणभण्डं भज्जापेत्वा ..., स. नि. अट्ट. 2.164; — ण्डेन तृ. वि., ए. व. — मया आभरणभण्डेन चेतियं पूजितं, थेरगा. अट्ट. 2.368; — ण्डेसु सप्त. वि., ब. व. — आभरणभण्डेसु पन सीसपसाधनकदन्तसूचिआदिकप्पियभण्डं, पारा. अट्ट. 2.117; — भण्डक नपुं, साज-सजावट की सामग्रियां, हीरे-जवाहरात — कं द्वि. वि., ए. व. — मनुस्सा आभरणभण्डकं गण्हिस्सामा<sup>७</sup>ति आपणं गच्छन्ति, स. नि. अट्ट. 2.177; — मङ्गल नपुं, विवाह संस्कार के अवसर पर आभूषण देने का मांगलिक विधान — लं प्र. वि., ए. व. — ... आभरणमङ्गलं, अभिसेकमङ्गलं, आवाहमङ्गलन्ति तीणि मङ्गलानि अकंसु, सु. नि. अट्ट. 1.227; — वस्सा स्त्री., तत्पु. स. [आभरणवर्षा], आभूषणों की बरसात, आभूषणों की प्रचुरता — कहापणमत्थके दिब्बाभरणवस्सं वरिसि, जा. अट्ट. 5.129; — विकति स्त्री., तत्पु. स. [आभरणविकृति], आभूषण का विशेष प्रकार — यो द्वि. वि., ब. व. — परिचारकपुरिसा नानावण्णानि दुस्सानि नानप्पकारा आभरणविकतियो मालागन्धविलेपनानि च आदाय, जा. अट्ट. 1.70; — विमूसित त्रि., तत्पु. स. [आभरणविभूषित], गहनों से सजा हुआ, अलंकारों से अलङ्कृत — आभरण-विमूसिताहि नाटकित्थीहि परिवारितो, म. वं. टी. 568(रो.); — विलेपनादि त्रि., ब. स., आभूषण एवं लेप प्रसाधन आदि — दीहि तृ. वि., ब. व. — हिमवा विय आभरणविलेपनादीहि ओभासेन्तु चेव पवायन्तु च जा. अट्ट. 7.362.

## आभवगं

128

## आभा

आभवगं अ., अव्ययी. स. [आभवाग्रम्], भवाग्र-नामक अवस्था तक, भव अथवा अस्तित्व की सर्वोच्च अवस्था तक — आभवगं आगोत्रभुं सवनतो पवत्तनतो ... आसवाति, उदा. अष्ट. 75; आगोत्रभुं आभवगं वा सवन्तीति आसवा, उदा. अष्ट. 141.

आभवगतो अ., प. वि., प्रतिलि. निपा., उपरिवत् — आरम्भणवसेन आगोत्रभुतो, आभवगतो च सवन्ता, विसुद्धि. 2.322.

आभस्वर पु., [आभास्वर], शा. अ., आभा अथवा दीप्ति से परिपूर्ण, ला. अ., 1. रूपी ब्रह्माओं के एक लोक का नाम — रा प्र. वि., ए. व. — महातापसानं आभस्सरा, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).322; — रे द्वि. वि., ब. व. — आभस्सरे आभस्सरतो सज्जानाति ... सज्जत्वा ... मज्जति, म. नि. 1.3; — तो प. वि., ए. व. — बोधिसत्तो आभस्सरतो आगन्त्वा आकासे उत्त्वा इमं गाथमाह, जा. अष्ट. 1.451; — रेसु सप्त. वि., ब. व. — दुतियज्झान भावेत्वा आभस्सरेसु अट्ठकप्पं आयुं गहेत्वा निब्बति, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).302; — काय पु., तत्पु. स., आभा से परिपूर्ण देवों (आभास्वर वर्ग के देवों) का समूह, आभास्वर देवों का वर्ग — या प. वि., ए. व. — आयुक्खया वा पुज्जक्खया वा आभस्सरकाया चवित्वा सुज्जं बह्माविमानं उपपज्जन्ति, दी. नि. 1.15; — द्धान नपुं., तत्पु. स. [आभास्वरस्थान], आभास्वर लोक का निवास-स्थान, आभा से परिपूर्ण स्थान — सुभकिण्हतो च चवित्वा आभस्सरद्धानादीसु सत्ता निब्बत्तन्ति, पटि. म. अष्ट. 1.300; — त्त नपुं., आभस्सर का भाव. [आभास्वरत्व], प्रभासित होना, अत्यधिक दीप्तिमय होना — तेन तृ. वि., ए. व. — आभस्सरानं आभस्सरत्तेन अननुभूतं, म. नि. 1.413; — ब्रह्मलोक पु., कर्म. स. [आभास्वर ब्रह्मलोक], आभा अथवा प्रकाश से परिपूर्ण ब्रह्मलोक, आभास्वर देवों का ब्रह्मलोक, आभास्वर नामक ब्रह्मलोक — कं द्वि. वि., ए. व. — ... आभस्सरब्रह्मलोकं आदिं कत्वा लोको पातुमवति, पटि. म. अष्ट. 1.300; — के सप्त. वि., ए. व. — तदा च आभस्सरब्रह्मलोकं पठमतराग्निनिब्बत्ता सत्ता आयुक्खया वा पुज्जक्खया वा ..., पटि. म. अष्ट. 1.298; — भवन नपुं., कर्म. स., प्रकाश से भरा हुआ क्षेत्र, आभास्वर नामक क्षेत्र अथवा स्थल — ना प. वि., ए. व. — बुद्धिया पन पवत्तमानाय याव आभस्सरमवनापि एकोदकं होति, स. नि. अष्ट. 1.31; — लोक पु., कर्म. स. [आभास्वरलोक], प्रकाश से परिपूर्ण

आभास्वर देवों का लोक, आभास्वर नामक लोक — के सप्त. वि., ए. व. — आभस्सरलोके महाब्रह्मानो विय पीतिसुखेन वीतिनामेस्सामाति, ध. प. अष्ट. 2.149; — संवत्तनिक त्रि., आभास्वर नामक लोक में पुनर्जन्म लेने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — संवट्ठमाने लोकं येमुय्येन सत्ता आभस्सरसंवत्तनिका होन्ति, दी. नि. 1.15; — रूपग त्रि., आभास्वर नामक ब्रह्मलोक को जाने वाला अथवा वहां पहुंचने वाला — गो पु., प्र. वि., ए. व. — लोकं आभस्सरूपगो होमि, अ. नि. 2(2).227; 2. पु., सदा ब. व. में प्रयुक्त, उन देवताओं के वर्ग का नाम जो कि आभास्वर-नामक रूप-ब्रह्मलोक में निवास करते हैं तथा जिनके शरीर से आभा अथवा प्रकाश की किरणें निकल कर चारों ओर बिखर जाती हैं — रा प्र. वि., ब. व. — आभस्सरवारं दण्डदीपिकाय अच्चि विय एतेसं सरीरतो आभा छिज्जित्वा छिज्जित्वा पतन्ती विय सरति विसरतीति आभस्सरा, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).38; दी. नि. अष्ट. 2.90; सत्ता एकत्तकाया नानत्तसज्जिनो, सेय्यथापि देवा आभस्सरा, दी. नि. 2.54; — रे द्वि. वि., ब. व. — आभस्सरे ... सज्जानाति, ... अभिनन्दति, म. नि. 1.3; — रानं ष. वि., ब. व. — आभस्सरानं आभस्सरत्तेन अननुभूतं, म. नि. 1.413; — रेसु सप्त. वि., ब. व. — आभस्सरेसु मज्जति, म. नि. 1.3.

आभा' स्त्री., आ + भा से व्यु., [आभा], प्रकाश, चमक, कान्ति, दीप्ति — रसिं चाभा पभा दिति रुचि भा जुति दीधिति, अभि. प. 64; विविधेहि सीलादिगुणेहि भवतीति विभू ... विभा ... आभा: भुजगो, ... परितो, इच्चेवमादि, क. व्या. 641; — भा प्र. वि., ए. व. — मणिरतनस्स आभा समत्ता योजनं फुटा अहोसि, दी. नि. 2.131; नत्थि सूरियसभा आभा, समुदपरमा सराति, स. नि. 1(1).8; एसा आभाति एसा बुद्धाभा, स. नि. अष्ट. 1.48; — मं द्वि. वि., ए. व. — आभं पटिच्च अच्चि पज्जायति, म. नि. 1.376; आभं पटिच्च अच्चीति तं आलोकं पटिच्च जालसिखा पज्जायति, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).245; — य तृ. वि., ए. व. — चन्दिमसूरिया एवमहिद्विका एवमहानुभावा आभाय नानुभोन्ति, दी. नि. 2.9; आभाय नानुभोन्तीति अतनो पमाय नय्यहोन्ति, दी. नि. अष्ट. 2.23; — भा' प्र. वि., ब. व. — वतस्सो इमा, आभा, ... चन्दाभा, सूरियाभा, अग्गाभा, पज्जाभा, अ. नि. 1(2).160; — भा' द्वि. वि., ब. व. — ... देवा ये इमेसं चन्दिमसूरियानं आभा नानुभोन्ति, म. नि. 2.236;

## आमा

129

## आभिचेतसिक

आमा ... ओभासं न वळ्ळञ्जन्ति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.193; — हि तृ. वि., ब. व. — हेमाचला व दिस्सन्ति तस्साभाहितहिं तदा, जिन. च. 204(रो.); — कर पु., [आभाकर], प्रकाश को उत्पन्न करने वाला सूर्य — रो प्र. वि., ए. व. — रसिमाभाकरो भानु अक्को सहस्सरंसि च, अभि. प. 63; — धातु स्त्री., तत्पु. स., आभा अथवा प्रकाश का मूलभूत तत्त्व, सात प्रकार के धातुविभाजनों में से एक — आभाधातु, सुभधातु, आकासानञ्जायतनधातु, विञ्जाणञ्जायतनधातु, आकिञ्चञ्जायतनधातु, नेवसञ्जानासञ्जायतनधातु, सञ्जावेदयितनिरोधधातु ... सत्त धातुयोति, स. नि. 1(2).132; आभाधातूति आलोकधातु, आलोकस्सपि आलोककसिणो परिकम्मं कत्वा उप्पन्नञ्जानस्सापीति सहारम्मणस्स ज्ञानस्स एतं नाम, स. नि. अट्ट. 2.118; — नानत्त नपु., भाव. [आमानानात्त्व], आभा अथवा प्रकाश में विविधता — वण्णनानत्तञ्छि खो पञ्जायति नो च आमानानत्तं, म. नि. 3.187; आमानानत्तन्ति आलोके नानत्तं न पञ्जायति, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.148.

आमा<sup>१</sup> पु./स्त्री., केवल ब. व. में प्रयुक्त, शा. अ., प्रमास्वर, देदीप्यमान, ला. अ., परित्ताभा, अप्पमाणाभा तथा आमस्सर, नामक तीन प्रकार के देवों के लिए प्रयुक्त — आमा देवा ... दीघायुका वण्णवन्तो सुखबहुलाति, म. नि. 3.145; आमातिआदीसु आभादयो नाम पाटियेक्का देवा नत्थि, तयो परित्ताभादयो देवा आमा नाम, परित्तासुभादयो च, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.108; या ता, ... आमा सब्बा ता परित्ताभा उदाहु सन्तेत्थ एकच्चा देवता अप्पमाणाभाति, म. नि. 3.188; आमा नाम विसुं नत्थि, परित्तामअप्पमाणाभ आमस्सरानमेतं अधिवचनं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).229.

आमाति आ + भा का वर्त., प्र. पु., ए. व., अच्छी तरह से चमकता है, सम्यकरूप से सुशोभित करता है, प्रकाशित करता है, देदीप्यमान बना देता है — रत्तिमाभाति चन्दिमा, स. नि. 1(1).18; 56; रत्तिमाभाति चन्दिमाति उट्टहन्तस्स चन्दस्स अञ्जलिं पग्गणिह, स. नि. अट्ट. 2.217-18; — सि म. पु., ए. व. — का नु विज्जुरिवाभासि, ओसधी विय तारका, जा. अट्ट. 4.414; — भन्ति प्र. पु., ब. व. — तपन्ति आभन्ति विरोचरे च, सतेरता विज्जुरिवन्तलिक्खे, जा. अट्ट. 5.194.

आभावग्ग पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 1(2). 160-162.

आमावेति आ + भू का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आभावयति], उत्पन्न करता है, जन्म देता है, अस्तित्व में लाता है, वृद्धि कराता है — वेसि अच., प्र. पु., ए. व. — मेत्ताचित्तं अमावेसि ब्रह्मलोकूपपत्तिया, पे. व. 384; — त्वा पू. का. कू. — मेत्ताचित्तं आमावेत्वा, ब्रह्मलोकूपपत्तिया, पे. व. 386; आमावेत्वाति वड्ढेत्वा ब्रूहेत्वा, अमावेत्वाति केचि पठन्ति, तेसं अकारो निपातमत्तं, पे. व. अट्ट. 146.

आमास पु., आ + भास से व्यु., केवल स. उ. प. में प्रयुक्त [आभास], प्रकाश, चमक, दीप्ति, रंग, आकार — कनकामासा स्त्री., ब. स., प्र. वि., ए. व., सोने के समान वर्ण वाली — सा कञ्जा कनकाभासा, पटुमाननलोचना, अप. 2.216; — कम्बुतलामासा स्त्री., ब. स., प्र. वि., ए. व., शंख के समान आकार वाली — दीघा कम्बुतलामासा, गीवा एण्येयका यथा, जा. अट्ट. 5.150.

आमासति<sup>१</sup> आ + भास का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आभासते], बोलता है, सम्बोधित करता है, बातचीत करता है — भिक्खवोति भगवा आमासति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).17; — न्ति ब. व. — अम्म ताताति पठमतरं आमासन्ति, पारा. अट्ट. 2.187.

आमासति<sup>२</sup> आ + भास (चमकना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आभासते], चमकता है, दिखता है, प्रतीत होता है — अभब्बतो आमासति उपट्ठातीति अभब्बाभासं, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.193.

आमासनसील त्रि., चमकदार, दीप्तिमान — ला पु., प्र. वि., ब. व. — ... पभाय आमासनसीलाति आभरस्सरा, अभि. ध. वि. टी. 149.

आमासुत्त नपु., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(2).160.

आभिक्खञ्ज नपु., अभिक्खण का भाव. [आभीक्ष्ण्य, बौ. सं. आभीक्ष्णक], निरन्तर आवृत्ति, लगातार दुहराया जाना, सतत रूप से पुनरावृत्ति — सीलाभिक्खञ्जा वस्सकेसु णी, मो. व्या. 5.53.

आभिचेतसिक त्रि., अभिचेतस से व्यु., सुस्पष्ट एवं विशुद्ध मानसिकता वाला, शुद्ध चित्तवृत्ति से युक्त — को पु., प्र. वि., ए. व. — अयमस्स पठमो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति, अ. नि. 2(1).197; — कानं नपु., प. वि., ब. व. — वतुन्नं ज्ञानानं आभिचेतसिकानं

## आभिजञ्जा

130

## आभिसमाचारिक

दिदुधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी  
अकसिरलाभी, परि. 262.

**आभिजञ्जा** अभि + √जा का विधि., प्र. पु., ए. व.  
[अभिजानीयात्], जाने, जानना चाहिए — यं ब्राह्मणं  
वेदगुमाभिजञ्जा, अकिञ्चनं कामभवे असत्तं, सु. नि.  
1065.

**आभिजानाथ** अभि + √जा का वर्त., म. पु., ब. व.  
[अभिजानीथ], तुम लोग जानते हो, ठीक से अथवा  
सुस्पष्ट रूप से स्मरण करते हो — किमाभिजानाथ  
पुरे पुराणं, किं वो पिता अनुसासे पुरत्था, जा. अड्ड.  
7.185.

**आभिजिक / अभिजिक** पु., व्य. सं., एक भिक्षु का नाम —  
कं द्वि. वि., ए. व. — ... अभिजिकञ्च भिक्षुं अनुरुद्धस्स  
सद्धिविहारिं, स. नि. 1(2).182; मम वचनेन ... अभिजिकञ्च  
... आमन्तेतीति, स. नि. 1(2).182.

**आभिदोसिक / अभिदोसिय** त्रि., अभि + दोस से व्यु.,  
बीती हुई अथवा पिछली रात का (यागु अथवा दलिया),  
बासा, दूसित भाव को प्राप्त — को पु., प्र. वि., ए. व. —  
ततोयं अभिदोसिको कुम्मासोति, पारा. 17; ततो तव  
गेहतो अयं अभिदोसिको कुम्मासो लद्धोति अत्थो, पारा.  
अड्ड. 1.161; — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — सुदिनस्स  
आतिदासी अभिदोसिकं कुम्मासं छडेतुकामा होति, पारा.  
16; अभिदोसिकन्ति पारिवासिकं एकरत्तातिक्कन्तं पूतिभूतं,  
तत्रायं पदत्थो — पूति भावदोसेन अभिभूतोति अभिदोसो,  
अभिदोसोव अभिदोसिको एकरत्तातिक्कन्तस्स या नामसञ्जा  
एसा यदिदं अभिदोसिकोति, तं अभिदोसिकं, पारा. अड्ड.  
1.160; — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — सैय्यथापि आवुसो  
पुरिसं पणीतभोजनं भुत्ताविं अभिदोसिकं भोजनं नच्छादेय्य,  
अ. नि. 2(2).102; अभिदोसिकन्ति अभिञ्जातदोसं  
कुद्रूसकभोजनं, अ. नि. अड्ड. 3.133.

**आभिधम्मिक** त्रि., अभिधम्म से व्यु., [आभिधार्मिक], अभिधर्म  
का अध्ययन करने वाला, अभिधर्म में निष्णात, अभिधर्म का  
अच्छा ज्ञान रखने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. —  
विनयमघीते ति वेनयिको, विनयमघीते वा, एवं ...  
आभिधम्मिको वेय्याकरणिको, क. व्या. 353; त्वमि  
आभिधम्मिको, भण, तात्, अभिधम्मपदानीति, मि. प. 15; —  
कं द्वि. वि., ए. व. — सुत्तन्तिकं वा आभिधम्मिकं वा  
उपसङ्गमति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).179; — का पु., प्र.  
वि., ब. व. — सुत्तन्तिका वेनयिका आभिधम्मिका ..., मि.

प. 309; — गण पु., तत्पु. स. [आभिधार्मिकगण],  
अभिधर्म का अध्ययन करने वालों अथवा अभिधर्म में निष्णात  
व्यक्तियों की मण्डली — णो प्र. वि., ए. व. — गणोति  
सुत्तन्तिकगणो वा आभिधम्मिकगणो वा, विसुद्धि. 1.92; —  
स्स च. वि., ए. व. — ... देम, इदं आभिधम्मिकगणस्साति  
एवं गणस्स देन्ति, पारा. अड्ड. 2.216; — भिक्षु पु., कर्म.  
स. [आभिधार्मिकभिक्षु], अभिधर्म का अध्ययन करने वाला  
भिक्षु, अभिधर्म में निष्णात भिक्षु — क्खु प्र. वि., ए. व. —  
तस्सेको आभिधम्मिकभिक्षु आचरियो अहोसि, ध. प. अड्ड.  
1.170; — क्खु द्वि. वि., ब. व. — ... अड्ड  
आभिधम्मिकभिक्षू पेसेसि, दी. नि. अड्ड. 2.209; —  
क्खूनं ष. वि., ब. व. — द्वित्रं आभिधम्मिकभिक्षूनं  
अभिधम्मं सज्झायन्तानं सरे निमित्तं गहेत्वा, ध. स. अड्ड.  
18.

**आभिधम्मिकगोदत्त** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, जो  
विनय में निष्णात माना जाता था — त्थेरो प्र. वि.,  
ए. व. — तस्मिञ्च सन्निपाते आभिधम्मिकगोदत्तत्थेरो  
नाम विनयकुसलो होति, पारा. अड्ड. 1.246; 2.29;  
आभिधम्मिकगोदत्तत्थेरो सीसच्छेदकस्साति, पारा. अड्ड.  
2.65.

**आभिन्दति** आ + √भिद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आभिनति],  
काटता है, तोड़ देता है, फाड़ देता है, खण्ड खण्ड कर  
देता है — न्देय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — पुरिसो तिण्हाय  
कुठारिया यतो यतो आभिन्देय्य, स. नि. 2(2).164;  
आभिन्देय्याति पहरेय्य पदालेय्य वा, स. नि. अड्ड. 3.50.

**आभिमुख्य** नपुं., अभिमुख का भाव. [आभिमुख्य], किसी के  
मुख की ओर अथवा उसके सामने रहना, उपरिस्थिति,  
अभिमुखीभाव — ख्ये सप्त. वि., ए. व. — लक्खणवाचकेन  
सह अभि पति इच्चेतेसं आभिमुख्ये ..., सद्. 3.776;  
आभिमुख्यविसिद्धुद्धकम्मसारुपुद्धिसु अभि. प. 1176; 1178,  
1180.

**आभिसमाचारिक / अभिसमाचारिक** नपुं., [बौ. सं.  
आभिसमाचारिक], शा. अ., अच्छे आचरण की ओर  
उन्मुख, उत्तम आचरण से सम्बद्ध, ला. अ.,  
आदिब्रह्मचरियक शीलों के अतिरिक्त तथा इन शीलों की  
अपेक्षा गौण माने गए शील अथवा विनय-शिक्षापद — कं  
प्र. वि., ए. व. — अधिको समाचारो अभिसमाचारो, तत्थ  
नियुत्तं, सो वा पयोजनं एतस्साति आभिसमाचारिक, विसुद्धि.  
महाटी. 1.30; आभिसमाचारिकमुच्चते, अभि. प. 431; ...

## आभिसेकिक

131

## आभुजति

अभिसमाचारोति उत्तमसमाचारो — अभिसमाचारो अभिसमाचारं वा आरब्ध पञ्जता अभिसमाचारिकसिक्खा, विनया. टी. 1.219; ... अभिसमाचारिकं आचिक्खिंसु, ध. प. अट्ठ. 2.255; आजीवद्धमकतो अवसेससीलस्सेतं अधिवचनं, विसुद्धि. 1.12; — आदिब्रह्मचरियक नपुं. अभिसमाचारिक एवं आदिब्रह्मचर्य नामक दो प्रकार के शील-प्रभेद — वसेन तू. वि., ए. व. — तथा आभिसमाचारिकआदिब्रह्मचरियकवसेन ..., विसुद्धि. 1.11; — वत्त नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आभिसमाचारिकवत्त], आभिसमाचारिक वर्ग के शीलों के पालन का व्रत — सत्त. वि., ए. व. — आभिसमाचारिकवत्ते पन परिपूरे सीलं परिपूरति, पारा. अट्ठ. 2.19; — सिक्खा स्त्री., कर्म. स., शिक्षा के रूप में ग्रहण करने योग्य अभिसमाचारिक शील, अभिसमाचार-शीलों अथवा उत्तम आचरण से सम्बद्ध शिक्षा — अभि विसिद्धो उत्तमो समाचारो अभिसमाचारो, अभिसमाचारोव अभिसमाचारिकोति च सिक्खितब्बतो सिक्खाति च आभिसमाचारिकसिक्खा अभिसमाचारं वा आरब्ध पञ्जता सिक्खा अभिसमाचारसिक्खा, विनया. टी. 1.219; — सील नपुं., सम्यक् कर्मान्त, सम्यक्-वाक् एवं सम्यक्-आजीव, इनके अन्तर्गत निर्दिष्ट आठ प्रकार के आदिब्रह्मचरियक शीलों के अतिरिक्त क्षुद्रक-अनुक्षुद्रक अन्य शील, परिपालनीय व्रतों के रूप में महावग्ग एवं चूळवग्ग में प्रज्ञप्त शील — यानि वा सिक्खापदानि खुद्धानुखुद्धानीति वृत्तानि, इदं आभिसमाचारिकसीलं ... खन्धक वत्तपरियापन्नं आभिसमाचारिकं, विसुद्धि. 1.12; यम्पिदं चेति यङ्गणवत्तं ... द्वे असीति खन्धकवत्तानि बुद्धसविधं महावत्तन्ति इमेसं वसेन आभिसमाचारिकसीलं वुच्चति, पारा. अट्ठ. 2.19.

आभिसेकिक / आभिसेकिय त्रि., अभिसेक से व्यु., सं. कृ. [आभिषेक], स्नान करने के स्थान पर, अथवा राजाओं के राज्याभिषेक की क्रिया के लिए निर्धारित स्थान पर छोड़ दिए गए (चीवर), स्नान अथवा राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त, पांच, दस अथवा तेईस प्रकार के पंसुकूलों की सूची में परिगणित एक पंसुकूल — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अपरानिपि पञ्च पंसुकूलानि — गोखायिकं, ..., आभिसेकिकं, गतपटियागतं, परि. 253; आभिसेकिकन्ति नहानद्धाने वा रज्जो अभिसेकद्धाने वा छड्ढितचीवरं, परि. अट्ठ. 173; दस पंसुकूलानीति सोसानिकं, पापणिकं, उन्दूरक्खायितं, उपचिकक्खायितं, अग्गिदङ्कं, गोखायितं,

अजिकक्खायितं, थूपचीवरं, आभिसेकियं, भतपटियाभतन्ति एतेसु उपसम्पन्नेन उस्सुक्कं कातब्बं, परि. अट्ठ. 183; पंसुकूलान्ति सोसानिकं, पापणिकं, रथियं, सङ्गारकूटकं, सोत्थियं, सिनानं, तित्थं, गतपच्चागतं, अग्गिदङ्कं, गोखायितं उपचिकक्खायितं, उन्दूरक्खायितं, अन्तच्छिन्नं, दसाच्छिन्नं, धजाहटं, थूपं समणचीवरं, सामुदियं, आभिसेकियं, पन्थिकं, वाताहटं, इद्धिमयं देवदत्तियन्ति तेवीसति पंसुकूलानि वेदितब्बानि, दी. नि. अट्ठ. 3.174.

आभुज पु., आ + वभुज से व्यु., क्रि. ना., प्रायः "पल्लङ्क" के साथ प्रयुक्त, मोड़ने की क्रिया, दबक, झुकाव, मोड़ — जे सप्त. वि., ए. व. — या पुब्बे बोधिसत्तानं, पल्लङ्कवरमाभुजे, निमित्तानि पदिस्सन्ति, बु. वं. 2.82; पल्लङ्कवरमाभुजेति वरपल्लङ्काभुजने, बु. वं. अट्ठ. 114.

आभुजति / आभुज्जति आ + वभुज का वर्त., प्र. पु., ए. व., 1. प्रायः "पल्लङ्क" के साथ प्रयुक्त, मोड़ता है, झुकाता है, पालथी लगा लेता है, पालथी लगा कर बैठ जाता है — भिक्खु पल्लङ्कं आभुजति, सट्ठ. 2.348; — जिं अद्य., उ. पु., ए. व. — पीतिया च अभिस्सन्तो, पल्लङ्कं आभुजिं तदा, बु. वं. 2.78; आभुजन्ति कतपल्लङ्को हुत्वा पुष्करासिम्हि निसीदिन्ति अत्थो, बु. वं. अट्ठ. 114; — जुं अद्य., प्र. पु., ब. व. — सम्पज्जाना समुद्वाय, सयने पल्लङ्कमाभुजुं, अप. 1.3; — जित्वा / जित्वान / जिज्जत्वा / जिज्जत्वा / ज्ज / ज्य / जिज्य पू. का. कृ., पालथी लगाकर, पर्यङ्कासन में बैठकर — आभुजित्वाति आबन्धित्वा, पारा. अट्ठ. 2.12; पल्लङ्कं आभुजित्वान निसीदि पुरिसुत्तमो, अप. 1.17; ... पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सति उपद्वपेत्ता ..., महाव. 29; अथस्स निसज्जाय दढहभावं अस्सासपरसासानं पवत्तनसुखतं आरम्भणपरिगृह्णायञ्च दस्सेन्तो पल्लङ्कं आभुजित्वाति आदिमाह, पारा. अट्ठ. 2.12; एकं पादं आभुजित्वा कतपल्लङ्कं, चूळव. अट्ठ. 132; 2. पीछे की ओर जाता है, घटता है, वापस पलटता है — महासमुदो आभुजति, जा. अट्ठ. 1.23; 3. मरोड़ देता है, सिकोड़ देता है, समेट लेता है, उलट-पलट देता है, तोड़-मरोड़ देता है — चित्तं परिकुपितं कायं आभुजति निम्भुजति सम्परिवत्तकं करोति मि. प. 237; — जित्वा पू. का. कृ. — कण्हसप्पो ... भोगं आभुजित्वा सत्तुं खादन्तो निपज्जि, जा. अट्ठ. 3.303; 4. चित्त को तीव्रता से एकाग्र करता है, मनन-चिन्तन करता है, मन में ले आता है, अनुचिन्तन करता है — विज्जाणधातु तत्थ तत्थ

## आभुजन

132

## आभोग

सम्पापयोगमन्वाय आभुजतीति, दी. नि. अष्ट. 1.163; धम्मार्म्मणवसेन आभुजित्वा धम्मदानं दस्सामि, चरिया, अष्ट. 279.

**आभुजन** नपुं., आ + भुज से व्यु., क्रि. ना. 1. मोड़ देने की क्रिया, मोड़, दबक, स. उ. प. के अन्त., पलङ्का. — नपुं., तत्पु. स., पालथी लगाकर बैठना — ने सप्त. वि., ए. व. — अज्जपेतन्ति अज्ज तव पल्लङ्काभुजनेपि एतं भयं न होतेवाति अत्थो, बु. वं. अष्ट. 116, पै. व. अष्ट. 191; 2. अनुचिन्तन, सोच-विचार, मनन, चित्त को आलम्बन की ओर मोड़ देना — तो प. वि., ए. व. तस्सेव आभुजनतो आभोगो, विभ. अष्ट. 382.

**आभुजित** त्रि., आ + भुज का भू. क. कृ., 1. मोड़ा हुआ, वक्र किया हुआ — तेन पु. तृ. वि., ए. व. — वजिरासने निसिन्नकालतो पट्टाय सकिम्पि अनुद्वहित्वा यथाआभुजितेन एकेनेव पल्लङ्गेन, उदा. अष्ट. 26, 2. मन द्वारा अनुचिन्तित, मन में लाया हुआ — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — परित्तानि अभिभूय तानि चे कदापि वण्णवसेन आभुजितानि होन्ति ..., म. नि. टी. (म.प.) 2.122.

**आभुजी** स्त्री., भोजपत्र नामक एक वृक्ष — भुजपत्तो तु आभुजी, अभि. प. 565; भूजपत्ते इति ख्याते सुन्दरतचे रुक्खे, यस्सतचे मन्तक्खरानि लिखन्ति, अभि. प. सूची 39(रो.); — नो प्र. वि., ब. व. — मोचा कदली बहुकेत्थ सालियो, पवीहयो आभूजिनो च तण्डुला, जा. अष्ट. 5.401; आभूजिनोति भुजपत्ता, जा. अष्ट. 5.402; — परिवारित त्रि., ब. स., भोजपत्र के वृक्षों से घिरा हुआ — तो पु. प्र. वि., ए. व. — कदलीधजपञ्जाणो, आभुजीपरिवारितो, जा. अष्ट. 5.186.

**आभोग'** पु., [आभोग], पूर्णता, पूर्ण आनन्द, पूर्ण भोग — आभोगो पुण्णतावज्जे ..., अभि. प. 1083; — मत्त नपुं., आभोगमात्र, केवल उपभोग, केवल आनन्द का अनुभव — आभोगमत्तमेव हेत्थ पमाणं, कट्ठा. 219.

**आभोग'** 1. पु., आ + भुज से व्यु., क्रि. ना. [आभोग], शा. अ., मुड़ाव, झुकाव, लपेट, घुमाव, घेरा, परिधि, कुण्डलन, ला. अ., मानसिक प्रवृत्ति, मन का लगाव, मनसिकार, मन में चढ़ा लेना, अभिरुचि, मानसिक अनुचिन्तन, मानसिक प्रत्यय, ध्यान — गो प्र. वि., ए. व. — यदेव तत्थ सुखमिति चेतसो आभोगो, एतेनेतं ओळारिकं अक्खायति, दी. नि. 1.32; चेतसो आभोगोति ज्ञाना बुद्धाय तस्मिं सुखे पुनप्पुनं चित्तस्स आभोगो मनसिकारो समन्नाहारोति, दी. नि. अष्ट.

1.104; — गं द्वि. वि., ए. व. — ... एवं आभोगं कातुम्पि वट्ठति, पारा. अष्ट. 1.226; अनापुच्छा वा आभोगं वा अकत्वा अन्तोगम्ये वा असंवृतद्वारे बहि वा निपज्जन्तानं आपत्ति, पारा. अष्ट. 1.226; 225; — गेन तृ. वि., ए. व. — पच्छिमस्स आभोगेन मुत्ति नत्थि, पाचि. अष्ट. 39; — गे सप्त. वि., ए. व. — 'किमिदं अन्धकार'न्ति ? सत्तानं आभोगे उप्पन्ने ..., स. नि. अष्ट. 1.195; 2. त्रि., आभोग करने वाला, मानसिक प्रत्यय बनाने वाला, मनन करने वाला, अनुचिन्तन का विषय बनाने वाला — स्स पु., प्र. वि., ए. व. — आभोगस्स होति ... समन्नाहारन्तस्स होति ..., कथा. 287; ननु आवट्ठेन्तस्साति वारे आभोगस्साति आभोगवतो, कथा. अष्ट. 194; स. उ. प. के रूप में अत्था., अना., अन्ता., चित्ता., पटमा., पुब्बा., सा. के अन्त. द्रष्ट.; — ता स्त्री., भाव., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, चित्त के अनुचिन्तन की अवस्था, पठमा.- प्र. वि., ए. व., आलम्बन की ओर चित्त के जाने का प्रथम क्षण — पठमावज्जनज्जेव पठमाभोगतापि च, अभि. अव. 1327; — पच्चवेक्खणरहित त्रि., मानसिक अनुचिन्तन एवं प्रत्यवेक्षण से रहित — ता पु., प्र. वि., ब. व. — अज्जमज्जं आभोगपच्चवेक्खणरहिता एते धम्मा ..., विभ. अष्ट. 54; — सज्जा स्त्री., तत्पु. स. [आभोगसंज्ञा], मानसिक चिन्तन के विषय में संज्ञा-ज्ञान — य तृ. वि., ए. व. — आभोगसज्जायपि ज्ञानसज्जायपि एवसज्जी होति, दी. नि. अष्ट. 2.136; तथारूपस्स आभोगस्स असम्भवतो, समापत्तितो बुद्धितस्स आभोगो पुब्बभागभावनायवसेन ज्ञानक्खणे पवत्तं अभिभवनाकारं गहेत्वा पवत्तोति दट्ठब्बं, दी. नि. टी. 2.147(बर्मी.); — समन्नाहार पु., तत्पु. स., आभोग नामक ध्यान — रे सप्त. वि., ए. व. — ... अट्ठविधे आभोगसमन्नाहारे ... लभति, अ. नि. अष्ट. 2.102; सन्तं पणीतं सब्बसङ्गारसमथो सब्बपथिपटिनिस्सगो तण्हाकण्डयो विरागो निरोधो निब्बान'न्ति एवं अट्ठविधे आभोगसज्जिते समन्नाहारे, अ. नि. टी. 2.92; — समन्नाहारमनसिकार पु., कर्म. स., आभोग में विद्यमान एकाग्रता — विषयक मनसिकार (मन का ध्यान) — रो प्र. वि., ए. व. — 'ओळारिकोळारिके कायसङ्गारे पस्सम्भेमी'ति आभोगसमन्नाहारमनसिकारो नत्थि, पटि. म. अष्ट. 2.84; — गानुरूपं अ., क्रि. वि., मानसिक चिन्तन अथवा मनसिकार की अनुरूपता में — गोचरभावं गच्छन्तीति आभोगानुरूपं अनेककलापगतानि आपाथं आगच्छन्ति, अभि. ध. स. 131; — गाम्माव पु., तत्पु. स., मानसिक चिन्तन

का अभाव — तो प. वि., ए. व. — सत्ता सुखिता वा होतु  
... ति आभोगाभावतो, विसुद्धि. 1.315.

आम<sup>1</sup> अ., अनुमोदनार्थक, सहमतिसूचक अथवा स्वीकृत्यर्थक निपा. [आम, बौ. सं. आम/आम], ओह, हां, जी हां, हां ऐसा ही है, वास्तव में यही बात ठीक है, एकदम ऐसा ही है, वाक्यों में दो प्रकार से प्रयुक्त; क. इसके उपरान्त संबो. में आवुसो, भन्ते, अय्य, अय्ये, उपासक, दारक, देव, भगवा एवं महाराज आदि शब्द अवश्य रहते हैं — "आम, आवुसो"ति, ध. प. अ. 1.34; "आम, भन्ते"ति, ध. प. अ. 1.23; "अम्म, सेद्धिनो धीतासी"ति, "आम, ताता"ति, ध. प. अ. 1.111; "आमाय्य नवरत्तो कम्बलोति, पारा. 193; "आमाय्ये सिब्बिरस्सामी"ति, पाचि. 383; "आम, उपासका"ति, ध. प. अ. 1.6; "आम, देवा"ति, ध. प. अ. 1.275; "आम, दारक, जानामहं सिप्पानि, नि. प. 10; ख. संबो. में अन्त होने वाले नाम के प्रयोग के बिना कभी-कभी "आम" के तुरन्त उपरान्त स्वीकृति अथवा पूर्वकथन के अनुमोदन को सूचित करने वाला वाक्य अथवा वाक्यांश का प्रयोग मिलता है — आम, पब्बजितोह्मीति, महाव. 122; आम, मया गहिता"ति, ध. प. अ. 2.42; "किं पनेत्थ आपत्तिभावं न जानासीति? आम, न जानामी"ति, ध. प. अ. 1.34.

आम<sup>2</sup> अ./त्रि., केवल स. पू. प. में ही प्राप्त अमा से व्यु. अथवा उस का अप., अपना, निजी, अपने ही घर का — जन पु., कर्म. स., एक ही घर में रहने वाला, घरेलू आदमी, पारिवारिक जन, सम्बन्धी जन — नो प्र. वि., ए. व. — न नो समसब्रह्मचारीसूति एत्थ समजनो नाम सकजनो बुच्चति, अ. नि. अ. 3.124; पाठा. समजनो; — जात त्रि., "हां मैं आपकी दासी हूँ" इस प्रकार से "हां" कहने वाली या स्वीकारने वाली दासी से उत्पन्न दासी-पुत्र — तो पु., प्र. वि., ए. व. — यत्थ दासो आमजातो, ठितो थुल्लानि गज्जती"ति, जा. अ. 1.221; आमजातोति "आम, अहं वो दासीति एवं दासव्यं उपगताय आमदासिसङ्गाताय दासिया पुत्तो, जा. अ. 1.222; — दासीसङ्गाता स्त्री., "हां मैं आपकी दासी हूँ" ऐसा कहने या स्वीकारने के कारण "आमदासी" नाम से विख्यात या प्रसिद्ध दासी — य ष. वि., ए. व. — अहं वो दासीति एवं दासव्यं उपगताय आमदासिसङ्गाताय दासिया पुत्तो, जा. अ. 1.222.

आम<sup>3</sup> त्रि. आ + आम से व्यु. [आम], 1. कच्चा, अनपका, अपक्व (भोजन या फल) — मं' नपुं, द्वि. वि., ए. व. —

आमं पक्कञ्च जानन्ति, अथो लोणं अलोणकं, जा. अ. 3.338; — मं' प्र. वि., ए. व. — आमं पक्कवण्णि ..., आमं आमवण्णि ... चत्तारि अम्भानि, अ. नि. 1(2).122; पञ्चमे आमं पक्कवण्णीति आमकं हुत्वा ओलोकेन्तानं पक्कसदिसं खायति, अ. नि. अ. 2.322; 2. आवे में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) — मं प्र. वि., ए. व. — तं ते पञ्जाय भेच्चामि, आमं पत्तवं अस्मन्ना, सु. नि. 445; 3क. अनपचा, अधपचा (भोजन आदि), अपवित्र, 3ख. पु./नपुं, अजीर्णता अथवा अनपच का रोग — दुट्ठं आमासयगतं रसं आमं बुधा विदुं, भेषज्ज. 1.113 (रो.).

आमक त्रि., [आमक], उपरिवत्, क. कच्चा, नहीं पकाया हुआ — कं नपुं, द्वि. वि., ए. व. — अय्य, आमकं किर न गणहन्ती"ति, जा. अ. 4.61; जात वेदस्स ड्हम्माने आमकसङ्घट्टे आमकवण्णविनासे रसादीनं विनासो भवति, अभि. अव. 108; ख. नहीं पका हुआ — बालो आमकपक्कं, ... आमिसं, जा. अ. 5.361; आमकपक्कति आमकञ्च पक्कञ्च, जा. अ. 5.362; आमकं हुत्वा ओलोकेन्तानं पक्कसदिसं खायति, अ. नि. अ. 2.322; ग. आवे में नहीं पकाया हुआ (मिट्टी का बर्तन आदि) कच्चा — कानि नपुं, प्र. वि., ब. व. — यानि कानिचि कुम्भकारभाजनानि आमकानि चैव पक्कानि च सब्बानि तानि भेदनधम्मानी ..., स. नि. 1(1).116; — के सप्त. वि., ए. व. — कुम्भकारो आमके आमकमत्ते, म. नि. 3.160; — छिन्न त्रि., कर्म. स., कच्ची अवस्था में ही काट लिया गया, हरी भरी हालत में ही काट दिया गया — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — तित्तकालाबु आमकच्छित्रो ... होति सम्मिलातो, म. नि. 1.114; आमकच्छित्रोति अतितरुणकाले छित्रो, म. नि. अ. (भू.प.) 1(1).362; — तक्क नपुं, कर्म. स. [आमकतक्र], ताजा मट्ठा — क्के सप्त. वि., ए. व. — सचे आमकतक्के वा, खीरे वा पक्खिपन्ति तं, सामपाकनिमित्तम्हा, न तु मुच्चति दुक्कटा, विन. वि. 1457; आमकतक्कादीसु पन सयं न पक्खिपितब्बा, पाचि. अ. 102; — धञ्ज नपुं, कर्म. स. [आमकधान्य], नहीं पकाया हुआ अनाज, कच्चा अनाज — ज्जं द्वि. वि., ए. व. — ... रस्सकाले आमकधज्जं विज्जापेत्वा नगरं अतिहरन्ति द्वारद्वाने, पाचि. 360; इदं आमकधज्जं नाम मातरमि विज्जापेत्वा भुज्जन्तिया पाचितियमेव, पाचि. अ. 188; — पक्कभिवखाचरिया स्त्री., तत्पु. स., कच्चे तथा पके हुए भोजन को प्राप्त करने हेतु किया जा रहा भिक्षाटन — यं द्वि. वि., ए. व. — समुच्चकन्ति गामे



वा आमकपक्वभिक्षाचरियं अरञ्जे वा फलाफलहरणसङ्घातं उज्जं यो चरेय्य, जा. अट्ट. 4.60. — पटिग्गहण नपुं., तत्पु. स. [आमकधान्यप्रतिग्रहण], दान के रूप में कच्चे अनाज को स्वीकार करना — णा प. वि., ए. व. — आमकधञ्जपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो, दी. नि. 1.5; आमकधञ्जपटिग्गहणाति, सालिवीहियवगोधूमकङ्कवरक कुट्टसकसङ्घातरस सत्तविधस्सापि आमकधञ्जस्स पटिग्गहणा न केवलञ्च एतेसं पटिग्गहणमेव आमसनमि भिक्षूनं न वड्ढति, दी. नि. अट्ट. 1.72; — पूतिक त्रि., कर्म. स., कच्ची अवस्था में ही सड़ चुका — को पु., प्र. वि., ए. व. — जीवमतको नाम आमकपूतिको नाम चेस, पारा. अट्ट. 2.160; — फल नपुं., कर्म. स. [आमकफल], नहीं पका हुआ फल, कच्चा फल — लं द्वि. वि., ए. व. — आमकफलमि असेसेत्वा खादिसु, जा. अट्ट. 3.333; — भाजन नपुं., कर्म. स. [आमकभाजन], आवे में नहीं पकाया गया मिट्टी का कच्चा बर्तन — नं प्र. वि., ए. व. — निच्चं विभिञ्जतिह आमकभाजनं व, तेल. 33; — मंस नपुं., कर्म. स. [आमकमांस], कच्चा मांस, नहीं पकाया हुआ मांस — सं द्वि. वि., ए. व. — सो सूकरसूनं गन्त्वा आमकमंसं खादि ... पिवि, तस्स सो अमनुस्सिकाबाधो पटिप्पस्सम्भि, महाव. 278; आमकमंसञ्च ... अमनुस्सो खादित्वा च पिवित्वा च पक्कन्तो, तेन वुत्तं — तस्स सो अमनुस्सिकाबाधो पटिप्पस्सम्भीति, महाव. अट्ट. 352; — मंसपटिग्गहण नपुं., तत्पु. स. [आमकमांसप्रतिग्रहण], दान के रूप में बिना पकाए हुए मांस का स्वीकरण — णा प. वि., ए. व. — आमकमंसपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो, दी. नि. 1.5; आमकमंसपटिग्गहणाति एत्थ अञ्जत्र ओदिस्स अनुज्जाता आमकमंसच्छानं पटिग्गहणमेव भिक्षूनं न वड्ढति, नो आमसनं, दी. नि. अट्ट. 1.72; — मच्छभोजिन त्रि., [आमकमत्स्यभोजिन], कच्ची मछलियों का भोजन करने वाला — जिनो पु., ष. वि., ए. व. — उदकथलचरस्स पक्खिनो, निच्चं आमकमच्छभोजिनो, जा. अट्ट. 2.124; ध. प. अट्ट. 1.84; — मत्त त्रि., अभी तक पूरी तरह से नहीं पकाया हुआ (मिट्टी का बर्तन), अभी तक पूरी तरह से नहीं सूखा हुआ (बर्तन) — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — न वो अहं, आनन्द, तथा परक्कमिरस्सामि यथा कुम्भकारो आमके आमकमत्ते, म. नि. 3.160; आमकमत्तेति आमके नातिसुक्खे भाजने, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.122; — लोहित नपुं.,

कर्म. स. [आमकलोहित], ताजा खून, गर्म लहू — तं द्वि. वि., ए. व. — सो सूकरसूनं गन्त्वा आमकमंसं खादि, आमकलोहितं पिवि, महाव. 278; ... अनुज्जानामि, अमनुस्सिकाबाधो आमकमंसं आमकलोहितन्ति, महाव. 278; — साक नपुं., कर्म. स. [आमकशाक], कच्ची साग-सब्जी — कं द्वि. वि., ए. व. — आमकसाकं हत्थेन गहेत्वा खादितुं वड्ढति, विसुद्धि. 1.68.

**आमकसुसान** नपुं., कर्म. स., ऐसा भयंकर श्मशान जिसमें बिन जले अथवा अधजले शव छोड़ दिए जाते हों, श्मशान की दुर्गन्ध भरी अपवित्र भूमि, अनेक प्रकार की गन्धगी से भरपूर श्मशान-भूमि — नं प्र. वि., ए. व. — तस्स अलङ्कृतपटियत्तं ... तं महातलं अपविद्धनानाकुणपभरितं आमकसुसानं विय उपट्ठासि, जा. अट्ट. 1.71; यत्थ सुसाने छवसरीरं छड्डीयति, तं आमकसुसानं, विसुद्धि. महाटी. 1.338; आमकसुसाने पातितं, म. नि. अट्ट. (पू.प.) 1(1). 372; — नं द्वि. वि., ए. व. — इदानीं न आमकसुसानं नेत्वा गच्छन्तरे निपज्जापेहि, ध. प. अट्ट. 1.102; — ने सप्त. वि., ए. व. — आमकसुसाने तं यथा काकसुनखादयो न खादन्ति, तथा निपज्जापेत्वा रक्खापेत्वाति, ध. प. अट्ट. 2.59.

**आमगन्ध** 1. पु., कर्म. स. [बौ. सं. आमगन्ध], शा. अ., दुर्गन्ध, दुर्गन्ध से परिपूर्ण वस्तु, कच्चे मांस की गन्ध, शव जैसी गन्ध, सड़ायंध, विरायंध, ला. अ., मन में विद्यमान मलिन मनोभाव, क्लेश, अनुशय, आस्रव, प्राणि-हत्या, चोरी आदि पापकर्म — न्धो प्र. वि., ए. व. — आमगन्धो नाम मच्छमंसं, गहपतयोति, सु. नि. अट्ट. 1.259; अपि च खो आमगन्धो नाम सब्बे किलेसा पापका अकुसला धम्माति वत्ता ..., तदे.; न आमगन्धो ममकप्पतीति, सु. नि. 244; एसामगन्धो न हि मंसभोजनन्ति एस पाणातिपातादिअकुसलधम्मसमुदाचारो आमगन्धो विस्सगन्धो कुणपगन्धो ... ये ... हि उस्सन्नकिलेसा सत्ता, ते तेहि अतिदुग्गन्धा होन्ति, ... तस्मा एसामगन्धो, सु. नि. अट्ट. 1.263; — न्धे पु., द्वि. वि., ब. व. — आमगन्धे च खो अहं भोतो भासमानस्स न आजानामि, दी. नि. 2.177; 2. त्रि., क. दुर्गन्ध से परिपूर्ण, सड़ायंध से भरपूर, ख. हिंसा आदि दुराचार करने वाला, क्लेशों द्वारा मलिनीकृत — न्धं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — सो भुञ्जसी करसप आमगन्धं, सु. नि. 243; — न्धा पु., प्र. वि., ब. व. — आमगन्धा सकुणपगन्धा पूतिगन्धायेवाति वदति, दी. नि. अट्ट. 2.232.

## आमगन्ध

135

## आमत्तिक

आमगन्ध<sup>२</sup> पु., व्य. सं., बुद्ध के समय का वह तापस जिसे भगवान् बुद्ध ने आमगन्धसुत्त का उपेक्षित दिया तथा जो कारश्यप बुद्ध के काल में भी आमगन्ध नामक ब्राह्मण था - चो प्र. वि., ए. व. - अनुप्यत्रे भगवति आमगन्धो नाम ब्राह्मणो ... न कदाचि मच्छमसं खादति, सु. नि. अद्. 1.258; - च्छं द्वि. वि., ए. व. - एवं भगवा परमत्थतो आमगन्धं विस्सज्जेत्वा दुग्गतिमग्गभावञ्चस्स पकासेत्वा ... भुञ्जति, सु. नि. अद्. 1.266; - सञ्जी त्रि., अपवित्रता एवं दुर्गन्धमयता की संज्ञा रखनेवाला - ज्जी पु., प्र. वि., ए. व. - ... यस्मिं मच्छमसंभोजने तापसो आमगन्धसञ्जी दुग्गतिमग्गसञ्जी च हुत्वा तस्स अभोजनेन सुद्धिकामो हुत्वा तं न भुञ्जती, सु. नि. अद्. 1.266.

आमगन्धसुत्त नपुं., सु. नि. के चूळवग्ग का एक सुत्त, जिसमें भगवान् बुद्ध ने ब्राह्मणों में स्वीकृत 'आमगन्ध' शब्द के अर्थ का खण्डन कर पापकर्मों एवं अकुशल मनोभावों को 'आमगन्ध' घोषित किया था, सु. नि. 242-255; - वण्णना स्त्री., आमगन्धसुत्त की अद्भुतता या व्याख्या, सु. नि. अद्. 2.258-268.

आमगिद्ध / आमगिज्झ त्रि., कच्चे मांस के प्रति लालच रखने वाला, चारा के रूप में प्रयुक्त कच्चे मांस का लालची - द्दो पु., प्र. वि., ए. व. - यथापि मच्छो बळिसं, ... आमगिद्धो न जानाति, जा. अद्. 6.242; 264.

आमद्दु त्रि., आ + वमस का भू. क. कृ. [आमृष्ट], शा. अ., ठीक से स्पर्श किया गया, ला. अ., सुविचारित, सुचिन्तित - द्वा पु., प्र. वि., ब. व. - निरासङ्गचित्ताय पुनपुनं आमद्दु परामद्दु, दी. नि. अद्. 1.93; - मत्त त्रि., केवल स्पर्शमात्र किया हुआ - त्ता पु., प्र. वि., ब. व. - आमसना नाम आमद्दुमत्ता, पारा. 174.

आमण्ड पु., (वृक्ष के अर्थ में) / नपुं., (फल के अर्थ में) [आमंड]. क. अद्. के अनुसार आवला का वृक्ष या फल - ण्डं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आमण्डन्ति आमलकं म. नि. अद्. (उप.प.) 3.107; - ण्डो पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ आमण्डोति आमलकरुक्खो, बु. वं. अद्. 269; - ण्डानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. - संयथापि, भिक्खवे चक्खुमा पुरिसो पच्च आमण्डानि हत्थे करित्वा पच्चवेक्खेय्य, म. नि. 3.144; ख. संस्कृत शब्दकोशों एवं अभि. प. के अनुसार रेंडी का पौधा या फल - ण्डो पु., प्र. वि., ए. व. - एरण्डो तु च आमण्डो, अभि. प. 566; - स्स ष. वि., ए. व. - आमण्डस्स इदं फलं, अप. 1.95.

आमण्डगामणी पु., श्रीलङ्का का एक शासक - णी प्र. वि., ए. व. - आमण्डगामणी भयो महादाठिक अच्चये, म. वं. 35.18; - पुत्त पु., तत्पु. सं., राजा आमण्डगामणी का पुत्र - तो प्र. वि., ए. व. - आमण्डगामणीपुत्तो बूढाभयो ति विस्सुतो, दी. वं. 21.38.

आमण्डधीतु स्त्री., आमण्डगामणी अभय नामक एक सिंहली राजा की पुत्री - ता प्र. वि., ए. व. - आमण्डधीता चतुरो मासे रज्जं अकारपि, म. वं. 35.14.

आमण्डभागिनेय्य पु., आमण्डगामणी अभय नामक सिंहली शासक का भाज्या - य्यो प्र. वि., ए. व. - आमण्डभागिनेय्यो तु सीवलं अपनीय नं, म. वं. 35.15.

आमण्डलिय / आमण्डलिक नपुं., पानी के बीच की मंवर, जल-आवर्त या मण्डल - यं द्वि. वि., ए. व. - गावो मज्जेगङ्गाय नदिया सोते आमण्डलियं करित्वा तत्थेव अनयब्बसनं आपज्जिंसु, म. नि. 1.290.

आमण्डसारक 1. पु., तत्पु. सं. [आमण्डसारक], आवले का तूँबा या आवले से बना पात्र, 2. त्रि. आवला के फल वाला - को प्र. वि., ए. व. - आमण्डसारको आमलकफलमयोति वदन्ति, वजिर. टी. 109; तैलभाजनेसु ... अलाबुके वा आमण्डसारके वा तपेत्ता इत्थिरूपं पुरिसरूपञ्च अवसेसं सब्बमि वण्णमद्दुकम्मं वट्टति, पारा. अद्. 1.234; आमण्डसारकेति आमलकेहि कतभाजने, सारत्थ. टी. 2.108; विसाणे नाकियं वापि, तथेवामण्डसारके, विन. वि. 3072.

आमण्डियमहीपति पु., कर्म. सं., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक शासक आमण्डगामणी अभय का ही एक अन्य नाम - ति प्र. वि., ए. व. - मंसकुम्मण्डकं नाम आमण्डियमहीपति, म. वं. 35.7.

आमत त्रि., आ + वमर का भू. क. कृ., लगभग मरा हुआ, अर्धमृत - तो पु., प्र. वि., ए. व. - यदा सो आमतो होति, \* त्याहं एवं वदामि, दी. नि. 2.249; आमतो होतीति अद्भुततो मरितुं आरब्धो होति, दी. नि. अद्. 2.361.

आमत्तिक पु., आमत से व्यु., मिट्टी से बने हुए बर्तनों का व्यापारी या स्वामी - का प्र. वि., ब. व. - आमतानि वुच्चन्ति भाजानानि, तानि येसं भण्डं ते आमत्तिका, पारा. अद्. 2.255; - कापण पु., तत्पु. सं., मिट्टी के बर्तनों की दुकान, घड़ों की दुकान अथवा व्यापार - णं द्वि. वि., ए. व. - पत्तवाणिज्जं वा समणा सक्कपुत्तिया करिस्सन्ति आमत्तिकापणं वा पसारस्सन्तीति, पारा. 364; आमत्तिकापणं

## आमदन

136

## आमन्तेति

वाति ... आमत्तिका, तेसं आमत्तिकानं ... कुलालभण्डवाणिजका  
पणन्ति अत्थो, पारा. अड्ड. 2.255; — णो प्र. वि., ए. व.  
— तेसं आपणो आमत्तिकापणो, पाचि. अड्ड. 179.

**आमदन** नपुं. आ + वमन्त से व्यु., क्रि. ना.  
[आमर्दन], रौंद देना, कुचल देना — तो प. वि., ए. व.  
— यस्स ख्वत्तासामिकस्स इदं माससस्सं धनं, तं अयं  
गोगणो ... भञ्जनतो, आमदनतो पुरेतरमेवाति अत्थो, वि.  
व. अड्ड. 264.

**आमन्तक** त्रि., आ + वमन्त से व्यु. [आमन्त्रक]. आमन्त्रण  
देकर पास में बुलाने वाला, बुलाने वाला — केसु पु., सप्त.  
वि., ब. व. — असद्धम्मवसेन हि आमन्तकेसु निमन्तकेसु  
विज्जमानेसु मातुगामो नाम न सक्का रक्खितुन्ति, जा.  
अड्ड. 1.283.

**आमन्तण/आमन्तन** नपुं. आ + वमन्त से व्यु., क्रि. ना.  
[आमन्त्रण], क. शा. अ., संबोधित करना, बुलाना,  
आवाज देकर पुकारना, निमन्त्रण, समालाप — ने सप्त.  
वि., ए. व. — कुण गुण आमन्तने, सद्. 2.536; साम  
स्वान्तने आमन्तने, सद्. 2.558; नास्स आमन्तने कोचि  
अन्तरायो अहोसीति इममत्थं वस्सेति, उदा. अड्ड. 351;  
**ख.** केवल व्याकरण के सन्दर्भ में, 1. अनु. के अनेक  
अर्थों में से एक — आणत्यासिद्ध अक्कोससपथयाचनविधि  
निमन्तणामन्तनाण्डिद्ध सम्पुच्छनपत्थनासु पञ्चमी, सद्.  
3.813; 2. विधि. के अनेक अर्थों में से एक — आमन्तणे  
इध भवं निसीदेय इच्चादि, सद्. 3.815; 3. संबो. वि. का  
अर्थ, संबो. कारक — आमन्तणइमी सायं सि यो येवा ति  
दुइस ... विभत्तियो, सद्. 1.60; — पद नपुं. तत्पु. स.  
[आमन्त्रणपद], संबो. वि. में प्रयुक्त पद — दानं ष. वि.,  
ब. व. — पठमाविभत्तियुत्तानं एकवचनपुथुवचनन्तानं  
आमन्तणपदानं दिट्ठत्ता ..., सद्. 3.895; — वचन नपुं.  
तत्पु. स., आमन्त्रण अथवा पुकारे जाने के अर्थ का कथन  
— नं प्र. वि., ए. व. — नाग नागस्साति एकं आमन्तनवचनं,  
सु. नि. अड्ड. 2.143; — ने सप्त. वि., ए. व. — ...  
आमन्तणवचने अड्ढमी विभत्ति, सद्. 1.60; — सज्ज त्रि.,  
ब. स. [आमन्त्रणसंज्ञक], आमन्त्रण संज्ञा वाला, आमन्त्रण  
कहा जाने वाला — उज्जं नपुं. प्र. वि., ए. व. — यं वत्थुं  
आलपति अभिमुखं करोति, तं आमन्तणसज्जं होति, सद्.  
3.713; — नाकारदीपन नपुं. बुलाए जाने के तरीके का  
प्रकाशन — नं प्र. वि., ए. व. — भिक्खवोति तेसं  
आमन्तनाकारदीपनं, स. नि. अड्ड. 1.27.

**आमन्तना/आमन्तणा** स्त्री., [आमन्त्रण], पुकार, बातचीत,  
सलाह-मशविरा, बात विचार — ना प्र. वि., ए. व. —  
आमन्तना होति सहायमज्जे, वासे ठाने गमने चारिकायं,  
सु. नि. 40; इदं मे देहीति आदिना नयेन तथा तथा  
आमन्तना होति, सु. नि. अड्ड. 1.67.

**आमन्तनिक/आमन्तणिक** त्रि., [आमन्त्रणीय], आमन्त्रण  
दिए जाने योग्य, बातचीत अथवा संताप करने योग्य,  
निमन्त्रण देने वाला, अनुरोध करने वाला — का स्त्री., प्र.  
वि., ए. व. — आमन्तनिका रज्जोहि सक्कस्स वसवत्तिनो,  
वि. व. 165; ... आमन्तनिका आलापसल्लापयोग्गा,  
कीठनकाले वा तेन आमन्तेतब्बा अम्हि, वि. व. अड्ड.  
76.

**आमन्तनीय** त्रि., आ + वमन्त का सं. कृ. [आमन्त्रणीय].  
आमन्त्रित करने योग्य, दान आदि देने हेतु अनुरोध करने  
योग्य — यो पु., प्र. वि., ए. व. — गरु च आमन्तनीयो  
च, दातुमरहामि भोजनं, जा. अड्ड. 4.333; आमन्तनीयोति  
आमन्तेतब्बयुत्तको मया दिन्नं भत्तं गहेतुं अनुरूपो, जा.  
अड्ड. 4.335; आमन्तनीयोति आमन्तेतब्बयुत्तको मया दिन्नं  
भत्तं गहेतुं अनुरूपो, जा. अड्ड. 4.334.

**आमन्ता** स्वीकृति-सूचक सम्बोधनार्थक निपा., अभिधम्म में  
प्रयुक्त, संभवतः आम+भन्ते के संक्षिप्तीकृत रूप से निष्पन्न,  
जो हां श्रीमान्, ऐसा ही है श्रीमान् — ... पुग्गलो नुपलब्धति  
सच्चिकट्टपरमत्थेनाति आमन्ता, ध. स. अड्ड. 5; परवादी  
‘आमन्ता’ति पटिजानाति पटिजाननञ्जि कत्थवि ‘आम  
भन्ते’ति आगच्छति, कत्थवि ‘आमो’ति आगच्छति, इध पन  
‘आमन्ता’ति आगतं, मोहवि. 277.

**आमन्तापन** नपुं. आ + वमन्त के प्रेर. से व्यु., क्रि.  
ना., आमन्त्रण कराना, बुलवाना — नं प्र. वि., ए. व. —  
एत्थ किञ्चा पि सीलादिधम्मानं आमन्तापनं नत्थि, सद्.  
2.536.

**आमन्तापेति** आ + वमन्त का प्रेर. वर्त., प्र. पु., ए. व. —  
आमन्त्रित कराता है, बुलवाता है — पेय्य विधि., प्र. पु.,  
ए. व. — भिसक्कं सत्तकत्तं आमन्तापेय्य, मि. प. 149; —  
पीयति कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., आमन्त्रित कराया  
जाता है — गोणापीयति आमन्तापीयति अत्तनि पतिट्ठितो  
पुग्गलो दड्ढं सोतुं पूजितुञ्च इच्छन्तेहि जनेहीति गुणो,  
सद्. 2.536.

**आमन्तेति/आमन्तयति** आ + वमन्त का वर्त., प्र. पु., ए.  
व. [आमन्त्रयते], सम्बोधित करता है, बुलाता है, आवाज

## आमप्ययोग

137

## आमलक

देता है, निमन्त्रण देता है, अनुरोध करता है, परामर्श करता है, बिदा लेता है, संलाप करता है - सत्था तं ... आमन्तेतीति, चूळव. 319; आमन्तेतीति पक्कोसति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).3; - यामि उ. पु., ए. व. - हन्द् दानि, भिक्षवे, आमन्त्यामि वो, दी. नि. 2.92; - यतं अनु. प्र. पु., ए. व. - आमन्तयतन्ति आमन्तेतु जानापेतु, दी. नि. अड्ड. 1.239; - न्तेहि अनु. म. पु., ए. व. - मम वचनेन भदियं भिक्षुं आमन्तेहि, चूळव. 319; - यस्सु अनु. म. पु., ए. व., आत्मने. - आमन्तयस्सु ते पुत्ते, जा. अड्ड. 7.313; - न्तये विधि., प्र. पु., ए. व. - याव आमन्तये आती, मित्ते च सुहदज्जने, जा. अड्ड. 7.157; आमन्तये ... भो यक्खसेनापति, तदे., - न्तेसि/न्तयि अद्य., प्र. पु., ए. व. - आमन्तेसीति आत्तापि अभासि सम्बोधेसि, पारा. अड्ड. 1.150; सारथिं आमन्तयी राजा, पे. व. 660; - यित्थ तदे., आत्मने. -- आमन्तयित्थ राजानं सज्जयं धम्मिनं वरं, जा. अड्ड. 7.260; - न्तेसिं उ. पु., ए. व. - तत्रापि खो ताहं आनन्द, आमन्तेसिं, दी. नि. 2.89; - न्तियिं सु. पु., व. व. - सामो इति मं जातयो आमन्तियिं सु जीवन्तं, जा. अड्ड. 6.92; - न्तेतब्बा स्त्री., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. - कीळनकाले वा तेन आमन्तेतब्बा अहि, वि. व. अड्ड. 76; - न्तेत्वा पू. का. कृ. - थेरो वस्सूपनायिकदिवसे ते भिक्षू आमन्तेत्वा पुच्छि, ध. प. अड्ड. 1.6; - न्तिता त्रि., भू. क. कृ. - ता पु., प्र. वि., व. व. - आमन्तिता खतिया आनुयन्ता नेगमा देव जानपदा च, दी. नि. 1.123.

आमप्ययोग पु., प्रचुर, व्यापक अथवा एकजुट बनाने की क्रिया - गो प्र. वि., ए. व. - आमप्ययोगो नाम उरस्सन्नकिरिया, सह. 2.539.

आमभेदनिदस्सन नपुं., भैषज्य. का वह अध्याय, जिसमें अपच से सम्बद्ध रोगों का विवरण है, नवा अध्याय.

आमय पु., [आमय], रोग, व्याधि, बीमारी, विपत्ति, मनोव्यथा, हानि - आतङ्गो आमयो व्याधि गदो रोगो रुजापि च, अभि. प. 323; - रस्स ष. वि., ए. व. - तस्स तस्सामयस्सेव पटिसेधनमतकं, अव्यापज्जात्थिकं सेवे भैसज्जं स्नेहवज्जितो, सद्धम्मो. 397.

आमरिस पु., [आमर्ष], क्रोध, कोप, असहनशीलता - सो प्र. वि., ए. व. - अमरिसो आमरिसो, सह. 3.921.

आमलक 1. पु., [आमलक], आवला का वृक्ष - का प्र. वि., व. व. - अम्बा ... हरीतकी आमलका, जा. अड्ड. 7.293; 2. नपुं., [आमलक], आवले का फल - कं प्र./द्वि. वि., ए. व. - तेन खो पन समयेन जीवको कोमारभच्चो नखेन भैसज्जं ओलुम्पेत्वा आमलकञ्च खादति पानीयञ्च पिवति, महाव. 366; अनुजानामि, भिक्षवे, फलानि भैसज्जानि ... आमलकं, महाव. 277; अथ खो जीवको कोमारभच्चो काकं दासं एतदवोच हन्द्, भणे काक, आमलकञ्च खाद पानीयञ्च पिवस्सुति, महाव. 366; - कानि प्र./द्वि. वि., व. व. - पिण्डपाते ... अम्बे आमलकानि च, थेरगा. 938; - मत्त त्रि., व. स. [आमलकमात्राक], आवले के फल के जैसे आकार वाला - त्तियो स्त्री., प्र. वि., व. व. - कोलमतियो हुत्वा आमलकमतियो अहेसुं, आमलकमतियो हुत्वा बेलुवसत्ताहुकमतियो अहेसुं, स. नि. 1(1).177; - ता उपरिवत् - सासपमतियो पिठका उट्ठहिंसु ता अनुपुबेन ... आमलकमत्ता ... हुत्वा, ध. प. अड्ड. 1.181; - कक्क पु., तत्पु. स., केश-प्रक्षालन के लिए प्रयुक्त आवले के फल को पीसकर बनाया गया चूर्ण - व्केन तु. वि., ए. व. - आमलककक्केन सीसं मक्खेत्वा उदकं ओरुह ओनमित्वा सीसं धोवि, अ. नि. अड्ड. 2.184; - घट पु., तत्पु. स. [आमलकघट], आवले के फल से बनाया हुआ घड़ा - टो प्र. वि., ए. व. - आमलकतुम्बं आमलकघटो लाबुकतुम्बं ... भाजनीयं, चूळव. अड्ड. 83; - पट्ट पु., तत्पु. स. [आमलकपट्ट], आवले के आकार वाला पलंग पोश अथवा चादर, आवले के आकार की वस्त्रपट्टिका - ट्टो प्र. वि., ए. व. - धनपुष्को उण्णामयत्थरको, यो आमलकपट्टोतिपि वुच्चति, अ. नि. अड्ड. 2.167; - पत्त नपुं., तत्पु. स. [आमलकपत्र], आवले के वृक्ष की पत्ती - त्तानं ष. वि., व. व. - 'अहं खदिरपत्तानं वा ... आमलकपत्तानं वा पुटं करित्वा ...', स. नि. 3(2).501; - पलिबोध पु., तत्पु. स., केश-प्रक्षालन के लिए आवले के प्रयोग के कारण उत्पन्न अड़चन अथवा बाधा, केशों को बढ़ाकर रखने में उत्पन्न सोलह प्रकार की बाधाओं में से एक - धो प्र. वि., ए. व. - सोळसिमे, दारक, पलिबोधे दिस्वा केसमस्सु ओहारेत्वा पब्बजितो, ... आमलकपलिबोधो ... कप्पकपलिबोधो ... ऊकापलिबोधो मि. प. 10; - पिण्ड नपुं., तत्पु. स., केशों को धोने में प्रयुक्त आवले के चूर्ण का पिण्ड - ण्ड द्वि. वि., ए. व. - आमलकपिण्डं दत्त्वा गच्छ असुकट्टाने सीसं धोवित्वा आगच्छाहीति पेसिसि, अ. नि. अड्ड. 2.184; -

## आमलकतुम्ब

138

आमायदास

**फलमय** त्रि., आवले के फलों वाला — यो पु., प्र. वि., ए. व. — 'आमण्डकसारको आमलकफलमयो'ति वदन्ति, वजिर. टी. 109; — **फाणित** नपु., आवले का सीरा, आवले की चाशनी — ते द्वि. वि., ब. व. — **अनापति** अमज्जञ्च होति मज्जवण्णं ... तं पिवति, ... आमलकफाणिते, पाचि. 150; — **मुत्ता** स्त्री., श्रीलङ्का के आठ प्रकार के मोतियों में से एक, आमलक नामक मोती — त्ता प्र. वि., ए. व. — **हयमुत्ता**, **गजमुत्ता**, **रथमुत्ता**, **आमलकमुत्ता**, **बलयमुत्ता** अङ्गुलिवैटकमुत्ता, ककुधफलमुत्ता, पाकतिकमुत्ताति, पारा. अङ्ग. 1.53; — **रुक्ख** पु., तत्पु. स. [आमलकवृक्ष], आवले का वृक्ष (फुरस नामक बुद्ध का बोधिवृक्ष) — **रुक्खो** प्र. वि., ए. व. — **आमलकरुक्खो** बोधि, जा. अङ्ग. 1.51; — **वट्ट** त्रि., [आमलकवृत्त], आवले के फल के समान वृत्ताकार (आमलक मुक्ता), स. प. के अन्त. — **दक्खिणावट्टसङ्हरतनञ्च आमलकवट्टमुत्तरतनञ्च**, जा. अङ्ग. 5.377; — **वट्टक/वट्टिका** त्रि., अनेक पैरों वाला पीठ अथवा आसन — कं प्र. वि., ए. व. — **अनुजानामि**, भिक्खवे, आमलकवट्टिकं पीठन्ति, चूळव. 275; **आमलकवट्टिकपीठं** नाम आमलकाकारेण योजित बहुपादकपीठं, चूळव. अङ्ग. 59.

**आमलकतुम्ब** नपु., तत्पु. स., आवले के फल से बना हुआ तूँवा — **म्बं** प्र. वि., ए. व. — **आमलकतुम्बं आमलकघटो लाबुकतुम्बं** ... भाजनीयं, चूळव. अङ्ग. 83.

**आमलकी** स्त्री., [आमलकी], आवले का पेड़ — **की** प्र. वि., ए. व. — **तस्सा अविदूरे आमलकी**, महाव. 35; **तं परिवारेत्वाहरीतकीआमलकी मरिचगच्छो च अहोसि**, जा. अङ्ग. 5.12; **हरीतकीआमलकीआदीसु ओसधीसु तालनाळिकेरादीसु तिणेषु वनजेड्डकेसु च वनप्पतिरुक्खेसु**, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(2).265; — **वन** नपु., तत्पु. स. [आमलकीवन], आवले के वृक्षों का उद्यान, आवलों का बाग — ने सप्त. वि., ए. व. — **एकं समयं भगवा चातुमायं विहरति आमलकीवने**, म. नि. 2.129.

**आमलचेतिय** नपु., व्य. सं., उत्तरी श्रीलङ्का में नागदीप में अवस्थित एक चैत्य का नाम — ये सप्त. वि., ए. व. — **उण्णलोमघरं चैव छत्तं आमलचेतिये**, चू. व. 42.62.

**आमसति** आ + षमस, वर्त., प्र. पु., ए. व. [आमृशति], शा. अ., (भोजन को) पकड़ता है, (वस्तुओं का) हाथ से स्पर्श करता है, गलता है, गुदगुदाता है, झपट्टा मारता है, खा

जाता है, ला. अ., विचार विमर्श करता है, चिन्तन करता है, मनन करता है, पर्यवेक्षण करता है — **कुमिं आमसति**, आपत्ति दुक्कटस्स, पारा. 54; **इत्थी च होति इत्थिसञ्जी सारत्तो च भिक्खु च न इत्थिया कायेन कायं आमसति** ... आपत्ति सङ्गादिसेसस्स, पारा. 175; — **न्ति** ब. व. — **वीहिं किरते नामसन्ती**ति, जा. अङ्ग. 4.61; — **साम** उ. पु., ब. व. — **न मयं वीहिं आमसामा**ति, जा. अङ्ग. 4.61; — **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. — **तस्मा तं बहून् वचनं उपादाय द्विक्खतुं आमसन्तो**, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(1).204; — **न्तिया** स्त्री., वर्त. कृ., च. वि., ए. व. — **अनापत्ति असञ्चिच्च, अजानित्वामसन्तिया**, विन. वि. 1987; — **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. — **निब्बत्ते सद्दे अदूरगते कोचि आमसेय्य, सह आमसनेन सद्दो निरुज्जेय्य**, मि. प. 281-82; — **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. — **थेय्यचित्तो आमसि**, पारा. 66; — **सिं** उ. पु., ए. व. — **अनामासानि आमसिं**, जा. अङ्ग. 2.299; — **सिरस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. — **को इमं वसलं दुग्गन्धं आमसिरस्सतीति**, पारा. 195; — **सितुं** निमि. कृ. — **काकमासको नाम यथा काकेहि आमसितुं सक्का** होति, एवं याव मुखद्वारा आहारेति, ध. स. अङ्ग. 424; — **सित्वा** पू. का. कृ. — **ओदपत्तकिनी नाम उदकपत्तं आमसित्वा वासेति**, पारा. 206; — **तब्ब** त्रि., सं. कृ. — **तो** प. वि., ए. व. — **मच्चुना मरणेण आमसितब्बतो आमसिं**, उदा. अङ्ग. 96.

**आमसन** नपु., आ + षमस से व्यु., क्रि. ना., स्पर्श, अनुचिन्तन, सोच विचार — **भुसत्थे पटिलोमत्थे विक्कमामसनादिसु**, अभि. प. 1164; — **नं** प्र. वि., ए. व. — **उब्भजाणुमण्डलं आमसनं वा परामसनं वा गहणं वा छुपनं वा पटिपीळनं वा**, पाचि. 287.

**आमसना** स्त्री., स्पर्श करना, ग्रहण करना, विचार करना, अनुचिन्तन करना — **ना** प्र. वि., ए. व. — **आमसना नाम आमडुमत्ता**, पारा. 174; **आमसना**, **परामसना**, **ओमसना**, **उम्मसना**, **तदे**, **आमसना परामसना**ति आदिना ... वुत्तं, पारा. अङ्ग. 2.110.

**आमसब्रह्मचारी** आम<sup>१</sup> के अन्त. द्रष्ट.

**आमा** स्त्री., घर की दासी, घरेलू नौकरानी — **आमा आमा आमायो**, सद्. 1.260.

**आमायदास** पु., जन्म से ही दास, दासी की कोख से उत्पन्न घरेलू नौकर — **सा** प्र. वि., ब. व. — **आमायदासापि भवन्ति हेके**, धनेन कीतापि भवन्ति दासा, जा. अङ्ग. 7.178;

## आमायदासी

139

## आमिसगत

तथ आमायदासाति दासिया कुच्छिम्हि जातदासा, जा. अट्ट. 7.178.

आमायदासी स्त्री., घरेलू दासी, घर की दासी से उत्पन्न लड़की या पुत्री – सी प्र. वि., ए. व. – यदि ते सुता बीरणी जीवलोके, आमायदासी अहुब्राह्मणस्स, जा. अट्ट. 6.140; आमायदासीति गोहदासिया कुच्छिम्हि जातदासी, जा. अट्ट. 7.140.

आमावसेस नपुं., तत्पु. स. [आमावशेष], उदर में नहीं पचाए हुए भोजन का शेष भाग – सं द्वि. वि., ए. व. – आमावसेसं पाचेति, महाव. 297; आमावसेसं पाचेतीति सचे आमावसेसकं होति, तं पाचेति, अ. नि. अट्ट. 3.79.

आमावासी स्त्री., [अमावासी, अमावस्या, अमावसी], महीने के कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, अमावस्या की तिथि, द्रष्ट., अङ्गमासी के अन्तः.

आमास पु., आ + अस से व्यु., क्रि. ना. [आमर्श], विचार विमर्श, भोजन-ग्रहण – सं द्वि. वि., ए. व. – सेनासनपरिभोगे पन आमासमि अनामासमि सब्बं वट्ठति, कङ्का. अट्ट. 249.

आमासय पु., तत्पु. स. [आमाशय], पेट में वह स्थान, जहाँ पर अनपचा भोजन सञ्चित रहता है, पेट, उदर का ऊपरी भाग – यं द्वि. वि., ए. व. – यथा ... पक्कासयं अज्झोत्थरित्वा आमासयं उक्खिपित्वा, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.132-33.

आमिस नपुं., [आमिष, वै., आमिस्], शा. अ., मांस, ला. अ. 1. आहार, विषय, शिकार के लिए चारा, शिकार, खाने योग्य भोजन, प्रतिज्ञात पुरस्कार, 2. सांसारिक सम्पत्ति, सुखद एवं प्रिय वस्तु, लाभ, लालच, भौतिक आवश्यकताएं, तृष्णा, पांच काम भोगों के विषय में तृष्णा – सं<sup>1</sup> प्र. वि., ए. व. – थो मंसं आमिसं पिसितं भवे, अभि. प. 280; 1104; मच्चुनो आमिसं दुरतिवत्तन्ति ते अरियपुग्गला अघस्स वट्ठदुक्खस्स मूलभूतं, उदा. अट्ट. 96; – सं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. – अमित्तमज्झे वसतो, तेसु आमिसमेसतो, जा. अट्ट. 3.274; आमिसन्ति खादनीयभोजनीयं, जा. अट्ट. 4.52; भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसीति, पाचि. 232; यथा च रसलोतो अन्धो भत्ते उपनीते यं किञ्चि समक्खिकमि निम्मक्खिकमि आमिसं आदियति, जा. अट्ट. 5.362; मच्छोव घसमामिसं, थेरगा. 749; मच्छोव घसमामिसन्ति आमिसं घसन्तो खादन्तो मच्छो विय, थेरगा. अट्ट. 2.241; आमिसं बन्धनज्जेतन्ति एते पञ्च कामगुणा नाम एवं इमस्स मच्छभूतस्स लोकस्स मारबालिसिकेन पक्खितं आमिसज्जेव, जा. अट्ट. 3.174; ते वै खणन्ति अघमूलं, मच्चुनो आमिसं

दुरतिवत्तन्ति, उदा. 85; आमिसं दुरतिवत्तन्ति ते अरियपुग्गला अघस्स वट्ठदुक्खस्स मूलभूतं, मच्चुना मरणेन आमसितब्बतो आमिसं, उदा. अट्ट. 95; आमिसमि दुविधं – निप्परियायामिसं, परियायामिसन्ति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).96; – से सप्त. वि., ए. व. – आमिसे पन, भन्ते, कथं पटिपज्जितब्बन्ति ? आमिसं खो सारिपुत्त, सब्बेसं समकं भाजेतब्बन्ति, महाव. 479; स. उ. प. के रूप में कामा., निप्परियाया., निरा., पच्चया., परियाया., मारा., लोका., वन्तलोका., वट्ठा., सा. के अन्तः द्रष्ट.

आमिसइद्धि स्त्री., तत्पु. स., उपभोग करने योग्य भौतिक सुखसाधनों की समृद्धि, पांच प्रकार के कामगुणों की प्रचुरता – द्वि प्र. वि., ए. व. – हेमा, ... इद्धियो, ... आमिसिद्धि च धम्मिद्धि च, अ. नि. 1(1).113.

आमिसकथा स्त्री., तत्पु. स., 1. भोजन अथवा भोजन-सामग्री के विषयों में बातचीत – यं सप्त. वि., ए. व. – आमिसकथायमेव आभिरमति, जा. अट्ट. 4.62; 2. चौवर, पिण्डपात आदि चार प्रत्ययों से सम्बद्ध विन. वि. के एक खण्ड का शीर्षक, विन. वि. 1160-1162.

आमिसकिञ्चिक्खनिमित्तं अ., क्रि. वि., थोड़े से आहार अथवा भोगसामग्री प्राप्त करने के लिए – आमिसकिञ्चिक्खहेतुति आमिसस्स किञ्चिक्खनिमित्तं, किञ्चि आमिसं पत्थेन्तोति अत्थो, पे. व. अट्ट. 95.

आमिसकिञ्चिक्खहेतु अ., उपरिवत् – अत्तहेतु वा परहेतु वा आमिसकिञ्चिक्खहेतु वा सम्पजानमुसा भासिता होति, म. नि. 1.360.

आमिसकोट्टास पु., कर्म. स., अपने द्वारा प्राप्य भाग के रूप में भौतिक सुख सामग्री, भोगसाधनों में अपना भाग – स्स ष. वि., ए. व. – धम्मकोट्टासस्सेव सामिनो भवथ, मा आमिसकोट्टासस्स, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).98.

आमिसखार नपुं., तत्पु. स., कोष्ठबद्धता या कब्ज के उपचार के लिए प्रयुक्त मादक पेय, सूखे भात से तैयार किया गया एक पेय – रं द्वि. वि., ए. व. – अनुजानामि, भिक्खवे, आमिसखारं पायेतुन्ति, महाव. 282; आमिसखारन्ति सुक्खोदनं ज्ञापेत्वा ताव छारिकाय पग्घरितं खारोदकं, महाव. अट्ट. 353.

आमिसगत त्रि., शिकार को पकड़ने के लिए चारा के रूप में प्रयुक्त (कांटा या बंसी) – तं पु., द्वि. वि., ए. व. – सेय्यथापि, भिक्खवे, बाळिसिको आमिसगतं बळिसं गम्भीरे उदकरहदे पक्खिपेय्य, स. नि. 1(2).205.

## आमिसगरु

140

## आमिसपटिसन्धार

आमिसगरु त्रि., ब. स., भौतिक भोग-सामग्रियों को अत्यधिक महत्व देने वाला - रु पु., प्र. वि., ए. व. - सत्था आमिसगरु आमिसदायादो आमिसेहि संसद्धो विहरति, ... उपेति, म. नि. 2.156.

आमिसगरुक त्रि., उपरिवत् - को स्त्री./पु., प्र. वि., ए. व. - रागचरितो दोसचरितो मोहचरितो भीरुको आमिसगरुको इत्थी सोण्डो पण्डको दारकोति, मि. प. 104; आमिसगरुको आमिसहेतु मन्तितं गुहं विवरति न धारेति, मि. प. 104. आमिसगिद्ध त्रि., तत्पु. स., शिकार के प्रति लालच रखने वाला, भौतिक भोगसाधनों के प्रति तृष्णा रखने वाला - द्वा पु., प्र. वि., ब. व. - ... आमिसगिद्धा आमिसचक्खुका ... अत्थि, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).281.

आमिसगिद्धी त्रि., उपरिवत् - द्विनी स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ओहाय पुत्ते निक्खमि, सीहीवामिसगिद्धिनी, जा. अट्ट. 7.333. आमिसचक्खु नपुं., तत्पु. स., अपने शिकार पर ही जमा कर रखी गई दृष्टि या आंख - ना तृ. वि., ए. व. - लुदेनामिसचक्खुना, दाठी दाठीसु पक्खन्ति, जा. अट्ट. 4.310.

आमिसचक्खु त्रि., ब. स., शिकार पर ही अपनी आंख को जमाकर रखने वाला, भौतिक भोगसाधनों पर पूर्णतया आंखों को जमाया हुआ - स्स पु., ष. वि., ए. व. - ... पापिच्छस्स इच्छापकतस्स आमिसचक्खुकस्स लोकधम्मगरुकस्स ..., महानि. 285; - का पु., प्र. वि., ए. व. - आमिसगिद्धा आमिसचक्खुका चतुपच्चयामिससत्थमेव आहिण्डमाना ... अत्थि, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).281.

आमिसचक्खुता स्त्री., भाव., भौतिक भोगसाधनों के प्रति तृष्णाशीलता - य तृ. वि., ए. व. - "बहुधनं लभिससामा"ति आमिसापेक्खताय जीवितवृत्तिं निस्साय कथयिंसूति, जा. अट्ट. 1.328; पाठा. आमिसापेक्खताय.

आमिसचाग पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों का त्याग अथवा उनका मुक्त दान - गो प्र. वि., ए. व. - आमिसचागो च धम्मचागो च, अ. नि. 1.110.

आमिसज्जतर नपुं., कर्म. स., भौतिक सुखसाधन, कामभोगों में से कोई एक भौतिक वस्तु, भिक्षु के लिए निर्धारित आवश्यक चार वस्तुओं (चीवर, पिण्डपात, सेनासन, भेसज्ज) में से कोई एक - रं प्र. वि., ए. व. - आमिसज्जतरं खो पनेत्तं, यदिदं पिण्डपातो, म. नि. 1.18; आमिसज्जतरन्ति चतुन्नं पच्चयामिसानं अज्जतरं, एकन्ति अत्थो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).102.

आमिसतण्हा स्त्री., कर्म. स., अपने चारे के प्रति तृष्णा, सांसारिक विषय-भोगों के प्रति तृष्णा - ण्हया तृ. वि., ए. व. - अज्जोहटो व बलिसं मच्चो आमिसतण्हया, सद्धम्मो. 610.

आमिसत्थं अ., लाभ या प्राप्ति के निमित्त, सांसारिक विषय-भोगों का आनन्द पाने के लिए - "आमिसत्थं मारावड्डनं भिन्दितुं अननुच्छविकं"ति, स. नि. अट्ट. 1.158.

आमिसत्थी त्रि., सांसारिक विषयभोगों की चाह रखने वाला/वाली - स्थिना तृ. वि., ए. व. - किञ्च गेहे परिच्चत्तं आमिसं आमिसस्थिना, सद्धम्मो. 374.

आमिसदान नपुं., तत्पु. स., भिक्षु के लिए चीवर, पिण्डपात, सेनासन एवं भेसज्ज, इन चार मूलभूत आवश्यक वस्तुओं का दान - नं प्र. वि., ए. व. - हेमानि, भिक्खवे, दानानि, ... आमिसदानञ्च धम्मदानञ्च, अ. नि. 1(1).110; आमिसदानन्ति चत्तारो पच्चया दिव्यनकवसेन आमिसदानं नाम, अ. नि. अट्ट. 2.61.

आमिसदायाद पु., तत्पु. स., सांसारिक विषयभोगों अथवा भौतिक सामग्रियों का उत्तराधिकारी - दा प्र. वि., ब. व. - किन्ति मे सावका धम्मदायादा भवेय्युं नो आमिसदायादाति, म. नि. 1.17; आमिसदायादाति धम्मस्स मे दायादा, भवथ, मा आमिसस्स, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).96.

आमिसन्तर त्रि., ब. स., सांसारिक विषय-भोगों को पाने की तृष्णा से युक्त, कामसुखों, भौतिक सुखसाधनों अथवा चीवर, पिण्डपात आदि को पाने हेतु उत्सुक - रो पु., प्र. वि., ए. व. - आमिसन्तरोति गिलान उपट्ठाति, अ. नि. 2(1).135; आमिसन्तरो आमिसहेतुको चीवरादीनि पच्चासीसमानो, अ. नि. अट्ट. 3.46.

आमिसपटिग्गह पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों अथवा चीवर, पिण्डपात जैसे आवश्यक उपकरणों का स्वीकरण - हेन तृ. वि., ए. व. - तत्र भगवा ... महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्तो ... परियोसापेति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).55; तत्थ ... वसन्तो महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्तो धम्मदानेन चस्स ... परियोसापेति, दी. नि. अट्ट. 1.196.

आमिसपटिसन्धार पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों के दान द्वारा सत्कार, चीवर आदि के दान के माध्यम से किया गया सम्मान अथवा मैत्रीभाव, दो प्रकार के सम्मानप्रद व्यवहारों में से एक - रो प्र. वि., ए. व. - पटिसन्धारनिदेसे आमिसपटिसन्धारो ति आमिसअलाभेन अत्तना सह परेसं

## आमिसपण्णाकार

141

## आमिससङ्गणहन

छिदं यथा पिहितं होति पटिच्छन्नं एवं आमिसेन, ध. स. अट्ट. 418; ... आमिसपटिसन्धारो च धम्मपटिसन्धारो च, अ. नि. 1(1).112; - रं द्वि. वि., ए. व. - तेहि एत्तकम्मि आमिसपटिसन्धारं अलभन्ता जीवितापि वोरोपेय्युं दी. नि. अट्ट. 1.76.77.

**आमिसपण्णाकार** पु., भौतिक पदार्थों का उपहार, चीवर आदि वस्तुओं की भेंट - रं द्वि. वि., ए. व. - न केवलञ्चेत् आमिसपण्णाकारं, इमं किर धम्मपण्णाकारम्मि पेसेसि, पारा. अट्ट. 1.54.

**आमिसपरिच्चाग** पु., तत्पु. स. [आमिसपरित्याग], सांसारिक वस्तुओं का उदारतापूर्वक दान, सांसारिक भोगसाधनों के प्रति उदारता - गो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, परिच्चागा, ... आमिसपरिच्चागो च धम्मपरिच्चागो, अ. नि. 1(1).110.

**आमिसपरिभोग** पु., तत्पु. स. [आमिसपरिभोग], सांसारिक भोगसाधनों का आनन्द के साथ उपभोग - गो प्र. वि., ए. व. - द्वे च परिभोगा - ... धम्मपरिभोगो आमिसपरिभोगोति, पारा. अट्ट. 2.248.

**आमिसपरियेड्ढि** स्त्री., तत्पु. स., सांसारिक विषय भोगों की तलाश अथवा इन्हें पाने की तीव्र लालसा - द्वि प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, भिक्षवे, परियेड्ढियो, ... आमिसपरियेड्ढि च धम्मपरियेड्ढि च, अ. नि. 1(1).112.

**आमिसपरियेसना** स्त्री., तत्पु. स. [आमिसपर्येषणा], उपरिवत् - ना प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, परियेसना, ... आमिसपरियेसना च धम्मपरियेसना, अ. नि. 1(1).112.

**आमिसपिण्ड** नपुं., तत्पु. स., भिक्षा में प्राप्त भोजन का पिण्ड - ण्डानं प. वि., ब. व. - तथा भिक्षासङ्घातानं आमिसपिण्डानं पातो पिण्डपातो, उदा. अट्ट. 204.

**आमिसपूजा** स्त्री., तत्पु. स., सांसारिक विषयभोग की वस्तुओं के दान द्वारा सम्मान, सांसारिक वस्तुओं का सम्मानसहित दान - जा प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, पूजा, ... आमिसपूजा च धम्मपूजा च, अ. नि. 1(1).112.

**आमिसपेक्खी** त्रि., शिकार की तलाश करने वाला, भौतिक सुखसाधनों को पाने की इच्छा रखने वाला - क्खी पु., प्र. वि., ए. व. - सीहोवामिसपेक्खीव, वनसण्डं विगाहय, जा. अट्ट. 7.278.

**आमिसमेसज्जादि** नपुं., भौतिक विषयभोग के उपकरण एवं औषधि इत्यादि, स. प. के अन्त. - सेसं पन आमिसमेसज्जादि सब्बं सब्बत्थ अन्तोसीमगतस्स पापुणाति, महाव. अट्ट. 389.

**आमिसमोग** पु., तत्पु. स., सांसारिक वस्तुओं का आनन्द के साथ उपभोग - गो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, भोगा, ... आमिसमोगो च धम्ममोगो च, अ. नि. 1(1).110.

**आमिसमक्खित** त्रि., शिकार पकड़ने हेतु प्रयुक्त चारे से लिप्त, चारे से युक्त - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आमिसगतन्ति आमिसमक्खितं, स. नि. अट्ट. 2.181.

**आमिसयाग** पु., तत्पु. स., सांसारिक वस्तुओं का उदारता के साथ दान - गो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, यागा, ... आमिसयागो च धम्मयागो च, अ. नि. 1(1).110; विलो. धम्मयाग.

**आमिसरतन** नपुं., तत्पु. स., बहुमूल्य सांसारिक वस्तुएं, भौतिक धनसम्पदा-रूपी रत्न - नं प्र. वि., ए. व. - द्वेमानि रतनानि, आमिसरतनञ्च धम्मरतनञ्च, अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मरतन.

**आमिसलाम** पु., तत्पु. स., भौतिक धनसम्पदा का लाभ, चीवर, पिण्डपात आदि का लाभ, भिक्षा में भोजन का लाभ - मो प्र. वि., ए. व. - तत्थ ... पारुपित्वा च पिण्डाय चरतो आमिसलाभो सीतस्स पटिघातायाति आदिना नयेन ... नाम, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).275.

**आमिसलोल** त्रि., तत्पु. स., विषयभोग-जनित सुख के प्रति लगाव रखने वाला - ला स्त्री., प्र. वि., ब. व. - इत्थियो ... आमिसलोला भविस्सन्ति, जा. अट्ट. 1.323.

**आमिसवुद्धि** स्त्री., तत्पु. स. [आमिसवृद्धि], सांसारिक सुख-साधनों की प्रचुरता, भौतिक सम्पदा की समृद्धि - द्वि प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, बुद्धियो, ... आमिसवुद्धि च धम्मवुद्धि च, अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मवुद्धि.

**आमिसवेपुल्ल** नपुं., भाव., तत्पु. स. [आमिसवैपुल्य], भौतिक सुख-साधनों की प्रचुरता - ल्लं प्र. वि., ए. व. - द्वेमानि वेपुल्लानि ... आमिसवेपुल्लञ्च धम्मवेपुल्लञ्च, अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मवेपुल्ल.

**आमिससंविभाग** पु., तत्पु. स., भौतिक संपदा का उचित बटवारा - गो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, संविभागा, ... आमिससंविभागो च धम्मसंविभागो, अ. नि. 1(1).110; विलो. धम्मसंविभाग.

**आमिससंसद्ध** त्रि., तत्पु. स., कच्चे भोजन से मिश्रित - द्वं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - अथ आमिससंसद्धं गृहत्वा उपितं सचे, विन. वि. 1384; 2680.

**आमिससङ्गणहन** नपुं., तत्पु. स., सांसारिक भोगों को पूरा करने वाली वस्तुओं को संग्रह करना - नेन तृ. वि., ए.



## आमिससन्धार

142

## आमुत्त

व. - आमिससङ्ग्रहनेन अञ्जे सिस्सादिके पोसेतु  
अनुत्पुक्कताय अनञ्जपोसिनो, उदा. अहु. 162.

आमिससन्धार पु., तत्पु. स., भोगसामग्री के दान द्वारा  
स्वागत, दो प्रकार के स्वागतों में से एक - रो प्र. वि.,  
ए. व. - द्वेमे, सन्धारो, ... आमिससन्धारो च धम्मसन्धारो  
च, अ. नि. 1(1).112.

आमिससन्निचय पु., तत्पु. स., भौतिक सुख देने वाली  
सामग्री का संघय - यो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, सन्निचया,  
... आमिससन्निचयो च धम्मसन्निचयो च, अ. नि.  
1(1).113; विलो. धम्मसन्निचय.

आमिससन्निधि पु., तत्पु. स., विभिन्न प्रकार की भोगसाधन-  
सामग्री का भण्डारण, गृहस्थ जीवन में उपयोगी वस्तुओं  
का भण्डारण - धिं द्वि. वि., ए. व. - अन्नसन्निधिं  
पानसन्निधिं वत्थसन्निधिं यानसन्निधिं सयनसन्निधिं  
गन्धसन्निधिं आमिससन्निधिं इति वा इति, दी. नि. 1.6; -  
धि प्र. वि., ए. व. - भिक्खु मुण्डकुटुम्बिकजीविकं जीवति,  
न समणजीविकंन्ति, एवरूपो आमिससन्निधि नाम होति,  
दी. नि. अहु. 1.76.

आमिससम्भोग पु., तत्पु. स., दूसरों के साथ मिल कर  
भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले संसाधनों का  
भरपूर उपभोग - गो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, सम्भोगा,  
... आमिससम्भोगो च धम्मसम्भोगो, अ. नि. 1(1).110;  
विलो. धम्मसम्भोग.

आमिससिक्खापद नपुं., पाचि. के एक खण्ड का शीर्षक,  
पाचि. 82-84.

आमिसहेतु अ., लाभ के निमित्त, भौतिक लाभ पाने के  
निमित्त - आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्तीति,  
पाचि. 83; आमिसगरुको आमिसहेतु मन्तितं गुहं विवरति  
न धारति, मि. प. 104.

आमिसहेतुक त्रि., ब. स., भौतिक संसाधनों की प्राप्ति की  
इच्छा से संचालित - को पु. प्र. वि., ए. व. - आमिसन्तरोति  
आमिसहेतुको चीवरादीनि पच्चासीसमानो, अ. नि. अहु. 3.46.

आमिसातिथेय्य नपुं., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों द्वारा  
किया गया अतिथि-सत्कार, भौतिक वस्तुओं का उपहार  
देकर अतिथि-सत्कार - य्यं प्र. वि., ए. व. - द्वेमानि,  
आतिथेय्यानि, ... आमिसातिथेय्यञ्च धम्मातिथेय्यञ्च, अ.  
नि. 1(1).112-113; विलो. धम्मातिथेय्य.

आमिसानुकम्पा स्त्री., तत्पु. स., चीवर, पिण्डपात, शयनासन  
एवं औषधि, इन चार प्रत्ययों के दान द्वारा प्रदर्शित

अनुकम्पा - म्पा प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, अनुकम्पा, ...  
आमिसानुकम्पा च धम्मानुकम्पा, अ. नि. 1(1).111; दसमे  
चतूहि पच्चयेहि अनुकम्पनं आमिसानुकम्पा, अ. नि. अहु.  
2.61; विलो. धम्मानुकम्पा.

आमिसानुग्गह पु., तत्पु. स., जीवनयापन के चीवर आदि  
चार आवश्यक साधनों के दान द्वारा किया गया अनुग्रह या  
कृपा - हो प्र. वि., ए. व. - द्वेमे, अनुग्गहा, ...  
आमिसानुग्गहो च धम्मानुग्गहो, अ. नि. 1(1).111; नवमे  
चतूहि पच्चयेहि अनुग्गहनं आमिसानुग्गहो ..., अ. नि.  
अहु. 2.61.

आमिसानुप्पदान नपुं., तत्पु. स. [आमिसानुप्रदान], भौतिक  
सुख साधनों का दान, श्रमणों एवं ब्राह्मणों के सम्मान के  
पांच प्रकार के उपायों में से एक - नेन तु. वि., ए. व.  
- मेत्तेन कायकम्मेन मेत्तेन वचीकम्मेन मेत्तेन मनोकम्मेन  
अनावटद्वारताय आमिसानुप्पदानेन, दी. नि. 3.145.

आमिसेसना स्त्री., तत्पु. स., भौतिक आवश्यकता पूरी  
करने वाले चीवर आदि की तलाश अथवा उन्हें पाने की  
कामना - ना प्र. वि., ए. व. - द्वेमा, एसना, ...  
आमिसेसना च धम्मेसना च, अ. नि. 1(1).112; ततिये  
वुत्तप्पकारस्स आमिसस्स एसना आमिसेसना, अ. नि. अहु.  
2.62; विलो. धम्मेसना.

आमुखं अ., क्रि. वि. [आमुखं], आमने सामने, मुख के  
सामने - मारयन्ता तदा सत्तुसेनं आमुखमागतं, चू. वं.  
70.319.

आमुत्त त्रि., आ +√मुच का भू. क. कृ. [आमुक्त], शा.  
अ. 1., वह, जिस पर सब कुछ छोड़ दिया गया है  
2. वह, जिसके द्वारा किसी को बांधा गया है, ला.  
अ., विभूषित, सुसज्जित, युक्त, धारण किया गया, पहना  
हुआ - त्तं पु., द्वि. वि., ए. व. - हेमजालेहि  
कुम्भालङ्कारादिभेदेहि हत्थालङ्कारेहि चित्तं आमुत्तं महत्तं, ...  
आगताति, वि. व. अहु. 151; - मणिकुण्डल त्रि., ब. स.,  
मणि कुण्डलों द्वारा अलङ्कृत (व्यक्ति), वह, जिसके कान  
लटक रहे मोती के हार से जगमगा रहे हों - ले पु., द्वि.  
वि., ए. व. - ... राजानो आमुत्तमणिकुण्डले सज्जिताय,  
स. नि. अहु. 1.133; - ला पु., प्र. वि., ब. व. - सद्धि  
पुरिससहस्सानि, आमुत्तमणिकुण्डला, पे. व. 308;  
आमुत्तमणिकुण्डलाति नानामणिविधित्तकुण्डलधरा, पे. व.  
अहु. 117; आमुत्तमणिकुण्डलाति ओलम्बितमुत्ताहारमणि  
कञ्चित्तकण्णाति अत्थो, अप. अहु. 1.286; - मालामरण

## आमूलग

143

## आमोदना

त्रि., ब. स., मालाओं एवं आभूषणों से सुसज्जित, मालाओं में लगे हुए आभूषणों से अलङ्कृत, मालाओं के आभूषणों से सज्जित - णो पु., प्र. वि., ए. व. - ... रोमसो नाम खतियो, आमुत्तमालाभरणो, अप. 1.226; पाठा. आमुक्कमालाभरणो; आमुक्कमालाभरणोति आमुक्कमुत्ताहारकेयूरकटकमकुटकुण्डलमालो, बु. वं. अहु. 211; - यज्जसुत्त त्रि., ब. स. [आमुक्तयज्जसूत्र], यज्ज के सूत्र को धारण किया हुआ - त्तो पु., प्र. वि., ए. व. - दोणो ब्राह्मणोपि ... आमुत्तयज्जसुत्तो रत्तवट्टिका उपाहना ... पटिपज्जि, अ. नि. अहु. 2.290; - हत्थामरण त्रि., ब. स., अंगूठियों एवं कंगनों से विभूषित - णो पु., प्र. वि., ए. व. - आमुत्तहत्थाभरणो, सुवत्थो चन्दनभूसितो, जा. अहु. 7.242.

आमूलगं अ., क्रि. वि., ऊपर से लेकर नीचे तक, जड़ से लेकर शिखर तक, स. प. के अन्त. - आमूलगसमुम्भिन्नमहाभितिभरोनता, चू. वं. 88.95.

आमेण्डित/आमेडित त्रि., आ +√मिड के प्रेर. का भू. क. कृ. [आमेण्डित], 1. शब्द की पुनरुक्ति या आवृत्ति, ध्वनि की आवृत्ति, किसी बात को दो या तीन बार कहना अथवा दो प्रकार से कहना, 2. द्वित्व - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आमेण्डितं तु विज्जेय्यं द्वितिक्वचुमुदीरणं, अभि. प. 106; भये कोधे पसंसायं तुरिते कोतूहलच्छरे, हासे सोके पसादे च करे आमेण्डितं बुधो अभि. प. 107; पारा. अहु. 1.128; 3. अहु. में निम्नलिखित अर्थों का भी संकेत, क. अतिशय अथवा अधिकता - अतिसयत्थे च इदं आमेडितं, पारा. अहु. 2.186; अबलबलो वियाति अबलो किर बोन्दो बुच्चति, अतिसयत्थे च इदं आमेडितं, तस्मा अतिबोन्दो वियाति वुत्तं होति, पारा. अहु. 2.186; ख. निन्दा एवं असम्मान के प्रकाशन में भावों की आवृत्ति - चसहो अबुत्तसमुच्चयत्थो, तेन गरहासम्मानादीनं सङ्गहो दट्टब्बो पापो पापोति आदिसु हि गरहायं, अभिरूपक अभिरूपकाति आदिसु असम्माने, सद्. 1.40; ग. आदर अथवा सम्मान के भाव के प्रकाशन में आवृत्ति - ... तत्थ अभिरतियं आदरजननत्थं "अभिरम, नन्द, अभिरम, नन्दा"ति आमेडितवसेन वुत्तं, उदा. अहु. 139; घ. स्थिर अथवा विश्वस्त करने के अभिप्राय से आवृत्ति - पुच्छ भिक्खु, पुच्छ भिक्खूति थिरकरणवसेन आमेडितं कत्तं, स. नि. अहु. 1.41; ङ. सुदृढ़ करने के अभिप्राय से आवृत्ति, भय व्यक्त करने की दृष्टि से आवृत्ति - तत्थ कण्हो कण्होति

भयवसेन दळ्हीवसेन वा आमेडितं, जा. अहु. 4.163; च. बातचीत में शीघ्रता के कारण आवृत्ति - तत्थ तुरितालपनवसेन भिक्खु भिक्खूति आमेडितं वेदितब्बं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).32.

आमेण्डितवचन/आमेडितवचन नपुं., कर्म. स. [आमेण्डितवचन], पुनरावृत्ति से युक्त कथन, ध्वनि अथवा शब्द को दुहरा कर कहा गया वचन, दो बार कहा गया वचन, दुहराया गई बात, स. प. के रूप में - भयकोधादिसु उप्पन्नेसु कथितामेण्डितवचनवसेन वा, सद्. 1.38; 40; - नं प्र. वि., ए. व. - द्विवचनन्ति द्विक्खुत्तुं वचनं आमेडितवचनन्ति वुत्तं होति, सारत्थ. टी. 2.160; तुरितवसेन चेत्तं आमेडितवचनं, थेरगा. अहु. 1.119; - नेन तू. वि., ए. व. - एकेकलोमतो ... एकेकलोमतो ... ति उभयत्थापि आमेडितवचनेन सम्बलोमानं परियादिन्नाता ... होति, पटि. म. अहु. 2.11.

आमोद पु., आ +√मुद से व्यु., क्रि. ना. [आमोद], 1. आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी - आनन्दो पमुदामोदा सन्तोसो नन्दिसम्मदो अभि. प. 87; 2. सुगन्ध, खुशबू, सौरभ - सो त्वामोदो दूरगामी विस्सन्ता तीस्वितो पर, अभि. प. 145; आमोदो हासगन्धेषु, अभि. प. 1108; ... देवविमानकप्प पुप्फगन्धदामादीहि एकामोदपमोदं पासादं आरोपेत्वा ..., चरिया. अहु. 200; सुगन्धतेलदीपेहि आमोदचन्दनादिहि, चू. वं. 98.9; - दं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - सुवण्णवण्णं सम्बुद्धं आहुतीनं पटिगहं, रथियं पटिपज्जन्तं, आमोदमददिं फलं, थेरगा. अहु. 1.258; 277.

आमोदति आ +√मुद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आमोदते/आमोदयति], प्रसन्न या हर्षित होता है, आनन्द मनाता है - दिब्बसम्पत्तीहि आमोदति पमोदति, अ. नि. अहु. 2.101; - मानो पु., प्र. वि., ए. व. - आमोदमानो पकिरोति, देथ देथाति भासति, स. नि. 1(1).119; आमोदमानोति तुट्ठमानसो हुत्वा, स. नि. अहु. 1.146; - दिं अद्य., उ. पु., ए. व. - आकिण्णो देवकञ्जाहि, आमोदिं कामकामहं, अप. 1.305.

आमोदन नपुं., आ +√मुद से व्यु., क्रि. ना. [आमोदन, त्रि.], आनन्दित होना, प्रसन्न होना, स. प. के अन्त., आमोदनाकारो आमोदना, घ. स. अहु. 188; पटि. म. अहु. 2.105.

आमोदना स्त्री., आ +√मुद से व्यु., आनन्द अथवा हर्ष, प्रसन्नता का भाव - ना प्र. वि., ए. व. - पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो विति ओदग्यं अत्तमनता

## आमोदफलिय

144

आय

चित्तस्स, ध. स. 285; आमोदनाकारो आमोदना, ..., यथा वा भेसज्जानं वा तेलानं वा उण्होदकसीतोदकानं वा एकतोकरणं मोदनाति बुध्यति, ..., उपसग्गवसेन पन मण्डेत्वा आमोदना पमोदनाति वुत्ता, ध. स. अहु. 188; पटि. म. अहु. 2.105.

आमोदफलिय पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, अप. में संगृहीत गाथाओं का रचयिता एक स्थविर – यो प्र. वि., ए. व. – इत्थं सुदं आयस्मा आमोदफलियो थेरो इमा गाथायो अभासिस्थाति, अप. 2.90.

आमोदयति द्रष्ट., आमोदति के अन्त.

आमोदित त्रि., आ + रुद से व्यु. [आमोदित, आ + रुद + इत्च्], आनन्दभाव से भरपूर, हर्षोत्फुल्ल, अत्यधिक प्रसन्न – ता पु., प्र. वि., ब. व. – आमोदिता नरमरु, बुद्धबीजं किर अयं जा. अहु. 1.21; आमोदिता नरमरु, साधुकारं पवत्तयुं जा. अहु. 1.17; आमोदिता नरमरु, नमस्सन्ति कतञ्जली, अप. 2.68; – तं नपुं., प्र. वि., ए. व. – ... विय मुदुक्ं होति आमोदितं पमोदितं, अ. नि. अहु. 2.100; – पमोदित त्रि., आमोद एवं प्रमोद से युक्त – तो पु., प्र. वि., ए. व. – सम्मुदितो आमोदितपमोदितो होति, स. नि. अहु. 1.172.

आमोदेति/आमोदयति आ + रुद का प्रेर., प्र. पु., ए. व. [आमोदयति, आमोदयते], प्रसन्न करता है, सन्तुष्ट करता है, आनन्दित कर देता है, मुदिता-भावना से भर देता है, व्यवस्थित बना देता है, ध्यान के अंग प्रीति से आप्लावित कर देता है – सो समापत्तिक्खणे सम्पयुत्ताय पीतिया चित्तं आमोदेति पमोदेति, पारा. अहु. 2.32; ... आमोदेतीति ज्ञानचित्तसम्पयुत्ताय पीतिसम्बोज्झभूताय ... ज्ञानपीतिया तमेव ज्ञानचित्तं ... हट्ठपहट्ठाकारं पापेन्तो आमोदेति पमोदेति च. सारस्थ. टी. 2.216; – यामि उ. पु., ए. व. – चित्तं आमोदयामहं, थेरगा. 649; एवंभूतं कत्वा मम मेत्तचित्तं आमोदयामि अभिप्पमोदयामि ब्रह्मविहारं भावेमि, थेरगा. अहु. 2.204; – यं पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – आमोदयं पितरं मातरञ्च, सम्बो च ते नन्दतु आतिपक्खोति, जा. अहु. 5.31.

आय पु., आ + रुड् से व्यु. [आय], शा. अ., आ पहुंचना, आ जाना, अन्तःप्रवेश, आगमन, वृद्धि – यो प्र. वि., ए. व. – अयतीति आयो, क. व्या. 530; आयन्ति ततोति आयो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1)252; आयोति उपत्तिद्धानं, बु. वं. अहु. 86; आयकोसल्लादिनिदेसे यस्मा आयोति बुद्धि, विभ. अहु. 391; तत्तियत्तिके आयो नाम बुद्धि, विसुद्धि.

2.66; – यं द्वि. वि., ए. व. – ... आयन्ति आगमनं, अ. नि. अहु. 3.238; आयञ्च भोगानं विदित्वा, वयञ्च भोगानं विदित्वा ..., अ. नि. 3(1)110; ला. अ. क. उत्पत्ति स्थान, उद्भव-स्थल – आयोति उपत्तिदेसो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1)252; आयोति उपत्तिद्धानं, बु. वं. अहु. 86; ला. अ. ख. धनागम, आमदनी, राजस्व, प्राप्तद्रव्य, लाभ, नफा – यो प्र. वि., ए. व. – अथायो धनागमो, अभि. प. 356; यो बाहिरेसु जनपदेसु आयो सज्जायति ततो उपट्ठं अन्तेपुरे पवेसेथ, स. नि. 1(1)72; तं निस्साय आयोपिस्स मन्दो जातो, जा. अहु. 1.234; – यं द्वि. वि., ए. व. – ... एकस्मिं पञ्चकुलिके गामे परित्तकं आयं लभिसु, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2)244; – येन तृ. वि., ए. व. – ततो जातेन आयेन, महायज्जमकप्पयि, सु. नि. 984; – स्स ष. वि., ए. व. – बोधिसत्तस्स पटिसन्धिग्गहणकालतो पड्डाय रज्जो आयस्स पमाणं नाम नाहोसि, जा. अहु. 7.233; – या प. वि., ए. व. – ... वड्डिसङ्घाता सुखसङ्घाता वा अया अपेतत्ता अपायो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1)349; – ये सत्ता, वि., ए. व. – सेट्ठिनोपि निरन्तरं दानं देन्तस्स वोहारे अकरोन्तस्स आये मन्दीभूते धनं परिक्खयं अगमासि, जा. अहु. 1.223; – यानि नपुं. प्र. वि., ब. व. – एवं दिवसे दिवसे पञ्चसत्तसहस्सानि तत्थ उट्ठहिस्सन्ति, तानि सभावाणि आयानीति दस्सेति, उदा. अहु. 341; – यानं ष. वि., ब. व. – आयानम्पि हि चतूसु द्वारेसु चत्तारि, सभायं एकन्ति, उदा. अहु. 341; ला. अ. ग. कर, राजस्व का कर, उपहार, राजदेय – यं द्वि. वि., ए. व. – ततो आयं गहेत्वा मनुस्सा आगता, म. नि. अहु. (म.प.) 2.40; ला. अ. घ. द्यूतक्रीड़ा में प्रयुक्त (अन्दर की ओर आने वाला) भाग्यशाली पासा – या प्र. वि., ब. व. – पासकेसु आया नाम मालिकं सावट्टं बहुलं सन्तिभद्रादयो चतुवीसती, जा. अहु. 7.174; – येसु सत्ता, वि., ब. व. – राजा चतुवीसतिया आयेसु विचिन्तो, जा. अहु. 7.175; स. उ. प. के रूप में महा, लद्धा. के अन्त. द्रष्ट.; – कम्मिक पु., राजस्व का अधिकारी, कोषागार का अधिकारी, प्रबन्धक – कं द्वि. वि., ए. व. – आयकम्मिकं पक्कोसापेत्वा, मम गेहे कित्तकं धनन्ति पुच्छि, ध. प. अहु. 1.107; – कुसल त्रि., तत्पु. स., हितकारक धर्मों की वृद्धि में कुशल – लो प्र. वि., ए. व. – भिक्षु न आयकुसलो च होति, न अपायकुसलो च होति, न उपायकुसलो च होति, अ. नि. 2(2)133; न आयकुसलोति न आगमनकुसलो, अ. नि. अहु. 3.141;

— कोसल्ल नपुं, भाव. [आयकौशल्य], कुशल धर्मों के संग्रह में कुशलता, कुशलधर्मों की अभिवृद्धि तथा अकुशलधर्मों के प्रहाण के विषय में कुशलता — ल्लं प्र. वि., ए. व. — तीणि कोसल्लानि — आयकोसल्लं, अपायकोसल्लं, उपायकोसल्लं, दी. नि. 3.176; ... इमे धम्मं मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव अकुसलाधम्मा न उप्पज्जन्ति, ... उप्पन्ना च कुसला धम्मा भिच्चोभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्तीति — या तत्थ पज्जा पजानना ... इदं बुच्चति 'आयकोसल्लं', विभ. 371; — पापुणन नपुं, तत्पु. स., प्राप्ति, आमदनी का लाभ, आय की प्राप्ति — नं प्र. वि., ए. व. — दुब्बलभोजकानं परित्तकं आयपापुणनं विय चक्खुविज्जाणादीनं रुपदस्सनादिमत्तं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).244; — पोत्थक नपुं, तत्पु. स. [आयपुस्तक], धन की प्राप्ति को उल्लिखित करने वाली बही, आमदनी लिखने हेतु प्रयुक्त पुस्तक — कं द्वि. वि., ए. व. — अथस्स ... आयपोत्थकं आहरित्वा सुवण्णरजतमणिमुत्तादिभरिते गम्भे विवरित्वा, जा. अहु. 1.3; — भूत त्रि., वह, जो किसी की उत्पत्ति का स्थान बन गया है, स्रोतभूत — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — ते च पन आयभूते धम्मे एतानि तनोन्ति, ... होति, पटि. म. अहु. 1.72; — तो प. वि., ए. व. — सरीरज्झि असुचिसञ्चयतो, कुच्छित्तानं वा केसादीनञ्चेव चक्खुरोगादीनञ्च रोगसतानं आयभूततो कायोति बुच्चति, खु. पा. अहु. 29; — मुख नपुं, तत्पु. स. [आयमुख], शा. अ., (पानी के) अन्दर आने का प्रवेश द्वार — खं प्र. वि., ए. व. — ... उदकस्स आयमुखं दी. नि. 1.66; — खानि प्र. वि., ब. व. — आयमुखानि तानि पिदहेय्य, यानि च अपायमुखानि तानि विवरेय्य, अ. नि. 1(2).192; ला. अ. प्रवेश मार्ग, प्रवेशिका, मुहाना — खं प्र. वि., ए. व. — तेन सङ्घो पुज्जस्स आयमुखन्ति दस्सेति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.286; — खानि द्वि. वि., ब. व. — छ भोगानं आयमुखानि सेवति, महानि. 194; — वय पु., द्व. स. [आयव्यय], आमदनी और खर्च, लाभ एवं हानि, प्राप्ति एवं व्यय — यं द्वि. वि., ए. व. — आयवयं उपघारेत्वा, अ. नि. अहु. 3.267; — सम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आयसम्पत्ति], राजस्व की प्राप्ति के रूप में समृद्धि, आय से प्राप्त सम्पदा — त्ति द्वि. वि., ए. व. — अधम्मिको राजा रद्धस्स रसं ओजं न जानाति, आयसम्पत्तिं न लभति, जा. अहु. 5.233; — सम्पन्न त्रि., तत्पु. स., जल के अन्दर प्रवेश कराने वाले

द्वार या मुहाने से युक्त, जल के आगमन-द्वार से युक्त — न्नं प्र. वि., ए. व. — खेतं ..., न आयसम्पन्नं होति, न अपायसम्पन्नं होति, अ. नि. 3(1).70; आयसम्पन्नन्ति न उदकागमनसम्पन्नं, अ. नि. अहु. 3.228; — साधक पु., कर संग्राहक, कर वसूलने वाला अधिकारी — को प्र. वि., ए. व. — आयसाधको आयुक्तपुरिसो विय तन्निरिस्सितो नन्दिरागो अनुचरो नाम, ध. प. अहु. 2.259.

**आयजितब्ब** त्रि., आ + यज का सं. कृ., यज्ञ में देवताओं को आहुति देने योग्य — ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. — आयागोति आयजितब्बो, सु. नि. अहु. 2.125.

**आयत** त्रि., आ + यम का भू. क. कृ. [आयत], क. खींचा गया, आकृष्ट, दृढ़तापूर्वक बांधा गया, तान दिया गया अथवा खींचकर किसी के साथ जोड़ दिया गया, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, अच्चायत आदि के अन्त. द्रष्ट.; — तं नपुं, प्र. वि., ए. व. — तं मं वियायतं सन्तं, साखाय व लेताय व, जा. अहु. 3.330; वियायतन्ति ... वीणाय भमरतन्ति विय वित्तं आकङ्कितसरीरं, जा. अहु. 3.331; ख. लम्बा खींचा गया, अत्यधिक खींचा गया (स्वर या आवाज) — तेन पु., तृ. वि., ए. व. — तथा हि ब्राह्मणा कत्थचि कत्थचि रस्सद्धाने पि ... आयतेन ... सरेन वेदं पठन्ति, सद्. 1.91; ग. लम्बा, अतिविस्तृत, विकीर्ण, बड़ा, गम्भीर, बहुत दूर तक फैला हुआ सुदीर्घ — अथायतं दीघमथो, अभि. प. 707; — तो पु., प्र. वि., ए. व. — ताव अच्चुगगतो नेरु, आयतो वित्थतो च सो, अप. 1.18; आयतो उच्चतो च वित्थारतो च, अप. अहु. 1.232; आयतोति आयामसम्पन्नो, जा. अहु. 3.344; — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — अथ पल्लङ्कस्य च उतित्ठानस्स च अन्तरा पुरत्थिमपच्छिमतो आयते रतनचङ्कमे चङ्कमन्तो सत्ताहं वीतिनामैसि, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).86; — तं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — महापथविं उत्तरेन आयतं दक्खिणेन सकटमुखं सत्तथा समं सुविभत्तं, दी. नि. 2.172; — तं<sup>१</sup> नपुं, प्र. वि., ए. व. — पुरिससीसज्झि वट्टं होति, सूलेन पहरन्तस्स पहारो ठानं न लभति परिगतति, मच्छसीसं आयतं पुथुलं, पहारो ठानं लभति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).314; — तं<sup>२</sup> पु., द्वि. वि., ए. व. — वीवरं मं उदिस्स विय्यति, आयतञ्च करोहि वित्थतञ्च, पारा. 384; — तं<sup>३</sup> नपुं, द्वि. वि., ए. व. — आयतं वा संसारदुक्खं नयन्ति, पवत्तेन्ति, अभि. ध. वि. टी. 203; — रस्स ष. वि., ए. व. — आयतस्स वा संसारदुक्खस्स नयन्तो आयतनानि,

## आयत

146

## आयतन

खु. पा. अहु. 65; — ता नपुं. प्र. वि., ब. व. — नेतहेसुमभिनीलमायता, थेरीगा. 257; अभिनीला हुत्वा आयता, थेरीगा. अहु. 234; घ. संयत, नियन्त्रित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — मग्गञ्च पटियादेसि, आयतो सब्बदस्सिनो, अप. 2.257; ङ. लम्बी कालावधि तक फैला हुआ, — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — मयं खो अकुसलानं धम्मनं समादानहेतु एवरूपं आयतं आतिक्खयं पत्ता, यन्नून मयं कुसलं करेय्याम, दी. नि. 3.54; — तं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — आयतं वा संसारदुक्खं सवन्ति पसवन्तीतिपि आसवा, घ. स. अहु. 95; — स्स ष. वि., ए. व. आयतस्स च नयनतो आयतनं, पटि. म. अहु. 1.72; स. उ. प. के रूप में अच्छा, ईसका, कण्णा, तियोजना, पुण्णा, मज्झिमा, योजना, सद्धियोजना. के अन्त. द्रष्ट.; — तंस त्रि., ब. स. [आयतांश], लम्बे या बहुत बड़े पार्श्वभागों वाला, लम्बे किनारों वाला — तंसा पु., प्र. वि., ब. व. — वेळ्हरियथम्मा सत्तमुस्सितासे, सिलापवाळस्स च आयतंसा, मसारगत्त्ता सहलोहितङ्गा, थम्मा इमे जोतिरसामयासे, वि. व. 1242; आयतंसाति दीघंसा, अथा वा आयता हुत्वा अहुसोळसद्धत्तिसादिअंसवन्तो, वि. व. अहु. 288; — चक्खुनेत्त त्रि., ब. स. [आयतचक्षु], बड़ी आंखों वाला/वाली — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सिङ्गी मिगो आयतचक्खुनेत्तो, अट्ठित्थो विरिसयो अलोमो, जा. अहु. 2.83; आयतचक्खुनेत्तोति एत्थ दस्सनहेन चक्खु नयनहेन नेत्तं, आयतानि चक्खुसङ्घातानि नेत्तानि अस्साति आयतचक्खुनेत्तो, दीघअक्खीति अत्थो, जा. अहु. 2.284; — पण्ही त्रि., ब. स. [आयतपार्णि], बड़ी एड़ी वाला, लम्बी एड़ी वाला — ण्ही पु., प्र. वि., ए. व. — आयज्झि देव, कुमारो आयतपण्ही, दी. नि. 2.13; आयतपण्हीति दीघपण्हि, परिपुण्णपण्हीति अत्थो, दी. नि. अहु. 2.33; — पण्हिक त्रि., ब. स. [आयतपार्णि], उपरिवत् — के पु., द्वि. वि., ब. व. — दीघहुली तम्बनखे, सुभे आयतपण्हिके, ये पादे पणमिस्सन्ति, तोपि धञ्जा गुणन्धर अप. 2.203; — पम्ह त्रि., ब. स. [आयतपम्ह], लम्बी बरौनियों वाला, बड़ी बड़ी बरौनियों वाला/वाली — म्हे स्त्री., संबो., ए. व. — अपि दूरगता सरम्हसे, आयतपम्हे विसुद्धदस्सने, न हि मत्थि तया पियत्तरा, नयना किन्नरिमन्दलोचने, थेरीगा. 385; आयतपम्हेति दीघपखुमे, थेरीगा. अहु. 279; — ममु त्रि., ब. स. [आयतम्ह], लम्बी भौहों वाला, बड़ी बड़ी भौहों वाला — मू पु., प्र. वि., ब. व. — सण्हकेसा पुथुनलाटा

आयतभमू विसालक्खी, जा. अहु. 5.204; — स्सर त्रि., ब. स. [आयतस्वर], देर तक खींचे गए स्वर वाला, ऊंची आवाज करने वाला, स. प. के रूप में — ... आयतस्सरवसेन दूरे ठितपुरिसस्स आमन्तणकाले दूरद्वस्सालपनपदं भवति, सद्. 1.91.

**आयतक** त्रि., आयत से व्यु., लम्बा, देरी तक खींचा हुआ (स्वर), देर तक निष्पादित — को पु., प्र. वि., ए. व. — आयतको नाम तं तं वत्तं भिन्दित्वा अक्खरानि विनासेत्वा पवत्तो, चूलव. अहु. 47; — केन तु. वि., ए. व. — भिक्खू आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं गायन्ति, चूलव. 225; पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं भणन्तस्स ..., अ. नि. 2(1).230; आयतकेनाति दीघेन, परिपुण्णपदव्यञ्जनकं गाथावत्तञ्च विनासेत्वा पवत्तेन, अ. नि. अहु. 3.79; महासमुदो ... आयतकेनेव पपात्तो, चूलव. 393.

**आयतग** त्रि./नपुं., आयति + अग्न/आय + अग्न [आयताग्र], 1. भविष्य में उत्तम एवं महान फल देने वाला, 2. पुण्यफल देने के कारण अग्रगण्य — ग्गं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — पुञ्जमेव सो सिक्खेय्य, आयतगं सुखुदयं, इतिवु. 13; विपुलफलताय उक्कारफलताय आयतगं, पियमनापफलताय वा आयति उत्तमन्ति आयतगं, आयेन वा योनिसोमनसिकारादिप्पच्चयेन उक्कारतमेन अगन्ति आयतगं ... पुञ्जफलेन अगं पधानन्ति आयतगं, इतिवु. अहु. 69.

**आयतति** आ + रयत का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, उद्योग करता है, सक्रिय हो जाता है — न्ति ब. व. — चित्तचेतसिका धम्मा सेन सेन अनुभवनादिना, किच्चेन आयतन्ति उद्धहन्ति घट्टेन्ति वायमन्तीति वुत्तं होति, विभ. अहु. 42.

**आयतन** नपुं., आय से व्यु. [आयतन], शा. अ., स्थान, आवास, घर, प्रवेशस्थान, आश्रय, क्षेत्र, मिलनस्थल, आश्रयस्थल, एकजुट होने की जगह, उत्पत्ति का स्थल — गेहं चानिन्धि सदुमं, चेतियायतनानि, अभि. प. 207; 801; आयतति आयतञ्च संसारदुक्खं नयतीति आयतनं, उदा. अहु. 34; 154; इति सब्बथापिमे धम्मा आयतनतो, आयां तननतो, ... आयतनानीति वुच्चन्ति अपिच निवासङ्घानहेन, आकरहेन, समोसरणङ्घानहेन, सज्जातिदेसहेन, कारणहेन, च आयतनं वेदितब्बं, इतिवु. अहु. 301; — नं प्र. वि., ए. व. — यावता, अरियं आयतनं, यावता वणिप्पत्थो, इदं अग्ननगरं भविस्सति, पाटलिपुत्तं पुटभेदनं, महाव. 304;

## आयतन

147

## आयतन

यावता अरियं आयतनन्ति यत्तकं अरियमनुस्सानं ओसरणद्धानं नाम अत्थि, महाव. अट्ट. 356; यं यदायतनं मज्जेति, महाराज, यं यं समोसरणद्धानं दिजानं पाणरोधनं जीवितकखयकरं मज्जामि ..., जा. अट्ट. 5.342; खेतं तं न होति ... वत्थुं तं न होति ... आयतनं तं न होति ... अधिकरणं तं न होति यंपच्चयास्स तं उप्पज्जति अज्झतं सुखदुक्खन्ति, अ. नि. 1(2).184; विहिता सन्तिमे, पासा, पल्ललेसु जनाधिप यं यदायतनं मज्जे, दिजानं पाणरोधनं, जा. अट्ट. 5.341; - नं द्वि. वि., ए. व. - ... यक्खस्स रमणीये ठाने आयतनं कारापेत्वा ..., ध. प. अट्ट. 2.43; - ने सप्त. वि., ए. व. - मनोरमे आयतने, सेवन्ति नं विहङ्गमा, छायां छायात्थिका यन्ति, फलत्था फलभोजिनो, अ. नि. 2(1).38; ला. अ. 1. निवास-स्थान, आश्रय-स्थल, घर, आसन, क्षेत्र, प्रदेश, विभाग, वर्ग, श्रेणी - नं प्र. वि., ए. व. - सम्बाधोयं घरावासो, रजस्सायतनं इति, सु. नि. 408; रजस्सायतनन्ति ..., रागादिरजस्स उप्पत्तिदेसो, सु. नि. अट्ट. 2.100; - ने सप्त. वि., ए. व. - अत्थि खो मे इमेसु पच्चसु कामगुणेषु अज्जतरस्मिं वा अज्जतरस्मिं वा आयतने उप्पज्जति घेतसो समुदाचारो'ति, म. नि. 3.157; आयतनेति तेसुयेव कामगुणेषु किस्मिञ्चिदेव किलेसुप्पत्तिकारणे, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.119; ला. अ. 2. भूमि, आधारस्थल, स्रोत, हेतु-प्रत्यय, अवस्था, कारण - नं प्र. वि., ए. व. - रोगानं आयतनं, दी. नि. 3.138; सा धम्मधातु धम्मायतनपरियापन्ना, यं आयतनं अनासवं, नो च भवङ्ग, नेति. 53; - ने सप्त. वि., ए. व. - तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणिस्ससि, सति सतिआयतने, म. नि. 2.172; सति आयतनेति सति सतिकारणे, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.145; - नानि द्वि. वि., ब. व. - इमानेव पञ्चायतनानीति इमानेव पञ्च कारणानि, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.13; ला. अ. 3. ध्यानस्थ चित्त की एकाग्रता का आलम्बन अथवा क्षेत्र, अरूपध्यान में स्थित चित्त की अवस्था, चित्त की सामान्य अवस्था - नं' प्र. वि., ए. व. - असज्जसत्तायतनं नेवसज्जानासज्जायतनमेव दुतियं दी. नि. 2.54; तदायतनन्ति तं कारणं, ... निब्बानज्झि मग्गफलजाणादीनं आरम्भणपच्चयभावतो रूपादीनि विय चक्खुविज्जाणादीनं आरम्भणपच्चयभूतानीति कारणद्वेन आयतनन्ति बुच्चति, उदा. अट्ट. 316; - नं द्वि. वि., ए. व. - लोकुत्तरं आयतनं भावेति, ध. स. 552; आकासानञ्चायतनं ... विज्जाणञ्चायतनं ...

आकिञ्चज्जायतन ... नेवसज्जानासज्जायतनमेव, दी. नि. 2.55; पसादो आयतनं, पटि. म. 46; यो पसन्नभावो, इदं आयतनं, पटि. म. अट्ट. 1.204; ला. अ. 4. बाह्य जगत् के पदार्थों का मन के साथ स्पर्श कराने में द्वारभूत चक्षु, स्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय एवं मन, ये छ इन्द्रियां तथा इनके द्वारा क्रमशः ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य तथा धर्म नामक विषय, छ इन्द्रियां तथा इन इन्द्रियों के छ विषय - नं प्र. वि., ए. व. - खन्धधातुआयतनं, सङ्गतं जातिमूलकं दुक्खं, थेरगा. 474; - ना प्र. वि., ब. व. - एवं खन्धा च धातुयो, छ च आयतना इमे हेतुं पटिच्च सम्भूता, हेतुमङ्गा निरुज्झरे, स. नि. 1(1).159; - नानि द्वि. वि., ब. व. - तस्साहं वचनं सुत्ता, खन्धे आयतनानि च, थेरगा. 1264; - नानं ष. वि., ब. व. - ... आयतनानं पटिलाभो, दी. नि. 2.228; - नानि प्र. वि., ब. व. - अज्झातिकानि आयतनानि एको अन्तो, छ बाहिरानि आयतनानि दुतियो अन्तो विज्जाणं मज्जे, अ. नि. 2(2).106; छ अज्झातिकानि आयतनानि ..., छ बाहिरानि आयतनानि वेदितब्बानि, म. नि. 3.264; तण्हाय च पन दसरूपीनि आयतनानि पदद्धानं, नेति. 58; स. उ. प. के रूप में अग्या, (अग्निशाला), अज्जतिस्थिया, (बौद्धेतर धर्माचार्यों का आश्रयस्थल), अट्टा, (आठ घरों वाला), अनेका, (अनेक घरों वाला), अपविपुण्णा, अपुज्जा, अभिमा, अरज्जा, अरिया, असज्जसत्ता, आकासानञ्चा, आकिञ्चज्जा, इस्सरा, छट्ठा, छफस्सा, छला, जिह्वा, तदा, तित्था, थेरमहाथेरा, देवा, द्वादसा, धम्मा, धातु, के अन्त. इष्ट, स. पू. प. के रूप में, - नत्थ पु, तत्पु. स. [आयतनार्थ], आयतन (शब्द) का अर्थ अथवा अभिप्राय - त्थो प्र. वि., ए. व. - बुच्चते आकारत्थो आयतनत्थो, पेटको. 245; - नन्तर नपुं, तत्पु. स., आयतनो का विशिष्ट स्वरूप - रं प्र. वि., ए. व. - सुखुमं पन वितन्तरं खन्धन्तरं धात्वन्तरं आयतनन्तर ... आभिधम्मिकधम्मकथिकस्सेव पाकटं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).153; - नुप्पाद पु, तत्पु. स. [आयतनोत्पाद], आयतनों का प्रादुर्भाव, आयतनों की उत्पत्ति, जन्म - दं द्वि. वि., ए. व. - दिस्वा आयतनुप्पादं, सम्मा चित्तं विमुच्चति, महाव. 257; आयतनुप्पादन्ति आयतनानं उप्पादञ्च वयञ्च दिस्वा, महाव. अट्ट. 345; - नूपचय पु, तत्पु. स., आयतनों का ढेर, आयतनों की राशि - तो प. वि., ए. व. - आयतनूपचयतो चक्खुविज्जाणसज्जासमङ्गिस्स रूपेसु द्वादस विपत्तासा याव

## आयतन

148

## आयतन

मनो सञ्जासमङ्गिस्स, पेटको. 249; - कथा स्त्री., तत्पु. स., आयतनों के विषय में कथन अथवा व्याख्यान - थं द्वि. वि., ए. व. - तेसु आयतनकथं सज्जायन्तेसु सरं निमित्तं गहेत्वा, म. वं. टी. 152(ना.); - कुसल त्रि., तत्पु. स., आयतनों के विषय में कुशल - लो पु., प्र. वि., ए. व. - ... आयतनकुसलो च होति, म. नि. 3.108; - कुसलता स्त्री., भाव., आयतनों के विषय में कुशलता अथवा दक्षता - ता प्र. वि., ए. व. - अत्थि ... तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन द्वे धम्मा सम्मदक्खाता, ... आयतनकुसलता च पटिच्चसमुप्पादकुसलता च, दी. नि. 3.169; - घट्टन नपु., तत्पु. स. [आयतनघर्षण], आयतनों की परस्पर में टकराहट, आयतनों के मध्य परस्पर में संपर्क - तो प. वि., ए. व. - आयतनघट्टनतो फस्सो जायति, विसुद्धि. 2.216; - नं प्र. वि., ए. व. - आयतनानं विसयिविसयभूतानं अज्जमज्जाभिमुखभावो आयतनघट्टनं, विसुद्धि. महाटी. 2.322; - चरिया स्त्री., तत्पु. स., आयतनों से सम्बन्धित आध्यात्मिक चर्या, भीतरी एवं बाहरी, बारहों आयतनो से सम्यक् चर्या - या प्र. वि., ए. व. - अह चरियायो - इरियापथचरिया, आयतनचरिया, सतिचरिया समाधिचरिया, जाणचरिया, मग्गचरिया, पतिचरिया, लोकथचरियाति, पटि. म. 207; आयतनचरियाति छसु अज्जातिकबाहिरेसु आयतनेसु पटि. म. 207; - त नपु., भाव. [आयतनत्वे], आयतन अथवा वासस्थान होना - ता प. वि., ए. व. - नयिदं देवायतनं विय मनस्स आयतनत्ता मनायतनं, ध. स. अह. 185; - देसना स्त्री., तत्पु. स., आयतनों के विषय में उपदेश - ना प्र. वि., ए. व. - रूपभेदविभाविनी आयतनदेसना, मो. वि. टी. 139; - द्वार नपु., कर्म. स., आयतनों का द्वार, आयतनरूपी द्वार, द्वार जैसा आयतन - कम्मजं आयतनद्वारवसेन पाकटं होति, विसुद्धि. 2.257; आयतनद्वारवसेनाति आयतनसङ्घातद्वारवसेन, विसुद्धि. महाटी. 2.385; - धातुनिदेस पु., विसुद्धि. के पन्द्रहवें अध्याय का शीर्षक, जिसमें आयतनों एवं धातुओं के अन्तर्गत धर्मों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है, विसुद्धि. 2.109 117; - धीर त्रि., तत्पु. स., आयतनों के विषय में बुद्धिमान् - रा पु., प्र. वि., व. व. - अपि च खन्धधीरा, धातुधीरा, आयतनधीरा, ... महानि. 32; - नानत्त नपु., भाव., आयतनों की अनेकता - तं द्वि. वि., ए. व. - आयतननानत्तं पजानाति, विभ. 388; आयतननानत्तन्ति इदं चक्खायतनं

नाम ... पे. ... इदं धम्मायतनं नाम, तत्थ दसायतना कम्मावयरा, द्वे वतुभूमकाति एवं आयतननानत्तं पजानाति, विभ. अह. 430; - निदेस पु., विसुद्धि. के एक खण्डविशेष का शीर्षक, जिसमें आयतनों का विवेचन किया गया है, विसुद्धि. 2.109-112; - से सप्त. वि., ए. व. - सज्जायतनवारे चक्खायतनन्तिआदीसु यं वत्तब्बं, तं सब्बं विसुद्धिमग्गे खन्धनिदेसे वेव आयतननिदेसे च वुत्तनयमेय, म. नि. अह. (मू.प.) 1(1).231; - पज्जति स्त्री., तत्पु. स., आयतनों का वर्गीकरण, आयतनों का प्रकाशन अथवा विवरण - ति प्र. वि., ए. व. - खन्धपज्जति आयतनपज्जति, धातुपज्जति, सच्चपज्जति, इन्द्रियपज्जति, पुग्गलपज्जतीति, पु. प. 103; अत्थि सावकस्स ... पज्जति, कथा. 265; - यो द्वि. वि., व. व. - इदानी ता आयतनपज्जतियो दस्सेन्तो छयिमानी, दी. नि. अह. 3.61; - पदेस पु., तत्पु. स., आयतनों का क्षेत्र अथवा आलम्बन के रूप में आयतन - सो प्र. वि., ए. व. - दसविधो हि पदेसो नाम - खन्धपदेसो, आयतनपदेसो, ... धम्मपदेसोति, ध. स. अह. 32; - परियन्त पु., तत्पु. स., आयतनों की सीमा - न्ते सप्त. वि., ए. व. - खन्धपरियन्ते ठितो, धातुपरियन्ते ठितो, आयतनपरियन्ते ठितो, महानि. 16; 346; - पुच्छा स्त्री., तत्पु. स. [आयतनपृच्छा], आयतनों के विषय में प्रश्न या पूछताछ - छा प्र. वि., ए. व. - अपरापि तिस्रो पुच्छा - खन्धपुच्छा, धातुपुच्छा, आयतनपुच्छा, महानि. 251; - भेद पु., तत्पु. स., आयतनों के भेद, आयतनों का विभाजन - दं द्वि. वि., ए. व. - यं दिब्बं द्वादसायतनभेदं तथा मानुसकज्ज, सु. नि. अह. 2.138; - मच्छरिय नपु., तत्पु. स. [आयतनमात्सर्य], आयतनों में विद्यमान कृपणता अथवा स्वार्थपरता - यं प्र. वि., ए. व. - खन्धमच्छरियमि मच्छरियं, धातुमच्छरियमि मच्छरियं, आयतनमच्छरियमि मच्छरियं गाहो, महानि. 26; - मार पु., आयतनों में विद्यमान मार - रो प्र. वि., ए. व. - ... कम्माभिसङ्घारवसेन पटिसन्धिको खन्धमारो धातुमारो आयतनमारो ... अन्वेति, चूलनि. 137; - लक्खण नपु., तत्पु. स., आयतनों का लक्षण - णं प्र. वि., ए. व. - आयतनलक्खणं सज्जायतनं, दस्सनादिरसं, वत्थुद्वार भावपच्चुपड्डानं, नामरूपपदड्डानं, उदा. अह. 35; - लोक पु., तत्पु. स., आयतनों का क्षेत्र - के सप्त. वि., ए. व. - अज्जत्तबहिद्वासङ्घाते सब्बस्मिम्पि आयतनलोके अज्जत्तबहिद्धारम्मणवसेन ... धोवित्वा ... एति, सु. नि.

## आयतनसुत्त

149

## आयत्त

अद्द. 2.138; — ववत्थान नपुं, तत्पु. स., आयतनों की विवेचना — नेन तृ. वि., ए. व. — धातुववत्थानेन मनोविज्जाणधातुं, आयतनववत्थानेन मनायतनं, इन्द्रियववत्थानेन मनिन्द्रियं, पेटको. 273; — विमङ्ग पु., विम. के दूसरे अध्याय का शीर्षक, जिसमें बारहों आयतनों का विवेचन है, विम. 77-91; विम. अद्द. 42-51; — सङ्गह पु., 'आयतन' के अन्तर्गत संग्रह — हेन तृ. वि., ए. व. — ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता, धातु. 29; स. पू. प. के रूप में — सब्ब पु., आयतनों का सभी कुछ — ब्बं द्वि. वि., ए. व. — तत्र सब्बसद्दो सब्बसब्बं पदेससब्बं आयतनसब्बं सक्कायसब्बन्ति ... दिट्ठप्पयोगो, सद्द. 1.269; — सहगत त्रि., आयतनों के साथ जुड़ा हुआ — ता स्त्री. प्र. वि., ए. व. — अभिभूमिआयतनसहगता रूपसञ्जीसु दुतिये ज्ञाने ज्ञानभूमि, पेटको. 264; — सेवी त्रि., शीलवान् व्यक्तियों अथवा उत्तम धर्मों का सेवन करने वाला — विनो पु., च./ष. वि., ए. व. — अज्झत्तञ्च पयुत्तस्स, तथायतनसेविनो, अनिब्बिन्दियकारिस्स, सम्मदत्थो विपच्चति, जा. अद्द. 5.117; तथायतनसेविनोति तथेव सीलवन्तो पुग्गले सेवमानस्स, जा. अद्द. 5.119; — सो अ., क्रि. वि. [आयतनशः], आयतनों के द्वारा, आयतनों के अनुरूप — इन्द्रियेसु सुसंवुतो तस्सेव अलोभस्स पारिपूरियं मम आयतनसोचितं अनुपादाय, पेटको. 212.

आयतनसुत्त नपुं, स. नि. के दो सुत्तो का शीर्षक — छफस्सायतनसुत्त, स. नि. 1(1).134-135; अज्झत्तिकायतनसुत्त, स. नि. 3(2).489-490.

आयतनिक त्रि., [बौ. सं. आयतनिक], आयतनों के साथ जुड़ा हुआ, छ प्रकार के स्पर्शों से सम्बद्ध, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त — को पु., प्र. वि., ए. व. — छफस्सायतनिको इतिपि, म. नि. 1.421; — का ब. व. — छ फस्सायतनिका नाम सग्गा, पेटको. 199.

आयति<sup>१</sup> स्त्री., आ +यत् से व्यु. [आयति], 1. आगे आने वाला समय, भविष्य, 2. फैलाव, विस्तार, लम्बाई, 3. महिमा, प्रताप, 4. भावी फल, परिमाण, 5. नियन्त्रण — चोत्तरकालो तु आयति, अभि. प. 86; — तिं द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि., भविष्य में, भावी समय के लिए — आयतिं संवरेय्यासीति, महाव. 157; आयतिं ... अनागते अनुप्पज्जनकसभावा, पारा. अद्द. 1.97; ... आयतिं

तालपत्तसदिसे विपाकक्खन्धे निब्बत्तेतुं असमत्था जाता, सारत्थ. टी. 1.299; तस्स मे भन्ते, भगवा अच्चयं अच्चयतो पटिग्गण्हातु आयतिं संवरायाति, दी. नि. 1.75; — भूत त्रि., फैलाव या प्रसार का स्थल बन चुका — तो पु., प्र. वि., ए. व. — गुणानं आयतिभूतो, रतनानं सागरो, अप. 2.116; — लक्खण त्रि., भविष्य में विशिष्ट स्वरूप के लक्षणों वाला — णं पु. द्वि. वि., ए. व. — ... परप्पवादमथनं आयतिलक्खणं कथावत्थुप्पकरणं अभसि, प. प. अद्द. 106.

आयति<sup>२</sup> त्रि., आगे आने वाला, भविष्य में होने वाला, अगला, भावी (फल या परिणाम) — तिं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — आयतिमि वस्सं एवमेव कातब्बं, चूळव. 317.

आयतिक त्रि., आयति से व्यु., क. अगला, भावी, आगे आने वाला — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — आयतिकमि वस्सावासं ... विहरय्यासीति, अ. नि. 3(1).65; — के पु., सप्त. वि., ए. व. — विरतचित्तायतिकं भवस्मिं, सु. नि. 238; ख. प्राप्त कराने वाला (की ओर) ले जाने वाला, (में) परिणत हो जाने वाला — कं नपुं, द्वि. वि., ए. व. — करोहि पुञ्ञं सुखमायतिकं, स. नि. 1(1).168; स. उ. प. के रूप में कुसला, लोका. के अन्त. द्रष्ट.

आयतिगवं अ., क्रि. वि. [आयतिगवं], गावों के घर वापस लौटने के समय में, गोघृलि-बेला में — तिड्ढन्ति गावो यस्मिं काले तिड्ढुगकालो, वहग्गुकालो, आयतिगवं, खलेयवं, लूनयवं, लूयमान यवमिच्चादि, मो. व्या. 3.7.

आयत्त<sup>१</sup> त्रि., आ +यत् का भू. क. कृ., प्रायः च./ष. वि. में अन्त होने वाले नाम के साथ अथवा स. उ. प. के रूप में [आयत्त], 1. अधीन, आश्रित, सहारा लिया हुआ, वश्य, विनीत — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आयत्तो तु व सत्तको, अभि. प. 728; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इतो पट्टाय तव रक्खा ममायत्ताति वत्ता सकट्टानमेव गतो, जा. अद्द. 3.126; 2. नपुं, संपत्ति, स्वामित्व, परिग्रह — आयत्ते परिवारे च भरिमायं परिग्गहो, अभि. प. 870; — तं प्र. वि., ए. व. — गेहे दास कम्मकरादयोपि गोमहिंसादयोपि हिरञ्जसुवण्णमि सब्बं तासञ्जेव आयत्तं भविस्सति, जा. अद्द. 1.326; भिक्खाचारकिच्चं ममायत्तं होतु, अ. नि. अद्द. 1.210; स. उ. प. के रूप में अपरा, करुणा, कुलपवेणिका, तदा, निजा, परा, सका, सक्का. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, — ता स्त्री., भाव, केवल स. उ. प. में प्राप्त [आयत्तता], अधीनता, आश्रयता,



## आयत्तमन

150

## आयसिक

वशवर्तिता - य तृ. वि., ए. व. - एतमत्यन्ति एतं परायत्तताय अधिष्ठायासमिज्जनसङ्घातं अथं विदित्वा ..., उदा. अद्. 127; - वुत्ति स्त्री., अधीन अथवा आश्रित रहने की अवस्था - तो प. वि., ए. व. - नोभयं पनिदं कस्मा, निस्सयायत्तवुत्तितो, अभि. अव. 721; - वुत्तिक त्रि., ब. स., अधीन अथवा आश्रित रहने के स्वभाव वाला - को पु., प्र. वि., ए. व. - इध निब्बानवज्जो सब्बो सभावधम्मो पच्चयायत्तवुत्तिकोव उपलब्धति, उदा. अद्. 316; - ता स्त्री., भाव., पराधीनता - य तृ. वि., ए. व. - कारणज्झि यथा तिष्ठति एत्थ फलं तदायत्तवुत्तितायाति ठानन्ति वुच्चति, एवं अनवकासोतिपि वुच्चतीति, उदा. अद्. 243; - वुत्तिभाव पु., उपरिवत् - वेन तृ. वि., ए. व. - कारणज्झि यस्मा तत्थ फलं तिष्ठति तदायत्तवुत्तिभावेन, तस्मा ठानन्ति वुच्चति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).109; - तो प. वि., ए. व. - एवं अनवसेसतो कामरूपभवस्स तत्थ अभावो वुत्तो होति तदायत्तवुत्तिभावतो, उदा. अद्. 317.

**आयत्तक** त्रि., आयत्त + क से व्यु., अधीन, आश्रित - के पु., सप्त. वि., ए. व. - तस्मा हि जातो वरकम्हि तस्स, आयत्तके मङ्गलचक्कवाले, जिना. 189; - भाव पु., अधीनता, वशवर्तिता, वश्यता - वं द्वि. वि., ए. व. - लोकनाथो इमं दीपं तदा एव अत्तनो आयत्तकभावं दस्सेतुं अत्तनो पादमुदिकवसेन सुमनकूटनगमुद्धनि ठितत्तं एव अकासीति अधिष्ठाया, म. वं. टी. 88(ना.).

**आयत्तमन** त्रि., ब. स. [आयस्तमन], उत्सुकता से युक्त मन वाला, पीड़ित अथवा व्याकुल मन वाला - ना स्त्री., द्वि. वि., ब. व. - ता दिस्सा आयत्तमना पुरिन्ददो, इच्चब्रवी ..., जा. अद्. 5.390; आयत्तमनाति उत्सुककमना व्यावट्ठित्ता, जा. अद्. 5.391.

**आयनक** त्रि., आयन से व्यु. [आयानक], जाने वाला, चलने वाला, हिलने-डुलने वाला - के नपुं., द्वि. वि., ब. व. - सुखदुस्खे सह आयनके सहायेति, म. वं. टी. 67(ना.).

**आयमति** आ + रयम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयच्छति], 1. विस्तार करता है, अपने को फैलाता है, लम्बा करता है, 2. ऊपर की ओर या वापस खींचता है, 3. थामता दबाता या रोकता है - मेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - अभिसन्नघातु कुच्छि अज्जरिमं अज्झोहरिते भिय्यो आयमेय्य, नि. प. 172; - मिस्सामि भवि., उ. पु., ए. व.

- पिड्ढि मे आगिलायति, तमहं आयमिस्सामीति, चूळव. 340; - मित्त्वा पू. का. कृ. - सो दण्डकोटिया वा वल्लिकोटिया वा पंसुचुण्णकेन वा घट्टितो आयमेत्त्वा ... पच्छिन्नगमनो हुत्वा अमित्तवसं याति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).36.

**आयव/आयाव** नपुं., आयु से व्यु. [आयव], वीर्य, पराक्रम, बल, पुरुषत्व - वं प्र. वि., ए. व. - अत्थि आयवन्ति अत्थि वीरियं, आयावन्तिपि पाठो, पटि. म. अद्. 1.272.

**आयवति** आ + वयु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयौति/आयुवाति], क. मिलाता है, गड़ु मड़ु कर देता है, बांध देता है, जकड़ देता है - न्ति ब. व. - आयवन्ति मिस्सीमवन्ति सत्ता एतेना ति आयु, सद्. 2.416; ख. सम्मिलित होता है, क्रियाशील होता है - न्ति ब. व. - अथ वा आयवन्ति आगच्छन्ति पवत्तन्ति तस्मिं सति अरुप्पम्मा ति आयु, सद्. 2.416.

**आयवन** नपुं., आ + वयु से व्यु., क्रि. ना., आपस में मिला देना अथवा थाम कर या बांध कर रखना - आयवनद्धेन आयु, सद्. 416.

**आयस** त्रि., [आयस], लौह-धातु से निर्मित, लोहा से बनाया हुआ - सं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आयसं, बन्धनं, ... कापोत्तं सत्थि, मो. व्या. 4.66; चतुट्ठारमिदं नगरं, आयसं दळ्ळपाकारं, जा. अद्. 4.3; न तं दळ्ळं बन्धनमाहु धीरा, यदायसं दारुजं पब्बजज्ज, स. नि. 1(1).94; - से पु., सप्त. वि., ए. व. - कूटे बद्धोस्मि आयसे, जा. अद्. 4.373; - साय स्त्री., सप्त. वि., ए. व. - ... देविया सरीरं आयसाय तेलदोणिया पक्खिपित्त्वा ..., अ. नि. 2(1).54; स. उ. प. के रूप में अना., काला., सब्बा. के अन्त. द्रष्ट..

**आयसक्क/आयसक्य** नपुं., अ + यस से व्यु. [अयशस्क], अकीर्ति, अपयश, निन्दा, निन्दनीय अथवा अकीर्तिकर अवस्था - क्यं द्वि. वि., ए. व. - दुब्बण्णियं आयसक्यज्जुपेन्ति, जा. अद्. 5.17; आयसक्यन्ति गरहं, जा. अद्. 5.18; कोधसम्मदसम्मत्तो, आयसक्यं निगच्छति, अ. नि. 2(2).234; आयसक्यन्ति अयसभावं, अयसो नियसो होतीति अत्थो, अ. नि. अद्. 3.179.

**आयसिक** त्रि., आयस से व्यु. [आयसिक], लोहा से निर्मित - को पु., प्र. वि., ए. व. - वरत्ताय बद्धो वारत्तिको आयसिको, पासिको, मो. व्या. 4.29.

## आयस्मन्त

151

## आयाचति

आयस्मन्त पु., व्य. सं., राजा साहसमत्तल का एक सेनापति  
— आथापनेत्वा तं भूपं दुरतिक्रमविक्रमो,  
आयस्मन्तचमूनाथो स राजकुलवङ्कनो, चू. वं. 80.33.

आयस्मन्तु त्रि., [आयुष्मन्तु, बौ. सं. आयुष्मन्], बौद्ध भिक्षुओं  
के लिए प्रयुक्त, सम्मान-सूचक संबोधन या भिक्षुओं अथवा  
स्थविरों के नाम के पूर्व में प्रयुक्त उपाधि, पूज्य, श्रीमान्,  
आदरणीय भिक्षु या स्थविर — अथ वा महापरिनिब्बान  
सुत्तङ्कथाय "आयस्मातिस्स" इति दीघवसेन  
वृत्तालपनेकवचनस्स दस्सनतो ..., सङ्. 1.146; आयस्मन्तोति  
पियवचनमेतं गरुवचनमेतं सगारवसप्पतिस्साधिवचनमेतं  
आयस्मन्तोति, महाव. 131; — स्मा पु., प्र. वि. / संबो., ए.  
व. — आयस्मा खो यस्सत्थाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो,  
दी. नि. 1.209; आयस्माति पियवचनमेतं गरुवचनमेतं स.  
नि. अष्ट. 2.75; नवकतेरन भिक्खुना थेरतरो भिक्खु भन्तेति  
वा 'आयस्माति वा समुदाचरितब्बो, दी. नि. 2.115; — न्तं  
पु., द्वि. वि., ए. व. — लाभो नो आवुसो, सुलद्धं नो आवुसो  
ये मयं आयस्मन्तं तादिसं सब्रह्मचारिं परसाम एवं अत्थुपेतं  
व्यञ्जनुपेतंति, दी. नि. 3.96; — स्मता तृ. वि., ए. व.  
— राजा माग्धो सेनियो विम्बिसारो सुखविहारितरो आयस्मता  
गोतमेनाति, म. नि. 1.131; — स्मतो पु., ष. वि., ए.  
व. — तस्स आयस्मतो उपसम्पदा अहोसि, महाव. 22; 63;  
64; 100; — स्मन्ते पु., सप्त. वि., ए. व. — अचिरुपसम्पन्ने  
आयस्मन्ते रद्धपाले ..., म. नि. 2.259; — स्मन्तो पु., प्र.  
वि., ब. व. — वदन्तु मं आयस्मन्तो, म. नि. 1.133; —  
स्मन्ते पु., द्वि. वि., ब. व. — नेवाहं आयस्मन्ते याचिं ...  
मन्ति, महाव. 63; — न्तेहि पु., तृ. वि., ब. व. —  
वघनीयोमिह आयस्मन्तेहीति, म. नि. 1.133; — स्मन्तानं  
पु., ष. वि., ब. व. — नु खो आयस्मन्ता नं सुखविहारितरो,  
म. नि. 1.131; — स्मन्तेसु सप्त. वि., ब. व. — इमेसु  
आयस्मन्तेसु मेतं कायकम्मं पच्चुपड्डितं, म. नि. 1.270; —  
स्मन्तो संबो., ब. व. — किं सङ्गस्स पुब्बकिच्चं?, पारिसुद्धिं  
आयस्मन्तो आरोचेथ, महाव. 130.

आयाग 1. पु., आ + यज से व्यु. [आयाग], यज्ञ में देय  
दक्षिणा, देवताओं को देय बलि, आहुति, 2. त्रि., यज्ञ की  
आहुतियों का ग्रहीता, यज्ञ-आहुति पीने योग्य, दक्षिणा का  
पात्र, दान का सत्पात्र — गो प्र. वि., ए. व. — आयागोति  
आयजितब्बो, ततो ततो आगम्म वा यजितब्बमेत्थातिपि  
आयागो, सु. नि. अष्ट. 2.125; आयागो सब्बलोकस्स,  
आहुतीनं पटिग्गहो, थेरगा. 566; आयागो ..., सब्बस्स  
सदेवकस्स लोकस्स अग्गदक्खिण्येयताय देय्यधम्मं आनेत्वा

यजितब्बद्धानभूतो, थेरगा. अष्ट. 2.166; — गं द्वि. वि., ए.  
व. — वङ्ककीहि कथापेत्वा, मूलं दत्तानहं तदा, हङ्गो हङ्गेन  
चित्तेन, आयागं कारपेसहं, अप. 1.88; एकत्तिसे इतो कप्पे,  
आयागं यमकारयि, अप. 1.88; — स्स ष. वि., ए. व. —  
उदकेहं न मिय्यामि, आयागस्स इदं फलं, अप. 1.88;  
आयागस्स इदं फलन्ति भोजनसालदानस्स इदं विपाकन्ति  
अत्थो, अप. अष्ट. 2.57; — वत्थु नपुं., तत्पु. स.  
[आयागवस्तु], यज्ञ में देय दक्षिणा का सत्पात्र — त्थूनि  
प्र. वि., ब. व. — आयागवत्थूनि पुथू पथब्बा, संविज्जन्ति  
ब्राह्मणा वासवस्स, जा. अष्ट. 7.51; आयागवत्थूनीति  
पुञ्जक्खेतभूता अग्गदक्खिण्येय्या पथब्बा पुथू ब्राह्मणा  
संविज्जन्ति, जा. अष्ट. 7.51; — सेट्ट पु., कर्म. स., उत्तम  
यज्ञ-दक्षिणा, यज्ञ में दिया गया उत्तम दान — डेहि तृ.  
वि., ब. व. — तस्सेव तेजेन अयं वसुधरा आयागसेट्ठेहि  
मही अलङ्कता, दी. नि. 2.126.

आयागदायक पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम — को प्र.  
वि., ए. व. — इत्थं सुदं आयस्मा आयागदायको थेरो इमा  
गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.88.

आयाचक त्रि., [आयाचक], भिखारी, याचना करने वाला,  
विनती या अनुरोध करने वाला, निवेदक, प्रार्थी — को पु.,  
प्र. वि., ए. व. — सामो ... कुमारो कतपुञ्जो ... आयाचको  
सक्को, तिण्णं चेतोपणिधिया ... निब्बतो, मि. प. 133.

आयाचति आ + याच का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयाचते],  
क. प्रार्थना करता है, निवेदन करता है, देवता का आवाहन  
करता है — अथ सक्को देवानमिन्दो तस्स कुलस्स  
अनुकम्माय तं देवपुत्र आयाचति पणिधेहि, मि. प. 133;  
तस्मा सो ब्रह्मा सब्बेसं तथागतानं आयाचति धम्मदेसनाय,  
मि. प. 220; — न्ति ब. व. — यतो च चन्दिमसूरिया  
उग्गच्छन्ति, यत्थ व ओगच्छन्ति आयाचन्ति थोमयन्ति  
पञ्जलिका नमस्समाना अनुपरिवत्तन्तीति?, दी. नि.  
1.217; आयाचन्तीति "उदेहि भवं चन्दं उदेहि भवं सूरियाति  
एवं आयाचन्ति, दी. नि. अष्ट. 1.302; — चेय्य विधि., प्र.  
पु., ए. व. — तमेनं महा जनकायो सङ्गम्म समागम्म  
आयाचेय्य थोमेय्य पञ्जलिको अनुपरिसक्केय्य, स. नि.  
2(2).299; ख. आशीवाद मांगता है, सफलता, सुख एवं  
समृद्धि हेतु कहता है — न्तीनं स्त्री., वर्त. कृ., ष. वि.,  
ब. व. — अस्सोसुं भिक्खू ... एकच्चानं इत्थीनं ओयाचन्तीनं,  
पारा. 203; ग. प्रणिधान करता है, संकल्प लेता है, प्रण  
करता है — चि अद्य., प्र. पु., ए. व. — तुम्हे एवं भेरिं  
चरापेथ अम्हाकं राजा उपराजकालेयेव एवं आयाचि सचाहं

## आयाचन

152

## आयाचित

रज्जं पापुणिस्सामि, जा. अट्ट. 1.252; - चिं उ. पु. ए. व. - बलिकम्मं करिस्सामीति आयाचिं, जा. अट्ट. 1.252; घ. मांगता है, याचना करता है, अनुरोध करता है, विनती करता है - ति वर्त., प्र. पु. ए. व. - तासं इत्थीनं वच्चमग्गं परसावमग्गं आदिस्स वण्णम्मि भणति अवण्णम्मि भणति याचतिपि आयाचतिपि पुच्छतिपि पटिपुच्छतिपि, पारा. 188; आयाचति नाम कदा ते माता पसीदिरिस्सति, पारा. 190; - न्ति ब. व. - नेव मिगा न पसू नोपि गावो, आयाचन्ति अत्तवधाय केचि, जा. अट्ट. 7.56; - न्तो पु. वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - अहम्मि तादिसो होमीति एवं आयाचन्तो पिहेन्तो पत्थेन्तो यं अत्थि, अ. नि. अट्ट. 2.59; - न्ता प्र. वि., ब. व. - आवुसोति आयाचन्ता भणन्ति, म. नि. अट्ट. (भू.प.) 1(2).68; - मानो पु. वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. - भिक्खु एवं सम्मा आयाचमानो आयाचेय्य, अ. नि. 1(1).107; - माना स्त्री., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - भिक्खुनी एवं सम्मा आयाचमाना आयाचेय्य, अ. नि. 1(1).107; - चि अट्ट., प्र. पु., ए. व. - अत्तनो संविभागत्तं भत्तेनायाचि खत्तियो, म. वं. 10.34; भत्तेनायाचीति अत्तनो भत्तेन संविभागत्तं कुमारि आयाचि, म. व. टी. 246; - चिं उ. पु., ए. व. - पब्बज्जं अहमायाचिं, थेरगा. 624; अहमायाचिन्ति, 'सुनीत, पब्बजितुं सकिंखस्ससीति सत्थारा ओकासे कते अहं पब्बज्जं अयाचिं, थेरगा. अट्ट. 2.192; - चुं अट्ट., प्र. पु. ब. व. - आयाचुं मम हत्थिनागं, चरिया. 373, 379; - चित्तुं निमि. कृ. - न खो, गहपति, अरहति अरियसावको आयुकामो आयुं आयाचितुं अ. नि. 2(1).44; - चित्त्वा/त्त्वान पू. का. कृ. - मातरं पितरं चाहं, आयाचित्वा विनायकं, अप. 2.213; आयाचित्वान सम्बुद्धं, वन्दित्वान च सुब्बतं पाप्मोज्जं जनयित्वान, सकं भवनुपागमि, अप. 1.150.

**आयाचन** नपुं., आ + रयाच से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. आयाचन], अनुरोध, याचना, विनती, प्रण, प्रणिधान, प्रार्थना - नं द्वि. वि., ए. व. - देवताय आयाचनं, ध. प. अट्ट. 1.382; ... आयाचनं करि, जा. अट्ट. 5.469; - नेन तृ. वि., ए. व. - सो अहं इमिना आयाचनेन रज्जस्स पटिलद्धत्ता इदानीं यजिस्सामि, जा. अट्ट. 1.253; - तो प. वि., ए. व. - आयाचनतो मुच्चिरिस्सामीति, जा. अट्ट. 1.170; - ने सप्त. वि., ए. व. - साधूति आयाचने निपातो, पारा. अट्ट. 2.227; स. उ. प. के रूप में देवता, ब्रह्मा. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, - त्थ पु., तत्पु. स. [आयाचनार्थ], आयाचन, प्रार्थना अथवा अनुरोध का अर्थ - नत्थं द्वि. वि., ए. व. - तेनेव वेत्थ आयाचनत्थं

सन्धाय चरेम सेतिपि पाठं विकप्पेन्ति, सु. नि. अट्ट. 1.36; - त्थे सप्त. वि., ए. व. - आयाचनत्थे निपातो, सु. नि. अट्ट. 2.125; - बलिकम्म नपुं., तत्पु. स., प्रसन्न करने हेतु देवताओं को बलि या भोजन देने का कर्म - म्मं द्वि. वि., ए. व. - इदं सत्था ... देवतानं आयाचनबलिकम्मं आरब्ध कथेसि, जा. अट्ट. 1.170; - मोचन नपुं., दिए हुए वचन अथवा किए गए संकल्पों की पूर्णता - देवताय आयाचनमोचनत्थं ... आरोचेत्वा, जा. अट्ट. 5.469; - हेतु अ., क्रि. वि., याचना अथवा विनती करने के लिए - अपि नु तस्स पुरिस्सस्स अब्हायनहेतु वा आयाचनहेतु वा पत्थनहेतु वा अभिनन्दनहेतु वा अचिरवतिया नदिया पारिमं तीरं ओरिमं तीरं आगच्छेय्याति, दी. नि. 1.221.

**आयाचनवग्ग** पु., अ. नि. तथा स. नि. के वर्गों का शीर्षक, अ. नि. 1(1).107-109; स. नि. 2(1).184-186.

**आयाचनसुत्त** नपुं., अ. नि. तथा स. नि. के दो सुत्तों का शीर्षक, अ. नि. 1(2).190; स. नि. 1(1).162-164.

**आयाचना** स्त्री., [आयाचना], प्रार्थना, याचना, विनती, विनम्र आवाहन, अनुरोध, संकल्प, प्रण - य तृ. वि., ए. व. - तत्थ एकच्चेहि बलिकम्मेन आयाचनाय मङ्गलकिरियायाति वुत्ते सब्बम्मि तं विधिं कत्वा पटिवाहितुं नासक्खिंसु, ध. प. अट्ट. 2.250; - ना द्वि. वि., ब. व. - थेरो उड्डहित्वा चत्तारो पटिक्खेपा चत्तस्सो च आयाचनाति अट्ट वरे याचि, अ. नि. अट्ट. 1.224.

**आयाचित** त्रि., आ + रयाच का भू. क. कृ. [आयाचित], प्रार्थित, सकल्पित, निवेदित, वह, जिसे मांगा गया हो, वह, जिसके विषय में प्रार्थना या अनुरोध किया गया हो, निमन्त्रित, प्रतिज्ञात, प्रार्थित - तो पु., प्र. वि., ए. व. - सामो, कुमारो सककेन देवानमिन्देन आयाचितो पारिकाय तापसिया कुच्छिं ओक्कन्तो, मि. प. 133; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - अम्हैहि अट्ठिदेवताय आयाचितं अत्थि, ध. प. अट्ट. 1.383; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - सब्बेसं तथागतानं धम्मता एसा, यं ब्रह्मुना आयाचिता धम्मं देसेन्ति, मि. प. 219; - धम्मदेसना त्रि., ब. स., वह, जिससे धर्मोपदेश के लिए याचना की गई हो - नो पु., प्र. वि., ए. व. - सहम्पतिबह्मुना आयाचितधम्मदेसनो बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेत्वा, ध. प. अट्ट. 1.51; - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - आयाचितधम्मदेसनं किर तं भिक्खुं, विसुद्धि. 1. 313; आयाचिता धम्मदेसना एतेनाति आयाचितधम्मदेसनो, तं आयाचितधम्मदेसनं, विसुद्धि. महाटी. 364; - भत्तजातक नपुं., 19वें जातक का शीर्षक, जा. अट्ट. 1.170-171.

## आयाचेसि

153

## आयाम

आयाचेसि आ + ण्यच के प्रेर. का अद्य., प्र. पु., ए. व., याचना की, प्रार्थना की — अभिवादेत्वा निसीदि आयाचेसि तथागतं, दी. वं. 2.43.

आयात त्रि., आ + ण्या का भू. क. कृ. [आयात], आ पहुंचा हुआ, प्राप्त कर चुका, आ चुका, पहुंच चुका, आया हुआ, प्राप्त — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — न बाहुविरियायातं न च आतिकुलागतं परप्पसादलद्धं किं युतं गथितभोजने, सद्धम्मो. 407; कुतो नु भो इदमायातं, सद्ध. 1.92.

आयाति आ + ण्या का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयाति], क. आता है, आ पहुंचता है, प्राप्त करता है, वापस आ जाता है — अद्विको विय आयाति, जा. अद्ध. 7.311; — सि म. पु., ए. व. — सभानुरूपो आयासि, आनेज्जकारितो विय, दन्तोव दन्तदमथो, उपसन्तोसि ब्राह्मण, अप. 1.23; — मि उ. पु., ए. व. — गच्छ त्वं, करस्स, आयामहन्ति, महाव. 34; आयामि आवुसो, आयामि आवुसोति, दी. नि. 3.13; — यन्ति प्र. पु., ब. व. — अन्धंवि तिमिसमायन्ति, सु. नि. 674; अन्धंवि तिमिसमायन्तीति अन्धकरणेन अन्धमेव बहलन्धकारता तिमिसन्ति सज्जितं धूमरोरुवं नाम नरकं गच्छन्ति, सु. नि. अद्ध. 2.181; — म उ. पु., ब. व. — एतेन वेगेन आयाम सब्बे, रत्ति मग्गं पटिपन्ना विकाले, वि. व. 1235; येन तव दस्सनतो पुब्बे आयाम आगतम्ह, वि. व. अद्ध. 286; — न्तं पु., वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. — किं सु पुनपुनानयन्तं, अभिनन्दन्ति पण्डिताति, स. नि. 1(1).51; — यतो पु., ब. वि., ए. व. — कस्स ... चरन्ति वरपुजस्स, हत्थिकवधेन आयतो, जा. अद्ध. 5.314; — यन्ते पु., सप्त. वि., ए. व. — तस्मिं पल्लङ्कमायन्ते राजा इति विचन्तयि, म. वं. 5.64; पल्लङ्कमायन्ते ति पल्लङ्कसमीपं उपगच्छन्ते, म. वं. टी. 165(ना.); — यन्ति स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — आयन्ति नाभिनन्दति, पक्कमन्ति न सोचति, उदा. 75; आयन्तिन्ति आगच्छन्ति, धेरगा. अद्ध. 2.23; — अना ... न्तेसु निषे., पु., सप्त. वि., ब. व. — अनायन्तेसु सब्बेसु विजयो भयसङ्गितो, म. वं. 7.16; अनायन्तेसू ति सब्बेसु न आयतेसु, म. वं. टी. 219(ना.); — यन्तु अनु., प्र. पु., ब. व. — आयन्तु, भोन्तो अरहन्तोति, पारा. 138; — म अनु., उ. पु., ब. व. — आयामानन्द, वेरज्जं ब्राह्मणं अपलोकेस्सामाति, पारा. 10; आयामाति आगच्छ याम्, पारा अद्ध. 1.151; — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — पवत्ते तुमुले युद्धे सन्नद्धो भत्तुको तहिं राजाभिमुखमायासि नागराजा तु कण्डुलो, म. वं. 25.83; ख. आ मिलता है,

जा पहुंचता है, प्रवेश कर जाता है, बन जाता है — यन्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — योगमायन्ति मच्चुनो, स. नि. 1(1). 13; — तु अनु., प्र. पु., ए. व. — कोधो वो वसमायातु, स. नि. 1(1).277; कोधो वो वसमायातूति कोधो तुम्हाकं वस आगच्छतु, स. नि. अद्ध. 1.310.

आयान नपुं., आ + ण्या से व्यु., क्रि. ना. [आयान], आगमन, आ जाना, आ पहुंचना — नं प्र. वि., ए. व. — आयानमि हि चतूसु द्वारेसु चत्तारि, सभायं एकन्ति एवं दिवसे दिवसे पञ्चसतसहस्सानि तत्थ उद्धहिस्सन्ति, उदा. अद्ध. 341.

आयापाय पु., द्व. स. [आयापाय], आय एवं व्यय, लाभ एवं हानि, अच्छा और बुरा, हित एवं अहित — यं द्वि. वि., ए. व. — सो बालो नेव गुणवन्तानं गुणं जानाति न अत्तनो आयापायं जानाति, जा. अद्ध. 3.201.

आयापेति आ + ण्याप का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयापयति], जारी रहता है, बरकरार रहता है, बना रहता है, क्रियाशील रहता है — न्ति ब. व. — एवं पटिपन्नस्स कुसला धम्मा आयापेन्तीति आयतनचरियाय चरति, पटि. म. 207; आयापेन्तीति समथविपस्सनावसेन पवत्ता कुसला धम्मा भुसं यापेन्ति, पवत्तन्तीति अत्थो, पटि. म. अद्ध. 2. 128.

आयाम' पु./नपुं., आ + ण्यम से व्यु. [आयाम], क. दीर्घता, खिंचाव, फैलाव, लम्बाई, ख. प्रसार, विस्तार, ग. निग्रह, नियन्त्रण, घ. प्रयास, बल, शक्ति — मो प्र. वि., ए. व. — आयामो दीघतारोहो, अभि. प. 295; — मं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अप्पत्तस्स पतिया अत्थि आयामं, स. नि. 3(1).13; — मेन त्. वि., ए. व. — पुरत्थिमेन च पक्खिमेन च द्वादसयोजनानि आयामेन, दी. नि. 2.110; धम्मा, आनन्द, पोक्खरणी पुरत्थिमेन पक्खिमेन च योजनं आयामेन अहोसि, दी. नि. 2.137; — तो प. वि., ए. व. — आयामतो दीघतो च उच्चतो च चतुवीसतियोजनं वित्थारतो द्वादसायोजनं अहोसीति सम्बन्धो, अप. अद्ध. 1.275; स. उ. प. के रूप में, चतुत्तिसहत्था, दियङ्गयोजनसत्ता, पञ्चयोजनसत्ता, मुखा, सङ्घियोजना, सत्तयोजना, सोळसयोजना के अन्त. दष्ट., स. पू. प. के रूप में, — सम्पन्न त्रि., लम्बाई अथवा विस्तार से युक्त, आयत — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — आयतोति आयामसम्पन्नो, जा. अद्ध. 3.344.

आयाम' आ + ण्या की अनु., उ. पु., ब. व., हम आते हैं, आयाति के अन्त. दष्ट..

## आयास

154

आयु

आयास पु., आ + ऋस से व्यु. [आयास], शा. अ., प्रयत्न, प्रयास, श्रम, ला. अ., थकावट, कष्ट, कठिनाई - सो प्र. वि., ए. व. - दाघ आयासे च, आयासो किलमन्, सद्. 2.335; उपायानिदेसे आयासनङ्गेन आयासो, पटि. म. अद्. 1.132; - सेन तू. वि., ए. व. - आयासेन कतं पुञ्जं, रस. 1.73 (रो.); - सा प्र. वि., व. व. - ये आयासा ते उपायासा, नव पदानि यत्थ सब्बो अकुसलपक्खो सङ्गहं समोसरणं गच्छति, पेटको. 247.

आयासना स्त्री, आ + ऋस से व्यु., क्रि. ना., प्रयास अथवा प्रयत्न करने की क्रिया - ना प्र. वि., ए. व. - आयासो उपायासो आयासना, पटि. म. 34; - नङ्ग पु., तत्पु. स., आयासना अथवा प्रयत्न करने का तात्पर्य - ङ्गेन तू. वि., ए. व. - उपायासनिदेसे आयासनङ्गेन आयासो, पटि. म. अद्. 1.132.

आयासितत्त नपुं., आयासित का भाव. [आयासितत्व]. थकावट रो भरे रहने की स्थिति, विलम्बता, कष्ट एवं मानसिक व्यथा की दशा - त्तं प्र. वि., ए. व. - अञ्जतरञ्जतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स अञ्जतरञ्जतरेन दुक्खधम्मो फुट्ठस्स आयासो उपायासो आयासितत्तं उपायासितत्तं, दी. नि. 2.229; आयासितभावो आयासितत्तं, पटि. म. अद्. 1.132.

आयासितभाव पु., उपरिवत् - वो प्र. वि., ए. व. - आयासितभावो आयासितत्तं, पटि. म. अद्. 1.132.

आयिक त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, आय वाला, आमदनी वाला - नङ्गायिको पु., प्र. वि., ए. व., दिवालिया, वह, जिसकी आय नष्ट हो चुकी है - यथा पुरिसो नङ्गायिको सब्बसेसकं गहेत्वा जनस्स परिदीपेय्य, मि. प. 135; यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि पवने नङ्गायिको, नि. प. 192.

आयु नपुं./पु., [आयुस्, नपुं.], जीवन, जीवन की अवधि, उम्र, जीवनदायिनी शक्ति - यु/युं प्र. वि., ए. व. - आयु तु जीवितं, अभि. प. 155; आयु भोतो होतु, मो. व्या. 2.21; पुनरायु व मे लद्धो, दी. नि. 2.211; पुनरायु व मे लद्धोति पुन अञ्जेन कम्मविपाकेन मे जीवितं लद्धन्ति, इमिना अत्तनो चतुर्भावं देव उपपन्नभावञ्च आविकरोति, दी. नि. अद्. 2.297; - युं हि. वि., ए. व. - यायुं देत्तो आयुं देति, महाव. 297; दिब्बं सा लभते आयुं, महाव. 385; - ना/युसा तू. वि., ए. व. - ते अञ्जे अतिरोचन्ति, वण्णेन यससायुना, दी. नि. 2.153; माता यथा नियं

पुत्तमायुसा एकपुत्तमनुरक्खे, सु. नि. 149; - नो/स्स व. वि., ए. व. - आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको, अयं वुच्चति भिक्खवे, जरा, दी. नि. 2.228; आयुनो ... आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसज्जिताय पकतिया दीपिता, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).224; आयुं खो पन दत्त्वा आयुस्स भागिनी होति, अ. नि. 1(2).73; - स्मिं/हि सप्त. वि., ए. व. - किञ्च, भिक्खवे, भिक्खुनो आयुस्मिं?, दी. नि. 3.57; अयं पन वस्ससतावसिद्धे आयुहि गमनं आरभि, स. नि. अद्. 1.105; स. उ. प. के रूप में अद्वा., अप्पा., दीघा., पुनरा., ब्रह्मा. के अन्तः द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, - अन्तर नपुं., तत्पु. स., जीवन का अन्तराल, जीवन के क्षणों की अवधि - रं प्र. वि., ए. व. - इदं पन ... भावेत्वा अरहतं पत्तस्स आयुअन्तरं परिच्छिन्नमेव होति, विसुद्धि. 1280; आयुअन्तरं नाम जीवितन्तरं जीवनव्यथावधि, विसुद्धि. महाटी. 1.326; - उस्माविज्जाण नपुं., द्व. स., आयु, ऊष्मा एवं चेतना - तो प. वि., ए. व. - पेतेति आयुउस्माविज्जाणतो अपगते, पे. व. अद्. 53; - कप्प पु./नपुं., जीवन का निर्धारित समय, जीवनकाल, जीवनावधि - प्पो/प्पं प्र. वि., ए. व. - तत्थ कप्पो नाम महाकप्पो कप्पेकदेसा आयुकप्पोति तिविधो, प.प. अद्. 223; एत्थ च कप्पन्ति आयुकप्पं, दी. नि. अद्. 2.129; - कम्म नपुं., द्व. स., आयु एवं कर्म (पुण्यकर्म) - म्मानं व. वि., व. व. - आयुकम्मानं समकमेव परिक्र्णीणता मरणं उभयक्खयमरणं, अभि. ध. वि. टी. 168; - काम त्रि., व. स. [आयुष्काम], दीर्घायु होने की कामना करने वाला, लम्बी जीवनावधि का अभिलाषी, स्वास्थ्य की कामना करने वाला - मो पु., प्र. वि., ए. व. - न ..., अरहति अरियसावको आयुकामो आयुं आयायितुं वा अभिनन्दितुं वा आयुस्स वापि हेतु, अ. नि. 2(1).44; - काल पु., तत्पु. स., जीवन का निर्धारित समय, जीवन की अवधि - लो प्र. वि., ए. व. - वस्ससतसहरस्सतो पन पड्डाय हेद्वा, वस्ससततो पड्डाय उद्धं आयुकालो कालो नाम, जा. अद्. 1.59; - कोट्टास पु., तत्पु. स., आयु का एक भाग, जीवन का एक भाग, जीवन की एक अवस्था - से सप्त. वि., ए. व. - बुद्धा ... पञ्चमे आयुकोट्टासे बहुजनस्स पियमनापकालेयेव परिनिब्बायन्ति, दी. नि. अद्. 2.129; - क्खय पु., तत्पु. स. [आयुक्षय], आयु का विनाश या अन्त, मृत्यु, जीवन की समाप्ति - यं द्वि. वि., ए. व. - तस्सा आयुक्खयं जत्वा, देविन्दो एतदब्रवि, चरिया. 378;

— येन तृ. वि., ए. व. — अत्तनो आयुक्खयेनेव मरि, जा. अ. 4.28; — या प. वि., ए. व. — आयुक्खया वा पुञ्ञक्खया वा आभस्सरकाया चवित्वा, दी. नि. 1.15; — क्खयन्तिकं नपुं., मृत्यु की समीपता, जीवन के अन्त की निकटता — कं द्वि. वि., ए. व. — तेनेव व्याधिना थेरो पत्तो आयुक्खयन्तिकं, म. वं. 5.219; — क्खयमरण नपुं., तत्पु. स. शरीर अथवा आयु के क्षय के कारण होने वाला मरण — णं प्र. वि., ए. व. — सतिपि कम्मानुभावे तंतंगतीसु यथापरिच्छिन्नस्स आयुनो परिक्खयेन मरणं आयुक्खयमरणं अभि. ध. वि. टी. 167; — द त्रि., [आयुर्दा], दीर्घायु देने वाला, लम्बी आयु प्रदान करने वाला, स्वास्थ्य प्रद — दो पु., प्र. वि., ए. व. — आयुदो बलदो धीरो, वण्णदो पटिभानदो, सुखस्स दाता मेधावी, सुखं सो अधिगच्छति, अ. नि. 2(1).37; — दद त्रि., [बौ. सं. आयुर्दद], उपरिवत् — दं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आयुददं, .... भोजनं दुरुपचारेण जीवितं हरतीति, मि. प. 153; — दान नपुं., तत्पु. स. [आयुर्दान], आयु का दान, जीवनदान — नं प्र. वि., ए. व. — आयुं देतीति आयुदानं देति, अ. नि. अ. 3.21; — दायी त्रि., [आयुर्दायिन्], जीवन अथवा जीवन प्रदान करने वाला — यी पु., प्र. वि., ए. व. — सो आयुदायी वण्णदायी, सुखं बलं ददो नरो, अ. नि. 1(2).74; — दुब्बल नपुं., कर्म. स. [आयुर्दुर्बल], आयु की अल्पता, जीवनावधि का कम होना — तो प. वि., ए. व. — आयुदुब्बलतो, ... मरणं अनुस्सरितब्बं, विसुद्धि. 1.221; — धारण त्रि., आयु को धारण करने वाला, आयुवर्धक — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — भोजनं सब्बसत्तानं आयुधारणं, मि. प. 292; — पच्छेदन त्रि., आयु को नष्ट कर देने वाला, आयु को कम कर देने वाला — ना पु., प्र. वि., ब. व. — पञ्चमे अनायुस्साति आयुपच्छेदना, न आयुवङ्गना, अ. नि. अ. 3.47; — पञ्ञासमाहित त्रि., तत्पु. स., दीर्घ आयु एवं प्रज्ञा से युक्त — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सब्बलक्खणसम्पन्नो, आयुपञ्ञासमाहितो, अप. 1.345; — पटिलाभ पु., तत्पु. स. [आयुष्पटिलाभ], लम्बी आयु की प्राप्ति, दीर्घायु का लाभ — माय च. वि., ए. व. — आयुसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना आयुपटिलाभाय संवत्तति, सो लाभो होती आयुस्स दिब्बस्स वा मानुस्स वा, अ. नि. 2(1).44; — पटिलामी त्रि., दीर्घायु को प्राप्त करने वाला — मिनी स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आयुस्स भागिनी होतीति आयुभागपटिलाभिनी होति, आयुं वा भजनिका

होति, आयुष्पटिलाभिनीति अत्थो, अ. नि. अ. 2.303; — प्पमाण नपुं., तत्पु. स. [आयुष्प्रमाण], आयु का प्रमाण, जीवनावधि का विस्तार, जीवनावधि — णं प्र. वि., ए. व. — विपस्सिस्स, भिक्खवे, ... असीतिवरससहस्सानि आयुष्माणं अहोसि, दी. नि. 2.3; — णं द्वि. वि., ए. व. — आयुष्माणं पञ्च कोट्ठासे कत्वा चत्तारो ठत्त्वा पञ्चमे विज्जमानेयेव परिनिब्बुतो, स. नि. अ. 2.143; — नेन तृ. वि., ए. व. — देवलोकेस्स आयुष्मानेनेव चवन्तीति, दी. नि. अ. 1.95; — तो प. वि., ए. व. — आयुष्माणतोपि अनुस्सरिस्सति, दी. नि. 2.7; — आयुष्परिक्खय पु., तत्पु. स. [आयुष्परिक्खय], आयु का क्षय, उम्र का घट जाना — येन तृ. वि., ए. व. — कालङ्करोतीति न विजातभावपच्चया, आयुपरिक्खयेनेव, दी. नि. अ. 2.26; — परिमाण नपुं., तत्पु. स. [आयुष्परिमाण], आयु की माप, आयु का विस्तार, जीवन की अवधि — णं प्र. वि., ए. व. — वस्ससत्तमि याव आयुपरिमाणं तिष्ठति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).218; — परियन्त त्रि., केवल स. उ. प. में प्राप्त, ब. स., आयु की सीमा या अवधि वाला — न्तो पु., प्र. वि., ए. व. — तत्रापासिं एवनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसवेदी एवमायुपरियन्तो, दी. नि. 1.11; — परियोसान नपुं., तत्पु. स. [आयुष्पर्यवसान], आयु का अन्त, जीवन की अन्तिम घड़ी — ने सप्त. वि., ए. व. — आयुपरियोसाने पुब्बनिमित्तेसु उपपत्तेसु, चरिया. अ. 73; — पाल पु., व्य. सं., एक स्थविर भिक्षु का नाम — लो प्र. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन आयस्सा आयुपालो सङ्खयेय्यपरिवेणे पटिवसति, मि. प. 16; — पालक त्रि., आयु का पालन-पोषण करने वाला, आयु-वर्धक — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — यथा, ... भोजनं सब्बसत्तानं आयुपालकं जीवितरक्खकं, मि. प. 247; — पाला स्त्री., व्य. सं., एक भिक्षुणी, जो सम्राट अशोक की पुत्री संधमित्रा की आचार्या थी — ला प्र. वि., ए. व. — आचरिया आयुपाला, काले सासि अनासवा, म. वं. 5.208; सङ्गमित्तायपि राजधीताय आचरिया आयुपालित्थेरी नाम, पारा. अ. 1.37; पाठा. आयुपाली; — ब्बेद पु., तत्पु. स. [आयुर्वेद], आयु अथवा स्वास्थ्य से सम्बन्धित विद्या-शाखा, आयुर्वेद — दे सप्त. वि., ए. व. — आयुब्बेदे सयं चापि निपुणत्ता नराधिपो, चू. वं. 73.42; — वङ्गन क. त्रि., आयुवर्धक, आयु को बढ़ाने में उपयोगी — ना पु., प्र. वि., ब. व. — आयुपच्छेदना, न आयुवङ्गना, अ. नि. अ. 3.47; ख. एक ब्राह्मण-पुत्र का

## आयु

156

## आयु

नाम - अथस्स आयुवङ्गनकुमारोति नामं करिंसु ध. प. अट्ट. 1.378; - **वण्णबल** नपुं. द्व. स. [आयुर्वर्णबल], दीर्घ आयु, सौन्दर्य एवं बल - लेन तू. वि., ए. व. - महायसा सुखेनापि, आयुवण्णवलेन च दिब्बसम्पत्ति वा तेसं मनुस्सानं भविस्सति, अना. वं. 128 (रो.); - **वण्णसुखबल** नपुं. समा. द्व. स. [आयुर्वर्णसुखबल], दीर्घ आयु, सुन्दर रूप, सुख एवं बल - लानि प्र. वि., ब. व. - रतनत्तयप्पणामेन हि आयुवण्णसुखबलानि, अ. नि. टी. 1.4; - **वण्णसुखबलवङ्गन** त्रि., [आयुर्वर्णसुखबलवर्धन], आयु, सुन्दरता, सुख एवं बल की वृद्धि करने वाला - तो प. वि., ए. व. - अथ वा रतनत्तयपूजाय आयुवण्णसुखबलवङ्गनतो अनन्तरायेन परिसमापनं वेदितव्वं, अ. नि. टी. 1.4; - **वण्णसुखबलवुद्धि** स्त्री., तत्पु. स. [आयुर्वर्णसुखबलवृद्धि], आयु, सुन्दरता, सुख एवं बल की वृद्धि - या तू. वि., ए. व. - ततो आयुवण्णसुखबलवुद्धिया होतेव कारियनिट्ठानं, अ. नि. टी. 1.4; - **वन्तु** त्रि., लम्बी आयु वाला, अत्यधिक आयु वाला, बुजुर्ग - वा पुं. प्र. वि., ए. व. - तेसज्जतरोयमायुवा, थेरगा. 234; अयं आयुवा दीघायु आयस्सा, थेरगा. अट्ट. 1.383; - **वेमज्झ** नपुं. तत्पु. स., जीवन का मध्यभाग - ज्झं द्वि. वि., ए. व. - आयुवेमज्झं अनतिक्रमत्वा परिनिब्बायति ..., स. नि. अट्ट. 3.180; - **वेमत्त** नपुं. तत्पु. स. [आयुर्वैमात्र्य], आयु सीमा में विविधता अथवा भिन्नता, जीवन की अवधि में भिन्नता - त्तं प्र. वि., ए. व. - सम्मासम्बुद्धानं आयुवेमत्तं, सरीरप्पमाणवेमत्तं, कुलवेमत्तं दुक्करचरियावेमत्तं, रस्मिवेमत्तन्ति ..., उदा. अट्ट. 121; - **वेमत्तता** स्त्री., भाव. [आयुर्वैमात्रता], आयु के विस्तार में विविधता अथवा भिन्नता का होना, आयु-सीमा में अन्तर होना, विभिन्न बुद्धों में अन्तर कर देने वाले 8 धर्मों में से एक - त्ता प्र. वि., ए. व. - हेड्ढिमपरिच्छेदेन च वस्ससतायुक्काले उप्पज्जन्ति उपरिमपरिच्छेदेन वस्ससतसहस्सायुक्काले, अयं नेसं आयुवेमत्तता, सु. नि. अट्ट. 2.122; - **वोस्सज्जन** नपुं. तत्पु. स. [आयुर्व्यवसर्जन], जीवन का परित्याग, आयु का अन्त, मृत्यु - नं प्र. वि., ए. व. - आलवकड्डुलिमाल-अपलालदमनं पि च, पारायनकसमितिं आयुवोस्सज्जनं तथा, म. वं. 30.84; आयुवोस्सज्जनं तथा ति मारयावानुपुब्बकं भगवता विस्सह्वायुवोस्सज्जनाधिकारं च, म. वं. टी. 505(ता.); - **संवत्तनिक** त्रि., [आयुसंवर्तनिक], दीर्घायु को देने वाला, दीर्घायु में परिणत होने वाला - का

स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आयुकामेन ... अरियसावकेन आयुसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितव्वा, आयुसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना आयुपटिलाभाय संवत्तति, अ. नि. 2(1).44; आयुसंवत्तनिकां आयस्मता चुन्देन कम्मरपुत्तेन कम्मं उपचितं, दी. नि. 2.103; - **सङ्खय** पुं. तत्पु. स. [आयुसंखय], आयु का क्षय, मृत्यु, जीवन का अन्त - यं द्वि. वि., ए. व. - मतज्ज दिस्वा गतमायुसङ्खयं, थेरगा. 73; यस्माकालङ्कतो आयुनो खयं वयं भेदं गतो नाम होति, तस्मा वुत्तं गतमायुसङ्खयन्ति, थेरगा. अट्ट. 1.176; - **या** प. वि., ए. व. - यदा देवो देवकाया, चवति आयुसङ्ख्या तयो सदा निच्छरन्ति, देवानं अनुमोदतं, इतिवु. 56; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - भवन्मि पकम्मित्थ, बुद्धस्स आयुसङ्खये, अप. 1.152; - **सङ्गार** पुं. तत्पु. स. [आयुसंस्कार], प्राणाघायक तत्त्व, जीवन-तत्त्व, लम्बी जीवनावधि का आधारभूत तत्त्व, जीने की लालसा या चेतना - रो प्र. वि., ए. व. - तथागतेन सतेन सम्पजानेन आयुसङ्गारो ओस्सङ्गो ति, दी. नि. 2.88; - **रे** सप्त. वि., ए. व. - ओस्सङ्गे च भगवता आयुसङ्गारे महाभूमिचालो अहोसि भिसनको लोमहसो, देवदुन्नुभियो च फलिसु, उदा. 142; - **रा/रे** प्र. / द्वि. वि., ब. व. - अत्तनो आयुसङ्गारे उपघारेत्वा, विसुद्धि. 1.280; आयुसङ्गारा, ते वेदनिया धम्मा, म. नि. 1.376; - **रानं** ष. वि., ब. व. - पत्तो आयुसङ्गारानं इत्तरभावं दस्सेत्वा, जा. अट्ट. 4.189; - **रेसु** सप्त. वि., ब. व. - अथस्स अनुपुब्बेन आयुसङ्गारेसु परिहीनेसु परिनिब्बानदिवसो सम्पापुणि, जा. अट्ट. 1.231; - **सङ्गारखेपनसङ्गात** त्रि., "जीने की चेतना का अपनयन" नाम वाला - स्स पुं. ष. वि., ए. व. - तत्थ वा आयुसङ्गारस्सखेपनसङ्गातस्स कालस्स कतत्ता कालकतो, वि. व. अट्ट. 264; - **सङ्गारपरितता** स्त्री., भाव., अल्पायु होने की दशा, अल्पायुता - तं द्वि. वि., ए. व. - इदानि इमिस्सापि जातिया आयुसङ्गारपरित्तं दस्सेत्वा, जा. अट्ट. 4.356; - **सङ्गारवोस्सज्जन** नपुं. तत्पु. स., जीवन का परित्याग, आयु-संस्कार (जीवनविषयिणी चेतना) की समाप्ति - ज्जने सप्त. वि., ए. व. - तस्मिं आयु सङ्गारवोस्सज्जने, अप. अट्ट. 2.125; - **सङ्गारवोस्सज्जभाव** पुं. तत्पु. स. [संस्कारव्यवसर्जनभाव], आयु-संस्कार अथवा जीवन-चेतना के परित्याग की अवस्था - वं द्वि. वि., ए. व. - देवपुत्तो ... बुद्धस्स आयुसङ्गारवोस्सज्जभावं अत्था महासोकं दोमनस्सं उप्पादेसि, अप. अट्ट. 2.125; - **सङ्गारोस्सज्जन** नपुं. तत्पु. स.,

## आयुक्त

157

## आयुक्त

आयुसंस्कार का परित्याग - ज्जने सप्त. वि., ए. व. - अज्ज ... सुत्वा आयु संहारोसज्जने गमिस्सामाति. दी. नि. अ. 2.150; - सन्तानजनकपच्चयसम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स., आयु की निरन्तरता में कारणभूत (भोजन आदि) तत्त्वों की प्राप्ति - या तृ. वि., ए. व. - तत्थ यं विज्जमानायपि आयुसन्तानजनकपच्चयसम्पत्तिया केवलं पटिसम्भिजनकस्स कम्मस्स विपक्कविपाकत्ता मरणं होति. विसुद्धि. 1.220; आयुसन्तानजनकपच्चयसम्पत्तिवाति आयुप्पबन्धस्स पवतापनकानं आहारादिपच्चयानं सम्पत्तिं विसुद्धि. महाटी. 1.272; - सहगत त्रि., तत्पु. स., आयु के साथ जुड़ा हुआ, जीवन के साथ साथ विद्यमान - तो पु., प्र. वि., ए. व. - यदायं कायो, आयुसहगतो च होति उत्सासहगतो च विज्जाणसहगतो च, तदा लहतरो च होति मुदुतरो च कम्मज्जतरो च, दी. नि. 2.249.

आयुक्त त्रि., ब. स. [आयुक्त], आयु वाला, ब. स. के उ. प. के रूप में ही प्राप्त, अष्टकम्पा. (आठ कल्पों की आयु वाला), अप्पा. (छोटी या कम आयु वाला), असङ्ख्य्या. (संख्या से परे आयु वाला), असीतिवस्ससहस्सा. (एक हजार कल्पों की आयु वाला), कप्पा. (एक कल्प की आयु वाला), खीणा. (वह, जिस की आयु क्षीण हो चुकी है), चतुसङ्घिकप्पा. (चौसठ कल्पों की आयु वाला), चत्तालीसवस्ससहस्सा. (चालीस हजार वर्षों की आयु वाला), दसवस्ससहस्सा. (दस हजार वर्षों की आयु वाला), दीघा. (लम्बी आयु वाला), नियता. (सुनिर्धारित अवधि की आयु वाला), परिक्खीणा. (अत्यधिक हो चुकी आयु वाला), परिता. (अत्यल्प आयु वाला), यावता. (जब तक आयु है तब तक), वस्ससतसहस्सा. (एक सौ हजार वर्षों की आयु वाला), वस्ससता. (एक सौ वर्षों की आयु वाला), वस्ससहस्सा. (एक हजार वर्षों की आयु वाला), सावसेसा. (वह, जिसकी आयु का कुछ भाग अभी तक शेष है), के रूप में प्राप्त.

आयुज्जन नपुं., आ + युज से व्यु., क्रि. ना., प्रबल जोड़, मजबूत लगाव, सुदृढ़ आसक्ति - नं प्र. वि., ए. व. - आयुज्जनं अनुयुज्जनं आयोगो, दी. नि. टी. 1.332.

आयुत त्रि., आ + यु से व्यु., भू क. कृ. [आयुत], शा. अ., अच्छी तरह से जोड़ दिया गया, भली-भांति बांध दिया गया, ला. अ., युक्त, परिपूर्ण, (से) समन्वित, भरपूर - तो पु., प्र. वि., ए. व. - रागरत्तो सुखसीलो, कामेसु गेधमायुतो, बुद्धेन चोदितो सन्तो, तदा त्वं पब्बजिस्ससि, अप. 1.54; गेधमायुतोति वत्थुकामेसु गेधसङ्गाताय तण्हाय

आयुतो योजितोति अत्थो, अप. अ. 2.6; हरितेन आयुतो नादियो, जा. अ. 7.305; - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अयं नदी पुथुलोमेहि मच्छेहि आयुता पुथु विपुला, जा. अ. 5.5; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - किम्पुरिसेहि आयुतं परिकिण्णं, जा. अ. 7.279; स. उ. प. के रूप में किम्पुरिसा, गणङ्गुलमिगा., गुणगन्धा., दिज्जगणा., दुमा., दुरा., नारीवरगणा., पुथुलोमा., युधा., वालमिगा., सोणकिङ्किणिका. के अन्त. प्रयुक्त.

आयुत आ + युज से व्यु., भू क. कृ. [आयुक्त], 1. त्रि., किसी काम में लगा दिया गया, जोड़ दिया गया, लगा हुआ, संयुक्त, प्राप्त - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आयुतो कटकरणस्स आयुतो कटकरणे, मो. व्या. 2.37; पठमस्स ज्ञानस्स उप्पादाय युतो पयुतो आयुतो समायुतो, महानि. 379; - स्स पु., ब. वि., ए. व. - मेथुनमनुयुत्तस्साति, मेथुनधम्मं युत्तस्स पयुत्तस्स आयुत्तस्स समायुत्तस्स, महानि. 104; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - तपोजिगुच्छाय आयुता, स. नि. 1(1).82; आयुताति तपोजिगुच्छने युत्तपयुता, स. नि. अ. 1.113; 2. पु., कार्य-विशेष के लिए नियुक्त प्रशासनिक पदाधिकारी अथवा मन्त्री - तो प्र. वि., ए. व. - आयुतो मातुसन्देसं सब्बं तस्स निवेदयि, म. वं. 10.19; दारकं च सहस्सं च आयुत्तस्स अदा रहो, म. वं. 10.5; - ता प्र. वि., ब. व. - मा ते अधम्मिकायुता, धनं रुद्ध्वनासयुं जा. अ. 5.112; - क पु., आयुत + क से व्यु. [आयुक्त], सरकारी पदाधिकारी, किसी प्रशासनिक कार्य के सम्पादन अथवा निरीक्षण के लिए नियुक्त पदाधिकारी या पर्यवेक्षक - को प्र. वि., ए. व. - अम्हाकं देव, नगरे आयुत्तको नत्थि, स. नि. अ. 3.100; - कं द्वि. वि., ए. व. - आयुत्तकं गामकिच्चं करोन्तमेव परिस, पटि. म. अ. 2.274; - केन तृ. वि., ए. व. - आयसाधकेन आयुत्तकेन सहितं, ध. प. अ. 2.259; - स्स ब. वि., ए. व. - मम गामसते आयुत्तकस्स सन्तिकं पेसेत्त्वा मारापेत्तामीति, पटि. म. अ. 2.273; - का प्र. वि., ब. व. - ... आयुत्तका लज्जं गहेत्त्वा ..., जा. अ. 5.114; - के द्वि. वि., ब. व. - ... आयुत्तके अदासि, जा. अ. 5.445; - घर नपुं., तत्पु. स., प्रशासनिक पदाधिकारी का निवासस्थान - रं द्वि. वि., ए. व. - गतेसु तेसु सो गन्त्वा आयुत्तकघरं सकं, म. वं. 10.12; - पुरिस पु., प्रशासनिक अधिकारी - सो प्र. वि., ए. व. - आयसाधको आयुत्तकपुरिसो विष तन्निस्सितो नन्दिरागो अनुचरो नाम,



## आयुध

158

आयूहन

ध. प. अ. 2.259; — ब्राह्मण पु., कर्म. स., ब्राह्मण जाति वाला प्रशासनिक अधिकारी — णो प्र. वि., ए. व. — एवंनामको राजगहनगरे जिण्णपटिसङ्करणकारको आयुत्तकब्राह्मणो, अ. नि. अ. 2.147; — वेस पु., तत्पु. स. [आयुक्तकवेश], प्रशासनिक पदाधिकारी की वेशभूषा — सं द्वि. वि., ए. व. — सेट्ठिनो आयुत्तकवेसं गहेत्वा, ध. प. अ. 2.8.

आयुध नपुं., संभवतः आयुध के स्थान पर संस्कृत के प्रभाववशः उत्तरकात्तीन रचनाओं में प्रयुक्त सं. शब्द [आयुध], हथियार, शस्त्र — घं प्र. वि., ए. व. — अथायुधं च हेतीत्थी सत्थं पहरणं भवे अमि. प. 385; आयुधं मेनुभावेन तेसं काये पतिस्सति, म. व. 7.36; — घं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. — आयुधं मम बाहुना गाहेतुं असमत्थोति, चू. वं. 72.106; — घे द्वि. वि., ब. व. — गोपुरद्धा तु दमिळा खिपिसु विविधायुधे म. वं. 25.30; — जीवी त्रि., [आयुधजीविन], हथियारों अथवा शस्त्रों की कुशलता द्वारा अपनी जीविका कमाने वाला, योद्धा — विनो पु., प्र. वि., ब. व. — मय् रज्ज्मि ये केचि सन्ति आयुधजीविनो एते सब्बे समादाय खिप्पं गत्वा पसस्य तं आनेस्सथ कुमारंति, चू. वं. 66.67-68; — सम्पहार पु., तत्पु. स., हथियारों अथवा शस्त्रों का प्रहार — रो प्र. वि., ए. व. — आयुधसम्पहारो न साधु सिया, थू. वं. 31(रो.).

आयुधीय त्रि./पु., [आयुधीय], हथियारों के सहारे जीविका कमाने वाला, योद्धा, सैनिक — या प्र. वि., ब. व. — हुत्तायुधीया राजूनं अब्भन्तरपवत्तिनो, बलवन्ततरा जाता लद्धद्वानन्तरा तदा, चू. वं. 61.69.

आयुर पु., व्य. सं., वाराणसी के शासक माधव का एक सचिव — रं द्वि. वि., ए. व. — उपायेन तं तिकिच्छिस्सामीति आयुरञ्च पुक्कुसञ्जाति द्वे रज्जो पण्डितामच्चे आमन्तेत्वा ..., जा. अ. 3.298.

आयुसुत्त नपुं., स. नि. के दो सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 1(1).128; 129.

आयुस्स त्रि., आयु से व्यु. [आयुष्य], आयु को बढ़ाने वाला, स्वास्थ्यवर्धक — स्सं नपुं., प्र. वि., ए. व. — छट्ठियन्तेहि चक्खु आदीहि हिते 'स्सो' होति, चक्खुस्सं, आयुस्सं, मो. व्या. 4.71; — स्सा पु., प्र. वि., ब. व. — धम्मा आयुस्सा, अ. नि. 2(1).136.

आयुस्ससुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).136.

आयूहक त्रि., आयूह + क से व्यु., प्रबल प्रयास करने वाला, सक्रिय, उत्सुक — को पु., प्र. वि., ए. व. — महोस्सो, ... वीरियवा आयूहको सङ्गाहको, मि. प. 197.

आयूहति आ + रुह का वर्त., प्र. पु., ए. व. [बौ. सं. आयूहति]. शा. अ., प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, कोशिश करता है, संपर्ष करता है, ला. अ., उत्पन्न करता है, उदित कराने हेतु प्रयास करता है, सामने लाता है, वृद्धि कराता है — सो अप्पवत्तनत्थाय मग्गं आयूहति गवेसति भावेति बहुलीकरोति, मि. प. 297; आयूहति सब्बगत्तेभि जन्तु, स. नि. 1(1).56; नायूहती पारगतो हि सोव, तदे., — हामि उ. पु., ए. व. — यदाख्याहं, आवुसो, आयूहामि तदास्सु निब्बुहामि, स. नि. 1(1).2; — न्ति प्र. पु., ब. व. — पटिसन्धिजननत्थं आयूहन्ति व्यापारं करोन्तीति, विसुद्धि. महाटी. 2.238; — न्तो पु., वर्त. कृ., पु. प्र. वि., ए. व., निशे., बिना किसी प्रयास के — अप्पतिद्वं ख्याहं आवुसो, अनायूहं ओधमत्तरन्ति, स. नि. 1(1).1-2; अनायूहन्ति अनायूहन्तो, अवायमन्तोति अत्थो, स. नि. अ. 1.17; — न्तं वर्त. कृ., नपुं., द्वि. वि., ए. व. — यंकिञ्चि कम्मं आयूहन्तं एवं जानाति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).350; — तं पु., ष. वि., ब. व. — जयो महाराज पराजयो च आयूहतं अज्जरत्तस्स होति, जा. अ. 7.175; — माना स्त्री., वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. — फस्सो फुसन्तोयेव, मनोसञ्चेतना आयूहमानाव, विज्जाणं विजानन्तमेव, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).218; — युहे विधि., प्र. पु., ए. व. — कोयं णेमज्झो समुदस्मिं, अपस्सं तीरमायुहे, जा. अ. 6.42; ... आयूहति वीरियं करोति, जा. अ. 6.42; — हि अद्य, प्र. पु., ए. व. — ननु ..., देवदत्तो ... कप्पट्टियं कम्मं आयूहि, मि. प. 203; — हिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — अपब्बजितोपि अयं मोघपुरिसो कप्पट्टियमेव कम्मं आयूहिस्सतीति कारुञ्जेन देवदत्तं पब्बाजेसीति, मि. प. 117; — हित्वा पू. का. कृ. — कुसलं पन आयूहित्वा ... होति, म. नि. अ. (उप.प.) 3.193; — हितब्ब सं. कृ. (सं. प. के अन्त.) — इदानीं आयूहितब्बकम्मनं, अ. नि. अ. 2.196; — हियमानं वर्त. कृ., कर्म. वा., नपुं., प्र. वि., ए. व. — कम्मज्झि आयूहियमानमेव पटिसन्धिं आकङ्कति नाम, स. नि. अ. 2.99.

आयूहन नपुं., आ + रुह से व्यु., क. ना., क. आत्मप्रयास, पुरुषार्थ, या प्रयत्न करना, ख. उत्पन्न कराना, उदित

## आयूहन

159

## आयोग

कराना, सञ्चित कराना - नं<sup>१</sup> प्र. वि., ए. व. - आयूहनन्ति समीहनं, विसुद्धि. महाटी. 1.292; आयूहनन्ति सङ्घारानं अत्थाय पयोगकरणं, पटि. म. अहु. 1.113; मनोसञ्चेतनाय आयूहनमेव, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).219; - नं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. - आयूहनं पटिसन्धिं, आणं आदीनवे इदं, पटि. म. 54; - ना प. वि., ए. व. - आयूहना बुद्धातीति - गोत्रभु, पटि. म. 60; - ने सप्त. वि., ए. व. - आयूहने आदीनवं दित्वा, पटि. म. 387; पिण्डकरणत्थायाति आयूहनवसेन रासिकरणत्थाय, अ. नि. टी. 2.93; - ड पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आयूहनार्थ], प्रयास या प्रयत्न करने का अर्थ - डो प्र. वि., ए. व. - समुदयदस्सनेनेव आयूहनडो, पटि. म. अहु. 1.88; - डेन तृ. वि., ए. व. - चेतना पधाना आयूहनडेन पाकटत्ता, विभ. अहु. 19; - नावसान नपुं., तत्पु. स., प्रयास का अन्त अथवा प्रयत्न की समाप्ति - ने सप्त. वि., ए. व. - आयूहनावसाने वुत्तचेतना भवोति, विभ. अहु. 183; - काल पु., तत्पु. स., प्रयास अथवा प्रयत्न करने का समय - लो प्र. वि., ए. व. - आयूहनकालो अज्जो विपच्चनकालो, ध. स. अहु. 325; - द्विति स्त्री., तत्पु. स., प्रयास करने की अवस्था, प्रयत्नशीलता, ऐसी स्थिति, जो प्रयास करने के अनुरूप हो - ति प्र. वि., ए. व. - अविज्जा सङ्घारानं... आयूहनद्विति, पटि. म. 44; आयूहनद्वितीति आह, आयूहनभूता द्वितीति अत्थो, पटि. म. अहु. 1.202; - पच्चय पु., प्रयास के कारण - या प. वि., ए. व., क्रि. वि. - ये आयूहनपच्चया किलेसा निब्बत्तेषु, पटि. म. 387; - रस त्रि., ब. स., प्रयास का कार्य सम्पादित करने वाला, वह, जिसका सारतत्त्व अथवा प्रधान कार्य प्रयत्न करना हो - सा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - चेतना... आयूहनरसा, ध. स. अहु. 157; - रसता स्त्री., भाव., प्रधान कार्य के रूप में प्रयत्नशीलता - आयूहनरसता पन कुसलाकुसलेसु एव होति, ... एवमस्सा आयूहनरसता वेदितब्बा, ध. स. अहु. 157; - लक्खण त्रि., ब. स., प्रयत्नशीलता अथवा उद्योगी होने के लक्षण वाला, वह, जिसकी मुख्य पहचान उसका प्रयत्नशील रहना हो - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - भवस्स आयूहनलक्खणं, दी. नि. अहु. 1.60; - सङ्घार पु., तत्पु. स., प्रयत्न विषयिणी चेतना, प्रयास करने के लिए मन में हो रहा ऊहापोह - रा प्र. वि., ब. व. - छसु जवनेसु चेतना आयूहनसङ्घारा नाम, विभ. अहु. 183; - समङ्गिता स्त्री., भाव., प्रयत्नशीलता से परिपूर्ण रहने की स्थिति,

पांच प्रकार की परिपूर्णताओं में से एक - ता प्र. वि., ए. व. - पञ्चविधा समङ्गिता - आयूहनसमङ्गिता, चेतनासमङ्गिता, कम्मसमङ्गिता, विपाकसमङ्गिता, उपद्धानसमङ्गिताति, विभ. अहु. 413.

आयूहना स्त्री., आ + रुह से व्यु., क्रि. ना., उपरिवत् - ना प्र. वि., ए. व. - आयूहनाति आयतिं पटिसन्धिहेतुभूतं कम्मं, तस्मिन् अभिसङ्करणेन आयूहनाति बुच्चति, पटि. म. अहु. 1.81.

आयूहनी 1. स्त्री., प्रयत्न, प्रयास, कोशिश, उद्योगशीलता, अध्यवसाय, 2. त्रि., प्रयास कराने वाला/वाली, प्रेरित करने वाली, कोशिश कराने वाली - नी प्र. वि., ए. व. - तस्स तस्स पटिलाभत्थाय सत्ते आयूहापेतीति आयूहिनी, ध. स. अहु. 390.

आयूहापेति आ + रुह का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रयास कराता है, कोशिश करने हेतु प्रेरित करता है - ति प्र. वि., ए. व. - तस्स तस्स पटिलाभत्थाय सत्ते आयूहापेतीति आयूहिनी, ध. स. अहु. 390.

आयूहित त्रि., आ + रुह से व्यु., भू. क. कृ., शा. अ., वह, जिसके लिए सुदृढ़ प्रयास किया गया हो, उत्पादित, सञ्चित, ला. अ., सक्रिय, व्यस्त - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आयूहितो अत्थसाधनताय अपचितिं न करोति, मि. प. 175; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - अतीते कप्पकोटिसतसहस्समत्थकेपि हि आयूहितं कम्मं एतरहि पच्चयो होति, विभ. अहु. 24; - तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - सङ्गतं पकप्पितं आयूहितं करोत्तेन करीयति, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.221; - ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. - कम्मे आयूहिते, अभि. अव. 13.

आयोग पु., आ + युज से व्यु. [आयोग], क. शा. अ., एक जुट कर देना, बांध देना, बन्धन, जोड़, जुड़ाव, एक जुट हो जाना, ख. विनय में विशेष अर्थ, गद्दीदार आसन - गो प्र. वि., ए. व. - कथं नु खो आयोगो कातब्बोति, चूलव. 256; - गं द्वि. वि., ए. व. - अनुजानामि, भिक्खवे, आयोगन्ति, चूलव. 256; - गेन तृ. वि., ए. व. - तेन खो पन समयेन अज्जतरो भिक्खु गिलानो होति, तस्स विना आयोगेन न फासु होति, चूलव. 256; - गे द्वि. वि., ब. व. - आयोगे धूमनेत्ते च, अथोपि दीपधारकं, अप. 1.333; - गे<sup>२</sup> सप्त. वि., ए. व. - अनापत्ति आयोगे, पाचि. 224; ग. ला. अ., प्रयास, अध्यवसाय, व्यावहारिक अभ्यास, सुदृढ़ उद्योग, प्रयोग में लाना - गो प्र. वि., ए. व. -

## आयोधन

160

आरका

अधिचित्ते च आयोगो, एतं बुद्धानसासनंति, दी. नि. 2.38; ध. प. 185; आयोगोति पयोगकरणं, ध. प. अ. 2.137; - गं द्वि. वि., ए. व. - तस्मा तिह, भिक्षवे, तुम्हेपि अकुसलं पजहथ, कुसलेसु धम्मसु आयोगं करोथ, म. नि. 1.176; घ. ला. अ., (केवल स. प. में प्राप्त) ब्याज के साथ ऋण - तं तं आयोगगगहणेन वा इणं गहेत्वा, सु. नि. अ. 1.143; - पट्ट पु., तत्पु. स., वरत्रखण्ड, कपड़े की पट्टी - टो प्र. वि., ए. व. - उक्कट्टस्स नेव अपस्सेनं, न दुस्सपल्लत्थिका, न आयोगपट्टो वट्ठति, विसुद्धि. 1.78; - टं द्वि. वि., ए. व. - आयोगपट्टं अहमदासि, भिक्षुनो पिण्डाय चरन्तस्स, वि. व. 546; आयोगपट्टं अहमदासि, वि. व. अ. 119; - पल्लत्थिका स्त्री., [आयोगपर्यस्तिका, बौ. सं. आयोगपल्लत्थिक], दोनों घुटनों को मोड़कर लगाया गया पालथी का आसन, पदमासन, कमलासन - का प्र. वि., ए. व. - दुस्सपल्लत्थिकायाति एत्थ आयोगपल्लत्थिकापि दुस्सपल्लत्थिका एव, पाचि. अ. 152; - वत्त नपुं., अनुरक्त, निष्ठावान, समर्पित - तेन तु. वि., ए. व. - कसावरत्तनिवासनो कण्णे तालपण्णं पिळ्ळित्वा एकेन आयोगवत्तेन गीतं गायन्तो राजङ्गणेन पायासि, जा. अ. 3.395.

आयोधन नपुं., आ + युध से व्यु. [आयोधन], क. युद्ध, लड़ाई, संग्राम, ख. युद्धभूमि, रणभूमि - तदा माळवरायरा अगगहेसि मुण्डिककारं कत्वान आयोधनं बली, चू. वं. 76.267.

आर' पु., सुई, सुआ - रो प्र. वि., ए. व. - आरोच सत्थि च आरसत्थि, बाला. 109.

आर' नपुं., [आर], पीतल - स्स ष. वि., ए. व. - आरस्सेव कूटो आरकूटो, आरं पित्तलं कूटयति धूपीकरोति वा रीतिथी आरकुटो वा, अभि. प. 492 पर सूची.

आरक त्रि., आरा से व्यु., दूरवर्ती, दूर में विद्यमान, समीप में नहीं स्थित - को पु., प्र. वि., ए. व. - आरकाहं, ..., अनुत्तराय विज्जायरणसम्पदाय साचरियकोति, दी. नि. 1.89; सीलब्बतपरामासो आरको होति, अ. नि. 2(2).273; - का' स्त्री., प्र. वि., ए. व. - सक्कायदिट्ठि आरका होति, अ. नि. 2(2).273; - का' पु., प्र. वि., ब. व. - आरकास्स होन्ति पापका अकुसला धम्मा, म. नि. 1.352; म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).47.

आरककिलेस त्रि., ब. स., वह, जिसके चित्त से क्लेश बहुत दूर चले गए हैं, क्लेशों से रहित - सो पु., प्र. वि., ए. व. - अरहन्ति आरककिलेसो, दूरकिलेसो पहीनकिलेसोति

अत्थो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).46.

आरकण्टक पु./नपुं., शा. अ., सुई का नुकीला अग्रभाग, विशेष अर्थ, ग्रन्थों के लिखने आदि में प्रयुक्त तीक्ष्ण अग्रभाग वाली कलम - कं' प्र. वि., ए. व. - आरकण्टकं नाम, अयं पिप्फलको नाम, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).405; आरकण्टकं नाम पोत्थकादि अभिसङ्गारणत्थं कतदीघमुख सत्थकन्ति वदन्ति, वि. वि. टी. 1.147; - कं' द्वि. वि., ए. व. - आरकण्टकं, पिप्फलिकं, नखच्छेदनं सूचिं, ... सब्बं अदासि, दी. नि. अ. 2.201; - के सप्त. वि., ए. व. - आरकण्टकेपि वट्ठमणिकं वा अज्जं वा वण्णमड्डं न वट्ठति, पारा. अ. 1.234; - को पु., प्र. वि., ए. व. - आरकण्टको पोत्थकादि करणसत्थकजाति, वजिर. टी. 109.

आरकता स्त्री., आरक का भाव, दूर रखने की अवस्था, दूरवर्तिता - य तृ. वि., ए. व. - किलेसेहि आरकताय अरियं, ध. प. अ. 2.158.

आरकत्त नपुं., आरक का भाव, उपरिवत्, क. अरहा की व्यु. के सन्दर्भ में प्रयुक्त - ता प. वि., ए. व. - सत्तन्तं धम्मानं आरकता अरहा होतीति, अ. नि. 2(2).273; किलेसेहि आरकतादिना अरहं, थेरगा. अ. 1.339; ख. 'अरिय' की व्यु. के सन्दर्भ में प्रयुक्त, - ता प. वि., ए. व. - किलेसेहि आरकता अरियो, दी. नि. अ. 3.225; किलेसानं आरकता अरियो होति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).220.

आरकमाव पु., उपरिवत्, - वं द्वि. वि., ए. व. - तस्मा इमस्स साचरियकस्स तेसं पटिपत्तिता आरकभावं दस्सेतुं, दी. नि. अ. 1.221.

आरका अ., प./सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., आरक का प. वि. [आरकात्], - आरा दूरा च आरका, अभि. प. 1157; 1. क्रि. वि. के रूप में, दूर से, दूर में, दूरी से, फासले पर - आरका परिवज्जेय्य, गूथड्डानं व पावुसे, थेरगा. 1156; तं आरका दूरतोव परिवज्जेय्य, थेरगा. अ. 2.412; ..., भिक्षुं सइन्दा देवा सब्बका सपजापतिका आरकाय नमस्सन्ति, स. नि. 2(1).84; आरकाव नमस्सन्तीति दूरतोव नमस्सन्ति, दूरेपि ठितं नमस्सन्तियेव आयस्मन्तं नीतत्थेरं विय, स. नि. अ. 2.263; 2. पूर्वसर्ग के रूप में, क. द्वि. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ, दूर में, फासले पर, दूरस्थ - आरका इमं धम्मविनयं, क. व्या. 277; ख. तु./प. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ - आरकाव सङ्गहा, सङ्गो च तेन, चूळव. 396; ग. ष. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ, दूर में, दूरस्थ - तस्स पुरिस्स

## आरकूट

161

## आरखगहणत्थ

आरकावस्स चेतना आरका पत्थना आरका पणिधि, स. नि. 1(2).88; आरकावस्साति दूरेयेव भवेय्य, स. नि. अट्ट. 2.98.

आरकूट पु. / नपुं., [आरकूट], तीन प्रकार की मिश्रित धातुओं में एक, पीतल — टो / टं पु. / नपुं., प्र. वि., ए. व. — रीरिथी आरकुटो वा, अभि. प. 492; कंसलोहं, वट्टलोहं, आरकूटन्ति तीणि कित्तिमलोहानि नाम, विभ. अट्ट. 60; तीणि हि कित्तिमलोहानि कंसलोहं, वट्टलोहं आरकूटन्ति ... रसकतम्बे मिरसेत्वा कतं आरकूटं, कट्ठा. अभि. टी. 390; — मय त्रि., पीतल से बना हुआ — यं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरकूटमयं सुवण्णवण्णं अभरणजातं, स. नि. अट्ट. 2.177; — लोह नपुं., कर्म. स., तीन प्रकार की मिश्रित लौहधातुओं में से एक — हं प्र. वि., ए. व. — आरकूटलोहन्ति सुवण्णवण्णो कित्तिमलोहविसेसो, विनया. टी. 1.68.

आरक्ख' / आरक्खा पु. / स्त्री., [आरक्षा, स्त्री.], सुरक्षा, संधारण, देखरेख, रखवाली, निगरानी — क्खो पु., प्र. वि., ए. व. — आरक्खो वा सो ते न भविस्सतीति, पारा. 18; आरक्खोति अन्तो च बहि च रत्तिञ्च दिवा च आरक्खणं, पारा. अट्ट. 1.162; मच्छरियं पटिच्च आरक्खो, दी. नि. 2.46; — क्खा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आचरियेन अन्तेवासिम्हि सततं समितं आरक्खा उपट्टपेतब्बा, मि. प. 105; — क्खं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — आरक्खं याचति, पाचि. 301; सत्तानुरक्खणं, महाराज, परितं अत्तना कतेन आरक्खं जहति, मि. प. 153; — क्खेन पु., तृ. वि., ए. व. — तं आरक्खेन गुत्तिया सम्पादेस्साम, अ. नि. 2(1).33; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — आरक्खस्स, यदिदं मच्छरियं, दी. नि. 2.46; — क्खाय' स्त्री., तृ. वि., ए. व. — भगवतो ओवादे ठितानं एदिसाय आरक्खाय करणीयं, थेरगा. अट्ट. 1.46; — क्खाय' च. वि., ए. व. — छन्नं इन्द्रियानं आरक्खाय सिक्खति, स. नि. 2(2).179-80; — क्खे पु., सत्त. वि., ए. व. — सब्बसो आरक्खे असति, दी. नि. 2.46; स. प. के अन्त., आरक्खत्थाय भण्डस्स, निधानकुसलं नरं, अप. 1.41.

आरक्ख' पु., रक्षा करने वाला, रखवाला, देखरेख रखने वाला — क्खो प्र. वि., ए. व. — रथस्स आरक्खो सारथि नाम योगिगयो, स. नि. अट्ट. 3.158; पिटकत्तयधम्मभण्डस्स आरक्खो रक्खको पालको, अप. अट्ट. 1.296.

आरक्खक त्रि., आ + रक्ख + क से व्यु. [आरक्षक].

शा. अ., रखवाला, रक्षा करने वाला, संधारण करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — सब्बे आरक्खका देव सुखं यन्तु नवं नवं, सट्ठ. 3.928; आरक्खका पटिच्छन्ता हुत्वा तस्स सन्निकं आगच्छन्ते ओलोकेन्ति, जा. अट्ट. 4.27; — के पु., द्वि. वि., ब. व. — पटिसत्तुं निवारेतुं योजेत्वारक्खके जने, चू. वं. 94.8; आरक्खके खग्गेन पहरन्तो, जा. अट्ट. 4.135; विशेष अर्थ, पु., विहार में नियुक्त रक्षाधिकारी — क्खके द्वि. वि., ब. व. — आरक्खके च हत्थिभण्डे च उपट्टापेसि, अप. अट्ट. 1.85; — कानं च. / ष. वि., ब. व. — लाभग्गामं अदा तस्सारक्खकानं महेसिया, चू. वं. 42.61; — जेड्डक पु., तत्पु. स., रक्षा करने वालों के बीच सभी से वरिष्ठ या ज्येष्ठ — को प्र. वि., ए. व. — आरक्खकजेड्डको एकोव नदन्तो वग्गन्तो पहरित्वा, ..., जा. अट्ट. 2.278; — देवता स्त्री., कर्म. स., रक्षा करने वाला देवता, अधिष्ठाता देवता — ता प्र. वि., ब. व. — तेसं सुत्वा आरक्खदेवता धि-कारं अकंसु, स. नि. अट्ट. 1.192; — पुरिस पु., कर्म. स., द्वारपाल, रखवाला, सिपाही — सेहि तृ. वि., ब. व. — चोरो पापधम्मो घरसन्धिं छिन्दन्तो सन्धिमुखे आरक्खकपुरिसेहि गहितो, थेरगा. अट्ट. 2.253.

आरक्खकम्मनाथ पु., व्य. सं., एक प्रधान रक्षाधिकारी का नाम — थं द्वि. वि., ए. व. — आरक्खकम्मनाथं च तथा कञ्चुकिनायकं, चू. वं. 72.58.

आरक्खकारण / आरक्खाकरण 1. नपुं., रखवाली या सुरक्षा करने का काम, रखवाली, सुरक्षा-कर्म — णं द्वि. वि., ए. व. — उप्पलवण्णस्स आचिकिख दीपं आरक्खकारणं, दी. वं. 9.24; स. प. के रूप में, — आरक्खाकरणत्थाय दक्खिणस्मिं दिसन्तरे, चू. वं. 88.22; 2. — णा प. वि., प्रतिरू. निपा., रखवाली करने के कारण से — आरक्खाधिकरणन्ति आरक्खकारणा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).369.

आरक्खकिच्च नपुं., तत्पु. स. [आरक्षाकृत्य], रक्षा करने का कार्य, रखवाली का काम — च्चं प्र. वि., ए. व. — भगवतो वा आरक्खकिच्चं अत्थीति?, स. नि. अट्ट. 2.125.

आरक्खगहणत्थ पु., तत्पु. स., निगरानी अथवा देखभाल रखने का प्रयोजन — त्थं द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि., निगरानी रखने के लिए — देवदत्तो सत्थरि पटुड्ढचित्तो अनत्थम्पि कातुं उपक्कमेय्याति आरक्खगहणत्थं स. नि. अट्ट. 2.125.

## आरक्खगोचर

162

## आरक्खपुरिस

आरक्खगोचर पु., कर्म. स. / त्रि., ब. स., अच्छी तरह से रक्षित अथवा नियन्त्रित इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य विषयों का क्षेत्र, इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य रूप आदि ऐसे विषय जिनके ग्रहण के लिए इन्द्रियों के द्वार सुरक्षित कर लिए गए हैं, वह भिक्षु, जिसने अपने इन्द्रिय द्वारों का रूप आदि विषयों के अनियन्त्रित ग्रहण पर नियन्त्रण कर लिया है - रो पु., प्र. वि., ए. व. - *यो भिक्षु अन्तरघरं पविट्ठो ... न दिसाविदिसा पेक्खमानो गच्छति, अयं आरक्खगोचरो*, इतिवु. अट्ठ. 269; *गोचरो पन उपनिस्सयगोचरो आरक्खगोचरो उपनिबन्धगोचरोति ति विधो*, उदा. अट्ठ. 182.

आरक्खड्डान नपुं., तत्पु. स. [आरक्षस्थान], 1. सैनिकों अथवा रक्षकों की चौकी, वह स्थान, जहाँ रक्षक अथवा रक्षासाधन मौजूद हों, 2. रक्षा करने योग्य स्थान - नं प्र. वि., ए. व. - *इदं पन अरज्जे आरक्खड्डानं नाम सुद्धाततोपि गरुकरं*, पारा. अट्ठ. 1.275; - नं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. - *अभिपारको अतनो आरक्खड्डानं गच्छन्तो*, जा. अट्ठ. 5.201; - ने सप्त. वि., ए. व. - *आरक्खड्डाने बहि सुनखान ओकासो नत्थि*, जा. अट्ठ. 1.176.

आरक्खति आ + रक्ख का वर्त, प्र. पु., ए. व. [आरक्षति], रक्षा करता है, संधारण करता है, निगरानी रखता है, देखभाल करता है - तो पु., वर्त. कृ., घ. वि., ए. व. - *तस्स एवं आरक्खतो गोपयतो ते भोगा विप्लुज्जन्ति*, महानि. 113; - *विखं* अट्ठ., उ. पु., ए. व. - *नारक्खं मम जीवितं*, चरिया. (पु.) 390; *जीवितं पन नारक्खं*, चरिया. अट्ठ. 141; - *विखतुं* निमि. कृ. - *आरक्खितुं जनपदं सम्पन्नबलवाहनं*, म. वं. 24.2; *आरक्खितुं जनपदं ति आदमिक्खपरिस्सया आदीघवापितो वा ओर रोहणजनपदं रक्खणत्थाय राजपुत्तं तिस्स दीघवापिम्ह वासयी ति अत्थो*, म. वं. टी. 422 (ना.).

आरक्खदायक पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, अप. की कतिपय गाथाओं का रचयिता एक कवि-स्थविर - *इत्थं सुदं आयस्मा आरक्खदायको थेरो इमा गाथायो अभासिन्थाति*, अप. 1.225; अप. 1.272.

आरक्खदुक्खमूल नपुं., तत्पु. स., रक्षा करने के दुख की जड़, रखवाली करने अथवा नियंत्रित करने के दुख का मूल कारण - लं नपुं., प्र. वि., ए. व. - *आरक्खदुक्खमूलं उपादानं सम्पत्तविसयगग्रहणभावतो*, विसुद्धि. महाटी. 2.308.

आरक्खदेवता स्त्री., कर्म. स., अधिष्ठाता देवता, रक्षक देवता - ता प्र. वि., ब. व. - *ततो आरक्खदेवता*,

*अथज्जापि परचित्तविदुनियो देवता*, पारा. अट्ठ. 1.165; *आरक्खदेवताति तस्स आरक्खत्थाय टिता देवता*, सारत्थ. टी. 2.13.

आरक्खन / आरक्खण नपुं., आ + रक्ख से व्यु., क्रि. ना. [आरक्षण], रखवाली, सुरक्षा, देखभाल - णं प्र. वि., ए. व. - *आरक्खोति अन्तो च बहि च रत्तिञ्च दिवा च आरक्खणं*, पारा. अट्ठ. 1.162; - णं<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. - *उप्यन्नानं भोगानं आरक्खणञ्च करोति परिभोगनिमित्तञ्च*, नेत्ति. 36; - णे सप्त. वि., ए. व. - *आरक्खणे असन्तप्तिं लद्धं लद्धं विनरसति*, अभि. अव. 884; - *त्थ पु.*, रक्षा का प्रयोजन - *त्थाय च*, वि., ए. व. - *बोधिसत्तस्स आरक्खणत्थाय उपगन्त्वा सिरीगम्भं पविट्ठा*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.131; - *ड्डान नपुं.*, तत्पु. स. [आरक्षणस्थान], रक्षा प्रदान करने का स्थान, रक्षा करने योग्य स्थान, नियन्त्रित करने योग्य विषय - नं प्र. वि., ए. व. - *इदमारक्खणड्डानं गरुक्कं सुद्धाततो*, विन. वि. 172.

आरक्खनिमित्त नपुं., तत्पु. स., संधारण अथवा संरक्षण वाला कारण, सुरक्षित बनाए रखने का कारण - *उप्यन्नानं भोगानं आरक्खनिमित्तं परिभोगनिमित्तञ्च*, पमादं आपज्जति ..., नेत्ति. 35.

आरक्खनिरोध पु., तत्पु. स. [आरक्षानिरोध], रखवाली अथवा निगरानी की समाप्ति या अन्त - धा प. वि., ए. व. - *सब्बसो आरक्खे असति आरक्खनिरोधा*, दी. नि. 2.46.

आरक्खपच्चुपड्डान त्रि., ब. स., सुरक्षा अथवा संधारण के रूप में उदित होने वाला, सुरक्षा को उपस्थित कराने वाला - ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सति ... आरक्खपच्चुपड्डाना*, विसुद्धि. 1.156; *किलेसेहि आरक्खा हुत्वा पच्चुपतिट्ठति*, ततो वा आरक्खं पच्चुपट्ठपेतीति आरक्खपच्चुपड्डाना, विसुद्धि. महाटी. 1.175.

आरक्खपज्जति स्त्री., तत्पु. स., सुरक्षा की संज्ञा, संरक्षण का नाम - ति प्र. वि., ए. व. - *आरक्खपज्जति कुसलानं धम्मनं*, नेत्ति. 51.

आरक्खपरिवार पु., तत्पु. स., अङ्गरक्षक, रक्षकों का घेरा - रेन तृ. वि., ए. व. - *तत्थ अभिसरेनाति आरक्खपरिवारेन*, जा. अट्ठ. 5.370.

आरक्खपुरिस पु., कर्म. स., रक्षा करने वाला पुरुष, संरक्षक, सिपाही, सैनिक - सो प्र. वि., ए. व. - *आरक्खकपुरिसोपि सयितो कुमारो*, सु. नि. अट्ठ. 1.83; - सा प्र. वि., ब. व. - *पुनदिवसे आरक्खपुरिसा आगन्त्वा*

## आरक्खमनुस्स

163

## आरगग

तं पवति रज्जो आरोचेसुं जा. अट्ठ. 4.27; — सेहि तू. वि., ब. व. — आरक्खपुरिसेहि अनुबद्धो, थेरगा. अट्ठ. 1.260. आरक्खमनुस्स पु., कर्म. स., उपरिवत् — स्सा प्र. वि., ब. व. — आरक्खमनुस्सा रत्ति ओभासं दिस्वा, महेसक्खा देवता ... करिस्सु, स. नि. अट्ठ. 3.24; — स्से द्वि. वि., ब. व. — आरक्खमनुस्सो उपसङ्गमित्वा, जा. अट्ठ. 2.272; — स्सेहि तू. वि., ब. व. — आरक्खमनुस्सेहि निरोकासे ठाने खगं सन्नहिता, जा. अट्ठ. 1.257; — स्सानं ष. वि., ब. व. — आरक्खमनुस्सानं भयजननत्थं, जा. अट्ठ. 1.436.

आरक्खमूलक त्रि., ब. स., वह, जिसकी जड़ में रक्षा अथवा आरक्षण का भाव रहे, असुरक्षा की भावना से जनित — कं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — आरक्खमूलकमि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति, महानि. 113; आरक्खमूलकन्ति रक्खणमूलकमि, महानि. अट्ठ. 222.

आरक्खयट्ठि स्त्री., तत्पु. स. [आरक्षायट्ठि], अपनी रक्षा के लिए रखी जाने वाली छड़ी या लाठी — ट्ठिं द्वि. वि., ब. व. — दण्डोति आरक्खयट्ठिं सन्धाय वुत्तं, जा. अट्ठ. 2.341; — यं सप्त. वि., ए. व. — उस्सीसके ठपितआरक्खयट्ठियं पतिट्ठासि, जा. अट्ठ. 2.337; मणिहि दिन्ने आरक्खयट्ठियं पतिट्ठहि, तदे.

आरक्खसंविधान नपुं., तत्पु. स., रक्षा का प्रबन्ध, संरक्षण का प्रदान — नेन तू. वि., ए. व. — आरक्खसंविधानेन रक्खितत्ता रक्खितं, पारा. अट्ठ. 1.241; स. प. के अन्त. — देवताहि कतारक्खसंविधानो, बु. वं. अट्ठ. 151.

आरक्खसति त्रि., तत्पु. स., सुरक्षित रखने की जागरुकता से युक्त — नो पु. प्र. वि., ब. व. — विहरथ आरक्खसतिनो, अ. नि. 2(1).129; आरक्खसतिनोति द्वाररक्खकाय सतिया समन्नागता, अ. नि. अट्ठ. 3.45.

आरक्खसम्पदा स्त्री., तत्पु. स., आरक्षण अथवा चित्त की जागरुकता की सम्पत्ति — दा प्र. वि., ए. व. — कतमा च, ब्यग्घपज्ज, आरक्खसम्पदा?, इध, ब्यग्घपज्ज, कुलपुत्तस्स भोगा होन्ति उद्धानविरियाधिगता बाहाबलपरिचिता, सेदावक्खिता, धम्मिका धम्मलद्धा, अ. नि. 3(1).110.

आरक्खसम्पन्न त्रि., तत्पु. स., रक्षा के साधनों से युक्त, अच्छी तरह से रक्षित, हर तरह के रक्षा-साधनों से भरपूर — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — गहपति ... अट्ठो महद्धनो महाभोगो, सो च आरक्खसम्पन्नो, स. नि. 2(1).103; आरक्खसम्पन्नोति अन्तो आरक्खेन चैव बहिआरक्खेन च

समन्नागतो, स. नि. अट्ठ. 2.274; — न्ना पु., प्र. वि., ब. व. — सक्कयराजूनं मङ्गलपोक्खरणी अहोसि पासादिका आरक्खसम्पन्ना, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.1.

आरक्खसारथि पु., कर्म. स., शा. अ., रक्षक सारथि, सावधान मन वाला रथ चालक, ता. अ., स्मृति, चित्त की जागरुकता, अप्रमाद — थि प्र. वि., ए. व. — हिरी ईसा मनो योत्तं, सति आरक्खसारथि, स. नि. 3(1).6; आरक्खसारथीति मग्गसम्पयुत्ता सति आरक्खसारथि, स. नि. अट्ठ. 3.158.

आरक्खसुत्त नपुं., अ. नि. का एक सुत्त जिसमें चित्त की जागरुकता को सर्वोत्तम सुरक्षा कहा गया है, अ. नि. 1(2).137.

आरक्खाधिकरणं अ., क्रि. वि., चित्त की जागरुकता के फलस्वरूप, चित्त की सुरक्षा करने के कारण — आरक्खाधिकरणं दण्डादानसत्थादान ... अनेके पापका अकुसला धम्मा सम्भवन्ति, दी. नि. 2.46; आरक्खाधिकरणन्ति भावनपुसकं, आरक्खहेतूति अत्थो, दी. नि. अट्ठ. 2.80.

आरक्खित त्रि., आ + रक्ख का भू. क. कृ. [आरक्षित], सुरक्षित, वह जिसकी पूरी तरह से रक्षा की गई है, पूर्णतया रक्षित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आरक्खितो अमच्चोहि यथाद्धानं महीपति, म. वं. 29.23; आरक्खितो गहितारक्खो महीपति, म. वं. अट्ठ. 478 (ना.).

आरक्खित्थी स्त्री., कर्म. स., रक्षा करने का काम कर रही नारी — तिथया ष. वि., ए. व. — कचवरं सङ्गुत्थित्वा आरक्खित्थिया उपरि छड्डेसि, जा. अट्ठ. 1.281.

आरगग नपुं., [आराग्र], सुई का नुकीला शिरा, सुई का अग्रभाग, टेकुआ का अग्रभाग — ग्गं प्र. वि., ए. व. — आरगगमिव कसपत्तं, ध. स. अट्ठ. 407; — ग्गेन तू. वि., ए. व. — सम्बत्थ आरगगेन लेखा दिन्ना होति, पारा. अट्ठ. 1.232; आरगगेन निखादनग्गेन, वजिर. टी. 109; — ग्गा प. वि., ए. व. — ... पातितो, सासपोरिव आरगगा, ध. प. 407; आरगगाति यस्सेते रागादयो किलेसा, अयञ्च परगुणमक्खनलक्खणो मक्खो आरगगा सासपो विय पातितो, ध. प. अट्ठ. 2.387; — ग्गे सप्त. वि., ए. व. — आरगगेरिव सासपो, ध. प. 401; यथा च आरगगे सासपो न उपलिम्पति न सण्ठाति, ध. प. अट्ठ. 2.379; — कोटि स्त्री., सुई का नुकीला शिरा — या ष. वि., ए. व. — आरगगकोटिया पतनमत्ते ओकासे, अ. नि. अट्ठ. 2.40; — नित्तुदनमत्त त्रि., सुई के अग्रभाग की चुभन मात्र वाला — ते नपुं.,

## आरचयारचया

164

आरञ्जक

सप्त. वि., ए. व. — आरगगनितुदनमत्ते ठाने उपरिमकोटिया,  
अ. नि. अष्ट. 2.34.

**आरचयारचया / आरजयारजया** व्यु., संदिग्ध, संभवतः,  
आ + रञ्ज के पू. का. कृ. की आवृत्ति से व्यु., पुनः पुनः  
खींचकर, पुनः पुनः काटकर, पुनः पुनः छिन्न भिन्न कर —  
गहेत्वा, आरजयारजया विहनन्ति, सु. नि. 678; ...  
आरजयारजया विहनन्तीति ... एककमेकं, कोटिं छिन्देत्वा  
विहनन्ति, छिन्नछिन्ना कोटि पुनपुनं समुद्वाति,  
आरचयारचयातिपि पाठो, सु. नि. अष्ट. 2.182.

**आरज्जति** आ + रञ्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व.  
[आराध्यति], सम्पन्न करता है, कार्यान्वित करता है, पूरा  
करता है — रञ्जो भाग्यमारज्जति, मो. व्या. 2.27.

**आरज्जति** आ + रञ्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व., भेदता है,  
छिन्न-भिन्न कर देता है, खरोचता है — नागो दन्तेहि भूमिं  
रज्जति, आरज्जति, सद्. 2.349.

**आरज्जनद्धान** नपुं., आ + रञ्ज से व्यु., क्रि. ना., उच्छेद,  
तोड़ या समाप्ति का स्थान — नं प्र. वि., ए. व. —  
सिक्खत्तयसङ्गहं ... तेभूमकधम्मानं आरज्जनद्धानन्ति पि  
वुच्चतीति, सद्. 2.349; नेति. अष्ट. 191.

**आरज्जित** त्रि., आ + रञ्ज का भू. क. कृ., तोड़ दिया  
गया, वह, जिसे छिन्न-भिन्न कर दिया गया है, काट डाला  
गया — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तरस्स  
महावजिरजाणसम्बञ्जुत्ताणदन्तेहि आरज्जितं, नेति. अष्ट.  
191; — तानि प्र. वि., ब. व. — उच्चा च दन्तेहि  
आरज्जितानि, म. नि. 1.239; आरज्जितानीति  
सत्तद्धरतनुब्बो वटरुक्खादीनं खच्चप्पदेसे करसुना पहतद्धानं  
विय दाद्धानिहि छिन्नद्धानं, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).100; —  
द्धान नपुं., कर्म. स., काट डाला गया स्थान, विनष्ट कर  
दिया गया तत्त्व — नं प्र. वि., ए. व. — तथागतस्स  
आणदाठाय आरज्जितद्धानं, म. नि. अष्ट. (मू.प.)  
1(2).117.

**आरञ्ज** त्रि., अरञ्ज से व्यु. [आरण्य], वन के साथ जुड़ा  
हुआ, अरण्य से सम्बद्ध, जंगली, वनवासी — ञ्जं पु., द्वि.  
वि., ए. व. — कदाहं नन्दं पस्सेय्यं, आरञ्जं पंसुकूलिकं,  
स. नि. 1(2).255; — ञ्जं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अरञ्ज  
रुक्खमूलं, पु. प. 169; — देव पु., तत्पु. स. [आरण्यदेव],  
वन का देवता — वा प्र. वि., ब. व. — आरञ्जदेवा  
तरुपब्बता च, महिसु नेकोहि सुविहयेहि, समन्त. 492; —  
वन नपुं., घना जंगल, बीहड़ जंगल — नं द्वि. वि., ए. व.

— कुदालापिटकं आदाय अरञ्जवनं अण्झोगाहाति, दी. नि.  
1.88.

**आरञ्जक / आरञ्जिक** त्रि., अरञ्ज से व्यु. [आरण्यक],  
शा. अ., अरण्य अथवा वन से सम्बन्धित (शील, व्रत  
आदि) वन में स्थित (विहार, निवासस्थान) वन में उत्पन्न  
अथवा वन में रहने वाला (नाग, मृग, सिंह आदि), ला.  
अ., आरञ्जक-धुतङ्ग को पालन कर रहा, वन में एकान्तवास  
की चर्चा कर रहा तपस्वी भिक्षु अथवा स्थविर — को पु.,  
प्र. वि., ए. व. — आरञ्जको विहारो, मो. व्या. 4.25; यो  
इच्छति, आरञ्जको होतु, चूलव. 336; आरञ्जको होतीति  
गामन्तसेनासनं पटिविखपित्वा आरञ्जिकधुतङ्गवसेन  
अरञ्जवासिको होति, पारा. अष्ट. 1.159; सेय्यथापि, सारिपुत्त,  
आरञ्जको मिंगो मनुस्से दिस्वा ... थलेन थलं संपतति, म.  
नि. 1.112-113; आरञ्जकोति अरञ्जे जातबुद्धो, म. नि.  
अष्ट. (मू.प.) 1(1).359; इमं गामं निस्साय कोचि आरञ्जको  
विहारो अत्थीति पुच्छि, ध. प. अष्ट. 1.9; आरञ्जकोति  
समादिन्नआरञ्जिकधुतङ्गो, म. नि. अष्ट. (उप.प.) 3.69;  
— कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरञ्जकं गाम सेनासनं  
पञ्चधनुसतिकं पच्छिमं, पारा. 391; — कं पु., द्वि. वि.,  
ए. व. — आरञ्जकं नागं अतिपस्सित्वा, म. नि. 3.173; —  
कं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — आरञ्जकं सेनासनं अगमंसु,  
पाचि. 239; — केन पु., तृ. वि., ए. व. — अनुजानामि,  
भिक्षवे, आरञ्जिकेन ... अनिरसितेन वत्थुं, महाव. 117;  
— स्स च./ष. वि., ए. व. — आरञ्जिकरस एकस्सारञ्जे  
सेरिविहारेन, म. नि. 2.143; — का पु., प्र. वि., ब. व. —  
तिसमत्ता पावेय्यका भिक्षू, सब्बे आरञ्जिका, सब्बे ...  
सम्भावेतुं, महाव. 330; धुतङ्गसमादानवसेन आरञ्जिका, न  
अरञ्जवासमत्तेन, महाव. अष्ट. 365; — कानि नपुं., प्र.  
वि., ब. व. — यानि खो पन तानि आरञ्जकानि सेनासनानि  
सासङ्गसम्मत्तानि सप्पटिभयानि, पारा. 391; — के पु., द्वि.  
वि., ब. व. — पस्सतारञ्जके भिक्षू, अण्झोगाच्छे धुते गुणे,  
मि. प. 316; — केहि पु., तृ. वि., ब. व. — यथा  
आरञ्जिकेहि भिक्षूहि सम्मा वत्तिट्ठं, चूलव. 360; —  
कानं पु., च./ष. वि., ब. व. — आरञ्जिकानं भिक्षून्  
वत्तं पञ्जपेस्सामि, चूलव. 360; — कानं नपुं., प. वि., ब.  
व. — आरञ्जिकानञ्चेव सीलानं अभिनिम्पदनाय, म. नि.  
3.173; — केसु नपुं., सप्त. वि., ब. व. — भिक्षू वुत्थवस्सा  
आरञ्जकेसु सेनासनेसु विहरन्ति, पारा. 390; स. उ. प. के  
रूप में उक्कट्टा, जाति, वोसासा, सेखा, के अन्त. द्रष्ट.

## आरञ्जक

165

## आरञ्जिक

आरञ्जक नपुं., तेरह धुतङ्गों में से एक, वन के निर्जन क्षेत्र में तपश्चर्या करते हुए पालन किया जाने वाला धुतङ्ग, कहीं कहीं 5 धुतङ्गों की सूची में प्रथम धुतङ्ग के रूप में भी उल्लिखित — पंसुकूलिकङ्गं तैचीवरिकङ्गं पिण्डपातिकङ्गं सपदानचारिकङ्गं एकासनिकङ्गं पत्तापिण्डिकङ्गं खलुपच्छाभक्तिकङ्गं आरञ्जिकङ्गं रुक्खमूलिकङ्गं अब्भोकासिकङ्गं सोसानिकङ्गं यथासन्थतिकङ्गं नेसज्जिकङ्गं, ... तेरसहि धुतगुणेहि ... पटिलभति, मि. प. 324; पञ्च धुतङ्गानि — आरञ्जिकङ्गं, रुक्खमूलिकङ्गं, अब्भोकासिकङ्गं, सोसानिकङ्गं, यथासन्ततिकङ्गन्ति, दी. नि. अट्ट. 3.181; — ङ्गं प्र. वि., ए. व. — न आरञ्जिकङ्गं समादातब्बं, चूळव. 78; आरञ्जिकङ्गन्ति अरञ्जे निवासो सीलं अस्साति आरञ्जिको, तस्स अङ्गं आरञ्जिकङ्गं, महानि. अट्ट. 153; — ङ्गं द्वि. वि., ए. व. — आरञ्जिकङ्गं पिण्डपातिकङ्गं पंसुकूलिकङ्गं समादियेसु, पारा. 349; स. प. के रूप में, आरञ्जिकङ्गादीहि इच्छावचरप्पटिच्छादनं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).160; — निष्पादकं त्रि., आरञ्जिकङ्गं नामक धुतङ्ग का निष्पादक — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरञ्जिकङ्गनिष्पादकं सेनासनं वुत्तं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).119; — युत्तता स्त्री., भाव., आरञ्जिकङ्गं नामक धुतङ्ग से जुड़ा हुआ होना — य तृ. वि., ए. व. — अरञ्जकङ्गयुत्तताय अरञ्जानि, दी. नि. अट्ट. 2.360; — झाधिमुत्तं त्रि., तत्पु. स., आनञ्जिकङ्गं नामक धुतङ्ग के पालन में दृढ़ता से लगा हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व. — अयं पुग्गलो ... आरञ्जिकङ्गाधिमुत्तो ... धिमुत्तं, चूळनि. 154; आरञ्जकङ्गाधिमुत्तो ति आदीनि धुतङ्गसमादानवसेन वुत्तानि, चूळनि. अट्ट. 60; — झारह त्रि., आरञ्जिकङ्गं नामक धुतङ्गनियम को ग्रहण करने योग्य — हे नपुं., सप्त. वि., ए. व. — अरञ्जकङ्गाहं ठाने विहारं कारापेत्वा अदासि, सा. वं. 56 (ना.).

आरञ्जकत्तं नपुं., आरञ्जक का भाव. [आरण्यकत्व], वन में निवास करने अथवा वन के साथ जुड़े हुए रहने की स्थिति, तपस्वी के रूप में वनवासी होने की अवस्था — तं प्र. वि., ए. व. — अद्धमिदं, भिक्खवे, लाभानं यदिदं आरञ्जिकत्तं ... अप्पाबाधतांति, अ. नि. 1(1).53; आरञ्जिकत्तन्ति यो एस आरञ्जिकभावो, अ. नि. अट्ट. 1.368; — तं द्वि. वि., ए. व. — आरञ्जिकत्तं अनुग्गण्हाति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).158; — तेन तृ. वि., ए. व. — आरञ्जिकत्तेन अत्तानुक्कत्तेति, परं वम्मेति, म. नि. 3.87; आरञ्जिकत्तेन लोभधम्मा परिकखयं गच्छन्ति, म. नि. 3.87-

88; — स्स ष. वि., ए. व. — आरञ्जिकत्तस्स च वण्णवादी, स. नि. 1(2).180.

आरञ्जकधुतङ्ग नपुं., 13 धुतङ्गों में वह नियम, जिसका पालन वन के निर्जन क्षेत्र में रह कर तपश्चर्या के रूप में किया जाता है — ङ्गं द्वि. वि., ए. व. — आगतागतानं आरोचेतुं हरायमानेन आरञ्जिकधुतङ्गं न समादातब्बं, चूळव. अट्ट. 10; आरञ्जिकधुतङ्गं समादाय ... होन्तु, पारा. अट्ट. 2.170; — समादानं नपुं., वन में रहते हुए तपश्चर्या करने के व्रत का ग्रहण, आरञ्जिकधुतङ्ग — नामक धुतङ्ग का ग्रहण — नेन तृ. वि., ए. व. — गामन्तसेनासनं पटिक्खित्वा आरञ्जकधुतङ्गसमादानेन आरञ्जिका, थेरगा. अट्ट. 2.411. आरञ्जकभिक्षु / आरञ्जिकभिक्षु पु., कर्म. स. [आरण्यकभिक्षु], वन में रह कर साधना करने वाला भिक्षु, वनवासी भिक्षु — कखून् ष. वि., ब. व. — हेतुसम्पन्नताय आरञ्जकभिक्षून् सन्तिको पब्बजित्वा, थेरगा. अट्ट. 1.391. आरञ्जकमग पु., तत्पु. स. [आरण्यकमग], वन्य पशु, जंगली जानवर — गो प्र. वि., ए. व. — आरञ्जकमगो विय हि समणब्राह्मणा, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).95; आरञ्जिक के अन्तः.

आरञ्जकविहार पु., कर्म. स. [आरण्यकविहार], वन में स्थित विहार — रो प्र. वि., ए. व. — अत्थि नु खो, उपासक, इमस्मिं पदेसे आरञ्जकविहारो, ध. प. अट्ट. 1.302; — रं द्वि. वि., ए. व. — ... आरञ्जकविहारं पविसिंसु, ध. प. अट्ट. 1.148.

आरञ्जकसिक्खापद नपुं., वन में रहने वाले साधकों के लिए प्रज्ञप्त शिक्षापद — दे सप्त. वि., ए. व. — आरञ्जकसिक्खापदे आरञ्जकं नाम सेनासनं पञ्चधनुसतिकं पच्छिमन्ति वुत्तं, पारा. अट्ट. 1.240.

आरञ्जकसीस पु., तत्पु. स. [आरण्यकशीर्ष], "आरण्यक" का शीर्षक — सेन तृ. वि., ए. व. — विसेसतो आरञ्जकस्स, आरञ्जकसीसेनं च सब्बेसमि कम्महानं गहेत्वा ..., खु. पा. अट्ट. 197.

आरञ्जकसेनासनाराम नपुं., कर्म. स. [आरण्यकशयनासनाराम], वन्य निवासस्थान एवं आराम, वन में स्थित आराम — मं द्वि. वि., ए. व. — आरञ्जकसेनासनारामञ्च तस्स उपचारञ्च ठपेत्वा, पाचि. अट्ट. 147.

आरञ्जिक / अरञ्जिक / आरञ्जक त्रि., अरञ्ज से व्यु. [आरण्यक], वन के साथ जुड़ा हुआ, वन में वसने वाला,



## आरज्जिकसुत्त

166

आरद्ध

वन के एकान्त में रहकर साधना करने वाला (तापस, भिक्षु आदि), ग्रामवास त्याग कर आरज्जिक नामक 'धुतङ्ग' का ग्रहण एवं उसका पालन करने वाला (भिक्षु) — को पु., प्र. वि., ए. व. — रुक्खमूले वसतीति, रुक्खमूलिको, आरज्जिको, सोसानिको, लोके विदितो लोकिको, मो. व्या. 4.32; आरज्जिको साततिको, थेरगा. 851; गामन्तसेनासनं पटिक्खपित्वा आरज्जिकङ्गसमादानेन आरज्जिको, थेरगा. अड्ड. 2.274; — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — आरज्जिकं भिक्षुं सन्धाय, विसुद्धि. महाटी. 1.91; ... अज्जतरं आरज्जिकं भिक्षुं दिस्वा ..., ध. प. अड्ड. 2.302; — केन पु., तृ. वि., ए. व. — आरज्जिकेन गामन्तसेनासनं पहाय ..., विसुद्धि. 1.70; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — आरज्जिकस्स भिक्षुनो उपज्झायो, विसुद्धि. 1.71; अस्स आरज्जिकस्स चित्तं, विसुद्धि. महाटी. 1.91; — का पु., प्र. वि., ब. व. — पञ्च आरज्जिका, पु. प. 180; — कानं पु., ष. वि., ब. व. — एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खून् ... आरज्जकानं यदिदं रेवतो खदिरवनियो, अ. नि. 1(1).32; आरज्जकानन्ति अरज्जवासीनं, अ. नि. अड्ड. 1.174; — ङ्ग नपुं., कर्म. स., तेरह अथवा आठ धुतङ्गों में एक, वन में रहते हुए ग्राह्य एवं पालनीय धुतङ्ग — ङ्गं प्र. वि., ए. व. — अड्ड धुतङ्गानि — आरज्जिकङ्गं, पिण्डपातिकङ्गं, पंसुकूलिकङ्गं, तेचीवरिकङ्गं, सपदानचारिकङ्गं, खलुपच्छाभतिकङ्गं, नेसज्जिकङ्गं, यथासन्धतिकङ्गं, महानि. 47; — धुतङ्ग नपुं., उपरिवत् — ङ्गं द्वि. वि., ए. व. — आरज्जिकधुतङ्गं समादाय सब्बपि भिक्खू याव जीवन्ति ताव आरज्जिका होन्तु, पारा. अड्ड. 2.170.

आरज्जिकसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).204.

आरत त्रि., आ + र् + रभ से व्यु., भू. क. कृ. [आरत], किसी से विरत हो जाने वाला, अलग हो जाने वाला, विराम ले लेने वाला, हट जाने वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आरतो विरतो पटिविरतो निक्खन्तो ... विहरतीति, महानि. 50; — तं द्वि. वि., ए. व. — तं मं अकिञ्चनं अत्वा, सब्बपापेहि आरतं, जा. अड्ड. 4.335.

आरति/आरती स्त्री., आ + र् + रभ से व्यु., [आरति], विराम, विलगाव, हटाव, परित्याग, विरति, उचटाव — ति/ती प्र. वि., ए. व. — थियं वेरमणी चैव विरत्यारति चाप्यथ, अभि. प. 160; आरती विरति, पापा, मज्जपाना च संयमो, सु. नि. 267; आरति नाम पापे आदीनवदस्साविनो

मनसा एव अनभिरति, सु. नि. अड्ड. 2.22; — प्ययोग पु., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त, विराम अथवा विलगाव के अर्थ वाले शब्दों में (प. वि. का) प्रयोग — मे सप्त. वि., ए. व. — आरतिप्ययोगे गामधम्मा कुसलधम्मा असद्धम्मा आरति विरति पटिविरति, सद्. 3.706.

आरत्त नपुं., भाव., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त शब्द, 'आर' प्रत्यय से युक्त होने की स्थिति — अज्जेस्वारत्तं ... आरत्तग्गहणेन कत्थचि अनियमं दस्सेति, क. व्या. 200; सत्थु पितुआदीनं अन्तो यो अद्वादिसु वचनेसु आरत्त आपज्जति वा, सद्. 3.668.

आरदन्त नपुं., तत्पु. स. [आरदन्त], पीतल का दांत — न्ते द्वि. वि., ब. व. — आरदन्ते पि खादन्ति, पञ्च. ग. दी. 32 (रो.).

आरद्ध' त्रि., आ + र् + रभ से व्यु., भू. क. कृ. [आरद्ध], 1. कर्तृ. वा. में, प्रारम्भ कर चुका, प्रारम्भ किया हुआ, क. निमि. कृ. के साथ अन्वित — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — पण्णानि खादितुं आरद्धो, जा. अड्ड. 1.169; अस्सारोहो ... अज्जं अस्सं सन्नहितुं आरद्धो, जा. अड्ड. 1.179; — द्धा' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — तस्स पन गतदिवसतो पद्दाय ब्राह्मणी अतिचरितुं आरद्धा, जा. अड्ड. 1.473; — द्दे सप्त. वि., ए. व. — तस्मिहि अधीयितुं आरद्धे तेषि अधीयन्ति, ध. स. अड्ड. 157; — द्धा² पु., प्र. वि., ब. व. — अथ नं राजपुरिसा नीहरितुं आरद्धा, जा. अड्ड. 1.176; ख. द्वि. वि. में अन्त होने वाले नाम के साथ — द्धा पु., प्र. वि., ब. व. — इमे भिक्खू विवादं आरद्धा, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).288; ग. 'इति' के साथ, — द्धा पु., प्र. वि., ब. व. — बाह्मणा ... यज्जं यजित्वा पटिकम्मं करोमाति आरद्धाति आह, स. नि. अड्ड. 1.126; 2. कर्म वा. में, क. वह, जिसे तैयार कर दिया गया है अथवा हाथ में ले लिया गया है, व्यवस्थित कर लिया गया, बना लिया गया, सम्पादित, ख. सुदृढ़ अथवा अशिक्षित बना दिया गया, पुष्ट कर दिया गया, समुत्तेजित अथवा जागृत कर दिया गया, सबल बना दिया गया — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — अरियो अड्डञ्जिको मग्गो आरद्धो, स. नि. 3(1).22; — द्धा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — योनि चस्स आरद्धा होति आसवानं खयाय, स. नि. 2(2).179; आरद्धा होतीति कारणञ्चस्स परिपुण्णं होति, स. नि. अड्ड. 3.66; — द्धं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरद्धं खो पन मे, ब्राह्मण, वीरियं अहोसि असत्त्वीनं, पारा. 4; ... आरद्धं अहोसि, पग्गहितं अरिथिलप्पवत्तिन्नं वुत्तं होति,

## आरद्ध

167

## आरद्धविपस्सक

पारा. अट्ट. 1.103; - द्वे पु. सप्त. वि. ए. व. - अज्जस्मिं परियाये आरद्धे, ध. स. अट्ट. 189; - द्वाय<sup>१</sup> स्त्री., सप्त. वि. ए. व. - 'केतिका विहारे समणाति गणनाय आरद्धाय, स. नि. अट्ट. 3.83; - द्वाय<sup>२</sup> स्त्री., ष. वि. ए. व. - मधुरसररेन आरद्धाय धम्मदेसनाय सइ सुत्वा, अ. नि. अट्ट. 3.258; - द्वा पु. प्र. वि. ब. व. - चत्तारो इद्धिपादा आरद्धा, स. नि. 3(2).328; - द्वायो स्त्री., द्वि. वि. ब. व. - अत्तानं उद्दिस्स अत्तनो अत्थाय आरद्धायोति अत्थो, पारा. अट्ट. 2.134; - द्वापरिसमत् त्रि., व्या. के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त, प्रारम्भ कर दिया गया परन्तु समाप्त नहीं हो सका - ते पु. सप्त. वि. ए. व. - वत्तमाने आरद्धापरिसमत्ते अत्थे, मो. व्या. 6.1.

आरद्ध<sup>३</sup> त्रि., आ + राध से व्यु. भू. क. कृ. [आराध्य], शा. अ., अनुष्ठित, निष्पन्न, सम्पन्न हो चुका, पूर्ण हो चुका, तैयार हो चुका, प्राप्त हो चुका, ला. अ., प्रसन्न, सन्तुष्ट - द्वा पु. प्र. वि. ए. व. - अयञ्चेव लोको आरद्धो होति परो च लोको, दी. नि. 3.137; आरद्धो होति परितोसितो चेव निष्फादितो च, दी. नि. अट्ट. 3.114; आरद्धो होतीति संसाधितो होति ..., दी. नि. टी. 3.116; - द्वा स्त्री., प्र. वि. ए. व. - या उद्दिस्सित्वा आरद्धा, इद्धा विनयवण्णना, परि. अट्ट. 267; - द्वा नपुं., प्र. वि. ए. व. - अमत्तं तेसं, ... आरद्धं, अ. नि. 1(1).61; आरद्धन्ति परिपुण्णं, अ. नि. अट्ट. 1.404.

आरद्ध<sup>३</sup> आ + राध का पू. का. कृ. [आराध्य], प्राप्त करके, पूर्ण करके, सन्तुष्ट होकर, प्रसन्न होकर - आरद्ध. आरभित्वा/आराधित्वा, क. व्या. 602.

आरद्धकम्मद्धान त्रि., ब. स. [बौ. सं. आरब्धकर्मस्थान], ध्यान के कर्म स्थानों (आलम्बनों) को ग्रहण करने का काम प्रारम्भ कर चुका (साधक) - स्स पु. ष. वि. ए. व. - "आरद्धकम्मद्धानस्स भिक्खुनो कम्मद्धानकारको अयंति जानित्वा ..., विसुद्धि. 1.97.

आरद्धकम्मन्त नपुं., कर्म. स., प्रारम्भ कर दिया गया काम, हाथ में ले लिया गया काम - न्ता प्र. वि. ब. व. - सब्बेसं आरद्धकम्मन्ता च इच्छिता च अत्था सिद्धिमगमसु, बु. वं. अट्ट. 256.

आरद्धकाल पु., तत्पु. स., वह समय जब कार्य का आरम्भ किया गया है - तो प. वि. ए. व. - आरद्धकालतो पड्ढाय तुरित्तुरितो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).151; आरद्धकालतो पड्ढाय परिभोगं अकासि, स. नि. अट्ट. 3.24; - ते सप्त.

वि. ए. व. - रज्जा आरद्धकाले ... पञ्च धातुयो निव्यादेसि, सा. वं. 88(ना.).

आरद्धचित्त त्रि., ब. स. [आराद्धचित्त], प्रसन्न अथवा आनन्दित चित्त वाला, सन्तुष्ट चित्त वाला - तो पु. प्र. वि. ए. व. - आरद्धचित्तो उपसम्पदं अनुजानि, पारा. अट्ट. 1.190; आरद्धचित्तोति आराधितचित्तो, सारत्थ. टी. 2.46; - तेन पु. तृ. वि. ए. व. - आरद्धचित्तेन भगवता अनुज्जातउपसम्पदा ..., थेरगा. अट्ट. 2.453; - ता पु. प्र. वि. ब. व. - आरद्धविता भिक्खू पब्बाजेन्ति, उपसम्मादेन्ति भिक्खुभावाय, दी. नि. 1.159; आरद्धविताति अड्ढवत्तपूरणेन तुड्ढविता, दी. नि. अट्ट. 1.269.

आरद्धज्जस नपुं., कर्म. स., ऐसा सीधा मार्ग, जिस पर चलना प्रारम्भ कर दिया गया है, गृहीत सरल मार्ग - सा तृ. वि. ए. व. - तेनारद्धज्जसा धीरो यायित्वा न पदेसकं, जिन. च. 41(से.).

आरद्धत्त नपुं., आरद्ध का भाव, सन्तुष्टि, आनन्द या हर्ष से परिपूर्ण होना - ताय च. वि. ए. व. - आरद्धत्तायेव च मे तं असत्त्वीनं अहोसि, पारा. अट्ट. 1.103.

आरद्धबलवीरिय त्रि., ब. स., प्रबल शक्ति एवं उत्साह से भरपूर, सुदृढ़ बल एवं वीर्य से युक्त - यो पु. प्र. वि. ए. व. - सतिमा पञ्जवा भिक्खु आरद्धबलवीरियो, थेरगा. 165; सद्वादिबलानञ्चेव चतुब्धिधसम्पप्पधानवीरियस्स च संसिद्धिपारिपूरिया आरद्धबलवीरियो, थेरगा. अट्ट. 1.316.

आरद्धभाव पु., कर्म. स. [आरब्धभाव], आरम्भ कर देने की अवस्था, प्रारम्भ कर देना - वं द्वि. वि. ए. व. - तेसं विपस्सनाय आरद्धभावं जत्वा, अ. नि. अट्ट. 1.34.

आरद्धभावन त्रि., ब. स., वह, जिसने ध्यानभावना करना प्रारम्भ कर दिया है - स्स पु. ष. वि. ए. व. - अरहत्तं पापुणितुं आरद्धभावनस्स कायपरिक्खाहादीनं उप्पत्तिं वारेत्वा ..., स. नि. अट्ट. 3.237.

आरद्धयज्ज पु., कर्म. स. [आरब्धयज्ञ], प्रारम्भ कर दिया गया यज्ञ, अनुष्ठित किया जा रहा यज्ञ-विधान - ज्जो प्र. वि. ए. व. - भिक्खूहि रज्जो आरद्धयज्जो तथागतस्स आरोचितो, स. नि. अट्ट. 1.124.

आरद्धविपस्सक त्रि., ब. स., विषयना-ध्यान को आरम्भ कर चुका (साधक), सुदृढ़ भाव से विषयना की भावना करने वाला (साधक), विषयना में शिक्षाप्राप्ति की अवस्था में विद्यमान (आर्यश्रावक) - को पु. प्र. वि. ए. व. - यस्साधिगमा "आरद्धविपस्सको"ति सङ्गं गच्छति, चूळनि.

## आरद्धविपस्सन

168

## आरद्धवीरिय

अद्द. 91; सोतापत्तिमग्गत्थाय आरद्धविपस्सको, दी. नि. अद्द. 2.162; - कं द्वि. वि., ए. व. - सोतापत्तिमग्गत्थाय आरद्धविपस्सकं करोन्तो, दी. नि. अद्द. 2.162; - केन तू. वि., ए. व. - सीलवता आरद्धविपस्सकेन न दुक्करं अज्जं व्याकातुं, पटिबलो, पारा. अद्द. 2.85; - कतो प. वि., ए. व. - सम्बुज्झति आरद्धविपस्सकतो पड्ढाय योगावचरोति सम्बोधि, म. नि. अद्द. (मू.प.) 1(1).299; - स्स ष. वि., ए. व. - अथस्स आरद्धविपस्सकस्स कुलपुत्तस्स ओभासो, चूळनि. अद्द. 91; - का पु., प्र. वि., ब. व. - पञ्चसता आरद्धविपस्सका उग्घटितज्जूपुग्गला, स. नि. अद्द. 2.9; - के द्वि. वि., ब. व. - योगी आरद्धविपस्सके सरित्वा ..., थेरगा. अद्द. 2.303; - केहि प. वि., ब. व. - चतुन्नं मग्गानं अत्थाय आरद्धविपस्सकेहि ... समणेहि सुज्जा, दी. नि. अद्द. 2.162; - कानं ष. वि., ब. व. - आरद्धविपस्सकानञ्चि अयमानिस्सो ..., स. नि. अद्द. 3.95; - केसु पु., सप्त. वि., ब. व. - एस नयो सेसमग्गत्थाय आरद्धविपस्सकेसु, दी. नि. अद्द. 2.162; - भाव पु., विपश्यना भावना की शिक्षाप्राप्ति की अवस्था में होना - वं द्वि. वि., ए. व. - अथस्सा सत्था आरद्धविपस्सकभावं जत्वा, म. नि. अद्द. (मू.प.) 1(2).41. आरद्धविपस्सन त्रि., ब. स., उपरिवत् - ना पु., प्र. वि., ब. व. - सब्बे आरद्धविपस्सना सततं समितं रत्ति दिवेसुयुत्तपयुत्ता ..., सद्धम्म. 58; - स्स पु., प. वि., ए. व. - आरद्धविपस्सनानं भङ्गानुपस्सनादिसङ्घाताय तरुणविपस्सनाय, विसुद्धि. महाटी. 2.400; - त्त नपुं., भाव., विपश्यना-भावना के अभ्यास में शिशिक्षु या शिक्षमाण की अवस्था - त्ता प. वि., ए. व. - थेरो पन आरद्धविपस्सनत्ता काये जीविते ..., थेरगा. अद्द. 1.341. आरद्धविपस्सना स्त्री., कर्म. स., सुदृढ विपश्यना-भावना, विपश्यना-भावना में सुदृढ स्थिति - नं द्वि. वि., ए. व. - ... आरद्धविपस्सनं उस्सुक्कापेत्ता ..., थेरगा. अद्द. 1.48; - घुर त्रि., ब. स., विपश्यना-भावना के भार को वहन करने वाला, विपश्यना-भावना का अभ्यास कर रहा (साधक) - रा पु., प्र. वि., ब. व. - तस्मिं नगरे आरद्धविपस्सना धुरा महत्तका भिक्खुसहरस्समत्ता अहेसुं, सा. वं. 85 (ना.). आरद्धवीरिय<sup>1</sup> नपुं., कर्म. स., सुदृढ वीर्य, अत्यधिक प्रबल पराक्रम, स. उ. प. के रूप में, - यं प्र. वि., ए. व. - अच्चारद्धवीरियं उद्धच्चाय संवत्तति, थेरगा. अद्द. 2.200.

आरद्धवीरिय<sup>2</sup> त्रि., ब. स., शा. अ., सुदृढ वीर्य से युक्त, प्रबल पराक्रम से भरपूर, कठोर प्रयास करने वाला, उत्साही, अध्यवसायी, सुदृढ निश्चय वाला, ला. अ., चार प्रकार के सम्यक् प्रधानों का अभ्यास करने वाला अथवा उनसे युक्त (साधक) - यो पु., प्र. वि., ए. व. - आरद्धवीरियो होति, दी. नि. 3.199; सब्बसो कोसज्जपहानेन आरद्धवीरियो, थेरगा. अद्द. 2.291; आरद्धवीरियोति पग्गहितवीरियो, अनोसविकितमानसो, म. नि. अद्द. (मू.प.) 2.22; आरद्धवीरियोति पग्गहितवीरियो, परिपुण्णकायिकचेतसिकवीरियोति अत्थो, म. नि. अद्द. (मू.प.) 1(2).51; - यं द्वि. वि., ए. व. - आरद्धवीरियं पहितत्तं, निच्चं दळ्ढपरक्कमं, निब्बानं अभिकङ्कत्तं, कस्मा पब्बजितं तपेति, स. नि. 1(1).229; आरद्धवीरियन्ति पग्गहितवीरियं परिपुण्णवीरियं स. नि. अद्द. 1.254; - येन तू. वि., ए. व. - अराधनीयो खो, आवुसो, धम्मो आरद्धवीरियेना<sup>3</sup>ति, पारा. 137; आरद्धवीरियेनाति वत्थुद्वयं एकसदिसम्यि द्वीहि भिक्खूहि विसुं विसुं आरोचितत्ता भगवता विनिच्छिनितं सब्बम्यि विनीतवत्थूसु आरोपेतब्बन्ति, पाळियं आरोपितं, सारत्थ. टी. 2.259; - स्स पु., च. वि., ए. व. - आरद्धवीरियस्साय धम्मो, नायं धम्मो, कुसीतस्स, दी. नि. 3.240; आरद्धवीरियस्साति कायिकचेतसिकवीरियवसेन आरद्धवीरियस्स, दी. नि. अद्द. 3.227; - या पु., प्र. वि., ब. व. - ये खो केचि भगवतो सावका आरद्धवीरिया विहरन्ति, अहं तेसं अज्जतरो, महाव. 253; आरद्धवीरियाति परिपुण्णपग्गहितवीरिया, अ. नि. अद्द. 3.125; आरद्धवीरियमेतेसन्ति आरद्धवीरिया, सम्मप्पधानयुत्तानमेतं अधिवचनं, म. नि. अद्द. (मू.प.) 1(1).198; - ये पु., द्वि. वि., ब. व. - आरद्धवीरिये पहितत्ते, निच्चं दळ्ढपरक्कमं, समग्गे सहिते दिस्वा ..., थेरगा. 353; आरद्धवीरियेति चतुब्धिधम्मप्पधानवसेन पग्गहितवीरिये, थेरगा. अद्द. 2.53; - येहि पु., तू. वि., ब. व. - निच्चं आरद्धवीरियेहि, पण्डितेहि सहावसेति, स. नि. 1(2).140; आरद्धवीरिया परिपुण्णपरक्कम्मा आरद्धवीरियेहि, स. नि. अद्द. 2.126; - यानं<sup>4</sup> पु., ष. वि., ब. व. - एतदग्गं, भिक्खवे ... आरद्धवीरियानं यदिदं सोणो कोळिविसो, अ. नि. 1(1).32; आरद्धवीरियानन्ति पग्गहितवीरियानं परिपुण्णवीरियानं, अ. नि. अद्द. 1.180; - यानं<sup>5</sup> स्त्री., प. वि., ब. व. - सत्तमे आरद्धवीरियानन्ति पग्गहितपरिपुण्णवीरियानं सोणा अग्गाति दरसेति, अ. नि. अद्द. 1.271; - पुग्गलसेवनता स्त्री.,

## आरद्धवीरियगाथावण्णना

169

## आरभति

भाव., सुदृढ रूप से चार सम्यक् प्रधानों को भावना करने वाले साधकों के साथ सत्संगति — ता प्र. वि., ए. व. — एकादस धम्मा वीरियसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति ... आरद्धवीरियपुग्गलसेवनता, तदधिमुत्तताति, अ. नि. अहु. 1.379-80; आरद्धवीरियपुग्गलसेवनताति ... भावनारम्भवसेन आरद्धवीरियानं दहपरकमानं पुग्गलानं कालेन कालं उपसङ्गमना, विसुद्धि. महाटी. 1.147; — भाव पु., सुदृढ पराक्रम से युक्त होना — वेन तू. वि., ए. व. — आरद्धवीरियभावेन नचिरस्सेव अग्गफले पतिट्ठिताति, अ. नि. अहु. 1.273.

आरद्धवीरियगाथावण्णना स्त्री., तत्पु. स., सु. नि. तथा अप. की गाथाओं की अहुकथा का शीर्षक जिनमें सु. नि. के खग्विसाणसुत्त की गाथा में आए हुए आरद्धवीरियो आदि पदों की व्याख्या की गई है, सु. नि. अहु. 1.95-97; अप. अहु. 1.199-200.

आरद्धवीरियता स्त्री., आरद्धवीरिय का भाव., सुदृढ पराक्रम से परिपूर्ण रहने की स्थिति, उद्योगशीलता, चार सम्यक्-प्रधानों का दृढ अभ्यास होना — तं द्वि. वि., ए. व. — एतमहं, ब्राह्मण, आरद्धवीरियतं अत्तनि सम्यस्समानो, म. नि. 1.25; आरद्धवीरियतञ्च दस्सेन्तो ..., थेरगा. अहु. 2.292; — य तू. वि., ए. व. — तथा आरद्धवीरियताय थिनमिद्धं, विसुद्धि. 1.181; तथा आरद्धवीरियतायाति ... पग्गहितवीरियताय, विसुद्धि. महाटी. 1.198.

आरद्धवीरियसोणत्थेरी स्त्री., एक भिक्षुणी का नाम — री प्र. वि., ए. व. — एवं पच्छा आरद्धवीरियसोणत्थेरीति पाकटा जाता, अ. नि. अहु. 1.272.

आरद्धसद्धाभियोग पु., तत्पु. स., प्रबल श्रद्धा के साथ लगाव — गो प्र. वि., ए. व. — पुरिमवयसि येवारद्धसद्धाभियोगो, दाठा. 4.7(रो.).

आरद्धा आ + र्भम का आलङ्कार के मि. सा. पर निर्मित पू. का. कृ. [आरभ्य], प्रारम्भ करके — आरद्धा आरद्धा आरभित्वा, सद्. 3.857.

आरद्धकामत्त नपुं., आरद्धकाम का भाव., प्रारम्भ करने की कामना वाला होना — ता प. वि., ए. व. — यस्माते युद्धमारद्धकामत्ता न पटिग्गहि, चू. वं. 72.114.

आरणाळ नपुं., [आरनालक], कांजी, खड़ा दलिया — लं प्र. वि., ए. व. — सोवीरं कजियं वुत्तं आरणाळं थुसोदकं, अभि. प. 460; विलङ्गं वुच्चति आरनालं बिलङ्गतो निब्बत्तनतो, दी. नि. टी. 2.329; तुल. अमर. 2.9.39.

आरप्पयोग पु., केवल व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्राप्त, दूर अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग (होने पर प. वि. होती है) — गो सप्त. वि., ए. व. — दिसायोगे विभत्ते आरप्पयोगे सुद्धत्थं ..., क. व्या. 277; सद्. 3.705.

आरब्ध आ + र्भम का पू. का. कृ. [आरभ्य], शा. अ., प्रारम्भ करके — आगम्प, ... आरब्ध, आरभित्वा, आरद्ध, आरभित्वा, क. व्या. 602; प्रायोगिक अ., क. उत्पन्न कर के, प्रवर्तित करके, क्रियाशील बना कर — उपेक्खमारब्ध समाहितत्तो, सु. नि. 978; उपेक्खमारब्ध समाहितत्तोति चतुत्थज्झानुपेक्खं उप्पादेत्वा समाहितवित्तो, सु. नि. अहु. 2.265; नयिदं सिथिलमारब्ध, नयिदं अप्पेन थामसा, निब्बानं अधिगन्तब्बं, स. नि. 1(2).252; सिथिलमारब्धाति सिथिलवीरियं पक्केत्वा, स. नि. अहु. 2.208, ख. के विषय में, के सन्दर्भ में, के बारे में, की अपेक्षा से, को ध्यान में रख कर, 1. द्वि. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ प्रयुक्त — पुब्बन्तं आरब्ध अनेकविहितानि अधिमुत्तिपदानि अभिवदन्ति अङ्गारसहि वत्थूहि, दी. नि. 1.11; आरब्ध आगम्प पटिच्च, दी. नि. अहु. 1.90; बोधिसत्तस्स मग्गं आरब्ध सत्तिसम्मोसो अहोसीति, मि. प. 267; 2. ष. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ प्रयुक्त — तञ्च पन न सब्बसं जिनपुत्तानं येव आरब्ध भणितं, मि. प. 173; 3. के आलोक में, पद्धति का अनुसरण करके, की दृष्टि से (वसेन के साथ अन्वित होने पर) — तत्रायं खन्धवसेन आरब्धविधानयोजना, विसुद्धि. 2.244; ग. आलम्बन बना कर, आधार बना कर — हेद्धा वत्तेसु रूपारम्माणदीसु रूपारम्माणं वा आरब्ध, आरम्माणं कत्वाति अत्थो, ध. स. अहु. 152.

आरब्धते आ + र्भम, कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरभ्यते]. प्रारम्भ किया जाता है — अत्थवण्णना आरब्धते, खु. पा. अहु. 132; — मानो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. — आरब्धमानोयेवाति कुरुमानोयेव, स. नि. अहु. 3.184; — नं नपुं., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. — सब्बं विभावयितुं आरब्धमानं विस्सज्जनं अधिपेतञ्चेव अत्थं न साधेय्य, विसुद्धि. 1.83.

आरभति आ + र्भम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरभते], 1. शा. अ., प्रारम्भ करता है, आरम्भ करता है — नं कत्तुं आरभति, करोतियेव वा, पारा. अहु. 1.169; यागुं सयमेव पातुं आरभति, पाचि. अहु. 105; — न्ति व. व. — कल्याणचित्ते उप्पन्ने दातुं आरभन्ति, पाचि. अहु. 69; — न्तस्स वर्त. कृ. पु., ष. वि., ए. व. — सम्भासम्बोधिं अधिगन्तुं

## आरभति

170

## आरभापेति

आरभन्तस्सेव सतो, अ. नि. अ. 2.221; — भि अद्य. प्र. पु., ए. व. — मिगो अम्बथलमगं गहेत्वा पलायितुं आरभि, पारा. अ. 1.52; थेरो तीणि सरणानि दत्त्वा पञ्च सीलानि दातुं आरभि, अ. नि. अ. 2.108; — भिंसु अद्य. प्र. पु., ब. व. — अथस्स मत्थकतो धातुं ओरोपेतुं आरभिंसु, पारा. अ. 1.61; — भिस्सति भवि, प्र. पु., ए. व. — यस्मिं पन ठाने निसीदित्वा मं खादितुं आरभिस्सति, ध. प. अ. 1.96; — भिस्सामि उ. पु., ए. व. — तस्मा सासनं निम्मलं कातुं आरभिस्सामीति, सा. वं. 41 — भिस्साम उ. पु., ब. व. — आरभिस्साम कारेतुं उपसम्पदमङ्गलं, चू. वं. 89.54; — भित्त्वा पू. का. कृ. — युज्झितुं आरभित्त्वा न घातेसुं ते पुनप्पुनं, चू. वं. 99.132; — भितब्बं नपुं. सं. कृ., प्र. वि., ए. व. — तस्स वत्तं कातुं आरभितब्बं, चूळव. अ. 1.16; 2. ला. अ., हाथ में ले लेता है, निष्पादित करता है, सक्रिय हो जाता है, उद्योगशील हो जाता है, उत्पन्न करता है, उत्तेजित कर देता है, प्रेरित करता है, प्रयास करता है, व्यायाम करता है — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — एकच्चो पुग्गलो आरभति, न विष्पटिसारीं होति, अ. नि. 2(1).156; आपत्तिवीतिकमनवसेन आरभति चेव, अ. नि. अ. 3.52; — भामि उ. पु., ए. व. — वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया, अ. नि. 2(1).95; आरभामीति दुविधमि वीरियं करोमि, अ. नि. अ. 3.36; — न्ति प्र. पु., ब. व. — न वीरियं आरभन्ति, अ. नि. 1(1).87; आरभन्तीति दुविधमि वीरियं न करोन्ति, अ. नि. अ. 2.44; — थ म. पु., ब. व. — तस्मातिह, भिक्खवे, भिय्योसोमत्ताय वीरियं आरभथ, म. नि. 3.124; — माम उ. पु., ब. व. — न नं आरभाम, विसुद्धि. 2.193; — न्तो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. — पञ्चं आरभन्तो, अ. नि. अ. 2.177; — न्तेन तृ. वि., ए. व. — पुन आरभन्तेनापि आपुच्छितब्बं, महाव. अ. 3.21; — तो प. वि., ए. व. — वीरियमारभतो दहन्, ध. प. 1.12; वीरियमारभतो दहन्ति दुविधज्ज्ञाननिबत्तनसमत्थं थिर वीरियं आरभन्तस्स, ध. प. अ. 1.390; — मेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — करुणाभावनायोगमारभेय्य ततो परं, ना. रू. प. 1.350; — म्मथ अनु., म. पु., ब. व. — आरम्भथ निक्कमथ, युज्जथ बुद्धसासने, स. नि. 1(1).183; आरम्भथाति आरम्भवीरियं करोथ, स. नि. अ. 1.195; — ते वर्त., प्र. पु., ए. व., आत्मने. — अस्मिमानस्स पहानं आरभते, पेटको. 192; — मानो वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. — आरम्भमानो च

सङ्घेपतो ताव आरभति, विसुद्धि. 2.264; — म्महो अनु., म. पु., ब. व. — आरम्भहो दहहा होथ, खन्तिवलसमाहिता, दी. नि. 2.180; आरम्भहो दहहा होथाति एवं सन्ते वीरियं आरभथ, दी. नि. अ. 2.235; — भि अद्य. प्र. पु., ए. व. — विपस्सनं आरभि, पायि. अ. 61; — भिं उ. पु., ए. व. — युज्झिं, इदानी एको व मच्चुना युद्धमारभि, म. वं. 32.17; — भिंसु प्र. पु., ब. व. — तेसं दुवे वीरियमारभिसु, दी. नि. 2.201; — भिस्सति भवि, प्र. पु., ए. व. — न वीरियं आरभिस्सति तस्सङ्गस्स, म. नि. 1.32; — भिस्सामि उ. पु., ए. व. — तस्स आदितो पमुति अत्थसंवण्णनं आरभिस्सामि, खु. पा. अ. 3; — भिस्सन्ति प्र. पु., ब. व. — न वीरियं आरभिस्सन्ति, अ. नि. 2(1).100; — भित्तुं/द्धं निमि. कृ. — अलमेव सद्धापब्बजितेन कुलपुत्तेन वीरियं आरभित्तुं, स. नि. 1(2).27; आरभित्तुन्ति चतुरङ्गसमन्नागतं वीरियं कातुं, स. नि. अ. 2.44; — भित्त्वा पू. का. कृ. — ... विपस्सनं आरभित्वा नचिरस्सेव छळमिज्जो अहोसि, थेरगा. अ. 1.77; विरियारम्भो, आरभित्तुं आरभित्वा आरभ, सद. 2.409; — भितब्बा स्त्री., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. — मेत्ताभावना आरभितब्बा, विसुद्धि. 1.284; — भितब्बं नपुं. सं. कृ., प्र. वि., ए. व. — वीरियं आरभितब्बं, चूळव. अ. 72; — भितब्बे पु. सं. कृ., सप्त. वि., ए. व. — निहेसे आरभितब्बे, पारा. अ. 2.167.

आरभति<sup>2</sup> आ + रभ (हिंसार्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलभते], शा. अ., दृढता के साथ पकड़ लेता है, काबू में कर लेता है, ला. अ., आक्रमण करता है, मारने के लिए दूट पड़ता है, हिंसा करता है — रभति आरभति समारभति, सद. 2.409; — न्ति ब. व. — समणं गोतमं उदिस्स पाणं आरभन्ति, म. नि. 2.35; आरभन्तीति घातेन्ति, म. नि. अ. (म.प.) 2.33; — थ अनु., म. पु., ब. व. — इमं पाणं आरभथाति, म. नि. 2.37.

आरम्भ नपुं. आ + रभ से व्यु., क्रि. ना., प्रारम्भ कर देना, आरम्भ कर देने की क्रिया — नं प्र. वि., ए. व. — आरम्भं आदिकरणं आरम्भो, अनि. प. सूची 41; आरम्भधातूति आरम्भनवसेन पवत्तवीरियं, अ. नि. अ. 3.111; — काल पु., तत्पु. सं., प्रारम्भ करने का काल — लो प्र. वि., ए. व. — ... विपस्सनाय कम्मं आरम्भकालो, अ. नि. अ. 3.256.

आरभापेति आ + रभ' का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रारम्भ कराता है, प्रारम्भ करने हेतु प्रेरित करता है — पयि अद्य.,

## आरभियति

171

## आरम्भ

प्र. पु., ए. व. — तत्थ तत्थेव राजूहि विहारे आरभापयि, म. वं. 5.80; — त्वा पू. का. कृ. — कम्मानि आरभापेत्वा लेणानि अट्टसट्ठियो, म. वं. 16.12; आरभापेत्वा ति द्वारद्वपनादीनि कम्मानि पट्टपेत्वा, म. वं. टी. 330(नां).

आरभियति आ + √रभ् के कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., शा. अ., दृढ़ता के साथ पकड़ लिया जाता है, काबू में कर लिया जाता है, ला. अ., मार दिया जाता है, हत्या कर दिया जाता है — मानो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — पाणो आरभियमानो दुक्खं दोमनस्सं पटिसवेदेति, म. नि. 2.37-8; आरभियमानोति मारियमानो, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.37.

आरमन/आरमण नपु., आ + √रम से व्यु., क्रि. ना. [आरमण]. 1. आमोद प्रमोद, मौज-मस्ती, अभिरति — नं प्र. वि., ए. व. — तत्थ आरमनं आरामो, अभिरतीति अत्थो, दी. नि. अट्ट. 3.182; 2. विरति, बिलगाव, त्याग, थम जाना — णं प्र. वि., ए. व. — आरतीति आरमणं, खु. पा. अट्ट. 114.

आरमति आ + √रम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरमते], 1. आनन्द प्राप्त करता है, आमोद-प्रमोद से भरपूर हो जाता है, प्रसन्न होता है, सन्तुष्ट होता है — न्ति ब. व. — आरमन्ति एत्थाति आरामो, अ. नि. अट्ट. 2.330; आरमन्तीति रतिं विन्दन्ति कीळन्ति लळन्ति, अ. नि. टी. 2.303; एतेहि भवेहि आरमन्ति अभिनन्दन्तीति भवारांमा, इतिवु. अट्ट. 155; — मितब्ब त्रि., सं. कृ. — तो प. वि., ए. व. — सो आरमितब्बतो आरामो एतस्साति अब्बापज्झारामो, इतिवु. अट्ट. 130; 2. छोड़ देता है, बिलग हो जाता है, हट जाता है, विरत हो जाता है — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — आरमन्ति विरमन्ति पटिविरमन्ति, महानि. 248; — मेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — कुक्कुच्चा आरमेय्य, महानि. 277.

आरम्भ पु., [आरम्भ], शा. अ., प्रारम्भ, कर्म का प्रारम्भ, शुरुआत — म्मा प्र. वि., ब. व. — आरम्भाति कम्मानं पटमारम्मा, महानि. अट्ट. 356; — म्मं द्वि. वि., ए. व. — अकारम्भं च भिक्खून् भोगयामे च दापयि, चू. वं. 54.40; — तो प. वि., ए. व. — निसिन्नानं वो आरम्भतो पट्टाय याव ममागमनं, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.162; — स्स ष. वि., ए. व. — आरम्भस्स च अवसानस्स च वेमज्झद्धानं, पाधि. अट्ट. 67; ला. अ., आदिकर्म, कार्य, व्यवसाय, कृत्य, प्रारम्भिक प्रयास, प्रयत्न, वीर्य, उत्साह, हिंसा, पापकर्म,

विनय-नियमों के उलंघन से जनित अपराध या आपत्ति — अयञ्छि आरम्भसद्वो कम्मे आपत्तियं किरियायं वीरिये हिंसायं विकोपनेति अनेकेसु अत्थेसु आगतो, महानि. अट्ट. 331; क. आदिकर्म, प्रारम्भिक कर्म, प्रयास का प्रारम्भिक चरण, प्रबल वीर्य अथवा पराक्रम — म्मो प्र. वि., ए. व. — ... यदा बोधिसत्तो दुक्करकारिकं अकासि, नेतादिसो अञ्जत्र आरम्भो अहोसि निक्कमो ..., मि. प. 230; ... चेतसिको, आरम्भो चेतना कम्मं कायिका वाचसिका, पेटको. 189; — म्मं द्वि. वि., ए. व. — भगवा पदं सोधेति, नो च आरम्भं, नेति 60; — म्मेन तृ. वि., ए. व. — येनारम्भेन इदं सुत्तं भासति सो आरम्भो नियुत्तो, पेटको. 298; — स्स ष. वि., ए. व. — अत्थिक्खाताव इमस्स आरम्भस्स अनभासितं, पेटको. 238; ख. वीर्य, पराक्रम, उत्साह — म्मो प्र. वि., ए. व. — पब्बजितुं आरम्भो उत्साहो, उदा. अट्ट. 252; — म्मा ब. व. — वियारम्भाति विविधा पुञ्जाभिसङ्गारादिका आरम्भा, महानि. अट्ट. 355; निट्ठं धम्मूपसंहिता, सीयं गच्छन्तु आरम्भा, परि. अट्ट. 267; ग. आपत्ति, हिंसा, वध, मारकाट, पापकर्म — म्मा प. वि., ए. व. — बीजगामभूतगामसमारम्भा पटिविरतो होति, दी. नि. 1.57; — म्मानं ष. वि., ब. व. — आरम्भानं निरोधेन, नत्थि, दुक्खस्स सम्भवो, सु. नि. 749; स. उ. प. के रूप में अञ्जाधिकारवचना, अना, उपा., कम्मद्धाना, गन्था, आया, थिरा, शूपा, निग्गमना, निरा, पकरणा, पच्चया, पटमा, पुच्छा, पुब्बा, भावना, मरणा, महा, युद्धा, वचना, विगता, विपस्सना, विरिया, संवण्णना, सज्झाया, समा, सम्मसना, सेसा, के अन्त, द्रष्ट., स. पू. प. के रूप में, — गहण नपुं, तत्पु. स., 'आरम्भ' शब्द का प्रयोग — णं प्र. वि., ए. व. — आरम्भमत्तं एवेत्थ न अत्थसिद्धी ति दस्सनत्थं आरम्भगहणं, सह. 3.919; — ज त्रि., कर्मों से उत्पन्न, पापकर्मों के कारण उत्पन्न, विनय शिक्षापदों के पालन न करने के फलस्वरूप उत्पन्न — जा पु., प्र. वि., ब. व. — आयस्मतो खो आरम्भजा आसवा संविज्जन्ति, अ. नि. 2(1).157; आरम्भजाति आपत्तिवीतिकमसम्भवा, अ. नि. अट्ट. 3.52; — जे द्वि. वि., ब. व. — आरम्भजे आसवे पहायाति, अ. नि. अट्ट. 3.52; — ड पु., तत्पु. स., "आरम्भ" (उत्साह) का अर्थ या तात्पर्य — हेन तृ. वि., ए. व. — आरम्भहेन वीरियं, नेति. 45; — त नपुं, भाव., प्रारम्भ होने की अवस्था — ता प. वि., ए. व. — कतारम्भत्ता नानप्यकारेन सब्बं, सह. 1.144; — त्थ पु., आरम्भ अथवा प्रबल उत्साह का अर्थ — त्थो

## आरम्भति

172

## आरम्भण

प्र. वि., ए. व. — पमिणन्तीति एत्थ आरम्भत्थो प-सदोति आह तुलेतुं आरम्भन्तीति, अ. नि. टी. 3.106; — दढ्हता स्त्री., कर्म को प्रारम्भ किए जाने के विषय में दृढ़ता, आदि कर्म-विषयिणी दृढ़ता — ता प्र. वि., ए. व. — ... आरम्भदढ्हता, धीरवीरभावो ... एवमादिका सब्बापि बोधिसम्मारपटिपत्ति वीरियानुभावेनेव समिज्झतीति ..., चरिया, अहु. 289; — धातु स्त्री., कर्म को प्रारम्भ करने का प्रबल उत्साह, कर्म के प्रथम आरम्भ के लिए वीर्य — तु प्र. वि., ए. व. — अत्थि, भिक्खवे, आरम्भधातु निक्कमधातु, स. नि. 3(1).83; आरम्भधातूति पटमारम्भवीरियं, स. नि. अहु. 3.178; — तुं द्वि. वि., ए. व. — वीरियं नाम लभन्ति आरम्भधातुं उपादाय, पेटको. 190; — या सप्त. वि., ए. व. — "आरम्भधातुया सति आरम्भवन्तो सत्ता पज्जायन्ती"ति, अ. नि. 2(2).53; पाठा. आरम्भधातुया; — पच्चया अ., प. वि., प्रतिरू., क्रि. वि., (पाप) कर्मों के प्रारम्भ किए जाने के फलस्वरूप — यं किञ्चि दुक्खं सम्मोति सब्बं आरम्भपच्चयाति, सु. नि. पृ. 194; — पज्जति स्त्री., कर्म को प्रारम्भ किए जाने का कथन, आदिकर्म की संज्ञा — ति प्र. वि., ए. व. — आरम्भपज्जति वीरियिद्वियस्स, नेत्ति. 50; — लक्खण त्रि., व. स., उत्साह के लक्षण से युक्त — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरम्भलक्खणं वीरियं, नेत्ति. 25; — वत्थु नपुं., वीर्य का आधारभूत कारण — त्थुनि प्र. वि., व. व. — अहु आरम्भवत्थुनि, दी. नि. 3.203; आरम्भवत्थूनीति वीरियकारणानि, दी. नि. अहु. 3.207; — वीरिय नपुं., कर्म. स., प्रबल प्रयास, मानसिक प्रयत्न — यं द्वि. वि., ए. व. — तत्थ आरम्भधाति आरम्भवीरियं करोथ, स. नि. अहु. 1.195; — सुद्धि स्त्री., तत्पु. स., वीर्य अथवा कार्य-विषयक उत्साह की शुद्धि — द्वि प्र. वि., ए. व. — मनोति आरम्भो नेव पदसुद्धि, न आरम्भसुद्धि, नेत्ति. अहु. 306.

**आरम्भति** आ + रम्भ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरभते].

1. प्रारम्भ करता है, दृढ़ प्रयास करता है, समुत्तेजित अथवा प्रोत्साहित करता है, सक्रिय करता है, उत्पन्न करता है, 2. पाप कर्म करता है, आपत्ति में आपतित हो जाता है — आरम्भति च विप्पटिसारी च होतीति एत्थ आपत्ति, महानि. अहु. 331; — न्ति ब. व. — आरम्भन्ति चेतसिको, पेटको. 189; — थ/व्हा अनु. म. पु., व. व. — आरम्भथ निक्कमथ, युज्जथ बुद्धसासने, पेटको. 217; आरम्भव्हा दढ्हता होथाति, दी. नि. अहु. 2.235.

**आरम्भन** नपुं., आ + रम्भ से व्यु., क्रि. ना., प्रोत्साहन, प्रबल प्रयास, दृढ़ प्रयत्न, कठोर व्यायाम, स. प. के रूप में, — वसेन क्रि. वि., सुदृढ़ प्रयास के रूप में — वीरियज्झि आरम्भनवसेन आरम्भोति बुच्चति, महानि. अहु. 331.

**आरम्भनक** नपुं., आरम्भन से व्यु., उपरिवत् — वीरियज्झि आरम्भनकवसेन आरम्भोति बुच्चति, पटि. म. अहु. 1.38; पाठा. आरम्भनकवसेन.

**आरम्भवन्तु** त्रि., प्रारम्भ कर देने वाला, प्रबल प्रयास करने वाला, अध्यवायी, वीर्यवान् — न्तो पु., प्र. वि., ब. व. — "आरम्भधातुयासति आरम्भवन्तो सत्ता पज्जायन्ती"ति, अ. नि. 2(2).53; पाठा. आरम्भवन्तो.

**आरम्भण** नपुं., संभवतः आ + रम्भ से व्यु., क्रि. ना., आलम्बन अथवा आरम्भन का परिवर्तित रूप [आलम्बन], शा. अ., आश्रय, सहारा, टेक, आशय, आवास, आधार — पतिट्ठापि हि आलम्बीयतीति आरम्भणं नाम होति ... अज्जत्थ पाळियमि हि पतिट्ठा "आरम्भण"ति बुच्चन्ति, पटि. म. अहु. 2.174; या आहारड्डिति या पुनभवाम्भिनिब्वत्तिका ठिति या च पोनोभविका ठिति, अयं बुच्चति आरम्भणं, पेटको. 307; अप्पटिक्खपितब्बेन अत्तनो फलेन आलम्बियतीति आलम्भणं, प. प. अहु. 289; — णं द्वि. वि., ए. व. — "आरम्भणं ब्रूहि समन्तचक्खु, यं निस्सितो ओघमिमं तरेय्यं, सु. नि. 1075; आरम्भणन्ति निस्सयं, सु. नि. अहु. 2.284; आरम्भणं ब्रूहि समन्तचक्खूति आरम्भणं आलम्भणं निस्सयं उपनिस्सयं ब्रूहि ..., चूकनि. 91; ला. अ. 1., इन्द्रियों का विषय, चेतना का विषय, चित्त एवं दैतसिक धर्मों का आश्रय, गोचर, आयतन, इन्द्रियों (ग्राहकों) द्वारा ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म, बाह्य आयतन — णं' प्र. वि., ए. व. — आलम्बो विसयो तेज्जारम्भणालम्बनानि च, अभि. प. 94, इन्दोधिपतिसक्केस्वारम्भणं, हेतु गोचरे अभि. प. 1132; ... तदेव दुब्बलपुरिसेन दण्डादि विय चित्त चेतसिकेहि आलम्बीयति, तानि वा आगन्त्वा एत्थ रमन्तीति आरम्भणं ..., अभि. ध. वि. टी. 121; — णं' द्वि. वि., ए. व. — "आरम्भणतो"ति पाणातिपाता वेरमणी परस्स जीवित्तिन्द्रियं आरम्भणं कत्वा अत्तनो वेरचेतनाय विरमति, विभ. अहु. 363; — णानि ब. व. — आरम्भणानि नाम रूपारम्भणं सद्धारम्भणं गन्धारम्भणं रसारम्भणं फोहृब्बारम्भणं धम्मारम्भणञ्चोति छाब्धिधानि भवन्ति, अभि. ध. स. 21; ला. अ. 2. हेतु, चौबीस प्रत्ययों (पच्चयों) में से एक, कारण, तार्किक आधार — णं' प्र. वि., ए. व. — आलम्बीयति

## आरम्भण

173

## आरम्भणग्रहण

दुबलेन विद्य दण्डादिकं चित्तचेतसिकोहि गृह्यतीति आरम्भणं  
चित्तचेतसिका हि यं यं धम्मं आरम्भ पवत्तन्ति, ते ते धम्मा  
तेसं तेसं धम्मानं आरम्भणपच्चयो नाम, अभि. ध. वि. 211;  
"यञ्च, भिक्खवे, चेतोति यञ्च पकप्येति यञ्च अनुसोति  
आरम्भणमेतं होति विज्जाणस्स टितिया", स. नि. 1(2).59;  
पच्चयो हि इध आरम्भणन्ति अधिपेता, स. नि. अहु. 2.62;  
आरम्भणमपि हि बाहिरायतनानि विद्य इध 'बहिद्धा'ति वुत्तं,  
पटि. म. अहु. 2.139; आरम्भणमेतं होतीति एतं  
वेतनादिधम्मजात पच्चयो होति, पच्चयो हि इध आरम्भणन्ति  
अधिपेता, स. नि. अहु. 2.62; - णं द्वि. वि., ए. व. -  
न लच्छति मारो आरम्भणं, दी. नि. 3.42; - णेन तू. वि.,  
ए. व. - आरम्भणेनापि परित्तेन, पच्चकबोधिं अनुपापुणन्ति,  
अप. 1.8; तेन आरम्भणेन रागा विमुच्चति, मि. प. 302; -  
तो प. वि., ए. व. - ... आरम्भणतो जानाति ..., कथाव.  
262; - स्स ष. वि., ए. व. - आरम्भणस्स गोचरद्वो  
अभिज्जेय्यो, पटि. म. 15; सीले पतिद्वाय कम्मद्वानवसेन  
गहितस्स आरम्भणस्स भावनापवत्तिद्वानन्ता गोचरद्वानन्ता च  
गोचरद्वो, पटि. म. अहु. 1.83; - णे सप्त. वि., ए. व. -  
आरम्भणे सति पतिद्वो विज्जाणस्स होति, स. नि. 1(2).58;  
आरम्भणे सतीति तस्मिं पच्चये सति, स. नि. अहु. 2.62;  
- णा प्र. वि., ब. व. - आरम्भणा यस्स न सन्ति केचि,  
सु. नि. 478; आरम्भणाति पच्चया, पुनब्बवकारणानीति वुत्तं  
होति, सु. नि. अहु. 2.123; - णे द्वि. वि., ब. व. -  
आरम्भणे लभित्वान्, पहितत्तेन भिक्खुना, मि. प. 385;  
पाटियेकके पाटियेकके आरम्भणे बन्धतीति, घ. स. अहु.  
391; - णेहि तू. वि., ब. व. - छद्धारिकोहि आरम्भणेहि  
निम्मथितो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).193; - णानं प.  
वि., ब. व. - चक्खादीनं वत्थूनं रूपादीनं आरम्भणानञ्च  
पटिघातेन समुपपन्ना सज्जा, ध. स. अहु. 246; - णेसु  
सप्त. वि., ब. व. - योगिना योगावचरेन आरम्भणेषु येव  
चित्तं उपनिबन्धितब्बं मि. प. 384; ... सब्बेसु रूपादिसु  
आरम्भणेषु सवनतो सब्बापि रूपतण्हा, ध. प. अहु. 2.307;  
- वसेन तू. / प. वि., प्रतिरू. निपा. क्रि. वि., आलम्बन  
के कारण, आलम्बन के विषय में - यं विज्जाणद्वितीसु  
टितं पठमाभिनिब्बत्तिआरम्भणवसेन उपादानं, इदं वुच्चति  
चेतसिकन्ति, पेटको. 306; अयञ्चि यथा  
असुभकम्मद्वानं ... ओळारिकारम्भणत्ता पन  
पटिकूलारम्भणत्ता च आरम्भणवसेन नेव सन्तं न पणीतं,  
स. नि. अहु. 3.300.

आरम्भणक नपुं., केवल स. उ. प. के रूप में, आलम्बन,  
विषय, अप्यमाणा.- प्रमाण से रहित आलम्बन, बहुत बड़ा  
आलम्बन; तदा.- पांच इन्द्रिय द्वारों में प्रादुर्भूत आलम्बन  
के ग्रहण हेतु उत्पन्न चित्त की प्रवृत्ति का सोलहवां एवं  
सत्तरहवां क्षण, जवनक्षण में परिभुक्त आलम्बन की कटु  
अथवा मधुर अनुभूतियों को अंकित करने का क्षण - कं  
प्र. वि., ए. व. - तदा तेन तुल्यविपाकमपि, तदारम्भणकं  
सिया, अभि. अव. 393.

आरम्भणकथा स्त्री., पांच प्रकार की कथावत्थुओं में से एक  
- तिस्सो पन सङ्गीतियो अनारुक्कं धातुकथा आरम्भणकथा  
असुभकथा जाणवत्थुकथा ... कथावत्थूहि ... नाम, स. नि.  
अहु. 2.177.

आरम्भणकरण नपुं., तत्पु. स., (किसी वस्तु को) अपना  
आलम्बन बनाना - णं प्र. वि., ए. व. - गोत्रभुज्जाणस्स  
सुविसुद्धनिब्बानारम्भणकरणं, ध. स. अहु. 274; आभुजितवसेन  
वा हि उस्सदवसेन वा आरम्भणकरणं होति, ध. स. अहु.  
364; - णेन तू. वि., ए. व. - आरम्भणकरणेन च निब्बाने  
पक्खन्दतीति, पारा. अहु. 2.33; - तो प. वि., ए. व. -  
सकायचित्तानं आरम्भणकरणतो अज्झात्तारम्भणं होति, विसुद्धि.  
2.58; - सम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स., चिन्तन का आलम्बन  
बनाने की अवस्था की प्राप्ति - कम्मज्जभावेनेव सम्पन्नाकारेन  
आरम्भणस्स ग्रहणं आरम्भणकरणसम्पत्ति, विसुद्धि. महाटी.  
2.135.

आरम्भणकिरिया स्त्री., तत्पु. स., आलम्बन अथवा विषय  
की क्रिया - य तू. वि., ए. व. - अत्थो किच्चवसेन  
आरम्भणकिरियाय च विदितो, उदा. अहु. 41.

आरम्भणकुसल त्रि., तत्पु. स., ध्यान के आलम्बनों के  
ग्रहण में कुशल - लो पु., प्र. वि., ए. व. - न  
समाधिस्मिं आरम्भणकुसलो, स. नि. 2(1).264; न  
समाधिस्मिं आरम्भणकुसलोति कसिणारम्भणेषु अकुसलो,  
स. नि. अहु. 2.318.

आरम्भणगोचरसद् पु., तत्पु. स., आरम्भण शब्द एवं गोचर  
शब्द - दानं ष. वि., ब. व. - आरम्भणगोचरसद्दानं  
एकत्थता वुत्ता, पटि. म. अहु. 2.100.

आरम्भणग्रहण नपुं., तत्पु. स. [आलम्बनग्रहण], आलम्बन  
का ग्रहण, विषय को पकड़ लेना - णं प्र. वि., ए. व. -  
आरम्भणग्रहणञ्चि चित्तं, पटि. म. अहु. 2.277; - णे  
सप्त. वि., ए. व. - अज्झातिकबाहिरा चरस्स पथवी  
आरम्भणग्रहणे पच्चयो होति, ध. स. अहु. 349; - कथम



## आरम्भणचतुक्क

174

## आरम्भणधम्म

त्रि., तत्पु. स. [आलम्बनग्रहणक्षम], आलम्बन अथवा अपने विषय को ग्रहण करने में सक्षम या समर्थ — मानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — सत्तानं इन्द्रियानि आरम्भणग्रहणकखमानि होन्ति, विसुद्धि. 2.85; आरम्भणग्रहणकखमानि रूपादिआरम्भणं गहेतुं समत्थानि ..., विसुद्धि. महाटी. 2.123; — लक्खण त्रि., ब. स., वह, जिसका लक्षण अपने आलम्बन अथवा अपने विषय का ग्रहण कर लेना हो, आलम्बन के ग्रहण के लक्षण वाला — णो पु., प्र. वि., ए. व. — लोभो आरम्भणग्रहणलक्खणो, विसुद्धि. 2.95; आरम्भणग्रहणं 'मम इदं' ति तण्हाभिनिवेसवसेन अभिनिविस्स आरम्भणस्स अविस्सज्जनं, न आरम्भणकरणमत्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.139.

**आरम्भणचतुक्क<sup>1</sup>** नपुं., आलम्बनों का चतुष्टय, आलम्बनों की चौकड़ी — क्वं प्र. वि., ए. व. — केवलञ्चेत्थ आरम्भणचतुक्कं आरम्भणदुकं होति, ध. स. अहु. 234.

**आरम्भणचतुक्क<sup>2</sup>** नपुं., व्य. सं., ध. स. अहु. के एक अंश का शीर्षक, ध. स. अहु. 229; — वण्णना स्त्री., ध. स. मू. टी. के एक खण्ड का शीर्षक, ध. स. मू. टी. 100.

**आरम्भणचित्त** नपुं., कर्म. स., चित्र-विचित्र आलम्बन, तरह तरह के आलम्बन — त्तानि प्र. वि., ब. व. — चित्रानीति आरम्भणचित्तानि, स. नि. अहु. 1.57.

**आरम्भणचित्तता** स्त्री., भाव., आलम्बन पर चित्त को लगा देने की अवस्था — य तृ. वि., ए. व. — अपिच चित्तं नामेतं सहजातं सहजातधम्मचित्तताय ... आरम्भणचित्तताय ... लिङ्गानन्तसज्जानान्तवोहारनान्तादीनं अनेकविधानं चित्तानं ... वेदितब्बं, स. नि. अहु. 2.288.

**आरम्भणहु** पु., तत्पु. स. [आलम्बनार्थ], आलम्बन का अर्थ अथवा अभिप्राय — हुो प्र. वि., ए. व. — आरम्भणहुो अभिज्जेय्यो, पटि. म. 15; तस्स निब्बानारम्भणस्स आलम्बनभावेन आरम्भणहुो, पटि. म. अहु. 1.82; — हुं द्वि. वि., ए. व. — आरम्भणहुं बुज्झन्तीति — वोज्झा, पटि. म. 295; — हुेन तृ. वि., ए. व. — समथविपस्सनं युगनद्धं भावेति, आरम्भणहुेन, पटि. म. 277; आरम्भणहुेनाति आलम्बनहुेन, आरम्भणवसेनाति अत्थो, पटि. म. अहु. 2.175.

**आरम्भणद्विति** स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनस्थिति], आलम्बन (विषय) की स्थिरता, आलम्बन का टिकारूपन — ति प्र. वि., ए. व. — एकमेकस्स चेतोति च पक्कपेति च विज्जाणस्स विति या होति, सा च विति द्विधा आरम्भणद्विति च आहारद्विति च, पेटको. 306.

**आरम्भणता** स्त्री., आरम्भण का भाव, आलम्बन-भाव, चित्त एवं इन्द्रियों का आलम्बन या गोचर होना, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, — ता प्र. वि., ए. व. — आरम्भणविभागे ... अत्तनो सन्तानसम्बन्धं हेट्ठिमसमापत्तिं आरब्ध पवत्तितो अज्झत्तारम्भणता वेदितब्बा, ध. स. अहु. 439; — तं द्वि. वि., ए. व. — एवं पजानने अप्प-माणारम्भणतं भवे, अभि. अव. 1158; — य प. वि., ए. व. — तज्झि यथा बुद्धेन भगवता देसितं, तथा अनोदिससककरणवसेन अपरिमाणसत्तारम्भणताय अप्पमाणं, थेरगा. अहु. 2.204.

**आरम्भणत्त** नपुं., आरम्भण का भाव. [आलम्बनत्व], उपरिवत् — त्ता प. वि., ए. व. — आरुप्यज्झानस्स आरम्भणत्ता, विसुद्धि. 1.321; भयस्स आरम्भणत्ता, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).127; स. उ. प. के रूप में, अकुप्पा.

**आरम्भणत्तिक** नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों अथवा गोचर-भूत रूप आदि धर्मों की तिकड़ी, आलम्बनों का त्रिक — का प्र. वि., ब. व. — आरम्भणत्तिका वुत्ता, ये चत्तारो महसिना, विसुद्धि. 2.57; चत्तारो हि आरम्भणत्तिका महसिना वुत्ता, तदे., — केसु सप्त. वि., ब. व. — आरम्भणत्तिकेसु पन ... चक्खुसोत ... इन्द्रियानि सन्धाय वुत्तं, विभ. अहु. 120; स. उ. प. के रूप में परिता, के अन्त. द्रष्ट.

**आरम्भणदायक** त्रि., किसी भी धर्म को आलम्बन अथवा आश्रय के रूप में प्रस्तुत करने वाला — कानं पु., च. / ष. वि., ब. व. — लद्धा च न अस्सादेन्ति, आरम्भणदायकानञ्च चित्तकारादीनं सक्कारं करोन्ति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).229.

**आरम्भणदुक** नपुं., तत्पु. स., दो आलम्बनों की एक इकाई, आलम्बनों का दुक्का — कं प्र. वि., ए. व. — केवलञ्चेत्थ आरम्भणचतुक्कं आरम्भणदुकं होति, ध. स. अहु. 234; पञ्चवीसति आरम्भणानारम्भणउपपरिक्खणवसेन पवत्तता आरम्भणदुका नाम, ध. स. अहु. 337.

**आरम्भणदुब्बलता** स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनदुर्बलता], आलम्बनों की दुर्बलता — कस्मा एवं होति ? आरम्भणदुब्बलताय, ध. स. अहु. 307.

**आरम्भणधम्म** पु., कर्म. स. [आलम्बनधर्म], आलम्बनभूत धर्म, आलम्बन के रूप में विद्यमान वस्तु अथवा अवस्था — म्मा प्र. वि., ब. व. — धम्माति आरम्भणधम्मा, स. नि. अहु. 1.159; विचिकिच्छद्धानीया धम्माति विचिकिच्छाय आरम्भणधम्मा, स. नि. अहु. 3.177; ओघनिया, ओघानं आरम्भणधम्मा एव वेदितब्बा, ध. स. अहु. 95; — म्मानं ष.

## आरम्भणानन्त

175

## आरम्भणपटिसङ्घा

वि., ब. व. — कामरागस्स कारणभूतानं आरम्भणधम्मनं, स. नि. अट्ट. 3.185.

आरम्भणानन्त नपुं, तत्पु. स. [आलम्बनानात्व], आलम्बनों की विविधता, आलम्बनों का नानारूप होना — तं प्र. वि., ए. व. — एकस्स पठवीकसिणं आरम्भणं होति ... पे. ... एकस्स ओदातकसिणन्ति इदं आरम्भणानन्तं, विभ. अट्ट. 494; — तो प. वि., ए. व. — आरम्भणानन्ततो हि अपरिमितसङ्ख्य्यां सत्तानं अपरिमितमसङ्ख्य्या विपत्तासा भवन्ति, पेटको. 249; — ता स्त्री., भाव., उपरिवत् — ता प्र. वि., ए. व. — चतुत्थं ज्ञानं भावेत्वा आरम्भणानन्तता ... देवानं सहस्रं उपपज्जन्ति, विभ. 498; आरम्भणानन्तताति आरम्भणस्स नान्तभावो, विभ. अट्ट. 494.

आरम्भणन्तर नपुं, तत्पु. स. [आलम्बनान्तर], आलम्बन का आन्तरिक स्वरूप, आलम्बन अथवा विषय की भीतरी वि. षेता — रे सप्त. वि., ए. व. — एकाकियो अदुतियो, सेति आरम्भणन्तरेति, मि. प. 368; — गत त्रि., (ध्यानाभ्यास के क्रम में) आलम्बन के भीतर तक गया हुआ — योगिना योगावचरेण मानसे कायं निक्खिपित्वा आरम्भणन्तरगतेन सयितब्बं, तदे.

आरम्भणपच्चय<sup>1</sup> पु., [बौ. सं. आलम्बनप्रत्यय], चौबीस प्रकार के प्रत्ययों में से एक, आलम्बनभूत प्रत्यय, चित्त एवं चैतसिक धर्मों की उत्पत्ति में आलम्बन (आधार) के रूप में विद्यमान लौकिक एवं लोकोत्तर धर्म — यो प्र. वि., ए. व. — आलम्बीयति दुब्बलेन विय दण्डादिकं चित्तचेतसिकेहि गच्छतीति आरम्भणं चित्तचेतसिका हि यं यं धम्मं आरब्ध पवत्तन्ति, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्भणपच्चयो नाम्, अभि. ध. स. 211; ... तस्मा लोकीयलोकुत्तरादिभेदा सब्बेपि धम्मा यथायोगं चित्तचेतसिकानं आरम्भणपच्चयोति वेदितव्वोति ..., मो. वि. 339; ... चाति आरम्भणपच्चयो, आरम्भणं हुत्वा पच्चयो, आरम्भणभावेन पच्चयोति अत्थोति न कम्मधारयमत्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.251; वक्खु निस्सयपच्चयो, रूपं आरम्भणपच्चयो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).274; — येन तृ. वि., ए. व. — आरम्भणपच्चयेन च उपनिस्सयपच्चयेन चाति द्वेधा पच्चयो होति, विभ. अट्ट. 138; " ... ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्भणपच्चयेन पच्चयोति ..., विसुद्धि. 2.162; — ता स्त्री., भाव., आलम्बन के रूप में प्रत्यय होना, आश्रय के रूप में कारणता — तं द्वि. वि., ए. व. — आरम्भणपच्चयतं जानाति, कथाव. 263; — य तृ. वि., ए. व. — आरम्भणपच्चयताय पच्चयो,

पेटको. 270; — भाव पु., उपरिवत् — वं द्वि. वि., ए. व. — न हि सो धम्मो अत्थि, यो चित्तचेतसिकानं आरम्भणपच्चयभावं न गच्छेय्य, अभि. ध. वि. 211; — भूत त्रि., आलम्बन-प्रत्यय के रूप में विद्यमान, वह, जिसे आलम्बनभूत प्रत्यय बना दिया गया है — तं नपुं, प्र. वि., ए. व. — मग्गफलानं आरम्भणपच्चयभूतं अमतं महानिब्बानं नाम अत्थि नु खो नत्थीति, ध. स. अट्ट. 383; — तानं पु., ष. वि., ब. व. — संयोजनस्स आरम्भणपच्चयभूतानं एतं अधिवचनं, ध. स. अट्ट. 95.

आरम्भणपच्चय<sup>2</sup> पु., द्व. स., आलम्बन एवं प्रत्यय — येहि तृ. वि., ब. व. — आरम्भणपच्चयेहि च, परधम्महे चिमे पभाविता, विसुद्धि. 2.230.

आरम्भणपटिपदा स्त्री., द्व. स., आलम्बन एवं मार्ग, चेतना द्वारा गृहीत रूप आदि आलम्बन तथा इस के ज्ञान का मार्ग — हि तृ. वि., ब. व. — ये केचि ज्ञानं उप्पादेन्ति नाम न ते आरम्भणपटिपदाहि विना उप्पादेतुं सक्कोन्ति, ध. स. अट्ट. 230; — मिस्सक त्रि., आलम्बन एवं इसके ग्रहण के मार्ग से मिश्रित — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — इदानी आरम्भणपटिपदामिस्सकं सोळसक्खत्तुकनयं दस्सेतुं, ध. स. अट्ट. 229.

आरम्भणपटिपादक पु., तत्पु. स., आलम्बन-विषयक नियन्त्रण — को प्र. वि., ए. व. — आरम्भणपटिपादको मनहि कारोति मनसिकारो, विसुद्धि. 2.94; — त्त नपुं, भाव., आलम्बन-विषयक नियन्त्रण की अवस्था, आलम्बन पर पूर्ण नियन्त्रण करना — तेन तृ. वि., ए. व. — आरम्भणपटिपादकत्तेन सम्पयुतानं सारथि विय दट्ठब्बो, विसुद्धि. 2.94.

आरम्भणपटिविजानन नपुं, तत्पु. स., आलम्बन की सही सही पहचान, आलम्बन का ठीक ठीक ज्ञान — नं प्र. वि., ए. व. — आरम्भणपटिविजाननं विज्जाणं विज्जाणक्खन्धो, विसुद्धि. 2.225; आरम्भणपटिविजाननन्ति थद्धतासङ्घातफोडुब्बारम्भणपटिविजाननं, विसुद्धि. महाटी. 2.334.

आरम्भणपटिसङ्घा 1. स्त्री., तत्पु. स., आलम्बनविषयक प्रतिसंख्यान, आलम्बन का अनुचिन्तन, रूप आदि आलम्बनों के अनित्य, परिवर्तनशील होने का ज्ञान — ङ्गा प्र. वि., ए. व. — या च आरम्भणपटिसङ्घा या च भङ्गानुपस्सना यञ्च सुज्जतो उपट्ठानं, अयं अधिपज्जाविपस्सना नामाति वुत्तं होति, विसुद्धि. 2.279; 2. सं. कृ. क्रि. वि. के रूप

## आरम्भणपथवी

176

## आरम्भणमरियादा

में, ध्यानपूर्वक, एकाग्रतापूर्वक, सावधानी से — तत्थ आरम्भणपटिसङ्घाति यं किञ्चि आरम्भणं पटिसङ्घाय जानित्वा, खयतो वयतो दिस्वाति अत्थो, विसुद्धि. 2.277.

**आरम्भणपथवी** स्त्री., कर्म. स. (ध्यान के) आलम्बन के रूप में पृथ्वी, एक ज्ञान-कसिण के रूप में पृथ्वी — लक्षणपथवी ससम्भारपथवी आरम्भणपथवी सम्मुत्तिपथवीति चतुर्बिधा पथवी, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).28; ... आरम्भणपथवी, निमित्तपथवीतिपि, वुच्चाति, तदे..

**आरम्भणपणीतता** स्त्री. भाव. ध्यान के आलम्बन की सूक्ष्मता, आलम्बन का सूक्ष्मभाव — य त्. वि., ए. व. — आरम्भणपणीतताय पणीतो अतित्तिकरो, अङ्गपणीततायपीति, स. नि. अहु. 3.300.

**आरम्भणपरिग्राह** पु., तत्पु. स. [आलम्बनपरिग्रह]. आलम्बनों को अपने अधीन में ले लेना अथवा उन्हें दृढ़ता से ग्रहण कर लेना — रहित त्रि., आलम्बनों के परिग्रह से रहित — तानं च. वि., ब. व. — सांछससु ठानेसु आरम्भणपरिग्रहरहितानयेव तादिसानि सेनासनानि दुरभिसम्भवानि, न तेसु आरम्भणपरिग्रगाहयुत्तानं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).120.

**आरम्भणपुरेजात** त. नपुं., कर्म. स., पूर्व में उत्पन्न आलम्बन, आलम्बन की पूर्ववर्तिता, पूर्व में उत्पन्न आलम्बन-प्रत्यय — तं प्र. वि., ए. व. — "... सेकखा वा पुत्थज्जना वा चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनततो विपस्सन्तीति आगतता मनोद्वारे पि आरम्भणपुरेजातं लब्धतेव, प. प. अहु. 369; 2. नपुं., द्व. स., आलम्बन एवं पूर्ववर्तिता, स. प. के रूप में — बाहिरेसु पन रूपायतनं चक्खुं सम्फरस्सस्स आरम्भणपुरेजातअधिअविगतवसेन चतुधा पच्चयो होति, विभ. अहु. 169.

**आरम्भणप्पभेद** पु., तत्पु. स., आलम्बनों का भेद, आलम्बन का विभाजन — दं द्वि. वि., ए. व. — आरम्भणप्पभेदं पन अनुगन्त्वा, खु. पा. अहु. 198.

**आरम्भणभाव** पु., [आलम्बनभाव], चित्त-चैतसिकों का आलम्बन होना, आलम्बन होने की स्थिति — वं द्वि. वि., ए. व. — आरम्भणभावं उपगन्त्वा, ध. स. अहु. 89; 95; — वेन त्. वि., ए. व. — आसवानं आरम्भणभावेन पच्चयभूतं, स. नि. अहु. 2.239; — वाय च. वि., ए. व. — कायपटिबद्धो वण्णो पुरिसस्स चक्खुविज्जाणस्स आरम्भणभावाय उपकप्पति, थेरगा. अहु. 2.236.

**आरम्भणमूत** त्रि., आलम्बन हो चुका, वह, जो किसी के लिए आलम्बन बन गया है अथवा किसी के ज्ञान का विषय है — ता' पु., प्र. वि., ब. व. — सङ्घारा धेतिता पकप्पिता च आरम्भणभूता होन्ति, पेटको. 307; तस्मा सब्बेपि वित्तवेतसिकानं धम्मानं आरम्भणभूता धम्मा आरम्भणपच्चयो ति वेदितब्बा, प. प. अहु. 345; — ता' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — पञ्चापि आरम्भणभूता जेय्यं, नेत्ति. 163; आरम्भणभूता जेय्यन्ति जेय्यतो विसुं कत्वा पञ्जा वुत्ता, नेत्ति. अहु. 388; — ता' स्त्री., प्र. वि., ब. व. — ... विपस्सनाय आरम्भणभूता ज्ञानसमापतियो वुत्ता, पटि. म. अहु. 1.255; — ता' नपुं., प. वि., ए. व. — एवं सो तस्मा चतुत्थज्ज्ञानस्स आरम्भणभूता कसिणरूपा निब्बिज्ज ..., विसुद्धि. 1.317; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — यं किञ्चि आरम्भणभूतं अज्झात्तिकं वा बाहिरं वा, सब्बं तं सङ्गतेन असङ्गतेन च निदिसितब्बं, नेत्ति. 163; आरम्भणभूतन्ति यं किञ्चि जाणस्स विसयभूतं रूपादि, नेत्ति. अहु. 388 — त नपुं., आरम्भणभूत का भाव. [आलम्बनभूतत्त्व], आलम्बन होना, विषय रहना, स. प. के रूप में वत्था- च्छु आदि वत्थुओं का विषयीभाव होना — ता प. वि., ए. व. — वत्थारम्भणभूतत्ता सङ्गहनवसेन गहेतव्वतो थूलं ध. स. अहु. 368.

**आरम्भणभेद** पु., तत्पु. स. [आलम्बनभेद], 1. आलम्बनों (रूप आदि विषयों) का वर्गीकरण या भेद-प्रभेद — दो प्र. वि., ए. व. — तस्सा तेसु वुत्तनयेनेव आरम्भणभेदो वेदितब्बो, घ. स. अहु. 432; — देन त्. वि., ए. व. — ज्ञानं नाम यथा पटिपदाभेदेन एवं आरम्भणभेदेनापि चतुर्बिधं होति, ध. स. अहु. 229; 2. आलम्बनों की विविधता — देन त्. वि., ए. व. — आरम्भणभेदेन हि बहुका एता सतियो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).249; आरम्भणभेदेन सतिबहुत्ता बहुवचनं वेदितब्बं, तदे.; — दे सप्त. वि., ए. व. — आरम्भणभेदे, किच्चभेदे च बहुवचनं होति, सद्. 3.736; — भिन्न त्रि., तत्पु. स., आलम्बनों के भेद के कारण भिन्न — न्नं पु., द्वि. वि., ए. व. — छळारम्भणभेदभिन्नं विपस्सनाय विसयं, उदा. अहु. 73; — दाभाव पु., तत्पु. स., आलम्बनों अथवा रूप आदि विषयों में भेद का अभाव — तो प्र. वि., ए. व. — आरुप्पज्ञानेसु पन आरम्भणभेदाभावतो पुरिमकारणद्वयवसेनेव बहुवचनं वेदितब्बं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).194.

**आरम्भणमरियादा** स्त्री., तत्पु. स., आलम्बन की मर्यादा, रूप आदि विषयों की सीमा, आलम्बन-विषयिणी मर्यादा —

## आरम्भणमालिन

177

## आरम्भणविभावन

तत्थ द्वे मरियादा किलेसमरियादा च आरम्भणमरियादा च,  
म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.62.

**आरम्भणमालिन** त्रि., ध्यान के आलम्बनों की माला को धारण करने वाला - लिना पु., तृ. वि., ए. व. - योगिना योगवचरेन आरम्भणमालिना भवितव्वं, मि. प. 358.

**आरम्भणरस** पु., तत्पु. स. [आलम्बनरस], आलम्बन का मुख्य कार्य, आलम्बन का आधारभूत गुण, आलम्बन का रस - सं द्वि. वि., ए. व. - इस्सरवताय विस्सविताय सामिभावेन वेदनाव आरम्भणरसं अनुभवति, ध. स. अट्ठ. 155; - रस ष. वि., ए. व. - अवसेसधम्मानं आरम्भणरसस्स एकदेसानुभवनं, ध. स. अट्ठ. 156; - सानुभवनं नपुं., तत्पु. स., आलम्बन के कार्य अथवा रस का अनुभव - नं प्र. वि., ए. व. - मातरा कम्मे उपनीतकालो विय जवनस्स आरम्भणरसानुभवनं वेदितव्वं, ध. स. अट्ठ. 317; - सेकदेस पु., तत्पु. स., आलम्बनभूत पदार्थ या धर्म का एक भाग - सं द्वि. वि., ए. व. - सेसधम्मापि आरम्भणरसेकदेसमेव अनुभवन्ति, ध. स. अट्ठ. 156.

**आरम्भणवड्डन** नपुं., तत्पु. स. [आलम्बनवर्धन], आलम्बन की वृद्धि, आलम्बन का विस्तार - नं प्र. वि., ए. व. - उपचारे वा अप्पनाय वा पत्ताय आरम्भणवड्डनं, ध. स. अट्ठ. 239.

**आरम्भणवन** नपुं., तत्पु. स., आलम्बन रूपी वन, घने जंगल जैसे रूप आदि आलम्बन - नं प्र. वि., ए. व. - अरञ्जमहावनं विय हि आरम्भणवनं वेदितव्वं, स. नि. अट्ठ. 2.87; - ने सप्त. वि., ए. व. - तस्मिं वने विचरणमक्कटो विय आरम्भणवने उप्पज्जनकचित्तं, स. नि. अट्ठ. 2.87.

**आरम्भणववत्थान** नपुं., तत्पु. स. [आलम्बनव्यवस्थान], ध्यान के क्रम में आलम्बनों का निर्धारण, आलम्बन-विषयक निश्चय - नं प्र. वि., ए. व. - न च तानि धम्मारम्भणानि भवन्तीति वुत्तनयेनेव ... आरम्भणववत्थानं वेदितव्वं, ध. स. अट्ठ. 117; - तो प. वि., ए. व. - आरम्भणववत्थानतोति इमेहि चुदसहाकारेहि चित्तं परिदमेतव्वं, ध. स. अट्ठ. 231; - पञ्जा स्त्री., आलम्बनों का निर्धारण करने वाली प्रज्ञा - य तृ. वि., ए. व. - अपिच खो पन इमेसु सोळससु ठानेसु आरम्भणववत्थानपञ्जायाति अत्थो, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).125.

**आरम्भणववत्थापन** नपुं., उपरिवत् - नं प्र. वि., ए. व. - आरम्भणमतस्सेव ववत्थापनं आरम्भणववत्थापनं नाम,

विसुद्धि. 2.4; स. प. में - किरियमनोविज्जाणधातुया आरम्भणववत्थापनमतकमेव किच्चं, ध. स. अट्ठ. 309.

**आरम्भणवार** पु., आलम्बन की बारी, आलम्बन का संप्राप्त क्रम - रो प्र. वि., ए. व. - इति मूलवारो ... आरम्भणवारो, ... समुदयवारोति सब्बेपि दस वारा होन्ति, प. प. अट्ठ. 288.

**आरम्भणविजाननलक्खण** त्रि., ब. स., वह, जिसका लक्षण आलम्बनों का ज्ञान कराना है - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - यस्मा पन आरम्भणविजाननलक्खणं वित्तं ..., पटि. म. अट्ठ. 2.107.

**आरम्भणविभक्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनविभक्ति] ध्यान प्रक्रिया के सन्दर्भ में आलम्बनों का विभाजन या वर्गीकरण - यो' प्र. वि., ब. व. - अत्थि ... तेन भगवता ... आरम्भणविभक्तियो अक्खाता, मि. प. 302; - यो' द्वि. वि., ब. व. - अट्ठतिस आरम्भणविभक्तियो अ. नि. अट्ठ. 3.219; - निदेस पु., आलम्बनों के विभाजनों का विवेचनात्मक व्याख्यान, स. उ. प., में परिचिण्णा- त्रि., आलम्बनों के विभाजनों के विवेचनपरक व्याख्यान में अभ्यस्त - सा पु., प्र. वि., ब. व. - भिक्खू उच्चारदेसनापटिवेधा परिचिण्णारम्भणविभक्तिनिदेसा सिक्खागुणपारमिप्पता, मि. प. 313.

**आरम्भणविभाग** पु., तत्पु. स. [आलम्बनविभाग], क. आलम्बनों का वर्गीकरण, आलम्बनों का पार्थक्यीकरण - गो प्र. वि., ए. व. - तेसं आरम्भणविभागो जानितव्वो तत्थ विपस्सनाज्जाणं परित्तमहग्गततीतानागतपच्चुप्पन्न- अज्झत्तबहिद्वावसेन सत्तविधारम्मणं, दी. नि. अट्ठ. 1.183; - गो सप्त. वि., ए. व. - आरम्भणविभागो पन विज्जाणज्जायतनं ..., ध. स. अट्ठ. 439; ख. आलम्बनों के भेद - गेसु सप्त. वि., ब. व. - आरम्भणविभागोसु पवत्तति कथं पन, अभि. अव. 1143.

**आरम्भणविभागनिदेस** पु., अभि. अव. के छट्टे परिच्छेद का शीर्षक, जिसमें रूप आदि छ आलम्बनों के प्रभेदों का विवेचन किया गया है, अभि. अव. 50-57; गा. 291-375.

**आरम्भणविभावन** नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों का स्पष्टीकरण आलम्बनों का स्पष्ट रूप से प्रकाशन - ठान नपुं., आलम्बनों के सुस्पष्ट प्रकाशन का स्थल - ने सप्त. वि., ए. व. - आरम्भणविभावनड्डाने चित्तं पुब्बङ्गमं पुरेचारिकं होति, ध. स. अट्ठ. 158.

## आरम्भणविमुक्ति

178

## आरम्भणसमतिक्रम

आरम्भणविमुक्ति स्त्री., तत्पु. स., रूप आदि आलम्बनों के प्रति राग से छुटकारा — तीसु सप्त. वि., ब. व. — आरम्भणविमुत्तीसु, सभावदस्सनो मुनि. अप. 1.352.

आरम्भणवियोग पु., तत्पु. स., आलम्बनों से बिलगाव — स्स ष. वि., ए. व. — आरम्भणवियोगस्स चैव दुक्खवियोगस्स च अप्पदानतो योगातिपि तेसञ्जेव अधिवचनं, विसुद्धि. 2.322.

आरम्भणविसमागता स्त्री., आलम्बन की भिन्नता — य तू. वि., ए. व. — ... कस्मा ? आरम्भणविसमागताय, विसुद्धि. 1.307. आरम्भणवीथि स्त्री., आलम्बनों को ग्रहण करने अथवा उनका ज्ञान करने की प्रक्रिया वाला मार्ग, स. उ. प. के रूप में, पञ्चा.- चक्षु आदि पांच इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य रूप आदि पांच आलम्बनों के ग्रहण की प्रक्रिया — या ष. वि., ए. व. — इदमज्झते पञ्चारम्भणवीथिया सन्तीरणं हुत्वा ..., अभि. अव. 11.

आरम्भणसङ्गन्ति स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनसंक्रान्ति], ध्यान के क्रम में किसी एक आलम्बन को छोड़कर दूसरे आलम्बन का ग्रहण, विभिन्न आलम्बनों का एक ही ध्यान में संक्रमण, पठवीकसिण, आपोकसिण आदि सभी कसिणों का एक ही ध्यान में आलम्बन के रूप में ग्रहण — न्ति प्र. वि., ए. व. — ... सुखुमं पन चित्तन्तरं खन्धन्तरं ... अङ्गसङ्गन्ति आरम्भणसङ्गन्ति एकतोवज्जनं उभतोवज्जनन्ति आभिधम्मिकधम्मकथिकस्सेव पाकटं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).153; पठवीकसिणे पठमं ज्ञानं समापज्जित्वा तदेव आपोकसिणेति एवं सब्बकसिणेषु एकस्सेव ज्ञानस्स समापज्जनं आरम्भणसङ्गन्ति, म. नि. टी. (मू.प.) 1(2). 179; तस्स तस्सेव हि ज्ञानस्स आरम्भणन्तरे पवति आरम्भणसङ्गन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.4.

आरम्भणसङ्गन्तिक त्रि., सभी कसिणों (कृत्तरों) अथवा आलम्बनों पर किसी एक ही ध्यान की प्राप्ति से सम्यन्धित — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — "सब्बकसिणेषु एकस्सेव ज्ञानस्स समापज्जनं आरम्भणसङ्गन्तिकं नामाति, विसुद्धि. महाटी. 2.4; — तो प. वि., ए. व. — तस्मा इद्धिविधं ताव सम्पादेतुकामो ... अङ्गसङ्गन्तिकतो आरम्भणसङ्गन्तिकतो ... इमेहि चुदसहि आकारेहि चित्त परिदमेत्वा ..., पटि. म. अट्ठ. 1.277.

आरम्भणसङ्गात त्रि., आलम्बन के रूप में विख्यात, तथाकथित आलम्बन — तानं स्त्री., ष. वि., ब. व. — एतेसञ्च पथवी

कसिणादिवसेन नवन्नं आरम्भणसङ्गातानं रूपसञ्ज्ञानं, सब्बाकारेन अनवसेसानं वा विरागा च निरोधा च ..., विसुद्धि. 1.318.

आरम्भणसञ्ज्ञानन नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों का समुचित रूप में ज्ञान — नं प्र. वि., ए. व. — आरम्भणसञ्ज्ञाननञ्चेव विपस्सनाय च विसयभावं उपगन्त्वा निब्बिदाजननं, ध. स. अट्ठ. 252; — मत्त नपुं., केवल आलम्बन का ज्ञान — तं द्वि. वि., ए. व. — सञ्ज्ञा "नीलं पीतकं"न्ति आरम्भणसञ्ज्ञाननमत्तमेव होति, विसुद्धि. 2.63.

आरम्भणसन्तता स्त्री., ध्यान के आलम्बन का शान्त भाव, आलम्बन की परम सूक्ष्मता — य तू. वि., ए. व. — अपि च खो आरम्भणसन्ततायपि सन्तो वूपसन्तो निब्बुतो ..., स. नि. अट्ठ. 3.300; अङ्गसन्तताय आरम्भणसन्तताय सब्बकिलेसदस्थसन्तताय च सन्तो, दी. नि. अट्ठ. 3.225.

आरम्भणसमागता स्त्री., आलम्बन की समरूपता, आलम्बन की समानता — य तू. वि., ए. व. — मेत्तादीसु उप्पन्नततियज्ज्ञानस्सेव पन उप्पज्जति, आरम्भणसमागतायाति, विसुद्धि. 1.307; कम्मसमागताय वा आरम्भणसमागताय वा तस्सेव कम्मस्स विपाकावसेसोति, पारा. अट्ठ. 2.88; आरम्भणसमागतायाति आरम्भणस्स सभावभावेन सदिसभावेन, सारत्थ. टी. 2.261.

आरम्भणसभाव पु., आलम्बनों की यथार्थ प्रकृति, आलम्बनों का वास्तविक स्वभाव — मोहो चित्तस्स अन्धाभावलक्खणो ... आरम्भणसभावच्छादनरसो वा, ... सब्बाकुसुतानं मूलन्ति दड्ढब्बो, विसुद्धि. 2.96.

आरम्भणसमतिक्रम पु., आलम्बनों का उत्तलंघन, आलम्बनों पर विजय, चार प्रकार के अरूप ध्यानों में आका 1 की अनन्तता आदि आलम्बनों का अतिक्रमण — मो प्र. वि., ए. व. — समतिक्रमोति द्वे समतिक्रमा अङ्गसमतिक्रमो च आरम्भणसमतिक्रमो च, विसुद्धि. 1.108; — मं द्वि. वि., ए. व. — आरम्भणसमतिक्रमं अवत्वा ... सञ्ज्ञानयेव समतिक्रमो वुत्तो, ध. स. अट्ठ. 245; — मेन तू. वि., ए. व. — आरम्भणसमतिक्रमेन पत्तब्बा एता समापत्तियो, ध. स. अट्ठ. 246; — स्स ष. वि., ए. व. — कसिणादिआरम्भणसमतिक्रमस्स पाकटत्ता तं अवत्वा सुत्तन्तेसु वुत्तरूपसञ्ज्ञादिसमतिक्रमो वुत्तो, पटि. म. अट्ठ. 2.139-140; — भूत त्रि., आलम्बनों का अतिक्रमण कर चुका — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — ... अङ्गेषु समतिक्रममितब्बाभावेन आरम्भणसमतिक्रमभूतं

## आरम्भणसमतिक्कमन

179

## आरम्भणाधिपति

आकासानञ्चायतनं सन्ततो मनसि करित्वा ..., मो. वि. टी. 189.

**आरम्भणसमतिक्कमन** नपुं., तत्पु. स. [आलम्बनसमतिक्रमण], उपरिवत् - मत्त नपुं., आलम्बनों का उत्त्लपन-मात्र, केवल आलम्बनों का अग्रहण - तं प्र. वि., ए. व. - ज्ञानस्स आरम्भणसमतिक्कमनमत्तं तत्थ होति, विसुद्धि. 1.230.

**आरम्भणसम्पटिच्छन** नपुं., आलम्बनों का ग्रहण - मत्तक नपुं., आलम्बनों का ग्रहण मात्र - कं प्र. वि., ए. व. - विपाकमनोधातुया आरम्भणसम्पटिच्छनमत्तकमेव, ध. स. अड्ड. 309; - समत्थ त्रि., आलम्बनों के ग्रहण में समर्थ या सक्षम - त्था स्त्री., प्र. वि., ए. व. - दूरेपि आरम्भणसम्पटिच्छनसमत्था दिब्बा पसादसोतधातु होति, पटि. म. अड्ड. 1.283.

**आरम्भणसारग्गाह** पु., तत्पु. स. [आलम्बनसारग्राह], आलम्बनों के सारतत्त्व का ग्रहण - हो प्र. वि., ए. व. - आरम्भणसारग्गाहो, ... एतं जिनपुत्तानं करणीयं, मि. प. 173.

**आरम्भणाकार** पु., तत्पु. स. [आलम्बनाकार], रूप आदि आलम्बनों का आकार अथवा स्वरूप - रं द्वि. वि., ए. व. - नीलादिवसेन आरम्भणाकारं गहेत्वा, विसुद्धि. 2.64.

**आरम्भणातिक्कम** पु., तत्पु. स., आलम्बनों का अतिक्रमण या त्याग, आलम्बनों पर विजय, कम्मद्वानों या रूपध्यान के आलम्बनों को पारकर जाना - तो प. वि., ए. व. - आरम्भणातिक्कमतो चतस्सोपि भवन्तिमा, ध. स. अड्ड. 253; - भावना स्त्री., आलम्बनों के अतिक्रमण से प्राप्त ध्यानभावना, आलम्बनों पर विजय से सहगत ध्यानभावना, स. प. के रूप में, - विसुद्धिभावनानुक्कमवसेन हि लोकुत्तरं अप्पनं पाप्पणाति आरम्भणातिक्कमभावनावसेन आरुणं, विसुद्धि. 1.230.

**आरम्भणाधिगहितुप्पन्न** त्रि., तत्पु. स., चार प्रकार के उत्पन्नों में से एक, आलम्बनों के अधिगृहीत हो जाने के कारण इसके उत्तरकाल में उत्पन्न - न्नं नपुं., प्र. वि., ए. व. - पुब्बभागे अनुप्पज्जमानमि किलेसजातं आरम्भणस्स अधिगगहितत्ता एवं अपरभागे एकन्तेन उत्पत्तितो आरम्भणाधिगहितुप्पन्नन्ति बुच्चति, विसुद्धि. 2.328; एवं आरम्भणाधिगहितुप्पन्नम्पीति तिविधरस्सापि भूमिलद्धेन एकसङ्गहता वृत्ता, विसुद्धि. महाटी. 2.473.

**आरम्भणाधिपति** पु. कर्म. स. [आलम्बनाधिपति], चौबीस प्रकार के प्रत्ययों (पच्चयों) में से तृतीय के रूप में

उपदिष्ट अधिपति-पच्चय के दो प्रभेदों में से एक, अधिपति (अधिक प्रबल प्रत्यय) भूत आलम्बन-प्रत्यय, चित्त एवं चैतसिकों का वह कुशल आलम्बन अथवा विषय जो अन्य आलम्बनों की अपेक्षा अधिक दृढ़ता के साथ चित्त को अपनी ओर खींचता है, जिस कुशल आलम्बन को अधिक गुरु (महत्त्वपूर्ण) बना कर चित्त-चैतसिक अनुचिन्तन करें, वह आलम्बन उन चित्त-चैतसिकों के उदय में आरम्भणाधिपति-प्रत्यय बन जाता है - ति प्र. वि., ए. व. - आरम्भणाधिपति - दानं दत्त्वा सीतं समादियित्वा उपोराथकम्मं कत्वा, तं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, पुब्बे सुविण्णानि गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, ज्ञाना बुद्धहित्वा ज्ञानं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, सेक्खा ..., वोदान ..., सेक्खा मग्गा बुद्धहित्वा मग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खन्ति, पड्डा. 1.157 59; 350-351; 417-419; 469; 511-512; यं पन धम्मं गरुं कत्वा अरुपधम्मा पवतन्ति, सो नेसं आरम्भणाधिपति, विसुद्धि. 2.163; एत्थ च सत्तधा सहजाताधिपति, सत्तधा आरम्भणाधिपति वेदितब्बो, विसुद्धि. महाटी. 2.255; - तिं द्वि. वि., ए. व. - अधिपतिं करित्वाति आरम्भणाधिपतिं कत्वा, ध. स. अड्ड. 387; - ना तु. वि., ए. व. - आरम्भणाधिपतिना सद्धिं नानत्तं अकत्वाव विमत्तो, विसुद्धि. 2.165; - वसेन अ. क्रि. वि. किसी एक कुशल आलम्बन को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाकर - अत्तना पटिविद्धमग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खणकाले आरम्भणाधिपतिवसेन मग्गाधिपतिनो ..., ध. स. अड्ड. 432; स. उ. प. के रूप में, **किरिया-** पु., आरम्भणाधिपतिपच्चय का एक प्रभेद - कामावचरादिभेदतो पन तिविधापि किरियारम्भणाधिपति लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्भणाधिपतिपच्चयो होति, प. प. अड्ड. 361; **कुसला-** पु., कामावचर, रूपावचर एवं अरूपावचर भूमियों के कुशलचित्तों का आरम्भणाधिपति, प्रत्यय (पच्चय) - **म्हि** सप्त. वि., ए. व. - रूपावचरारूपावचरेपि कुसलारम्भणाधिपतिम्हि एस्सेव नयो, प. प. अड्ड. 360; **विपाका-** पु., विपाक चित्तों का आरम्भणाधिपति प्रत्यय (पच्चय) - लोकुत्तरं पन विपाकारम्भणाधिपति कामावचरतो आणसम्पयुत्तकुसलकिरियानञ्जेव आरम्भणाधिपतिपच्चयो होति, प. प. अड्ड. 361-62; स. पू. प. के रूप में - **णूपनिस्सय** पु., द्व. स., आरम्भणाधिपति एवं आरम्भणूपनिस्सय पच्चय, अधिपति-प्रत्यय तथा उपनिस्सय-प्रत्यय के रूप में रूप आदि आलम्बन - येहि तृ. वि., ए.

## आरम्भणानन्तर

180

## आरम्भणूपनिज्ज्ञान

व. - गरुक्त्वा अस्सादनकाले आरम्भणाधिपतिआरम्भणूप-  
निस्सयेहि, विसुद्धि. 2.170; - णूपनिस्सयपच्चय पु.,  
उपरिवत् - येहि तू. वि., ब. व. - आरम्भणाधिपति  
आरम्भणूपनिस्सयपच्चयेहि रूपस्स पच्चयभावो दरिस्तो,  
घ. स. अट्ठ. 344; - पच्चय पु., अधिपति-प्रत्यय के दो  
प्रभेदों में से एक, अधिपतिभूत आलम्बन, चित्त एवं चैतसिकों  
का वह (कुशल) आलम्बन अथवा ग्राह्य विषय जो अन्य  
आलम्बनों की अपेक्षा अधिक गुरु अथवा महत्त्वपूर्ण बन  
गया हो - येन तू. वि., ए. व. - अधिपतिपच्चयेनाति  
आरम्भणाधिपतिपच्चयेन, विसुद्धि. महाटी. 2.255; -  
पच्चयता स्त्री., भाव., आरम्भणाधिपति - नामक प्रत्यय  
होने की स्थिति - य तू. वि., ए. व. - निब्बानं  
आरम्भणाधिपतिपच्चयताय अत्तनि अनवज्जधम्मं नामेति,  
घ. स. अट्ठ. 414.

आरम्भणानन्तर पु., द्व. स., आरम्भण-प्रत्यय एवं अनन्तर-  
प्रत्यय - रेहि तू. वि., ब. व. - आरम्भणानन्तरोहि  
असम्मिस्सोति अत्थो, विसुद्धि. 2.165.

आरम्भणानुभवन नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों अथवा विषय का  
अनुभव, स. प. के रूप में, अनिट्ठ.- नपुं., अप्रिय आलम्बन  
का अनुभव - लक्षण त्रि., वह, जिसका लक्षण अप्रिय  
आलम्बन का अनुभव करना हो - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. -  
अनिट्ठारम्भणानुभवनलक्षणं दोमनस्स, विसुद्धि. 2.88.

आरम्भणानुमज्जन नपुं., तत्पु. स., आलम्बन का बारम्बार  
अनुचिन्तन - लक्षण त्रि., वह, जिसका लक्षण आलम्बन  
का पुनः पुनः अनुचिन्तन हो - णो पु., प्र. वि., ए. व. -  
विचरणं विचारो, ... स्वायं आरम्भणानुमज्जनलक्षणो,  
विसुद्धि. 1.137.

आरम्भणान्वय पु., तत्पु. स., आलम्बन का अनुगमन -  
येन तू. वि., ए. व. - आरम्भणान्वयेन, उभो एकवचनना,  
विसुद्धि. 2.276.

आरम्भणाभिमुख त्रि., ब. स., आलम्बन की ओर उन्मुख,  
आलम्बन के ग्रहण में प्रवृत्त - खा पु., प्र. वि., ब. व. -  
चत्तारो खन्धा नामं, ते हि आरम्भणाभिमुखा नमन्ति, घ. स.  
अट्ठ. 414; - खं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - आरम्भणाभिमुखं  
सति ठपयित्वा, उदा. अट्ठ. 152; - खं क्रि. वि. -  
आरम्भणाभिमुखं नमनतो चित्तस्स च नतिहेतुतो सब्बमि  
अरुपं नामन्ति वुच्चति, खु. पा. अट्ठ. 61; - नमन नपुं.,  
आलम्बन की ओर झुकाव, रूप आदि विषयों की ओर  
प्रवृत्ति - नं प्र. वि., ए. व. - आरम्भणाभिमुखनमनं

आरम्भणेन विना अप्यवति, तेन नमनहेन नामकरणहेन,  
विसुद्धि. महाटी. 2.329; - तो प. वि., ए. व. -  
आरम्भणाभिमुखं नमनतो नमनहेन नामं, विसुद्धि. 2.220;  
- प्यवत्तसति त्रि., आलम्बन की ओर अभिमुख होकर  
प्रवृत्त स्मृति से युक्त, जागरुक स्मृति से युक्त - नं पु.,  
ष. वि., ब. व. - निच्चं आरम्भणाभिमुखप्यवत्तसतीनमेतं  
अधिवचनं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).198; - भाव पु.,  
आलम्बन की ओर अभिमुख या जागरुक होना - वेन तू.  
वि., ए. व. - सतिपि मे आरम्भणाभिमुखभावेन उपड्विता  
अहोसि, अ. नि. अट्ठ. 3.205.

आरम्भणाभिमुखीभाव पु., आलम्बन की ओर प्रवृत्ति, आलम्बन  
के प्रति जागरुकता - वेन तू. वि., ए. व. - सतिपि मे  
आरम्भणाभिमुखीभावेन उपड्विता अहोसि, म. नि. अट्ठ.  
(मू.प.) 1(1).131.

आरम्भणिक त्रि., आरम्भण + इक के योग से व्यु., केवल  
स. उ. प. में ही प्रयुक्त [आलम्बनिक], आलम्बन से  
सम्बद्ध, रूप आदि छ आलम्बनों के साथ जुड़ा हुआ,  
छळा.- त्रि., छ आलम्बनों से सम्बद्ध - का पु., प्र. वि.,  
ब. व. - इधेकचत्तालीसेव, छळारम्भणिका मता, अभि.  
अव. 364; तदा.- त्रि., उसे अपना आलम्बन बनाने वाला  
- तदारम्भणकं भवे. तदे. 444.

आरम्भणिय त्रि., आ + रम का सं. कृ. [आरम्भीय]. आनन्द  
लेने योग्य, आमोद-प्रमोद से भरपूर - यं नपुं., प्र. वि., ए. व.  
- उद्धच्चकुक्कुच्चस्स रजनीयं आरम्भणियं अस्सादियाकिन्दियं  
ताव अपरिपुणञ्च जाणं पच्चयो, पेटको. 273.

आरम्भणूपनिज्ज्ञान नपुं., तत्पु. स., आलम्बन के विषय में  
अनुचिन्तन, आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता, आलम्बन पर  
ध्यान लगाना - नं प्र. वि., ए. व. - आरम्भणूपनिज्ज्ञानं,  
लक्षणूपनिज्ज्ञानन्ति दुविधं होति, पारा. अट्ठ. 1.107; -  
नं द्वि. वि., ए. व. - ज्ञायस्सु आरम्भणूपनिज्ज्ञानं अनुयुज्ज,  
थेरगा. अट्ठ. 2.88; - नेन तू. वि., ए. व. -  
आरम्भणूपनिज्ज्ञानेन अट्ठितिसारम्भणानि, म. नि. अट्ठ. (मू.प.)  
1(1).203; - तो प. वि., ए. व. - आरम्भणूपनिज्ज्ञानतो  
पच्चनीकज्ज्ञापनतो वा ज्ञानन्ति वेदितब्बं, घ. स. अट्ठ.  
211; - ने सप्त. वि., ए. व. - आरम्भणूपनिज्ज्ञाने  
लक्षणूपनिज्ज्ञाने च रतो, थेरगा. अट्ठ. 1.58; - सङ्घात  
त्रि., आरम्भणूपनिज्ज्ञान नाम से प्रसिद्ध, स. प. में, -  
लक्षणूपनिज्ज्ञानआरम्भणूपनिज्ज्ञानसङ्घातोहि ज्ञानेहि ज्ञायति,  
जा. अट्ठ. 5.240.

## आरम्भणूपनिज्ज्ञायन

181

आराधन

आरम्भणूपनिज्ज्ञायन नपुं. तत्पु. स. आलम्बन पर ध्यान, आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता, स. उ. प. में, — कसिणादिआरम्भणूपनिज्ज्ञायनतो, पारा. अड्ड. 1.107.

आरम्भणूपनिस्सय पु., उपनिस्सय-पच्चय के तीन प्रभेदों में से वह प्रभेद जिसमें आलम्बन (कुशल धर्मों आदि के) सुदृढ़ आधार के रूप में उपनिस्सय-पच्चय बन जाते हैं — यो प्र. वि., ए. व. — सो आरम्भणूपनिस्सयो अनन्तरूपनिस्सयो पकतूपनिस्सयोति तिविधो होति, विसुद्धि. 2.165; ... गरुक्कतब्बमत्तडेन आरम्भणाधिपति बलवकारणडेन आरम्भणूपनिस्सयोति एवमेतेसं नानन्तं वेदितव्यं, तदे., सवितक्कसविचारो धम्मो सवितक्कसविचारस्स धम्मस्स उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो — आरम्भणूपनिस्सयो ..., पट्टा. 2.80; 81-86; 138-143; 189-191; 248-250; 298-300; 335; — लक्खण नपुं. सुदृढ़ आधार वाले आलम्बन रहने का लक्षण — णेन तू. वि., ए. व. — आरम्भणूपनिस्सयलक्खणेन उपनिस्सयपच्चये सङ्गहं गच्छति, प. प. अड्ड. 459.

आरम्भणोक्कन्तिक त्रि., आलम्बनों का परिहार करने वाला, आलम्बनों को लांघ जाने वाला — कं नपुं. प्र. वि., ए. व. — सुखुमं ... ज्ञानोक्कन्तिकं आरम्भणोक्कन्तिकं, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).153.

आरा' स्त्री., [आरा], सुई, सूजा, टेकुआ — आरा तु सूचिविज्ज्ञानं, अभि. प. 528; ण-कारा, हारा, तारा, आरा, मौ. व्या. 5.49; चम्मकारानं चम्मकेधनेप्यारा, अभि. प. सूची 41.

आरा' अ., निपा. [आरात्], दूर का, (से) दूर, दूरवर्ती — आरा दूरा च आरका, अभि. प. 1.157; आरादूरेति अज्जमज्जवेवचनं अतिदूरेति वा दस्सेन्ती एव माह, जा. अड्ड. 4.32; क. द्वि. वि. में अन्त होने वाले शब्द के साथ — एवं आचिनतो दुक्खं आरा निब्बानमुच्चति, स. नि. 2(2).79; आरा सिह्णामि वारिजं, स. नि. 1(1).237; आराति दूरे नाळे गहेत्वा ... वदति, स. नि. अड्ड. 1.262; ख. प. वि. में अन्त होने वाले शब्द के पूर्व-सर्ग के रूप में — आसवा तस्स वड्ढन्ति आरा सो आसवक्खया, ध. प. 253; सहनन्दी अमच्चोहि, आरा संयोजनक्खया, इतिवु. 53; ऊहते चित्ते आरा चित्तं समाधिम्हाति, म. नि. 1.165; आराति दूरे, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).396.

आराचारी त्रि., सदाचारी, पापकर्मों से दूर रहने वाला, शुद्ध आचार से सम्पन्न — री पु., प्र. वि., ए. व. — ब्रह्मचरियं ... आराचारी विरतो मेथुना गामधम्माति, दी. नि. 1.4; —

रिं पु., द्वि. वि., ए. व. — अज्जतग्गे मं आयस्मन्तो ब्रह्मचारिं धारेथ आराचारिं, अ. नि. 2(1).200; — रिनो' पु., प्र. वि., ब. व. — ब्रह्मचारिनो धारेतु आराचारिनो विरता मेथुना गामधम्मा, अ. नि. 2(1).201; — रिनो' पु., द्वि. वि., ब. व. — ब्रह्मचारिनो धारेतु आराचारिनो, अ. नि. 2(1).201. आरादेस पु., तत्पु. स., केवल व्याकरण में प्रयुक्त, व्याकरण-विषयक शब्द, 'आरा' का आदेश — तो प. वि., ए. व. — ततो आरादेसतो सब्बेसं योनं ओकारादेसो होति सत्थारो ..., क. व्या. 205, 209.

आराध क. पु., [आराध], आराधना, सम्मान — घो प्र. वि., ए. व. — आराधो मे रज्जो, एवं आराधो मे राजानं, क. व्या. 279; ख. त्रि., सम्मान व्यक्त करने वाला, आराधना करने वाला — आराधो हं रज्जो एवं आराधो हं राजानं, सद्. 3.696; — पेक्ख त्रि., आराधना अथवा सम्मान करने की अपेक्षा रखने वाला, सम्मान देने का इच्छुक — क्खो पु., प्र. वि., ए. व. — आराधापेक्खो मज्जुना सरेन गायि, महाव. 467. आराधक त्रि., आ + राध से व्यु. [आराधक], श. अ., सफल, उत्साही, उत्सुक, सम्पादक, पूर्ण कर देने वाला, अच्छी तरह से प्राप्त, ला. अ., प्रसन्न कर देने वाला, श्रद्धा-युक्त, सम्मानभाव देने वाला, सन्तोषप्रद, सेवा-आराधना करने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — अज्जतिथियपुब्बो आराधको होति, महाव. 88; कुद्धो आराधको होति, कुद्धो होति गरहियो, परि. 404; अभिन्नस्स वा परबलस्स भेदेता भिन्नस्स वा सकबलस्स आराधको, जा. अड्ड. 5.113; — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — अरहन्तो ... आराधकं पुग्गलं अरियमग्गेन पुनन्ति, जा. अड्ड. 4.70; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — राजा नाम यस्स कस्सचि आराधकस्स पसीदित्वा वरितं वरं दत्त्वा कामेन तप्पयति ..., मि. प. 213; — का' पु., प्र. वि., ब. व. — भिक्खू आराधका अभविस्संसु, म. नि. 2.170; — का' स्त्री., प्र. वि., ब. व. — भिक्खुनियो च आराधिका, एवमिदं ब्रह्मचरियं परिपूरं तेनहेन, म. नि. 2.170.

आराधन / आराधना नपुं. / स्त्री., आ + राध से व्यु., क्रि. ना. [आराधना], क. कार्य का सम्पादन, कार्य की पूर्णता, सफलता, उपलब्धि, ख. अनुकूल वस्तु या व्यक्ति की उपलब्धि या प्राप्ति, सन्तोष — आराधनं साधने च पतियं परितोसने, अभि. प. 887; — ना प्र. वि., ए. व. — कथं आराधना होति, कथं होति विराधना, दी. नि. 2.212; आराधनाति सम्पादना, दी. नि. अड्ड. 2.298; मिच्छतं



## आराधनीय

182

## आराधेति

आगम्य विराधना होति, नो आराधना, अ. नि. 3(2).180; - नं' नपुं., प्र. वि., ए. व. - अञ्जथा आराधनं नाम नत्थीति दस्सेति, अ. नि. अहु. 3.300; - नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - उग्गज्जनं आराधनं सुत्वा, अप. अहु. 2.41; - नाय नपुं., च. वि., ए. व. - ब्राह्मणा, भो गोतम, पञ्च धम्मे पञ्जयेन्ति पुञ्जस्स किरियाय, कुसलस्स आराधनायाति, म. नि. 2.423; - नेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - महाजनकरज्जो देविया आराधनेन, अप. अहु. 1.208; - ने नपुं., सप्त. वि., ए. व. - एज्जो आराधने अम्हाकं भारो, जा. अहु. 4.385; ग. सेवा, सम्मान, पूजा, वन्दना, विनती - नं' नपुं., प्र. वि., ए. व. - उद्दिस्साराधनं सम्मा लङ्घिद्वेन कतं तदा, चू. वं. 57.36; - नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - इति आराधनं कत्वा दूतं पाहेसि सब्बधि, चू. वं. 89.56; - नत्थ पु., प्रसन्न करने के निमित्त - त्थं द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. - सो तस्सा आराधनत्थं निसीदित्वा पादे सम्भाहि, जा. अहु. 6.46; - त्थाय च. वि., ए. व. - महाब्रह्मणो आराधनत्थाय ..., जा. अहु. 5.197.

**आराधनीय** त्रि., आ + राध का सं. कृ. [आराधनीय], पूर्ण करने योग्य, सम्पादित करने योग्य, प्राप्त करने योग्य - यो पु., प्र. वि., ए. व. - आराधनीयो ... धम्मो आरद्धवीरियेनाति, पारा. 137; आराधनीयोति सक्का आराधेतुं सम्पादेतुं निब्बतेतुन्ति अत्थो, पारा. अहु. 2.85; - यं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - कायेन वाचा मनसा आराधनीयमेसति, चरिया. 375; सब्बथापि कायवचीमनोक्कमेहि यथा सो आराधितो होति, एवं आराधनीयं आराधनमेव एसति, चरिया. अहु. 53.

**आराधिक** त्रि., कार्य को पूर्ण कर देने वाला, सम्पादक, प्रसन्न कर देने वाला, आराधना या सम्मान करने वाला - को पु., प्र. वि., ए. व. - सद्धा वे नन्दिका आराधिको, नो तस्स सद्धोति, पेटको. 217.

**आराधित** त्रि., आ + राध का भू. क. कृ. [आराधित], क. पूरा किया जा चुका, निष्पादित, पूर्णता को प्राप्त कर दिया गया, प्राप्त कर लिया गया, अनुमोदित - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - तेनायस्मता जातिया सत्तवस्सेनेव अज्जा आराधिता, खु. पा. अहु. 59; तथा अज्जा आराधिताति, उदा. अहु. 143; आराधितो मे सम्बुद्धो, पब्बजिं अनगारियं, अप. 1.328; आराधितोहि सुगतं, गोतमं सकयपुद्गवं, अप. 1.386; ख. आह्लादित, प्रसन्न कर लिया गया, सन्तुष्ट - चित्त त्रि., ब. स., प्रसन्न अथवा सन्तुष्ट चित्त वाला - तो

पु., प्र. वि., ए. व. - अरहत्तप्पत्तिया आराधितचित्तो, बुदा. अहु. 149; सत्था तस्स पञ्चव्याकरणेन आराधितचित्तो, थेरगा. अहु. 2.118; - तेन पु., तृ. वि., ए. व. - परा थेरस्स अरियवंसपटिपत्तिया आराधितचित्तेन भगवता भासिता, थेरगा. अहु. 2.287; - रस्स पु., ष. वि., ए. व. - वत्तपटिपत्तिया आराधितचित्तस्स तस्स सन्तिके, पारा. अहु. 2.20; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - पयिरूपासनाय आराधितचित्ता किञ्चि वत्तुकामा होन्ति, स. नि. अहु. 1.290; ग. पूजित, सत्कृत, सम्मानित, वन्दित - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आराधितो मे सम्बुद्धो, पब्बजिं अनगारियं, अप. 1.328; - ता ब. व. - यमरियधम्मने पुनन्ति बुद्धा, आराधिता समचरियाय सन्तो, जा. अहु. 4.69; - साधुमन्ती त्रि., सज्जन मन्त्रियों द्वारा अनुमोदित - न्ति पु., द्वि. वि., ए. व. - कुमारआराधितसाधुमन्तिं महादयं पण्डुनरिन्दवंसजं, दाठा. 1.7; - ताधिकार त्रि., ब. स., अपने कर्तव्य का पूर्णरूप से पालन कर चुका व्यक्ति - रो पु., प्र. वि., ए. व. - सुमेधो बोधिसत्तो मग्गसोधनादीहि आराधिताधिकारो, म. चं. टी. 42.

**आराधेति / आराधयति** आ + राध का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आराधयति, बौ. सं. आरागयति], 1. निष्पादित करता है, सफल परिणति तक पहुंचा देता है. (अज्जा, अत्थ, अर्थ, हित) धम्म (धर्म), मग्ग (मार्ग), शील (शील) तथा शील सम्पदा (शील सम्पत्त) को प्रचुरता के साथ प्राप्त करता है, 2. अमत (अमृत), अरहत्त (अर्हत्त्व). निब्बान (निर्वाण) दक्खिना (दक्षिणा), दान तथा धन को उपलब्ध करता है, 3. आचरिय (आचार्य), गुरु (गुरु), तापस, धीतर (पुत्री), राजा एवं सत्था (बुद्ध) की कृपा अथवा अनुग्रह का लाभ पाता है, 4. चित्त को आह्लादित कर देता है, मन को प्रसन्न कर देता है, 5. सम्मान करता है, पूजा-आराधना करता है - ... यथा नरो आराधयति राजानं, पूजं लभति भत्तुसूति, जा. अहु. 7.194; चोदको भिक्खु अनुयोगेन विज्जूनं सब्बहचारीनं चित्तं न आराधेति, महाव. 243; नो च खो पञ्चस्स वेय्याकरणेन चित्तं आराधेति, दी. नि. 1.158; चित्तं आराधेतीति पञ्चाविससज्जनेन महाजनस्स चित्तं परितोसेतियेव, दी. नि. अहु. 1.268; - मि उ. पु., ए. व. - तेसाहं चित्तं आराधेमि पञ्चस्स वेय्याकरणेन, म. नि. 2.212; ... आराधेमीति ... गण्हामि सम्पादेमि परिपूरेमि, म. नि. अहु. (म.प.) 2.172; आराधेमि सकं चित्तं विवज्जेमि अनेसं, अप. 1.64; आराधेमीति आदितो पड्डाय राधेमि वसे

## आराधेति

183

आराम

क्तेमीति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 1.66; - न्ति / धयन्ति प्र. पु., ब. व. - नो च खो पटिपन्ना आराधेन्तीति, दी. नि. 1.158; पूरेतुं सक्कोन्ति, सत्त्वाकारेण पन पूरेन्ति, पटिपत्तिपूरणेन तस्स भोतो गोतमस्स चित्तं आराधेन्तीति वत्त्वा, दी. नि. अहु. 1.268; आराधयन्ति सद्धम्मं, योगक्षेमं अनुत्तर, इतिवु. 79; आराधयन्तीति साधेन्ति सम्पादेन्ति, इतिवु. अहु. 296; - धेन्त / धयन्त त्रि., वर्त. कृ. - न्तो पु., प्र. वि., ए. व. - अरहत्तं आराधेन्तो, स. नि. अहु. 3.180; मिते आराधेन्तो तोसेन्तो, जा. अहु. 4.245; - न्ती स्त्री., प्र. वि., ए. व. - सा सामिकं आराधेन्ती, अप. अहु. 2.228; आराधयन्तो नाथस्स, वनवासेन मानसं विसुद्धि. 1.72; आराधयन्तोति अनुनयन्तो, विसुद्धि. महाटी. 1.91; - धयं उपरिवत्, पु., प्र. वि., ए. व. - कातुं अत्तानुसासनं आराधयं अनिच्छन्तं, चू. वं. 57.33-34; - न्ता वर्त. कृ., पु., प्र. वि., व. व. - आराधयन्ता सततं निवत्तिषु यथारुद्धिं, चू. वं. 59.48; - मान त्रि., वर्त. कृ., आत्मने., - मानेन पु., तृ. वि., ए. व. - एवं वत्तसम्पत्तिया गरुं आराधयमानेन सायं वन्दित्वा याहीति विस्सज्जितेन गन्तव्वं, विसुद्धि. 1.99; - न्तु अनु., प्र. पु., ब. व. - आराधेन्तु हितोपायमच्चन्तं सुखसाधनं, ना. रू. परि. 1342; - धेहि / धयाहि अनु., म. पु., ए. व. - सज्जावूपसमं सुखं, आराधयाहि निब्बानं, थेरीगा. 6; आराधयाहि निब्बानन्ति कामसज्जादीनं पापसज्जानं उपसमनिमित्तं अच्चन्तसुखं निब्बानं आराधेहि, थेरीगा. अहु. 13; - धेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - सेय्यथापि भिक्षु ... अज्जं आराधेय्य, म. नि. 1.104; वसन्तो च आराधेय्य, जायं धम्मं कुसलं, म. नि. 2.200; - य्यासि म. पु., ए. व. - पसादेय्यासीति आराधेय्यासि दी. नि. अहु. 2.263; आराधेय्यासि लभेय्यासीति, जा. अहु. 4.342; - य्यं उ. पु., ए. व. - चित्तं न आराधेय्यं, दी. नि. 1.104; - धये' विधि., प्र. पु., ए. व. - आराधये दक्खिणेय्येभि तादि, सु. नि. 514; 494; ... सम्पादये सोधये, महफलं तं हुतं करेय्य न अज्जथाति अत्थो, सु. नि. अहु. 2.127; - धये' म. पु., ए. व. - अप्पेव आराधये दक्खिणेय्ये'ति, जा. अहु. 4.342; - येय्यं उ. पु., ए. व. - आराधयेय्यं सम्बुद्धं, अप. 1.327; - धेसि / धयी अद्य., प्र. पु., ए. व. - न सो भिक्षु भगवतो चित्तं आराधेसि, स. नि. 1(2).94; आराधेसीति पच्चयाकारवसेन व्याकारापेतुकामस्स भगवतो तथा अब्याकरित्वा द्वितिसाकारवसेन व्याकरोन्तो अज्झासयं गहेतुं

नासक्खि, स. नि. अहु. 2.104; आराधयी सो निब्बानं, अ. नि. 2(2).15; आराधयीति परिपूरयि तं सम्पादेसीति, अ. नि. अहु. 3.99; - धेसुं / धयिंसु व. व. - ओपम्मोहि तथागतं आराधेसुं तोसेसुं पसादेसुं, नि. प. 200; आराधयिंसु वत मे, भिक्षवे, भिक्षू एकं समयं चित्तं, म. नि. 1.176; आराधयिंसूति गण्हिंसु पूरयिंसु, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).3; - धयिं उ. पु., ए. व. - सचे सामि, अहं इमानि किच्चानि करोन्ती रज्जो दहधम्मस्स चित्तं नाराधयिं न परितोसेसिं, जा. अहु. 3.341; - धेस्सति / धयिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - जायप्पाटिपन्नो जायमाराधेस्सती'ति, दी. नि. 3.89; को दानि अज्जो तस्स चित्तं आराधयिस्सति, जा. अहु. 3.341; - धेस्सामि भवि. उ. पु., ए. व. - चित्तं आराधेस्सामि, दी. नि. 1.105; मन्तबलेन आराधेस्सामि, स. नि. अहु. 3.286; - धेतुं निमि. कृ. - आराधेतुं सम्पादेतुं निब्बत्तेतुन्ति अत्थो, पारा. अहु. 2.85; मौक्खमगं वा आराधेतुं भब्बो होति, पारा. अहु. 2.76; - धेत्वा / धयित्वा / रब्ब पू. का. कृ. - एतादिसं सो सत्थारं आराधेत्वा विराधये, थेरगा. 511; आराधेत्वा इमस्मिं नवमे खणे पटिलमित्वा, थेरगा. अहु. 2.134; कदा इण्होव दल्लिक्को निधिं आराधयित्वा धनिकेहि पीळितो, थेरगा. 1109; आराधयित्वा अधिगन्त्वा इणज्ज सोधेत्वा, थेरगा. अहु. 2.396; ... आरब्ध, आरब्धित्वा, आरब्ध, आरभित्वा, क. व्या. 602; - धेतव्व त्रि., सं. कृ. - ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. - राजायेव हि नमस्सितव्वो च आराधेतव्वो, जा. अहु. 7.194.

आराम पु., आ + रम से व्यु., क्रि. ना. [आराम], शा. अ., अभिरति, मन का रम जाना, आह्लाद, आनन्द - मो प्र. वि., ए. व. - आरमनं आरामो, अभिरतीति अत्थो, दी. नि. अहु. 3.182; ला. अ., 1. वासस्थान, रम जाने का स्थान, आनन्द प्राप्त करने का स्थान, आलम्बन, आश्रय, क्रीड़ा या आमोद-प्रमोद का स्थान - मो प्र. वि., ए. व. - वसनङ्गानङ्गेन रूपं चक्रवुस्स आरामोति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.153; कम्मं आरमितव्वतो आरामो, इतिवु. अहु. 2.17; निवासनङ्गेन समथविपरसनाधम्मो आरामो, ध. प. अहु. 2.336; ला. अ., 2. भिक्षुओं का सुख सुविधा-युक्त निवास-स्थान, प्राङ्गणयुक्त विहार, उद्यानयुक्त विहार - मो प्र. वि., ए. व. - तरुसण्डो स आरामो तथोपवनमुच्चते, अभि. प. 537; आरामो नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कतं होति, पाचि. 408; आरामन्ति

## आरामक

184

## आरामद्व

कीर्त्तनउपवनं, पाचि. अट्ट 202; आरमन्ति एत्थ पाणिनो विसेसेन वा पब्बजिताति आरामो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).65; आरामो कारापितो होति, महाव. 184; — मं द्वि. वि., ए. व. — पटिग्गहेसि भगवा आरामं, महाव. 44; अनुजानामि, भिक्खवे, आराम'न्ति, तदे.; आरामेनेव आरामं, जा. अट्ट. 5.413; अज्जतरेन आरामेनेव अज्जतरं आरामं नेन्ति, जा. अट्ट. 5.414; — रस्स ष. वि., ए. व. — परिकिखत्तस्स आरामस्स परिकिखेपं अतिककमन्तस्स आपति पाचित्थिस्स, पाचि. 62; दुग्गतिं नाभिजानामि, आरामस्स इदं फलं, अप. 1.289; — तो प. वि., ए. व. — आरामतो अविदूषे खन्धावारं निवासेत्वा, जा. अट्ट. 4.137; — मे सप्त. वि., ए. व. — भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे, महाव. 274; — मा प्र. वि., ब. व. — सत्त च आरामसहस्सानि सत्त च आरामसतानि सत्त च आरामा, महाव. 358; — मे द्वि. वि., ब. व. — आरामे, अय्या, करोथ, चूळव. 286; — मेसु सप्त. वि., ब. व. — द्वत्तिस्स बोधितरुणे योजनियआरामेसु पतिट्ठापेसुं, पारा. अट्ट. 1.69.

आरामक' पु., आराम से व्यु., सुख-सुविधा-युक्त भिक्षुओं का वासस्थान, उपवनयुक्त वासस्थान — के सप्त. वि., ए. व. — आरामके सुरभिपुष्प फलाभिरामे ... वासं अकासि, जि. च. 446(रो.).

आरामकरा स्त्री., अभिरति उत्पन्न कराने वाली नारी, आनन्द देने वाली नारी — सु सप्त. वि., ब. व. — नरानमारामकरासु नारिसु, अनेकचित्तासु अनिग्गहासु च, जा. अट्ट. 5.432; आरामकरासूति अभिरतिकारिकासु, जा. अट्ट. 5.435.

आरामकोट्टक नपुं., तत्पु. स. [आरामकोष्ठक], विहार के प्रवेशद्वार का बाहरी प्रकोष्ठ, विहार के मुख्यद्वार पर स्थित कमरा — के सप्त. वि., ए. व. — बहारामकोट्टके सकटपरिवट्टं करित्वा अच्छन्ति, महाव. 315; आरामं गत्वा पत्तचीवरं पटिसामेत्वा बहारामकोट्टके सट्ठाटिपल्लत्थिकाय निसीदिसुं, चूळव. 180; बहारामकोट्टकेति वेळुवनविहारस्स बहिद्वारकोट्टके, पारा. अट्ट. 2.151.

आरामगत त्रि., तत्पु. स. [आरामगत], आराम अथवा विहार में गया हुआ, आराम में पहुँचा हुआ या विहार में एकत्रित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आरामगतो निसीदति पज्जत्ते आसने, म. नि. 2.348; — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — आरामगतं भिक्खुं पस्सेय्य सुधोतहत्थपादं, म. नि.

2.123; — रस्स पु., च./ष. वि., ए. व. — तस्स ते आरामगतस्स यो तज्जो छन्दो सो पटिप्पस्सद्धोति, ? स. नि. 3(2).344; — तानं पु., च./ष. वि., ब. व. — आरामगतानं भिक्खूनं धम्मं देसेय्य, म. नि. 1.36; आरामगतानन्ति विहारे सन्निपतितानं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).156.

आरामगोणिसादिका स्त्री., आराम की गोशाला, विहार की वह भूमि जहाँ न उद्यान हो न निवास स्थान (प्रकोष्ठ) हों, विहार की खुली हुई जगह — का प्र. वि., ए. व. — यत्थ नेव आरामो न सेनासनानि परिकिखत्तानि होन्ति, अयं आरामगोणिसादिका नाम, महाव. अट्ट. 359.

आरामगोपक पु., उद्यानरक्षक, माली — को प्र. वि., ए. व. — आरामगोपको हुत्वा जीवन्तो, थेरगा. अट्ट. 1.343; — का प्र. वि., ब. व. — भिक्खुसङ्घस्स पन आरामगोपका यं अत्तनो मत्थिया खण्डेत्वा देन्ति, एतं वहति, पारा. अट्ट. 1.312; — किच्च नपुं., तत्पु. स., उद्यानरक्षक या माली का काम — च्वं द्वि. वि., ए. व. — रद्धवासिनो च आरामगोपककिच्चं कारापेसी, सा. वं. 133(ना.); — कुल नपुं., तत्पु. स., उद्यानरक्षक का कुल, माली का कुल — ले सप्त. वि., ए. व. — आरामगोपककुले निब्बत्तिवा, थेरगा. अट्ट. 1.388; — लानि द्वि. वि., ब. व. — खेतवत्थूनि अदासि आरामगोपककुलानि च, सा. वं. 80(ना.).

आरामचेतिय नपुं., उद्यान-युक्त चैत्य, पुष्पों एवं फलों के ढेरों से युक्त आराम — यानि प्र. वि., ब. व. — तानि आरामचेतियानि वनचेतियानि रुक्खचेतियानि भिंसनकानि सलोमहंसानि तथारूपेसु सेनासनेसु विहरामि, म. नि. 1.27; पुष्कारामफलारामादयो आरामा एव आरामचेतियानि, चित्तीकतट्ठेन हि चेतियानीति वुच्चन्ति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).126.

आरामचेत्य नपुं., उपरिवत् — त्या प्र. वि., ब. व. — आरामचेत्या वनचेत्या, पोक्खरज्जो सुनिम्मिता मनुस्सरामणेय्यस्स, कलं नाघन्ति सोळसिं, स. नि. 1(1).269; आरामचेत्याति आरामचेतियानि, स. नि. अट्ट. 1.305.

आरामद्व त्रि., [आरामरथ], आराम में स्थित, आराम में रखा हुआ — द्वं' नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरामद्वं नाम भण्डं आरामे चतूहि ठानेहि निकिखत्तं होति भूमद्वं थलद्वं आकासद्वं वेहासद्वं, पारा. 56; — द्वं' द्वि. वि., ए. व. — आरामद्वं भण्डं

## आरामद्वकविनिच्छय

185

## आरामरुक्ख

अवहरिस्सामीति, तदे, — हे सप्त. वि., ए. व. — आरामद्वेपि  
— आरामं ताव दस्सेन्तो, पारा. अ. 1.270.

आरामद्वकविनिच्छय पु., तत्पु. स., आराम में स्थित रहने  
के विषय में निश्चय — येन त्. वि., ए. व. —  
आरामद्वकविनिच्छयेन विनिच्छिनितब्बं, पारा. अ. 1.277.

आरामद्वकथा स्त्री., 1. पारा. अ. के एक खण्ड का  
शीर्षक, पारा. अ. 1.270-271; 2. विन. वि. के एक खण्ड  
का शीर्षक, विन. वि. 151-153.

आरामता स्त्री., आराम का भाव, आमोद-प्रमोद से परिपूर्णता,  
आनन्दमयता — ता प्र. वि., ए. व. — पञ्चविधे संसंगे  
आरामता, अ. नि. अ. 3.250.

आरामदण्ड पु., एक ब्राह्मण का नाम — ण्डो प्र. वि., ए.  
व. — आरामदण्डो ब्राह्मणो, अ. नि. 1(1).82; —  
ब्राह्मणादीहि त्. वि., ब. व. — आरामदण्डब्राह्मणादीहि  
मनुस्सेहि उदा. अ. 3.

आरामदान नपुं., तत्पु. स. [आरामदान], उद्यान का दान,  
उद्यान-युक्त स्थल का विहार के रूप में प्रयोग करने हेतु  
दान — नेन त्. वि., ए. व. — इमिनारामदानेन,  
चेतनापणिधीहि च, भवे निब्बत्तमानोहं, अप. 1.36.

आरामदायक पु., स. उ. प. में प्रयुक्त, 1. आराम का दान  
करने वाला, 2. एक स्थविर का नाम, सङ्गा- संघ के लिए  
आराम का दान करने वाला — को प्र. वि., ए. व. —  
सङ्गारामदायको तापसो सुमापितं ... पादासि, अप. अ. 1.285;  
इदं सुवं आयस्सा आरामदायको धरो इमा गाथायो  
अभासित्थाति, अप. 1.269.

आरामदसकजातक नपुं., अनेक जातक-कथानकों का  
शीर्षक, जा. अ. 1.243-245; जा. अ. 2.285-287.

आरामदेवता स्त्री., तत्पु. स., उद्यान का देवता — ता प्र.  
वि., ए. व. — आरामदेवता वनदेवता रुक्खदेवता ..., म.  
नि. 1.387; आरामदेवताति तत्थ तत्थ पुष्कारामफलारामेसु  
अधिवत्था देवता, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).265.

आरामद्वार नपुं., तत्पु. स., विहार का बाहरी द्वार, आराम  
का बाहरी दरवाजा — रा प. वि., ए. व. — आरामद्वारा  
निक्खम्, पदुमुत्तरो महामुनि, अप. 1.49; आरामद्वाराति  
सब्बसत्तानं धम्मदेसनत्थाय विहारद्वारतो निक्खमित्वा, अप.  
अ. 1.320.

आरामनिस्सयी त्रि., उद्यान के समीप निवास करने वाला,  
आराम में आश्रय लेकर रहने वाला — यी पु., प्र. वि., ए.  
व. — अहमस्मि, भो गोतम आरामनिस्सयी परिसावचरो, स.

नि. 3(1).90; आरामं निस्साय वसनभावेन आरामनिस्सयी,  
स. नि. अ. 3.182.

आरामपत्त त्रि., तत्पु. स. [आरामप्राप्त], आराम में पहुंचा  
हुआ, उद्यान में पहुंच चुका — त्तानं पु., प. वि., ब. व.  
— तेसमारामपत्तानं, धम्मं देसेसि चक्खुमा, अप. 2.348.

आरामपाल पु., उद्यान-रक्षक, माली, आराम की रक्षा करने  
वाला — लो प्र. वि., ए. व. — आरामपालो आरामं गत्त्वा  
अम्बरुक्खमूलेसु पंसुं अपनेत्वा तादिसं पंसुं आकिरि, वि.  
व. अ. 242; — लं द्वि. वि., ए. व. — सो आरामपालं  
आह, वि. व. अ. 242.

आरामप्यवेसन नपुं., तत्पु. स. [आरामप्रवेशन], उद्यान का  
प्रवेश द्वार, विहार का प्रवेश द्वार — नं प्र. वि., ए. व. —  
भिक्षुनिया तियोजने उत्त्वा आरामप्यवेसनं आपुच्छितब्बं  
भविस्सति, महाव. अ. 394.

आरामपरियादक त्रि., ब. स., विहार की सीमा के अन्दर  
आने वाला, आराम की सीमा के अन्तर्गत — कं नपुं., द्वि.  
वि., ए. व. — पादा नगरगत्तं च आरामपरियादकं, चू. वं.  
48.38.

आरामरक्खक पु., उद्यान का रक्षक, माली, आराम (विहार)  
का रक्षक — का प्र. वि., ब. व. — गिहीनं आरामरक्खका  
भिक्षूनं देन्ति, पारा. अ. 1.312.

आरामरक्खनक पु., उद्यान की रखवाली करने वाला —  
को प्र. वि., ए. व. — आरामरक्खनको मक्कटो, जा. अ. 1.244.

आरामरम्म पु./नपुं., कर्म. स., आराम अथवा विहार का  
रमणीय वास-स्थान, रमणीय या सुखदायक आराम — म्मं  
द्वि. वि., ए. व. — अनिच्छन्तं व नेत्वात्तमारामरम्ममुत्तमं,  
जि. च. 399(रो.).

आरामरामण्यक नपुं., तत्पु. स., उद्यान की रमणीयता  
अथवा सुन्दरता — कं प्र. वि., ए. व. — सेय्यथापि,  
भिक्षवे, अप्यमत्तकं इमस्मिं जम्बुदीपे आरामरामण्यकं,  
अ. नि. 1(1).48; आरामरामण्यकन्ति पुष्कारामफलारामानं  
रामण्यकं, अ. नि. अ. 1.364; — कं द्वि. वि., ए. व.  
— सुपिनकं परिसता आरामरामण्यकं ...  
पोक्खरणीरामण्यकन्ति, दी. नि. 2.248.

आरामरुक्ख नपुं., तत्पु. स. [आरामवृक्ष], उद्यान का वृक्ष,  
बाग का वृक्ष, आनन्ददायक अथवा मनोहारी वृक्ष —  
कखे/कखानि द्वि. वि., ब. व. — आरामरुक्खानि च  
रोपयिस्सं, वि. व. 1.131; आरामरुक्खानि चा आरामभूते

## आरामरोप

186

## आरामिक

रुक्खे, वि. व. अट्ट. 255; सुवण्णरसधारापरिसेक-  
पिञ्जरपत्तपुष्पफलविटपे विय आरामरुक्खे करिसु, स.  
नि. अट्ट. 3.87; — चेत्थिय/चेत्थ नपुं., द्व. स., आराम  
अथवा विहार के वृक्ष एवं चैत्य — त्यानि द्वि. वि., ब. व.  
— बहुं वै सरणं यन्ति ... आरामरुक्खचेत्थानि, मनुस्सा  
भयतज्जिता, ध. प. 188; वेत्थुवन जीवकम्बवनादयो आरामे  
च उदेनचेत्थियगोतमचेत्थियादीनि रुक्खचेत्थानि च, ध. प.  
अट्ट. 2.142.

आरामरोप पु., उद्यानों को रोपने वाला, बाग बगीचा में वृक्षों,  
लताओं एवं पौधों को लगाने वाला (माली) — पा प्र. वि.,  
ब. व. — आरामरोपा वनरोपा, ये जना सेतुकारका, स. नि.  
1(1).38; आरामरोपाति पुष्कारामफलारामरोपका, स. नि.  
अट्ट. 1.79.

आरामरोपन नपुं., तत्पु. स., उद्यानों को रोपना, उद्यान  
तैयार करना, बाग लगाना, स. प. के अन्त., —  
आरामरोपनसेतुबन्धनचङ्गमनकरणादीसु पुञ्जकम्मेसु परसुतो  
हुत्वा, पे. व. अट्ट. 131.

आरामवग पु., पाधि. तथा परि. के कुछ वर्गों का शीर्षक,  
पाधि. 419-432; पाधि. अट्ट. 206-209; परि. 127-129;  
149-150.

आरामवत्थु नपुं., क. विहार का स्थल, विहारों के निर्माण  
के लिए निर्धारित भूखण्ड, उज्जड़ चुके विहारों के स्थान पर  
खाली पड़ा भूखण्ड — त्थु प्र. वि., ए. व. — आरामवत्थु  
कारापितं होति, महाव. 184; आरामवत्थु नाम तेसयेव  
आरामानं अत्थाय परिच्छेदित्वा उपितोकासो, तेसु वा आरामेसु  
विनह्वेसु तेसं पोरणकभूमिभागो, चूळव. अट्ट. 76; यथा  
आरामस्स वत्थुभूतपुब्बो पदेसो आरामस्स अभावे  
‘आरामवत्थू’ति वुच्चति ..., सारत्थ. टी. 1.298; ख. उद्यान  
लगाने के लिए तैयार किया गया भूखण्ड, वह क्षेत्र,  
जिसे तीन ओर से घेराबन्दी करके भविष्य में उद्यान लगाने  
हेतु खाली छोड़ दिया गया है — वत्थु नाम आरामवत्थु  
विहारवत्थु, पारा. 57; बीजं वा उपरोपके वा अरोपेत्वाव  
केवलं भूमिं सौधेत्वा तिण्णं पाकारानं येन केनचि परिकल्पित्वा  
वा अपरिक्लिप्तत्वा वा पुष्कारामादीनं अत्थाय उपितो भूमिभागो  
आरामवत्थु नाम, पारा. अट्ट. 1.273.

आरामवनमाली त्रि., उद्यानों एवं वनों के पुष्पों की माला  
को धारण करने वाला — लिनि स्त्री., द्वि. वि., ए. व. —  
कदाहं मिथिलं फीतं आरामवनमालिनिं, पहाय पब्बजिस्सामि,  
जा. अट्ट. 6.54.

आरामसम्पन्न त्रि., तत्पु. स., उद्यानों से युक्त, बाग-बगीचों  
से भरपूर — न्नं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — पस्सेय्य पुराणं  
नगरं ... आरामसम्पन्नं, रा. नि. 1(2).93.

आरामसामिक पु., तत्पु. स. [आरामस्वामी], उद्यान का  
स्वामी, बगीचे का मालिक — कं द्वि. वि., ए. व. — ...  
कूटसक्खिं ओतारेत्वा आरामसामिकं जिनातीति अत्थो, पारा.  
अट्ट. 1.271; — स्स ष. वि., ए. व. — ... आरामसामिकस्स  
संसयं जनेति, पारा. अट्ट. 1.270.

आरामसील त्रि., ब. स., उद्यानों में जाने का शौकीन  
स्वभाव से ही उद्यानों का प्रेमी — ला स्त्री., प्र. वि., ए.  
व. — आरामसीला च उय्यानं, नदी जाति, परकुलं,  
आदासदुस्समण्डनमनुयुत्ता, या चित्थी मज्जपायिनी, जा.  
अट्ट. 5.431.

आरामस्स पु./नपुं., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक प्राचीन ग्राम  
का नाम — स्सं द्वि. वि., ए. व. — लोहरूपस्स पादासि  
आरामस्सं च गामकं, चू. वं. 49.17.

आरामाभिमुख त्रि., उद्यान की ओर उन्मुख — खं नपुं.,  
द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि., बाग की ओर — पटिबद्धवित्तो  
अस्सं तं आरामाभिमुखं पेसेसि, जा. अट्ट. 3.359.

आरामिक त्रि., [आरामिक]. 1. उद्यान में रहने वाला,  
उद्यान के साथ जुड़ा हुआ, उद्यानरक्षक — को पु., प्र. वि.,  
ए. व. — हापेति अत्थं दुम्मघो, कपि आरामिको यथाति,  
जा. अट्ट. 1.244; आरामिको यथाति यथा आरामे नियुत्तो  
आरामरक्खनको मक्कटो, तदे., 2. उद्यान अथवा वन के  
आवासों में निवास करने वाला (भिक्षु), वनवासी भिक्षु, कुटी  
में रहने वाला (भिक्षु) — कानं पु., ष. वि., ब. व. —  
आरामिकानं भिक्खून् आरामेसु तहिं तहिं एकं एकं कुटिं  
कत्वा ..., चू. वं. 52.19; 3. पु., आराम अथवा विहार का  
कर्मचारी, विहार का प्रबन्धक अथवा अधिकारी — को प्र.  
वि., ए. व. — न ... भगवता आरामिको अनुज्जातो, महाव.  
283; यो मया, भणो, अय्यस्स आरामिको पटिस्सुतो, दित्रो  
सो आरामिकोति, महाव. 284; — कं द्वि. वि., ए. व. —  
अयस्स आरामिकं दम्मीति, महाव. 284; — केन त्. वि.,  
ए. व. — अत्थो, भन्ते, अय्यस्स आरामिकेनाति, महाव.  
283; — स्स ष. वि., ए. व. — आरामिकस्स निवेसनं,  
महाव. 284; — का प्र. वि., ब. व. — आरामिका दिस्वा  
दीघभाणकअभयत्थेरस्स आरोचेसुं, पारा. अट्ट. 2.62; — के  
द्वि. वि., ब. व. — भिक्खुसङ्गस्स आरामिकं देमाति, महाव.  
अट्ट. 269; — केहि त्. वि., ब. व. — आरामकेहि सद्धिं

## आरामिक

187

## आराव

एकतो खादति, पारा. अ. 2.282; — कानं ष. वि., ब. व. — भिक्षून् वा आरामिकानं वा पतभागमि लभित्वा ..., पारा. अ. 2.245; — केसु सप्त. वि., ब. व. — आरामिकेसु आगतेसु अम्हाकं भारं करोथ, स. नि. अ. 3.81; — किच्च नपुं, तत्पु. स., किसी विहार में सेवक अथवा सहायक का काम — च्वं द्वि. वि., ए. व. — ... आरामिककिच्चं साधेन्ता ... निच्चं महादानं अदसु, जा. अ. 1.48; — कुल नपुं, तत्पु. स., उद्यान-कर्मचारी का कुल, विहार अथवा आराम के सेवक का कुल — लं प्र. वि., ए. व. — कहं इमं आरामिककुलं गतन्ति, महाव. 285; — लं द्वि. वि., ए. व. — राजा ... तं आरामिककुलं बन्धापेसि, महाव. 285; — गाम पु., तत्पु. स., आराम अथवा विहार में काम करने वाले लोगों का ग्राम — मे द्वि. वि., ब. व. — भोगगामे च दापयि तथारामिकगामे च, चू. वं. 52.26; — दारक पु., विहार में सेवक या सहायक के रूप में काम करने वाले का पुत्र, आराम में काम करने वाला बालक — केहि तृ. वि., ब. व. — आरामिकदारकेहि संसद्दो, स. नि. अ. 3.76; — दास पु., कर्म. स., विहार में काम करने वाला दास, आराम में काम कर रहा सेवक — सा प्र. वि., ब. व. — विहारेसु राजूहि आरामिकदासा नाम दिन्ता होन्ति, महाव. अ. 269; — पैसक पु., विहार में काम कर रहे कर्मचारियों का अधिष्ठाता अथवा अधीक्षक — को प्र. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन सद्दस्स ... आरामिकपेसको न होति, चूळव. 310; — भाव पु., उद्यानपाल होना, माली होना, उद्यानपालत्व — वं द्वि. वि., ए. व. — ... आरामिकभावं पत्थयमानो ..., पारा. 26; — भूत त्रि., वह जो आराम अथवा विहार का सेवक हो चुका है, विहार का कर्मचारी बन चुका व्यक्ति — ता पु., प्र. वि., ब. व. — ते आरामिकभूता वा उपासकभूता वा पञ्चसिक्खापदे समादाय वत्तन्ति, म. नि. 2.207; — वैवचन नपुं, तत्पु. स., आरामिक का पर्याय, आरामिक के लिए प्रयुक्त उपाधि — नेन तृ. वि., ए. व. — कप्पियकारकोति ..., वेय्यावच्चकरो, अप्पहरितकारको, यागुभाजको, फलभाजको, खज्जकभाजकोति ... आरामिकवैवचनेन ... होति, पारा. अ. 1.201; — सदिस त्रि., आरामिक के जैसा, विहार के सेवक अथवा कर्मचारी के समान — सा स्त्री., द्वि. वि., ब. व. — आरामिकसदिसा एते उपासिके, स. नि. अ. 3.246; — समणुद्देस पु., 1. द्व. स., आराम के कर्मचारी एवं श्रामणेर, 2. कर्म. स., आरामिक का काम करने वाला

श्रामणेर — से द्वि. वि., ब. व. — मुदुकेन आरामिकसमणुद्देसे पक्कोसित्वा सोधापेत्वा ... वसितब्बं, विसुद्धि. 1.72-73; — सेहि तृ. वि., ब. व. — भविरस्सन्ति भिक्षू अनागतमद्धानं आरामिकसमणुद्देसेहि संसद्दा विहारिस्सन्ति, आरामिकसमणुद्देसेहि संसंगे ... पाटिकद्धं, अ. नि. 2(1).102; — सेसु सप्त. वि., ब. व. — तावदेवस्स तिब्बं हिरोत्तप्यं पच्चुपद्धितं होति भिक्षूसु भिक्षुनीसु उपासकेसु उपासिकासु अन्तमसो आरामिकसमणुद्देसेसु, अ. नि. 1(2).91.

आरामिकगामक पु., व्य. सं., राजगृह के समीप में स्थित एक गांव का नाम, जिसका दूसरा नाम पिलिन्दगामक भी था — को प्र. वि., ए. व. — आरामिकगामकोतिपि न आहंसु, पिलिन्दगामकोतिपि न आहंसु, महाव. 284.

आरामिकिनी स्त्री., आराम अथवा विहार में काम करने वाली नारी, विहार की परिचारिका — नी प्र. वि., ए. व. — सा आरामिकिनी तं तिण्डुपकं गहेत्वा तस्सा दारिकाय सीसे पटिमुञ्चि, महाव. 284; — निं द्वि. वि., ए. व. — तं आरामिकिनिं एतदवोच, महाव. 284; — निया ष. वि., ए. व. — तस्सा आरामिकिनिया धीता, महाव. 284.

आरामुय्यानोपवनतळाकपोक्खरणिस्सम्पन्न त्रि., द्व. स./तत्पु. स., आरामों, उद्यानों, उपवनो, तालाबों एवं पुष्करणियों से युक्त — त्रं नपुं, प्र. वि., ए. व. — सागलं नाम नगरं ... आरामुय्यानोपवनतळाकपोक्खरणिस्सम्पन्नं, मि. प. 2.

आरामूपचार पु., तत्पु. स., आराम अथवा विहार का पार्श्ववर्ती क्षेत्र, विहार का अहाता, विहार का उपक्षेत्र — रं द्वि. वि., ए. व. — आरामं आरामूपचारं ठपेत्वा (आगन्त्वा), पाचि. 241; आरामूपचारं ठपेत्वाति आरञ्जकसेनासनारामञ्च तस्स उपचारञ्च ठपेत्वा, पाचि. अ. 147; — रे सप्त. वि., ए. व. — आरामे आरामूपचारे चोरानं निविद्धोकासो दिस्सति, पाचि. 240; तं दस्सेतुं आरामे आरामूपचारेतिआदि वुत्तं, पारा. अ. 2.28'.

आरामूपवन नपुं, द्व. स., उद्यान एवं उपवन — नानि प्र. वि., ब. व. — आरामानीति आरामूपवनानीति अत्थो, पे. व. अ. 91.

आराव पु., आ + रु से व्यु., [आराव], आवाज, ऊंची आवाज, हल्ला, ध्वनि — आराव-संराव-विराव-घोसारवा सुतिथी सर निस्सनां च, अभि. प. 128.

## आरिय

188

## आरुप्य

आरिय त्रि., अरिय से व्यु., क. आर्य जाति का, ख. एक जनजाति के लिए प्रयुक्त - ये पु., द्वि. वि., ब. व. - ठकुरप्यमुखे सब्धे पुच्छिंसु आरिये भटे, चू. वं. 90.27.

आरियक्खत्तयोद्धा पु., श्रीलङ्का में राजा द्वारा चुने गए योद्धाओं का एक वर्ग - नं च. वि., ब. व. - आरियक्खत्तयोद्धानं भत्तिं दातुं समारभुं, चू. वं. 90.16.

आरियचक्कवत्ती पु., व्य. सं., एक प्राचीन तमिल-सेनापति का नाम अथवा उपाधि - ती प्र. वि., ए. व. - आरियचक्कवत्तीति विस्सुतो नारियो पि सो, चू. वं. 90.44.

आरियमुनित्थेर पु., व्य. सं., एक स्थविर के लिए प्रयुक्त नाम अथवा उपाधि - रं द्वि. वि., ए. व. - दुतियारियमुनित्थेरं ससंघं हि निमन्तिय, चू. वं. 100.95.

आरिस्स नपुं., भाव., इसि से व्यु. [आर्य], ऋषि-भाव, ऋषि या मुनि की अवस्था, ऋषि से सम्बद्ध होना - स्सं प्र. वि., ए. व. - इसिस्स भावो आरिस्सं क. व्या. 404; आदिविकारो ताव - आरिस्सं ..., क. व्या. 406.

आरुण्ण नपुं., आ + रुद से व्यु., रोना, विलाप, रोदन, स. प. में प्रयुक्त - अताणो असरणो आरुण्णरुण्णकारुज्जरवं परिदेवमानो, भि. प. 322.

आरुप्य/आरुप/अरुप पु./नपुं., अरुप से व्यु. [बौ. सं., आरुप्य], 1. रूपरहित आलम्बनों वाला, अरुपध्यान, आकाश की अनन्तता, विज्ञान का आयतन, अकिञ्चनता का आयतन तथा न संज्ञा एवं न असंज्ञा का आयतन, इन रूपरहित चार आलम्बनों वाला अरुप ध्यान, 2. अरुप-भव, तीन प्रकार के भवों में से तृतीय भव, रूपरहित ब्रह्मा का लोक, 3. अरुप-धातु - पं प्र. वि., ए. व. - रूपानमेतं निस्सरणं यदिदं अरुपं, दी. नि. 3.220; रूपानं निस्सरणं यदिदं आरुप्यन्ति एत्थ आरुप्येपि अरहतमग्गो, दी. नि. अ. 3.222; ... अध्पनं पापुणाति, आरम्भणातिकमभावनावसेन आरुप्यं, वि.सु. 1.230; - प्यं द्वि. वि., ए. व. - असदिसरूपो नाथो, आरुप्यं यं चतुब्धिं आह, वि.सु. 1.328; उद्धंवा आरुप्यं, अधो काम्भ तातुं, तिरियं रूपधातुं अनवसेसं फरन्तो, खु. पा. अ. 202; - तो प. वि., ए. व. - आरुप्यतो हि अज्जस्मिम्पि पञ्चवोकारभवे तं विपाकनामं हृदयवत्थुनो सहायं हुत्वा ..., वि.सु. 166; - स्स ष. वि., ए. व. - आरुप्यस्स व निरोधस्स व गहणं अज्जत्थ पाठे वुत्तक्कमेनेव कत्तं, पटि. म. अ. 2.296; - प्ये सप्त. वि., ए. व. - आरुप्ये परस्स चित्तं जानितुकामो ..., पटि. म. अ.

1.284; नाममेव हि आरुप्ये, पटिसन्धिपवत्तिसु, वि.सु. अ. 165; - प्या पु., प्र. वि., ब. व. - अरुपे आरम्भणे पवत्ता आरुप्या, अभि. ध. वि. 226; ये ते सन्ता विमोक्खा, अतिकम्म रूपे आरुप्या, ते कायेन फुसित्वा विहरेय्यन्ति, म. नि. 1.42; आरुप्याति आरम्भणतो च विपाकतो च रूपविरहिता, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1) 171; - प्यानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - पञ्च रूपावचरानि चत्तारि च आरुप्यानि, वि.सु. 2.177; - प्ये पु., द्वि. वि., ब. व. - चत्तारो आरुप्ये गच्छिंसु, ध. स. अ. 16; - पेहि पु., तृ. वि., ब. व. - पञ्च सुद्धावासा चतूहि आरुपेहि सद्धिं नवाति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2) 229; - पेहि प. वि., ब. व. - अरुपेहि निरोधो सन्ततरोति, सु. नि. (पृ.) 195; - प्यानं ष. वि., ब. व. - अरुपावचरं चतुन्नं आरुप्यानं योगवसेन चतुब्धिं, वि.सु. 2.80; - पेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - चतूसु पन आरुप्येसु आरम्भणसमतिक्रमो होति, वि.सु. 1.109; अरुप्येसु असण्ठिताति, इतिवु. अ. 195; - कथा स्त्री., कथा. के छठे वर्ग की चौथी कथा का शीर्षक, कथा. 271-272; प. प. अ. 189; - किरिया स्त्री., अरुपावचरभूमि के चार प्रकार के क्रियाचित्त - या प्र. वि., ब. व. - चतस्सो आरुप्यकिरिया, वि.सु. अ. 23; - कुसल नपुं., तत्पु. स., अरुपावचरभूमि के चार कुशलचित्त - लानि प्र. वि., ब. व. - चत्तारि आरुप्यकुसलानि, वि.सु. अ. 23; - गमन नपुं., तत्पु. स., अरुपभूमि अथवा अरुपलोक में पुनर्जन्म का ग्रहण - नं प्र. वि., ए. व. - पटिसन्धिवसेन अरुपगमनं, सु. नि. अ. 2.188; - चित्त नपुं., अरुपावचरभूमि का चित्त, स. उ. प. के रूप में, दुतिया.- अरुपावचरभूमि का द्वितीय चित्त, जिसका आलम्बन विज्ञान का आयतन होता है - तं प्र. वि., ए. व. - दुतियारुप्यचित्तञ्च, चतुत्थारुप्यमानसं, अभि. अव. 314; - चुति स्त्री., तत्पु. स., अरुप-भूमि अथवा रूपरहित ब्रह्मलोकों में मृत्यु, अरुप-धातु में जीवन से बिलगाव - या तृ. वि., ए. व. - आरुप्यचुतियापि अनन्तरा पटिसन्धि वेदितव्या, वि.सु. 2.181; अरुपावचरे च ... हेड्डिमा हेड्डिमा पटिसन्धि नत्थीति चतुत्थारुप्यचुतिया नवत्तब्बारम्भणपटिसन्धि नत्थि, वि.सु. महाटी. 2.283; - चेतस नपुं., कर्म. स., अरुपावचरध्यान का चित्त, स. उ. प. के रूप में, दुतिया.- द्वितीय अरुपध्यान का कुशलचित्त एवं विपाकचित्त - सो ष. वि., ए. व. - पठमारुप्यकुसलं दुतियारुप्यचेतसो, अभि. अव. 366; -

## आरूप्य

189

## आरुह्य

ज्ज्ञान नपुं. कर्म. स. अरूपध्यान, रूपरहित चार आलम्बनों पर ध्यान - रस ष. वि., ए. व. - ततियस्स आरूप्यज्ज्ञानस्स आरम्भणता, पटि. म. अहु. 2.144; - नानि प्र. वि., ब. व. - चत्तारि आरूप्यज्ञानानिपि, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).171; - द्वायी त्रि., अरूपध्यान में स्थित, अरूपलोक अथवा रूप-रहित ब्रह्मलोको में विद्यमान - यिनो पु., प्र. वि., ब. व. - अरूपद्वायिनोति अरूपावचरा, इतिवु. अहु. 195; ये च रूपपगा सत्ता, ये च अरूपद्वायिनो, इतिवु. 46; सु. नि. 759; - देसना स्त्री., तत्पु. स., अरूपध्यान अथवा अरूपभूमि के विषय में उपदेश - नं द्वि. वि., ए. व. - सब्बप्पकारेन आरूप्यदेसनमेव भजति, ध. स. अहु. 231; - निदेस पु., विसुद्धि. के दसवें परिच्छेद का शीर्षक, इस परिच्छेद में चार अरूपध्यानों का विवेचन है, विसुद्धि. 1.316-331; विसुद्धि. महाटी. 1.370-387; - पटिसन्धि स्त्री., तत्पु. स., अरूप-लोक में पुनर्जन्म, रूपरहित ब्रह्मलोकों में पुनर्जन्म का ग्रहण - या ष. वि., ए. व. - अरूपपटिसन्धिया ... कम्मनिमित्तमेव यथारहमारम्भणं होति, अभि. ध. स. 40; - पादक त्रि., अरूपध्यान अथवा अरूपलोक को प्राप्त कराने वाला - कं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - "आरूप्यपादकं फलसमापत्तिं"ति, उदा. अहु. 198; - बोधन नपुं., तत्पु. स., अरूपध्यान-विषयक ज्ञान, स. उ. प. के रूप में, चतुत्था.- चौथे अरूपध्यान के विषय में ज्ञान - ने सप्त. वि., ए. व. - सावेतब्बो अयं अत्थो, चतुत्थारूप्यबोधने, अभि. अव. 1035; - भव पु., कर्म. स., रूपरहित लोक में अस्तित्व, रूपरहित ब्रह्मलोकों में उत्पत्ति - वे सप्त. वि., ए. व. - रूपं पनेत्थ आरूप्यमेव भवति पच्चयो, विम. अहु. 166; - भूमि स्त्री., कर्म. स., रूपरहित ध्यान-आलम्बनो वाली चित्तभूमि, चित्त या चेतना का वह स्तर जिसमें चित्त चार रूपरहित आलम्बनों पर एकाग्र किया जाता है - यं सप्त. वि., ए. व. - तेवत्तालीस चित्तानि, नत्थि आरूप्यभूमियं, अभि. अव. 213; - यो द्वि. वि., ब. व. - अपरानि चतस्सोपि, ठपेत्वारूप्यभूमियो, चित्तानि पन जायन्ति, अभि. अव. 194; - सु सप्त. वि., ब. व. - विपाका होन्ति सब्बे, चतूस्वारूप्यभूमिसु, अभि. अव. 270; - मानस नपुं., तत्पु. स., अरूपावचर ध्यान का चित्त, अरूपभूमि में सक्रिय चित्त - सं प्र. वि., ए. व. - चतुत्थं पच्चमं वापि, होति आरूप्यमानसं, अभि. अव. 996; आलम्बनअभेदेन, चतुत्थारूप्यमानसं, अभि. ध. स. 6; - विज्जाण नपुं., अरूपावचरध्यान का विज्ञान, अरूपावचर

नामक भूमि का चित्त, स. उ. प. के रूप में, पठमा.- प्रथम अरूपध्यान का चित्त - णं प्र. वि., ए. व. - तमेव पठमारूप्यविज्जाणं अनन्तवसेन परिकम्मं करोन्तस्स दुतियारूप्यमप्येति, अभि. ध. स. 65; पठमारूप्यविज्जाणाभावो तस्सेव सुज्जतो, अभि. अव. 1010; - विपाक त्रि., अरूपावचर भूमि का विपाकभूत (चित्त) अरूपभूमि के वे चार चित्त, जो अरूपावचर भूमि के चार कुशलकर्मों के विपाक के रूप में उदित होते हैं - कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - ... चत्तारि आरूप्यविपाकानीति सोत्तस चित्तानि नेव रूपं जनयन्ति, न इरियापथं, न विज्जति, विसुद्धि. 2.249; - केसु नपुं., सप्त. वि., ब. व. - आरूप्यविपाकेसु ... आनेज्जाभिसङ्गारं आरभति, विसुद्धि. 2.161; - विमोक्ख पु., तत्पु. स., अरूपावचर भूमि में प्राप्त विमुक्ति - क्खा प्र. वि., ब. व. - अङ्गसन्तताय चेव आरम्भणसन्तताय च सन्ता आरूप्यविमोक्खा, स. नि. अहु. 2.110; - सङ्घात त्रि., आरूप्य नाम से जाना गया, स. प. के रूप में, - ततियारूप्यसङ्घातरवन्ध पु., तृतीय अरूपावचर नामक स्कन्ध - धेसु सप्त. वि., ब. व. - ततियारूप्यसङ्घात-खच्चेसु च चतूसुपि, अभि. अव. 1027; - समापत्ति स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आरूप्यसमापत्ति], अरूपावचरध्यान की प्राप्ति - यो प्र. वि., ब. व. - सब्बथा आरम्भणातिक्कमतो चतस्सोपि भवन्तिमा आरूप्यसमापत्तियोति बेदितब्बा, विसुद्धि. 1.328; - त्तिं द्वि. वि., ए. व. - अच्चन्तसुखमभावपत्तसङ्गारं चतुत्थारूप्यसमापत्तिं, विसुद्धि. 1.326; - सम्मव पु., तत्पु. स., अरूपभूमि में जन्म, अरूपध्यान के क्रम में उदित, स. उ. प. के रूप में चतुत्था.- चतुर्थ अरूपध्यान से उत्पन्न - म्मवा प्र. वि., ब. व. - नेवसज्जाति निदिद्वा, चतुत्थारूप्यसम्भवा, अभि. अव. 1036; - प्यारम्भण नपुं., तत्पु. / कर्म. स., अरूपावचर ध्यान का आलम्बन, आलम्बन के रूप में अरूपावचर भूमि - णेसु सप्त. वि., ब. व. - आरूप्यारम्भणेसुपि आकासं कसिणुग्घाटिमत्ता, विसुद्धि. 1.110; - प्यासज्ज त्रि., अरूपभूमि की संज्ञा से रहित अरूप-लोक से अनभिज्ञ या अनजान - ज्जं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तयो अपाया आरूप्यासज्जं पच्चन्तिमपि च, सद्धम्मो. 5.

आरुह्य आ + रुह का पू. का. कृ. [आरुह्य], ऊपर चढ़ कर, आरुढ़ हो कर, सवार हो कर, ऊपर जा कर, ऊपर पहुंच कर - परितं दारुमारुह्य, यथा सीदे महण्णवे धेरगा. 147; पुनपारुह्य चङ्कमं, धेरगा. 272; पुनपारुह्य चङ्कमन्ति ... पुनपि चङ्कमद्धानं आरुहित्वा, धेरगा. अहु. 2.5;



## आरुहति

190

आरुह / आरुह

पासादमारुह समन्तचक्रुः, महाव. 6; तमारुह पलायन्तं कुमारमनुबन्धि सो, म. वं. 24.38.

आरुहति आ + रुह का वर्त. प्र. पु., ए. व., नियमित आरोहति के स्थान पर गाथाओं में प्रयुक्त अनियमित रूप [आरोहति], ऊपर चढ़ता है, सवार हो जाता है, सवारी करता है, पकड़ लेता है, ऊपर की ओर जाता है — आरुहती ति आरुहो, क. व्या. 591; खुहकमातिकं आरुहति, पारा. अड्ड. 1.264; — न्ति ब. व. — तमारुहन्ति नारियो, जा. अड्ड. 7.138; तत्थ तमारुहन्तीति तं एवरुपं सिम्बलिरुक्खं आरुहन्ति, तदे., न ते थूपमारुहन्ति, अप. 1.70; — होम उ. पु., ब. व. — न मयं रथमारुहाम, थू. वं. 46; — न्ता वर्त. कृ., पु. प्र. वि., ब. व. — यत्थ एक्के विहञ्जन्ति, आरुहन्ता सिलुच्चयं, थेरगा. 1061; — न्तं वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. — तमारुहन्तं खुरसञ्चितं गिरि ... को चोदये परलोके सहरसन्ति, जा. अड्ड. 7.138; तं भवन्तं जलितावुधपहारे असहित्वा जलितखुरोहि सञ्चितं जलितलोहपब्बतं आरुहन्तं, तदे., — ह अनु. म. पु., ए. व. — ... अस्सं आरुहा ति तमाह सो, म. वं. 23.72; — पेन्तु अनु. प्रेर., प्र. पु., ब. व., चढ़ा दें, रखा दें — सुवण्णपादुका च रथं आरोपेन्तूति अत्थो, जा. अड्ड. 6.28; — हे विधि., प्र. पु., ए. व. — सम्मतोम्हीति आरुहं, जा. अड्ड. 7.188; — हि अद्य., प्र. पु., ए. व. — 'पुथुदिसा नमस्सित्वा, पमुखो रथमारुहीति, स. नि. 1(1)271; रथमारुहीति देवानं पमुखो सेहो रथं आरुहि, स. नि. अड्ड. 1.307; सा मदी नागमारुहि, जा. अड्ड. 7.377; — हिं उ. पु., ए. व. — तया सिम्बलितमारुहिन्ति, जा. अड्ड. 3.78; — हिंसु/रुहु अद्य., प्र. पु., ब. व. — 'रथम्यि नाभिरुहिंसूति, पारा. अड्ड. 1.56; तुरिता पब्बतमारुहुं सु. नि. 1020; तं चेतियं अभिरुहिंसु ... पब्बतमारुहुन्ति, सु. नि. अड्ड. 2.274; — हिम्ह उ. पु., ब. व. — आरुहिम्ह तदा नावं निक्खु चाजीविको चहं, अप. 2.101; — हित्वा पू. का. कृ. — नावं दळ्हमारुहित्वा, सु. नि. 323; — हितब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. — लेणं गम्भीरं अहोसि ओतरित्वा अभिरुहितब्बं, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.146; पाठा. आरुहितब्बं; — रुहति कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. — आरोहण किया जाता है, सवार हुआ जाता है, चढ़ा जाता है — आरुहतीति आरोहो, वि. व. अड्ड. 27.

आरुहन नपुं., आ + रुह से व्यु., क्रि. ना. [आरोहण], ऊपर चढ़ना, सवार होना, सवारी करना — तथ पु., ऊपर

चढ़ने अथवा सवार होने का प्रयोजन — त्थाय च. वि., ए. व. — कण्डुलो अत्तनो पिद्धिं आरुहनत्थाय नन्दिमित्तं ओलोकेसि, थू. वं. 61; यथा वणं आलिम्मेय्य यावदेव आरुहणत्थाय, महानि. 271; — सज्ज त्रि., चढ़ने के लिए तैयार (सवारी) — ज्जो पु., प्र. वि., ए. व. — रथो गन्त्वा कुमारं पदक्खिणं कत्वा आरुहनसज्जो हुत्वा, अप. अड्ड. 1.265.

आरुह / आरुह त्रि., आ + रुह का भू. क. कृ. [आरुह], शा. अ., कर्तृ वा./कर्म. वा. में, 1. वह जो चढ़ चुका है, सवार हो चुका है या ऊपर जा चुका है, सवार, 2. वह, जिस पर चढ़ा जा चुका है अथवा जिस पर सवार हुआ जा चुका है, सवारी — ळहो पु., प्र. वि., ए. व. — आरुहतीति आरुहो, क. व्या. 591; सो पुरिसो पठमं रुक्खं आरुहो, म. नि. 2.32; एकं साखं गणित्वा पठमं रुक्खं आरुहो, अ. नि. अड्ड. 2.351; — ळहं पु., द्वि. वि., ए. व. — तमहसा चन्दनसारलित्तं, आज्जमारुहमुक्कारवण्णं, पे. व. 570; तत्काकं आरुहं गणहो ..., पारा. अड्ड. 1.264; — ळहेन पु., तृ. वि., ए. व. — नावं ... आरुहहेन भुज्जितब्बं, पाचि. 104; खलुङ्गं आरुहहेन जवसम्पन्नं आजानीयं आरुह गच्छन्तो विय गहेतुं न सक्काति अत्थो, जा. अड्ड. 6.281; — ळहे सप्त. वि., ए. व. — दुतियभागे पन थेरासनं आरुहहे आगतानं पठमभागो न पापुणाति, महाव. अड्ड. 395; — ळहा पु., प्र. वि., ब. व. — मनुस्सा पासादेसुपि हम्मियेसुपि छदनेसुपि आरुह्हा अच्चन्ति, चूळव. 334; — ळहे पु., द्वि. वि., ब. व. — आरुहहे गामणीयेहि, जा. अड्ड. 6.56; — ळहानं पु., ष. वि., ब. व. — आरुहहानं खोभं अकरोन्तो, वि. व. अड्ड. 27; — ळहं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — 'आरुहहं, ..., आरोपेतुं न वड्ढतीति, पारा. अड्ड. 1.61; — ळहेन नपुं., तृ. वि., ए. व. — 'पिळ्ळन्नेन एकिस्सा मक्कटिया हत्थे आरुहहेन भवितव्वन्ति, जा. अड्ड. 1.368; ला. अ., रख दिया गया, निविष्ट कर दिया गया, संगृहीत, अन्तर्गत, प्राप्त, पहुंचा दिया गया — ळहो पु., प्र. वि., ए. व. — सम्माआजीवो अत्थि चित्तवसेन पन पाळियं न आरुहो, ध. स. अड्ड. 177; — ळहं पु., द्वि. वि., ए. व. — द्वेपि सङ्गीतियो आरुहहं तिपिटकसङ्गहितं साङ्गकथं सब्बं थेरवादं ... उग्गहेत्वा ..., पारा. अड्ड. 1.37; — ळहे पु., सप्त. वि., ए. व. — पठमपाराजिके सङ्गहमारुहहे ..., दी. नि. अड्ड. 1.12; — ळहा पु., प्र. वि., ब. व. — ते पकतिसावका,

## आरुह / आरुह

191

आरोग

इध पाळियं आरुह पन परिमिताव गाथावसेन परिगहितता, तथापि महासावकेसुपि केचि इध पाळियं नारुहहा, थेरगा. अहु. 2.456; - ळह<sup>१</sup> स्त्री., प्र. वि., ब. व. - सब्बअडुकथासु देसना आरुहहा, पारा. अहु. 1.217; आरुहहायेव मातिकं, चूळव. अहु. 96; - ळहं द्वि. वि., ए. व. - भजति, ... रुपावचरदेसनं न आरुहं, ध. स. अहु. 231; - ळहा स्त्री., द्वि. वि., ब. व. - इमा गाथा ताव सङ्गहं आरुहहा, उदा. अहु. 340; - ळहासु स्त्री., सप्त. वि., ब. व. - गोपानसीसु पन आरुहहासु बहुकतो नाम होति, चूळव. अहु. 83; - ळह<sup>१</sup> नपुं., प्र. वि., ए. व. - दिनयपिटकं सङ्गहमारुहं, पारा. अहु. 1.12; - ळह<sup>२</sup> द्वि. वि., ए. व. - इदं पाळियं आरुहहज्ज अनारुहहज्ज सब्बं भगवा अवोच, दी. नि. अहु. 2.205; - रस ष. वि., ए. व. - तन्तिं आरुहहसस बुद्धवचनसस पटिसम्भिदापत्तानं ..., विभ. अहु. 367; - ळहे सप्त. वि., ए. व. - तिस्सो सङ्गीतियो आरुहहे तोपिटके बुद्धवचने, दी. नि. अहु. 3.73; - हानि<sup>१</sup> नपुं., प्र. वि., ब. व. - पुष्फनकानि ... पाळिं नारुहहानि, आहरित्वा पन दीपेतब्बानीति दीपितानि, स. नि. अहु. 1.177; - हानि<sup>२</sup> द्वि. वि., ब. व. - धम्मद्वैसवारे पाळिआरुहहानि छप्पज्जास पदानि विभजित्वा, ध. स. अहु. 181; - काल पु., तत्पु. स. [आरोहणकाल], ऊपर की ओर चढ़ने का समय, सवारी पर सवार होने का समय - लो प्र. वि., ए. व. - आरुहकालो विय पटमज्झाने ..., अ. नि. अहु. 2.351; - हान नपुं., तत्पु. स. [आरोहणस्थान], वह स्थान जहां पहले चढ़ा जा चुका है - ने सप्त. वि., ए. व. - एवं आरुहहहाने पदं विय हि सुखवेदनाय उप्पत्ति पाकटा होति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).288; - ता स्त्री., आरुहन का भाव., स. उ. प. के रूप में, मुख्या. मुख पर आ जाना - य तृ. वि., ए. व. - केवलं लोकवोहारवसेन व्यञ्जनसिलिद्धताय मुखारुहताय एतं वुत्तं, पारा. अहु. 1.194; - धम्म पु., कर्म. स. [आरुहधर्म], सुनिर्धारित धर्म - म्मं द्वि. वि., ए. व. - तिस्सो सङ्गीतियो आरुहधम्मयेव पन पदसो वाचेत्तस्स आपत्ति, पाचि. अहु. 8; - नावा स्त्री., कर्म. स., वह नौका, जिस पर लोग चढ़ चुके हैं - य तृ. वि., ए. व. - तेन आरुहहनावाय व्यापत्ति नाम नत्थि, जा. अहु. 4.125; - भाव पु., [आरुहभाव], आरुह हो जाने की स्थिति, सम्प्राप्त हो जाने की अवस्था, आ पड़ने की स्थिति - वो प्र. वि., ए. व. - कथं पन ते, पण्डित, मक्कटिया

हत्थं आरुहहभावो ज्ञातो, जा. अहु. 1.369; - वं द्वि. वि., ए. व. - आरुहहभावं वा ओरुहहभावं वा न जानाति, पाचि. अहु. 150; - वानर त्रि., ब. स., वह वृक्ष, जिस पर वानर चढ़े हुए हों - रो पु., प्र. वि., ए. व. - आरुहहो वानरो यं रुक्खं सो आरुहहवानरो, मो. व्या. 3.17; - विस नपुं., कर्म. स., चढ़ चुका विष, शरीर में पूरी तरह फैल चुका विष - रस ष. वि., ए. व. - याव अविखप्पदेसा आरुहहविसस्स उपरि अभिरुहितुं ..., स. नि. अहु. 2.88; - साखा स्त्री., कर्म. स., वह शाखा, जिस पर कोई चढ़ा हुआ है - य ष. वि., ए. व. - द्वे सामणेरं ... आरुहहसाखाय भग्गाय पतन्ते दिस्वा, थेरगा. अहु. 1.355; - ळहामिलाप पु., परम्परा से चली आ रही बातचीत, पारम्परिक कथन - करणवचनेनेव अयमभिलापो आरोपितोति आदितो पट्टाय आरुहहामिलापवसेनेवेतं वुत्तन्ति वेदितब्बं, महाव. अहु. 225.

आरुह्हित्वान आ + रुह का पू. का. कृ., चढ़ा कर, सवार हो कर, सवार करा के - आरुह्हित्वान पासादं, गजबाहुनराधिपं, चू. वं. 70.262.

आरुह / आरुह पु., आ + रुह से व्यु., स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त [आरोह], आरोहण, ऊपर चढ़ जाना, स. उ. प. के रूप में, अज्झा. - त्रि., अत्यधिक ऊपर की उठा हुआ - हा पु., प्र. वि., ब. व. - अज्झारुहाभिवड्ढन्ति, जा. अहु. 3.352; अज्झारुहाभिवड्ढन्तीति निगोधादयो रुक्खा अज्झारुहा हुत्वा महन्तप्पि ... दस्सेति, जा. अहु. 3.353; दुक्खा. - त्रि., दुख के साथ चढ़ने वाला, कठिनाई से ऊपर चढ़ने योग्य - हो पु., प्र. वि., ए. व. - अयं विसरुक्खो न दुक्खारुहो, जा. अहु. 1.262; दुरा. - त्रि., कठिनाई से ऊपर चढ़ने योग्य - हो पु., प्र. वि., ए. व. - तत्थ नायं रुक्खो दुरारुहोति अयं विसरुक्खो न दुक्खारुहो ..., जा. अहु. 1.262.

आरोग / अरोग त्रि., 'अ' के स्थान पर अनियमित रूप से 'आ' का प्रयोग, ब. स. [अरोग], क. रोगों से मुक्त, स्वस्थ, सुरक्षित, सङ्कटों से मुक्त, कुशलक्षेम-युक्त - गो पु., प्र. वि., ए. व. - आरोग्यत्थायाति अरोगो भविस्सामि, पारा. अहु. 151; अरोगो भविस्सामीति मोचेत्वा अरोगो भविस्सामि, पारा. अहु. 2.100; - गं पु., द्वि. वि., ए. व. - आगन्त्वा नासक्खिंसु अरोगं कातुं, महाव. 359; - गा पु., प्र. वि., ब. व. - एकच्च अरोगा जाता, जा. अहु. 1.352; - गे पु., द्वि. वि., ब. व. - तुम्हे अरोगे कातुं नासक्खि, जा. अहु.

## आरोगापेति

192

## आरोग्य

3.123; — गा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सुखिनी अरोगा अरोगं पुत्तं, जा. अड्ड. 1.390; — गं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — मरुं भरियं अरोगं कत्वा, जा. अड्ड. 2.99; — गा स्त्री., प्र. वि., ब. व. — कच्चि ... राजकज्जायो, अरोगा मरुं मातरो, जा. अड्ड. 6.27; — गं नपुं., प्र. वि., ए. व. — कच्चि अरोगं योग्यं ते, जा. अड्ड. 6.28; ख. व्याधि एवं विनाश की पकड़ से बाहर वाला, व्याधि एवं जरा आदि का अविषयीभूत — गो पु., प्र. वि., ए. व. — एकन्तसुखी अत्ता होति आरोगो परम्मरणाति, अ. नि. अड्ड. 1.338; — ता स्त्री., अरोग का भाव, रोगमुक्ताता, स्वास्थ्य, अविनाशिता — ता प्र. वि., ए. व. — आयु अरोगता वण्णं, सगं उच्चाकुलीनता, मि. प. 309; — भाव पु., उपरिवत् — वं द्वि. वि., ए. व. — धनस्स अरोगभावं जत्वा, ध. प. अड्ड. 1.132; — वो प्र. वि., ए. व. — आरोग्यं नाम सरीरस्स च वचित्तस्स च अरोगभावो अनातुरता, जा. अड्ड. 1.350; अरोगभावो पुञ्जवतो इद्धि, बु. वं. अड्ड. 36.

**आरोगापेति** अरोग अथवा आरोग का ना. धा., वर्त., प्र. पु., ए. व., रोग से मुक्त करा देता है, द्रष्ट., अरोगापेति के अन्तः(पीछे).

**आरोगिय/अरोगिय** नपुं., आरोग्य, स्वास्थ्य — यं प्र. वि., ए. व. — आयुं अरोगियं वण्णं, ... रतियो पथथन्तेन, स. नि. 1(1).104.

**आरोग्य/आरोग** नपुं., अरोग का भाव. [आरोग्य], बीमारी से छुटकारा, रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य, सङ्कटों अथवा क्लेशों से मुक्त अवस्था, हर तरह से निरापद जीवन, अनातुरता — ग्यं<sup>1</sup> प्र. वि., ए. व. — कुसलानामयारोग्यं, अभि. प. 331; अरोगस्स भावो आरोग्यं क. व्या. 362; रोगो भविस्सति, आरोग्यं भविस्सति, दी. नि. 1.10; — ग्यं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — यथा आरोग्यं ... इमे पञ्च नीवरणे पहीने अत्तनि समनुपस्सति, दी. नि. 1.65; तस्मा भगवा आरोग्यमिव व्यापादप्पहानं आह, दी. नि. अड्ड. 1.175; — ग्या/तो प. वि., ए. व. — यं लोके पियरुपं सातरुपं तं ... आरोग्यतो अदक्खुं, स. नि. 1(2).96; सत्ता ... आरोग्या दुम्मोचया, महानि. 22; — स्स प. वि., ए. व. — आरोग्यस्स पच्चयो होति, ध. स. अड्ड. 173; — ग्ये सप्त. वि., ए. व. — व्याधिधम्मो आरोग्ये, स. नि. 3(2).293; इति, पटिसञ्चिक्खतो यो आरोग्ये आरोग्यमदो सो सब्बसो पहीयि, अ. नि. 1(1).170; स. प. के अन्तः, — आरोग्ययोब्बनजीवितमदसङ्काता तिविधा मदा पमादो नाम

जायति, जा. अड्ड. 5.95; — काम त्रि., ब. स., अच्छे स्वास्थ्य की कामना करने वाला, हर प्रकार से सुखी जीवनवृत्ति की कामना करने वाला — मा पु., प्र. वि., ब. व. — आरोग्यकामा सत्ता व्याधिना पटिविरुद्धा, महानि. 305; — काल पु., तत्पु. स. [आरोग्यकाल], रोग से मुक्त रहने अथवा हर तरह से स्वस्थ एवं कुशलयुक्त रहने का समय — ले सप्त. वि., ए. व. — दहरकाले आरोग्यकाले, अ. नि. अड्ड. 3.34; — ड्ड पु., तत्पु. स. [आरोग्यार्थ], रोगमुक्त अथवा हर तरह के कष्टों से मुक्त होने का अर्थ — ड्डेन त्. वि., ए. व. — अपिच आरोग्यड्डेन अनवज्जड्डेन कोसत्तलसम्भूतड्डेन च कुसलं, ध. स. अड्ड. 108; — पद नपुं., तत्पु. स. [आरोग्यपद], आरोग्य शब्द — दं प्र. वि., ए. व. — आरोग्यपदं सब्बपदेहि योजेत्वा कुतमेकं खण्डचक्कं, पारा. अड्ड. 2.101-102; — परम त्रि., ब. स. [आरोग्यपरम], वह, जिसमें अच्छे स्वास्थ्य की महत्ता सर्वोपरि रहे, आरोग्य को सर्वोपरि रखने वाला — मा पु., प्र. वि., ब. व. — आरोग्यपरमा लाभो, निब्बानं परमं सुखं, म. नि. 2.186; आरोग्यपरमाति गाथाय ये केवि धनलाभा वा यसलाभा वा पुत्तलाभा वा अत्थि, आरोग्यं तेसं परमं उत्तमं, ... आरोग्यपरमा लाभो, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.157; — प्यत्त त्रि., [आरोग्यप्राप्त], आरोग्य को प्राप्त, अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त, हर प्रकार के दुखों के अन्त को प्राप्त — त्तं पु., द्वि. वि., ए. व. — परमं आरोग्यप्यत्तं ... निब्बानप्यत्तन्ति परस्सामि सुद्धं परमं अरोगं, महानि. 60; — भाव पु., रोगमुक्ताता, व्याकुलता का अभाव, अनातुरता, स्वस्थता, शरीर एवं चित्त की अव्याकुलता — वं द्वि. वि., ए. व. — आरोग्यभावं कथेत्वा तं आदाय आगच्छेय्याथ, जा. अड्ड. 3.52; — भूत त्रि., वह, जो व्याकुलतारहित हो चुका है, हर तरह से शान्त अवस्था को प्राप्त — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आरोग्यन्ति आरोग्यभूतं, पटि. म. अड्ड. 2.293; — मद पु., तत्पु. स. [आरोग्यमद], रोगों से मुक्त हो जाने का घमण्ड, स्वस्थ रहने का मद — दो प्र. वि., ए. व. — तयोमदा — आरोग्यमदो, योब्बनमदो, जीवितमदो, दी. नि. 3.176; तेसु अहं निरोगो सद्धि वा सत्तति वा वस्सानि अतिक्कन्तानि, न मे हरीतकीखण्डमि खादितपुब्बं, इमे पनज्जे असुकं नाम ठानं रुज्जति, भेसज्जं खादामाति विचरन्ति, को अज्जो मादिसो निरोगो नामाति एवं मानकरणं आरोग्यमदो, दी. नि. अड्ड. 3.170; यो आरोग्ये आरोग्यमदो सो सब्बसो पहीयि, अ. नि. 1(1).170; — मदमत्त त्रि.,

## आरोचक

193

## आरोचापेति

अच्छे स्वास्थ्य के घमण्ड से भरा हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आरोग्यमदमत्तो वा, भिक्खवे ... दुच्चरितं चरति, अ. नि. 1(1).171; - लाभ पु., तत्पु. स. [आरोग्यलाभ], स्वास्थ्य का लाभ - भं द्वि. वि., ए. व. - सब्बेसु तेसु लाभेषु आरोग्यलाममुत्तमं सेद्वन्ति बुद्धो देसेसि, चू. वं. 99. 180-181; - ग्यावह त्रि., स्वास्थ्यप्रद, हितकारक - हं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आरोग्यावहं अगदं, पे. व. अहु. 171; - विनासक त्रि., स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला, स्वास्थ्य के लिए घातक - को पु., प्र. वि., ए. व. - आरोग्यविनासको रोगो एव रोगब्यसनं, पारा. अहु. 1.178; - विलुम्पनद्व पु., स्वास्थ्य को लूट लेने या नष्ट करने का तात्पर्य - द्वेन तु. वि., ए. व. - आरोग्यविलुम्पनद्वेनेव रोगो, सु. नि. अहु. 1.80; - सम्पदा स्त्री., तत्पु. स. [आरोग्यसंपत्ति], स्वास्थ्य-संपत्ति, अच्छे स्वास्थ्य के रूप में धन-संपत्ति - दा प्र. वि., ए. व. - पच्च सम्पदा - जातिसम्पदा, भोगसम्पदा, आरोग्यसम्पदा, सीलसम्पदा, दिट्ठिसम्पदा, दी. नि. 3.188; आरोग्यस्स सम्पदा आरोग्यसम्पदा, दी. नि. अहु. 3.192; - साला स्त्री., तत्पु. स. [आरोग्यशाला], चिकित्सालय, अस्पताल - लं द्वि. वि., ए. व. - आरोग्यसालं कारेसि, अ. नि. अहु. 1.232; - सासनमत्त नपुं., स्वास्थ्य-विषयक शिक्षा-मात्र - तं द्वि. वि., ए. व. - एतत्तं कालं तुम्हाकं सन्तिके वसन्तो आरोग्यसासनमत्तमि न लभामि, जा. अहु. 5.286.

**आरोचक** त्रि., आ + रुच से व्यु. [आरोचक], उद्घोषक, घोषणा करते हुए कहने वाला, केवल स. उ. प. में प्रयुक्त, उपोसथा. के अन्त. द्रष्ट.

**आरोचन** नपुं., आ + रुच से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. आरोचन/आरोचनता], उद्घोषणा, सूचना, कथन - नं प्र. वि., ए. व. - एतस्स आरोचनं नप्पमाणं, पारा. अहु. 2.257; 276; भिक्खुसम्मुतिया च आरोचनं ... भगवता अनुज्जातं, पाधि. अहु. 17; - नेन तु. वि., ए. व. - अनत्तमनस्स सतो परेसं आरोचनेनपि दोसो, अ. नि. अहु. 2.12; - ने सप्त. वि., ए. व. - पढमे आरोचने भिक्खुनिया दुक्कटं, दुतिये थुल्लच्चयं, पाधि. अहु. 170; एकस्सारोचने तस्सा होति आपत्ति दुक्कटं, उक्त. वि. 180; स. उ. प. के रूप में, अभूता, काला, दुतिया, देवता, पढमा, परम्परा, भूता, सासना. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, - तथ पु., तत्पु. स. [आरोचनार्थ], कहने का अर्थ, बतलाने का अर्थ - तथे सप्त. वि., ए. व. - आरोचनत्थे ... तदत्थे,

... तुमत्थे ... अलमत्थे ... मज्झतिप्पयोगे अनादरे अप्पाणिनि, क. व्या. 279; यग्धेति आरोचनत्थे निपातो, पारा. अहु. 1.160; - किच्च नपुं., तत्पु. स. [आरोचनकृत्य], बतलाने अथवा सूचित करने का काम - च्वं प्र. वि., ए. व. - इतो चितो च परियेसित्वा आरोचनकिच्चं नाम नत्थि, पाधि. अहु. 111; - लेखकामच्च पु., द्व. स., राजकीय आदेशों को तैयार करने वाले एवं उन्हें निर्गत करने वाले लेखक एवं मन्त्री - च्चेहि तु. वि., ब. व. - आरोचनलेखकामच्चोहि अभियाचितो, सा. वं. 141.

**आरोचनक** त्रि., उद्घोषक, सूचक, बतलाने वाला, स. उ. प. में प्रयुक्त, अवस्सा. - अवश्य कहने वाला - स्स पु., ष. वि., ए. व. - तं अदिस्वा अज्जतरस्स अवस्सारोचनकस्स 'आरोचेही'ति वत्ता पच्चाहरति, आपज्जतियेव, कट्ठा. अहु. 134; भूता. - कायिक एवं वाचिक आपत्तियों अथवा अपराधों को कहने वाली - का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - भूतारोचनका नाम, तीहि ठानेहि जायति, परि. 187.

**आरोचना** स्त्री., स. उ. प. में प्रयुक्त, उपरिवत्; अना. - उद्घोषणा अथवा सूचना का अभाव, नहीं बतलाना - आगन्तुकादीनं अनारोचना, चूळव. अहु. 14.

**आरोचयति** आ + रुच का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., कहता है, सूचित करता है, प्रकाशित करता है, द्रष्ट. आरोचेति के अन्त.

**आरोचयितु** पु., आ + रुच के प्रेर. से व्यु., क. ना. [आरोचयितु], सूचक, उद्घोषक, प्रकाशक, कथन करने वाला - तो प्र. वि., ए. व. - कोचिस्स आरोचयितापि नत्थि, पारा. अहु. 2.5.

**आरोचापन** नपुं., आ + रुच के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना., सूचित कराना, उद्घोषित कराना, कहलाना - नं प्र. वि., ए. व. - भिक्खून् आरोचापनं, ध. प. अहु. 1.341.

**आरोचापेति** आ + रुच के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [बौ. सं., आरोचापेति], किसी अन्य द्वारा घोषणा कराता है, दूसरे से सूचित कराता है अथवा कहलवाता है, दूसरे को जनवाता है - आरामिकेहि अत्तनो उपकारभावं सहुस्स आरोचापेति, स. नि. अहु. 3.76; - त्तास्स वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व., (सूचित करवाने वाले को) - तस्स तं पवर्ति सयं आरोचेन्तस्स वा अज्जेन आरोचापेन्तस्स वा सहादिसेसो, कट्ठा. अहु. 134; - थ अनु. म. पु., ब. व. - पटिसामनहानं मे आरोचापेथाति, ध. प. अहु. 1.295; - य्यं विधि., उ. पु., ए. व. - भगवतो महापरिसाय

## आरोचिक

194

## आरोचेति

सन्निपतितभावं आरोचापेय्यन्ति, दी. नि. अ. 1.250; - सि अद्य, प्र. पु., ए. व. - भगवतो कालं आरोचापेयि, महाव. 43; 289; - सुं ब. व. - भगवतो कालं आरोचापेयुं, दी. नि. 2.69; - त्वा पू. का. कृ. - उभिन्नमि वत्थु आरोचापेत्वा उभिन्नमि पटिञ्जा सोतब्बा, परि. 414; - तब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. - सचे उभो अत्थपच्चत्थिका आगच्छन्ति, उभिन्नमि वत्थु आरोचापेतब्बं, परि. 414.

आरोचिक त्रि., आ + √रुच से व्यु., आरोचक के स्थान पर यत्र तत्र प्रयुक्त [आरोचिक], सूचित करने वाला, घोषणा करने वाला, बतलाने वाला - का स्त्री., प्र. वि., ब. व. - उपोसथारोचिका देवता तत्थ तत्थ गन्त्वा आरोचेन्ति, पारा. अ. 1.141.

आरोचित त्रि., आ + √रुच के प्रेर. का भू. क. कृ. [बौ. सं. आरोचित], उद्घोषित, सूचित, कहा हुआ, बतलाया हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - सचे आरामे कालो आरोचितो होति, चूळव. 356; महाथेरेहि आरोचितो भिक्खुसङ्गो, अ. नि. अ. 3.261; - ते पु., सप्त. वि., ए. व. - आरोचितेयेव काले अगमासीति वेदितब्बो, पारा. अ. 1.162; - ताय स्त्री., सप्त. वि., ए. व. - आरोचिताय चित्तप्पवतिया वत्तब्बो, पारा. अ. 1.186; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - वत्थु वा आरोचितं होति अविनिच्छित्तं, पाचि. 204; चोदकेन च वुदितकेन च अत्तनो कथा कथिता, अनुविज्जको सम्मतो, एत्तावतापि वत्थुमेव आरोचितं होति, पाचि. अ. 137; ... यत्थ कथयि आरोचितं उदेसभत्तं तस्मिंयेव भनुदेसद्धाने गाहेतब्बं, चूळव. अ. 88; - तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - किं आवुसो आरोचितेन, स. नि. अ. 1.190; - ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. - ... तेन तस्मिं कारणे आरोचिते ..., जा. अ. 4.385; - कथा स्त्री., कर्म. स., कही हुई कथा, पहले कहा जा चुका वचन - थं द्वि. वि., ए. व. - आरोचितकथं सुत्वा, उभिन्नमि यथा तथा, विन. वि. 2018; - काल पु., कर्म. स., बतलाया हुआ काल, निर्धारित किया हुआ समय - तो प. वि., ए. व. - आरोचितकालतो पट्टाय च एकं भिक्खुं उपेत्वा सेसेहि सति करणीये गन्तुमि वट्ठति, चूळव. अ. 17; 31; - क्खण पु., कर्म. स., बतलाया हुआ क्षण - णे सप्त. वि., ए. व. - अयं पन आरोचितक्खणेयेव पाराजिकं आपज्जति, पारा. अ. 2.73; - दिवस पु., कर्म. स., निर्धारित दिन, पहले से बतलाया हुआ दिन -

तो प. वि., ए. व. - आरोचितदिवसतो पट्टाय, चूळव. अ. 25; - नियाम पु., कर्म. स., बतलाया हुआ तरीका या विधान, बतलाई हुई पद्धति, बतलाया हुआ मार्ग अथवा उपाय - मेन तृ. वि., ए. व. - ते मुखं विक्खालेत्वा रज्जो आरोचितनियामेनेव आरोचेसुं, अ. नि. अ. 1.241; - भाव पु., कर्म. स., सूचित किया हुआ भाव, मनोगत भाव - वं द्वि. वि., ए. व. - सेवको रज्जो आरोचितभावं जत्त्वा, जा. अ. 2.174; - सज्जा स्त्री., कर्म. स., पूर्व में प्रकाशित संज्ञा या समझ - य तृ. वि., ए. व. - तुम्हेहि आरोचितसज्जाय नियामको भविस्सामीति, जा. अ. 4.126.

आरोचेति' / आरोचयति आ + √रुच का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रायः आरोचेति रूप में ही प्राप्त [बौ. सं. आरोचयति], शा. अ., प्रकाशित करा देता है, प्रकट करा देता है, साफ साफ दिखलवा देता है, ला. अ., स्पष्ट रूप से कह देता है, वर्णन या बखान कर देता है, उद्घोषित करता है, सूचित कर देता है - आरोचेति आरोचयतीति रूपानि दिस्सन्ति, स. 2.478; पारिसुद्धिहारको ये, ... सुत्तो न आरोचेति, पमतो न आरोचेति, समापन्नो न आरोचेति, महाव. 151; ... अज्जो भिक्खु भिक्खुस्स आरोचेति ... अज्जापन्नोति, चूळव. 402; आरोचेतीति बुद्धरक्खितो धम्मरक्खितस्स, धम्मरक्खितो सङ्गरक्खितस्स 'अम्हाकं आचरियो एवं वदति', पारा. अ. 1.296; - चेमि / चयामि उ. पु., ए. व. - 'यं खो मे, ... सम्मुखा पटिग्गहितं, आरोचेमि तं भगवतोति, दी. नि. 2.162; आरोचयामि वो, मो. व्या. 2.21; आरोचयामि खो ते, सुनक्खत्त, दी. नि. 3.4; - न्ति प्र. पु., ब. व. - थेरा भिक्खू परचित्तविदुनो भिक्खून् आरोचेन्ति ... जानातीति, चूळव. 398; - स्सथ म. पु., ब. व. - कथञ्चि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुस्स ... आरोचेस्सथ, पाचि. 47; - म उ. पु., ब. व. - आगमेन्तु ताव भवन्तो निरयपाला, याव मयं पायासिस्स राजज्जस्स गन्त्वा आरोचेम, दी. नि. 2.241; - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तो, परि. 63; पुरिसस्स हि मत्ति इत्थिया आरोचेन्तो जायतने आरोचेति, इत्थिया मत्ति पुरिसस्स आरोचेन्तो जायतने आरोचेति, पारा. अ. 2.127; - न्तेन पु., तृ. वि., ए. व. - यस्मा पनेत्तं आरोचेन्तेन त्वं किरस्स जाया भविस्ससीति आदि वत्तब्बं होति, पारा. अ. 2.127; - न्तस्स / चयतो वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. - अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तस्स

## आरोचेति

195

## आरोदन

पाचितियं कथं पञ्जतन्ति, परि. 23; - न्ता वर्त. कृ. पु. प्र. वि. ब. व. - नगरवीथीसु आरोचेन्ता विचरिसु, ध. प. अ. 2.117; - न्तेहि तृ. वि. ब. व. - भोजनकालादीसु थुतिवसेन कालं आरोचेन्तेहि सूतेहि चेव मागधकेहि च वण्णिते, जा. अ. 7.232; - न्ती स्त्री., प्र. वि., ए. व. - निवत्तभावं सत्थु आरोचेन्ती, उदा. अ. 346; - तु अनु., प्र. पु., ए. व. - 'सहायकोपि, भिक्खवे, सहायकस्स आरोचेत्तु'ति, दी. नि. 2.116; - अम्हेसु यो पठम अमतं अधिगच्छति, सो इतरस्स आरोचेत्तु'ति, ध. प. अ. 1.53; - असोकं धम्मराजानं एवं चारोचयाहि तं, दी. वं. 15.6; - चेहि / चयाहि म. पु., ए. व. - पारिसुद्धिं मे आरोचेही'ति, महाव. 150; - थ म. पु., ब. व. - पारिसुद्धिं आयस्मन्तो आरोचेथ, महाव. 130; - य्य विधि., प्र. पु., ए. व. - एतमत्थं ... न आरोचेय्य, आपत्तिं दुक्कटस्सा'ति, चूळव. 429; - य्यासि म. पु., ए. व. - यथा ते भगवा व्याकरोति, तं साधुकं उगगहेत्वा मम आरोचेय्यासि, दी. नि. 2.56; - य्यं उ. पु., ए. व. - 'यन्नूनाहं भगवतो एतमत्थं आरोचेय्य'न्ति, पाचि. 52; - य्यु प्र. पु., ब. व. - तं चे ते पुरिसा एवमारोचेय्युं, दी. नि. 1.53; - य्याथ म. पु., ब. व. - तेन हि, भन्ते, भगवन्तं पटिपुच्छित्वा मम आरोचेय्याथा'ति, चूळव. 271; - य्याम उ. पु., ब. व. - मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम नास्सस्स मनापं, चूळव. 322; - चयी / सि' अद्य., प्र. पु., ए. व. - मातु आरोचयी दासी, माता पुच्छिय धीतरं, रज्जो आरोचयी ..., म. वं. 9.19-20; - अथ खो अन्तरहिता दवता भगवतो आरोचेसि, महाव. 10; - सि' म. पु., ए. व. - 'पस्स, अय्य, पत्ते गम्भं, मा च कस्सचि आरोचेसी'ति, चूळव. 432; - चयिं / सिं उ. पु., ए. व. - अन्तमनो समानो परेसं आरोचेसिं, अ. नि. 1(1).71; - कालमारोचयिं अहं, अप. 1.36; - यिंचु / सुं प्र. पु., ब. व. - अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं, महाव. 49; 60; - एके च पब्बज्जमरोचयिसु, थेरगा. 724; - अथ रज्जो आगन्त्वा आरोचयिसुं, स. नि. अ. 3.100; - यित्थ म. पु., ब. व. - मनुस्सं घातयित्थ, अभूतं आरोचयित्था'ति, पारा. अ. 2.158; - चिम्ह / यिम्हा उ. पु., ब. व. - किं नु खो मयं आयस्मतो अनुरुद्धस्स एवमारोचिम्ह, म. नि. 1.273; - सासनं आरोचयिम्हा'ति, ध. प. अ. 1.317; - स्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - न हि नाम मे कोचि आरोचेस्सती'ति, महाव. 466; - यिस्सामि / स्सामि उ. पु., ए. व. - तानि

आरोचयिस्सामि, तं सुणाथ यथा तथं, अ. नि. 2(2).234; - एकस्स होति आरोचेस्सामीति, एककस्स होति न आरोचेस्सामीति, चूळव. 162; - तानि आरोचयिस्सामि, तं सुणाथ तथा तथं, अ. नि. 2(2).234; - स्सन्ति प्र. पु., ब. व. - कथञ्चि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुस्स दुट्ठत्तं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेस्सन्ती'ति, पाचि. 47; - स्सथ म. पु., ब. व. - सवे तुम्हे, आयस्मन्तो, अम्हाकं इमं अधिकरणं यथाजातं यथासमुपपन्नं आरोचेस्सथ, चूळव. 205; - स्साम उ. पु., ब. व. - मयं इमं अधिकरणं आयस्मन्तानं आरोचेस्साम, चूळव. 206; - तुं / यितुं निमि. कृ. - अनुजानामि, भिक्खवे, आरोचेतुं अज्जुपोसथो'ति, महाव. 147; - त्वा / त्वान पू. का. कृ. - आनन्दत्थेरोपि अनाथपिण्डकादीहि पेसितत्तासनं आरोचेत्वा, ध. प. अ. 1.38; - सो तं सज्जातसंवेंगो आरोचेत्तान राजिनां, म. वं. 23.62; - तब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - ओवादो न आरोचेतब्बो, चूळव. 429; - तब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. - पारिवासिकेन, भिक्खवे, भिक्खुना आगन्तुकेन आरोचेतब्बं, आगन्तुकस्स आरोचेतब्बं, उपोसथे आरोचेतब्बं, पवा.....य आरोचेतब्बं, सचे गितानो होति, दूतेनपि आरोचेतब्बं, व. 79; - यमाना वर्त. कृ., आत्मने., कर्म. वा., पु., प्र. वै., ब. व. - कहे गए - भगवतो एतमत्थं आचिक्खिंसु पटिवेदं, येसु आरोचयमाना च नेव पियकम्यताय न भेदपुरेक्खारताय ..., न'न्ति मज्जमाना अ-चेसुं, पारा. अ. 1.168-69.

आरोदन / आरोदना नपुं. / स्त्री., आ + रुद से व्यु., क्रि. ना. [आरोदन, नपुं.], रोना, विलाप करना, अनुताप, रोदन क्रिया - ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - बहुनो जनस्स आरोदना, अ. नि. 2(1).250; - आरोदनाति आरोदनह्वानं, अ. नि. अ. 3.86; - नाय नपुं., च. वि., ए. व. - इदमस्स आरोदनाय वदामि, अ. नि. 2(1).251; - नं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - आरोदनं दस्सेसि, ध. प. अ. 1.107; - नेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - अइमो आरोदनेन, दी. नि. अ. 2.134; - नाकारप्पत्तं त्रि., रोता हुआ सा, रोती हुई सी सूरत शक्ल वाला - तो पु., प्र. वि., ए. व. - दुक्खे उप्पन्ने आरोदनाकारप्पत्तो विय होति, विसुद्धि. 1.284; - काल पु., तत्पु. स., रोने का समय - ले सप्त. वि., ए. व. - अनहिक्कालेति रोदनकाले, जा. अ. 3.195; - परिदेवन नपुं., द्व. स., रोना-कलपना, रोना और विलाप करना - नं प्र. वि., ए. व. - मनुस्सानं महन्तं आरोदनपरिदेवनं अहोसि, जा. अ. 1.44; - पत्त त्रि.,

## आरोपक

196

## आरोपित

तत्पु. स. [आरोदनप्राप्त], रोने की अवस्था को प्राप्त, रो रहा जैसा - त्ता पु., प्र. वि., ब. व. - एकच्ये आरोदनप्यत्ता अहोसि, उदा. अ. 349; - त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - वनं आरोदनप्यत्तं विय पथवीकम्पमानाकारप्यत्ता विय अहोसि, ध. प. अ. 1.80; - सद् पु., तत्पु. स. [आरोदनशब्द], रोने की आवाज - हो प्र. वि., ए. व. - पथविउन्द्रियनसहो विय आरोदनसहो अहोसि, ध. प. अ. 1.305; - तो प. वि., ए. व. - सत्थु परिनेब्बाने आरोदनसहतोपि कारुज्जतरो अहोसि, ध. प. अ. 1.305.

**आरोपक** त्रि., स. उ. प. में प्रयुक्त, स्थापित करने वाला, खड़ा करने वाला, ऊपर की ओर उठाने वाला, **धम्मा**. - पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम - को प्र. वि., ए. व. - इत्थं सुदं आयस्मा धम्म आरोपको थेरो इमा गाथायो अभसिस्थाति, अप. 1.174; निब्बुते लोकनाथम्हीतिआदिकं आयस्मतो धम्म आरोपकत्थेरस्स अपदानं, अप. अ. 2.144.

**आरोपना/आरोपन** स्त्री./नपुं., आ + रुह के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आरोपण], ऊपर की ओर उठाना, समुन्नत कराना, (किसी पर अथवा किसी में) रखना अथवा स्थापित करना - ना प्र. वि., ए. व. - यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहस्स आरोपना, सो तुण्हस्स पाचि. 194; - त्थ पु., स्थापित करने का प्रयोजन समुन्नत करने या ऊपर उठाने का प्रयोजन - तस्स पराजयं आरोपनत्थं 'अधम्मं धम्मो'ति आदीनि दीपेत्वा ..., परि. अ. 197; - काल पु., तत्पु. स., चढ़ाने का समय - लो प्र. वि., ए. व. - एकनावं आरोपनकालो विय, ... एकसकटं ..., स. नि. अ. 3.88; - समत्थता स्त्री., भाव., धनुष को खींचने अथवा चढ़ाने में सक्षमता - य तृ. वि., ए. व. - धनुं आरोपनसमत्थताय सहस्सबाहु, जा. अ. 5.265; - नारह त्रि., तत्पु. स., बतलाने योग्य, प्रकाशित करने योग्य, सूचित करने योग्य - हो पु., प्र. वि., ए. व. - उपायस्स दोसं आरोपनारहो, म. नि. अ. (म.प.) 2.247.

**आरोपनीय** त्रि., आ + रुह से प्रेर., सं. कृ. [आरोपनीय], आरोपण करने योग्य, ऊपर की ओर स्थापित करने योग्य, धारण करने योग्य - यो पु., प्र. वि., ए. व. - तस्सारोपनीयो मोहो, उत्तरिमि हि भिक्खुनो, विन. वि. 1726.

**आरोपमानक** त्रि., आ + रुह के कर्म. वा. के वर्त. कृ., आत्मने. से व्यु. [आरोप्यमानक], ऊपर चढ़ाया जा रहा, आरोपित किया जा रहा - कं नपुं., प्र. वि., ए. व. - नन्दमानागतं चित्तं सूलमारोपमानकं, थेरगा. 213;

सूलमारोपमानकन्ति दुक्खुप्पत्तिट्ठानताय सूलसदिसत्ता सूलं तं तं भवं कम्मकिलेसेहि एत्तकं कालं आरोपियमानं, थेरगा. अ. 1.365.

**आरोपापेति** आरोपेति का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., क. किसी अन्य द्वारा रखवाता है, दूसरे द्वारा चढ़वाता है - मक्कटे वा परिपातेत्वा तत्थ आरोपेति, अज्जेन वा आरोपापेति, वग्गुलियो वा तत्थ आरोपेति परेन वा आरोपापेति, पारा. अ. 1.278; **ख.** (पुस्तक में) लिखवाता है - अत्थयोजनानयं पोत्थके आरोपापेसि, सा. वं. 141(ना.).

**आरोपित** त्रि., आ + रुह के प्रेर. का भू. का. कृ., शा. अ., ऊपर रख दिया गया, स्थापित, ऊपर न्यस्त, ला. अ., साथ में प्रयुक्त ना. प. के अनुरूप अनेक अर्थों का संकेतक - तो पु., प्र. वि., ए. व. - तेलपदीयो आरोपितो, महाव. 302; - तेन पु., तृ. वि., ए. व. - एकेन भिक्खुना पण्णे आरोपितेना'ति, ध. प. अ. 1.321; - ते पु., सप्त. वि., ए. व. - आरोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति पाचितियस्स, पाचि. 194; - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - एकेकस्स पन ... विसुं विसुं तन्ति आरोपिताति, अ. नि. अ. 2.196; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - पीठे वा पीठं आरोपितं होति, चूलव. 350; - तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - तं इन्द्वीलतो पद्माय आरोपितेन आवरियधनुना पञ्चधनुसतप्पमाणन्ति वेदितब्बं, पारा. अ. 1.240; - स्स नपुं., ष. वि., ए. व. - आकासं आरोपितस्स रत्तिभागे समन्ता योजनप्पमाणं ओकासं आभा फरति, दी. नि. अ. 2.195; - ता नपुं., प्र. वि., ब. व. - आरोपिता च ते पुष्पा, अप. 1.96; - त्तं नपुं., भाव. [आरोपितत्व], आरोपित होना - त्ता प. वि., ए. व. - ओजाय आरोपितत्ता हत्थसतुब्बेधस्स रुक्खस्स ..., स. नि. अ. 2.74; - दीप पु., कर्म. स., रखा गया दीपक - पं द्वि. वि., ए. व. - आरोपितदीपं दीपरुक्खमिदं, बु. वं. अ. 56; - धनु नपुं., कर्म. स., चढ़ाया हुआ धनुष - नूनि द्वि. वि., ब. व. - सजियानि आरोपितधनूनि, अ. नि. अ. 3.29; - नय पु., कर्म. स., निर्धारित पद्धति, उत्कृष्ट पद्धति, स्थापित पद्धति - येन तृ. वि., ए. व. - पञ्च अरहन्तसतानि सङ्गहं आरोपितनयेनेव गणसज्झायमकसु, पारा. अ. 1.12; - मण्ड त्रि., ब. स., सामग्री अथवा माल-असबाब को ऊपर चढ़ा चुका - ण्डो पु., प्र. वि., ए. व. - सुवण्णभूमिं गमिरसामीति आरोपितमण्डो नावं अभिरुहि, उदा. अ. 62; - भार त्रि., ब. स., वह, जिस पर भार लाद दिया गया है, भारयुक्त व्यक्ति - रं

## आरोपेति

197

## आरोपेति

पु., द्वि. वि., ए. व. — सङ्गेन आरोपितभारं भिक्षून् वा फासुविहारत्वाय समयमेव तं भारं वहन्तं ..., पाचि. अ. 33; — वचनानुरूपेण क्रि. वि., तृ. वि., ए. व., स्थापित किए हुए वचनों के अनुरूप — भगवा पन देवताय आरोपितवचनानुरूपेण एवमाह, स. नि. अ. 1.23.

आरोपेति / आरोपयति आ + रुह का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., द्विकर्मक [आरोहयति], शा. अ., ऊपर जाने हेतु प्रेरित करता है, चढ़वाता है, आरुढ़ कराता है, ला. अ., 1. रखवाता है, रखवा देता है, स्थापित करा देता है (किसी पर) बैठा देता है, ऊपर की ओर उठा देता है, समुन्नत करा देता है, (की ओर) ले जाता है, सौंप देता है, हस्तान्तरित करा देता है, ला. अ., 2. (वाद के साथ प्रयुक्त होने पर) खण्डन कर देता है, मात कर देता है, पराजित करना है, 3. तैयार हो जाता है, तत्पर हो जाता है, निष्पादित करता है, 4. कहता है, प्रदर्शित करता है, देता है — कलिसासनं आरोपेति, आपत्ति दुक्कटस्स, पाचि. 129; ... कोधो, तस्स सासनं आरोपेति, कोधस्स आणं आरोपेति, पाचि. अ. 110; सङ्गो इत्थन्नामस्स भिक्षुनो मोहं आरोपेति, पाचि. 194; — न्ति प्र. पु., ब. व. — सम्यज्जलितोहि अयमुग्गरेहि पोथेन्ता आरोपेन्ति, म. नि. अ. (उप.प.) 156; तमेनं, भिक्षवे, निरयपाला महन्तं अङ्गारपब्बतं आदितं ... आरोपेन्तिपि ओरोपेन्तिपि, म. नि. 3.206; — म उ. पु., ब. व. — मयं, भन्तो, बुद्धवचनं छन्दसो आरोपेमाति, चूळव. 260; वेदं विय सककतभासाय वाचनामग्गं आरोपेम, चूळव. अ. 57; — न्तो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., चढ़ा रहा, रखवा रहा — चेतियं वन्दन्तो चेतिये गन्धमालं आरोपेन्तो, महानि. 315; — न्ते पु., द्वि. वि., ब. व., चढ़ाए जा रहे को — पुरिसं पस्सामि ... सूत्तेसु आरोपेन्ते, मि. प. 269; — न्तेहि पु., तृ. वि., ब. व. — रखवा रहे, विन्यस्त कर रहे — नवङ्गं सत्थुसासनं तीहि पिटकेहि सङ्गण्हित्वा वाचनामग्गं आरोपेन्तेहि पुब्बाचरियेहि ..., खु. पा. अ. 5; — पयतो पु., ष. वि., ए. व. — तिलक्खणं आरोपयतो ..., विसुद्धि. 2.258; — पियन्ता पु., वर्त. कृ., कर्म. वा., प्र. वि., ब. व., स्थापित कराए जा रहे — सूलमारोपियन्ताव, पब्बतेनोत्थटा विय, ना. रू. प. 1708; — पियमानाय स्त्री., वर्त. कृ., कर्म. वा., आत्मने, ष. वि., ए. व. — अपरो धम्मकथिको ... आपत्तिया आरोपियमानाय ..., चूळव. अ. 43; — तु अनु., प्र. पु., ए. व. — अज्जवादकं आरोपेतु, पतिट्ठापेतूति अत्थो,

पाचि. अ. 31; — हि म. पु., ए. व. — त्वं, गहपति, समणस्स गोतमस्स इमस्मिं कथावत्थुस्मिं वादं आरोपेहि, म. नि. 2.43; — न्तु अनु., प्र. पु., ब. व., चढ़ जाएं — आरोपेन्तु धजे तत्थ, चम्मामि कवचानि च, जा. अ. 6.362; — य्य विधि., प्र. पु., ए. व., रूपान्तरित करें, पलटें — ... यो आरोपेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स, चूळव. 260; — य्यं उ. पु., ए. व., दोष निकालूं, खण्डन करूं — अहं वा हि, गहपति, समणस्स गोतमस्स वादं आरोपेय्य, दीघतपस्सी वा, म. नि. 2.43; — य्यं प्र. पु., ब. व., उपरिवत् — भिक्षुं प्हं वा पुच्छेय्यं वादं वा आरोपेय्यं नहानि, 366; — सि' अ. प्र. पु., ए. व., (प्रतिष्ठापित किया, बतलाया) — विसमगतं देवदत्तं तथागतो समं आरोपेसि, मि. प. 120; — सि' म. पु., ए. व. — त्वं पन मं अनरियं मग्गं आरोपेसीति अधिप्पायो, जा. अ. 3.111; पाठा. आरोपेसि; — सिं उ. पु., ए. व. — आरोपेसिं धजत्थम्भं, बुद्धसेट्ठस्स चेतिये, अप. 1.173; — पेसुं प्र. पु., ब. व. — एतेनेव उपायेन खन्धकपरिवारेपि आरोपेसुं, पारा. अ. 1.12; — पयि अ. प्र. पु., ए. व. — विहारं वेदिसगिरिं थेरं आरोपयी सुमं, म. वं. 13.7; आरोपयी ति पटिपादयि, म. वं. टी. 283(ना.); — पयिं उ. पु., ए. व. — सुफुल्लपदुमं गह, चित्तमारोपयिं अहं, अप. 1.96; आरोपयिं पूजेसिन्ति अत्थो, अप. अ. 2.65; — यिसुं प्र. पु., ब. व. — तं सुसानं नेत्वा खदिरसूलं आरोपयिसुं, जा. अ. 4.27; — स्सति भवि., प्र. पु., ए. व., खण्डन करेगा, दोषमुक्त बताएगा — अयं मे भिक्षु वेय्याकरणेन अनारद्धचित्तो वादं आरोपेस्सति, दी. नि. अ. 1.293; — स्सामि उ. पु., ए. व. — गोतमस्स इमस्मिं कथावत्थुस्मिं वादं आरोपेस्सामि, म. नि. 2.43; — स्सन्ति प्र. पु., ब. व. — तत्थ ये मालं वा गन्धं वा चुण्णकं वा आरोपेस्सन्ति, दी. नि. 2.107; — स्साम उ. पु., ब. व. — एवमस्स मयं वादं आरोपेस्साम, म. नि. 1.237; — तुं निमि. कृ. — अनुजानामि, भिक्षवे, अन्वाधिकमपि आरोपेतुं, महाव. 389; आरोपेतुन्ति आगन्तुकपत्तमि दातुं, महाव. अ. 386; न युतं एतस्स दोसं आरोपेतुं, ध. प. अ. 1.272; 'यो मम वादं आरोपेतुं सककोति सो इमं साखं महतू'ति, अ. नि. अ. 1.277; — त्वा पू. का. कृ., 1. खण्डन करके, अपाकृत करके — उपज्झायस्स वादं आरोपेत्वा, महाव. 67; 2. लाद कर, चढ़ा कर, ऊपर चढ़ा कर, रख कर — ... जानपदा मनुस्सा बहुं लोणमपि ... सकटेसु आरोपेत्वा ..., महाव.



## आरोह

198

## आरोहण

296; 3. रखवा कर, जलवाकर, ऊपर रखा कर - ... तेलपदीपं आरोपेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्गमिसु, महाव. 302; तेलपदीपं आरोपेत्वाति ... तेलपदीपं जालापेत्वाति अत्थो, स. नि. अड्ड. 3.86; 4. चढ़वा कर, आरुढ़ करा कर, ऊपर मे रखा कर - ... पञ्चसु हत्थिनिकासतेसु पच्चेका इत्थियो आरोपेत्वा ..., दी. नि. 1.44; - त्वान उपरिवत्, ऊपर चढ़वा कर - आरोपेत्वा न तं नावं, चू. वं. 47.50; - पेत्वा / पयित्वा / पयित्वान / पिय उपरिवत् - ... बलक्कारेन वा यानं आरोपेत्वा ..., पे. वं. अड्ड. 100; 'काजे आरोपयित्वान, भोजपुत्ता हरिसु मं', चरिया. 393; काजे आरोपयित्वानाति अड्डसु ठानेसु विनिविज्झित्वा ..., चरिया. अड्ड. 163; आरोपयित्वा निदोसं, भासं तन्तिनयानुगं, ध. स. अड्ड. 3; नावं आरोपयित्वान राजानं तत्थ कुञ्जरो, म. वं. 35.26; ख्खे आरोपयित्वान अप. 1.383; तस्सा फस्सेनातिरत्तो पिट्ठं आरोपियासु तं, म. वं. 6.8; - तब्ब त्रि., सं. कू., - ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. - मोहो आरोपेतब्बो, पाचि. 194; - ब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - मातिका आरोपेतब्बा, महाव. अड्ड. 399; - ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. - बुद्धवचनं छन्दसो आरोपेतब्बं, चूळव. 260; - ब्बानि ब. व. - मालागन्धादीनि ताव चेति ये आरोपेतब्बानि, महाव. अड्ड. 398; - ब्बकं नपुं., प्र. वि., ए. व. - नारोपेतब्बकं बुद्धवचनं अज्जथा पन विन. वि. 2821; - माना स्त्री., कर्म. वा., वर्त. कू., प्र. वि., ए. व., आरोपित की जा रही - अनन्तमनताय अज्जतिथियपुब्बतं आरोपयमाना, स. नि. अड्ड. 2.159; - पियमानो पु., प्र. वि., ए. व., लगाया जा रहा - तस्मिं तथागतं परेन आरोपियमानो दोसो न रुहति, इति. अड्ड. 246; - नाय स्त्री., ष. वि., ए. व. - निवासन्तानं आपत्तिया आरोपियमानाय 'किं इमेसं आपत्तिं रोपेथ', चूळव. अड्ड. 43.

आरोह पु., आ + रुह से व्यु. [आरोह], क. चढ़ाव, ऊंचाई, लम्बाई, उभार, दीर्घता - हो प्र. वि., ए. व. - आयामो दीघतारोहो, अभि. प. 295; - हं द्वि. वि., ए. व. - आरोहं वा पस्सित्वा परिणाहं वा पस्सित्वा, पु. प. 163; - हेन तृ. वि., ए. व. - मा नं रूपेन पामेसि, आरोहेन पभावति, जा. अड्ड. 5.288; ख. चढ़ने वाला, सवार, घुड़सवार - हो प्र. वि., ए. व. - आरोहो हिताहितविचारणरहितो राजवत्त्वमो, बु. वं. अड्ड. 240; द्वेपादरक्खा आरोहो, एको तिपुरिसोहयो, विन. वि. 1571; - हा ब. व. - आरोहा पन वत्तारो, द्वे द्वे तपादरक्खका,

विन. वि. 1570; - हे द्वि. वि., ब. व. - गजे तुरङ्गे भिन्दित्वा आरोहे च निपातयुं, चू. वं. 70.233; ग. वह, जिस पर चढ़ा जाए, ऊंची जगह, टीला, पहाड़ - आरुहतीति आरोहो, वि. व. अड्ड. 27; स. उ. प. के रूप में, अस्ता., नागराजा., स्था., वण्णना., वरा., सुखा., स्वा., हत्था. के अन्त. द्रष्ट.

आरोहक पु., आरोह से व्यु. [आरोहक], सवारी करने वाला, सवार - को प्र. वि., ए. व. - एको आरोहको, पाचि. अड्ड. 113; दिस्वा ... अयं आरोहको मम, म. वं. 23.71; - नकं द्वि. वि., ए. व. - यानमि आरोहनकमि भज्जति, महानि. 106; पाठा. आरोहनक; - स्स ष. वि., ए. व. - आरोहकस्स वेकत्ता इत्थी मं लङ्घयीति, म. वं. 24.37; - का प्र. वि., ब. व. - वत्तारो आरोहका, पाचि. अड्ड. 113.

आरोहकम्बु त्रि., ब. स., 1. उन्नत अथवा उठी हुई गर्दन वाला, 2. ऊंचाई के अनुरूप विशाल - म्बू पु., प्र. वि., ब. व. - आरोहकम्बु सुजवा ब्रह्ममा, वि. व. 1021; आरोहकम्बूति उच्चा चैव तदनुरूपपरिणाहा च, आरोहपरिणाहसम्पन्नाति अत्थो, वि. व. अड्ड. 233.

आरोहण/आरोहन नपुं., आ + रुह से व्यु., क्रि. ना. [आरोहण], 1. ऊपर की ओर उठना, सवार होना, ऊपर चढ़ना, 2. घोड़े की सवारी करना, 3. सीढ़ी, जीना - णं प्र. वि., ए. व. - सोपानोवारोहणं च निस्सेणी साधिरौहणी, अभि. प. 216; मूलेहि ओजाय आरोहनं विय, स. नि. अड्ड. 2.74; - नं द्वि. वि., ए. व. - ततो निस्सेणितो पपतति, न आरोहनं सम्यादेति, खु. पा. अड्ड. 53; - णाय च. वि., ए. व. - निस्सेणिं करेय्य पासादस्स आरोहणाय, दी. नि. 1.172; - ने सप्त. वि., ए. व. - आरोहने महानिधि, अत्थो ओरोहने निधि, जा. अड्ड. 6.45; आरोहने निधीति मङ्गलहत्थिं आरोहनकाले सुवण्णनिस्सेणिया अत्थरणङ्गानतो निधिं नीहरापेसि, जा. अड्ड. 6.49; - कण्ठ पु., तत्पु. स., ऊपर को जा रहा अथवा उड़ रहा वाण - ण्ठेन तृ. वि., ए. व. - किं महाराज, एतं अम्बपिण्डं उद्धं आरोहनकण्ठेन पातेमि, उदाहु अधो आरोहनकण्ठेनाति, जा. अड्ड. 2.73; - काल पु., तत्पु. स. [आरोहणकाल], ऊपर की ओर उठने का काल - लो प्र. वि., ए. व. - महापथविया ... आरोहनकालो, जा. अड्ड. 1.80; - ले सप्त. वि., ए. व. - सो तस्सा आरोहनकाले अत्तनो आनुभावेन वातपुण्णभस्तचम्मं ... पहरापेसि, जा. अड्ड. 6.39; - किच्च नपुं., तत्पु. स. [आरोहणकृत्य], ऊपर

## आरोहणीय

199

## आरोहपरिणाह

चढ़ने का काम अथवा उपयोगिता — च्वं प्र. वि., ए. व. — पुष्किते पारिच्छत्तके आरोहणकिच्चं ... नत्थि, दी. नि. अ. 2.217; — निस्सेणि स्त्री., तत्पु. स. [आरोहणनिःश्रयणी/निःश्रेणि], ऊपर जाने हेतु प्रयुक्त सीढ़ी — णि प्र. वि., ए. व. — आरोहणनिस्सेणि सतसहस्सं, जा. अ. 7.237; — सज्ज त्रि., तत्पु. स., चढ़े जाने हेतु सज धज कर तैयार — ज्जो पु., प्र. वि., ए. व. — रथो कुमारं पदकिरणं कत्वा आरोहनसज्जो हुत्वा अद्वासि, स. नि. अ. 2.166; — ज्जं पु., द्वि. वि., ए. व. — रथं निवत्तेत्वा सीहपज्जरउम्मारे पच्छभागेन तपेत्वा आरोहणसज्जं कत्वा, जा. अ. 6.125; — ज्जानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — आरोहणसज्जानि कारेत्वा, दी. नि. अ. 1.123.

आरोहणीय त्रि., आ + √रुह का सं. कृ. [आरोहणीय], सवारी करने योग्य, चढ़ने योग्य, आरोहण के लिए उपयुक्त — यो पु., प्र. वि., ए. व. — कुज्जरो ... आरोहणीयोति अत्थो, वि. व. अ. 26 27; — यं पु., द्वि. वि., ए. व. — अजातसत्तु ... आरोहणीयं नाम अभिरुहत्वा, दी. नि. 1.44; आरोहणीयन्ति आरोहणयोग्यं, ओपगुहन्ति अत्थो, दी. नि. अ. 1.123; — ये सप्त. वि., ए. व. — स्वरोहे ति सुखेन आरोहणीये, म. वं. टी. 353(ना.); — रथ पु., कर्म. स. [आरोहणीयरथ], चढ़ने योग्य रथ, सवार होने योग्य रथ — था प्र. वि., ब. व. — राजूनं आरोहणीयरथा, जा. अ. 5.478; — हत्थी पु., कर्म. स., शाही हाथी, राजा की सवारी वाला हाथी, राजकीय सवारी — रथी प्र. वि., ए. व. — बोधिसत्तेन हि सद्धिं ... राहुलमाता चतस्सो निधिकुम्भियो आरोहनियहत्थी कण्डको छन्नो काकुदायीति ..., अ. नि. अ. 1.229.

आरोहता स्त्री., आरोह का भाव, ऊपर की ओर रहने अथवा ऊपर की ओर चढ़ने की स्थिति, द्रष्ट. सुखा. के अन्तः(आगे).

आरोहति आ + √रुह का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरोहति], शा. अ., आरोहण करता है, ऊपर की ओर उठता है, उगता है, ऊपर सवार होता है — पण्णलोणि रुक्खे च गच्छे च आरोहति, पाचि. अ. 91; उतिको उद्धं आरोहति, महाव. अ. 396; — न्ति ब. व. — कण्टकावाटमि आरोहन्ति, सुत्तमि गावि आरोहन्ति, म. नि. 2.121; — न्त त्रि., वर्त. कृ. — न्तो पु., प्र. वि., ए. व. — पासादा ओतरन्तो च आरोहन्तो च, जा. अ. 2.202; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — गिज्झकूटं पब्बतं आरोहन्तस्स

कायकित्तमथो, स. नि. 3(1).149; — न्ता पु., प्र. वि., ब. व. — आरोहन्ता विहज्जन्ति ... परिपत्तन्ति, चूळव. 235; — तु अनु., प्र. पु., ए. व. — आरोहतु मिससकनगं जेड्ढमासस्सुपोसथे, म. वं. 13.14; — ह म. पु., ए. व. — आरोह वरयासादं, जा. अ. 5.174; — थ ब. व. — आरोहथ रथं, याम नगरं इति ते ब्रवि, म. वं. 14.42; — हेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — सहायको उपरिपब्बतं आरोहेय्य, म. नि. 3.172; — हिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — इदं कण्डं दूरं आरोहिस्सति, जा. अ. 2.73; — हिस्साम उ. पु., ब. व. — सयनं आरुहिस्सामा ति, थेरगा. अ. 2.373; — हितुं निमि. कृ. — जानामि रुक्खं आरोहितुं, म. नि. 2.32; — हित्वा पू. का. कृ. — रुक्खं आरोहित्वा, म. नि. 2.32; — मानं वर्त. कृ., आत्मने, नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदं कण्डं पन आरोहमानं अम्बपिण्डवण्टं यावमज्झं कन्तमानं आरोहिस्सति, जा. अ. 2.73.

आरोहन्त पु., व्य. सं., एक प्रमुख महामन्त्री का नाम — न्तो प्र. वि., ए. व. — आरोहन्तो नाम महामत्तो भिक्खूसु पब्बजितो होति, पाचि. 358.

आरोहपरिणाह पु., द्व. सं. [बौ. सं., आरोहपरिणाह], लम्बाई एवं चौड़ाई, ऊंचाई एवं परिधि अथवा विस्तार — हेन तू. वि., ए. व. — सेय्यथापि भन्ते, काळपक्खे वन्दस्स या रन्ति वा दिवसो वा आगच्छति, ... हायति आरोहपरिणाहेन, ... वड्ढति, स. नि. 1(2).183-84; आरोहपरिणाहेनाति दीघपुथुलन्तेन, अ. नि. अ. 3.288; — स्मिं सप्त. वि., ए. व. — इदमस्स आरोहपरिणाहस्मिं वदामि, अ. नि. 1(1).324-25; आरोहपरिणाहस्मिन्ति अयमस्स उच्चभावो परिमण्डलभावोति वदामीति, अ. नि. अ. 2.235; — वन्तु त्रि., [आरोहपरिणाहवत्], लम्बाई एवं चौड़ाई वाला, ऊंचाई के अनुरूप परिधि या परिमण्डल से युक्त — वा पु., प्र. वि., ए. व. — अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नो आरोहपरिणाहवा विसद्वचनो पज्जो, मग्गे संग्गस्स तिद्धति, जा. अ. 6.24; — वती स्त्री., प्र. वि., ए. व. — महासरीरा आरोहपरिणाहवती, थेरगा. अ. 1.294; — सण्ठानपरिपूरिसम्पन्न त्रि., ऊंचाई, चौड़ाई एवं शारीरिक बनावट की पूर्णता से युक्त, सन्तुलित कद काठी वाला, सुगठित आकार प्रकार वाला — त्रो पु., प्र. वि., ए. व. — आरोहपरिणाहसण्ठानपरिपूरिसम्पन्नो द्वत्तिंसवरलक्खणानुब्यञ्जनसमलसङ्गतसरीरो ... भगवा, बु. वं. अ. 147; — सम्पत्तिता स्त्री., भाव., सुगठित एवं उचित अनुपात वाले आकार प्रकार से सम्पन्न होना — ता

## आरोहपरिणाहिन

200

## आलपति

प्र. वि., ए. व. — अङ्गपञ्चसम्पन्नता आरोहपरिणाहसम्पत्तिता, खु. पा. अङ्ग. 23; — या तृ. वि., ए. व. — आरोहपरिणाहसम्पत्तिया सण्ठानसम्पत्तिया च सुनिब्वत्तो, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 2.283; — सम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [आरोहपरिणाहसम्पन्न], सन्तुलित लम्बाई चौड़ाई वाला, लम्बाई एवं चौड़ाई में सुसन्तुलन को प्राप्त — त्रौ पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चो अस्सखकुड्ढो जवसम्पन्नो च होति, न वण्णसम्पन्नो, च न आरोहपरिणाहसम्पन्नो, अ. नि. 1(1).323; — त्रं द्वि. वि., ए. व. — आरोहपरिणाहसम्पन्नं अभिरूपं एकं पुरिसं फलकं कत्वा, जा. अङ्ग. 1.340; — त्रा पु., प्र. वि., ब. व. — उच्चा चेव तदनुरुपपरिणाहा च, आरोहपरिणाहसम्पन्नाति अत्थो, वि. व. अङ्ग. 233; — त्रे पु., द्वि. वि., ब. व. — धुरवाहे, भन्ते, आरोहपरिणाहसम्पन्ने महागोणेयुगपरम्पराय अयोजेत्वा, जा. अङ्ग. 1.322.

**आरोहपरिणाही** त्रि., ऊंचाई (लम्बाई) एवं चौड़ाई (परिमण्डल) के उचित सन्तुलन से युक्त, भव्य आकार-प्रकार या सुगठित डील-डौल वाला — नो पु., प्र. वि., ब. व. — गोकण्णा सरमा रुरु, आरोहपरिणाहिनो, सुरुपा अङ्गसम्पन्ना, अप. अङ्ग. 2.257.

**आरोहपुत्त** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम — तो प्र. वि., ए. व. — आरोहपुत्तो मेण्डसिरो, रक्खितो उग्गसद्धयोति, थेरगा. (पृ.) 178.

**आरोहमद** पु., तत्पु. स. [आरोहमद], ऊंचे या लम्बे होने का घमण्ड, 'मैं दूसरों की तुलना में अधिक ऊंचाई वाला हूँ' इस सोच से उत्पन्न अहंकार — दो प्र. वि., ए. व. — जातिमदो ... आरोहमदो ... वितक्को, विभ. 395-96; अहं पन दीघोति मज्जनवसेन उण्णो मानो आरोहमदो नाम, विभ. अङ्ग. 442.

**आरोहसम्पत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आरोहसम्प्राप्ति], ऊंचाई अथवा लम्बाई की सम्पदा, ऊंचाई अथवा लम्बाई की प्राप्ति — ति प्र. वि., ए. व. — वस्सा पठमयुगळेन आरोहसम्पत्ति, दुतिययुगळेन परिणाहसम्पत्ति, ततिययुगळेन वण्णसम्पत्ति वुत्ता, दी. नि. अङ्ग. 2.195; — या प. वि., ए. व. — इमिना आरोहसम्पत्तिया अभावं दस्सेति, उदा. अङ्ग. 299.

**आरोहसम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [आरोहसम्पन्न], ऊंचाई तक पहुंच चुका, अत्यधिक महानता को प्राप्त, अत्यन्त बलवान् — त्रौ पु., प्र. वि., ए. व. — अभिवड्ढितो आरोहसम्पन्नो, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 2.92; — त्रं पु., द्वि. वि., ए. व. — 'हत्थिमेव नु खो', भन्ते तिआदिबच्चनं अवोच, तत्थ महत्तन्ति आरोहसम्पन्नं, अ. नि. अङ्ग. 3.113.

**आलपति** आ + रलप का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलपति], बोलता है, बातें करता है, सम्बोधित करता है, चायं चायं करता है, कह कर पुकारता है, आमन्त्रित करता है, आह्वान करता है — नामेन मं भगवा आलपतीति, चूळव. 284; संतुमारं आलपति, जा. अङ्ग. 3.114; — सि म. पु., ए. व. — तपसा अभिभुय्य मम पुत्तं ब्रह्मदत्तं नामेनालपसि, जा. अङ्ग. 3.399; — न्ति प्र. पु., ब. व. — तं किर सिरिकण्हो'तिपि अक्यन्ति आमन्तेन्ति, आलपन्तीति वुत्तं होति, सु. नि. अङ्ग. 2.187; — न्तो वर्त., कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — तं आलपन्तो आह — सरणं तं उपेम चक्खुमा'ति, सु. नि. अङ्ग. 1.35; — न्ता ब. व. — बुद्धा भगवन्तो सावके आलपन्ता भिक्खवेति आलपन्ति, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(1).107; — न्तं द्वि. वि., ए. व. — दासकं नेव ओलोकेत्तं नापि आलपन्तं, उदा. 75; — न्तेन तृ. वि., ए. व. — 'अनालापो आनन्दा'ति, आलपन्तेन पन. ... पटिपज्जितवन्ति, दी. नि. 2.106; — न्ती वर्त., कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व. — मातरं परम्मुखालपनेन आलपन्ती आह, जा. अङ्ग. 7.328; — पेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — सचे मं नागनासूरु, आलपेय्य पभावती, जा. अङ्ग. 5.287; आलपेय्यातिआदीसुपि एसेव नयो, तदे.; — पेय्याम उ. पु., ब. व. — अज्जमज्जं नेव आलपेय्याम न सत्त्वपेय्याम, महाव. 209; — पि/पी अद्य., प्र. पु., ए. व. — तं दिस्वा आलपी राजा, जा. अङ्ग. 5.248; आलपीति 'सद्धि गामसहरस्सानी'ति आदीनि वदन्तो आलपि, जा. अङ्ग. 5.251; — पित्थ आत्तने., म. पु., ब. व. — सो च तं पच्चासन्तो कथेसि, तस्स तुवं न किञ्चि आलपित्थ, पे. व. 742; — पिंसु प्र. पु., ब. व. — भिक्खू अज्जमज्जं नेव आलपिंसु, न सत्त्वापिंसु, महाव. 209; — पिम्हा उ. पु., ब. व. — अज्जमज्जं नेव आलपिम्हा न सत्त्वपिम्हा, महाव. 211; — पिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — सचे मं समणो गोतमो आलपिस्सति, अहमि तं आलपिस्सामि, स. नि. 1(1).207; कुलदत्तिकनामेन मं आलपिस्सतीति, स. नि. अङ्ग. 1.276; — पिस्सामि उ. पु., ए. व. — सचे मं समणो गोतमो आलपिस्सति, अहमि तं आलपिस्सामि, स. नि. 1(1).207; — पिस्सन्ति प्र. पु., ब. व. — समणा ... वुच्चमाना नालपिस्सन्तीति, जा. अङ्ग. 2.13; — पित्वा पू. का. कृ. — 'भिक्खु भिक्खू'ति आलपित्वा अयं वम्मिकोतिआदिमाह, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(2).32; — पितुकाम त्रि., बोलने की इच्छा वाला — मो पु., प्र. वि., ए. व. — आलपितुकामो आलपति, कथाव. 339.

## आलपन

201

## आलम्ब

**आलपन** नपुं. आ + लप से व्यु., क्रि. ना. [आलपन], क. सम्बोधन, पुकारना, पुकारने अथवा सम्बोधित करने का तरीका, सामने किसी को सम्बोधित कर के, हे, ओ, रे, अरे आदि शब्दों का कथन - नं प्र. वि., ए. व.; भिक्षवेति येसं कथेतुकागो, तदालपनं, सु. नि. अहु. 2.112 - अभिमुखं कत्वा लपनं आलपनं, क. व्या. 287 पर क. न्या.; - ने सप्त. वि., ए. व. - पुग्गलालपने चेव धम्मस्सालपने पि च निज्जीवालपने चा ति भोसदो तीसु दिस्सति, सद्. 1.171; **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में**, सम्बोधन कारक, - ने सप्त. वि., ए. व. - आलपने च, क. व्या. 287; - **नाधिवचन** नपुं, तत्पु. स., किसी को पुकारने अथवा सम्बोधित करने के अर्थ का सूचक कथन - नं प्र. वि., ए. व. - अम्भो पुरिसाति आलपनाधिवचनमेतं, पारा. 87.

**आलपना** स्त्री., आ + लप से व्यु., क्रि. ना. [आलपन], पुकारना, सम्बोधित करके कहना, फुसलाना, चापलूसी की बातें करना, दूसरों को ठगने अथवा अपने महत्व को उनके मन में बैठाने हेतु की गई चिकनी-चुपड़ी बात - ना प्र. वि., ए. व. - आलपना लपना सल्लपना उल्लपना समुल्लपना उन्नहना समुन्नहना उक्काचना समुक्काचना अनुप्पियभाणिता चाटुकम्पता मुग्गसूयता पारिभट्यता, विभ. 404; आलपनाति विहारं आगतमनुस्से दिस्वा किमत्थाय भोन्नो आगता? ..., भिक्षू गहेत्वा आगच्छामीति एवं आदितोव लपना अथ वा ... अत्तुपनायिका लपना आलपना, विभ. अहु. 455.

**आलपित** त्रि., आ + लप का भू. क. कृ. [आलपित], पुकारा गया, सम्बोधित किया गया, कहा जा चुका, कथित - तो पु., प्र. वि., ए. व. - सन्दिद्धो च होति, सम्भत्तो च आलपितो च, जीवति च, जानाति च गहिति मे अत्तमनो भविस्सतीति, महाव. 387 88; बुद्धेहि च आलपितो भिक्षुसङ्घो, स. नि. अहु. 2.206; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - सब्बकामजहस्स भिक्षुनोति कामा आलपिता, पेटको. 235; - ते नपुं, सप्त. वि., ए. व. - बुद्धेहि च आलपिते भिक्षुसङ्घो भन्तेति पटिवचन देति सावकोहि आवुसोति, स. नि. अहु. 2.206.

**आलम्पान/आलम्पायन** पु., आलम्बान/आलम्बान के स्थान पर अप., 1. सवरे का मन्त्र, 2. इस मन्त्र का ज्ञाता एक ब्राह्मण, सपेरा, 3. दिव्य औषधियों का शरीर पर लेप करने वाला सपेरा - नो प्र. वि., ए.

व. - ससितो अकतञ्जुना, आलम्पायनो ममग्गहि, चरिया. 2.2.5 (पृ. 386); आलम्पायनोति अलम्पायनविज्जापरिजप्पनेन "अलम्पायनो" ... एवं लद्धनामो अहितुण्डिकब्राह्मणो, चरिया. अहु. 117; - आलम्पायनोपि दिब्बोसघोहि अत्तनो सरीरं मक्खेत्वा ..., जा. अहु. 7.29; मन्त पु., सर्पों के विष का शमन करने वाला आलम्पायन नामक मन्त्र - तं द्वि. वि., ए. व. - अहञ्चेकं अलम्पायनमन्तं जानामि, जा. अहु. 7.21.

**आलम्ब** पु., [आलम्ब], 1. वह, जो किसी का आलम्बन लेकर लटका हुआ हो, लता, परोपजीवी पादप, स. प. के रूप में, - सम्पफुल्ललतालम्बमनुआगिन्दमण्डिता, सद्धम्मो. 245; 2. सहारा, आधार, अवलम्बन, स. पू. प. में, - दण्ड पु., सहारा देने हेतु गृहीत दण्ड या छड़ी - ण्डं द्वि. वि., ए. व. - आलम्बदण्डं दत्त्वा, पक्कामिं उत्तरामुखो, अप. 2.103; 3. दार्शनिक सन्दर्भ में, विषय, इन्द्रियो अथवा चित्त द्वारा ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म, ध्यानभावना का कर्मस्थान (कम्मद्वान) या आलम्बन - म्बो प्र. वि., ए. व. - आलम्बो विसयो तेजारम्मणालम्बनानि च, अभि. प. 94; - म्बा ब. व. - तदेवालम्बभेदेन अरूपज्ज्ञानसम्मतं, आकासो चेव विज्जाणं तदभावो च तग्गतं, चित्तमरूपज्ज्ञानस्स आलम्बा चतुरो मता, सद्धम्मो. 463-64; स. उ. प. में, पञ्चा. पांच आलम्बन - पञ्चद्वारे वत्तमानं पञ्चालम्बं यथाक्कमं, ना. रू. प. 239; - **म्बस्थिकता** स्त्री., आलम्बनों पर निर्भरता, आलम्बन-सापेक्षता - ता प्र. वि., ए. व. - आलम्बस्थिकता छन्दो, ना. रू. प. 85; - **गिज्जनरस** त्रि., ब. स., वह, जिसकी मूलभूत विशेषता, आलम्बन-विषयक लोभ हो - सो पु., प्र. वि., ए. व. - ... लोभो अपरिच्चागलक्खणो, आलम्बगिज्जनरसो ..., ना. रू. प. 106; - **बाहननरस** त्रि., ब. स., वह जिसकी आधार-मूल विशेषता आलम्बनों के साथ टकराहट हो - सो पु., प्र. वि., ए. व. - आलम्बाहननरसो सन्निरुज्झोति गच्छति, ना. रू. परि. 81.

**आलम्ब** पु., व्य. सं., 1. एक प्राचीन वाद्य का नाम, तुरही, एक प्रकार का तूर्य वाद्य, 2. तूर्यवादक देवपुत्रों का नाम - म्बो प्र. वि., ए. व. - आलम्बो गग्गरो भीमो, वि. व. 166; आलम्बोतिआदि तूरियवादकानं देवपुत्तानं एकदेसतो नामग्गहणन्ति वदन्ति, तूरियानं पनेतं नामग्गहणं, वि. व. अहु. 77.

## आलम्बगामवापी

202

आळम्बर/आलम्बर

आलम्बगामवापी स्त्री, श्रीलङ्का में स्थित आलम्बगाम-  
नामक गांव की बावली, बौली या जलाशय – पिं द्वि. वि.,  
ए. व. – आलम्बगामवापिं सो जेद्वुत्तिस्सो अकारयि, म.  
व. 36.131.

आलम्बण नपुं, आलम्बन का ही रूपान्तरण [बौ. सं.  
आलम्बन, आरम्भण], रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं  
धर्म, इन्द्रियों एवं चित्त द्वारा ग्राह्य छ विषय, ध्यानप्रक्रिया  
में चित्त के आलम्बन के रूप में निर्धारित चालीस कर्मस्थानों  
में कोई एक, – णं प्र. वि., ए. व. – आरम्भणं आलम्बणं  
निस्सयं, दूळनि. 91; आलम्बणं मया दिन्नं, अप. 1.223; स.  
उ. प. में, छा.- छ प्रकार का आलम्बन – णं प्र. वि., ए.  
व. – छालम्बणं मनोद्वारे, ना. रू. परि. 239; स. पू. प.  
के रूप में, – दायकत्थेरअपदान नपुं, अप. के एक  
खण्ड का शीर्षक, अप. 1.223; – भूत त्रि., किसी (इन्द्रिय  
अथवा चित्त) के लिए आलम्बन या विषय बना दिया गया  
– तेसु पु., सप्त. वि., ब. व. – तथा कामावचरजवननावसाने  
... कामावचरधम्मस्वेव आरम्भणभूतेसु तदारम्भणं इच्छन्तीति,  
अभि. ध. स. 28; – मन त्रि., ब. स., आलम्बन से जुड़े  
हुए मन वाला – नं नपुं, प्र. वि., ए. व. – आलम्बणमनं  
चित्तं, ना. रू. परि. 73; – समोधान त्रि., ब. स.,  
आलम्बन के साथ जुड़ाव रखने वाला, आलम्बन की  
सहवर्तिता से युक्त – नो पु., प्र. वि., ए. व. –  
आलम्बणसमोधानो, फस्सो फुसन्लक्खणो, ना. रू. प. 74;  
– रस त्रि., ब. स., वह जिसके लिए आलम्बन ही सारभूत  
तत्त्व हो – सा स्त्री, प्र. वि., ए. व. – वेदनालम्बणरसा,  
ना. रू. प. 75.

आलम्बति आ + रलम्ब का वर्त, प्र. पु., ए. व. [आलम्बते],  
लटकता है, सहारा या आश्रय लेता है, अधीन रहता है,  
निर्भर होता है, आधारित रहता है, दृढ़ता के साथ किसी के  
साथ लटक जाता है अथवा सट जाता है, चढ़ता है,  
आरोहण करता है – नीचे चोलम्बते सुरियो, आलम्बति  
आलम्बनं तदालम्बनं ... वा, सद. 2.406-07; – न्तु अनु.,  
प्र. पु., ब. व. – सब्बेव ते आलम्बन्तु विमानं, वि. व. 1275;  
आलम्बन्तूति आरोहन्तु, वि. व. अट्ट. 296; – म्बिंसु अट्ट.,  
प्र. पु., ब. व. – सब्बेव ते आलम्बिंसु विमानं, वि. व. 1276;  
... आरुहिंसु, वि. व. अट्ट. 297; – म्बित्वा/त्त्वान पू.  
का. कृ. – इध ... आलम्बित्वा उत्तरतूति, महाव. 34;  
ओरिमा पन तीरम्हा आलम्बित्त्वान रज्जुकं, अभि. अव.  
597.

आलम्बन नपुं, आ + रलम्ब से व्यु., क्रि. ना. [आलम्बन],  
शा. अ., सहारा, आश्रय, आधार, ला. अ., 1. थूनी,  
टेक, छड़ी – नं द्वि. वि., ए. व. – आलम्बनं करित्वा,  
सङ्गस्स अददं अहं अप. 1.309; हेद्वा पतिद्वाभावेन उपरि  
आलम्बनाभावेन च गम्भीरो, सु. नि. अट्ट. 1.183; ला. अ.,  
2. त्रि., सहारा या आश्रय देने वाला – नो पु., प्र. वि.,  
ए. व. – सो तुम्हाकं उपहाको भविस्सति आलम्बनो चाति,  
मि. प. 130; – त्थम्भ पु., तत्पु. स. [आलम्बनस्तम्भ],  
चक्रमण पथ के अन्त में टिकने अथवा सहारा लेने हेतु  
गाड़ा गया लकड़ी का खम्भा – म्भं द्वि. वि., ए. व. –  
भिव्खु चङ्गमे चङ्गमभानो वा आलम्बनत्थम्भं निस्साय ठितो,  
स. नि. अट्ट. 1.77; – दण्ड पु., तत्पु. स. [आलम्बनदण्ड],  
सहारा देने वाली छड़ी या बेंत – सिमं सप्त. वि., ए. व.  
– अथालम्बनदण्डरिमं कत्तरयट्ठि नारियं, अभि. प. 443; –  
नङ्गल नपुं, तत्पु. स., फसल बोने से सम्बद्ध उत्सव के  
अवसर पर राजा द्वारा प्रयुक्त हल, सहारा देने वाला हल  
– लं प्र. वि., ए. व. – रज्जो आलम्बननङ्गलं पन  
रत्तसुवण्णपरिक्खतं होति, जा. अट्ट. 1.67; – फलक  
नपुं, तत्पु. स., चक्रमण करते हुए बीच में विश्राम लेने  
हेतु सहारा देने वाला काष्ठ-फलक या लकड़ी का तख्ता  
– कं प्र. वि., ए. व. – चङ्गमे अपस्साय तिद्वन्तस्स  
आलम्बनरुक्खो वा आलम्बनफलकं वा सब्बम्पेतं  
अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेन नाम, पारा. अट्ट. 2.51; – बाहा  
स्त्री, तत्पु. स., सीढ़ियों का जंगला, सीढ़ियों के दोनों ओर  
बनाया गया घेरा – हं द्वि. वि., ए. व. – आरोहन्ता  
परिपतन्ति ... अनुजानामि, भिव्खवे, आलम्बनवाहन्ति, चूळव.  
235; – रज्जु स्त्री, तत्पु. स., सहारा देने वाली रस्सी,  
सहारा के रूप में पकड़ी गई रस्सी – ज्जुं द्वि. वि., ए.  
व. – इमं आलम्बित्वा परिवत्तेय्यासीति आलम्बनरज्जुं  
बन्धेय्युं, जा. अट्ट. 3.350; – रुक्ख पु., तत्पु. स.  
[आलम्बनवृक्ष], चक्रमण करते हुए बीच बीच में विश्राम  
हेतु चक्रमण पथ के अन्त में स्थित सहारा देने वाला वृक्ष  
– क्खो प्र. वि., ए. व. – चङ्गमे अपस्साय तिद्वन्तस्स  
आलम्बनरुक्खो वा आलम्बनफलकं वा ... अपस्सेनं नाम,  
पारा. अट्ट. 2.51.

आळम्बर/आलम्बर पु., [आडम्बर], 1. युद्ध भेरी, नगाड़ा,  
2. नगाड़ों का कोलाहल, शोर-शराबा – रो प्र. वि., ए. व.  
– आळम्बरो च पणवो, अभि. प. 144; आळम्बरो तु सारम्भे  
भेरिभेदे च दिस्सति, अभि. प. 854; – रा व. व. –

## आलम्बर

203

## आलय

आलम्बरा मुदिङ्गा च, नच्चगीता सुवादिता, जा. अष्ट. 6.143; स. उ. प. में, मुरजा.- नपुं., मुरज एवं नगाड़े, प्र. वि., ब. व. - पाणिरसरा मुदिङ्गा च, मुरजालम्बरानि च, जा. अष्ट. 5.387; स. पू. प. में - मेघ पु., बादलों की गरज - घो प्र. वि., ए. व. - 'आलम्बरमेघो विय थनतीति तं सन्धाय वदन्ति, जा. अष्ट. 2.285.

आलम्बर<sup>2</sup> पु., व्य. सं., असुरों द्वारा निर्मित एक नगाड़े या भेरी का नाम - रं द्वि. वि., ए. व. - समुद्रं पन पविडुं असुरा गहेत्वा आलम्बरं नाम भेरिं कारेसुं, जा. अष्ट. 2.285.

आलम्बितबद्धानरहित त्रि., तत्पु. स., आश्रयदायक स्थान से रहित, निराधार स्थान - ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. - अनालम्बेति आलम्बितबद्धानरहिते, जा. अष्ट. 5.68.

आलम्बीयति आ + लम्ब का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., आलम्बन ग्रहण किया जाता है, आश्रय या सहारा लिया जाता है - आलम्बीयतीति विज्ञाप्यन्ति, सद्. 3.765.

आलय पु./नपुं., आ + ली से व्यु. [आलय], घर, आश्रय, राग, लगाव आदि विविध अर्थों में प्रयुक्त. - लि सिलेसने अल्लीयन्ति एत्थाति आलयो, रूप. 232(रो.); ... लोभो रागो च आलयो, अभि. प. 163; अल्लीयन्ति रज्जन्ति एत्थाति आलयो, अभि. प. 205 की सूची; जिनालयो देवालयो, इच्चादिसु घरे, अभि. प. 1097 पर सूची; 1.क. घर, वासस्थान, कोई भी निर्माण किया गया ढांचा, निवास-स्थल, विश्राम-स्थल, आवास - ये सप्त. वि., ए. व. - तेसं आलये रति नाम नत्थि, ... कञ्चि आलयं, ध. प. अष्ट. 1.343; - यो प्र. वि., ए. व. - ओकं वुच्चति आलयो, अनोकं वुच्चति अनालयो, आलयतो निक्खमित्वा अनालयसङ्घातं निब्बानं पटिच्च ..., ध. प. अष्ट. 1.338; - यं द्वि. वि., ए. व. - बहुभेरवं रतनगणानमालयं, स. नि. 3.463; आलयन्ति निवासद्वानं; 1.ख. आश्रय-स्थल, शरण ग्रहण का स्थान, घासला, नीड, आसन, जगह - यो पु., प्र. वि., ए. व. - बहुदुक्खानमालयो, थेरीगा. 270; बहुदुक्खानमालयोति जरादिहेतुकानं बहून् दुक्खानं आलयभूतो, थेरीगा. अष्ट. 236; - यं नपुं., प्र. वि., ए. व. - यदा बलाका ... पलेहिती आलयमालयेसिनी, थेरगा. 307; आलयन्ति निलयं अत्तनो कुलावकं, आलयेसिनीति तत्थ आलयन निलीयनमेव इच्छन्ती, थेरगा. अष्ट. 2.27; - या प्र. वि., ब. व. - एत्थ ओकमोकोतोति उदकसङ्घाता

आलयाति अयमत्थो, ध. प. अष्ट. 1.164; 1.ग. विषय, आलम्बन, क्षेत्र, क्रियाकलाप का स्थल, गोचर - बुद्धापि बुद्धे पुच्छन्ति, विसयं सब्बज्जुमालयं, अप. 1.4; 2.क. आसक्ति लिप्तता, लगाव, प्रवृत्ति, अनुकूलता, पक्षपात, अभिरुचि - यो प्र. वि., ए. व. - नत्थि ..., गिहिभावाय आलयोति, ध. प. अष्ट. 1.70; - यं द्वि. वि., ए. व. - खन्धेसु आलयं पहाय, ध. प. अष्ट. 2.316; - ये सप्त. वि., ए. व. - राजकुमारं पिण्डमिह आलये दस्सिते, म. नि. अष्ट. (उप.प.) 3.222; 2.ख. स्नेह, राग, प्रेम, तृष्णा, लोभ, सांसारिक विषयभोगों अथवा कामसुखों के प्रति सुदृढ़ लगाव - यो प्र. वि., ए. व. - अभिज्झा वनथो वानं लोभो रागो च आलयो, अभि. प. 162; - यं द्वि. वि., ए. व. - सत्ता हि नाम पियभरियासु विय सेसेसु आलयं न करोन्ति, जा. अष्ट. 6.288; सा ... कनिट्ठमिह आलयं विस्सज्जि, विसुद्धि. 2.281; - यानि द्वि. वि., ब. व. - छेत्वा आसवानि आलयानि, सु. नि. 540; द्वे च आलयानि पञ्जासत्थेन छेत्वा, सु. नि. अष्ट. 2.141; स. उ. प. के रूप में, सा.- रागयुक्त, तृष्णायुक्त, आसक्तियुक्त - या पु., प्र. वि., ब. व. - जीविते सालया निवत्तन्तु, निरालया इमं पब्बतं अभिरुहन्तूति, उदा. अष्ट. 64; स. पू. प. के रूप में, - वसेन तु, वि., क्रि. वि., राग अथवा आसक्ति के कारण - आलयवसेन भरियं कुलावकं कत्वा, स. नि. अष्ट. 1.35; 2.ग. वर्षावास के विषय में निर्णय लेने के साथ उत्पन्न चिन्तन अथवा चिन्तोत्पाद - यो प्र. वि., ए. व. - आलयो नाम इध वस्सं वसिस्सामीति चित्तुप्पादमत्तं, महाव. अष्ट. 334; तंमि अलभन्तेन आलयो कातब्बो, तदे., - यं द्वि. वि., ए. व. - आलयं करोति, चूळव. अष्ट. 75; आलयं वा कत्वा, तदे., 3. बहाना, वञ्चना, धोखा, ठगी, छल-छद्म, चाल, भुलावा, छिपाव, ढोंग - ये द्वि. वि., ब. व. - रजस्स किर सो भीतो, अकरा आलये बहू जा. अष्ट. 6.24; अकरा आलये बहूति तुम्हाकं वञ्चनानि बहूनि अकासि, जा. अष्ट. 6.25; स. उ. प. में, उम्मतका.- पागल होने का बहाना - यं द्वि. वि., ए. व. - सो अनुम्मतको उम्मतकालयं करोति, चूळव. 186; गम्भिनि.- गर्भवती होने का झूठा बहाना - यं द्वि. वि., ए. व. - गम्भिनिआलयं कत्वा एते वञ्चेस्सामीति, जा. अष्ट. 4.34; गिलाना. - बीमार होने का बहाना - यं द्वि. वि., ए. व. - गिलानालयं कत्वा निपज्जि, जा. अष्ट. 1.281; सुगता.- बुद्ध होने का बहाना, बुद्ध जैसी लीला या छद्मभाव - स्स ष. वि., ए.

## आलययति

204

## आलयाभिनिवेश

व. - देवदत्तस्स ... सुगतालयस्स दस्सितभावं जा. अट्ट. 1.468; - यं द्वि. वि., ए. व. - ... 'बुद्धलीलं करिस्सामीति सुगतालयं दस्सेन्तो ..., तदे.

आलययति आलय का ना. धा., प्रायः अल्लीयति का स्थाना. अथवा उसी का अप. [आलीयते], आसक्तियुक्त होता है, आलीन होता है, राग अथवा लगाव से युक्त हो जाता है - न्ति ब. व. - अल्लीयन्ति केळायन्ति धनायन्ति ममायन्ति, स. नि. 2(1).175; आलयन्ति सत्ता एतेनाति आलयो, तण्हा, चरिया. अट्ट. 125; आलयरामाति सत्ता पञ्चसु कामगुणेषु अल्लीयन्ति तस्मा ते आलयाति बुच्चन्ति अट्टसततण्हाविचरितानि आलयन्ति, तस्मा आलयाति बुच्चन्ति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).78.

आलयपटिपक्ख त्रि., तत्पु. स. [आलयप्रतिपक्ष], राग अथवा आसक्ति का प्रतिपक्ष, कामभोगों के सुख का विरोधी - बख्खे पु., द्वि. वि., ब. व. - आलये धम्मति आलयपटिपक्खे विवड्ढपनिस्सिते, अ. नि. अट्ट. 2.330.

आलयरत त्रि., तत्पु. स. [आलयरत], आसक्तियों अथवा विषयभोगों में पूरी तरह से डूबी हुई - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता, महाव. 5; आलयरामा आलयेसु रताति आलयरता, महाव. अट्ट. 233; - ताय च. वि., ए. व. - आलयरामाय ... आलयरताय आलयसम्मुदिताय ... दुइसं इदं ठानं ..., महाव. 5.

आलयराम/आलयाराम त्रि., तत्पु. स. [आलयाराम], आसक्ति अथवा विषय भोगों में पूरी तरह से रमी हुई, विषय भोगों में आनन्द का अनुभव करने वाला/वाली - मा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता, महाव. 5; आलयरामाति सत्ता पञ्च कामगुणेषु अल्लीयन्ति, तस्मा ते 'आलयाति बुच्चन्ति, तेहि आलयेहि रमन्तीति आलयरामा, महाव. अट्ट. 233; पञ्चूपादनक्खन्धा आलयो, तत्थ रमतीति आलयरामा, पजा, विसुद्धि. महाटी. 2.309.

आलयरामता स्त्री., भाव., विषय भोगों, राग, लगाव अथवा आसक्ति में आनन्द अनुभव करने की अवस्था, तृष्णा - ता प्र. वि., ए. व. - तेनेव सा आलयरामता ससन्ताने, परसन्ताने च पाकटा होति, विसुद्धि. महाटी. 2.309; - तं द्वि. वि., ए. व. - सत्तानञ्च आलयारामतं ... दिस्वा ..., मि. प. 219; स. प. में, - आलयआलयारामता-

आलयसमुग्धात-आलयसमुग्धातुपायानञ्च वसेनापि चत्तारेव वुत्तानीति, विसुद्धि. 2.124.

आलयविस्सज्जन नपु., तत्पु. स. [आलयविसर्जन], आसक्ति का परित्याग, लगाव से छुटकारा - नं प्र. वि., ए. व. - कनिट्ठपुत्तस्मिह आलयविस्सज्जनं विय 'अनागतेपि निब्बतनकसङ्कारा भिज्जिस्सन्तीति, विसुद्धि. 2.281.

आलयसमुग्धात पु., तत्पु. स. [आलयसमुद्घात], विषयभोगों के प्रति आसक्ति की पूर्णरूप से समाप्ति या निरोध, निर्वाण की अवस्था, तृष्णा का निरोध - तो प्र. वि., ए. व. - मदनिम्मदनो पिपासविनयो आलयसमुग्धातो वट्ठपच्छेदो तण्हाकखयो विरागो निरोधो निब्बानं, अ. नि. 1(2).40; आलयसमुग्धातो भावितो बहुलीकतो चागाधिद्वानं परिपूरेति, नेत्ति. 99; - तं द्वि. वि., ए. व. - दुतियं सम्मपण्णानं भावितं बहुलीकतं आलयसमुग्धातं परिपूरेति, नेत्ति. 99; स. प. के अन्तः, - आलयआलयारामताआलयसमुग्धातआलयसमुग्धातुपायानञ्च वसेनापि चत्तारेव वुत्तानीति, विसुद्धि. 2.124.

आलयसम्मुदित त्रि., तत्पु. स. [आलयसम्मुदित], विषय भोगों में मोद अथवा आनन्द प्राप्त करने वाला - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता, महाव. 5; आलयेसु सुट्ठ मुदिता ति आलयसम्मुदिता, स. नि. अट्ट. 1.172; - य च. वि., ए. व. - ... पजाय आलयरताय आलयसम्मुदिताय, महाव. 5.

आलयसारी त्रि., अपने निर्धारित विषय अथवा क्षेत्र में ही विचरण करने वाला, अपने क्षेत्र में ही कार्यरत - री नपु., प्र. वि., ए. व. - ओकसारीति गेहसारी आलयसारी, स. नि. अट्ट. 2.228.

आलयाभिनिवेश पु., तत्पु. स. [आलयाभिनिवेश], कामभोग-विषयिणी तृष्णा द्वारा जनित कामभोगों के प्रति चित्त का सुदृढ़ लगाव, विषयभोगों के साथ चित्त का अहितकारी लगाव, संस्कृत धर्मों में चित्त का आश्रय-ग्रहण - सं द्वि. वि., ए. व. - आलयाभिनिवेशं पजहतो आदीनवानुपरसनावसेन ..., पटि. म. 29; सङ्घरेसु लेणताण् भावग्गहणं आलयाभिनिवेशो अत्थतो भवनिक्कन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.479; - तो प. वि., ए. व. - आदीनवानुपरसनाय पञ्चिन्द्रियाणि आलयाभिनिवेशतो निस्सटानि होन्ति, पटि. म. 201-02; - स्स प. वि., ए. व. - आदीनवानुपरसनाय आलयाभिनिवेशस्स, विसुद्धि. 2.334.

## आलयेसिनी

205

## आलरिसयाभिभूत

**आलयेसिनी** स्त्री., [आलयेषिणी], आलय, आश्रय अथवा निवास-स्थान की खोज करने वाली -- नी प्र. वि., ए. व. -- पलेहिती आलयमालयेसिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं. थेरगा. 307.

**आलवाल** पु. / नपुं., [आलवाल], वृक्ष के नीचे वृक्ष के चारों ओर पानी भरने हेतु बनाया गया गड्ढा या थाला, पेड़ को सींचने के लिए पेड़ के नीचे के भूभाग पर चारों ओर निर्मित गड्ढा -- लं' पु., द्वि. वि., ए. व. -- आलवालं दुमिन्दस्स बन्धित्वा, चू. वं. 51.78; -- लं' नपुं., प्र. वि., ए. व. -- उदककोट्टकन्ति आलवालं, म. नि. टी. 1(2).249.

**आलवालक** त्रि., तरुमूल के चारों पार्श्वों पर निर्मित गड्ढे वाला -- के पु., सप्त. वि., ए. व. -- आलवालके तरुसेकत्थं तरुमूलविधिते स्वप्ने जलाधारे, अभि. प. 1011 पर सूची.

**आलसिक** त्रि., आलसी, सुस्त -- को पु., प्र. वि., ए. व. -- सीलेस्वालसिको हुत्वा, रस. 2.32(रो.); पुब्बेपेस आलसियोयेवाति वत्ता अतीतं आहरि, जा. अट्ट. 3.120; पाठा. आलसिको.

**आलसिय'** नपुं., अलस का भाव. [आलस्य], आलस्य, सुस्ती, अकर्मण्यता, वीर्यहीनता -- यं' प्र. वि., ए. व. -- आलस्यन्ति आलसियं, स. नि. अट्ट. 1.90; या तन्दी तन्दिदयना तन्दिमनकता आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं, अयं वुच्चति "तन्दी", विम. 403; पाठा. आलसियं; ... आलसस्सकम्मं अलसत्तं अलसता, अलसत्तनं आलस्यं, आलसियं वा, मो. व्या. 4.59; अलसस्स भावो आलस्यं, क. व्या. 362; -- यं' द्वि. वि., ए. व. -- युवा बली आलसियं उपेतो, ध. प. 280; उट्ठानविरियं कत्वा आलसियं अनापज्जित्वाति अत्थो, वि. व. अट्ट. 32; स. उ. प. के रूप में आगन्तुका, काया, चित्ता. के अन्त. द्रष्ट.

**आलसिय'** त्रि., अलस का रूपा. तथा उसी से व्यु. [अलस], आलसी, अध्यवसाय से रहित, अनुद्योगी, शिथिल, पराक्रमहीन -- यो पु., प्र. वि., ए. व. -- आलसियो कुसीतो ..., जा. अट्ट. 3.120; राजकुम्मो नामेस, ... आलसियो, तदे.; -- यं' द्वि. वि., ए. व. -- राजकुम्मं नाम आलसियं पस्सि, तदे.; -- या पु., प्र. वि., ब. व. -- तथारूपा किर आलसिया सकलदिवसं ..., तदे.

**आलसियकिलासु** त्रि., आलस्य के कारण थका हुआ अथवा व्याधित, आलस्य से पीड़ित -- नो पु., प्र. वि., ब. व. -- तत्थ किलासुनो अहेसुन्ति न आलसियकिलासुनो, पारा. अट्ट. 1.141.

**आलसियकुसीतभाव** पु., आलस्यभाव तथा शिथिलता अथवा वीर्यहीनता -- वो प्र. वि., ए. व. -- अथ नेसं सो आलसियकुसीतभावो भिक्खुसङ्गे पाकटो जातो, जा. अट्ट. 1.409.

**आलसियजात** त्रि., [अलसजात], आलसी हो चुका, शिथिलता को प्राप्त -- ता पु., प्र. वि., ब. व. -- मधुरकजाताति आलसियजाता, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).311.

**आलसियजातिक** त्रि., स्वभाव से ही आलसी, आलसी स्वभाव वाला -- को पु., प्र. वि., ए. व. -- वासणसिराजा आलसियजातिको अहोसि, जा. अट्ट. 3.120.

**आलसियता** स्त्री., अलस + य + ता, आलस्यभाव, सुस्ती, ढीलाढालापन, अनुद्योगी मनोवृत्ति, स. उ. प. में प्रयुक्त, काया.- शरीर का आलस्यभाव -- य तृ. वि., ए. व. -- आलस्यानुयोगोति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता, दी. नि. अट्ट. 3.115.

**आलसियभाव** पु., [आलस्यभाव], उपरिवत् -- वो प्र. वि., ए. व. -- तेनस्स सरीरगरुताय उट्ठाननिसज्जादीसु आलसियभावो ईसकं अप्पहीनो विय होति, दी. नि. अट्ट. 1.250; -- वं' द्वि. वि., ए. व. -- धम्मसभायम्पि तेसं भिक्खूनमेव आलसियभावं निस्साय कथं समुट्ठापेसु, जा. अट्ट. 1.409.

**आलसियमहग्घस** त्रि., कर्म. स., आलसी एवं पेदू -- सो पु., प्र. वि., ए. व. -- पूतिभावं आपादितरुक्खो विय आलसियमहग्घसो वेदितब्बो, स. नि. अट्ट. 3.77.

**आलसियविरहित** त्रि., तत्पु. स. [आलस्यरहित], आलस्य से मुक्त, उद्योगी, अध्यवसायी, जागरूक -- तो पु., प्र. वि., ए. व. -- अनलसोति सातच्चकिरियाय आलसियविरहितो, दी. नि. अट्ट. 3.178-79; -- ता ब. व. -- अनलसाति आलसियविरहिता, पाचि. अट्ट. 162.

**आलसियव्यसन** नपुं., तत्पु. स. [आलस्यव्यसन], आलस्य की लत, आलस्य की बुरी आदत, आलस्य के कारण उत्पन्न संकट -- नादि त्रि., आलस्य से उत्पन्न कष्ट आदि -- दीहि तृ. वि., ब. व. -- आलसियव्यसनादीहि वा अभिभूतो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).162.

**आलरिसयाभिभूत** त्रि., तत्पु. स. [आलस्याभिभूत], आलस्य से ग्रस्त, आलस्य से बुरी तरह घिरा हुआ, आलस्य में डूबा हुआ -- तो पु., प्र. वि., ए. व. -- किं सो लूखो धमनिसन्धतगतो आलरिसयाभिभूतो कच्छुपरिकिण्णो अहोसि, ध. प. अट्ट. 1.170.



## आलस्य

206

## आलिङ्ग

आलस्य नपुं., अलस का भाव., सं. के प्रभाववश आलस्य एवं आलसिय के स्थाना. के रूप में यत्र तत्र प्रयुक्त [आलस्य], आलस्य, आलस – स्यं प्र. वि., ए. व. – अलसस्स भावो आलस्यं, क. व्या. 362; आलस्यञ्च पमादो व. अनुदानं असंयमो ..., सं. नि. 1(1).50; आलस्यन्ति आलसियं, सं. नि. अट्ट. 1.90; तन्दि ... पे. ... आलस्यं, मि. प. 267; – स्ये सप्त. वि., ए. व. – भिक्षुणो चेतसा बहुलं विहरतो आलस्ये कोसज्जे विस्सद्विये पमादे ..., अ. नि. 2(2).199; आलस्येति आलसियमावे, अ. नि. अट्ट. 3.168.

आलस्यानुयोग पु., तत्पु. सं. [आलस्यानुयोग]. शा. अ., आलस्य के साथ अपने को जोड़ देना, ला. अ., आलसी मनोवृत्ति का शिकार हो जाना, अकर्मण्यता, शिथिलता, अध्यवसायहीनता – गो प्र. वि., ए. व. – आलस्यानुयोगो भोगानं अपायमुखं, दी. नि. 3.138; आलस्यानुयोगोति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता, दी. नि. अट्ट. 3.115; – गं द्वि. वि., ए. व. – आलस्यानुयोगं अनुयुत्तस्स मे ..., महानि. 194; आलस्यानुयोगन्ति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तत्, महानि. अट्ट. 284; – गे सप्त. वि., ए. व. – छ खोमे, ... आदीनवा आलस्यानुयोगे, दी. नि. 3.139.

आलस्यायना स्त्री., आलस्य के ना. धा., आलस्यायति से व्यु., क्रि. ना., आलस्य करना, आलसी स्वभाव का होना, आलस का शिकार बनना – ना प्र. वि., ए. व. – आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं, महानि. 278.

आलस्यायित त्रि., आलस्य के ना. धा. आलस्यायति का भू. क. कृ., आलस्य में डूबा हुआ – स्स पु., प. वि., ए. व. – आलस्यायितस्स भावो आलस्यायितत्तं, महानि. अट्ट. 332; – त्त नपुं., भाव., आलस्य में निमग्न होना – त्तं प्र. वि., ए. व. – आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं, महानि. 278.

आलस्स नपुं., अलस का भाव. [आलस्य], आलस, सुस्ती, अकर्मण्यता – स्सेन तृ. वि., ए. व. – आलस्सेनाभिभूतस्स अविज्जूज्जसंसेविनो, सद्धम्मो. 567.

आलान/आळान नपुं., [आलान], बन्धन-स्तम्भ (हाथियों को) बांधने हेतु गाड़ा गया खम्भा या खूँटा – नं<sup>1</sup> – आळानमाळ्हको थम्मो, अभि. प. 364; आलात्यस्मिं अनेन वा बन्धतीत्यालानं, आपुब्बो लाधातु बन्धनत्थो, अभि. प. 364 पर सूची; – नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. – आलानं भिन्दित्वा ..., जा. अट्ट. 1.397; – नेन तृ. वि.,

ए. व. – आळकसङ्घातआलानेन ..., चरिया. अट्ट. 108; – ने सप्त. वि., ए. व. – तं आळाने निच्चलं बन्धित्वा तोमरहत्था मनुस्सा ... कारेन्ति, जा. अट्ट. 1.397; – त्थम्म पु., कर्म. सं. [आलानस्तम्भ], उपरिवत् – म्मे सप्त. वि., ए. व. – ममाळकेति आलानत्थम्म, चरिया. अट्ट. 109.

आलाप पु., आ + √लप से व्यु. [आलाप], बातचीत, सम्बोधन, भाषण – पो प्र. वि., ए. व. – आदो भासनमालापो, अभि. प. 123; आवुसोति सावकानं आलापो, सं. नि. अट्ट. 2.206; – सल्लाप पु., द्व. सं., आलाप एवं संलाप – पे सप्त. वि., ए. व. – मातुगामेन पन आलापसल्लापे सति विस्सासो होति, दी. नि. अट्ट. 2.156.

आलिखति आ + √लिख का वर्त., प्र. पु., ए. व., लिखता है, चित्रित करता है, रूपरेखा प्रस्तुत करता है – न्तु अनु. प्र. पु., ब. व. – नामञ्चकारं पि तेसं इहालिखन्तु, हत्थ. वं. 11.10(सिंहली).

आलिखित्वा आ + √लिख का पू. का. कृ., लिख कर, खींच कर, बना कर, रेखाङ्कित कर – थेरो पठविया चक्कं लिखित्वा ..., मि. प. 51; पाठा. आलिखित्वा; चन्दमण्डले ससलक्खणं लिखित्वा ..., जा. अट्ट. 3.47; पाठा. आलिखित्वा.

आलिखितुं आ + √लिख का निमि. कृ., चित्रांकित अथवा रेखाङ्कित करने के निमित्त, लिखने में – ... सुकुसलोपि वित्तकारो वा पोत्थकारो वा आलिखितुम्पि समत्थो नत्थि, जा. अट्ट. 1.80.

आलिङ्ग<sup>1</sup> पु., [आलिङ्ग्य/आलिङ्ग], एक प्रकार का ढोल या नगाड़ा, मृदङ्ग का एक प्रभेद – मुदिङ्गो मुरुजोरस्स तु आलिङ्ग्यङ्गयोद्धका भेदा, अभि. प. 143; कुम्बुगीवा तु या गीवा सुवण्णालिङ्गसन्निभा, अभि. प. 263; तुल., मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः, अमर. 1.7.5; कम्बु वुच्चति सुवण्णं कम्बुमयेन आलिङ्गेन (मुरजभेदेन) सन्निभा गीवा कम्बुगीवा, अभि. प. 263 पर सूची; सं. प. के अन्त., – कम्बुगीवोति सुवण्णाळिङ्गसदिसगीवो, सुवण्णजिह कम्बूति वुच्चति, जा. अट्ट. 4.119; कम्बुतलाभासाति सुवण्णालिङ्गतलसन्निभा गीवाति अत्थो, जा. अट्ट. 5.151.

आलिङ्ग<sup>2</sup> पु., [आलिङ्गन], आलिङ्गन, चिपट जाना, अपने शरीर से अन्य के शरीर को चिपटा लेना – ङ्गो प्र. वि., ए. व. – आलिङ्गो उपयूहनं, सद्. 2.443.

## आलिङ्गति

207

## आलिम्पति / आलिम्पेति

आलिङ्गति आ + √लिङ्ग का वर्त., प्र. पु. ए. व. [आलिङ्गति], आलिङ्गन करता है - परस्सजने आलिङ्गति, सद. 3.880; - न्तो वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. - आलिङ्गन्तो विय गाळ्ह पीळेत्वा, जा. अड. 1.271; - माना वर्त. कृ., आत्मने., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - तम्बवण्णेन उदकेन आलिङ्गमाना विय आगच्छति, स. नि. अड. 3.74; - इय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - परम्मुखिं वा आलिङ्गेय्य, दी. नि. 1.210; ... परम्मुखिं ठितं पच्छतो गन्त्वा आलिङ्गेय्य, दी. नि. अड. 1.298; - ङ्गि अद्य., प्र. पु., ए. व. - पलिस्सजीति आलिङ्गि, जा. अड. 5.153; - ङ्गिसु ब. व. - अज्जमज्जं परामसित्वा आलिङ्गिसु, सु. नि. अड. 1.57; - ङ्गित्वा पू. का. कृ. - अज्जमज्जं आलिङ्गित्वा, दी. नि. 3.53; जा. अड. 5.153; - ङ्गितुं निमि. कृ. - पुरतो च पच्छतो च आलिङ्गितुं देधाति, अ. नि. अड. 1.276; - ङ्गितो भू. क. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - आलिङ्गितो चासि पियो पियाय, जा. अड. 4.397; - ङ्गियं सं. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. - आलिङ्गियं पियतरज्ज सुतं, सद. 1.87; - ङ्गिया सं. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. - आलिङ्गिया अज्जमज्जं मयं उयो, जा. अड. 4.399.

आलिङ्गन नपुं., आ + √लिङ्ग से व्यु., क्रि. ना. [आलिङ्गन], एक दूसरे के शरीर से चिपट जाना या सट जाना, आलिङ्गन, सटाव, चिपकाव - नं प्र. वि., ए. व. - आलिङ्गनं परस्सज्जो सिलेसो उपगूहणं, अभि. प. 774; लिङ्ग गत्यत्थो, आ पुब्बो य आलिङ्गीयते ति आलिङ्गनं, अभि. प. 774 पर सूची, परस्सज्जो आलिङ्गनं, सद. 346; - ने सप्त. वि., ए. व. - सिलिस आलिङ्गने, सद. 2.489.

आलिङ्गय पु., आलिङ्ग का सं. के प्रभाववश किया गया रूपा. [आलिङ्गय], एक प्रकार का मृदङ्ग या ढोलकी - आलिङ्गयङ्गयोद्धका भेदा, अभि. प. 143.

आलिङ्गित त्रि., आ + √लिङ्ग का भू. क. कृ. [आलिङ्गित], वह, जिसका आलिङ्गन किया गया है, प्रिय - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आलिङ्गितो चासि पियो पियाय, जा. अड. 4.397.

आलिङ्गीयते आ + √लिङ्ग का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., आलिङ्गन किया जाता है - लिङ्ग गत्यत्थो, आपुब्बो यु आलिङ्गीयते ति आलिङ्गनं, अभि. प. 774 पर सूची.

आलित्त त्रि., आ + √लिप का भू. क. कृ. [आलित्त], पूरी तरह से लिपा हुआ, पूर्ण रूप से ग्रस्त अथवा अभिभूत - त्तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - खुरव मधुनो लित्तं उल्लिहं नावबुद्धाति, थेरगा. 737; पाठा. मधुनालित्तं.

आलिन्द / आकिन्द पु., [अलिन्द / आलिन्द], क. घर के द्वार के बाहर का चबूतरा, बरामदा, मकान की छत, मकान की मंजिल या तल - पघाणो पघणालिन्दा पमुखं द्वारबन्धनं, अभि. प. 218; गेहेकदेसे आलिन्दो पघाणो पघणो भवे, अभि. प. 218 पर सूची; - न्दं द्वि. वि., ए. व. - अतरमानो आकिन्दं पविसित्वा उक्कासित्वा अग्गळ् आकोटेहि, महाव. 324; अनुजानामि, भिक्खवे, आकिन्दं पघनं पकुट्ठं ओसारकंति, चूळव. 279; आकिन्दोनाम पमुखं वुच्चति, चूळव. अड. 62; - न्दे सप्त. वि., ए. व. - आलिन्दे उत्तरासङ्गं पज्जापेत्वा तिणकलापं ओकासेहीति, स. नि. 2(2)282; ... पुत्तं नीहरित्वा बहिआलिन्दे निपज्जापेसि, ध. प. अड. 1.16; - न्दा प्र. वि., ब. व. - आकिन्दा पाकटा होन्ति, चूळव. 279; ख. सुमेरु पर्वत का शिखर, सोने के लिए ऊंचा बनाया हुआ स्थान, स. उ. प. में, पठमा.- प्रथम आलिन्द - न्दे सप्त. वि., ए. व. - सिनेरुस्स पठमालिन्दे तेसं आरक्खा, जा. अड. 1.202; स. उ. प. के अन्य प्रयोगों हेतु कुच्छि. द्वारकोडुका, सा. के अन्त. द्रष्टव्य; - क पु., उपरिवत्, स. उ. प. के अन्त., बहि.- बाहर का बरामदा - के सप्त. वि., ए. व. - बहिआकिन्दके ठत्वा तेन सद्धिं कथेसि, जा. अड. 3.248; अना.- बिना बरामदा वाला, बिना चबूतरा का - का पु., प्र. वि., ब. व. - तेन खो पन समयेन विहारा अनाकिन्दका होन्ति अप्पटिसरणा, चूळव. 279.

आलिन्दकमिड्डिका स्त्री., घर के बाहर बने चबूतरे के किनारे पर बैठने या लेटने हेतु बनाया गया ऊंचा स्थान या मेंड, चबूतरे के किनारे बनाया गया पीठ - मिड्डन्तेति आलिन्दकमिड्डिकादीनं अन्ते, चूळव. अड. 48.

आलिन्दकवासी त्रि., आलिन्दक का निवासी, महाफुस्सदेवथेर के लिए प्रयुक्त एक उपाधि - सी पु. प्र. वि., ए. व. - आकिन्दकवासी महाफुस्सदेवथेरो विय म. नि. अड. (मूप.) 1(1)268.

आलिम्पति / आलिम्पेति आ + √लिप / लिम्प का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलिम्पति], लीपता है, लेप करता है, पोतता है, प्रसाधन-सामग्रियों का प्रयोग करता है, अभ्यंजित करता है - न्ति ब. व. - तेन खो पन समयेन छब्बगिया भिक्खू मुखं आलिम्पन्ति, चूळव. 224; विष्पसन्नछविरागकरेहि मुखात्तेपनेहे आलिम्पन्ति, चूळव. अड. 46; - म्पतो / न्तरस्स वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. - वणमुखं आलिम्पतो, म. नि. 3.42; भेसज्जेन आलिम्पेन्तरस्स असुचि मुच्चि, पारा. 166; - म्पेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - वणमुखं आलिम्पेय्य,

## आलिम्पन

208

## आलुम्पति

म. नि. 3.42; — म्येय्यासि म. पु., ए. व. — वणमुखं आलिम्पेय्यासि, तदे., — म्पित्वा पू. का. कृ. — भेसज्जं आलिम्पित्वा, जा. अहु. 5.328; — म्पितब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. — न, ..., मुखं आलिम्पितब्बं, चूळव. 224.

**आलिम्पन** नपुं., आ + र्लिप/लिम्प से व्यु., क्रि. ना. [आलिम्पन, भिन्न अर्थ में, आदीपन का समार्थक], अग्निदाह, अगलगी, अग्नि, आग लगाना — नं द्वि. वि., ए. व. — उदकघटकानि तपेन्ति आलिम्पनं विज्झापेतुं, मि. प. 42.

**आलिम्पापेय्य** आ + र्लिप/लिम्प का प्रेर., विधि., प्र. पु., ए. व., लेप करवाए, लेप लगवाए — या पन भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं वा रुधितं वा अनपलोकेत्वा ... एकेनेका भेदापेय्य वा ... आलिम्पापेय्य वा ..., पाचि. 431.

**आलिम्पीयति** आ + र्लिप/लिम्प का कर्म, वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलिप्यते], लेपयुक्त किया जाता है, लेप लगाया जाता है — सो वणो आलेपेन च आलिम्पीयति तेलेन च मक्खीयति, मि. प. 80.

**आलिम्पेति** आ + र्लिप/लिम्प का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदीपयति], आदीप्त करता है, प्रज्वलित कर देता है, जलाता है, आग लगाता है, आग पकड़ाता है — उक्कं बन्धित्वा उक्कामुखं आलिम्पेति, विसुद्धि. 1.238; आलिम्पेतीति आदीपेति जालेति, विसुद्धि. महाटी. 1.286; — न्ति ब. व. — छब्बग्गिया भिक्खू दायं आलिम्पेन्ति, चूळव. 259; आलिम्पेन्तीति तिणवनादीसु अग्निं देन्ति, चूळव. अहु. 56; — य्य विधि., प्र. पु., ए. व. — उक्कं बन्धित्वा उक्कामुखं आलिम्पेय्य, अ. नि. 1(1)290; आलिम्पेय्याति तत्थ अङ्गारे पक्खिपित्वा अग्निं दत्त्वा नाळिकाय धमन्तो अग्निं गाहापेय्य, अ. नि. अहु. 2.220; — न्ता वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. — सकटसहस्सेहि दारुनि आहरित्वा आलिम्पेन्तापि, ध. प. अहु. 1.128; — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — पिदहित्वा भाजनन्तरे तपेत्वा आवापं आलिम्पेसि, अ. नि. अहु. 1.314; — सुं ब. व. — छब्बग्गिया भिक्खू मरणाधिप्पाया दायं आलिम्पेसुं, पारा. 106; — स्सामि भवि., उ. पु., ए. व. — आवापं आलिम्पेस्सामि, अ. नि. अहु. 1.314; — स्ससि म. पु., ए. व. — कदा त्वं आवापं आलिम्पेस्ससीति, ध. प. अहु. 1.103; — स्साम उ. पु., ब. व. — भगवतो वित्तक आळिम्पेस्सामाति, दी. नि. 2.122; आळिम्पेस्सामाति अग्निं गाहापेस्साम, दी. नि. अहु. 2.174; — त्त्वा पू. का. कृ. — अथ नं आलिम्पेत्वा, ध. प. अहु. 1.128; उक्कामुखं आलिम्पेत्वा सण्डासेन जातरुपं

गहेत्वा ... कालेन कालं अभिधमेय्य, म. नि. 3.292; — तुं निमि. कृ. — न सककोन्ति आळिम्पेतुं, दी. नि. 2.122; आळिम्पेतुन्ति अहुपि सोळसपि वृत्तिसपि जना जालनत्थाय यमकयमकउक्कायो गहेत्वा ... अग्निं गाहापेतुं, दी. नि. अहु. 2.174; — म्पितब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — न ..., दायो आलिम्पितब्बो, चूळव. 259.

**आलु** विशेष. बनाने वाला प्रत्यय तदबहुल अर्थ में आलु प्रत्यय होता है — आलु तबहुले, क. व्या. 361; आत्वभिज्झादीहि, मो. 4.86.

**आलु/आलुक/आलुप/आलुव** पु./नपुं., [आलुक]. 1. तेंदू का फल, 2. मीठे कन्द वाला एक पौधा, 3. शकरकन्द, आखू — वा पु., प्र. वि., ब. व. — आलुवा च कळम्बा च ... बहुका मम अस्समे, अप. 1.14; एते आलुवादयो मूलफला खुदा मधुरसा मम अस्समसमीपे बहू सन्तीति सम्बन्धो, अप. अहु. 1.222; — लूनि/लुवानि द्वि. वि., ब. व. — खणन्तो आलूनि चैव तालकन्दानि च, जा. अहु. 4.336; न तक्कला सन्ति न आलुवानि, न विळालियो न कळम्बानि तात, जा. अहु. 4.41; आलुवानीति आलुवकन्दा, तदे., स. प. के अन्त., खणन्तालुकलम्बानि, बिलालितक्कलानि च, जा. अहु. 4.334; — कन्द नपुं., तेंदू का फल अथवा शकरकन्द — न्दो प्र. वि., ए. व. — ... आलुवकन्दो ..., पाचि. अहु. 89; — न्दा प्र. वि., ब. व. — आलुवानीति आलुवकन्दा, जा. अहु. 4.41; — न्दं द्वि. वि., ए. व. — आलुवं तस्स पादासिन्ति तस्स अरहतो अहं पसन्नमानसो आलुवकन्दं पादासिं आदरेन अदासिन्ति अत्थो, अप. अहु. 2.187.

**आलुम्पकारकं/आलुप्पकारकं** अ., क्रि. वि., खण्ड खण्ड करके, टुकड़ों में या भागों में विभक्त करके — ते, ... सत्ता रसपथविं हत्थेहि आलुप्पकारकं उपक्कमिंसु परिमुञ्जितुं, दी. नि. 3.63; आलुप्पकारकन्ति एत्थ आलोपपरियायो आलुप्प — सद्दोति, दी. नि. टी. 3.39.

**आलुम्पति** आ + र्लुप का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलुम्पति], तोड़ देता है, टुकड़े टुकड़े कर देता है, भंग कर देता है, काट देता है, नजर से ओझल कर देता है, नष्ट कर देता है — गावी तरुणवच्छा थम्बच्च आलुम्पति वच्छकच्च अपचिनन्ति, म. नि. 1.407; — माना वर्त. कृ., आत्मने., स्त्री., प्र. वि., ए. व. — ... तिणच्च आलुम्पमाना खादति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2)295; — म्पित्वा पू. का. कृ. —

## आलुळ

209

## आलेख

वचकस्स आसन्नहाने चरमाना तिणं आलुमित्वा गीवं उक्खिपित्वा ..., तदे.

आलुळ त्रि., गंदला, पंकिल, मटमैला - ळा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - तेन गङ्गा आळुला सन्दतीति, जा. अ. 6.258; नदी ... हेड्डपरियवालिका आलुळा होति, स. नि. अ. 1.209.

आलुळति/आलुलेति आ + √लुड का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलोडति], क. आलोडित अथवा उद्विग्न होता है, ख. संभ्रमग्रस्त कर देता है, ग. घबराहट में इधर उधर भटकता है - गम्भीरं महाउदकं ... न आलुळति, स. नि. अ. 1.208; एवरुपस्सपि नाम भिक्खुनो अयं पज्झो आलुळेति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).241; - माना स्त्री., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - ततो चवित्वा पुन गतिवसेन आलुलमाना, ध. प. अ. 2.305; - लिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - अयं पुग्गलो पदेणिआगतं तन्ति ... आलुळिस्सतीति, ध. स. अ. 399; - ले विधि, प्र. पु., ए. व. - भातिका इमं पज्झं आलुळे ..., म. नि. अ. 1(1).241.

आलुलापेत्वा आ + √लुळ का प्रेर., पू. का. कृ., आन्दोलित अथवा भुब्ध करा कर, बुरी तरह खौल-बौल करा कर - सेमकं उदकचाटियं आलुळापेत्वा ..., म. नि. अ. (म.प.) 2.60.

आलुळिक त्रि., आलुळ से व्यु., मटमैला, गंदला, पंकिल - कं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - उदकं आलुळिकं करोन्ते दिस्वा, दी. नि. अ. 2.200.

आलुळित/आलुलित त्रि., आ + √लुळ का भू. क. कृ. [आलोडित], क. विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन, संभ्रमग्रस्त - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तव दुस्सयनदुब्भोजनेहि चित्तं आलुळितं भविस्सति, जा. अ. 7.310; अहमि ... उपक्किलेसेहि आलुलितपुब्बोति, म. नि. अ. (उप. प.) 3.152-53; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - इमे सङ्घारा अञ्जमज्जमिस्सा आलुळिता ..., म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).259; - ते सप्त. वि., ए. व. - परितोदकं एव हि भतपक्खेपेन आलुळिते सुखुमपाणका मरन्ति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).101; तत्थ आविलेति कइभालुळिते, जा. अ. 2.83; ख. मटमैला, पंकिल या मलिन कर दिया गया, आपस में मिला दिया गया, मथ दिया गया - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - गङ्गा आळुला सन्दतीति, जा. अ. 6.258; पाठा. आळुलिता; - तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - एकतो कत्वा मिस्सितं आलुळितं, म. नि. अ. (मू.प.)

1(2).271; - तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - चक्खादीनि इन्द्रियानि जरं पत्तस्स परिपक्कानि आलुळितानि अविसदानि ..., म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).225.

आलुळितत्त नपुं., आलुळित का भाव., मटमैलापन, विक्षोभभाव, झुंझलापन, व्यग्रता - ता प. वि., ए. व. - पठमत्तरं ओतरित्वा पिवन्तोहि आलुळितत्ता आविलानि, उदा. अ. 202.

आलुळीयति आ + √लुळ का वर्त., प्र. पु., ए. व., कर्म. वा., मथ दिया जाता है, विक्षुब्ध कर दिया जाता है, गंदला अथवा पंकिल बना दिया जाता है - उदकमि आलुळीयति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).158.

आलुळेति/आळुळेति आ + √लुळ का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., क. विक्षोभित कर देता है, मथ देता है, घोलमेल कर देता है - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - महामेरुं मत्थं कत्वा चक्कवाळमहासमुदं आलुळेन्तो, जा. अ. 1.34; - न्ते द्वि. वि., ब. व. - महाचङ्गमे सम्महुद्धानं आळुलेन्ते दिस्वा, दी. नि. अ. 2.200; - न्तानं पु., ष. वि., ब. व. - यागुं वा सूपं वा ... आलुलेन्तानं, पाचि. अ. 100; आलुलेन्तानन्ति आलोलेन्तानं अयमेव वा पाठो, सारथ. टी. 3.64; ख. अव्यवस्थित कर देता है, संभ्रमग्रस्त बना देता है, विक्षुब्ध कर देता है, व्यग्र या विचलित कर देता है - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - सारिपुत्तं आलुळेन्तो पज्झं पुच्छिस्सामि, जा. अ. 2.8; - स्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - मातुगामो नाम कस्मा तुम्हादिसानं चित्तं नालुळेस्सति, जा. अ. 2.26; - स्सन्ति ब. व. - अनुरुद्धा तुम्हे किं न आळुलेस्सन्ति, म. नि. अ. (उप.प.) 3.152; - त्वा पू. का. कृ. - वालिकं आलुळेत्वा, स. नि. अ. 3.42.

आलुवकन्द पु., चुकन्दर, शकरकन्द, आवनूस का फल - न्द द्वि. वि., ए. व. - अरहतो अहं पसन्नमानसो आलुवकन्दं पादासि आदरेन ... अत्थो, अप. अ. 2.187.

आलुवदायक पु., एक स्थविर का नाम - को प्र. वि., ए. व. - इत्थं सुदं आयस्मा आलुवदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थानि, अप. 1.252.

आलूख नपुं., [आरुख]. हिमाचल में प्राप्त एक औषधीय पादप, आड़ू, शफतालू, सतालू - खं प्र. वि., ए. व. - आलूखं वातपित्तस्सकाससासारूची रणं भेसज्ज. म. 5.102.

आलेख पु., आ + √लिख से व्यु. [आलेख], चित्र लेखन, रेखाङ्कन, चित्राङ्कन - खं द्वि. वि., ए. व. - दिब्बविमानं पेसेत्वा तदालेखं ददाथ मे, म. वं. 27.10.

## आलेप

210

## आलोककर

**आलेप** पु., आ + √लिप से व्यु. [आलेप]. मलहम, घावों या व्रणों को भरने वाला तरल लेप, उपचारक औषधि के रूप में प्रयुक्त मलहम, तेल या मलहम आदि से मालिश – पं. द्वि. वि., ए. व. – सीसच्छविं सिब्वित्वा आलेपं अदासि, महाव. 363; – पेन तृ. वि., ए. व. – जीवको ... भगन्दलाबाधं एकेनेव आलेपेन अपकङ्घि, महाव. 361; स. उ. प. के रूप में अगदा, गन्धा, वणा. के अन्त. द्रष्ट.

**आलेपन** नपुं., आ + √लिप से व्यु., क्रि. ना. [आलेपन]. व्रण अथवा घाव पर मलहम लगाना, लेप करना, अभ्यंजन, तेल या मलहम आदि का लेप अथवा मालिश, स. पू. प. के रूप में – रुहन नपुं., औषधि या मलहम का लेप लगाने से घाव या व्रण का भर जाना – नै सप्त. वि., ए. व. – वण्णस्स आलेपनरुहने यथा, विसुद्धि. 1.42; आलेपनरुहने यथाति भेसज्जलेपनेन वणस्स रुहने विय, विसुद्धि. महाटी. 1.69; स. उ. प. के रूप में मुखा, वणा, सीसा. के अन्त. द्रष्ट.

**आलेपित** त्रि., आ + √लिप का भू. क. कृ. [आदीपित]. जलाया गया, दग्ध किया हुआ, आग पकड़ाया हुआ – तो पु., प्र. वि., ए. व. – कुम्भकारपाको आलेपितो पठमं धूमेति संधूमेति सम्पधूमेति, अ. नि. 2(2)238.

**आलोक** 1. पु., [आलोक], शा. अ., प्रकाश, देखना, दिन का उजाला, सूर्य का प्रकाश, चमकदमक – अथोभासो पकासो चालोकोज्जोतातया समा, अभि. प. 37; आलोकयति एतेनाति आलोको, अभि. प. 37 पर सूची; दिङ्मोभासासेसु आलोको, अभि. प. 1043; दस्सने ओभासे चाति द्विसु अत्थेसु, अभि. प. 1043 पर सूची; आलोकोति रश्मि, आलोकोन्ति एतेन भुसो पस्सन्ति, जना, चक्खुविज्जाणं वाति आलोको, सह. 2.520; – को प्र. वि., ए. व. – अन्धकारो गुहाय अन्तराधायि, आलोको उदपादि, दी. नि. 2.198; आलोको उदपादीति यो पकतिया गुहाय अन्धकारो, सो अन्तरहितो, दी. नि. अहु. 2.267; – कं द्वि. वि., ए. व. – ... सक्का सदवेकं लोके अन्धकारं विधमिन्त्वा आलोकं दस्सेतुन्ति, पि. प. 286; ते तं दिवसं आलोकं ओलोकत्वा ..., स. नि. अहु. 1.125; – केहि तृ. वि., ब. व. – नेकदीपसहस्सान आलोकेहि, चू. वं. 74.219; – के सप्त. वि., ए. व. – उदपत्तो अच्छो विप्पसन्नो अनाविलो आलोके निक्खित्तो, अ. नि. 2(1)217; ला. अ. 1 बुद्धो, अर्हत्तो तथा देवों के शरीर से बाहर निकलने वाली लौकिक आभा या तेज-पुंज, आभा-

मण्डल, अलौकिक प्रभा, इन महासत्त्वों के जन्म एवं निर्वाण के समय प्रकट होने वाला प्रकाश अथवा इनके प्रादुर्भाव एवं अन्तर्धान के पूर्वनिमित्त के रूप में उत्पन्न प्रकाश – को प्र. वि., ए. व. – यथा निमित्ता दिस्सन्ति आलोको सज्जायति ... ब्रह्मा पातुभविस्सति, ब्रह्मणो हेतं पुब्बनिमित्तं पातुभावाय, यदिदं आलोको सज्जायति, दी. नि. 1.201; – कं द्वि. वि., ए. व. – ब्रह्मा नाम महानुभावो एकहुलिया एकस्मिं चक्कवाळसहस्से आलोकं फरति, स. नि. अहु. 1.179; तं आलोकं दिस्सा येन सूरियो अत्थज्जेव गमितो ... एस सो पुरिसो इदानी आलोकं कत्वा ठितो, अहो अच्छरियपुरिसोति ..., अ. नि. अहु. 2.204; – केन तृ. वि., ए. व. – ये ... भिक्खू विकाले आगच्छन्ति तेसमि तेजोधातुं समापज्जित्वा तेनेव आलोकेन सेनासनं पज्जपेति ..., अहुलिया जलमानाय पुरतो पुरतो गच्छति, तेपि तेनेव आलोकेन ... पिडितो गच्छन्ति, चूळव. 178; यतो च ... तथागतो लोके उप्पज्जति ... अथ महतो आलोकस्स पातुभावो होति महतो ओभासस्स, स. नि. 3(2)505; ला. अ., 2. आन्तरिक ज्ञान ज्योति, प्रज्ञा का प्रकाश, लोक के प्रकाशभूत बुद्ध, सम्यक दृष्टि का प्रकाश, सत्य-विषयक ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान, प्रज्ञा, विद्या – दिङ्मोभासेसु आलोको, बुद्धो तु पण्डिते जिने, अभि. प. 1043; – को प्र. वि., ए. व. – पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेषु चक्खु उदपादि, जाणं ..., पज्जा ..., विज्जा ..., आलोको उदपादि, महाव. 14; उदपादीति ... ओभासद्धेन च आलोकोति वुत्ता उदपादि, दी. नि. अहु. 2.46; ओभासनद्धेन आलोकोति वुत्तं, स. नि. अहु. 2.19; आलोकनद्धेन पज्जाव आलोको पज्जाआलोको, पटि. म. अहु. 1.310; – कं द्वि. वि., ए. व. – आलोकं दस्सेताति पज्जाआलोकं दस्सनसीलो, पज्जाआलोकस्स दस्सेताति वा अत्थो, पटि. म. अहु. 2.14; आलोकं वड्ढत्वा दिब्बचक्खुना ओलोकेन्तो ..., म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1)350; 2. त्रि., प्रकाश से भरा हुआ, सुस्पष्ट – का स्त्री., प्र. वि., ए. व. – अयं सज्जा आलोका होति विवटा परिसुद्धा परियोदाता, विभ. 284.

**आलोककर** त्रि., [आलोककर], प्रकाश प्रदान करने वाला, प्रभा उत्पन्न करने वाला, अन्धकार-नाशक – रो पु., प्र. वि., ए. व. – पम्भुरोति पम्भुरो आलोककरो ... पज्जोतकरोति, चूळनि. 193; आलोककरोति अनन्धकारकरो, चूळनि. अहु. 78; – रा ब. व. – एवरुपा च ते, भिक्खवे, भिक्खू ... आलोककरातिपि वुच्चन्ति ..., इतिवु. 76-77; सपरसन्तानेसु

## आलोककरण

211

## आलोकनविलोकन

पञ्चाआलोकपञ्चाओभासपञ्चापञ्जोतानं करणेन निब्वतनेन  
आलोकादिकरातिपि, इतिवु. अट्ट. 290; तयो हि आलोककरा,  
लोके लोकतमोनुदा, अप. 1.276.

आलोककरण<sup>1</sup> त्रि., तत्पु. स. [आलोककरण], प्रकाश देने  
वाला, आभा अथवा दीप्ति से परिपूर्ण, प्रकाश का पुञ्ज -  
णो पु., प्र. वि., ए. व. - मणि निब्वतते मय्हं, आलोककरणो  
ममं, अप. 2.47; - णा ब. व. - आलोककरणा धीरा,  
..., इतिवु. 77; - णं नपुं., प्र. वि., ए. व. - तावता  
बुद्धचेतियं, ... आलोककरणं तदा, अप. 1.68.

आलोककरण<sup>2</sup> नपुं., [आलोककरण], प्रकाश का उदय,  
आभा की उत्पत्ति, प्रकाश को उत्पन्न करना - णेन तृ.  
वि., ए. व. - आलोककरणेन 'पभङ्करो'ति लद्धनामो सूरियो  
... उदेति, उदा. अट्ट. 292.

आलोककसिण नपुं., कर्म. स. / तत्पु. स. [आलोककृ  
त्त्न], शा. अ., सम्पूर्णता अथवा समग्रता के साथ  
आलोक अथवा प्रकाश, ला. अ., ध्यान-प्रक्रिया के क्रम  
में चित्त के आलम्बन के रूप में उल्लिखित चालीस  
कम्मद्वानों की सूची में प्रथम दस कम्मद्वान परिगणित हैं,  
इन्हें दस कसिण कहा गया, आलोककसिण इन्हीं में एक  
के रूप में निर्दिष्ट है, चन्द्र, सूर्य आदि का वह अनन्त एवं  
समग्र आलोक जो ध्यानक्रम में चित्त की एकाग्रता का  
आलम्बन बनाया जाता है - णं प्र. वि., ए. व. - तत्थ  
पथवीकसिणं, आपोकसिणं, तेजोकसिणं, वायोकसिणं,  
नीलकसिणं, पीतकसिणं, लोहितकसिणं, ओदातकसिणं,  
आलोककसिणं, परिच्छिन्नाकासकसिणान्ति, इमे दस कसिणा,  
विसुद्धि. 1.108; अभि. ध. स. 62; ... चन्दादिआलोको  
आलोककसिणान्ति दट्टब्बं, अभि. ध. वि. 225; - णे सप्त.  
वि., ए. व. - आलोकरस्सपि आलोककसिणे परिकम्मं  
कत्वा उप्पन्नज्झानस्सापीति सहारम्मणस्स ज्ञानस्स एतं  
नामं, स. नि. अट्ट. 2.118.

आलोककसिणचतुत्थ नपुं., कर्म. सं., आलम्बन या कम्मद्वान  
के रूप में गृहीत आलोककसिण से युक्त चतुर्थ ध्यान, स.  
उ. प. के रूप में - 'आकासकसिणआलोककसिणचतुत्थानि'  
पन विपरसनायपि अभिज्झानम्यि वहस्सपि पादकानि होन्ति,  
ध. स. अट्ट. 431.

आलोककिच्च नपुं., तत्पु. स. [आलोककृत्य], प्रकाश किए  
जाने का काम, उजाला करने की आवश्यकता - च्वं प्र.  
वि., ए. व. - आलोकद्वाने आलोककिच्चं नत्थि, स. नि.  
अट्ट. 1.195.

आलोकजात त्रि., प्रकाशमय, आलोकमय, जगमगाहट  
से भरपूर - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आलोकजाता  
विय मे, आनन्द, एसा दिसा, उदा. 96; आलोकजाता  
वियाति सज्जातालोका विय, उदा. अट्ट. 149; - तं  
नपुं., प्र. वि., ए. व. - इदं अन्धकारद्वानं आलोकजातं  
होतूति वा ... आवज्जित्वा, विसुद्धि. 2.18; आलोकजातन्ति  
आलोकभूतं, जातालोकां वा, विसुद्धि. महाटी. 2.23.

आलोकद्वान नपुं., तत्पु. स. [आलोकस्थान], प्रकाश  
से भरा हुआ स्थान, जगमगाहट से भरा हुआ क्षेत्र -  
ने सप्त. वि., ए. व. - नीलकसिणं ताव  
समापज्जित्वा सब्बत्थ आलोकद्वाने अन्धकारं फरि, स. नि.  
अट्ट. 1.195; आलोकद्वाने आलोककिच्चं नत्थि, स. नि.  
अट्ट. 1.195.

आलोकद त्रि., [आलोकद], प्रकाश देने वाला, ज्ञान की  
आंख देने वाला - दा पु., प्र. वि., ब. व. - ...  
तथागतानं ... आलोकदा चक्षुददा भवन्ति, थेरगा. 3; यतो  
देसनाविलासेन सत्तानं जाणमयं आलोकं देन्तीति आलोकदा,  
थेरगा. अट्ट. 1.35.

आलोकदस्सन नपुं., तत्पु. स. [आलोकदर्शन], प्रकाश का  
दर्शन, ज्ञान के आलोक का दर्शन - यथावालोददस्सनो,  
थेरगा. 422; ... सस्सतुच्छेदग्गाहानं विधमनेन याथावतो  
आलोकदस्सनो तक्करस्स लोकुत्तराणां लोकरस्स दस्सनो,  
थेरगा. अट्ट. 2.91.

आलोकधातु स्त्री., धातु के रूप में आलोक या  
प्रभा, मूलतत्त्व के रूप में आलोक - तु प्र. वि., ए. व. -  
आभाधातूति आलोकधातु, स. नि. अट्ट. 2.118.

आलोकन नपुं., आ + लुक् से व्यु., क्रि. ना. [आलोकन],  
किसी पर दृष्टिपात करना, आगे की ओर या सामने की  
ओर देखना, आन्तरिक अवलोकन - नं प्र. वि., ए. व. -  
आलोकनन्ति पुरतो पेक्खनं, सट्ठ. 2.520; आलोकनं च  
निज्झानं इक्खनं दस्सनं पथ, अभि. प. 775; पटिक्कमे  
पक्कवरूपं आलोकनं, विसुद्धि. 2.255; आमुखं लोकनं  
आलोकनं, विसुद्धि. महाटी. 2.383.

आलोकनविलोकन नपुं., द्व. स. [आलोकनविलोकन],  
शा. अ., सामने की ओर देखना तथा चारों ओर या  
इधर उधर देखना, ला. अ., आध्यात्मिक सर्वेक्षण, अपने  
अन्दर गहराई तक जाकर अन्वेषण, गम्भीर सोच विचार -  
नं प्र. वि., ए. व. - पञ्चन्नं खन्धानं समवाये  
आलोकनविलोकनं पज्जायति, दी. नि. अट्ट. 1.159;

## आलोकना

212

## आलोकसञ्ज्ञान

कशिणादिकम्महानिकोहि वा पन कम्महानसीसेनेव  
आलोकनविलोकनं कातब्बं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.)  
1(1).272; स. प. के रूप में, — रूपे  
अभिवक्कमपटिवक्कमआलोकनविलोकनसमिञ्जनपसार  
णवत्सेन, विसुद्धि. 2.255.

**आलोकना** स्त्री., सूक्ष्म परीक्षण, गम्भीर अन्वेषण — ना प्र.  
वि., ए. व. — इमेसं तिण्णं नयानं अट्टारसत्तं मूलपदानं  
आलोकना, पेटको. 334.

**आलोकनिमित्त** नपुं., तत्पु. स. [आलोकनिमित्त], आलोक  
का मानसिक प्रतिविम्ब, प्रकाश का मानसिक चित्र — तै  
सप्त. वि., ए. व. — आलोकसञ्जन्ति आलोकनिमित्ते  
उप्पन्नसञ्जं, अ. नि. अट्ठ. 3.105; आलोकसञ्जाति ...  
आलोकनिमित्ते सञ्जा, पटि. म. अट्ठ. 1.89.

**आलोकनिस्सय** पु., तत्पु. स. [आलोकनिःश्रय], आलोक  
पर आश्रित रहना, प्रकाश-निर्भरता — येन तू. वि., ए. व.  
— असम्भेदेन वक्खुस्स, रूपापाथगमेन च,  
आलोकनिस्सयेनापि, समनक्कारहेतुना, ... जायते  
चक्खुविज्जाणं, अभि. अव. (पू.) 69.

**आलोकपज्जोतकर** त्रि., दिन के प्रकाश को लाने वाला  
(सूर्य) — रो पु., प्र. वि., ए. व. — आलोकपज्जोतकरो  
पभङ्गरो, ... भाणुमा, जा. अट्ठ. 1.183.

**आलोकपुञ्ज** पु., तत्पु. स. [आलोकपुञ्ज], बहुत सारा  
प्रकाश, प्रकाश की राशि या ढेर, स. प. के अन्त. —  
पटिभागनिमित्तं घनविष्यसन्नआलोकपुञ्जसदिसं, विसुद्धि.  
1.167.

**आलोकफरण** पु., तत्पु. स. [आलोकस्फरण], शा. अ.,  
प्रकाश का प्रसार, आलोक का विस्तार अथवा व्यापक  
फैलाव, ला. अ., प्रज्ञा का प्रसार या फैलाव — णो प्र.  
वि., ए. व. — यो च आलोकफरणो यञ्च पच्चवेक्खणानिमित्तं,  
नेत्ति. 74; — णेन तू. वि., ए. व. — दिब्बचक्खु नाम  
आलोकफरणेन उप्पन्नं आणं, स. नि. अट्ठ. 3.2; — णे  
सप्त. वि., ए. व. — आलोकफरणे उप्पज्जतीति  
दिब्बचक्खुपञ्जा आलोकफरणता नाम, दी. नि. अट्ठ.  
3.224; — समत्थ त्रि., तत्पु. स. [आलोकस्फरणसमर्थ],  
आलोक अथवा प्रमा के फैलाव में सक्षम — त्थो पु., प्र.  
वि., ए. व. — तीसु दीपेसु एकस्मिं खणे आलोकफरणसमत्थो  
आदिच्चो, उदा. अट्ठ. 78.

**आलोकफरणता** स्त्री., आलोकफरण का भाव.  
[आलोकस्फरणत्थ, नपुं.], प्रकाश अथवा प्रज्ञा की दीप्ति

का व्यापक प्रसार होना, दिव्य-चक्षु, प्रज्ञा, सम्मासमाधि के  
पांच अङ्गों में से प्रथम के रूप में निर्दिष्ट — ता प्र. वि.,  
ए. व. — पञ्चङ्गिको सम्मासमाधि ... आलोकफरणता ..., दी.  
नि. 3.223; आलोकफरणे उप्पज्जतीति दिब्बचक्खुपञ्जा  
आलोकफरणता नाम, दी. नि. अट्ठ. 3.224.

**आलोकफरणब्रह्म** पु., आलोक का व्यापक विस्तार करने  
वाला ब्रह्मा — ह्या प्र. वि., ए. व. — लोकधातुसतसहस्समिहि  
आलोकफरणब्रह्मा, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.107.

**आलोकबहुल** त्रि., ब. स. [आलोकबहुल], प्रज्ञा के प्रकाश  
की बहुतायत वाला, अत्यधिक मात्रा में प्रज्ञा के आलोक से  
युक्त, महत्तत एवं वेपुलत की प्राप्ति के लिए आधारभूत  
छ गुणों से युक्त, ज्ञान के प्रकाश से प्रदीप्त — लो पु.,  
प्र. वि., ए. व. — भिक्खु आलोकबहुलो व होति ..., अ. नि. 2(2).  
133; आलोकबहुलोति जाणालोकबहुलो अ. नि. अट्ठ. 3.141.

**आलोकभूत** त्रि., [आलोकभूत], तेजस्वी, ओजस्वी, ज्योति  
से प्रदीप्त — तो पु., प्र. वि., ए. व. — ... जोतिना युत्ततो  
जोति, आलोकीभूतोति वुत्तं होति, स. नि. अट्ठ. 1.143; —  
तं' द्वि. वि., ए. व. — पस्स ... आलोकभूतं तिङ्गन्तं, उमहं  
साधु मापित'न्ति, जा. अट्ठ. 6.289; — तं नपुं., प्र. वि., ए.  
व. — आलोकजातान्ति आलोकभूतं, जातालोकं वा, विसुद्धि.  
महाटी. 2.23.

**आलोकलेन** नपुं., व्य. सं., श्रीलङ्का में आधुनिक नगर कैंण्डी  
के लगभग पन्द्रह मील-उत्तर की ओर अवस्थित मातले के  
निकट में विद्यमान आधुनिक आळुविहार, जहां वट्टगामणि  
अभय के शासनकाल (89—77 ई. पू.) में पालि लिपिक  
एवं अट्टकथाओं को पहली बार लिपिबद्ध किया गया,  
उत्तरकालीन सिंहली पालि-रचनाओं में ही उल्लिखित म.  
व. एवं दी. व. में इसका कोई भी उल्लेख अप्राप्त — ने  
सप्त. वि., ए. व. — आलोकलेने निसिन्ना जनपदाधिपतिना  
कतारक्खा पोत्थकेसु लिखापयुं, जिना. 61; स. प. के  
अन्त., — राजा मातुलरद्वस्मिं आलोकलेनआदिसु, तेसु  
तेसु च रट्ठेसु गिरिलेने तहिं तहिं, चू. वं. 98.65.

**आलोकविद्वंसनसदिसता** स्त्री., भाव., प्रकाश के विखराव  
की समानता, उजाला के फैल जाने जैसा — ता प्र. वि.,  
ए. व. — जाणालोकपरिब्रूहनताय मग्गभावनाय  
आलोकविद्वंसनसदिसता, विसुद्धि. महाटी. 2.474; पाठा.  
आलोकविद्वंसनसदिसता.

**आलोकसञ्ज्ञान** नपुं., तत्पु. स., आलोक को सम्यकरूप  
से जानना, स. प. के अन्त. — विभूतं कत्वा

## आलोकसञ्जत्थ

213

## आलोकसञ्जामनसिकार

मनसिकरणेन उपहित आलोकसञ्जाननेन, विसुद्धिः, महादी. 1.72-73; - समत्थ त्रि., तत्पु. स., आलोक का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम - स्थाय स्त्री., तृ. वि., ए. व. - रत्तिमि दिवादिद्वालोकसञ्जाननसमत्थाय ... सञ्जाय समन्नागतो, दी. नि. अहु. 1.172.

आलोकसञ्जत्थ पु., तत्पु. स., आलोकसंज्ञा का महत्त्व या प्रयोजन, आलोकयुक्त परिशुद्ध चेतना की महत्ता - त्थं द्वि. वि., ए. व. - थिनमिद्धं पजहन्तो आलोकसञ्जत्थं सन्दस्सेति, पटि. म. 96.

आलोकसञ्जा स्त्री., तत्पु. स. [आलोकसंज्ञा], शा. अ., थीन (स्थान, चित्त की शिथिलता) एवं मिद्ध (मृद्ध, चेतसिकों की शिथिलता) के प्रतिपक्षभूत आलोक या प्रकाश को निमित्त बनाकर उत्पन्न संज्ञा (चेतना), ला. अ. द्वितीय समाधिभावना जो जाणदस्सनपटिलाभ की स्थिति को प्राप्त करा देती है, प्र. वि., ए. व. - आलोकसञ्जाति थिनमिद्धस्स पटिपक्खे आलोकनिमित्ते सञ्जा, पटि. म. अहु. 1.89; आलोकसञ्जा अरियानं निव्याणं, पटि. म. 157; थिनमिद्धं असत्त्वेखो, आलोकसञ्जा सत्त्वेखो, पटि. म. 95; - ज्ञं द्वि. वि., ए. व. - भिक्खु आलोकसञ्जं मनसि करोति, दी. नि. 3.178; आलोकसञ्जं मनसिकरोतीति दिवा वा रत्ति वा सूरियचन्द्रपञ्जोत्तमणिआदीनं आलोकं आलोकोति मनसिकरोति, दी. नि. अहु. 3.172; आलोकसञ्जन्ति आलोकनिमित्ते उपपन्नसञ्जं अ. नि. अहु. 3.105; - ज्ञाय' ष. वि., ए. व. - इदं उभयं आलोकसञ्जाय उपकारत्ता वुत्तं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).117; - ज्ञाय' तृ. वि., ए. व. - आलोकसञ्जाय थीनमिद्धस्स ... भावेतब्बं भावेन्तो सिक्खति, पटि. म. 41.

आलोकसञ्जाखन्ति स्त्री., प्र. वि., ए. व., आलोकसंज्ञा की प्रवृत्ति, आलोकसंज्ञा की प्रवणता - आलोकसञ्जाखन्ति थिनमिद्धेन सुञ्जो, पटि. म. 358; ... खमनतो रुच्चनतो खन्तीति, पटि. म. अहु. 2.226.

आलोकसञ्जागरुक त्रि., जागरुक संज्ञा अथवा चेतना की गुरुता से युक्त, थीन एवं मिद्ध से मुक्त - को पु., प्र. वि., ए. व. - 'अयं पुग्गलो आलोकसञ्जागरुको आलोकसञ्जासयो आलोकसञ्जाधिमुत्तोति, आलोकसञ्जं सेवन्तज्जेय जानाति, पटि. म. 113.

आलोकसञ्जाधिद्वान नपुं., तत्पु. स., आलोकसंज्ञा के विषय में दृढ़ निश्चय, जागरुक संज्ञा अथवा आलोकसंज्ञा का आधार-स्थल - नं म. वि., ए. व. -

आलोकसञ्जाधिद्वानं थिनमिद्धेन सुञ्जं, पटि. म. 358; रोचितानियेव पविसित्वा तिद्वनतो अधिद्वानन्ति, पटि. म. अहु. 2.226.

आलोकसञ्जाधिपतत्त नपुं., भाव., आलोक संज्ञा पर पूर्ण रूप से आधिपत्य - ता प. वि., ए. व. - आलोकसञ्जाधि-पतत्ता पञ्जा थिनमिद्धतो सञ्जाय विवट्ठतीति, पटि. म. 99.

आलोकसञ्जाधिमुत्त त्रि., आलोकमयी संज्ञा अथवा जागरुक चेतना की प्राप्ति हेतु स्वयं को पूरी तरह से लगाया हुआ - त्तो पु., प्र. वि., ए. व. - 'अयं पुग्गलो आलोकसञ्जागरुको आलोकसञ्जासयो आलोकसञ्जाधिमुत्तोति ...', पटि. म. 113.

आलोकसञ्जापटिलाभ पु., तत्पु. स. [आलोकसंज्ञापटिलाभ], आलोकमयी संज्ञा की प्राप्ति, जागरुक चेतना की प्राप्ति - भो प्र. वि., ए. व. - आलोकसञ्जापटिलाभो थिनमिद्धेन सुञ्जो, पटि. म. 357; परिग्गहितानि पटिवसेन पटिलभन्तीति पटिलाभोति, पटि. म. अहु. 2.226.

आलोकसञ्जापटिवेध पु., तत्पु. स., आलोकसंज्ञा का प्रतिवेध-ज्ञान, आलोक संज्ञा के कारण प्राप्त गम्भीर प्रतिवेध ज्ञान - धो प्र. वि., ए. व. - आलोकसञ्जापटिवेधो थिनमिद्धेन सुञ्जो, पटि. म. 357; पटिलद्वानि जाणवसेन पटिविज्झीयन्तीति पटिवेधोति च वुत्तानि, पटि. म. अहु. 2.226; द्रष्ट, पटिवेध के अन्त.

आलोकसञ्जापरिग्गह पु., तत्पु. स., आलोकमयी संज्ञा का पूर्णरूप से ग्रहण अथवा प्राप्ति - हो प्र. वि., ए. व. - आलोकसञ्जापरिग्गहो, थिनमिद्धेन सुञ्जो, पटि. म. 357; पुब्बभागे एसितानि अपरभागे परिग्गहन्तीति परिग्गहोति, पटि. म. अहु. 2.226.

आलोकसञ्जापरियोगाहन नपुं., तत्पु. स. [आलोकसञ्जपर्यवगाहन], आलोकसंज्ञा का पूर्णरूप से अवगाहन, आलोक संज्ञा में प्रवेश कर यथारुचि सेवन - नं प्र. वि., ए. व. - आलोकसञ्जापरियोगाहणं थिनमिद्धेन सुञ्जं, पटि. म. 358; पविसित्वा तितानं यथारुचिमेव सेवनतो परियोगाहनन्ति च वुत्तानि, पटि. म. अहु. 2.226.

आलोकसञ्जामनसिकार पु., तत्पु. स., आलोकसंज्ञा को मन में कर लेना अथवा मन द्वारा आलोकसंज्ञा का ग्रहण, आलोक संज्ञा की ओर मन का ध्यान - रो प्र. वि., ए. व. - अतिभोजने निमित्तग्गहो इरियापथसम्परिवत्तनता



## आलोकसञ्ज्ञासय

214

## आलोकूपनिस्सय

आलोकसञ्ज्ञामनसिकारो अभ्योकासवासो कल्याणमित्ता  
सप्पायकथाति, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).294.

आलोकसञ्ज्ञासय त्रि. ब. स., आलोक संज्ञा के प्रति  
मानसिक अभिरुचि अथवा मन के रुझान से युक्त — यो  
पु., प्र. वि., ए. व. — 'अयं पुग्गलो आलोकसञ्ज्ञागरुको  
आलोकसञ्ज्ञासयो आलोकसञ्ज्ञाधिमुत्तो'ति, पटि. म. 113.

आलोकसञ्ज्ञी त्रि. [आलोकसंज्ञिन], 1. रात में भी दिन में  
देखे गए सूर्य के आलोक को पूर्णरूप से जानने में समर्थ,  
नीवरणों से रहित विशुद्ध संज्ञा (चेतना) से, युक्त 2.  
आवरणरहित, परिशुद्ध तथा आलोकमयी संज्ञा से युक्त —  
ञ्जी पु., प्र. वि., ए. व. — ... विगतथिनमिद्धो विहरति  
आलोकसञ्ज्ञी, दी. नि. 1.63; आलोकसञ्ज्ञीति रत्तिमि  
दिवादिद्वालोकसञ्ज्ञाननसमत्थाय विगतनीवरणाय, परिसुद्धाय  
सञ्ज्ञाय समन्नागतो, दी. नि. अट्ठ. 1.172; विभ. अट्ठ.  
348; अयं सञ्ज्ञा आलोका होति विवटा परिसुद्धा परियोदाता,  
तेन वुच्चति 'आलोकसञ्ज्ञी'ति, विभ. 284; विभ. अट्ठ.  
348.

आलोकसञ्ज्ञेकत्त नपुं., भाव., तत्पु. स. [आलोकसंज्ञैकत्व],  
(थीन-मिद्ध के नानात्व के विपरीत) आलोकमयी संज्ञा  
अथवा आलोक-विषयिणी संज्ञा का एकत्व (एक होने की  
अवस्था) — तं प्र. वि., ए. व. — आलोकसञ्ज्ञेकत्तं  
चेतयतो थिनमिद्धतो चित्तं विवट्ठतीति, पटि. म. 100;  
आलोकसञ्ज्ञेकत्तं चेतयतो थिनमिद्धेन सुञ्ज, पटि. म.  
357.

आलोकसञ्ज्ञेसना स्त्री., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व.  
[आलोकसंज्ञैषणा], आलोकमयी अथवा आलोक-विषयिणी  
संज्ञा की तलाश — आलोकसञ्ज्ञेसना थिनमिद्धेन सुञ्जा,  
पटि. म. 357.

आलोकसन्धि पु., तत्पु. स. [आलोकसन्धि], खिड़की,  
झरोखा, गवाक्ष, प्रकाश एवं धूप आदि का खुला प्रवेशस्थान,  
खिड़की की किवाड़ी — वातपानं गवक्खो च जालं च  
सीहपञ्जर आलोकसन्धि, अभि. प. 216; आलोकानं आतपान  
पविसनह्वानं सन्धि छिदन्ति आलोक सन्धि, अभि. प. 216  
पर सूची; अञ्जतरो भिक्षु ... सहस्स आलोकसन्धिं, पारा.  
78; आलोकसन्धीति वातपानकवाटका वुच्चन्ति, पाचि. अट्ठ.  
44; — णिं द्वि. वि., ए. व. — आलोकसन्धिं दिवसं करोतु,  
जा. अट्ठ. 4.276; आलोकसन्धिं दिवसन्ति एकदिवसेनेव  
वातपानं करोतु, जा. अट्ठ. 4.277; — कण्णमाग पु., द्व.  
स., खिड़कियों के किवाड़ों के भाग एवं प्रकोष्ठ के कोनों

के भाग — गा प्र. वि., ब. व. — आलोकसन्धिकण्णभागा  
पमज्जितब्बा, महाव. 53; आलोकसन्धिकण्णभागाति  
आलोकसन्धिभागा च कण्णभागा च  
अन्तरबाहिरवातपानकवाटकानि च गम्भस्स च चत्तारो कोणा  
पमज्जितब्बाति अत्थो, महाव. अट्ठ. 249; — करणमत्त  
नपुं., केवल खिड़की बनाना — तेन तु. वि., ए. व. —  
आलोकसन्धिकरणमत्तेनपि नवकम्मं देन्ति, चूलव. 303; —  
परिकम्म नपुं., तत्पु. स. [आलोकसन्धिपरिकर्म], खिड़की  
की मरम्मत, खिड़की की रंगाई, पुताई अथवा साज-  
सजावट — म्माय च. वि., ए. व. — महत्तकं ...  
आलोकसन्धिपरिकम्माय द्वत्तिच्छदनस्स परिथाय अप्पहरिते  
वित्तेन अधिद्वातब्बं, पाचि. 69; आलोकसन्धिपरिकम्मायाति  
एत्थ आलोकसन्धीति वातपानकवाटका वुच्चन्ति ... तस्मा  
सब्बदिस्सासु कवाटवित्थारप्पमाणो ओकासो आलोकसन्धि  
परिकम्मत्थायलिम्पितब्बो वा लेपापेतब्बो वाति अयमेत्थ  
अधिप्पायो, पाचि. अट्ठ. 44.

आलोकित नपुं., आ + लुक का भू. क. कृ. [आलोकित],  
अपने सामने देखना, अपने आगे की ओर देखना — तं<sup>1</sup>  
प्र. वि., ए. व. — आलोकितं नाम पुरतो पेक्खनं, म. नि.  
अट्ठ. (मू.प.) 1(1).271; प्रायः विलोकित (चारों ओर ताकना)  
के साथ प्रयुक्त, — आलोकितं विलोकितं समिज्जितं ...,  
अ. नि. 1(2).120; — तं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. —  
आलोकितविलोकितं ... मद्धं रुच्चति, स. नि. अट्ठ. 1.106;  
— तेन तु. वि., ए. व. — पासादिकेन ... आलोकितेन  
विलोकितेन ..., महाव. 45; — ते सप्त. वि., ए. व. —  
आलोकिते विलोकिते सम्पजानकारी होति, दी. नि. 1.62.

आलोकितविलोकित नपुं., समा. द्व. स.  
[आलोकितविलोकित], आगे की ओर देखना तथा चारों  
ओर अथवा इधर उधर देखना — तं प्र. वि., ए. व. —  
आलोकितविलोकितं न पासादिकं होति, सा. स. 24(सिंहली);  
स.प. के अन्तः, — आलोकितविलोकित-  
कथितहसितगमनह्वानादीहि विसोसो होतियेव, अ. नि. अट्ठ.  
3.165.

आलोकूपनिस्सय पु., तत्पु. स., आलोक, प्रज्ञा या ज्ञान के

प्रकाश का आश्रय अथवा सहारा — यं द्वि. वि., ए. व. —  
चक्खायतनं निस्साय इदुसम्मत्तं रुपायत आलम्बित्वा  
आलोकूपनिस्सयं लभित्वा मनोधातावज्जनानन्तरं एव  
उप्पज्जति कुसलविपाकं उपेक्खासहगतं चक्खुविज्जाणं,  
रूपा. वि. 153(से.).

## आलोकेति

215

## आलोपपिण्डदातु

आलोकेति आ + लुक् का वर्त. प्र. पु. ए. व. प्रायः 'विलोकेति' के साथ प्रयुक्त [आलोकेति]. शा. अ., सामने की ओर अथवा अपने आगे की ओर देखता है. ला. अ., मान बैठता है, समझ लेता है - भिक्षु ..., आलोकेति न परसति, स. नि. 1(1).230; तव पृथुज्जनिकइच्छिया जलन्तं अद्भुतं आलोकेति, स. नि. अद्भ. 1.255; - न्तस्स वर्त. कृ., पु., घ. वि., ए. व. - आलोकेन्तस्स वा ... कायस्स थम्भना, ध. स. 720; - केय्य विधि., प्र. पु. ए. व. - सतो आलोकेय्य, सतो विलोकेय्य, चूलनि. 35; - केसि अद्य., प्र. पु. ए. व. - राहुलो ... तथागतं आलोकेसि, म. नि. अद्भ. (मू.प.) 2.95; - केस्सामि भवि., उ. पु., ए. व. - "आलोकेस्सामीति चित्ते उपपन्ने, म. नि. अद्भ. (मू.प.) 1(1).272; - त्वान पू. का. कृ. - आलोकेत्त्वान जानाति "अयं धम्मो" ... ति सम्मा योजना, पेटको. 334; - केतब्बा सं. कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - पुरत्थिमा दिसा आलोकेतब्बा होति ..., पच्छिमा दिसा, ... आलोकेतब्बा होति, म. नि. अद्भ. (मू.प.) 1(1).272; - तब्बं नपुं. प्र. वि., ए. व. - एवं ते आलोकितब्बं, एवं ते विलोकितब्बं, म. नि. 2.132; - तो भू. क. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - आलोकिते च वीरेन पक्कामिं, पाविनामुखो, अप. 1.129; - कापेतुं प्रेर., निभि. कृ. - रूपकायं ... आलोकापेतुं विलोकापेतुं, ध. स. अद्भ. 127.

आलोकेतु पु., आ + लुक् से व्यु., क. ना. [आलोकयितुं], आलोकन की क्रिया को करने वाला, आगे की ओर देखने वाला, सामने की ओर ताकने वाला - ता प्र. वि., ए. व. - आलोकेता वा विलोकेता वा नत्थि, दी. नि. अद्भ. 1.158.

आलोडहचञ्सू पु., व्य. सं., म्या-मां के एक प्राचीन शासक का नाम, क्या-सिस्था का पौत्र - कलियुगे हि अद्वासीताधिके सत्तवरससते नरपतिरञ्जो धीताय सद्धिं 'आलोडहचञ्सू-रञ्जो पुत्तो आनन्दसुरियो नाम सन्धवं कत्वा एकं समिद्धिकं नाम पुत्तं विजायि, सा. वं. 86.

आलोचन नपुं., आ + लुक् से व्यु., क्रि. ना. [आलोचन], देखना, सर्वेक्षण करना, जांच पड़ताल करना - नं प्र. वि., ए. व. - आलोचनं पेक्खनं, सद. 2.558; स. उ. प. के रूप में, दिसा, दिशाओं की ओर देखना - नं द्वि. वि., ए. व. - दिसालोचनमाहंसु, वतुत्थो नयलञ्जको, पेटको. 167.

आलोप पु., आ + लुप् से व्यु., [आलोप], 1. लूटपाट, झीना-झपटी, छीन लेना, डकैती, लूट लेना, प्रायः 'छेदन-

वध-बन्धन-विपरामेस-सहसाकारा पटिकिरतो" में प्रयुक्त - पो प्र. वि., ए. व. - छेदनवधबन्धनविपरामोस आलोपसहसाकारा पटिकिरतो, दी. नि. 1.5; आलोपो वुच्चति गामनिगमादीनं विलोपकरणं, दी. नि. अद्भ. 1.74; म. नि. अद्भ. (मू.प.) 1(2).112; आलोपसहसाकारा, निकती वञ्चनानि च, जा. अद्भ. 4.11; - पा ब. व. - तत्थ क्थो च बन्धो च निकती वञ्चनानि च, आलोपा सहसाकारा, तानि सो तत्थ सिक्खति, जा. अद्भ. 4.394; 2. भोजन का ग्रास या कौर, निवाला, बहुत थोड़ा भोजन - पो प्र. वि., ए. व. - आलोपो कबळो भवे, अभि. प. 466; परिमण्डलो आलोपो कातब्बो, चूलव. 357; - पं द्वि. वि., ए. व. - दीघं आलोपं करोन्तस्स दुक्कटं, परि. 49; - यदन्तरं एकं आलोपं सद्वादित्वा अज्झोहरामि, अ. नि. 2(2).24; सो मे पक्केन हत्थेन, आलोपं उपनामयि, थेरगा. 1058; - स्स प. वि., ए. व. - आलोपरस्स आलोपस्स अनुरुपं यावचरिमालोपप्पहोनक मूच्छमसादिब्यञ्जनं पक्खिपितब्बं, पारा. अद्भ. 2.256; - पे' सप्त. वि., ए. व. - दिब्बं ओजं गहेत्वा ... उद्धटुद्धटे आलोपे आकिरन्ति, मि. प. 217; - पे' द्वि. वि., ब. व. - चत्तारो पञ्च आलोपे सद्वादित्वा अज्झोहरामि, अ. नि. 2(2).23; - पेहि तु/प. वि., ब. व. - फासुविहारो नाम चतुहि पञ्चहि आलोपेहि ऊनूदरता, ध. स. अद्भ. 424; - पानं ष. वि., ब. व. - चतुत्रं पञ्चत्र आलोपानं ओकासे सति, म. नि. अद्भ. (मू.प.) 1(1).292.

आलोपट्टितिका स्त्री., 'निमन्तन' पर भिक्षुओं को एक एक ग्रास भोजन देने की प्रथा, प्र. वि., ए. व. - आलोपट्टितिका नाम नत्थि, सारत्थ. टी. 3.368.

आलोपति आ + लुप् का वृ. मुद के मि. सा. के आधार पर वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलोपति], लूट लेता है, छीन लेता है, डकैती करके ले लेता है - आलोपति साहसा यो परेसं, थेरगा. 743; जिनापेति परं हन्त्वा, वधित्वा अथ सोचयित्वा, आलोपति सहसा यो परेस, थेरगा. अद्भ. 2.237.

आलोपदान नपुं., तत्पु. स., एक ग्रास भोजन का दान, स्वल्प मात्रा में भोजन दान - नं द्वि. वि., ए. व. - तैल ... मालोपदानं च अदापयिं, म. वं. टी. 549.

आलोपपिण्डदातु त्रि., बहुत कम मात्रा में भोजन का दान करने वाला, केवल एक ग्रास-मात्र भोजन का दान करने वाला - तारो पु., प्र. वि., ब. व. - आलोपपिण्डदातारो, पटिगगहे परिभासिहसे, पे. व. 397; आलोपपिण्डदातारोति

## आलोपमत्तद्धितिका

216

आळक

आलोपमत्तस्सापि भोजनपिण्डस्स दायका, पे. व. अट्ट. 152.

**आलोपमत्तद्धितिका** स्त्री., विनय की वह व्यवस्था जिसके अनुसार 'निमन्तन' के अवसर पर भिक्षुओं को एक बार में भोजन का एक ही निवाला देने की अनुमति है — य तृ. वि., ए. व. — ... गहेत्वा आलोपमत्तद्धितिकाय भाजेतब्बं, चूळव. अट्ट. 96; — कतो प. वि., ए. व. — आलोपमत्तद्धितिकतो पट्टाय आलोपसङ्केपेन भाजेतब्बं, तदे., द्रष्ट., ठितिका, आलोपद्धितिका तथा उद्देसभक्त के अन्त., (आगे).

**आलोपसङ्केप** पु., तत्पु. स., 'निमन्तन' के अवसर पर एक बार में एक ग्रास या निवाले के रूप में परोसे जा रहे भोजन का विभाजन (उद्देसभक्त के अवसर पर इस प्रकार का विभाजन विनय-सम्मत नहीं माना गया है) — पेन तृ. वि., ए. व. — आलोपसङ्केपेन भाजेतब्बं, चूळव. अट्ट. 96.

**आलोपिक** त्रि., आलोप से व्यु., निवाले भर भोजन पर जीवित रहने वाला, स. उ. प. के रूप में, सत्ता.- सात निवालों वाले भोजन पर जीवित रहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — सत्तागारिको वा होति सत्तालोपिको, म. नि. 2.5.

**आलोळ'** पु./नपुं., आ + √लुळ से व्यु., [आलोड], 1. हिला देना, 2. घालमेल कर देना, क्षोभ, 3. व्यग्रता, संभ्रम, खलबलाहट — ळं द्वि. वि., ए. व. — 'एस गन्त्वा किञ्चि आलोळं करेय्या'ति, ध. प. अट्ट. 1.26.

**आलोळ'** त्रि., [आलोल], चञ्चल, व्यग्र, अस्थिर, हिलडुल रहा, स. उ. प. के रूप में, दोला.- ला पु., प्र. वि., ब. व. — दोळालोलाव ते कण्णा, वेवण्णं समुपागता, अप. 2.245.

**आलोळित** त्रि., आ + √लुळ का प्रेर., भू. क. कृ. [आलोडित], व्यग्र, विक्षोभित या बेचैन कर दिया गया, बाधित, मथ दिया गया, दुष्प्रभावित कर दिया गया — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — मत्तकुञ्जरेहि ... आलोळितपदेस्स, थेरीगा. अट्ट. 277.

**आलोळी** स्त्री., आ + √लुळ से व्यु., तरल मिश्रण, स. उ. प. में प्राप्त, सीता.- ठण्डा तरल मिश्रण — ळिं द्वि. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन अज्जतरस्स भिक्षुनो घरदिन्नकाबाधो होति, भगवतो एतमत्थं आरोवेसु अनुजानामि, भिक्षुवे, सितालोळिं पायेतुत्ति, महाव. 282.

**आलोळेति/आलोलेति/आलुळेति** आ + √लुळ का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलोडयति], 1. आलोडित कर

देता है, खील बौल कर देता है, मथ देता है, घालमेल कर देता है, हिला डुला देता है — न्ति ब. व. — सोण्डाय उदकं आलोळेत्ति, अ. नि. 3(1).240; — ळेत्तो/लुलयन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — उदकं आलुळेत्तो, जा. अट्ट. 1.410; — लयमानो उपरिवत्, आत्मने. — सिथिलं सम्मज्जनिं गहेत्वा सम्परिवत्तकं आलोळयमानो, विसुद्धि. 1.103; आलोळयमानो वालिकाकचवरानि आकुलयन्तो, विसुद्धि. महाटी. 1.118; — ळेत्वा पू. का. कृ. — सलाकाय वा ... हेट्ठपरिवसेनेव आलोळेत्वा, चूळव. अट्ट. 97; उण्होदकेन फाणितं आलोलेत्वा, स. नि. 1(1).204; 2. संभ्रम में डाल देता है, व्याभिधित करा देता है, आपस में गड्ड वड्ड करा देता है, अव्यवस्थित बना देता है — न्ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — अभिधम्मिका पन धम्मन्तरं न आलोळेत्ति, ध. स. अट्ट. 31; — ळेसि अद्या, प्र. पु., ए. व. — अभिसम्बुज्झनकसत्तं अयं किलेसो आलोळेसि, जा. अट्ट. 2.227; विसुद्धसत्तेपेस आलोलेसियेवाति, जा. अट्ट. 4.296; — ळेस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — तादिसं किं नालोलेस्सतीति, जा. अट्ट. 2.227; 3. (ग्रन्थ का) मन्थन करता है, खंगालता है — ळेत्वा पू. का. कृ. — इमिस्सा गाथाय अत्थं पिटकतयं आलोलेत्वा संवण्णेहीति, सा. वं. 28; तीसु वेदेसु आलोळेत्वा पण्हं पुच्छि, सा. वं. 28.

**आळ/अळ** नपुं., [अल], बिच्छू का डंक — ळं प्र. वि., ए. व. — आळं विच्छिक्क — न्हुलं, अभि. प. 621 पर सूची.

**आळक'** पु./नपुं., क. पशुओं को बन्द करके रखने हेतु प्रयुक्त बांडा या ब्रज, वह घिरा हुआ क्षेत्र जिसके भीतर पशुओं को खूंटों अथवा पगहों में बांध कर रखा जाता है, पशुशाला, गोशाला, गोढ — कं द्वि. वि., ए. व. — उसभोव आळकं भेत्वा, पत्तो सम्भोधिमुत्तमं, बु. वं. 26.2; आळकन्ति गोड्ढं, यथा उसभो गोड्ढं भिन्दित्वा ..., बु. वं. अट्ट. 303; — के सप्त. वि., ए. व. — पयिखपन्तं ममाळकं, चरिया. 2.1.9(पृ.385); ममाळकैति आलानत्थम्भे, चरिया. अट्ट. 109; ख. बाण या तीर को सीधा करने हेतु प्रयुक्त उपकरण — कं द्वि. वि., ए. व. — इरसासो आळकं परिहरति वड्ढजिम्हकुटिलनाराचस्स उजुकरणाय, मि. प. 391; यथा नाम उसुकारो अरज्जतो एकं वड्ढण्डकं आहरित्वा नित्तघं कत्वा कज्जियतेलेन मक्खेत्वा अङ्गारकपत्ते तापेत्वा रुक्खालके उप्पीळेत्वा निवड्ढं उजुं वालविज्जनयोगं करोति, ध. प. अट्ट. 1.163; ग. एक पौधे या झाड़ीदार पादप का

## आळक/अलक

217

## आळवकसुत्त

नाम, अलर्क अकौआ — का प्र. वि., ब. व. — आलका इसिमुग्गा च कदलिमातुलुङ्गियो, अप. 1.13; आळकादयो गच्छ, अप. अ. 2.129.

आळक<sup>2</sup>/अलक पु., [अलक], घुंघराले बाल, जुल्के, मस्तक पर लटक रहे घुंघर, स. प. के रूप में, — कोच्छ नाम आळकादिसण्ठापनत्थं केसादीनं उल्लिखनसाधनं, वि. व. अ. 296.

आळकमन्द त्रि., देवनगरी अलका के समान भीड़ से भरे हुए, एक ही आंगन वाला तथा मनुष्यों की भीड़ से भरा हुआ — न्दा पु., प्र. वि., ब. व. — तेन खो पन समयेन विहारा आळकमन्दा होन्ति, चूळव. 278; आळकमन्दाति एकङ्गणा मनुस्साभिकिण्णा, चूळव. अ. 61; पाठा. अळकमन्दाति.

आळवक<sup>1</sup>/आलवक त्रि., 1. आळवि नामक नगर अथवा जनपद का निवासी, 2. आळव-चेतिय से सम्बद्ध (भिक्षु), 3. एक प्रभावशाली यक्ष — को पु., प्र. वि., ए. व. — अथ खो आळवको यक्खो येन भगवा तेनुपसङ्गमि, सु. नि. 111; अज्जतरोपि आळवको भिक्खु रुक्खं छिन्दति, सु. नि. अ. 1.4; पञ्चालचण्डो आळवको पज्जुनो सुमनो सुमुखो, दी. नि. 3.155; — का ब. व. — आलवका भिक्खू एवरूपानि नवकम्मानि देन्ति, चूळव. 302; तत्थ आळवकाति आळविरुद्धे जाता दारका आळवका नाम, ते पब्बजितकालेपि 'आळवका'त्वेव पञ्जायिसु, पारा. अ. 2.134; — के द्वि. वि., ब. व. — भिक्खूसङ्घं सन्निपातापेत्वा आळवके भिक्खू पटिपुच्छि, पारा. 225; — स्स ष. वि., ए. व. — आळवकरस्सत्थाय तिसयोजनं, तथा अङ्गुलिमालस्स, दी. नि. अ. 1.194.

आळवक<sup>2</sup>/आलवक पु., व्य. सं., आळवि के राजा का पुत्र हथक आळवक, बुद्ध द्वारा अपने उपासक-श्रावकों के बीच चार संग्रहवस्तुओं से युक्त गृहपतियों में अग्रगण्य के रूप में घोषित एक गृहस्थ — को प्र. वि., ए. व. — आळवको किर राजा विविधानाटकूपभोगं छडुत्वा ... सत्तमे सत्तमे दिवसे मियगं गच्छन्तो, स. नि. अ. 1.278; ... एसा, तुला एतं पमाणं मम सावकानं उपासकानं यदिदं वित्तो च गहपति हत्थको च आळवकोति, अ. नि. 1(1).107; उपासकेसु चित्तो गहपति हत्थको आळवकोति द्वे अग्यउपासका ..., ध. प. अ. 1.193; — कं द्वि. वि., ए. व. — सतहि अछरियोहि अबुत्तेहि धम्मोहि समत्रागतं हत्थकं आळवकं धारेथ, अ. नि. 3(1).53.

आळवकगज्जित नपुं., बौद्धधर्म की अपर-शैलीय

नामक सिंहली शाखा के उन तीन ग्रन्थों में से एक जो बुद्धवचनों के रूप में थेरवादियों द्वारा स्वीकृत नहीं हुआ — तं प्र. वि., ए. व. — युळहवेस्सन्तरं ... आळवकगज्जितं वेदल्लपिटकन्ति अबुद्धवचनं परियतिसद्धम्मप्यतिरूपकं नाम, स. नि. अ. 2.177.

आळवकचेतिय नपुं., आळवक नामक एक यक्ष का चैत्य अथवा उसका वास-स्थान — यं प्र. वि., ए. व. — गोतमकचेतियं, आळवकचेतियन्ति वुत्ते तेसं यक्खानं निवसनद्वानं, अप. अ. 2.49.

आळवकपुच्छा स्त्री., तत्पु. स., आळवक यक्ष द्वारा पूछा गया प्रश्न — च्छा प्र. वि., ए. व. — गाथानं पुच्छा अद्धानं गच्छति, सासनं धारेतुं न सक्कोति, सभियपुच्छा आळवकपुच्छा विय च, दी. नि. अ. 3.74.

आळवकयक्ख पु., कर्म. स., सु. नि. एवं स. नि. में उल्लिखित एक प्रभावशाली यक्ष जिसे बुद्ध ने सद्धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाया, स. नि. 1(1).247-249; सु. नि. 111-113; स. नि. अ. 1.278-294; सु. नि. अ. 1.186-203; अ. नि. अ. 1.288; स. प. के अन्त. — आळवकसूचिलोमखरलोमयक्खसकदेवराजादयो, विसुद्धि. 1.199-200.

आळवकयुद्ध पु., तत्पु. स., आळवक नामक यक्ष से (बुद्ध का) आमना सामना अथवा संघर्ष — द्वं द्वि. वि., ए. व. — इतो पड्ढाय आळवकयुद्धं वित्थारेत्तब्बं, अ. नि. अ. 1.290.

आळवकसुत्त नपुं., 1. सु. नि. के उरगवग्ग का एक सुत्त जिस में बुद्ध द्वारा आळवक यक्ष को धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाने का उल्लेख है, 2. स. नि. के यक्खसंयुत्त का बारहवां सुत्त, जिस में सु. नि. के आळवक सुत्त का संक्षेपण कर दिया गया है, सु. नि. 111-113, स. नि. 1(1).247-249; — सौ सप्त. वि., ए. व. — वित्थारं पन आळवकसुत्ते वण्णयिस्साम, सु. नि. अ. 1.121; स. प. के अन्त., — आळवक—सूचिलोम-खरलोमसुत्तादीनि, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).19; — वण्णना स्त्री., 1. सु. नि. की अ. के एक भाग का शीर्षक जिस में आळवक सुत्त की व्याख्या की गई है, सु. नि. अ. 1.186-203; 2. स. नि. अ. के एक अंश का शीर्षक, स. नि. अ. 1.278-294; — ना प्र. वि., ए. व. — वित्थारेत्वा कथेतुकामेन आळवकसुत्तवण्णना ओलोकेत्तब्बा, अ. नि. अ. 1.290; — यं सप्त. वि., ए. व. — तं आळवकसुत्तवण्णनायं आगतनयेनेव वेदितब्बं, उदा. अ. 52.

## आळवन्द

218

आळारक / अद्वारक

**आळवन्द** पु., एक तमिल सरदार, जिस का वध राजा परक्कमबाहु महान के सेना-प्रमुख लङ्कापुर द्वारा वडलि-नामक ग्राम में कर दिया गया था - न्देन तृ. वि., ए. व. - निसिन्ननेन आळवन्देन युद्धं कत्तान तं वधि, चू. वं. 76.134.

**आळवन्दपेरुमाल** / ळ पु., एक तमिल राजकुमार, कुलशेखर का शक्तिशाली सामन्त, श्रीलङ्का के सेनाप्रमुख लंकापुर द्वारा युद्धों में दो बार पराजित - लो प्र. वि., ए. व. - आळवन्दपेरुमालो ... अलखियरायरह्यो, चू. वं. 76.145; आळवन्दपेरुमालो इच्चेतं दुरतिकम्मा, चू. वं. 76.223; 232; - लक्ष्य त्रि., ब. स., आळवन्दपेरुमाल नाम वाला - व्हयेन पु., तृ. वि., ए. व. - आळवन्दपेरुमालव्हयेन दमिळ्ळेन च, चू. वं. 76.128.

**आळविक** त्रि., आळवि नगर अथवा आळवि जनपद का रहने वाला अथवा उन के साथ सम्बद्ध - को पु., प्र. वि., ए. व. - एको आळविको भिक्खु ..., ध. प. अ. 2.175; - रस ष. वि., ए. व. - आळविकस्स पन रज्जो धीताति ... थेरीगा. अ. 68; - का' पु., प्र. वि., ब. व. - आळवका भिक्खू नवकम्मं करोन्ता, पाचि. 50; आळविकाति आळवियं जाता, स. नि. अ. 1.167; - का' स्त्री., सेला नामक भिक्षुणी का दूसरा अधिक प्रचलित नाम, - का प्र. वि., ए. व. - बुद्धप्पादे आळवीरहे आळविकस्स रज्जो धीता, थेरीगा. अ. 68.

**आळविकासुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).151-52.

**आळविगोतम** पु., व्य. सं., आळवि जनपद के एक स्थविर का नाम - मो प्र. वि., ए. व. - यथा अहू वक्कलि मुत्तसद्धो भद्रावुधो आळविगोतमो च, सु. नि. 1.152; यथा च सोळसत्तं एको भद्रावुधो नाम, यथा च आळविगोतमो च, चूळनि. अ. 80; ... सद्धाधिमुत्तो अहोसि, सद्धाधुरेन च अरहत्तं पापुणि ... यथा च आळविगोतमो ..., सु. नि. अ. 2.298.

**आळवी** स्त्री., [अटवी], एक नगर तथा एक जनपद का नाम - वी / वि प्र. वि., ए. व. - आळवीति तं रट्ठमि नगरमि, स. नि. अ. 1.278; वाराणसी च सावत्थि वेसाली मिथिलाळवी, अभि. प. 199; येन आळवी तेन पक्कामि ... येन आळवी तदवसरि, पारा. 224; सावत्थाळवि कोसम्बी, सक्कभग्गा पकासिता, विन. वि. 3118; उत्त. वि. 781; - विं द्वि. वि., ए. व. - अत्थाय वत मे बुद्धो,

वासायाळविमागमा, स. नि. 1(1).249; आळविं अगमासि, ध. प. अ. 2.152; - वियं सप्त. वि., ए. व. - एकं समयं भगवा आळवियं विहरति ..., सु. नि. 111; छ पनाळवियं वुत्ता, विन. वि. 3120; उत्त. वि. 785; - नगर नपुं., आळविनामक नगर - रं द्वि. वि., ए. व. - आळविनगर उपनिस्साय अग्गाळवे चेत्तिये, जा. अ. 1.163; - तो प. वि., ए. व. - आळवियं जाता आळविनगरतोयेव च निक्खम्म पब्बजिता, स. नि. अ. 1.167; - रे सप्त. वि., ए. व. - आळविरहे आळविनगरे, अ. नि. अ. 1.289; - रामिमुख त्रि., आळवि नगर की ओर (जा रहा) - खो पु., प्र. वि., ए. व. - आळविनगराभिमुखो पायासि, अ. नि. अ. 1.290; - रद्ध नपुं., आळवि नाम वाला राष्ट्र - हे सप्त. वि., ए. व. - आळवीरहे चेतं भवन्, सु. नि. अ. 1.186; - वासी त्रि., आळवि जनपद का निवासी - सिनो पु., प्र. वि., ब. व. - आळविवासिनो सत्थरि आळवि सम्पत्ते निमन्तेत्वा दानं अदंसु, ध. प. अ. 2.97.

**आळार / आलार / अळार** त्रि., [अराल], वङ्गिम, वक्र, मोड़-युक्त, टेढ़ा - अळार वेत्तित वङ्गं कुटिल जिम्ह कुञ्चितं, अभि. प. 709; - रानि नपुं., प्र. वि., ब. व. - आळारानि महन्तानि अक्खीनि मणिगुळसदिसानि, अप. अ. 1.286; - पम्ह त्रि., ब. स. - म्हा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आळारपम्हा हसुला, सुसज्जा तनुमज्झिमा, अप. 1.19.

**आळार / आलार / आलारकालाम** पु., [बौ. सं. आराड], सिद्धार्थ गौतम के प्रथम आचार्य जिन से उन्होंने आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की शिक्षा ग्रहण की थी - आळारोति तरस्स नाम दीघपिङ्गलो किरेसो तेनस्स आळारोति नामं अहोसि, कालामोति गोत्तं दी. नि. अ. 2.143; म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).74; आळारो कालामो आचरियो मे सम्मानो, म. नि. 1.224; आळारो कालामो आकिञ्चञ्जायतनं पवेदेसि, म. नि. 1.223; - रं द्वि. वि., ए. व. - बोधिसत्तोपि ... चारिकं चरमानो आळारञ्च कालामं उदकञ्च रामपुत्तं उपसङ्गमित्वा ..., जा. अ. 1.76; - रस ष. वि., ए. व. - यनूनाहं आळारस्स कालामस्स पठमं धम्मं देसेय्यं, महाव. 10.

**आळारक / अद्वारक** त्रि., बिना द्वार वाला, चारो ओर से घिरा हुआ - कं प्र. वि., ए. व. - यथापि अरस्स नगरं ..., अद्वारकं आयसं ..., परिखाउपेतं, जा. अ. 5.77; पाठा. अद्वारकं.

## आळारवेदल्लभाणवार

219

आलि / आळि

आळारवेदल्लभाणवार पु., महापरिनिब्बान सुत्त के चतुर्थ भाणवार का शीर्षक, जिसमें आळारकालाम का कथानक दिया गया है, दी. नि. 93-103.

आळारिक त्रि. [आरालिक], रसोइया, रसोइए का सहायक या कर्मचारी - को प्र. वि., ए. व. - भत्तकारो सूपकारो सूदो आळारिको तथा, अभि. प. 464; आळारिको तदा होमि, जा. अहु. 5.285; आळारिकोति भत्तकारको, ... भत्तकारकदासो विय, तदे.; - का ब. व. - पुथुसिप्पायतनानि, सेय्यथिदं... आळारिका कप्पका न्हापका सूदा, दी. नि. 1.45; आळारिकाति पूविका, ... सूदाति भत्तकारका, दी. नि. अहु. 1.131; - के' द्वि. वि., ब. व. - आळारिके च सूदे च, जा. अहु. 7.168; आळारिकेति पूवपाके, सूदेति भत्तकारको, तदे.; - के' सप्त. वि., ए. व. - 'आळारिके भत्ते पोसे, वेतनेन अनत्थिके'ति, जा. अहु. 5.288; - कम्म नपुं., तत्पु. स. [आरालिककर्म], रसोइए का काम, भोजन बनाने का काम - म्मं द्वि. वि., ए. व. - आळारिककम्मं कत्वा वसनभावन्ति, जा. अहु. 5.295; - त्त नपुं., भाव. [आरालिकत्व], रसोइयापन, रसोइया होना, भोजन बनाने वाला होना - त्तं द्वि. वि., ए. व. - आळारिकत्तञ्च भत्तकत्तञ्च, जा. अहु. 5.288; धीतानं आळारिकत्तं करोन्तस्साति, जा. अहु. 5.297.

आळाहन / आळाहण नपुं., आ + वह के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आदाहन], शा. अ., वह अग्नि जो जला दे अथवा भस्म कर दे, ला. अ., 1. चिता की अग्नि, 2. श्मशान, मृत शरीर को भस्म किए जाने की भूमि - दहस्स दस्स ळो होतनघणसु, आळाहनं, परिळाहो, मो. व्या. 5.127; आळाहणं सुसानं चानित्थियं, कुणपो छवो, अभि. प. 405; - नं' प्र. वि., ए. व. - कस्स इदं आळाहनं, पे. व. 369; 371; आळाहनन्ति सुसानं, म. नि. अहु. (म.प.) 2. 245; - नं' द्वि. वि., ए. व. - सो आळाहनं गत्वा कन्दति, म. नि. 2.316; 317; - ना/तो प. वि., ए. व. - यावाळाहना पदानि पञ्जायन्ति, दी. नि. 1.49; आळाहनतो अङ्गीणि आहरित्वा, जा. अहु. 3.134; - स्स ष. वि., ए. व. - आळाहनस्साविदूरे निपज्जित्वा ..., ध. प. अहु. 1.17; - ने सप्त. वि., ए. व. - इमस्मिं आळाहने दङ्गा पे. व. 374; - करण नपुं., शा. अ., जलाना, ला. अ., मृत शरीर को श्मशान में भस्म करना, अन्त्येष्टि संस्कार - णं प्र. वि., ए. व. - परिनिब्बुतस्स पच्चेकबुद्धस्स आळहनकरणमेव नानत्तं, अप. अहु. 2.203; - किच्च नपुं., तत्पु. स.,

उपरिवत् - च्चं द्वि. वि., ए. व. - कत्वाळाहनकिच्चं सो तस्स कम्मो पसीदिय, चू. वं. 39.28; - हान नपुं., तत्पु. स. [आदाहनस्थान], श्मशान - ने सप्त. वि., ए. व. - थेरस्स आळाहनहाने ठितभिक्षू, स. नि. अहु. 3.25; - दस्सनसमागम पु., तत्पु. स., अन्त्येष्टि देखने हेतु उपस्थित जनसमूह, मृत शरीर को भस्म होते देखने हेतु आया हुआ समूह - मे सप्त. वि., ए. व. - साकेतब्राह्मणस्स आळाहनदस्सनसमागमे, मि. प. 318; - पंसुक नपुं., तत्पु. स., जलाई जा रही चिताग्नि की भूमि, श्मशान भूमि - कं प्र. वि., ए. व. - पंसुकन्ति आळाहनपसुकं, जा. अहु. 5.48; - पस्स पु. / नपुं., श्मशान का समीपवर्ती भाग, चितास्थल का बगल वाला क्षेत्र - स्से सप्त. वि., ए. व. - तत्थ गत्वा आळाहनपस्से ठितो, जा. अहु. 3.141; - भस्म नपुं., तत्पु. स., चिता-भस्म, शव को जलाए जाने पर निकली हुई राख - स्मं द्वि. वि., ए. व. - तस्स आळाहनभस्मं पि कत्वा भेसज्जं, चू. वं. 46.37; - भूमि स्त्री., तत्पु. स., मृत शरीर को जलाए जाने की भूमि, श्मशानभूमि - मि प्र. वि., ए. व. - सापिस्स आळाहनभूमि समन्ततो खता, जा. अहु. 2.203.

आळाहनपरिवेण नपुं., व्य. सं., पुलत्थिपुर (आधुनिक पोलोन्नरुव) में श्रीलङ्का के शासक महा परक्कमबाहु द्वारा बनवाए गए एक परिवेण का नाम - णं द्वि. वि., ए. व. - आळाहणपरिवेणं तहिं कारेसि खत्तियो, चू. वं. 78.48.

आलि / आळि स्त्री., [आलि], 1. नदी या तालाब के किनारों पर बनाया गया बांध, तटबन्ध, ऊंचा टीला, सेतु - ... आलित्थी सखि सेतुसु, अभि. प. 1083; आलिसइो ... सेतु जलवारको, नद्यादिमग्गो च, अभि. प. 1082 पर सूची; - किं द्वि. वि., ए. व. - महतो तळाकस्स पटिकच्चेव आळिं बन्धेय्य, चूळव. 420; आळित्ति ... यथा महतो तळाकस्स आळिया, अबद्धायपि किञ्चि उदकं तिद्धेय्य, चूळव. अहु. 127; आळि मुञ्चेय्य, आगच्छेय्य उदकं'न्ति, म. नि. 3.140; - या ष. वि., ए. व. - यथा महतो तळाकस्स आळिया अबद्धायपि किञ्चि उदकं तिद्धेय्य, चूळव. अहु. 127; - प्पभेद पु., तत्पु. स. [आलिप्रभेद], तटबन्ध का विनाश - दो प्र. वि., ए. व. - तस्सा ... जम्बालिया न आळिप्पभेदो पाटिकङ्को, अ. नि. 1(2).192-93; न आळिप्पभेदो पाटिकङ्कोति न पाळिप्पभेदो पाटिकङ्कित्त्वो,

## आळिगामकदुग्ग

220

## आळहकथालिका

अ. नि. अड्ड. 2.352; — बन्ध त्रि., ब. स., बांधों से बंधा हुआ, तटबन्धों से घिरा हुआ — घा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — समे भूमिभागे चतुरस्सा पोक्खरणी अस्स आळिबन्धा पूरा उदकस्स ..., म. नि. 3.140; 2. पु., [आलि], बिच्छू — विच्छिको त्वाळि कथितो, अभि. प. 621; आळ विच्छिकनहुलं तं योगा आळि, अभि. प. 621 पर सूची; 3. स्त्री., [आलि/आळी], सहेली, सखी — सखी त्वालि वयस्सा, अभि. प. 238; आलित्थि सखि सेतुसु, अभि. प. 1083; — ळि सम्बो., ए. व. — आळि, मा भायि, मतको किं करिस्सतीति, जा. अड्ड. 3.470; न खो मे रुच्चति आळि, पूतिमंसस्स पेक्खना, तदे.; 4. पु., [आडि], मछली की एक विशेष प्रजाति का नाम, स. प. के अन्त., — आळिगम्गरकाकिण्णा, पाठीना काकमच्छका, जा. अड्ड. 5.401; 5. स्त्री., [आलि], कतार, पंक्ति, शृंखला, स. प. के अन्त., जलधरा. — बादलों की कतार — नमसि जलधराली महमानोभियन्त्वा, दाठा. 4.55(रो.); मुत्ता.- मोतियों की लड़ी — दन्ता ... मुत्तालिसन्निभा, रस. 2.96; रम्भा.- केले के पौधों की कतार — मङ्गलद्धजरम्भालितोरणादिमनोहरं, चू. वं. 89.15.

आळिगामकदुग्ग पु., तत्पु. स., श्रीलङ्का के आळिसार क्षेत्र के आळिगाम नामक गांव का एक दुर्ग — म्हि सप्त. वि., ए. व. — आळिगामकदुग्गहि गङ्गापस्से वसी तदा, चू. वं. 70.112.

आळिसारक पु., व्य. सं., शा. अ., तटबन्ध अथवा बांध के कारण उपजाऊ बना दिया गया क्षेत्र, प्रयोगगत अ., 1. श्रीलङ्का के मध्यवर्ती मातले जिले में स्थित आधुनिक एलहार का पार्श्ववर्ती क्षेत्र — कं द्वि. वि., ए. व. — संघस्स पाकवट्ठत्थं रट्ठं दत्वाळिसारकं, चू. वं. 60.14; — रट्ठक पु., आळिसारक नामक राष्ट्र — के सप्त. वि., ए. व. — गजबाहु नरिन्दो पि आळिसारकरट्ठके, चतस्सो परिसा नाम पाहिनि युञ्जितुं पुन, चू. वं. 70.106; परक्कमभुजो मायागेहाधिनायकं, अमन्तेत्वा नियोजेसि युञ्जितुं आळिसारकं, चू. वं. 70.162; 2. सिंचाई करने वाली वह नहर जिसके कारण संभवतः पूरे जिले तथा एक गांव का नाम आळिगाम हो गया — आळिसारोदकभागं विहारस्स अदापयि, म. वं. 35.84.

आळहक पु./नपुं., [आढक], अनाज की पुरानी माप, चौथाई द्रोण, तरल एवं शुष्क दोनों प्रकार के पदार्थों की

माप की एक इकाई, सोलह पसतो के चार पथ तथा चार पथों से एक आळहक की माप बनती है — आळहको चतुरो पत्था दोणं वा चतुराळहकं, अभि. प. 482; — कं प्र. वि., ए. व. — तेन पत्थेन चत्तारो पत्था आळहकं, स. नि. अड्ड. 1.192; क. तरल पदार्थों के माप की इकाई — कं द्वि. वि., ए. व. — सो गन्त्वा आळहकं सप्पि ... आहारापेत्वा, पारा. 73; — केन त्. वि., ए. व. — सक्का समुदे उदकं, पमेतुं आळहकेन वा, अप. 1.17; स. उ. प. के रूप में, उदका.- आढक की माप में जल — ळहकानि प्र. वि., ब. व. — अत्थि पन ते कोचि गणको वा मुदिको वा सङ्गायको वा यो पहाति महासमुदे उदकं गणेत्तुं — एत्तकानि उदकाळहकानि इति वा, एत्तकानि उदकाळहसतानि इति वा ..., स. नि. 2(2).346; ख. सूखी वस्तुओं (अन्न आदि) की माप की एक इकाई — ळहकेन त्. वि., ए. व. — बद्धा कुलीका मितमाळकेन, जा. अड्ड. 3.477; मितमाळकेनाति धञ्जमापकम्मप्पि किर तेन कतं, तदे.; पाठा. आळकेन; स. प. के अन्त., — अङ्गाळहकोदन नपुं., आधे आढक माप वाला चावल — नं द्वि. वि., ए. व. — उक्कट्ठो नाम पत्तो अङ्गाळहकोदनं गण्हाति, पारा. 365; — कानि प्र. वि., ब. व. — चत्तारि आळहकानि दोणं, स. नि. अड्ड. 1.192.

आळहक<sup>2</sup> पु., संभवतः आळक का ही रूपा., पशुओं का बाड़ा, हाथी को बांधने हेतु प्रयुक्त स्तम्भ या खम्भा, हाथीखाना, पीलखाना — को प्र. वि., ए. व. — आलानमाळहको थम्भो, अभि. प. 364; — कं द्वि. वि., ए. व. — हत्थिं तत्थ रतं जत्वा अकसु तत्थ आळहकं, म. वं. 19.73.

आळहकगणना स्त्री., तत्पु. स. [आढकगणना], आढक के माप से गणना — य त्. वि., ए. व. — आळहकगणनाय अप्पमेय्यो, स. नि. अड्ड. 3.150.

आळहकथालिका स्त्री., तत्पु. स. [आढकथालिका], एक आढक माप के चावल को उबालने की क्षमता वाली पत्तीली, प्र. वि., ए. व. — सेय्यथापि नाम आळहकथालिका, एवमस्स सादूनि फलानि अहेसुं, अ. नि. 2(2).81; आळहकथालिकाति तण्डुलाळहकस्स भत्तपचनथालिका, अ. नि. अड्ड. 3.123; — कं द्वि. वि., ए. व. — एकयेव आळहकथालिकं उपनिसीदित्वा ..., महाव. 317; भत्तथालिकं पुरतो कत्वा संकलजम्बुदीपवासीनं, भत्तं देत्तिया ..., ध. प. अड्ड. 2.213.

## आवजति

221

## आवज्जन

**आवजति** आ + वज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आव्रजति], जाता है, आता है, वापस आता है, लौट आता है - तु अनु. प्र. पु., ए. व. - सा पापधम्मा पुनरावजातू'ति, जा. अहु. 4.44; - स्सु अनु. म. पु., ए. व., आत्मने. - सच्चानुरक्खी पुनरावजस्सू'ति, जा. अहु. 5.23; - जेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - को सौत्थिमाज्जनमिधावजेय्या'ति, जा. अहु. 5.27; - जित्थ अद्य., म. पु., ब. व. - मा वस्सु गन्त्वा पुनरावजित्था'ति, जा. अहु. 4.96; - जिस्सं भवि., उ. पु., ए. व. - सच्चानुरक्खी पुनरावजिस्स'न्ति, जा. अहु. 5.22.

**आवज्ज** पु., अनुचिन्तन, विचार-विमर्श, मन की प्रवृत्ति - आभोगो पुण्णतावज्जेस्सालित्थी सखि सेतुसु अभि. प. 1083.

**आवज्जति** आ + वज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृङ्गते], 1. (किसी के विषय में) सोच विचार करता है, अनुचिन्तन करता है, ध्यान देता है, जांच पड़ताल करता है, उधेड़ बुन या संकल्प विकल्प करता है, ध्यान में निमग्न हो जाता है - इद्धिमा परस्स चित्तं जानितुकामो आवज्जति, विसुद्धि. 2.60; परस्स चित्तं हि जातुमावज्जतिद्धिमा, अभि. अव. 1135; ओभासो धम्मोति ओभासं आवज्जति, पटि. म. 281; ... तिरोपब्बतं आवज्जति, आवजित्वा जाणेन अधिधाति - 'आकासो होतू'ति, पटि. म. 378; - ज्जेन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., अनुचिन्तन कर रहा - सक्को आवज्जेन्तो तं कारणं जत्वा, जा. अहु. 5.146; - न्तं हि, वि., ए. व. - तमेव रुपारम्भणं आवज्जन्तं, अभि. ध. स. 25; - न्तेन तू, वि., ए. व. - ताव आवज्जन्तेन पुरिमभवे चुतिकखणे पवत्तिनामरूपं आवज्जितब्बं, विसुद्धि. 2.40; - ज्जतो/ज्जन्तस्स ष. वि., ए. व. - ये आवज्जतो मनसिकरोतो चित्तं विनीवरणं होति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.187; तस्सेवं पलितपातुभावं आवज्जेन्तस्स, जा. अहु. 1.143; - माना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - नदी देवता आवज्जमाना तं कारणं जत्वा, जा. अहु. 5.3; - ज्ज/ज्जाहि अनु., म. पु., ए. व. - उप्पज्जे ते सचे कोधो, आवज्ज ककच्चूपमं, थेरगा. 445; 'पुब्बे तथा परिचितकम्मद्धानं पुन आवज्जेहि', ध. प. अहु. 2.309; - ज्जेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - उम्मीलित्वा निमीलित्वा, आवज्जेय्य पुनप्पुनं, अभि. अव. 859; - ज्जेय्यासि म. पु., ए. व. - आवज्जेय्यासि मन्ति, जा. अहु. 5.149; - जिज्जं अद्य., उ. पु., ए. व. - अहं तथआवज्जिं बोधिमुत्तमं, अप. 1.180; - जिज्जस्सति भवि., प्र. पु., ए.

व. - तं निमित्तं आवज्जिस्सति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).152; - जिज्जस्समि उ. पु., ए. व. - पुन इमं धम्मं आवज्जिस्सामि वा समापज्जिस्सामि, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).76; - जिज्जतुं निमि. कृ. - ज्ञानं आवज्जितुं ..., विसुद्धि. महाटी. 1.267; - जिज्जत्वा पू. का. कृ. - बुद्ध गुणे आवज्जेत्वा, दी. नि. अहु. 2.151.

**आवज्जन** नपुं., आ + वज्ज से व्यु., क्रि. ना. [आवर्जन, भित्रार्थक], शा. अ., किसी (आलम्बन) की ओर मुड़ जाना, किसी के ग्रहण में प्रवृत्त हो जाना, खिंचाव, आकर्षण, विशेष अर्थ, 1. ज्ञान की प्रक्रिया में चित्तसन्तति अथवा भवङ्गसन्तति के सामने अभिनव विषय उपस्थित होने पर पूर्वकाल में गृहीत आलम्बन से बिलग होकर नवीन आलम्बन की ओर चित्त की प्रवृत्ति अथवा झुकाव, 2. एक भवङ्गचित्त - न' प्र. वि., ए. व. - चित्तस्स आवहुनाति आदीनि सब्बानिपि आवज्जनस्सेव वेवचनानेव, आवज्जनज्झि भवङ्गचित्तं आवहुतीति चित्तस्स आवहुना ... आमुजतीति आभोगो, भवङ्गारम्भणतो अज्जं आरम्भणं समन्नाहरतीति समन्नाहारो - तदेवारम्भणं अत्तानं अनुबन्धित्वा उप्पज्जमाने मनसि करोतीति मनसिकारो, विभ. अहु. 4.472; आवज्जनन्ति 'किं नामेत'न्ति वदन्तं विय आभोगं कुरुमानं, अभि. ध. वि. टी. 132; - न' द्वि. वि., ए. व. - वक्खुद्वारिकं आवज्जनं भवङ्गं न आवहुती, विभ. अहु. 384; - नेन तू, वि., ए. व. - विना आवज्जनेनापि होति जायतु मानसं, अभि. अव. 466; - स्स ष. वि., ए. व. - अधिद्धानस्स आवज्जनस्स च अन्तरे द्वे भवङ्गचित्तानि वत्तन्ति, पटि. म. अहु. 2.10; यक्खं पठमावज्जनस्सेव आपाथं आगतं दिस्स, स. नि. अहु. 1.266; - ने सप्त. वि., ए. व. - आवज्जने पटिच्छन्ते, अभि. अव. 155; आवज्जने निरुद्धस्मिं, अभि. अव. 1083; आवज्जने समुप्पन्ने, अभि. अव. 494; - नानि प्र. वि., ब. व. - द्वे आवज्जनानि, पटि. म. अहु. 1.241; - नादि त्रि., आवज्जन इत्यादि - दीनं नपुं. ष. वि., ब. व. - आवज्जनादीनं अज्जतरसमये संवरो वा असंवरो वा अत्थि, ध. स. अहु. 421; - नादिविज्जाण नपुं., आवज्जन आदि चित्त - णानि प्र. वि., ब. व. - आवज्जनादिविज्जाणानि, स. नि. अहु. 1.159; स. प. के अन्तः, - ज्ञानेसु आवज्जनसमापज्जन अधिद्धान ... युत्तप्पयुत्ता, ध. प. अहु. 2.130; - तदारम्भणकखण नपुं., तत्पु. स., आवज्जन एवं तदारम्भण नामक वीथिचित्तों का क्षण - णे सप्त. वि., ए. व. -



## आवज्जनकिच्च

222

## आवज्जनता

आवज्जनतदारम्मणक्खणे अव्याकतोति वेदितब्बो, पारा. अट्ठ. 2.98; स. उ. प. के रूप में, अन., असुभा., उपेक्खा., उप्पन्ना., आनन्तर., एका., कसिणा., चक्खुद्वारिका., जवना., ज्ञानज्ञा., समत्थता., नाना., पञ्चद्वारा., पटिसन्धि., पठमा., भवङ्गा., मनोद्वारा., मनोद्वारिका., मनोधाता., वोट्टपना. ... किच्च., वोट्टपना., सहा., सा. के अन्त. द्रष्ट.

**आवज्जनकिच्च** नपुं., तत्पु. स., आलम्बन की ओर चित्त के मुड़ जाने की क्रिया, आलम्बन पर ध्यान देने की चित्त क्रिया — च्वं द्वि. वि., ए. व. — *किरियमनोधातु आवज्जनकिच्चं साधयमाना उप्पज्जित्वा निरुज्जाति, विसुद्धि.* 1.21; *भवङ्ग विच्छिन्दमानाविय आवज्जनकिच्चं साधयमाना, विसुद्धि.* 2.85.

**आवज्जनकिरियाचित्त** नपुं., पञ्चद्वारावज्जन-वीथि एवं मनोद्वारावज्जन-वीथि की प्रक्रिया में उस क्षण का चित्त, जब चित्त विषय की ओर मुड़ने अथवा आवर्जित होने की क्रियामात्र करता है, मनसिकार मात्र करने वाला वीथिचित्त, 2 प्रकार के अहेतुक क्रियाचित्त — त्तं प्र. वि., ए. व. — *आवज्जनक्रियाचित्तं समनक्कारोति सज्जितं, अभि. अव. 510.*

**आवज्जनकिरियाव्याकत** त्रि., उपेक्षासहगत पञ्चद्वारावज्जनचित्त तथा मनोद्वारावज्जनचित्त, जो 3 प्रकार के अहेतुक क्रिया के अन्त., परिगणित है, तथा जिसका अकुशल अथवा कुशल विपाक नहीं होता है — *दस्सनत्थाय आवज्जनकिरियाव्याकता विज्जाणयरिया रूपसु, पटि. म. 73; आवज्जनकिरियाव्याकताति भवङ्गसन्तानतो अपनेत्वा रूपास्मणे चित्तसन्तानं आवज्जेति-नामेतीति आवज्जनं विपाकाभावतो करणमत्तन्ति किरिया, कुसलाकुसलवसेन न व्याकताति अव्याकता, पटि. म. अट्ठ. 1.240; आवज्जनकिरियाव्याकताति मनोद्वारावज्जनचित्तं, पटि. म. अट्ठ. 1.241.*

**आवज्जनक्खण** नपुं., तत्पु. स. [आवर्जनक्षण], विषय या आलम्बन की ओर चित्त के प्रवृत्त होने का क्षण, आलम्बन के मनसिकार करने का क्षण, चित्त-वीथि पूरा होने में लगने वाले 16 चित्त क्षणों में से 1 क्षण — णे सप्त. वि., ए. व. — *आवज्जनक्खणे किरियमनोधातु, स. नि. अट्ठ. 2.239; स. प. के अन्त., — द्वीहि अन्तेहि मुत्ता आवज्जनतदारम्मणक्खणे अव्याकतोति वेदितब्बो, पारा. अट्ठ. 2.98.*

**आवज्जनचित्त** नपुं., पञ्चद्वारावज्जन-वीथि का वह चित्त, जो पूर्वकाल की चित्त-सन्तति का विच्छेद होने के उपरान्त

इन्द्रियों के आपाथ में आपतित अभिनव आलम्बन की ओर प्रवृत्त होता है, मनोद्वारावज्जन-वीथि में मनोधातु, विषयों के ज्ञान की प्रक्रिया की वीथि का प्रथम मन्द चित्त, मनसिकार, 89 प्रकार के चित्तों में 2 प्रकार के चित्त — त्तं प्र. वि., ए. व. — *मनोद्वारे मनोधातूति आवज्जनचित्तं गहितं, स. नि. अट्ठ. 3.40; — रस ष. वि., ए. व. — तं निरुद्धमि आवज्जनचित्तस्स पच्चयो भवितुं असमत्थं मन्दथामगतमेव पवत्तमानमि परिभिन्नं नाम होति, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).129.*

**आवज्जनजवन** नपुं., द्व. स., वीथि चित्तों में आवज्जनचित्त एवं जवनचित्त, मनोविज्ञान धातु, विषयकी ओर प्रवृत्त चित्त एवं विषयों का निश्चयात्मक ज्ञान करने वाला चित्त — *येन च चित्तेन आवज्जति येन च जानाति, तेसं द्वित्रं सहटानाभावतो आवज्जनजवनानञ्च अनिट्टुट्टाने ... पटिक्खित्तं, विसुद्धि. 2.60; तुल., मनोविज्जाणान्ति आवज्जनं वा जवनं वा, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).391.*

**आवज्जनद्व** पु., तत्पु. स., आवर्जन का अर्थ, चित्त के आलम्बन में प्रवृत्त होने का तात्पर्य — *द्वो प्र. वि., ए. व. — एकत्ते आवज्जनद्वो अभिज्जेय्यो, पटि. म. 16; चित्तस्स एकग्गद्वो अभिज्जेय्यो, आवज्जनद्वो अभिज्जेय्यो, पटि. म. 16; द्वित्रं चित्तानं आवज्जनद्वो, पटि. म. अट्ठ. 1.85; — द्वं द्वि. वि., ए. व. — आवज्जनद्वं बुज्झन्तीति, बोज्झङ्गा, पटि. म. 296; — आवज्जनक नपुं., आवज्जन से व्यु., स. उ. प. में ही प्रयुक्त, सहा.- त्रि., आवज्जनचित्त-सहित — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — *सहावज्जनकं जवनं निब्वत्तति, विभ. अट्ठ. 75; सा.- त्रि., उपरिवत् — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — सावज्जनकं भवङ्गचित्तं, स. नि. अट्ठ. 1.159.**

**आवज्जनट्टान** नपुं., तत्पु. स., विषय की ओर चित्त के प्रवृत्त होने का स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — *उत्त्वा आवज्जनट्टाने, तमनावज्जनमि च, अभि. अव. 1331; तं योत्रभुचित्तं अनावज्जनमि मग्गस्स आवज्जनट्टाने उत्त्वा, अभि. अव. पु. टी. 113; पञ्चत्रं विज्जाणानं आवज्जनट्टाने उत्त्वा, विभ. अट्ठ. 382.*

**आवज्जनता** स्त्री., आवज्जन का भाव., विषय की ओर चित्त का मुड़ जाना अथवा उसके ग्रहण में प्रवृत्त हो जाना, स. उ. प. के रूप में, अना.- निषे., विषय की ओर चित्त का नहीं मुड़ना, चित्त का विमुखीभाव — य तू. वि., ए. व. — *कस्मा ? अनावज्जनताय, स. नि. अट्ठ 1.158;*

## आवज्जनपटिवद्ध

223

## आवज्जनवसिता

अनावज्जनताय मुहुत्तमतके काले सति नप्पहोति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.63; निरा- उपरिवत् - निरावज्जनताय पमादेन निसिन्नं, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.63.

आवज्जनपटिवद्ध त्रि., तत्पु. स., मानसिक अनुचिन्ता पर निर्भर, आवज्जन पर पूरी तरह से आश्रित - द्वा पु., प्र. वि., ब. व. - सब्बे धम्मा बुद्धस्स भगवतो आवज्जनपटिवद्धा ..., महानि. 131, 263; 339; आवज्जनपटिवद्धाति मनोद्वारावज्जनायता आवज्जितानन्तरमेव जानातीति अत्थो, पटि. म. अट्ठ. 2.237; - द्द्वं नपु., प्र. वि., ए. व. - आवज्जनपटिवद्धं भगवतो सब्बजुतजाणं, भि. प. 112; 115; 116; एतकञ्चि थेरस्स धुवसेवनं आवज्जनपटिवद्धं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).152; आवज्जनपटिवद्धं खीणासवानं जाननं, दी. नि. अट्ठ. 2.170; - द्द्वं द्वि. वि., ए. व. - आवज्जनपटिवद्धं कम्मद्धानं कत्वा, विसुद्धि. 1.115; - द्देन तू, वि., ए. व. - आवज्जनपटिवद्धेन सब्बजुतजाणेन निच्चं पज्जलितगि, स. नि. अट्ठ. 1.208.

आवज्जनपमाण नपु., तत्पु. स., चित्तवीथि में आवज्जनचित्त की विद्यमानता की समयावधि, विषय की ओर चित्त की प्रवृत्ति की समयसीमा, एक चित्तक्षणमात्र की समयावधि - णं प्र. वि., ए. व. - तस्मिं विज्जाते विज्जातमत्तन्ति आवज्जनपमाणं, स. नि. अट्ठ. 3.29; - णे सप्त. वि., ए. व. - यथा आवज्जनं न रज्जति, न दुस्सति, न मुहति एवं रज्जनादिवसेन च उप्पज्जितुं अदत्त्वा आवज्जनपमाणेनेव चित्तं ठपेस्सामीति, उदा. अट्ठ. 72.

आवज्जनपरियाय पु., आवज्जन का प्रकार, विषय की ओर चित्त की प्रवृत्ति की प्रकृति - यो प्र. वि., ए. व. - आवज्जनपरियायो नाम तद्धं वट्ठति, दुतियततियचित्तवारे एव जानिस्सतीति, दी. नि. अट्ठ. 2.20.

आवज्जनमन नपु., 7 प्रकार के वीथिचित्तों में से विषय के ग्रहण अथवा विषय को मन में ले आने के काम में लगने वाला आवज्जन-चित्त, जो 3 अहेतुक क्रिया चित्तों में से 2 के रूप में स्वीकृत है - नो प्र. वि., ए. व. - यदा परस्स चित्तञ्चि आतुमावज्जतिद्धिमा आवज्जनमनो तस्स, अभि. अव. 1135.

आवज्जनमनसिकार पु., विषय अथवा आलम्बन की ओर पूर्ण रूप से मुड़ा हुआ मन, पूर्ण ध्यान, विषय पर मन का पूरा पूरा ध्यान - रो प्र. वि., ए. व. - सब्बत्थ मनसिकारो आवज्जनमनसिकारो, विसुद्धि. महाटी. 2.168.

आवज्जनमनोधातु स्त्री., मनोधातु के रूप में आवज्जनचित्त, धर्मों के 18 धातुओं वाली विभाजन-योजना में मनोधातु

नामक धातु का एक प्रभेद, वीथिचित्त की योजना की दृष्टि से मनोधातु का वह स्तर जिसमें मन आलम्बन के प्रति सचेत होता है - पञ्चन्नं पन नेसं आवज्जनमनोधातु अनन्तरसमनन्तर ... होति, विसुद्धि. 2.116.

आवज्जनमनोविज्जाणधातु स्त्री., धर्मों के 18 धातुओं वाले वर्गीकरण में मनोविज्ञान धातु का वह प्रभेद, जिसमें आलम्बन के प्रति अत्यन्त प्रारम्भिक रूप में मानसिक संचेतना या मनोविज्ञान उत्पन्न होता है - या ष. वि., ए. व. - मनोद्वारे पन भवङ्गमनोविज्जाणधातु आवज्जनमनोविज्जाणधातुया, विसुद्धि. 2.116.

आवज्जनमन्त पु., [आवर्जनमन्त्र], एक विशेष प्रकार का मन्त्र, वशीकरण मन्त्र, दूसरे को अपनी ओर मोड़ देने वाला मन्त्र - न्तो प्र. वि., ए. व. - पथवीजयमन्तोति आवट्टनमन्तो वुच्चति, जा. अट्ठ. 2.204; पाठा. आवट्टनमन्तो.

आवज्जनरस त्रि., ब. स., विषय की ओर उन्मुख होने अथवा विषय का मानसिक संप्रत्यय करने का काम करने वाला/वाली, स. उ. प. में, बोद्धब्बना.- पञ्चद्वारावज्जनवीथि में व्यवस्थापन (निश्चयात्मक ज्ञान) एवं मनोद्वारावज्जन-वीथि में आवर्जन (विषय का मानसिक संप्रत्यय) का काम करने वाला/वाली - सा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - किच्चवसेन पञ्चद्वारमनोद्वारेसु वोद्धब्बनावज्जनरसा, विसुद्धि. 2.84; वोद्धब्बनावज्जनरसाति पञ्चद्वारे सन्तीरणेन गहितारम्मणं वक्थपेन्ती विय पवत्तनतो वोद्धब्बनरसा, मनोद्वारे पन वुत्तनयेन आवज्जनरसा, विसुद्धि. महाटी. 2.121.

आवज्जनवस पु., तत्पु. स., विषय की ओर उन्मुख होने अथवा विषय की मानसिक संचेतना करने का बल, ध्यान के अङ्गों की ओर चित्त के निरन्तर उन्मुख बने रहने का बल, चित्त को उपयुक्त आलम्बन की ओर मोड़ देने का बल - सो प्र. वि., ए. व. - आवज्जनाय वसो आवज्जनवसो, सो अस्स अत्थीति आवज्जनवसी, पटि. म. अट्ठ. 1.258; - सेन तू. वि., ए. व. - आवज्जनवसेन चक्खुविज्जाणस्स पुरेचारी हुत्वा, अभि. अव. 14; स. उ. प. के रूप में, कसिना.- कृत्स्नों (ध्यान के आलम्बनों) की मानसिक संचेतना करने का बल - सेन तू. वि., ए. व. - कसिनावज्जनवसेन आवज्जनवसिता वुत्ता होति, पटि. म. अट्ठ. 1.197.

आवज्जनवसिता स्त्री., 5 प्रकार की क्षमताओं अथवा आभ्यन्तरिक शक्तियों में प्रथम, ध्यान के 5 अङ्गों में से चित्त

## आवज्जनवसी

224

## आवज्जित

को लगातार उन्मुख बनाए रखने की क्षमता, प्र. वि., ए. व. — पञ्चसु ज्ञानहेसु एकेकारम्मणे उप्पन्नावज्जनानन्तरं चतुपञ्चजवनकतिपयभवङ्गतो परं अगन्त्वा अपरापरं ज्ञानज्ञावज्जनसमत्थता आवज्जनवसिता नाम, अभि. ध. वि. टी. 229; एतेन कसिनावज्जनवसेन आवज्जनवसिता वुत्ता होति, पटि. म. अट्ठ. 1.197; — तां तृ. वि., ए. व. — पच्चवेक्खणवसिता पन आवज्जनवसिताय एव सिद्धा, अभि. ध. वि. टी. 229.

**आवज्जनवसी** स्त्री., तत्पु. स., चित्त को यथेच्छ एवं उपयुक्त ध्यानाङ्ग अथवा आलम्बन की ओर मोड़ देने का बल, 5 प्रकार के ध्यानोपयोगी बलों में से प्रथम बल, प्र. वि., ए. व. — आवज्जनाय वसो आवज्जनवसो, सो अस्स अत्थीति आवज्जनवसी, पटि. म. अट्ठ. 1.258; वसीति पञ्च वसियो, आवज्जनवसी, समापज्जनवसी, अधिद्वानवसी, वुड्ढानवसी, पच्चवेक्खणावसी, पठमं ज्ञानं यत्थिच्छकं यदिच्छकं यावत्तिच्छकं आवज्जति, आवज्जनाय दत्थायिततं नत्थीति — आवज्जनवसी, पटि. म. 92; विसुद्धि. 2.344; पठमज्ज्ञानतो वुड्ढाय वितक्कं आवज्जयतो भवङ्गं उपच्छिन्दित्वा पवत्तावज्जनानन्तरं वितक्कारम्मणानेव क्तारि पञ्च वा जवनानि जवन्ति, ततो द्वे भवङ्गानि, ततो पुन विचारारम्मणं आवज्जनं वुत्तनयेनेव जवनानीति एवं पञ्चसु ज्ञानहेसु यदा निरन्तरं चित्तं पेसेतुं सक्कोति अथस्स आवज्जनवसी सिद्धाव होति, पटि. म. अट्ठ. 1.258.

**आवज्जनविकलमतक** त्रि., ब. स., वह, जिसके अन्दर केवल आवर्जन (आलम्बन का मानसिक संप्रत्यय करने) की क्षमता न हो, केवल आवर्जनमात्र की विकलता या न्यूनता वाला, मनसिकार-रहित — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तथागतस्स आवज्जनविकलमतकं सब्बज्जुतज्जाणं, मि. प. 116; — केन तृ. वि., ए. व. — आवज्जनविकलमतकेन न तावता बुद्धा भगवन्तो असब्बज्जुतो नाम होन्तीति, मि. प. 116.

**आवज्जनसमत्थता** स्त्री., भाव, ध्यानाङ्गों की ओर मन को मोड़ देने का सामर्थ्य, अभीप्सित आलम्बन के प्रति मन को सचेत कर देने की क्षमता, प्र. वि., ए. व. — आवज्जनावलज्जेवाति ... आवज्जनसमत्थता, विसुद्धि. 2.278.

**आवज्जनसमय** पु., विषय या अभीप्सित आलम्बन में मन को लगा देने का समय — ये सप्त. वि., ए. व. — सचे आवज्जनसमये जानाति ... आवज्जनसमये जाते एव सीसं एत्ति, पारा. अट्ठ. 1.197.

**आवज्जना/आवट्टना** स्त्री., आ + वज्ज से व्यु., क्रि. ना., लिङ्ग विपर्यय, नपुं. के स्थान पर स्त्री. [आवर्जन], आलम्बन के प्रति चित्त का सचेत होना, विषय की ओर मन को मोड़ देना, आलम्बन की ओर ध्यान ले जाना, प्र. वि., ए. व. — वित्तस्स आवट्टना अनावट्टना आभोगो, विभ. 435; कुसलेन चित्तेन ... अत्थि तस्स आवट्टना, कथा. 314; — य व. वि., ए. व. — आवज्जनाय समुदयोति मनोद्वारावज्जनचित्तस्स समुदयो, पटि. म. अट्ठ. 2.122.

**आवज्जनानन्तर** त्रि., आवज्जन-चित्त की उत्पत्ति के उपरान्त उदित या उत्पन्न (वक्षुविज्ञान), पञ्चद्वारावज्जनचित्त की उत्पत्ति के बाद वाला — रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — मनोद्वारावज्जनानन्तरं उप्पज्जनचित्तं नाम नत्थीति दस्सनत्थं एवकारग्गहणं, विसुद्धि. महाटी. 2.124; — रं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — आवज्जनानन्तरं पन चक्खुद्वारे ताव दस्सनकिट्ठं साधयमानं चक्खुपसादवत्थुकं चक्खुविज्जाणं, विसुद्धि. 2.85; आवज्जनानन्तरन्ति पञ्चद्वारावज्जनानन्तरं, विसुद्धि. महाटी. 2.124.

**आवज्जनाबल** नपुं., तत्पु. स., एक आलम्बन का अंग हो जाने पर दूसरे नए आलम्बन की ओर मुड़ जाने का बल — लं प्र. वि., ए. व. — आवज्जना बलज्जेव पटिसङ्गाविपस्सना, पटि. म. 51; विसुद्धि. 2.276; आवज्जनाबलज्जेवाति रूपस्स भङ्गं दिस्वा पुन भङ्गारम्मणस्स चित्तस्स भङ्गदस्सनत्थं अनन्तरमेव आवज्जनसमत्थता, विसुद्धि. 2.278.

**आवज्जनुपेक्खा** स्त्री., मनोद्वारावज्जन-चित्त की वह चेतना जो अत्यन्त दृढ़ उपेक्षाभाव के साथ आलम्बन के ग्रहण में प्रवृत्त होती है, प्र. वि., ए. व. — उपेक्खाति विपस्सनुपेक्खा चेव आवज्जनुपेक्खा च, विसुद्धि. 2.271; मनोद्वारावज्जनचित्तसम्पयुत्ता चेतना आवज्जने अज्झुपेक्खनवसेन पवत्तिया आवज्जनुपेक्खाति वुत्ता, विसुद्धि. महाटी. 2.405.

**आवज्जित** त्रि., आ + वज्ज का भू. क. कृ. [आवर्जित], वह, जिसकी ओर चित्त को मोड़ दिया गया है, अनुचिन्तित, विचारित, चिन्तन का विषय बना दिया गया, चित्त के सम्पर्क में आया हुआ — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — एवमेवं पादकज्झाना वुड्ढाय पुब्बे आवज्जितं अनावज्जित्वा पटिसन्धिमेव आवज्जन्तो ..., विसुद्धि. 2.41; — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — वित्ते आवज्जिते पन, अभि. अव. 1130; एवमावज्जिते तस्मिं, अभि. अव. 1081; वस्ससतेपि

## आवज्जेति

225

## आवट

... कुसलं आवज्जेय्य, आवज्जिते, मि. प. 274; — तानं प. वि., ब. व. — महण्णवानं सब्बेसं सहैव खलु भूमिया, बलादावज्जितानं व फलोपो आगमितस्सति, सद्धम्मो. 433; — त नपुं., आवज्जित का भाव., अनुचिन्तन अथवा विचार का विषय होना, चिन्तन का संप्रत्यय हो जाना — ता प. वि., ए. व. — आवज्जितत्ता आरम्मणूपपहानकुसलो, पटि. म. 214; तैसं समापत्तितो उद्वाय आवज्जितत्ता एतदहोसि, स. नि. अहु. 1.68; उप्पादं अनावज्जितत्ता अनुप्पादं आवज्जितत्ता सतिसम्बोद्धो तिहति, स. नि. अहु. 3.181; पटि. म. 302; स. उ. प. में, अना- निषे., चेतना का विषयीभूत न होना मनसिकार की पकड़ से बाहर होना, मन द्वारा ध्यान न दिए जाने की स्थिति में रहना — उप्पादं अनावज्जितत्ता, ... अनिमित्तं सङ्गारे अनावज्जितत्ता, स. नि. अहु. 3.181; स. पू. प. में, — हृदय त्रि., ब. स. [आवर्जितहृदय], अन्यत्र मुड़ चुके हृदय वाला, अन्य धार्मिक सम्प्रदाय में दीक्षित हो चुका व्यक्ति — यानं पु., प. वि., ब. व. — आवज्जितहृदयानं पुरत्थिमदिसं ओलोकयमानानं तैसं मनुस्सानं अञ्जतरं, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.159.

**आवज्जेति** आ + वज्ज का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवर्जयति, भिन्नार्थक], 1. किसी के विषय में सोचता है, किसी विषय पर अनुचिन्तन करता है, अन्वीक्षण करता है, चित्त को प्रवृत्त करता है, चित्त को (किसी तक) ले जाता है या पहुँचा देता है — आवज्जेति नामेतीति आवज्जनं, पटि. म. अहु. 1.240; इमं धम्मदेसनं सुद्ध सुतवा पुनप्पुनं आवज्जेति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).101; सत्थारं आवज्जेति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).298; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — तं धम्मं आवज्जेन्तो मनसिकरोन्तोति अत्थो, ध. प. अहु. 2.336; सीलं आवज्जेन्तो निपज्जि, चरिया, अहु. 100; आवज्जेन्तो दिस्वा, ध. प. अहु. 1.157; आवज्जेन्तो सब्बं जत्वा, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).280; पुञ्ञसम्पत्तिं आवज्जेन्तो निसीदति, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.164; — न्तेन पु., तृ. वि., ए. व. — अयं उत्तरारणी अयं अधरारणी ति आवज्जेन्तेन अञ्जविहितकेन भवितब्बं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).404; — ज्जयतो / न्तस्स / ज्जन्तस्स पु., प. वि., ए. व. — मनसिकरोतोति आवज्जयतो समन्नाहरन्तस्स, ..., म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).73; तस्स हि आरोगोम्हीति आवज्जयतो तदुभयं होति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).213; कथं नु खो ति आवज्जेन्तस्स भगवतो

जाणं उप्पज्जि, उदा. अहु. 143; यदा पन निमीलेत्वा आवज्जन्तस्स योगिनो, अभि. अव. 860; उप्पादं आवज्जन्तस्स उप्पादो पाकटो होति, तानं आवज्जन्तस्स तानं ... भेदं आवज्जन्तस्स भेदो ..., म. नि. अहु. (उप.प.) 3.61; — न्ता पु., प्र. वि., ब. व. — (भिक्षु) बुद्धगुणे आवज्जेन्ता, मि. प. 3; — थ अनु., म. पु., ब. व. — तुम्हें सीलानि आवज्जेथ, जा. अहु. 1.198; सीलमेव आवज्जेथाति, स. नि. अहु. 1.51; — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — राजा पल्लङ्गेन निसिन्नो अत्तनो दानं आवज्जेसि, जा. अहु. 4.366; दिवाविहारं निसिन्नो अत्तनो गुणे आवज्जेसि, उदा. अहु. 217; — त्वा पू. का. कृ. — सूरियं ओलोकेन्तो बुद्धगुणे आवज्जेत्वा, जा. अहु. 2.28; पारमियो आवज्जेत्वा मेत्ताभावनं पुरेचारिकं कत्वा, जा. अहु. 1.176; सचे पन थेरो अत्तनो सीलं आवज्जेत्वा, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).309; 2. पलट देता है, उलट देता है, अस्त-व्यस्त कर देता है, विपर्यस्त कर देता है, गड़बड़ कर देता है — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — "निपज्जिस्सामीति कायं आवज्जेसि", पारा. अहु. 1.10; दी. नि. अहु. 1.10.

**आवट / आवुत** त्रि., आ + वु का मू. क. कृ. [आवृत्], 1. आच्छादित, ढका हुआ, चारों ओर से घिरा हुआ, पर्दे अथवा आवरण से युक्त, सम्मिलित अथवा अन्तर्भूत कर लिया गया, ग्रस्त, अभिभूत — तो पु., प्र. वि., ए. व. — कलहाभिरतो भिक्षु, मोहधम्मेन आवुतो, सु. नि. 278; पञ्चहि नीवरणेहि ... ओपमञ्जो सुभगवणिको, आवुतो निवुतो ओफुटो परियोनद्धो, म. नि. 2.426; — टो उपरिवत् — एत्थायं जनो आवटो निवुतो ओवुतो पिहितो परियोनद्धो, मि. प. 159; — टै नपुं., सप्त. वि., ए. व. — आवटे वित्ते धम्माभिसमयो न होतीति, मि. प. 238; — ता पु., प्र. वि., ब. व. — नीवरणेहि आवुता निवुता ओवुता पिहिता ..., महानि. 182; — टा उपरिवत् — रागरत्ता न दक्खन्ति, तमो खन्धेन आवुटाति, दी. नि. 2.28; म. नि. 1.227; 2. पिहित, बन्द कर दिया गया, बाधित, प्रत्याख्यात, अस्वीकृत, निवारित, हटा दिया गया — टं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आवटं द्वार निगण्ठानं निगण्ठीनं, अनावटं द्वारं भगवतो, म. नि. 2.49, 51; केनचि आवटं होति पटिच्छन्नं, पटि. म. 378; विसुद्धि. 2.18; आवटंयेव तेन आवरणेन पिहितं, पटि. म. अहु. 2.250; — टा पु., प्र. वि., ब. व. — आवटा मे आवुसो कामाति, पारा. 139; एत्थ च आवटाति आवारिता निवारिता, पटिक्खत्ताति अत्थो, पारा. अहु. 2.86; — टं

## आवट

226

## आवटति

द्वि. वि., ए. व. - "अपिनुस्स इत्थीसु आवटं वा अस्स अनावटं वाति, दी. नि. 1.84; स. उ. प. के रूप में, अना, निहा, ब्या, भवा. के अन्तः, द्रष्टः, स. पू. प. के रूप में, - त्त नपुं. भाव. [आवृत्त], आच्छादित अथवा घिरा हुआ होना, बन्द होना, बाधित या रुकावट भरा होना, स. उ. प. मे, अना.- अनावृत अथवा खुला हुआ होना, ढका हुआ अथवा आच्छादित होना, खुलापन - ता प. वि., ए. व. - तदेव अनावटत्ता विवटं, पटि. म. अहु. 2.250.

आवट' त्रि., आ + √वट्/वत्त का भू. क. कृ. [आवृत्त], शा. अ., चक्कर में डाल दिया गया, गोल घेरा या परिधि के रूप में परिवर्तित कर दिया गया, ला. अ., बेचैन कर दिया गया, भ्रम-ग्रस्त बना दिया गया, भौचक्का कर दिया, बहका दिया गया, गुमराह कर दिया गया - ट्टो पु., प्र. वि., ए. व. - आवट्टोसि खो त्वं, गहपति समणेन गोतमेन, आवट्टनिया मायायाति, म. नि. 2.52; आवट्टो खो ते भन्ते उपाति गहपति समणेन गोतमेन आवट्टनिया मायायाति, म. नि. 2.50; वेरज्जो ब्राह्मणो मारावट्टनेन आवट्टो, ध. प. अहु. 1.333; स. उ. प. के रूप में, अना. के अन्तः, द्रष्टः.

आवट्ट/आवत्त पु., [आवर्त], 1. जलावर्त, भंवर - ट्टो प्र. वि., ए. व. - आवट्टो सलिलभमो, अभि. प. 660; - तेन तृ. वि., ए. व. - नावत्तेन सुवानयोति न कोधावत्तेन सुआनयो, कोधवसे वत्तेतुं न सुकरोम्हीति वदति, स. नि. अहु. 1.309; - ट्टं द्वि. वि., ए. व. - मज्झे गङ्गाय आवट्टं उट्टपेसि, म. नि. अहु. 1(2).164; - ट्टे सप्त. वि., ए. व. - इमं यमुनाय आवट्टे खिपितुं वट्टति, जा. अहु. 7.5; एकस्मिं आवट्टे निमुज्जित्वा, जा. अहु. 1.79; स. प. के अन्तः, - गङ्गाय आवट्टकमिवेगजनितां हलाहलसदं सुत्वा, मि. प. 127; उदकं ... पासणा सक्खर ... आवट्ट गग्गलक ... परियोत्थरति, मि. प. 189; 2. गोल घेरा, परिधि, घेरा, दायरा - तो प. वि., ए. व. - अविदूरे आवट्टतो द्वादसयोजनो, जा. अहु. 5.332; आवट्टतो छत्तिसयोजनाय परिसाय परिवुतो, ध. प. अहु. 2.121; - ट्टे सप्त. वि., ए. व. - इत्थीनहि ... गम्भासयसज्जिते ततिये आवत्ते कतिपया लोहितपीळका सण्ढहित्वा अग्गहितपुष्पा एव भिज्जन्ति, दी. नि. टी. 3.35; तियोजनसतायामे विथारतो अट्टतेय्यसते आवट्टतो नवयोजनसतप्पमाणे मज्झिमपदेसद्धाने उप्पज्जाति, ध. प. अहु. 2.143; 3. किसी ओर मुड़ा हुआ, घुमावदार, लगातार घूम रहा - ट्टा स्त्री., प्र. वि., ए. व. -

पदक्खिणतो आवट्टा तिणलता, जा. अहु. 4.208; तिणगुम्बलता दक्खिणावट्टा, दी. नि. अहु. 1.210; स. उ. प. के रूप में, अज्जतरा, अट्टितिसङ्गुला, एकाबद्धा, कामा, किलेसा, कुण्डला, केसा, गङ्गा, चेतियपब्बता, दक्खिणा, दक्खिणा, गति, ता, द्वा, द्वादसा, द्विरा, नन्दिया, नागा, पञ्चयोजना, पदक्खिणा, भूता, मणिकुण्डला, वण्णा, यक्खा, योजनसता, वलिया, वामा, वारिया, सा. के अन्तः, द्रष्टः.

आवट्ट<sup>3</sup> पु., नेति. के 16 हारों में से 7वें हार (विभाग, अध्याय) का शीर्षक, नेति. 35-41; - ट्टो प्र. वि., ए. व. - तत्थ कतमो आवट्टो हारो, नेति. 35; अयं वुच्चते आवट्टो हारो, पेटको. 234; कतमे सोळस हारा ... वतुब्बुहो आवट्टो विभत्ति, नेति. 2; पेटको. 167; एकस्मिं पदद्धाने परियेसति सेसकं पदद्धानं आवट्टति पटिपक्खे आवट्टो नाम सो हारो, नेति. 4; पेटको. 233; - रस प. वि., ए. व. - आवट्टस्स हारस्स अयं भूमि सति, पेटको. 234.

आवट्टक त्रि., आवट्ट' से व्यु., चक्कर में डाल दिया गया, बहला दिया गया, पथभ्रष्ट कर दिया गया, केवल स. उ. प. के रूप में, पुनरा, कुण्डला, दक्खिणा, वङ्गा, गल्ला. के अन्तः, द्रष्टः.

आवट्टकत त्रि., गोल कर दिया गया, गोल छिद्र जैसा बना दिया गया - ते नपुं. सप्त. वि., ए. व. - अङ्गजातं पवेसेत्त्वा, तमावट्टकते मुखे, विन. वि. 28.

आवट्टगङ्गा स्त्री., 1. एक नदी का नाम, प्र. वि., ए. व. - सा तिक्खत्तुं अनोत्ततं पदक्खिणं कत्वा गतद्धाने आवट्टगङ्गाति वुच्चति, सु. नि. अहु. 2.146; म. नि. अहु. (म.प.) 2.27; 2. एक सिंघाई-प्रणाली या नहर का नाम - व्हं त्रि., ब. स., द्वि. वि., ए. व. - ततो आवट्टगङ्गहं निग्गतं दक्खिणामुखं, चू. वं. 79.50.

आवट्टगगाह पु., शा. अ., भंवर की पकड़, ला. अ., पांच कामगुणों की दृढ़ पकड़ अथवा उनमें प्रगाढ़ तिप्तता - हो प्र. वि., ए. व. - सचे सो भिक्खवे दारुक्खन्धो न ओरिमं तीरं उपगच्छति ... न आवट्टगगाहो गहेस्सति, स. नि. 2(2).182; ... ओरिमं तीरं, किं पारिमं तीरं ... को आवट्टगगाहो, ... ति, स. नि. 2(2).182; वुत्तज्जेतं आवट्टगगाहोति खो, भिक्खवे, पञ्चनेतं कामगुणानं अधिवचनंति, स. नि. अहु. 3.50.

आवट्टति/आवत्तति आ + √वट्/वत्त का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवर्तते], शा. अ., मुड़कर या पलट कर वापस

## आवट्टन

227

## आवट्टभय

जाता है, मुड़ कर समीप जाता है, पीछे की ओर मुड़कर पुनः आ जाता है, इधर उधर चक्कर काटता है या भटकता है, ला. अ., चित्त को आलम्बन अथवा विषय की ओर प्रवृत्त करता है — *गेधं आपज्जति आवत्तति बाहुल्लाय, म. नि. 3.158; द्वीहि सस्सतुच्छेददिद्वीहि आवट्टतीति द्विरावट्टा, स. नि. अट्ट. 1.76; वेदनाहि फुट्ठो आवट्टति परिवट्टति, उदा. 84; एकस्मियेव ठाने अनिपज्जित्वा अत्तनो सरीरं इतो चित्तो आकट्ठन्तो आवट्टति, उदा. अट्ट. 93; — न्ति ब. व. — छिन्नपातं पपत्तन्ति, आवट्टन्ति, विवट्टन्ति, दी. नि. 2.105; 117; 118; 120; उरानि पटिपिप्पसन्ति आवट्टन्ति विवट्टन्ति, विसुद्धि. 2.132; — ट्टेन्त वर्त. कृ. — स्स पु., ष. वि., ए. व. — ननु आवट्टेन्तस्स होति ... पण्हदहन्तस्स होतीति, कथा. 286-287; निषे., अना.- चित्त को विषय की ओर नहीं मोड़ने वाला — स्स पु., ष. वि., ए. व. — अनावट्टेन्तस्स होति ... अनाभोगस्स होति, कथा. 288; अनावट्टेन्तस्स अपरिवट्टेन्तस्स, प. प. अट्ट. 194; — तन्ता पु., प्र. वि., ब. व. — छिन्नपादा विष पतिता आवत्तन्ता परिवत्तन्ता सयन्ति, जा. अट्ट. 7.197; — मानं वर्त. कृ., आत्मने., पु., द्वि. वि., ए. व. — अदसा खो भगवा तं परिब्बाजकं ..., वेदनाहि फुट्ठं आवट्टमानं परिवट्टमानं, उदा. 84; — ट्टेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — मानुसकोहि वा कामेहि आवट्टेय्याति, म. नि. 2.183; — ट्टेय्युं ब. व. — इमाय आवट्टनिया आवट्टेय्युं, म. नि. 2.52; अ. नि. 1(2).223; — ट्टेत्वा पू. का. कृ. — ततो भवङ्गं आवट्टेत्वा उप्पन्नस्स, विसुद्धि. 2.306.*

आवट्टन नपुं., आ + √वट् से व्यु., क्रि. ना. [आवर्तन], शा. अ., चक्कर काटना, फेरा लगाना, मोड़, ला. अ., 1. कामभोगों में दृढ़ लगाव, कामभोगों द्वारा अभिभूत होना अथवा ग्रस्त होना, 2. आवर्जन, चित्त का विषयों की ओर मुड़ जाना — तो प. वि., ए. व. — इत्थियो नामेता कामावट्टेन आवट्टनतो आवट्टनी, जा. अट्ट. 2.274; (आवट्टना) भवङ्गस्स आवट्टनतो आवट्टना, विभ. अट्ट. 382; स. उ. प. के रूप में, अना., भवङ्गा, मारा., सा. के अप्त. द्रष्ट.

आवट्टनमन्त/आवज्जनमन्त पु., [आवर्जनमन्त्र], एक विशेष प्रकार का मन्त्र, दूसरे को अपनी ओर खींचकर लाने वाला सम्मोहन मन्त्र, पृथ्वीजय मन्त्र — त्तो प्र. वि., ए. व. — पथवीजयमन्तोति आवट्टनमन्तो वुच्चति, जा. अट्ट. 2.204.

आवट्टनमानस त्रि., ब. स., मुड़े हुए मन वाला, किसी के प्रति प्रवृत्त मन वाला — सो पु., प्र. वि., ए. व. — विवेकेनिब्बाने आवट्टमानसो हुत्था ..., म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.276.

आवट्टना स्त्री., आ + √वट् से व्यु., क्रि. ना., आवट्टन का स्थाना. [आवर्तन], आलम्बन की ओर चित्त की प्रवृत्ति या मुड़ाव, विषय पर चित्त द्वारा ध्यान देना, प्र. वि., ए. व. — आवट्टना वातिआदीनि चत्तारिपि आवज्जनस्सेव नामानि, विभ. अट्ट. 382; आवट्टना वा आभोगो वा समत्राहारो वा, विभ. 363; आवट्टना आभोगो समत्राहारो मनसिकारो ..., कथा. 313, 316; 396.

आवट्टनी स्त्री., [आवर्तनी], सम्मोहक मन्त्र, दूसरे को मोहित कर देने वाला या बहका देने वाला मन्त्र, प्रलोभन में फंसा देने वाला मन्त्र, प्र. वि., ए. व. — आवट्टनी महामाया, ब्रह्मचरियविकोपना, जा. अट्ट. 2.273; 330; जा. अट्ट. 4.428; जा. अट्ट. 5.449; आवट्टनीति यथा आवट्टनी महाजनस्स हृदयं मोहेत्वा अत्तनो वसे वत्तेति, एवमेतापीति अत्थो, जा. अट्ट. 5.449; — निं द्वि. वि., ए. व. — मायावी समणो गोतमो आवट्टनि मायं जानाति याय अज्जतिथियानं सावके आवट्टेतीति, अ. नि. 1(2).223; गोतमो मायावी आवट्टनि मायं जानाति याय अज्ज तिथियानं सावके आवट्टेतीति, म. नि. 2.43; 50; आवट्टनिमायन्ति आवट्टेत्वा गहणमायं, आवट्टेतीति आवट्टेत्वा, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.40; — निया त्. वि., ए. व. — समणेन गोतमेन आवट्टनिया मायायाति, म. नि. 2.52; — निमाया स्त्री., कर्म. स., मोह जाल में फंसा देने वाली माया — यं द्वि. वि., ए. व. — आवट्टनिमायन्ति आवट्टेत्वा गहणमायं, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.40.

आवट्टपरिवट्ट पु., [आवर्तपरिवर्त], इधर उधर चक्कर मारना, इधर से उधर भटकते रहना — इं द्वि. वि., ए. व. — भवयोनिगतिविज्जाणद्धिति सत्तावासेसु आवट्टपरिवट्टं करोति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).71.

आवट्टभय नपुं., तत्पु. स. [आवर्तभय], शा. अ., पानी में भंवर से भय, तैरने वाली 4 भंवरों में से एक, ला. अ., सांसारिक कामसुखों में लिप्त हो जाने का भय — यं प्र. वि., ए. व. — चत्तारिमानि, भयानि ..., ऊमिभयं कम्भीलभयं आवट्टभयं सुसुकाभयं, म. नि. 2.132; अ. नि. 1(2).141; अपरानिपि चत्तारि भयानि — ... आवट्टभयं ... भयानि, विभ. 440; उदकावट्टतो भयं आवट्टभयं, महानि. अट्ट. 320.

## आवट्टसीस

228

## आवत्तति

आवट्टसीस त्रि., ब. स. [आवर्तशीर्ष], पुंघराले केशों से युक्त शिर वाला - सो पु., प्र. वि., ए. व. - आवट्टसीसो वा गुन्नं सरीरे आवट्टसदिसेहि उद्धग्गोहि केसावट्टेहि समन्नागतो, महाव. अट्ट. 294.

आवट्टित त्रि., आ + वट्ट का भू. क. कृ. [आवर्तित], 1. किसी की ओर उन्मुख अथवा झुका हुआ, किसी के प्रति खिंचाव या आकर्षण रखने वाला, अभिभूत, ग्रस्त, गुमराह या पथभ्रष्ट कर दिया गया - तो पु., प. वि., ए. व. - समणस्स गोतमस्स आवट्टनिया मायाय आवट्टितो सरणं गमिस्सति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.293; - ता ब. व. - अन्वाविट्ठाति आवट्टिता, म. नि. अट्ट. 1(2).311; अन्वाविट्ठा, म. नि. 1.419; 2. आलम्बन या विषय की ओर प्रवृत्त, विषय की ओर मुड़ा हुआ - ते सप्त. वि., ए. व. - सचे पन भवङ्गं आवट्टेति, किरियमनोधातुया भवङ्गे आवट्टिते ..., ध. स. अट्ट. 307.

आवट्टितत्त नपुं., आवट्टित का भाव. [आवर्तितत्त्व], अभिभूत अथवा ग्रस्त होने की अवस्था - ता प. वि., ए. व. - सकलनगरवासीनं मारेन आवट्टितत्ता एकं भिक्ष्यामि अलभित्वा, ध. प. अट्ट. 1.114.

आवट्टी त्रि., विषयों अथवा कामभोगों की ओर मन को मोड़ देने वाला - ट्टिनो पु., च. वि., ए. व. - आवट्टिनो साम्भोगोयेव होति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).374; स. उ. प. में, अना.- निषे., विषयों की ओर मन को न मोड़ने वाला, प्र. वि., ए. व. - अथ खो सो ... नेव ताव कामेसु अनावट्टी होति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).374.

आवट्टेति आ + वट्ट का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., 1. फुसलाता है, बहका देता है, लुभाता या ललचाता है, वश में कर लेता है - अञ्जतित्थियानं सावके आवट्टेतीति, म. नि. 2.43. 50; - त्वा पू. का. कृ. - आवट्टेतीति आवट्टेत्वा परिक्षिपित्वा गण्हाति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.40; 2. आलम्बन या विषय की ओर चित्त को मोड़ देता है, विषय पर चित्त का ध्यान ले जाता है - सचे पन भवङ्गं आवट्टेति, ध. स. अट्ट. 307; - यमाना स्त्री., वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. - भवङ्गं आवट्टयमाना उप्पज्जति, अभि. अव. 14; - ट्टेत्वा पू. का. कृ. - भवङ्गं आवट्टेत्वा, विसुद्धि. 2. 306; भवङ्गं आवट्टेत्वा उप्पजनमनसिकारो, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).128.

आवत्त' त्रि., आ + वत्त का भू. क. कृ. [आवर्त], शा. अ., पीछे की ओर पलटा हुआ, वापस मुड़ा हुआ, पतित,

भ्रष्ट, गिरा हुआ, ला. अ., गृहस्थ जीवन की हीन या तुच्छ अवस्था में पुनः वापस आया हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - बाहुल्लिको पधानविभन्तो आवत्तो बाहुल्लाय, म. नि. 1.231; महाव. 12; अयं जिनसासने पब्बजित्वा तत्थ पतिट्ठं अलभित्वा हीनायावत्तो, मि. प. 232, 233.

आवत्त' पु., [आवर्त], भंवर, चक्कर, जलावर्त - तोन तृ. वि., ए. व. - नावत्तेन सुवानयोति न कोधावत्तेन सुआनयो, स. नि. अट्ट. 1.309; नावत्तेन सुवानयो, स. नि. 1(1).276; स. उ. प. के रूप में, कोधा, चरिया, दक्खिणा, नङ्गला, वारिया.

आवत्तगङ्गा स्त्री., एक प्राचीन जलप्रणाली (नहर) का नाम - ङ्गं त्रि., आवत्तगङ्गा नाम वाला / वाली - ङं नपुं., प्र. वि., ए. व. - ततो आवत्तगङ्गं निग्गतं दक्खिणामुखं, चू. वं. 79.50.

आवत्तति आ + वत्त / वट्ट का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रायः आवट्टति के अप. के रूप में प्रयुक्त [आवर्तते], 1. चारों तरफ चक्कर लगाता है, परिक्रमा करता है, परिधि या मण्डल के रूप में घेरा बना देता है, चारों ओर से घेर लेता है, उलटता पुलटता है - (उदरवातो) अधिवासेतुं असक्कोन्तो आवत्तति परिवत्तति, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).86; आवत्तती च परिवत्तती च, वसुलोपी सम्मुखा रज्जो, जा. अट्ट. 6.143(रो.); - न्ति ब. व. - उच्छङ्गे आवत्तन्ति विवत्तन्ति, जा. अट्ट. 7.335; 2. पलटकर वापस आता है, गृहस्थ-जीवन की हीन अवस्था में पुनः वापस लौट आता है - सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति, म. नि. 2.132; अ. नि. 1(1).171; - न्ति ब. व. - सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तन्ति, म. नि. 2.207; इमे दुज्जना ताव तत्थ सासने विसुद्धे पब्बजित्वा पटिनिवत्तित्वा हीनायावत्तन्ति, मि. प. 231; जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति, मि. प. 235; - माना वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ब. व. - आवत्तमानापि ते जिनसासनस्स सैद्धाभावं येव परिदीपेत्ति, मि. प. 236; - तोय्य विधि, प्र. पु., ए. व. - न सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तेप्प्याति अयं थेरस्स अधिप्पायो, स. नि. अट्ट. 2.54; - तिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. - विहरन्तो सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सतीति, स. नि. 2(2).191; - तिस्ससि म. पु., ए. व. - सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्ससि, उदा. 93; - तिस्सामि उ. पु., ए. व. - सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामीति, उदा. 92; म. नि. 2.97; - तित्वा पू. का. कृ. - तात

## आवत्तन

229

## आवमति

रुद्रपाल, हीनायावतित्वा भोगे म. नि. 2.261; पच्यबाहुल्लाय आवतित्वा, जा. अहु. 1.90; यन्त्राहं हीनायावतित्वा कामे परिभुज्येय, सु. नि. (पु.) 157; पच्यबाहुल्लाय आवतित्वा, जा. अहु. 1.90; 3. (समुद्र) घटता है - आभुजति आवत्ततीति अत्थो, सद. 2.348; 4. (केश) घुंघराला हो जाता है, आकुञ्चित हो जाता है - माना वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ब. व. - कैसा हलुलमता हुत्वा दक्षिणतो आवत्तमाना सीसं अत्लीयिसु, जा. अहु. 1.74; 5. पलट देता है, रूपान्तरित कर देता है - पटिपक्खेन अकुसले धम्मे परियेसति, तेसं किलेसानं हारेन आवट्टति, पेटको. 234.

आवत्तन नपुं., आ + वत्त से व्यु., क्रि. ना. [आवर्तन], वापसी, प्रत्यावर्तन, वापस लौट आना, अधःपतन - नेन तू. वि., ए. व. - न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीकितं नाम होति, मि. प. 235; - क पु. उलट-पुलट करने वाला, - को पु. प्र. वि., ए. व. - नङ्गलस्स फालस्स आवत्तनको नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा खेते कसनकोति अत्थो, थेरगा. अहु. 1.69; - स्स प. वि., ए. व. - नत्थि आवत्तनकस्स भूमि होन्ति, पेटको. 290; स. प. के अन्त., - एवं अरिया चतुक्कमगं पञ्जापेन्ति अबुधजनसेविताय बालकन्ताय रत्तवासिनिया नन्दिया भवत्तण्हाय अवट्टनत्थं, नेत्ति. 93; स. उ. प. के रूप में, अना. देवता, के अन्त. द्रष्ट.

आवत्तनधम्म त्रि., ब. स. [आवर्तनधर्म], पुनः वापस लौटने की प्रकृति से युक्त, वापस लौटकर आने वाला, स. उ. प. के रूप में, अना. - पुनः वापस लौटने की प्रकृति से रहित, पुनः अधोगति की प्राप्ति न करने वाला - म्मो पु., प्र. वि., ए. व. - अनावत्तिधम्मोति ततो ब्रह्मलोका पुन पटिसन्धिक्खसेन अनावत्तनधम्मो, दी. नि. अहु. 1.252.

आवत्तनी' त्रि., [आवर्तिन], उलटने-पलटने वाला, स. उ. प. में, नङ्गला. - हल के फाल को उलटने पलटने वाला अथवा ऊपर और नीचे करके खींचने वाला - नी पु., प्र. वि., ए. व. - यथापि भदो आजज्जो नङ्गलावत्तनी सिखी, थेरगा. 16; नङ्गलस्स फालस्स आवत्तनको नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा खेते कसनकोति अत्थो, थेरगा. अहु. 1.69.

आवत्तनी' स्त्री., [आवर्तनी], धातुओं को गलाने का पात्र - सोण्णाद्यावत्तनी मूसा, अभि. प. 526.

आवत्तेति/आवत्तयति आ + वत्त का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवर्तयति], वापस लौटाता है, गृहस्थ जीवन की हीन अवस्था की ओर वापस लौटने को प्रेरित कराता है, निवारण कराता है, उलट-पुलट करता है - यथा कुञ्जर अदन्तं ... बलवा आवत्तेति अकामं, थेरगा. 357; आवत्तेति अकामन्ति अनिच्छन्तमेव निसेधनतो निवत्तेति, थेरगा. अहु. 2.57; - त्तो भू. क. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - बाहुल्लाय आवत्तो, महाव. 66; - यिस्ससि भवि., म. पु., ए. व. - न मं पुत्तकत्ते जम्मि, पुनरावत्तयिस्ससि, थेरीगा. 304; - यिस्सं उ. पु., ए. व. - एवं आवत्तयिस्सं तं, थेरगा. 357; - त्वा पू. का. कृ. - नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा, थेरगा. अहु. 1.69.

आवत्थिक त्रि., अवस्था से व्यु. [आवस्थिक], जीवन की अवस्था-विशेष का सूचक, किसी विशेष अवस्था के साथ सम्बद्ध - कं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आवत्थिकं लिङ्गिकं नेमित्तिकं अधिच्चासमुप्पन्नन्ति ... तत्थ वच्छो दम्मो बलिवद्दोति एवमादि आवत्थिकं, विसुद्धि. 1.201.

आवदति आ + वद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवदति], निन्दा करता है, कलंक लगाता है, सम्बोधित करता है - दि अद्य., प्र. पु., ए. व. - तं दिस्वा कस्मा एवं तियावदि, चू. वं. 51.23; - दितब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - जात्याच्चारो दीहि निहीनो यन्ति आवदितब्बो, अभि. प. 699 पर सूची.

आवन्तिक त्रि., [आवन्तिक], अवन्ती (आधुनिक उज्जैन) का रहने वाला, अवन्ती के साथ जुड़ा हुआ - का पु., प्र. वि., ब. व. - पावेय्यका सङ्घि थेरा असीतावन्तिका पि च महाखीणासवा सब्बे अहोगङ्गहि ओतरुं, म. वं. 4.19.

आवपति/आवपेति आ + वप का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवपति], जमा कर देता है, जमानत अथवा गिरवी के तौर पर रख देता है, फेंक देता है - न्ति प्र. पु., ब. व. - आवपन्ति, पक्खिपन्तीति वृत्तं होति, महाव. अहु. 362; - पितुं निमि. कृ. - त्ममति पिता पुत्तं इण्डो वा आजीविकपकतो वा आवपितुं वा विविकणितुं वा ति, मि. प. 259.

आवमति आ + वम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवमति], शा. अ., वमन किए हुए पेय का पुनः पान कर जाता है, ला. अ., जिस सांसारिक जीवन को त्याग चुका है, उसी में पुनः वापस लौटाता है - मितुं निमि. कृ. - मनापिया



## आवरण

230

## आवरणविरहित

कामगुणा च वन्ता, वन्ते अहं आचमिषुं न उस्सहे, थेरगा, 1128; आवमिषुं न उस्सहेति एवं ते छड्डिते पुन पच्चावमिषुं अहं न सक्कोमि, थेरगा. अहु. 2.400.

**आवरण 1.** नपुं, आ + ऋ से व्यु. क्रि. ना. [आवरण, नपुं.], शा. अ., ढक देने वाला या आच्छादित कर देने वाला ढक्कन, आच्छादन, पर्दा, बाधा, रुकावट, रोक, विघ्न, शरण, पानी को रोककर रखने वाला बांध, घेराबन्दी करने वाली दीवार, दुर्ग की भित्ति - णं' प्र. वि., ए. व. - न तस्सावरणं अस्थि, बु. वं. 12-28; आवरणन्ति पटिच्छादन्ति तिरोकरणं, बु. वं. अहु. 225; - णं' द्वि. वि., ए. व. - इत्थिसोतानि सब्बानि, सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु तैसमावरणं कातुं यो सक्कोति वीरियवा, थेरगा. 739; नगरस्स समन्ततो कत्वानावरणं मग्गे, चू. वं. 70.152; - णेन तू. वि., ए. व. - रोहिणिं नाम नदिं एकेनेव आवरणेन बन्धापेत्वा सस्सानि करोन्ति, ध. प. अहु. 2.147; - णे' सप्त. वि., ए. व. - पलालतिणमत्तिहाहि आवरणे कते, अ. नि. अहु. 3.26; - णे' / णानि द्वि. वि., ब. व. - छिन्ने आवरणे चाद्धारस चेव महीपति, चू. वं. 79.83; भूमिन्दो कन्दरागङ्गानदीसु च तहिं तहिं सुभिक्षं कारयी रट्ठं बन्धेत्वावरणानि, चू. वं. 60.52; नासेन्ता सब्बथा सब्बमातिकावरणानि च, चू. वं. 61.65; पच्चत्थिके विनासेन्तो मग्गे आवरणे बहू, चू. वं. 70.159; - बन्धनकाल पु., तत्पु. स., बांध के बांधने का समय - लो प्र. वि., ए. व. - नदिंयं उदकप्पवत्तनकालो विय भवङ्गवीथिप्पवत्तनकालो, ... आवरणबन्धनकालो विय, ध. स. अहु. 307; ला. अ., 1. 5 प्रकार के नीवरण, (कामच्छन्द, व्यापाद, थीन-मिद्ध, उद्धच्च-कुक्कुच्च तथा विचिकिच्छा), जो ध्यान के क्रम में चित्त को एकाग्र एवं शान्त नहीं रहने देते तथा साधक सबसे पूर्व इनका प्रहाण करता है, चित्त को विक्षिप्त एवं अशान्त करने वाली पांच अकुशल चित्तवृत्तियां - अत्थो नीहरणे चेवावरणादो व नी सिया, अभि. प. 1167; - णं प्र. वि., ए. व. - उपादानं आवरणं नीवरणं, महानि. 6.21; कुक्कुच्चे सति आवरणं होति, मि. प. 238; एवं निसीदनं चम्मं नत्थि आवरणं नभो, दी. वं. 1.60; आकासे आवरणं नाम नत्थि, जा. अहु. 4.208; अविज्जन्धकारो, सोव सभावावगमननिवारणेन आवरणं एतस्साति अविज्जन्धकारावरणो, पटि. म. अहु. 2.14; - णेन तू. वि., ए. व. - आवटयेव तेन आवरणेन पिहितं, पटि. म. अहु. 2.250; - तो प. वि., ए. व. - हे सग्गमग्गानं आवरणतो आवरणानि, पटि. म. अहु. 2.10;

- णा प्र. वि., ब. व. - पञ्चिमे नीवरणा अरियस्स विनये आवरणातिपि बुच्चन्ति, दी. नि. 1.223; अनावरणा अनीवरणा चेतसो अनुपक्किलेसा, स. नि. 3.114; 116; आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा, अ. नि. 2(1).59; आवरणवसेन आवरणा, अ. नि. अहु. 3.26; - णानि द्वि. वि., ब. व. - पहाय पच्चावरणानि चेतसो, उपक्किलेसे व्यपनुज्ज सब्बे, सु. नि. 66; पच्चावरणानीति पञ्च नीवरणानि एव, ... तानि पन यस्मा अब्बादयो विय चन्दसुरिये व चेतो आवरन्ति तस्मा आवरणानि चेतसो, अप. अहु. 1.197; - णद्व पु., तत्पु. स., आच्छादित करने का अर्थ - हेन तू. वि., ए. व. - सब्बेपि अकुसला आवरणद्वेन नीवरणाति बुत्ता, पटि. म. अहु. 2.66; ला. अ. 2, रकर के क्रि. रू. के साथ प्रयुक्त, वर्जित करता है, नियन्त्रित करता है, रोक देता है - णं करोन्ति द्वि. वि., ए. व. - सामथेराणं मुखद्वारिकं आहारं आवरणं करिस्सन्ति, महाव. 107; न भिक्खवे मुखद्वारिको आहारो आवरणं कातब्बोति, महाव. अहु. 279; स. उ. प. के रूप में, अना., अविज्जन्धकारा., आदिच्चरंसा., कम्मा., किलेसा., तदा., दन्ता., दूरा., नित्याना., निरा., पण्डरा., पहीनसब्बा., मातिका., मुखा., मोक्खमग्गा., रक्खा., रक्खागुत्ति., वाता., विपाका., सग्गा., मोक्खा., समन्ता. के अन्तः द्रष्ट.

**आवरणगाथा** स्त्री., सु. नि. के खग्विसाणसुत्त की एक गाथा का सु. नि. अहु. द्वारा दिया गया शीर्षक, इस गाथा में चित्त के 5 नीवरणों के प्रहाण का बुद्धोपदेश विद्यमान है - पहाय पच्चावरणानि चेतसो, सु. नि. 66.

**आवरणता** स्त्री., आवरण का भाव., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, आच्छादन होना, बाधक होना, रुकावट के रूप में विद्यमान रहना, स. उ. प. के रूप में, कम्मा., किलेसा., विपाका. के अन्तः द्रष्ट.

**आवरणतासुत्त / आवरणसुत्त** नपुं, अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(2).136-137.

**आवरणनिवरण** नपुं., रुकावट एवं बाधा, आवरण एवं नीवरण, स. प. के अन्तः, - उदकं गङ्गाय नदिया पासाणं सक्खर ... आवरणनिवरणमूलकसाखासु परियोत्थरति, मि. प. 189.

**आवरणविरहित** त्रि., तत्पु. स. [आवरणविरहित], नीवरणों से मुक्त, चित्त के मलों से मुक्त - तं नपुं., प्र. वि., ए. व., क्रि. वि. - विसुद्धता आवरणविरहितं हुत्वा मज्झिमं समथनिमित्तं पटिपज्जति, विसुद्धि. 1.143.

## आवरणसुत्त

231

## आवसति

आवरणसुत्त नपुं. अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).59-60.

आवरणीय त्रिं. आ + ण्यु का सं. कृ. [आवरणीय], आवृत अथवा आच्छादित कर लेने वाला, ढक देने वाला (पांच नीवरण धर्म) — या पु. प्र. वि. ब. व. — नीवरणानि हि वित्तं आवरित्वा तिष्ठन्ति, तस्मा आवरणीया धम्माति बुच्चन्ति, अ. नि. अट्ठ. 2.85; — येहि पु. तृ. वि. ब. व. — आवरणीयेहि धम्मेहीति पञ्चहि नीवरणेहि धम्मेहि, तदे.; दिवसं चङ्गमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि वित्तं परिसोधेति, स. नि. 2(2).111, 180; स. नि. अट्ठ. 3.72.

आवरति आ + वृ का वर्त. प्र. पु. ए. व. [आवृणोति], बन्द कर देता है, आच्छादित कर देता है, बाधित कर देता है, खुला नहीं रहने देता है, हटा लेता है — रामि उ. पु. ए. व. — आवरामि द्वारं निगण्ठानं, म. नि. 2.49; — न्ति प्र. पु. ब. व. — कुसलधम्मे न आवरन्तीति अनावरणा, स. नि. अट्ठ. 3.187; — ये/रेय्या विधि. प्र. पु. ए. व. — गामकथाय आवरये सौतं, सु. नि. 928; गामकथाय सौतं आवरेय्य निवारेय्य संवरेय्य महानि. 271; — वर अनु. म. पु. ए. व. — तावदेव त्वं गन्त्वा तस्स देवलोकगमनानि मग्गानि आवर, यथा इध नागच्छति, एवं करोहीति अत्थो, जा. अट्ठ. 5.147; — रिसु अद्य. प्र. पु. ब. व. — आवरिसु ततो मच्चा जलनिग्गहनाब्धियो, म. वं. 36.78; — रितुं निमि. कृ. — आवरितुं समत्थो नाम नत्थि, स. नि. अट्ठ. 1.99; नहि कुट्ठं वा कवाटं वा गच्छो वा लता वा आवरितुं सक्कोति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.275; — रित्त्वा पू. का. कृ. — वीथिं आवरित्वा मण्डपं कारेत्वा, जा. अट्ठ. 2.356; संगममगं आवरित्वा टिता, जा. अट्ठ. 6.70; महासमुदस्स उत्तरितुं अदत्त्वा उदकं आवरित्वा, जा. अट्ठ. 3.456; — रित त्रिं. भू. क. कृ. आच्छादित, बाधित, अभिभूत, ग्रस्त, स. उ. प. में ही प्राप्त, दोसा, रागा. के अन्त., द्रष्ट.

आवलि/आवली स्त्री. [आवलि], रेखा, पंक्ति, अटूट सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर — पन्ति वीथ्यावलिस्सेणी पाळि. अभि. प. 539; केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त, अक्खरा, दन्ता, पभाकरकरा, पुप्फा, भोगिभोगा, मुत्ता, वट्ठना. के अन्त. द्रष्ट.

आवसति/आवसेति आ + वस का वर्त. प्र. पु. ए. व. [आवसति/आवसते], आकर बस जाता है, निवास करता

है, रहता है, ठहरता है, आकर रुक जाता है, डेरा डाल देता है — सचे अगारं आवसति, विजेय्य पथविं इमं, सु. नि. 1008; — सेसि म. पु. ए. व. — पुन मावसेसीति पुनपि यथा इमं नागभवनं अज्जावससि, एवं धम्मं वर, जा. अट्ठ. 7.214; — सामि उ. पु. ए. व. — सज्जमा संविभागा च, विमानं आवसामहं, वि. व. 17; — न्ति ब. व. — वसन्ति पवसन्ति आवसन्ति परिवसन्ति, महानि. 73; जगतं जगतिपाला, आवसन्ति वसुन्धरन्ति, जा. अट्ठ. 6.201; निदा तन्दी ... आवसन्ति सरीरहा, जा. अट्ठ. 6.70; — सातु अनु. प्र. पु. ए. व. — वयं अपस्सं घरमावसातु ... स चातुरन्तं महिमावसातु, जा. अट्ठ. 4.275; — सित्थ म. पु. ब. व. — सम्मोदमाना घरमावसिन्थ, जा. अट्ठ. 3.378; — सिस्सति भवि., प्र. पु. ए. व. — नामयेवावसिस्सति, अक्खेय्यं पेतस्स जन्तुनो, सु. नि. 814; — से/सेय्य विधि. प्र. पु. ए. व. — निच्चं आरद्धविरियेहि, पण्डितोहि सहावसेति, थेरगा. 148; बहुफलं काननमावसेय्य, सु. नि. 1140; ... बहुफलं काननमावसेय्याति ... तस्मिच्च वनसण्डे वासं कप्पेय्याति, चूलनि. 189; — सेम उ. पु. ब. व. — सम्मोदमाना घरमावसेमाति, जा. अट्ठ. 3.378; — सं/न्तो वर्त. कृ., पु. प्र. वि. ए. व. — यदत्थं भोगं इच्छेय्य पण्डितो घरमावसं, अ. नि. 1(2).79; अ. नि. 2(1).42; बह्व्रपानं घरमावसन्तो, स. नि. 1(1).50; बह्व्रपानं घरमावसन्तोति इमिना यज्जउपक्खरो गहितो, स. नि. अट्ठ. 1.89; सहजातिं आवसन्तो साहलत्थेरो विविन्ति, म. वं. 4.28; — न्ता प्र. वि. ब. व. — गहद्वा घरमावसन्ता, सु. नि. 43; — मानो वर्त. कृ., आत्मने, प्र. वि. ए. व. — अगारं वसमानोपि, अप. 1.65; — स्स ष. वि. ए. व. — घरमावसमानस्स, गहट्टस्स सकं घरं, जा. अट्ठ. 7.180; — सुं अद्य. प्र. पु. ब. व. — कुसावसिं राजगहं मिथिलं चापि आवसुं, म. वं. 2.6; — सिं उ. पु. ए. व. — पठविं आवसिं अहं, अप. 1.32; पठविं आवसिं रज्जं कारेसिन्ति सम्बन्धो, अप. अट्ठ. 1.275; — सित्थ म. पु. ब. व. — सम्मोदमाना घरमावसिन्थ, जा. अट्ठ. 3.378; — सिस्सति भवि., प्र. पु. ए. व. — बलाधिपो अट्टसत्तं वसुधं आवसिस्सति, अप. 1.50; इतो गन्त्वा अयं पोसो तुसितं आवसिस्सति, तदे.; — स्सन्ति ब. व. — ये अरिया आवसिंसु वा आवसन्ति वा आवसिस्सन्ति वा, अ. नि. 3(2).25; — सितुं निमि. कृ. — न सक्का अज्जेन सत्तेन आवसितुं, जा. अट्ठ. 1.62; — सित्त्वा पू.

## आवसथ

232

## आवसित

का. कृ. - आवसित्वा तिरच्छानयोनियं, जा. अड्ड. 5.451;  
- सापेत्वा प्रेर., पू. का. कृ., बसा कर, आबाद करा कर  
- सो तं पदेसं आवासापेत्वा जनपदं सण्ठपेत्वा निवत्ति,  
जा. अड्ड. 4.136; ध. प. अड्ड. 1.200.

**आवसथ** पु., [आवसथ], वासस्थान, घर, विश्राम घर, शरणस्थल, ठिकाना, निवास, आश्रम, आश्रय - थो प्र. वि., ए. व. - घरं गहं चावसथो सरणं च पतिस्सयो, अभि. प. 206; शुल्लनन्दाय भिक्षुनिया आवसथो ड्हति, पाचि. 415; येन अज्जतरो आवसथो तेनुपसङ्गमि, पाचि. 99; एको आवसथो पिण्डो, विन. वि. 1198; - थं द्वि. वि., ए. व. - शुल्लनन्दा भिक्षुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमिस्सति, पाचि. 416; अलभमाना आवसथं अगमंसु, पाचि. 98; पविसिंसु आवसथं परिवेसितुं अ. नि. 2(2).107; - था प. वि., ए. व. - अगिलानो नाम सक्कोति तम्हा आवसथा पक्कमित्तुं, पाचि. 99; - स्स प. वि., ए. व. - अनिस्सज्जित्वा परिकिखत्तस्स आवसथस्स परिकिखेपं अतिक्कामेत्तिया, पाचि. 416; - थे सप्त. वि., ए. व. - अस्समेति आवसथे, स. नि. अड्ड. 1.146; भिक्षुनियो आवसथे ड्हमाने मण्डकं न नीहरिस्सन्तीति, पाचि. 416; चिरवासी नाम कुमारो बहि आवसथे पटिवसति, स. नि. 2(2).312; - थेहि तृ. वि. व. - नानास्तेहि कथेहि सयन्हेवसथेहि व. सु. नि. 289; स. उ. प. के रूप में अज्झा, अन्तो, गिज्जका, पुळ्वा, बहि, वाळा, सेय्या, पदीपेय्या के अन्त. द्रष्ट.

**आवसथकथा** स्त्री., विन. वि. के एक खण्ड का शीर्षक, विन. वि. 1198-1205(गा.).

**आवसथचीवर** नपुं., शा. अ., आवास में धारण किया जाने वाला चीवर, विशेष अर्थ, ऋतुमती भिक्षुणियों द्वारा आवास में धारण किए जाने हेतु अनुमोदित चीवर - रं प्र. वि., ए. व. - आवसथचीवरं लोहितेन मक्खिय्याति, चूळव. 434; - रं द्वि. वि., ए. व. - अनुजानामि, भिक्खवे, आवसथचीवरंति, चूळव. 434; आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा ..., पाचि. 414; आवसथचीवरं नाम उत्तुनियो भिक्षुनियो परिभुज्जनूति दिव्रं होति, पाचि. 415.

**आवसथद्वय** नपुं., दो आवासों के कारण उत्पन्न विनय-सम्बन्धी आपत्ति (अपराध) - यं प्र. वि., ए. व. - पञ्चाहिकं सङ्गमनिं तथा आवसथद्वयं, उक्त. वि. 388.

**आवसथद्वार** नपुं., तत्पु. स., निवास-स्थान का द्वार - रे सप्त. वि., ए. व. - आवसथद्वारेति ओवरकद्वारे, पाचि. अड्ड. 15.

**आवसथपिण्ड** पु., तत्पु. स., जन-सामान्य के निमित्त निर्मित विश्रामगृहों में सभी के लिए तैयार किया गया भोजन - ण्डो प्र. वि., ए. व. - आवसथपिण्डोति आवसथे पिण्डो, पाचि. अड्ड. 68; - ण्डं द्वि. वि., ए. व. - ... आवसथपिण्डं भुज्जन्ति, पाचि. 98; तदुत्तरि आवसथ-पिण्डं तु परिभुज्जतो, उक्त. वि. 97; - सिक्खापद नपुं., पाचि. के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें भिक्षु द्वारा आवसथपिण्ड के ग्रहण किए जाने से सम्बद्ध विनय-शिक्षापद दिये गए हैं, पाचि. 98-100.

**आवसथागार** नपुं., तत्पु. स., निवास करने हेतु घर, विश्रामशाला, वासस्थान - रं प्र. वि., ए. व. - आवसथोति आवसथागारं, अ. नि. अड्ड. 2.369; पाटलिगमने आवसथागारन्ति आगन्तुकानं आवसथगेहं, दी. नि. अड्ड. 2.114; अत्थि मे आवसथागारं, स. नि. 2(2).326; आवसथागारन्ति कुलघरस्स एकरस्मिं ठाने एकेकरस्सेव सुखनिवासस्थाय कतं वासागारं, स. नि. अड्ड. 3.146; - रं द्वि. वि., ए. व. - अधिवासो नो भन्ते भगवा आवसथागारंति, दी. नि. 2.66; - रे सप्त. वि., ए. व. - वसेय्याम एकरत्तं आवसथागारेति, पाचि. 29.

**आवसथानिसंस** पु., तत्पु. स., निवासस्थान का लाभ, वासस्थान का महत्त्व - सं द्वि. वि., ए. व. - सेक्खसुत्ते आवसथानिसंसं, घटिकारसुत्ते, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).57.

**आवसथानुमोदनकथा** स्त्री., तत्पु. स., निवासस्थान के प्रयोग के अनुमोदन का कथन - य तृ. वि., ए. व. - अज्जायपि पाळिमुत्ताय धम्मकथाय चेव आवसथानुमोदनकथाय च, उदा. अड्ड. 338.

**आवसन** नपुं., वासस्थान, आवास, घर - नं प्र. वि., ए. व. - आवासो आवसनं, थेरगा. अड्ड. 2.293.

**आवसित** त्रि., आ + वस का भू. क. कृ., आबाद किया हुआ वह स्थान जिसमें लोग बस गए हैं - पदेश पु., कर्म. स., आबाद किया हुआ प्रदेश, वह प्रदेश जिसमें लोग आकर बस गए हों - सो प्र. वि., ए. व. - आगतमनुस्सेहि आवसितपदेशो तायेव पुरिमसज्जाय ... लाभि, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).236; - क्खि पु., कर्म. स., वह कोख जिसके अन्दर प्राणी आकर बस गया हो, प्र. वि., ए. व.

## आवसेति

233

## आवाट

— बोधिसत्तेन वसितकृच्छि नाम चेति यगम्भसदिशा होति न सक्का अज्जेन सत्तेन आवसितुं वा परिभुज्जितुं वा, जा. अट्ठ. 1.62.

आवसेति आवसति के अन्तः, द्रष्टः.

आवह त्रि., [आवह], ले आने वाला, उत्पन्न करने वाला, कारणभूत, स. उ. प. के रूप में, अद्या, अत्था, अनत्था, अमता, अरियफला, अरियभावा, उपकारा, उपरिपासादा, एकन्तसुखा, एकन्तहितसुखा, चित्तसन्तिसुखा, आणा, दिट्ठमसुखा, दुक्खा, निब्बाना, पसादा, पासादातिसया, पीतिसुखा, पेतभवा, भोगा, मदा, रूपारूपभवा, वड्ढि, विम्हया, सग्गा, सच्चाभिसमया, सब्बकुसलगुणा, सब्बानत्था, सुखा, सत्तसुखा, हितसुखा, सब्बलोकहिता के अन्तः, द्रष्टः.

आवहति आ + वह का वर्तः, प्र. पु., ए. व. [आवहति], शा. अ. 1. ले आता है, उत्पन्न करता है, प्रदान करता है, निष्पादित करता है — किंमु सुचिण्णो सुखमावहति, स. नि. 1(1).49; आवहति आनेति देति अप्पेति, स. नि. अट्ठ. 1.286; 'सत्तानं देवूपपत्ति आवहती'ति, पे. व. अट्ठ. 6; सम्पज्जमाना पन तिरच्छानयोनिं आवहति, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).326; अब्बाहरति आवहति तं निष्पादेति, जा. अट्ठ. 5.76; — हाभि उ. पु., ए. व. — 'यत्थ जायायहं जारं आवहामि वहामि चा'ति, जा. अट्ठ. 3.79; — न्ति प्र. पु., ए. व. — यथा खिप्पं अरियमग्गं आवहन्ति, उदा. अट्ठ. 196; — हेय्य विधि, प्र. पु., ए. व. — अयं गङ्गानदी महत्तं फेणपिण्डं आवहेय्य, स. नि. 2(1).126; आवहेय्याति आहरेय्य, स. नि. अट्ठ. 2.282; आवहेय्य समावहेय्य आहरेय्य, महानि. 222; अज्जम्पि ते सा दुक्खमावहेय्या'ति, जा. अट्ठ. 4.43; सचेपि वातो गिरिमावहेय्य, जा. अट्ठ. 5.475; — य्युं ब. व. — अनत्थम्पि आवहेय्यु'न्ति, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.73; — हि अद्य, प्र. पु., ए. व. — 'इस्सानं दुक्खमावहती'ति, जा. अट्ठ. 4.188; — हिं उ. पु., ए. व. — मनसा पसादमावहिं अप. 1.5; — हिस्सति भवि, प्र. पु., ए. व. — 'सब्बापि पथवी तस्स न सुखं आवहिस्सती'ति, जा. अट्ठ. 3.145; — वाहेत्वा प्रेर., पू. का. कू., पकड़वा कर, निकलवा कर — कुण्ठं गङ्गाय आवाहेत्वा, जा. अट्ठ. 2.97; दड्ढसप्यं आवाहेत्वा, जा. अट्ठ. 1.297; — हिय्यसे कर्म, वा. म. पु., ए. व. — एसावहिय्यसे पब्बतेन, बहुकुटजसत्त्वकिकेन, थेरगा. अट्ठ. 1.247; भा. अ. 2. अपने घर की ओर अथवा अपनी ओर ले जाता है, ला.

अ., वधू को वर के घर में रहने हेतु ले जाता है, अपने पुत्र का विवाह करता है, विवाह में अपना पुत्र दे देता है — न्ति ब. व. — कुमारियो पवेच्छन्ति, विवाहन्तावहन्ति च, जा. अट्ठ. 4.326; अत्तनो धीतरो हिरज्जसुवण्णं गहेत्वा परेसं देन्ति, ते एवं परेसं ददमाना विवाहन्ति नाम, अत्तनो पुत्तानं अत्थाय गण्हमाना आवाहन्ति नाम, जा. अट्ठ. 4.329; द्रष्टः, आवाह, विलो., विवाह.

आवहत्त नपुं., आवह का भाव., केवल स. उ. प. में प्रयुक्त, उत्पादकत्व, निष्पादकत्व, कारणभूत होना, उत्पन्न करने वाला होना, अविष्पतिसारादिगुणा. — अविप्रतिसार आदि गुणों को लाने वाला होना — ता प. वि., ए. व. — तच्च कल्याणं अविष्पटिसारादिगुणावहत्ता, विसुद्धि. 1.5; अहिता. — अहितकारक होना — ता प. वि., ए. व. — कामा हि अहितावहत्ता मेत्ति या अभावेन अमित्ता, थेरीगा. अट्ठ. 267; इद्धिविधादिगुणा. — ऋद्धि-बल जैसे गुणों का लाने वाला होना — ता प. वि., ए. व. — सो च कल्याणो इद्धिविधादिगुणावहत्ता, विसुद्धि. 1.5.

आवहन त्रि., आ + वह से व्यु. [आवहन, नपुं.], सामने लाने वाला, उत्पन्न करने वाला, निष्पादित करने वाला — निं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — यदा दुक्खस्सावहनं विसत्तिकं, थेरगा. 519; तत्थ दुक्खस्सावहनेन्ति दुक्खस्स आयतिं पवत्ति, थेरगा. अट्ठ. 2.138; स. उ. प. में, पसंसा. — त्रि., प्रशंसा को लाने वाला अथवा यशकारक — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — पामुज्जकरणं तानं पसंसावहनं सुखं, सु. नि. 259; तादिभावा. — उस प्रकार की अवस्था को लाने वाला — वुत्तनयेन तादिभावावहन भावेन भावितं, उदा. अट्ठ. 200; स. पू. प. के रूप में, — क त्रि., निष्पादक, कारणभूत, लाने वाला — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अपरिमितसुखावहं सुखस्स आवहनकं, वि. व. अट्ठ. 91; — ता स्त्री., भाव., लाने वाला या उत्पादक होना, निष्पादकता, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, अत्था., अनत्था. के अन्तः, द्रष्टः. आवाट पु., [आवट], भूमि-विवर, छिद्र, गड्ढा, कुआं — थियं तु कासु आवाटो, अभि. प. 650; मतावाटो चयेकासु, अभि. प. 1125; कासूति रासिपि वुच्चति आवाटोपि, स. नि. अट्ठ. 2.98; कुसोभाति खुद्दक आवाट, महासोभाति महाआवाट, स. नि. अट्ठ. 2.48; नरकन्ति आवाटं, पे. व. अट्ठ. 196; — टो प्र. वि., ए. व. — गम्भीर आवाटो, स. नि. अट्ठ. 3.287; सरीरभन्तरं ... आवाटो आसीविसपूरो विय, जा. अट्ठ. 3.73; कप्पानं अन्तरे चाटिप्पमाणो आवाटो अहोसि,

## आवाटक

234

आवास

जा. अहु. 5.12; - टं द्वि. वि., ए. व. - *आवाटं खणीति अत्थो*, जा. अहु. 5.42; *आवाटं ओतरित्वा*, जा. अहु. 5.43; *चतुरस्सावाटं खणितुं आरभि*, जा. अहु. 4.41; - **स्स ष.** वि., ए. व. - *आवाटस्स उपरि उग्गन्त्वा ठिता भवेय्युं स.* नि. अहु. 3.331; - **टे<sup>1</sup>** सप्त. वि., ए. व. - *एकस्मिं आवाटे निपज्जि*, जा. अहु. 3.251; - **टे<sup>2</sup>** द्वि. वि., ब. व. - *गलप्पमाणे आवाटे खणित्वा*, जा. अहु. 1.256; *नाभिष्णमाणे आवाटे खणापेत्वा*, ध. प. अहु. 1.127; *अन्तो वापियं आवाटे पूरेय्य*, स. नि. अहु. 2.70; - **टेसु** सप्त. वि., ब. व. - *सब्बेपि आवाटेसु ओतारेत्वा*, जा. अहु. 1.256; *आवाटेसु येव उदकं सण्ठहेय्य*, स. नि. अहु. 2.70; *आवाटेसु मयं उदकं पिविसस्साम*, जा. अहु. 1.108; स. उ. प. के रूप में, **उदका-** पु., तत्पु. स., पानी भरा गड्ढा - **टेसु** सप्त. वि., ब. व. - *उदक आवाटेसु च पविडुमच्छे गण्हितुं न देन्ति*, पारा. अहु. 1.264; **खुदका-** छोटा गड्ढा - **टो** प्र. वि., ए. व. - *कुसुम्भोति खुदकआवाटो*, सद्. 2.407; **खुदा.**, चतुरस्सा., दीधिका., नरका. नरक का गड्ढा - **टे** सप्त. वि., ए. व. - *नरकावाटे पतितो भविस्सतीति*, जा. अहु. 4.240; **यज्जा-** यज्ञ के लिए निर्मित गड्ढा - **स्स ष.** वि., ए. व. - *यज्जवाटस्स खत्तिआ आनुयन्ता नेगमा*, दी. नि. 1. 126; **सोण्डि-** पहाड़ी या पर्वतीय तालाब - **टे** द्वि. वि., ए. व. - *पण्डरित्वा सोण्डिआवाटे पूरेत्वा*, स. नि. अहु. 1.247.

**आवाटक** पु./नपुं., आवाट + क से व्यु., उपरिवत् - **के** सप्त. वि., ए. व. - *पथवियं खणिते आवाटकं घटेहि आहरित्वा*, कट्ठा. अहु. 97; - **कादि** त्रि., गड्ढा इत्यादि - **दीसु** सप्त. वि., ब. व. - *गामद्वारे आवाटकादीसु पटिवसति*, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).319; स. उ. प. के रूप में, अक्खि., उदका., खुदका. के अन्त. द्रष्ट.

**आवाटतीर** नपुं., गड्ढे का किनारा, गड्ढे का प्रान्त भाग या एक कोना - **रे** सप्त. वि., ए. व. - *आवाटतीरे ठितो*, जा. अहु. 4.240; *खणनोकासं गन्त्वा आवाटतीरे उत्त्वा*, जा. अहु. 6.13; *आवाटतीरे एकं गुम्बं ओलोकेन्तो अट्ठासि*, ध. प. अहु. 2.177.

**आवाटधातुक** त्रि., ब. स., गड्ढे जैसा, गड्ढे की प्रकृति का - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तं ठानं आवाटधातुकं होति*, जा. अहु. 5.188.

**आवाटपुण्ण** त्रि., तत्पु. स., (पात्रों के) खोखले भाग को परिपूर्ण कर रहा - **ण्णं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *लुञ्चित्वावाटपुण्णं तं यूसं पतोहि आदिय*, म. वं. 28.26.

**आवाटमुखवट्ठि** स्त्री., गड्ढे का वर्तुलाकार मुख - **यं** सप्त. वि., ए. व. - *आवाटमुखवट्ठिय औलुब्ध*, जा. अहु. 1.256.

**आवाप** पु., [आवाप], मिट्टी के कच्चे वर्तनों को पकाने वाला आवा. कुम्हार का आवा - **पं** द्वि. वि., ए. व. - *कदा आवापं आलिम्पेस्ससीति पुच्छित्वा*, पटि. म. अहु. 2.272; - **पे** सप्त. वि., ए. व. - *आवापे पचेय्यासि*, ध. प. अहु. 1.103; *कुम्भकारो सेट्ठिना वुत्तनियामेनेव मारेत्वा आवापे खिपि*, ध. प. अहु. 1.103.

**आवापक** पु., आवाप से व्यु., [आवाप, अन्नपात्र], नाई के स्तुरा को रखने वाला पात्र, क्षुरभाण्ड - **केन** तृ. वि., ए. व. - *गच्छथ ... खुरभण्डं आदाय नाळियावापकेन अनुघरकं आहिण्डथ ... सहरथ*, महाव. 326; *नाळियावापकेनाति नाळिया च आवापकेन च आवापको नाम यत्थ लद्धं लद्धं आवपन्ति पक्खिपन्तीति वुत्तं होति*, महाव. अहु. 362.

**आवायिम/अवायिम** नपुं., झालरदार आसन या बिछावन - **मं** प्र. वि., ए. व. - *निरीदनं नाम सदसं वुच्चति अवायिमं*, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).58.

**आवार** पु., आ + वृ से व्यु., [आवार], सुरक्षा, रक्षक आच्छादन, केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, खन्धा., सकटा. के अन्त. द्रष्ट.; **खन्धा-** तत्पु. स. [स्कन्धावार], सेना की टुकड़ी का सुरक्षा कवच - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *बलकायो मग्गे खन्धावारं बन्धित्वा*, स. नि. अहु. 1.278.

**आवारयति/आवारेति** आ + वृ का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. बन्द कर देता है, रुकावट डाल देता है, बाधित कर देता है, - *मग्गं आवारयिस्सति पुरा पारिपूरि गच्छति*, ... *पुरा मग्गमावारयति*, नेत्ति. 81; - **तब्बं** सं. कृ., नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सकमुट्ठिना वा सो गङ्गाय सोतं आवारेतब्बं मज्जेय्य*, स. नि. 2(2).288.

**आवास** पु., आ + वस से व्यु., [आवास], 1. निवास करना, आ कर बस जाना, आ कर आबाद कर देना, रहना - **सो** प्र. वि., ए. व. - *सुचरितकम्महिं तदत्ते आयतिच्च सुखावासहेतुताय सुखविहारस्स आवासोति वुच्चति*, वि. व. अहु. 91; *पुन आवासो आवसनं इदानी मयं नत्थीति अत्थो*, थेरगा. अहु. 2.293; स. उ. प. के रूप में, **पुना.** - पुनर्जन्म, फिर से संसार बसाना - **सो** प्र. वि., ए. व. - *नत्थि दानि पुनावासो, देवकायस्मि जालिनि*, थेरगा. 908, 2. निवासस्थान, भवन, घर, बस्ती, आबादी - **सो** प्र. वि., ए. व. - *आवासो भवनं वेस्मं*, अभि. प. 206; *येहो घरञ्च आवासो भवनञ्च निकेतनन्ति*, सद्. 1.86; *गामो*

## आवास

235

## आवासदान

आवासो अनावासोति पुच्छि, जा. अष्ट. 2.63; आवासो च कुलं लाभो, गणो कम्मच्च पञ्चमं अद्धानं जाति आबाधो, गन्थो इद्धीति ते दसाति, विसुद्धि. 1.89; अभि. अव. 799; — सं<sup>१</sup> नपु., प्र. वि., ए. व. — “आवासं सिविसेदुस्स पेत्तिकं भवनं ममा”ति, जा. अष्ट. 7.270; समिद्धं देवनगरं, आवासं पुञ्जकम्मिनं, बु. वं. (पृ.) 294; आवासं पुञ्जकम्मिनन्ति आवसन्ति एत्थ पुञ्जकम्मिनो जनाति आवासो, बु. वं. अष्ट. 79; — सं<sup>२</sup> पु., द्वि. वि., ए. व. — पत्तत्थ आवासमिमं उल्लरं, जा. अष्ट. 4.146; अगच्छित्थ देवपुरं, आवासं पुञ्जकम्मिनन्ति, जा. अष्ट. 5.182; अत्तनो आवासमेव अगमासि, जा. अष्ट. 6.298; आवासं वा न लभामि, महानि. 157; ये न पस्सन्ति नन्दनं आवासं नरदेवानं, स. नि. 1(1).7; — सेन तृ. वि., ए. व. — “आवासेन सुद्धीति, म. नि. 1.116; आवासेन सुद्धीति बहू सु ठानेसु वसित्वा सुज्झन्तीति वदन्ति, म. नि. अष्ट. (पृ.प.) 1(1).363; — से सप्त. वि., ए. व. — अज्जतरस्मिं आवासे समागन्त्वा अज्जमज्जं सम्मोदित्वा, पे. व. अष्ट. 12; कुले गणे आवासे लाभे यसे, महानि. 7; — सा प्र. वि., ब. व. — विदित्तानि ते महाराज, आवासा पापकम्मिनं, जा. अष्ट. 6.149; पाठा. आवासं; — से द्वि. वि., ब. व. — निरये ताव पस्सामि, आवासे पापकम्मिनं, जा. अष्ट. 6.127; — सेहि तृ. वि., ए. व. — न किरत्थि रसेहि पापियो आवासेहि व सन्थवेहि वा, जा. अष्ट. 1.161; 3. भिक्षुओं का निवासस्थान, विहार, आराम, परिवेण — सो प्र. वि., ए. व. — आवासो नाम सकलारामोपि परिवेणाम्पि एकोवरकोपि रत्तिहानदिवाहानादीनिपि, घ. स. अष्ट. 398; दुड्डो, भन्ते, कीटागिरिस्मिं आवासो, चूळव. 23; आवासोति विहारो बुच्चति, पारा. अष्ट. 2.180; — सं द्वि. वि., ए. व. — अज्जतरं आवासं उपगच्छिं सु महाव. 117; धम्मोहि समन्नागतो आवासिको भिक्षु आवासं सोभेति, अ. नि. 2(1).243; अज्जेवाहं करिस्सामि आवासं वस फासुकं, दी. वं. 14.67; — साय च. वि., ए. व. — भिक्षून आवासाय परिसक्कति, अ. नि. 3(1).164; — सा प. वि., ए. व. — पक्कमतु भन्ते आयस्सा धम्मिको इमम्हा आवासा, अ. नि. 2(2).79; सो तम्हापि आवासा अज्जं आवासं गच्छति, महाव. 429; — स्स प. वि., ए. व. — आवासिको भिक्षु आवासस्स बहूपकारो होति, अ. नि. 2(1).243; — से सप्त. वि., ए. व. — असुकस्मिं नाम आवासे सद्धो विहरति, अ. नि. 1(2).195; तेन खो पन समयेन अज्जतरस्मिं आवासे ... सम्बहुला

भिक्षू विहरन्ति, महाव. 145; 148; — सा प्र. वि., ब. व. — इध पन भिक्षवे, सम्बहुला आवासा समानसीमा होन्ति, महाव. 136; चूळव. 470; — सेसु सप्त. वि., ब. व. — यंनूनाहं इमेसु द्वीसु आवासेसु वस्सं वसेय्यं, महाव. 202; सद्धिकेसु च आवासेसु, घ. प. अष्ट. 1.293; स. उ. प. के रूप में; अना., अन्तरा., अरज्जा., एका., कता., गब्भा., गामका., घना., घरा., छिद्दा., जरा., दया., दसा., दुरा., नवा., नागसता., पञ्चा., पापकम्मरता., पुना., भिन्ना., मनुस्सा., महा., रोगा., वस्सा., विवित्ता., सगारवा., सत्ता., सत्था., समग्गा., सुखाहेतुता., सुद्धा., सुरा. के अन्त. द्रष्ट.

आवासकप्प पु., [बौ. सं. आवासकल्प], एक ही सीमा के अन्तर्गत भिन्न भिन्न आवासों या विहारों में अलग अलग रूप में उपोसथ नामक संघकर्म का अनुष्ठान, वैशाली के वज्जिपुत्रीय भिक्षुओं द्वारा व्यवहार में अपनाई गई दस दिनय सम्बन्धी वस्तुओं (प्रक्रियाओं) में से एक — प्पो प्र. वि., ए. व. — कप्पति सिद्धिलोककप्पो, कप्पति द्वुल्लकप्पो, कप्पति गामन्तरकप्पो, कप्पति आवासकप्पो, कप्पति अनुमतिकप्पो, कप्पति आचिण्णकप्पो, कप्पति अमथित कप्पो, कप्पति जलोगिं पातुं, कप्पेति अदसक निसीदनं, कप्पति जातरूपरजतन्ति, चूळव. 463; को सो, आवुसो, आवासकप्पोति, चूळव. 470; 477.

आवासगत त्रि., निवासस्थान गया हुआ, (किसी की) धर पकड़ का विषय बन चुका — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आवासगतो मारस्स, स. नि. 2(2).98; आवासगतोति वसन्तद्धानं गतो, स. नि. अष्ट. 3.33.

आवासजग्गनक त्रि., आवास की देखरेख करने वाला — को प्र. वि., ए. व. — आवासिकोति आवासजग्गनको, जा. अष्ट. 4.277; चरिया. अष्ट. 187.

आवासता स्त्री., आवास का भाव., स. उ. प. में ही प्रयुक्त, दीघा.- लम्बे समय तक आवास (संसार) में बने रहने (लिप्त होने) की अवस्था — य तृ. वि., ए. व. — दीघावासताय निच्चादिसभावं भवविमोक्खं मज्जन्ति, उदा. अष्ट. 171.

आवासदान नपु., तत्पु. स. [आवासदान], भिक्षुओं के निवासहेतु निवासस्थान का दान — नं प्र. वि., ए. व. — आवासदानं नामेतं, महाराज, महन्तं ... आवासो मया परिभुत्तो, स. नि. अष्ट. 3.91; म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.19; — स्मिं/ने सप्त. वि., ए. व. — आवासदानस्मिद्धि दिन्ने

## आवासदेसना

236

आवाससङ्ग

सब्बदानं दिन्नमेव होति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.19; आवासदाने आनिससं सत्तकखेत्वा इसिपतने महाविहारे ... ध. प. अट्ठ. 2.170.

**आवासदेसना** स्त्री., निवासस्थान के विषय में उपदेश, स. उ. प. के रूप में, सत्ता. प्राणियों के आवासों के विषय में उपदेश, प्र. वि., ए. व. — नव सत्तावासदेसना, उदा. अट्ठ. 273.

**आवासपरम्परा** स्त्री., तत्पु. स., शा. अ., आवासों की कतार, आवासों की शृंखला, ला. अ., प्रत्येक आवास (विहार), एक एक आवास में, सभी भिक्षु-आवास — रं द्वि. वि., ए. व. — आवासपरम्परञ्च, भिक्षुवे, संस्थ, चूळव. 46; ... आवासपरम्परञ्च भिक्षुवे संस्थाति सब्बावासेसु आरोवेथ, चूळव. अट्ठ. 5.

**आवासपलिगेधी** त्रि., आवास के विषय में अत्यधिक लालची या लोभी — धी पु., प्र. वि., ए. व. — पञ्चहि धम्मोहि समन्नागतो आवासिको ... न आवासमच्छरी होति न आवासपलिगेधी, अ. नि. 2(1).245; सत्तमे आवासपलिगेधीति आवासं बलवगिद्विवसेन गिलित्वा विय तितो, अ. नि. अट्ठ. 3.85.

**आवासपलिबोध** पु., तत्पु. स., बाधा के रूप में आवास, कठिनचीवर के सन्दर्भ में आवास से सम्बन्धित बाधा, सोलह प्रकार के पळिबोधों में से एक, आवास-विषयिणी बाधा — धो प्र. वि., ए. व. — आवासोयेव आवासपलिबोधो, विसुद्धि. 1.89; द्वे कथिनस्स पलिबोधो ? ... आवासपलिबोधो च चीवरपलिबोधो च, महाव. 352; परि. 239; चीवरपलिबोधो पठमं छिज्जति, तस्स सह वहिसीमगमना, आवासपलिबोधो छिज्जति, परि. 334; पठमं चीवरपलिबोधो छिज्जति, पच्छा आवासपलिबोधो, महाव. अट्ठ. 370; स. उ. प. के रूप में, घरा. — पु., घर में बसने की बाधा, गृहस्थ जीवन की बाधा या रुकावट — धं द्वि. वि., ए. व. — सब्बं घरावासपलिबोधं छिन्दित्वा ... पब्बजासङ्घातेन एकच्चरियं दळ्हं करेय्य?, महानि. 114.

**आवासपाळि** स्त्री., तत्पु. स. [आवासपालि], आवासों की पक्ति, निवासस्थानों की कतार, बहुत सारे भिक्षुआवास या विहार, प्र. वि., ए. व. — आवासपालि ब्याधानं तदा आसि निवेसिता, म. व. 10.95.

**आवासभूत** त्रि., आवास अथवा निवासस्थान बन चुका, बसा दिया गया, आबाद कर दिया गया — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तेसं पुञ्जकम्मिनं आवासभूतन्ति अत्थो, बु. वं. अट्ठ.

79; — ते सप्त. वि., ए. व. — सिखायमाने आवासभूते, सट्ठ. 1.249.

**आवासमच्छरिय** नपुं., तत्पु. स. [आवासमात्सर्य], आवास के विषय में मात्सर्य, आवास से सम्बन्धित तुच्छ एवं स्वार्थभरी चित्तवृत्ति, पांच प्रकार के मात्सर्यों में प्रथम — यं प्र. वि., ए. व. — आवासे मच्छरियं आवासहेतुकं वा मच्छरियं आवासमच्छरियं, विसुद्धि. महाटी. 2.466; — यानि ब. व. — पञ्च मच्छरियानि — आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं, दी. नि. 3.187; महानि. 26, 93, 165; मच्छरियानीति आवासमच्छरियं कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं धम्ममच्छरियं वण्णमच्छरियन्ति इमासु आवासादीसु अज्जेसं साधारणभावं असहनाकारेण पवत्तानि पञ्च मच्छरियानि, विसुद्धि. 2.321; — येन तृ. वि., ए. व. — आवासमच्छरियेन पनेत्थ यक्खो वा पेत्तो वा हुत्वा, दी. नि. अट्ठ. 2.279; अपिच आवासमच्छरियेन लोहगेहे पच्चति, दी. नि. अट्ठ. 2.279; — स्स ष. वि., ए. व. — आवासमच्छरियस्स पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सति, अ. नि. 2(1).254.

**आवासमच्छरी** त्रि., आवास के विषय में कृपणवृत्ति अथवा मात्सर्यभरी मनोवृत्ति रखने वाला, आवास के प्रति लालची अथवा "आवास में केवल मैं रहूँ, दूसरे न रहें", इस प्रकार की स्वार्थभरी प्रवृत्ति वाला — री पु., प्र. वि., ए. व. — न आवासमच्छरी होति, न कुलमच्छरी होति, अ. नि. 2(1).238; — रिनी स्त्री., प्र. वि., ए. व. — न आवासमच्छरिनी होति, अ. नि. 2(1).130; पञ्चमे आवासमच्छरिनीति आवासं मच्छरायति, तत्थ अज्जेसं वासं न सहति, अ. नि. अट्ठ. 3.46.

**आवासलोभ** पु., तत्पु. स. [आवासलोभ], निवासस्थान के प्रति लोभ — मेन तृ. वि., ए. व. — मया सीलवन्तो कल्याणधम्मा भिक्खू आवासलोभेन परिभिन्ना, पे. व. अट्ठ. 12.

**आवासवत्त** नपुं., विहार (आवास) में नियमित निवास करने वाले भिक्षुओं द्वारा पालनीय नियम — तं द्वि. वि., ए. व. — आवासवत्तमावासी, अकरोन्तोव दोसवा, उक्त. वि. 555.

**आवाससङ्ग** पु., तत्पु. स., आवासविषयक आसक्ति, स्थायी आवास के साथ मन का लगाव — ज्जेन तृ. वि., ए. व. — निबद्धवासो च आवाससङ्गेन होति, सो च दुक्खो, सु. नि. अट्ठ. 1.28.

## आवाससम्पाय

237

## आवाह

आवाससम्पाय पु., [बौ. सं. आवास-साम्प्रैय], हितकर अथवा उपयुक्त आवास, विनय-नियमों के अनुरूप आवास, स. प. के अन्त., — आवाससम्पाय उत्तुसम्पाय भोजनसम्पाय ... आदीनि आसेवन्तो अन्तरन्तरा समापत्तिं समापज्जित्वा, घ. प. अहु. 1.180; — ता स्त्री., भाव., आवास की हितकरता, आवास की उपयुक्तता — य तु. वि., ए. व. — आवाससम्पायताय हि तम्बपण्णिदीपम्हि चूळनागलेणे ... पञ्चसता भिक्खू अरहतं पापुणिसु, विसुद्धि. 1.124.

आवाससामिक पु., तत्पु. स., आवास का स्वामी, निवासस्थान का मालिक — का प्र. वि., ब. व. — सचे आवाससामिका नत्थि ..., स. नि. अहु. 3.144.

आवासानिसंसकथा स्त्री., तत्पु. स., आवास के (दान से प्राप्त) पुण्य अथवा लाभ का कथन — थं द्वि. वि., ए. व. — आवासे आनिसंसो, अयम्पि आनिसंसोति बहुदेवरत्तिं अतिरेकतरं दिव्यद्वयामं आवासानिसंसकथं कथेसि, म. नि. अहु. (म.प.) 2.19-20; स. नि. अहु. 3.92.

आवासापेति आ + वस का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., वसा देता है, आवसति के अन्त., द्रष्ट.

आवासिक त्रि., आवास से व्यु. [आवासिक], शा. अ., आकर बस जाने वाला, अपने निर्धारित आवास (विहार) में रहने वाला, ला. अ., अपने विहार में नियमित रूप से निवास कर रहा भिक्षु, विहार का नियमित निवासी भिक्षु — को पु., प्र. वि., ए. व. — आयस्मा सुधम्मो मच्छिकासण्डे चित्तस्स गहपतिनो आवासिको होति, चूळव. 35; आवासिको होतु महाविहारे, जा. अहु. 4.276; आवासिकोति भारहारा नवे आवासे समुद्वापेति, पुराणे पटिजग्गति, अ. नि. अहु. 2.212; नो आवासिको, अत्थापत्ति आवासिको आपज्जति, परि. 250; पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु, परि. 376; — स्स च. वि., ए. व. — असादियन्ता आवासिकस्स देथाति, स. नि. अहु. 1.191; — का पु., प्र. वि., ब. व. — आवासिका होन्तीति एत्थ आवासो एतेसं अत्थीति आवासिका, पारा. अहु. 2.180; कथञ्चि नाम आवासिका भिक्खू उपोसथागारं न सम्मज्जिस्सन्तीति, महाव. 147; गामकावासे आवासिका भिक्खू उपडुता होन्ति, चूळव. 299; अस्सजिपुनब्बसुका नाम भिक्खू कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति, म. नि. 2.148; द्वे जना कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.133; — के द्वि. वि., ब. व. — बुद्धतरपे आवासिके भिक्खू न अभिवादेन्ति,

चूळव. 349; — कानं ष. वि., ब. व. — आवासिकानं भिक्खून् चातुहसो होति, महाव. 172; आवासिकानं भिक्खून् वत्तं पञ्जपेस्सामि, चूळव. 352; — निमित्त नपुं., विहारवासी भिक्षु होने का चिह्न — तं द्वि. वि., ए. व. — आगन्तुका भिक्खू पस्सन्ति आवासिकानं भिक्खून् आवासिकाकारं, आवासिकलिङ्गं, आवासिकनिमित्तं, आवासिकुद्देसं ... पस्सित्वा वेमतिका होन्ति, महाव. 173; — काकार पु., आवासिक भिक्षु होने का आकार-प्रकार — रं द्वि. वि., ए. व. — आगन्तुका भिक्खू पस्सन्ति आवासिकानं भिक्खून् आवासिकाकारं, आवासिकलिङ्गं, आवासिकनिमित्तं, आवासिकुद्देसं ... पस्सित्वा वेमतिका होन्ति, महाव. 173.

आवासिकवग्ग पु., परि. के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, जिसमें आवासिक भिक्षुओं से सम्बद्ध विनय के विषय संगृहीत हैं, परि. 376-378; — ग्गे सप्त. वि., ए. व. — आवासिकवग्गे — यथाभतं निक्खित्तोति यथा आहरित्वा ठपितो, परि. अहु. 227.

आवासिकवत्त नपुं., आवासिक भिक्षुओं द्वारा पालनीय नियम — ते सप्त. वि., ए. व. — आवासिकवत्ते आसनं पञ्जपेतब्बन्ति एवमादि सब्बं बुद्धतरं आगते चीवरकम्मं वा नवकम्मं वा ठपेत्वापि कातब्बं, चूळव. अहु. 116.

आवासिकवत्तकथा स्त्री., चूळव. के वत्तखन्धक की दूसरी कथा का शीर्षक, जिसमें विहार में स्थायीरूप से रहने वाले आवासिक भिक्षुओं के कर्तव्यों का विवरण संगृहीत है, चूळव. 352-353; चूळव. अहु. 116.

आवासिकसङ्गत्थेर पु., विहार में नियमित वास करने वाले आवासिक भिक्षुओं में सबसे वरिष्ठ एवं प्रमुख स्थविर — रो प्र. वि., ए. व. — जिण्णमहाविहारे आवासिकसङ्गत्थेरो हुत्वा ..., जा. अहु. 4.277.

आवासु/आपासु नियमित आवास का अप., आपदा का सप्त. वि., ब. व. — आपासु ब्यसन् पत्तो, जा. अहु. 3.9; आवासु किच्चेसु च नं जहन्ति, जा. अहु. 5.442; 445; आवासूति आपदासु, जा. अहु. 5.443.

आवाह पु./नपुं., [आवाह], विवाह का वह स्वरूप जिसमें वधू को वर के घर में ले आया जाता है तथा अपने पुत्र को विवाह-हेतु सौंप दिया जाता है, कन्या-ग्रहण-पद्धति वाला विवाह-संस्कार — हो प्र. वि., ए. व. — आवाहोति कज्जागहणं विवाहोतिकज्जादानं, म. नि. अहु. (म.प.) 2.282; आवाहादीसु आवाहोति दारकस्स परकुलतो दारिकाय



## आवाहक

238

आवि

आहरणं, पारा. अट्ट. 2.126; इमस्स गहपतिस्स आवाहो वा भविस्सति, विवाहो वा भविस्सति, चूळव. 282; आवाहो वा होति, विवाहो वा होति, दी. नि. 1.86; — हं द्वि. वि., ए. व. — यसोपिस्स महा अहोसि, आवाहमस्स कातुं वट्टतीति, जा. अट्ट. 6.192; सो चतुत्रं पुत्तानं आवाहं कत्वा चत्तारि सतसहस्सानि अदासि, स. नि. अट्ट. 1.229; ध. प. अट्ट. 2.286; मातापितरो आवाहं कत्वा, ध. प. अट्ट. 2.151; आवाहं ते करिस्सामा, ध. प. अट्ट. 2.164; साधूति सम्पटिच्छते दिवसं ठपेत्वा आवाहं करिस्सु, ध. प. अट्ट. 2.170; — हानि द्वि. वि., ब. व. — एतेनेव उपायेन आवाहानिपि कारापेति, विवाहानिपि कारापेति, वारेय्यानपि कारापेति, पारा. 200; द्रष्ट. विलो. विवाह के अन्तः.

**आवाहक** त्रि., आ + वृह से व्यु. [आवाहक], शा. अ., आवहन करने वाला, ले आने वाला, ला. अ., कन्या को पुत्र के लिए ग्रहण कर वर के घर लाने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — आवाहविवाहकानन्ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा, दी. नि. अट्ट. 3.117.

**आवाहन** नपुं., आ + वृह से व्यु., क्रि. ना., कन्या को वर के घर ले आना, वर के लिए कन्या का ग्रहण एवं वर के घर ले आना, विवाह का ही एक प्राचीन स्वरूप — नं प्र. वि., ए. व. — आवाहनं विवाहनं संवरणं विवरणं संकिरणं, विकिरणं, दी. नि. 1.10; 61; असुकनक्खत्तेन दारिकं आनेथाति आवाहकरणं, दी. नि. अट्ट. 1.85.

**आवाहमङ्गल** नपुं., तत्पु. स., विवाह का मांगलिक पर्व, विवाह का मङ्गलमय उत्सव — लं प्र. वि., ए. व. — अभरणमङ्गलं अभिसेकमङ्गलं आवाहमङ्गलन्ति तीणि मङ्गलानि अकंसु, सु. नि. अट्ट. 1.227; — लं द्वि. वि., ए. व. — मियारसेड्डिपि पुत्तस्स आवाहमङ्गलं करोन्तो ..., ध. प. अट्ट. 1.223; — ले सप्त. वि., ए. व. — आवाहमङ्गले तत्थ सत्ताहं उरस्सवो महा, म. वं. 7.34.

**आवाहयुक्त** त्रि., विवाह के लिए उपयुक्त, विवाह करने योग्य — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — अनावहन्ति न आवाहयुक्तं, दी. नि. अट्ट. 3.136.

**आवाहविवाह** पु./नपुं., द्व. स. [आवाहविवाह], 1. विवाह के प्राचीन काल के दोनों स्वरूप, क. वह विवाह जिसमें वधू को ग्रहण कर वर के घर लाया जाता था, ख. वह विवाह जिसमें वधू का कन्यादान किया जाता था, 2. विवाहोत्सव, 3. वर एवं वधू का आपस में विवाह — आवाहोति कज्जागहणं विवाहोति कज्जादानं, म. नि. अट्ट.

(म.प.) 2.282; — हं द्वि. वि., ए. व. — तेसं आवाहविवाहं करिस्सामाति, जा. अट्ट. 6.86; तेसं अनिच्छमानानञ्जेय अज्जमज्जं आवाहविवाहं करिस्सु, जा. अट्ट. 4.21; चरिया. अट्ट. 233; तादिसं काले तं आनेत्वा आवाहविवाहं अकंसु, वि. व. अट्ट. 87; — क त्रि., आवाह करने वाला एवं विवाह करने वाला, अपने पुत्र को अथवा अपनी पुत्री को विवाह में देने वाला — कानं पु., ष. वि., ब. व. — आवाहविवाहकान अपत्थितो, दी. नि. 3.139; आवाहविवाहकानन्ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा ..., दी. नि. अट्ट. 3.117.

**आवाहविवाहविनिबद्ध** त्रि., शा. अ., विवाह-सम्बन्ध द्वारा एक दूसरे के साथ जुड़े हुए, ला. अ., एक दूसरे के साथ गहराई के साथ जुड़े हुए — द्वा पु., प्र. वि., ब. व. — ये हि केचि ... आवाहविवाहविनिबद्धा वा ..., दी. नि. 1.86.

**आवाहविवाहसम्बन्ध** पु., विवाह द्वारा आपस में सम्बन्ध, घनिष्ट सम्बन्ध, परस्पर-सम्बन्ध, दो व्यक्तियों के बीच उपयुक्त सम्बन्ध — धो प्र. वि., ए. व. — आवाहविवाहसम्बन्धो नाम मय्हञ्च तथा तुय्हञ्च मया सद्वि पतिरूपो, जा. अट्ट. 1.432; कस्सपकोण्डज्जानञ्च अज्जमज्जं आवाहविवाहसम्बन्धो अत्थि, जा. अट्ट. 2.299; — घं द्वि. वि., ए. व. — विवाहन्ति आवाहविवाहसम्बन्धं, जा. अट्ट. 3.413.

**आवाहेति** आ + वृह का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., ले आने हेतु प्रेरित करता है, विवाह कराता है, आवहति के अन्तः, द्रष्ट.

**आवि / आवी / आविं** अ., निपा. [आवि.], एक दम सुस्पष्ट, पूरी तरह से साफ सुथरा, आखों के सामने, प्रत्यक्ष रूप में, खुले रूप में — थावि पातु च, अभि. प. 1149; सम्मुखा त्वावि पातु च, अभि. प. 1157; 2 रूपों में प्रयोग में प्राप्त, 1. विलो. 'रहो' (छिपे रूप में, पीछे) के साथ, आंखों के सामने, पीछे, छिपे रूप में, प्रकट रूप में अथवा गुप्त रूप में — आवी रहोति सम्मुखा च परम्मुखा च, जा. अट्ट. 3.231; आवी रहो वापि मनोपदोसं नाहं सरे जातु मलीनसत्ते, जा. अट्ट. 5.26; माकासि पापकं कम्मं, आवि वा यदि वा रहो, स. नि. 1(1).241; आवि वा परेसं पाकटभाववसेन अप्पटिच्छन्नं कत्वा, उदा. अट्ट. 240; 2. वर एवं वधू के साथ स. प. के रूप में प्रयुक्त, क. वर के साथ, प्रकट करता है, सुप्रकाशित कर देता है, प्रयोग आगे द्रष्ट.; ख. वधू के साथ, प्रकट अथवा प्रकाशित होता है, प्रयोग द्रष्ट. आगे.

## आविकत

239

## आविज्झति

**आविकत** त्रि., आवि + √कर का भू. क. कृ. [आविष्कृत]. पूरी तरह सुस्पष्ट कर दिया गया, सुप्रकाशित, अच्छी तरह से अभिव्यक्त — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — न च नो केवलं परिपूर्णं ब्रह्मचरियं आविकतं होति उत्तानीकतं, दी. नि. 3.90; वृत्तता तदाकारसन्निधानं एवंसदेन आविकतं, उदा. अ. 8; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — 'आविकता हिस्स फासु होती'ति, महाव. 131; थेरगा. अ. 2.100; दिट्ठि आविकता होति, परि. अ. 222.

**आविकतु** पु., [आविष्कर्तृ], सुस्पष्ट करने वाला, प्रकाशित करने वाला, सभी के सामने प्रकाश में लाने वाला उद्घाटित करने वाला — त्ता प्र. वि., ए. व. — यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता सत्थरि वा विज्जूसु वा सब्रह्मचारीसु, दी. नि. 3.189; यानि खो पनस्स होन्ति साठेय्यानि कूटेय्यानि जिम्हेय्यानि वड्ढेय्यानि, तानि यथाभूतं सारथिस्स आविकत्ता होति, अ. नि. 3(1).32; यथाभूतं आबाधं नाविकत्ता होति, महाव. 394; अ. नि. 2(1).135.

**आविकम्म** नपुं., [आविष्करण], प्रकाशन, उद्घाटन, सुस्पष्टीकरण — म्म प्र. वि., ए. व. — गुहस्स हि गुहमेव साधु, न हि गुहस्स पसत्थमाविकम्म, जा. अ. 6.211; 217; स. उ. प. के रूप में, अना., दिट्ठा., दुब्बल्ला. के अन्त. दष्ट.

**आविकरण** नपुं., [आविष्करण], सुस्पष्ट करना, भली भांति व्याख्या करना, पूरी तरह से खुलासा करना — णत्थं क्रि. वि., सुस्पष्ट करने हेतु — तस्स लद्धिया आविकरणत्थं एकं कारणं आहरितुं इदमारब्धं, दी. नि. अ. 1.254.

**आविकरोति** आवि + √कर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आविष्करोति], क. सुस्पष्ट करता है, साफ तौर पर बतलाता है, उद्घोषित करता है, कहता है — मि उ. पु., ए. व. — ते आविकरोमि सखिपुट्ठो, सु. नि. 84; सत्तम्यत्थे च तुहं चस्स आविकरोमि, क. व्या. 279; — हि अनु., म. पु., ए. व. — त्वं आविकरोहि भूमिपाल, जा. अ. 6.209; अथ मे आविकरोहि मग्गदूसि, सु. नि. 85; — न्तो वर्त. कृ. पु., प्र. वि., ए. व. — भगवा पुग्गलानं नागयोनीहि उद्धरणत्थं नागयोनीयो आविकरोन्तो इमं सुत्तमाह, स. नि. अ. 2.312; — न्ती स्त्री., प्र. वि., ए. व. — एवं थेरेन पुच्छिता सा देवता अत्तानं आविकरोन्ती, वि. व. अ. 63; ख. भावों को अभिव्यक्त करता है अथवा प्रकट करता है — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — कुद्धोपि सो नाविकरोति कोपं, जा. अ. 7.148; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. —

धम्मदेसनं सुत्वा पसन्नो पसादं आविकरोन्तो, स. नि. अ. 1.120; ग. रहस्य को उद्घाटित करता है, अपराध या पाप को स्वीकारता है — रोहि अनु., म. पु., ए. व. — विपस्सिनं जानमुपागमुम्हा परिसासु नो आविकरोहि कप्पं, सु. नि. 351; सु. नि. अ. 2.74; नियोधकप्पं आविकरोहि पकासेही'ति, थेरगा. अ. 2.450; — रेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — आविकरेय्य गुहमत्थं, जा. अ. 6.209; यस्स सिया आपति सो आविकरेय्य, महाव. 130; सो आविकरेय्याति सो देसेय्य, सो विवरेय्य, महाव. 131; — कातब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. — आविकरणं युत्तं आविकातब्बं, म. नि. अ. (म.प.) 2.93; — तब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सन्ती आपति आविकातब्बा, महाव. 131; — कारापेत्वा प्रेर., पू. का. कृ., पाप या अपराध का स्वीकरण करवा कर — अत्तेकिच्छो नाम आविकारापेत्वा विस्सज्जेतब्बो'ति, चूळव. अ. 27; घ. 'अत्तानं' के साथ प्रयुक्त रहने पर, आत्मान्वेषण करता है, स्वयं को खोजता है — रोन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — थेरस्स अत्तानं आविकरोन्तो कामरागेनाति आदिमाह, स. नि. अ. 1.239; — न्तं पु., द्वि. वि., ए. व. — एवं अत्तानमाविकरोन्तं भगवन्तं दिस्वा, थेरगा. अ. 2.262; ङ. 'दिट्ठि' के साथ प्रयुक्त होने पर, अपनी दृष्टि को बतलाता है या प्रकट करता है — ति वर्त., प्र. पु., ए. व. — अनापत्तिया दिट्ठिं आवि करोति, परि. 347; 348; गरुकापत्तिया दिट्ठिं आविकरोति, परि. अ. 222.

**आविज्झति / आविज्जति / आविज्जति / आविज्जति** व्यु., संदिग्ध, संभवतः आ + √विघ एवं आ + √विच अथवा आ + √विजि के परस्पर व्यामिश्रण के फलस्वरूप अनेक रूपों में उपलब्ध [आविध्यति, भिन्नार्थक], क. गोल चक्कर में घूमता है या घुमाता है, चक्कर काटता है, चारों ओर चक्कर लगाता है, चक्राकार रूप में घूमता है, चक्राकार गति को प्राप्त करता है, चारों ओर से घेर लेता है, अपने अन्दर समाहित कर लेता है — ज्जति वर्त., प्र. पु., ए. व. — ... सो नागो रत्तिं तं सधातुकट्ठानं अनुपरियाति आविज्जतीति अत्थो, म. वं. टी. 342; — ज्जन्ति ब. व. — आविज्जन्ति च चेतानि सम्बोधिं परिवारिता, दी. वं. 16.26; अथ नं पादे गहेत्वा आविज्जन्ति, अ. नि. अ. 2.3; — ज्जेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. — गाविं तरुणवच्चं विसाणतो आविज्जेय्य, ... उदकं कलसे आसिञ्चित्वा मत्थेन आविज्जेय्य, म. नि. 3.181; —

## आविच्छति

240

## आविञ्जन

माना वर्त. कृ., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ... एकं धम्मं हत्थेन गहेत्वा तं आविच्छमानाव समणधम्मं करोति, ध. प. अहु. 1.398; - जिज्ज / छि अद्य., प्र. पु., ए. व. - ... तिक्खन्तुं दीपं आविज्जि, पारा. अहु. 1.62; आविज्जीति समन्ततो विचरि सारथ. टी. 1.156; ... एकं मत्तिकापिण्डं चक्के ठपेत्वा चक्कं आविच्छि, जा. अहु. 5.281; - जिज्जतुं निमि. कृ. - ... आविज्जितुं न सक्का होति, पारा. अहु. 2.141; आविज्जितुं न सक्का होतीति छिन्द तटादिसम्भवतो न सक्का होति आविज्जितुं, सारथ. टी. 2.296; - जिज्जत्वा पू. का. कृ. - तत्थपि चित्तस्सादं अलभमानो अन्तन्तेन आविज्जित्वा आरामपच्चन्ते ... पासाणफलके निसीदि, दी. नि. अहु. 3.10; "सुद्ध ताताति बोधिसत्तो पोकखरणिं आविज्जित्वा पदं परिच्छिन्दन्तो ओत्तिण्णमेव पस्मि, जा. अहु. 1.171-172; सौ ता आविज्जित्वा मज्झिमसूकरियो ता आविज्जित्वा पोतकरूकरे ते आविज्जित्वा जरसूकरे ..., जा. अहु. 2.333; "खेतं पन आविज्जित्वा पण्णसज्जं बन्धन्तुं ति, जा. अहु. 1.156; ख. प्रवृत्त करता है, समीप में जा पहुंचता है, आश्रय ग्रहण कर लेता है, अपनी ओर खींच लेता है - ज्छति वर्त., प्र. पु., ए. व. - तं चक्खु आविज्जति मनापियेसु रूपेसु, स. नि. 2(2).197; - ज्छेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - कुक्कुरो आविज्छेय्य गामं पवेक्खामीति, स. नि. 2(2).197; - ज्छेय्युं व. व. - अथ खो, ते भिक्खवे, छप्पाणका नानाविसया नानागोचरा सकं सकं गोचरविसयं आविज्छेय्युं, स. नि. 2(2).196-197; - ज्जन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - ब्राह्मणो तस्स कालकिरियतो पट्ठाय सुसानं गत्वा छारिकपुज्जं आविज्जन्तो परिदेवति, जा. अहु. 4.54; - जिज्जत्वा पू. का. कृ. - यस्मा पनेतं नगरं बहि आविज्जित्वा जातेन हत्थि अस्सादीनं घासतिणेन चैव गेहच्छादनतिणेन च सम्पन्नं, दी. नि. अहु. 1.199; ग. नियन्त्रित अथवा सुव्यवस्थित कर लेता है, अपने वश में कर लेता है - ज्छेय्यासि विधि., म. पु., ए. व. - ततो त्वं, मोग्गल्लान, उभो कण्णसोतानि आविज्छेय्यासि, अ. नि. 2(2).225.

आविच्छति<sup>2</sup> आ + विच्छ से व्यु., अपनी ओर खींचता है या घसीटता है, आकर्षित होता है, आकर्षित करता है, वर्त., प्र. पु., ए. व. - यस्स कस्सचि भिक्खुनो कायगतासति अभाविता अबहुलीकता, तं चक्खु आविज्जति ... मनो आविज्जति मनापियेसु धम्मेषु, स. नि. 2(2).197; यस्मिं यस्मिं द्वारे आरम्भणं बलवं होति तं तं आयतनं तस्मिं तस्मिं

आरम्भणे आविज्जति, स. नि. अहु. 3.108; तं चक्खु नाविज्जतीति, स. नि. अहु. 3.109; - न्ति व. व. - आविज्जन्तीति आकङ्कन्ति, सारथ. टी. 1.298; - ज्छेय्य / ज्छेय्युं विधि., प्र. पु., ए. व. - ते छप्पाणका नानाविसया नानागोचरा सकं सकं गोचरविसयं आविज्छेय्युं - अहि आविज्छेय्य, वम्मिकं पवेक्खामीति सुसुमारो आविज्छेय्य उदकं पवेक्खामीति, स. नि. 2(2).197; आविज्छेय्युन्ति आकङ्क्युं, स. नि. अहु. 3.107; गावि तरुणवच्चं विसाणतो आविज्छेय्य ..., म. नि. 3.181; - ज्छेय्यासि म. पु., ए. व. - उभो कण्णसोतानि आविज्छेय्यासि, अ. नि. 2(2).225; - विज्छेय्याम उ. पु., ब. व. - योयुगेहि आविज्छेय्यामाति, दी. नि. 3.15; आविज्छेय्यामाति आकङ्क्य्याम, दी. नि. अहु. 3.10; - जिज्ज अद्य., प्र. पु., ए. व. - भिक्खु इत्थिया गहितं रज्जुं सारतो आविज्जि, पारा. 187; - जिज्जत्वा पू. का. कृ. - आविज्जित्वा आविज्जित्वाति अत्थो, सु. नि. अहु. 2.182.

आविञ्जन / आविञ्चन / आविञ्चना नपुं. / स्त्री., आ + विध से व्यु., क्रि. ना., शा. अ., अन्दर तक जाकर बेध देना, अपनी ओर खींचना या घसीट कर ले आना, आकर्षित करना, ला. अ., चारों ओर चक्र के आकार में घूमना, चक्कर काटना, दिलाई के साथ लटकना - ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आकङ्कना नाम आविञ्चना, पारा. 174; - ने सप्त. वि., ए. व. - राजा आविञ्चने बन्धं कुञ्चिकमुद्धिकं गण्धि, दी. नि. अहु. 2.184; - छिद् नपुं., तत्पु. स., द्वार के किवाड़ों पर बनाया गया वह छिद्र जिसमें अन्दर की ओर डोरी डालकर अन्दर की सितकनी को खोला अथवा बन्द किया जा सके - इ नपुं., प्र. वि., ए. व. - आविञ्चनछिदन्ति यत्थ अब्हुलिं वा रज्जुसङ्कलिकादिं वा पवेसेत्वा कवाटं आकङ्कन्ता द्वारबाहं फुसापेन्ति, तस्सेतं अधिवचनं, वि. वि. टी. 2.224; आविञ्चनछिदन्ति यत्थ अब्हुलिं पवेसेत्वा द्वारं आकङ्कन्ता द्वारबाहं फुसापेन्ति, तस्सेतं अधिवचनं, सारथ. टी. 3.357; - रज्जु स्त्री., तत्पु. स., खींचने वाली रस्सी, द्वार को खोलने एवं बन्द करने हेतु प्रयुक्त द्वार के बाहर लटक रही डोरी - ज्जुं द्वि. वि., ए. व. - अनुजानामि, भिक्खवे, कवाटं ... आविञ्चनरज्जुन्ति, चूळव. 239; ... आविञ्चनरज्जुन्ति एत्थ रज्जु नाम सचेपि दीपिण्डुड्डेन कता होति, चूळव. अहु. 59; आविञ्चनरज्जुन्ति कवाटयेव छिद् कत्वा तत्थ पवेसेत्वा येन रज्जुकेन कङ्कन्ता द्वारं फुसापेन्ति, तं आविञ्चनरज्जुकं,

## आविद्ध

241

## आविभाव

सारथ्य. टी. 3.357; — यं सप्त. वि., ए. व. — ... आविच्छनरज्जुयं कुञ्चिकमुद्रिकं बन्धित्वा, दी. नि. अड्ड. 2.183; — रज्जुद्वान नपुं., खींचने वाली रस्सी का स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — आविच्छनरज्जुद्वाने आरक्खं गहेत्वा अट्टासि, ध. प. अड्ड. 1.328; — रस त्रि., खींचने अथवा घसीट कर ले जाने का काम करने वाला — सं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तत्थ ... चक्खु रूपेसु आविच्छनरसं ... सोतं सहेसु आविच्छनरसं ... धानं गन्धेसु आविच्छनरसं ..., जिह्वा, रसेसु आविच्छनरसा ..., विसुद्धि. 2.71; — सो पु., प्र. वि., ए. व. — कायो फोड्ढेसु आविच्छनरसो, तदे., रूपेसु पुग्गलस्स, विज्जाणस्स वा आविच्छनरसं, विसुद्धि. महाटी. 2.85; — क नपुं., देवराज शक्र की वह सदा घूमते रहने वाली रस्सी जिसके द्वारा वे लोकों की धुरी तथा चक्र का संधारण करते हैं — के सप्त. वि., ए. व. — सक्को देवराजा आविच्छनके आरक्खं विस्सज्जेसि, ध. प. अड्ड. 1.329; सक्को देवराजा आविच्छनके आरक्खं गण्हि, ध. प. अड्ड. 1.329.

**आविद्ध** त्रि., आ + √विस का भू. क. कृ. [आविष्ट], शा. अ., प्रविष्ट, वह, जिसके भीतर कोई पूर्ण रूप से समा गया है. ला. अ., पूर्णरूप से ग्रस्त अथवा अभिभूत, भूत-प्रेतादि से ग्रस्त अथवा वशीकृत — ट्टा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — वारुणीवाति यक्खाविद्धा इक्खणिक्का विय ..., जा. अड्ड. 7.371.

**आविद्ध** त्रि., आ + √विघ का भू. क. कृ. [आविद्ध], शा. अ., अन्दर तक बिधा हुआ या छेदा हुआ, मुड़ा हुआ, टेढ़ा. ला. अ., 1. चक्राकार गति को प्राप्त कराया गया, घुमाया जा रहा, चक्कर कटवाया जा रहा, गोल चक्कर में घूम रहा, चक्कर काट रहा — द्दं नपुं., प्र. वि., ए. व. — चक्कं ते सिरसि माविद्धं न तं जीवं पमोक्खसीति, जा. अड्ड. 4.6; सिरसिमाविद्धन्ति यं पन ते इदं चक्कं सिरस्सि आविद्धं कुम्भकारचक्कमिव भमति, तदे.; सकिं आविद्धमेव याव मज्झान्हिकातिकमा भमियेव, जा. अड्ड. 5.281; ला. अ., 2. अभिभूत, पीड़ित — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — ब्यसनोपदवाविद्धो, विष्फन्दति विघातवा, ना. रू. प. 1.352; ला. अ., 3. फेंका गया, प्रक्षिप्त, हिला दिया गया, प्रकम्पित — नुण्णो नुत्तात्तखित्ता चेरिताविद्धा, अभि. प. 744; — पक्खपासक त्रि., ब. स., वह, जिसके चारों ओर पक्खपासक विन्यस्त कर दिए गए हों — नित्तेखजन्ताघरं नाम आविद्धपक्खपासकं वुच्चति, चूलव. अड्ड. 52;

आविद्धपक्खपासकन्ति कण्ठिकमण्डलस्स समन्ता ठपितपक्खपासकं, वि. वि. टी. 2.220; दष्ट. पक्खपासक(आगे).

**आविभवति** आवि + √भू का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आविर्भवति], आंखों के सामने आ जाता है, सुस्पष्ट हो जाता है, प्रकट हो जाता है — अविपरिणामधम्मस्स पन निरोधस्स दस्सनेनस्स विपरिणामद्धो आविभवतीति वत्तब्भमेवेत्थ नत्थि, विसुद्धि. 2.331; दुक्खदस्सनेन निदानद्धो आविभवति, तदे.; — न्ति ब. व. — सच्चन्तरदस्सनवसेन व आविभवन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.475; लक्खणादीसु आतेसु धम्मा आविभवन्ति हि, अभि. अव. 632; — विस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — मुत्ते पन थुल्लच्चयमि पाराजिकमि होति, तं परतो आविभविस्सति, पारा. अड्ड. 1.265; सत्तेसु महाकरुणाय समोक्कमनाकारो, सो परतो आविभविस्सति, उदा. अड्ड. 106; तस्स उप्पति परतो आविभविस्सति, थेरगा. अड्ड. 1.86; पठमं ज्ञानन्ति इदं परतो आविभविस्सति, विसुद्धि. 1.140; — विस्सन्ति ब. व. — अतितीनोति आदीनि परतो आविभविस्सन्ति, स. नि. अड्ड. 3.284.

**आविमवन** नपुं., आवि + √भू से व्यु., क्रि. ना., सुस्पष्ट अथवा सुप्रकाशित हो जाना, आविर्भाव, आंखों के सामने आ जाना — नं प्र. वि., ए. व. — आविभावो ति, आविमवनं आविभावो, सद्. 1.71; आविमवनन्ति पच्चक्खभावो, सद्. 1.86.

**आविभाव** पु., आवि + √भू से व्यु. [आविर्भाव], 1. अत्यधिक सुस्पष्ट होना, अत्यधिक सुस्पष्ट बनाया जाना, खुलासा करना, व्याख्यान, प्रकाशभाव — वो प्र. वि., ए. व. — तं दिवसं कताकेरियाय आविभावो विय पुब्बेनिवासाय ..., दी. नि. अड्ड. 1.181; — तो प. वि., ए. व. — आविभावतोति पकासभावतो, विसुद्धि. महाटी. 2.475; अज्जसच्चदस्सनवसेन आविभावतो, विसुद्धि. 2.330; — वत्थं क्रि. वि., सुस्पष्ट करने के लिए — तस्सायेव पटिपदाय आविभावत्थं धम्मं देसेमीति, दी. नि. अड्ड. 1.258; तस्स (फरुसा वाचा) आविभावत्थमिदं वत्थु, म. नि. अड्ड. 1(1).208; स. नि. अड्ड. 2.130; तेसं आविभावत्थं, म. नि. अड्ड. (उप.प.) 3.77; इमस्स पनत्थस्स आविभावत्थं इमस्सिं ठाने सुमेधकथा कथेतब्बा, जा. अड्ड. 1.3-4; तस्स आविभावत्थमिदं वत्थु, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).208; — वानुरुपं क्रि. वि., जिस रूप में सुस्पष्ट अथवा अच्छी तरह ज्ञात हुआ है उसी की अनुरूपता में — आविभावानुरुपं

## आविभावत्त

242

## आविल

सत्थु गुणै अनुस्सरत्ति, उदा. अहु. 217; - कथा स्त्री., तत्पु. स., भलीभांति प्रकाशित करने वाला कथन. प्र. वि., ए. व. - पुब्बयोगतो पट्ठाय आविभावकथा, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).26; 2. एक प्रकार का ऋद्धि-बल जिसमें साधक स्वयं को अकस्मात् प्रकट कर देता है, अधिष्ठान-इद्धि का एक प्रभेद, ऋद्धि बल द्वारा स्वयं को किसी भी पदार्थ द्वारा अनाच्छादित एवं सर्वथा सुस्पष्ट बना देना, अन्धकार में आलोक कर देना, ढके हुए की पूरी तरह खुला हुआ बना देना - वं द्वि. वि., ए. व. - बहुधापि हुत्वा एको होति; आविभावं, तिरोभावं तिरोकुट्टं तिरोपाकारं तिरोपब्बतं असज्जमानो गच्छति, दी. नि. 1.69; 196; दी. नि. 3.83; 230; आविभावन्ति केनचि अनावटं होति अप्पटिच्छन्नं विवटं पाकटं पटि. म. 378; आविभावन्ति पाकटभावं करोतीति अत्थो ..., आविभावं पच्चनुभोति ..., तत्रायं इद्धिमा आविभावं कत्तुकामो अन्धकारं वा आलोकं करोति, पटि. म. अहु. 1.279.

आविभावत्त नपुं., आविभाव का भाव., सुस्पष्टता, भलीभांति प्रकाशित होना - ता प. वि., ए. व. - तस्स पन आविभावत्ता पुग्गलस्स आविभूताव होन्ति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.184.

आविभावन् नपुं., आवि + भू के प्रेर. का क्रि. ना., आविर्भूत करना, सम्यक् रूप से सुप्रकाशित करना - नत्थं द्वि. वि., क्रि. वि., सुप्रकाशित करने के लिए, सुस्पष्ट व्याख्या या उत्तर देने हेतु - तस्साविभावन्तथं इदं चतुक्कं वेदितव्वं, दी. नि. अहु. 1.152; तस्सेव पज्जस्स आविभावत्थं अत्तनो च पण्डितभावस्स आपनत्थं, जा. अहु. 6.173; पाठा. आविभावत्थं.

आविभावेतुकाम त्रि., सुस्पष्ट करने की कामना करने वाला - मेन पु., तृ. वि., ए. व. - अत्तनो पुब्बचरितं आविभावेतुकामेन सत्थुना, म. वं. टी. 561(रो.).

आविभूत त्रि., आवि + भू का भू. क. कृ. [आविर्भूत], भलीभांति प्रकाशित, सुस्पष्ट कर दिया गया - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - सत्था तमत्थं आविभूतं कत्वा भिक्खुसङ्घस्स कथेन्तो आह, जा. अहु. 6.117; - तेसु सप्त. वि., ब. व. - महाथेरो अनेकाकारवोकारं ... आविभूतेसु अत्तमनो पमुदितो ... निसीदि, उदा. अहु. 217-218; - काल पु., तत्पु. स., सुस्पष्ट होने का समय, भलीभांति प्रकाशित किए जाने का काल - लो प्र. वि., ए. व. - चातुमहाभूतिककायस्स

आविभूतकालो ..., तत्रिदं सुतं आवुतन्ति सुतस्स आविभूतकालो विय, म. नि. अहु. (म.प.) 2.184.

आविल त्रि., [आविल], शा. अ., मलिन जल, मटमैला, गंदला, अपवित्र या दूषित (जल), मथा हुआ या पड़ल (जल); ला. अ., मलिन या क्लेशयुक्त चित्त - अनच्छो कलु साविला, अभि. प. 669; - लो पु., प्र. वि., ए. व. - आविलोति अप्पसन्नो, स. नि. अहु. 3.209; उदकरहदो आविलो लुळितो कललीभूतो, अ. नि. 1(1).12; उदपत्तो आविलो लुळितो कललीभूतो अन्धकारे निक्खित्तो, अ. नि. 2(1).215; आविलोति अप्पसन्नो, अ. नि. अहु. 3.69; - लेन नपुं., तृ. वि., ए. व. - भिक्खु अनाविलेन चित्तेन अत्तत्थं वा जस्सति परत्थं वा जस्सति, अ. नि. 1(1).12; आविलेनाति पज्जहि नीवरणेहि परियोनद्धेन, अ. नि. अहु. 1.45; - लानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. - आविलानि च पानीयानि पिवति, महाव. 474; आविलानि च पानीयानि पिवामि, ध. प. अहु. 1.36; महाव. 474; आविलानीति तेहि पठमतरं ओतरित्वा पिवन्तेहि आलुलितानि कद्दोदकानि पिवति, महाव. अहु. 409; - लं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आविलन्ति आलुलं, उदा. अहु. 326; तं चक्कच्छिन्नं उदकं परित्तं लुळितं आविलं सन्दति, दी. नि. 2.98; पत्तीहि च खुभितं भवेय्य आविलं लुळितं कललीभूतं, मि. प. 32; - ले/म्हि नपुं., सप्त. वि., ए. व. - यथोदकं आविले अप्पसन्ने, न पस्सति सिप्पिकसम्बुकञ्च ... एवं आविलम्हि चित्ते न सो पस्सति अत्तदत्थं परत्थं, जा. अहु. 2.83; तत्थ आविलेति कद्दमालुळिते ... एवं आविलम्हीति एवमेव रागादीहि आविले चित्ते, तदे., तात, आविले चित्तम्हि पयुणापि मन्ता न पटिभन्ति, जा. अहु. 2.83; स. प. में, अना.- त्रि., निर्मल, स्वच्छ, पवित्र - लं प्र. वि., ए. व. - अनाविलन्ति किलेसाविलत्तविरहितं, सु. नि. अहु. 2.172; चन्दवं विमलं सुद्धं, विप्पसन्नमनाविलं, ध. प. अहु. 2.393; स. उ. प. के रूप में अना., चित्ता. के अन्तः, द्रष्टः; स. पू. प. में, - लक्ख त्रि., ब. स., मलिन दृष्टि वाला, राग से रक्त दृष्टि वाला - क्खो पु., प्र. वि., ए. व. - यं वे पिवित्वा उक्कट्ठो आविलक्खो, जा. अहु. 5.16; आविलक्खोति रत्तक्खो, जा. अहु. 5.18; - चित्त त्रि., ब. स., मलिन अथवा राग आदि से दूषित चित्त वाला - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आविलचित्तो अनाविलं, सरजो वीतरज अनङ्गणं, थेरीगा. 371; - ता ब. व. - तस्मा यदि असुरा कुपिताविलचित्ता देवपुरं उपयन्ति युद्धेसू ..., स. नि. अहु.

## आविलता

243

## आवुणाति

1.296; — माव पु., मलिनता, अपवित्रता, राग आदि द्वारा दूषित होना — बं द्वि. वि., ए. व. — चित्तस्स आविलभावं जानेय्य आजानेय्य ..., महानि. 369.

**आविलता** स्त्री., आविल का भाव., अनुपिटक पालि-साहित्य में ही प्रयुक्त [आविलत्व], अशुचिभाव, अशुद्धि, मलिनता, गंदलापन — तं द्वि. वि., ए. व. — सासनं च महसिनो ... चिरं आविलतं गतं, चू. वं. 73.4; — य तृ. वि., ए. व. — आविलताय आविप्पसन्ने, जा. अट्ट. 2.83; स. उ. प. में, कदमा- कीचड़ के कारण गंदलापन — उदकज्झि सभावतो सेतवणं, भूमिक्सेन कदमाविलताय च अज्जादिसं होति, उदा. अट्ट. 326.

**आविलत्त** नपुं., आविल का भाव. [आविलत्व], उपरिवत् — तं प्र. वि., ए. व. — यदाविलत्तं मनसो विजज्जा, कण्हस्स पक्खोति विनोदयेय्य, सु. नि. 973; यदाविलत्तं मनसो विजज्जाति, चित्तस्स आविलभावं जानेय्य आजानेय्य विज्जानेय्य पटिविज्जानेय्य पटिविज्जोय्याति यदाविलत्तं मनसो विजज्जा, महानि. 369; — ता प. वि., ए. व. — आविलत्ता, भिक्खवे उदकस्स, अ. नि. 1(1).12.

**आविलति** आविल का ना. धा. वर्त., प्र. पु., ए. व., गंदला अथवा मटमैला जैसा हो जाता है — घलति खुभाति लुळति आविलति ऊमिजातं होति, मि. प. 242; 243.

**आविसति** आ + विसि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आविशति], शा. अ., भीतर तक प्रवेश करता है, पूरी तरह से प्रवेश कर जाता है, ला. अ., 1. पूरी तरह से अधिगृहीत कर लेता है, (लक्ष्य, देव, दानव आदि) अभिभूत कर लेता है, 2. मनोभावों, क्लेशों, विपत्ति आदि को अपने वश में कर लेता है — अयं यक्खो गण्हाति, अयं यक्खो आविसति, अयं यक्खो हेठेति ... ति, दी. नि. 3.155; अरति म सोमदत्त आविसति, जा. अट्ट. 5.177; भिय्यो आविसती सोको, दोमनस्सञ्चनप्पकं, जा. अट्ट. 5.322; — न्ति ब. व. — पिसाचेहि उब्बाळहा होन्ति, आविसन्तिपि, हनन्तिपि, महाव. 195; ते किलेसा पवङ्गन्ता, आविसन्ति बहुं जनं, थेरगा. 931; जनं ... अभिभवित्वा अवसं करोन्ता आविसन्ति सन्तानं अनुपविसन्ति, थेरगा. अट्ट. 2.299; — सेय्य विधि, प्र. पु., ए. व. — यथा वा पन, कज्जिदेव पुरिसं भूतो आविसेस्य, मि. प. 165; भयं पीळनं घट्टनं उपदवो उपसग्गो आविसीति दिस्वा मं भयमाविसि, महानि. 303; — सि अघ., प्र. पु., ए. व. — अज्जमज्जेहि ब्यारुद्धे, दिस्वा मं भयमाविसि, सु. नि. 942; भिय्यो मं आविसीति ब्राह्मणस्स

चक्खुनि दत्त्वा, जा. अट्ट. 4.368; — सित्वा पू. का. कृ. — यथा नाम केळिसीला रक्खसा भिसक्करहिते उम्मेत्ते आविसित्वा ते अनयव्यसनं आपादेन्ता तेहि कीळन्ति ..., थेरगा. अट्ट. 2.299.

**आवुट/आवुत/आवट** त्रि. आ + वृ का भू. क. कृ. [आवृत्], पूरी तरह से ढका हुआ, चारों ओर से आच्छादित, रुकावट-युक्त, बाधायुक्त, ग्रस्त, पीड़ित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आवुतोति आवरितो, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.314; पटिच्छन्नोति आवटो, महानि. अट्ट. 74; — टा ब. व. — तमोखन्धेन आवुटाति, महाव. 5; दी. नि. 2.29; तमोखन्धेन आवुटाति अविज्जारासिना अज्जोत्थटा, स. नि. अट्ट. 1.174; संसरन्ति अहोरत्तं, यथा मोहेन आवुता, इति, 8; पुथु पञ्चहि नीवरणेहि आवुता निवुता ओवुता पिहिता पटिच्छन्ना पटिकुज्जिताति पुथुज्जना, महानि. 107; आवुटा निवुता ओनद्धा परियोनद्धा, दी. नि. 1.223; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — वेठितं तु वलयितं तुं रुद्धं संवुतं सावुतं, अभि. प. 745; ततो तं पि पुरं तुङ्गपाकारपरिखावुतं, चू. वं. 88.77; अम्बोधिगम्भीरपरिखावुतं, चू. वं. 88.116; स. उ. प. में, अना- त्रि., [अनावृत्], नहीं ढका हुआ, खुला हुआ, उन्मुक्त — ता पु., प्र. वि., ब. व. — वित्थिण्णो जम्बुदीपोय मग्गानेक अनावुता, सट्ठम्पो. 391.

**आवुणाति<sup>1</sup>/आवुणोति** आ + वृ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृणोति/आवृणाति/आवृणुते/आवृणीते], 1. ढक देता है, छिपा देता है, गुप्त रखता है, 2. भर जाता है, व्याप्त हो जाता है, 3. वरण करता है, इच्छा करता है, 4. निवेदन या प्रार्थना करता है, 5. घेर लेता है, नाकेबन्दी करता है, पालि साहित्य में इन अर्थों में केवल आवुट/आवुणित को छोड़ अन्य प्रयोग अप्राप्त, केवल व्याकरण ग्रन्थों में उल्लिखित — आवुणोति, आवुणाति, पापुणोति, पापुणाति, क. व्या. 450; आवुणोति, आवुणाति, सक्कुनोति, सक्कुनाति, सद. 3.825.

**आवुणाति<sup>2</sup>/आवुनाति** आ + वृ से व्यु. [आवयति/आवयते], शा. अ., आपस में गूँथ देता है, नत्थी कर देता है, वेध देता है, सिल देता है, छेद देता है, पिरो देता है, ला. अ., शूली पर चढ़ा देता है — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — अप्पेन्ति निम्बसूलस्मिन्ति इमस्मिं काले राजानो चोरं निम्बसूले आवुणन्ति, जा. अट्ट. 3.30; तत्थ हि तिरियं पलिघं उपेत्त्वा रुक्खसूचिसङ्घातं आणिं पलिघसीसे आवुणन्ति, थेरगा. अट्ट. 2.57; — नथ म. पु.,

## आवुत

244

## आवुघ

ब. व. — उप्येथाति आवुनथ, जा. अ. 6.20; — नेय्य विधि, प्र. पु. ए. व. — मज्झिमकेसु सूलेसु आवुनेय्य, ये महासमुदे सुखुमका पाणा ते सुखुमकेसु सूलेसु आवुनेय्य, स. नि. 3.504; — णन्तो वर्त. कृ. पु. प्र. वि. ए. व. — कुमारो मेधावी पञ्जवा सुतं सुतं मुतं आवुणन्तो विय गण्हाति, म. नि. अ. 2.55-56; — णि अद्य, प्र. पु. ए. व. — भिक्षुसङ्घो सुत्तं वट्टेसि, सत्था सूचिपासके आवुणि, ध. प. अ. 1.345; — णिं उ. पु. ए. व. — बीजमिज्जं गहेत्वा लताय आवुणि अहं, अप. 2.24; — णिस्सन्ति भवि, प्र. पु. ब. व. — सचे हि इमं सूले आवुणिस्सन्ति, जा. अ. 3.30; — नितुं निमि. कृ. — महासमुदे सुखुमका पाणा, ये न सुकरा सूलेसु आवुनितुं, स. नि. 3.504; — णित्वा/नित्वा पू. का. कृ. — इमस्सेव नं निम्बस्स सूले वा आवुणित्वा साखाय वा, जा. अ. 3.30; सत्त रोहितमच्छे उद्धरित्वा वत्तिया आवुणित्वा, चरिया, अ. 100; अङ्गमासकं विज्झित्वा सुत्तेन आवुणित्वा तस्स गीवायं पिळन्धि, जा. अ. 6.175; — णापेस्सामि प्रेर., भवि, उ. पु. ए. व. — मारेत्वा खण्डाखण्डं छिन्दित्वा सूलेयेव आवुणापेस्सामीति, जा. अ. 3.191.

**आवुत**° त्रि. आ + वृ (बुनना) का भू. क. कृ. [ओत], 1. बुना हुआ, आपस में रूँथा हुआ, स. उ. प. में. नवा. नया नया बुना हुआ — तो पु. प्र. वि. ए. व. — 'आमाय्य, नवावुतो कम्बलो'ति, पारा. 193; — तं पु. द्वि. वि. ए. व. — तेन खो पन समयेन अज्जतरा इत्थी नवावुतं कम्बलं पारुता होति, पारा. 193; तन्ता. तांत से बुना हुआ — तानं नपुं. व. वि. ब. व. — यानि कानिचि तन्तावुतानं वत्थानं, कंसकम्बलो तेसं पटिकिद्धो अक्खायति, अ. नि. 1(1).322; तन्तावुतानन्ति तन्ते आवुतानं, स. नि. अ. 3.170; 2. धागे से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सिला हुआ, (नोती आदि के छिद्र के अन्दर) पिरोया हुआ — तं नपुं. प्र. वि. ए. व. — तत्रास्स सुत्तं आवुतं नीलं वा पीतं वा लोहितं वा ओदातं वा पण्डुसुत्तं वा, दी. नि. 2.10; दी. नि. 1.67, तादिसज्झि आवुतं पाकटं होति, म. नि. अ. (म.प.) 2.183; स. पू. प. में. — सुत्तं नपुं. कर्म. स. पिरोया हुआ धागा — तं प्र. वि. ए. व. — आवुतसुत्तं विय विपरसनाज्जाणं, म. नि. अ. (म.प.) 2.184; — पण्डुसुत्तं नपुं. पिरोया हुआ पाण्डुवर्ण का धागा — तं प्र. वि. ए. व. — विप्पसन्ने मणिरत्तने आवुतपण्डुसुत्तं विय परसति, जा. अ. 1.62;

ध. प. अ. 2.128; — मुत्ता स्त्री., कर्म. स., पिरोई हुई मोती — ता द्वि. वि. ब. व. — अथस्स लोमकूपेसु आवुतमुत्ता विय हिमबिन्दूनि तिष्ठन्ति, म. नि. अ. (म.प.) 1(1).360; 3. बेधा गया, शूली पर चढ़ाया गया — तो पु. प्र. वि. ए. व. — पञ्चमाय सतिया दण्डके मधुकपुप्फं विय आवुतो परिदेवमानो निपज्जि, जा. अ. 1.413; चतुत्थे लङ्घयित्वा, पञ्चमायसि आवुतोति, तदे., स. उ. प. में. तला. त्रि. छेदे गए करतल वाला — ता पु. प्र. वि. ब. व. — तलावुताति हत्थतलेसु आवुता, जा. अ. 5.490.

**आवुत्ति** स्त्री., संस्कृत काव्य शास्त्र के पारिभाषिक शब्द आवृत्ति का अनुकरण [आवृत्ति]. वह काव्यालङ्कार जिसमें पदों एवं अर्थों को पुनः दोहराया जाए, प्र. वि. ए. व. — पुनपुनच्चारणं यं अथस्स च पदस्स च उभयेसञ्च विज्जेया साय आवुत्ति नामतो, सुबोधा. 224; तुल. दण्डी का काव्यादर्श, 2.116.

**आवुत्थ** त्रि. आ + वृस का मू. क. कृ. आबाद किया हुआ, वसा हुआ — त्थं नपुं. प्र. वि. ए. व. — आवुत्थं धम्मराजेन, पीतिसज्जननं मम, स. नि. 1(1).38; म. नि. 3.314; — त्था स्त्री., प्र. वि. ए. व. — साहं भुसालयावुत्था, वरवारिवहोघसा, जा. अ. 5.5.

**आवुघ** नपुं., [आयुध]. शस्त्र, हथियार — वो यस्स आवुघं आयुधं वा, स. 3.623; क. सामान्य रूप में कोई भी अस्त्र अथवा हथियार — घं प्र. वि. ए. व. — आयुधं मेनुभावेन तेसं काये पतिस्सति, म. वं. 7.36; — घं द्वि. वि. ए. व. — पसन्नचित्तो आवुघं निखिपित्वा उपसङ्गमित्वा, थेरगा. अ. 1.101; पमुज्चित्तवान् आयुधं दी. वं. 2.23; निखिपित्तवान् आवुघं, दी. वं. 12.49; आवुघं सरीरे उपेत्वा 'इदं नाम मे देही'ति साहसाकारा च, जा. अ. 4.12; — घानि प्र. वि. ब. व. — तस्मिं खणे द्वादसयोजनिके वाराणसिनगरे सम्बावुधानि पज्जलिसु, जा. अ. 5.124; सकलनगरेपि आवुधानि पज्जलितानी, ति, म. नि. अ. (म.प.) 2.235; — घानि द्वि. वि. ब. व. — आवुधानि छड्ढत्वा, भगवन्तं वन्दित्वा, निसीदिसु, स. नि. अ. 1.63; सकलगामवासिनो आवुधानि गहेत्वा सङ्घे ..., जा. अ. 2.90; ख. 5 प्रकार के आयुध या शस्त्र, ला. अ., मेता, करुणा, काय, चित्त एवं उपधि विवेक नामक 5 आध्यात्मिक आयुध — घं प्र. वि. ए. व. — आवुघन्ति पञ्चावुघं, म. नि. अ. (म.प.) 2.238; पञ्चविधं आवुघं, यथा हि रथे ठितो पञ्चहि आवुघोहि सपत्ते

## आवुध

245

## आवुसो

विज्झति - मेत्ताय ..., करुणाय, ... काय विवेकेन ... चित्तविवेकेन ..., स. नि. अहु. 3.158; - धं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - इच्चवे घोरो असिमावुधञ्च, थेरगा. अहु. 2.279; आवुधान्ति सेसावुधं, तदे., ग. कवच या ढाल से विपरीत अथवा भिन्न अस्त्र - धं द्वि. वि., ए. व. - फलकञ्च आवुधञ्च दापेसि, ध. प. अहु. 1.251; बलक्कारेन आवुधफलकं गाहापेत्वा, स. नि. अहु. 1.125; स. उ. प. में, फलका- ढाल एवं अन्य आयुध - धानि<sup>1</sup> द्वि. वि., ब. व. - फलकावुधानि गाहापेत्वा, जा. अहु. 3.208; - धानि<sup>2</sup> प्र. वि., ब. व. - हथिनो च अस्सा च फलकावुधानि च, स. नि. अहु. 1.62; निविखत्तकवचा. - त्रि., ब. स., कवच एवं अस्त्रों को त्याग चुका - वुधा पु., प्र. वि., ब. व. - सब्बे देवा अत्तमना निविखत्तकवचावुधा, अप. 1.149; स. पू. प. में, - फलक नपुं., द्व. स., आयुध एवं ढाल - कं द्वि. वि., ए. व. - बलक्कारेन आवुधफलकं गाहापेत्वा, स. नि. अहु. 1.125; घ. कोई एक विशेष प्रकार का अस्त्र, हथियारों का कोई एक विशिष्ट प्रभेद - धं<sup>1</sup> प्र. वि., ए. व. - रज्जो पच्चन्तिमे नगरे बहुं आवुधं सन्निचितं होति सत्ताकञ्चव जेवनिकञ्च, अ. नि. 2(2).244; आवुधं नाम चापो कोदण्डो, पाचि. 273; ... आवुधान्ति असि वा उसु वा सति वाति एवमादि, पारा. अहु. 2.42; - धं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. - इच्चवे घोरो असिमावुधञ्च, थेरगा. 869; - धानि द्वि. वि., ब. व. - निरयपाला जलितानि असिसत्तितोमर भिन्दिवालमुग्गरादीनि आवुधानि गहेत्वा ..., जा. अहु. 8.127; असिसत्तिधनुआदीनि आवुधानि उगिरित्वा, जा. अहु. 1.154; घोरा ... निविखप्पसत्थानि च आवुधानि च, थेरगा. 724; असिआदिसत्थानि चैव धनुकलापादि आवुधानि च, थेरगा. अहु. 2.230; - जात नपुं., विशेष प्रकार का आयुध, कोई एक खास हथियार - तं प्र. वि., ए. व. - मतजं नाम आवुधजातं उभतोधारं पीतनिसितं, म. नि. 1.353; - जीविक त्रि., ब. स., हथियारों से अपनी जीविका चलाने वाला - कं नपुं., प्र. वि., ए. व. - इस्सत्थन्ति आवुधजीविकं, उसुञ्च सतिञ्चाति वुत्तं होति, सु. नि. अहु. 2.169; - पाणि त्रि., ब. स. [आयुधपाणि], अपने हाथों में शस्त्र धारण करने वाला - स्स पु., ष. वि., ए. व. - न आवुधपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामि, पाचि. 273; - बल त्रि., ब. स. 1. वह, जिसका बल उसके शस्त्र या हथियार हैं - ला पु., प्र. वि., ब. व. -

रुण्णबला दारका ... आवुधबला घोरा ... अहु बलानि, अ. नि. 3(1).58; 2. नपुं., आयुधों का बल, हथियार की ताकत - लेन तु. वि., ए. व. - आवुधबलवन्तानन्ति आवुधबलेन युत्तानं समन्नागतानं, जा. अहु. 6.279; - बलवन्तु त्रि., आयुधों के कारण बलवान्, अस्त्र-शस्त्रों से पूर्ण रूप से सुसज्जित - न्तानं पु., ष. वि., ब. व. - आवुधबलवन्तानं, गुणिकायूस्धारिनं एतादिसानं योधानं, जा. अहु. 6.278; - मण्ड नपुं., आयुधों का भण्डारण या संग्रह, समस्त आयुध - ण्डं द्वि. वि., ए. व. - सत्थवणिज्जाति आवुधमण्डं कारेत्वा तस्स विक्कयो, अ. नि. अहु. 3.63; - ण्डानि द्वि. वि., ब. व. - आवुधमण्डानि पज्जलिसु, मि. प. 8; - लक्खण नपुं., तत्पु. स. [आयुधलक्षण], आयुधों के लक्षण - णं प्र. वि., ए. व. - उसुलक्खणं, ... आवुधलक्खणं ... इति वा इति, दी. नि. 1.8; महानि. 281; - वरसा स्त्री., तत्पु. स. [आयुधवर्षा], अस्त्रों की वर्षा, अत्यधिक अस्त्रों का प्रयोग - स्सं द्वि. वि., ए. व. - नानप्पकारं आवुधवस्सं वस्सि, जा. अहु. 5.129; - विज्जा स्त्री., तत्पु. स. [आयुधविद्या], अस्त्रविद्या - य तु. वि., ए. व. - इस्सत्थेति आवुधविज्जाय, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.46; - हत्थ त्रि., ब. स. [आयुधहस्त], अपने हाथों में अस्त्र धारण करने वाला - त्थं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - रक्खणत्थाय परिवारेत्वा तितं आवुधहत्थं परिसं ते न पस्सामि, जा. अहु. 5.369; धनुकलापफलकावुधहत्थेहि, जा. अहु. 1.108; स. उ. प. के रूप में, इन्दा., उय्यता., उय्युता., गदा., चित्रदण्डयुता., आणा., दाठा., दुस्सा., देवडाना., नहुला., नच्चगीतभाणितमिहिता., नद्धपञ्चा., नयना., पञ्चा., पञ्जा., पविवेका., मद्रा., मङ्गला., वजिरा., दत्था., विपस्सना., वाचा., सज्जा., सन्नद्धपञ्चा., सहा., सुता. के अन्त. द्रष्ट. आवुहमाना त्रि., आ + वह का कर्म. वा., वर्त. कृ., (संभवतः आधूयमान के स्थान पर), अब ले जाया जा रहा - ना नपुं., प्र. वि., ब. व. - वातेन मन्दं आवुहमाना हेममयपुष्पाति अत्थो, वि. व. अहु. 199.

आवुसो पु., सम्बो., ए. व./ब. व. [संभवतः वैदिकआयुधस/आयुधस् से व्यु.], सम्बोधित करने का शिष्ट एवं सभ्य प्रकार, श्रीमन्, हे सत्यपुरुष, ऐ मित्र/मित्रों, अनेक प्रकार से प्रयुक्त, 1. सामान्य जनों द्वारा प्रयुक्त सम्बोधन-वचन, सामान्य जनों को सम्बोधित करने हेतु प्रयुक्त वचन, बौद्ध भिक्षु-संघ से इतर व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त सम्बोधन, बौद्धतर धर्माचार्यों एवं उनके प्रव्रजित



## आवुसोवाद

246

## आवेठेति

अनुयायियों के लिए भी प्रयुक्त सम्बोधन — पुब्बे त्वं आवुसो, अम्हाकं पुरतो केळि अकासि, जा. अहु. 2.371; न खो अहं, आवुसो, अहसन्ति?, दी. नि. 2.99; कसि त्वं, आवुसो उदिसस पब्बजितो, महाव. 11; ध. प. अहु. 2.322; ते निगण्ठे एतदवोचं — आवुसो, निगण्ठा उब्भट्टका आसनपटिक्खिता, म. नि. 1.130; आळारं कालामं एतदवोचं — इच्छामहं, आवुसो कालाम, म. नि. 1.222; उदकं रामपुत्तं एतदवोचं, इच्छामहं, आवुसो, इमस्मि धम्मविनये ब्रह्मचरियं चरितुन्ति, म. नि. 1.224; 'कोसि त्वं आवुसो' ति, स. नि. 1(1).176; 2. बौद्ध-भिक्षुओं एवं बौद्ध-भिक्षुणियों द्वारा बौद्धधर्म के प्रति श्रद्धावान् गृहस्थजनों (उपासकों) के लिए प्रयुक्त सम्बोधनपद — छब्बग्गियेहि, आवुसो, भिक्खूहि आवरणं कतन्ति, महाव. 107; वेसालिके उपासके एतदवोचं — 'मावुसो, अदत्थ सङ्गस्स कहापणमि अङ्गमि पादमि मासकरुपमि, चूळव. 463; पञ्च खो इमे, आवुसो विसाख, उपादानक्खम्मा सवकायो वुत्तो भगवता, म. नि. 1.380; 3. बौद्ध-भिक्षुसंघ के सदस्य भिक्षुओं द्वारा आपस में एक दूसरे के लिए प्रयुक्त, अत्यधिक प्रचलित सम्बोधन, [टि., स्वयं बुद्ध भिक्षुओं के लिए 'भिक्खवे' सम्बोधन का प्रयोग करते थे तथा बौद्ध-गृहस्थजन इन भिक्षुओं को सम्बोधित करने हेतु 'भन्ते' पद का प्रयोग करते हुए बतलाए गए हैं] — आवुसो ..., आवुसोति हि अवत्ता, भिक्खवेति वचनं बुद्धालापो नाम होति, अयं पनायस्मा 'दसबलेन समानं आलपनं न करिस्सामीति सत्थु गारववसेन सावकालापं करोन्तो' आवुसो भिक्खवेति आह, अ. नि. अहु. 2.32-33; आवुसो भिक्खवोति एत्थ बुद्धा भगवन्तो सावके आलपन्ता 'भिक्खवो'ति आलपन्ति, सावका पन 'बुद्धेहि सदिसा मा होमा'ति आवुसो'ति पठमं वत्ता पच्छा 'भिक्खवो'ति वदन्ति, बुद्धेहि च आलपिते भिक्खुसङ्घो 'भदन्ते'ति पटिवचनं देति, सावकेहि आलपिते आवुसो'ति, पटि. म. अहु. 2.172.

आवुसोवाद पु., 'आवुसो' कहकर सम्बोधित करना — दो प्र. वि., ए. व. — आवुसोवादोयेव हि अज्जमज्ज भिक्खून् भगवतो धरमानकाले आचिण्णो, उदा. अहु. 254; — देन तृ. वि., ए. व. — तथागतं नामेन च आवुसोवादेन च समुदाचरथ, जा. अहु. 1.90; नामेन च आवुसोवादेन च समुदाचरन्तीति गौतमाति, आवुसोति च वदन्ति, आवुसो गौतम, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).93; आवुसोवादेन समुदाचरितब्बं अमज्जित्थ, म. नि. 3.296; यथा खो पनानन्द, एतरहि भिक्खू अज्जमज्जं आवुसोवादेन समुदाचरन्ति, न

खो ममच्चयेन एवं समुदाचरितब्बं, थेरतरेन, आनन्द, भिक्खुना नवकतरो भिक्खु नामेन वा गोतेन वा आवुसोवादेन वा समुदाचरितब्बो, दी. नि. 2.115.

आवेग पु., संस्कृत से गृहीत [आवेग], 33 व्यभिचारीभावों में से एक व्यभिचारीभाव, मन की बेचैनी, व्याकुलाहट — निद्रावेगा सबीडभरणं सचपला व्याधितेतिस्समेते, सुबोधा. 346(गा.).

आवेठन नपुं., आ + र्वेठ्ठ से व्यु. क्रि. ना. [आवेष्टन], शा. अ., लपेट लेना, अपनी पकड़ में ले लेना, घेरें में ले लेना या घेर लेना, चारों ओर से घेरें में ले लेना, ला. अ., वाद-विवाद अथवा संलाप की प्रक्रिया में 3 युग्मों में निर्दिष्ट 6 प्रकार के उपकरणों या अंगों में प्रथम, प्राचीन वाद-पद्धति का एक अङ्ग — नं प्र. वि., ए. व. — पण्डितानं खो, सल्लापे आवेठनमि कयिरति, निब्बेठनमि कयिरति, निग्गहोपि कयिरति, पटिकम्ममि कयिरति, विस्सासोपि कयिरति, पटिविस्सासोपि कयिरति, न च तेन पण्डिता कुप्पन्ति, मि. प. 25; स. प. में, — यं पन तथागतो कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणास्स भोजनं पजहि, तं आवेठनविनिवेठन कङ्कननिग्गहप्पटिकम्मेन निब्बति, तस्मा तथागतो तं पिण्डपातं पटिक्खपि न उपजीवीति, नि. प. 217.

आवेठिका/आवेठिया स्त्री., उपरिवत् — ठियं द्वि. वि., ए. व. — पुब्बेव सल्लापा कथं कथी विनिघाती होति, 'जयो नु खो मे भविस्सति, पराजयो नु खो मे भविस्सति, कथं निग्गहं करिस्सामि ... कथं आवेठियं करिस्सामि, कथं निब्बेठियं करिस्सामि, महानि. 120; आवेठियं करिस्सामीति परिवेठनं करिस्सामि, महानि. अहु. 226; — या प्र. वि., ए. व. — निग्गहो ते अकतो, पटिकम्मं ते दुक्कटं, विवेसो ते अकतो, पटिविसेसो ते दुक्कटो, आवेठिया ते अकता, निब्बेठिया ते दुक्कटा, महानि. 121; — य तृ. वि., ए. व. — आवेठियाय आवेठियन्ति आवेठेत्ता निवत्तनेन निवत्तनं निब्बेठियाय निब्बेठियन्ति दोसतो मोचनेन मोचनं, महानि. अहु. 229.

आवेठेति आ + र्वेठ्ठ का कर्त., प्र. पु., ए. व. [आवेष्टयति].

1. लपेट लेता है, घेर लेता है, प्रयोगों के लिए आवेष्टित के अन्त. द्रष्ट.; 2. ँठ देता है, मरोड़ देता है, मोड़ देता है — द्वितं/ल्लितं भू. क. कृ., प्र. वि., ए. व. — आवेल्लितं पिड्डितो उत्तमङ्गं, ... आवेल्लितन्ति परिवत्तिंत, जा. अहु. 4.345; पाठा. आवेळितं.

## आवेणिक

247

## आवेळ

**आवेणिक / आवेणिय / आवेनिक / आवेनि** त्रि., व्यु., सदिध, [वौ. सं., आवेणिक / आवेणीय], 1. पृथक् भागों या खण्ड खण्ड में विभाजित, अलग अलग भागों या हिस्सों में विभक्त, एकदम पृथक् रूप में प्राप्त — का स्त्री., प्र. वि., ए. व. — धातु आवेणिका नत्थि, सरीर एकपिण्डत्, अप. 1.68; धातु आवेणिका नत्थीति देवमनुस्सेहि विसुं विसुं चेति यं कातुं आवेणिका विसुं धातु नत्थि, अप. अ. 2.291; 2. त्रि., असामान्य रूप में अथवा विशिष्ट रूप में प्रशस्त, असामान्य धर्मों या लक्षणों के रूप में कथित, असाधारण, दूसरों में अप्राप्त, विशेष प्रकार का, केवल किसी एक में ही विद्यमान — कं<sup>1</sup> नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदं लोके उत्तरियन्ति इदं पन इमस्मिं लोके असदिसं मय्हं एव आवेणिकं, चरिया. अ. 180; आवेनिकमभारियं अमतोसहामवन्तं मजरामरसाधनं, ना. रू. प. 979; सयंकतानि पुज्जानि, तं मे आवेणिकं धनं, जा. अ. 6.153; — कं<sup>2</sup> नपुं., द्वि. वि., ए. व. — आवेणिकं कम्म वा उदंसं वा करोन्ति, म. नि. अ. (उप.प.) 3.77; एकसीमायं आवेणिकं सङ्कम्मं अकासि, जा. अ. 1.468; भिक्षुसङ्घं विसुं कत्वा म अनुवत्ततोहि भिक्षूहि सद्धिं आवेणिकं उपोसथं सङ्कम्मानी, ..., उदा. अ. 258; — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — पज्जिमानि मातुगामस्स आवेणिकानि दुक्खानि यानि मातुगामो पव्वनुभोति, अज्जत्रेव पुरिसेहि, स. नि. 2(2).234; ततिये आवेणिकानीति पटिपुग्गलिकानि पुरिसेहि असाधारणानि, स. नि. अ. 3.123; — का स्त्री., प्र. वि., ए. व. — ... आदिना ओकारन्तस्स इत्थिलिङ्गस्स गोसदस्स आवेणिका नाभिकपदमाला वुत्ता, स. 1.220; आवेणिका टितिका कातब्बा, चूळव. अ. 94; — को पु., प्र. वि., ए. व. — असंघनको च सुखो च विहारोति एत्थ पन नास्स संघनन्ति ... पाटक्को आवेणिको, पारा. अ. 2.9; स. नि. अ. 3.300; — केन नपुं., तृ. वि., ए. व. — तस्मा आवेणिकेन लक्खणेन अप्यत्तो, महाव. अ. 403; — के सप्त. वि., ए. व. — आवेणिके असीति अनुव्यज्जनानि, स. 1.254; — घरावास पु., विशेष प्रकार के घर में निवास — सं द्वि. वि., क्रि. वि. — आवेणिकघरावासं वसनकालतो, अ. नि. अ. 1.307; — त्त नपुं., भाव., विशिष्टता, अपने आप में खास तरह का होना — अरियानं पन तस्स तस्सेव आवेणिकत्ता अत्तसादिसत्ता, उदा. अ. 154; — णिकबुद्धधम्म पु., बुद्ध के विशिष्ट लक्षण, स. प. के अन्त., — छ असाधारण जाण अद्वारसावेणिक बुद्धधम्मपुमिति

अपरिमाणगुणसमन्नागताय, वि. व. अ. 180; — णिकमूत त्रि., विशिष्ट अथवा असामान्य प्रकृति से युक्त — तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. — पब्बाजनीयकम्मस्स आवेणिकमूतेन कुलदूसक ... भावलक्खणेन, सारत्थ. टी. 3.314.

**आवेध** पु., आ + रविध से व्यु. [आवेध], व्रण, फोड़ा, जख्म, विद्ध-स्थान, बेधा गया स्थान — घं द्वि. वि., ए. व. — आवेधञ्च न पस्सामि, यतो रुहिरमस्सवे जा. अ. 2.230; आवेधञ्च न पस्सामीति विद्धुद्धाने वणञ्च न पस्सामि, तदे.; — तो प. वि., ए. व. — आवेधतो लोहितं पग्घरेय्य, जा. अ. 2.230.

**आवेनि** त्रि., आवेणिक का ही समानार्थक, असामान्य, विशिष्ट, अपनी ही तरह का, खास — निं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — आवेनि उपोसथं ... आवेनिं सङ्कम्मं करोन्ति, चूळव. 345; परि. 370; आवेनिं कम्माकम्मानी करोन्ति, परि. 371; स. पू. प. के रूप में, — कम्म / सङ्कम्म नपुं., भिक्षुसङ्घ से सर्वथा स्वतन्त्र होकर अपने व्यक्तिगत स्तर पर किए गए उपोसथ आदि सघकर्म — म्मानि द्वि. वि., ब. व. — आवेनिकम्मानी करोन्ति, न आवेनिपातिमोक्खं उद्दिस्सन्ति, अ. नि. 3(2).61, 63; आवेनिकम्मानी करोन्तीति विसुं सङ्कम्मानी करोन्ति, अ. नि. अ. 3.308; देवदत्तो एकसीमायं आवेणिकं सङ्कम्मं अकासि, जा. अ. 1.468; — निभाव / निकभाव पु., विशिष्ट भाव, विशिष्ट स्वरूप की अवस्था — वं द्वि. वि., ए. व. — अन्तोसीमाय आवेनिभावं करित्वा गणं बन्धित्वा आवेनिं उपोसथं करोन्ति, परि. 371; आवेनिभावं करित्वाति विसुं ववत्थानं करित्वा, परि. अ. 226.

**आवेय्य / आदेय्य** पु., व्य. सं., 59 कल्पों के पूर्वकाल में विद्यमान एक चक्रवर्ती राजा का नाम — वेय्यो प्र. वि., ए. व. — आदेय्यो नाम नामेन चक्कवती महब्बलो, अप. 1.189; पाठा. आवेय्यो.

**आवेळ<sup>1</sup> / आवेल** पु. / स्त्री., [आवेष्ट?], कर्णाभूषण, अवतंसक, कानों में धारण किया जाने वाला आभूषण, हार, माला, कनबाली — ळा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — उत्तसो सेखसावेळा, अभि. प. 308; आवेळाति कणिका, पारा. अ. 2.183; — ळं द्वि. वि., ए. व. — आवेळं करोन्ति, चूळव. 22; आवेलं पग्गहेत्थान, ... बुद्धस्स अभिरोपयिं अप. 1.227; चन्दसूरसहस्सानि, आवेळमिव धारयि, अप. 2.205; — त्थ पु., कर्णाभूषण के निमित्त — त्थं द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. — पञ्च उप्पत्तहत्थानि, आवेळत्थं अहंसु मे, अप.

## आवेळ

248

## आसंसति

1.96; — सङ्घात त्रि., अवतंसक (कनबाली) कहा जाने वाला (गहना) — तेहि पु., तृ. वि., ब. व. — आवेळिनेति आवेळसङ्घातेहि कण्णालङ्कारेहि युते, जा. अट्ट. 5.405.

आवेळ<sup>२</sup> / आवेल पु., व्य. सं., रेवत बुद्ध के एक प्रासाद का नाम — ळो प्र. वि., ए. व. — सुदस्सनो रतनगि, आवेळो च विभूसितो, बु. वं. 319.

आवेळवती स्त्री., आवेळ + वन्तु से व्यु., कर्णाभूषण से युक्त, स. उ. प. में, रतनमयपुष्पा- रत्नों के पुष्पों से निर्मित कर्णाभूषण वाली, प्र. वि., ए. व. — आवेळिनीति रतनमयपुष्पावेळवती, वि. व. अट्ट. 103.

आवेळावेळ त्रि., अनेक हारों अथवा मालाओं जैसा, अनेक हारों अथवा मालाओं से परिपूर्ण — ळा स्त्री., द्वि. वि., ब. व. — ... आवेळावेळा यमकयमका छब्बण्णधनबुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तो ..., जा. अट्ट. 1.478; आवेळावेळाभूता यमकयमकभूता धनबुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तो ..., जा. अट्ट. 1.425.

आवेळी त्रि., हारयुक्त, कर्णाभूषण-युक्त, हारों अथवा कर्णाभूषणों को धारण करने वाला — ने पु., प्र. वि., ब. व. — आवेळिनेति आवेळसङ्घातेहि कण्णालङ्कारेहि युतो, जा. अट्ट. 5.405; आवेळिने सदगमे असङ्गिते, जा. अट्ट. 5.404; — लिनियो स्त्री., प्र. वि., ब. व. — आवेळिनियो पदुमुप्पलच्छदा, अलङ्कृता चन्दनसारवासिता, वि. व. 1029.

आवेळितसिङ्गिक त्रि., ब. स. [आवेळितशृङ्गिक], कुछ कुछ वक्र या टेढ़े तिरछे सींगों वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — आवेळितसिङ्गिको हि मेण्डो, जा. अट्ट. 6.182.

आवेसन नपुं., आ + वशिष के प्रेर. से व्यु. [आवेशन], शिल्पशाला, कारखाना — नं' प्र. वि., ए. व. — आवेसनं सियावेसे सिप्पसालाघरेसु च, अभि. प. 906; आवेसनं सिप्पसाला, अभि. प. 212; घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तेमासं आकासच्छदनं अट्ठासि, मि. प. 210; — नं' द्वि. वि., ए. व. — ... गच्छथ कुम्भकारस्स आवेसनं उत्तिणं करोथाति, म. नि. 2.254; — ने सप्त. वि., ए. व. — ... नत्थि ... कुम्भकारस्स निवेसने तिणं, अत्थि च ख्वास्स आवेसने तिणच्छदनन्ति ..., म. नि. 2.253-254; विलो. निवेसन.

आवेसनवित्थक नपुं., सिलने के उपकरणों को रखने हेतु प्रयुक्त लघु पात्र, सुई धागा आदि को रखने के लिए छोटी

डिबिया — कं द्वि. वि., ए. व. — सूचियोपि सत्थकापि पटिग्गहापि नस्सन्ति ... अनुजानामि आवेसनवित्थकन्ति, चूळव. 235; आवेसनवित्थकं नाम यं किञ्चि पाटिच्छोटकादि, चूळव. अट्ट. 51.

आवेसिक पु., [आवेशिक], अतिथि, अभ्यागत, घर में अचानक आ पहुंचा मेहमान, पाहुन — पुमे अतिथि आगन्तु पाहुना वेसिकाप्यथ, अभि. प. 424.

आस' पु., असु(फेंकना) से व्यु., [आस], प्रक्षेपण, फेंकना, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, इस्सा., (वाण का प्रक्षेपण) के अन्त., द्रष्ट. आगे.

आस<sup>२</sup> स. उ. प. में आसा का विपरिवर्तित स्वरूप, निरा., (आशारहित), विगता., (आशा या कामना से मुक्त) के अन्त., द्रष्ट. (आगे).

आस<sup>३</sup> अस का परोक्ष भूत, प्र. पु., ए. व. [आस], हुआ था, केवल इतिहा. (इति + हि + आस, ऐसा घटित हुआ था) के उ. प. के रूप में प्रयुक्त, इतिहा. के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आस' पु., अस (भोजन करना) से व्यु., [आश], भोजन, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, पातरा. [प्रातःकाल का भोजन, नाश्ता], सायमा. [सायंकालीन भोजन], आदि के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आसंस त्रि., आ + असं से व्यु., किसी (वस्तु) की कामना करने वाला, इच्छुक, आशा रखने वाला — सो पु., प्र. वि., ए. व. — सो हि अरहत्तं आसंसति पत्थेतीति आसंसो, प. प. अट्ट. 57; निरासो आसंसो विगतासो ..., अ. नि. 1(1).131; प. प. 109; आसंसोति आसंसमानो पत्थयमानो, अ. नि. अट्ट. 2.78.

आसंसति / आसंसति / आसीसति आ + असं का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आशंसते], कामना करता है, आशा करता है — आसिसि इच्छायं आपुब्बो सिसि इच्छायं वत्तति, आसंसति आसंसत एव पुरिसो, सद. 2.448; सो हि अरहत्तं आसंसति पत्थेतीति आसंसो, प. प. अट्ट. 57; नेव इमं लोकं आसीसति न परलोकं, पेटको. 304; यावतासीसती पोसो तावदेव पवीणति, जा. अट्ट. 3.342; तत्थ आसीसतेवाति आसीसतियेव पत्थेतियेव, जा. अट्ट. 3.220; "नासीसते लोकमिमं परं लोकञ्चाति, पेटको. 304; परं लोकं नासीसति पररूपवेदनासञ्जासङ्कारविञ्जाणं, इमं लोकं नासीसति छ अज्झात्तिकानि आयतनानि, महानि. 43; — न्ति ब. व. — आसीसन्ति थोमयन्ति अभिजप्पन्ति जुहन्ति, सु. नि. 1052;

## आसंसा

## 249

## आसङ्गा

— सरे आत्मने, वर्त, प्र. पु. ब. व. — परतो आसीसरे बाला, स. नि. 1(1).39; — सीस/साहि अनु. म. पु. ए. व. — आसीसेव तुवं राज, आसा फलवती सुखा, जा. अहु. 3.219; आसीसेवाति आसीसाहियेव पथेहियेव, जा. अहु. 3.220; — सेथ विधि, आत्मने, प्र. पु. ए. व. — आसीसेथेव पुरिसो, जा. अहु. 1.258; जा. अहु. 4.240; — सन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — आरोगभाव आसीसन्तो आह, उदा. अहु. 100; — सतो नपुं, ष. वि., ए. व. — न भावितमासीसतो समनुज्जो होति, दी. नि. 3.35; — सिंसता तृ. वि., ए. व. — जनहितं आसिंसता पूजिय, म. वं. 30.100; — सन्ता पु., प्र. वि., ब. व. — जीवितं आसीसन्ता, वि. व. अहु. 286; — मानो वर्त. कृ., आत्मने, पु., प्र. वि., ए. व. — आसंसोति आसंसमानो पथयमानो, अ. नि. अहु. 2.78; — सं वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — आसीसन्ति थोमयन्ति, सु. नि. 1052; स. प. में वर्त. कृ.; आसीसमानरूपोव, परि. 276; — नीय/सितब्ब त्रि., सं. कृ., कामना करने योग्य, इच्छा करने योग्य — यं नपुं, प्र. वि., ए. व. — आसिंसनीयं निच्चसुखप्पदं, भेसज्ज. 14.

आसंसा स्त्री., [अशंसा], इच्छा, कामना, आशा — यं सप्त. वि., ए. व. — आसंसायज्झि अनागतेपि वत्तमानवचनं इच्छन्ति सदकोविदा, सु. नि. अहु. 2.50; आसंसायं भूतवचनं, पटि. म. अहु. 2.131.

आसंसुक त्रि., [आशंसु], आशाओं से परिपूर्ण, इच्छा करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — अकम्मकामा अलसा, परदत्तपजीविनो, आसंसुका सादुकामा, थेरीगा. 273; आसंसुकाति ततो एव घासच्छादनादीनं आसीसनका, थेरीगा. अहु. 242.

आसक त्रि., स. उ. प. में ही प्रयुक्त, खाने वाला, स. उ. प. में अना., अनात्त. के अन्त. द्रष्ट.

आसङ्गति आ + √सङ्ग का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आशङ्गते], आशंका करता है, डरता है — मित्तस्स भेदमेव आसङ्गति, जा. अहु. 3.166; तुम्हेसु कच्चि आसङ्गति, जा. अहु. 4.278; — ह्यामि उ. पु., ए. व. — अत्तनो जीवितविनासं आसङ्गामि, जा. अहु. 3.221; — न्ति प्र. पु., ब. व. — तमेव भिक्खु आसङ्गन्ति, पाचि. अहु. 140; — थ म. पु., ब. व. — कथं पन तुम्हे आसङ्गथाति, उदा. 118; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — पुत्तं आसङ्गन्तो नीहरि, जा. अहु. 2.171; अत्तनो यूथपरिहरणं आसङ्गन्तो, जा. अहु.

3.106; — मानो उपरिवत्, आत्मने. — रज्जो पज्जोत्तस्स आसङ्गमानो, म. नि. 3.56; — माना प्र. वि., ब. व. — अत्तनो रज्जविपतिं आसङ्गमाना, जा. अहु. 1.327; पुब्बे राजानो पुत्ते आसङ्गमाना, जा. 3.104; — हि अद्य, म. पु., ए. व. — मा त्वं पुत्तस्स किञ्चि पापकं आसङ्गि, जा. अहु. 1.165; न खो मोग्गत्तानं त्वज्जेव आसङ्गितब्बयुत्तकं आसङ्गि, जा. अहु. 3.29; सीलभेदे आसङ्गं करिसु, ध. प. अहु. 2.333; — हिंसु प्र. पु., ब. व. — पोराणकपण्डितापि आसङ्गिसूति, जा. अहु. 3.29; — इत्थि आत्मने, म. पु., ब. व. — मा अज्जं किञ्चि आसङ्गित्थ, जा. अहु. 1.155; — इतब्ब सं. कृ. — ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. — भिक्खवे कित्तो नाम आसङ्गितब्बो, जा. अहु. 3.181; — ब्वं नपुं, प्र. वि., ए. व. — पोराणकपण्डितापि आसङ्गितब्बं आसङ्गिसुयेवाति वत्ता अतीतं आहरि, तदे., — युत्तक त्रि., आशंका करने योग्य — कं नपुं, प्र. वि., ए. व. — आसङ्गितब्बयुत्तकं नाम आसङ्गितुं वट्ठीति पलासदेवताय सङ्गि मन्तेन्तो ..., जा. अहु. 3.181; भिक्खवे, आसङ्गितब्बयुत्तकं नाम आसङ्गितुं वट्ठीति ..., जा. अहु. 3.351; — इत्तुं निमि. कृ. — आसङ्गितुं वट्ठीति, जा. अहु. 3.181.

आसङ्गनीय त्रि., आ + √सङ्ग का सं. कृ. [आशङ्गनीय], आशंका या सन्देह करने योग्य, भय करने योग्य, अनिश्चित, संदिग्ध — यो पु., प्र. वि., ए. व. — ... तवाचरियेन कतन्ति वुत्ते तुण्हीभूतो अधिवासेति, आसङ्गनीयो होति, दी. नि. अहु. 1.50; स. उ. प. में, अना. — ता स्त्री., भाव., आशंका से रहित स्थिति, भयरहित अथवा सुरक्षित स्थिति — य तृ. वि., ए. व. — ... अनासङ्गनीयताय पब्बज्जालिङ्गसमादानादीनि अनुतिट्ठन्तो धम्मेन वाणिज्जं करोति नाम, उदा. अहु. 272; — पदेस पु., अनिश्चित प्रकृति का क्षेत्र अथवा विषय — से सप्त. वि., ए. व. — आसङ्गनीयपदेसे उत्त्वा, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).269; आसङ्गनीयपदेसे उत्त्वा बीवरं पारुपित्वा ..., दी. नि. अहु. 1.155.

आसङ्गा स्त्री., [आशङ्गा], भय, अनिश्चितता, सन्देह भरी मानसिक स्थिति, प्र. वि., ए. व. — भयं वा आसङ्गा वा नत्थि, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).319-320; — ङ्ग हि. वि., ए. व. — आसङ्गं करिस्सन्तीति, पाचि. अहु. 186; बोधिसत्तो ... आसङ्गं कत्वा ... कुमारिकाय आसङ्गाति नाम अकासि, जा. अहु. 3.218; स. उ. प. के रूप में, अज्जिणा,

## आसङ्गा

250

आसत्त

अना., निरा., स्तुप्पलंगसदिसा., सम्पयोगा., सा. के अन्त.  
द्रष्ट.

**आसङ्गा** स्त्री., व्य. सं., एक तपस्वी की दत्तक पुत्री का नाम, प्र. वि., ए. व. — आसङ्गा कुमारिका तं दिवसं फलिकवातपानं, जा. अष्ट. 3.219.

**आसङ्गिहृदय** त्रि., ब. स., आशंका से ग्रस्त हृदय वाला, शङ्खालु हृदय वाला — नियतं आसङ्गिहृदया भुसं, चू. वं. 65. 14; स. उ. प. के रूप में, गमना., भया., भेदा. के अन्त. द्रष्ट.

**आसङ्गित** त्रि., आ + ऋसक से व्यु. [आशङ्कित], संदिग्ध, आशंका का विषय, सन्देह का पात्र — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — "अतिचारिनी"ति आसङ्गिता, वि. व. अष्ट. 88; — **परिसङ्गित** त्रि., आशंका अथवा भय एवं सन्देह से परिपूर्ण — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आसङ्गितपरिसङ्गितोव होमि, ध. प. अष्ट. 1.127; वायसो आसङ्गितपरिसङ्गितो यतप्पयतो, ... योगिना योगावचरेन आसङ्गितपरिसङ्गितेन यतप्पयत्तेन उपडिताय, मि. प. 339; — **समाचार** त्रि., ब. स., संदिग्ध आचरण वाला, दूसरो पर सन्देह करने वाला, शङ्खालु प्रकृति वाला — रो पु., प्र. वि., ए. व. — सङ्गस्सराचारोति आसङ्गितसमाचारो, स. नि. अष्ट. 1.113.

**आसङ्ग** पु., [आसङ्ग], आसक्ति अथवा लगाव — **करण** त्रि., लगाव अथवा आसक्ति को उत्पन्न करने वाला, आसक्तिजनक — णो पु., प्र. वि., ए. व. — आसङ्गीति आसङ्गकरणो, जा. अष्ट. 4.11; स. उ. प. के रूप में, अनङ्गा, उत्तरा. के अन्त. द्रष्ट.

**आसङ्गी** त्रि., आसङ्ग से व्यु. [आसङ्गिन], लगाव पैदा करने वाला, आसक्ति-जनक — ङी प्र. वि., ए. व. — आसङ्गीति आसङ्गकरणो, जा. अष्ट. 4.11.

**आसच्छेद** पु., तत्पु. स. [आशाछेद], आशा का विनाश, आशा का उच्छेद — दं द्वि. वि., ए. व. — मा आसच्छेदं करोहीति, जा. अष्ट. 3.220; — **नकम्म** नपुं., आशा को नष्ट कर देने वाला काम, निराशाजनक कर्म — म्मं द्वि. वि., ए. व. — तेसमिपि आसच्छेदनकम्मं त्वमेव करोसीति वदति, जा. अष्ट. 5.397.

**आसज्ज** आ + ऋसद का सं. कृ. [आसाद्य], क. प्राप्त करके, समीप जा कर, पहुँच कर, आमने सामने हो कर, ख. आक्रमण कर, अपमानित कर, उत्तेजित कर, उद्विग्न बना कर, असम्य रूप से आचरण कर, प्रहार कर — तं भगवन्तं गोतमं एवं आसज्ज आसज्ज अवचासि, दी. नि.

1.93; यावज्जिदं भोतो गोतमस्स एवं आसज्ज आसज्ज बुच्चमानस्स ..., म. नि. 1.318; आसज्ज आसज्जाति घट्टेत्वा घट्टेत्वा, दी. नि. अष्ट. 1.223; आसज्ज उपनीय वाचा भासिता, अ. नि. 1(1).200; म. नि. 3.191; न त्वेव भवन्तं गोतमं आसज्ज सिया पुरिसस्स सोत्थिभावो, म. नि. 1.301; सो आसज्ज उहे बालं, स. नि. 1(1).85; आसज्जाति पत्वा, स. नि. अष्ट. 1.118; काकोव सेलमासज्ज, स. नि. 1(1).145; अनरियं गुणमासज्ज, अ. नि. 1(1).228; तं खुरचक्कं आसज्ज पापुणित्वा, जा. अष्ट. 1.347; पाणमासज्ज पाणिभि, जा. अष्ट. 5.363.

**आसज्जन** नपुं., आ + ऋसज्ज से व्यु., कि. ना. [आसज्जन], आकर सट जाना, किसी के प्रति लाग-लगाव या किसी के साथ दृढभाव से चिपकाव — नद्ध पु., लगाव या चिपकाव का अर्थ — द्वेन तृ. वि., ए. व. — रुपादीसु आसज्जनद्धेन आसत्तियो, सारत्थ. टी. 3.361.

**आसति** ऋस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्ते], बैठता है, ठहरता है, रुकता है, रह जाता है — सेति चेव आसति च एत्थाति सेनासन्, दी. नि. अष्ट. 1.170; अ. नि. अष्ट. 2.379; — **सीयते** कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. — आसीयते आसितब्बं आसनीयं, क. व्या. 542; — **सेथ** विधि., प्र. पु., ब. व., आत्मने. — सुखं मतुस्सा आसेथ, जा. अष्ट. 5.209; — **सेय्युं** उपरिवत्, परस्मै. — आसेथाति आसेय्यु निसीदेय्युं, जा. अष्ट. 5.215; — **सित्थ** अद्य, प्र. पु., ब. व., आत्मने. — तुण्हीमासित्थ उभयो, न सज्जलेसुमासना, जा. अष्ट. 5.334; — **सितुं** निमि. कृ. — तुण्ही मासितुं पतिरूपंति, दी. नि. अष्ट. 2.198; — **सितब्बं/सनीयं** सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. — आसितब्बं, आसनीयं, क. व्या. 542.

**आसत्त** त्रि., आ + ऋसज्ज से व्यु., भू. क. कृ. [आसक्त], 1. लगावयुक्त, विषय-भोगों के प्रति प्रबल तृष्णा रखने वाला, 2. किसी स्थान के साथ बराबर जुड़ा रहने वाला (स्थायी रूप से वहाँ रहने वाला) — आसत्तो तु च तप्परो, अभि. प. 726; सत्तायं च जनें सत्तो आसत्तो सो तिलिङ्गिको, अभि. प. 816; — **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. — सत्तो गुहायन्ति गुहायं सत्तो विसत्तो आसत्तो, लग्गो लग्गितो पलिबुद्धो, महानि. 17; ... बोधियं सत्तो आसत्तोतिपि बोधिसत्तो, स. नि. अष्ट. 2.19; — **त्ता** ब. व. — सत्ताति आसत्ता विसत्ता लग्गा लग्गिता ..., जा. अष्ट. 3.213; — **त्ता** स्त्री., भाव., आसक्ति या लगाव की अवस्था, आसक्तिभाव — य तृ.

## आसत्ति

251

## आसन

वि., ए. व. - एसा ... विसफलताय विसपरिभोगताय  
रूपादीसु विसत्तताय आसत्तताय च विसत्तिकाति सङ्गं गता  
..., थेरगा. अट्ट. 2.83; - विसत्त त्रि., आसक्ति से युक्त  
एवं पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. -  
जटाय जटितो आसत्तविसत्तो तत्थ विलग्गो, अप. अट्ट.  
1.167; - ता स्त्री., द्वि. वि., ब. व. - आरम्मणेसु  
आसत्तविसत्ता आसत्तियो छिन्दित्वा, अ. नि. अट्ट.  
2.117; - विसत्ततादि त्रि., आसक्त एवं विसक्त इत्यादि  
- दीहि नपुं., तृ. वि., ब. व. - आरम्मणेसु  
आसत्तविसत्ततादीहि कारणेहि विसत्तिका वुच्चति, स. नि.  
अट्ट. 1.19; स. उ. प. के रूप में अना. एवं अन्वा. के  
अन्त., द्रष्ट.

आसत्ति स्त्री., आ + √सज्ज से व्यु. [आसक्ति], लगाव,  
तृष्णा, सांसारिक जीवन के प्रति मन का लगाव, इच्छा,  
विषय-भोगों को भोगने की प्रबल कामना - त्ति प्र. वि., ए.  
व. - यदि आसत्ति उपपज्जति, नेत्ति. 105; - यो द्वि. वि.,  
ब. व. - सब्बा आसत्तियो छेत्वा, चूळव. 284; रूपादीसु  
आसज्जनद्वेन आसत्तियो, तण्हायो, सारत्थ. टी. 3.361; -  
त्तिं द्वि. वि., ए. व. - उद्धं सरं आसत्तियेव अभिवदन्ति,  
म. नि. 3.20; भवेसु आसत्तिमकुब्बमानो, सु. नि. 783;  
तस्स आसत्तिं उप्पादेतुकामा, थेरगा. अट्ट. 251; - या तृ.  
वि., ए. व. - भवासवो आसत्तिया पहातब्बो, पेटको. 234;  
बहुल त्रि., ब. स., अत्यधिक लगाव रखने वाला, प्रबल  
आसक्ति से ग्रस्त - स्स पु., ष. वि., ए. व. - तण्हा  
आसत्तिबहुलस्स, नेत्ति. 13; स. उ. प. के रूप में निरा. के  
अन्त. द्रष्ट.

आसद<sup>1</sup> 1. पु., [बौ. सं. आसादना, स्त्री.], आक्रमण,  
आ धमकना, हिंसक मनोवृत्ति के साथ किसी के पास  
आ धमकना, तिरस्कार - दो प्र. वि., ए. व. - मा कुज्जर  
नागमासदो दुक्खञ्जि कुज्जर नागमासदो, चूळव. 334;  
... नागमासदो ति ... आसादनं बधकचित्तेन उपगमनं नाम  
दुक्खं, चूळव. अट्ट. 109; 2. आ + √सद का अद्य., म.  
पु., ए. व. दूर भगाओ, आक्रमण करो - मेतमासदो, म.  
नि. 1.410.

आसद<sup>2</sup> पु., आ + √सद से व्यु., वृक्ष में ऊपर लगे हुए फलों  
को तोड़ने हेतु लगी के अग्रभाग में लगा हुआ धातु का  
अंकुश या हुक - आसदज्ज मसं जटं, जा. अट्ट. 7.292;  
आसदज्ज मसं जटन्ति आकङ्खित्वा फलानं गहणत्थं अकुसं,  
जा. अट्ट. 7.292.

आसन नपुं., √आस से व्यु., क्रि. ना. [आसन], 1. वह,  
जिस पर बैठा जाए, पीठ, पीड़ा, मञ्च, सिंहासन, बैठने के  
लिए कोई भी उपकरण, 2. बैठना - आसनं खन्धदेसम्हि,  
अभि. प. 363; 765; - नं' प्र. वि., ए. व. - आसनं  
पञ्जपेतब्बं, महाव. 56; उपोसथागारे आसनं अपञ्जत्तं  
होति, महाव. 147; - नं' द्वि. वि., ए. व. - आसनं तस्स  
मज्झमहि कारापेत्वा महारहं, चू. वं. 82.10; इदं आसनं  
निसीदाहीति, स. नि. 1(2)187; पसत्रो आसनं दज्जा, वि.  
व. (पु.) 5; - नेन तृ. वि., ए. व. - ... वा आसनेन  
वा निमन्तेय्याम, म. नि. 2.285; थेरं आसनेन निमन्तेन्तो,  
म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.162; न मं कोचि आसनेनपि  
निमन्तेसि, दी. नि. 1.79; - ना/म्हा प. वि., ए. व.  
- इमम्हा आसना अनन्धो बुद्धहेय्य, म. नि. 2.189; वत्था  
आसना बुद्धहि, ध. प. अट्ट. 2.302; अथासनम्हा ओरुद्ध,  
जा. अट्ट. 7.132; - स्स ष. वि., ए. व. - सो नातिदूरे  
नाच्चासन्ने आसनरस परिवत्तति, म. नि. 2.346; - सिमं/ने  
सप्त. वि., ए. व. - आसनस्मिं कायं पक्खिपति, म. नि.  
2.346; आसने उपविद्धो सङ्गो, क. व्या. 280; आसने विरजं  
वीतमलं धम्मचक्रं उदपादि, दी. नि. 2.32; - नानि' प्र.  
वि., ब. व. - संविज्जन्ति आसनानि, म. नि. 2.24;  
आसनानीति पल्लङ्गपीठपलालपीठकादीनि, म. नि. अट्ट.  
(म.प.) 2.28; - नानि' द्वि. वि., ब. व. - आसनानि  
पञ्जत्तानि, स. नि. 2(2).184; आसनानि धोवापेसि, थेरगा.  
अट्ट. 1.129; द्वे आसनानि उपेत्वा, चूळव. अट्ट. 118; -  
नेसु सप्त. वि., ब. व. - तेन खो पन समयेन सम्बहुला  
सक्या ... आसनेसु निसिन्ना होन्ति, दी. नि. 1.79; स. उ.  
प. में, अग्गा., अना., अनुचिण्णा., उच्चा., उत्तमा.,  
उपद्धा., ऊरुबद्धा., एका., एकादायिका., एकाभोजना.,  
कमला., कुसुमा., जया., ठाना., थेरा., दक्खिना., दण्डा.,  
दीघा., देवा., धम्मा., धुरा., निरा., निसिन्ना., निसीदना.,  
नीचा., पचुरा., पच्छा., पच्छिमा., पञ्जत्ता., पटिच्छन्ना.,  
पटिरूपा., पण्डुकम्बलसिला., पत्ता., पासादभद्रा., पुप्फा.,  
बुद्धा., भुजगा., मज्झिमा., मणिमया., मनोसिला., महा.,  
रतना., राजा., रिता., वजिरा., वालिका., विवित्ता., विसमा.,  
सका., सङ्गत्थेरा., सपरिवारा., समा., सरा., सयना., सीहा.,  
सुपञ्जत्ता., सुभा., सेना., सोण्णा., हुता., हेमा. के अन्त.  
द्रष्ट., स. उ. प. के प्रयोगों में असन (भोजन)  
तथा आसन के मध्य संप्रमज्जित स्थिति के अनेक स्थल  
द्रष्ट.

## आसनक

252

## आसनपूजा

आसनक नपुं., आसन + क के योग से व्यु., छोटा सा आसन, सुन्दर आसन – कं द्वि. वि., ए. व. – अभागातानासनकं अदासिं, वि. व. 1.5; अप्पकता अनुळारत्ता च आसनकं, वि. व. अ. 18.

आसनककुसल त्रि., तत्पु. स. [आसनकुशल], आसनों के प्रयोग में कुशल, विनय-शिक्षापदों के अनुरूप आसनों का प्रयोग करने वाला, ज्येष्ठ एवं कनिष्ठ भिक्षुओं के लिए निर्धारित आसनों को ग्रहण न करने वाला – लेन तृ. वि., ए. व. – आसनकुसलेन भवितव्यं, परि. 311; सङ्गे विहरन्तेन आसनकुसलेन भवितव्यं, म. नि. 2.143; – ता स्त्री., भाव., विनय-शिक्षापदों के अनुरूप आसनों के प्रयोग में दक्षता या कुशलता – य तृ. वि., ए. व. – आसनकुसलताय एकमन्तं निसीदन्ति, पारा. अ. 1.94; स. नि. अ. 1.18.

आसनघर पु., ऐसा भवन जिसमें पाषाणनिर्मित आसन या वेदिकाएं हों तथा जिसमें बुद्ध के शरीरधातु के पवित्र अवशेष रखे गए हों – रं द्वि. वि., ए. व. – बोधिघरं आसनघरं समुज्जनिअट्ठो, चूळव. अ. 70; 71; – रे सप्त. वि., ए. व. – आसनघरेपि एसेव नयो यस्मिं पन आसनघरे धातु निहिता होति ..., सारत्थ. दी. 3.235.

आसनद्वान/आनिसदद्वान नपुं., तत्पु. स. [आनिषीदनस्थान], बैठने का स्थान – ने सप्त. वि., ए. व. – आनिसदद्वाने लग्गानं पंसुरजवालिकानं फोटनत्थं, स. नि. अ. 3.138.

आसनथाली स्त्री., द्व. स. [आसनस्थाली], आसन एवं थाली, प्र. वि., ए. व. – कारके कचुकम्मक्के क्रियासन्निरस्सये यथा धारेन्ती आसनथाली 'क्रियाधारो'ति कथिता, स. 1.9.

आसनदान नपुं., तत्पु. स. [आसनदान], आसनों का दान – नेन तृ. वि., ए. व. – इमिनासनदानेन ..., विनिपातं न गच्छसि, अप. 2.5.

आसनधोवनपरिभण्डकरणादि त्रि., आसनों को धोना और पोछना आदि – दीनि नपुं., द्वि. वि., ब. व. – आसनधोवनपरिभण्डकरणादीनि ..., म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).2.

आसनन्तरिका स्त्री., 1. कलह के उपशमन के उपरान्त एक आसन का व्यवधान रख कर भिक्षुओं के एक-एक कर एक साथ बैठने की प्रक्रिया, 2. कलहरत भिक्षुओं को एक आसन का अन्तर देकर एक साथ बैठाने की पद्धति – य

तृ. वि., ए. व. – आसनन्तरिकाय निसीदितव्यं, महाव. 462; आसनन्तरिकाय ... एकेकं आसनं अन्तरं कत्वा, महाव. अ. 407.

आसनपञ्जति स्त्री., तत्पु. स. [आसनप्रज्ञप्ति], आसनों का निर्धारण, आसनों के विषय में प्रज्ञपन अथवा जानकारी – तिं द्वि. वि., ए. व. – दिस्वा आसनपञ्जतिं नेमिता, म. वं. 14.53.

आसनपञ्जापक पु., तत्पु. स. [आसनप्रज्ञापक], भिक्षुओं के लिए आसनों का निर्धारण करने वाला, आसन तैयार करने वाला अथवा बतलाने वाला, आसन-व्यवस्थापक, आसन-प्रबन्धक – कं द्वि. वि., ए. व. – सङ्गो ... अजितं सम्मन्ति – थेरानं भिक्षून् आसनपञ्जापकं, चूळव. 475.

आसनपटिक्खित्त त्रि., ब. स., कभी भी न बैठने वाला, आसन को कभी भी स्वीकार न करने वाला, सदा तन कर खड़ा रहने वाला – न्तो पु., प्र. वि., ए. व. – उम्भट्ठकोपि होति आसनपटिक्खित्तो, दी. नि. 1.150; पु. प. 166; – ता ब. व. – निगण्ठा उम्भट्ठका आसनपटिक्खित्ता, म. नि. 1.130.

आसनपरियन्त पु., कर्म. स., 1. सबसे अन्त वाला आसन, 2. आसन का छोर अथवा किनारा, 3. एक दम नया आसन न्तो प्र. वि., ए. व. – यो होति सङ्गस्स आसनपरियन्तो ... सो तस्स पदातब्बो, चूळव. 78; आसनपरियन्तोति भत्तग्गादीसु सङ्गनवकासनं बुच्चति स्वास्स दातब्बो, चूळव. अ. 9; – न्तो सप्त. वि., ए. व. – परिवसन्तो भत्तग्गे आसनपरियन्ते निसीदि, पाचि. 47; आसनपरियन्ते निसिन्ना उच्छिद्दपायसं परिभुज्जि, ध. प. अ. 1.297.

आसनपरियन्तिक त्रि., भोजन करने हेतु केवल एक ही बार आसन पर बैठने वाला तथा आसन से उठने के उपरान्त पुनः भोजन ग्रहण न करने वाला, जब तक आसन से नहीं उठ जाता तब तक भोजन करते रहने वाला – को पु., प्र. वि., ए. व. – आसनपरियन्तिको वा याव न बुद्धाति ताव भुज्जनतो, विसुद्धि. 1.67.

आसनपूजा स्त्री., तत्पु. स. [आसनपूजा], आसन की (पुष्पार्पण आदि द्वारा) पूजा, प्रस्तर-वेदिका की पूजा – जं द्वि. वि., ए. व. – आसनपूजं कारेत्वा, दी. नि. अ. 3.137; सामपेरेहि नानापुष्पाणि आहरापेत्वा ... तलसन्धरणपूजं आसनपूजञ्च कारेत्वा, म. नि. अ. (उप.प.) 3.89; चित्तलपब्बते पत्तङ्गपुष्फेहि कतं आसनपूजं पस्सतो ..., विसुद्धि. 1.166; – य सप्त. वि., ए. व. – इत्थन्नाम

## आसनप्यमान

253

## आसन्दि

तुहं मालागन्धादीसु पति आसनपूजाय पति पिण्डपाते पति ..., दी. नि. अष्ट. 3.137.

**आसनप्यमान** त्रि., ब. स. एक आसन अथवा वैदिका के आकार वाला, एक वैदिका के बराबर लम्बा-चौड़ा — न नपुं., प्र. वि., ए. व. — आसनप्यमानं निमित्तं उदपादि, विसुद्धि. 1.166.

**आसनसन्धविक** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम — को प्र. वि., ए. व. — इत्थं सुदं आयस्मा आसनसन्धविको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.275.

**आसनसाला** स्त्री., तत्पु. स. [आसनशाला], बैठने अथवा विश्राम करने के लिए निर्मित भवन, सभा-भवन — लं द्वि. वि., ए. व. — भिक्षुनुपस्सयं अन्तरारामं आसनसालं तिथिपसेय्यञ्च, कट्ठा. अष्ट. 204; आसनसालं सम्मज्जन्तेन वत्तं जानितब्बं, पाचि. अष्ट. 34; पिण्डाय चरित्वा विहारं वा आसनसालं वा गत्वा, पाचि. अष्ट. 100; — तो प. वि., ए. व. — आसनसालतो पत्तं आहरित्वा, महाव. अष्ट. 400; — यं सप्त. वि., ए. व. — तेसुं तेसुं गामेसु आसनसालायं वा न तं आसनमत्थि, दी. नि. अष्ट. 1.154; आसनसालायं वा गेहे वा निसीदापेत्वा, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).266; — य प. वि., ए. व. — आसनसालाय सम्मज्जन उपलेपनादीनि करोत्ता, अ. नि. अष्ट. 2.135; स. उ. प. के रूप में, अम्बलकोडुका, जिण्णा, महेजा. के अन्त. द्रष्ट.

**आसनाभिहार** पु., तत्पु. स., आसन पर बैठने हेतु निवेदन — रं द्वि. वि., ए. व. — आसनाभिहारं सादियति, चूळव. 50; आसनाभिहारं अरहति, जा. अष्ट. 1.90.

**आसनारह** त्रि., तत्पु. स. [आसनाह], क. आसन प्रदान करने योग्य (सम्माननीय व्यक्ति) — हो पु., प्र. वि., ए. व. — अत्थि पुग्गलो आसनारहो, परि. 250; — रस पु., प. वि., ए. व. — आसनारहस्स न आसनं देति, म. नि. 3.253; **ख.** बैठने के लिए उपयुक्त (आसन) — हं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — आसनारहं धम्मासनं पज्जापेत्वा, पारा. अष्ट. 1.9; आसनारहन्ति निसीदनारहं, सारत्थ. टी. 1.52.

**आसनिक** त्रि., केवल स. उ. प. में आसनासनिक रूप में प्रयुक्त, आसन पर आसीन, आसन को ग्रहण किया हुआ, अग्गासना., असमानासना., एकासना., समानासना. के अन्त. द्रष्ट.

**आसनिय** त्रि., थेरो के नामों के उपनाम के रूप में उ. प. में प्रयुक्त, आसन वाला, एका., कुसुमा., पुष्पा. जैसे थेरनामों के अन्त. द्रष्ट.

**आसनीय** त्रि., आस का सं. कृ., बैठने या बैठाने योग्य — यं नपुं., प्र. वि., ए. व. — भावकम्मोसु तब्बानीया ..., आसनीयं, क. व्या. 542.

**आसनपट्टाहक** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, — रो प्र. वि., ए. व. — इत्थं सुदं आयस्मा आसनपट्टाहको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.145.

**आसनूदक** नपुं., द्व. स. [आसनोदक], (आए हुए अतिथि को सम्मान के रूप में दिया जाने वाला) आसन एवं जल — कं द्वि. वि., ए. व. — न तादिस्ती अरहति आसनूदकं, जा. अष्ट. 5.395; — दायी त्रि., आसन एवं जल प्रदान करने वाला — नं पु., 1. वि., ब. व. — आसनूदकदायीनन्ति अभागतानं आसनञ्च उदकञ्च दानसीलानं, जा. अष्ट. 4.394.

**आसनूपगत** त्रि., तत्पु. स. [आसनोपगत], आसन पर बैठा हुआ, आसीन — तो पु., प्र. वि., ए. व. — उपड्डितो रुक्खमूलस्मिं आसनूपगतो मुनि, सु. नि. 713.

**आसनोदक** नपुं., द्व. स. [आसनोदक], आसन एवं जल — केन तु. वि., ए. व. — अब्भागते च आसनोदकेन पटिपूजेस्सामाति, अ. नि. 2(1).33; — दानादि त्रि., आसन एवं जल का प्रदान आदि, नपुं., प्र. वि., ए. व. — आसनोदकदानादि वेय्यावच्चन्ति सज्जितं, सद्धम्मो. 222.

**आसन्दि / आसन्दी** स्त्री., आ + √सद से व्यु. [आसन्दी, आसद्यते, अस्याम् इति], 1. तर्कियेदार आरामकुर्सी, आराम के साथ बैठने हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला चार पायों वाला बड़ा आसन अथवा चार कोनों वाला विशाल पीठ, 2. **विनय के सन्दर्भ में विशेष अर्थ**, भिक्षु के लिए बुद्ध द्वारा वर्जित ऊंचे आसनों की सूची में एक, आठ सुगत अङ्गुलों की माप से अधिक ऊंचाई वाला आसन या पलंग, प्र. वि., ए. व. — दुतिये आसन्दी नाम अतिक्कन्तप्पमाणा वुच्चति, कट्ठा. अष्ट. 318; आसन्दीआदीसु आसन्दीति पमाणातिक्कन्तासनं, महाव. अष्ट. 347; — न्दि द्वि. वि., ए. व. — आसन्दिं सुकतं कत्वा, अप. 1.415; आसन्दिं कुटिकं कत्वा, ओग्ह अज्जनं वनं, थेरगा. 55; आसन्दीनाम दीघपादकं चतुरस्सपीठं, आयतं चतुरस्सप्पि अत्थियेव, यत्थ निसीदितुमेव सक्का, न निप्पज्जितुं तं आसन्दिं कुटिकं कत्वा ..., थेरगा. अष्ट. 1.136; — या प. वि., ए. व. — आसन्दिया पादे छिन्दित्वा ... परिभुज्जन्तिया, ... अनापत्ति, कट्ठा. अष्ट. 318; अनुजानामि, भिक्षवे आसन्दिया पादे छिन्दित्वा परिभुज्जितुं ..., चूळव. 299; पादे आसन्दिया छेत्वा, विन. वि. 2285; 3. अर्थी — पञ्चम त्रि., ब. स.,



## आसन्दिक

254

## आसन्नचुतिक

पांचवें के रूप में, अर्थी पर लेटे हुए शव को मिलाकर (कुल चार लोग) — मा पु., प्र. वि., ब. व. — आसन्दिपञ्चमा पुरिसा मतं आदाय गच्छन्ति, दी. नि. 1.49; — पीठकारक त्रि., ऊंचे आसनों एवं पीठों को बनाने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — चण्डालो आसहं तत्थ आसन्दिपीठकारको, अप. 1.415.

आसन्दिक पु., [आसन्दिका, स्त्री.], चार कोणों वाला पीठ या बैठने का आसन, आठ अंगुलों से अधिक ऊंचाई वाला चौकोर आसन — को प्र. वि., ए. व. — आसन्दिकोति चतुरस्सपीठं बुच्चति उच्चकम्पि आसन्दिकन्ति वचनतो एकतोभागेन दीघपीठमेव हि अद्भुतलपादकं वड्ढति, चतुरस्स आसन्दिको पन पमाणातिक्कन्तोपि वड्ढतीति वेदितब्बो, चूळव. अड्. 59; सङ्गस्स आसन्दिको उप्पन्नो होति, चूळव. 275; आसन्दिको अतिक्कन्तपमाणापि च वड्ढति, विन. वि. 2827; — सण्ठान त्रि., ब. स., आसन्दी अथवा चतुष्कोणीय पीठ के आकार वाला — ना पु., प्र. वि., ब. व. — ... अड्ढन्ता चतुकोटिका चतुमूलिका आसन्दिकसण्ठाना, खु. पा. अड्. 33.

आसन्न त्रि., आ + √सद का भू. क. कृ. [आसन्न], क. काल, स्थान एवं संख्या की दृष्टि से समीप में स्थित, निकटस्थ, निकटवर्ती — समीपनिकटसन्नोपकट्वाभ्यास सन्तिकं अविदूरे च सामन्तं सन्निकटमुपपत्तिकं, अभि. प. 705; समीपे आसन्नन्ति, सद्. 3.880; — न्नं पु., द्वि. वि., ए. व. — आसन्नं अत्तनो सरीरसम्पक्कस्स आगतन्ति, जा. अड्. 7.263; — न्ना' प्र. वि., ब. व. — भिक्खू ... आसन्ना हुत्था, उदा. अड्. 327; — न्ना' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — कोधसामन्ताति कोधस्स आसन्ना, ध. स. अड्. 417; — न्नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तीसु कसिणेषु अज्जतरं आसन्नं कातब्बं, विसुद्धि. 2.55; ख. नपुं., पड़ोस, सामीप्य — न्ने सप्त. वि., ए. व. — आसन्नेव नो भगवा विहरति, इतो छसु योजनेसु, महाव. 330; नगरद्वारस्स आसन्ने मनुस्सानं भण्डकं ओतारेत्वा, स. नि. अड्. 1.259; सामन्ता आसन्ने अविदूरे महानि. 116; ग. नपुं., मृत्यु के क्षण के तुरन्त पूर्व किया गया कर्म, कर्म का एक विशेष प्रभेद, आसन्नकर्म — न्नं प्र. वि., ए. व. — गरुक्कं आसन्नं आचिण्णं कटत्ताकम्मञ्चेति पाकदानपरियायेन, अभि. ध. स. 36; आसन्नन्ति मरणकाले अनुस्सरितं, तदा कतञ्च, अभि. ध. वि. टी. 154; गरुके असति आसन्नं, अभि. ध. वि. टी. 155; आसन्नञ्च कटत्ता च, कम्मन्ति समुदीरितं, अभि. अव. 1244; — त्तर त्रि., तुलनात्मक विशेष. [आसन्नतर].

अधिक पास वाला, अपेक्षाकृत अधिक निकटवर्ती — रं' नपुं., प्र. वि., ए. व. — यं आसन्नतरं अङ्गं तस्स ओरिमन्तेन परिच्छिन्दित्था, कङ्का. अड्. 212; — रं' नपुं., द्वि. वि., ए. व. — अनन्तरपच्चयमेव आसन्नतरं कत्वा पुच्छति, परि. अड्. 215; — त्त नपुं., आसन्न का भाव. [आसन्नत्व], निकटता, समीपता — त्ता प. वि., ए. व. — सोमनस्सिन्द्रियस्स आसन्नत्ता अप्पन्नापत्ताय, स. नि. अड्. 3.271; जेड्ढत्ता सेंड्ढत्ता आसन्नत्ता सब्बकालं सन्निहितत्ता, उदा. अड्. 351; अप्पनाय आसन्नत्ता समीपचारत्ता, विसुद्धि. 1.134; आसन्नत्ता भवङ्गस्स, अभि. अव. 903; स. उ. प. के रूप में; अच्छा., अनावरा., छाया., दूरा., द्वारा., नगरा., गरणा., लेना. के अन्त. द्रष्ट.

आसन्नकत त्रि., तत्पु. स., सद्यः किया गया, तुरन्त किया गया, कुछ समय पूर्व में किया गया — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — आसन्नकाले कते वत्तब्बमेव नत्थि, विसुद्धि. महाटी. 2.353; पाठा. आसन्नकाले कते; — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — 'पुब्बे सुचिण्णानीति' दत्त्वा कत्वा'ति हि आसन्नकतानि वुत्तानि, विसुद्धि. महाटी. 2.259.

आसन्नकारण नपुं., कर्म. स. [बौ. सं., आसन्नकारण], नजदीकी कारण, सबसे समीपवर्ती अथवा साक्षात् कारण, प्रधान कारण — णं प्र. वि., ए. व. — हिरोत्तप्यञ्च पनस्स विज्झहि पदद्धानन्ति वण्णितं आसन्नकारणन्ति अत्थो, विसुद्धि. 1.9; हिरोत्तप्येहीतिआदि तस्स आसन्नकारणभावसाधनं, विसुद्धि. महाटी. 1.27; आसन्नकारणं यं तु, तं पदद्धानसज्जितं, अभि. अव. 634; स. उ. प. के रूप में समथा. के अन्त. द्रष्ट.; — त्त नपुं., भाव., प्रधान कारण होना — त्ता प. वि., ए. व. — सम्मासम्बुद्धा सम्मासम्बोधिं अधिगच्छन्तीति आसन्नकारणत्ता, उदा. अड्. 247.

आसन्नकाल पु., कर्म. स., मृत्यु का समय, जीवन की अन्तिम घड़ी — ले सप्त. वि., ए. व. — कालं कत्वा आसन्नकाले गहितसीलं निस्साय तावतिसमवने निब्बत्तिंसु, स. नि. अड्. 1.51.

आसन्नगब्भा स्त्री., ब. स. [आसन्नगर्भा], शीघ्र प्रसव करने वाली नारी, अति शीघ्र शिशु को जन्म देने वाली, प्र. वि., ए. व. — आसन्नगब्भा मे माता, अप. 2.123; पाठा. आसन्नसत्ता; माता गरुगब्भा गब्भिनी पसुतासन्नगब्भाति अत्थो, अप. अड्. 2.229.

आसन्नचुतिक त्रि., ब. स., मरणासन्न, बहुत शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — ये पन

## आसन्नद्वान

255

## आसन्नवितक्कविचारपच्चत्थिक

आसन्नद्वितिका इदानीं चविस्सन्ति ते चवमाना ..., पारा. अट्ट. 1.123.

आसन्नद्वान नपुं. कर्म. स. [आसन्नस्थान], सीमावर्ती स्थान - ने सप्त. वि., ए. व. - तस्स विजिते आसन्नद्वाने एकस्मिं सरतीरे विस्सज्जापेसि, ध. प. अट्ट. 1.112; पुरिषपस्से विज्झातुकामो विय आसन्नद्वानेयेव ठितकण्टको, स. नि. अट्ट. 3.94.

आसन्नतक्कचारारि त्रि., निकट में स्थित वितर्क एवं विचार नामक ध्यानाङ्गों से मुक्त - रि स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आसन्नतक्कचारारि समापत्ति अयं इति, अभि. अव. 947.

आसन्नदूर त्रि., निकटवर्ती एवं दूर में स्थित - वसेन तृ. वि., क्रि. वि., समीपता एवं दूरी के कारण से - आसन्नदूरवसेन द्वे द्वे पच्चत्थिका, विसुद्धि. 1.309.

आसन्ननीवरणपच्चत्थिक त्रि., व. स., समीपस्थ नीवरणों का प्रतिपक्षीभूत - का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अयं समापत्ति आसन्ननीवरणपच्चत्थिका, विसुद्धि. 1.149.

आसन्नपच्चक्ख त्रि., द्व. स., निकट में एवं आंखों के सामने स्थित - वचन नपुं., समीपता एवं प्रत्यक्षता के अर्थों को कहने वाला सङ्केतक सर्वनाम - नं प्र. वि., ए. व. - आसन्नपच्चक्खवचनं, उदा. अट्ट. 170.

आसन्नपच्चत्थिक त्रि., ब. स. [आसन्नप्रत्यर्थिक], निकटस्थ शत्रु जैसा, पास में मौजूद अहितकारी विरोधी जैसा - को पु., प्र. वि., ए. व. - ... गुणदस्सनसभागताय रागो आसन्नपच्चत्थिको, विसुद्धि. 1.309; तस्मा मित्तमुखसपत्तो विय तुल्याकारेन दूसनतो रागो मेत्ताय आसन्नपच्चत्थिको, विसुद्धि. महाटी. 1.359; - केन पु., तृ. वि., ए. व. - आसन्नपच्चत्थिकेन रागेन अनाकङ्कनियं, थेरगा. अट्ट. 2.204; - का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - उपेक्खाब्रह्मविहारस्स ... अज्जानुपेक्खा ... आसन्नपच्चत्थिका, विसुद्धि. 1.310.

आसन्नपठमारूपचित्तपच्चत्थिक त्रि., निकटस्थ शत्रु के रूप में प्रथम आरूप्यचित्त से युक्त - त्थिकं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आसन्नपठमारूप चित्तपच्चत्थिकेन च, अभि. अव. 1008.

आसन्नपदेस पु., कर्म. स. [आसन्नप्रदेश], समीपवर्ती प्रदेश, निकट में स्थित क्षेत्र - सो प्र. वि., ए. व. - यथागामादीनं आसन्नपदेसो गामूपचारो नगरूपचारोति वुच्चति, विसुद्धि. 1.134; - से सप्त. वि., ए. व. -

आसन्नपदेसे अनुगतवेधं, स. नि. अट्ट. 3.114; मातापितृनं आसन्नपदेसे निस्सिन्, चरिया. अट्ट. 194.

आसन्नपीतिपच्चत्थिक त्रि., समीपवर्ती शत्रु के रूप में प्रीति को रखने वाला, वह, जिसमें प्रीति ही निकटस्थ शत्रु के रूप में रहे - का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अयं समापत्ति आसन्नपीतिपच्चत्थिका, विसुद्धि. 1.158.

आसन्नमवङ्गत्त नपुं. भाव., भवङ्गों की निकटता अथवा सामीप्य - ता प. वि., ए. व. - न ततो परं आसन्नमवङ्गत्ताति पटिक्खित्तं, विसुद्धि. 2.313.

आसन्नभूत त्रि., [आसन्नभूत], समीपवर्ती बन चुका, निकटस्थ हो चुका - त्त नपुं., भाव., निकटता, समीपवर्तितता - ता प. वि., ए. व. - आसन्नभूतता समं पटिपज्जति, पटि. म. अट्ट. 1.201.

आसन्नमरण त्रि., ब. स. [आसन्नमरण], मरणासन्न लगभग मरने वाला, शीघ्र प्राण त्यागने वाला - णो पु., प्र. वि., ए. व. - पुत्तसोकेन विप्पलपन्तोयेय आसन्नमरणो हुत्वा, ध. प. अट्ट. 2.137; यद्धि आसन्नमरणो अनुस्सरितुं सक्कोति, विसुद्धि. 2.235; - णं द्वि. वि., ए. व. - सा गन्त्यासन्नमरणं, म. वं. 22.35; - णेन तृ. वि., ए. व. - कतं चिन्तितमासन्न - मासन्नमरणेन तु, ना. रू. प. 351; - स्स पु., ष. वि., ए. व. - अतीतस्मिं भवे तस्स आसन्नमरणस्स हि, अभि. अव. 592; - णे सप्त. वि., ए. व. - यं पन कुसलाकुसलेसु आसन्नमरणे अनुस्सरितुं सक्कोति, तं यदासन्नं नाम, अ. नि. अट्ट. 2.108; - णा पु., प्र. वि., ब. व. - एकन्तमरणधम्मताय आतुरा आसन्नमरणा पण्डितमनुस्सा, जा. अट्ट. 3.174; - णेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - विसवेगेन आसन्नमरणेसु, जा. अट्ट. 3.174.

आसन्नरूपावचरज्ज्ञानपच्चत्थिक त्रि., ब. स., निकटस्थ शत्रु के रूप में रूपावचर-ध्यान से युक्त, वह, जिसमें रूपावचर ध्यान समीपवर्ती प्रत्यर्थी के रूप में प्राप्त हो - का स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आसन्नरूपावचरज्ज्ञानपच्चत्थिका अयं समापत्ति, विसुद्धि. 1.321; - कं नपुं., प्र. वि., ए. व. - आसन्नरूपावचरज्ज्ञानपच्चत्थिकेन च, अभि. अव. 998.

आसन्नवितक्कविचारपच्चत्थिक त्रि., ब. स., वह, जिसमें वितर्क एवं विचार निकटस्थ प्रत्यर्थी या शत्रु के रूप में विद्यमान हों, समीपस्थ शत्रु जैसे वितर्क एवं विचार से युक्त - त्थिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अयं समापत्ति आसन्नवितक्कविचारपच्चत्थिका, विसुद्धि. 1.152.

## आसन्नसन्निवेशवस्थित

256

## आसभसदिसत्ता

आसन्नसन्निवेशवस्थित त्रि., कर्म. स., सुव्यवस्थित पारस्परिक क्रम-विन्यास में विन्यस्त, एक दूसरे के साथ अत्यन्त निकट होकर कतारों में स्थित — तानं पु., प. वि., ब. व. — तत्थ आसन्नसन्निवेशवस्थितानं रुक्खानं समूहो वनं, खु. पा. अ. 152.

आसन्नसोमनस्स त्रि., ब. स., अत्यन्त समीपवर्ती सौमनस्य से युक्त — सं नपुं., प्र. वि., ए. व. — करोति पनिदं चित्तं, रूपामारम्भणं यतो, आसन्नसोमनस्सञ्च थूलसन्तविमोक्खतो, अभि. अव. 986; — पच्चत्थिक त्रि., समीपस्थ सौमनस्य का प्रत्यर्थी अथवा विरोधी — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आसन्नसोमनस्सपच्चत्थिकञ्च, अभि. अव. (अभि.टी.) 2.191; तस्मिं ज्ञाने इमं मरा निब्बिण्णं रूपं आरम्भणं करोतीति च, आसन्नसोमनस्सपच्चत्थिकन्ति, विसुद्धि. 1.317.

आसन्नाकुसलारिक त्रि., ब. स., वह, जिसमें अकुशल के प्रतिपक्षभूत कुशल धर्म समीप में ही विद्यमान हों, समीप में विद्यमान कुशल धर्मों वाला — रिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. — यस्मा अयं समापत्ति आसन्नाकुसलारिका, अभि. अव. 933.

आसन्नानन्तर त्रि., एकदम निकटवर्ती, अत्यधिक समीप में स्थित, बिना किसी व्यवधान के जुड़ा हुआ — रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — द्वे अनन्तरानि आसन्नानन्तरञ्च दूरानन्तरञ्च, स. नि. अ. 2.244.

आसप्पना स्त्री., आ + √सप्प से व्यु., प्रायः परिसप्पना के साथ प्रयुक्त [आसर्पण], शा. अ., रेंग कर पास पहुंचना, फिसलते हुए चलना, फिसलन, ला. अ., अविश्वास, शङ्का, सन्देह, अनिश्चय, विचिकित्सा, "यह ठीक है अथवा ठीक नहीं है" इस प्रकार की अनिश्चयपरक मनोवृत्ति, प्र. वि., ए. व. — आसप्पना परिसप्पना, स. 2.330; या कङ्गा कङ्गायना ... संसयो अनेकसंग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहणा छमित्तं चित्तस्स मनोविलेखो ... अयं बुच्चति "विचिकिच्छा", विभ. 286; यस्मा पन बुद्धानं एकं ाम्पेपि आसप्पना परिसप्पना नत्थि, दी. नि. अ. 1.65; या एवरूपा कङ्गा ... द्वेधापथो संसयो अनेकसंग्गाहो आसप्पना परिसप्पना ... इदं कथंकथासल्लं, महानि. 307; निच्छेतुं असक्कोन्ती आरम्भणतो ओसक्कतीति आसप्पना, महानि. अ. 349; — परिसप्पना स्त्री., द्व. स. [आसर्पण-परिसर्पण], सन्देह एवं अविश्वास — नं द्वि. वि., ए. व. — ... एवं विचिकिच्छापि — बुद्धो नु खो, न

बुद्धो"ति आदिना नयेन पुनपुनं आसप्पनपरिसप्पनं अपरियोगाहनं ..., दी. नि. अ. 1.174; अरञ्जं पविट्टस्स आदिमि एव सप्पनं आसप्पनं परि परितो, उपरुपरि वा सप्पनं परिसप्पनं, दी. नि. टी. (लीन.) 1.230.

आसभ<sup>1</sup> त्रि., प्रायः 'वाचा' (वाणी) एवं 'ठान' (स्थान) के विशेष. के रूप में प्रयुक्त [आर्षभ], ऋषि से सम्बद्ध, आर्य-पुद्गल से सम्बद्ध, अर्हत् से सम्बद्ध — भी स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अथ किं चरहि ते अयं सारिपुत्त, उच्चार आसभी वाचा भासिता, दी. नि. 3.74; आसभीति उसभस्स वाचासदिसी अचला असम्पवेधी, दी. नि. अ. 3.56; — भिं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — आसभिं वाच निच्छारेसिं, पारा. अ. 1.96; आसभिञ्च वाचं भासति, म. नि. 3.165; आसभिं वाचं निच्छारेत्तो, जा. अ. 1.64; आसभचम्मं सङ्गसतेन सुविहतं विगतवलिकं, म. नि. 3.149; — भं<sup>2</sup> नपुं., प्र. वि., ए. व. — यथापि आसभं चम्मं, पथव्या वितनीयति, जा. अ. 6.283; — भं<sup>3</sup> द्वि. वि., ए. व. — येहि बलेहि समन्नागतो तथागतो आसभं ठानं पटिजानाति, अ. नि. 2(2).120; भगवा पन अप्पटिसमद्देन आसभं ठानं पटिजानाति, स. नि. अ. 1.72; आसभं ठानन्ति सेट्टुद्धानं उत्तमद्धानं, स. नि. अ. 2.41; — भो पु., प्र. वि., ए. व. — आसभसदिसत्ता आसभो, नरानं आसभो नरासभो, अप. अ. 1.246; — मा ब. व. — आसभा वा पुब्बबुद्धा, तेसं ठानन्ति अत्थो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).339; स. उ. प. के रूप में, नरा, पुरिसा. के अन्त. द्रष्टः; — द्धानद्वायी त्रि., उत्तम स्थान को ग्रहण करने वाला, प्रमुखता की स्थिति को प्राप्त — यिनो पु., प्र. वि., ब. व. — आसभद्धानद्वायिनो सीहनादनादिनो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).10; — द्धाननिच्चल त्रि., उत्तम स्थान पर अडिग रूप से स्थित — लो पु., प्र. वि., ए. व. — आनुभाववसिप्पत्तो, आसभण्डाननिच्चलो, ना. रू. प. 1108; पाठा. द्धान; — भूत त्रि., उत्तम स्थिति को प्राप्त — त पु., सम्बो., ए. व. — नरासभ नरानं आसभभूत, अप. अ. 2.82.

आसभ<sup>2</sup> नपुं., उसभ का भाव, उत्तमता, उच्चता — भं प्र. वि., ए. व. — उसभस्स भावो आसभं, क. व्या. 404; उसभस्स इदं ठानन्ति आसभं, स. 3.807.

आसभसदिसत्ता नपुं., भाव., अर्हत् आदि आर्य अथवा निष्पाप जनों के समान होना, उत्तम व्यक्तियों से समानता — ता प. वि., ए. व. — आसभसदिसत्ता आसभो, अप. अ. 1.246.

## आसमिवाचाभासन

257

## आसयविपत्ति

आसमिवाचाभासन नपुं., तत्पु. स., सांढ की स्थिर ध्वनि जैसी अचल वाणी को बोलना — नं प्र. वि., ए. व. — आसमिवाचाभासनं अप्पटिवितियवरधम्मचक्कप्यवत्तनस्स पुब्बनिमित्तं, दी. नि. अट्ठ. 1.58.

आसय पु./नपुं., [आशय/आश्रय], 1. शा. अ., निवास-स्थान, स्थायी रूप से बसने का स्थान, विश्रामस्थल, शरणगृह, आवास, घर, उत्पत्ति-स्थल, उद्गम-स्थल, ला. अ., आधार, सहास देने वाला, ग्रहण करने वाला भाजन अथवा पात्र, आश्रय — छट्ठबलनिदेसे आसयन्ति यत्थ सत्ता आसयन्ति निवसन्ति, तं तेसं निवासद्धानं दिड्ढिगतं वा यथाभूतं जाणं वा, विम. अट्ठ. 432; आसयोति निस्सयो पच्चयोति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 1.288; आसयन्ति वसनकसुसिरं, विसुद्धि. महाटी. 1.165; — यो प्र. वि., ए. व. — सारम्भं नाम किपिल्लिकानं वा आसयो होति, पारा. 231; आसयोति निबद्धवसनद्धानं, पारा. अट्ठ. 2.141; किंसु गाथानमासयोति, स. नि. 1(1).44; विनयो आसयो मय्, अप. 1.45; आसयतोति आसीविसानज्झि वम्मिको आसयो, तत्थेव ते वसन्ति, स. नि. अट्ठ. 3.58; — या प. वि., ए. व. — सीहो ... सायन्हसमयं आसया निक्खमति, अ. नि. 2(1).113; आसया निक्खमित्वा, ध. प. अट्ठ. 2.348; तत्रासयाति परिस्सया, महानि. 266; स. उ. प. के रूप में, आमा., पक्खा., आलम्बनवना., उदका., कामा., कुला., कोट्ठा., गम्भा., गुहा., जला., दका., नेक्खम्मा., पक्का., पलियेठना., बिला., रुक्खा., वना., वारिगेहा., व्यग्घा., सका., सग्गा. के अन्त. द्रष्ट.; 2. मानसिक अभिप्राय, इच्छा, प्रयोजन, मन की प्रवृत्ति अथवा रुझान, स्वभाव, आदत्त, मानसिक संरचना, चित्तवृत्ति, मन, इरादा, भाव — यो प्र. वि., ए. व. — आसयोव अज्झासयो, सो च ... अनेकविधो, उदा. अट्ठ. 9; — यं द्वि. वि., ए. व. — ब्राह्मणस्स आसयं अत्वा, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.7; तस्स आसयं न जानाति, जा. अट्ठ. 1.220; तिरच्छानानमि नाम आसयं जानिस्सतीति, जा. अट्ठ. 2.82; — या प्र. वि., ब. व. — उप्यन्ना पञ्च आसया, दी. वं. 3.53; स. उ. प. के रूप में अगबोधिता., अज्झा., अधिका., अविज्जा., असुद्धा., करुणा., करुणानुगता., करुणाभाविता., घट्टिता., तक्का., थिरा., दुन्नीतिनिवहा., बुद्धपेमगता., महाबोधिता., मुदिता., विम्हिता., विसमा., विसुद्धा-ता., सत्ताविदु. सब्बसत्तहिता. के अन्त. द्रष्ट.; 3. शरीर के अन्दर विद्यमान पित्त, कफ, पीव एवं रक्त नामक 4 प्रवहनशील तरल तत्त्व, तरल

मल, शरीर के अन्दर से बाहर की ओर रिसने वाले पित्त आदि जुगुप्सित तरल — यो प्र. वि., ए. व. — ... चतूसु अज्जतरो आसयो होतियेव, विसुद्धि. 1.335; — या ब. व. — मन्दपुज्जानं पन चत्तारो आसया होन्ति, तदे.; स. उ. प. के रूप में पित्ता., पित्तसेम्हपुब्बलोहिता., पुब्बा., लोहिता., सेम्हा. के अन्त. द्रष्ट.

आसयगत त्रि., तत्पु. स. [आशयगत], स्वभाव में विद्यमान, प्रकृति में मौजूद — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — दुब्बलानि किलेसानि, यस्सासयगतानि मे, अप. 2.155.

आसयज्झासय पु., द्व. स. [आशयाध्याशय], आशय एवं अध्याशय, मानसिक अभिप्राय एवं मानसिक रुझान — स्स ष. वि., ए. व. — आकारतो च वीकारतो च आसयज्झासयस्स अधिमुत्तिसमत्रागतानं, पेटको. 190.

आसयति आ + √सि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आश्रयते]. शा. अ., आकर सो जाता है, ला. अ., निवास करता है, सहास लेता है, शरण लेता है — न्ति ब. व. — चतुब्बिधो पेसो आसयन्ति सत्ता एत्थ निवसन्ति, चित्तं वा आगम्म सेति एत्थाति आसयो मिगासयो विय, दी. नि. अभि. टी. 1.88; आसयन्ति यत्थ सत्ता आसयन्ति निवसन्ति, विम. अट्ठ. 432.

आसयदोसभोचन नपुं., इच्छा अथवा मानसिक आसक्ति के दोष से मुक्ति — नेन तृ. वि., ए. व. — आसयदोसभोचनेन अग्गं, महानि. अट्ठ. 152.

आसयपोसन नपुं., तत्पु. स., अकुशल चित्तवृत्तियों के विशोधन द्वारा निर्वाण-विषयक मानसिक आशय (रुझान) का पोषण — नं प्र. वि., ए. व. — दुतियेन आसयपोसनं विभावित होतीति, पारा. अट्ठ. 1.105; आसयपोसनन्ति आसयस्स विसोधनं वड्डनञ्च, वि. वि. टी. 1.63; तण्हासकिलेससोधनेन, विवट्ठपनिस्सयसंवड्डनेन च अज्झासयविसोधनं आसयपोसनं, विसुद्धि. महाटी. 1.154.

आसयप्पहान नपुं., तत्पु. स. [आशयप्रहाण], इच्छाओं का नाश, आशयों का उच्छेद — नाय च. वि., ए. व. — तस्स आसयं पहानाय नेव इमं लोकं आसीसति न परलोकं, पेटको. 304; पाठा. आसयप्पहानाय.

आसयविपत्ति स्त्री., दूषित आशय, अकुशल इच्छा, मानसिक आशय की अविशुद्धि, अभिप्राय की हीनता — इदानी ये ते पटमगाथाय आसयविपत्तिवसेने कोधनादयो पञ्च, पापमक्खिं वा द्विधा कत्वा छ ..., सु. नि. अट्ठ. 1.147.

## आसयसहित

258

## आसव

आसयसहित त्रि., 'आशय' शब्द द्वारा कथित - तं नपुं. प्र. वि., ए. व. - यथाभूतञ्च यं जाणं, एतं आसयसहितं न्ति. विसुद्धि. महाटी. 1.225.

आसयसम्पत्ति स्त्री., आशय की श्रेष्ठता, उत्तम आशय, कुशल मानसिक अभिप्राय - यं सप्त. वि., ए. व. - ... सुमना भवन्तूति इमिना वचनेन आसयसम्पत्तियं नियोजेन्तो ..., खु. पा. अड्ड. 133.

आसयसामन्त स्त्री., निवासस्थान के समीप - न्ता प. वि., ए. व. - मम आसयसामन्ता, तिस्सो लोकगगायको, अप. 2.7.

आसयसुद्धि स्त्री., [आशयशुद्धि]. मानसिक अभिप्राय अथवा मानसिक प्रवृत्ति की शुद्धि, शुद्ध मनोभाव, विशुद्ध अभिप्राय, प्र. वि., ए. व. - इवस्स पक्कमचक्कद्वय सिद्धिया आसयसुद्धि सिद्धा होति, स. नि. अड्ड. 1.8; - दिं द्वि. वि., ए. व. - ... दीपेति ... तथा आसयसुद्धिं पयोगसुद्धिञ्च, खु. पा. अड्ड. 84; - या तृ. वि., ए. व. - ... सत्तानं अभयदाने आसयसुद्धिया आमिसदाने उभयसुद्धिया ..., चरिया. अड्ड. 274; - वचन नपुं., तत्पु. स., अभिप्राय की शुद्धि का वचन - तो प. वि., ए. व. - ... किलेसापराधप्यहानेन आसयसुद्धिवचनतो ..., चरिया. अड्ड. 254.

आसयानुसय पु., द्व. स. [बौ. सं. आशयानुशय], आशय एवं अनुशय, मानसिक अभिप्राय एवं अवचेतन मन में सो रही क्लेशात्मक मनोवृत्तियां - यं द्वि. वि., ए. व. - भगवता, तेसं तेसं सत्तानं आसयानुसयं जानता, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.9; आसयानुसयं जत्वा, इन्द्रियानं बलाबलं, अप. 1.26; एत्थ आसयोति अज्झासयो चरिया, अनुसयोति थामगतकिलेसो, ... अयं मोहचरितोति आदिना आसयञ्च अनुसयं किलेसपवत्तिञ्च जानित्वाति अत्थो, अप. अड्ड. 1.241; - ये सप्त. वि., ए. व. - सत्तानं आसयानुसये जाणं, पटि. म. 121.

आसयानुसयचरिताधिमुत्ति स्त्री., आशय (मानसिक संरचना) अनुसय (क्लेशात्मक प्रवृत्तियां), चर्या (व्यवहार) एवं अधिमुक्ति (दृढ़ विश्वास) - तिं द्वि. वि., ए. व. - तेसं तेसञ्च सत्तानं आसयानुसयचरिताधिमुत्तिं, सम्मदेव ओलोकत्वा ..., उदा. अड्ड. 120; स. प. के अन्तः, आसयानुसयचरिताधिमुत्ति आदिविभागावबोधेन, अप. अड्ड. 2.260.

आसयानुसयजाण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आशयानुशयज्ञान], आशयों (मन की संरचना) एवं अनुशयों का ज्ञान, चित्त की

रागात्मिका अथवा द्वेषात्मिका प्रवृत्ति आदि का ज्ञान - णं प्र. वि., ए. व. - तेसु बुद्धचक्खु नाम आसयानुसयजाणञ्चेव इन्द्रियपरोपरियत्तजाणञ्च, स. नि. अड्ड. 3.1; आसयानुसयजाणञ्चि बुद्धानयेव होति, न अज्जेसं, जा. अड्ड. 1.182; आसयानुसयजाणं नामेतं पारमियो पूरेत्वा दस सहस्सिलोकधातु उन्नादेत्वा ..., ति वत्वा, ध. प. अड्ड. 2.244; - निदेस पु., 1. तत्पु. स., आश्रयों एवं अनुशयों के ज्ञान का निर्वचन - से सप्त. वि., ए. व. - आसयानुसयजाणनिदेसे इध तथागतोति आदि पञ्चधा ठपितो निदेसो, पटि. म. अड्ड. 2.4; 2. पटि. म. के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें आसयों एवं अनुशयों का विवेचन किया गया, पटि. म. 112; - निदेसवण्णना स्त्री., पटि. म. अड्ड. के एक व्याख्यान का शीर्षक, जिसमें आशयों एवं अनुशयों के ज्ञान का विवेचन किया गया है, पटि. म. अड्ड. 2.4.

आसयानुसयसङ्ग्रहित त्रि., आशयों एवं अनुशयों के ही अन्तर्गत संग्रह किया हुआ - ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. - यस्मा चरिताधिमुत्तियो आसयानुसयसङ्ग्रहिता, तस्मा उदेसे चरिताधिमुत्तिसु जाणानि आसयानुसयजाणेनेव सङ्गहेत्वा आसयानुसये जाणं, पटि. म. अड्ड. 1.49.

आसरति आ + रसर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसरति], (की ओर) तेजी के साथ जा पहुंचता है, दौड़कर जाता है, तेज चलता है, चलना जारी रखता है, चलता रहता है - कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अति अस्सरति एताय सत्ताति अच्चसरा, महानि. अड्ड. 332; पाठा. अस्सरति; - न्ति ब. व. - कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अतिच्च आसरन्ति एताय सत्ताति अच्चासरा, विम. अड्ड. 465.

आसव' पु., [आसव], फूलों, फलों, मधु एवं गुड़ से तैयार किया गया मादक अर्क, मद्यनिष्कर्ष, काढ़ा, मदिरा, ताड़ी जैसे मादक पेय - वो प्र. वि., ए. व. - आसवो तु मेरयं, अभि. प. 533; आसवो तात लोकस्मिं सुरा नाम पवुच्चति, जा. अड्ड. 4.199; पुष्पादीहि कतो आसवो मेरयं, कङ्का. अड्ड. 227; - वा ब. व. - चिरपारिवासियट्ठेन मदिरादयो आसवा, आसवा वियातिपि आसवा लोकस्मिञ्चि चिरपारिवासिका मदिरादयो आसवाति वुच्चन्ति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).66; स. उ. प. के रूप में, पुष्पा. (फूलों से तैयार किया हुआ मादक अर्क), फला. (फलों से तैयार मादक अर्क) तथा मध्वा. (मधु से तैयार मादक काढ़ा) - वो प्र. वि., ए. व. - मेरयो नाम

## आसव

259

## आसवकखय

पुष्पासवो फलासवो मध्वासवो गुळासवो सम्मारसंयुतो, पाचि.  
149.

आसव<sup>२</sup>/अस्सव पु., [आस्रव, पीड़ा, कष्ट, दुःख, बहाव, बौ. सं. आश्रव/आस्रव], क. घाव से बाहर निकल रहा स्राव अथवा तरल बहाव, पीव, मवाद का बहाव या स्राव — वो प्र. वि., ए. व. — सुरायोपहवे कामासवादिन्हि च आसवो, अभि. प. 968; — वं द्वि. वि., ए. व. — दुड्ढारुको कट्ठेन वा ... भिय्योसोमत्ताय आसवं देति, अ. नि. 1(1).147; आसवं देतीति अपरापरं सवति, पुराणवणो हि अतनो धम्मतायेव पुब्बं लोहितं यूस्सन्ति इमानि तीणि सवति ..., अ. नि. अ. 2.93; स. उ. प. के रूप में, विसन्दमाना. के अन्त. द्रष्ट; ख. चित्त-विशुद्धि की प्रक्रिया में बाधक चित्त की धारा में विद्यमान मादक अकुशल चित्तवृत्तियां, सुदीर्घ काल तक चित्तसन्तति में विद्यमान होने के कारण फलों आदि से तैयार आसव (मादक अर्क) के समान चित्त को मतवाला बना देने वाले अकुशल चैतसिक — वो प्र. वि., ए. व. — सुरायोपहवे कामासवादिन्हि च आसवो, अभि. प. 968; पुगलवाचिनो आसवरस्स सस्स द्वित्तं-आसवो अस्सवो, सह. 3.636; — वा प्र. वि., ए. व. — धम्मतो याव गोत्रमुं ओकासतो याव भवग्गं सवन्तीति वा आसवा ... चिरपारिवासियड्ढेन मदिरादयो आसवा, आसवा वियातिपि आसवा, म. नि. अ. 1(1).66; तयोमे आवुसो आसवा, कामासवो भवासवो, अविज्जासवो, म. नि. 1.70; — वानं प. वि., ब. व. — विवटं दिस्वान पहानमासवानं, सु. नि. 3.76; आसवानं खयसङ्घातं पन अरहत्तं, अ. नि. अ. 2.360; — वे द्वि. वि., ब. व. — खेपेत्वा आसवे सब्बे, थेरीगा. 76; — वेहि प. वि., ब. व. — पञ्जापरिभावितं चित्तं सम्मदेव आसवेहि विमुच्चति, दी. नि. 2.66; — वेसु सप्त. वि., ब. व. — भिक्खु चित्तं रक्खति आसवेसु च सासवेसु च धम्मेसु, स. नि. 3.306; आसव इस लोक एवं परलोक, दोनों लोकों से सम्बद्ध हैं — वानं प. वि., ब. व. — दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, पारा. 22; आसवों के प्रभेद, 1. 3 प्रकार के आसव, कामासव, भवासव एवं अविद्यासव — वो प्र. वि., ए. व. — तयो आसवा — कामासवो, भवासवो, अविज्जासवो, दी. नि. 3.173; म. नि. 1.70; उप्पज्जेयुं कामासवो भवासवो अविज्जासवोति तयो आसवा, म. नि. अ. 1(1).93; 2. आसवों के 4 प्रभेद (कामा, भवा, अविज्जा. एवं दिट्ठि) — अज्जेसु च सुत्तन्तेसु

अभिधम्मे च तेयेव दिट्ठासवेन सह चतुधा आगता, म. नि. अ. 1(1).67; 3. 5 प्रकार के विपाकों को उत्पन्न करने के आधार पर आसवों के 5 प्रभेद — अत्थि, भिक्खवे, आसवा निरयगमनीया, अत्थि आसवा तिरच्छनयोनिगमनीया, अत्थि आसवा पेत्तिविसयगमनीया, अत्थि आसवा मनुस्सलोकगमनीया, अत्थि आसवा देवलोकगमनीया अयं वुच्चति, भिक्खवे, आसवानं वेमत्तता, अ. नि. 2(2).117; कामासवो च भवासवो च अप्पणिहितेन विमोक्खमुखेन पहानं गच्छन्ति, दिट्ठासवो सुञ्जताय, अविज्जासवो अनिमित्तेन, नेत्ति. 97; 4. आसवों से विमुक्ति के 6 प्रकार के उपायों के आधार पर आसवों के 6 प्रभेद — इध, भिक्खवे, भिक्खुनो ये आसवा संवरा पहातब्बा ते संवरेन पहीना होन्ति, ये आसवा पटिसेवना पहातब्बा ते पटिसेवनाय पहीना होन्ति, ये आसवा अधिवासना पहातब्बा ते अधिवासनाय पहीना होन्ति, ये आसवा परिवज्जना पहातब्बा ते परिवज्जनाय पहीना होन्ति, ये आसवा विनोदना पहातब्बा ते विनोदनाय पहीना होन्ति, ये आसवा भावना पहातब्बा ते भावनाय पहीना होन्ति, अ. नि. 2(2).96; स. उ. प. के रूप में, अना., अविज्जा., कामरागभवरागमिच्छादिट्ठा., कामा., खीणा., चतुरा., खीणा., दिट्ठा., निरा., पुब्बा., भवा., सा. के अन्त. द्रष्ट.

आसव<sup>३</sup> पु., व्य. सं., देवताओं का एक वर्ग — वा प्र. वि., ए. व. — लम्बीतका लामसेट्ठा, जोतिनामा च आसवा, दी. नि. 2.192; आसा च देवा आगताति अत्थो ... आसा देवता छन्दसेन आसवाति वुत्ता, दी. नि. अ. 2.254.

आसवकथा स्त्री., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें आसवों की चर्चा की गई है, कथा. 415-416.

आसवकखय पु., आसवों का क्षय, अर्हत्व की अवस्था, निर्वाण की अवस्था — यो प्र. वि., ए. व. — मग्गो आसवकखयोति, म. नि. अ. 1(1).69; पत्तो मे आसवकखयोति, थेरगा. 116; पत्तो मे आसवकखयोति कामासवादयो आसवा एत्थ खीयन्ति, तेसं वा खयेन पत्तब्बोति आसवकखयो, निब्बानं अरहत्तञ्च, थेरगा. अ. 1.252; आसवकखयो ओधिसो सेक्खानं अनोधिस्सो अरहन्तान्, पेटको. 191; — यं द्वि. वि., ए. व. — मदिदा वे जिना होन्ति, ये पत्ता आसवकखयं, महाव. 12; आसवकखयन्ति अरहत्तं अ. नि. अ. 3.28; नचिरस्सेव आसवकखयं पत्तोति, स. नि. अ. 1.213; — या प. वि., ए. व. — आसवा तस्स वड्ढन्ति, आरा सो आसवकखयाति, स. नि. अ. 2.47; — सुत्त

## आसवक्खयजानन

260

## आसवनुद

नपुं, स. नि. के एक सुत का शीर्षक, - स. नि. 3. 310.

आसवक्खयजानन नपुं, तत्पु. स., आसवों के क्षय के विषय में ज्ञान - नं प्र. वि., ए. व. - आसवक्खयजानन एकन्ति, स. नि. अ. 2.40.

आसवक्खयजाण नपुं, तत्पु. स. [बौ. सं., आसवक्षयज्ञान], आसवों के क्षय को प्राप्त कराने वाला ज्ञान अथवा प्रज्ञा, आसवों के क्षय के विषय में ज्ञान, अर्हत्व-फल की अवस्था - णं प्र. वि., ए. व. - आसवक्खयजाणपदद्वानज्झि ... आसवक्खयजाणं 'महाबोधी'ति वुच्चति, चरिया. अ. 17; - णेन तू. वि., ए. व. - चतुसच्चपटिच्छादकं तमं विनोदेत्वा आसवक्खयजाणेन ततियं जायति, म. नि. अ. (म.प.) 2.24; - निदेस पु., तत्पु. स., आसवों के क्षय से सम्बन्धित ज्ञान अथवा प्रज्ञा का विवेचन या व्याख्यान करने वाले, पटि. म. के एक खण्ड का शीर्षक, पटि. म. 106-108; - निदेसवण्णना स्त्री., पटि. म. अ. के एक व्याख्याखण्ड का शीर्षक, पटि. म. अ. 1.307-309.

आसवक्खयपत्त त्रि., आसवों के क्षय को प्राप्त कर चुका, आसवों से मुक्त - त्तो पु., प्र. वि., ए. व. - यथानिसिन्नोव आसवक्खयप्पत्तो, उदा. अ. 295.

आसवक्खयपरियोसान त्रि., ब. स., आसवों के क्षय में अन्त होने वाला - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - आसवक्खयपरियोसानं आनिसंसं सुत्वा, अ. नि. अ. 3.318.

आसवक्खयलाम पु., तत्पु. स., आसवों के क्षय का लाम - मेन तू. वि., ए. व. - आसवक्खयलाभेन होति सासनसम्पदा, स. 1.1.

आसवखीण त्रि., ब. स. [क्षीणास्रव], आसवों को क्षीण कर चुका (अर्हत्) - णो पु., प्र. वि., ए. व. - आसवखीणो पहीनमानो, सु. नि. 372; एकादसमगाथाय आसवखीणोति खीणचतुरासवो, सु. नि. अ. 2.88.

आसवगोच्छक नपुं, तत्पु. स. [आस्रवगुच्छक], 1. आस्रवों का गुच्छा, आस्रवों का समुच्चय या झुण्ड - के सप्त. वि., ए. व. - आसवगोच्छके आसवन्तीति आसवा, ध. स. अ. 95; 2. ध. स. के एक खण्ड का शीर्षक, ध. स. 6-7.

आसवचार पु., आस्रवों की प्रकृति, आस्रवों का स्वभाव - रो प्र. वि., ए. व. - आसवचारो नाम एकन्तओकारिको, विभ. अ. 13.

आसवड्ढानीय त्रि., आस्रवों को उत्पन्न करने वाले क्लेश धर्म, आस्रवों के उदय में कारणभूत, ईर्ष्या, द्वेष आदि को उत्पन्न करने में सहायक - या पु., प्र. वि., ब. व. - इधेकेच्चे आसवड्ढानीया धम्मा सङ्गे पातुभवन्ति, पारा. 10; सासने एकच्चे आसवड्ढानीया धम्मा न उप्पज्जन्ति, पारा. अ. 1.148; ... यस्मा सेनासनानि पहीन्ति, तस्मा आवासमच्छरियादिहेतुका सासने एकच्चे आसवड्ढानीया धम्मा न उप्पज्जन्ति, सारत्थ. टी. 1.394; - येहि तू. वि., ब. व. - सब्बसो आसवड्ढानियेहि धम्मेहि ..., अ. नि. 3(1). 59; पटि. म. 348; आसवड्ढानियेहीति सम्पयोगवसेन आसवानं कारणभूतेहि ... अत्थो, अ. नि. अ. 3.222-23.

आसवता स्त्री., भाव., आस्रवत्व, आस्रव की स्थिति में होना, मलिनता, क्लिष्टता, कालुष्य - य तू. वि., ए. व. - यथा चत्तारो आसवा सभावआसवताय आसवा ... चित्तसासवताय ... सभावताय आसवा, पक्खे आसवताय आसवा, पेटको. 271.

आसवति आ + वसु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्रवति], रिसता है, भीतर में से बहता है, प्रकट होता है, विद्यमान रहता है - न्ति प्र. पु., ब. व. - तत्थ आसवन्तीति आसवा, ... अन्तोकरणत्थो हि अयं आकारो, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).66; आसवन्तीति आसवा ... मनतोपि सन्दन्ति पवत्तन्तीति वुत्तं होति, अ. नि. अ. 2.83; सबन्ति आसवन्ति सन्दन्ति पवत्तन्तीति, स. नि. अ. 2.57; तस्स गन्थिता किलेसा आसवन्ति, पेटको. 325; नेत्ति. 95.

आसवनिदेस पु., आस्रवों का विवेचन, आस्रवों का निर्वचन - से सप्त. वि., ए. व. - आसवनिदेसे पञ्चकामगुणिको रागो कामासवो नाम, ध. स. अ. 395.

आसवनिरोध पु., तत्पु. स. [आस्रवनिरोध], आस्रवों की रुकावट, आस्रवों की समाप्ति या नाश - धो प्र. वि., ए. व. - अयं आसवनिरोधोति यथाभूतं पजानाति, दी. नि. 1.74; - गामी त्रि., आस्रवों के निरोध की ओर ले जाने वाला/वाली - मिनी स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अयं आसवनिरोधगामिनी पटिपदाति यथाभूतं पजानाति, दी. नि. 1.74.

आसवनुद त्रि., आस्रवों को मिटाने वाला - दं पु., द्वि. वि., ए. व. - धम्मं सदासवनुदं चरथप्पमत्ता, तेल. 27; - देकहित त्रि., आस्रवों का विनाशक एवं केवल हित ही करने वाला - तं पु., द्वि. वि., ए. व. - जत्थान आसवनुदेकहितज्ज धम्मं, तेल. 98.

## आसवपदद्वान

261

## आसवुप्पत्ति

आसवपदद्वान त्रि., ब. स., आस्रवों पर आधारित, आस्रवों से उदित — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — *सैय्यथिदं* — *अज्जाणलक्खणा अविज्जा, सम्मोहनरसा, छादनपच्चुपड्डाना, आसवपदद्वाना, विसुद्धि.* 2.157; — ता स्त्री., भाव., आस्रवों पर निर्भरता, आस्रव-सापेक्षता — य तृ. वि., ए. व. — *आसवपदद्वानताय सासवतो, विसुद्धि.* 2.247.

आस्रवपरियादान नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आस्रवपर्यादान], शा. अ., आस्रवों को पूर्णरूप से ले लेना, ला. अ., आस्रवों का अन्त कर देना — नं प्र. वि., ए. व. — *आस्रवपरियादानञ्च होति जीवितपरियादानञ्च, अ. नि.* 2(2).166.

आस्रवपिधान नपुं., आस्रवों का आच्छादन, आस्रवों पर नियन्त्रण, आस्रवों का अन्त कर देना — नेहि तृ. वि., ब. व. — *सब्बासवसंवरसंवृत्तोति सब्बेहि आस्रवपिधानेहि पिहितो, म. नि. अहु.* (मू.प.) 1(1).93.

आस्रवप्पहान नपुं., तत्पु. स. [आस्रवप्रहाण], आस्रवों का परित्याग, आस्रवों का विनाश — ने सप्त. वि., ए. व. — *आस्रवप्पहाने दस्स आनिसंसं दस्सेन्तो ..., म. नि. अहु.* (मू.प.) 1(1).93.

आस्रवविनासन नपुं., तत्पु. स., आस्रवों को विनष्ट कर देना, आस्रवों का विनाश — तो प. वि., ए. व. — *अरहत्तमग्गो हि आस्रवविनासनतो, पारा. अहु.* 1.126; *आस्रवविनासनतो आस्रवानं खयोति, अ. नि. अहु.* 2.144.

आस्रवविप्पयुत्त त्रि., तत्पु. स. [आस्रवविप्रयुक्त], आस्रवों से मुक्त, आस्रवों के साथ नहीं जुड़ा हुआ, आस्रव-रहित — ता पु., प्र. वि., ब. व. — *आस्रवविप्पयुत्ता अनासवाति, विसुद्धि.* 2.65; *धम्मा विप्पयुत्ता, वेदनाखन्धो ... विज्जाणखन्धो ... इमे धम्मा आस्रवविप्पयुत्ता, ध. स.* 246; — अनास्रव त्रि., द्व. स., आस्रवों से मुक्त एवं आस्रवों से रहित — वा पु., प्र. वि., ब. व. — *तीणिन्द्रिया आस्रवविप्पयुत्ता अनासवा, विम.* 145; — सास्रव त्रि., द्व. स. [आस्रवविप्रयुक्तसास्रव], आस्रवों से मुक्त एवं आस्रवों से कलुषित — वा पु., प्र. वि., ब. व. — *आस्रवविप्पयुत्तासास्रवा, विम.* 145.

आस्रववेपुल्ल नपुं., भाव. [आस्रववैपुल्य], आस्रवों की प्रचुरता, आस्रवों की अधिकता अथवा तीव्रता — ल्ला प. वि., ए. व. — *चत्तारो आस्रवा वेपुल्लं गता ओघा भवन्ति, इति आस्रववेपुल्ला ओघवेपुल्लं, नेत्ति.* 95.

आस्रवसमज्जा स्त्री., [आस्रवसंज्ञा], आस्रव की अवधारणा अथवा मानसिक संप्रत्यय, आस्रवनाम, आस्रव संज्ञा, प्र.

वि., ए. व. — *“कम्मपुग्गलानमासवो”ति वचनतो पुज्जापुज्ज सम्भवे आस्रवसमज्जाति ततो अविसिद्धो आस्रवो, विसुद्धि.* महाटी. 2.338.

आस्रवसंवरपरियाय पु., तत्पु. स., आस्रवों के संयमन अथवा नियन्त्रण का तरीका, आस्रवों के संवरण/नियन्त्रण को समझाने की एक पद्धति — यो प्र. वि., ए. व. — *सङ्गहेन चेत्थ जाणं आस्रवसंवरपरियायोति दस्सितं होति, म. नि. अहु.* (मू.प.) 1(1).69.

आस्रवसमुच्छेद पु., तत्पु. स. [आस्रवसमुच्छेद], आस्रवों का पूर्ण विनाश — दे सप्त. वि., ए. व. — *आस्रवसमुच्छेदे पज्जा आनन्तरिकसमाधिम्हि जाणं, पटि. म.* 2.

आस्रवसमुदय पु., तत्पु. स. [आस्रवसमुदय], आस्रवों की उत्पत्ति, आस्रवों की उत्पत्ति का कारण — यो प्र. वि., ए. व. — *“अयं आस्रवसमुदयो”ति यथाभूतं पज्जानाति, अ. नि.* 1(2).240; *आस्रवा एव अविज्जादीनं कारणत्ता आस्रवसमुदयो, विसुद्धि.* महाटी. 1.207; — या प. वि., ए. व. — *आस्रवसमुदया अविज्जासमुदयो, म. नि.* 1.69; *आस्रवसमुदयाति एत्थ पन कामास्रवभासवा सहजातादिवसेन अविज्जाय पच्चया होन्ति, म. नि. अहु.* (मू.प.) 1(1).233; — मय त्रि., आस्रवों की उत्पत्ति वाला — येन पु., तृ. वि., ए. व. — *आस्रवसमुदयमयेन अक्खेन विज्झित्वाति, विसुद्धि.* महाटी. 1.207.

आस्रवसम्पयुत्त त्रि., तत्पु. स., आस्रवों के साथ जुड़ा हुआ, आस्रवयुक्त, 12 प्रकार के अकुशल चित्त जो सदा आस्रवों के कारण अपरिशुद्ध रहते हैं — ता पु., प्र. वि., ए. व. — *आस्रवसम्पयुत्ता सास्रवा, विसुद्धि.* 2.65; *ये धम्मा सम्पयुत्ता ... वेदनाखन्धो ... विज्जाणखन्धो इमे धम्मा आस्रवसम्पयुत्ता, ध. स.* 246; *तत्थ द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा आस्रवसम्पयुत्ता नाम, मोह. वि.* 100.

आस्रवारिगणक्खय पु., तत्पु. स., आस्रवरूपी शत्रुगण का विनाश या अन्त — क्खया प. वि., ए. व. — *दन्तभूमिमनुप्पत्तानं आस्रवारिगणक्खया, अप.* 2.356.

आस्रवुप्पत्ति स्त्री., [आस्रवोत्पत्ति], आस्रवों की उत्पत्ति, ति-प्र. वि., ए. व. — *आस्रवुप्पत्ति पनेत्थ एवं वेदितब्बा, अ. नि. अहु.* 3.131; — त्तिं द्वि. वि., ए. व. — *आरब्ध आस्रवुप्पत्तिं वारेन्तो आस्रवेसु च सास्रवेसु च धम्मेसु चित्तं रक्खति नाम, स. नि. अहु.* 3.277; — यं सप्त. वि., ए. व. — *आस्रवुप्पत्तियं पनेत्थ इमेसं उपरिमग्गतयसम्पयुत्तानं, म. नि. अहु.* (मू.प.) 1(1).93.



## आससान

262

## आसा

आससान/आसिसान त्रि., आ + रसस/रसस का वर्त.  
कृ., आत्मने, आशा कर रहा, कामना कर रहा, इच्छा कर रहा - नो पु., प्र. वि., ए. व. - निराससो सो उद आससानो, सु. नि. 1096; 'निराससो सो उद आससानो'ति पुन पुच्छति, सु. नि. अ. 2.288; पुच्छेय्य पोसो सुखमासिसानो, जा. अ. 4.17; इच्छप्पमादं हितमाससानो, चू. वं. 55.34; - ना ब. व. - अनूपखेत्ते फलमासमाना, जा. अ. 4.342; 'ये केचिमे सुग्गतिमासमाना', जा. अ. 5.387; पाठा. आससाना.

आसा\* स्त्री., [आशा]. इच्छा, कामना, आवश्यकता, आशा, तृष्णा - छन्दो जटा निकन्त्यासा सिब्बिनी भवनेति च, अभि. प. 162; आसा वुच्चति तण्हा, उदा. अ. 295; आसा नाम वुच्चति या भविस्सस्स अत्थस्स आसीसना अवस्स आगमिस्सतीति आसारस्स उप्पज्जति, नेति. 44; गाथा सेना लेखापेक्खा आसा पूजा एसा, स. 1.198; सिद्धा सिज्झन्तु कत्याणा, एवं आसापि पाणिनन्ति, चूळव. अ. 136; - सं द्वि. वि., ए. व. - मार ... आसं माकासि भिक्खुसु, म. नि. 1.423; आसज्ज अनासज्जेपि करित्वा अयोनिसो ब्रह्मचरियं वरन्ति, म. नि. 3.178; आसं अनिस्साय, सु. नि. 478; आसं निरासं कत्वा, जा. अ. 3.86; - य तू. वि., ए. व. - आसाय न लभति, महाव. 343; आसाय कसत्ते खेतं, बीजं आसाय वप्पति, आसाय वाणिजा यन्ति, थेरगा. 530; आसाय कसत्ते खेतन्ति कस्सको कसन्तो खेतं फलासाय कसति, थेरगा. अ. 2.145; आसिसनवसेन आसाति आसाय अत्थं गहेत्वा रूपं आसा, ध. स. अ. 391; - सा प्र. वि., ब. व. - द्वेमा ... आसा दुप्पज्जा - लाभसा च जीवितासा च, अ. नि. 1(1).105; आसा यस्स न विज्जन्ति, सु. नि. 639; - साभिभूत त्रि., तत्पु. स. [आशाभिभूत], तृष्णा से ग्रस्त, आशा रखने वाला - ता पु., प्र. वि., ब. व. - 'इतो किञ्चि लभामा'ति आसाभिभूता, पे. व. अ. 25; - सावच्छेदिक त्रि., शा. अ., आशा के उच्छेद अथवा आशा के टूट जाने पर आधारित, विशेष अर्थ, कठिन-चीवर के लाभ को समाप्त करने वाले 8 आधारों (मातिकाओं) में से एक - दिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. - अट्ठिमा, भिक्खवे मातिका कथिनस्स ... सवन्तिका, आसावच्छेदिका ... ति, महाव. 332; पारा. अ. 2.199; आसाय छिन्नमत्ताय, आसावच्छेदिका मता, विन. वि. 2717; - दिको पु., प्र. वि., ए. व. - तस्स भिक्खुनो आसावच्छेदिको कथिनुद्धारो, महाव. 342; - दिके सप्त. वि., ए. व. -

आसावच्छेदिके आवासपलिबोधो पठमं छिज्जति, महाव. अ. 371; नासनं सवन्ञ्चेव आसावच्छेदिकापि च, विन. वि. 2722; [टि. कठिनचीवर के लाभ को प्राप्त किया हुआ कोई भिक्षु अधिक चीवर को पाने की प्रत्याशा के साथ अपनी विहार सीमा के बाहर दूसरी सीमा में चला जाता है। अतिरिक्त चीवर प्राप्त करने की उसकी आशा का किसी कारणवश पूरा न हो पाना ही कठिन-चीवर-लाभ का आसावच्छेदिका नामक आधार कहलाता है.]; - सच्छिन्न त्रि., ब. स., छिन्न हो चुकी आशा वाला, निराश - न्ना पु., प्र. वि., ब. व. - किं सुकं फुत्तितं दिस्वा आसच्छिन्ना मिगाधमा, जा. अ. 6.282; - दासव्यतंगत त्रि., [आशादासव्यगत], आशाओं की दासता को प्राप्त, आशाओं के वशीभूत हो चुका - तो पु., सप्त. वि., ए. व. - पतिकारपरे लोके आसादासव्यतंगते उपकारसमत्थस्स सतो को न करेय्य किं, सद्धम्मो. 498; - दुक्ख नपुं., तत्पु. स., 1. आशा के टूट जाने के कारण उत्पन्न दुख, निराशा से उत्पन्न दुख, 2. आशा रूपी दुख - क्खं प्र. वि., ए. व. - आसायेवदुक्खं आसादुक्खं आसाविघातं दुक्खं वा विसुद्धि. महाटी. 2.171; - दुक्खजनन नपुं., निराशा के कारण दुख को उत्पन्न करना - तो प. वि., ए. व. - पुथुज्जनानं वा सज्जा आसादुक्खजननतो रित्तमुद्धि विय, विसुद्धि. 2.117; दुप्पज्जहवग्ग पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 1(1).105; - फल नपुं., तत्पु. स., 1. आशा की पूर्णता, फल पाने की आशा का पूरा होना, 2. वह फल, जिसको प्राप्त करने की आशा की गई है, अभीप्सितफल - लं प्र. वि., ए. व. - फलासाव समिज्जातीति यथापत्थिकं फले आसा तरस्स फलस्स निष्फत्तिया समिज्जातियेव, अथ वा फलासाति आसाफलं, यथापत्थितं फलं समिज्जातियेवाति अत्थो, जा. अ. 1.141; - लं द्वि. वि., ए. व. - बकोपि ताव अत्तनो आसाफलं लभि, जा. अ. 3.220; - फलनिष्फादन नपुं., तत्पु. स. [आशाफलनिष्फादन], जिस फल को पाने की आशा की गई है, उसकी प्राप्ति, चाहे गए फल की प्राप्ति - देन तू. वि., ए. व. - तरस्स आसाफलनिष्फादनेन आसं देसि, जा. अ. 5.396; - भङ्ग पु., तत्पु. स. [आशाभङ्ग], आशा का टूट जाना, निराशा - ङ्ग द्वि. वि., ए. व. - दल्लिदियञ्च दीनत्तं आसाभङ्गञ्च दारुणं, सद्धम्मो. 78; - वती स्त्री., एक हजार वर्षों की अवधि में केवल एक बार फलने वाली देवलोका की एक लता, प्र. वि., ए. व. - तावतिसदेवलोके

## आसा

263

## आसादेति

चित्तलतावने आसावती नाम लता अस्थि, जा. अहु. 3.219; तथ आसावतीति एवंनामिका, सा हि यस्मा तस्मा फले आसा उप्पज्जति, तस्मा एतं नाम लभति, जा. अहु. 3.219; आसावती नाम लता जाता, सद्. 3.700; — विघातदुक्ख नपुं, तत्पु. स. [आशाविघातदुःख], आशा के टूट जाने या पूरा न होने के कारण उत्पन्न दुःख, निराशा-जनित दुःख — आसायेव दुक्खं आसादुक्खं, आसाविघातं दुक्खं वा, विसुद्धि. महाटी. 2.171; — सज्ज त्रि., ब. स. [आशासंज्ञक], आशा नाम से ज्ञात, 'आशा' संज्ञा से युक्त, इच्छा नाम से जाना गया — ज्ञेन पु., त. वि., ए. व. — मज्झन्तो मारपासेन आसासज्जेन बज्जति, सद्धम्मो. 609; स. उ. प. के रूप में, अना., आहारा., इस्सरिया., कामा., यज्जिता., गन्धा., चीवरा., छिन्ना., जीविता., धना., निरा., पच्चया., पुता., फला., फोटब्बा., बहिरा., रसा., रिता., रूपा., लाभा., वन्ता., विगता., सग्गा., सहा., सुखा., सुद्धा. के अन्त. द्रष्ट.

आसा<sup>२</sup> स्त्री., व्य. सं. [आशा, मनस् की पुत्री तथा वसु की पत्नी], शक्र (इन्द्र) की 4 पुत्रियों में से एक, प्र. वि., ए. व. — तदा सक्कस्स आसा सद्धा सिरी हिरीति चतस्सो धीतरा होन्ति, जा. अहु. 5.388; — से सम्मो., ए. व. — आसेति तं आलपति, जा. अहु. 5.397.

आसा<sup>३</sup> स्त्री., उत्तरकालीन पालि-साहित्य में ही प्रयुक्त [आशा], दिशा, क्षेत्र — य सप्त. वि., ए. व. — अनुराधनगरस्स पुरुत्तराय आसाय ..., दाटा. 5.13 (रो.); स. उ. प. में, आसंसा., पच्छिमा. के अन्त. द्रष्ट.

आसाटिका स्त्री., [बौ. सं., आशाटिका], मक्खी का अण्डा, अन्य छोटे कीड़ों का अण्डा, गायों के घावों पर नीली मक्खियों द्वारा रखा गया अण्डा, प्र. वि., ए. व. — आसाटिका मक्खिकाण्ड, अभि. प. 645; गुन्नं खाणुकण्टकादीहि पहटट्ठानेसु वणो होति तत्थनीलमक्खिका अण्डकानि पातेन्ति, तेसं आसाटिकाति नाम, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).157; सटति रुजति एतायाति साटिका, संवद्धा साटिकाति आसाटिका, म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).181; — कं द्वि. वि., ए. व. — न आसाटिकं हारेता होति, म. नि. 1.284; अकुसलवितक्कं आसाटिकं अहरेत्वा, अ. नि. अहु. 3.352; नीलमक्खिका आसाटिकं पातैसि, जा. अहु. 3.151; — कानं प. वि., ब. व. — आसाटनपज्जति आसाटिकानं, नेत्ति. 50.

आसादन/आसादना नपुं./स्त्री., आ + √सद के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं., आसादना], वरिष्ठ भिक्षुओं अथवा स्थविरों के प्रति अपमानजनक व्यवहार, तिरष्कार, अवहेलना, आक्रमण, संघर्ष, मुकाबला — ने नपुं., सप्त. वि., ए. व. — सातं तत्थ न विन्दामीति तस्मिं आसादने सातं न विन्दामि, आसादननिमित्तं मधुरं सुखं न लभामीति अत्थो, अप. अहु. 1.298; — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — के च छवे पाथिकपुत्ते, का च तथागतानं अरहन्तानं सम्मासम्बुद्धानं आसादनाति, दी. नि. 3.18; आसादनाति अहं बुद्धेन सद्धिं पाटिहारियं करिस्सामीति घट्टना, दी. नि. अहु. 3.12; — नापेक्ख त्रि., [बौ. सं., आसादनापेक्षिन्], तिरष्कार करने अथवा समुत्तेजित करने की इच्छा रखने वाला, लज्जित कर देने की अपेक्षा करने वाला — क्खो पु., प्र. वि., ए. व. — कुपितो अनत्तमनो आसादनापेक्खो, महाव. 299; भिक्खु, खाद वा भुज्ज वाति, जानं आसादनापेक्खो, पाचि. 115; आसादनापेक्खोति आसादनं चोदनं मड्ढकरण भावं अपेक्खमानो, पाचि. अहु. 87.

आसादित त्रि., आ + √सद के प्रेर. का भू. क. कृ., अपमानित, तिरष्कृत — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आसादितो मया बुद्धो, अप. 1.43; आसादितो मया बुद्धोति सो पच्चेकबुद्धो मया आसादितो ..., अप. अहु. 1.299; — त नपुं., भाव., लज्जित कर दिया जाना, तिरष्कृत कर दिया जाना — त्ता प. वि., ए. व. — तपस्सीनं आसादितत्ता अट्ठसु महानिरयेसु महादुक्खस्स अनुभवितव्वता, जा. अहु. 5.265.

आसादेति आ + √सद के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., शा. अ., पास जा पहुंचता है, प्राप्त करता है, स्पर्श करता है, हाथ में ले लेता है, ला. अ., 1. मुठभेड़, आक्रमण या प्रहार करता है, 2. तिरष्कार करता है, अपमानित करता है, कनिष्ठ भिक्षु वरिष्ठ स्थविर के प्रति अवमाननापूर्ण व्यवहार करता है, अवहेलना करता है — पकतत्तं भिक्खुं आसादेति अन्तो वा बहि वा, चूळव. 51; तं मिळ्हेन आसादेति, जा. अहु. 2.177; यम्पि सो तथागतं वा तथागतसावकं वा अकप्पियेन आसादेति, म. नि. 2.38, अकप्पियेन आसादेतीति अच्छमंसं सूकरमंसन्ति, दीपिमंसं वा मिगमंसन्ति खादापेत्वा त्वं किं समणो नाम, अकप्पियमंसं ते खादितंति घट्टेति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.37; — सि अद्य., प्र. पु., ए. व. — मासादेसि तथागतै, धेरगा. 280; मासादेसि तथागतैति ... तथागतै अरियसावकै पकतिसत्ते

## आसार

264

## आसाळह

विय अवञ्जाय किलेसवसेन च उपसङ्गमाना मासादेसि, थेरगा. अ. 2.11; सो तस्स अग्नहुड्डमेव आसादेसि, जा. अ. 1.459; — देसि म. पु., ए. व. — तत्थ मा आसादेसीति मा घट्टेसि, मा पहारं देहीति वुत्तं होति, उदा. अ. 199; पुब्बेपि आसादेसि, जा. अ. 2.177; खुरचकं अस्सादेसि, जा. अ. 3.179; — यिं / देसिं उ. पु., ए. व. — अहं वने मूलफलेसनं वरं आसादयिं अच्छं सुघोररूपं, जा. अ. 5.188; बुद्धं आसादयिं तदा, अप. 1.42; पिण्डाय विचरन्तं तं आसादेसि गजेनहं, अप. 1.330; — दियिम्ह / दिम्हसे उ. पु., व. व. — साधुरूपं वत भो अरहन्तं समणं आसादिम्हसे, दी. नि. 3.7; आसादिम्हसेति आसादियिम्ह घट्टियिम्ह, दी. नि. अ. 3.7; — दुं / दितुं निमि. कृ. — विभेमि चेत्तं आसादुं जा. अ. 5.148; आसादुन्ति आसादितुं तदे.; — दिय / देत्वा पू. का. कृ. — आसज्जापीति आसादेत्वापि, जा. अ. 2.41; आसादियाति आसादेत्वा, जा. अ. 5.148; आसादयित्वा घट्टेत्वा अनादरं कत्वा, अप. अ. 1.299; बुद्धं अनासादनीयमासादयित्वा, मि. प. 196; — देतब्बो सं. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — न पकततो भिक्षु आसादेतब्बो अन्तो वा बहि वा, चूलव. 49; — तब्बं द्वि. वि., ए. व. — गोतमं वादेन वादं आसादेतब्बं अमज्झिम्ह, म. नि. 1.301; भगवन्तं आसादेतब्बं अमज्झिम्हा, स. नि. 1(1).28.

आसार<sup>1</sup> पु., [आसार], भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा — आसारो धारा सम्पातो, अभि. प. 50.

आसार<sup>2</sup> पु., [आसार], शरण, आश्रय, स. उ. प. के रूप में, सुद्धा. के अन्त. द्रष्ट.

आसाळह 1. पु., [आषाढ], आषाढ का महीना — ळहो प्र. वि., ए. व. — चित्तो वेसाख जेडो चासाळहो, अभि. प. 75; — ळहे सप्त. वि., ए. व. — चन्दिमसुरिया — आसाळह मासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति, दी. नि. अ. 3.46; 2. — ळहा स्त्री., [आषाढा], पूर्वाषाढ एवं उत्तराषाढ नामक 2 नक्षत्र, 27 नक्षत्रों के बीच 20वां एवं 21वां नक्षत्र — जेडामूलासाळहा दुवे तथा, अभि. प. 59; 3. — ळही स्त्री., [आषाढी], आषाढमास की पूर्णमासी की तिथि, भगवान् बुद्ध के धम्मचक्रप्रवर्तन की तिथि — ळ्हिया प. वि., ए. व. — आसाळ्हिया पुण्णमासे उपकट्टे च वस्सके, दी. व. 14.50; ड्रेमा ... वस्सूपनायिका पुरिमिका, पच्छिमिका, अपरज्जुगताय आसाळ्हिया पुरिमिका उपगन्तब्बा, महाव. 181; — ळ्हियं सप्त. वि., ए. व. — आसाळ्हियं पभाताय

रत्तिया कालस्सेव पतचीवरमादाय, बु. वं. अ. 21; — जुण्हपक्ख पु., तत्पु. स. [आषाढज्योत्स्नापक्ष], आषाढ मास का शुक्लपक्ष — क्खे सप्त. वि., ए. व. — उड्डितो आसाळहजुण्हपक्खे सकलं अड्डमासं वस्सनकमेधो, स. नि. अ. 3.301; — ळ्हिछणउरस्सव पु., तत्पु. स., आषाढी पूर्णिमा के दिन वर्षा-ऋतु के आरम्भ की प्रसन्नता को व्यक्त करने हेतु मनाया जाने वाला उत्सव — वं द्वि. वि., ए. व. — अनुवच्छरं पवत्तेत्तं आसाळ्हिछणउरस्सवं, चू. वं. 99.53; — नक्खत्त नपु., आषाढा नक्षत्र, आषाढ पूर्णमासी का आषाढा नक्षत्र वाला वह दिन जिस में वर्षा के आगमन के उपलक्ष्य में उत्सव आयोजित होता था — त्तं प्र. वि., ए. व. — तत्थ आसाळहीनक्खत्तन्ति वस्सूपगमनपूजादिवसं सन्धाय वुत्तं, सारत्थ. टी. 2.335; — तौन तृ. वि., ए. व. — पाचीनदिसाय आसाळहनक्खत्तेन युतो पुण्णचन्दो उग्गच्छति, स. नि. अ. 3.326; — पवारणनक्खत्त नपुं., द्व. स., आषाढी पूर्णिमा के अवसर पर तथा पवारणा की तिथि पर आयोजित उत्सव — तादीसु नपुं., सप्त. वि., ब. व. — उस्सवेसूति आसाळहीपवारणनक्खत्तादीसु महुस्सवेसु, पारा. अ. 2.194; आसाळहीपवारणनक्खत्तादीसूति एत्थ नक्खत्तसदो पच्चेकं योजेतब्बो, सारत्थ. टी. 2.335; — पुण्णमा स्त्री., [आषाढीपूर्णिमा], आषाढ मास की पूर्णिमा की तिथि, सिद्धार्थ के महामायादेवी के गर्भ में प्रवेश की तिथि, बुद्ध के प्रथम धर्मोपदेश तथा उपोसथ आदि सङ्कर्मों के अनुष्ठान आदि की दृष्टि से थेरवादी बौद्धपरम्परा में समादृत, प्र. वि., ए. व. — स्वे आसाळ्हिपुण्णमा भविस्सतीति, स. नि. अ. 2.255; — यं सप्त. वि., ए. व. — ते आसळहीपुण्णमायं उपोसथं कत्वा ..., दी. नि. अ. 1.9; ते किर आसळ्हिपुण्णमायं कतिकवत्तं अकंसु, दी. नि. अ. 1.155; आसळ्हिपुण्णमायं वाराणसिं गन्त्वा ..., अप. अ. 1.94; आसाळ्हिपुण्णमायं इसिपत्तनं गन्त्वा ..., अप. अ. 1.307; — पुण्णमदिवस पु., तत्पु. स. [आषाढीपूर्णिमादिवस], आषाढी पूर्णिमा का दिन — सं द्वि. वि., ए. व. — ... आसाळहीपुण्णमदिवसयेव नियामेत्तो आह ..., सु. नि. अ. 1.173; — से सप्त. वि., ए. व. — आसाळ्हिपुण्णमदिवसे इसिपत्तने मिगदाये, ध. प. अ. 1.51; आसाळ्हिपुण्णमदिवसे वाराणसियं इसिपत्तनं पविसित्वा ..., स. नि. अ. 2.103; — पुण्णमासी स्त्री., [आषाढपूर्णमासी], आषाढ मास की पूर्णमासी की तिथि — सियं सप्त. वि., ए. व. —

## आसि

265

## आसिंसा

आसाळिहपुण्णमासियं वाराणसिं गमिस्सामी'ति, जा. अड्ड. 1.90; काले सम्पत्ते आसाळिहपुण्णमासियं पातोव कत्तब्बकिच्चं निट्ठापेत्वा, अप. अड्ड. 1.125; - पुण्णमी स्त्री., [आषाढपूर्णिमा], उपरिवत् - मितो प. वि., ए. व. - आसाळिहपुण्णमितो वा अपराय पुण्णमाय अनन्तरे ..., महाव. अड्ड. 3.30; - मिया सप्त. वि., ए. व. - अस्साति आसाळिहपुण्णमिया, सारथ. टी. 3.255; देविया कुच्छिमिं आसाळिहपुण्णमिया ... पटिसन्धिं गहेत्वा, बु. वं. अड्ड. 92; - मङ्गल नपुं., आषाढ मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला उत्सव - लं द्वि. वि., ए. व. - आसळिहमङ्गलं चापि पवत्तेतुं नियोजयि, चू. वं. 85.89; - मास पु., [आषाढमास], आषाढ का महीना - सो प्र. वि., ए. व. - वस्सूपनायिकाय पुरिमभागे आसाळहमासो, सु. नि. अड्ड. 2.98; - स्स प. वि., ए. व. - आसाळिहमासस्स जुण्हपक्खतेरसिया निक्खन्तो गामन्तपब्बारं गन्त्वा ..., दी. नि. अड्ड. 2.287; - से सप्त. वि., ए. व. - ते हि आसाळहमासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति, दी. नि. अड्ड. 3.46; गिम्हानं पक्खिने भासेति आसाळहमासे, स. नि. अड्ड. 3.172; पुण्णाय पुण्णमासिया आसळहमासे उपोसथे, दी. वं. 14.78; - सुवकपवखा पु., [आषाढशुक्लपक्ष], आषाढ मास का शुक्लपक्ष - स्स प. वि., ए. व. - आसाळहसुवकपवखस्स तेरसे दिवसे पन, म. वं. 16.2; आसाळहसुवकपवखस्स पण्णरस उपोसथे, म. वं. 31.109; - ण्हि सप्त. वि., ए. व. - आसाळह सुवकपवखं ण्हि सुवकपवखं जित्तिथि का, म. वं. 3.14.

आसि अस का अद्य., प्र. पु., ए. व. [आसीत्], था - एकमासि रुदम्मुखी, स. नि. 1(1).153; ततो मे पणिधी आसि, चेतसो अभियत्थितो, थेरगा. 514; आसीति अहोसि, थेरगा. अड्ड. 2.135; - सिं उ. पु., ए. व. - उद्धतो चपलो चासिं, कामरागेन अड्ढितो, थेरगा. 157; यं सीलवती आसिं, वि. व. अड्ड. 142; आसिन्ति अहोसिं, थेरगा. अड्ड. 1.301; - सुं<sup>1</sup> प्र. पु., ब. व. - सरणेषु च सीलेसु विता आसुं असङ्गिया, म. वं. 1.32; - सुं<sup>2</sup> उ. पु., ब. व. - उभो माता च धीता च मयं आसुं सपत्तियो, थेरीगा. 224.

आसिंसक/आसीसक त्रि., आ + संस से व्यु., [आशंसक], प्रत्याशी, इच्छुक, आशा रखने वाला, गवेषक - का पु., प्र. वि., ब. व. - आसीसका उत्तमत्थं, अप. 1.24; नि. प. 310; उत्तमत्थं निब्बानं आसीसका गवेसका, अप. अड्ड. 1.239.

आसिसति द्रष्ट. आसंसति के अन्त. (ऊपर).

आसिंसन नपुं., आ + संस से व्यु., क्रि. ना. [आशंसन], इच्छा करना, पाने की आशा रखना, प्रत्याशा करना, चाही गई वस्तु को पाने की कामना करना - नं प्र. वि., ए. व. - आसिंसनं आसिद्धं इच्छितब्बस्स अत्थजातस्स पत्थना, सद्. 3.814; आसिंसनं आसिद्धं, सद्. 3.877.

आसिंसनक/आसीसनक त्रि., इच्छुक आ ण रखने वाला, - का पु., प्र. वि., ब. व. - आसंसुकाति ततो एव घासच्छादनादीनं आसीसनका, थेरीगा. अड्ड. 242.

आसिंसना/आसिंसन/आसीसना स्त्री./नपुं., आ + संस से व्यु., क्रि. ना. [आशंसन], अपनी प्रिय वस्तु या व्यक्ति को पाने की इच्छा, आशा - ना प्र. वि. ए. व. - आसिंसना इण्डियथा हि मद्धं तुय्हमि सा सामि समिज्झतूति, जि. च. 217; आसिंसनवसेन आसिंसना, घ. स. अड्ड. 391; आसा आसिंसना आसिंसितत्, घ. स. 252; अस्सासकाति आसीसना, पत्थनाति अत्थो, महाव. अड्ड. 244; आसा आसीसना आसीसितत्, महानि. 6; या भविस्सस्स अत्थस्स आसीसना अवस्सं आगमिस्सतीति आसास्स उप्पज्जति, नेत्ति. 44.

आसिंसनीय/आसीसनीय त्रि., आ + संस का सं. कृ. [आशंसनीय], इच्छा करने योग्य, कामना करने योग्य, स. प. के अन्त., - आसीसनीयबहुतरनपरिपूरितं, मि. प. 2.

आसिंसवग्ग पु., जा. अड्ड. के एक खण्ड का शीर्षक, जा. अड्ड. 1.254-273; पाठा. आसीसवग्ग.

आसिंसवचन नपुं., [आशीर्वचन], आशीर्वाद, शुभ-कामना का वचन, शुभेच्छा - नं द्वि. वि., ए. व. - जयतु भवन्ति आसिंसवचनं वदिंसु, सद्. 2.344.

आसिंसवाचा/आसीसवाचा स्त्री., [आशीर्वाक], उपरिवत् - चं द्वि. वि., ए. व. - तदाहं आसीसवाचं अवोचं अनुकम्पिका, अप. 2.204.

आसिंसा/आसीसा स्त्री., [आशिष, नपुं.], शुभेच्छा, आशीर्वाद, मङ्गलकामना - आसिसत्थे च आयस्मत्तो दीघायु होतु, सद्. 3.697; आसिंसायं जयन्तु सन्तो'ति, सद्. 3.813; सोत्थि सुवत्थि इच्चेते आसिसत्थे, सद्. 3.900; - सा प्र. वि., ए. व. - आसीसायन्ति अवस्संभावी अत्थसिद्धियं, सा हि इध आसीसाति अधिपेता, न पत्थना, इंदिसे अनागतत्थे अतीतवचनं सद्विदू इच्छन्ति, वि. वि. टी. 2.241.

## आसिंसापेति

266

## आसित

आसिंसापेति / आसीसापेति आ + √संस के प्रेर. का वर्त, प्र. पु., ए. व. शुभेच्छा कराता है, मङ्गलकामना कराता है, आशीर्वाद दिलाता है - न भावितमासीसापेति, दी. नि. 3.35.

आसिसितत्त नपुं., भाव. [आसिसितत्व], अभीप्सित अथवा इच्छित होना - त्तं प्र. वि., ए. व. - आसिसितस्स भावो आसिसितत्तं, ध. स. अहु. 391; पाठा. आसिसितत्त.

आसिक त्रि., √अस से व्यु., केवल स. उ. प. में प्राप्त, खाने वाला, उक्थिता, खेला, वन्ता. के अन्त., द्रष्ट.

आसिञ्चति आ + √सिच, वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसिञ्चति].

1. सकर्मक क्रि. के रूप में, सींचता है, टपकाता है, छोटी छोटी बूंदों के रूप में अन्दर डाल देता है या गिरा देता है, बूंद बूंद करके टपकाता है, उड़ेल देता है, छिड़कता है - खीरं दारकान् मुखे आसिञ्चति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).333; - न्ति प्र. वि., व. व. - न्त्युं विसमं आसिञ्चन्ति, महाव. 279; - ज्व अनु., म. पु., ए. व. - सणिकं आसिञ्चाति, स. नि. अहु. 3.338; - थ व. व. - 'निपज्जित्वा आसिञ्चथा'ति, ध. प. अहु. 1.7; तेन हिस्स पादघोवनउदकं आदाय सीसे आसिञ्चथाति, ध. प. अहु. 2.382; - ज्वेय्य विधि., प्र. पु., ए. व. - पुरिसो कालेन कालं तेलं आसिञ्चेय्य वहिं उपसहरेय्य, स. नि. 1(2).77; - न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - थेरो नासाय तेलं आसिञ्चन्तो, ध. प. अहु. 1.6; - न्तं द्वि. वि., ए. व. - तं साकवत्थुस्मिं उदकं आसिञ्चन्तं दिस्वा, चरिया. अहु. 174; - न्तिया वर्त. कृ., स्त्री., तृ. वि., ए. व. - मया ... सपिं आसिञ्चन्तिया, ध. प. अहु. 2.181; - माना वर्त. कृ., आत्मने., स्त्री., प्र. वि., ए. व. - दूपसमयमाना सीतुदकघटसहस्सं मत्थके आसिञ्चमाना विय उप्पज्जति, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.94; - ज्वि अद्य., प्र. पु., ए. व. - भगवा उदकं आसिञ्चि, महाव. 393; तत्ततेलकटाहं सीसे आसिञ्चि, विसुद्धि. 2.9; - ज्विस्साम भवि., उ. पु., व. व. - 'मुखे ते पानीयं आसिञ्चिस्सामा'ति, स. नि. अहु. 2.258; - ज्वितुं निमि. कृ. - पक्कुथितं सपिं आसिञ्चितुं, ध. प. अहु. 2.181; - ज्वित्वा पू. का. कृ. - आसिञ्चित्वा अङ्गुलिया वा, पाचि. अहु. 94; निसिन्नकोव आसिञ्चित्वा, ध. प. अहु. 1.6; - ज्वितब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. - आचमनकुम्भिया उदकं आसिञ्चितब्बं, महाव. 54; एकेन हत्थेन उदकं आसिञ्चितब्बं, चूळव. 350; 2. अकर्मक क्रि. के रूप में, टपकाव से युक्त होता

है, पिघल जाता है अथवा पिघलाव के रूप में हो जाता है, तरलता से ओत-प्रोत हो जाता है - ज्वन्तं वर्त. कृ., नपुं., द्वि. वि., ए. व. - यदा दुक्खं उपज्जति सकलसरीरं ... विलीनतम्बलोहेन आसिञ्चन्तं ... उप्पज्जति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).287; - न्तो सप्त. वि., ए. व. - उण्हे सपिंहि तत्थ आसिञ्चन्ते पटपटाति सद्धो उद्धहति, स. नि. अहु. 2.97; - मानं वर्त. कृ., आत्मने., नपुं., प्र. वि., ए. व. - घटेहि आसिञ्चमानं विलीनसुवण्णं विय, ध. प. अहु. 2.123.

आसिञ्चन नपुं., आ + √सिच से व्यु., क्रि. ना., सींचना, छिड़कना, बूंद बूंद कर के टपकाना, उड़ेलना - नं प्र. वि., ए. व. - पिड्ढियं आसिञ्चनं पिड्ढिसंधोविका नाम, अ. नि. अहु. 3.330; - विस त्रि., व. स., बूंद बूंद करके बाहर निकल रहे विष से युक्त - सा पु., प्र. वि., व. व. - परस्स च अत्तनो सरीरे च आसिञ्चनविराति अत्थो, स. नि. अहु. 3.54; स. उ. प. के रूप में तक्का. के अन्त., द्रष्ट.

आसिञ्चापेति आ + √सिच के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसिञ्चयति], सिंचवाता है, बूंद बूंद कर बाहर टपकाने हेतु प्रेरित करता है, छिड़कवाता है - सि अद्य., प्र. पु., ए. व. - सोळसन्नं ब्राह्मणसहरस्सान् मुखेसु आसिञ्चापेसि, जा. अहु. 4.348.

आसिञ्चित / आसित त्रि., आ + √सिच का भू. क. कृ. [आसिक्त], सींचा हुआ, भिगोया हुआ, तर किया हुआ, छिड़का हुआ, उड़ेला हुआ - त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. - ताय तस्सा मत्थके आसितं पक्कुथितसपिं सीतुदकं विय अहोसि, ध. प. अहु. 2.181.

आसिद्ध त्रि., आ + √सिंस का भू. क. कृ. [आशिष्ट], इच्छित, वाञ्छित, वह, जिस को पाने की इच्छा की जा रही हो - द्वे सप्त. वि., ए. व. - सज्जायमभिधेय्यायं आसिद्धे गम्यमाने धातूहि तिष्यच्चयो होति, क. व्या. 554; - द्वत्थ पु., इच्छित होने का अर्थ - त्थे सप्त. वि., ए. व. - आसिद्धत्थे च अनुत्तकाले पञ्चमी विभक्ति होति, क. व्या. 417.

आसित' / मासित / असित त्रि., व्यु., सदिग्ध अहु. के व्याख्यान अस्पष्ट, संभवतः अस (भोजन करना) का प्रेर. अथवा अस (स्पर्श करना) से व्यु. मासित का परिवर्तित रूप, अधिकतर स्थलों में, 'मासित' रूप में ही प्राप्त, 1. तृप्त करा दिया गया, भोजन करा दिया गया, 2. स्पर्श

## आसित

267

## आसितगन्धतेल

किया गया, प्रभावित किया हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व. — यथाहमज्ज सुहितो, ... दुमपक्कानि मासितोति जा. अड्ड. 2.370; ... मासितोति उदुम्बरादीनि रुक्खफलानि खादित्वा असितो धातो सुहितो, जा. अड्ड. 2.370; तत्थ हेस्सामि आसितो, जा. अड्ड. 5.64; असितो धातो सुहितो, जा. अड्ड. 5.69; विसमासितो, मि. प. 278.

**आसित<sup>१</sup> / असित** त्रि., आ + √सि का भू. क. कृ. [आश्रित], किसी के साथ जुड़ा हुआ, किसी का आश्रय लिया हुआ, किसी की शरण में गया हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सन्ति निस्सितो असितो अल्लीनो उपगतो, महानि. 53; ... सो मया भगवा आसितो उपासितो पयिरुपासितो ..., चूळनि. 189; आसितोति उपसङ्कमितो, चूळनि. अड्ड. 77; अस्सितोति आसितो विससेन निस्सितो, महानि. अड्ड. 159.

**आसित** त्रि., आ + √सिच का भू. क. कृ. [आसिक्त], सींचा हुआ, भिगोया हुआ, लिपा हुआ, तरल किया हुआ — स्स पु., ष. वि., ए. व. — असुदिना आसितस्स परिळाहो वूपसम्मति, महाव. अड्ड. 282; — तेहि नपुं., तृ. वि., ए. व. — कहापणेहि कण्डं तं आसितेहुपरुरि, म. वं. 25.100; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — जलधाराहि ... आसिता सब्बा लङ्गामही अड्ड. म. वं. 17.45; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — सेय्यथापि कुम्मो निक्कुज्जो तत्र उदकं आसितं विवट्ठति, अ. नि. 1(1).153; तेलं वा वालुकाय आसितं ओसीदतिमेव संसीदतिमेव, अ. नि. 1(1).313; नासाय वो तेलं आसितंति, ध. प. अड्ड. 1.6; अभिसेकउदकं आसितं सूकरिमेवस्स अग्गमहेसिं करिषु, जा. अड्ड. 4.311; — तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. — पत्तं ... आसितेन ... सप्पिनाविज्जोत्तमानं ... हत्थे उपेत्वा, स. नि. अड्ड. 2.164; — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — यथा घटे आसिते अग्निग्निह अगिसिखा अतीव जलति, अप. अड्ड. 2.117; — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — सप्पिमधुसक्खराहि आसितानि योजितानेव मधुरानि ओजवन्तानि होन्ति, स. नि. अड्ड. 1.277; — उदकं नपुं., कर्म. स. [आसिक्तोदक], छिड़का हुआ जल — कं द्वि. वि., ए. व. — चङ्गवारे आसितउदकं विय परिहायतेव, अ. नि. अड्ड. 3.150-151; परिस्सावने आसितउदकं विय परिहायतेव, जा. अड्ड. 4.96; — काल पु., तत्पु. स., सींचे जाने का समय, स्निग्ध अथवा तरल किए जाने का काल — लो प्र. वि., ए. व. — उदकस्स

आसितकालो विय देसनाय, अ. नि. अड्ड. 2.99; स. उ. प. के रूप में, तोयलवा. के अन्त. द्रष्ट.

**आसित्तक** त्रि., आसित से व्यु. [आसिक्तक], पूरी तरह से सिञ्चित, भली भाँति भिगो दिया गया अथवा तर कर दिया गया — सदिस त्रि., भिगोया हुआ जैसा — सा पु., प्र. वि., ब. व. — तक्कं सीसे आसित्तकसदिसाव होन्ति, महाव. अड्ड. 269; तक्कं सीसे आसित्तकसदिसाव होन्तीति यथा अदासे करोन्ता तक्केन सीसं धोवित्वा अदासं करोन्ति, एवं आरामिकवचनेन दिवत्ता अदासाव तेति अधिप्पायो, सारत्थ. टी. 3.219; स. उ. प. के रूप में, अना., अमता. के अन्त. द्रष्ट.

**आसित्तकपूव** पु., कर्म. स. [आसिक्तकपूप], एक प्रकार का पुआ, जिसके अन्दर में पिट्टा रखकर धीरे धीरे बड़ा आकार देकर उसे बन्द कर देते हैं, संभवतः आधुनिक मगध का ढकन-पुआ — वं द्वि. वि., ए. व. — तत्थ कपल्लकपूवन्ति आसित्तकपूव, तं पचन्ता कपाले पठमं किञ्चि पिट्ठं उपेत्वा अनुक्कमेन वड्ढेत्वा, अन्तन्तेन परिच्छिन्दन्ति पूवं समन्ततो परिच्छिन्नं कत्वा उपेन्ति, दी. नि. टी. (लीन.) 2.139.

**आसित्तकाधार** पु., चावल की गर्म खीर आदि से भरा हुआ धातुपात्र, जिसमें भोजन गर्म बना रहता था, तथा जो एक थाली से ढका रहता था — रो प्र. वि., ए. व. — तेनेव पाळियं आसित्तकूपधानंति वुत्तं, तस्स च पायासादीहि आसित्तकाधारोति अत्थो, वि. वि. टी. 2.220.

**आसित्तकूपधान** नपुं., उपरिवत् — ने सप्त. वि., ए. व. — छब्बग्गिया भिक्खू आसित्तकूपधाने भुज्जन्ति, चूळव. 243; — नं प्र. वि., ए. व. — आसित्तकूपधानं नाम तम्बलोहेन वा रजतेन वा कताय पेळाय एतं अधिवचनं, चूळव. अड्ड. 52; पेळायाति अड्डंससोळसंसादिआकारेन कताय भाजनाकाराय पेळाय, यत्थ उण्हपायासादिं पक्खिपित्वा उपरि भोजनपातिं उपेन्ति, भत्तस्स उण्हभावाविगमनत्थं, तादिसस्स भाजनाकारस्स आधारस्सेतं अधिवचनं, तेनेव पाळियं "आसित्तकूपधानंति वुत्तं, वि. वि. टी. 2.220; इदञ्च आसित्तकूपधानं पच्चन्तेसु न जानन्ति कातुं, मज्झिमदेसेयेव करोन्ति, वि. वि. टी. 2.220.

**आसित्तगन्धतेल** त्रि., ब. स., सुगन्धित तेलों से अभ्यञ्जित, सुगन्धित तेलों को लगाया हुआ व्यक्ति — लाय स्त्री., तृ. वि., ए. व. — आसित्तगन्धतेलाय लुडुं सोवण्णदोणिया, म. वं. 20.35.

## आसित्तपण्डक

268

आसीदति

आसित्तपण्डक पु., पांच प्रकार के नपुंसकों में प्रथम के रूप में उल्लिखित, समलैंगिक क्रिया कराने वाला व्यक्ति — को प्र. वि., ए. व. — पण्डको पञ्चविधो होति आसित्तपण्डको, उसूयपण्डको, ओपक्कमिकपण्डको, नपुंसकपण्डको, पक्खपण्डकोति, कङ्का. टी. 159; तत्थ यस्स परेसं अङ्गजातं मुखेन गहेत्वा असुचिना आसित्तस्स परिक्काहो वृपसम्मति, अयं आसित्तपण्डको, तदे.; — स्स च. / ष. वि., ए. व. — तेसु आसित्तपण्डकस्स च उसूयपण्डकस्स च पब्बज्जा न वारिता, महाव. अट्ठ. 282; — कं द्वि. वि., ए. व. — आसित्तपण्डकञ्च उसूयपण्डकञ्च ठपेत्वा ..., कङ्का. अट्ठ. 109.

आसित्तब्ब त्रि., आस से व्यु., सं. कृ., बैठे जाने योग्य — ब्ब नपुं., प्र. वि., ए. व. — भावकम्मेसु तब्बानीया ... आसीयते, आसित्तब्ब, आसनीयं, क. व्या. 542.

आसित्तमत्त त्रि., जल का सिञ्चन करने के साथ साथ, आसिञ्चन अथवा छिड़काव करते ही — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — एवं तां सच्चकिरियं कत्वा उदके आसित्तमत्तेयव सोत्थिसेनस्स कुट्टं अम्बिलेन धोतं विय तम्बमलं तावदेव अपगच्छि, जा. अट्ठ. 5.90.

आसित्तविस<sup>1</sup> त्रि., व. स. [आसिक्त्वविष], विष को मुख से बाहर टपकाते रहने वाला विषधर सर्प, जहरीला नाग — सो पु., प्र. वि., ए. व. — आसित्तविसोतिपि आसीविसो, सकलकाये आसिञ्चित्वा विय ठपितविसो परस्स च सरीरे आसिञ्चनविसोति अत्थो, असित्तविसोतिपि आसीविसो, सारत्थ. टी. 2.19; — सा ब. व. — आसित्तविसातिपि आसीविसा, असित्तविसातिपि आसीविसा, स. नि. अट्ठ. 3.54.

आसित्तविस<sup>2</sup> नपुं., कर्म. स. [आसिक्त्वविष], टपकता हुआ विष, धीरे धीरे रिस कर बाहर आ रहा विष — सेन तृ. वि., ए. व. — आसित्तसत्तोति आसित्तविसेन सत्तो, जा. अट्ठ. 5.82.

आसित्तसत्त त्रि., तत्पु. स. [आसिक्त्वशप्त], तीव्र विष वाले (नागराज) द्वारा अभिशप्त या शापित — त्तो पु., प्र. वि., ए. व. — आसित्तसत्तो निहतो पथब्बा, जा. अट्ठ. 5.82; आसित्तसत्तोति आसित्तविसेन सत्तो, तदे.

आसित्तोदक त्रि., [आसिक्त्वोदक], जल द्वारा सिञ्चित, सिञ्चित — का स्त्री., प्र. वि., ए. व. — महापथवी ... आसित्तोदका चिकखल्लजाता, मि. प. 265; — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — आसित्तोदकानि वटुमानि, दी. नि. 2.254.

आसिलिद्ध त्रि., आ + √सिलिस् से व्यु., भू. क. कृ. [आशिलिष्ट], दृढ़ता के साथ जुड़ा हुआ अथवा चिपटा

हुआ, पूरी तरह से समर्पित — ह्यो पु., प्र. वि., ए. व. — आसिलिद्धो गुरुम्मवं आसिलिद्धो गुरुभोता, मो. व्या. 5.58. आसी<sup>1</sup> त्रि., अस (फेंकना) से व्यु., केवल स. उ. प. के रूप में इस्सा. के अन्त. द्रष्ट.

आसी<sup>2</sup> त्रि., अस (खाना) से व्यु., केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त, खाने वाला, अप्पा, एका, तिणा, पलासा, सुधा. के अन्त. द्रष्ट.

आसी<sup>3</sup> स्त्री., [आशी], सांप की विषैली दाढ़ या दांत — आसीति वा दाढा वुच्चति, तत्थ सन्निहितविसोति आसीविसो, सारत्थ. टी. 2.20; आसी त्थी सम्पदादा थ, अभि. प. 655; सम्पदादायमासिथी, अभि. प. 872.

आसी<sup>4</sup> / आसि स्त्री., [आशिष], 1. शुभेच्छा, मङ्गल की कामना, आशीर्वाद, 2. अलङ्कारों का एक प्रमेद — आसी नाम सियत्थस्स इहस्सासिसनं यथा, सुबोधा. 336(गा.); स्वातनी आसि भविस्सन्ती चाति, सद. 1.56; सम्पदादायमासिथी, इहस्सासिसनाय पि, अभि. प. 872; — सवाचा स्त्री., [आशीर्वचन], मङ्गलकामना अथवा आशीर्वाद का वचन — चं द्वि. वि., ए. व. — तदाहं आसीसवाचं अवोचं अनुकम्पिका, थेरीगा. अट्ठ. 165; — सिवाद पु., [आशीर्वाद], शुभकामना का कथन — दं द्वि. वि., ए. व. — सुखिनी होहि, अरोगा होहीति आदिना आसिवादं अत्यतो वदापेसि नाम, वि. व. अट्ठ. 18; — वादन नपुं., उपरिचत् — वसेन तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., आशीर्वाद के द्वारा — कालेन कालं आसीवादनवसेन सुट्ठ पयुत्तनन्दिघोसोति च वदन्ति, वि. व. अट्ठ. 232.

आसीतिम त्रि., अस्सीवां — मे सप्त. वि., ए. व. — आसीतिमे वस्से सुखेनेव पब्बज्जं उपगत्तो, अ. नि. अट्ठ. 1.234.

आसीदति आ + √सद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसीदति], 1. जा पहुंचता है, समीप पहुंचता है, पा लेता है, स्पर्श करता है, पकड़ लेता है, 2. आक्रमण या प्रहार करता है, मुठभेड़ करता है, 3. तिरस्कृत या अपमानित करता है, हटा देता है — दे विधि., प्र. पु., ए. व. — आसीविसमि आसीदे येन दड्ढो न जीवति, अ. नि. 2(1).63; आसीदेति घट्टेय्य, अ. नि. अट्ठ. 3.28; नासीदे, यस्मिं नत्थि कतज्जुता, जा. अट्ठ. 4.51; आसीदे, सज्जतानं तपस्सिनं, जा. अट्ठ. 5.259; — सदा अद्य., प्र. पु., ए. व. — नासदा वाकरं मिगो, म. नि. 2.262; — सदो म. पु., ए. व. — मेतमासदो एसो हि, म. नि. 1.410; अत्रिच्छं चक्कमासदो, जा. अट्ठ.

## आसीन

269

## आसीविसूपम

1.396; - दित्वा पू. का. कृ. - ब्राह्मणा आसीदित्वा संसीदन्ति, दी. नि. 1.224.

**आसीन** त्रि., आस का भू. क. कृ. [आसीन], बैठा हुआ, आसन पर बैठा हुआ - नो पु., प्र. वि., ए. व. - अनुत्थुनन्तो आसीनो, भुत्तु याचित्थ जीवितं, जा. अष्ट. 5.341; - नं पु., द्वि. वि., ए. व. - नगस्स पस्से आसीनं मुनि दुक्खस्स पारगुं, स. नि. 1(1).225; न हेव ठितं नासीनं, जा. अष्ट. 3.81; - ने<sup>1</sup> सप्त. वि., ए. व. - एकस्मिं तुण्हिमासीने, सब्बे तुण्ही भवन्ति ते, दी. नि. 2.156; - ने<sup>2</sup> पु., द्वि. वि., ब. व. - सो ... अज्झमासथ पवङ्ककाये आसीने दिजसङ्गणाधिपे, जा. अष्ट. 5.334; - नानं पु., ष. वि., ब. व. - वोळ्ळ च नेसं पिण्डञ्च आसीनानं पदापये, जा. अष्ट. 7.192; - नेसु पु., सप्त. वि., ब. व. - गेहसामिकेसु तुण्हीमासिनेसु आणाकरणं न युत्तं, स. नि. अष्ट. 3.224; स. उ. प. के रूप में, अग्गिमा, पासाणमा. के अन्त. द्रष्ट.

**आसीनसयन** त्रि., बैठा हुआ अथवा लेटा हुआ - स्स पु., ष. वि., ए. व. - चरतो तिद्धतो वापि, आसीनसयनस्स वा, थेरगा. 452; आसीनसयनस्स वाति आसीनस्स सयनस्स वा, निसिन्नस्स निपज्जन्तस्स वाति अत्थो, थेरगा. अष्ट. 2.102.

**आसीयति** आ + ऽसि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आश्रयते], आश्रय लेता है, विद्यमान होता है - कदमं जायति उदके आसीयतीति, मि. प. 81-82.

**आसीयते** आस के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व., बैठा जाता है, द्रष्ट. आसति के अन्त.

**आसीवचन** नपुं., शुभकामना के वचन, आसी के अन्त. द्रष्ट.

**आसीविस/आसिविस** पु., [आशीविष], अत्यन्त तेजी के साथ शरीर में फैलने वाले विष वाला सर्प, तीव्र विष वाला सर्प - सो प्र. वि., ए. व. - आसु सीघं एतस्स विसं आगच्छतीति आसीविसो, पारा. अष्ट. 1.170; आसीविसो भुजङ्गोहि ..., अभि. प. 653; आसित्तविसोतिपि आसीविसो, सारस्थ. टी. 2.19; नागराजा इद्धिमा आसिविसो घोरविसो, महाव. 29; सेय्यथापि सुनक्खत्त, आसीविसो घोरविसो, म. नि. 3.45; काये आसीविसो पतितो होति, स. नि. 2(2).43; - सं द्वि. वि., ए. व. - आसीविसमिवोरगं अग्गिं विय, पारा. अष्ट. 1.316; आसीविसं घोरविसं, म. नि. 1.301; - सेन तृ. वि., ए. व. - आसीविसेन वित्तीति, जा.

अष्ट. 7.25; आसीविसेन दट्ठो भवेय्य, मि. प. 150; - सा प. वि., ए. व. - आरा अमिता ब्यवजन्ति तेहि आसीविसा वा रिव सत्तुसङ्घाति, जा. अष्ट. 5.77; - स्स ष. वि., ए. व. - नागराजस्स इद्धिमतो आसिविसस्स घोरविसस्स तेजसा ..., महाव. 29; आसिविसस्स घोरविसस्स मुखे अङ्गजातं पक्खित्तं, पारा. 21; आसीविसस्सानन्तरं कण्हसप्पो वुत्तो, सारस्थ. टी. 2.20; - से सप्त. वि., ए. व. - मण्डूकपोतिकानं आसीविसे कण्हसप्पे गिलनकालो विय भविससति, जा. अष्ट. 1.327; यत्तो चासीविसे चरेति, जा. अष्ट. 4.198; - सा प्र. वि., ब. व. - चत्तारो आसीविसा उग्गतेजा घोरविसा, स. नि. 2(2).176; आसीविसा दुरुपट्ठाना, स. नि. अष्ट. 3.59; - सेहि तृ. वि., ब. व. - पठमं आसीविसेहि अनुबद्धो, स. नि. अष्ट. 3.56; - सानं ष. वि., ब. व. - इमेसं चतुन्नं आसीविसानं, स. नि. 2(2).176; आसीविसानञ्च रुक्खसुसिरतिणपण्णगहन सङ्कारट्ठानानिपि आसयो, स. नि. अष्ट. 3.58; स. उ. प. के रूप में, घट्टिता, पहता. के अन्त., द्रष्ट.

**आसीविसदट्ठ** 1. त्रि., तत्पु. स., जहरीले सर्प द्वारा डसा गया, विषैले सांप द्वारा काटा गया, 2. नपुं., सांप का काटना, स. प. के अन्त., - डूपमा स्त्री., सांप द्वारा डसे जाने की उपमा - य तृ. वि., ए. व. - अयं पनत्थो आसीविसदट्ठपमाय दीपेतब्बो एको किर पुरिसो आसीविसेन दट्ठो, स. नि. अष्ट. 2.88.

**आसीविसपोतक** पु., शिशु सर्प, सांप का बच्चा - का प्र. वि., ब. व. - हे आसीविसपोतका कीळन्ति, स. नि. अष्ट. 3.14.

**आसीविसभारित** त्रि., तत्पु. स., जहरीले सर्पों से भरपूर - ता पु., प्र. वि., ब. व. - अपेसलानीति एवरुपा पुग्गला आसीविसभारिता विय वम्मिका अपियसीला होन्ति, जा. अष्ट. 4.343.

**आसीविसवग्ग** पु., स. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, स. नि. 2(2).176-200; स. नि. अष्ट. 3.52-111.

**आसीविसालय** पु., तत्पु. स., सर्प की बामी, सर्प के रहने का बिल - सम त्रि. सांप की बामी के समान, सांप के बिल जैसा - मे पु., सप्त. वि., ए. व. - आसीविसालयसमे रोगावासे कळेवरे, अप. 2.203; - निम त्रि., उपरिवत् - सो पु., प्र. वि., ए. व. - आसीविसालयनिभो सभयो सटुक्खो, तेल. 70.

**आसीविसूपम** त्रि., सर्प जैसा, सांप के समान - मा पु., प्र. वि., ब. व. - चत्तारो आसीविसूपमा पुग्गला, अ. नि.



## आसीविसोपमसुत्त

270

## आसेवति

1(2).127; कामा कटुका आसीविसूपमा, येसु मुच्छिता बाला, थेरीगा. 453; — मे सप्त. वि., ए. व. — पञ्चुपादानक्खन्था आसीविसूपमे ..., विसुद्धि. 2.107; विभ. अ. 30; — मं पु., द्वि. वि., ए. व. — तेसं धम्मं अदेसेसि थेरो आसीविसोपमं, म. वं. 12.26; निसज्ज नन्दनवने देसियासिविसूपमं, म. वं. 15.178; कथेसि तत्थ सुत्तन्तं आसिविसूपमं सुभं, दी. वं. 14.18.

**आसीविसोपमसुत्त** नपुं, स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक — त्तं प्र. वि., ए. व. — सेय्याधिदं ... आसीविसोपमसुत्तं, स. नि. अ. 2.3; — त्तं द्वि. वि., ए. व. — थेरो तेसं आसीविसोपमसुत्तं कथेसि, पारा. अ. 1.47.

**आसीविसोपमसुत्तन्त** पु., उपरिवत् — त्तं द्वि. वि., ए. व. — कल्लमहाविहारे आसीविसोपमसुत्तन्तं सुत्त्वा ..., ध. प. अ. 2.308.

**आसुं** 'अस का अद्य, उ. पु., ब. व. [आस्म], हम थे, अस्थि के अन्त. द्रष्ट.

**आसुं**<sup>2</sup> / **आसु** अ., निपा., क्रि. वि. [आशु]. तेजी से, शीघ्रता के साथ, तुरन्त — किरियाय आसुं परिनिष्ठापनं, स. 3.719; अरं लहुं आसुं, स. 3.902; आसु तुण्णमरं चाविलम्भितं तुवटं पि च, अभि. प. 40; इद्धिया चासु निष्ठासि असोकारामसङ्खयो, म. वं. 5.174.

**आसुगामी** त्रि., [आशुगामिन्], तेजी के साथ चलने वाला, शीघ्रता के साथ सक्रिय होने वाला — निया स्त्री., तृ. वि., ए. व. — ... ति आदिकं कथं सुभाविनिया पञ्जाय अनुक्कममाना ..., सु. नि. अ. 2.37; पाठा. आसुगामिनिया. **आसुणाति** आ + √सु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आशृणोति]. सुनता है, आज्ञा का पालन करता है — णन्ति ब. व. — आसुणन्ति बुद्धस्स भिक्खू, क. व्या. 279; — मानो वर्त. कृ., आत्मने. पु., प्र. वि., ए. व. — अस्सवीति आसुणमानो ... वचनं सुणाति, स. नि. अ. 1.32.

**आसुत** त्रि., व्यु., संदिग्ध, अच्छी तरह सुसज्जित — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आसुताति सज्जिता 'असुत्ता'ति ... अनाविला अपक्का तरुणा, वजिर. टी. 493; आसुताति सब्बसम्मारसज्जिता, सारथ. टी. 3.410.

**आसुम्भति** आ + √सुम्भ का वर्त., प्र. पु., ए. व., टपकाता है, फँकता है, गिराता है — भि अद्य. प्र. पु., ए. व. — सो भिक्खु ... तानि एक्कलोमानि ठितकोव आसुम्भि, पारा. 351; इड्ढकं मत्थके आसुम्भि, जा. अ. 3.385; ठितकोव आसुम्भीति ... पातेसीति अत्थो, पारा. अ. 2.242; आसुम्भि

भूमिं घुण्णत्वा तेसं अड्डीनि माणवो, म. वं. 23.80; — भिस्सन्ति भवि., प्र. पु., ब. व. — कथञ्चि नाम गूथकटाहं मत्थके आसुम्भिस्सन्ति!, पाचि. 361; — भित्त्वा/त्त्वान पू. का. कृ. — छट्ठे आसुम्भित्वाति पातेत्वा, सारथ. टी. 3.112; आसुम्भित्वान पादपे, वि. व. अ. 177.

**आसेति** आ + √सी के वर्त., प्र. पु., ए. व., 'आसयति' के स्थान पर कतिपय संस्करणों में प्रयुक्त, अप., सोता है, द्रष्ट. आसयति के अन्त.

**आसेवति** आ + √सेव का वर्त., प्र. पु., ए. व., आदि से अन्त तक सेवन करता है, निरन्तर अभ्यास करता है, बार बार आवृत्ति करता है, व्यवहार में अनुसरण करता है, विकसित करता है — भिक्खु मेत्ताचित्तं आसेवति, अ. नि. 1(1).13; सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति, अ. नि. 1(2).181; निमित्तं न आसेवति न भावेति, अ. नि. 3(1).226; पुब्बहसमयं आसेवति, पटि. म. 27; इमं वीरियं आरभति समारभति आसेवति भावेति बहुलीकरोति, विभ. 235; — न्ति ब. व. — सब्बसत्ता ... परिभुज्जन्ति ... आसेवन्ति भावेन्ति बहुलीकरोन्तीति, कथा. 136; — वियते/वीयति कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. — भावीयते आसेवीयते बहुलीकरीयते, स. 1.6; इमानि पञ्चिन्द्रियाणि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेवना होन्ति ... आसेवीयति, पटि. म. 306; — देव्यं विधि., उ. पु., ए. व. — नेक्खम्मे आनिसंसं अधिगम्म तमासेवेय्यं, अ. नि. 3(1).244; — त्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — इमं खो अहं दिट्ठिं आसेवन्तो, म. नि. 1.406; — तो च. वि., ए. व. — तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि पहीयन्ति, अ. नि. 1(2).182; अ. नि. 2(1).69; — स्स ष. वि., ए. व. — सब्बसङ्कारानं ... भङ्गानुपस्सनं आसेवन्तस्स, विसुद्धि. 2.280; सङ्कारूपेक्खाजाणं तं आसेवन्तस्स योगिनो, अभि. अव. 1307; — मानो वर्त. कृ., आत्मने. पु., प्र. वि., ए. व. — मेत्तं उपेक्खं करुणं विमुत्तिं, आसेवमानो मुदितञ्च काले, अप. 1.11; तत्थ आसेवमानोति ... चतुत्थज्झानवसेन भावयमानो, अप. अ. 1.204; — विं अद्य, उ. पु., ए. व. — अवितक्के आनिसंसं अधिगम्म तमासेवि, अ. नि. 3(1).245; — वितुं निमि. कृ. — वुच्चति, आसेवितुं वा फासुककाले, अप. अ. 1.205; — वित्त्वा पू. का. कृ. — कालेति मेत्तं आसेवित्त्वा ततो वुड्ढाय करुणं, अप. अ. 1.205; सो तं निमित्तं आसेवित्त्वा, विभ. 218.

## आसेवनपच्चय

271

## आसेवित

आसेवनपच्चय पु., 24 प्रकार के प्रत्ययों (कारणभूत धर्मों) में से एक, पुनः पुनः किया जा रहा व्यावहारिक आचरण अपने बाद में उत्पन्न होने वाले धर्मों के गुणों के बलवान बनाने में उनका उपकारक होता है, अतः यह आसेवनपच्चय कहलाता है, किसी एक धर्म के उदय में किसी दूसरे धर्म के सतत अभ्यास का कारणभूत होना — यो प्र. वि., ए. व. — आसेवनपच्चयो, विसुद्धि. 2.161; सङ्गारारम्भणञ्च कुसलं निब्बानारम्भणस्स आसेवनपच्चयो होति येव, विसुद्धि. महाटी. 2.263; आसेवनङ्गेन अनन्तरानं पगुणबलवभावाय उपकारको धम्मो आसेवनपच्चयो, प. प. अट्ट. 348; आसेवनपच्चयो गन्धादीसु पुरिमपुरिमाभियोगो विय, विसुद्धि. 2.166; आसेवनपच्चयोति उपेत्वा आवज्जनद्वयं, अभि. अव. 175; — येन तृ. वि., ए. व. — “... धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयोति, विसुद्धि. 1.134; — या प. वि., ए. व. — उप्पज्जति ... आसेवनपच्चया, पट्ठा. 2.123; — ता स्त्री., भाव., आसेवन-प्रत्यय होना, सतत अभ्यास का अन्य धर्म के उदय में कारणभूत होना, प्र. वि., ए. व. — तेन हि अत्थि काचि आसेवनपच्चयताति, कथा. 500; — भाव पु., उपरिवत् — वेन तृ. वि., ए. व. — आसेवनपच्चयभावेन ससम्पयुत्तानि, सट्ठ. 1.86.

आसेवनपच्चयकथा स्त्री., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 498.

आसेवनबलवता स्त्री., धर्मों के आसेवन अथवा सतत अभ्यास की शक्ति — य तृ. वि., ए. व. — आसेवनबलवताय विचित्तवुत्तिताय च, दी. नि. टी. 1.124.

आसेवनमन्दता स्त्री., तत्पु. स., व्यावहारिक आचरण में शिथिलता, यदा कदा ही अनुपालन अथवा व्यावहारिक आचरण करना — य तृ. वि., ए. व. — आसेवनमन्दताय अप्पसावज्जो, दी. नि. अट्ट. 1.70.

आसेवनमहन्तता स्त्री., तत्पु. स., व्यावहारिक आचरण अथवा अभ्यास की बारम्बारता, अनुपालन अथवा व्यावहारिक आचरण की पौनःपुन्यता, पुनः पुनः व्यावहारिक अभ्यास — य तृ. वि., ए. व. — आसेवनमहन्तताय महासावज्जो, दी. नि. अट्ट. 1.70.

आसेवना स्त्री./नपुं., [आसेवन, नपुं. बौ. सं., आसेवना, स्त्री.], निरन्तर अभ्यास, पुनः पुनः आवृत्ति, निरन्तर साथ संग, भावना, प्र. वि., ए. व. — आसेवनाति आदितो सेवना, पटि. म. अट्ट. 2.155; धम्मानं आसेवना भावना बहुलीकम्पं, म. नि. 1.382; सा हि भुसं सेवीयतीति आसेवनाति वुत्ता,

पटि. म. अट्ट. 1.112; — नं द्वि. वि., ए. व. — चित्तं आसेवनं लभति, विसुद्धि. 1.230; आसेवनं लभतीति भावनासेवनं लभति, विसुद्धि. महाटी. 1.279-280; — य तृ. वि., ए. व. — कथञ्च अत्तानं रक्खन्तो परं रक्खति ? आसेवनाय, भावनाय, बहुलीकम्मेन, स. नि. 3.244; — यं च. वि., ए. व. — ... सीलानि चित्तस्स ... आसेवनाय संवत्तन्ति, विसुद्धि. 1.47; तस्मा समाधिस्स आसेवनाय पगुणबलवभावाय संवत्तन्तीति अत्थो, विसुद्धि. महाटी. 1.75; — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — न होतासेवनं पन, अभि. अव. 974; एकस्सासेवनं नत्थि, तस्मा द्वे अनुलोमका तेहि आसेवनं लद्धा, ततियं होति गोत्रभु, अभि. अव. 1341; स. उ. प. के रूप में, दिट्ठा, पुब्बा. के अन्त. द्रष्ट.

आसेवनाभावना स्त्री., धर्मों का पुनः पुनः अभ्यास, व्यावहारिक आचरण में पुनः पुनः अभ्यास, 4 प्रकार की भावनाओं में एक, प्र. वि., ए. व. — चत्तस्सो भावना ... आसेवनाभावना, पटि. म. 25; पटिलाभे वसिप्पत्तस्स यथारुचि परिभोगकाले भावना, सा हि भुसं सेवीयतीति आसेवनाति वुत्ता, केचि पन आसेवनाभावना वसीकम्पं, एकरसाभावना सम्बत्थिकाति, वण्णयन्ति, पटि. म. अट्ट. 1.112.

आसेवयित्वा आ + √सेव के प्रेर. का पू. का. कृ., विकसित करके, भावित करके, बढ़ा करके, व्यावहारिक रूप में अभ्यास करके — सुञ्जप्पणिधिञ्च तथानिमित्तं, आसेवयित्वा जिनसासनम्हि, अप. 1.11.

आसेवित त्रि., आ + √सेव का भू. क. कृ., [आसेवित], भली भाँति सेवन किया गया, आचरण में उतारा गया, पालन किया गया, भावित, बढ़ाया गया, विकसित किया गया, बार बार अभ्यास किया गया — तो पु., प्र. वि., ए. व. — पाणातिपातो आसेवितो भावितो, अ. नि. 3(1).78; — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — धम्मं ते देसयिस्सामि, सतं आसेवितं अहं, जा. अट्ट. 5.209; — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — “आसेविते” तिपि पावो, तस्स आसेवितायाति अत्थो, बु. वं. अट्ट. 221; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — “कायगतासति आसेविता”ति, अ. नि. 1(1).61; वाचा आसेविता भाविता बहुलीकता, अ. नि. 3(1).79; — य तृ. वि., ए. व. — मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेविताय भाविताय बहुलीकताय ..., परि. 270; अ. नि. 3(2).308; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — “अमतं तेसं आसेवितं येसं कायगतासति आसेविता”ति, अ. नि. 1(1).61; — तानि/ता नपुं., प्र. वि., ब. व. — आसेवितानि भावितानि बहुलीकतानि

## आसेवितब्ब

272

आहच्च

उत्सदगतानि, विभ. 390; पापा आसेविता येहि ते अपायेसु जायरे, सद्धम्मो. 93; — कम्मडान त्रि., ब. स., ध्यान के कर्मस्थानों का बार बार अभ्यास कर चुका (साधक). वह, जिस ने कर्मस्थानों की ध्यान-भावना का निरन्तर अभ्यास किया है — नो पु., प्र. वि., ए. व. — आसेवितकम्मडानोति असुभकम्मडाने कतपरिचयो, विसुद्धि. महाटी. 1.194; आसेवितकम्मडानो परिहतधुतङ्गो विसुद्धि. 1.177; — निसेवित त्रि., आचरण में भली भांति उतारा हुआ, परिपूरित, वह, जिसका बार बार अभ्यास कर उसे पूर्णतया विकसित कर लिया गया है — तं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — पोराणकबोधिसत्तेहि आसेवितनिसेवितं पठमं दानपारमिं दिस्वा ..., जा. अट्ठ. 1.26.

**आसेवितब्ब** त्रि., आ + सेव का सं. कृ. [आसेवितव्य], सेवन किए जाने योग्य, आचरण में उतारने योग्य, बार बार अभ्यास किए जाने योग्य — ब्बं पु., द्वि. वि., ए. व. — आसेवितब्बञ्च वो, भिक्खवे, धम्मं देसेस्सामि, न आसेवितब्बञ्च, अ. नि. 3(2).213; — ब्बा पु., प्र. वि., ब. व. — धम्मा ... आसेवितब्बा भावेतब्बा बहुलीकातब्बा, दी. नि. 2.92; — ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. — अब्बापादो एवं आसेवितब्बो ... — अनुसासनीपाटिहारियं, पटि. म. 396; — ब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सा खो पन आलोकसज्जा एवं आसेवितब्बा, पटि. म. 396; — ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आसेवितब्बं भावेतब्बं, म. नि. 2.126.

**आह** √ क्वा का परोक्षभूत का प्र. पु., ए. व., वास्तविक प्रयोगों में किसी कालविशेष का सूचक प्रतीत नहीं होता [आह], 1. बोलता है, बोला, कहता है, कहा; सम्बोधित करता है, सम्बोधित किया — सुपिने किलमाह, सट्ठ. 3.816; आह आह् सट्ठ. 3.827; वर्त., प्र. पु., ए. व. — ब्राह्मणो एवमाह, — ... "गोतमं दस्सनाय उपसङ्गमिस्सती"ति, दी. नि. 1.98; सो एवमाह "—ति, म. नि. 1.130; सुद्धिमाह, सु. नि. 796; यो वापि कत्वा न करोमि चाह, ध. प. 306; न सत्था ... "—ति आह, ध. प. अट्ठ. 1.5; उपसङ्गमिन्वा आह — " — ", जा. अट्ठ. 2.22; तेनापि "किमत्थं ठितोसी"ति वुत्तो तथेवाह, जा. अट्ठ. 3.46; "भदे, त्वं इमं ... सुखेन जीवाही"आह, जा. अट्ठ. 4.21; म. पु., ए. व. — "अथ कस्मा, त्वं महाराज, एवमाह"चित्तेन सरति, नो सतिया"ति, मि. प. 85; — हंसु/हु प्र. पु., ब. व. — तमेनं भिक्खु एवमाहंसु, स. नि. 1(2).244; "कामा अनिच्चा इति चापि आहु", थेरगा. 188; 2. आज्ञा देता है, आज्ञा दी, आदेश

देता है, आदेश दिया, प्र. पु., ए. व. — तस्सपि नो भगवा पहानमाह, म. नि. 2.121; "उय्यानं मापेही"ति आह, जा. अट्ठ. 2.157; "एहि भिक्खू"ति मं आह, थेरगा. 625; पुनराह महीपति तस्स योधसतस्सापि तथेव परियोसितुं, म. वं. 23.98; 3. किसी के विषय में कहता है, किसी को लेकर कुछ कहा — हंसु/हु प्र. पु., ब. व. — तमेनं एवमाहंसु —ति, स. नि. 2(2).323; ... ति आहु भिक्खुं, अ. नि. 1(2).18; सच्चं किरेवमाहंसु, वस्तं बालोति पण्डिता, जा. अट्ठ. 3.244.

**आहच्च** 1. आ + रहन का पू. का. कृ., अ., व्यु. संदिग्ध [आहत्य], शा. अ., (प्रहार करने हेतु) समीप में आ कर, समीप में पहुंच कर, सट कर, सटा कर, ला. अ., स्पर्श कर, प्रहार कर, तोड़-फोड़ कर, चोट पहुंचा कर, ढकेल कर, धक्का देकर, पीट कर, दबा कर — मुतन्ति मुत्वा मुगित्वा च गहितं, आहच्च उपगन्त्वाति अत्थो, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).41; आहच्चाति विसयं अन्वाय, पत्वाति अत्थो, म. नि. टी. (मू.प.) 1.77; सप्पो सीसेन करण्डपुटं आहच्च ओकासं कत्वा पलायति, पारा. अट्ठ. 1.291; आहच्चाति पहरित्वा, सारत्थ. टी. 2.137; पाणिना तलमाहच्च, सरं कत्वान भेरवं, दी. नि. 2.193; पाणिनातलमाहच्चाति हत्थेन पथवीतलं पहरित्वा, दी. नि. अट्ठ. 2.257; चक्खुना चक्खुं आहच्च दट्ठब्बं होति, पारा. अट्ठ. 1.94; जिह्वाय तालुं आहच्च, म. नि. 1.171; यथापि सेला विपुला नमं आहच्च पब्बता, स. नि. 1(1).121; नमं आहच्चाति विपुलत्ता एव आकासं अभिविहच्च सब्बदिसासु फरित्वा, विसुद्धि. महाटी. 1.274; अट्ठिमिज्जं आहच्च तिड्ढति, महाव. 105; उदा. अट्ठ. 58; पथवियं पन सचोपि कुच्छिया कुच्छिं आहच्च ठिता होन्ति, पाचि. अट्ठ. 99; तस्स किर लोहिते छिन्ने मंसे मिलाते अक्खिआवाटका मत्थलुज्जं आहच्च अट्ठसु, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).362; अमतद्वारं आहच्च तिड्ढति, स. नि. 1(2).39; नमं आहच्च ठिता, अ. नि. 2(1).221; 2. संभवतः आ + रहर का सं. कृ., पू. का. कृ. [आहत्य], शा. अ., आहरण करने योग्य, ले आए जाने योग्य, ला. अ., 1. आश्रय या अवलम्बन ग्रहण करने योग्य, अपेक्षा किए जाने योग्य, ला. अ., 2. कहीं अन्यत्र से लेकर उद्धृत किए जाने योग्य, उद्धरणीय — इमं मे कम्मडानं अनुलोमं वा गोत्तमुं वा आहच्च ठितन्ति न जानाति, स. नि. अट्ठ. 3.232; आहच्चुपनिज्जायन्ता, ना. रू. प. 153; 854; 896; इच्चाहच्च पवतानं लक्खणानं सभावतो, ना. रू. प.

## आहच्वनियम

273

## आहच्वभासित

1606; तैसु द्वावीसति तिका सतं दुकाति अयं आहच्वभासिता ... मातिका नाम, ध. स. अहु. 10; — च्वाकारभेद पु., कण्ठ आदि उच्चारण स्थानों के साथ वायु की टकराहट के आधार पर आकार के भेदों जैसा भेद — देन तृ. वि., ए. व. — आहच्वाकारभेदेन तिविधा हि विपस्सना, ना. रू. प. 1616; स. उ. प. के रूप में अना. के अन्तः, द्रष्टः. आहच्वनियम पु., विशिष्ट स्वरूप का अथवा सुनिश्चित प्रकृति वाला नियम — एत्थ तस्मानुपेक्खित्वा आहच्वनियमं बुधो, तब्भावभावित्तेन, पच्चयत्थं विभावये, ना. रू. प. 730.

आहच्वपच्चय पु., पडा. में निर्दिष्ट विशिष्ट प्रकार के प्रत्यय, बुद्ध के सर्वज्ञता के ज्ञान के प्रभाववश विशिष्टरूप में उपदिष्ट पद्धान-नय के 24 प्रत्यय — ड पु., विशिष्ट प्रकार के प्रत्यय (कारण) होने का तात्पर्य या आशय — डेन तृ. वि., ए. व. — आहच्वपच्चयडेन चतुवीसतिधा ठिता, ना. रू. प. 798; — डिति स्त्री., पद्धान में निर्दिष्ट प्रत्ययों की विशिष्टता अथवा विशिष्ट स्वरूप में रहने की स्थिति — ति प्र. वि., ए. व. — पटिच्च फलं एति एतस्माति पच्चयो, तिडुति फलं एत्थ तदायत्तवुत्तितायाति ठिति, आहच्व विसंसेत्वा पवता पच्चयसङ्घाता ठिति आहच्वपच्चयडिति, अभि. ध. वि. टी. 206; कोचि पन 'आहच्व कण्ठतालुआदीसु पहरित्वा वुत्ता ठिति आहच्वपच्चयडिती'ति, तदे.; — तिं द्वि. वि., ए. व. — पद्धाननयो पन आहच्वपच्चयडितिमारब्ध पवुच्चति, अभि. ध. स. 55; आहच्वपच्चयडितिमारब्ध पवुच्चतीति, अभि. ध. वि. टी. 206.

आहच्वपद नपुं., स्वयं बुद्ध द्वारा निश्चित रूप से भासित, 1. वचन, प्रामाणिक वचन, उद्धरणीय बुद्धवचन, 2. कण्ठ आदि उच्चारण-स्थानों से ले आकर अपनी वाणी द्वारा भासित वचन — दं प्र. वि., ए. व. — आहच्वपदन्ति सुत्तं अधिप्पेतं, पारा. अहु. 1.179; आहच्वपदन्ति भगवतो सब्बज्जुतज्जाणेन विसंसेत्वा उत्तवचनं, मि. प. टी. 28(रो.); कण्ठादिवण्णप्यवत्तिद्धानं आहच्व विसंसेत्वा भासितं पदं आहच्वपदं, सारत्थ. टी. 2.40; कण्ठादिवण्णुप्पत्तिद्धानकरणादीहि आहरित्वा अत्तनो वचीविज्जतिपाव भासितवचनं आहच्वपदं, वि. वि. टी. 1. 104; — देन तृ. वि., ए. व. — आहच्वपदेन रसेन आचरियवसेन अधिप्पाया कारणुत्तरियताय, मि. प. 148.

आहच्वपाठ पु., त्रिपिटक का पाठ, त्रिपिटक में उपलब्ध बुद्धवचन की पंक्ति — ठो प्र. वि., ए. व. — आहच्वपाठो निदस्सन्, सद्. 1.147; अत्रायं आहच्वपाठो, सद्. 3.829.

आहच्वपाद पु., अलग किए जाने योग्य पायों वाला मंच या पलंग — दो प्र. वि., ए. व. — कुळीरपादो आहच्वपादो येव मसारको, चत्तारो बुद्धिकाबद्धो तिमै मज्जन्तरा सियुं, अभि. प. 310; यस्स अटनिछिदे पादो पविसित्वा तिडुति, सो आहच्वपादो, अभि. प. टी. 310 (बर्मी).

आहच्वपादक त्रि., ऐसा पलंग जिसके पायों को अलग कर पुनः जोड़ा जा सके, 4 प्रकार के पीठों में से अन्यतम पीठ, तोड़ने एवं जोड़ने योग्य पैरों वाला (मज्ज) — को प्र. वि., ए. व. — सोसानिको आहच्वपादको मज्जो उप्पन्नो होति, चूळव. 275; कुळीरपादको आहच्वपादकोति, चूळव. अहु. 76; आहच्वपादको नाम अटनियो विज्झित्वा अटनिछिदे पादसीसे सिखं कत्वा तं पवेसेत्वा अटनिया, विन. वि. टी. 1.314; — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — चत्तारि पीठानि — मसारकं बुद्धिकाबद्धं, कुळीरपादकं, आहच्वपादकं, पाचि. 60; — कं द्वि. वि., ए. व. — आहच्वपादकन्ति अङ्गे विज्झित्वा पवेसितपादकं, कट्ठा. अहु. 198; " ... उपरिवेहासकुटिया आहच्वपादकं मज्जं सहसा अभिनिसीदिस्सती'ति, पाचि. 67; आहच्वपादकं मज्जं वेहासकुटियुपरि पीठं वाभिनिसीदन्तो, आपज्जति न भूमितो, उत्त. वि. 448; — के सप्त. वि., ए. व. — आहच्वपादके मज्जे वा पीठे वा ठितो उपरि नागदन्तकादीसु, पाचि. अहु. 43; आहच्वपादके मज्जे, विन. वि. 1100; आहच्व पादके सीदं, उत्त. वि. 85.

आहच्वपाळि स्त्री., स्वयं बुद्ध द्वारा उपदिष्ट त्रिपिटक की पंक्ति — या तृ. वि., ए. व. — एकन्तपुमयाचकत्तज्जस्स आहच्वपाळिया आयति, सद्. 1.209.

आहच्वभासित त्रि., निश्चित रूप से (त्रिपिटक में संगृहीत) स्वयं बुद्ध द्वारा कहा गया (वचन), बुद्ध का आत्मप्रत्यक्षवचन — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अयं ..., आहच्वभासिता जिनवचनभूता ... मातिका, ध. स. अहु. 10; आहच्वभासिता सावकभासिताति दुविधा ... मातिका, मो. वि. टी. 5; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अत्तपच्चक्खवचनं न होतीति आहच्व भासितं न होतीति अधिप्पायो, वजिर. टी. 19; — स्स घ. वि., ए. व. — आहच्वभासितस्स च दस्सनतो

## आहच्चवचन

274

आहत

ब्रह्महि ..., सद्. 1.157; रसेनाति तस्स आहच्चभासितस्स रसेन, ततो उद्धटेन विनिच्छयेनाति अत्थो, विनया. टी. 2.132; - ते सप्त. वि., ए. व. - तथा धजग्गसुत्तन्ते मुनिनाहच्चभासिते, सद्. 1.8; - तानि नपुं. प्र. वि., ब. व. - सम्मासम्बुद्धेन सामं आहच्चभासितानि, उदा. अद्. 3-4; - ता पु., प्र. वि., ब. व. - आहच्चभासिता पयोगा, सद्. 1.256.

आहच्चवचन नपुं., [आहत्यवचन], समग्रवचन, विशिष्ट वचन, प्रामाणिक बुद्ध-वचन, मूल बुद्धवचन - नं प्र. वि., ए. व. - तत्रिदं पठमत्थस्स साधकं आहच्चवचनं, सद्. 1.33; आहच्चवचन्ति भगवतो दानकरणानि आहच्च अभिहन्त्वा पवत्तवचनं, नेत्ति. अद्. 208; किं इदं सुत्तं आहच्च वचनं, नेत्ति. 20; - नेन तृ. वि., ए. व. - अयं सुत्तन्तो आहच्चवचनेन, जिनभासितो नाम जातो, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).264.

आहच्चाकारभेद पु., समस्त स्वरूपों का विभाजन, आकार के समग्र प्रभेद, कण्ठ आदि उच्चारणस्थानों के साथ वायु के सम्पर्क (स्पर्श) के आधार पर आकार के प्रभेदों जैसा प्रभेद - देन तृ. वि., ए. व. - आहच्चाकारभेदेन तिविधा हि विपस्सना, ना. रू. प. 1616.

आहञ्जति आ + ण्हन के कर्म. वा. का वर्त. प्र. पु., ए. व. [आहन्यते], प्रहार किया जाता है, पीटा जाता है, पीड़ित या व्यथित किया जाता है, पीट कर बजाया जाता है (सङ्गीत-वाद्य) - हञ्जतीति विहञ्जति विधातं आपज्जति, अ. नि. अद्. 3.34; - न्तु अनु., प्र. पु., ब. व. - आहञ्जन्तु भेरिसुदिङ्गसङ्गे, जा. अद्. 4.354; आहञ्जन्तु सब्बवीणा, जा. अद्. 6.295; आहञ्जन्तूति वादियन्तु, जा. अद्. 6.296; - मानं वर्त. कृ., आत्मने., पु., द्वि. वि., ए. व. - न पस्सथ ... मच्चुमाहञ्जमानमखिलंसततं तिलोकं, तेल. 27.

आहत त्रि., आ + ण्हन से व्यु., भू. क. कृ. [आहत], शा. अ., ले आया गया, लिया हुआ, गृहीत, प्रदत्त, ला. अ., उद्धृत, उल्लिखित, उद्धरणरूप में गृहीत - टो पु., प्र. वि., ए. व. - आहतो आभतानीता, अभि. प. 749; - छन्दारहानं छन्दो आहतो होति, महाव. 415; - टं नपुं. प्र. वि., ए. व. - "मुखद्वार आहतं इदं", कङ्का. अद्. 221; न अम्हेहि किञ्चि आहतं न उपाहतं, पारा. अद्. 2.127; इध् । आहतन्ति विहारतो बहि आगतद्धाने आनीतं, वि. वि. टी. 2.166; मरणदुक्खं हरित्वा जीवितसुखं आहतं, तेन मं नापि

बन्धो तपति, जा. अद्. 3.331; आहतं सामणेरहि हिमवन्ता सुगन्धकं, म. वं. 29.9; - टा स्त्री., प्र. वि., ए. व. - आहटा होति परिसुद्धि, महाव. 151; - वेलातिक्कमनहेतु आहटा उरु उरुवेलाति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).76; अयं उपमा भगवता अत्तनो अत्थाय आहटा, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).185; - टे नपुं. सप्त. वि., ए. व. - ताय भत्ते आहटे तयोपि एकतो भुज्जितुं निसीदिसु, ध. प. अद्. 1.109; - टानि/टा नपुं., प्र. वि., ए. व. - "आसनानि आहत्था" ... आहतानि होन्ति, पाय. अद्. 2.136; सम्बुद्धपत्तं पूरेत्वा सुमनेनाहटा इध, म. वं. 20.10; - टेसु सप्त. वि., ब. व. - पूवेसु आहटेसु, ध. प. अद्. 2.354; - त्त नपुं. भाव. [आहतत्व], ले आया हुआ होना - त्ता प. वि., ए. व. - वराहरोति वरस्स मग्गस्स आहटत्ता वराहरोतिवुच्चति, सु. नि. अद्. 1.252; - टाहत त्रि., [आहताहत], पुनः पुनः लाया गया - टं द्वि. वि., ए. व. - आहटाहतं थेरसने वा ददेयुं, महाव. अद्. 380; - उपमा स्त्री., कर्म. स. [आहतोपमा], गृहीत उपमा, कहीं अन्यत्र से ली गई उपमा - मं द्वि. वि., ए. व. - एवमेव अत्तनो व्यत्तताय भगवता आहतउपमयेव, स. नि. अद्. 2.265; - काल पु., कर्म. स., लाए जाने का काल - ले सप्त. वि., ए. व. - रञ्जो असीनं आहतकाले असिं उपसिङ्गित्वा, जा. अद्. 1.435; - कारण नपुं. कर्म. स., प्राप्त कारण, सामने उपस्थित कारण - णं द्वि. वि., ए. व. - निगण्ठो अत्तनो वादभेदन्तथं आहतकारणमेव अत्तनो मारणत्थाय आवुधं तिखिणं करोन्तो, ... म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).174; - धन नपुं. कर्म. स., लाया हुआ धन - नं द्वि. वि., ए. व. - आभतधनञ्च, जा. अद्. 6.195; पाठा. आभत.; - सप्पि नपुं. कर्म. स., लाया हुआ धी - प्पिं द्वि. वि., ए. व. - इदं किर सा आहतसप्पिं दत्त्वा, पाचि. अद्. 180; स. उ. प. के रूप में, अना., धजा., धम्मा., नागा., वाणिजा., वाता., सुका. के अन्त. द्रष्ट.

आहत त्रि., आ + ण्हन का भू. क. कृ. [आहत], पीटा गया, दागा गया, मारा गया, काटा गया, पीड़ित, व्यथित - तं नपुं. प्र. वि., ए. व. - नलाटे वा ऊरुआदीसु वा तत्तेन लोहेन लक्खणं आहतं होति, महाव. अद्. 266; - तो पु., प्र. वि., ए. व. - आहतोपि न कुप्पेय्य, जा. अद्. 7.193; सत्तिया दीहि चाहतो, सद्धम्भो., 187; भेरिसद्धो समाहतो, दी. वं. 15.21; - ता ब. व. - सत्ता विरुद्धा पटिविरुद्धा आहता पच्चाहता आघातिता पच्चाघातिता, महानि. 302; -

## आहतक

275

आहरक

ते पु., सप्त. वि., ए. व. — आहतो अमतभेरिहि वस्सन्तो धम्मवुद्धिया, बु. वं. अहु. 221; — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — नागलोकं व गरुडाहतं, चू. वं. 75.38; स. उ. प. के रूप में, अक्खा., इच्छा., कसा., तक्का., तिलका., दब्बा., लक्खणा., वाटा., वितक्का., सत्तिसत्ता. के अन्त. द्रष्ट.; — समब्बाहत त्रि., पुनः पुनः अथवा अत्यधिक प्रहार किया गया — तो पु., प्र. वि., ए. व. — पासाणादीसु आहतसमब्बाहतो भिज्जित्वा, स. नि. अहु. 3.83; — ताहतद्वान नपुं., कर्म. स. [आहताहतस्थान]. बार बार चोट पुंहचाया गया स्थान, पुनः पुनः प्रहार किया गया स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — खीररुक्खस्स कुठारिया आहताहतद्वाने खीरं न निक्खमिरस्सति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.178.

आहतक त्रि., आ + √हर से व्यु., क. ना. [आहतक], शा. अ. कहीं से पकड़कर लाया हुआ, ला. अ., एक प्रकार का भृत्य, कर्मचारी, सेवक — को पु., प्र. वि., ए. व. — कम्मकारो नाम भटको आहतको, पाचि. 301; आहतकोति आनीतो, नियतकोति अधिप्यायो, वजिर. टी. 325.

आहतचित्त त्रि., ब. स. [आहतचित्त], व्यथित अथवा पीड़ित चित्त वाला, विपत्तिग्रस्त, विपन्न — तो पु., प्र. वि., ए. व. — कुपितो अनन्तमनो अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो, पारा. 255; पटिपेन आहतं चित्तमस्ससाति आहतचित्तो, पारा. अहु. 2.154; — ता ब. व. — दुडमना-आहतचित्ता, महानि. 44; पाठा. आहतमना; — ते पु., द्वि. वि., ब. व. — जरादीहि ब्यारुद्धे आहतचित्ते सत्ते दिस्सा, सु. नि. अहु. 2.258; — ता स्त्री., भाव., चित्त का पीड़ित होना अथवा राग आदि से ग्रस्त रहना, प्र. वि., ए. व. — तं हेतु तप्पच्चया तं निदानं मुनिनो आहतचित्तता खिलजाततापि नत्थि, महानि. 45; — तं द्वि. वि., ए. व. — सत्तहचारीसु आहतचित्तं खिलजातं पमिन्देय्य, महानि. 381; स. उ. प. के रूप में अना. के अन्त. द्रष्ट.

आहत्तु त्रि., आ + √हर से व्यु., क. ना. [आहर्तु], आहर्ता, लाने वाला — ता पु., प्र. वि., ए. व. — अहं नैसं जीविकाय दाता, यसस्स आहत्ता, म. नि. 2.333.

आहनति/आहन्ति आ + √हन का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आहन्ति], 1. पीटता है, प्रहार करता है, तोड़ता-फोड़ता है, हत्या करता है, प्राण लेता है, 2. टपकाता है, गिराता है — भित्तिं आहनति, पाचि. अहु. 43; तत्थ आहनति चित्तं आघाता, दी. नि. अहु. 1.49; — नेय्युं विधि., प्र.

पु., ब. व. — यथा सचे खीररुक्खे कुठारिया आहनेय्युं, म. नि. अहु. (म.प.) 2.178; — नन्तं वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. — आहनन्तं धम्मभेरि, अप. 2.43; — नि अघ., प्र. पु., ए. व. — अमतभेरिमाहनि, अप. 1.46; वारिमादाय वारिपिठियमाहनि, म. वं. 30.12; — नि उ. पु., ए. व. — विसिद्धमधुनादेन अमतभेरिमाहनि, अप. 1.6; — उच्चं/उच्छं भवि., उ. पु., ए. व. — अहञ्जि अरहा लोके ... आहञ्जं अमतदुन्दुभि, महाव. 11; म. नि. 1.230; आहञ्जं अमतदुन्दुभिन्ति धम्मचक्कपटिलाभाय अमतभेरिं पहरिस्सामीति गच्छामि, महाव. अहु. 236; वजिर. टी. 366; आहञ्जन्ति आहनिस्सामि, सारस्थ. टी. 3.149; — नित्वा/त्वान पू. का. कृ. — धम्मभेरिं आहनिन्त्वा धम्मनगरं मापेत्वा, बु. वं. अहु. 178; वासिय आहनिन्त्वान, म. वं. 28.33.

आहनन नपुं., क्रि. ना., आ + √हन से व्यु. [आहनन], प्रहार करना, पीटना, हत्या कर देना — नं प्र. वि., ए. व. — आदितो अभिमुखं वा हननं आहननं, सारस्थ. टी. 1.314; विसुद्धि. महाटी. 1.156; — नेन तु. वि., ए. व. — तेन आहननेन भित्ति कम्पति, पाचि. अहु. 43; कद्धा. अहु. 199; — परियाहननरस त्रि., ब. स., घात-प्रतिघात को अपने सार-तत्त्व के रूप में रखने वाला, घात-प्रतिघात का काम करने वाला — सो पु., प्र. वि., ए. व. — स्वायं आरम्भणे चित्तस्स अभिनिरोपनलक्खणे, आहननपरियाहननरसो, पारा. अहु. 1.106; आहननपरियाहननरसो, अभि. अव. 20; स्वायं आहननपरियाहननरसो, ध. स. अहु. 160; — सेन तु. वि., ए. व. — अभिनिरोपन लक्खणेन पन आहननपरियाहननरसेन वितक्केन आकोटेन्तेन विय, म. नि. अहु. (म.प.) 1(2). 257; — सील त्रि., ब. स., आघात करने के स्वभाव से युक्त — लो पु., प्र. वि., ए. व. — आहननसीलो आघातुको, करणसीलो कारुको, क. व्या. 538.

आहर त्रि., आ + हर से व्यु., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त [आहर], वापस लाने वाला, छीन कर ले जाने वाला, अन्तरीता., धना., धातुका., वरा., सब्बकामरसा. के अन्त. द्रष्ट.

आहरक त्रि., आ + √हर से व्यु., [आहरक], लाने वाला, पास में ले आने वाला, छीन कर ले आने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — अलद्धस्स वा रज्जस्स आहरको, जा. अहु. 5.113; — का ब. व. — सब्बेसं कामरसानं आहरका, जा. अहु. 5.449; स. उ. प. के रूप में, भण्डा. के अन्त. द्रष्ट.

## आहरण

276

## आहरति

आहरण नपुं, आ + रहर से व्यु., क्रि. ना. [आहरण], ले आना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना — णं प्र. वि., ए. व. — आवाहोति दारकस्स परकुलतो दारिकाय आहरणं, पारा. अट्ट. 2.126; आहरणं आहारो, सारथ. टी. 2.289; — णेन तृ. वि., ए. व. — पटिसन्धिविज्जाणस्स आहरणेन मनोसञ्चेतना आहारोति वुत्ता, अ. नि. टी. 3.301; स. उ. प. के रूप में उदका, उपमा, धना, धाता, सत्था, सुत्ता, के अन्त. द्रष्ट.

आहरणक<sup>1</sup> त्रि., आहरण से व्यु., लाने वाला, उधर से इधर पहुंचा देने वाला, सन्देशवाहक, हलकारा — को पु., प्र. वि., ए. व. — सासनपटिसासनमि नो आहरणको न भविस्सति, दी. नि. अट्ट. 2.240; आहरियोति आहरणको, जा. अट्ट. 3.288; — का ब. व. — सब्बेसं कामरसानं आहरका, जा. अट्ट. 5.449; — वानर पु., ढोकर लाने वाला बन्दर — रा प्र. वि., ब. व. — मधुरानि फलाफलानि मातुया पेसेन्ति, आहरणकवानरा तस्सा न देन्ति, जा. अट्ट. 2.168; स. प. के अन्त.; भत्ता. पत्ता. - नपुं, भात को लाने वाला पात्र, भोजनपात्र — तं द्वि. वि., ए. व. — "भत्ताहरणकपत्तं देथा"ति, चूळव. अट्ट. 95.

आहरणक<sup>2</sup> त्रि., आहरण से व्यु., आहर्ता अथवा ले आने वाले व्यक्ति द्वारा लाया गया, आहृत, लाया गया — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — "मे भरिया ममत्थाय आहरणकं आहारं धेरस्स पत्ते पतिट्ठपेय्या"ति, अ. नि. अट्ट. 1.329.

आहरणमङ्गल नपुं, वधू को वर के घर पर ले आने के उपलक्ष्य में किया जाने वाला मांगलिक अनुष्ठान, विवाह का मांगलिक पर्व — लं प्र. वि., ए. व. — आहरणमङ्गलं आवाहनमङ्गलं, म. वं. टी. 260(से.).

आहरणूपाय पु., तत्पु. स. [आहरणोपाय], पुनः प्राप्त करने अथवा पुनः वापस ले आने का उपाय — यो प्र. वि., ए. व. — तत्रायं आहरणूपायो, पारा. अट्ट. 2.26; "महाराज महाजनं अकिलमेत्वाव आहरणूपायो अत्थी"ति, जा. अट्ट. 1.366.

आहरति आ + रहर (ले आना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आहरति], शा. अ., ले आता है, (अन्यत्र से) ले आता है, ला. अ., 1. प्राप्त करता है, उपलब्ध करता है, ला कर (भीतर में) रख देता है, जा पहुंचाता है (भोजन) ग्रहण करता है, प्रवेश कराता है — मनुस्सो भोजनीयं वा खादनीयं वा आहरति, पाचि. 241; — रामि उ. पु., ए. व. — "कुतो पनाहं भोति, तेलं आहरामि", उदा. 83; आहरामि ततो

विस्वा, धेरगा. 430; — न्ति प्र. पु., ब. व. — आहरन्ति मधुं दुये, म. वं. 5.49; — रेय्य विधि. प्र. पु., ए. व. — "यो पन भिक्खु अदिन्नं मुखद्धारं आहारं आहरेय्य ... पाचितियन्ति, पाचि. 124; आहरेय्याति मुखद्धारं पवेसेय्य, सारथ. टी. 3.63; — रेय्यासि म. पु., ए. व. — त्वं मम तिणं आहरेय्यासि, जा. अट्ट. 6.179; — रेय्यं उ. पु., ए. व. — यन्नूनाहं सालिं आहरेय्यं सकिदेव ..., दी. नि. 3.66; — र अनु., म. पु., ए. व. — पिण्डाय चै चरं सपिं लभसे त्वं तमाहर, म. वं. 5.217; हत्थिक्खन्धे उपेत्वा ता धातुयो इध आहर, म. वं. 20.11; — न्तु प्र. पु., ब. व. — सहस्सं आहरन्तु मे, जा. अट्ट. 7.118; — थ म. पु., ब. व. — सुवण्णभिङ्गारं आहरथ, पे. व. अट्ट. 64; "सीघं दासुआदीनि आहरथा"ति, ध. प. अट्ट. 1.106; — रीयतु कर्म. वा. में अनु., प्र. पु., ए. व. — किं ते अय्ये, अफासु, किं आहरीयतू"ति, पाचि. 336; — रिस्सामि भवि., उ. पु., ए. व. — ... "अरञ्जतो आहरिस्सामी"ति, पारा. अट्ट. 2.275; आहरिस्सामीति आनयिस्सामि, बु. वं. अट्ट. 188; भत्तमस्स आहरिस्सामी"ति, ध. प. अट्ट. 1.296; — रिस्सन्ति प्र. पु., ब. व. — "एत्थेव ते आहरिस्सन्ती"ति, म. नि. 2.50; भिक्खं ते नाहरिस्सन्ति, जा. अट्ट. 3.288; — स्साम उ. पु., ब. व. — खादनीयं भोजनीयं आहरिस्सामाति पटिसंविदितं, पाचि. अट्ट. 147; — रि अद्य., प्र. पु., ए. व. — उदकं आहरि, पारा. अट्ट. 1.31; धारणीयं आहरि, दी. नि. 2.101; — रिंसु ब. व. — तयो मणी आहरिंसु, दी. वं. 11.20; छद्दन्तदहतो येव आहरिंसु विने दिने, म. वं. 5.29; — रिम्ह उ. पु., ब. व. — आहरिम्ह समागमं अप. 2.264; — रन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — किमेवाहं विहज्जामि सालिं आहरन्तो, दी. नि. 3.66; — रित्वा पू. का. कृ. — पिण्डपातं आहरित्वा अनोतत्तदहे परिभुज्जित्वा ..., महाव. 33; सीघं सीघं मत्तिकं आहरित्वा, पारा. अट्ट. 1.62; तं काजेन आहरित्वा, भाजनं करित्वा, म. नि. 2.252; — रितब्बं सं. कृ., नपुं, प्र. वि., ए. व. — वत्तसीसेन आहरितब्बं, पारा. अट्ट. 2.60; — रितुं निमि. कृ. — इदानीमि सत्थं आहरितुं अभब्बो जातो, ध. प. अट्ट. 1.388; — रापेतुं प्रेर., निमि. कृ., लाने हेतु प्रेरित करने के निमित्त — दिग्गममतो आयं आहरापेतुं पुरिसे पेसेत्वा ..., जा. अट्ट. 6.293; ला. अ., 2. क. पालन-पोषण करता है, पुष्टि देता है, 2. ख. उत्पन्न करता है, उद्भव करता है, अपने साथ लाता है — आहरतीति आहारो, विसुद्धि. 1.332;

## आहरति

277

## आहरापित

आहरतीति आहारोति अयं पन्थो निबलित्तो जावसेन वेदितब्बो, विसुद्धि. महाटी. 1.391; सो (पच्चयो) च यं यं फलं जनेति तं तं आहरति नाम, तस्मा आहारोति बुच्चति, अ. नि. अ. 3.300; — रीयति कर्म. वा. वर्त. प्र. पु., ए. व. — आहरीयतीति आहारो ..., घ. स. अ. 361; ला. अ., 3. (स्वयं का हनन करने हेतु शस्त्र को) लेता है, ग्रहण करता है (अर्थात् आत्महनन करता है) — रेसि अद्य. प्र. पु., ए. व. — मा आयस्मा छन्नो सत्थं आहरेसि, स. नि. 2(2).63; सत्थं आहरेसीति जीवितहारकसत्थं आहरि, आहरित्वा कण्ठनाळं छिन्दि, स. नि. अ. 3.19; — रिस्सामि भवि., उ. पु., ए. व. — सत्थं आवुसो सारिपुत्त, आहरिस्सामि, नावकत्थामि जीवितं न्ति, म. नि. 3.317; — रितं भू. का. कू., नपुं. प्र. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन आयस्मत्तो गोधिकेन सत्थं आहरितं होति, स. नि. 1(1).142; सत्थं आहरितं होतीति थेरो किर किं मय्हं इमिना जीवितेनाति ? उत्तानो निष्पज्जित्वा सत्थेन गळ्नाळिं छिन्दि, स. नि. अ. 1.162; — रेय्यं विधि., उ. पु., ए. व. — यंनूनाहं सत्थं आहरेय्यन्ति, स. नि. 1(1).142; — तुकामो पु., प्र. वि., ए. व., शस्त्र ग्रहण करने की इच्छा कर रहा — तस्मा सत्थं आहरितुकामो अहोसि, स. नि. अ. 1.161; ला. अ., 4. भीतर से निकालता या बाहर ले आता है, बाहर निकालता है, खींच कर बाहर ले आता है, वापस ले आता है, दूर ले आता है, हटा देता है, वापस कर देता है, सुरक्षित कर लेता है — र अनु., म. पु., ए. व. — तमेन राजा एवं वदेय्य, दधिस्स मे रसं आहर ..., मि. प. 66; आहर मे, भन्ते, भण्डकं, नाहं अकल्सकोति, पारा. 73; — रितुं निमि., कू. — तेसं रसानं ... विनिष्पुजित्वा रसं आहरितुं ..., मि. प. 66; — रिस्सामि भवि., उ. पु., ए. व. — तव जीवितं आहरिस्सामि, जा. अ. 3.158; ला. अ., 5. कहीं अन्यत्र से ले आता है, उद्धृत करता है, परम्परा अथवा बुद्धवचन को उद्धृत करता है, कहता है, पाठ करता है — रामि वर्त., उ. पु., ए. व. — भो गीतम् मय्हं एका उपमा उपद्दाति, आहारामि तं उपमन्ति वदति, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).173; — र/राहि अनु., म. पु., ए. व. — सो सुत्तं आहराति वत्तब्बो, म. नि. अ. (म.प.) 2.10; सुत्तं आहराहीति, अ. नि. अ. 3.346; — थ म. पु., ब. व. — ते पनेवं तु वत्तब्बा सुत्तं आहरथाति हि, अभि. अव. 659; — रिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — इदमेव आहरिस्सति, म. नि. अ. (म.प.) 2.10; —

रिस्सं/रिस्सामि उ. पु., ए. व. — अत्थस्स साधकं एत्थ पालिप्पदेसन्तु आहरिस्सं, स. 1.33; आहरिस्सामि सुत्तं, स. 1.114; — रि अद्य., प्र. पु., ए. व. — अतीतं आहरि, जा. अ. 1.404; सो हि भगवा ... पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयातं पुराणमग्गवरमाहरि, खु. पा. अ. 153; उपमं आहरि, म. नि. अ. (मू.प.) 1(2).173; — न्तो वर्त. कू., पु., प्र. वि., ए. व. — कुलवंसं आहरन्तो, दी. नि. अ. 1.208; — रियमान त्रि., कर्म. वा. का वर्त. कू., आत्मने. — नासु स्त्री., सप्त. वि., ब. व. — इमस्मिं पन ठाने आहरियमानासु ... सब्बं पाकटं होति, विसुद्धि. 2.300; — रित्वा/रित्वान पू. का. कू. — इमस्स अतीतकारणं आहरित्वा सोकं वूपसमेत्वा ..., पे. व. अ. 33; थेरो ... दसबलस्स अपचित्तिदस्सनत्थं सेय्यथापि आवुसो पुरिसो सारत्थिको सारगवेसीति सारोपमं आहरित्वा ..., घ. स. अ. 6; — रितुं निमि. कू. — ... इमा च उपमा भयतुपद्धान्तो पभुति यत्थ कत्थचि जाणे उत्त्वा आहरितुं वड्डेय्युं, विसुद्धि. 2.300.

आहरहत्थ त्रि., ब. स., दूसरे को सहारा देने हेतु अथवा अपनी ओर लाने हेतु हाथ को फैलाने वाला — त्थो पु., प्र. वि., ए. व. — स्वायं आहरहत्थो ककुधो, महाव. 34; भन्ते, आहरहत्थन्ति एवं वदन्तो विय ओणतोति आहरहत्थो, महाव. अ. 242.

आहरहत्थक त्रि., दूसरे को ऊपर उठाने के लिए "मेरा हाथ ले लो" कहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — आहरहत्थको नाम बहुं भुज्जित्वा अत्तनो धम्मताय उद्घातुं असक्कोन्तो आहरहत्थन्ति वदति, महानि. अ. 276; स. प. के अन्त., — आहरहत्थकतत्रवट्टक अलंसाटककाकमासकभुतवमितकभोजनं भुज्जित्वा, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1).294; महग्घसो चाति महाभोजनो आहरहत्थक ... अज्जतरो विय, घ. प. अ. 2.290.

आहरापित नपुं., आ + रहर के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना., ले आने के लिए प्रेरित करना, वापस बुलवाना, उपलब्ध या प्राप्त कराना — नं प्र. वि., ए. व. — अपराधानुरूपं उदकदारुवालिकादीनं आहरापनमि कातब्बन्ति वुत्तं, महाव. अ. 279.

आहरापित त्रि., आ + रहर के प्रेर. का भू. क. कू., वापस बुलवाया गया या प्राप्त कराया गया — तं पु., द्वि. वि., ए. व. — आहरापितञ्च गोणं रक्खित्वा, पारा. अ. 2.136.



## आहरापेति

278

## आहरिष्यति

आहरापेति आ + √हर का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आहारयति], आहरण कराता है, ले आने, प्राप्त करने या उपलब्ध करने को प्रेरित करता है, छिनवाता है, आज्ञा अथवा आदेश कराता है, वापस बुलवाता है — दण्डं आहरापेति, मू. प. अड्ड. (मू.प.) 1(1).386; राजा तस्स धनं आहरापेति, महानि. 297; — न्ति ब. व. — जीवग्गाहं गहेत्वा आहरापेन्ति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(1).370; — पेहि अनु., म. पु., ए. व., उसे वापस बुलवाओ — तं आहरापेहि, पाचि. अड्ड. 171; — पेथ ब. व. — “अवहटभण्डञ्च आहरापेथा”ति, पाचि. अड्ड. 171; “उदकं आहारापेथा”ति आह. ध. प. अड्ड. 2.360; “तेन हि आहारापेथा”ति आह. बु. वं. अड्ड. 320; — व्यासि विधि., म. पु., ए. व. — “यं इच्छेय्यासि तं आहरापेय्यासी”ति, पाचि. 338; — व्याथ म. पु., ब. व. — “हे कम्बलानि आहरापेय्याथा”ति, ध. प. अड्ड. 2.2; — पियतु कर्म. वा., अनु., प्र. पु., ए. व., (ग्रहण कराया जाए) — आहरापियतु गण्हियतु, दी. नि. अड्ड. 2.235; — पेन्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — सङ्गो आहरापेन्तो ... सञ्जापेतब्बो, पारा. अड्ड. 1.312; अत्तनो जीवितं आहरापेन्तो ..., जा. अड्ड. 7.206; — न्तस्स प. वि., ए. व. — चत्तारो पच्चये आहरापेन्तस्स, पारा. अड्ड. 2.60; — पेसि/पयि अद्य., प्र. पु., ए. व. — तिणं आहरापेसि, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.203; लसुणं आहरापेसि, जा. अड्ड. 1.453; राजा तानाहरापयि, म. वं. 22.64; सब्बाणि आहरापयि, म. वं. 28.43; — स्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — मूलं आहरापेस्सति, ध. प. अड्ड. 2.398; — स्सामि/स्सं उ. पु., ए. व. — नामं आहरापेस्सामि, जा. अड्ड. 1.384; इड्डका अहरापेस्सं-, म. वं. 30.15; — स्सन्ति प्र. पु., ब. व. — “किं नु आहरापेस्सन्ती”ति, पारा. अड्ड. 2.137; — स्साम उ. पु., ब. व. — “बहुधनं आहरापेस्सामा”ति, स. नि. अड्ड. 3.57; — पेत्तुं निमि. कृ. — आहरापेत्तुं न वड्ढति, पारा. अड्ड. 2.136; किं पेसेत्वा आहरापेत्तुं, जा. अड्ड. 2.17; — पेत्वा पू. का. कृ. — आहरापेत्वा अग्घापेसि, पारा. 80; — पेत्तब्बं सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. — अरञ्जतो भेसज्जं अहरापेत्तेन जातिसामणेरहि वा आहरापेतब्बं, पारा. अड्ड. 2.60.

आहरित त्रि., आ + √हर का भू. क. कृ. [आहृत], ले आया गया, प्राप्त कर लिया गया, उपलब्ध कर लिया गया, आत्महत्या की गई (सत्थं के साथ प्रयुक्त होने पर) — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — छन्नेन भिक्खुना सत्थं आहरितंति,

स. नि. 2(2).66; तस्मिं खणे थेरेन सत्थं आहरितं होति, ध. प. अड्ड. 1.243; सुखमाहरितं तेसं येसं रज्जमकारयिं, जा. अड्ड. 3.330.

आहरितब्ब त्रि., आ + √हर का सं. कृ. [आहर्तव्य], ले आए जाने योग्य, कहीं दूसरी जगह से लाकर रखने योग्य, ले आया जाना चाहिए, लाकर रख दिया जाना चाहिए — ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. — पाठसेसो आहरितब्बो, सु. नि. अड्ड. 2.97; — ब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — तस्मा इधेव आहरितब्बाति वुत्ता, विसुद्धि. 2.300; — ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. — “ननु लोणमेव आहरितब्बंति, मि. प. 67.

आहरिम त्रि., आ + √हर से व्यु., आकर्षक, हृदयावर्जक, मनोरम — मं पु., द्वि. वि., ए. व. — आहरिम सोभावसेसं दस्सेति, वि. ब. अड्ड. 12; — मेन तु. वि., ए. व. — आहरिमेन रूपेन, न मं त्वं बाधयिस्ससि, थेरीगा. 300; — मेहि ब. व. — पल्लङ्गो नाम आहरिमेहि वाळेहि कतो होति, पाचि. 409; — जटाधर त्रि., मनोरम जटाओं को धारण करने वाला — रो पु., प्र. वि., ए. व. — जटिलोति आहरिमजटाधरो तापसो, सारथ. टी. 3.297; स. उ. प. के रूप में, अना. के अन्त. द्रष्ट.

आहरिय त्रि., [आहारिक], लाने वाला, ढोने वाला — यो पु., प्र. वि., ए. व. — “भिक्षुञ्च ते आहरियो नरो इध सुदुल्लभो हेहिति भविष्यते मयी,ति जा. अड्ड. 3.288.

आहरिष्यति/आहरीयति आ + √हर के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आह्रियते], 1. लाया जाता है, प्राप्त किया जाता है, उपलब्ध कराया जाता है — परिवारो आहरिष्यति, पाचि. 241; योजनतोपि अङ्गयोजनतोपि आहरीयति, पारा. अड्ड. 1.313; 2. खाया जाता है, (के अन्दर) लाकर रख दिया जाता है, स्वीकार किया जाता है, ग्रहण किया जाता है — रियतु अनु., प्र. पु., ए. व. — “को भन्ते गिलानो, कस्स किं आहरियतूति, महाव. 293; “इमिना किं आहरियतूति, पारा. 357; “पानीयं भन्ते आहरियतूति, महाव. अड्ड. 249; — तं — अनु., प्र. पु., ए. व. भोतो यावत्केन अत्थो तावत्कं आहरीयतन्ति, दी. नि. 2.179; तावत्कं आहरीयतन्ति तावत्कं आहरापियतु गण्हियतु, दी. नि. अड्ड. 2.235; — मानो वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व., क. खा रहा — औळारिक आहारं आहरियमानो किं सक्खिस्सति, जा. अड्ड. 1.77; — नं द्वि. वि., ए. व. — विगतमदं आहारं आहरयमानं इमिनापङ्गेन समन्नागतं, दी. नि. 2.164; ख. कर्म. वा. में, स्वीकार किया जा रहा —

## आहरेति

279

## आहार

नो पु., प्र. वि., ए. व. — दिङ्गो मे भगवा ... तुम्हाकं सक्कारो आहरियमानो, अ. नि. अङ्ग. 1.189; — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदं उदकं उभयतो आहरियमानं, स. नि. अङ्ग. 1.62; सो पन तं आहरियमानं दिस्वा मुखं पिधेति, जा. अङ्ग. 5.266; — यित्थ अद्य., प्र. पु., ए. व. — 'आहरियित्थ भिक्खू'ति ? 'आहरियित्थ भगवा'ति, महाव. 294; ते भत्तं आहरियित्थ, म. नि. अङ्ग. (उप.प.) 3.4; — यिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — 'सुद्ध, अथ्य आहरियिस्सती'ति, महाव. 293; भत्ताभिहारो आहरीयिस्सति, स. नि. 1(2).218.

**आहरेति / आहारेति** आ + रह्र का प्रेर., अर्थ में प्रेर. का अभाव [आहारयति, भिन्नार्थक]. 1. ग्रहण करता है, भोजन ग्रहण करता है, खाता है, वर्त., प्र. पु., ए. व. — आहारं आहारेति, जा. अङ्ग. 1.112; — रेम उ. पु., ब. व. — मयं अनासका न किञ्चि आहारेमाति जा. अङ्ग. 5.232-233; 2. आत्महत्या करता है, (सत्थं के साथ प्रयुक्त होने पर) — रिस्सति भवि., प्र. पु., ए. व. — सत्थं आहरिस्सतीति, स. नि. 2(2).64; — सि, अद्य., प्र. पु., ए. व. — सत्थं आहरेसि, स. नि. 2(2).65; सत्थं आहरेसीति ... कण्ठनालं छिन्दि, स. नि. अङ्ग. 3.19.

**आहव** पु., [आहव], युद्ध, रण, संग्राम — वो प्र. वि., ए. व. — आजित्थी आहवो युद्धमायोधनं च संयुगं, अभि. प. 399; — वं द्वि. वि., ए. व. — करोन्तो तेन आहवं ... कस्सपेन ... हतो मरि ..., चू. वं. 44.152-153; — वे सप्त. वि., ए. व. — निरुस्साहं पलापेसि सेनङ्गमं सेसमाहवे, चू. वं. 72.13; 'हवेति आहवे युद्धे'ति अत्थं वदन्ति, उदा. अङ्ग. 36; स. उ. प. के रूप में, पुना, महा. के अन्त. द्रष्ट.

**आहवन** नपुं., आ + रह् से व्यु., क्रि. ना. [आहवन], आहुति देना, हवन करना दान, सम्मान — नं द्वि. वि., ए. व. — सक्कादीनमपि वा आहवनं अरहतीति, आहवनीयो सारत्थ. टी. 2.69; विसुद्धि. 1.211; — नं प्र. वि., ए. व. — आहवनन्ति सक्कादीहिपि दिव्यमानं दानं, विसुद्धि. महाटी. 1.264.

**आहवनीय** त्रि., आ + रह् का सं. कृ. [आहवनीय], आहुतियां डालने योग्य (पवित्र अग्नि) — यो पु., प्र. वि., ए. व. — गाहपच्चावहणीयो दक्खिणाग्निं तयोग्गयो, अभि. प. 419; पाठा. आहवण; ब्राह्मणानं आहवनीयो नाम अग्नि, इतिवु. अङ्ग. 252.

**आहवनीयग्नि** पु., कर्म. सं. [आहवनीयग्नि], हवन करने योग्य अथवा आहुति देने योग्य पवित्र अग्नि — म्हि सप्त. वि., ए. व. — आहवनीयग्निमि हुतं दधिआदि, विसुद्धि. महाटी. 1.264.

**आहार** पु., एक स्थल पर नपुं., आ + रह्र से व्यु., [आहार], शा. अ., भोजन, ला. अ., 1. शरीर को पोषित करने वाला तत्त्व, जीवन का आधार, प्राणियों की स्थिति का आश्रयभूत तत्त्व, कारण, ईधन, 2. स्पर्श, संवेतना आदि मानसिक क्रियाएं, सूक्ष्म मानसिक आहार — रो प्र. वि., ए. व. — अथासनं आहारो भोजनं घासो, अभि. प. 465; आहारो कवलिहाराहारादिसु च कारणे, अभि. प. 856; आहारन्ति यकिञ्चि यावकालिकं वा यामकालिकं वा सत्ताहकालिकं वा यावजीविकं वा, सब्बज्हेतं अज्झोहरणीयता आहारो ति वुच्चति, कङ्गा. अङ्ग. 220; सब्बसत्तानमपि णित्तिहेतु आहारो नाम एको धम्मो, अ. नि. अङ्ग. 3.300; तत्थ आहरतीति आहारो, विसुद्धि. 1.332; — रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — योगावचरस्स ... दुत्तभं उदरपरिपूरं आहारं, मि. प. 378; आहारन्ति पच्चयं, पच्चयो हि आहरति अत्तनो फलं तस्मा आहारो ति वुच्चति, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(1).215; — रं द्वि. वि., ए. व. — ओळारिकं आहारं आहारेसं, म. नि. 1.315; अयं कायो आहारद्वितिको, आहारं पटिच्च तिडुत्ति, स. नि. 3(1).82; असितपीतखायितसायितवसेन चतुब्धि णमि आहारं दस्सेति, पे. व. अङ्ग. 21; — रेन तू. वि., ए. व. — आहारेन सम्भूतो आहारं निस्साय वड्ढितो, अ. नि. अङ्ग. 2.338; — तो प. वि., ए. व. — आहारतो च उतुतो ... सत्त वित्थारेन विपस्सतीति, विसुद्धि. 2.252; — रे सप्त. वि., ए. व. — आहारे उदरे यतो, स. नि. 1(1).202; आहारे पटिकूलसज्ज उपडुपेत्वा, दी. नि. अङ्ग. 1.156; — रा प्र. वि., ब. व. — उपादिन्नकापि अनुपादिन्नकापि आहारा मिस्सेत्वा कथिता, म. नि. अङ्ग. (मू.प.) 1(1).222; आहारा वरस्स परिज्जं गच्छन्ति, नेत्ति. 28; कतमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति ? — फस्साहारो, मनोसज्जेतनाहारो, विज्जाणाहारो, ध. स. 32; चत्तारो आहारा तण्हानिदाना, तण्हासमुदया, तण्हा जातिका तण्हापभवा, म. नि. 1.331; किं पच्च आहारा अत्थीति ? पच्च, न पच्चाति इदं न वत्तब्बं, ननु 'पच्चयो आहारो'ति वुत्तमेतं, अ. नि. अङ्ग. 3.301; दसन्नं धम्मानं इद्वानं कन्तानं मनापानं दुत्तभानं लोकस्मिं दस धम्मा आहारा, अ. नि. 3(2).113; ओजडुमकरूपादयो आहरन्तीति आहारा, अभि. ध. वि. टी.,

## आहारकाल

280

## आहारत्थिक

198; — रानं ष. वि. ब. व. — आहारानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो, सु. नि. 752; स. उ. प. के रूप में, अङ्गकोसका, अद्दवेलुवा, अना, अप्पा, उतु, उतुचिन्ता, उपादिन्का, एवमा, कवलङ्कारा, कोसका, तदा, निप्परियाया, निरा, पच्चया, परिता, परियाया, फस्सा, बेलुवा, मग्गा, मनोसञ्चेतना, मिता, मिस्सका, यदा, लक्खा, वनमूलफला, विज्जाणा, विसा, समन्ना, साला, सा, सुखा, सद्दा, के अन्त. द्रष्ट.

आहारकाल पु., तत्पु. स. [आहारकाल], भोजन लेने का समय — लं द्वि. वि. ए. व. — खिड्ढावसेन आहारकालं अतिवत्तेत्वा कालं करोन्ति, सारत्थ. टी. 3.191; दी. नि. अद्द. 3.160.

आहारकिच्च नपुं., तत्पु. स. [आहारकृत्य], भोजन ग्रहण करने का काम, भोजन-क्रिया, उदरपूर्ति का काम — च्वं प्र. वि. ए. व. — न आहारकिच्चं अहोसि, जा. अद्द. 1.89; च्वं द्वि. वि. ए. व. उपत्थम्भनादिवसेन आहारकिच्चं सां यमानेसु पनेतेसु चत्तारि भयानि दड्ढ्यानि, स. नि. अद्द. 2.24; कबळीकाराहारं ... आहारकिच्चं साधेति, अ. नि. अद्द. 3.301.

आहारगिद्ध त्रि., तत्पु. स., आहार अथवा भोजन के प्रति लोभ-लालच रखने वाला, सांसारिक लाभ के प्रति लोभ करने वाला — द्दो पु., प्र. वि. ए. व. — आहारगिद्धो लाभसक्कारप्पसुतो विचरति, थेरगा. अद्द. 1.266.

आहारगेध पु., आहार-विषयक लोभ, भोजन के लिए दृढ़ इच्छा — धेन त्. वि. ए. व. — अयं ब्राह्मणो आहारगेधेन मं दाने नीयोजेसीति मञ्जति, थेरगा. अद्द. 1.266.

आहारगेधी त्रि., आहार के प्रति लालच करने वाला, सांसारिक सुख के प्रति आसक्त — धिनो पु., प्र. वि. ब. व. — गच्छम छाता आहारगेधिनो, पे. व. 788.

आहारचिन्ता त्रि., तत्पु. स. [आहारचिन्ता], भोजन के विषय में चिन्ता — य ष. वि. ए. व. — अप्पचिन्तायाति 'अज्ज कहं आहारं लभिस्सामि, स्वे कहन्ति एव आहारचिन्ताय अभावेन, जा. अद्द. 3.275; — रहित त्रि., भोजन की चिन्ता से मुक्त, — तानं पु., ष. वि. ब. व., अप्पचिन्तसु खस्साति आहारचिन्तारहितानं अप्पचिन्तानमरियानं सुखं अस्सत्थीति अप्पचिन्तसुखो, तस्स तादिसेन सुखेन समन्नागतस्स, जा. अद्द. 3.275.

आहारज त्रि., आहार से उत्पन्न — जं नपुं., प्र. वि. ए. व. — आहारतो जातं आहारजं, विसुद्धि. 2.78; सुद्धङ्कं,

आकासो, लहुतादित्तयञ्च आहारजं नाम, मो. वि. टी. 69; कालेनाहारजं होति, सच्च. 59; — स्स नपुं., ष. वि. ए. व. — कबळीकारो आहारो आहारजस्स जनको, मोहवि. 76; जेसु सप्त. वि. ब. व. — आहारजेसुपि आहारो, विसुद्धि. 2.250.

आहारद्विति स्त्री., तत्पु. स. [आहारस्थिति], भोजन पर पूरी तरह से निर्भर जीवन-स्थिति, आहार पर निर्भरता, प्र. वि. ए. व. — सा च विति द्विधा आरम्भणद्विति च आहारद्विति च, पेटको. 306; या आहारद्विति या पुनर्भवभाभिनिब्वत्तिका विति, पेटको. 307.

आहारद्वितिक त्रि., [आहारस्थितिक], कारणभूत अथवा प्रत्ययभूत आहार पर आश्रित, पोषक भोजन पर निर्भर — को पु., प्र. वि. ए. व. — आहारद्वितिको समुस्सयो, थेरगा. 123; 'आहारद्वितिको समुस्सयो, इति दिस्वान चरामि एसन्, थेरगा. अद्द. 1.267; अयं कायो आहारद्वितिको आहारं पटिच्च तिद्वति, स. नि. 3.82; — का स्त्री., प्र. वि. ए. व. — आहारद्वितिकाति पच्चयद्वितिका, दी. नि. अद्द. 3.221; सारत्थ. टी. 1.212; विसुद्धि. महाटी. 1.224; वजिर. टी. 36; — ता स्त्री., भाव., आहार पर निर्भरता, भोजन पर पूरी तरह आश्रित होने की स्थिति, प्र. वि. ए. व. — स पनायं आहारद्वितिकता निप्परियायतो, विसुद्धि. महाटी. 1.224.

आहारता स्त्री., आहार का भाव., 1. वह जो स्थूल आहार हो अथवा जिसे कवलों अथवा ग्रासों के रूप में कण्ठ के नीचे ले जाया गया हो, 2. आहार-विषयक मानसिक चेतना, चार प्रकार का सूक्ष्म आहार — आहारताति कबळीकारो आहारो, अभि. अव. (पू.) 87; सञ्जा चाहारता इति, अभि. अव. 814; 'गाथाबन्धवसेन ग-कारस्स लोपं कत्वा आहारगता सञ्जा' आहारता सञ्जाति वुत्ता, आहारोयेव वा आहारता, तग्गता च सञ्जा उपचारतो 'आहारता'ति वुत्ता, आहारं पटिकूलसञ्जाति अत्थो, अभि. अव. अभि. टी. 2.165.

आहारत्तय नपुं., 3 प्रकार के आहारों का समुच्चय अथवा समूह — यं प्र. वि. ए. व. — चितुप्पादेसु सब्बत्थ आहारत्तयमीरितं, ना. रू. प. 180.

आहारत्थिक त्रि., [आहारार्थिक], भोजन अथवा आहार पाने की इच्छा करने वाला — को पु., प्र. वि. ए. व. — घासत्थिकोति आहारत्थिको, जा. अद्द. 3.259; सचे आहारत्थिको, चरिया. अद्द. 156.

## आहारनिरोध

281

## आहारलोलाता

आहारनिरोध पु., तत्पु. स. [आहारनिरोध], आहार का अन्त या उच्छेद, आहार की समाप्ति — धो प्र. वि., ए. व. — तण्हानिरोधा आहारनिरोधो, म. नि. 1.60; कतमो आहारनिरोधो, कतमा आहारनिरोधगामिनी पटिपदा, म. नि. 1.60; — घा प. वि., ए. व. — तदाहारनिरोधा यं भूतं तं निरोधधम्मन्ति, स. नि. 1(2).43; आहारनिरोधा रूपनिरोधो, स. नि. 2(1).54; आहारनिरोधाति पवत्तिपच्चयस्स कबळीकाराहारस्स अभावे, विसुद्धि. महाटी. 2.395; आहारनिरोधा कायस्स अत्थङ्गमो, स. नि. 3.259.

आहारनेत्तिप्पमव त्रि., ब. स., चार प्रकार के आहारों एवं तृष्णा-नामक नेत्री से उत्पन्न होने वाला — वं नपु., प्र. वि., ए. व. — आहारनेत्तिप्पमव नालं तदभिनन्दितुं, इतिवु. 28; चतुब्धिधो आहारो च तण्हसङ्घाता नेत्ति च पभवो समुद्धानं एतस्साति आहारनेत्तिप्पमव, इतिवु. अहु. 143.

आहारपच्चय<sup>1</sup> पु., 24 प्रकार के प्रत्ययों में से अन्यतम प्रत्यय, शरीर के संधारण में प्रत्ययभूत भोजन ही आहार-प्रत्यय कहलाता है — यो प्र. वि., ए. व. — आहारपच्चयो, विसुद्धि. 2.161; रूपारूपानं उपत्थम्भकहेन उपकारका चत्तारो आहारा आहारपच्चयो, विसुद्धि. 2.167; — येन तृ. वि., ए. व. — कबळीकारो आहारो इमस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयोति, विसुद्धि. 2.250; किञ्चि आहारपच्चयेनाति एवं अञ्जथापि पच्चयो होति, विम. अहु. 165; — या प. वि., ए. व. — यं किञ्चि दुक्खं सम्मोति सब्बं आहारपच्चयाति, सु. नि. 194; पाठा. आरम्भपच्चया.

आहारपच्चय<sup>2</sup> त्रि., आहार को प्रत्यय बना कर उत्पन्न या उदित — यं नपु., प्र. वि., ए. व. — आहारजेसुपि आहारो आहारसमुद्धानं आहारपच्चयं ... (रूपं), विसुद्धि. 2.250.

आहारपटिकूलसज्जा स्त्री., आहार-विषयक प्रतिकूल मानसिक अनुचित्तन, आहार का प्रतिकूलभाव से प्रत्यवेक्षण — निदेस पु., विसुद्धि. के समाधिनिदेस नामक ग्यारहवें अध्याय में आहार के विषय में प्रतिकूल भावना का अनुशीलन — तो प. वि., ए. व. — वित्थारकथा पनेत्थ विसुद्धिमग्गे आहारपटिकूलसज्जानिदेसतो गहेतब्बा, विम. अहु. 342.

आहारपरिग्गह पु., तत्पु. स. [आहारपरिग्रह], आहार के विषय में संयम अथवा नियन्त्रण — हो प्र. वि., ए. व. — आहारपरिग्गहो, मि. प. 230; स. प. के अन्तः; आतापो परितापो ण्णचङ्क्रमेणिसज्जासयनाहारपरिग्गहो, मि. प. 287.

आहारपरिभोग पु., तत्पु. स. [आहारपरिभोग], आहार का उपभोग, भोजन को ग्रहण करना — आहारपरिभोगे,

ध. स. अहु. 421; स. प. के अन्तः; ... मङ्गल आहारपरिभोगमङ्गलेपि ... पञ्चत्रं भिक्षुसत्तानं अप्योदकमहं उपायसमेव अदंसु, ध. प. अहु. 1.298.

आहारपरियेद्वि स्त्री., तत्पु. स., भोजन की तलाश — हिं द्वि. वि., ए. व. — आहारपरियेद्वि अकत्वा ..., चरिया. अहु. 23; — या तृ. वि., ए. व. — आहारपरियेद्विया, चरिया. अहु. 27; — मूलक त्रि., भोजन की तलाश में जड़ जमाया हुआ, भोजन की तृष्णा से जनित — पच्चुपन्ने आहारपरियेद्विमूलकं दुक्खन्ति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).308.

आहारपरियेसन नपु., तत्पु. स., उपरिवत् — नं द्वि. वि., ए. व. — आहारपरियेसनं चरति, स. नि. अहु. 1.182; — दुक्ख नपु., आहार की खोज में प्राप्त दुख — क्खं प्र. वि., ए. व. — आहारपरियेसनदुक्खा ..., आहारपरियेसनमूलस्स, बु. वं. अहु. 90.

आहारपरिस्सय पु., तत्पु. स., आहार की कमी, आहार की अल्पता — यो प्र. वि., ए. व. — आहारपरिस्सयो, अ. नि. अहु. 2.107.

आहारमन्दता स्त्री., तत्पु. स., आहारविषयिणी दरिद्रता, भूखों मरने की स्थिति — य तृ. वि., ए. व. — आहारमन्दताय, स. नि. अहु. 2.97.

आहारमय त्रि., आहार से निर्मित, नाना प्रकार के आहारों से परिपूर्ण — यं नपु., प्र. वि., ए. व. — आहारमयं रूपं छातसुहितवसेन पाकटं होति, विसुद्धि. 2.257; — येन तृ. वि., ए. व. — आहारमयेनाति नानप्यकारेण आहारेनेव, जा. अहु. 3.461; — तो प. वि., ए. व. — आहारमयतो, विसुद्धि. 2.252.

आहाररस पु., तत्पु. स., आहार का सारतत्त्व, भोजन का रस — सो प्र. वि., ए. व. — आहाररसो संसरित्त्वा आहारसमुद्धानरूपं समुद्वापेति, स. नि. अहु. 1.265; — से सप्त. वि., ए. व. — रसगगहणमूलकत्ता अज्झोहरणस्स जीवितहेतुम्हि आहाररसे, विसुद्धि. महाटी. 2.160.

आहाररूप नपु., रूपधर्म के रूप में आहार, स्थूल आहार, ग्रास लेकर खाया जाने वाला भौतिक आहार — पं प्र. वि., ए. व. — वत्थुरूपं च हृदयं यं धातुद्वयनिस्सयं कबळीकारमाहाररूपमिच्चाहु पण्डिता, ना. रू. प. 490.

आहारलोलाता स्त्री., तत्पु. स., आहार के प्रति लालच, भोजन-लिप्सा — य तृ. वि., ए. व. — पञ्चहि लोलताहि लोलो होति, — आहारलोलाताय, अलङ्कारलोलाताय,

## आहारलोलुप

282

## आहारपच्छेद

परपुरिसलोलताय, धनलोलताय पादलोलताय, सु. नि. अष्ट. 1.30.

आहारलोलुप नपुं., उपरिवत्, स. उ. प. में ही प्राप्त, पहीना. के अन्त. द्रष्ट.

आहारवर्ग पु., स. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, स. नि. 1(2).12-24.

आहारविधान नपुं., भोजन तैयार करने एवं परोसने का तरीका — नं प्र. वि., ए. व. — तस्स एवरूपं आहारविधानं अहोसि, अ. नि. अष्ट. 1.181.

आहारवेला स्त्री., तत्पु. स., भोजन करने का समय, आहार लेने की वेला — ला प्र. वि., ए. व. — को पन तेसं आहारो, का आहारवेलाति?, सारत्थ. टी. 3.191; — लं द्वि. वि., ए. व. — एकं आहारवेलं अतिक्कमित्वा, सारत्थ. टी. 3.191.

आहारसङ्घ पु., आहार का पूर्ण क्षय, आहार अथवा ईधन की समाप्ति — या प. वि., ए. व. — इधेव परिनिब्बिस्सं, अग्गीवाहारसङ्घयाति ... अग्गि विय इच्चनक्खयेन यथा अग्गि निरुपादानो निब्बायति, बु. वं. अष्ट. 339.

आहारसमुद्धान त्रि., आहार के कारण से उत्पन्न, आहार से उदित अथवा उठकर सामने आने वाला — नानं नपुं., ष. वि., ब. व. — (आहारो) कम्मजानं अनुपालको हुत्वा पच्चयो होति, आहारसमुद्धानं जनको हुत्वा, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).218; — स्स ष. वि., ए. व. — द्विन् रूपसन्ततीनं पच्चयो होति — आहारसमुद्धानस्स च उपादिण्णकस्स च, स. नि. अष्ट. 2.24; — नानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — आहारसमुद्धानानि अष्ट. ... आहारसमुद्धानादीनि तीणि, ध. स. अष्ट. 349.

आहारसमुद्घापिक त्रि., आहार का समुत्थान कराने वाला/वाली, आहार की पूर्ण उत्पत्ति कराने वाला/वाली — पिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आहारसमुद्घापिका पुरिमत्तहा समुदयसच्चं, अ. नि. अष्ट. 3.301.

आहारसमुदय पु., तत्पु. स., आहार का उदय, आहार की उत्पत्ति — या प. वि., ए. व. — आहारसमुदया रूपसमुदयो, स. नि. 2(1).54; आहारसमुदया कायस्स समुदयो, स. नि. 259; — येन त्. वि., ए. व. — आहारसमुदया कायस्स समुदयोति आहारसमुदयेन कायसमुदयो, स. नि. अष्ट. 3.257.

आहारसम्भव पु., ब. स., आहार से उदित या उत्पन्न, वह जिसकी उत्पत्ति भोजन के कारण हुई है, हेतु प्रत्ययों से

उत्पन्न — वं द्वि. वि., ए. व. — एतं खच्चपञ्चकं आहारं पटिच्च ठितं, तस्मा तं आहारसम्भवं नाम कत्वा, स. नि. अष्ट. 2.54; तदाहारसम्भवन्ति तं पनेतं खच्चपञ्चकं आहारसम्भवं पच्चयसम्भवं, सति पच्चये उप्पज्जति एवं पस्सथाति पुच्छति, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).203; — स्स ष. वि., ए. व. — आहारसम्भवस्स निब्बिदाय विरागाय निरोधाय पटिपन्नो होति, स. नि. 1(2).43; अत्तनो फलं आहरतीति आहारो पच्चयो, सम्भवति एतस्माति सम्भवो, आहारो सम्भवो एतस्साति आहारसम्भवं, म. नि. टी. (मू.प.) 2.210; स. उ. प. के रूप में तदा. के अन्त. द्रष्ट.

आहारसम्भूत त्रि., तत्पु. स., आहार के कारण अस्तित्व में आया हुआ, भोजन के द्वारा तैयार किया गया — तो पु. प्र. वि., ए. व. — आहारसम्भूतो अयं ... कायो ... तण्हा ... मेथुनसम्भूतो अयं भगिनि कायो, अ. नि. 1(2).167; — तं. नपुं., प्र. वि., ए. व. — आहारसम्भूतन्ति ववत्थेति, पटि. म. 69.

आहारहेतुक त्रि., ब. स., आहार पर आश्रित, भोजन पर अवलम्बित — का पु., प्र. वि., ब. व. — सब्बलोकमिह ये सत्ता जीवन्ताहारहेतुका मनुज्जं भोजनं सब्बं लभन्तु मम चेतसा, अप. 1.5.

आहारापेति आ + षहर के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., ले आने हेतु प्रेरित करता है, द्रष्ट, आहारापेति के अन्त. आहारासा स्त्री., तत्पु. स. [आहाराशा], भूख, क्षुधा, भोजन मिलने की आशा, प्र. वि., ए. व. — 'आहारासा विया'ति अवत्वा चेतनाग्गहणं कत्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.262; — चेतना स्त्री., तत्पु. स., आहार के विषय में चित्त का चैतन्य होना, भोजन-विषयक मानसिक अनुचिन्तन, प्र. वि., ए. व. — गिज्झपोतकसरीरानं आहारासाचेतना विय, विसुद्धि. 2.166; गिज्झपोतकसरीरानं आहारासाचेतना विया, विसुद्धि. महाटी. 2.262.

आहारिक त्रि., [आहारिक], आहार लेने वाला, केवल स. उ. प. में प्रयुक्त हत्था. के अन्त., द्रष्ट.

आहारपच्छेद पु., तत्पु. स., आहार ग्रहण न करना, उपवास, व्रत, आहार लेने से विरति — दो प्र. वि., ए. व. — आहारपच्छेदो कातब्बोति, सारत्थ. टी. 2.242; — दं द्वि. वि., ए. व. — सब्बसोपि आहारपच्छेदं अकासि, जा. अष्ट. 1.76; आहारपच्छेदं कत्वा, पारा. अष्ट. 2.55; ध. प. अष्ट. 1.88; — देन त्. वि., ए. व. — आहारपच्छेदेनपि न मारेत्तब्बो, पारा. अष्ट. 2.57; आहारपच्छेदेन च सब्बथा,

## आहारूपजीवी

283

## आहिण्डति

चरिया. अद्. 227; - स्स ष. वि. ए. व. - आहारूपच्छेदस्स अनुज्जातत्ता, वि. वि. टी. 1.203; - दाय च. वि. ए. व. - सब्बसो आहारूपच्छेदाय पटिपज्जि, म. नि. 1.313.

**आहारूपजीवी** त्रि., [आहारोपजीविन्], आहार पर जीने वाला, भोजन के सहारे जीवित रहने वाला - विनो पु., च. वि. ए. व. - 'आहारूपजीविनो सत्तलोकस्स महाउपकारो सम्पादितो मया'ति, चरिया. अद्. 215; - विनो पु., प्र. वि. ब. व. - ये सत्ता आहारूपजीविनो, विभ. अद्. 167; विसुद्धि. 2.196.

**आहारूपनिबद्ध** त्रि., तत्पु. स., आहार के साथ बंधा हुआ - द्वं प्र. वि. ए. व. - सत्तानं जीवितं... आहारूपनिबद्धञ्च, विसुद्धि. 1.227.

**आहारूपरोध** पु., तत्पु. स., आहार पर रोक, भूखा रहना, उपवास - धेन तु. वि. ए. व. - तस्स आहारूपरोधेन चित्तदुब्बल्यं उपपज्जि, मि. प. 230; - स्स प. वि. ए. व. - आहारूपरोधस्सेवसो दोसो सदापटियत्ता, मि. प. 230; 231.

**आहारूपसेवी** त्रि., आहार का सेवन करने वाला, भोजन का प्रयोग करने वाला - वीनं पु., ष. वि. ब. व. - सो यस्मा आहारूपसेवीनञ्जेव अज्झोहटाहारउतुजाहारूपत्थद्धो एव च कम्मजादिआहारो इमस्स कायस्स ठितिया पवत्तति, मोहवि. 344.

**आहारूपहार** पु., ले आना एवं प्रदान करना, लेन-देन, आदान-प्रदान - रो प्र. वि. ए. व. - नत्थम्हाकं तया सद्धिं आहारूपहारो, पारा. 201; आहारूपहारोति आहारो च उपहारो च गहणञ्च दानञ्च, पारा. अद्. 2.126.

**आहारूपसीसक** त्रि., भोजन पाने की आशा कर रहा, आहार पाने के प्रति आशावान् - को पु., प्र. वि. ए. व. - आहारूपसीसको येव चरति, मि. प. 363.

**आहारेति / आहारयति** आ + √हर के प्रेर. का वर्त., प्र. पु. ए. व., आहार का ना. धा. [आहारयति], शा. अ., लाने हेतु प्रेरित करता है, प्रायोगिक अ., भोजन करता है, खाता है - एकाहिकम्पि आहारं आहारेति, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेति, सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेति, दी. नि. 1.150; अरियसावको पटिसङ्गा योनिस्सो आहारं आहारेति, म. नि. 2.19; आहारेतीति परिभुज्जति अज्झोहरति, ध. स. अद्. 421; - मि उ. पु. ए. व. - एकाहिकम्पि आहारं आहारेमि, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेमि... सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेमि, म. नि. 1.111; - म ब. व. - मयं अनासका

न किञ्चि आहारेमाति, जा. अद्. 5.233; - न्ति प्र. पु. ब. व. - एकाहिकम्पि आहारं आहारेन्ति, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेन्ति... सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेन्ति, म. नि. 1.304; धम्मिकं समणा सक्कपुत्तिया आहारं आहारेन्ति, स. नि. 2(1).237; - सि अद्य., प्र. पु. ए. व. - आहारं न आहारेसि, स. नि. अद्. 2.93; - सिं अद्य., उ. पु. ए. व. - थोकं थोकं आहारं आहारेसिं, म. नि. 1.314; ओळारिकं आहारं आहारेसिं, म. नि. 1.315; - रेय्यं विधि., उ. पु. ए. व. - ओळारिकं आहारं आहारेय्यं, म. नि. 1.315; यनूनाह थोकं थोकं आहारं आहारेय्यं, 1.314; - रेन्तो वर्त. कृ., पु. प्र. वि. ए. व. - अनुपायेन हि आहारेन्तो दवत्थाय मदत्थाय... वा आहारेति, ध. स. अद्. 421; - यतो वर्त. कृ., पु. च. वि. ए. व. - एकयेव कोलं आहारं आहारयतो, म. नि. 1.114; - यतं वर्त. कृ., पु. च. वि. ब. व. - तेसं तं ओळारिकं आहारं आहारयत्, विसुद्धि. 2.46; - त्वा पू. का. कृ. - ओळारिकं आहारं आहारेत्वा, म. नि. 1.316. **आहाव** पु., आ + √हवे से व्यु. [आहाव], पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएं के पास बना जल भरा कुण्ड, प. जु. पौ. ाला - वो प्र. वि. ए. व. - आहावो तु निपानं चा, अभि. प. 680.

**आहि / अहि** अस (होना) का अनु. / वर्त. का म. पु. ए. व., तुम हो - त्वं आहि, सद्. 3.832; आहि, सद्. 3.834.

**आहिण्डति** आ + √हिण्ड का वर्त., प्र. पु. ए. व. [बौ. सं. आहिण्डते], इधर से उधर चलता रहता है, इधर उधर भटकता है, इधर उधर घूमता है - अनुदिस्स मरणं संवण्णेन्तो आहिण्डति, पारा. अद्. 2.47; आहिण्डती गोरिव भक्खसादी, जा. अद्. 5.15; - सि म. पु. ए. व. - 'किं भन्ते सुमन, आहिण्डसी'ति आह, पारा. अद्. 1.59; 'कस्मा समणो हुत्वा आहिण्डसी'ति, स. नि. अद्. 1.201; - ण्डामि उ. पु. ए. व. - 'गोतमस्सवादं आरोपेस्सामी'ति आहिण्डामि, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).168; अरज्जे इरीणे वने, अन्धाहिण्डामहं तदा, अप. 1.274; - न्ति प्र. पु. ब. व. - छब्बगिया भिक्खू छत्तप्पग्गाहिता आहिण्डन्ति, चूळव. 250; 'चेलप्पटिकं महन्ता आहिण्डन्ती'ति, म. नि. अद्. (म.प.) 2.229; - थ म. पु. ब. व. - 'दुक्खमेव जिरापेन्ता आहिण्डथा'ति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(2).169; 'महाजनं वज्जेत्वा आहिण्डथा'ति, स. नि. अद्. 1.117; - ण्डाम उ. पु. ब. व. - 'मयं सपजापतिका आहिण्डाम, पाचि. 88; - ण्डाहि अनु., म. पु. ए. व. - 'यच्छ तात खेतं

## आहि

284

## आहुतगि

आहिण्डाहीति. म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(1).211; इमस्स वादस्स मोक्खाय वर आहिण्डाहि, स. नि. अष्ट. 2.230; — ण्डेय्युं विधि, प्र. पु., ब. व. — नगरे घोसन्ता आहिण्डेय्युं महाव. अष्ट. 357; — ण्डस्सन्ति भवि, प्र. पु., ब. व. — कथज्झि नाम भदन्ता छत्तप्पगहिता आहिण्डस्सन्तीति, चूळव. 250; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — सेनासन चारिकं आहिण्डन्तो, महाव. 254; भगवा सकल जम्बुदीपं आहिण्डन्तो, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).312; — न्ता द्वि. वि., ब. व. — सेनासन चारिकं आहिण्डन्ता भिक्खू पस्सित्वा, ध. प. अष्ट. 2.41; — न्तिया स्त्री., तृ. वि., ए. व. — पानीयत्थाय आहिण्डन्तिया मे पानीयं देहि, पे. व. अष्ट. 125; — मानो वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. — आहिण्डमानो पुन सत्थु सन्तिकं आगन्त्वा, म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.153; आहिण्डमानो महिया अट्टस्सरं करोति, मि. प. 322; — ण्डि अद्य., प्र. पु., ए. व. — द्वियोजनं अद्धानं आहिण्डि, स. नि. अष्ट. 2.278; — ण्डिसु ब. व. — (मक्खिका) खादनत्थं गोधा आहिण्डिसु, जा. अष्ट. 1.459; — ण्डित्थ म. पु., ब. व. — विरवन्तो आहिण्डित्थ, दी. नि. अष्ट. 2.131; स. नि. अष्ट. 3.283; — ण्डिस्सामि भवि, उ. पु., ए. व. — गामनिगमराजधानीसु आहिण्डिस्सामि हनन्तो घातेन्तो छिन्दन्तो, पारा. 109; — ण्डितुं निमि. कृ. — न सकोति विना दण्डेन आहिण्डितुं, चूळव. 251; — ण्डित्वा पू. का. कृ. — गच्छ सावत्थिं आहिण्डित्वा, स. नि. अष्ट. 1.168; समसमा आहिण्डित्वा, म. नि. अष्ट. (मू.प.) 1(2).166; परिवेणं आहिण्डित्वा, जा. अष्ट. 1.478. आहिण्डन नपुं., आ + णिण्ड से व्यु., क्रि. ना., इधर उधर भटकाव — काल पु., तत्पु. स., इधर से उधर घूमने का समय — ले सप्त. वि., ए. व. — पुतो पदसा आहिण्डनकाले कालमकासि, स. नि. अष्ट. 1.168. आहिण्डापेसि आ + णिण्ड के प्रेर. का अद्य., प्र. पु., ए. व., इधर उधर घुमाया, भटकाया, चक्कर कटवाया — सब्बद्वारानि आहिण्डापेसि, म. नि. अष्ट. (म.प.) 2.52. आहित त्रि., आ + णिहा का भू. क. कृ. [आहित], स्थापित, प्रतिष्ठापित, जमा किया गया, सुरक्षित रूप में रखा गया, ला कर रखा गया — तो पु., प्र. वि., ए. व. — छन्ना कुटि आहितो गिनि, सु. नि. 18; आहितोति आमतो, जालितो वा, सु. नि. अष्ट. 1.24; आरम्भणे आहितो निच्चलभावकरणेन पतिट्ठापितोति अधिप्पायो, पटि. म. अष्ट. 1.201; आहितो

अहंमानो एत्थाति अत्ता, विसुद्धि. महाटी. 2.430; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — चित्तप्पि मे सम्मा आहितं, पारा. अष्ट. 1.103-104; समाहितं चित्तं एकगं, पारा. 4; यं ... किलेसेहि आहितं सामत्थियमत्तं, उदा. अष्ट. 156; स. उ. प. के रूप में, अग्गा., अग्या. के अन्त. द्रष्ट.

आहितगम्भा स्त्री., ब. स. [आहितगर्भा], गर्भवती नारी, प्र. वि., ए. व. — मेघगज्जितेन आहितगम्भा परियेसति लेणन्ति, थेरगा. अष्ट. 2.27.

आहितगि त्रि., ब. स. [आहिताग्नि], वह, जिसने यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित कर दिया है, पु., प्र. वि., ए. व. — ईदिसस्मिं हि ठाने आहितग्गी ति वा अग्गाहितो ति वा ..., सद्. 2.414.

आहितचित्त त्रि., ब. स. [आहितचित्त], स्थिर एवं एकाग्र चित्त वाला, शान्त चित्त वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — समाहितचित्तो घ ... सम्मा आहितचित्तोति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो, चरिया. अष्ट. 135.

आहितबल त्रि., ब. स., बलवान्, बलसम्पन्न, ताकतवर — लं नपुं., प्र. वि., ए. व. — आहितबलं पठमं विपच्चाति, विसुद्धि. महाटी. 2.353.

आहित्वा आ + णिहा का पू. का. कृ. [आहाय], छोड़ कर, त्याग कर — हिमवन्तं गमित्वान्, आहित्वा पुण्णसञ्चयं, अप. 2.111; सङ्गारकूटा आहित्वा सुसाना रथियापि च, अप. 2.236.

आहु/अहु णहु (होना) का परोक्षभूत का प्र. पु., ए. व., सामान्य अहोसि का छन्दानुरोधवश किया गया रूपान्तरण, हुआ था — अहु राजा विदेहानं, जा. अष्ट. 7.102.

आहुण्येय्य त्रि., द्रष्ट., आहुनेय्य के अन्त. (आगे).

आहुत<sup>1</sup> त्रि., आ + णहु (हवन करना) का भू. क. कृ. [आहुत], वह, जिसे आहुतियों में डाला गया है, हवन किया गया — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — अनलो ... आहुतं घतं अस्नाति, जा. अष्ट. 5.58; स. उ. प. के रूप में, पटियत्ता. के अन्त. द्रष्ट.

आहुत<sup>2</sup> त्रि., आ + णहु का भू. का. कृ. [आहुत], आया हुआ, बुलाया हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व. — आहुनेय्यगि ... अतोहयं ब्राह्मण आहुतो सम्भूतो, अ. नि. 2(2).194; आहुतोति आगतो, अ. नि. अष्ट. 3.168.

आहुतगि त्रि., ब. स. [आहुताग्नि], अग्नि में आहुतियां डालने वाला अथवा अग्नि में हवन करने वाला, अग्निहोत्री — गि पु., प्र. वि., ए. व. — आहुतगि च ब्राह्मणो, जा.

## आहुति

285

## आहुनेय्यगि

अद्भ. 7.45; - ग्गी व. व. - राजिसी यत्थ सम्मन्ति  
आहुतग्गी समाहिता, जा. अद्भ. 7.277.

आहुति स्त्री. आ + हु से व्यु. [आहुति], शा. अ., किसी देवता को उद्दिष्ट करके अग्नि में दी गई हवनसामग्री, हवनकुण्ड में हवनसामग्री डालना, ला. अ., सम्माननीय व्यक्ति को सम्मानपूर्वक दिया गया दान - ति प्र. वि., ए. व. - आहुति पग्गहिता ... यच्चि किञ्चि अग्निमिह जुहितब्बं तं सब्बं आहुतीति बुच्चति, सु. नि. अद्भ. 1.139; आहुतियोति यं पहेणकसक्कारादिभेदं दिन्नदानं, दी. नि. अद्भ. 1.137; - तिं द्वि. वि., ए. व. - आहुनेय्यस्साति आहुतिं पटिग्गहेतुं युत्तस्स, म. नि. अद्भ. (म.प.) 2.70; आहुतिं निच्चं पग्गण्हाति, स. नि. 1(1).167; - तीनं ष. वि., ब. व. - आहुतीनं पटिग्गहो, जा. अद्भ. 1.20; अप. 1.47; स. उ. प. के रूप में, परमा, लोका, पटिग्गहा. के अन्त. द्रष्ट.

आहुतिगच्छ पु., तत्पु. स., अग्नि में डाली जा रही हवनसामग्री की गच्छ - च्चेन तु. वि., ए. व. - ब्राह्मणा आहुतिगच्छेन धावन्ति, म. नि. 3.207.

आहुतिपिण्ड पु., तत्पु. स., अग्नि में डाली जाने वाली हवनसामग्री के रूप में चावल का पिण्ड (गोला) - ण्डं द्वि. वि., ए. व. - आहुनं आहुतिपिण्डं समुग्गण्हन्ति, महाव. अद्भ. 411; निच्चकाले आहुतिपिण्डं पग्गण्हाति, स. नि. अद्भ. 1.181.

आहुन' नपुं., [आहवन], शा. अ., यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, हवन, ला. अ., सम्मान, सत्कार - नं प्र. वि., ए. व. - हवनं दानं आहुनं, विसुद्धि. महाटी. 2.308; आहुनं बुच्चति सक्कारो, आहुनं अरहन्तीति, दी. नि. अद्भ. 3.160; आहुनं अरहन्तीति, विसुद्धि. महाटी. 1.264.

आहुन' नपुं., आहुति-पिण्ड - नं द्वि. वि., ए. व. - आहुनं आहुतिपिण्डं समुग्गण्हन्ति, महाव. अद्भ. 411.

आहुनपटिग्गाहक त्रि., [आहुतिप्रतिग्राहक], 1. यज्ञ की आहुतियों को स्वीकार करने वाला, 2. सम्मान दिए जाने योग्य, सम्माननीय - का पु., प्र. वि., ब. व. - मातापितूनं ... आहुनेय्याति आहुनपटिग्गाहका यस्स कस्सचि सक्कारस्स अनुच्छविका, जा. अद्भ. 5.326.

आहुनपाहुन नपुं., यज्ञ एवं आहुति, आहुतियां देना एवं यज्ञ-विधान करना - वसेन तु. वि., ए. व., क्रि. वि., यज्ञीय विधान एवं आहुति के द्वारा - आहुनपाहुनवसेन हुतमि सुहुतं, वि. व. अद्भ. 129; हुतन्ति आहुनपाहुनवसेन दिन्नं, जा. अद्भ. 4.18; चरिया. अद्भ. 32; - मङ्गलकिरिया स्त्री.,

यज्ञीय विधान का मांगलिक कार्य, प्र. वि., ए. व. - आहुनपाहुनमङ्गलकिरिया, ध. स. अद्भ. 408.

आहुनपिण्ड पु., तत्पु. स., 1. आहुतपिण्ड, यज्ञ की आहुतियों में दिया जाने वाला पिण्ड, यज्ञीय बलि, 2. सम्मान के साथ दिया गया दान अथवा उपहार - ण्डं द्वि. वि., ए. व. - आहुनेय्योति आहुनपिण्डं पटिग्गहेतुं युत्तो, स. नि. अद्भ. 1.182.

आहुनेय्य त्रि., आ + हु का सं. कृ. [आहवनीय], शा. अ., यज्ञीय बलि प्रदान करने योग्य, ला. अ., सम्माननीय, पूज्य, चीवर आदि 4 प्रत्ययों का दान पाने योग्य - य्यो पु., प्र. वि., ए. व. - आहुनेय्योतिआदीसु आनेत्वा हुनितब्बन्ति आहुनं, दूरतोपि आगन्त्वा सीलवन्तेसु दातब्बन्ति अत्थो, वतुन्नं पच्चयानमेतं अधिवचनं, महप्फलभावकरणतो तं आहुनं पटिग्गहेतुं युत्तोति आहुनेय्यो ... सक्कादीनमि आहवनं अरहतीति वा आहवनीयो, इतिवु. अद्भ. 252; सावक सङ्गो, आहुनेय्यो पाहुनेय्यो, दी. नि. 3.4; आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिण्यो सुदुत्तमो, ना. रू. प. 1148; आनेत्वा हुनितब्बन्ति आहुनं दूरतोपि आनेत्वा दातब्बदानं तं पटिग्गहेतुं युत्तोति आहुनेय्यो, विसुद्धि. महाटी. 2.498; - य्यं पु., द्वि. वि., ए. व. - आहुनेय्यं सङ्गं, पाहुनेय्यं दक्खिण्यं अञ्जलिकरणीयं, पारा. अद्भ. 1.199; आहुनेय्यन्ति आदीसु सारत्थ. टी. 2.69; - स्स ष. वि., ए. व. - आहुनेय्यस्स यक्खस्स ... तस्स सावकोहमस्मीति, म. नि. 2.55; - य्या पु., प्र. वि., ब. व. - आहुनेय्या, अ. नि. 1(1).156; आहुनेय्या यजमानानं होन्ति, अ. नि. 1(1).79; स. उ. प. के रूप में साक. के अन्त. द्रष्ट.; - सुत्त नपुं., अ. नि. के कुछ सुत्तों का शीर्षक, अ. नि. 2(2).1.2; 3(1).117-118; - ते सप्त. वि., ए. व. - छक्कनिपाते आहुनेय्यसुत्ते अत्थि ..., दी. नि. अद्भ. 3.155.

आहुनेय्यगि पु., कर्म. स., 3 प्रकार की यज्ञीय अग्नियों में से एक, शा. अ., आहवनीय अग्नि, वह अग्नि, जिसमें आहुतियां दी जाएं, ला. अ., 1. सम्मान अथवा सत्कार देने योग्य माता-पिता-रूपी अग्नि, 2. सम्माननीय माता-पिता आदि के अनुताप का कारणभूत पुत्र आदि - अपरेपि तयो अग्गी - आहुनेय्यगि, गहपतगि, दक्खिण्यगि, दी. नि. 3.174; रागगि ... आहुनेय्यगि ... इमे खो भिक्खवे, सत्त अग्गीति, अ. नि. 2(2).191; यस्स ते होन्ति माताति वा पिताति वा अयं बुच्चति ब्राह्मण आहुनेय्यगि, अ. नि. 2(2).194; आहुनेय्यग्गीतिआदीसु आहुनं बुच्चति



## आहुनेय्यभावादिसिद्धिकथा

286

इक्कास

सक्कारो, आहुनं अरहन्तीति आहुनेय्या मातापितरो हि पुत्तानं  
बहूपकारताय आहुनं अरहन्ति — इति अनुदहनद्वेन  
आहुनेय्यग्गीति वुच्चन्ति, दी. नि. अहु. 3.160; स. प. के  
अन्त., — आहुनेय्यगिगहपतगिदक्खिण्येय्यग्गीसु, विसुद्धि.  
महाटी. 1.264.

आहुनेय्यभावादिसिद्धिकथा स्त्री., विसुद्धि. के उस स्थल  
का शीर्षक जिसमें लोकोत्तर प्रज्ञा से होने वाले सांसारिक  
लामों का वर्णन है, विसुद्धि. 2.350-352.

आहुनेय्यवग्ग पु., अ. नि. का एक वग्ग, अ. नि. 2(2).  
1-6.

आहुन्दरिक त्रि., अप्रिय, दुर्गन्ध, पार न करने योग्य,  
कठिन, सरलता से दिखलाई न देने योग्य, चारों ओर से  
घिरा, बाधाओं से भरपूर — का स्त्री., प्र. वि., ए. व. —  
‘आहुन्दरिका समणानं सकयपुत्तियानं दिसा अन्धकारा, न  
इमेसं दिसा पक्खायन्ती’ति, महाव. 100; दसमे —  
आहुन्दरिकाति सम्बाधा, पाचि. अहु. 201; ‘दसमे  
आहुन्दरिका’ति पठन्ति किर, वजिर. टी. 348; — कं नपु.,  
प्र. वि., ए. व. — यस्मा पन पुरिमभवे नामरूपं असेसं  
निरुद्धं इध अज्जं उप्पन्नं, तस्मा तं ठानं आहुन्दरिकं  
अन्धतममिव होति सुदुदसं दुप्पज्जेन, पटि. म. अहु. 1.294;  
आहुन्दरिकन्ति समन्ततो, उपरि च घनसज्जन्तं  
सम्बाधह्वानं, विसुद्धि. महाटी. 2.45.

आहूय आ + √हु का पू. का. कृ., आह्वान करके, बुलाकर,  
पुकार कर — आहूय सब्ब पादासि रज्जं पुत्तेहि अत्तनो, चू.  
व. 45.8; इच्चेते पञ्च आहूय पेसले, चू. व. 87.17.

इ

इ गति अथवा अध्ययन के अर्थों को प्रकाशित करने वाली  
एक धातु [इण् गतौ], जाना, अध्ययन करना — इ अज्झने  
गतिक्कन्ति, मो. धा. पा. 288; इ अज्झाने गतिमि च,  
धा. मं. 96; इ अज्झयने, सद. 2.322; क्रि. रू. के लिए  
‘एति’ के अन्त. द्रष्ट. (आगे); सोपसर्ग प्रयोगों के लिए  
उपेति, अन्वेति, अज्जेति आदि के अन्त. द्रष्ट.

इकार पु., [इकार], पालि-वर्णमाला में प्रयुक्त आठ स्वरों में  
तालुस्थानीय ह्रस्व स्वर ‘इ’ — रो प्र. वि., ए. व. —  
यथागममिकारो, क. व्या. 607; सद. 3.858; — रं द्वि. वि.,  
ए. व. — ... इकारञ्च दंकारञ्च दुकारञ्च खंकारञ्च  
ईसकं विच्छिन्दित्वा ..., सद. 1.42-43; — रस ष. वि., ए.  
व. — ... निरुत्तिनयेन इ-कारस्स अत्तं पुत्त-सदस्स च

लोपं कत्वा ..., अप. अहु. 1.136; — रे सप्त. वि., ए. व.  
— निपातभूतस्स पन इतिसदस्स इकारे नट्ठेपि सो अत्थो  
विज्जायतेव ..., सद. 1.43; — रेसु ब. व. — ... द्वीसु  
इकारेसु परस्स इकारस्स लोपो कातब्बो, सद. 1.43; —  
लोप पु., तत्पु. स., केवल व्याकरण में प्रयुक्त [इकारलोप],  
इकार का लोप, ‘इ’ वर्ण की समाप्ति — पो प्र. वि., ए.  
व. — सुइदन्ति सुदं, सन्धिवसेन इकारलोपो वेदितब्बो,  
पारा. अहु. 1.144; — पं द्वि. वि., ए. व. — इवाति  
ओपम्मवचनं, इ-कारलोपं कत्वा व-इच्चेव वुत्तं, सु. नि.  
अहु. 1.12; — रागम पु., व्याकरण में प्रयुक्त, तत्पु. स.  
[इकारागम], ‘इ’ स्वर का आगम, दो ध्वनियों के मध्य में  
इकार का अतिरिक्त रूप में आ जाना — मो प्र. वि., ए.  
व. — इकारागमो असब्बधातुकम्हि, क. व्या. 518;  
असब्बधातुके इकारागमो, सद. 3.835; यथागमं सब्बधातूहि  
सब्बपच्चयेसु इकारागमो होति, क. व्या. 607; स. उ. प.  
में सेकारा के अन्त. द्रष्ट.; टि., शब्द में प्रयुक्त किसी  
भी वर्ण के पूर्व में अथवा पश्चात् किसी अन्य वर्ण का मित्र  
के समान आकर बैठ जाना ही व्याकरण-शब्दावली में  
आगम कहलाता है — मित्रवदागमः — रादेस पु., तत्पु.  
स. [इकारादेश], किसी अन्य वर्ण के स्थान पर इकार को  
रख देना, अन्य ध्वनि के स्थानापन्न के रूप में इकार —  
सो प्र. वि., ए. व. — यज इच्चेतस्स धातुस्स आदिस्स  
इकारादेसो होति येपच्चये परे, क. व्या. 505; टि., किसी  
शब्द में पहले से विद्यमान किसी एक ध्वनि या वर्ण को  
हटा कर उसके स्थान पर अन्य वर्ण को रख दिया जाना  
ही आदेश कहलाता है — शत्रुवदादेशः.

इक्क/अच्छ/इस्स/ईस पु., [ऋक्ष], भालू, रीछ —  
च्छो प्र. वि., ए. व. — अच्छो इक्को च इस्सो तु  
कालसीहो इसोप्यथ, अभि. प. 612; अच्छो इक्को पुमे वुत्तो,  
पसन्नमि तिलिङ्गिको, अभि. प. 1025; — क्का/च्छा ब.  
व. — कक्कटा कटमाया च, इक्का गोणसिरा बहू जा.  
अहु. 7.306; तथा कम्मरसालासु, अच्छा कूटानि पातयुं  
म. वं. 5.31.

इक्कट पु., [इक्कट], एक प्रकार की माला का गुच्छा, स.  
प. के अन्त., — पीतकसिणो मालागच्छन्ति  
इक्कटादिमालागच्छं, विसुद्धि. महाटी. 1.184.

इक्कास पु./नपु., अर्थ एवं व्यु. सन्दिग्ध [प्रा. इक्कास]. 1.  
साटने या चिपकाने वाला पदार्थ, गोंद, लस, रस, 2.  
निर्यास, अर्क, सार, काढ़ा — सं पु., द्वि. वि., ए. व. —  
‘अनुजानामि, भिक्खवे, इक्कासं पिड्डमद’न्ति, चूलव. 277;

## √इक्ख

287

इङ्गित

इक्कासन्ति रुक्खनिप्यासं वा सिलेसं वा, चूळव. अट्ट. 61; अनुजानामि, भिक्खवे, इक्कासं कसावन्ति, चूळव. 278

√इक्ख' देखने के अर्थ को सूचित करने वाली एक धातु — इक्खो तु दस्सनइसु, धा. मं. 4; इक्ख दस्सने, मो. धा. पा. 13; इक्ख दस्सनइसु, सट्. 2.332; क्रि. रू. के लिए इक्खति, उपेक्खति, अपेक्खति के अन्त. द्रष्ट.

इक्ख<sup>२</sup> त्रि., [ईक्ष्य], देखने योग्य, समझे जाने योग्य — क्खा पु., प्र. वि., ब. व. — असुखद्वम्मतो चिक्खा, सच्च. 303.

इक्खक त्रि., [ईक्षक], देखने वाला, ध्यान देने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — उपेक्खकोति उपपत्तितो इक्खको होति, महानि. अट्ट. 278.

इक्खणसील त्रि., [ईक्षणशील], देखने की प्रकृति वाला — लो पु., प्र. वि., ए. व. — संसारसभावो एसोति संसारे भयं इक्खणसीलो भिक्खु अधिवासये, उदा. अट्ट. 213.

इक्खणिका स्त्री., [ईक्षणिका], भविष्य का कथन करने वाली स्त्री, भविष्यकथिका, दैवज्ञा, भविष्य के शुभ और अशुभ को देख सकने वाली स्त्री, प्र. वि., ए. व. — वारुणीक्खणिका तुल्या, अभि. प. 236; अतियक्खाति भूतविज्जा इक्खणिकापि, जा. अट्ट. 7.259; इत्थी इमस्मिं येव राजगहे इक्खणिका अहोसि, पारा. 143; — कम्म नपुं., भविष्य कथन करने वाली स्त्री का व्यवसाय या धन्धा, पेशा — म्मं द्वि. वि., ए. व. — सा किर इक्खणिकाकम्मं यक्खदासिकम्मं करोन्ती ..., पारा. अट्ट. 2.90.

इक्खति √इक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईक्षते], शा. अ., देखता है, निरखता है, ला. अ., सोचता-विचारता है, नजर डालता है, खोजता है — संसारे भयं इक्खतीति भिक्खु, विसुद्धि. 1.4; संसारे भयं (इक्खति) इक्खनसीलो ति (वा) भिक्खु, सट्. 2.584; एत्थ उपपत्तितो इक्खतीति उपेक्खा, पारा. अट्ट. 1.111; — तै कर्म. वा., प्र. पु., ए. व. — नानतं इक्खते लोको, अभि. प. टी. 45. 46(बर्मी); — सि म. पु., ए. व. — ममेव तुवं इक्खसि, जा. अट्ट. 5.147; पाठा. सिक्खसि; — क्खामि उ. पु., ए. व. — न तं इक्खामहं पुनो, थेरीगा. अट्ट. 163; अप. 2.202; — न्तो वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. — भिक्खूति संसारे भयं इक्खन्तो ..., थेरगा. अट्ट. 2.412.

इक्खन/इक्खण √इक्ख से व्यु., क्रि. ना., नपुं., [ईक्षण], देखना, गहराई के साथ देखना, सोच-विचार करना —

इक्खनं दस्सनं प्यथ, अभि. प. 775; — ता स्त्री., भाव., देखते रहने की प्रकृति — य त्. वि., ए. व. — भिक्खूति संसारे भयं इक्खणताय वा ... एवं लद्धवोहारो सद्धापब्बजितो कुलपुत्तो, विसुद्धि. 1.17; — तो प. वि., ए. व. — संसारे भयस्स इक्खनतो भिन्नकिलेसताय वा भिक्खु, थेरगा. अट्ट. 1.298.

इक्खनाकार पु., तत्पु. स. [ईक्षणाकार], देखने का प्रकार, देखने का तरीका — रो प्र. वि., ए. व. — उपेक्खनाति उपपत्तितो इक्खनाकारो, महानि. अट्ट. 382.

√इङ्ग/√इङ्गि गति अर्थ में प्रयुक्त धातु, वर्त., प्र. पु., ए. व. — इङ्गति, सट्. 2.329.

√इङ्ग/√इङ्गी गमन अर्थ में प्रयुक्त धातु — इङ्ग गमनत्थे, धा. पा. 22; अङ्गी इङ्गी रिङ्गी लिङ्गी वङ्गी गत्यथधातवो, क. व्या. धा. मं. 6.

इङ्ग पु., [इङ्ग], सङ्केत, इशारा, इङ्गित द्वारा मनोभावों का संकेत देना — ङ्गो प्र. वि., ए. व. — आकारो त्विङ्गितं इङ्गो, अभि. प. 764; तुल. आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्, अमर. 3.2.15.

इङ्गण नपुं., √इङ्ग/√इङ्गी से व्यु., क्रि. ना. [इङ्गण], चलना, हिलना डुलना, कसना, सञ्चरण करना, स. उ. प. में ही प्राप्त, वाति.- हवा द्वारा हिलना डुलना — योजनमत्तके वातिङ्गणसञ्जाय वालं बन्धापेत्वा रत्तन्धकारे मेघपटलेहिच्छासु दिसासु कण्डं खिपि, बु. वं. अट्ट. 321; वातिङ्गणसञ्जाय उत्सभमत्तके वालं विज्झि, जा. अट्ट. 5.126; वातिङ्गणो च भण्डाकी, अभि. प. 588.

इङ्गालकुर्या स्त्री., [अङ्गारकूप], अङ्गारकूप, अङ्गारों का गड्ढा — या सप्त. वि., ए. व. — इङ्गालकुर्याव उज्झितो, थेरीगा. 388; इङ्गालकुर्याति अङ्गारकासुर्या उज्झितोति वातुक्खित्तो विय यो कोचि, दहनिया इन्धनं वियाति अत्थो, थेरीगा. अट्ट. 279.

इङ्गित नपुं., [इङ्गित], संकेत, इशारा, सञ्चलन, हिलना, क्षोभ — आकारो त्विङ्गितं इङ्गो, अभि. प. 764; तुल., आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्, अमर. 3.2.15; — तं द्वि. वि., ए. व. — वङ्गकीसूकरो तेसं इङ्गितं दिस्वा, जा. अट्ट. 2.335; पाठा. इङ्गितं, राजा तेसं इङ्गितं दिस्वाव, अ. नि. अट्ट. 1.190; जानित्वा तस्स इङ्गितं, म. वं. 31.52; — तेन त्. वि., ए. व. — सा इङ्गितेनेव तस्स अधिप्याय अज्जासि, अ. नि. अट्ट. 1.276; — सञ्जा स्त्री., तत्पु. स. [इङ्गितसञ्जा], मनोभावों या विचारों का संकेतों के द्वारा प्रकाशन, इशारों

## इङ्गदी

288

इच्छता

द्वारा मन की बातों का खुलासा — *ज्जं द्वि. ५५, ए. व. — राजा परिसाय इङ्गितसज्जं अदासि, जा. अङ्ग. 2.163; — य तु. वि. ए. व. — भवितव्यमेव कारणेनाति इङ्गितसज्जाय दासियो पटिकमापेत्वा ..., जा. अङ्ग. 6.197; — ताकार पु. [इङ्गिताकार], संकेत, इशारा, चेष्टा, इङ्गित, अङ्गविक्षेपादि के द्वारा अथवा विभिन्न अंगों की चेष्टा के द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटीकरण — रं द्वि. वि., ए. व. — कोकालिकस्स इङ्गिताकारं दस्सेत्वा, पारा. अङ्ग. 2.173.*

**इङ्गदी** स्त्री., [इङ्गदी], एक औषधि का वृक्ष, हिंगुपत्र, हिंगोट का वृक्ष, मालकगनी, प्र. वि., ए. व. — *इङ्गदी तापसतरु, अभि. प. 565; तुल., इङ्गदी तापसतरु, अमर. 2.4.46.*

**इङ्ग** अ., निपा., संभवतः वैदिक तद् + ई + घ का संक्षिप्तीकृत रूप, अनुरोध, निवेदन, प्रेरणा तथा प्रबोधन के अर्थों में प्रयुक्त; अच्छा तो, कृपा करके — *चोदने इघ हन्दाथ, अभि. प. 1157; इङ्ग हन्द् इच्चेते चोदनत्थे, सद. 3.898; इङ्ग, भन्ते, सरापेहीति एत्थ इङ्गाति चोदनत्थे निपातो, पारा. अङ्ग. 1.236; इङ्गाति चोदनत्थे निपातो, उदा. अङ्ग. 252; प्रयोग, वाक्य के प्रारम्भ में ही निम्नलिखित रूपों में प्रयुक्त; 1. प्राचीनतम प्रयोगों में (सु. नि. तथा जा. अङ्ग. की गाथाओं में) 'त' के उपरान्त कहने, सुनने एवं देखने अर्थ वाली धातुओं के अनु., म. पु., ए./ब. व. के क्रि. रू. के पूर्व में प्रयुक्त — *'किं ते नङ्गं किं पन पत्थयानो, इधगमा ब्रह्मे तदिह ब्रूहीति, जा. अङ्ग. 3.303; तदिह मय्हं वचनं सुणाय, जा. अङ्ग. 4.147; 2. सामान्य प्रकृति की संरचनाओं में अनु., म. पु., ए./ब. व. तथा संबो. में प्राप्त ना. प. से पूर्व में प्रयुक्त — इङ्ग पस्स महासाज, सुज्जं अन्तेपुरं तव, जा. अङ्ग. 6.285; इङ्ग पस्स महापज्ज, मोगगल्लान महिद्धिक, ध. प. अङ्ग. 2.315; 3. कहीं-कहीं इसके तुरन्त बाद में संबो. में अन्त होने वाले ना. प. के प्रयोग के उपरान्त अनु., म. पु., ए./ब. व. का क्रि. प. प्राप्त — इङ्ग, मदि, निसामेहि, चित्तरूपं दिस्सति, जा. अङ्ग. 7.270; 4. कुछ प्रयोगों में इङ्ग + मे त्वं + सम्बो., ए. व. में ना. प. प्रयुक्त — *इङ्ग मे त्वं, आनन्द, पानीयं आहर, पिपासितोरिम, दी. नि. 2.98; 5. कहीं-कहीं इङ्ग + द्वि. आदि वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ प्रयुक्त — इङ्ग मं सावेहीति, मि. प. 128; 6. कुछ प्रयोगों में परवर्ती पुष्टिसूचक 'ताव' के साथ प्राप्त — *'इङ्ग ताव कारणेन मं सज्जापेहीति, मि. प. 126; इङ्ग ताव आयस्मा कायिकं सिक्खस्सूति, चूळव. 409; 7. बहुत कम स्थलों में इङ्ग + अनु., उ. पु., ब. व. में अन्त****

होने वाले क्रि. प. के साथ भी प्राप्त — *इङ्गस्स पुरिमं साखं, मयं छिन्दाम वाणिजा, जा. अङ्ग. 4.313.*

**इच्च** रइ का पू. का. कृ. [इत्य], जा कर, पहुंच कर, प्राप्त कर — *इच्चाति गमनुस्सुक्कवचनमेतं, प. प. अङ्ग. 393. इच्चेव अ., इति + एव के योग से व्यु. [इत्येव], यह ही, ऐसा ही, तुरन्त पूर्व में कहा गया ही — इच्चेव वत्तान यमस्स दूता, वि. व. 864; तत्थ इच्चेव वत्तानाति इति एव उद्देहीति आदिना वत्ता, वचनसमन्तरमेवाति अत्थो, वि. व. अङ्ग. 188.*

**इच्चेव** अ., निपा., इति + एवं के योग से व्यु. [इत्येव], इस प्रकार से, जो कुछ पूर्व में कहा गया है उसके आलोक में, ऐसे — *इच्चेवं सब्बथापि द्वादसाकुसलचित्तानि समत्तानि, अभि. ध. स. 2; तत्थ इति—सदो वचनवचनीय समुदायनिदस्सनत्थो, एवं—सदो वचनवचनीयपटि—पाटिसन्दस्सनत्थो ..., इच्चेवं यथावुत्तनयेन ..., अभि. ध. वि. 82.*

**इच्छ** त्रि., [ईप्सु/इच्छु/इच्छ], चाहने वाला, इच्छा करने वाला — *च्छो पु., प्र. वि., ए. व. — अयं वुच्चति, भिक्खवे — 'भिक्खु इच्छो विहरति लाभाय, अ. नि. 3(1).120; अयं वुच्चतावुसो, 'भिक्खु इच्छो विहरति लाभाय, अ. नि. 3(1).148.*

**इच्छक** त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, इच्छा करने वाला, **सुखि.**— सुख की इच्छा करने वाला — *का पु., प्र. वि., ब. व. — नुयुत्ता होन्ति सब्बेपि, बुद्धिकामा सुखिच्छका, अप. 2.105; यदि.*— जिस किसी की भी इच्छा करने वाला — *कं नपुं., प्र. वि., ए. व., क्रि. वि. — यत्थिच्छकं यदिच्छकं यावतिच्छकं समापज्जतिपि बुद्धातिपि, दी. नि. 2.55; यत्थिच्छकन्ति ओकासपरिदीपनं, यत्थ यत्थ ओकासे इच्छति, दी. नि. अङ्ग. 2.93; यदिच्छकन्ति समापत्तिदीपनं, यं यं समापत्तिं इच्छति, तदे., येनि.*— जहां चाहे वहां, अपनी इच्छा के अनुसार — *येनिच्छकं गच्छति गोचराय, सु. नि. 39; येनिच्छकं गच्छति गोचरायति येन येन दिसाभागेन गन्तुमिच्छति, तेन तेन दिसाभागेन गोचराय गच्छति, सु. नि. अङ्ग. 1.66; इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं, येनिच्छकं यत्थकामं यथासुखं, थेरगा. 77.*

**इच्छता** स्त्री., इच्छा का भाव., इच्छा का होना, स. उ. प. में ही प्राप्त, **महिच्छ.**— अत्यधिक इच्छा का होना — *य तु. वि., ए. व. — ... दुप्पोसताय महिच्छताय असन्तुद्धिताय ... अवण्णं भासित्वा, महाव. 51; ब्राह्मणी पन महिच्छताय*

## इच्छति

289

## इच्छागत

पुन एकदिवसं सुवर्णहंसराजस्स आगतकाले एहि ताव सामीति ... जा. अड्ड. 1.454.

**इच्छति** √इच्छ का वर्त. प्र. पु. ए. व. [इच्छति]. इच्छा करता है, कामना करता है - **इच्छति सम्पटिच्छति**, सम्पटिच्छनं इच्छा अभिच्छा, इच्छं इच्छमानो, सद. 2.453; **यो इच्छति कामेति**, अप. अड्ड. 1.294; - **न्ति** ब. व. - **भातापितरो पुत्तं इच्छन्ति कुले जायमानन्ति**, अ. नि. 2(1).39; - **च्छे / च्छेय्य** विधि. प्र. पु. ए. व. - **न पुत्तमिच्छे न धनं न रद्धं**, ध. प. 84; **न पुत्तमिच्छेय्य कुतो सहायं**, सु. नि. 35; - **च्छं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - **सो प्लवती हुरा हुरं फलमिच्छं वनरिम् वनरो**, ध. प. 334; - **च्छि** अद्य. प्र. पु. ए. व. - **सो तस्सो भरियाय सिनेहेन न इच्छि**, पे. व. अड्ड. 27; - **तब्बं सं. कृ., नपुं.** प्र. वि., ए. व. - **एतं तयं केसं इच्छित्थन्ति**, पे. व. अड्ड. 8; - **च्छापेति** √इच्छ के प्रेर. का प्र. पु. ए. व. इच्छा के लिए प्रेरित करता है, इच्छा करवाता है - **इच्छती ति नरे इत्थी**, इच्छापेती ति वा पन, सद. 2.363; - **मि** उ. पु., ए. व. - **यदि गरहथ, वदथ, इच्छापेमि वो वतुन्ति** अत्थो, स. नि. अड्ड. 1.243.

**इच्छत्थ** त्रि., ब. स. [इच्छार्थक], इच्छा अर्थ को सूचित करने वाला - **त्थेसु स्त्री.**, सप्त. वि., ब. व. - **इच्छत्थेसु तवे तुं वा समानकत्तुकेसु**, सद. 3.850.

**इच्छन** नपुं. √इच्छ से व्यु. क्रि. ना. [इप्सन], इच्छा करना, कामना करना, अभिलाषा या तृष्णा करना - **नं प्र. वि.**, ए. व. - **येन देवद्वाने च मनुस्सद्वाने च गन्तुं इच्छनं**, जा. अड्ड. 7.133.

**इच्छमान** त्रि., √इच्छ का वर्त. कृ. [इच्छमान], इच्छा कर रहा, कामना कर रहा - **पथविय निपन्नस्स, एवं मे आसि येतसो**, इच्छमानो अहं अज्ज, किलेसे ज्ञापये मम, बु. वं. 2.54; **इच्छमानोति आकङ्खमानो**, बु. वं. अड्ड. 104.

**इच्छा** स्त्री., [इच्छा], इच्छा, कामना, स्पृहा, आकांक्षा, तृष्णा - **तण्हा च तसिणा एजा जालिनी च विसत्तिका ... इच्छाभिलासो कामदोहव्वा**, अभि. प. 162-163; प्र. वि., ए. व. - **इच्छा वुच्चति तण्हा**, महानि. 21; 202; **इच्छन्ति एताय आरम्भणानीति इच्छा**, ध. स. अड्ड. 390; **तयो रोगा पुरे आसुं**, इच्छा अनसनं, जरा, सु. नि. 313; **इति बालस्स सङ्गयो, इच्छा मानो च वड्ढति**, ध. प. 74; - **च्छं द्वि. वि.**, ए. व. - **सो तस्स कायदुच्चरितस्स पटिच्छादनहेतु पापिकं इच्छं पणिदहति**, अ. नि. 2(2).66; **न पापिकं इच्छं**

**पणिदहिस्साम्**, अ. नि. 1(2).165; - **य' तृ. वि., ए. व.** - **इच्छाय बज्झती लोको**, स. नि. 1(1).47; **न हि युज्जति इच्छाय च तण्हाय च अत्थतो अज्जत्तं**, नेत्ति. 22; - **य' प. वि., ए. व.** - **सदा इच्छाय निच्छतो अनिच्छो होति निब्बुतो**, सु. नि. 712; - **य' ष. वि., ए. व.** - **इच्छाय विप्पहानेन, सब्बं छिन्दति बन्धनन्ति**, स. नि. 1(1).47; - **य' सप्त. वि., ए. व.** - **इच्छायसन्त्या न ममत्तमत्थि**, सु. नि. 878; - **नं ष. वि., ब. व.** - **पापिच्छो होति न पापिकानं इच्छनं वसंगतो**, दी. नि. 3.32; **पुग्गलो पापिच्छो, पापिकानं इच्छनं वसं गतो**, म. नि. 1.137; - **वचर पु.**, तत्पु. स. [इच्छावचर], इच्छाओं में विचरण, इच्छाओं में भटकाव - **रानं ष. वि., ब. व.** - **अकुसलानं इच्छावचरानं अधिवचनं**, म. नि. 1.33; - **वतिण्ण त्रि.**, [इच्छावतीर्ण], इच्छा से प्रभावित या आक्रान्त - **ण्णानं पु.**, ष. वि., ब. व. - **तेसं इच्छावतिण्णानं, भिय्यो तण्हा पवड्ढथ**, सु. नि. 308; **ततो तेसं इच्छावतिण्णानं खीरादिपञ्चगोरसस्सादवसेन रसतण्हाय ओत्तिण्णचित्तानं**, सु. नि. अड्ड. 2.51; - **पकत्त त्रि.**, [-प्रकृत], इच्छा से बंधा हुआ - **तो पु.**, प्र. वि., ए. व. - **यो भिक्खु पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं**, महाव. 123; **पुग्गलो पापिच्छो इच्छापकतो**, मि. प. 322; - **विनय पु.**, इच्छा पर संयम या नियन्त्रण - **ये पु.**, सप्त. वि., ए. व. - **इच्छाविनये तिब्बच्छन्दो होति**, दी. नि. 3.199; स. उ. प. के रूप में, अति., अत्रि., अनि., अप्पि., अभि., निरि., पापि., महि., विगति. के अन्त. द्रष्ट. **इच्छाकर त्रि.**, किसी की इच्छा को पूर्ण करने वाला - **रो पु.**, प्र. वि., ए. व. - **कामकरोति इच्छाकरो**, जा. अड्ड. 4.233.

**इच्छाकरण त्रि.**, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला, मनमौजी, स्वेच्छाचारी - **णो पु.**, प्र. वि., ए. व. - **यथा वा पन ... इत्सरो होति वसवती सामिको इच्छाकरणो**, मि. प. 324, 325.

**इच्छाकारण त्रि.**, ब. स., इच्छा से उत्पन्न होने वाला, वह, जिसके उदय का कारण इच्छा हो - **णा पु.**, प्र. वि., ब. व. - **इच्छानिदानाति ... इच्छाकारणा इच्छापभवाति - इच्छानिदाना**, महानि. 22.

**इच्छागत** नपुं./स्त्री., इच्छा, अभिलाषा - **तं प्र. वि., ए. व.** - **देवदत्तस्स ... एवरुपं इच्छागतं उप्पज्जि**, चूळव. 321; **तस्स मय्हं भन्ते, एवरुपं इच्छागतं उप्पज्जि**, स. नि. 1(1).76; - **ता स्त्री.**, प्र. वि., ए. व. - **या एवरुपा इच्छा**

## इच्छाचार

290

## इच्छापकत

इच्छागता अत्रिच्छता रागो सारागो चित्तस्स सारागो—अयं  
बुच्चति 'अत्रिच्छता', विभ. 402; पाठा. इच्छागतं.

इच्छाचार पु., [इच्छाचार], मनमानीपन, अनियन्त्रित आकांक्षा,  
उद्दाम इच्छा या कामना, महत्वाकांक्षा, उच्चाकांक्षा — रं  
द्वि. वि., ए. व. — इच्छाचारं वज्जेत्वा, एव विहरिषु, ध. प.  
अहु. 1.333; तस्सत्तनो नागमने, इच्छाचारं विजानिय, म.  
व. 1.17; — रे सप्त. वि., ए. व. — अयं महत्तनको  
इच्छाचारे ठितो, जा. अहु. 2.8; एवं इच्छाचारे ठत्वा  
पुरेक्खारञ्च भिक्खुसु इच्छति, ध. प. अहु. 1.293.

इच्छादोस त्रि., इच्छाओं के द्वारा प्रदूषित, इच्छा के द्वारा  
कलंकित — सा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इच्छादोसा अयं  
पजा, ध. प. 359.

इच्छाधूमायित/इच्छाधूपायित त्रि., इच्छारूपी धुएं से  
आच्छन्न या ढंका हुआ, इच्छारूपी धुएं से भरा हुआ,  
इच्छाओं के कारण जल रहा — तो पु., प्र. वि., ए. व. —  
मच्चुनाम्भहतो लोको ... इच्छाधूपायितो सदा, थेरगा. 448;  
महानि. 304; इच्छाधूपायितोति इच्छाय आदित्तो, स. नि.  
अहु. 1.86; इच्छाधूपायितोति ... इच्छाय सन्तापितो, थेरगा.  
अहु. 2.101.

इच्छानङ्गल/इच्छानङ्गल नपुं., व्य. सं., कोशल जनपद में  
अवस्थित ब्राह्मणों के एक गांव का नाम — लं प्र. वि.,  
ए. व. — येन इच्छानङ्गलं नाम कोसलानं ब्राह्मणगामो  
तदवसरि, दी. नि. 1.76; अ. नि. 2(1).25; — लं द्वि. वि.,  
ए. व. — इच्छानङ्गलं अनुपपत्तो इच्छानङ्गले विहरति, दी.  
नि. 1.77; — ले सप्त. वि., ए. व. — गोतमो सक्खपुत्तो  
... पब्बजितो इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे, सु.  
नि. 173; दी. नि. 1.76; ब्राह्मणमहासाला इच्छानङ्गले  
पटिवसन्ति, सु. नि. 173; — क त्रि., इच्छानङ्गल नामक  
ब्राह्मण ग्राम में रहने वाला या वहां पर उत्पन्न — को पु.,  
प्र. वि., ए. व. — अज्जतरो इच्छानङ्गलको उपासको  
सावत्थिं अनुपपत्तो होति केनचिदेव करणीयेन, उदा. 82;  
इच्छानङ्गलकोति इच्छानङ्गलनामको कोसलेसु एको  
ब्राह्मणगामो, तनिवासिताय तत्थ वा जातो भवोति वा  
इच्छानङ्गलको, उदा. अहु. 91; — का ब. व. — अस्सोसुं  
खो इच्छानङ्गलका ब्राह्मणगहपतिका ..., अ. नि. 2(1).26;  
— वनसण्ड पु., कोशल जनपद में अवस्थित एक जंगल  
का नाम — ण्डो प्र. वि., ए. व. — येन  
इच्छानङ्गलवनसण्डो तेन पायासि, दी. नि. 1.78; येन  
इच्छानङ्गलवनसण्डो तेनुपसङ्गमिषु, अ. नि. 2(1).26;

2(2).56; — ण्डे सप्त. वि., ए. व. — इच्छानङ्गले विहरति  
इच्छानङ्गलवनसण्डे, सु. नि. 174; स. नि. 3(2).395;  
— वासी त्रि., इच्छानङ्गल में रहने वाला, इच्छानङ्गल का  
निवासी — सिनो पु., प्र. वि., ब. व. — इच्छानङ्गलवासिनो  
च सन्निपत्तिषु, महासमागमो अहोसि, वि. व. अहु. 197; —  
वासिक त्रि., उपरिवत् — को पु., प्र. वि., ए. व. —  
तारुक्खो इच्छानङ्गलवासिको, दी. नि. अहु. 1.300; —  
सुत्त नपुं., स. नि. के आनापानसंयुक्त के एक सुत्त का  
शीर्षक, स. नि. 3(2).395-96.

इच्छानिदान त्रि., ब. स., इच्छाहेतुक, इच्छा के कारण से  
उत्पन्न, तृष्णा से उत्पन्न — ना पु., प्र. वि., ब. व. —  
इच्छानिदाना भवसातबद्धा, ते दुष्पमुञ्चा न हि अज्जमोक्खा,  
सु. नि. 779; तत्थ इच्छानिदानाति तण्हाहेतुका, महानि.  
अहु. 81; — नानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — इच्छानिदानानि  
परिग्गहानि, सु. नि. 878.

इच्छानिदेस पु., [निर्देश], इच्छा की व्याख्या या विश्लेषण  
— से सप्त. वि., ए. व. — इच्छानिदेसे जातिधम्मनन्ति  
जातिसभावानं जातिपकतिकान्, विभ. अहु. 101.

इच्छानुकूलक त्रि., किसी की इच्छा के अनुकूल रहने  
वाला, किसी की इच्छा से मेल खाने वाला, किसी की  
इच्छा के सदृश — कं नपुं., क्रि. वि., प्र. वि., ए. व. —  
एको व रुक्खो फलति सब्बं इच्छानुकूलकं, सद्धम्मो.  
242.

इच्छानुरूप अ., क्रि. वि., किसी की इच्छा के अनुरूप —  
पं नपुं., क्रि. वि., प्र. वि., ए. व. — तस्स इच्छानुरूपं  
पयिरुपासिषु, पे. व. अहु. 134; अत्तनो इच्छानुरूपं तेसं  
पटिपत्तिं पस्सितुं ..., उदा. अहु. 341.

इच्छापकत त्रि., इच्छा + पकत/इच्छा + अपकत [इच्छाप्रकृ  
त], अत्यधिक तृष्णा के कारण पीड़ित, स्वभावतः इच्छा से  
प्रभावित, इच्छा से अभिभूत, तृष्णालु — तो पु., प्र. वि., ए.  
व. — इच्छापकतोति इच्छाय अपकतो, उपहुतोति अत्थो,  
महानि. अहु. 269; इच्छापकतोति इच्छाय अभिभूतो, अ.  
नि. अहु. 3.41; यो भिक्खु पापिच्छो इच्छापकतो असत्तं  
अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उत्तपति, महाव. 123; — स्स  
पु., प. वि., ए. व. — लाभसक्कारसिलोकसन्निस्सितस्स  
पापिच्छस्स इच्छापकतस्स आमिसचक्खुक्कस्स ..., महानि.  
285; लाभसक्कारसिलोकसन्निस्सितस्स पापिच्छस्स  
इच्छापकतस्स या परेसं आलपना लपना ..., विभ.  
404.

## इच्छापञ्चय

291

## इच्छाविपरिचाय

**इच्छापञ्चय त्रि.** इच्छा या तृष्णा से उत्पन्न — या पु., प्र. वि., ब. व. — *इच्छानिदानाति इच्छानिदानका इच्छाहेतुका इच्छापञ्चया इच्छाकारणा, इच्छापभवति ...*, महानि. 22.

**इच्छापमव त्रि.** इच्छा से उत्पन्न, तृष्णा से उद्भूत — वा पु., प्र. वि., ब. व. — *... इच्छानिदानका इच्छाहेतुका इच्छापञ्चया इच्छाकारणा इच्छापभवति*, महानि. 22.

**इच्छापरियुद्धान नपुं.** इच्छा के द्वारा अभिभूत होने की अवस्था, इच्छा द्वारा आविष्ट या ग्रस्त हो जाना — नं प्र. वि., ए. व. — *इच्छापरियुद्धानं खो पन तथागतप्यवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं*, अ. नि. 3(2).132.

**इच्छापरियुद्धित त्रि.** परि + उ + ञ्ठा का भू. क. कृ., इच्छा द्वारा अभिभूत, इच्छाग्रस्त — तेन नपुं., तृ. वि., ए. व. — *पापिच्छो खो पन अयमायस्मा, इच्छापरियुद्धितेन येतसा बहुलं विहरति*, अ. नि. 3(2).132.

**इच्छाबद्ध त्रि.** तत्पु. स. [इच्छाबद्ध], इच्छा से बंधा हुआ, तृष्णा एवं लालसा से बंधा हुआ — द्वा पु., प्र. वि., ब. व. — *इच्छाबद्धा पुथू सत्ता, पासेन सकुणी यथाति*, स. नि. 1(1).52.

**इच्छामतोपसाधिय त्रि.** [इच्छामात्रोपसाध्य], केवल इच्छा के द्वारा प्राप्य या साध्य, केवल चाहने भर से मिल जाने वाला — या स्त्री., प्र. वि., ए. व. — *साधून् या गति सा मे इच्छामतोपसाधिया, सद्धम्मो*, 320.

**इच्छारहित त्रि.** तत्पु. स. [इच्छारहित], इच्छा से मुक्त, किसी प्रकार की इच्छा न करने वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — *अपिच्छोति अनिच्छो चतूसु पञ्चयेसु इच्छारहितो थेरगा*, अद्भ. 2.174.

**इच्छारोगापदेस पु.** तत्पु. स., इच्छारूपी रोग का व्याज, इच्छारूपी रोग का कारण — सेन तृ. वि., ए. व. — *एतेन इच्छारोगापदेसेन सकारणं ब्याधिदुक्खं वुत्तं*, पटि. म. अद्भ. 2.14.

**इच्छालोभ पु.** द्व. स., इच्छा और लोभ — भो प्र. वि., ए. व. — *इच्छा लोभो च कुम्मगो, उज्जुसग्गो च संयमो, जा.* अद्भ. 7.142; — मं द्वि. वि., ए. व. — *मुसावादं पुरक्खत्वा, इच्छालोभञ्च पापकं, जा.* अद्भ. 5.370.

**इच्छालोभसमापन्न त्रि.** तत्पु. स., इच्छा और लोभ से ग्रस्त — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — *इच्छालोभसमापन्नो, समणो किं भविस्सति*, ध. प. 264.

**इच्छालोभसमुस्सय त्रि.** ब. स., इच्छा और लोभ से उदित होने वाला — या स्त्री., प्र. वि., ब. व. — *अविज्जामूलिका सब्बा इच्छालोभसमुस्सया, इतिवु*, 26.

**इच्छावचर पु.** इच्छा के साथ किए गए सांसारिक क्रिया-कलाप, सकाम कार्य-कलाप, इच्छावशात् प्रवृत्ति — रा प्र. वि., ब. व. — *यस्स कस्सवि आवुसो, भिक्खुनो इमे पापका अकुसला इच्छावचरा पहीना दिस्सन्ति चेव सूयन्ति च ...*, म. नि. 1.38; — *रानं ष. वि., ब. व. — पापकानं खो एतं, अकुसलानं इच्छावचरानं अधिवचनं*, म. नि. 1.33; *तत्थ इच्छावचरानन्ति इच्छाय अवचरानं, इच्छावसेन ओतिण्णानं पवत्तानं*, म. नि. अद्भ. (मू.प.) 1(1).153.

**इच्छावचरपटिसंहरणलक्षण त्रि.** ब. स., इच्छापूर्ण व्यवहार के निराकरण के लक्षण या वैशिष्ट्य से युक्त, वह, जिसका लक्षण इच्छा से भरे हुए व्यवहार का अन्त है — णो पु., प्र. वि., ए. व. — *इच्छावचरपटिसंहरणलक्षणी अलोभो, नेत्ति*, 25.

**इच्छावतिण्ण त्रि.** तत्पु. स. [इच्छावतीर्ण], इच्छाओं से अभिभूत, इच्छाओं से पीड़ित — ण्णानं पु., ष. वि., ब. व. — *तेसं इच्छावतिण्णानं, भिच्चो तण्हा पक्कथ, सु.* नि. 308.

**इच्छावसिक त्रि.** इच्छा के वश में रहने वाला, इच्छा का दास — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — *परिकट्ठीतीति इच्छावसिकं पुग्गलं तत्थ तत्थ उपकट्ठीति*, स. नि. टी. 1.123.

**इच्छाविघात पु.** तत्पु. स. [इच्छाविघात], इच्छा का विघात, तृष्णा का विनाश, इच्छा का भंग — तं द्वि. वि., ए. व. — *विहरन्ते अतनो धीतासु आगत्त्वा इच्छाविघातं पत्वा गतासु* उदा. अद्भ. 266; — *दुक्खं नपुं., कर्म. स., इच्छाओं के पूरा न होने के कारण उत्पन्न दुख, इच्छा-भंग से उत्पन्न दुख — क्खं प्र. वि., ए. व. — मनोरथविघातपत्तानं इच्छाविघातदुक्खं इच्छितालोभोति ...*, विसुद्धि. 2.135.

**इच्छाविघातनिब्वत्तनक त्रि.** इच्छा को पूर्ण न होने देने वाला, इच्छा की पूर्ति में बाधा खड़ी करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — *विघातपक्खिकाति दुक्खभागिया, इच्छाविघातनिब्वत्तनका, इतिवु*, अद्भ. 235.

**इच्छाविनय पु.** तत्पु. स. [इच्छाविनय], इच्छा का अपनयन, इच्छा का दूरीकरण या निष्कासन, इच्छा का नाश, सात निदेसवत्थुओं में तृतीय — याय तृ. वि., ए. व. — *इच्छाय बज्झती लोको, इच्छाविनयाय मुच्चाति*, स. नि. 1(1).47; — *स्स ष. वि., ए. व. — भिक्खु पापिच्छो होति, इच्छाविनयस्स न वण्णवादी*, अ. नि. 3(2).140; — *ये सत्त. वि., ए. व. — इच्छाविनये तिब्वच्छन्दो होति, आयतिञ्च इच्छाविनये अवियतपेमो, दी. नि. 3.199; अ. नि. 2(2).166.*

**इच्छाविपरिचाय पु.** तत्पु. स. [इच्छाविपर्याय], इच्छापूर्ति का वैपरीत्य, इच्छा पूरी होने में उत्पन्न व्यतिक्रम — ये

## इच्छाविरहित

292

## इच्छिततथ

सप्त. वि., ए. व. — इच्छाविपरियाये आघातवत्थूसु कोधो च उपनाहो च उप्पज्जतीति इदमपि समत्थनं होति, नेत्ति. अहु. 214.

इच्छाविरहित त्रि., तत्पु. स. [इच्छाविरहित], इच्छा या तृष्णा से मुक्त, इच्छा से रहित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — अपिच्छोति इच्छाविरहितो निच्छो नित्तण्हो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).43.

इच्छाविसटगामिनी स्त्री., विस्तृत होकर या बहुत फैलकर चलने वाली इच्छा, व्यापक प्रसार वाली तृष्णा, प्र. वि., ए. व. — उपरिविसाला दुप्पूरा इच्छा विसटगामिनी, जा. अहु. 3.180; जा. अहु. 4.4; रूपादीसु आरम्भणेषु तं तं आरम्भणं इच्छमानाय इच्छाय पथटाय विसटगामिनी, जा. अहु. 3.180.

इच्छाविसिद्ध त्रि., तत्पु. स. [इच्छाविशिष्ट], इच्छा की विशिष्टता से युक्त — डो पु., प्र. वि., ए. व. — इच्छन्ति एतं अपेक्खति, तदापि अलाभविसिद्धा इच्छा वुत्ता होति, यदा, 'न लभती'ति एतं अपेक्खति, तदा इच्छाविसिद्धो अलाभो वुत्तो होति, विभ. मू. टी. 67.

इच्छासमाव त्रि., व. स., तृष्णालु, इच्छाओं से भरे स्वभाव वाला — वा स्त्री., प्र. वि., व. व. — ता पन यस्मा तप्पहादिद्विकप्पनापरिकप्पितअत्तसुखसस्सतादिप—कत्तिआदि—धुवादिजीवादिकायादिका विय न इच्छासमावा, अ. नि. टी. 2.132.

इच्छासहित त्रि., तत्पु. स., इच्छा से युक्त, इच्छा से मिश्रित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — इच्छावाति एत्थ इच्छासहितो अलाभोवाति च वदन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.190.

इच्छासुत्त नपुं., स. नि. के देवतासंयुक्त के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).47.

इच्छाहत त्रि., तत्पु. स. [इच्छाहत], इच्छा से प्रभावित या अभिमूत — स्स पु., ष. वि., ए. व. — इच्छाहतस्स पोसस्स, चक्कं भमति मत्थके'ति, जा. अहु. 1.396; म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).340.

इच्छाहेतुक त्रि., व. स. [इच्छाहेतुक], इच्छा से उत्पन्न — का पु., प्र. वि., व. व. — इच्छाहेतुका इच्छापच्चया इच्छाकारणा इच्छापमवा'ति इच्छानिदाना, महानि. 22.

इच्छित/इष्ट त्रि., इच्छ का भू. क. कृ. [ईप्सित], चाहा हुआ, अभीष्ट, अभीप्सित, इष्ट — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — यं वत नो अहोसि इच्छितं, यं आकङ्क्षितं, यं अधिप्पेतं, यं अभिपत्थितं, दी. नि. 1.105; दी. नि. 2.173; इच्छितं

पत्थितं तुय्मं, खिप्पमेव समिज्झतु, ध. प. अहु. 1.115; — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — मनसा इच्छितं लभन्तीति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.229; एतं मम कामं मया इच्छितं मम वचनं करस्सु, जा. अहु. 5.336; — तो पु., प्र. वि., ए. व. — अपि चेत्थ द्विधा चापि सङ्केपा सन्धि इच्छितो, सद्. 3.610; अम्हाकं पन मते 'गुण आमन्तणे'ति धातुवसेन निष्फन्तता गोसदस्स गोणादेसो न इच्छितो, सद्. 3.645; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — एवं आपसदस्स एकन्तेन इत्थिलिङ्गता बहुवचनता च आचरियोहि इच्छिता, सद्. 1.107; स. उ. प. के रूप में, अनि., अभि., मनो., यथि. के अन्त. द्रष्ट.; — कम्म नपुं., कर्म. स. [इच्छितकर्म], ईप्सित कर्म, अभीष्ट कर्म, चाहा हुआ कर्म — म्मं प्र. वि., ए. व. — इच्छितकम्मं नाम, सद्. 3.692; इच्छितकम्मं, नेविच्छितनानिच्छितकम्मं, सद्. 3.692; विलो., अनिच्छितकम्मं नाम, सद्. 3.692; — कारी पु., प्र. वि., ए. व., अभीष्ट कर्म को करने वाला — लद्धयसधनभोगो आदेय्यवचनो बलविच्छितकारी, मि. प. 119; — काल पु., [—काल], अभीष्ट समय, इष्टकाल — ले सप्त. वि., ए. व. — इच्छितकाले गण्हिस्सामीति, ध. प. अहु. 2.42; — दान नपुं., अभीष्ट स्थान — नं द्वि. वि., ए. व. — मनुस्सा उदकसदेन वुड्ढाय ... गोणेपि पायेत्वा सोत्थिना इच्छितद्वानं अगमंस्सु, स. नि. अहु. 1.185; न संक्का तं पटिपज्जित्वा इच्छितद्वानं गन्तुं, स. नि. अहु. 3.103; — पट्टन नपुं., वह पत्तन या बन्दरगाह जहाँ पहुंचना अभिप्रेत हो, अभीप्सित बन्दरगाह — नं द्वि. वि., ए. व. — तज्ज नावं अत्तनो इद्धानुभावेन तेहि इच्छितपट्टनं तं दिवसमेव उपनेसि, पे. व. अहु. 46; — पति पु., [पति], परमप्रिय पति, प्रियतम — तं द्वि. वि., ए. व. — यो मे इच्छितं पतिं वराकिया, जा. अहु. 4.254; वन्दे ते अयिरब्रह्मं, यो मे इच्छितं पतिं वराकिया, अमतेन अभिसिञ्चि, जा. अहु. 4.257; — मग्ग पु., कर्म. स. [इच्छितमार्ग], अभीष्ट पथ, चाहा गया रास्ता, मनपसन्द रास्ता — र्गं द्वि. वि., ए. व. — यदि अत्तना इच्छितमग्गंयेव गन्तुकामत्थाति अधिप्पायो, उदा. अहु. 344; — ताकार पु., कर्म. स. [इच्छिताकार], मनपसन्द संकेत या इशारा — रं द्वि. वि., ए. व. — कोकालिकस्स इच्छिताकारं दस्सेत्वा ..., पारा. अहु. 2.173; पाठा. इङ्गिताकारं.

इच्छिततथ पु., कर्म. स. [इच्छितार्थ], अभीप्सित तात्पर्य, चाहा गया प्रयोजन — त्थो प्र. वि., ए. व. — अपदिसीयति वा इच्छिततथो अनेनाति अपदेसो, दी. नि. अणि. टी. 1.303.

## इच्छिततत्त्वकसावन

293

## इच्छितविहार

इच्छिततत्त्वकसावन नपुं, तत्पु. स. [इच्छितार्थ को सुनाया जाना — नं प्र. वि., ए. व. — अपरे पन भणन्ति तिरच्छानगतं मनुस्सं वा आविसित्वा, इच्छिततत्त्वकसावनं नाम महामन्तविज्जावसेनं होति, म. नि. टी. (उप.प.) 3.156.

इच्छिततत्त्वनिष्पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [इच्छितार्थनिष्पत्ति], चाहे गए प्रयोजन या अभिप्राय की पूर्णता, इच्छित वस्तु की प्राप्ति या कार्यान्वयन, प्र. वि., ए. व. — अनुत्रासी याव इच्छिततत्त्वनिष्पत्ति, चरिया. अट्ट. 260; — कारणता स्त्री., भाव., इच्छितार्थ के कार्यान्वयन में कारणभूत होना, प्र. वि., ए. व. — रज्जो इच्छिततत्त्वनिष्पत्तिकारणताति एवमादीहि दिब्बसदिसेहि आनुभावोहि समभ्रागतत्ता, दी. नि. टी. (लीन.) 2.176.

इच्छिततत्त्वनिष्पत्ति नपुं, तत्पु. स. [इच्छितार्थनिवर्तन], इच्छित वस्तु या इच्छित अभिप्राय की निष्पत्ति अथवा कार्यान्वयन, स. प. के रूप में, — इच्छिततत्त्वनिष्पत्तिनत्थं अपदिसित्त्वा अपदिसीयति वा इच्छितत्त्वो अनेनाति अपदेसो, दी. नि. अभि. टी. 1.303.

इच्छिततत्त्वविसेस पु., कर्म. स. [इच्छितार्थ का विशिष्ट-स्वरूप, विशिष्ट प्रकार का इच्छितार्थ — तो प. वि., ए. व. — अत्थसामञ्जसो संवण्णत्वा इच्छिततत्त्वविसेसतोपि संवण्णेतुं यं वा ति आदिमाह, दी. नि. अभि. टी. 1.303. इच्छिततत्त्वसहित त्रि., तत्पु. स. [इच्छितार्थसहित], अभीप्सितार्थ से युक्त — तं नपुं, प्र. वि., ए. व. — ननु सब्बेसमिप वचनं अतना इच्छिततत्त्वसहितयेव, दी. नि. अभि. टी. 1.303.

इच्छितत्त्वपदेस पु., कर्म. स. [इच्छितप्रदेश], मनोवाञ्छित क्षेत्र, मनचाहा प्रदेश — सं द्वि. वि., ए. व. — इच्छितत्त्वपदेसं अपापुणन्तो अन्तरामग्गेयैव सीहव्यग्धादीहि अनयव्यसनं पापुणाति, खु. पा. अट्ट. 54.

इच्छितत्त्व त्रि., √इच्छ का सं. कृ. [इच्छितव्य], चाहे जाने योग्य, इच्छा किए जाने योग्य, वाञ्छनीय — ब्बो पु., प्र. वि., ए. व. — न तत्थ अज्जो कोयि ततियो इच्छितत्त्वो, मि. प. 102; तेन हि निब्बानस्स उप्पादायपि हेतु इच्छितत्त्वो, मि. प. 250; यदि निब्बानं अत्थि, तस्स निब्बानस्स उद्धानोकासोपि इच्छितत्त्वो, मि. प. 297; तेन कारणेन पितुनोपि पिता इच्छितत्त्वो, मि. प. 250; आचरियस्सपि आचरियो इच्छितत्त्वो, मि. प. 250-51; — ब्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अम्म, रज्जो पच्छिमासने रक्खा नाम

इच्छितत्त्वाति, जा. अट्ट. 5.278; दिङ्गिपि इच्छितत्त्वा, महानि. 138; आतुरस्स सप्पायकिरिया इच्छितत्त्वा होति, मि. प. 203; — ब्बं नपुं, प्र. वि., ए. व. — सवनमिपि इच्छितत्त्वं ..., ज्ञाणमिपि इच्छितत्त्वं ..., सीलमिपि इच्छितत्त्वं, महानि. 138; — ब्बे नपुं, सप्त. वि., ए. व. — इच्छितत्त्वो अ, इच्छितत्त्वत्थे अपच्चयो होति, सट्. 3.791; — ब्बानि नपुं, प्र. वि., ब. व. — सत्त सप्पायानि इच्छितत्त्वानि, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.119; आलपनेकवचनानि अवस्स मिच्छितत्त्वानि, सट्. 1.147; — ब्बानं ष. वि., ब. व. — बह्वक्षरेसु इच्छितत्त्वानं अक्खरानं गहणं होति, सट्. 3.876; — त्थ पु., तत्पु. स. [इच्छितव्यार्थ], वाञ्छनीय होने का अर्थ — त्थे सप्त. वि., ए. व. — इच्छितत्त्वत्थे अपच्चयो होति, सट्. 3.791; — क त्रि., इष्ट, अभीष्ट, वाञ्छनीय — को पु., प्र. वि., ए. व. — एवं भवे विज्जमाने, विभवोपि इच्छितत्त्वको, बु. वं. 2.10; — कं नपुं, प्र. वि., ए. व. — एवं तिविधगि विज्जन्ते, निब्बानं इच्छितत्त्वकं, बु. वं. 2.11; — के पु., सप्त. वि., ए. व. — आगन्तुकानमुत्सुक्कं अकासि इच्छितत्त्वके, महाव. 452; — तर त्रि., तुल. विशेष, दूसरे की तुलना में अत्यधिक प्रशंसनीय, अतिशय संस्तुत्य — रं नपुं, प्र. वि., ए. व. — इच्छितत्त्वतरं यस्मा, धम्मसेनापतीरितं, सट्. 1.253.

इच्छितभण्डगगहण नपुं, तत्पु. स. [इच्छितभाण्डग्रहण], मनचाहे माल-असबाब को छीन लेना, अभीप्सित सामग्री को ग्रहण कर लेना — णं प्र. वि., ए. व. — गेहं पविसित्वा मनुस्सानं उरे सत्थं ठपेत्वा इच्छितभण्डगगहणं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).112.

इच्छितलाम पु., तत्पु. स. [इच्छितलाभ], मनचाही वस्तु को पा लेना, इच्छित पदार्थ या व्यक्ति की प्राप्ति, स. प. के रूप में — असन्नुद्धानं इच्छितलाभादिना यो विघातो वितस्स होति, सो तत्थ सन्नुद्दस्स न होतीति, इतिबु. अट्ट. 284.

इच्छितवत्थु नपुं, कर्म. स. [इच्छितवस्तु], मनचाही वस्तु, वाञ्छित वस्तु — स्स ष. वि., ए. व. — इच्छितवत्थुस्स समीपे कथनं सामन्तजप्पा, विसुद्धि. महाटी. 1.51.

इच्छितविहार पु., कर्म. स. [इच्छितविहार], अभीप्सित विहार, मन की इच्छित स्थिति, अभीप्सित मानसिक स्थिति — रेन तृ. वि., ए. व. — पटिकूलादीसु वत्थूसु इच्छितविहारेन विहरितुं समत्थता अरियानं एव, स. नि. टी. 2(2).152.



## इच्छिताकारकुसलता

294

## इज्जति

इच्छिताकारकुसलता स्त्री., भाव., मनचाहे आकार को निर्मित कर लेने की कुशलता — य तृ. वि., ए. व. — ततो पन भगवतो गन्धकुटिया कवाटं सुबद्धं पस्सित्वा इच्छिताकारकुसलताय इद्धिया गन्त्वा कुटिं पविसित्वा आरोचेसि, वजिर. टी. 434.

इच्छितारम्मण नपुं., कर्म. स. [इच्छितालम्बन], मनोवाञ्छित आलम्बन — णे सप्त. वि., ए. व. — यत्थकामनिपातितोति यत्थ कत्थचि इच्छितारम्मणे निपातिभावतो, विसुद्धि. महाटी. 2.172.

इच्छितालाम पु., तत्पु. स. [इच्छितालाम], जिसके पाने की इच्छा की गई है उसकी अप्राप्ति — भो प्र. वि., ए. व. — इच्छितालामो नाम यस्स कस्सचि अत्तना इच्छितस्स वत्थुनो अलामो, 'यम्पिच्छं न लभती'ति हि वृत्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.190; — मं द्वि. वि., ए. व. — मत्थकप्पत्तं पन इच्छितालामं दस्सेतुं पाळियं, 'जातिधम्मानं सत्तान'न्तिआदिना निदिडन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.190.

इच्छितालामदुक्ख नपुं., तत्पु. स., चाही गई वस्तु अथवा व्यक्ति के न मिल पाने के कारण उत्पन्न दुख — क्खं प्र. वि., ए. व. — अमोहेन इच्छितालामदुक्खं न होति, ध. स. अट्ट. 172.

इच्छितालामहेतु अ., क्रि. वि., मनचाही वस्तु का लाभ न होने का कारण — तस्मा कामयोगादिवरोन इच्छितालामहेतु सत्ता विहज्जन्ति, उदा. अट्ट. 128.

इच्छितिच्छित त्रि., चाही गई कोई भी स्थिति या वस्तु, इच्छा का विषयीभूत कोई भी व्यक्ति, कोई भी इच्छित अथवा वाञ्छित व्यक्ति, चाही गई कोई भी चीज, जो चाहे सो वस्तु या स्थिति — तं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — ... अहं इच्छितिच्छितं समापत्तिं समापज्जितुं, लभामी'ति, स. नि. अट्ट. 1.106; यथा इच्छितिच्छितं दिसं पक्केत्तो धावति, स. नि. अट्ट. 3.167-168; — तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — न सक्का होति इच्छितिच्छितं बुद्धवचनं वा गण्हितुं, स. नि. अट्ट. 1.38; ... इच्छितिच्छितं भुज्जति, ध. स. अट्ट. 156; — खण पु., इच्छित क्षण, मनचाहा समय — णे सप्त. वि., ए. व. — इच्छितिच्छितक्खणे समापत्तिं वा समापज्जितुं ..., स. नि. अट्ट. 1.38; न मयं राजपुत्तं, इच्छितिच्छितक्खणे सत्थारं दट्ठं लभामाप्ति, अ. नि. अट्ट. 1.220; स. नि. अट्ट. 2.80; — डान नपुं., [—स्थान], अभीष्ट या वाञ्छित स्थान — नं द्वि. वि., ए. व. — इच्छितिच्छितडानं सत्थारं गहेत्वा गन्तुं सक्कोति, स.

नि. अट्ट. 2.158; — ने सप्त. वि., ए. व. — मातङ्गनागो इच्छितिच्छितडाने सुखं वरति, ध. प. अट्ट. 2.298; — दायक त्रि., अभीष्ट वस्तु को देने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — कामददोति इच्छितिच्छितदायको, पे. व. अट्ट. 99; — रूप नपुं., इच्छित रूप या आकार — पं द्वि. वि., ए. व. — मयं मनापकायिका नाम मनसा इच्छितिच्छितरूपं मापेमा ति, स. नि. अट्ट. 1.258; — लामी त्रि., [—लाभिन्], अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करने वाला — भी पु., प्र. वि., ए. व. — न निकामलामीतिआदीसु न इच्छितिच्छितलामी, अ. नि. अट्ट. 3.40.

इच्छितिच्छितधम्मभावना स्त्री., तत्पु. स., पुनः पुनः इच्छा किए गए धर्मों की भावना, प्र. वि., ए. व. — विपस्सनाकाले इच्छितिच्छितधम्मभावना नत्थि, सारत्थ. टी. 3.207.

इच्छितिच्छितधारा स्त्री., पुनः पुनः इच्छित वस्तुओं की धारा — य ष. वि., ए. व. — सिङ्गाटकं विय इच्छितिच्छितधाराय पतिट्ठाति, विभ. अट्ट. 321.

इच्छितिच्छितप्पकार त्रि., ब. स., मनचाहे प्रकार या आकार वाला — रा पु., प्र. वि., ब. व. — अधिद्वानचित्तेन सद्धिं इच्छितिच्छितप्पकारायेव होन्तीति, विसुद्धि. 2.17.

इज्जन नपुं., क्रि. ना. √इज्ज से व्यु. [एज्जन, बौ. सं. इज्ज्जन], प्रकम्पन, गति, चाल — इज्जनं एजा, सट्ट. 3.862.

इज्जति / इज्जते √यज का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [इज्यते], पूजित अथवा सम्मानित होता है, सत्कृत होता है — देवमनुस्सेहि भगवा यजीयति, इज्जति, सट्ट. 2.348; इज्जते मया बुद्धो, क. व्या. 505; तुल. यजीयति.

इज्जा स्त्री., 1. √इज्ज (गत्यर्थक) से व्यु. [एजा], उपरिवत् — इज्जनं एजा, सट्ट. 3.862; 2. √यज से व्यु., [इज्या], यज्ञ, उपहार, दान, यज्ञकर्म, प्र. वि., ए. व. — इज्जा यज्जनं, रू. सि. 292(सिंहली).

इज्जति √इध का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ऋध्यति], संपन्न या समृद्ध होता है, फलता-फूलता है, बढ़ता है, सफल होता है, विकसित होता है, सन्तुष्ट अथवा तृप्त कर देता है — 'कथञ्चि यजमानस्स कथं इज्जति दक्खिणा'ति, स. नि. 1(1).204; इज्जतीति समिज्जति महफलो होति, स. नि. अट्ट. 1.228; इज्जतीति इद्धि, समिज्जति निष्फज्जतीति अत्थो, उदा. अट्ट. 248; — न्ति ब. व. — पूजेथ अन्नपानेन, एवं इज्जन्ति दक्खिणा, सु. नि. 489; पयोजयन्ति कम्मणि, तानि इज्जन्ति वा न वा, जा. अट्ट. 6.44; इज्जन्ति वा एताय सत्ता इद्धा बुद्धा उक्कंसगता होन्तीति इद्धि, उदा.

## इज्जते

295

## इज्जनपज्जनकिरियाकरण

अहु. 248; — तु अनु. प्र. पु. ए. व. — सो ते इज्जन्तु सङ्खप्पो, लभस्सु विपुलं सुखं अप. 2.47; — न्तु ब. व. — ते ते इज्जन्तु सङ्खप्पा, लभ चक्खूनि ब्राह्मण, जा. अहु. 4.362; — स्सति भवि. प्र. पु. ए. व. — महन्तं कुलपुत्तस्स चित्तं, इज्जिस्सति नु खो, नोति, स. नि. अहु. 2.81; — ज्जे विधि. प्र. पु. ए. व. — अद्वा हि तस्स हुतमिज्जे, सु. नि. 463; — जिज्ज अच. प्र. पु. ए. व. — आसिंसना इज्जि यथा हि मय्हं, जि. घ. 217; — जिज्जं सु. ब. व. — ते मे इज्जिंस्सु सङ्खप्पा, यदत्थो पाविसिं कूटिं, थेरगा. 60; ... ते सब्बेव इदानि मय्हं इज्जिंस्सु समिज्जिंस्सु निष्फन्नकुसलसङ्खप्पो परिपुण्णमनोरथो जातोति अत्थो, थेरगा. अहु. 1.148.

**इज्जते** इध का वर्त. प्र. पु. ए. व. आत्मने. उपरिवत् — यत्थ हुतं इज्जते ब्रूहि मे तं, सु. नि. 465.

**इज्जन** नपुं. क्रि. ना. इध से व्यु., फलदायी होना, वृद्धि या विकास करना, समुन्नति, समृद्धि — नं प्र. वि. ए. व. — इज्जनं, समिज्जनं, इद्धो, सह. 2.484; — नद्ध पु. तत्पु. स., समृद्धि अथवा प्रतिलाम का अर्थ, विकास का अर्थ, सफल सम्पादन अथवा सफल कार्यान्वयन का आशय — द्दो प्र. वि. ए. व. — इद्धिपादानं इज्जनद्धो अभिज्जेय्यो, पटि. म. 16; वीरियस्स इज्जनद्धो अभिज्जेय्यो, पटि. म. 17; इज्जनद्धोति निष्फज्जनद्धो पटिहानद्धो वा, पटि. म. अहु. 1.85; — द्दं द्वि. वि. ए. व. — वीमंसाय इज्जनद्धं बुज्जन्तीति बोज्जङ्गा, पटि. म. 298; — ड्ढेन तू. वि. ए. व. — इज्जनद्धेन इद्धिपादा तदा समुदागता, पटि. म. 68; इज्जनद्धेन इद्धिपादं समोधानेति, पटि. म. 173; इद्धिविधे जाणन्ति इज्जनद्धेन, इद्धि, निष्फत्तिअत्थेन पटिलाभद्धेन चाति वुत्तं होति, पटि. म. अहु. 1.43; — द्वे सप्त. वि. ए. व. — अधिहानवसेन इज्जनद्धे पज्जा इद्धिविधे जाणं, पटि. म. 3; — भाव पु. तत्पु. स., सफल निष्पादन की अवस्था, सफल कार्यान्वयन अथवा सफल निष्पत्ति की दशा — वं द्वि. वि. ए. व. — तेसं पत्थनाय समिज्जनभावं जत्वा, घ. प. अहु. 2.317; पाठा. समिज्जनभावं; — सभाव पु. सफल कार्यान्वयन का स्वभाव, सफल निष्पत्ति की प्रकृति — वे सप्त. वि. ए. व. — इज्जनद्धे पज्जाति इज्जनसभावे पज्जा, पटि. म. अहु. 1.43; — ना स्त्री., इध से व्यु., क्रि. ना., समृद्धि, सफलता, पूर्णता, विकास, सफल कार्यान्वयन, प्र. वि. ए. व. — ... या तेसं धम्मानं इद्धि समिद्धि इज्जना समिज्जना लाभो पटिलाभो, विभ. 244; — नाकार पु. तत्पु. स., सफल कार्यान्वयन का ही

एक रूप अथवा एक प्रकार — सो प्र. वि. ए. व. — इज्जनाकारो इज्जना, विभ. अहु. 288.

**इज्जनइद्धि** स्त्री., कर्म. स., सफलतापूर्ण ऋद्धि, सफलता से परिपूर्ण ऋद्धि, प्र. वि. ए. व. — तत्थ अधिप्पायइद्धीति अधिप्पायइद्धि, यथाधिप्पायं इज्जनइद्धीति अत्थो, प. प. अहु. 275.

**इज्जनक** त्रि., समृद्धि, परिपूर्णता अथवा सफलता को लाने वाला, समृद्धिकारी — स्स ष. वि. ए. व. — सीलन्ति कामज्जेतं सह कम्मवाचापरियोसानेन इज्जनकस्स पातिमोक्खरस्सेव वेवचनं, सारत्थ. टी. 3.32.

**इज्जनककोट्टास** पु., कर्म. स., चित्त में वशिता आदि शक्तियों उत्पन्न करने अथवा उसे समुन्नत एवं समृद्ध बनाने वाला खण्ड या भाग (ऋद्धिपाद) — सा प्र. वि. ब. व. — इद्धिपादाति इज्जनककोट्टासा, स. नि. अहु. 1.159-160; इज्जनककोट्टासाति येतोवसिमावादिकस्स साधनककोट्टासा, स. नि. टी. 1.187.

**इज्जनकपयोग** पु., तत्पु. स., समृद्ध एवं समुन्नत बनाने हेतु व्यावहारिक प्रयोग — गो प्र. वि. ए. व. — परकारो च नाम परस्स वाहसा इज्जनकपयोगो दी. नि. अभि. टी. 2.34.

**इज्जनकरणूपायभाव** पु., समृद्ध करने का उपायभूत होना — तो प. वि. ए. व. — सक्का, पादस्स इज्जमानकोट्टास इज्जनकरणूपायभावतो, नेत्ति. टी. 49; दुतियेनत्थेन इतरसमासेनैव योजना युज्जति पादस्स इज्जनकरणूपायभावतो, विभ. अनुटी. 162.

**इज्जनकविसेस** पु., समृद्धि या समुत्थान लाने वाली विशेष प्रकार की ऋद्धि — सङ्केपेन पन परिपाकगते पुज्जसम्भारे इज्जनकविसेसो पुज्जवतो इद्धि, पटि. म. अहु. 2.276.

**इज्जनकिरिया** स्त्री., तत्पु. स., समृद्ध या समुन्नत बनाने की क्रिया — य तू. वि. ए. व. — इज्जनकिरियाय करणभूतेन अत्थेन साधेतब्बा च इद्धि पज्जितब्बाति योजना, विभ. अनुटी. 162.

**इज्जनतथ** पु., तत्पु. स., समृद्धि अथवा सम्पूर्णता का अर्थ या अभिप्राय — त्थं द्वि. वि. ए. व., क्रि. वि. — कायमि चित्ते समोदहतीतिआदि इद्धिकरणकाले यथासुखं चित्तचारस्स इज्जनतथं योगविधानं दस्सेतुं वुत्तं, पटि. म. अहु. 1.277; — त्थो प्र. वि. ए. व. — इज्जनतथो पन सब्बेसं समानन्ति, स. नि. टी. 2(3).212.

**इज्जनपज्जनकिरियाकरण** नपुं., तत्पु. स., इज्जन (समृद्ध करना) एवं 'पज्जन' (प्राप्त करना), इन दोनों क्रियाओं का

## इज्जनलक्खण

296

## इज्जयति

करण — नं ष. वि. ब. व. — द्वित्रं करणानानि इज्जनपज्जन-  
किरियाकरणानं इद्धिपादत्थानं विभ. अनुटी. 162.

इज्जनलक्खण नपुं. समृद्धि अथवा समुन्नति का लक्षण —  
णं प्र. वि. ए. व. — इद्धिपादानं इज्जनलक्खणं, दी. नि. अट्ट. 1.60.

इज्जन्त त्रि., √इज्ज का वर्त. कृ., समृद्धि या वृद्धि को प्राप्त  
कर रहा — तं द्वि. वि. ए. व. — इज्जन्तञ्च सहेव  
इज्जाति, म. नि. टी. (मू.प.) 1(1).209.

इज्जमान त्रि., √इध का वर्त. कृ., वृद्धि अथवा समृद्धि को  
प्राप्त हो रहा, बढ़ रहा, विकसित हो रहा, फल-फूल रहा  
— ने पु., सप्त. वि. ए. व. — सम्पयुत्तधम्मसु हि एकस्मिं  
इज्जमाने सेसापि इज्जन्तियेव, स. नि. अट्ट. 3.285.

इज्जमानकोट्टास पु., कर्म. स., वृद्धि को प्राप्त कर रहा  
भाग या खण्ड, स. प. के अन्तः. — पादस्स  
इज्जमानकोट्टासइज्जनकरणूपायभावतो, विसुद्धि. महाटी.  
2.17; सकका पादस्स इज्जमानकोट्टास-  
इज्जनकरणूपायभावतो, नेत्ति. टी. 49.

इज्जमानविसेस पु., कर्म. स., विशेष प्रकार का समृद्धिलाभी,  
समृद्धि प्राप्त करने वाले का विशिष्ट स्वरूप — इमाय  
इद्धिया इज्जमानविसेसं दस्सेन्तो सन्तिकेपीति आदिमाह,  
पटि. म. अट्ट. 2.251.

इज्जितबबभावना स्त्री., कर्म. स., संवर्धित करने योग्य  
भावना, सुदृढ़ किए जाने योग्य भावना — य तृ. वि. ए.  
व. — समीपे वल्लिआदीनं हरणं विय कम्मट्ठाने  
खलनपक्खलनच्छेदनं इज्जितबबभावनाय विबन्धापनयनतो,  
म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).249.

इज्ज त्रि., √इज्ज से व्यु., अनियमित स्वरूप का विशेष,  
कम्पनयुक्त, स्थलनशील, अधुव, अस्थिर — ज्जं पु., द्वि.  
वि. ए. व. — न इज्जं अनेज्जं, अनेज्जं भवं अभिसङ्खरोतीति  
आनेज्जाभिसङ्खारो, पटि. म. अट्ट. 2.222.

इज्जति √इज्ज (गति या कांपना, हिलना-डुलना) का वर्त.,  
प्र. पु. ए. व. [वैदिक, ऋज्जते, बौ. सं. इज्जते/इज्जति],  
शा. अ., हिलता है, कांपता है, प्रकम्पित होता है, चलता  
है — वातेन न समीरति न इज्जति न चलति, ध. प. अट्ट.  
1.330-31; गच्छतो खो पन तस्स भोतो गौतमस्स  
अधरकायोव इज्जति, न च कायवलेन गच्छति, म. नि.  
2.346; ला. अ., (व्यक्ति, शरीर या मन) हिल-डुल जाता  
है, उद्धिग्न हो जाता है, अस्त-व्यस्त हो जाता है, उद्धिग्न  
या बेचैन हो जाता है, बाधित हो जाता है — सद्धापपरिगहितज्झि

चित्तं अस्सद्धियेन न इज्जति, पारा. अट्ट. 1.117; अनेणत्तं  
चित्तं कोसज्जे न इज्जतीति आनेज्जं, उदा. अट्ट. 150; सो  
लाभेपि न इज्जति, अलाभेपि न इज्जति ... न चलति न  
वेधति नप्यवेधति न सम्पवेधतीति, महानि. 260; — न्ति ब.  
व. — न इज्जन्तीति एसिकत्थम्मो विय ठितत्ता न चलन्ति,  
स. नि. अट्ट. 2.302; ... यस्मा इमेहि किलेरोहि सत्ता  
इज्जन्ति चेव फन्दन्ति च पपञ्चिता च होन्ति पमत्ताकारपत्ता  
..., स. नि. अट्ट. 3.111.

इज्जन नपुं., √इज्ज से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं., इज्जन],  
गति, चाल, हिलना-डुलना, प्रकम्पन, स्पन्दन — नं प्र.  
वि. ए. व. — इज्जितस्मिं वदामीति इज्जनं चलनं फन्दनन्ति  
वदामि, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.122; — नानं ष. वि. ब.  
व. — सब्बेसं इज्जनानं अभावतो वसीभावपत्तियाव ठितं  
..., उदा. अट्ट. 200; स. उ. प. के रूप में किलेसि. के  
अन्तः, द्रष्टः.

इज्जनक त्रि., स्पन्दनशील, चलनशील, चञ्चल स्वभाव का  
— का पु., प्र. वि. ब. व. — इज्जिताति इज्जनका  
चलनका, तथा फन्दिता, सारत्थ. टी. 2.189; — स्स ष.  
वि. ए. व. — रूपतण्हासङ्गातरस्स इज्जनकस्स कारणत्ता  
वा, विभ. मू. टी. 94.

इज्जनकरनीवरण नपुं., कर्म. स., स्पन्दन एवं विक्षोभ  
उत्पन्न करने वाला नीवरण, स. प. के अन्तः. — रूपमेव  
सफन्दनत्ता 'सइज्जन'न्ति वुत्तं इज्जनकरनीवरणादीनं  
अविक्खम्भन्तो, विभ. मू. टी. 94.

इज्जना स्त्री., √इज्ज से व्यु., क्रि. ना., लिङ्गव्यत्यय [बौ.  
सं., इज्जना], शरीर की गति या चाल-ढाल, मन की  
चञ्चलता, शारीरिक चेष्टा, प्र. वि. ए. व. — समिज्जेति  
पसारति, एसा कायस्स इज्जना, सु. नि. 195; एसा कायस्स  
इज्जनाति सब्बापेसा इमस्सेव सविज्जाणकस्स कायस्स  
इज्जना चलना फन्दना, सु. नि. अट्ट. 1.207; या कायस्स  
आनमना विनमना सन्नमना षणमना इज्जना फन्दना चलना  
पकम्पना ..., पटि. म. 177.

इज्जमान त्रि., √इज्ज का वर्त. कृ., केवल निषेधार्थक रूप  
में ही प्राप्त, अनिज्ज-स्थिर, नहीं हिल-डुल रहा — नेन  
तृ. वि. ए. व. — अनिज्जमानेन ठितेन वग्गुना, स. नि.  
1(1).210; — नो पु., प्र. वि. ए. व. — अनिज्जमानो  
कायेन, अभासमानो वाचं, म. नि. 1.131.

इज्जयति √इज्ज के प्रेर. का वर्त., प्र. पु. ए. व., गतिशील  
कराता है, चलाता है, हिला देता है — युं अद्य, प्र. पु.,

## इञ्जित

297

इङ्

ब. व. — नेसं लोमापि इञ्जयुन्ति तेषां वीतरागानं लोमानिपि न चालयिषु, दी. नि. अङ्. 2.257.

**इञ्जित** 1. त्रि., इञ्ज का भू. क. कृ. [बौ. सं. इञ्जित], हिल डुल रहा, अस्थिर, कांप रहा, स्पन्दित, फड़क रहा — तो पु., प्र. वि., ए. व. — इञ्जितोति कम्पितो, पटि. म. अङ्. 2.68; — ता पु., प्र. वि., ब. व. — कायोपि चित्तमि सारद्धा च होन्ति इञ्जिता च फन्दिता च, पटि. म. 160; ततो मन्दतरेन इञ्जिता कम्पिता, पटि. म. अङ्. 2.68; 2. क. नपु., गति, मन का विक्षोभ, मन का स्पन्दन, संवेग, व्याकुलता — तं प्र. वि., ए. व. — इञ्जितन्ति चलितं, अ. नि. अङ्. 2.295; नत्थि बुद्धानमिञ्जितं, ध. प. 255; 2. ख. राग, दोस, मोह, मान, दिट्ठि, किलेस एवं दुच्चरित नामक सात अकुशल चित्तवृत्तियां, जो मन में विक्षोभ अथवा व्याकुलता उत्पन्न करती हैं — तानि/ता प्र. वि., ब. व. — इञ्जितन्ति रागिञ्जितं दोसमोहमानदिट्ठिकिलेसदुच्चरितिञ्जितन्ति इमानि सत्त इञ्जितानि चलितानि फन्दितानि, अ. नि. अङ्. 2.102; 2. ग. कहीं-कहीं चित्त की नौ प्रकार की व्यग्रताएं भी नौ इञ्जितों के नाम से परिगणित — तत्थ कतमानि नव इञ्जितानि ? 'अस्मी'ति इञ्जितमेतं, 'अहमस्मी'ति इञ्जितमेतं, 'अयमहमस्मी'ति इञ्जितमेतं 'भविस्स'न्ति इञ्जितमेतं, 'रूपी भविस्स'न्ति इञ्जितमेतं, 'अरूपी भविस्स'न्ति इञ्जितमेतं, 'सञ्जी भविस्स'न्ति इञ्जितमेतं, 'असञ्जी भविस्स'न्ति इञ्जितमेतं 'नेवसञ्जीनासञ्जी भविस्स'न्ति, इञ्जितमेतं इमानि नव इञ्जितानि, विभ. 457-58; 2. घ. केवल कुछ ही स्थलों में तण्हा-विष्फन्दित एवं दिट्ठिविष्फन्दित का उल्लेख दो इञ्जितों के रूप में — इञ्जिताति तण्हादिट्ठिविष्फन्दितानि, सु. नि. अङ्. 2.278; — सिं सत्त. वि., ए. व. — इदं खो अहं उदायि, इञ्जितसिं वदामि, म. नि. 2.126; — तानं ष. वि., ब. व. — इञ्जितानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्मो, सु. नि. 755; — पच्चय त्रि., गति अथवा मन के विक्षोभ के कारण उत्पन्न — या प. वि., ए. व. — य किञ्चि दुक्खं सम्मोति, सब्बं इञ्जितपच्चया, सु. नि. 755; स. उ. प. के रूप में किलेस, दिट्ठि, दुच्चरिति, दोसि, मानि, मोहि, रागि. के अन्तः, द्रष्ट.

**इञ्जितकारण** नपु., तत्पु. सं., चञ्चलता का कारण, विक्षोभ का कारण — णानं पु., ष. वि., ब. व. — चित्तस्स इञ्जितकारणानं व्यापादादीनं सुप्पहीनत्ता पच्चयुपनिञ्जनाय च, थेरगा. अङ्. 2.76.

**इञ्जितत्त** नपु., इञ्जित का भाव., गतिमयता, अस्थिरता, व्यग्रता, प्रकम्पनता, बौखलाहट, स्पन्दनशीलता — तं प्र. वि., ए. व. — समाधिस्स भावितत्ता बहुलीकत्ता नेव कायस्स इञ्जितत्तं वा होति फन्दितत्तं वा, न चित्तस्स इञ्जितत्तं वा होति फन्दितत्तं वा, स. नि. 3(2).386; — तं द्वि. वि., ए. व. — पस्सथ नो तुम्हे... कायस्स इञ्जितत्तं वा फन्दितत्तं वा ति ? स. नि. 3(2).386; सत्तमे इञ्जितत्तं वा फन्दितत्तं वाति उभयेनपि चलनमेव कथितं, स. नि. अङ्. 3.295.

**इञ्जेति/इञ्जयति/इञ्जते** इञ्ज का प्रेर. प्रयोग, प्रायः इञ्जति के साथ व्यामिश्रित, प्रायः 'लोममि' के साथ ही प्रयुक्त [बौ. सं. इञ्जयति], शा. अ., कपाता है, हिलाता है, गतिशील करता है, ला. अ., बाल बांका करता है कुछ कुछ प्रभावित कर देता है — ज्जामि वर्त., उ. पु., ए. व. — लोमं न इञ्जामि न सत्तसामि, स. नि. 1(1).156; (रोएं को नहीं हिलाता हूं, नहीं डरता हूं); — ज्जे विधि., प्र. पु., ए. व. — लोमं न इञ्जे न सम्मवेधे, अप. 2.225; (रोएं को भी खडा न करें, प्रकम्पित न करें) — लोमं न इञ्जे नपि सम्मवेधे, थेरीगा. 231; — ज्जयुं अद्य., प्र. पु., ब. व. — वीतरागेहि पक्कामुं, नेसं लोमापि इञ्जयुं, दी. नि. 2.193; (वीतराग आर्यजनों से बहुत दूर के क्षेत्र से ही मार की सेनाएं भाग गईं, उनके बाल भी बांका न कर सकीं) — नेसं लोमापि इञ्जयुन्ति तेषां वीतरागानं लोमानिपि न चालयिषु, दी. नि. अङ्. 2.257.

**इट्ठिय/इड्डिय/इत्तिय/इद्धिय** पु., व्य. सं., महिन्द के साथ श्रीलङ्का-द्वीप जाने वाले अनेक भिक्षुओं में से एक, प्रायः उत्तिय, सम्बल एवं भद्रसाल के साथ उल्लिखित — यो प्र. वि., ए. व. — ततो महिन्दो इट्ठियो, उत्तियो सम्बलो तथा भद्रनामो च पण्डितो, परि. 3; — यं द्वि. वि., ए. व. — महामहिन्दत्थेरं तं थेरं इट्ठियमुत्तियं, म. वं. 12.7.

**इट्ठियत्थेर** पु., इड्डिय नामक स्थविर — रेन तृ. वि., ए. व. — इट्ठियत्थेरेन उत्तियत्थेरेन भद्रसालत्थेरेन सम्बलत्थेरेन च सद्धिं तम्बपण्णिदीपं गन्त्वा एत्थ सासनं पतिट्ठापेथाति, थू. वं. 192; पारा. अङ्. 1.46.

**इट्ठ** त्रि., रयज का भू. क. कृ. [इष्ट], पूज्य, आदरणीय, याज्ञिक अनुष्ठान द्वारा पूजित — इत् नपु., प्र. वि., ए. व. — यजस्स यस्स टि यि होन्ति कानुबन्धे त्वे, इट्ठं यिद्धं ..., मो. व्या. 5.113.

**इड्ड** 1. त्रि., इच्छ का भू. क. कृ. [इष्ट], कामना किया गया, जिसे चाहा गया, वह, जिसकी इच्छा की गई हो, मन

के लिए अनुकूल, मनोवाञ्छित, प्रिय, अनुकूल, प्यारा. 2. नपुं, अनुकूल अथवा सुखद स्थिति, आनन्द, हर्षोल्लास — इडं तु सुभगं हज्जं, दयितं वल्लभं पियं अभि. प. 697; तत्थ दुक्खन्ति न सुखं, अनाराधितचित्तताय न इडन्ति अत्थो, उदा. अड्. 201; — डो पुं, प्र. वि., ए. व. — तानञ्च खो, एतं, भिक्खवे, विज्जति यं कायसुचरितस्स इडो कन्तो मनापो विपाको निब्बत्तेय्य, अ. नि. 1(1).41; पुग्गलो पुग्गलस्स इडो होति कन्तो मनापो, अ. नि. 1(2).242; अयं पठमो धम्मो इडो कन्तो मनापो दुल्लभो लोकस्मिं, अ. नि. 1(2).76; — डं पुं, द्वि. वि., ए. व. — अभिजानामि ... इडं कन्तं मनापं विपाकं पच्चनुभूतं, अ. नि. 2(2).227; इतिवु. 12; — डा पुं, प्र. वि., ब. व. — इडा धम्मा अनिद्धा च, न पवेधेन्ति तादिनो, महाव. 257; थेरगा. 644; — डं नपुं, प्र. वि., ए. व. — ब्रह्मचरियं इडं कन्तं मनापं दुल्लभं लोकस्मिं, अ. नि. 3(2).112; इडं वत्थु दुप्पमुज्जं, महानि. 22; इडं कन्तं पियं लोके, जलजं पुष्पमुत्तमं, अप. 1.84; — डं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — यदेसमाना विचरन्ति लोके, इडञ्च कन्तञ्च बहूनमेतं, जा. अड्. 4.278; इडं वत्थु अच्चेदसङ्किनोपि कोधो जायति, महानि. 195; — डाय नपुं, च. वि., ए. व. — ... सब्बे ते धम्मा इडाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तन्ति, अ. नि. 1(1).45; — स्मा नपुं, प. वि., ए. व. — इडस्मा वत्थुस्मा दुम्मोचया, महानि. 22; — स्स नपुं, ष. वि., ए. व. — सुखरस्सेतं भिक्खवे अधिवचनं इडस्स कन्तस्स पियस्स मनापस्स यदिदं पुञ्ञानि, इतिवु. 12; — डे नपुं, सप्त. वि., ए. व. — कच्चि इडं अनिडं च, सङ्खप्पस्स वसीकता, सु. नि. 154; इडं अनिडं चाति एवरूपे आरम्भणे, सु. नि. अड्. 1.174; — डा नपुं, प्र. वि., ब. व. — चक्खुविज्जेय्या रुपा इडा कन्ता मनापा पियरुपा कामूपसंहिता रजनीया, म. नि. 1.119; — डानि नपुं, द्वि. वि., ब. व. — ... सो यथावुत्तपुग्गलो इधलोके च परलोके च इडानि न पस्सति, न विन्दति, न लभतीति अत्थो, पे. व. अड्. 102; — डेहि नपुं, तृ. वि., ब. व. — चक्खुविज्जेय्योहि रूपेहि इडोहि कन्तोहि मनापेहि पियरूपेहि ..., म. नि. 1.337; — डानं नपुं, ष. वि., ब. व. — चक्खुविज्जेय्यानं रूपानं इडानं कन्तानं मनापानं मनोरमानं ..., म. नि. 3.265; स. उ. प. के रूप में अति, अनि. के अन्त, द्रष्ट.

इडं अ., क्रि. वि. [इष्ट], स्वेच्छापूर्वक, अपनी मर्जी के अनुसार — कामं त्विडं निकामञ्च परियत्तं यथिच्छितं, अनि. प. 469.

इडककञ्चुक पुं, तत्पु. स., खपड़ों से बनाई हुई छत, ईटों की दोहरी चिनाई से बनी छत — कं द्वि. वि., ए. व. — गलम्बतित्थे थूपम्हि कारेसिडुककञ्चुकं, म. वं. 35.85.

इडककपाल पुं, तत्पु. स., ईटों से निर्मित पात्र (कड़ाही), ईटों के ऊपर रखा गया पात्र (कड़ाही), ईटों का ढेर या ईटों का ठीकरा, स. प. के अन्त, — इडककपालादीसुपि एसेव नयो, पाचि. अड्. 21.

इडककम्म नपुं, तत्पु. स. [इष्टिकाकर्म], ईट का काम, स. प. में प्रयुक्त — अचिरकारितं होतीति इडककम्मसुधाकम्मचित्तकम्मादिवसेनं सुराज्जितं देवविमानं विय अधुना निड्ढापितं, स. नि. अड्. 3.85.

इडककुट्टिक स्त्री, तत्पु. स. [इष्टिकाकुड्यक], ईटों की दीवार — कं द्वि. वि., ए. व. — एवं कतं पन दारुकुट्टिकं वा इडककुट्टिकं वा सिलाकुट्टिकं वा ..., पारा. अड्. 2.142; — काय ष. वि., ए. व. — इडककुट्टिकाय इडकाहियेव वातपाने च धूमनेतानि च करोति ..., पारा. अड्. 2.143.

इडकगोपानसिचय पुं, ईटों की कडियों या शहतीरों का ढेर, स. प. के रूप में — यथा इडकगोपानसिचयादीसु न उपरिमा इडकादयो जानन्ति, खु. पा. अड्. 38.

इडकचय/इडकाचय पुं, तत्पु. स. [इष्टिकाचय], ईटों का ठीकरा, ईटों का ढेर — यं द्वि. वि., ए. व. — तयो चये इडकाचयं, सिलाचयं दारुचयंति, चूळव. 235; — येन तृ. वि., ए. व. — को पन वादो इडकचयेन सम्पन्ने वेदिकापरिक्खिते, विन. स. अड्. 360.

इडकचयनसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [इष्टिकाप्रचयसम्पन्न], बहुत सारे ईटों वाला, ईटों के ढेर से भरा हुआ — ने पुं, सप्त. वि., ए. व. — उच्चे चड्ढमे चड्ढमतीति इडकचयनसम्पन्ने वेदिकापरिक्खिते उच्चे चड्ढमे चड्ढमति, महानि. अड्. 269.

इडकचित नपुं, ईटों की चुनाई, नीव — ताय च. वि., ए. व. — इडकचित्ताय याव मङ्गलिडुका ताव कुडा अपचिनितब्बा, पारा. अड्. 2.143.

इडकचुण्ण नपुं, तत्पु. स. [इष्टिकाचूर्ण], ईटों का चूरा या बुकनी — ण्णं द्वि. वि., ए. व. — लग्गेत्वा सीसे इडकचुण्णं ओकिरित्वा ..., जा. अड्. 3.50; — ण्णेन तृ. वि., ए. व. — यथा च वासिया एवं अज्जनिया वा ... इडकचुण्णेन .. अग्घो भरसति, पारा. अड्. 1.246; पञ्च चूळ्य गाहापेत्वा इडकचुण्णेन ओकिरापेत्वा ..., जा. अड्. 6.234.

इडकचुण्णमक्खितसीस त्रि., ब. स. [इष्टिकाचूर्णमृष्टशीर्ष], ईटों की धूल से लिपे हुए शिर वाला — सं पुं, द्वि. वि., ए. व. — इडकचुण्णमक्खितसीसं वज्झपहट्ठभेरिदेसितमग्गं

## इष्टकच्छदन / इष्टिकाछदन

299

## इष्टका / इष्टिका

रथिकाय रथिकं ... आघातनाभिमुखं नेति, पे. व. अहु.  
5.

**इष्टकच्छदन / इष्टिकाछदन** 1. त्रि. ब. स. [इष्टिकाछदन], ईट द्वारा छापी हुई छत वाला — नै पु., सप्त. वि., ए. व. — इष्टिकाछदने तस्मिं सङ्घारामे अलङ्कृते, चू. वं. 100.87; परियेसितव्वन्ति तिणच्छदने वा इष्टकच्छदने वा गेहे पलुज्जन्ते ..., स. नि. अहु. 3.144; 2. नपुं., तत्पु. स., ईटों द्वारा तैयार की गयी छत, पक्की छत, स. प. मं.; — इष्टकच्छदनसदिसञ्च खरसम्पस्सं वम्मं, सु. नि. अहु. 2.34.

**इष्टकपण्णाकार** पु., तत्पु. स., ईटों का उपहार या दान, ईटों की भेंट — रं द्वि. वि., ए. व. — पातोव आगन्त्वा अतनादिद्वं इष्टकपण्णाकारं रञ्जो निवेदेसि, थू. वं. 219(रो.).  
**इष्टकप्पमाण** नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाप्रमाण], ईटों का आकार, ईटों की लम्बाई-चौड़ाई — णं द्वि. वि., ए. व. — इष्टकप्पमाणं जानित्वा, थू. वं. 229(रो.).

**इष्टकपाकार / इष्टकापाकार** पु., तत्पु. स. [इष्टिकाप्राकार], ईटों से बनाया गया घेरा, ईटों से बना हुआ परकोटा अथवा घेराबन्दी करने वाली दीवाल — रो प्र. वि., ए. व. — सचे इष्टकपाकारो होति, पाचि. अहु. 20; — रं द्वि. वि., ए. व. — परिक्षिप्तो नाम इष्टकपाकारं आदिं कत्वा अन्तमसो कण्टकसाखाहिपि परिक्षिप्तो, पारा. अहु. 1.238; 'अनुजानामि, भिक्खवे, परिक्षिपितुं तयो पाकारे — इष्टकापाकारं, सिलापाकारं, दारुपाकारं'न्ति, चूळव. 239.

**इष्टकवड्ढकी** पु., तत्पु. स., ईटों की चिनाई करने वाला राजमिस्त्री, ईटों से घर बनाने वाला मिस्त्री, प्र. वि., ए. व. — पाकारं चिनाति ... इष्टकवड्ढकी, सद. 2.495; अथ अञ्जो पण्डितो इष्टकवड्ढकी अहं, थू. वं. 227; — किं द्वि. वि., ए. व. — पोक्खरणिं खणापेत्वा, इष्टकवड्ढकिं पक्कोसापेत्वा सयं विचारत्वा सहस्सवड्ढं सततित्थं पोक्खरणिं कारेसि, जा. अहु. 6.159; वसमेन भयासङ्की अप्पेसिष्टकवड्ढकिं, म. वं. 35, 101; — किरस्स ष. वि., ए. व. — तस्सिष्टिकावड्ढकिस्स जातको इध आगतो, म. वं. 30.30; पाठा. इष्टिकावड्ढकिस्स. — की<sup>१</sup> प्र. वि., ब. व. — अपिच पाकारं इष्टकवड्ढकी विय पवत्तं आचिनन्ता गच्छन्तीति आचयगामिनो, घ. स. अहु. 91; — की<sup>२</sup> द्वि. वि., ब. व. — सब्बे इष्टकवड्ढकी सन्निपातेसि, थू. वं. 75(रो.); — नं ष. वि., ब. व. — ... इष्टकवड्ढकीनं छदनत्थाय ..., पारा. अहु. 2.135; — गाम पु., तत्पु. स., ईटों की चिनाई का

काम करने वाले कारीगरों का गांव — मे सप्त. वि., ए. व. — इष्टकवड्ढकीगामे इत्थिलक्खणकोविदा, म. वं. 35.109.  
**इष्टकसाला** स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकाशाला], ईटों से बना हुआ मकान, ईटों से निर्मित सभागार, प्र. वि., ए. व. — वच्चकुटि इष्टकसाला वड्ढकिसाला द्वारकोट्टको पानीयमाळो मग्गो पोक्खरणीति एतानि हि असेनासनानि, चूळव. अहु. 70.

**इष्टका / इष्टिका** स्त्री., [इष्टिका], ईट, खपड़ा, सपरा — गिज्जका तु व इष्टका, अभि. प. 220; प्र. वि., ए. व. — उपरिमेन भिक्खुना दुग्गहिता इष्टका हेट्ठिमस्स भिक्खुनो मत्थके अवत्थासि, पारा. 97; एका इष्टका सोवण्णमया, एका रुपियमया एका वेळुरियमया, एका फलिकमया, दी. नि. 2.133; थूपकरणत्थं इष्टका कातुं आरभिसु, थू. वं. 199; — कं द्वि. वि., ए. व. — इमं इष्टकं एत्थ उपेथा<sup>१</sup>ति, अ. नि. अहु. 1.135; भिक्खुनो मत्थके इष्टकं मुञ्चि, पारा. 97; — य ष. वि., ए. व. — एकेन अय्येन दिन्नं इष्टका अम्हाकं इष्टकाय सदिसाति कम्मे उपनेसिन्ति आह, थू. वं. 229; — का प्र. वि., ब. व. — ... बाहिरन्ते इष्टका रत्तसुवण्णमया एकग्घना सतसहस्सग्घनिका होन्तु, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).27; — यो द्वि. वि., ब. व. — ... चिक्खल्लं मदित्वा इष्टकायो चिन्तिता कुट्टं उट्ठापेसि, चूळव. 288; — हि तु. वि., ब. व. — पोक्खरणियो चतुन्नं वण्णानं इष्टकाहि चिता अहेसुं, दी. नि. 2.133; नगरं रेणुवती नाम, इष्टकाहि सुमापितं, अप. 1.58; बोधिरुक्खस्स इष्टकाहि वेदिकं चिन्तिता सुधापरिकम्मं कारेसि, थेरगा. अहु. 1.211; — नं ष. वि., ब. व. — पाकारसन्धिन्ति द्विन्नं इष्टकानं अपगतद्धानं, स. नि. अहु. 3.241; — कत्थं द्वि. वि., ए. व., ईटों के लिए — इष्टकत्थं चेतियस्स राजा चिन्तेसि गामणी, म. व. 28.7; — कत्थाय च. वि., ए. व. — एतेनेवुपायेन पासाददारुनं अत्थाय वड्ढकीनं सन्तिकं इष्टकत्थाय इष्टकवड्ढकीनं छदनत्थाय गेहच्छदकानं चित्तकम्मत्थाय चित्तकारानन्ति येन येन अत्थो होति, पारा. अहु. 2.135; — कब्भन्तर नपुं., तत्पु. स., ईटों का अन्तराल अथवा मध्यवर्ती भाग — रे सप्त. वि., ए. व. — उत्तरद्वारे इष्टकब्भन्तरे उपितोति ..., जा. अहु. 3.394; — करण नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाकरण], ईट पाथना, ईट बनाना — णे सप्त. वि., ए. व. — बहू मनुस्से योजेत्वा इष्टिकाकरणे लड्डं, म. वं. 17.38; — कोटि स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकाकोटि], एक करोड़ की संख्या में ईटें — टीहि

## इडका / इडिका

300

इडरूप

तृ. वि., ब. व. — दसपुष्पाधानानि दसहि इडकाकोटीहि निह्नं गमिसु, थू. वं. 231; — खण्ड पु., तत्पु. स. [इष्टिकाखण्ड], ईट का टुकड़ा, रोड़ा — डं द्वि. वि., ए. व. — अञ्जमि यकिञ्चि दारुखण्डं वा इडकाखण्डं वा हत्थेन वा यन्तेन वा पविज्झितुं न वट्टति, पारा. अट्ट. 2.58; — गुहा स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकागुहा], ईटों से निर्मित गुफा, ईट से बनी खोह — हं द्वि. वि., ए. व. — गुहमि इडकागुहं वा सिलागुहं वा दारुगुहं वा भूमिगुहं वा महन्तमि करोन्तस्स अनापत्ति, पारा. अट्ट. 2.144; — गोपक पु., तत्पु. स. [इष्टिकागोपक], ईटों का रखवाला — कं द्वि. वि., ए. व. — तं येव इडकागोपकं कारेसि, थू. वं. 219; — चय पु., तत्पु. स. [इष्टिकाचय], ईटों का ढेर, ईटों का पुञ्ज — यं द्वि. वि., ए. व. — चिनितुं तयो चये, इडकाचयं, सिलाचयं, दारुचयन्ति, चूळव. 278; — कादि त्रि., ईट इत्यादि — दीनि नपुं., द्वि. वि., ब. व. — इडकादीनि एतानि महापुञ्जो महीपति, म. वं. 28.42; — पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकापत्ति], ईटों की पंक्ति, ईटों की कतार, प्र. वि., ए. व. — तस्मिञ्च खणे एका इडकापत्ति परिकिप्पित्वा आगच्छमाना घटनिडकाय ऊना होति, अ. नि. अट्ट. 1.135; — मय त्रि., ईटों से बना हुआ, ईटों से निर्मित — ये पु., सप्त. वि., ए. व. — गिञ्जकावसथेति इडकामये आवसथे, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).135; — मूल नपुं., तत्पु. स., ईटों वाली नींव, ईटों से बनाई गई बुनियाद — लं प्र. वि., ए. व. — असुकगेहस्स इडकामूलं ठितसण्ठानेनेव ठितं, स. नि. अट्ट. 3.80; — वती स्त्री., व्य. सं., दीघराजी के नाम के साथ उल्लिखित मगध जनपद के एक प्राचीन गांव का नाम, प्र. वि., ए. व. — मगधरट्ठे किर इडकवती च दीघराजि चाति द्वे गामका अहेसुं, पे. व. अट्ट. 57; — नामक त्रि., इडकवती नाम वाला — के सप्त. वि., ए. व. — मगधरट्ठे इडकवतीनामके गामे, पे. व. अट्ट. 57; — सन्थर पु., तत्पु. स. [इष्टिकासन्थर], ईटों का फर्श, ईटों की जमीन — रं द्वि. वि., ए. व. — अनुजानामि, भिक्षवे, सन्थरितुं तयो सन्थरे इडकासन्थरं, सिलासन्थरं, दारुसन्थरन्ति, चूळव. 239; — सालपरिवेण पु., तत्पु. स., ईटों से निर्मित भवन में स्थित परिवेण या कक्ष — णे सप्त. वि., ए. व. — थेरो इडकासालपरिवेणे वसति, थू. वं. 78(रो.); — सोपान पु., तत्पु. स. [इष्टिकासोपान], ईटों से बनी हुई सीढ़ी — नं द्वि. वि., ए. व. — अनुजानामि, भिक्षवे

तयो सोपाने — इडकासोपानं, सिलासोपानं, दारुसोपानन्ति, चूळव. 278; — कोलोकनत्थ पु., तत्पु. स. [इष्टिकावलोकनार्थ], ईटों के अवलोकन अथवा निरीक्षण का प्रयोजन — त्थाय च. वि., ए. व. — इडिकोलोकनत्थाय अहं गच्छामि, थू. वं. 219; स. उ. प. के रूप में अमूलकि., घटनि., चयनि., छदनि., तम्बलोहि., थूपि., पमाणि., पाकारि., मङ्गलि., रत्तसुवणिण., लोहि., सदिसि., सुवणिण., सोवण्णछदनि. के अन्त., द्रष्ट.

इडगन्ध पु., कर्म. स. [इष्टगन्ध], सुगन्ध, अनुकूल गन्ध, मन को प्रिय लगने वाली गन्ध — न्यो प्र. वि., ए. व. — इडगन्धो च सुरभि, सुगन्धो च सुगन्धि च, अभि. प. 146; सुगन्धोति इडगन्धो, ध. स. अट्ट. 352.

इडग्गाह पु., तत्पु. स. [इष्टग्गाह], इच्छित का ग्रहण, जिसे ग्रहण किए जाने की इच्छा है उसका ग्रहण — हो प्र. वि., ए. व. — बरुक्खरेसु सज्जिच्छायं इडग्गाहो, सट्ठ. 3.876.

इडत्थ पु., कर्म. स. [इष्टार्थ], अभीप्सित प्रयोजन — इडत्थे ज्य्युतो चाथ, अभि. प. 727.

इडधम्मसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 3(2).112-113.

इडफल त्रि., ब. स. [इष्टफल], अभीप्सित फल देने वाला — ला स्त्री., प्र. वि., ए. व. — कुसला वेदना सफलां सविपाका इडफला कन्तफला मनुज्जफला, कथा. 39; — लं नपुं., प्र. वि., ए. व. — कुसलं विज्जाणं सफलं सविपाकं इडफलं कन्तफलं मनुज्जफलं असेचनकफलं, कथा. 40; ननु दानं इडफलं कन्तफलं मनुज्जफलं, कथा. 179.

इडमङ्गलिक त्रि., ब. स. [इष्टमाङ्गलिक], कुशलमङ्गल की इच्छा करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — गिही भिक्षवे, मङ्गलिका, जा. अट्ट. 2.13; पाठा. इडमङ्गलिका (रो.).

इडरस त्रि., ब. स. [इष्टरस], मन को अच्छा लगने वाले रस से युक्त, अभीष्ट रस वाला, सुस्वादु — सो पु., प्र. वि., ए. व. — सादूति इडरसो, असादूति अनिडरसो, ध. स. अट्ट. 353.

इडरूप नपुं., कर्म. स. [इष्टरूप], अनुकूल स्वरूप या आकार, मन को अच्छा लगने वाला वर्ण एवं आकार — पं द्वि. वि., ए. व. — तत्थ यं किञ्चि चक्खुना रूपं पस्सति अनिडरूपयंवे पस्सति, नो इडरूपं, स. नि. 2(2).129-130; अनिडरूपज्जेव पस्सति नो इडरूपं, स. नि. 3(2).511.

## इष्टवङ्ककी

301

इण

इष्टवङ्ककी पु., तत्पु. स. [बौ. सं. इष्टावर्धकिन्], ईंटों से मकान बनाने वाला मिस्त्री या कारीगर, ईंट बनाने वाला कारीगर, अभीष्टित या इच्छित कारीगर, प्र. वि., ए. व. — वसभेन हते तस्मिं तं आदाय इष्टवङ्ककी, धीतुद्वाने उपेतवान वङ्केसि अत्तनो घरे, म. वं. 35.102-103; तुल., इष्टकवङ्ककी.

इष्टविपाक पु., कर्म. स. [इष्टविपाक], प्रिय अथवा मन के लिए अनुकूल लगने वाला परिणाम, अनुकूल अथवा इच्छानुरूप विपाक — के सप्त. वि., ए. व. — आरोग्ये कुसलं इष्टविपाके कुसलो तथा, अभि. प. 803.

इष्टवियोग पु., तत्पु. स. [इष्टवियोग], चाही गई वस्तु से विछोह, प्रिय से बिलगाव या विछोह, स. प. में — तादिसस्स खीणासवमुनिनो अब्भन्तरे इष्टवियोगादिवत्थुका सोका वित्तसन्तापा न होन्ति, उदा. अष्ट. 207.

इष्टसम्मत त्रि., [इष्टसम्मत], चाहने योग्य अथवा वाञ्छनीय के रूप में माना गया — तं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — इष्टसम्मतं गन्धायतनं आलम्बित्वा, रूपा. वि. 153 (रो.); — तेसु नपुं. सप्त. वि., ब. व. — इष्टसम्मतेसु छसु आरम्भणसु रूपा. वि. 153(रो.).

इष्टसुत्त नपुं. व्य. सं. अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).43.

इष्टानिष्ट त्रि., द्व. स. [इष्टानिष्ट], इच्छित एवं अनिच्छित, मन के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल, वाञ्छनीय एवं अवाञ्छनीय — द्वा स्त्री., प्र. वि., ब. व. — निपतन्ति, महाराज, इमस्मिं चातुमहाभूतिके काये इष्टानिष्टा सुभासुभवेदना, मि. प. 139; — इष्टं नपुं. प्र. वि., ए. व. — जयपराजयो होति ... इष्टानिष्टं होति, महानि. 123; — इष्टं नपुं. द्वि. वि., ए. व. — इष्टानिष्टं निस्साय अनुनयपटिघं निस्साय, छन्दो पहाति, महानि. 194; — द्वे सप्त. वि., ए. व. — तादीति अरहा पञ्चहाकारेहि तादी इष्टानिष्टे तादी, महानि. 82; स. प. के अन्त, — द्वादि त्रि., इष्ट एवं अनिष्ट आदि — दीसु सप्त. वि., ब. व. — इमं तस्स इष्टानिष्टादीसु तादिभावदीपकं उदानं उदानेसि, उदा. अष्ट. 59; — भाव पु., [इष्टानिष्टभाव], वाञ्छनीयता एवं अवाञ्छनीयता — वो प्र. वि., ए. व. — इष्टानिष्टभावो च पुग्गलवसेन च द्वारवसेन च गहेत्तब्बो, उदा. अष्ट. 163; — विपरीतानुभवनलक्षण त्रि., ब. स., अनुकूल एवं प्रतिकूल, इन दोनों से विपरीत अनुभव के लक्षण वाला/वाली — णा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सा इष्टानिष्टविपरीतानुभवनलक्षणा, मज्झत्तरसा ... वेदितब्बा,

विसुद्धि. 1.161; — अनुभवनलक्षण त्रि., ब. स. [इष्टानिष्टानुभवनलक्षण], इष्ट (प्रिय) एवं अनिष्ट (अप्रिय) अनुभव के लक्षणों से युक्त — णा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इष्टानिष्टानुभवनलक्षणा वेदना, नेति. 25.

इष्टाभिमत त्रि., [इष्टाभिमत], प्रिय अथवा वाञ्छनीय माना गया — तो पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चस्स हि इष्टाभिमतो एकच्चस्स अनिष्टो होति, उदा. अष्ट. 163.

इष्टारम्मण नपुं. कर्म. स. [इष्टालम्बन], मन द्वारा चाहा गया आलम्बन, मनोनुकूल विषय, वाञ्छित अथवा प्रिय आलम्बन (मन/इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य बाह्य पदार्थ) — णं द्वि. वि., ए. व. — वक्खुद्वारे इष्टारम्मणं अनुभवितुकामेन हि चित्तकारपोत्थकाररूपकारादयो पक्कोसापेत्वा ..., स. नि. अष्ट. 1.39; — णे सप्त. वि., ए. व. — वक्खुद्वारे पन इष्टारम्मणे आपाथगते भवद्गं आवड्ढेत्वा ... कुसलमेव उप्पादेति, स. नि. अष्ट. 3.94-95; इष्टारम्मणे अरज्जन्तस्स ..., ध. प. अष्ट. 2.330; — णानि प्र. वि., ब. व. — वतुत्थे कमनीयानीति रूपादीनि इष्टारम्मणानि, स. नि. अष्ट. 1.57; — पटिलां पु., तत्पु. स. [इष्टालम्बनप्रतिलां], अनुकूल अथवा प्रिय आलम्बन का लाम, मनोनुकूल आलम्बन को पा लेना — णं द्वि. वि., ए. व. — एवञ्च पञ्चद्वारिकइष्टारम्मणपटिलां कित्तेत्वा इदानि मनोद्वारिकइष्टारम्मणपटिलां दस्सेतुं, उदा. अष्ट. 164; — द्वारम्मणसमायोग पु., तत्पु. स., अनुकूल अथवा प्रिय आलम्बनों का एक जुट हो जाना — तो प. वि., ए. व. — इष्टारम्मणसमायोगतो उप्पन्नेसु सुखेसु, उदा. अष्ट. 144.

इष्टि स्त्री., रजय से व्यु. [इष्टि], यज्ञ — इष्टि, सिद्धि, भित्ति, भक्ति ..., मो. व्या. 5.49.

इडगलिस्सर पु., व्य. सं., दक्षिण भारत के एक प्राचीन गांव का नाम, प्रायः एरुक्काट नामक एक अन्य गांव के साथ प्रयुक्त — रे सप्त. वि., ए. व. — एरुक्काटुक्खे चैव गामे इडगलिस्सारे, चू. वं. 76.149.

इण/इणु गत्यर्थक धातु — इण-फेण द्वयं गते, धा. मं. 29; इणु गतियं, इणोति, इणं इणायिको, सद. 2.507.

इण नपुं. इणु से व्यु. [ऋण], शा. अ., कर्जा, उधार, ला. अ., दायित्व, कर्तव्य — णं प्र. वि., ए. व. — उद्धारो तु इणं वुत्तं, अभि. प. 471; पैतिकं वा इणं होति, यं वा होति सयंकत्, जा. अष्ट. 7.38; — णं द्वि. वि., ए. व. — भिक्खु यथा इणं यथा रोगं ... इमे पञ्च नीवरणे



## इण

## 302

## इणदान

अप्यहीने अत्तनि समनुपस्सति, म. नि. 1.348; तस्मा तेसं इणं ददे, जा. अड्ड. 4.249; — णेन तु, वि., ए. व. — एको पन बहुं इणं खादित्वा तेन इणेन अट्टो पीळितो तम्हा गामा पलायति, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.129; — तो प. वि., ए. व. — इणतो सइणे भिक्खू मोचेसि सासनपियो, म. वं. 36. 39; — स्स प. वि., ए. व. — इणस्स वा पमोक्खाय, दुब्भिक्खे आपदासु वा, खु. पा. 9; इणस्स अकतभावेन तुट्ठो, जा. अड्ड. 4.248; — णे सप्त. वि., ए. व. — बन्धनत्थपयोगे बन्धनहेतुस्मि इणे, सद्. 3.707; गुहावरों के रूप में कतिपय प्रयोग, क. ऋणदाता के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने पर, 1. ऋदा के क्रि. रू. के साथ, उधार देता है — णं द्वि. वि., ए. व. — न पण्डिता तस्मिं इणं ददन्ति, न हि आगमो होति तथाविधम्हा, जा. अड्ड. 7.135; 2. ऋकर के क्रि. रू. के साथ, ऋण स्वीकृत करता है — ब्राह्मणो ... मय्हं इणं करिस्सति, जा. अड्ड. 4.247; ... अस्से च स्थज्ज पसाधनमण्डज्ज तस्स इणं कत्वा दस्सेन्तो ..., जा. अड्ड. 6.21; 3. 'पयोजेति' के साथ, ब्याज कमाने हेतु उधार लगा देता है — इणं चोदायाति भिक्खाचरियाय धनं संहरित्वा वड्डिया इणं पयोजेत्वा ..., जा. अड्ड. 4.165; ख. ऋण लेने वाले के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने पर 'इणं' का प्रयोग प्रायः निम्नरूप में प्राप्त; 1. निर्यादेति / निर्यातेति के क्रि. रू. के साथ, ब्याज के साथ ऋण चुका देता है — इदं इणं नाम पलिबोधमूलं न्ति चिन्तेत्वा सवड्डिकं इणं निर्यातेत्वा पण्णं फालापेय्य, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).215; 2. 'आदीयति' अथवा 'आदाय' अथवा ऋगह के क्रि. रू. के साथ प्रयुक्त रहने पर, कर्ज लेता है, ऋण लेता है — सो तेसं अच्चयेन ... नानाव्यसनमुखेहि इणं आदाय तं दातुं असक्कोन्तो ..., जा. अड्ड. 4.228; यो हवे इणमादाय, चुज्जमानो पलायति, सु. नि. 120; इणमादायाति ... इणं गहेत्वा, सु. नि. अड्ड. 1.142-43; ... मनुस्सानं हत्थतो बहुं इणं गहेत्वा ..., जा. अड्ड. 4.144; 3. वि + ऋगह के क्रि. रू. के साथ प्रयुक्त होने पर, कर्ज में डूब जाता है — उदकमिव इणं विगाहति, दी. नि. 3.140; 4. 'सोधेति' के साथ प्रयुक्त होने पर, कर्ज अदा कर देता है, ब्याज सहित ऋण को चुका देता है — उपड्डं मया गहितं इणं सोधेत्वा सुखेन जीवतूति मय्हं धीताय देथांति आह, पे. व. अड्ड. 241; स. उ. प. के रूप में अण./अणि., अधम., उत्तम., कामछन्द. के अन्त. द्रष्ट..

इणग्गहण नपुं., तत्पु. स. [ऋणग्रहण], कर्ज लेना, ऋण को स्वीकार करना — णं द्वि. वि., ए. व. — इणादानस्मि वदामीति इणग्गहणं वदामि, अ. नि. अड्ड. 3.118.

इणगाहक पु., [ऋणग्राहिन], ऋण लेने वाला, कर्जखोर, उधार लेने वाला — स्स प. वि., ए. व. — इणग्गाहकस्स एकं अङ्गं गहेतव्वं, मि. प. 330.

इणघात त्रि., [ऋणघातक], कर्ज मारने वाला, ऋण लेकर उसे नहीं लौटाने वाला — ता पु., प्र. वि., ब. व. — इणघातसूचकाति वसलसुत्ते वुत्तनयेन इणं गहेत्वा तस्स अप्पदानेन इणघाता, सु. नि. अड्ड. 1.265; — सूचक त्रि., द्व. स., कर्ज मारने वाला एवं इधर की बात उधर करने वाला अथवा चुगली करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — ये पापसीला इणघातसूचका, सु. नि. 249; इणघातसूचकाति वसलसुत्ते वुत्तनयेन इणं गहेत्वा तस्स अप्पदानेन इणघाता पेसुज्जेन सूचका च, सु. नि. अड्ड. 1.265.

इणट्ट त्रि., तत्पु. स. [ऋणार्त], ऋणग्रस्त, कर्ज का मारा हुआ, ऋण के कारण विपत्तिग्रस्त — ट्टो पु., प्र. वि., ए. व. — एको पन बहुं इणं खादित्वा तेन इणेन अट्टो पीळितो तम्हा गामा पलायति ... अयं इणट्टो नाम, म. नि. अड्ड. (म.प.) 2.129; कदा इणट्टोव दल्लिहको निधिं आराधयित्वा धनिकोहि पीळितो, थेरगा. 1109; 'किं त्वं इणट्टो वा भयट्टो वा जीवितुं असक्कोन्तो पब्बजितो'ति?, स. नि. अड्ड. 2.212; — ट्टा ब. व. — ये पन इणं गहेत्वा पटिदातुं असक्कोन्ता पलायित्वा पब्बजन्ति, ते इणट्टा नाम, इणपीळिताति अत्थो, — इणट्टातिपि पाठो, इणे विताति अत्थो, स. नि. अड्ड. 2.267; न इणट्टा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता, म. नि. 2.136; केचि इणट्टा पब्बजन्ति, मि. प. 28.

इणट्ट त्रि., [ऋणस्थ], ऋण में स्थित, कर्ज में डूबा हुआ — ट्टा पु., प्र. वि., ब. व. — इणट्टातिपि पाठो, इणे विताति अत्थो, स. नि. अड्ड. 2.267.

इणद्धान नपुं., तत्पु. स., ऋण का स्थान, कर्ज का स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — मया पन रज्जो सन्तकं निवापपानभोजनं भुत्तं, तं मे इणद्धाने वित्तं, जा. अड्ड. 3.239.

इणदान नपुं., तत्पु. स. [ऋणदान], 1. आजीविका के पवित्र साधन के रूप में कर्ज देना या उधार देना, साहूकारी — न प्र. वि., ए. व. — कसिवाणिज्जा इणदानं,

## इणदायक

303

## इणसोधन

जा. अहु. 4.380; यानि तानि कसिवाणिज्जानि इणदानं उज्जाचरियाति आजीवमुखानि, जा. अहु. 4.381; कीदिसं ते इणदानं, जा. अहु. 4.249; 2. ऋण देकर जुटाया गया धन, ऋण देने में लगाया गया धन — णं द्वि. वि., ए. व. — निधिञ्च इणदानञ्च, न करे परपत्तिया, जा. अहु. 5.111; इणदानन्ति इणवसेन संयोजितधनं, जा. अहु. 7.198.

**इणदायक** त्रि., [ऋणदायिन], महाजन, ऋण देने वाला साहूकार — को पु., प्र. वि., ए. व. — आति सालोहितो किन्नु उदाहु इणदायको, रस. 1.44(रो.).

**इणपण्ण** नपुं., तत्पु. स. [ऋणपण्ण], ऋणपत्र, रुक्का, वचनपत्र, कर्ज को दर्ज करने वाला पत्र — ण्णं प्र. वि., ए. व. — इदं तुम्हाकं इणपण्णं, जा. अहु. 1.225; — ण्णानि ब. व. — सो इणायिके आह — तुम्हाकं इणपण्णानि गहेत्वा आगच्छथ, जा. अहु. 4.228.

**इणपरिभोग** पु., तत्पु. स. [ऋणपरिभोग], शा. अ., ऋण के रूप में प्रयोग, ऋण का उपभोग, ला. अ., चार प्रकार के परिभोगों में से एक, प्रत्यवेक्षण अथवा देशकाल का विचार किए बिना ही चीवर, पिण्डपात, निवासस्थान एवं औषधि का उपभोग — गो प्र. वि., ए. व. — थेय्यपरिभोगो, इणपरिभोगो, दायज्जपरिभोगो, सामिपरिभोगोति ... सीलवतो अप्पच्चवेक्खितपरिभोगो इणपरिभोगो नाम, पारा. अहु. 2.247; सीलवतो पन अप्पच्चवेक्खणपरिभोगो इणपरिभोगो नाम, म. नि. अहु. (म.प.) 2.244; — रस ष. वि., ए. व. — सो इणपरिभोगस्स पच्चनीक्ता आणण्यपरिभोगो वा होति, विसुद्धि. 1.41; — डान नपुं., तत्पु. स. [ऋणपरिभोगस्थान], ऋण के समान परिकारों का उपभोग करने वाले की जगह, ऋण-उपभोक्ता का स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — सचस्स अप्पच्चवेक्खतोव अरुण उग्गच्छति, इणपरिभोगद्वाने तिड्ढति, विसुद्धि. 1.40.

**इणपलिबोध** पु., तत्पु. स., ऋणग्रस्त होने के फलस्वरूप उत्पन्न बाधा, संकट अथवा विपत्ति — धो प्र. वि., ए. व. — इणपलिबोधो, महाराजाति, स. नि. अहु. 1.213; — धेन तृ. वि., ए. व. — सहेतुको सत्तो इणपलिबोधेन न पब्बजतीति, महाव. अहु. 267.

**इणपीळित** त्रि., तत्पु. स. [ऋणपीडित], ऋणग्रस्त होने के कारण पीडित अथवा कष्ट में पड़ा हुआ — ता पु., प्र. वि., ब. व. — ते इण्ढा नाम, इणपीळिताति अत्थो, स. नि. अहु. 2.267.

**इणमुत्त** त्रि., तत्पु. स. [ऋणमुक्त], ऋण से मुक्त — रस पु., ष. वि., ए. व. — इणमुत्तस्स पुरिसस्स इणस्सामिके दिस्वा नेव भयं न छम्भितत्तं होति, दी. नि. अहु. 1.174. **इणमूल** नपुं., तत्पु. स. [ऋणमूल], उधार के रूप में प्राप्त पूंजी, ऋण के रूप में गृहीत मूलधन, ऋण, — लं द्वि. वि., ए. व. — ताव मातापितृपट्टानेन पोराणं इणमूलं विसीधयमाना, पुत्तदारसङ्गहेन नवं इणमूलं पयोजयमाना ..., खु. पा. अहु. 125; — लानि ब. व. — सो यानि च पोराणानि इणमूलानि, तानि च व्यन्ति करेय्य ..., दी. नि. 1.63.

**इणमोक्ख** पु., तत्पु. स. [ऋणमोक्ष], ऋण से मुक्ति, ऋण की अदायगी — क्खो प्र. वि., ए. व. — कीदिसं ते इणदानं, इणमोक्खो च कीदिसो, जा. अहु. 4.249; 'एवं मे इणमोक्खो भविस्सतीति पलायित्वा गङ्गायं पति, चरिया, अहु. 136.

**इणवड्ढि** स्त्री., तत्पु. स. [ऋणवृद्धि], ऋण पर देय सूद अथवा ब्याज, ऋण के मूलधन में वृद्धि — या सप्त. वि., ए. व. — वड्ढियाति इणवड्ढिया, धेरीगा. अहु. 294.

**इणवसेन** तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., ऋण के कारण, ऋण के रूप में — धारयतेति इणवसेन गणहाति, सद्. 3.695.

**इणसदिस** त्रि., तत्पु. स. [ऋणसदृश], ऋण जैसा, ऋण के समान — सं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — यथा इणन्तिआदीसु इणसदिसं बन्धनसदिसं धनजानिसदिसं, अ. नि. अहु. 3.342.

**इणसाधक** पु., [ऋणसाधक], ऋण को वसूल करने वाला, ऋण-समाहर्ता — रस ष. वि., ए. व. — इणसाधकस्स तीणि अङ्गानि गहेत्वा, मि. प. 331.

**इणसामिक** पु., ऋणदाता, महाजन, उत्तमर्ण — को प्र. वि., ए. व. — इणसामिको व तं परियेसन्तो तत्थ गच्छति, महाव. अहु. 267; — का ब. व. — इणसामिका सुत्वा पलातद्वानेपि नो न मुच्चिस्सति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.129; — के द्वि. वि., ब. व. — सो इणसामिके दिस्वापि सचे इच्छति, आसना उट्ठहति, दी. नि. अहु. 1.174; — कानं ष. वि., ब. व. — पस्सन्तेन पन आनेत्वा इणसामिकानं दस्सेतब्बो, महाव. अहु. 267.

**इणसुत्त** नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(2).65-68.

**इणसोधन** नपुं., तत्पु. स. [ऋणशोधन], ऋण का भुगतान, कर्ज की अदायगी, स. प. के अन्तः, — लद्धमूलं मय्ं इणसोधनमतमेव जातं, जा. अहु. 1.308.

## इणादान

304

## इतर

इणादान नपुं. तत्पु. स. [ऋणादान], ऋण लेना, ऋण का ग्रहण — नं प्र. वि., ए. व. — इणादानस्मि दुक्खं लोकस्मिं कामभोगिनो, अ. नि. 2(2).66; — स्मिं सप्त. वि., ए. व. — इणादानस्मिं वदामीति इणरगहणं वदामि, अ. नि. अट्ट. 3.118.

इणापगम पु., तत्पु. स. [ऋणापगम], ऋण से छुटकारा, ऋण का अपनयन — मेन तू. वि., ए. व. — कामच्छन्दादिइणापगमेन अणणा, थेरीगा. अट्ट. 270.

इणायिक त्रि., इण + इक के योग से व्यु. [ऋण्वन्/ऋणिन्/ऋणिक], 1. ऋण लेने वाला, कर्जदार, ऋण लेने अथवा देने की प्रक्रिया के साथ जुड़ा हुआ, अधमर्ण — को पु., प्र. वि., ए. व. — इणोति, इणं इणायिको, सट्ट. 2.507; अधमण्णो तु इणायिको, अभि. प. 470; एत्थ इणायिको नाम यस्स पित्तिपितामहेहि वा इणं गहितं होति, सयं वा इणं गहितं होति, यं वा आथपेत्वा मातापितृहि किञ्चि गहितं होति, सो तं इणं परेसं धारेतीति इणायिको, महाव. अट्ट. 267; यं पन अज्जे जातका आथपेत्वा किञ्चि गण्हन्ति, सो न इणायिको, न हि ते तं आथपेतुं इस्सरा, तस्मा तं पब्बाजेतुं वट्ठति इतरं न वट्ठति, तदे.; अज्जतरा पुरिसो इणायिको पलायित्वा भिक्खूसु पब्बाजितो होति, महाव. 95; अयं सो अम्हाकं इणायिको, तदे.; — का ब. व. — यथा इणायिका आनण्यं पथेन्ति पिहयन्ति, महानि. 117; सत्ता तस्स चतुरोघतिण्णस्स पिहयन्ति इणायिका, सु. नि. अट्ट. 2.229; — कं पु., द्वि. वि., ए. व. — कथञ्चि नाम ... इणायिकं पब्बाजेस्सन्तीति, महाव. 95; 2. कर्ज देने वाला महाजन, उत्तमर्ण, ऋणदाता — केन पु., तू. वि., ए. व. — इणायिकेन 'देहि मे इण'न्ति चोदियमानो ..., सु. नि. अट्ट. 1.143; — का पु., प्र. वि., ब. व. — इणायिका देथ देथाति चोदेन्ति, स. नि. 1(1).199; इदानि इणायिका आगन्त्वा गेहं परिवारेस्सन्ति, स. नि. अट्ट. 1.211-212; — के पु., द्वि. वि., ब. व. — इणायिके आह, तुम्हाकं इणपण्णानि गहेत्वा आगच्छथ, चरिया. अट्ट. 136; मरणं मे सेय्यो ति चिन्तेत्वा इणायिके आह, चरिया. अट्ट. 136; — केहि तू. वि., ब. व. — इणायिकेहि उपहुता सुखं वसितुं असक्कोत्ता, जा. अट्ट. 4.144; इणायिकेहि चोदियमानो चिन्तेसि किं मयं जीवितेन ... मत्तं मे सेय्योति, जा. अट्ट. 4.228; — कानं प. वि., ब. व. — इणायिकानं पुरिसानं अधिपतनबहुले बहूहि इणायिकेहि अभिभवितब्बे, थेरीगा. अट्ट. 294; विलो., —

उत्तमण्णो च धनिको, अभि. प. 470; — पीळा स्त्री., तत्पु. स., ऋणदाता की ओर से पड़ने वाला दबाव, कर्ज देने वाले व्यक्ति द्वारा दी जा रही पीड़ा या व्यथा, प्र. वि., ए. व. — इमस्मिं गह्णासोते पतितो जीवामि वा मरामि वा, जीवितं वा मे एत्थ होतु मरणं वा, उभयथापि इणायिकपीळा न होतीति अधिप्पायो, चरिया. अट्ट. 136.

इणोति इणु का वर्त., प्र. पु., ए. व., गतिशील रहता है — इणु गतियं, इणोति, इणं, इणायिको, सट्ट. 2.507.

इत त्रि., इइ का भू. क. कृ. [इत], जा चुका, बीत चुका — इतो उदितो, सट्ट. 2.315; इतो, क. व्या. 645; अपेत, उदित, दुरित आदि के रूप में सोपसर्ग प्रयोगों में ही मुख्य रूप से प्राप्त.

इतर त्रि., [इतर], अन्य, दूसरा, भिन्न, सामान्य — इतरसद्दो वुत्तपटियोगिवचनो अज्जसद्दो अधिगतापरवचनो, सट्ट. 1.266; इतरा अज्जतरा एको अज्जो, अभि. प. 717; 1. क. ए. व. में प्रयुक्त होने पर, दूसरा, अन्य, निर्दिष्ट दो में से बचा हुआ एक — रो पु., प्र. वि., ए. व. — अयञ्चि राजा हंसानं, अयं सेनापतीतरा, जा. अट्ट. 5.341; अथेसो इतरा पक्खी, सुवो लुद्धानि, भासति, जा. अट्ट. 4.393; — रं पु., द्वि. वि., ए. व. — अथेकं इतरं अम्बं, नीलोभासं मनोरमं, जा. अट्ट. 6.74; तेन पविसित्वा थूलसाटके गहिते इतरस्स इतरं गण्हतो उद्धारे पाराजिकं, पारा. अट्ट. 1.283; — राय स्त्री., तू. वि., ए. व. — असिस्स इमाय धाराय मारेहीति वुत्तो इतराय वा धाराय ... मारेति विसङ्केतो, पारा. अट्ट. 2.43; — स्स पु., ष. वि., ए. व. — तस्मा पण्डितजातियो सुणेय्य इतरस्सपि, उभिन्नं वचनं सुत्वा यथा धम्मो तथा करे, जा. अट्ट. 3.90; — स्मिं पु., सप्त. वि., ए. व. — चोरा ततो निक्खमित्वा इतरस्मिं मग्गे अट्ठंसु, घ. प. अट्ट. 2.13; — मग्ग पु., कर्म. स. [इतरमार्ग], दूसरे प्रकार का मार्ग, भिन्न प्रकृति वाला मार्ग — र्गं द्वि. वि., ए. व. — अथस्स पुरतो तिरियं ठत्वा भुस्सित्वा इतरमग्गमेव नं आरोपेति, घ. प. अट्ट. 1.100; 1. ख. यदा कदा ब. व. में प्रयुक्त होने पर, दो परस्पर-विपरीत समूहों अथवा वर्गों में से कोई एक — रा/रे पु., प्र. वि., ब. व. — यानके ठपेत्वा यानकं पाजेन्तो यानकस्स पुरतो अहोसि, इतरा पच्छतो, जा. अट्ट. 2.100; निगण्ठा वेलका वेति इतरा परिब्बाजका, इतरा ब्राह्मणा ति च अज्जे च पुथुलद्धिका, दी. वं. 6.27; रत्ती हि तेसं दुखिनो पनीतरे, जा. अट्ट. 5.261; — रेसं ष. वि., ब. व. — तेसं सन्तिकं गन्त्वा

## इतर

305

## इतररीतर

उक्खेपकानं उक्खेपने, इतरेसञ्च असञ्चिच्च आपत्तिया  
अदस्सने आदीनवं वत्ता ..., जा. अहु. 3.429; 1.ग. ब. व.  
के अधिकतर प्रयोगों में, दूसरे, अन्य, शेष, बचे हुए — रे  
पु., प्र. वि., ब. व. — इतरेपि द्वे एवमेव आहंसु, पारा. अहु.  
1.294; इतरे द्वे सहायकत्वेना जनपदचारिकं चरन्ता  
अञ्जतरस्मिं आवासे समागन्त्वा ..., पे. व. अहु. 12; इतरे  
तयो सक्कायदिहिया बलवत्ता अत्तनो पटिपक्खभूतं सत्तं  
अपस्सन्ता न भायन्तीति, ध. प. अहु. 2.28-29; 'स्वे  
उपोसथदिवसो'ति जत्वा इतरे तयो आह ..., जा. अहु.  
3.44; — रा स्त्री., द्वि. वि., ब. व. — तं सुत्वा सकुणो  
इतरा द्वे गाथा अमासि, जा. अहु. 3.23; — रेसु पु., सप्त.  
वि., ब. व. — इतरेसु पन तीसु कायसञ्चेतना कायसङ्गारो  
..., विसुद्धि. 2.160; — रेसं नपुं., ष. वि., ब. व. —  
पथवीकसिणं पन पठमं ज्ञानं समापज्जित्वा तत्थेव इतरेसमि  
समापज्जनं अङ्गसङ्गित्तं नाम, विसुद्धि. 2.3; इतरेसन्ति  
अवसिद्धरूपावचरज्झानानं, न हि अरूपज्झानेसु असङ्गसङ्गति  
अत्थि, नापि तानि पथवीकसिणं पवत्तन्ति, विसुद्धि. महाटी.  
2.3-4; — रानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — सद्धिन्द्रियं बलवं  
होति इतरानि मन्दानि, ततो वीरियिन्द्रियं पग्गहकिच्चं ...,  
विसुद्धि. 1.126; कसिणकम्मङ्गानिको कसिणं कत्वा यथासुखं  
भावेति, एवं इतरानि कम्मङ्गानानि सुलभानि, विसुद्धि.  
1.180-81; 1.घ. यदा कदा ए. व. में प्रयुक्त होने पर भी  
समाहार अथवा बहुत्व का द्योतक — रं नपुं., प्र. वि., ए.  
व. — नाञ्जं सुचरितं राज ... तायते मरणकाले एवमेवितरं  
धनं, जा. अहु. 3.185; 2. 'जन' अथवा 'पजा' शब्दों के  
साथ अन्वित रहने पर, सामान्य, साधारण, नासमझ, गंवार,  
तुच्छ, नीच — रो पु., प्र. वि., ए. व. — तमहं सारथिं ब्रूमि,  
रस्मिग्गाहो इतरो जनो, ध. प. 222; — रा स्त्री., प्र. वि.,  
ए. व. — अप्पका ते मनुस्सेसु, ये जना पारगामिनो, अथायं  
इतरा पजा, तीरमेवानुधावति, ध. प. 85; 'अथायं इतरा  
पजा, पुञ्जभागाति मे मनो, सङ्घातुं नोपि सक्कोमि,  
मुसावादस्स ओत्तप'न्ति, स. नि. 1(1).182; अत्ता हवे जितं  
सेय्यो, या चायं इतरा पजा, अत्तदन्तस्स पोसस्स, निच्चं  
सञ्जतचारिनो, ध. प. 104; सो सचे धम्मं चरति, पगेव  
इतरा पजा, जा. अहु. 5.231; 3. अगला, अनुवर्ती, आगे  
आने वाला, परवर्ती, द्वितीय, दूसरा — रं स्त्री., द्वि. वि.,  
ए. व. — अथस्स वचनं सुत्वा पुरोहितो इतरं गाथमाह, जा.  
अहु. 5.97; सा तेस्स आगमनूपायं आचिक्खन्ती इतरं  
गाथमाह, जा. अहु. 5.191; — रस्स/रस्सा ष. वि., ए.

व. — सत्था पुन दिवसे इतरस्स इतरस्साति पटिपाटिया  
सब्बेसं धरानि अगमासि, ध. प. अहु. 2.288; — रेन तृ.  
वि., ए. व. — वासिफरसुको जेड्ढमातिकस्स अग्गिं करोति,  
इतरेन भेरितले पढटे इत्थी पत्तायन्ति, जा. अहु. 2.84; स.  
उ. प. के रूप में इतरी., उत्तरी., उत्तरे., दुदसे., वामे. के  
अन्त. द्रष्ट.

इतरत्र अ., सप्त. वि., प्रतिरू. प्रकार-बोधक अथवा स्थानसूचक  
निपा. [इतरत्र], अन्यथा, उससे भिन्न रूप में, अन्यत्र,  
दूसरे स्थलों में — एस नयो इतरत्रापि, सद्. 3.704; 756;  
781.

इतरथत्त नपुं., इतरथा से व्यु., भाव. [इतरथात्वं], अन्य  
रीति से अथवा दूसरी तरह से होने की अवस्था — ता प.  
वि., ए. व. — सब्बनामेहि था-तथा पकारवचने ... इतरथा  
उभयथा, तेन पकारेन ततत्था ... तयुगपच्चयो पसिद्धो तं  
यथा, तथा भावो तत्थत्तं, एवं अञ्जत्थत्तं ... इच्चादि एत्थ च,  
सद्. 3.805; थत्ताप्पच्चयो च होति — सो विय पकारो  
तथत्ता, एवं यथत्ता, अञ्जथत्ता, इतरथत्ता, सब्बथत्ता, क.  
व्या. 400.

इतरथा अ., निपा., इतर + था के योग से व्यु.,  
प्रकारबोधक क्रि. वि. [इतरथा], 1. अन्य रीति से, दूसरी  
तरह से, और तरीके से — इतरथा वत्तुं न देमाति आह,  
विसुद्धि. 1.94; 'पटिपत्तिया च पूजियमानो पूजितो होति न  
इतरथा'ति, विसुद्धि. 1.128; 'अहमेतं लाभग्गयसग्गप्पत्तं  
करोन्तो पब्बजित्वाव कातुं सक्खिस्सामि, न इतरथा'ति,  
जा. अहु. 4.339; कथिता येव सोमति न इतरथा, सद्.  
1.144; 2. नहीं तो, अन्यथा, विपरीत रूप में, दूसरी ओर  
— इतरथा एवं कातुं न सक्खिस्सन्ति, जा. अहु. 6.257;  
इतरथा न पुब्बेन वा परं न परेन वा पुब्बं युज्जति, बु. वं.  
अहु. 38; इतरथा हि पुब्बे वुत्तदोसप्पसङ्गो एव सिया, तस्मा  
यथानुसिद्धमेव गहेतब्बं, खु. पा. अहु. 10.

इतररीतर त्रि., [इतरेतर], 1. पारस्परिक, अन्योन्य, एक  
दूसरा, एक एक, प्रत्येक — स्स पु., ष. वि., ए. व. —  
अञ्जमञ्जस्स भोजका, इतरीतरस्स भोजका, मो. व्या.  
1.56; 2. भिन्न-भिन्न प्रकृति एवं स्वरूप वाला, छोटा से  
छोटा, हर प्रकार का — रा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — मही  
यथा जगति समानरत्ता, वसुन्धरा इतरीतरापत्तिद्वा, जा.  
अहु. 5.420; वच्छदन्तमुखा सेता, तिक्खग्गा अड्ढिवेधिनो,  
पणुन्ना धनुवेगेन, सम्पतन्तुतरीतरा, जा. अहु. 6.277;  
सम्पतन्तुतरीतराति एवरूपा सरा इतरीतरा सम्पतन्तु

## इतरीतर

306

इति

समागच्छन्तु, जा. अ. 6.279; — रेन तृ. वि., ए. व. — यथा कथं इतरितरेन चापि, सुभासितं तच्च सुणाय सब्बे, वि. व. 1228; इतरितरेन चापीति इतरीतरञ्चापि, इदं यथापि इमिना योजेतब्बं, वि. व. अ. 283; इतरीतरेन तुस्सेय्य, थेरगा. 230; 'इतरीतरेन तुस्सेया'ति येन केनचि हीनेन वा पणीतेन वा यथालङ्घेन पच्चयेन सन्तोसं आपज्जेय्याति अत्थो, थेरगा. अ. 1.379; सन्तुस्समानो इतरीतरेन, सु. नि. 42; इतरीतरेनाति उच्चावचेन पच्चयेन, सु. नि. अ. 1.69; इतरीतरेन पिण्डपातेन इतरीतरपिण्डपातसन्तुड्डिया च वण्णवादी ... इतरीतरेन सेनासनेन इतरीतरसेनासनसन्तुड्डिया च वण्णवादी ..., दी. नि. 3.179-180; — स्स थ. वि., ए. व. — असम्पदानेनितरीतरस्स, बालस्स मित्तानि कलीभवन्ति, जा. अ. 1.446; इतरीतरस्साति यस्स कस्सचि लामकालामकस्स, जा. अ. 1.447; — चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खार पु., तत्पु. स., चीवर, भिक्षा से प्राप्त भोजन, निवास स्थान एवं औषधि के मूलभूत साधारण आवश्यक उपकरण — रेन तृ. वि., ए. व. — इतरीतरचीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्ज परिक्खारेन पापिकं इच्छं पणिदहति, अ. नि. 1(2).165; — पच्चयसन्तोस पु., तत्पु. स., मामूली से मामूली भोग-साधनों से प्राप्त सन्तुष्टि, सामान्य उपकरणों से मिलने वाला सन्तोष का भाव — सेन तृ. वि., ए. व. — सन्तुड्डोति इतरीतरपच्चयसन्तोसेन समन्नागतो, सो पनेस सन्तोसो द्वादसविधो होति, म. नि. अ. (मू.प) 1(2).46; — पिण्डपातसन्तुड्डि स्त्री., तत्पु. स., साधारण प्रकार के भोजन से प्राप्त सन्तोषभाव — या ष. वि., ए. व. — भिक्खु सन्तुड्डो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, इतरीतरपिण्डपातसन्तुड्डिया च वण्णवादी, दी. नि. 3.179; — योग पु., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [इतरेतरयोग], द्व. स. का एक प्रभेद, द्वन्द्व समास का वह प्रभेद जिसमें समास के विभिन्न घटक एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हों अथवा जिसके प्रत्येक अंग पृथक्-भाव को सूचित करें — गो प्र. वि., ए. व. — इतरीतरयोगो समाहारो च समुच्चयस्सेव भेदो, सो एव हि अज्जमज्जासापेक्खानं अवयवभेदानुगतो इतरीतरयोगो यथा, देवदत्त यज्जदत्तेहि इदं कारियं कत्तब्बन्ति, पद. 259(सिंहली); पाठा. इतरेतर; — सन्तोस पु., साधारण से

साधारण साधनों या सामग्रियों से सन्तुष्टि — सेन तृ. वि., ए. व. — इतरीतरसन्तोसेन सन्तुड्डस्स आरद्धवीरियस्सेव समणसाधुताति अधिप्पायो, थेरगा. अ. 1.246; इतरीतरसन्तोसेन सन्तुड्डो अनवज्जाय जीविकाय जीवितियेव, थेरगा. अ. 2.129; — सेनासनसन्तुड्डि स्त्री., साधारण से साधारण वासस्थान से सन्तुष्टि — या ष. वि., ए. व. — भिक्खु सन्तुड्डो होति इतरीतरेन सेनासनेन इतरीतरसेनासनसन्तुड्डिया च वण्णवादी, दी. नि. 3.180. इति' अ., रइ + ति के योग से व्यु. [इति], प्रायः किसी के द्वारा कहे गए वचनों को वैसा का वैसा ही रख देने हेतु प्रयुक्त अव्यय, यह कथित वचन निम्न रूपों में हो सकता है, 1.क. शब्दस्वरूपद्योतक, शब्द के स्वरूप को दर्शाने हेतु प्रयुक्त — 'सब्बो चन्ति' सब्बो ति इच्चेसो सद्दो सरे परे क्वचि चकारं पणोति, इति + एतं = इच्चेतं ... इतिस्स मुहुत्तमि, क. व्या. 19; 'अति-पत-इतीनं ति चं ... वचची'ति किं ... 'इतिस्स मुहुत्तमि', स. 3.616; इतायं कोधरूपेन, मच्चुपासो गुहासयो, अ. नि. 2(2).235; इतायन्ति इति अयं, अ. नि. अ. 3.179; 1.ख. प्रातिपदिकार्थद्योतक अर्थात् अपने अर्थों को संकेतित करने हेतु प्रयुक्त प्रातिपदिक का संकेतक — मण्णन्ति या तेसं तेसं सत्तानं तम्हा तम्हा सत्तनिकाया चुति चवनता भेदो ..., महानि. 89; 1.ग. वाक्यार्थद्योतक अर्थात् समूचे वाक्य का संकेतक — नागारमावसेति सब्बं धरावासपलिबोधं छिन्दित्वा ... एको चरेय्य ..., महानि. 89; 2.क. पालि अ. में इसे मुख्यतया पदपूरणार्थक अथवा निदर्शनार्थक निपा. कहा गया है — इतीति पदसन्धि पदसंसङ्गो पदपारिपूरी अक्खरसमवायो व्यज्जनसिलिद्धता पदानुपुब्बतापेतं, महानि. 89; निदस्सने इति-त्थं च एवं अभि. प. 1158; 2.ख. क्रि. वि. के रूप में अत्यल्प प्रयोगों में, इस प्रकार से, इस रूप में, ऐसे — इतिहन्ति सीलेसु अकत्थमानो, सु. नि. 789; यो भिक्खु अनभिजानं उत्तरिमनुस्सं धम्मं अत्तुपनायिकं अलमरियजाणदस्सनं समुदाचरेय्य — इति जानामि इति पस्सामीति, पारा. 111; तस्मा हि धम्मेषु करेय्य छन्दं, इतिमोदमानो सुगतं तादिना, थेरगा. 305; न इतिवादप्पमोक्खानिसंसत्थं, न इति मं जनो जानातूति, अ. नि. 1(2).31; जोतितानीति अत्थो, इति इमस्मिं सुत्ते वत्तुसुपि ठानेसु खीणासवस्स वचीसच्चमेव कथितन्ति, अ. नि. अ. 2.358; 2.ग. इति/ति + कथन, चिन्तन, अनुभव करने, सुनने एवं जानने आदि के अर्थों वाला क्रि.

## इति

307

## इतिचित्तमन/इतिचित्तसंकल्प

रू. + उद्धरण के रूप में (अत्यल्प प्रयोग), प्रायः उद्धरण-चिह्न के स्थान पर प्रयुक्त अथवा यदा कदा, ऐसे, इस प्रकार के अर्थों का सूचक – इति कन्दनरुक्खोयि, तावदे अज्झमासथ. ... “-”, जा. अहु. 4.187-88; इति पटिसञ्चिक्खितब्ब – “-”, पारा. अहु. 2.26; महाराजा वस्से अन्तिमके वितो इति चिन्तयि, “-”, म. वं. 8.1; 2. घ. उद्धरण + इति + उक्तार्थक क्रि. रू. का प्रयोग (अधिक सामान्य) – जातिया ब्राह्मणो होति, भारद्वाजो इति भासति. सु. नि. 601; राजा “नेतं तथा. भन्ते!” इति वत्थान तं वदि, म. वं. 32.67; इति राजा विचिन्तोसि चिन्तितं तं तथा अहु. म. वं. 17.26; इति चिन्तयि पञ्जवा, म. वं. 5.162; 2.ङ. क्रि. रू. + उद्धरण + इति के रूप में भी प्राप्त – राजारोचेसि थेरानं “कम्मं मे निद्धितं” इति, म. वं. 3.23; अपुच्छि धम्मिके भिक्खू “किंवादी सुगतो?” इति, म. वं. 5.271; आरोचेसि कुमारस्स “वळवेत्थेदिसी” इति, म. वं. 10.54; 2.च. उद्धरण + क्रि. रू. रहित इति – सम्बुद्धो पटिजानासि, (इति सेलो ब्राह्मणो) धम्मराजा अनुत्तरो, थेरगा. 825; “रज्जो मुखम्हि पातेमि” इति कण्डं च सो खियि, म. वं. 25.89; “न युज्जिस्साम दमिक्केहि इति भुज्जथिमं–इति, म. वं. 22.82; 2.छ. एकल नामों अथवा नामपदों के पश्चात् उद्धरणचिह्न “ ” के स्थान पर प्रयुक्त – यथा हि अङ्गसम्मारा, होति सद्दो रथो इति, स. नि. 1(1).160; एको यक्खो इध्मागम्म रत्तक्खी इति विस्सुतो, म. वं. 36.82; कच्चायनो माणवकोस्मि राज, अनूननामो इति मद्ध्यन्ति, जा. अहु. 7.165; 2.ज. समुच्चय के रूप में परिगणित धर्म + इति + अन्य निपात – तत्थ वुत्ताभिधम्मत्था, चतुधा परमत्थतो, चित्तं चेतसिकं रूपं निब्बानमिति सब्बथा, अभि. घ. स. 1; “एवंसीला ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि एवंधम्मा ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंपञ्जा ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंविहारी ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंविमुत्ता ते भगवन्तो अहेसुं इतिपीति ?”, दी. नि. 3.73; इति पेतं अभूतं, यं तुम्हेहि वुत्तं, तं इमिनापि कारणेन अभूतं ..., दी. नि. अहु. 1.50.

इति<sup>2</sup> वइ (जाना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [एति], जाता है – तस्स इमानि रूपानि भवन्ति – इति एति उदेति, सद्. 2.315; इति इति क्रियासद्दो सुत्तन्तेसु न दिस्सति, सद्. 2.316; आगमने च होतीति धीमा लक्खेय्य, तं यथा, सद्. 2.317; इति इन्ति, इसि इथ, इमि इम अपरिपुण्णो वत्तमानानयो, सद्. 2.319.

इतिकत्तब्ब नपुं., [इतिकर्तव्य], इस प्रकार से करने योग्य, कर्तव्य, आचरणीय, उत्तम आचरण – ब्बानि प्र. वि., ब. व. – किंकरणीयानीति इतिकत्तब्बानि, अ. नि. अहु. 3.39; – ब्बेसु सप्त. वि., ब. व. – किंकरणीयेसूति इतिकत्तब्बेसु, अ. नि. अहु. 3.40; – ता स्त्री., इतिकत्तब्ब का भाव., सदाचार-परायणता, उत्तम आचरण के पालन की स्थिति – य त्. वि., ए. व. – तत्थ इतिकत्तब्बताय तुम्हाकं दस्सनाय आगन्तुं ओकासं न लभिन्ति आह, जा. अहु. 2.149; – सु सप्त. वि., ब. व. – इतिकत्तब्बतासु परमेन वेय्यसियेन समन्नागतो, थेरगा. अहु. 1.209; तासु तासु इतिकत्तब्बतासु विज्जुतं विजाननभावं पत्तोस्मि, चरिया. अहु. 216; सत्तानं इतिकत्तब्बतासु दक्खो अनत्तरो सहायभावं उपगच्छति, चरिया. अहु. 282.

इतिकात्तब्बकम्म नपुं., कर्म, स., भिन्न भिन्न प्रकार के करने योग्य कर्म, भिक्षुओं द्वारा किये जाने योग्य ऊंचे या छोटे-मोटे कर्म – म्मं प्र. वि., ए. व. – इति कात्तब्बकम्मन्ति तं तं भिक्खून् कात्तब्बं उच्चावचकम्मं चीवरविद्यारणादि, दी. नि. टी. (लीन.) 2.113.

इतिकार पु., ‘इति’ शब्द – रो प्र. वि., ए. व. – इतिकारो कारणत्थो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).60; इतिकारो निगमनत्थो, म. वं. टी. 593(ना.).

इतिकिरा स्त्री., इति + किर से व्यु., शा. अ., इस प्रकार से कहा गया, इस प्रकार से था, इस रूप में प्रतिवेदित किया गया, ला. अ., परम्परा, अनुश्रुति, जनश्रुति, किंवदन्ती – य त्. वि., ए. व. – मा अनुस्सवेन, मा परम्पराय, मा इतिकिराय, मा पिटकसम्पदानेन, अ. नि. 1(1).217; मा इतिकिरायाति एवं किर एतन्ति मा गण्हत्थ, अ. नि. अहु. 2.176; मा इतिकिराय, सद्. 3.738; न इतिहिंतिहं, न इतिकिराय, न परम्पराय, न पिटकसम्पदाय, न तक्कहेतु, न नयहेतु, महानि. 265; न इतिकिरायाति “एवं किर एतन्ति न होति, महानि. अहु. 314.

इतिचित्तमन/इतिचित्तसंकल्प त्रि., ब. स., शा. अ. 1. इस प्रकार के मन वाला, इस प्रकार के चित्त-संकल्प वाला, 2. इस प्रकार के चित्र-विचित्र संकल्पों वाला, ला. अ., प्राणिवध या मरण-हेतु प्रेरक मनोवृत्ति वाला – प्पो पु., प्र. वि., ए. व. – चित्तसङ्कप्पोति इमस्मिं पदे अहि ाकारवसेन इतिसद्दो आहरितब्बो, इदञ्चि “इतिचित्तसङ्कप्पो”ति एवं अवुत्तम्पि अधिकारतो वुत्तमेव होतीति वेदितब्बं, पारा. अहु. 2.39; तस्मा चित्तो नानप्यकारको सङ्कप्पो अस्साति

## इतिभवाभव

308

## इतिवृत्तक

चित्तसङ्कल्पोति एवमत्थो दद्व्यो, तदे, — नो पु., प्र. वि., ए. व. — अम्हो पुरिस, किं तुय्हिमिना पापकेन दुज्जीवितेन, मतं ते जीवित्ता सेय्योति इतिचित्तमनो चित्तसङ्कल्पो अनेकपरियायेन .... पारा. 86; इतिचित्तमनोति इति चित्तो इति मनो ... एत्थ च "मनो" तिइदं चित्तस्स अत्थदीपनत्थं वुत्तं, तेनेवस्स पदभाजने यं चित्तं तं मनोति, कङ्का. अड्ड. 125; इतिचित्तमनो चित्तसङ्कल्पो अनेक परियायेन मरणवण्णं वा संवण्णेय्य, मरणाय वा समादपेय्य .... पारा. 86; इतिचित्तमनोति यं चित्तं तं मनो, यं मनो तं चित्तं, चित्तसङ्कल्पोति मरणसञ्जी मरणचेतनो मरणाधिप्पायो, पारा. 87.

**इतिभवामव** पु., इति + भव + अभव अथवा इति + भव + आभव के योग से व्यु., 1. लाभ एवं हानि, 2. विभिन्न प्रकार की योनियों में पुनर्जन्म — कथा स्त्री., तत्पु. स., 1. वृद्धि (लाभ) एवं हानि से सम्बन्धित बातचीत, 2. विविध योनियों में जन्म ग्रहण करने के विषय में बातचीत, सत्ताइस प्रकार की तिरच्छानकथाओं की सूची में अन्तिम — थं द्वि. वि., ए. व. — अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्ति या, सेय्यधिदं — राजकथं चोरकथं ... समुद्वेखायिकं इतिभवामवकथं इति वा, म. नि. 2.191; — था प्र. वि., ए. व. — भवोति वुद्धि अभवोति हानि, इति भवो, इति अभवोति यं वा तं वा निरत्थकारणं वत्था पयतितकथा इतिभवामवकथा, दी. नि. अड्ड. 1.81; — हेतु अ., क्रि. वि., भिन्न-भिन्न प्रकार के जन्मों को पाने के निमित्त, विविध (सुखद) गतियों में जन्म पाने के लिए — इतिभवामवहेतु वा समणो गोतमो धम्मं देसेति, म. नि. 3.25; इतिभवामवहेतूति एवं इमं देसनामयं पुञ्जकरियवत्थुं निस्साय तस्मिं तस्मिं भवे सुखं वेदिस्सामीति धम्मं देसेतीति, म. नि. अड्ड. (उप.प.) 3.18; इतिभवामवहेतूति एत्थ इतीति निदस्सनत्थे निपातो, यथा चीवरादिहेतु, एवं भवामवहेतूपीति अत्थो, दी. नि. अड्ड. 3.186; — ता स्त्री., भाव., सम्पत्ति-विपत्ति, लाभ-हानि, शाश्वतवाद-उच्छेदवाद एवं पाप-पुण्य के विषय में दुविधाभरी मनोदशा — तं द्वि. वि., ए. व. — यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा, इति भवामवतञ्च वीतिवत्तो, चूळव. 320; इतिभवाभवतञ्च वीतिवत्तोति एत्था या एसा सम्पत्तिविपत्तिवुद्धिहानिस्सस्तुच्छेदपुञ्जपापवसेन इति अनेकप्पकारा भवामवता बुच्चयि, चतूहिपि मग्गेहि यथा सम्म्वं तेन तेन नयेन तं इतिभवामवतञ्च वीतिवत्तोति एवमत्थो दद्व्यो, चूळव. अड्ड. 109.

**इतिलोप** पु., तत्पु. स., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में ही प्रयुक्त [इतिलोप], 'इति' शब्द का लोप — पे सप्त. वि., ए. व. — इतिलोपे पठमा पठमाय, इतिसदस्स लोपद्वाने पठमाविभत्तियन्तं पदं पठमाविभत्तियन्तेन समसीयति .... सद्. 3.758.

**इतिवत्तब्बता** स्त्री., इति + वत्तब्ब (ऐसे कहा जाना चाहिए) का भाव., उचित रूप में कहे जाने की स्थिति — तं द्वि. वि., ए. व. — अनत्थे निमित्तं नाम परिवत्तन्ति सब्बथा, इतिवत्तब्बं नेव यातं लङ्कातलं तदा, चू. वं. 61.72; "आरम्भणं अलम्बित्वा तण्हाय अपवत्तं पत्तोति वत्तब्बतं नापज्जति, ध. प. अड्ड. 2.304.

**इतिवाद** पु., इति + वाद के योग से व्यु., इस या उस रूप में कहा जाना, वार्तालाप, गपशप, निरर्थक बातचीत — **पमोक्खानिसंसं** 1. पु., निरर्थक वार्तालाप से मुक्त हो जाने का लाभ — नयिदं भिक्खवे, ब्रह्मचरियं वुस्सति जनकुहनत्थं जनलपनत्थं, न लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं न इतिवादप्पमोक्खानिसंसत्थं, अ. नि. 1(2).31; न इतिवादप्पमोक्खानिसंसनत्थन्ति न तेन तेन कारणेन कतवादानिसंसत्थं, न वादस्स पमोक्खानिसंसत्थं, अ. नि. अड्ड. 2.267; 2. त्रि., ब. स., निरर्थक वार्तालाप से मुक्ति को अपने लिए महान लाभ-सत्कार मानने वाला — सा पु., प्र. वि., ब. व. — ते उपारम्भानिसंसा चेव धम्मं परियापुणन्ति इतिवादप्पमोक्खानिसंसा य यस्स वत्थाय धम्मं परियापुणन्ति तञ्चस्स अत्थं नानुभोन्ति, म. नि. 1.187; इतिवादप्पमोक्खानिसंसा चाति एवं वादप्पमोक्खानिसंसा, परेहि सकवादे दोसे आरोपिते तं दोसं एवं मोचेस्सामाति इमिनाव कारणेन परियापुणन्तीति अत्थो, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).13.

**इतिवृत्त'** नपु., [इतिवृत्त], घटना, पुण्यमय कृत्य — खण्डने त्वपदानं च इतिवृत्ते च कम्मणि, अभि. प. 943.

**इतिवृत्त'** नपु., खुदकनिकाय का चौथा स्वतन्त्र संग्रह, बुद्धशासन के नौ अङ्गों में छठा अंग, स. प. के अन्त. — इतिवृत्तोदान — चरियापिटक थेर-थेरी-विमानवत्थु-पेतवत्थु-नेतिद्वकथायो आचरियधम्मपालत्थेरो अकासि, सा. वं. 31.

**इतिवृत्तक** नपु., [बौ. सं. इतिवृत्तक], शा. अ., इस प्रकार से कहा गया, ऐसे कहा गया, ला. अ., नवांगबुद्धशासन का छठा अंग, खुदक-निकाय नामक निकाय का चौथा ऐसा संग्रह जो चार निपातों में विभक्त है। इसके एक सौ बारह

## इतिसच्चपरामास

309

## इतिहास

सुतो में प्रत्येक गद्यबद्ध सुत का आरम्भ 'वुत्तं हेतं भगवता' (भगवान द्वारा यह कहा गया) शब्दों से होता है तथा पद्यांश का प्रारम्भ 'तत्थेतं इति वुच्चति' से होता है — कं प्र. वि., ए. व. — "वुत्तंहेतं भगवता"ति आदिनयप्पवत्ता दसुत्तरसतसुत्तन्ता इतिवुत्तकन्ति वेदितब्बं, पारा. अट्ट. 1.22; स. प. के अन्त. — ब्रह्मजालादि ... खुदकपाठ—धम्मपद—उदान—इतिवुत्तक—सुत्तनिपाठ—विमानवत्थु—पेतवत्थु—थेरगाथा—थेरीगाथा—जातक—निदेस—पटिसम्भिता—अपदान—बुद्धवंस—चरियापिटकवसेन—पन्नरसम्भेदो खुदकनिकायोति इदं सुत्तन्तपिटकं नाम, पारा. अट्ट. 1.14; — अट्टकथा स्त्री., इतिवु. पर आचार्य धम्मपाल द्वारा लिखी गई परमत्थदीपिनी नामक अट्टकथा अथवा व्याख्या, स. प. के अन्त. — इतिवुत्तोदान चरियापिटक—थेर—थेरी—विमानवत्थु—पेतवत्थु—नेतिट्टकथायो आचरियधम्मपालथेरो अकासि, सा. वं. 31; — वण्णना स्त्री., आचार्य धम्मपाल द्वारा रचित इतिवु. की परमत्थदीपिनी नामक व्याख्या — य तु. वि., ए. व. — अत्थयोजना च इतिवुत्तकवण्णनाय अम्हेहि पकासितायेवाति तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बोति, उदा. अट्ट. 38; — यं सप्त. वि., ए. व. — तं परमत्थदीपनियं इतिवुत्तकवण्णनाय वुत्तनयेनेव वेदितब्बं, थेरगा. अट्ट. 1.166.

इतिसच्चपरामास पु., "यही सत्य है, दूसरा विचार असत्य है", इस रूप में सत्य का मिथ्या रूप में ग्रहण — इतिसच्चपरामासो दिट्ठिद्वाना समुस्सया, अ. नि. 1(2).47; "इतिसच्चं इतिसच्चं"ति गहणपरामासो च ... समुस्सितत्ता उग्गन्त्वा ठितत्ता समुस्सयाति वुच्चन्ति, ते सब्बेपि, अ. नि. अट्ट. 2.292; इति एवं सच्चन्ति परामासो इतिसच्चपरामासो, इदमेव सच्चं, मोघमज्जन्ति दिट्ठिया पवत्तिआकारं दस्सेति, इतिवु. अट्ट. 173.

इतिसद् पु., व्याकरणों में प्रयुक्त शब्द [इतिशब्द], 'इति' शब्द — दो प्र. वि., ए. व. — आख्यातवसेन गमने इतिसद्दो दिस्सति, सद्. 2.317; इमस्मिं पदे अधिकारवसेन इतिसद्दो आहरितब्बो, पारा. अट्ट. 2.39; इतिसद्दो चतूहिपि योगेहि सद्धिं योजेतब्बो, अ. नि. अट्ट. 2.249; इतिसद्दो आदिअत्थो पकारत्थो वा, उदा. अट्ट. 174; — लोप पु., तत्पु. स., व्याकरणों में ही प्रयुक्त [इतिशब्दलोप], 'इति' शब्द का लोप, स. प. के अन्त. — इतिसद्दलोपयोजनावसेन अज्जो सदसन्निवसेतो तेनेव अज्जो अत्थपटिवेधो च भवति, सद्. 1.263.

इतिहपरिवज्जित त्रि., तत्पु. स., शा. अ., इतिहास से रहित, अनैतिहासिक, ला. अ., पारम्परिक शिक्षा में अप्राप्त, स्वयं विचिन्तित, आत्मप्रत्यक्ष का विषय — तं प्र. वि., ए. व. — अनीतिहन्ति इतिहपरिवज्जितं, अपरपत्तियन्ति अत्थो, अ. नि. अट्ट. 2.267.

इतिहा स्त्री., इतिकिरा के अनुकरण पर इति + ह का विपरिवर्तित रूप, परम्परा से प्राप्त शिक्षा या विद्या, मौखिक परम्परा, परम्परा से चला आ रहा उपदेश — पारम्परियमेतिहामुपदेसो तथेतिहा, अभि. प. 412.

इतिहास पु., इति + ह + आस के योग से व्यु. [इतिहास], शा. अ., ऐसा निश्चित रूप से घटित हुआ था, ला. अ., इतिहास, परम्परा में चले आ रहे ऐसे आख्यान जिनमें पूर्वकाल में घटित घटनाचक्रों एवं उनसे सम्बद्ध व्यक्तियों का कालक्रमानुगत वर्णन हो, कथानकों के रूप में पूर्ववृत्त, वीरगाथा रूप में उपनिबद्ध ऐतिहासिक उपाख्यान, पौराणिक शैली में कहे गए प्राचीन घटनाक्रम एवं चरित्र — से सप्त. वि., ए. व. — लक्खणे इतिहासे च, सनिघण्डुसकेटुभे, पञ्चसतानि वाचेति, सधम्मो पारमिं गतो, सु. नि. 1026; लक्खणे इतिहासे च, सनिघण्डुसकेटुभे, अप. 1.14; इतिह आस, इतिह आसाति ईदिसवचनपटिसंयुत्ते पुराणसङ्घाते गन्थविसेसे, बु. वं. अट्ट. 80; — सं द्वि. वि., ए. व. — इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं, अथब्बणवेदं लक्खणं इतिहासं पुराणं निघण्डु केटुमं अक्खरप्पभेदं पदं वेय्याकरणं, मि. प. 173-174; — कथा स्त्री., तत्पु. स. [इतिहासकथा], परम्परा में चली आ रही प्राचीन घटनाओं अथवा व्यक्तियों की पौराणिक शैली की कथा — यं सप्त. वि., ए. व. — इतिहासकथायं च देवासुररणे पुरा दुस्सन्तादिमहीपेहि कतं च चरितभूतं, चू. वं. 64.44; — पञ्चम त्रि., ब. व. [इतिहासपञ्चम], पांचवें के रूप में इतिहास-सहित (चारो वेद) — मानं पु., ष. वि., ब. व. — तिण्णं वेदानं पारगू सनिघण्डुकेटुमानं साक्खरप्पभेदानं इतिहासपञ्चमानं पदको वेय्याकरणो, दी. नि. 1.76-77; म. नि. 2.341; आथब्बणवेदं चतुत्थां कत्वा इतिह आस, इतिह आसाति ईदिसवचनपटिसंयुत्तो पुराणकथासङ्घातो इतिहासो पञ्चमो एतेसन्ति इतिहासपञ्चमा, तेसं इतिहासपञ्चमानं वेदानं, दी. नि. अट्ट. 1.200; — पुराणादिनेकागमकथाविदू त्रि., इतिहास एवं पुराण आदि अनेक आगमों में प्राप्त कथाओं का ज्ञाता, प्र. वि., ए. व. — इतिहासपुराणादिनेकागमकथाविदू, चू. वं. 66.143.



## इतिहीतिह

310

इतो

इतिहीतिह नपुं. इतिह + इतिह के योग से व्यु., जनश्रुति, सुनी सुनाई बात, अफवाह, किंवदन्ती — हं प्र. वि., ए. व. — इदञ्च जातु मे दिद्वं नयिदं इतिहीतिहं, स. नि. 1(1).181; न यिदं इतिहीतिहन्ति इदं इतिह इतिहाति न तक्कहेतु वा नयहेतु वा पिटकसम्पदानेन वा अहं वदामि, स. नि. अहु. 1.194; न इतिहीतिहं, न इतिकिराय, न परम्पराय, महानि. 265; न इतिहीतिहन्ति 'एवं किर आसि, एवं किर आसी'ति न होति, महानि. अहु. 314; — हेन तृ. वि., ए. व. — 'इति आह इति आहा'ति एवं इतिहीतिहेन गहेतब्बं न होति, जा. अहु. 1.431; — परम्परा स्त्री., परम्परा में प्रचलित या परम्परा पर आधारित जनश्रुति अथवा किंवदन्ती, अविच्छिन्न रूप से पूर्वकाल से चली आ रही परम्परा में विद्यमान जनश्रुति — य तृ. वि., ए. व. — सो अनुस्सवेन इतिहीतिहपरम्पराय पिटकसम्पदाय धम्मं देसेति, म. नि. 2.199; ब्राह्मणानं पोरणं मन्तपदं इतिहीतिहपरम्पराय पिटकसम्पदाय, म. नि. 2.387; इतिहीतिह परम्परायाति एवं किर एवं किराति परम्परावेन आगतन्ति दीपेति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.298.

इतो अ., प. वि., प्रतिक्र. स्थानसङ्केतक निपा., 'इम' सर्वनाम से व्यु. [इत:], 1. यहां से, इधर से, इससे — सब्बस्सेव इमसहस्स इकारो होति थं-दानि-ह-तो-ध इच्छेतेसु, इत्थं, इदानी, इह, इतो, इध, क. व्या. 234; क्वचि तोप्यच्चयो होति पञ्चम्यत्थे, सब्बतो, यतो, ततो, कुतो, अतो, इतो, क. व्या. 250; क. किसी भी नाम के साथ उसके विशेष. के रूप में प्रयुक्त, इस ... से — अहं तं इतो अरञ्जतो नीहरित्वा वाराणसिमग्गे उपेस्सामि, जा. अहु. 4.229; अयञ्च तं अनुमोदति, एवमेतिस्सा इतो दुक्खतो मुत्ति भविस्सतीति, पे. व. अहु. 39; ख. प. वि. में अन्त होने वाले किसी भी नामपद के विना स्वतन्त्र प्रयोग, इससे — स्वायं गहीतो न हि मोक्खतो मे, जा. अहु. 4.435; संसारवट्टे सति न हि मोक्खो इतो अकुसलफलतो मम अत्थि, जा. अहु. 4.436; 'इतो रज्जो सुद्धं न दस्सामी'ति थेय्यचित्तं उप्पादेत्वा तं भण्डं आमसति, पारा. अहु. 1.287; ग. 'तर' प्रत्यय के योग से व्यु., 'उत्तरि' जैसे तुलनात्मक विशेष. के साथ अन्वित, इसकी तुलना में, इसकी अपेक्षा, इससे (कम या अधिक) — 'इतो बहुतरा भोगा ...' तथ इतो बहुतराति इमेसु चतूसु पासादेसु भोगेहि अतिरेकतरा भविस्सन्ति, जा. अहु. 3.180; द्वे तयो सङ्गमे कत्वा 'इतो उत्तरि मयं न सक्कोमा'ति रज्जो पण्णं पेरोसु, जा. अहु. 1.419; 'अत्थि नु खो, तात,

इमस्मिं ब्राह्मणकुले इतो उत्तरिस्मि सिक्खितब्बानि, उदाहु एत्तकानेवा'ति, मि. प. 9; घ. 'अज्ज' (दूसरा, भिन्न) के साथ अन्वित, इससे भिन्न, इससे अलग कुछ और — इतो अज्जं पन मनसिकरोन्तस्स पाकटं होति, पारा. अहु. 2.26; ... इतो अज्जासु जातीसु, अज्जेसु अत्तभावेसु, थेरगा. अहु. 1.190; ड. 'बहिद्धा' (बाहर) के साथ अन्वित, इस बुद्धशासन से — जायस्स धम्मस्स पदेसवत्ती, इतो बहिद्धा समणोपि नत्थि, दी. नि. 2.114; इतो बहिद्धाति मम सासनतो बहिद्धा, दी. नि. अहु. 2.162; इतो बहिद्धा पुत्थुअज्जवादिनन्ति आयस्मतो नागितत्थेरस्स गाथा, का उप्पसि ?, थेरगा. अहु. 1.197; 2. स्थानसूचक क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त, इस स्थान से, इस लोक से, वर्तमान भव या जन्म से, यहां, इधर, 2.क. यहां से, इस स्थान से — इतो गच्छाम सीवकाति वुत्ताकारदस्सनं, सिक्क, इतो गामन्ततो अरञ्जद्वानमेव एहि गच्छाम, थेरगा. अहु. 1.62; रागो च दोसो च इतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो इतोजा, इतो समुद्वाय मनोवितक्का, कुमारका धङ्गमिवोस्सजन्ति, सु. नि. 274; इतो किर सुवण्णभूमि सत्तमतानि योजनसतानि होति, एकेन वातेन गच्छन्ती नावा सत्तहि अहोरोत्तेहि गच्छति, अ. नि. अहु. 1.364; 2.ख. इस लोक से, इस भव से अथवा वर्तमान भव से — इतो गतो हिंसेय्य मच्चुराजं, सो हिंसितो आनेय्य पुन इधा'ति, जा. अहु. 2.203; इतो भो सुगतिं गच्छ, मनुस्सानं सहब्यत्तं, इतिवु. 56; 2.ग. यहां, इधर — इतोपि ते ब्रह्मे ददन्तु वित्तं ... इतोपि ते ब्रह्मेति बाह्मण, इतो मम पादमूलतोपि तुहं धनं ददन्तु, जा. अहु. 3.308; इतो सुत्वा अमुत्र अक्खाता इमेसं भेदाय, म. नि. 1.360; 'इतो हि खो अहं, भो, आगच्छामि समणस्स गोतमस्स सन्निका'ति, म. नि. 1.236; 3. कालसूचक क्रि. वि. के रूप में, इस काल से (लेकर), क. अतीतकाल के सन्दर्भ से, अब से ... पूर्वकाल में, आज से ... दिन/वर्षों पूर्व — 'इतो खो सो, वच्छ, एकनवुतो कप्पो यमहं अनुस्सरामि, म. नि. 2.159; यं तं सरणमागमह, इतो अट्ठमि चक्खुम, सु. नि. 575; पठमं इदं दस्सनं जानतो मे, न ताभिजानामि इतो पुरत्था, जा. अहु. 4.88; ख. भविष्यकाल के सन्दर्भ से, आज से ... उपरान्त, अब से ... उपरान्त, अब से लेकर — इतो पट्ठाय न सोचिस्सामि, पे. व. अहु. 35; 'इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती'ति, स. नि. 3(2).336; मा निक्खम, इतो ते सत्तमे दिवसे चक्करतनं पातुभविस्सति, जा. अहु. 1.73; 'मारिसा इतो

## इतोततो

311

## इत्तरजीवित

वरससतसहस्सरस अच्ययेन कप्पुद्धानं भविस्सति, जा. अहु. 1.58; — ज त्रि., इसमें उत्पन्न, इससे उदभूत — जो पु., प्र. वि., ए. व. — अलुत्तविभक्तिकेन पदेन सह पदानं समासो होति ... मनसिकारो, कण्ठेकालो, कुटोजो, ततोजो, इतोजो ..., सद्. 3.743; — जा पु., प्र. वि., ब. व. — रागो च दोसो च इतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो इतोजा, सु. नि. 274; इतोजाति इतो अत्तभावतो जाता, महानि. अहु. 53; — निदान त्रि., ब. स., इसके कारण से उत्पन्न, इसे (पूर्व में निर्दिष्ट को) हेतु एवं प्रत्यय बना कर उत्पन्न — ना पु., प्र. वि., ब. व. — रागो च दोसो च इतोनिदाना ..., सु. नि. 274; इतोनिदानाति अयं अत्तभावो निदानं पच्चयो एतेसन्ति इतोनिदाना, महानि. अहु. 53; — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आसा च निद्धा च इतोनिदाना, सु. नि. 871; इतोनिदानाति छन्दनिदाना एवाति वुत्तं होति, सु. नि. अहु. 2.244; — नं पु., द्वि. वि., ए. व. — विभवं भवज्वापि यमेतमत्थं, एतं ते पबूमी इतोनिदानं, सु. नि. 876; 'भवदिद्धिपि फस्सनिदाना, विभवदिद्धिपि फस्स निदाना'ति निदेसे वुत्तं इतोनिदाननत्ति फस्सनिदानं, सु. नि. अहु. 2.245; इतोनिदानञ्च खो, मोघपुरिस, कायरस भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं, पारा. 22; — समुद्धान त्रि., ब. स., इस (सद्यःनिर्दिष्ट) में से उत्पन्न होने वाला — ना पु., प्र. वि., ब. व. — इतोसमुद्धाना कुसला सङ्कप्पा, तमहं थपति, वेदितव्वन्ति वदामि, म. नि. 2.227; इतो, सरागादिचित्तो समुद्धानं उप्पत्ति एतेसन्ति इतोसमुद्धाना, म. नि. अहु. (म.प.) 2.189.

इतोततो अ., निपा. [इतरततः], इधर-उधर — इतो ततो भमन्तीहं, अइसं नरसारथिं, धेरीगा. अहु. 127.

इत्त नपुं., इ का भाव. [इत्त्वं], इकार वर्ण अथवा 'इ' स्वर की स्थिति — त्तं द्वि. वि., ए. व. — एकवचनसं-सासु तासदस्स आ इत्तं वा याति, बाला. 2.1.13(पृ.105).

इत्तर त्रि., √इ (जाना) से व्यु. [इत्तर, √इण् + क्वरप्], शा. अ., जा रहा, चल रहा, गतिशील, ला. अ., क्षणभङ्गुर, चञ्चल, अस्थिर, अनित्य, हीन, निकृष्ट, तुच्छ, निन्दनीय, अत्यन्त अल्प, बहुत कम — निहीन हीन लामका पतिकिद्धं निकिद्धं च इत्तरावज्ज कुच्छिता अधमोमकगारखा, अभि. प. 699-700; — रो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्तरो च वासो भविस्सति, महाव. 100; — रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तज्झि तस्स मुसा होति, मोसधम्मज्झि इत्तरं, सु. नि. 762; मोसधम्मज्झि इत्तरं, यस्मा यं इत्तरं परित्तपच्चुपद्धानं,

तं मोसधम्मं नस्सन्धम्मं होति ..., सु. नि. अहु. 2.205; इध मनुस्सलोके सत्तानं जीवितमपि इत्तरं परित्तं अप्पकं पे. व. अहु. 51; — रं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — न तम्मि सुखं लब्धति इत्तरमपि ... तत्थ इत्तरमपीति परित्तकम्मि, विधावन्तन्ति विविधा धावन्तं, जा. अहु. 7.137; — रं पु., द्वि. वि., ए. व. — ते दीघा इत्तरमद्धानं निक्खमन्ता च पविसन्ता च रस्साति वेदितव्वं, विसुद्धि. 1.260; — रानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — चित्तानि ... अज्जमज्जं न परस्सन्तीति, इत्तरानि तावकालिकानि होन्ति, दी. नि. अहु. 1.159; — रा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — यथा च माया इत्तरा लहुपच्चुपद्धाना, एवं विज्जाणं, स. नि. अहु. 2.284; — रे पु., द्वि. वि., ब. व. — इमेसं सत्तानं आयुसङ्गारे इत्तरे दुब्बले कत्वा, जा. अहु. 4.189; — रेन तृ. वि., ए. व. — तञ्च खो दीघेन अद्धाना न इत्तरन्ति तञ्च सीलं दीघेन कालेन वेदितव्वं, न इत्तरेन, द्वीहीतीहज्झि संयताकारो च संवुत्तिन्द्रियाकारो, स. नि. अहु. 1.131.

इत्तरकाल त्रि., ब. स., अल्पकालीन, अल्प कालावधि वाला, क्षणिक — लं नपुं., प्र. वि., ए. व. — परित्तञ्च न बहुकं इत्तरकालं, जा. अहु. 4.101; किञ्च भिय्यो निब्बानस्स इत्तरकालादिप्पत्तिदोसतो एवज्झि सति निब्बानं इत्तरकालं सङ्गतलक्खणं ... आपज्जति, विसुद्धि. 2.138; — लोभासन नपुं., तत्पु. स., अत्यन्त अल्प समयावधि के लिए प्रकाशित करना — नेन तृ. वि., ए. व. — इत्तरकालोभासनेन विज्जुसदिसयित्तो, अ. नि. अहु. 2.93; — द्वितिकत्त नपुं., भाव., बहुत कम समय ही स्थित रहने की प्रकृति, क्षण-भङ्गुरता — त्ता प. वि., ए. व. — लोलोति सद्दादीनं इत्तरकालद्वितिकत्ता अरसाद्धियादीहि लुलितभावेन लोलो, प. प. अहु. 93.

इत्तरजच्च त्रि., [इत्तरजात्य/इत्तरजात्य], अत्यन्त निचली जाति में उत्पन्न, नीच कुल में जन्म लेने वाला, अकुलीन, अपने से असमान कुल में उत्पन्न — च्चो पु., प्र. वि., ए. व. — यत्र हि नामायं घटिकारो कुम्भकारो इत्तरजच्चो समानो, म. नि. 2.249; इत्तरजच्चोति अज्जजातिको, मया सद्धिं असमानजातिको, लामकजातिकोति अत्थो, म. नि. अहु. (म.प.) 2.200.

इत्तरजीवित त्रि., ब. स., बहुत कम जीवनावधि वाला, अल्पायु — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — अपिच त्वं मया ... ठपेत्वा एवं इत्तरजीविते लोकसन्निवासे अप्पमत्तो हुत्वा, जा. अहु. 4.195; स. उ. प. में, अति.- अत्यन्त कम आयु

## इत्तरतर

312

## इत्तरसद्ध

वाला — ता पु., प्र. वि., ब. व. — यत्तकं परित्यायुका, अतिइत्तरजीविताति अत्थो, उदा. अट्ट. 225.

इत्तरतर त्रि., इत्तर से व्यु., तुल. विशेष. [इत्तरतर], अधिक चञ्चल, अधिक अस्थिर, अधिक तुच्छ या निकृष्ट — रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — तज्झि ततोपि इत्तरतरञ्चेव लहुपच्चुपद्धानतरञ्च, स. नि. अट्ट. 2.284.

इत्तरता स्त्री., इत्तर का भाव. [इत्तरत्व], अस्थिरता, चञ्चलता, अविश्वसनीयता, बेईमानी — य तृ. वि., ए. व. — इत्थी पञ्जाय इत्तरताय मन्तितं गुह्यं विवरति न धारेति, मि. प. 104.

इत्तरदस्सन नपुं., तत्पु. स., सरसरी तौर पर देखना, विहङ्गम दृष्टि से देखना, जल्दबाजी में देखना, ऊपरी तौर पर देखना, बिना किसी गम्भीरता के देखना, हलके-फुलके तौर पर देखना — नेन तृ. वि., ए. व. — मा ब्राह्मण इत्तरदस्सनेन विस्सासमापज्जि यत्पुदस्स, जा. अट्ट. 3.71; न वण्णरूपेन नरो सुजानो, न विस्ससे इत्तरदस्सनेन, स. नि. 1(1).96; इत्तरदस्सनेनाति लहुकदस्सनेन, स. नि. अट्ट. 1.132.

इत्तरपच्चुपद्धान त्रि., ब. स. [इत्तरप्रत्युपस्थान], क्षणिक प्रकृति के स्वभाव वाला, क्षणभङ्गुर, क्षणिक आविर्भाव वाला, क्षणिक आभास वाला — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — एवं इत्तरपच्चुपद्धानं अवस्सं पहातब्बं, जा. अट्ट. 5.104; — नट्ट पु., क्षणभङ्गुर होने का अर्थ — द्वेन तृ. वि., ए. व. — 'सुपिनकूपमा कामा इत्तरपच्चुपद्धानद्वेना'ति, महानि. 5; इत्तरपच्चुपद्धानद्वेनाति अप्यत्वा, न उपगन्त्वा तिद्वनद्वेन, महानि. अट्ट. 25; स. उ. प. के रूप में, खणिक ... — पु., क्षणभङ्गुर एवं अस्थिर प्रकृति से युक्त होने का तात्पर्य — द्वेन तृ. वि., ए. व. — एवमेव खणिकइत्तरपच्चुपद्धानद्वेन अयं कायोपि मरीचि धम्मोति, ध. प. अट्ट. 1.191.

इत्तरपञ्ज त्रि., ब. स. [इत्तरप्रज्ञ], निकृष्ट या अधम प्रज्ञा वाला, साधारण प्रज्ञा वाला — ज्जेन पु., तृ. वि., ए. व. — 'नेसो अज्जेन इत्तरपञ्जेन सक्का विस्सज्जेतुं अज्जत्र तवादिसेन बुद्धिमता'ति, मि. प. 121.

इत्तरपुरिस पु., कर्म. स., सामान्य जन, पृथग्जन, अज्ञानी जन — सेन तृ. वि., ए. व. — अद्धा इदं मन्तपदं अज्जेन इत्तरपुरिसेन सुदुदसं, जा. अट्ट. 6.241; पाठा. इतर.

इत्तरपेम त्रि., ब. स., अस्थिर रूप में प्रेम करने वाला, वह, जिसका प्रेम डांवाडोल रहता है, असुदृढ़ प्रेम वाला — गो

पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती इत्तरपेमो इत्तरप्पसादो, अ. नि. 2(1).155.

इत्तरप्पसाद त्रि., ब. स. [इत्तरप्रसाद], अस्थिर अथवा डांवाडोल श्रद्धाभाव से युक्त — दो पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती इत्तरपेमो इत्तरप्पसादो, अ. नि. 2(1).155.

इत्तरमत्ति त्रि., ब. स. [इत्तरभक्ति], अस्थिर अथवा डांवाडोल रूप में भक्ति-भाव रखने वाला — ती पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती ..., अ. नि. 2(1).155.

इत्तरभाव पु., [इत्तरभाव], क्षणभङ्गुरता, अस्थिर स्वभाव, चञ्चल प्रकृति — वं द्वि. वि., ए. व. — इत्तरभावं दस्सेत्वा ..., जा. अट्ट. 4.189; ये ते मनुस्सा मनुस्सानं भोगानं जीवितस्स च इत्तरभावं याथावतो जानन्ति, पे. व. अट्ट. 51.

इत्तरवास पु., कर्म. स. [इत्तरवास], अल्पकालिक निवास, क्षणमात्र के लिए स्थिति, कुछ ही समय के लिए निवास — सो प्र. वि., ए. व. — इत्तरवासोति जानियान्, उदये मा पमाद चरस्सु धम्मन्ति, जा. अट्ट. 4.100; इत्तरवासोति या एसा इमस्मिं संसारे मनुस्सभूता सुग्गति च तिरच्छानभूता दुग्गति च, एतं उभयमि 'इत्तरवासो'ति ... चरस्सु धम्मं, जा. अट्ट. 4.101.

इत्तरसङ्घात त्रि., तत्पु. स., अत्यन्त अस्थिर अथवा अत्यन्त संक्षिप्त काल के रूप में माना गया, अल्पावधिक काल के रूप में ज्ञात — तो सप्त. वि., ए. व. — रस्सं अस्सासं इत्तरसङ्घाते अस्ससति, पटि. म. 174; 'रस्सं अस्सासं इत्तरसङ्घाते अस्ससती'ति, विसुद्धि. 1.261.

इत्तरसत्त पु., कर्म. स. [इत्तरसत्त्व], साधारण जीव, सामान्य प्राणी, अधम अथवा नीच प्राणी — तो प्र. वि., ए. व. — न खो पनेस इत्तरसत्तो, बुद्धङ्करो एस्स, जा. अट्ट. 4.331; सचे अयं इत्तरसत्तो अभविस्स, न अम्हाकं आचरियो एवरुपं उपमं आहरेय्य ..., अ. नि. अट्ट. 1.121; — ता ब. व. — पब्बजित्वा च पन इत्तरसत्ता विद्य पतितसिद्धा न होन्ति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.200.

इत्तरसद्ध त्रि., ब. स. [इत्तरश्रद्ध], डगमग अथवा अस्थिर श्रद्धा वाला, अपरिपूर्ण श्रद्धाभाव से युक्त, अत्यन्त दुर्बल श्रद्धाभाव वाला — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्तरसद्धोति परित्तकसद्धो, अ. नि. अट्ट. 3.52; इत्तरसद्धोति परित्तसद्धो, अपरिपुण्णसद्धो, प. प. अट्ट. 93.

## इत्तरसमापन्न

313

## इत्थन्नाम

इत्तरसमापन्न त्रि., कुछ समय पूर्व ही (किसी स्थिति विशेष) प्राप्त किया हुआ, कल या परसों ही प्राप्त किया हुआ — न्नो पु., प्र. वि., ए. व. — दीघरत्तं समापन्नो अयमायस्मा इमं कुसलं धम्मं, उदाहु इत्तरसमापन्नोति, म. नि. 1.400; ... उदाहु इत्तरसमापन्नो हिय्यो वा परे वा परसुवे वा दिवसे समापन्नोति एवं गवेसतूति अत्थो, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).276.

इत्तरसम्पयुत्त त्रि., तत्पु. स., निम्न श्रेणी के लोगों के साथ जुड़ा हुआ, निम्न प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा प्रयोग में उतारा गया — ता पु., प्र. वि., ब. व. — अनित्तरा इत्तरसम्पयुत्ता, यज्जा च वेदा च सुभोग लोके, जा. अहु. 7.46; तत्थ अनित्तराति सुभोग इमस्मि लोके यज्जा च वेदा च अनित्तरा न लामका महानुभावा, ते इत्तरेहि ब्राह्मणेहि सम्पयुत्ता ..., जा. अहु. 7.47.

इत्तरानुपरसना स्त्री., तत्पु. स., अनित्यता अथवा क्षणभङ्गुरता की अनुपशयना अथवा तदविषयक ज्ञान-दर्शन — ना प्र. वि., ब. व. — अनिच्चानुपरसनाय सिद्धाय इत्तरानुपरसना सुखेनेव सिज्झन्तीति, थेरगा. अहु. 1.240.

इत्थं / इत्थ अ., प्रकारवाचक निपा., 'इमं' सर्वनाम से व्यु. [इत्थम], क. ऐसे, इस रीति से, इस प्रकार से — इति-त्थं च एवं किच्छे कथञ्चि च, अभि. प. 1158; इत्थं, इदानी, इह, इतो, इध, क. व्या. 234; इत्थं सुदन्ति एत्थ इत्थन्ति निदस्सन्तथे निपातो, इमिना पकारेणाति अत्थो, अप. अहु. 1.245; 'एवमि ते मनो, इत्थमि ते मनो, इतिपि ते चित्ति, दी. नि. 1.197; ख. किसी अनुच्छेद (पैरा) के प्रारम्भ में प्रयुक्त होने पर पूर्व अनुच्छेदों में कथित विषयों का संकेतक — 'इत्थं खो मे भन्ते, सज्जयो वेलट्ठपुत्तो सन्दिट्ठिकं सामज्जफलं पुट्ठो समानो विक्खेपं व्याकासि, दी. नि. 1.52.

इत्थंगोत्त त्रि., ब. स., इस इस गोत्र वाला, अमुक गोत्र का, अमुक कुलपरम्परा से सम्बद्ध — ते स्त्री., संबो, ए. व. — इत्थिं वा कुमारिं वा एवमाह इत्थनामे इत्थंगोत्ते किं अत्थि?, महानि. 168.

इत्थत्त' नपुं., इत्थं अथवा इत्थ का भाव. [बौ. सं., इत्थत्त्व], ऐसा ऐसा होना, इस प्रकार की अवस्था, विद्यमान स्थिति, वर्तमान जीवन, सामने दिखलाई दे रहा यह लोक, यह संसार — त्तं प्र. वि., ए. व. — व्यायं 'इत्थत्तं दिट्ठधम्मो इधलोकोति च लद्धवोहारो खन्धादिलोको, उदा. अहु. 318; — त्तं द्वि. वि., ए. व. — देवा आगन्तारो इत्थत्तं, यदि वा अन्तागन्तारो इत्थत्तं, म. नि. 2.338; — त्ताय च.

वि., ए. व. — इत्थत्तायाति इत्थभावाय एवं परिपुण्णपच्चखन्द् भावायाति अत्थो, दी. नि. अहु. 2.82; नापरं इत्थत्तायाति इदानी पुन इत्थभावाय एवं सौत्तसकिच्चभावाय किलेसस्खयाय वा मग्गभावायाकिच्चं मे नत्थीति अभज्जासि, पारा. अहु. 1.127; इत्थत्तायाति इमे पकारा इत्थं, तब्भावो इत्थत्तं, तदत्थाय, वि. वि. टी. 1.75.

इत्थत्तं / इत्थित्त नपुं., इत्थी का भाव. [स्त्रीत्व], नारीत्व, स्त्री की अवस्था में रहना, नारीपन, स्त्री का स्वभाव — त्तं प्र. वि., ए. व. — इत्थिया भावो इत्थत्तं, पुरिसस्स भावो पुरिसत्तं, तत्थ इत्थिलिङ्ग निमित्तकुत्ताकप्पहेतुभावलक्खणं ... पुरिसत्तं, अभि. ध. वि. टी. 175; इत्थत्तं इत्थिभावोति उभयमपि एकत्थं, इत्थिसभावोति अत्थो, ध. स. अहु. 354; इत्थत्ते भिक्खवे, अभिरता सत्ता पुरिसेसु संयोगं गता, एवं खो भिक्खवे, इत्थी इत्थत्तं नातिवत्तति, अ. नि. 2(2).203; — त्तं द्वि. वि., ए. व. — सा इत्थित्तं विराजेत्वा पुरिसत्तं भावेत्वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं समगं लोकं उपपन्ना, दी. नि. 2.199; — ते सप्त. वि., ए. व. — इत्थित्तं नाम अलं, न हि इत्थित्ते उत्त्वाचक्कवत्तिसिं, दी. नि. अहु. 2.268.

इत्थन्तर त्रि., नारी-सारथी से युक्त — रेन नपुं., तृ. वि., ए. व. — छब्बगिया भिक्खुनियो यानेन यायन्ति — इत्थियुत्तेनपि पुरिसन्तरेन, पुरिसयुत्तेनपि इत्थन्तरेन, चूळव. 442; इत्थियुत्तेनाति धेनुयुत्तेन पुरिसन्तरेनाति पुरिससारथिना, पुरिसयुत्तेनाति गोणयुत्तेन, इत्थन्तरेनाति इत्थिसारथिना, महाव. अहु. 347.

इत्थन्नाम त्रि., ब. स., अमुक नाम वाला, इस नाम का, इस इस नाम वाला — भो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थं च नाम, नामसद्दे परे समासे वत्तमानस्स इदसदस्स इत्थमिच्चादेसो होति, इदं नाम एतस्सा ति इत्थन्नामो एवं नामो ति अत्थो, सद. 3.686; इत्थन्नामो किर भिक्खु आसवानं खया ... विहरति, अ. नि. 1(2).168; यनूनाहं कोसिनारके मत्ते कुलपरिवत्तसो उपेत्वा भगवन्तं वन्दापेय्यं — 'इत्थन्नामो, भन्ते, मत्तो सपुत्तो सभरियो सपरिसो सामच्चो भगवतो पादे सिरसा वन्दती'ति, दी. नि. 2.112; — मा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — भिक्खुनी सुणाति, 'इत्थन्नामा भिक्खुनी कालङ्कता', म. नि. 2.138; इत्थन्नामा, भन्ते भिक्खुनी आबाधिकिनी दुक्खिता बाळहमिलाना, अ. नि. 1(2).166; — मे स्त्री., संबो, ए. व. — इत्थंनामे इत्थंगोत्ते किं अत्थि? यागु अत्थि, भत्तं अत्थि, खादनीयं अत्थि, महानि. 168; —

## इत्थभाव / इत्थम्भाव

314

इत्थागार

स्स पु., च. वि., ए. व. — इत्थन्नामस्स दाने दीयमाने सकिं वा द्विक्खत्तुं वा तिक्खत्तुं वा महापथवी कम्पिता ति, मि. प. 123; सङ्गो इमं कथिनदुस्सं इत्थन्नामस्स भिक्खुनो देति कथिनं अत्थरितुं, महाव. 331; — मं पु., द्वि. वि., ए. व. — सङ्गो इत्थन्नामं उपसम्पादेति इत्थन्नामेन उपज्झायेन, महाव. 63; — माय स्त्री., प. वि., ए. व. — इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अप्याय उपसम्पादापेक्खा, चूळव. 437.

**इत्थभाव / इत्थम्भाव** पु., इत्थं / इत्थ (= एत्थ) + भाव के योग से व्यु., शा. अ., 1. इस इस प्रकार की स्थिति अथवा अवस्था, 2. यहीं की स्थिति या जीवन, ला. अ., इसी लोक का जीवन, ऐहलौकिक अस्तित्व, मानव आदि के इसी रूप की अवस्था — वं द्वि. वि., ए. व. — इत्थत्तन्ति इत्थभावञ्च पत्थयमाना, मनुस्सादिभावं इच्छन्ताति वुत्तं होति, सु. नि. अट्ठ. 2.279; जानन्तो एव च नेसं इत्थभावं मनुस्सभावं ततो अज्जथाभावं अज्जथातिरच्छानभावञ्च उपपत्तिनो पुरेतरमेव जानामि, थेरगा. अट्ठ. 2.294; — वाय च. वि., ए. व. — नापरं इत्थत्तायाति इदानी पुन इत्थभावाय एवं सोळसकिच्चभावाय किलेसक्खयाय वा मग्गभावनाकिच्चं मे नत्थीति अज्जआसिं, पारा. अट्ठ. 1.127; इदानी पुन इत्थभावाय, स. नि. अट्ठ. 1.181; — वज्जथाभाव पु., इस प्रकार का अथवा दूसरे प्रकार की अवस्था या अस्तित्व, इस स्वरूप में अथवा दूसरे रूप में जीवन — वं द्वि. वि., ए. व. — इत्थभावज्जथाभावं, सत्तानं आगतिं गतिं न्ति, म. नि. 1.412; इत्थंभावज्जथाभावन्ति इत्थंभावोति इदं चक्खवाळं, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).301; इत्थभावज्जथाभावं, ज्ञाने पञ्चङ्गिके ठितो, थेरगा. 917; जातिमरणसंसारं, ये वज्जन्ति पुनपुनं इत्थभावज्जथाभावं अविज्जायेव सा गति, सु. नि. 734.

**इत्थम्भूत** त्रि., शा. अ., 1. इस प्रकार का, इस इस विद् अथवा लक्षणों वाला, ऐसी ऐसी स्थिति को प्राप्त, 2. व्याकरण में, उप. अनु के अनेक अर्थों में से "विशिष्ट लक्षण वाला" अर्थ का द्योतक — लक्खणवीच्छेत्थम्भूतभागादिके अनु. अभि. प. 1174; लक्खणित्थम्भूत वीच्छास्वाभिना, मो. व्या. 2.10; — तो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थम्भूतो ति इमं प्रकारं भूतो पत्तो, सट्ठ. 2.555; — ता पु., प्र. वि., ब. व. — इत्थम्भूता बुद्धा, अप. अट्ठ. 1.111; — तक्खान / ताख्यान नपुं., व्याकरणों का पारिभाषिक शब्द [इत्थंभूताख्यान], किसी व्यक्ति या वस्तु के विशिष्ट लक्षणों से युक्त होने का कथन, विशिष्ट लक्षणों का प्रकाशन —

नं प्र. वि., ए. व. — एत्थ व तं खो पन भवन्तं गोतमं एवं कल्याणो कित्सिद्धो अभुगतोति पदसमुदायो इत्थम्भूतक्खानं, क. व्या. 301; — ने सप्त. वि., ए. व. — तेन युत्तत्ता इत्थम्भूतक्खाने भवन्तं गोतमं ति पदे साम्यत्थे दुत्तिया, क. व्या. 301; — नत्थ पु., [इत्थम्भूताख्यानार्थ], विशिष्ट लक्षणों के कथन का तात्पर्य — त्थे सप्त. वि., ए. व. — तं खो पनाति इत्थम्भूताख्यानत्थे उपयोगवचनं, तस्स खो पन भोतो गोतमस्साति अत्थो, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).224; — लक्खण नपुं., [इत्थम्भूतलक्षण], मानक विद्, मानक लक्षण — णे सप्त. वि., ए. व. — इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं, थेरगा. अट्ठ. 2.60; इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं दट्ठब्बं, थेरगा. अट्ठ. 2.93; पासादिकेन वत्तेनाति वा इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं, थेरगा. अट्ठ. 2.95.

**इत्थाकप्प** पु., तत्पु. स., स्त्रियों का सज्जना संवरना, नारियों की साज सज्जा अथवा पहनना ओढ़ना, स्त्रियों का हावभाव या चाल ढाल — पं द्वि. वि., ए. व. — इत्थी, भिक्खवे, अज्जत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति — इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पं ... इत्थिस्सरं इत्थालङ्कारं, अ. नि. 2(2).203; इत्थाकप्पन्ति निवासनपारुपनादिइत्थिआकप्पं अ. नि. अट्ठ. 3.169; — प्पो प्र. वि., ए. व. — यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो — इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं, ध. स. 632, 714; आकप्पोति गमनादिआकारो इत्थियो हि गच्छमाना अविसदा गच्छन्ति ..., ध. स. अट्ठ. 353; इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पोति इमानि लिङ्गादीनि इत्थिन्द्रियस्स फलत्ता वुत्तानि, ध. स. अट्ठ. 403.

**इत्थाकर** पु., तत्पु. स., स्त्रीरूपी रत्न का उत्पत्तिस्थान — रो प्र. वि., ए. व. — इत्थाकरोति इत्थिरतनस्स उत्पत्तिद्धानं, स. नि. टी. 2(1).146.

**इत्थागार** नपुं., तत्पु. स. [स्त्र्यागार], नारीसमूह, मातृग्राम, अन्तःपुर का स्त्रीसमूह, अन्तःपुर, अवरोध, जनानखाना, रनिवास — इत्थागारं तु ओरोधो सुद्धन्तोन्नेपुरं पि च. अभि. प. 215; इत्थागारन्तु ओरोधो उब्बरीति पि वुच्चति, सट्ठ. 2.347; — रं प्र. वि., ए. व. — राजा च मे मागधो सेनियो बिम्बिसारो उपद्दातब्बो इत्थागारञ्च बुद्धप्पमुखो च भिक्खुसङ्गो, महाव. 91; इत्थागारं सुभदाय देविया पटिस्सुत्त्वा सीसानि न्हायित्वा पीतानि वत्थानि पारुपित्वा येन सुभदा देवी तेनुपसङ्गमि, दी. नि. 2.141; — रं द्वि. वि., ए. व. — विपरीतं इत्थागारं दिस्वा विप्पटिसारी अहोसि, मि. प. 264; — स्स ष. / च. वि., ए. व. — घरसामिको विय इत्थागारस्स

## इत्थाधिप्पाय

315

## इत्थिकुत्त

मज्जे निसिन्नोसि, स. नि. अट्ट. 1.284; तत्थ इत्थागारस्स दानं दीयित्थ, मम दानं पटिकमि, स. नि. 1(1).72; — रेहि तू, वि., ब. व. — यहिमनुविचरि राजा, परिकिण्णो इत्थागारेहि, जा. अट्ट. 5.180; अनेकेहि व इत्थागारेहि इत्थियो केसमस्सुं ओहारेत्वा, दी. नि. 2.183; इत्थागारेहीति दासियो उपादाय इत्थियो इत्थागारा नाम ..., जा. अट्ट. 5.181; — रेसु सप्त, वि., ब. व. — इत्थागारेसु सेसेसु विना समकुलङ्गना गम्भो जातु महीपालं तं पटिच्च न सटाहि, चू. वं. 59.33; — सहस्स नपुं, हजारों अन्तःपुर-निवासी नारियां — स्सानं प. वि., ब. व. — चतुरासीतिया इत्थागारसहस्सानं अमच्चपारिसज्जादीनञ्च, चरिया, अट्ट. 43; — जन पु, अन्तःपुर के लोग (नारियो) — ने द्वि. वि., ब. व. — अत्तङ्कतपटियत्ते इत्थागारजने उपगन्त्वा ..., अप. अट्ट. 2.19. **इत्थाधिप्पाय** त्रि., ब. स., स्त्रियों की इच्छा करने वाला, नारी के प्रति स्पृहालु — यो पु., प्र. वि., ए. व. — पुरिसो भिक्खवे, इत्थाधिप्पायो अप्प रत्तिया सुपति, अ. नि. 2(1).147.

**इत्थाधिमुत्त** त्रि., तत्पु. स., स्त्रियों के प्रति मानसिक रुझान रखने वाला — ता पु., प्र. वि., ब. व. — ... केवि इत्थाधिमुत्ता, केवि पुरिसाधिमुत्ता ..., नेति. 80.

**इत्थाधिवचनकुसल** त्रि., व्याकरणों में प्रयुक्त, स्त्रीलिङ्ग के प्रयोग में कुशल — लो प्र. वि., ए. व. — इत्थाधिवचनकुसलो, नेति. 29.

**इत्थालङ्कार** पु., तत्पु. स., स्त्रियों के आभूषण या गहने, नारियों की अलङ्करण-सामग्री या सजने संवरने के उपकरण — रो प्र. वि., ए. व. — इत्थालङ्कारो नाम सीसूपगो गीवूपगो हत्थूपगो पादूपगो कटूपगो, पाचि. 472; — रं द्वि. वि., ए. व. — इत्थालङ्कारं धारेन्तिया पाचितियं कत्थ पञ्चतन्ति, परि. 134; इत्थालङ्कारं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति, परि. 153; इत्थालङ्कारन्ति इत्थिया पसाधनभण्डं, अ. नि. अट्ट. 3.169.

**इत्थि** द्रष्ट. इत्थी के अन्तः.

**इत्थिअङ्ग** पु., तत्पु. स., स्त्रीभाव, नारीत्व, स्त्री-शरीर, स्त्रीलिङ्ग — ङे सप्त. वि., ए. व. — साकियहि कुले जाता, इत्थिअङ्गे पतिहिता, अप. 2.254.

**इत्थिउमतोव्यञ्जनक** पु., उभयलिङ्गी नारी, पुरुष तथा नारी दोनों के लैंगिक लक्षणों से युक्त (नारी) — को प्र. वि., ए. व. — तस्मा इत्थिउमतोव्यञ्जनको सयम्पि गम्भं गण्हाति, परम्पि गण्हापेति, ध. स. अट्ट. 355.

**इत्थिकथा** स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीकथा], नारियों के विषय में बातचीत, स्त्रियों से सम्बन्धित कथा या कथन — था प्र. वि., ए. व. — इत्थिकथापि वण्णसण्ठानादीनि पटिच्च अस्सादवसेन न वट्ठति, दी. नि. अट्ट. 1.80; — थं द्वि. वि., ए. व. — अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्ता, सेव्यथिदं — राजकथं चोरकथं, ... नगरकथं, जनपदकथं, इत्थिकथं, सूरकथं ..., महाव. 261.

**इत्थिका** स्त्री., इत्थी से अल्पार्थक अथवा अपकर्षार्थ 'क' प्रत्यय जोड़कर व्यु. [बौ. सं. इस्त्रिका/इष्टिका], साधारण स्त्री, सामान्य श्रेणी की नारी, अनुत्तम स्थिति वाली स्त्री, निम्न स्तर की स्त्री — का प्र. वि., ब. व. — अज्जा इत्थिका निसिन्ना वा निपत्ता वा विजायन्ति, दी. नि. 2.11; यथा अज्जा इत्थिका नव वा दस वा मासे गम्भं कुच्छिन्ना परिहरित्वा विजायन्ति, तदे., — हि तू, वि., ब. व. — इत्थिकाहि आतपे पत्थटानं वीहिआदीनं तेमनभयेन अन्तोपवोसितकाले ..., जा. अट्ट. 1.322; — नं प. वि., ब. व. — इत्थिकानञ्च पब्बज्जं, हं तं याचि पुनप्पुनं, अप. 2.202; — कं द्वि. वि., ए. व. — अकालवस्सं सुत्वा तं विस्सज्जेत्वा तमिथिकं, म. वं. 21.28; — य च. वि., ए. व. — मातु मत्तिकं, इत्थिकाय इत्थिधनं, पज्जं पौतिकं अज्जं पितामहं, पारा. 17; इत्थिकाय नाम इत्थिपरिभोगानयेव न्हानचुण्णादीनं अत्थाय लद्धं धनं कित्तकं भवेय्य, पारा. अट्ट. 1.162; स. उ. प. के रूप में, अपत्थिति., अप्पि., बहुत्थि. के अन्तः द्रष्टः.

**इत्थिकाम** पु., तत्पु. स., नारी-विषयक कामना, स्त्रियों के साथ विषय-भोगों का आनन्द, स्त्री के साथ भोग-विलास — मेहि तू, वि., ब. व. — इत्थिकामेहि राजा मज्जे परिचारेन्तो, स. नि. 2(2).323; इत्थिकामेहीति इत्थीहि सद्धिं कामा इत्थिकामा, तेहि इत्थिकामेहि, स. नि. अट्ट. 3.146.

**इत्थिकारण** नपुं., स्त्री के कारण, कारण के रूप में स्त्री — णा प. वि., ए. व., क्रि. वि., स्त्रियों के कारण से — न इत्थिकारणा राज, पुत्तं घातेतुमरहसीति, जा. अट्ट. 4.171; न इत्थिकारणाति पापं लामकं मातुगामं निस्साय ..., तदे.

**इत्थिकिच्च** नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीकृत्य], स्त्री के लिए काम, स्त्री-सेवा, नारी का कामकाज — च्वं द्वि. वि., ए. व. — करिस्सं इत्थिकिच्चं च किच्चं चाज्जं यथिच्छितं, म. वं. 7.22.

**इत्थिकुत्त** नपुं., तत्पु. स., स्त्री का नाज़-नखरा भरा व्यवहार, नारी की मोहक अदा, मन को खींच लेने वाले

## इत्थिकुमारिका

316

## इत्थिचित्त

स्त्री के अनोखे हावभाव, नारी का छलबल अथवा दांवपेंच — तं' द्वि. वि., ए. व. — इत्थी, भिक्खवे, अज्झतं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति इत्थिकुत्तं, अ. नि. 2(2)203; इत्थिकुत्तन्ति इत्थिकेरियं, अ. नि. अहु. 3.169; — तं' प्र. वि., ए. व. — यथा हि इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थाकप्पोति इमानि लिङ्गादीनि इत्थिन्द्रियस्स फलत्ता वुत्तानि, ध. स. अहु. 403; — तैन तृ. वि., ए. व. — यक्खिनियो इत्थिकुत्तेन एकं ... पलोमेत्वा अत्तनो वसे कत्वा ..., जा. अहु. 2.105; इत्थिकुत्तेन पलोमेत्वा ज्ञाना चावेत्वा ब्रह्मचरियमस्स अन्तरधापेसि, जा. अहु. 2.273; — तादि त्रि., नारी के छल-कपट भरे व्यवहार आदि की चेष्टा — दीनि नपुं., द्वि. वि., ब. व. — एकदिवसं दिवाविहारद्धानं गत्वा इत्थिकुत्तादीनि दस्सेतुं आरभि, थेरगा. अहु. 1.51; — दीहि तृ. वि., ब. व. — इत्थिकुत्तादीहि पलोमेतुकामा अहोसि, थेरगा. अहु. 1.102; 'इत्थिकुत्तादीहि नं पलोमेत्वा उप्पब्बाजेस्सामी'ति, थेरगा. अहु. 2.22; — दस्सन नपुं., तत्पु. स., स्त्री के सम्मोहक व्यवहार को दिखलाना, नारी की मोहक चालढाल का प्रयोग — नेन तृ. वि., ए. व. — आरज्जकं कुज्जरं इत्थिकुत्तदस्सनेन पलोमेत्वा बन्धित्वा आनयन्ति, स. नि. अहु. 1.165; — हावभावविलास पु., द्व. स., स्त्री का मोहक व्यवहार एवं उसके सम्मोहक हावभाव या अदा — सेहि तृ. वि., ब. व. — वाणिजे इत्थिकुत्तहावभावविलासेहि पलोमेत्वा ... मनुस्सा अत्थि, जा. अहु. 2.105; — लीला स्त्री., तत्पु. स., स्त्री के सम्मोहक व्यवहार की लीला — य तृ. वि., ए. व. — इदानि नं अत्तनो इत्थिकुत्तलीलाय ओलोकापेस्सामी'ति, जा. अहु. 1.415; — विलास पु., द्व. स., स्त्री की मोहक अदा एवं साज-शृंगार — सेहि तृ. वि., ब. व. — इत्थिकुत्तविलासेहि च पुरिसे पलोमेत्वा अत्तनो ... जा. अहु. 2.105; सा ततो पट्टाय मण्डितपसाधिता इत्थिकुत्तविलासेहि तं पलोमेसि, जा. अहु. 4.196; — हासविलास पु., द्व. स., स्त्री का मनमोहक व्यवहार एवं आकर्षक हंसी — से द्वि. वि., ब. व. — यथाबलं इत्थिकुत्तहासविलासे दस्सेत्वा ..., जा. अहु. 6.65.

**इत्थिकुमारिका** स्त्री., द्व. स., विवाहित स्त्री एवं कुमारी — कपटिग्गहण नपुं., तत्पु. स., विवाहित नारी एवं कुमारी को दान के रूप में ग्रहण करना अथवा उनका स्पर्श करना — णा प. वि., ए. व. — इत्थिकुमारिकपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो, दी. नि. 1.5; इत्थिकुमारिकपटिग्गहणा

पटिविरतो होति, म. नि. 1.241; एत्थ इत्थीति पुरिसन्तरगता, इतरा कुमारिका नाम, तासं पटिग्गहणाम्पि आमसनम्पि अकप्पियमेव, दी. नि. अहु. 1.72.

**इत्थिख्य** त्रि., ब. स., व्याकरणों में प्रयुक्त [स्त्र्याख्य], स्त्री-लिङ्ग का, स्त्री-लिङ्ग वाला — ख्या पु., प्र. वि., ब. व. — ते इवण्णुवण्णा यदा इत्थिख्या तदा प-सज्जा होन्ति, क. व्या. 59; 'ते इत्थिख्या पो'इति इत्थियमिवण्णुवण्णानं प-सज्जा, बाला. 96.

**इत्थिगन्ध** पु., तत्पु. स. [स्त्रीगन्ध], स्त्री की गन्ध, स्त्री के शरीर की सुगन्ध, स्त्री के शरीर पर लगाए गए चन्दनादि के लेपों की सुगन्ध — घो प्र. वि., ए. व. — इत्थिगन्धो, भिक्खवे, पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिष्ठति, अ. नि. 1(1)2; इत्थिया सरीरे आरुहो आगन्तुको अनुलिम्पनादिगन्धो 'इत्थिगन्धो'ति वेदितब्बो, थेरगा. अहु. 2.236; — न्धेसु सप्त. वि., ब. व. — इत्थिगन्धेसु सारतो विविधं विन्दते दुखं, थेरगा. 738; इत्थिगन्धेसूति इत्थिया चतुसमुद्गानिकगन्धायतनेसु, थेरगा. अहु. 2.236.

**इत्थिगम्भ** पु., तत्पु. स. [स्त्रीगर्भ], गर्भ में आया हुआ नारी शिशु, मां की कोख में आया हुआ नारी भ्रूण — भो प्र. वि., ए. व. — कुच्छिम्हि गम्भो पतिट्ठितो, सो च खो पुरिसगम्भो न इत्थिगम्भो, जा. अहु. 1.61.

**इत्थिगुम्भ** पु., तत्पु. स. [स्त्रीगुल्म], स्त्रियों का झुण्ड, नारियों का समूह — स्स ष. वि., ए. व. — इत्थिगुम्भस्स पवरा, अच्छन्तं पियभाणिनी, जा. अहु. 6.304; तदा तस्स महेसीहं, इत्थिगुम्भस्स उत्तमा, अप. 2.250.

**इत्थिघटा** स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीघटा], स्त्रियों का समूह, नारी-वर्ग — य प. वि., ए. व. — न मय्हं इत्थिघटाय अत्थो, जा. अहु. 4.282; न सक्का मुसावादं कातुं न मय्हं इत्थिघटाय अत्थो, जा. अहु. 4.283.

**इत्थिघातक** पु., [स्त्रीघातक], स्त्री की हत्या करने वाला, नारीघातक — का प्र. वि., ब. व. — थीघातकाति इत्थिघातका, जा. अहु. 5.394; थीघातका ये चिमे पारदारिका, जा. अहु. 5.393.

**इत्थिचित्त** नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीचित्त], स्त्री-विषयक चित्त या चिन्तन, नारीविषयक मानसिक अभिरुचि, स्त्री-विषयक अभिरति — तं द्वि. वि., ए. व. — इत्थिचित्तं विराजेत्वा ब्रह्मलोकूपगा अहति, पे. व. 386; इत्थिचित्तं विराजेत्वाति इत्थिभावे चित्तं अज्झासयं अभिरुचिं विराजेत्वा इत्थिभावे विरत्तचित्ता हुत्वा, पे. व. अहु. 146.

## इत्थिछन्द

317

## इत्थिपण्डका / इत्थिपण्डिका

इत्थिछन्द पु., तत्पु. स., स्त्री की मानसिक प्रवृत्ति, नारी के मन की रुझान, नारी का मानसिक अभिप्राय — न्दं द्वि. वि., ए. व. — इत्थि अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति ... इत्थिछन्दं ... इत्थालङ्कारं ..., अ. नि. 2(2)203; इत्थिछन्दन्ति इत्थिया अज्झासयच्छन्दं, अ. नि. अहु. 3.169.

इत्थिजन पु., [स्त्रीजन], नारी-समूह — ने सप्त. वि., ए. व. — अलङ्कृतपटियत्ते इत्थिजने असुमसज्जं उप्पादेत्वा, अ. नि. अहु. 1.200.

इत्थित्त नपुं., इत्थी का भाव. [स्त्रीत्व], नारीत्व, स्त्री का हावभाव एवं मानसिकता — तं प्र. वि., ए. व. — इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो, विभ. 138; — तं? द्वि. वि., ए. व. — सा इत्थित्तं विराजेत्वा पुरिसत्तं भावेत्वा कायस्स ... सगं लोकं उपपन्ना, दी. नि. 2.199.

इत्थिदान नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीदान], नारियों का दान, दान के रूप में स्त्री को दे देना — नं प्र. वि., ए. व. — पञ्च दानानि अपुज्जानि पुज्जसम्मत्तानि लोकस्मिं मज्जदानं, समज्जदानं, इत्थिदानं, उसभदानं, वित्तकम्मदानं, परि. 254.

इत्थिधन नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीधन], स्त्री की निजी सम्पत्ति, पत्नी का अपना धन, धौतुक या दहेज के रूप में प्राप्त नारी का निजी धन — नं प्र. वि., ए. व. — मातु मत्तिकं इत्थिकाय इत्थिधनं, पारा. 17; इत्थिकाय इत्थिधनन्ति हीलेन्तो आह, इत्थिकाय नाम इत्थिपरिभोगानयेव न्हानचुण्णादीनं अत्थाय लद्धं धनं कित्तकं भवेत्थ, पारा. अहु. 1.162.

इत्थिधुत्त पु., तत्पु. स., स्त्रियों में बुरी तरह आसक्त, नारी के प्रति दृढ़ मानसिक लगाव रखने वाला लम्पट पुरुष, स्त्रियों में धुत्त — त्तो प्र. वि., ए. व. — इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो, सु. नि. 106; इत्थिधुत्तोति इत्थीसु सारत्तो यं किञ्चि अत्थि, तं सब्बमि दत्त्वा अपरापरं इत्थिं सङ्गहाति, सु. नि. अहु. 1.136; पापमित्तसंसग्गेन पन इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, पे. व. अहु. 6; — त्ता ब. व. — इत्थिधुत्तसुराधुत्तादयो वा, धुत्ता एवं पच्चत्थिका धुत्तपच्चत्थिका, पारा. अहु. 1.214; यदा एवरुपा इत्थिधुत्ता 'इमा अम्हे न जहिरसन्ती'ति, जा. अहु. 4.165.

इत्थिनिमित्त नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीनिमित्त], क. स्त्री का विशिष्ट चिह्न, स्त्री-इन्द्रिय, योनि — त्तो सप्त. वि., ए. व. — एत्थ य इत्थिनिमित्ते चत्तारि पस्सानि, पारा. अहु. 1.205; — तेन त्, वि., ए. व. — इत्थिनिमित्तेन च पुरिसनिमित्तेन चाति उभोहि ब्यज्जनेहि समन्नागता, पारा.

अहु. 2.122; ख. स्त्री के लैङ्गिक लक्षण — तं प्र. वि., ए. व. — थनमंसाविसदता, निम्मस्सुदाठिता, कंसबन्धनं, वत्थागहणञ्च 'इत्थी'ति सज्जाननस्स पच्चयभावतो इत्थिनिमित्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.89; अपरो नयो इत्थिनं मुत्तकरणं इत्थिलिङ्गं, सराधिप्पाया इत्थिनिमित्तं, विसुद्धि. महाटी. 2.89; यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं ... इदं तं रुपं इत्थिन्द्रियं, ध. स. 632(मा.).

इत्थिन्द्रिय नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीन्द्रिय], व्यक्ति को स्त्री की पहचान दिलाने वाली आत्मभाव में विद्यमान आधिपत्य की शक्ति, स्त्री-भावसूचक इन्द्रिय, स्त्रीत्व, स्त्री को पुरुष से विभाजित करने वाले विशिष्ट लक्षणों को सूचित करने वाली इन्द्रिय, बाईस, पन्द्रह, दस अथवा तीन इन्द्रियों में से एक — यं प्र. वि., ए. व. — बावीसतिन्द्रियानि ... इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं ..., विभ. 137; इत्थिभावे इन्द्वं कारेतीति इत्थिन्द्रियं, विभ. अहु. 117; इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो — इदं वुच्चति 'इत्थिन्द्रियं', विभ. 138; — यं? द्वि. वि., ए. व. — इत्थी, अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति—इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पं इत्थिविधं इत्थिच्छन्दं इत्थिस्सरं इत्थालङ्कारं, अ. नि. 2(2)203; अज्झत्तं इत्थिन्द्रियन्ति नियकज्झत्ते इत्थिभावं, अ. नि. अहु. 3.169; सो पनत्तभावो यं धम्मं उपादाय इत्थीति वा पुरिसीति वा सङ्गं गच्छति, अयं सोति निदस्सनत्थं ततो इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियञ्च, विभ. अहु. 118-119; — निदेस पु., स्त्रीलिङ्ग अथवा स्त्रीभाव की निर्धारक इन्द्रिय का विवेचनपरक व्याख्यान — से सप्त. वि., ए. व. — इत्थिन्द्रियनिदेसे यन्ति करणवचनं, ध. स. अहु. 353; — पुरिसिन्द्रिय नपुं., द्व. स. [स्त्रीन्द्रियपुरुषेन्द्रिय], स्त्री-इन्द्रिय एवं पुरुषेन्द्रिय, स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व की निर्धारक इन्द्रियां, स्त्रीभाव एवं पुरुषभाव — यानं ष. वि., ब. व. — इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियानं इत्थिपुरिसलिङ्गनिमित्तकुत्ता—कप्पाकारानुविधानं, विसुद्धि. 2.120; तुल., विभ. अहु. 119; — यानि द्वि. वि., ब. व. — तेसु इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियानि वज्जेत्वा वीसतिन्द्रियानि होन्ति, अभि. अव. 176.

इत्थिपण्डका / इत्थिपण्डिका स्त्री., कर्म. स., स्त्रीत्व के विशिष्ट लक्षणों से रहित स्त्री, हिजड़ा स्त्री, प्र. वि., ए. व. — नसि इत्थिपण्डका, चूळव. 435; इत्थिपण्डकाति अनिमित्ताव वुच्चति, पारा. अहु. 2.122; अक्कोसति नाम अनिमित्तासि, निमित्तमतासि ... सिखरणीसि, इत्थिपण्डकासि, पारा. 190.



## इत्थिपरिगह

318

## इत्थिभाव

इत्थिपरिगह पु., तत्पु. स. [स्त्रीपरिग्रह], स्त्री के रूप में निजी सम्पत्ति, स्वामित्व या अधीनता में रहने वाली स्त्री, अन्तःपुर की नारी — हो प्र. वि., ए. व. — बहु तत्थ इत्थिपरिगहो म. नि. 2.268; थियोति इत्थिपरिगहो वुच्चाति, महानि. 8; इत्थीति थियति एतिस्सं गम्भीति इत्थी, परिगहोति सहायी सस्सामिका, महानि. अट्ट. 42.

इत्थिपुम द्व. स., स्त्री एवं पुरुष क. नपु., समाहार द्व. स., स्त्रियों एवं पुरुषों का समूह — मं प्र. वि., ए. व. — आदिगहणं किमत्थं? दासिदासं, इत्थिपुमं ... दीघमज्झिमं इच्चवमादि, क. व्या. 324; ख. पु., इतरेतर द्व. स., स्त्री एवं पुरुष — मा प्र. वि., ए. व. — न इत्थिपुमा पज्जायन्ति, दी. नि. 3.63; इत्थी पुमा कुमारा च, बहू चैव कुमारिका, अप. 2.270; — मानं ष. वि., ब. व. — यो सब्बलोकस्स निवातवुत्ति इत्थीपुमानं सहदारकानं, जा. अट्ट. 4.68; — नपुंसकसंख्य त्रि., द्व. स., स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग को कहने वाला — ख्यं नपु., प्र. वि., ए. व. — इत्थिपुमनपुंसकसंख्यं, क. व्या. 131.

इत्थिपुम्भावलक्खण त्रि., ब. स., स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व के लक्षणों से युक्त (स्त्री-इन्द्रिय एवं पुरुषेन्द्रिय) — णं नपु., प्र. वि., ए. व. — वसे वत्तेति लिङ्गान-मित्थिपुम्भावलक्खणं, इत्थीति च पुरिसोति, पकासनरसं तथा, ना. रु. प. 519.

इत्थिपुरिस पु., द्व. स. [स्त्रीपुरुष], स्त्री एवं पुरुष — सा प्र. वि., ब. व. — इत्थिपुरिसा दासिदासा, नि. प. 148; इत्थिपुरिसा अविज्जमाना, रूपं विज्जमानं, प. प. अट्ट. 27; — सानं ष. वि., ब. व. — हज्जि अरहा इत्थिपुरिसानं नामगोत्तं न जानेय्य, कथा. 154; स. प. के अन्तः, — इत्थिपुरिसादिपरिकप्पवसेन निच्चादिवसेन अत्तत्तनियगाहवसेन च अभिरता ..., उदा. अट्ट. 173; — निमित्त नपु., तत्पु. स. [स्त्रीपुरुषनिमित्त], स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का द्योतक विशिष्ट चिह्न, स्त्री एवं पुरुष के लैङ्गिक चिह्न — तं द्वि. वि., ए. व. — इत्थिपुरिसनिमित्तं वा सुमनिमितादिकं वा ... निमित्तं न गण्हाति, विसुद्धि. 1.20; — निस्सित/सरीरनिस्सित त्रि., [स्त्रीपुरुषनिःश्रित], स्त्री तथा पुरुष के शरीर के साथ जुड़ा हुआ, स्त्री एवं पुरुष के शरीर पर आश्रित — तं नपु., द्वि. वि., ए. व. — खुदापरेता भुञ्जामि, इत्थिपुरिसनिस्सितं, पे. व. 131; इत्थिपुरिससरीरनिस्सितं यथावुत्तं अञ्जञ्च चम्ममंसंहारुपुब्बादिकं परिमुञ्जामीति, पे. व. अट्ट. 68; — भाव पु., [स्त्रीपुरुषभाव], स्त्रीभाव एवं पुरुषभाव — वं द्वि.

वि., ए. व. — न केवलं इत्थिपुरिसभावमेव ... यथावुत्तं एतं इत्थिभावं पुरिसभावं, पे. व. अट्ट. 144; — सन्निपात पु., तत्पु. स. [स्त्रीपुरुषसन्निपात], स्त्रियों एवं पुरुषों का जमघट या समूह — तेन तृ. वि., ए. व. — सुञ्जो इत्थिपुरिससन्निपातेन अत्थि वेविदं ... पटिच्च एकत्तं, म. नि. 3.148; — सानुपस्सी त्रि., स्त्रियों एवं पुरुषों की अनुपशयना करने वाला, स. उ. प. के रूप में — नापि केसलोमादिविनिमुत्तइत्थिपुरिसानुपस्सी, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).252.

इत्थिफोडुब्ब पु./नपु., तत्पु. स., स्त्री के स्पर्श की (सुखद) अनुभूति, स्त्री का स्पर्श — ब्बो पु. प्र. वि., ए. व. — पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिफोडुब्बो, अ. नि. 1(1).2; इत्थिया कायसम्फस्सो, इत्थिसरीरारुहानं वत्थालङ्कारमालादीनम्पि फस्सो इत्थिफोडुब्बोत्त्वेव वेदितब्बो, अ. नि. अट्ट. 1.21; — ब्वं प्र. वि., ए. व. — नाहं, भिक्खवे, ... एकफोडुब्बमि समनुपस्सामि एवं रजनीयं एवं कमनीयं ... यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिफोडुब्बं, अ. नि. 2(1).63; — ब्बे सप्त. वि., ए. व. — इत्थिफोडुब्बे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोपत्ता, ते दीघरत्तं सोचन्ति इत्थिफोडुब्बवसानुगा, अ. नि. 2(1).63.

इत्थिबल नपु., तत्पु. स. [स्त्रीबल], स्त्री की शक्ति, नारी की शक्ति — लं प्र. वि., ए. व. — सब्बबलेहि इत्थिबलमेव महन्तन्ति अत्थो, जा. अट्ट. 3.456.

इत्थिभण्ड पु., तत्पु. स. [स्त्रीभण्ड], स्त्री का अपना सामान, स्त्री के अपने स्वामित्व में रहने वाले गहने आदि — ण्डेन तृ. वि., ए. व. — इत्थिभण्डे न गूहाम तुय्हत्थाय महामुने, अप. 2.263.

इत्थिभाव पु., तत्पु. स. [स्त्रीभाव], क. स्त्रीत्व, नारी-भाव, स्त्रीवर्ग, नारी-समूह, स्त्री-इन्द्रिय के निर्वचनक्रम में प्रयुक्त, — वो प्र. वि., ए. व. — इत्थिभावो पुम्भावो इत्थिन्द्रियन्ति च वुच्चाति, सट्ठ. 1.67; यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो — इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं, ध. स. 632(मा.); इत्थिन्द्रियन्तिआदीसु इत्थिभावे इन्दुहं करोतीति इत्थिन्द्रियं, स. नि. अट्ट. 3.265; — वं द्वि. वि., ए. व. — “अहं तं आनेस्सामि, पस्स ताव मम इत्थिभावन्ति वत्था, थेरगा. अट्ट. 2.106; ख. पापकर्मों के विपाक के रूप में प्राप्त स्त्री के रूप में पुनर्जन्म या पुनर्भव, स्त्री के रूप में हीन पुनर्भव — वो प्र. वि., ए. व. — दुक्खो इत्थिभावो, अक्खातो पुरिसदम्मसारथिना, थेरीगा. 216;

## इत्थिमूत

319

## इत्थिरूप

इत्थिभावो किं कथिरा, चित्तमिह सुसमाहिते, स. नि. 1(1).152; — वं द्वि. वि., ए. व. — द्वे गाथा अञ्जतराय यक्खिनिया इत्थिभावं गरहन्तिया भासिता, थेरीगा. अहु. 200; लिक्खापयन्ता पिटकस्समक्खरं, न पापुणन्तेव च इत्थिभावं, सद्धम्म. 46; पुरिसा हि परस्स दारेसु अतिचरित्वा ... निरये पच्चित्वा मनुस्सजातिं आगच्छन्ता अत्तभावसत्ते इत्थिभावं आपज्जन्ति, ध. प. अहु. 1.186; — वे सप्त. वि., ए. व. — इत्थिचित्तं विराजेत्वाति इत्थिभावे चित्तं अज्झासयं अभिरुचि विराजेत्वा इत्थिभावे विरतचित्ता हुत्वा, पे. व. अहु. 146; — पटिलाभ पु., तत्पु. स. [स्त्रीभावप्रतिलाभ], स्त्री के रूप में पुनर्जन्म की प्राप्ति — स्स प. वि., ए. व. — इत्थिभावप्पटिलाभस्स वा नपुंसकभावप्पटिलाभस्स ... वा अभब्बता ..., खु. पा. अहु. 24; — लक्खण त्रि., ब. स. [स्त्रीभावलक्षण], स्त्रीत्व या नारीत्व के लक्षणों से युक्त — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इत्थिभावलक्खण इत्थिन्द्रियं, विसुद्धि. 2.74.

इत्थिमूत त्रि., [स्त्रीभूत]. स्त्री-भाव को प्राप्त, स्त्रीरूप में पुनर्जन्म ले चुका — ताय स्त्री., च. वि., ए. व. — 'आतुमे इत्थिमूताय, दीघरत्ताय मारिस यस्सा मे इत्थिमूताय, संसारे बहुभाससी'ति, पे. व. 378; इत्थिमूतायाति इत्थिभावं उपगताय, पे. व. अहु. 144.

इत्थिमति स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीमति], स्त्री की मति, स्त्री की इच्छा, स्त्री का मानसिक अभिप्राय, स्त्री का इरादा — तिं द्वि. वि., ए. व. — इत्थिया वा पुरिसमतिं पुरिसस्स वा इत्थिमति, पारा. 204; पुरिसस्स वा इत्थिमतिन्ति इत्थिया मतिं पुरिसस्स आरोचेति, पारा. 205.

इत्थिमाया स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीमाया], स्त्री की धूर्तता या चालाकी, स्त्री का छल-कपट या छलबल — य तृ. वि., ए. व. — थीनं भावो दुराजानोति इत्थीनं भावो नाम इत्थिमायाय पटिच्छन्ता दुराजानो, जा. अहु. 1.288; — हि तृ. वि., ब. व. — अनन्ताहि इत्थिमायाहि समन्नागतत्ता महामाया नाम, जा. अहु. 2.274; — सु सप्त. वि., ब. व. — सोपि सुवपोतको इत्थिमायासु कुसलो, तेन तं वीमसन्तो पुन गाथमाह, जा. अहु. 6.250; — कुसलता स्त्री., छल-कपट करने की नारी की कुशलता — य तृ. वि., ए. व. — सा इत्थिमायाकुसलताय तापसं अनुपसङ्गमत्वा आगतमग्गाभिमुखी पायासि, जा. अहु. 5.152.

इत्थियुत्त त्रि., तत्पु. स., गायों से जुता हुआ, धेनुयुक्त — तेन पु., तृ. वि., ए. व. — छब्बगिया भिक्खू यानेन

यायन्ति इत्थियुत्तेनपि पुरिसन्तरेन, पुरिसयुत्तेनपि इत्थन्तरेन, महाव. 264; इत्थियुत्तेनाति धेनुयुत्तेन, महाव. अहु. 347; इत्थियुत्तेनाति इत्थीहि गावीआदीहि धुरह्मने युत्तेन, वजिर. टी. 490; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — 'इत्थियुत्तं नु खो, पुरिसयुत्तं नु खो'ति ? ... अनुजानामि, भिक्खवे, इत्थियुत्तं पुरिसयुत्तं हत्थवट्टकन्ति, चूळव. 442.

इत्थिरत्तन नपुं., [स्त्रीरत्न], क. भा. अ. नारीरत्न, स्त्रीरत्न, चक्रवर्ती के सात रत्नों में से पांचवां रत्न — नं प्र. वि., ए. व. — चक्करत्तनं, हत्थिरत्तनं, अस्सरत्तनं, मणिरत्तनं, इत्थिरत्तनं, गहपतिरत्तनं, परिणायकरत्तनं, ... राजा महासुद्धस्सो इमेहि सत्तहि रत्तनेहि समन्नागतो अहोसि, दी. नि. 2.129-132; इत्थिरत्तनं पातुरहोसि ... पासादिका परमाय, दी. नि. 2.131; छब्बिधदोसदिवज्जितं मनापचारि इत्थिरत्तनं, दी. नि. अहु. 2.31; — स्स ष. वि., ए. व. — 'इत्थिरत्तनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं ... इमेसं पञ्चत्तं रत्तनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं', अ. नि. 2(1).158; ख ला. अ., सर्वश्रेष्ठ रत्न जैसी उत्तम नारी, सर्वोत्तम स्त्री — नं प्र. वि., ए. व. — 'सामि, अम्होहि तुम्हाकं एकं इत्थिरत्तनं आनीत'न्ति, ध. प. अहु. 1.185; — नं द्वि. वि., ए. व. — '... पब्बतपादे अच्छरियं इत्थिरत्तनं दिस्वा आगतोम्ही'ति सब्बं पवति कथेसि, अ. नि. अहु. 1.260; स. उ. प. के रूप में, दिब्बि- नपुं., कर्म. स. [दिव्यस्त्रीरत्न], अत्यन्त भव्य श्रेष्ठ नारी — नं द्वि. वि., ए. व. — एतादिसं चे रत्तनन्ति दिब्बिइत्थिरत्तनं सन्धाय भणति, नारिन्ति अत्तनो धीतरं सन्धाय, सु. नि. अहु. 2.236; स. पू. प. के रूप में — माव पु., श्रेष्ठ स्त्रीत्व, नारीत्व की उत्तमता — वेन तृ. वि., ए. व. — निगमवासिजनो इत्थिरत्तनभावेन अनग्घमि समानं ... मं ठपेसि, थेरीगा. अहु. 34-35; इत्थिरत्तनभावेन सब्बेहि ... सब्बङ्गसोभना, चरिया. अहु. 84.

इत्थिरस पु., तत्पु. स. [स्त्रीरस], स्त्री से प्राप्त आनन्द, स्त्री का रसीलापन — सो प्र. वि., ए. व. — इत्थिरसो पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिड्ढति, अ. नि. 1(1).2; इत्थिरसोति इत्थिया चतुसमुद्धानिकं रसायत्तनं, अ. नि. अहु. 1.21.

इत्थिरूप नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीरूप], 1. नारी का स्वरूप, नारी का सौन्दर्य, नारी की काया — पं प्र. वि., ए. व. — इत्थिरूपं भिक्खवे, पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिड्ढति, अ. नि. 1(1).1; अन्तरायकरं अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाय यथायिदं, भिक्खवे, इत्थिरूपं, अ. नि. 2(1).63;

## इत्थिरूपक

320

## इत्थिलिङ्ग

— पे / स्मिं सप्त. वि., ए. व. — इत्थिरूपे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोपन्ना, अ. नि. 2(1)63; इत्थिरूपे इत्थिसरे, फोडुब्बेपि च इत्थिया, इत्थिगन्धेसु सारत्तो, विविधं विन्दते दुखं, थेरगा. 738; पञ्च कामगुणा एते, इत्थिरूपस्मिं दिस्सरे, रूपा सदा रसा गन्धा, फोडुब्बा च मनोरमा, अ. नि. 2(1)64; — पेन त्. वि., ए. व. — पक्कमिस्सञ्च नाळातो, कोध नाळाय वच्छति बन्धन्ती इत्थिरूपेन, समणे धम्मजीविनो, थेरीगा. 295; 2. स्त्री का भित्तिचित्र, स्त्री की प्रतिमा — पं द्वि. वि., ए. व. — सेय्यथापि, भिक्खवे, रजको वा, वित्तकारको वा सति रजनाय व लाखाय वा हलिदिया वा नीलिया वा मज्जिद्वाय वा सुपरिमद्धे वा फलके भित्तिया वा दुस्सपट्टे वा इत्थिरूपं वा पुरिसरूपं वा अभिनिम्मिनेय्य, स. नि. 1(2)90; सुवण्णकारे ... अतिविय पासादिकं घनकोट्टिमं इत्थिरूपं कारेत्या, ध. प. अहु. 2.164; रत्तजम्बुनदमयं इत्थिरूपं कारेत्या, जा. अहु. 4.94; 3. स्त्री का मायानिर्मित छाया रूप, अलौकिक शक्ति द्वारा निर्मित नारी का अवास्तविक रूप — पं द्वि. वि., ए. व. — सत्था ... इद्धिया एकं इत्थिरूपं निम्मिनित्वा तालवण्टं गहेत्वा बीजमानं विय अकासि, अ. नि. अहु. 1.271; सत्था पठमयोब्बने तितं रमणीयं इत्थिरूपं अभिनिम्मिनित्वा, अप. अहु. 2.282; तप्पिस्स इत्थिरूपं पिड्डिपस्से तितं राजा अहस्स, ध. प. अहु. 2.32.

इत्थिरूपक नपुं., तत्पु. स., स्त्री का तैलचित्र अथवा भित्तिचित्र, स्त्री की धातु-निर्मित प्रतिमा — कं द्वि. वि., ए. व. — छब्बग्गिया भिक्खू विहारे पटिभानचित्तं कासपेत्ति इत्थिरूपकं पुरिसरूपकं, चूळव. 278; सुवण्णं दत्त्वा 'एकं इत्थिरूपकं करोही'ति उय्योजेत्वा, जा. अहु. 5.274; सुवण्णकारेहि इत्थिरूपकं कारेत्या, अप. अहु. 1.268.

इत्थिलक्खण नपुं., तत्पु. स., स्त्री के शुभ अथवा अशुभ लक्षण, स्त्री से सम्बद्ध अच्छे या बुरे लक्षण — णं प्र. वि., ए. व. — समणब्राह्मणा सद्धादेय्यानि भोजनानि भुज्जित्वा ते एवरूपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति, सेय्यथिदं मणिलक्खणं ... इत्थिलक्खणं ..., दी. नि. 1.8; — णादीनि प्र. वि., ब. व. — इत्थिलक्खणादीनिपि यम्हि कुले ते इत्थिपुरिसादयो वसन्ति, तस्स बुद्धिहानिवसेनेव वेदितव्यानि, दी. नि. अहु. 1.83; — कोविद त्रि., तत्पु. स. [स्त्रीलक्षणकोविद], स्त्री के शुभ अथवा अशुभ लक्षणों की पहचान में कुशल — दा पु., प्र. वि., ब. व. — इड्कवड्डीकीगामे इत्थिलक्खणकोविदा, म. वं. 35.109.

इत्थिलिङ्ग<sup>1</sup> नपुं., [स्त्रीलिङ्ग], 1. स्त्री की विशिष्ट पहचान कराने वाला लिङ्ग या चिह्न, स्त्री के शरीर के स्तन, केश एवं गुप्तेन्द्रिय आदि ऐसे चिह्न, जो स्त्रीत्व के निर्धारक हैं — ङं प्र. वि., ए. व. — इत्थिया चाति या पुब्बे मनुस्सकाले इत्थी, तस्स इत्थिलिङ्गं पातुभवति, पुब्बे पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं, दी. नि. अहु. 3.47; अज्जतरस्स भिक्खुनो इत्थिलिङ्गं पातुभूतं होति, पारा. 40; इत्थिलिङ्गं पातुभूतन्ति रत्तिभागे निदं ओक्कन्तस्स पुरिससण्ढानं मस्सुदातिकादि सब्बं अन्तरहितं इत्थिसण्ढानं उप्पन्नं, पारा. अहु. 1.219; — ङ्गे सप्त. वि., ए. व. — तस्मा इत्थिलिङ्गे ठितस्स मनुस्सजातिकस्सापि पत्थना न समिज्झति, बु. वं. अहु. 105; 2. व्याकरण के सन्दर्भ में, नामपद का स्त्रीलिङ्ग — ङं प्र. वि., ए. व. — पुमस्सोति किमत्थं ? इत्थिलिङ्गं नपुंसकलिङ्गं, क. व्या. 222; तक्कारियाति इत्थिलिङ्गं नामं, जा. अहु. 4.222; — दस्सन नपुं., शब्द में स्त्रीलिङ्ग का देखा जाना — तो प. वि., ए. व. — अड्डिवाचकत्ता नपुंसकनिदेसोति अड्डिवाचकत्तेपि धातुयोति इत्थिलिङ्गदस्सनतो ..., सद्. 1.2; — निदेस पु., तत्पु. स. [स्त्रीलिङ्गनिर्देश], स्त्री-लिङ्ग का निर्देश, स्त्री-लिङ्ग का संकेत — सो प्र. वि., ए. व. — इत्थिलिङ्गनिदेसो परिमत्तभावसिद्धं इत्थिभावं थेरगा. अहु. 2.146; — ज्ञानुकूल त्रि., स्त्री-लिङ्ग के अनुकूल — लो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थिलिङ्गानुकूलो दिस्सति, सद्. 1.97.

इत्थिलिङ्ग<sup>2</sup> त्रि., ब. स. [स्त्रीलिङ्गक], 1. स्त्रीत्व या नारीत्व के सूचक चिह्नों से युक्त — ङं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — इत्थिलिङ्गं वा पुरिसलिङ्गं वाति अववत्थपेत्वा ..., विसुद्धि. 1.176; 2. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, स्त्रीलिङ्ग वाला नाम — लो पु., प्र. वि., ए. व. — ज्ञाणादिवाचको इत्थिलिङ्गोयेव सिया सदा, सद्. 1.253; स्यादिवाचको पुल्लिङ्गो येव इत्थिलिङ्गो च विभक्तिस्स, सद्. 1.253; — वसेन, क्रि. वि. स्त्रीलिङ्ग के होने से — लिङ्गविपल्लासं कत्वा इत्थिलिङ्गवसेन वाराणसीति वुच्चति, अप. अहु. 2.239; स. उ. प. के रूप में, आकारान्ति, ईकारान्ति, ऊकारान्ति, ओकारान्ति. के अन्त. द्रष्ट.; सद्. 1.200-225; — ज्ञान नपुं., व्याकरणों में प्रयुक्त, स्त्रीलिङ्ग-विवेचक व्याकरण-स्थल — ने सप्त. वि., ए. व. — गवेनाति आदीनि इत्थिलिङ्गज्ञाने न वुत्तानि, सद्. 1.212; — ता स्त्री., भाव., स्त्रीलिङ्ग से सम्बद्धता, प्र. वि., ए. व. — ननु च भो सम्मोहविनोदनि ... इत्थिलिङ्गता पाकटा, सद्. 1.95; — भावविगम पु., तत्पु. स., स्त्रीलिङ्ग से असम्बद्धता, स्त्रीलिङ्ग

## इत्थिलिङ्गक

321

## इत्थिसञ्जी

- में अन्तर्भूत न होना — मो प्र. वि., ए. व. — इमिना पन आपसदस्स इत्थिलिङ्गभावविगमो सिद्धो इत्थिलिङ्गे, सद्. 1. 114; — वोहार पु., स्त्रीलिङ्ग में व्यवहार — वसेन त्. वि., ए. व., क्रि. वि. स्त्री लिङ्ग, में व्यवहार होने से — पित्तोत्तिकं परिब्बाजकन्ति ... इत्थिलिङ्गवोहारवसेन लद्धनामं परिब्बाजकं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(2).97.
- इत्थिलिङ्गक त्रि., ब. स. [स्त्रीलिङ्गक], स्त्रीलिङ्ग वाला, शब्द (नामपद) — को पु., प्र. वि., ए. व. — बोधिसदो ... बोधिपादपवचनो पुमिथिलिङ्गको भवे, सद्. 1.253.
- इत्थिलिङ्गत नपुं., भाव. [स्त्रीलिङ्गत्वं], स्त्री-लिङ्ग का होना — त्तं प्र. / द्वि. वि., ए. व. — सद् अपेक्षित्वा ओरोधसदस्स इत्थिलिङ्गतमिच्छथ, सद्. 1.96; एवं सन्तेपि एतस्स इत्थिलिङ्गतमेव तु, सद्. 1.253.
- इत्थिलिङ्गतन नपु., स्त्रीलिङ्गत्व — ने सप्त. वि., ए. व. — धातुसदो जिनमते इत्थिलिङ्गतने मतो, सद्. 1.2.
- इत्थिलीला स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीलीला], नारी का हावभाव-भरा व्यवहार, नारी की गरिमा, नारी-सौन्दर्य, स्त्री का हास-विलास — लं द्वि. वि., ए. व. — एवं आगतं इत्थिकुत्तं इत्थिलीलं दस्सेत्वा तस्स पुरतो विता, ध. प. अहु. 2.397; इत्थिलीलं दस्सेन्ती पहडाकारेन अगगदन्ते विवरित्वा हसितं अकासि, जा. अहु. 1.415.
- इत्थिलुद्ध त्रि., तत्पु. स. [स्त्रीलुब्ध], स्त्रियों का लालची, स्त्रियों के प्रति लोभवृत्ति रखने वाला — द्धा पु., प्र. वि., ब. व. — इमे खो ब्राह्मणा नाम इत्थिलुद्धा, दी. नि. 2.180.
- इत्थिलोल त्रि., तत्पु. स., उपरिवत् — लो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थिलोलो ब्राह्मणो किञ्चिकारणं अजानन्तो ..., जा. अहु. 1.281.
- इत्थिवग्ग पु., जा. अहु. के एक भागविशेष का शीर्षक, जा. अहु. 1.275 302.
- इत्थिवण्ण त्रि., ब. स. [स्त्रीवर्ण], नारी जैसे स्वरूप वाला, स्त्री जैसा दिखा रहा, स. प. के रूप में — मज्झिमिथिवण्णसत्तं अभिनिम्मिनेय्यामाति, स. नि. 1(1).147.
- इत्थिविग्गह पु., तत्पु. स. [स्त्रीविग्रह], नारी का शरीर — हं द्वि. वि., ए. व. — ... एकं इत्थिविग्गहं मापेथाति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).193; — हा ब. व. — अनेका इत्थिविग्गहा पुरिसविग्गहा ... च पञ्जायन्ति, जा. अहु. 7.166.
- इत्थिविधा स्त्री., तत्पु. स., स्त्री के दर्प अथवा अभिमान का एक रूप या प्रकार — धं द्वि. वि., ए. व. — इत्थी, अज्झत्तं

- इत्थिन्द्रियं मनसि करोति ... इत्थिविधं, अ. नि. 2(2).203; इत्थिविधन्ति इत्थिया मानविधं, अ. नि. अहु. 3.169.
- इत्थिविमान नपुं., वि. व. के एक खण्ड का शीर्षक, वि. व. 1-15; — वण्णना स्त्री., वि. व. अहु. के एक भाग का शीर्षक, वि. व. अहु. 5-182.
- इत्थिविलास पु., तत्पु. स. [स्त्रीविलास], नारी की मनोहर चेष्टा, स्त्री का हास-विलास, स्त्री के मनोहारी हावभाव, नारीसौन्दर्य — सं द्वि. वि., ए. व. — एवं इत्थिविलासं कुरुमाना सोभति, जा. अहु. 3.139; एवं पवेल्लमाना इत्थिविलासं दस्सयमाना कुमारिका पलोभयन्तीव नरेसु गच्छति, जा. अहु. 3.349; इत्थिविलासं दस्सेन्ती तस्स पुरतो अट्ठासि, जा. अहु. 5.149; — सेन त्. वि., ए. व. — परमेन इत्थिविलासेन चङ्गमन्तिथा तव पादा मम चित्तं हरन्तियेव, जा. अहु. 5.151.
- इत्थिव्यञ्जन नपु., [स्त्रीव्यञ्जन], स्त्रीत्व को सूचित करने वाला चिह्न, स्त्री की योनि अथवा गुप्ताङ्ग — नं प्र. वि., ए. व. — इत्थिव्यञ्जनं पुरिसव्यञ्जनन्ति, सद्. 1.254; इत्थिव्यञ्जनं पटिच्छन्नं गुहहं होति, ध. स. अहु. 355.
- इत्थिसंसग्ग पु., तत्पु. स. [स्त्रीसंसर्ग], स्त्रियों के साथ सम्पर्क, नारियों के साथ संगति — ग्गो प्र. वि., ए. व. — अननुयुत्तमेतं समणस्स यदिदं अदिन्नपरिभोगो इत्थिसंसग्गो, स. नि. अहु. 1.284.
- इत्थिसञ्जा स्त्री., तत्पु. स. [स्त्रीसंज्ञा], किसी व्यक्ति को स्त्री मानना, स्त्रीरूप में संधारणा, किसी के विषय में स्त्री की संज्ञा — ज्ञं द्वि. वि., ए. व. — इत्थीसु इत्थिसञ्जं अकत्वा, जा. अहु. 5.440; — य' सप्त. वि., ए. व. — इत्थिया इत्थिसञ्जाय सति इत्थिं आमसन्तस्स सट्ठादिसेसो, पारा. अहु. 2.114; — य' ष. वि., ए. व. — तस्मा एत्थ इत्थिसञ्जाय अभावतो सट्ठादिसेसो न दिस्सति, पारा. अहु. 2.113.
- इत्थिसञ्जिका स्त्री., ब. स., स्त्री की संज्ञा वाली, स्त्री कही जाने वाली, प्र. वि., ए. व. — इत्थिसञ्जिका थियो, सु. नि. अहु. 2.208.
- इत्थिसञ्जी त्रि., [स्त्रीसंज्ञिन], स्त्री की संज्ञा करने वाला, स्त्री मान लेने वाला, स्त्री के विषय में सोचते रहने वाला, कोई स्त्री स्त्री है, इस रूप में सोचने वाला — ज्जी पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थी च होति इत्थिसञ्जी सारत्तो च भिक्खु च, पारा. 175; सो सारत्तो च इत्थिसञ्जी च भिक्खु अत्तनो कायेन, पारा. अहु. 2.110; — डिजता स्त्री., भाव.,

## इत्थिसण्ठान

322

इत्थी

स्त्री को स्त्री के रूप में मन में लाने की मनःस्थिति, प्र. वि., ए. व. — इत्थिसञ्जिता, कङ्का. अड्ड. 132.

इत्थिसण्ठान नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीसंस्थान], नारी का आकार-प्रकार, स्त्री की आकृति, नारी की सूरत-शकल — नेन तू. वि., ए. व. — इत्थिसण्ठानेन कतं कट्टरुपमि दन्तरुपमि ..., पारा. अड्ड. 2.117.

इत्थिसद 1. पु., तत्पु. स. [स्त्रीशब्द], स्त्री की आवाज़, नारी द्वारा उच्चारित ध्वनि या शब्द, नारी का स्वर — दो प्र. वि., ए. व. — अञ्जं एकसदमि समनुपस्सामि यं एवं पुरिसस्स चित्तं परिपादाय तिड्ढति यथयिदं भिक्खवे इत्थिसदो, अ. नि. 1(1).1.2: तेसु इत्थिसदोति इत्थिया चित्तसमुद्धानो कथितगीतवादितसदो ... वीणासङ्गपणवादिसदोपि इत्थिसदोत्वेव वेदितव्यो, अ. नि. अड्ड. 1.18; स. प. के अन्तः, — पुरिसानं इत्थिसदमधुरगन्धब्बसद्वादयो चित्तस्सादकरा मनापसद्दा, पारा. अड्ड. 2.53; — स्सवन नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीशब्दश्रवण], स्त्री के शब्द को सुनना — नेन तू. वि., ए. व. — सह इत्थिसदस्सवनेन गहणं सिथिलमकासि, अ. नि. अड्ड. 1.19; 2. त्रि., ब. स., नारी के समान स्वर वाला, स्त्री के समान बोलने वाला — दो पु., प्र. वि., ए. व. — इत्थिसदो छळाभिञ्जो, राजपुत्तो तु भासिता, ना. रू. प. 867.

इत्थिसब्बसम्पन्न त्रि., नारी की सभी विशेषताओं अथवा उत्तम लक्षणों से युक्त — त्रा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इत्थिसब्बसम्पन्ना, अभिजाता जुतिन्धरा, अप. 2.272.

इत्थिसर/इत्थिस्सर पु., तत्पु. स. [स्त्रीस्वर], स्त्री का स्वर, नारी की आवाज़, स्त्री की वाणी — रं द्वि. वि., ए. व. — इत्थिस्सरन्ति इत्थिसदं, अ. नि. अड्ड. 3.169; — रे सप्त. वि., ए. व. — इत्थिरूपे इत्थिसरे, फोड्डब्बेपि व इत्थिया ... सारत्तो, थेरगा. 738; इत्थिसरेति इत्थिया गीतलपितहसितरुदितसदं, थेरगा. अड्ड. 2.236.

इत्थिसरीर नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीशरीर], नारी का शरीर, स्त्री की काया — रं प्र. वि., ए. व. — पुरिसस्स हि इत्थिसरीरं ... विसभागं, विसुद्धि. 1.173; पुरिसस्स पन इत्थिसरीरं इत्थिया वा पुरिससरीरं न वट्टति, विसुद्धि. 1.177; — रं द्वि. वि., ए. व. — अहं पन अज्ज पट्टाय इत्थिसरीरं फुसितुं आहारे च लोलभावं कातुं अनरहो, थेरीगा. अड्ड. 16; स. प. के रूप में, इत्थिसरीरारुल्लहानं वत्थालङ्कारमालादीनं फस्सो, थेरगा. अड्ड. 2.236.

इत्थिसहस्स नपुं., एक हजार स्त्रियों का एक समूह, एक हजार के झुण्ड में स्त्रियां — स्सानं ष. वि., ब. व. —

इत्थिसहस्सानन्ति वचनमद्वयाय वृत्तं, सोळसन्नं इत्थिसहस्सानं अगगद्धाने ठपेतूति अत्थो, जा. अड्ड. 4.277.

इत्थिसोण्ड पु., तत्पु. स., स्त्रियों के प्रति गहरे लोभ, लालच से भरा हुआ, नारी-लम्पट, स्त्रियों में धुत्त, स्त्री के साथ सम्भोग करने के लिए सदा बेचैन रहने वाला — ण्डा प्र. वि., ब. व. — सोण्डाति इत्थिसोण्डा भत्तसोण्डा पूवसोण्डा मूलकसोण्डा, दी. नि. अड्ड. 3.117; इत्थिसोण्डाति इत्थीसु सोण्डा, इत्थिसम्भोगनिमित्तं आतप्पनका, लीनत्थ. (दी. नि. टी.) 3.120; स. प. के रूप में, — ... ददमानो इत्थिसोण्डसुरासोण्डमंससोण्डादिभावं आपज्जित्वा, जा. अड्ड. 2.356.

इत्थिसोत नपुं., तत्पु. स., स्त्रियों से निकलने वाला (रूपसौन्दर्य का) झरना, स्त्री-विषयिणी तृष्णा के स्रोत के रूप में नारी की सुन्दरता — तानि प्र. वि., ब. व. — इत्थिसोतानि सब्बानि, सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु, थेरगा. 739; इत्थिसोतानि सब्बानीति इत्थिया रूपादिआरम्भणानि, सब्बानि अनवसेसानि पञ्चतण्हासोतानि सन्दन्ति, थेरगा. अड्ड. 2.236.

इत्थी स्त्री., थी के रूप में भी प्राप्त, गाथाओं में अत्यल्प रूप में प्रयुक्त [स्त्री], 1. स्त्रीत्व के विशिष्ट लक्षणों से युक्त मानव जाति का प्राणी, नारी, महिला, पत्नी, 2. किसी भी जानवर की मादा, प्र. वि., ए. व. — इत्थी, सीमन्तिनी नारी थी वधू वनिताङ्गना, पमदा सुन्दरी कन्ता रमणी दयिताबला, मातुगामो च महिला, अभि. प. 230-31; इत्थी थी ... रमणी पमदा दयिता ललना महिलाङ्गना, सद. 2.363; सेय्यथापि नाम इत्थी वा पुरिसो वा दहरो युवा मण्डनकजातिको सीसन्हातो अहिकुणपेन, पारा. 81; आकारेहि इत्थी पुरिसं बन्धति, अ. नि. 3(1).38; — स्थिं द्वि. वि., ए. व. — अयं पुरिसो इत्थिं वा पुरिसं वा जीविता वोरोपेसि, अ. नि. 2(1).194; — स्थिया ष. वि., ए. व. — यो च भत्ता इत्थिया हितो कतगुणं जानाति, उभोपेते सुदुल्लभा, जा. अड्ड. 5.92; राजा रट्टस्स पञ्जाणं, भत्ता पञ्जाणमित्थिया, जा. अड्ड. 7.265; — स्थियो प्र. वि., ब. व. — दस इत्थियो — मातुरकिखता, पितुरकिखता, मातापितुरकिखता, भातुरकिखता भगिनिरकिखता, जातिरकिखता, गोत्तरकिखता धम्मरकिखता सारक्खा सपरिदण्डा, पारा. 205; इमिना कारणेन इत्थियो नाम असाता लामिका पच्छिमिका"ति जानेय्यासी ति, जा. अड्ड. 1.277; — नं ष. वि., ब. व. — तव माता असातमन्तं उग्गण्हा"ति मम सन्तिकं पेसयमाना इत्थीनं दोसं जाननत्थं

## इत्वा / इत्वान

323

इद्ध

पेसेसि जा. अद्. 1.277; तथा इत्थीनमि रूपसहगन्धरसफोद्भवानि पञ्चावधानि जा. अद्. 5.428; — सु सप्त. वि., ब. व. — वज्झिथियो नत्थि इत्थीसु सच्चं ... इत्थीसु सच्चन्ति एतासु सभावो नामेको नत्थि जा. अद्. 2.99; 2. द्रष्ट. इत्थियुत्तेन; 3. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, स्त्रीलिङ्ग — यं सप्त. वि., ए. व. — तस्सा इत्थियं वत्तमानाय आकारस्स इकारो होति वा संसासु एकवचनेसु विभक्तादेसेसु. क. व्या. 64; इत्थियमतो आप्यच्चयो—इत्थियं वत्तमानाय अकारन्ततो आप्यच्चयो होति. क. व्या. 237; स. उ. प. के रूप में, अधि., अनाचारि., अनि., अमनुस्सि., अलङ्कृति., आरक्खि., उच्छिद्धि., उत्तमि., उपद्वाकि., कपणि., कामि., काळि., कुलि., चतुरि., चतुरि—विमान. जनपदि., तरुणि., तिरच्छानगति., दहरि., दुग्गति., दुद्धि., नच्चि., नागरकि., नाटकि., नानि., पण्डकि., पर-परिग्गहिति., पापि., पुमि., भुजिस्सि., मज्झिमि., मति., मनुस्सि., महल्लकि., महि., राजि., वज्झि., वरि., वल्लभि., सब्बि., समत्तु., स—सामिकि., सस्सामिकि., सुत्ति. के अन्त. द्रष्ट. **इत्वा / इत्वान** ३इ (जाना) का पू. का. कृ. [इत्वा]. जाकर — पटिमुखं इत्वा, इत्वान ... उपेतून अज्जानिपि बुद्धवचनानुरूपतो, सद्. 2.315.

**इत्वेव / इच्चेव** अ., इति + एव के योग से व्यु. [इत्वेव], ऐसा ही, इस तरह से ही, यही — इत्वेव चोरो असिमावुधञ्च, म. नि. 2.310; इत्वेवाति एवं वत्तायेव, म. नि. अद्. (म.प.) 2.238; इच्चेव चोरो असिमावुधञ्च, सोब्भे पपाते नरके अन्वकासि, थेरगा. 869; तत्थ इच्चेवाति इति एव एवं वत्ता अनन्तरमेव, थेरगा. अद्. 2.279.

**इद** 1. निपा. इध का (धकार के स्थान पर दकारादेश कर देने से निर्मित) विपरिवर्तित रूप [इध], यहां, 2. इम, सर्व. का नपुं., प्र. वि., ए. व. 'इदं' का विपरिवर्तित रूप, यह — एकमिदाहं समयं येन पूरणो कस्सपो तेनुपसङ्गमि, दी. नि. 1.46; एकमिदाहं समयं राजगहे विहरामि गिरिबज्जे, म. नि. 1.39; एकमिदाहन्ति एत्थ इदन्ति निपातमत्तं एकं अहन्ति अत्थो, दी. नि. अद्. 1.207; एकमिदाहन्ति एत्थ इदाति निपातमत्तं, एकस्मिं समये अहन्ति वुत्तं होति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).160; — **प्यच्चय** त्रि., कारणसापेक्ष, इसकी कारणता वाला — या प. वि., ए. व. — इमेसं प्यच्चया इदप्यच्चया, सद्. 1.277; सचेपि चवति इदप्यच्चया मे चवति, पटि. म. 302; — **पच्चयता** स्त्री., भाव., कारणसापेक्षता — ता प्र. वि., ए. व. — इदप्यच्चयता च

सा पटिच्चसमुप्पादो चाति, महाव. अद्. 233; इदप्यच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मोसुअज्जाणं, ध. स. 1063(मा.).

**इदमत्थी** त्रि., केवल इसी विशिष्ट (धर्म) को प्रयोजन बनाने वाला अथवा उसे पाने की इच्छा करने वाला — **त्थिता** स्त्री., इदमत्थी का भाव., केवल इसी (विशेष धर्म) को पाने की इच्छा — तं द्वि. वि., ए. व. — निस्साय इदमत्थितज्जेव निस्साय आरज्जिको होति, परि. 256; तं इदमत्थितयेव निस्साय न अज्जं किञ्चि लोकामिसन्ति अत्थो, परि. अद्. 177; — ता प्र. वि., ए. व. — इदमत्थिताति इमे धुतङ्गचेतनाय परिवारका पञ्च धम्मा, विसुद्धि. 1.80.

**इदानि** अ., समयसूचक निपा., क्रि. वि. के रूप में वाक्यों में प्रयुक्त [इदानीम्], इस समय में, अब, आजकल, अभी कुछ ही समय पूर्व में — कदा कुदा सदाधुनेदानि, मो. व्या. 4.106; नाहं इदानियेव ऊरुवेलकस्सपं दमेमि, जा. अद्. 1.92; इमं इदानि इह इतो इध, सद्. 3.676; क. वर्त. के क्रि. प. के साथ प्रयुक्त, अभी ही, तुरन्त ही — इदानेव खो मयं आयस्समतो सारिपुत्तस्स भासितं एवं आजानाम्, म. नि. 1.375; इदानिपि आगन्तुको निहायति, ध. प. अद्. 1.280; **ख** भवि. के क्रि. प. के साथ प्रयुक्त, अब इसके आगे, अब से — इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम्, तं करिस्साम्, दी. नि. 2.122; सचे इदानि एकं अज्जिकं पादे गहेस्सामि, जा. अद्. 1.235; ग. भू. क. कृ., पू. का. कृ. अथवा अघ. के क्रि. प. के साथ प्रयुक्त, वर्तमान समय में, अभी अभी, कुछ ही समय पूर्व — इदानेव खो, आनन्द, अज्ज चापाले चेतिये मारो पापिमा येनाहं तेनुपसङ्गमि, दी. नि. 2.88; 'न, भिक्खवे, इदानेव, पुब्बेपेस अम्बगोपको हुत्वा ...', जा. अद्. 3.117; ते इदानि अतिसायन्हो, मेघो च उद्धितो, ध. प. अद्. 1.12; सत्तेसु मेत्ताभावानं दस्सेत्वा इदानि अहितदुक्खानागमपत्थनावसेनापि तं दस्सेन्तो, खु. पा. अद्. 200.

**इद्ध** त्रि., ३इध का भू. क. कृ., प्रायः फीत के साथ प्रयुक्त [ऋद्ध], समृद्ध, सम्पन्न, धनी, भौतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण, सकल वैभवों से सम्पन्न, सौभाग्यशाली, खुशहाल — द्वा पु., प्र. वि., ब. व. — इज्जन्ति वा सत्ता एताय इद्धा वुद्धा उक्कसंगता होन्तीति इद्धि, सद्. 2.484; क. नगरों, जनपदों, देशों आदि के विशेष. के रूप में प्रयुक्त, धन-धान्य आदि से परिपूर्ण — द्वा पु., प्र. वि., ए. व. — अयं जम्बुदीपो इद्धो चैव भविस्सति फीतो च, दी. नि. 3.55; स. प. के रूप में, इद्धो फीतो महाजनपदो सजनो समुच्छिन्नो, मि. प.

## इद्ध

## 324

## इद्धाभिसङ्गार

133; — द्वा ब. व. — ... एवं जनपदा इद्धा होन्ति, स. नि. अड्ड. 1.227; — द्दं नपुं. प्र. वि., ए. व. — ततियस्स पठमे इद्धन्ति तेलमधुफाणितादीहि समिद्धं, स. नि. अड्ड. 3. 316; इद्धं फीतञ्चिदं रद्धं, इद्धो जनपदो महा, जा. अड्ड. 7.276; इद्धं फीतं सुवित्थारं ..., दी. वं. 9.37; ख. कुल्लो के विशेष. के रूप में, समृद्ध कुल — द्दे नपुं. सप्त. वि., ए. व. — कोसम्बियं सेट्टिकुले, इद्धे फीते महद्धने, जा. अड्ड. 7.124; इद्धे सेनापतीकुले, जा. अड्ड. 7.111; — द्धानि प्र. वि., ब. व. — इद्धानि फीतानि कुलानि अरसु अनेकसाहस्सं / नानि लोके, जा. अड्ड. 5.16; — द्देसु सप्त. वि., ब. व. — हत्थि गवास्सा मणिकुण्डला च, थियो च इद्धेसु कुलेसु जाता सब्बाव ता उपभोगा भवन्ति, जा. अड्ड. 6.189; ग. मनुष्यों के विशेष. के रूप में, समृद्ध मनुष्य — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — इद्धो च फीतो च सुवद्धितो च अमच्चो च ते अज्जतरो जनिन्द, जा. अड्ड. 5.202; — रस ष. वि., ए. व. — सब्बाव ता उपभोगा भवन्ति, इद्धस्स पोसस्स अनिद्धिमन्तो, जा. अड्ड. 6.189; घ. आहार, पेय आदि के विशेष. के रूप में, पौष्टिक आहार — कच्चि, सारिपुत्त, भत्तं इद्धं अहोसीति ? इद्धं खो, भन्ते, भत्तं अहोसि, अपिच मं भिक्खू एककं ओहाय पक्कन्ताति ?, चूळव. 355; इद्धं अहोसीति सम्पन्नं अहोसि, चूळव. अड्ड. 117; छ. ब्रह्मचर्य अथवा भिक्षुजीवन के विशेष. के रूप में — परिपूर्ण (ब्रह्मचर्य) — द्दं नपुं. प्र. वि., ए. व. — इद्धन्ति समिद्धं ज्ञानस्सादवसेन, दी. नि. अड्ड. 2.130; इद्धन्ति समिद्धं ज्ञानुप्पादवसेन, उदा. अड्ड. 267; च. बुद्धसासन के विशेष. के रूप में, पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा (बुद्धशासन) — द्दं नपुं. प्र. वि., ए. व. — वित्थारिकं बाहुज्जं, इद्धं फीतं अहु तदा, दीपङ्करस्स भगवतो, सासनं सुविसोधितं, जा. अड्ड. 1.39; छ. बुद्ध की अववाद-देशना के विशेष. के रूप में, अर्थ-भरा, गम्भीर — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — कच्चि, भिक्खुनियो, ओवादो इद्धो अहोसीति ? कुतो भन्ते, ओवादो इद्धो भविस्सति, पाचि. 73; इद्धोति समिद्धो सहितत्थो गम्भीरो बहुरसो लक्खणपटिवेधसयुत्तो, पाचि. अड्ड. 47; कच्चि ओवादो इद्धो अहोसीति ? ... कुत्तो ओवादो इद्धो भविस्सतीति ?, पाचि. 427; ज. इच्छा आदि मनोभावों के विशेष. के रूप में, सफल, पूर्ण — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — कच्चिन्नु चित्तस्सपि एवमेवं, इद्धो मनो तस्स यथापि मय्हन्ति, जा. अड्ड. 4.353; — गुण त्रि., ब. स., अत्यन्त उत्तम गुणों से युक्त — णं पु., द्वि. वि., ए.

व. — सिद्ध मिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं, मो. व्या. 1(पृ.).

इद्धानुभाव पु., तत्पु. स. [बौ. सं. ऋद्धयनुभाव], ऋद्धियों (अलौकिक मानसिक बलों) का प्रभाव या शक्ति, ऋद्धियों की महत्ता या प्रभावमयता — वो प्र. वि., ए. व. — निस्संखं खो महासमणस्स इद्धानुभावो, महाव. 36; को नु खो अयं सत्तो यस्सायं एवरूपो इद्धानुभावो, उदा. 101; — वं द्वि. वि., ए. व. — पस्सन्ति नो भोन्तो देवा तावतिसा ममपिमं एवरूपं इद्धानुभावन्ति, दी. नि. 2.157; अथ थरो भगवता एतदग्गे ठपितभावानुरूपं अत्तनो इद्धानुभावं पकासेन्तो "एकाहं, भन्ते"ति आदिमाह, पारा. अड्ड. 1.139; ब्रह्मनो ओवादो ठितानं इद्धानुभावं दस्सेति, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).299; — वा प. वि., ए. व. — समणब्राह्मणा न परिमुच्चिसु मारस्स इद्धानुभावा सेय्यथापि ते, भिक्खवे, पठमा मियजाता तथूपमे अहं इमे पठमे समणब्राह्मणे वदामि, म. नि. 1.213; — वे द्वि. वि., ब. व. — अज्जेसज्ज देवानं यथासकं इद्धानुभावे "देविद्धि" वेदितब्बा, पारा. अड्ड. 2.38; — वेन तृ. वि., ए. व. — भिक्खू इद्धानुभावेन समं कत्वा महीतल, दी. वं. 7.2, तज्ज नाव अत्तनो इद्धानुभावेन तेहि इच्छितपट्टनं तं दिवसमेव उपनेसि, पे. व. अड्ड. 46; — त्त नपुं. इद्धानुभाव का भाव. [ऋद्धयनुभावत्व], ऋद्धि की प्रभावमयता, ऋद्धियों का सामर्थ्य या प्रभविष्णुता — ता प. वि., ए. व. — सत्थु वत्तं दस्सेत्वा सासनस्स, निप्यानिक-भाव-दस्सनत्थं मय्हं इद्धानुभावत्ता आकासे निसीदित्वा ..., उदा. अड्ड. 431.11(रो.); — महन्ततापकासनापदेस पु., तत्पु. स., ऋद्धि के प्रभाव अथवा सामर्थ्य की महानता को प्रकाशित करने का बहाना — सेन तृ. वि., ए. व. — आदिना इद्धानुभावमहन्ततापकासनापदेसेन अत्तनो ..., उदा. अड्ड. 200; — सिरी स्त्री, तत्पु. स., ऋद्धि के प्रभाव की भव्यता अथवा आभा — रिया तृ. वि., ए. व. — एवं इद्धानुभावसिरिया देवमनुस्सानं पीतिं जनयन्तो, पारा. अड्ड. 1.60.

इद्धाभिसङ्गार पु., तत्पु. स. [बौ. सं. ऋद्धयभिसंस्कार], ऋद्धियों का व्यवहार में प्रयोग, ऋद्धि-सिद्धियों का प्रदर्शन — रं द्वि. वि., ए. व. — अथ खो भगवा तथारूपं इद्धाभिसङ्गारं अभिसङ्गासि, दी. नि. 1.92; तथारूपं इद्धाभिसङ्गारं अभिसङ्गरेय्यं, महाव. 20; आयस्सा महामोग्गल्लानो तथारूपं इद्धाभिसङ्गारं अभिसङ्गासि, म. नि. 1.322; इद्धाभिसङ्गारं अभिसङ्गासीति इद्धिमकासि, म. नि. अड्ड. (मू.प.) 1(2).199.

## इद्धि

325

## इद्धिक

इद्धि स्त्री, [ऋद्धि], शा. अ., समृद्धि, प्रभावमयता, महिमा, उच्च स्थिति, ऊँची सफलता, विशेष अर्थ, चमत्कारपूर्ण दिव्य शक्तियाँ, अलौकिक शक्तियाँ, क. परम्परागत विशिष्ट अर्थ — बुद्धों की उपायसम्पत्ति के रूप में प्रयुक्त दिव्य शक्तियाँ, प्राणियों का उत्थान कराने वाली दिव्य शक्तियाँ — इद्धि प्र. वि., ए. व. — इज्जानद्धेन इद्धि, पटि. म. 376; इज्जानद्धेन इद्धि निष्फत्तिअत्थेन पटिलाभद्धेन चाति ... अपरो नयो इज्जानद्धेन इद्धि उपायसम्पदायेतमधिवचनं ... अपरो नयो, एताय सत्ता इज्जन्तीति इद्धि, इज्जन्तीति इद्धा बुद्धा उक्कसंगता होन्तीति वुत्तं होति, विसुद्धि. 2.6-7; इद्धीति, या तेसं धम्मानं इद्धि समिद्धि इज्जना समिज्जना लाभो पटिलाभो पत्ति सम्पत्ति फुसना सच्छिकिरिया उपसम्पदा, विभ. 244; ख. राजा आदि उच्चपदस्थ मनुष्यों की विशिष्ट शक्तियाँ, प्रभाव या सामर्थ्य, उच्च स्थिति या दैवी संपदा, — इद्धी प्र. वि., ब. व. — त्वं नोसिस्सरियं दाता, मनुस्सेसु महन्तत्, तयामा लब्धिता इद्धी एत्थ मे नत्थि संसयो, जा. अहु. 4.37; — या तू. वि., ए. व. — तायिद्धिया दक्खसि मं पुनापीति ... ताय इद्धिया मं पुनपि त्वं पस्सिस्ससीति, जा. अहु. 6.202-203; — इद्धिं द्वि. वि., ए. व. — तां तादिसं पच्चनुभोस्सतिद्धिं, पे. व. 459; इद्धिन्ति देविद्धिं, दिब्बसम्पत्तिन्ति वुत्तं होति, पे. व. अहु. 172; — इद्धीहि तू. वि., ब. व. — राजा, आनन्द, महासुदस्सो चतूहि इद्धीहि समन्नागतो अहोसि, दी. नि. 2.132; चतूहि राजिद्धीहि समन्नागतो अहोसि, उपरिचरो आकासगामी, चत्तारो नं देवपुता चतूसु दिसासु खगहत्था रक्खन्ति, कायतो चन्दनगन्धो वायति, मुखतो उप्पलगन्धो, जा. अहु. 3.401; — इद्धियो प्र. वि., ब. व. — अभिसेकानुभावेन चस्स इमा राजिद्धियो आगता, पारा. अहु. 1.31; ग. नागों, यक्षों एवं देवों जैसे दैवी प्राणियों की दिव्य शक्तियाँ, देवों आदि की दिव्य विभूति — इद्धी प्र. वि., ब. व. — इद्धी हि त्यायं विपुला, सक्कस्सेव जुतीमतोति, जा. अहु. 7.16; असस्सत्तं सस्सत्तं नु तवयिदं, इद्धी जुती बलवीरियूपपत्ति, जा. अहु. 7.213; — इद्धिं द्वि. वि., ए. व. — इद्धिं पस्स यसञ्च मे, वि. व. 859; इद्धिन्ति समिद्धिं, दिब्बविभूतिन्ति अत्थो, वि. व. अहु. 185; — या तू. वि., ए. व. — इद्धिया यससा जल, स. नि. 1(1).142; दिब्बसंपत्तिसमिद्धिया च परियारसद्धतेन यससा च, अ. नि. अहु. 2.254; हंसादिच्यपथे यन्ति, आकासे यन्ति इद्धिया, ध. प. 175; याय जम्बुया अयं जम्बुदीपो पञ्जायति, इद्धिया तं जम्बुं उपसङ्गमित्वा ततो

फलं आहरित्वा ..., वु. वं. अहु. 258; घ. बुद्ध, अर्हत्तों, शैष्य भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों को प्राप्त दिव्य शक्तियाँ — इद्धि प्र. वि., ए. व. — इद्धीपि मे सच्छिउक्ता, पत्तो मे आसवक्खयो, थेरीगा. 71; — इद्धिं द्वि. वि., ए. व. — कथं त्वं आवुसो, इद्धिं वळ्ज्जेसीति पुटो तमतथं आयिक्खन्तो ..., थेरगा. अहु. 1.228; — यां ष. वि., ए. व. — अहं विकुब्बनासु कुसलो, वसीभूतोहि इद्धिया, थेरगा. 1192; — यां सप्त. वि., ए. व. — यादिसो महामोग्गलानत्थेरो इद्धिया, अहमपि तादिसो होमि, अ. नि. अहु. 2.59; — इद्धीसु सप्त. वि., ब. व. — इद्धीसु च वसी होमि, दिब्बाय सौतधातुया, अप. 2.228; — नं ष. वि., ब. व. — इद्धिलाभायाति अत्तनो सन्ताने पातुभाववसेन इद्धीनं लाभाय, पटि. म. अहु. 2.245; छ. पांच अथवा छ प्रकार के अभिज्ञा-बलों में प्रथम, तीन प्रकार के ऋद्धिप्रातिहार्यों में प्रथम, आकाश में उड़ने, जल पर चलने, स्थल पर डूबने उतराने जैसी आठ दिव्यशक्तियाँ अथवा इद्धिविधाएं, दस ऋद्धियों की उत्तरकालीन सूची में प्रथम प्रमेद के उपमेदों के रूप में अन्तर्भूत, चार इद्धिभूमियों (चरणों), आठ इद्धिपदों एवं सोलह इद्धिमूलों के विवरणों के साथ भी निर्दिष्ट, प्र. वि., ए. व. — अधिद्वाना इद्धि, विकुब्बना इद्धि, मनोमया इद्धि, जाणविष्कारा इद्धि, समाधि विष्कारा इद्धि, अरिया इद्धि, कम्मविपाकजा इद्धि, पुञ्जवतो इद्धि, विज्जामया इद्धि तत्थ तत्थ सम्मा पयोगपच्चया इज्जानद्धेन इद्धि, पटि. म. 376; स. उ. प. के रूप में, अतिशक्ति, अधिद्वानि, अभिज्ञापादिक, अरियि, अभिसि, उप्पत्ति, कम्मविपाकजि, चेतोपरियायि, दिब्बि, देवि, धम्मि, नागि, पादकि, पुञ्जमयि, पुञ्जि, भावनामयि, मनोमयि, यक्खि, राजि, विकुब्बनि, विपाकि, समाधि, सुपण्णि. के अन्त. द्रष्ट.

इद्धिआदेसनानुसासनी स्त्री. द्व. स. श्रोताओं की मनोदशा को जानकर तदनुरूप उन्हें उपदेश देने की बुद्धों की दिव्य शक्ति, बुद्ध के तीन प्रातिहार्यों में से एक — नी प्र. वि., ए. व. — इद्धिआदेसनानुसासनीसमुदाये भवं एकेकं पाटिहारियन्ति वुच्चति, उदा. अहु. 9; — हि तू. वि., ब. व. — ... इद्धिआदेसनानुसासनीहि हरिता अपनीता होन्ति, उदा. अहु. 9; — नियो प्र. वि., ब. व. — इद्धिआदेसनानुसासनीयो विगतूपक्किलेसेन कतकिच्चैन सत्तहितत्थं पुन पवत्तेतब्बा ... भवन्ति, उदा. अहु. 9.

इद्धिक त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, ऋद्धियों अथवा दिव्य शक्तियों से युक्त अनि., तेजि., महि. के



## इदिकथा

326

## इद्विपत्त

अन्तः द्रष्टुः - ता स्त्री, भाव, ऋद्धि-सम्पन्नता - अच्छरियं वत्, भो, अभुतं वत्, भो, समणस्स महिद्विकता महानुभावता, दी. नि. 1.196; - भाव पु., उपरिवत् - वं द्वि. वि., ए. व. - सो विञ्जुतं पत्तो महामोग्गल्लानत्थेरस्स महिद्विकभावं सुत्वा, थेरगा. अट्ट. 1.228.

**इद्विकथा** स्त्री., तत्पु. स. [ऋद्धिकथा], क. पटि. म. एवं कथा. के एक खण्डविशेष का शीर्षक, पटि. म. 376-383; कथा. 488-489; ख. विसुद्धि. के एक खण्डविशेष का शीर्षक, इद्विविधनिर्देश के स्थान पर प्रयुक्त वैकल्पिक शीर्षक, विसुद्धि. 2.1-34; - य तृ. वि., ए. व. - वत्थु विसुद्धिमग्गे इद्विकथाय वित्थारितं, म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(2).316; - वर्णना स्त्री., पटि. म. अट्ट. तथा कथा. के एक व्याख्यान-खण्ड का शीर्षक जिसमें ऋद्धियों का विवेचन है, पटि. म. अट्ट. 2.244-276; प. प. अट्ट. (कथा.) 275.

**इद्विकरण** नपुं., [ऋद्धिकरण], ऋद्धियों का प्रयोग, दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन - णं प्र. वि., ए. व. - 'मा अम्हाकं इद्विकरणं भारोति चित्तयित्थं जा. अट्ट. 4.235; - तो प. वि., ए. व. - इद्विकरणतो पुब्बे पकतिया एकोपि, विसुद्धि. 2.12; - काल पु., तत्पु. स. [ऋद्धिकरणकाल], ऋद्धियों के प्रयोग अथवा प्रदर्शन का काल - ले सप्त. वि., ए. व. - इद्विकरणकाले यथासुखं चित्तचारस्स इज्जनत्थं योगविधानं दस्सेतुं वुत्तं, पटि. म. अट्ट. 1.277.

**इद्विकारण** नपुं., तत्पु. स. [ऋद्धिकारण], समृद्धि का कारण, सफलता का कारण - णं प्र. वि., ए. व. - मङ्गलन्ति इद्विकारणं वुद्धिकारणं सब्बसम्पत्तिकारणं, खु. पा. अट्ट. 98.

**इद्विकोडास** पु., तत्पु. स. [ऋद्धिकोष्ठांश], ऋद्धि के घटक तत्त्व, ऋद्धि के अङ्ग, ऋद्धि में अन्तर्निहित प्रमुख घटक - सो प्र. वि., ए. व. - इद्वि एव विधं इद्विविधं, इद्विकोडासो, इद्विविकप्पोति अत्थो, पटि. म. अट्ट. 1.43; इद्वि एव पादो इद्विपादो इद्विकोडासोति अत्थो, उदा. अट्ट. 248; - सं द्वि. वि., ए. व. - इद्विविधन्ति इद्विकोडासं, स. नि. अट्ट. 2.110.

**इद्विकोविद** त्रि., तत्पु. स. [ऋद्धिकोविद], ऋद्धियों के प्रयोग या प्रदर्शन में दक्ष - दा पु., प्र. वि., ब. व. - खीणासवा वसिप्पत्ता तेविज्जा इद्विकोविदा, पारा. अट्ट. 1.71.

**इद्विगुण** पु., तत्पु. स. [ऋद्धिगुण], ऋद्धि का गुण, दिव्यशक्ति की सम्पदा - णेन तृ. वि., ए. व. -

पञ्चविधेन इद्विगुणेन समन्नागता, जा. अट्ट. 5.132; - णे सप्त. वि., ए. व. - वसी इद्विगुणे चुतूपपाते, थेरगा. 909; एवं इद्विगुणे इद्विसम्पदाय चुतूपपाते च वसीभावप्पत्तो ..., थेरगा. अट्ट. 2.293.

**इद्विगुणूपपन्न** त्रि., तत्पु. स. [ऋद्धिगुणोपपन्न], ऋद्धि (लोकोत्तर मानसिक शक्ति) के गुणों से युक्त, ऋद्धिमान् - न्ना पु., प्र. वि., ब. व. - इद्विगुणूपपन्नाति पञ्चविधेन इद्विगुणेन समन्नागता, जा. अट्ट. 5.132.

**इद्विचित्त** नपुं., तत्पु. स. [ऋद्धिचित्त], ऋद्धि-विषयक चेतना, ऋद्धियों से सम्बद्ध चित्त, ऋद्धिबलों से परिपूर्ण चित्त - तेन तृ. वि., ए. व. - ... पादकज्झानारम्भणेन इद्विचित्तेन सहजातं सुखसञ्जञ्च ..., विसुद्धि. 2.32; - त्तं प्र. वि., ए. व. - इद्विचित्तमेव परस्स चित्तं जानाति, न इतरानि, विसुद्धि. 2.60; - तो प. वि., ए. व. - इद्विचित्ततो बुद्धिहत्वा भवइचित्तेन परिनिब्बायि, उदा. अट्ट. 350.

**इद्विज** त्रि., [ऋद्धिज], ऋद्धियों की दिव्य शक्ति से उत्पन्न, ऋद्धिबल से उत्पन्न - जं नपुं., प्र. वि., ए. व. - इद्विजं देवदित्रञ्च, तस्स तस्सानुलोमिकं, खु. सि. 6; इद्विजं एहिभिक्षून् पुञ्जिद्विया निब्बत्तचीवरं, तं खोमादीनं ... अनुलोमं, सारत्थ. टी. 2.340-341.

**इद्विधम्म** पु., तत्पु. स. [ऋद्धिधर्म], ऋद्धि, अलौकिक दिव्य शक्ति - म्मेसु सप्त. वि., ब. व. - असमो इद्विधम्मेषु अलभिं ईदिसं सुखं, बु. वं. 2.80; पञ्चसु इद्विधम्मेषूति अत्थो, बु. वं. अट्ट. 114.

**इद्विनिमित्त** त्रि., तत्पु. स. [ऋद्धिनिर्मित], ऋद्धियों द्वारा निर्मित, अलौकिक दिव्य शक्तियों द्वारा बनाया गया - तं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - सब्बरतनमयंपीठं निम्मिनित्तवान तावदे पियदस्सिस्स मुनिनो अदासि इद्विनिमित्तं अप. 1.387.

**इद्विपटिलाप** पु., तत्पु. स. [ऋद्धिप्रतिलाप], ऋद्धियों के बल की पुनः प्राप्ति, अलौकिक दिव्य शक्तियों को फिर से पा लेना - भाय च. वि., ए. व. - मग्गो या पटिपदा इद्विलाभाय इद्विपटिलाभाय संवत्ति, स. नि. 3(2).348; इद्विया इमा चतस्सो भूमियो इद्विलाभाय इद्विपटिलाभाय इद्विविकुब्बनत्ताय ... संवत्तन्तीति, पटि. म. 376; इद्विपटिलाभायाति परिहीनानं वा इद्दीनं वीरियारम्भवसेन पुन लाभाय, पटि. म. अट्ट. 2.245.

**इद्विपत्त** त्रि., ब. स. [ऋद्धिप्राप्त], ऋद्धिबल को प्राप्त, ऋद्धिविध ज्ञान को प्राप्त - ता पु., प्र. वि., ब. व. -

## इक्षिपदेस

327

## इक्षिपाद

तेविज्जा इक्षिपत्ता च, चेतोपरियायकोविदा, स. नि. 1(1).173; इक्षिपत्ताति इक्षिविधज्जाणं पत्ता, स. नि. अहु. 1.188.

**इक्षिपदेस** पु., तत्पु. स. [ऋद्धिप्रदेश], ऋद्धि का एक भाग या एक क्षेत्र, स्रोतापत्तिमार्ग, सकृदागामी-मार्ग, अनागामी-मार्ग इन तीन मार्गों तथा स्रोतापत्ति-फल, सकृदागामीफल तथा अनागामी-फल, इन तीनों फलों वाला ऋद्धि का एक प्रदेश — सं द्वि. वि., ए. व. — ... इक्षिपदेसं अभिनिष्पादेसुं स. नि. 3(2).330; पञ्चमे इक्षिपदेसन्ति तयो च मग्गे तीणि च फलानि, स. नि. अहु. 3.280; इक्षिपदेसन्ति इक्षिया एकदेसं, को पन सोति आह — तयो च मग्गे तीणि च फलानीति, लीन. (स.नि.टी.) 2(2).205.

**इक्षिपलिबोध** पु., तत्पु. स., विपस्सना के दस प्रकार के अन्तरायों में से एक, ऋद्धि की प्राप्ति के रूप में आध्यात्मिक साधना की एक बाधा — घो प्र. वि., ए. व. — तस्मा विपस्सन्तथिकेन इक्षिपलिबोधो उपच्छिन्दितब्बो ..., विसुद्धि. 1.95; स. प. के अन्तः. — पठमं तावस्स आवासकुललाभगणकम्मद्धानजाति गन्धरोगइक्षिपलिबोधेन, खु. पा. अहु. 29.

**इक्षिपहुता** स्त्री., तत्पु. स. [ऋद्धिप्रभुता], ऋद्धियों पर प्रभुत्व, ऋद्धियों का प्रभुत्व, ऋद्धियों की प्रचुरता — य च. वि., ए. व. — भगवता जानता ... इक्षिपादा पञ्जता इक्षिपहुताय इक्षिविसविताय, दी. नि. 2.157; इक्षिपहुतायाति इक्षिपहोनकताय, दी. नि. अहु. 2.210.

**इक्षिपाटिहारिय** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं., ऋद्धि-प्रातिहार्य], धर्मदेशना के क्रम में बुद्ध द्वारा प्रदर्शित तीन प्रकार के चमत्कारों में प्रथम, ऋद्धियों का चमत्कार, दिव्य अलौकिक शक्तियों का चमत्कारमय प्रदर्शन — यं प्र. वि., ए. व. — कतमानि तीणि ? इक्षिपाटिहारियं, आदेसनापाटिहारियं, अनुसासनीपाटिहारियं, दी. नि. 1.196; — येन तू. वि., ए. व. — तत्थ इक्षिपाटिहारियेन अनुसासनीपाटिहारियं ... आदेसनापाटिहारियेन ... धम्मसेनापातिसस, दी. नि. अहु. 1.292; इक्षिपाटिहारियेन अनुसासनीपाटिहारियेन च सत्तानं अनुगहं करोन्तो विहरति, थेरगा. अहु. 1.228; — ये सप्त. वि., ए. व. — इमं खो अहं केवड, इक्षिपाटिहारिये आदीनवं ... जिगुच्छामि, दी. नि. 1.197; — **करण** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं., ऋद्धिप्रातिहार्यकरण], ऋद्धिचमत्कारों का प्रदर्शन, अलौकिक दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन — णं द्वि. वि., ए. व. — सत्था भिक्खून् इक्षिपाटिहारियकरणं

पटिदिखापि, जा. अहु. 4.235; ननु भगवता इक्षिपाटिहारियकरणं पटिदिखत्तन्ति, उदा. अहु. 350; — **यानुसासनी** स्त्री., ऋद्धिचमत्कार-विषयिणी शिक्षा या उपदेश — **निया** तू. वि., ए. व. — आयरमा महमोग्गल्लानो इक्षिपाटिहारियानुसासनिया ... अनुसासि, चूळव. 340.

**इक्षिपाटिहीर** नपुं., कर्म. स. [बौ. सं., ऋद्धिप्रातिहार्य], ऋद्धिबल का आश्चर्यजनक प्रदर्शन, अदभुत ऋद्धि-चमत्कार — रेन तू. वि., ए. व. — इक्षिपाटिहीरेन अहुलियो अदीपेत्वा यं सब्बेसं धम्मानं ..., पेटको. 223.

**इक्षिपाद** पु./नपुं., [बौ. सं., ऋद्धिपाद], 1. ऋद्धि अथवा अलौकिक दिव्य शक्ति के चार घटक, ऋद्धि के चार आधारभूत तत्त्व, छन्द, चित्त, विरिय एवं वीमस नामक ऋद्धि के चार आधार या घटक, 2. ऋद्धि नाम से लोक-व्यवहार में प्रसिद्ध अभिज्ञा चित्तों के साथ जुड़े हुए छन्दसमाधि एवं सम्यक् प्रधान के आधारभूत शेष चित्त एवं चैतसिक, ऋद्धि के लाभ अथवा प्रतिलाभ के लिए आधारभूत मार्ग — दो प्र. वि., ए. व. — इक्षिया पादो इक्षिपादो छन्दादीनमेतं अधिवचनं, विसुद्धि. 2.13; कतमो चानन्द, इक्षिपादो ? यो आनन्द, मग्गो या पटिपदा इक्षिलाभाय इक्षिपटिलाभाय संवत्तति अयं वुच्चतानन्द इक्षिपादो, स. नि. 3(2).356; पुब्बे वुत्तेन इज्झनद्धेन इक्षि तस्सा सम्ययुत्ताय पुब्बइमद्धेन फलभूताय पुब्बभागकारणद्धेन च इक्षिया पादोति इक्षिपादो, विसुद्धि. 2.317; — दं<sup>1</sup> नपुं., प्र. वि., ए. व. — इक्षिपादन्ति निष्फत्तिपरियायेन इज्झनद्धेन वा, इज्झन्ति एताय सत्ता ... इमिना वा परियायेन इद्धीति सङ्खयं गतानं अभिज्जाचित्तसम्पयुत्तानं छन्दसमाधिपधानसङ्खारानं अधिद्वानद्धेन पादभूतो सेसचित्तचेतसिकरासी ति अत्थो, दी. नि. अहु. 2.210; विसुद्धि. 2.13; इक्षिया पादं, इक्षिभूतं वा पादन्ति इक्षिपादं, अ. नि. अहु. 1.374; — दा प्र. वि., ब. व. — चत्तारो इक्षिपादा छन्दिक्षिपादो चित्तिक्षिपादो विरियिक्षिपादो वीमसिक्षिपादोति, विसुद्धि. 2.317; इक्षिपादाति एत्थ इज्झनद्धेन इक्षि, पटिद्वानद्धेन पादाति वेदितब्बा, दी. नि. अहु. 2.210; चत्तारो सतिपट्टाना चत्तारोसम्मपधाना चत्तारो इक्षिपादा पञ्चिन्द्रियानि पञ्च बलानि सत्त बोज्झङ्गा अरियो अहुङ्गिको मग्गो, दी. नि. 2.92; — दं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — भिक्खु छन्दसमाधि ... सङ्खारसमन्नागतं इक्षिपादं भावेति, स. नि. 3(2).355; — देसु सप्त. वि., ब. व. — इक्षिपादेसु छन्दं निस्साय पवत्तो समाधि छन्दसमाधि, अ. नि. अहु. 1.374; — दानं ष. वि., ब. व. — सो इमेसं

## इक्षिपाद

328

## इक्षिबल

चतुर्त्रं इक्षिपादानं भावितत्ता बहुलीकतत्ता आकङ्क्षमानो कप्पं  
वा तिद्वेय्य कप्पावसेसं वा दी. नि. 3.57; धातूनं सुञ्जतालक्षणं  
... इक्षिपादानं इञ्जनलक्षणं, अ. नि. अट्ठ. 1.88; —  
दानि नपुं. द्वि. वि. ब. व. — भावेय्य च बोञ्जङ्गे,  
इक्षिपादानि इन्द्रियानि बलानि, थेरगा. 595; स. उ. प. के  
रूप में चिति., छन्दि., विरियि., वीमसि., प्रधानसङ्गारि.,  
समाधि. के अन्त. द्रष्ट.; — कथा स्त्री., दस कथावत्थुओं  
में एक — थं द्वि. वि. ए. व. — ... इक्षिपादकथं  
इन्द्रियकथं ... निब्बानकथं कथेति, महानि. 356; — कुसल  
त्रि., तत्पु. स. [बौ. सं. ऋद्धिपादकुसल], ऋद्धियों के  
आधारों या अधिष्ठानों के विषय में कुशल — ला पु., प्र.  
वि. ब. व. — खन्धकुसला धातुकुसला आयतनकुसला  
पटिच्चसमुप्पादकुसला सतिपट्टानकुसला सम्मप्यधानकुसला  
इक्षिपादकुसला इन्द्रियकुसला बलकुसला बोञ्जङ्गकुसला  
मग्गकुसला फलकुसला निब्बानकुसला, ते कुसला एवमाहंसु  
महानि. 49; — गोचर त्रि., ब. स., ऋद्धि के आधारों को  
अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाला — रा पु., प्र. वि. ब. व. —  
इमे पञ्च धम्मा पञ्च अत्था छन्दवत्थुका इक्षिपादवत्थुका  
इक्षिपादरम्मणा इक्षिपादगोचरा, पटि. म. 339; — ता  
स्त्री., भाव. [ऋद्धिपादत्व. नपुं.], ऋद्धियों की आधारभूतता  
या अधिष्ठानभाव — ता प्र. वि. ए. व. — अपिच तेसं तेसं  
धम्मानं पुब्बभागवसेनापि एतेसं इक्षिपादता वेदितव्वा, स.  
नि. अट्ठ. 3.285; एतेसं इक्षिपादता वेदितव्वा, स. नि. अट्ठ.  
3.285; — धीर त्रि., तत्पु. स., ऋद्धि के आधारों या  
घटकों के विषय में बुद्धिमान् — रा पु., प्र. वि. ब. व. —  
अपि च खन्धधीरा धातुधीरा ... इक्षिपादधीरा इन्द्रियधीरा  
..., ते धीरा एवमाहंसु, महानि. 32; — पादुका स्त्री.,  
[ऋद्धिपादुका], शा. अ., ऋद्धि की खडार्क, ला. अ.,  
आकाश में उड़ने की दिव्य शक्ति — का द्वि. वि. ब. व.  
— इक्षिपादपादुका आरुह्य निब्बाननगरं पविसित्वा धम्मपासादं  
आरुह्य ..., स. नि. अट्ठ. 2.73; — कं द्वि. वि. ए. व. —  
पादुके सुगतं दत्त्वा, सङ्गे गणवरुत्तमे, इक्षिपादुकमारुह्य,  
विहरामि यदिच्छकं, अप. 1.343; — पुच्छा स्त्री., तत्पु. स.,  
[ऋद्धिपादपुच्छा], ऋद्धिपादों के विषय में पूछताछ या  
प्रश्न — च्छा प्र. वि. ए. व. — अपरापि तिस्रो पुच्छा  
सतिपट्टानपुच्छा सम्मप्यधानपुच्छा, इक्षिपादपुच्छा, महानि.  
251; — मावना स्त्री., तत्पु. स. [ऋद्धिपादभावना],  
ऋद्धि के आधारों या अधिष्ठानों का विकास, वृद्धि या  
सुदृढीकरण — नं द्वि. वि. ए. व. — इद्धिं वो, भिक्खवे,

देसं रस्सामि इक्षिपादञ्च इक्षिपादभावनाञ्च  
इक्षिपादभावनागामिनिञ्च पटिपदं, स. नि. 3(2).347; —  
य ष. वि., ए. व. — “को नु खो हेतु को पच्चयो  
इक्षिपादभावनाया”ति, स. नि. 3(2).337; — वग्ग पु., अ.  
नि. का ऋद्धिपादों का अनुशीलन करने वाला एक  
खण्डविशेष, अ. नि. 3(1).269-270; — वण्णना स्त्री.,  
तत्पु. स., ऋद्धिपादों का वर्णन, स. नि. अट्ठ. 3.280-  
291; — वत्थुक त्रि., ब. स., ऋद्धिपादों पर प्रतिष्ठित या  
आधारित — का पु., प्र. वि. ब. व. — इमे पञ्च धम्मा  
पञ्च अत्था छन्दवत्थुका इक्षिपादवत्थुका इक्षिपादारम्मणा  
इक्षिपादगोचरा ..., पटि. म. 339; — विभङ्ग पु., विभङ्ग का  
इक्षिपाद-विषयक एक भाग, विभ. 243-255; विभ. अट्ठ.  
287-292; — संयुत्त नपुं., स. नि. का इक्षिपाद-विवेचक  
एक स्थल-विशेष, स. नि. 3.328-364; — सुत्त नपुं., स.  
नि. के दो सुत्तों एवं अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स.  
नि. 2(2).335; 2(2).339; अ. नि. 2(1).76; — दारम्मण  
त्रि., ब. स., ऋद्धि के आधारों को अपना आलम्बन बनाने  
वाला — णा पु., प्र. वि. ब. व. — इमे पञ्च धम्मा पञ्च  
अत्था छन्दवत्थुका इक्षिपादवत्थुका इक्षिपादारम्मणा  
इक्षिपादगोचरा ..., पटि. म. 339; — दाभिसमय पु.,  
तत्पु. स., ऋद्धिपादों का ज्ञान — यो प्र. वि. ए. व. —  
इञ्जनहेन इक्षिपादाभिसमयो, पटि. म. 386.

इक्षिप्पत्त त्रि., तत्पु. स. [ऋद्धिप्राप्त], 1. ऋद्धि के बल को  
प्राप्त किया हुआ व्यक्ति — त्तो पु., प्र. वि. ए. व. —  
तेविज्जो इक्षिप्पत्तोहि वेतोपरियायकोविदो, स. नि.  
1(1).227; — त्ता प्र. वि. ब. व. — इक्षिप्पत्ताति  
इक्षिप्पिज्जाणं पत्ता, स. नि. अट्ठ. 1.188; 2. धनसम्पदा को  
प्राप्त, ऊंचे पद को प्राप्त — त्ताय स्त्री., ष. वि. ए. व.  
— होन्ति हेते, महाराज, इक्षिप्पत्ताय नारिया, जा. अट्ठ. 3.19.  
इक्षिबल नपुं., तत्पु. स. [ऋद्धिबल], ऋद्धि का बल या  
सामर्थ्य — लं प्र. वि. ए. व. — इक्षिबलं पञ्जावलञ्च  
कीदिसं, बुद्धबलं लोकहितस्स कीदिसं, बु. वं. 1.3; इक्षिबलं  
पञ्जावलञ्च एदिसं, बुद्धबलं लोकहितस्स एदिसं, बु. वं.  
1.4; — लेन तृ. वि. ए. व. — इक्षिबलेनुपत्थद्धो संवेजेसि  
च देवता, म. नि. 1.422; सद्धिं इक्षिबलेन जेतवने ...  
पातुरहोसि, जा. अट्ठ. 4.281; — कथा स्त्री., तत्पु. स.,  
कथा. के एक खण्डविशेष का शीर्षक, कथा. 368; प. प.  
अट्ठ. 223; — पत्त त्रि., ऋद्धिबल को पाया हुआ — तेहि  
पु., तृ. वि. ब. व. — बलप्पत्तेहीति इक्षिबलप्पत्तेहि, बु. वं.

## इक्षिमद

329

## इक्षिय/इष्टिय

अहु. 231; — लामाव पु., तत्पु. स. [ऋद्धिबलाभाव], ऋद्धिबल का अभाव — बा प. वि., ए. व. — खीणासवापि समाना इक्षिबलाभावा परकुलानि पिण्डाय उपसङ्गमिस्सन्ति, पारा. अहु. 1.139.

इक्षिमद पु., तत्पु. स. [ऋद्धिमद], ऋद्धियों से युक्त होने का दर्प, ऋद्धिमान होने का अहंभाव — दो प्र. वि., ए. व. — इक्षिमदो यसमदो सीलमदो ..., विभ. 395; तं तं इज्झतीति वा भज्जनवसेन उप्पन्नो मानो इक्षिमदो, नाम. विभ. अहु. 442.

इक्षिमन्तु त्रि., इक्षि + मन्तु प्रत्यय के योग से निष्पन्न [ऋद्धिमत्], ऋद्धियों का स्वामी, अलौकिक दिव्य शक्तियों से सम्पन्न, अद्भुत शक्ति एवं ऐश्वर्य से युक्त, इक्षिविध-नामक ज्ञान से युक्त — मा/मन्तो पु., प्र. वि., ए. व. — वण्डेत्थ नागराजा इक्षिमा आसिविसो घोरविसो, महाव. 29; नागोहमस्मि इक्षिमा तेजस्सी दुरतिक्कमो, जा. अहु. 7.14; इक्षिमाति अधिद्वानिद्धिविक्खनिद्धिआदीहि इक्षीहि इक्षिमा, इक्षिविधजाणलाभीति अत्थो, थेरगा. अहु. 2.73; इक्षिमा चेतोवसिप्पतोति इक्षिसम्पन्नो चित्तरस्स वसिभावपतो खीणासवो, अ. नि. अहु. 2.362; इक्षिमन्तो महापज्जो कालदेवलतापसो, जिन. 119; — न्तं पु., द्वि. वि., ए. व. — भिक्खू तादिसं इक्षिमन्तं सन्नत्ताचारि कुतो लभिस्सन्ति?, पारा. अहु. 1.139; — मतो/न्तरस्स/मस्स पु., प. वि., ए. व. — इक्षिमतो पन उता अनेकवण्णा अच्चियो होन्ति, महाव. 30; 'अनापत्ति, भिक्खवे, इक्षिमस्स इक्षिविसये'ति, पारा. 80; — न्तो/न्ता पु., प्र. वि., ब. व. — यक्खा .. इक्षिमन्तो जुतिमन्तो वण्णवन्तो यसस्सिनो, दी. नि. 2.187; येसु बुद्धा खीणासवा च पच्चेकबुद्धा च इक्षिमन्ता च इसयो न्हायन्ति, अ. नि. अहु. 3.218; इक्षिमन्तोति दिब्बइक्षियुत्ता, दी. नि. अहु. 2.249; — न्तो पु., द्वि. वि., ब. व. — अज्जे भिक्खू इक्षिमन्तो दिस्वा ..., थेरगा. अहु. 1.380; — न्तोहि पु., तृ. वि., ब. व. — भगवा कथाहं इक्षिमन्तोहि गन्तब्बद्वानं गमिस्सामीति, अ. नि. अहु. 1.239; — मतं/मन्तानं पु., प. वि., ब. व. — यो नामिद्धिमत्तं सेट्ठो, दुतियो अगगसावको, विसुद्धि. 1.225; 'एतदग्गं, भिक्खवे, ... इक्षिमन्तानं यदिदं महामोग्गल्लानो', अ. नि. 1(1).31; — मती/मन्तिनी स्त्री., प्र. वि., ए. व., ऋद्धियों से सम्पन्न नारी — सतिमती चक्खुमती, इक्षिमती पत्तिमतीति च, सद्. 1.180; — न्तिनियो ब. व. — देवतापि खो सन्ति इक्षिमन्तिनियो दिब्बचक्खुका

परचित्तविदुनियो, अ. नि. 1(1).173; — मतीनं/मन्तानं स्त्री., प. वि., ब. व. — अग्गा इक्षिमतीनन्ति, थेरीगा. अहु. 218; 'एतदग्गं, भिक्खवे, ... इक्षिमन्तीनं यदिदं उप्पलवण्णा', अ. नि. 1(1).35; स. उ. प. के रूप में अनि. के अन्त. द्रष्ट.; — न्तता स्त्री., इक्षिमन्तु का भाव. [ऋद्धिमत्त्व, नपु.], ऋद्धियों से समन्वित होना — य तृ. वि., ए. व. — 'एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं ... यदिदं महामोग्गल्लानो'ति इक्षिमन्तताय एतदग्गो ठपेसि, थेरगा. अहु. 2.406-7.

इक्षिमय त्रि., तत्पु. स. [ऋद्धिसम्पन्न], 1. ऋद्धिबल से परिपूर्ण, अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न, ऋद्धियों से युक्त, 2. तेईस प्रकार के पंसुकूलचीवरों में बाईसवें के रूप में उल्लिखित चीवर, 'एहि भिक्खु' (आ जाओ भिक्षु) कहते ही अद्भुत रूप से प्राप्त श्रेष्ठ चीवर — यो पु., प्र. वि., ए. व. — कम्मविपाकजाय इक्षिया पयोजनं इक्षिमयो पयोगो, पारा. अहु. 2.37; — यं नपु., प्र. वि., ए. व., (चीवर) — इक्षिमयन्ति एहिभिक्खुचीवरं, विसुद्धि. 1.61; — पत्तचीवर नपु., कर्म. स., चमत्कारमय रूप से प्राप्त पात्र एवं चीवर — रं प्र. वि., ए. व. — द्विन्नं अगगसावकानमि इक्षिमयपत्तचीवरं आगतं, अ. नि. अहु. 1.128; तेनस्स इक्षिमयपत्तचीवरं न उप्पज्जिस्सति, उदा. अहु. 75; — पत्तचीवरधर त्रि., 'एहि भिक्खु' कहने से प्राप्त पात्र एवं चीवर को धारण करने वाला — रा पु., प्र. वि., ब. व. — सत्त्वे अन्तरहितके समस्सू इक्षिमयपत्तचीवरधारा वत्तासङ्किट्थेरसदिसा अहेसुं, अ. नि. अहु. 1.158.

इक्षिमयिक त्रि., इक्षिमय + इक के योग से व्यु., ऋद्धियों से निर्मित, ऋद्धियों से परिपूर्ण, अलौकिक दिव्य शक्तियों से युक्त — को पु., प्र. वि., ए. व. — इक्षिमयिको सो आयूतिआदिमाह, प. प. अहु. 224; — का स्त्री., प्र. वि., ए. व. — ... इक्षिमयिका सा गति, इक्षिमयिको सो अतभावप्पटिलाभो, कथा. 368; — कं नपु., प्र. वि., ए. व. — धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि तेसं अनुलोमानि दुक्कलं ... इक्षिमयिकं ... अनुज्जातानि, महाव. अहु. 363.

इक्षिमहत्त नपु., तत्पु. स. [ऋद्धिमहत्त्व], ऋद्धियों की महत्ता अथवा श्रेष्ठता — तो प. वि., ए. व. — इक्षिमहत्ततो अनुस्सरितब्बं, विसुद्धि. 1.225; ... यसमहत्ततो पुज्जमहत्ततो ... इक्षिमहत्ततो ... सम्मारम्बुद्धतोति, विसुद्धि. 1.223.

इक्षिय/इष्टिय पु., व्य. सं., एक रथचर का नाम — यो प्र. वि., ए. व. — इष्टियो उत्तियो थेरो, भद्रसालो च सम्बलो,

## इक्षियान

330

## इक्षिविसविता

पारा. अहु. 1.50; ततो महिन्दो इट्टियो उत्तियो सम्बलो तथा, ध. स. अहु. 33.

इक्षियान नपुं. तत्पु. स. [ऋक्षियान], ऋक्षियों वाला वाहन, ऋक्षिरूपी वाहन या सवारी, ऋक्षियों की सवारी — नं द्वि. वि., ए. व. — तेनेव कम्माभिसन्देन इक्षियान अभिरुद्ध पत्थितं निब्बाननगरं पापुण्य्याति, मि. प. 257.

इक्षिलाम पु., तत्पु. स. [ऋक्षिलाम], ऋक्षियों की प्राप्ति — भाय च. वि., ए. व. — ... मग्गो या पटिपदा इक्षिलाभाय इक्षिपटिलाभाय संवत्तति—अयं वुच्चति भिक्खवे इक्षिपादो, स. नि. 3(2).348; इक्षिया इमे चत्तारो पादा इक्षिलाभाय इक्षिपटिलाभाय ... इक्षिवेसारज्जाय संवत्तन्तीति, पटि. म. 376; इक्षिलाभायाति अत्तनो सन्ताने पातुभाववसेन इक्षीनं लाभाय, पटि. म. अहु. 2.245.

इक्षिवङ्गननामधेय्य त्रि. ब. स., ऋक्षिवर्धन नाम वाला (एक राजप्रासाद), स. प. के अन्तः, — वुद्धिप्पतो सिरिवङ्गनसोमवङ्गनइक्षिवङ्गननामधेय्येसु तीसु पासादेसु ..., बु. वं. अहु. 175.

इक्षिवसीभाव पु., तत्पु. स., ऋक्षियों को अपने वश में कर लेना, ऋक्षियों पर आधिपत्य या प्रभुत्व — वाय च. वि., ए. व. — इक्षिवसीभावायाति इक्षिया इस्सरभावाय, पटि. म. अहु. 2.245.

इक्षिविकुब्बन नपुं. [बौ. सं. ऋक्षिविकुर्वण], ऋक्ष का विविध रूप से प्रदर्शन — नं प्र. वि., ए. व. — किमेतं अच्छरियं लोके, यं मे इक्षिविकुब्बनं, बु. वं. (पृ.) 292; — नं द्वि. वि., ए. व. — ... आकासं उप्पत्तिवा इक्षिविकुब्बनं दस्सेत्वा ..., अ. नि. अहु. 1.228; — ने सप्त. वि., ए. व. — अरहत्तफलेन सद्धियेव च इक्षिविकुब्बने चिण्णवसी अहोसि, अ. नि. अहु. 1.265; — ता स्त्री., भाव., ऋक्षियों के प्रदर्शन की अवस्था या शक्ति, ऋक्षियों का विविध रूप से प्रदर्शन करना — य तृ. वि., ए. व. — इक्षिविकुब्बनतायाति इक्षिया विविधकरणभावाय, पटि. म. अहु. 2.245.

इक्षिविधजाण नपुं. तत्पु. स., ऋक्ष विषयक ज्ञान, ऋक्ष के रूप में अथवा ऋक्ष-शीर्षक में प्राप्त ज्ञान — णाय च. वि., ए. व. — इक्षिविधजाणाय चित्तं अभिनीहरति अभिनेत्रामेति, पटि. म. 102; इक्षिविधजाणायाति इक्षिकोद्भासे इक्षिविकप्पे वा जाणत्थाय, पटि. म. अहु. 1.278.

इक्षिविधा स्त्री./नपुं. [ऋक्षिविधा], ऋक्षियों के भेद, ऋक्षियों के प्रकार, ऋक्षियों के खण्ड या भाग, ऋक्ष की

विविधता — धं<sup>1</sup> नपुं. प्र. वि., ए. व. — इक्षि येव विधं इक्षिविधं, इक्षिकोद्भासो इक्षिविकप्पोति अत्थो, पटि. म. अहु. 1.43; इक्षीति इक्षिविधं इक्षिपाटिहारियं नाम, बु. वं. अहु. 44; — धं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — सो अनेकविहितं इक्षिविधं पच्चनुभोति, एकोपि हुत्वा बहुधा होति, दी. नि. 1.69; — य तृ. वि., ए. व. — इक्षिविधायाति इक्षिकोद्भासाय इक्षिविकप्पाय वा, विसुद्धि. 2.12; — धस्स नपुं. ष. वि., ए. व. — इक्षिविधस्स ... लाभमी<sup>1</sup>ति वदतोपि पाराजिकं नत्थी<sup>1</sup>ति, पारा. अहु. 2.78; — धे नपुं. सप्त. वि., ए. व. — इज्जन्नद्वे पज्जा इक्षिविधं जाणं, पटि. म. 3; स. प. के रूप में, — चतुत्थज्ज्ञानसमाधिस्मिं ... इक्षिविधादिधम्मा इज्जन्ति, अ. नि. अहु. 3.115; — जाण नपुं. कर्म. स., ऋक्ष के विविध प्रभेदों का ज्ञान, भिन्न भिन्न ऋक्षियों का ज्ञान — णं प्र. वि., ए. व. — सुपरिकम्मकतमत्तिकादयो विय इक्षिविधजाणं दट्ठब्बं, दी. नि. अहु. 1.180; — णाय च. वि., ए. व. — सो तथाभावितेन चित्तेन ... इक्षिविधजाणाय चित्तं अभिनीहरति, पटि. म. 102; इक्षिविधजाणायाति इक्षिकोद्भासे इक्षिविकप्पे वा जाणत्थाय, पटि. म. अहु. 1.278; — निदेस पु., विसुद्धि. के बारहवें अध्याय का शीर्षक, जिसमें बुद्धचोषाचार्य ने ऋक्षियों का विवेचन किया है, विसुद्धि. 2.1-56.

इक्षिविलास पु., तत्पु. स., ऋक्षियों का ललित अथवा मनोहर रूप में प्रदर्शन, ऋक्ष का शानदार या भव्य प्रदर्शन — सेन तृ. वि., ए. व. — इक्षिविलासेन विलासेन्तो, बु. वं. अहु. 58.

इक्षिविसय पु., तत्पु. स. [ऋक्ष-विषय], ऋक्ष का क्षेत्र — ये सप्त. वि., ए. व. — अनापति भिक्खवे इक्षिमस्स इक्षिविसये<sup>1</sup>ति, पारा. 80; इक्षिविसयेति इविसाय अधिद्वानिद्धिया अनापति, पारा. अहु. 1.315; — यो प्र. वि., ए. व. — इक्षिमतो इक्षिविसयो नाम अचिन्तेय्यो, म. नि. अहु. (म.प.) 2.61; — या ब. व. — न पन सकक्के मरणस्स ... इक्षिमन्तानं इक्षिविसया, नेति. 21.

इक्षिविसविता स्त्री., [ऋक्षविषयिता], 1. ऋक्षियों पर स्वामित्व अथवा प्रभुत्व, ऋक्षियों को अपने विषयक्षेत्र में ले आना, 2. ऋक्षियों की विविध रूप में प्रवृत्ति — य तृ. वि., ए. व. — चत्तारो इक्षिपादा पज्जत्ता इक्षिपहुताय इक्षिविसविताय इक्षिविकुब्बनताय, दी. नि. 2.157; इक्षिविसवितायाति इक्षिविपज्जनभावाय पुनपुनं आसेवनवसेन चिण्णवसितायाति, दी. नि. अहु. 2.210; इक्षिविसवितायाति

## इक्ष्वेसारज्ज

331

इन्द्र

विविधं विसेसं सवति जनेति पक्तेतीति विसवी, ... तस्स भावो विसविता, पटि. म. अट्ट. 2.245.

इक्ष्वेसारज्ज नपुं. तत्पु. स. [ऋद्धिवैशारद्य]. ऋद्धि के विषय में निपुणता या वैशारद्य — ज्जाय च. वि. ए. व. — इक्ष्वेया इमे चत्तारो पादा इक्ष्वेयाभाय ... इक्ष्वेसारज्जाय सवत्तन्तीति, पटि. म. 376.

इध<sup>1</sup> निपा. [इह], यहां, इधर, इधर-उधर, यहां पृथ्वी पर, इस लोक या संसार में, इस बुद्धधर्म में — (देसापदेसो निपातो), इध, तथागतो लोके उप्पज्जति, दी. नि. 1.55; दी. नि. अट्ट. 1.142; इधेव तिट्ठमानस्स, देवभूतस्स मे सतो, दी. नि. 2.211; इध हिस्सामि जीवितं, जा. अट्ट. 4.372; — एज्जा स्त्री., इस बुद्धधर्मदेसना के विषय में अन्तर्दृष्टि — इमस्मिं सासने पज्जा इधपज्जा नाम, सासनचरिताय अरियपज्जाय तितस्स अरियसावकस्साति अत्थो, अ. नि. अट्ट. 3.339; — सद पु., इध शब्द — दो प्र. वि. ए. व. — अयज्जेत्थ इधसदो ..., पारा. अट्ट. 2.10.

इध<sup>2</sup> पु., ईधन, समिधा — धो प्र. वि. ए. व. — समिधा इधुमं चेधो, अभि. प. 36; एधयतीति इधो, अभि. प. टी. 36. इधद्दु त्रि., इस लोक में स्थित — रस पु., प. वि. ए. व. — इधद्दुस्साति इमस्मिं लोके तितस्स, पटि. म. अट्ट. 1.248; — क त्रि., इसी लोक में अथवा इसी कामभव में स्थित — को पु., प्र. वि. ए. व. — इध कामभवे तितो इधद्दुको, नेत्ति. टी. 139.

इधत्थ<sup>1</sup> त्रि., ब. स., इसी लोक के कामसुखों को अपना प्राप्तव्य मानने वाला (व्यक्ति) — त्थं पु., द्वि. वि. ए. व. — तिड्ढन्तमेन जानातीति भगवा इधत्थज्जेव जानाति, चूलनि. 153.

इधत्थ<sup>2</sup> पु., कर्म. स., इसी दिखलाई दे रहे लोक का प्रयोजन, इसी लोक का हित — त्थो प्र. वि. ए. व. — इधत्थोति दिट्ठधम्महितं, लीन. (दी. नि. टी.) 1.165.

इधलोकत्थ पु., तत्पु. स., इसी लोक का निर्माण करने वाला पञ्च-स्कन्ध-नामक अर्थ या सारतत्त्व, पांच स्कन्धों के रूप में यह लोक — त्थं द्वि. वि. ए. व. — इधलोकत्थन्ति इधलोकभूतं खन्धपञ्चकसङ्घातमत्थं, लीन. (दी. नि. टी.) 2.63.

इधलोकनिस्सित त्रि., तत्पु. स., इसी लोक पर आधारित — तं नपुं. प्र. वि. ए. व. — न च मे इधलोकनिस्सितं विज्जाणं भविस्सति, म. नि. 3.313.

इधलोकभावी त्रि., इसी लोक में घटित होने वाला, सामने स्वयं देखा जा सकने वाला — विनी स्त्री., प्र. वि. ए. व. — सन्दिट्ठिकाति सामं परिसतब्बा, इधलोकभाविनी, दी. नि. अट्ट. 3.116.

इधलोकविजय पु., इस लोक पर विजय — याय च. वि. ए. व. — नवमे इधलोकविजयायाति इधलोकविजिननत्थाय अभिभवत्थाय, अ. नि. टी. 3.223.

इधलोकिकसुत्त नपुं., व्य. सं. अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 3(1).98-102.

इधुम नपुं., [इंधन], अग्निकाष्ठ, इन्धन, यज्ञ में काम आने वाली समिधा, जलाऊ लकड़ी — मं प्र. वि. ए. व. — समिधा इधुमं चेधो उपादानं तथेन्धनं, अभि. प. 36; एधयतीति इधुमं, अभि. प. टी. 36.

इनन्दपद पु., व्य. सं., दक्षिण भारत के उच्चङ्गुड नामक एक क्षेत्र के तमिलप्रधान का नाम — इनन्दपदनामं च तोण्डमानं अथापरं, चू. वं. 77.74.

इनप्पच्चय पु., व्याकरण में ही प्रयुक्त, इन प्रत्यय (जिन तथा सुपिन शब्दों में दृष्टिगत) — यो प्र. वि. ए. व. — जि इच्चेताय धातुया इनप्पच्चयो होति सब्बकाले कत्तरि, क. व्या. 560; सुप इच्चेताय धातुया इनप्पच्चयो होति कत्तरि भावे च, क. व्या. 561.

इन्द्र पु., [इन्द्र], 1. शा. अ., देवों के राजा का नाम, तावतिसं स्वर्ग का शासक, ब्रह्मा को छोड़कर देवों के बीच सर्वाधिक प्रसिद्ध देव, दूसरा प्रसिद्ध नाम शक्र, अट्टारह अन्य नाम भी उल्लिखित — सक्को पुरिन्ददो देवराजा वजिरपाणि च, सुजम्पति सहस्सकखो महिन्दो वजिरावुधो वासवो च दससतनयनो त्तिदियाधिभू सुरनाथो च वजिरहत्थो च भूतपत्यपि मघवा केसियो इन्दो वज्रभू पाकसासनो विडोजा, अभि. प. 18-20; — दो प्र. वि. ए. व. — इन्दोति सक्को देवराजा, थेरगा. अट्ट. 2.193; अपि च इन्दोति सक्को, सद. 2.378; सचे च मं रक्खति देवराजा, देवानमिन्दो मघवा सुजम्पति, जा. अट्ट. 3.126; 2. ला. अ., अपने समूह में प्रथम अथवा श्रेष्ठ, अधिपति, राजा, परम-ऐश्वर्य-सम्पन्न व्यक्ति — इन्दोधिपतिसक्कोसु, अभि. प. 1132; एत्थ इन्दोति अधिपतिभूतो यो कोचि सो हि इन्दति परेसु इस्सरियं पापुणातीति इन्दो ति वुच्चाति अपि च इन्दो ति सक्को, सद. 2.377-78; अपिच इन्दो भगवा धम्मिस्सरो परमेन चित्तिस्सरियेन समन्नागतो, इतिवु. अट्ट. 183; सहस्सनेत्तो तिदसानमिन्दो, जा. अट्ट. 5.404; सक्कोहमस्मी

## इन्द्रक

332

## इन्द्रखीलक

तिदसानमिन्दोति, जा. अ. 3.266; स. उ. प. के रूप में, अमरि., असुरि. उरगि., कवि., कुजि., गजि., जिनि., तिदसि., दिजि., दिपवि., दुमि., देवि., नागि., पत्रगि., भुजगि., भूमि., भोगि., मनुजि., मनुस्सि., महि., भिगि., मुनि., रवि., लङ्गि., वानरि., समणि., सीहलि., सुगति., सुरासुरि., सुरि., सेनि. के अन्त. द्रष्ट., 3. व्य. सं. क. चार लोकपालों में से प्रत्येक के इक्यानवे पुत्रों का नाम — नामा त्रि., ब. स., पु., प्र. वि., ब. व., इन्द्र नाम वाले — पुतापि तस्स बहवो इन्द्रनामा महब्बला, दी. नि. 2.188; ... इन्द्रनामा महब्बलाति ... सक्कस्स देवरज्जो नामधारका, दी. नि. अ. 2.250; इन्द्रनामाति इन्द्रोति एवनामा, दी. नि. अ. 3.132; 3. ख. पूर्वकल्प के तीन चक्रवर्तियों का नाम — मा पु., ब. स., प्र. वि., ब. व. — तैसत्ततिम्हितो कप्पे, इन्द्रनामा तयो जना, अप. 1.52; इन्द्रनामा तयो जनाति इन्द्रनामाका तयो चक्कवत्तिराजानो एकस्मिं कप्पे तीसु जातीसु इन्द्रो नाम चक्कवत्ती राजा अहोसिन्ति अत्थो, अप. अ. 2.3.

इन्द्रक<sup>1</sup> त्रि., इन्द्र से व्यु., स. उ. प. में ही प्राप्त — स. ... का पु., प्र. वि., ब. व., इन्द्रसहित — भिक्खुं सइन्द्रकादेवा ... नमस्सन्ति, स. नि. 2(1).84; — सहि.-का पु., प्र. वि., ब. व. — तावत्तिंसा सहिन्द्रका, दी. नि. 2.163; — के द्वि. वि., ब. व. — सब्बेपि सइन्द्रके सब्बत्तके च देवे दस्सेन्तो, जा. अ. 5.270.

इन्द्रक<sup>2</sup> पु., व्य. सं. क. एक यक्ष का नाम, इन्द्रकूट-निवासी एक यक्ष — स्स ष. वि., ए. व. — इन्द्रकस्स यक्खस्स भवने, स. नि. 1(1).238; इन्द्रकस्साति इन्द्रकूटनिवासिनो यक्खस्स, स. नि. अ. 1.263; ख. त्रायस्त्रिंस (स्वर्ग) में दुबारा उत्पन्न एक माणव का नाम — को प्र. वि., ए. व. — इन्द्रको अतिरोचति, पे. व. 3.15; अयं सो इन्द्रको यक्खो, ध. प. अ. 2.126.

इन्द्रकसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).238.

इन्द्रकूट पु., व्य. सं. [इन्द्रकूट], राजगृह के समीप में स्थित एक पर्वत का नाम — टे सप्त. वि., ए. व. — भगवा राजगृहे विहरति इन्द्रकूटे पब्बते, स. नि. 1(1).238; — निवासी पु., [इन्द्रकूटनिवासी], इन्द्रकूट पर्वत पर निवास करने वाला — नो ष. वि., ए. व. — इन्द्रकस्साति इन्द्रकूटनिवासिनो यक्खस्स, स. नि. अ. 1.263.

इन्द्रकेतु पु., [इन्द्रकेतु], शा. अ., इन्द्र का ध्वज, इन्द्र की पताका, ला. अ., इन्द्रधनुष — तु प्र. वि., ए. व. — उच्चत्तनेन सो बुद्धो, असीतिहत्थमुग्गतो, ओभासेति दिसा सब्बा, इन्द्रकेतुव उग्गतो, बु. व. 7.24.

इन्द्रखिलुपम त्रि., ब. स., शा. अ., प्रवेशद्वार या देहली पर गाड़े गए खूंटे या स्तम्भ के समान (अडिग, अविचल), ला. अ., किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया से रहित, समभाव में स्थित — मो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रखिलुपमो तादि सुब्बतो, ध. प. 95; ... अथ खो पथविसमो च इन्द्रखिलुपमो एव च होति, ध. प. अ. 1.349; पाठा. इन्द्रखिलुपम(बर्मी.), इन्द्रखील पु., [बौ. सं., इन्द्रकील], शा. अ., नगरद्वार पर गाड़ा गया इन्द्र का खूंट अथवा प्रस्तर-खण्ड, ला. अ. 1. नगरद्वार की सुरक्षा के लिए देहली के मध्य में पृथ्वी के नीचे आठ या दस हाथ खोदकर गाड़ा हुआ लकड़ी या लोहे का अकम्प्य स्तम्भ या खूंट — लो प्र. वि., ए. व. — एसिका इन्द्रखीलो च, अभि. प. 204; इन्द्रखीलोति नगरद्वारविनिवारणत्थं उम्मारभन्तरे अद्द वा दस वा हत्थे पथविं खणित्वा आकोटितस्स सारदारुमय थम्मस्सेतं अधिवचनं, खु. पा. अ. 147; इन्द्रखीलो वा अयोखीलो ... असम्पवेधी, दी. नि. 3.99; — लं द्वि. वि., ए. व. — यथा नाम नगरद्वारे निखातं इन्द्रखीलं दारकादयो ओमुत्तेन्तिपि ऊहदन्तिपि, ध. प. अ. 1.349; — ले सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रखीले ठितस्साति यस्स गामस्स ... इन्द्रखीला ... तस्स ... इन्द्रखीले ठितस्स, पारा. अ. 1.239; — ला प. वि., ब. व. — निकखमित्वा बहि इन्द्रखीला सब्बमेतं अरज्जं, पटि. म. 168; — स्स ष. वि., ए. व. — इन्द्रखीलस्स द्वे अङ्गानि गृहेतब्बानि, मि. प. 330; ला. अ. 2. देहली, प्रवेश-द्वार — ले सप्त. वि., ए. व. — गामूपचारो नाम परिक्खितस्स गामस्स इन्द्रखीले ठितस्स मज्झिमस्स पुरिसस्स लेड्डपातो, पारा. 52; इन्द्रखीले ठितस्साति यस्स गामस्स अनुराधपुरस्सेव द्वे इन्द्रखीला, तस्स अभन्तरिमे इन्द्रखीले ठितस्स, पारा. अ. 1.239; — ला<sup>1</sup> प्र. वि., ब. व. — इन्द्रखीलाति उम्मार, विसुद्धि, महाटी. 1.91; — ला<sup>2</sup> प. वि., ए. व. — अरज्जंति निकखमित्वा बहि इन्द्रखीला सब्बमेतं अरज्जं, विम. 281.

इन्द्रखीलक पु., नगर या ग्राम का प्रवेशद्वार — तो प. वि., ए. व. — इन्द्रखीलकतो अन्तो, गच्छंतो होति दुक्कटं, विन. वि. 1884; इन्द्रखीलकतो अन्तोति गामद्वारिन्द्रखीलतो अन्तो, घरेति वुत्तं होति, विन. वि. टी. 2.10.

## इन्द्रखीलसुत्त

333

## इन्द्रजाल

इन्द्रखीलसुत्त नपुं., व्य. सं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(2)505.

इन्द्रगज्जित नपुं., [इन्द्रगर्जित], इन्द्र का गर्जन, इन्द्र की दहाड़ — तं द्वि. वि., ए. व. — गज्जन्तो इन्द्रगज्जितं, भि. प. 18.

इन्द्रगु/हिन्द्रगु/इन्द्रगू पुं., [इन्द्रगू?], सत्त्व, नर, मनुष्य, इन्द्रिय एवं कर्म के द्वारा गमन करने वाला — गु प्र. वि., ए. व. — मच्चोति सत्तो नरो मानवो पोसो पुग्गलो जीवो जागु, जन्तु इन्द्रगु, मनुजो, महानि. 3; इन्द्रियेन गच्छतीति इन्द्रगु, महानि. अहु. 21; इन्द्रियेन गच्छतीति इन्द्रगू अथ वा इन्द्रभूतेन कम्मुना गच्छतीति इन्द्रगू, इन्द्रगू ति पि पाळी, तत्थ हिन्दन्ति मरणं, तं मरणं गच्छतीति हिन्द्रगू, सद्. 2.466.

इन्द्रगुत्त पुं., व्य. सं., 1. अशोक-कालीन एक स्थविर (थेर) का नाम — स्स ष. वि., ए. व. — थेरस्स इन्द्रगुत्तस्स कम्माधिद्वायकस्स तु, म. वं. 5.174; 2. दुट्ठगामनि के समय के राजगृह का एक स्थविर — त्तो प्र. वि., ए. व. — राजगहरस्स सामन्ता इन्द्रगुत्तो महागणी, म. वं. 29.30; 3. दुट्ठगामनि के ही समय का एक सिंहली भिक्षु — इन्द्रगुत्तो महाथेरो छल्लभिज्जो महामति, म. वं. 30.98; — थेर पु., कर्म. स., स्थविर इन्द्रगुत्त — रो प्र. वि., ए. व. — सो इन्द्रगुत्तथेरो तु मारस्स पटिबाहनं, म. वं. 31.85; — रं द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रगुत्तथेरं नाम महिद्धिकं महानुभावं ... अदासि, पारा. अहु. 1.35.

इन्द्रगोपक पुं., [इन्द्रगोपक], 1. एक प्रकार का बरसाती कीड़ा जो लाल रंग का होता है, लाल मखमल के समान रंग-रूप वाला बरसाती कीड़ा, गिंजाई, ग्वालिन, बीर-बहूटी या इन्द्रवधू-नामक एक बरसाती कीड़ा — को प्र. वि., ए. व. — कुटिका अभिरूपा ... सेय्यथापि इन्द्रगोपको, पारा. 48; — का प्र. वि., ब. व. — नववुद्वाय भूमिया बहू इन्द्रगोपका उड्हिसु, ध. प. अहु. 1.12; — पिड्डिसदिसवण्ण त्रि., ब. स., इन्द्रगोप की पीठ के समान लाल वर्ण वाला — ण्णो हि नपुं., तू. वि., ब. व. — इन्द्रगोपकपिड्डिसदिसवण्णेहि नीचतिण्णेहि समन्नागता, जा. अहु. 5.162; — वण्ण 1. पु., तत्पु. स., बीरबहूटी का रंग या वर्ण — ण्णो प्र. वि., ए. व. — लोहितको च वण्णोति इन्द्रगोपकवण्णो, महानि. अहु. 305; 2. त्रि., ब. स., बीरबहूटी के वर्ण के समान लाल रंग वाला — ण्णं नपुं., द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रगोपकवण्णं पटं पारुपित्वा, जा.

अहु. 4.167; — वण्णाम त्रि., ब. स., इन्द्रगोपक के वर्ण की आभा वाला — भो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रगोपकवण्णाभो, यस्स लोहितको सिरा, जा. अहु. 7.28; — भा प्र. वि., ब. व. — इन्द्रगोपकवण्णाभा ताव दिस्सन्ति तिसति, जा. अहु. 7.172; — सञ्छन्न त्रि., तत्पु. स., वर्षाकाल में उत्पन्न मूंगा के रंग के समान रक्तवर्णकीट इन्द्रगोपकों से ढका हुआ या आवृत, लाल रंग की घास द्वारा ढका हुआ — त्रा पु., प्र. वि., ब. व. — इन्द्रगोपकसञ्छन्ना, ते सैला रमयन्ति मन्ति, थेरगा. 13; इन्द्रगोपकसञ्छन्नाति ... इन्द्रगोपकनामकेहि पवाळवण्णेहि रत्तकिमीहि सञ्छादिता ..., थेरगा. अहु. 1.61; तत्थ इन्द्रगोपकसञ्छन्नाति इन्द्रगोपकवण्णाय रत्ताय सुखसम्परसाय तिणजातिया सञ्छन्ना, जा. अहु. 4.230; — त्रं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रगोपकसञ्छन्नं न रज्जस्स सरिस्ससि, जा. अहु. 7.249; — सम/समान त्रि., इन्द्रगोपक नाम वाले रक्तिम कीट के समान (लाल) — नानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — अक्खिक्कूटानि भगवतो लोहितकानि होन्ति सुलोहितकानि पासादिकानि दस्सनेय्यानि इन्द्रगोपकसमानानि, महानि. 261; 2. लालरंग की घास अथवा कण्डीर वृक्ष — कोचि पन "इन्द्रगोपकनामानि रत्ततिणानी"ति वदन्ति, अपरे "कणिकाररुक्खा"ति, थेरगा. अहु. 1.61.

इन्द्रगिग पुं., [इन्द्राग्नि], शा. अ., इन्द्र की अग्नि, ला. अ., आकाशीय विद्युत्, बिजली, वज्रपात — गिग प्र. वि., ए. व. — सङ्कारगिग इन्द्रगिग अग्निसन्तापो सूरियसन्तापो, विभ. 93; इन्द्रगिगीति असनिअगिग, विभ. अहु. 65; — नो ष. वि., ब. व. — गच्छन्तस्स इन्द्रगिगिनी गतमग्गो विय होति, अ. नि. अहु. 2.73; — ना तू. वि., ए. व. — ज्ञापिताति इन्द्रगिगिना विय रुक्खगच्छादयो अरियमग्गजाणगिगिना समूलं दड्ढा, थेरगा. अहु. 1.162.

इन्द्रचाप पुं., तत्पु. स., इन्द्र-धनुष — पेहि तू. वि., ब. व. — इन्द्रचापेहि विज्जुलताहि च परिक्खितं, सारत्थ. टी. 1.112; — कलाप पुं., इन्द्रधनुषों का समुच्चय, अनेक इन्द्रधनुष — पेन तू. वि., ए. व. — इन्द्रचापकलापेन सोभेन्तो गगनङ्गणं, चू. वं. 74.228.

इन्द्रजाल पुं., [इन्द्रजाल], जादू-टोना, माया, सम्मोहन-विमोहन, छल-वञ्चना — लेन तू. वि., ए. व. — एकच्चे पन इन्द्रजालेन अड्धिधोवन्, दी. नि. अहु. 1.77; इन्द्रजालेनाति



## इन्द्रजालिक

334

इन्द्रनाम

अद्विधोवनमन्तं परिजपित्वा ... पस्सन्ति, दी. नि. टी. 1. 113.

**इन्द्रजालिक** पु., [इन्द्रजालिक], जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक, मायाकारी, इन्द्रजाली, छली, धोखेबाज — को प्र. वि., ए. व. — मायाकारो तु इन्द्रजालिको, अभि. प. 512; — का प्र. वि., ब. व. — नच्यका लङ्का इन्द्रजालिका वेतालिका मल्ला, मि. प. 301.

**इन्द्रजुह्व** त्रि., केवल 'इन्द्रिय' शब्द के निर्वचनक्रम में ही प्रयुक्त [इन्द्रजुष्ट], अधिपति, भावना के द्वारा भावित या सेवित — डो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रजुह्वो इन्द्रियह्वो, विसुद्धि. 2.118; विभ. अहु. 118; — डेन तृ. वि., ए. व. — ... कानिचि भावनासेवनाय सेवितानीति इन्द्रजुह्वेनापि इन्द्रियानि, विसुद्धि. 2.119; विभ. अहु. 118.

**इन्द्रजुह्वक** त्रि., ब. स. [इन्द्रज्येष्ठक], इन्द्र की प्रधानता में रहने वाला, इन्द्र की अधीनता में रहने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — इन्द्रजुह्वका तावतिसापि देवा ते दानं अनुमोदन्तीति, जा. अहु. 7.345.

**इन्द्रज** पु., तत्पु. स., 'इन्द्रिय' शब्द के निर्वचन-क्रम में प्रयुक्त [इन्द्रार्थ], अधिपत्य का अर्थ, अधिपत्य का प्रयोग, अधिपति के रूप में कार्य — द्वं द्वि. वि., ए. व. — चक्षुद्वारे इन्द्रजं कारेतीति चक्षुन्द्रियं ..., इत्थिभावे इन्द्रजं कारेतीति इत्थिन्द्रियं, विभ. अहु. 117; इन्द्रजं करोतीति, स. नि. अहु. 3.265.

**इन्द्रजकरण** नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रार्थकरण], अधिपत्य स्थापित करना — णेन तृ. वि., ए. व. — समाधिं पन ज्ञानकखणे सम्युत्तधम्मनं अविकखेपलकखणे इन्द्रजकरणेन सातिसयं पच्चयो होति, सारत्थ. टी. 1.320; विसुद्धि. टी. 1.170.

**इन्द्रति** √इन्द्र का वर्त., प्र. पु., ए. व. [√इन्द्र, इन्द्रति, √इदि परमेश्वर्ये], अधिपति के रूप में शासन करता है, दूसरों पर परमेश्वर्य प्राप्त करता है, परम ऐश्वर्य से युक्त है — इन्द्रति परेसु इस्सरियं पापुणातीति इन्द्रोति वुच्चति, सह. 2.377-78; इन्द्रतीति इन्द्रो, ध. स. अनु. टी. 31; इन्द्रति परमिस्सरियं करोतीति इन्द्रो, अभि. प. सूची 47(रो.); — न्ति प्र. पु., ब. व. — इमस्मिं च अत्थे इन्द्रन्ति परमिस्सरियं करोन्तिच्चेव इन्द्रियानि, विसुद्धि. महाटी. 2.174.

**इन्द्रत्त** नपुं., इन्द्र का भाव. [इन्द्रत्व], इन्द्र का भाव, अधिपत्यभाव, महाधिपतित्व — ताय च. वि., ए. व. — महाराजताय वा इन्द्रताय वा ब्रह्मताय वा देवताय वा,

महानि. 52; इन्द्रताय वाति सक्कभावाय, महानि. अहु. 159.

**इन्द्रत्तन** नपुं., उपरिवत् — नं प्र. वि., ए. व. — वलं रज्जं इन्द्रत्तनं भोगो बुद्धरूपादिका पि च, सद्धम्मो. 234.

**इन्द्रदिह्व** त्रि., तत्पु. स. [इन्द्रदृष्ट], इन्द्र के द्वारा देखा गया, अधिपति द्वारा देखा गया, बुद्ध द्वारा साक्षात्कृत — इह्व पु., इन्द्र या अधिपति द्वारा देखे जाने का अर्थ — डो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रदिह्वो इन्द्रियह्वो, विसुद्धि. 2. 118; — डेन तृ. वि., ए. व. — अभिसम्बुद्धानि चाति इन्द्रदेसितडेन इन्द्रदिह्वडेन च इन्द्रियानि, विभ. अहु. 118; सम्बानेव पनेतानि भगवता यथाभूततो पकासितानि अभिसम्बुद्धानि चाति इन्द्रदेसितडेन इन्द्रदिह्वडेन च इन्द्रियानि, विसुद्धि. 2.119.

**इन्द्रदेसित** त्रि., तत्पु. स., इन्द्र अर्थात् बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट, अधिपति (बुद्ध) के द्वारा व्याकृत या प्रतिपादित — तडो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रदेसितडो इन्द्रियडो, विसुद्धि. 2.118; विभ. अहु. 118.

**इन्द्रद्वार** नपुं., श्रीलंका के पुलत्थिपुर (वर्तमान पोलन्नरुव) के एक द्वार का नाम — रं प्र. वि., ए. व. — हत्थिद्वारं विसालं च इन्द्रद्वारं पुनापरं, चू. वं. 73.160.

**इन्द्रधज** पु., तत्पु. स. [इन्द्रध्वज], इन्द्रध्वज, इन्द्र की ध्वजा या पताका — जो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रधजो समुस्सयडेन दस्सनीयडेन च तुवं धजो वियाति धजोति, बु. वं. अहु. 49.

**इन्द्रधनु** नपुं., [इन्द्रधनुष], इन्द्रधनुष — नु प्र. वि., ए. व. — इन्द्रावुधं इन्द्रधनु, अभि. प. 49; स. प. के अन्त., — इन्द्रधनुपरिवुतमिव दिवसकरं मुनिदिवसकरं, बु. वं. अहु. 291; चन्दोभाससूरियोभाससञ्जारागइन्द्रधनुतारकरूपानं पभासवण्णा, स. नि. अहु. 1.113.

**इन्द्रन** नपुं., √इन्द्र से व्यु., क्रि. ना., अधिपति के रूप में कार्य करना — √इदि परमिस्सरिये, इन्द्रति, इन्द्रनं इन्द्रो, सह. 2.377.

**इन्द्रनगरीतुल्य** त्रि., [इन्द्रनगरीतुल्य], इन्द्र की नगरी जैसा, इन्द्रपुरी के समान — यं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — चम्पापुरिं कारापेसि तथा तं इन्द्रनगरीतुल्यं, चू. वं. 88. 121.

**इन्द्रनाम** त्रि., ब. स. [इन्द्रनाम], इन्द्र के नाम वाला — मा पु., प्र. वि., ब. व. — इन्द्रनामा महब्बलाति ... ते सब्बे सक्कस्स देवरज्जो नामधारका, दी. नि. अहु. 2.250.

## इन्दनील

335

## इन्दपत्त / इन्दपत्थ

इन्दनील पु./ नपुं. [इन्द्रनील], इन्द्रनीलमणि, बहुमूल्य मणि, उदान उद्भूत कथा में वर्णित चौबीस बहुमूल्य मणियों में से एक — लो पु., प्र. वि., ए. व. — वज्रिरो, महानीलो, इन्दनीलो. मरकतो, उदा. अद्भ. 81; बहुविधा मणयो होन्ति सेय्यथीदं इन्दनीलो महानीलो जोतिरसो वेळुरियो उम्मापुण्णो मि. प. 124; — लं द्वि. वि., ए. व. — इन्दनीलं महानीलं, अथो जोतिरसं मणिं एकतो सन्निपातेत्वा बुद्धथूपं अछादयुं अप. 1.68; — लहि-कूट नपुं. तत्पु. स. [अद्रिकूट], इन्द्रनील-नामक पर्वत का शिखर, इन्द्रनील पर्वत की चोटी — टं द्वि. वि., ए. व. — राजायतनपादपं इन्दनीलहिक्कूटं व गहेत्वा गहेत्वा दहमानसो, दा. वं. 2.13(रो.); — इड्डका स्त्री., [इन्द्रनीलेष्टिका], इन्द्रनील मणि की ईट या खपड़ा — हि तृ. वि., ब. व. — इन्दनीलइड्डकाहि छदनं, दी. नि. अद्भ. 2.216; — थूप पु., [इन्द्रनीलस्तूप], इन्द्रनील मणि से निर्मित स्तूप — पेन तृ. वि., ए. व. — सो इन्दनीलथूपेन पिदहेसि नमस्सि धं, म. वं. 1.36; — मय त्रि., इन्द्रनीलमणि से निर्मित या बनाया हुआ — या' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सा इन्दनीलमया होति, दी. नि. अद्भ. 2.187; — या' पु., प्र. वि., ब. व. — तस्सा इन्दनीलमया तयो कूपका, जा. अद्भ. 4.19.

इन्द्रनीलमणि पु., [इन्द्रनीलमणि], नीलम, नीलमणि, इन्द्रनीलमणि — णि प्र. वि., ए. व. — काकगीवा विय इन्दनीलमणि ... समन्नागतत्ता, दी. नि. अद्भ. 2.194; — णयो ब. व. — ततो अधिकवण्णता महामणि इन्दनीलमणयो ... जोतिरसमणिजातिरङ्गमणयो, अप. अद्भ. 2.291; — तल नपुं., नीलमणि के द्वारा विनिर्मित या बनाया हुआ तल या गच, इन्द्रनीलमणि से बना कुट्टिम या फर्श — ले सप्त. वि., ए. व. — वक्कवत्तिपरिसा नाम ... गच्छमाना इन्दनीलमणितले ... होति, म. नि. अद्भ. (उप.प.) 3.161; — प्यमा स्त्री., [इन्द्रनीलमणिप्रभा], नीलम या नीलमणि की कान्ति या दीप्ति, देदीप्यमान नीलवर्ण — जालं त्रि., द्वि. वि., ए. व., नीलमणि की कान्ति जैसी प्रभा से देदीप्यमान — सो नागराजा राजहंसो विय इन्दनीलमणिप्यभाजालं नीलगगनतलं अभिलङ्घति, दी. नि. अद्भ. 2.194; — भूमि स्त्री., [भूमि], नीलम से बनाया हुआ फर्श या गच — यं सप्त. वि., ए. व. — सो इन्दनीलमणिभूमियं पतिङ्घितो, थू. वं. 232(रो.); — वण्ण त्रि., ब. स. [इन्द्रनीलमणिवर्ण], नीलम के रंग वाला, नीलमणि के रंग वाला — ण्णो पु., प्र. वि., ए. व. —

एवरूपोतिआदीसु काळोपि समानो इन्दनीलमणिवण्णो अहोसिन्ति ... अहोसिं, म. नि. अद्भ. (उप.प.) 3.177; — ण्णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इन्दनीलमणिवण्णं सेलमयं पत्तं इत्थद्वयमज्झं आगच्छति, सु. नि. अद्भ. 1.110; — सङ्कास त्रि., ब. स. [इन्द्रनीलमणिसङ्काश], नीलम के समान, नीलमणि के सदृश — से सप्त. वि., ए. व. — इन्दनीलमणिसङ्कासे आकासे नानप्यकारा, थू. वं. 150(रो.); — सदिस त्रि., [इन्द्रनीलमणिसदृक], इन्द्रनीलमणि के समान या सदृश — सं पु., द्वि. वि., ए. व. — इन्दनीलमणिसदिसं आकासे नानप्यकारा, बु. वं. अद्भ. 100.

इन्दपटिमा स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रप्रतिमा], इन्द्र की प्रतिमा या मूर्ति — मा/यो द्वि. वि., ब. व. — परिवारेत्वा विता इन्दपटिमा दस्सेसि, जा. अद्भ. 6.151; देवनगरद्वारेसु वजिरहत्था इन्दपटिमा ठपेसि, ध. प. अद्भ. 1.158; इन्दपटिमायो दिस्वा निवत्तित्वा असुरपुरमेव गच्छन्ति, अ. नि. अद्भ. 3.279; — नं ष. वि., ब. व. — तासञ्च पन इन्दपटिमानं आरक्खणत्थाय ठपितभावो, जा. अद्भ. 6.151.

इन्दपत्त / इन्दपत्थ नपुं., व्य. सं. [इन्द्रप्रस्थ], क. इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर, प्राचीन भारत का एक नगर, कुरुराष्ट्र का एक सुप्रसिद्ध नगर, कुरुवंशी राजा धनंजय की राजधानी — त्तं/त्थं प्र. वि., ए. व. — साकेतं, इन्दपत्तं, चोक्रह्वा पाटलिपुत्तकं, अभि. प. 201; सो आगमा नगरमिन्दपत्थं ... कुरुनं, जा. अद्भ. 7.164; — ते सप्त. वि., ए. व. — उत्तरपञ्चाले इन्दपत्ते, जा. अद्भ. 2.179; — नगर नपुं., इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर — रे सप्त. वि., ए. व. — कुरुरष्ट्रे इन्दपत्थनगरे धनञ्जयकोरब्बो नाम राजा रज्जं कारेसि, जा. अद्भ. 7.146; कुरुरष्ट्रे इन्दपत्थनगरे युद्धिङ्गिलगोत्तो कोरब्बो नाम राजा रज्जं कारेसि, जा. अद्भ. 4.323; सत्तयोजनिके इन्दपत्थनगरे रज्जं दातुं पहामि, जा. अद्भ. 5.479; — नगरवासी पु., [इन्द्रप्रस्थनगरवासीन], इन्द्रप्रस्थ-नामक नगर में वास करने वाला या वसने वाला — हि तृ. वि., ब. व. — महासतोपि नगरं पत्त्वा इन्दपत्थनगरवासीहि देवनगरं विय, जा. अद्भ. 5.502; — नं ष. वि., ब. व. — इन्दपत्थनगरवासीनं अस्सुमुखानि हासेन्तो, जा. अद्भ. 7.209; ख. महासम्मत-वंस के सत्रह क्षत्रिय राजाओं की राजधानी — म्हि सप्त. वि., ए. व. — नगरे इन्दपत्तम्हि रज्जं कारेसुं ते तदा, दी. वं. 3. 23; — पुर पु., इन्द्रप्रस्थ नामक वह स्थान, जहां पर बुद्ध का उस्तुरा एवं सुई का

## इन्द्रपुर

336

## इन्द्रवतिक

डिब्बा रखा गया था — रे सप्त. वि., ए. व. — वासि सूचिधरञ्चापि, इन्द्रपथपुरे तदा, बु. वं. 29.16.

इन्द्रपुर नपुं., व्य. सं. [इन्द्रपुर], इन्द्रपुर, इन्द्र का नगर — रं प्र. वि., ए. व. — वीणामुरजसम्मताळधुडं इद्धं इन्द्रपुरं यथा तवेदं वि. व. 648; इन्द्रपुरं यथाति सुदस्सननगरं विय वि. व. अहु. 133.

इन्द्रपुरोहित त्रि., ब. स. [इन्द्रपुरोहित], इन्द्र की प्रमुखता वाला, इन्द्रपुररसूत, इन्द्र के प्राधान्य वाला, वह, जिसका प्रधान इन्द्र है — ता पु., प्र. वि., ब. व. — यत्थ देवा तावत्तिंसा, सब्बे इन्द्रं पुरोहिता, जा. अहु. 6.152; इन्द्रपुरोहिताति इन्द्रं पुरोहितं पुरेचारिकं कत्ता परिवारेत्वा ..., जा. अहु. 6.152.

इन्द्रफली पु., [इन्द्रफलिन], एक प्रकार का मत्स्य, एक प्रकार की मछली — ली प्र. वि., ए. व. — अमरा खलिसो चन्दकुलो कन्दफली, इन्द्रफली इन्द्रवलो कुलिसो वामी कुड्डतलो, कण्टिको सकुलो महुसो सिङ्गी सतवड्ढो रोहितो, पाटीनो काणो सवड्ढो पावुसो, सद. 2.500.

इन्द्रभवन नपुं., [इन्द्रभवन], इन्द्र का प्रासाद, इन्द्र का भवन, इन्द्र का राजभवन — ने सप्त. वि., ए. व. — नागभवने च ... महाराजभवने च ... इन्द्रभवने ... ततो च भिय्योति, महानि. 337; — नं द्वि. वि., ए. व. — राजभवनञ्च इन्द्रभवनं विय अलङ्कारिसु, जा. अहु. 1.448.

इन्द्रयव पु., [इन्द्रयव], इन्द्रयव, गेहूँ के समान एक विशेष अन्न, कुटज नामक वृक्ष का बीज — वो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रयवो थले तस्सा, अभि. प. 574.

इन्द्रलङ्घि स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. इन्द्रयष्टि], शा. अ., इन्द्र की लाठी, ला. अ., इन्द्रधनुष, आकाशीय विद्युत् की लकीर — द्वि प्र. वि., ए. व. — आकासे इन्द्रलङ्घीव इन्द्रधनु इव च चतुदिसा चतुसु दिसासु ओभासति ..., अप. अहु. 1.274; इन्द्रलङ्घीव आकासे, ओभासति चतुदिसा, अप. 1.31; तत्थापि भवनं मय्हं, इन्द्रलङ्घीव उग्गतं, अप. 1.32; ... मय्हं भवनं मम पासादं इन्द्रलङ्घीव उग्गतं आकासे उतविज्जोतमाना विज्जुल्लता इव उग्गतं ..., अप. अहु. 1.275.

इन्द्रलिङ्ग नपुं., [इन्द्रलिङ्ग], शा. अ., इन्द्र का चिह्न, ला. अ., आधिपत्य का चिह्न या संकेत — ङ्गं प्र. वि., ए. व. — इन्द्रस्स लिङ्गं इन्द्रलिङ्गं, इन्द्रलिङ्गस्स अत्थो तंसभावो इन्द्रलिङ्गड्ढो, विसुद्धि. महाटी. 2.174.

इन्द्रलिङ्गड्ढ पु., तत्पु. स. [इन्द्रलिङ्गार्थ], आधिपत्य अथवा प्रभुत्व के संसूचन का अर्थ, कुशल एवं अकुशल कर्मों को

संकेतित करने का अर्थ — ड्ढो प्र. वि., ए. व. — लिङ्गेति गमेति आपेतीति लिङ्गं ... इन्द्रस्स लिङ्गं इन्द्रलिङ्गं, इन्द्रलिङ्गस्स अत्थो तं सभावो इन्द्रलिङ्गड्ढो, इन्द्रलिङ्गमेव वा इन्द्रियसदस्स अत्थोति इन्द्रलिङ्गड्ढो, विसुद्धि. महाटी. 2.174; इन्द्रलिङ्गड्ढो इन्द्रियड्ढो, विसुद्धि. 2.118; — ड्ढेन त्. वि., ए. व. — सम्भानिपेतानि यथायोगं इन्द्रलिङ्गड्ढेन ... च इन्द्रियानि, पटि. म. अहु. 1.76.

इन्द्रवंसा स्त्री., [इन्द्रवंशा], एक विशेष प्रकार के छन्द का नाम, इस छन्द में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा एक रगण होता है— सा प्र. वि., ए. व. — सा इन्द्रवंसा खलु यत्थ ता जरा, वुत्तो. 73 (पृ.167).

इन्द्रवजिर नपुं., [इन्द्रवज्र], शा. अ., इन्द्र का वज्र, इन्द्र का अस्त्र, एक विशेष प्रकार का शस्त्र, जिसका प्रयोग इन्द्र के द्वारा किया जाता है — रेन त्. वि., ए. व. — इमिना इन्द्रवजिरेन ते सीसं छिन्दित्वा, जा. अहु. 1.338; — रं द्वि. वि., ए. व. — सो आवज्जमानो ... इन्द्रवजिरं आदाय ... अट्ठासि, जा. अहु. 3.125; ला. अ., इन्द्रवज्र के समान तीक्ष्ण, तीव्र, द्रुत एवं सटीक (इन्द्रवज्र के साथ विविध धर्मों की उपमाओं वाले स्थलों में) — रं द्वि. वि., ए. व. — तयेव जाणं इन्द्रवजिरं विय ... अनावरणजाणं, पटि. म. अहु. 2.32; सा हिस्स तं तं ठानं आवज्जन्तस्स विस्सइन्द्रवजिरमिव ... तिखिणा हुत्वा वहति, विसुद्धि. 2.271; — रूपम त्रि., ब. स. [इन्द्रवज्रोपम], इन्द्र के वज्र के समान, वज्र के सदृश, वज्रोपम — मं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — सो तं पञ्जासङ्गातं इन्द्रवजिरूपमं वीमसं, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).335.

इन्द्रवजिरा स्त्री., [इन्द्रवज्रा], एक छन्द-विशेष का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण (दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण) होते हैं — इन्द्रादिका ता वजिरा ज गा गो, वुत्तो. 62(पृ.166).

इन्द्रवर्ण नपुं., [इन्द्रवर्ण], इन्द्र की आकृति या आकार-प्रकार, इन्द्र का रूप-रंग — ण्णं द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रवर्णं वा दस्सेति, पटि. म. 380; इन्द्रवर्णान्ति सक्कसण्ठानं, पटि. म. अहु. 2.255.

इन्द्रवत नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रव्रत], इन्द्र का व्रत, एक विशिष्ट तापसी चर्या का उपाधिनाम — तं प्र. वि., ए. व. — चन्द्रवतं वा सूरियवतं वा इन्द्रवतं वा ब्रह्मवतं वा, महानि. 228.

इन्द्रवतिक त्रि., इन्द्रव्रत-नामक तापसी चर्या का अनुपालन करने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. —

## इन्दवल

337

## इन्दसालरुक्ख

इन्दवतिका वा होन्ति, ब्रह्मवतिका वा होन्ति, महानि.  
64.

इन्दवल पु., एक प्रकार का मत्स्य या मीन, एक प्रकार की मछली — लो प्र. वि., ए. व. — अमरा खलिसो चन्दकुलो ... इन्दवलो कुलिसो वामी, सद्. 2.500.

इन्दवारुणि स्त्री., मादकतत्त्व युक्त एक प्रकार का कद्दू या ककड़ी, गोश्च ककड़ी — णि प्र. वि., ए. व. — इन्दवारुणि विसाला, अभि. प. 597.

इन्दवारुणिकरुक्ख / इन्दवारुणीरुक्ख पु., एक वृक्ष का नाम — रुक्ख द्वि. वि., ए. व. — एक इन्दवारुणीरुक्ख गोचरगाम ... विहारि, जा. अद्. 4.8.

इन्दविस्सट्ठ त्रि., तत्पु. स. [इन्द्रविसृष्ट], इन्द्र द्वारा छोड़ा गया, इन्द्र द्वारा प्रयुक्त — ङं पु., द्वि. वि., ए. व. — इन्दविस्सट्ठ वजिरं विय अविरज्झनको, महानि. अद्. 368.

इन्दसगोत्त त्रि., ब. स. [इन्द्रसगोत्र], शा. अ., इन्द्र के गोत्र का, इन्द्र के गोत्र वाला, ला. अ., कौशिकनामधारी इन्द्र के ही गोत्रवाला (कौशिक नाम वाला), क. कोसिय नामक तापंस तथा थेर कातियान के सन्दर्भ में प्रयुक्त, ख. हास्य के सन्दर्भ में उल्लू के लिए भी प्रयुक्त — त सम्यो., ए. व. — इन्दो च तं इन्दसगोत्त कङ्कति, अज्जेव त्वं इन्दसहब्बत्तं बजाति, जा. अद्. 5.407; — कोसियगोत्तताय, इन्दसगोत्त इन्दसमानगोत्तं, थेरगा. अद्. 2.88; — स्स ष. वि., ए. व. — यास्सु इन्दसगोत्तस्स उलूकस्स पवस्सतो ... जा. अद्. 7.253.

इन्दसदिस त्रि., [इन्द्रसदृक], इन्द्र के समान, इन्द्र जैसा — सेहि पु., तृ. वि., ए. व. — आकिण्ण इन्दसदिसेहि बग्घेहेव सुरक्खितं, जा. अद्. 6.151; यथा नाम बग्घेहि ... महावनं एवं इन्दसदिसेहेव सुरक्खितं, जा. अद्. 6.151.

इन्दसद् पु., कर्म. स. [इन्द्रशब्द], 'इन्द्र' शब्द — दो प्र. वि., ए. व. — येन लिङ्गन पवत्तिनिमित्तेन तावत्तिसाधिपतिहि इन्दसदो पवत्तो, थेरगा. अद्. 1.232.

इन्दसम नपुं., इन्द्र की सभा — मं प्र. वि., ए. व. — क्वचैकत्तञ्च छट्ठिया ... देवसमं, इन्दसमं, यक्खसमं, मो. व्या. 3.22.

इन्दसम त्रि., [इन्द्रसम], इन्द्र के समान, इन्द्र जैसा — मो पु., प्र. वि., ए. व. — अस्स इन्दसमो राज, अच्चत्तं अजरामरो, जा. अद्. 3.454; राजा इन्दसमो अहु अप. 1.186.

इन्दसमानगोत्त त्रि., ब. स. [इन्द्रसमानगोत्र], इन्द्र के समान (कौशिक) गोत्र वाला, इन्द्र का समगोत्रीय — तं

पु., द्वि. वि., ए. व. — कोसियगोत्तताय, इन्दसगोत्त, इन्दसमानगोत्तं, थेरगा. अद्. 2.88; विरानुबुत्थोपि करोति पापं, गजो यथा इन्दसमानगोत्तं, जा. अद्. 2.34; सो गजो इन्दसमानगोत्तं मारेत्तो पापं अकासीति अत्थो, तदे.; — त्तो पु., प्र. वि., ए. व. — तापसेसु इन्दसमान गोत्तो नामेको तापसो अनोवादको, जा. अद्. 2.33; — स्स ष. वि., ए. व. — इन्दसमानगोत्तस्स सरीरक्खिच्चं कारेत्वा, जा. अद्. 2.33.

इन्दसमानगोत्तजातक नपुं., व्य. सं., जा. सं. 161 का शीर्षक, जा. अद्. 2.33 34.

इन्दसमानभोग त्रि., ब. स. [इन्द्रसमानभोग], इन्द्र के समान भोग-साधनों से सम्पन्न, इन्द्र जैसी प्रचुर धन-सम्पदा का स्वामी — गा पु., प्र. वि., ब. व. — किञ्चापि ते इन्दसमानभोगा, ते वे पराधीनसुखा वराकाति, जा. अद्. 6.120.

इन्दसहब्बता स्त्री., इन्द्र की संगति, इन्द्र की सहचारिता, इन्द्र का साहचर्य, इन्द्र से भाईचारा — तं द्वि. वि., ए. व. — अज्जेव त्वं इन्दसहब्बत्तं वजा ति, जा. अद्. 5.407; सब्बेव ते इन्दसहब्बत्तं गता ति, तदे.; सब्बेपि तं दानं अनुमोदित्वा चित्तं पसादेत्वा इन्दसहब्बत्तं गताति, तदे.

इन्दसार पु., व्य. सं., एक आमणेर का नाम — रेन तृ. वि., ए. व. — भिक्खुना इन्दसारेन नाम सामणरेन ... अमरपुरं नाम नगरं सम्पत्तो, सा. वं. 135.

इन्दसालगुहा स्त्री., [बौ. सं., इन्द्रशैलगुहा], उत्तर भारत की एक गुफा का नाम, राजगृह के पास अम्बसण्डा (वर्तमान अपसड) के उत्तर में वैदिक पर्वत (वर्तमान पार्वती पहाड़ी) में इन्दसालगुहा है, भरहुत अभिलेख में पालि के अनुसार इन्दसालगुहा नाम प्रयुक्त — हा प्र. वि., ए. व. — इन्दसालरुक्खो वस्सा द्वारे तस्मा इन्दसालगुहाति, दी. नि. अद्. 2.260; — यं सप्त. वि., ए. व. — राजगहस्स अम्बसण्डा नाम ब्राह्मणगामो, तस्सुत्तरतो वेदियके पब्बते इन्दसालगुहायं ..., दी. नि. 2.194; पुन इन्दसालगुहायं असीति देवताकोटियो, मि. प. 317.

इन्दसालरुक्ख पु., तत्पु. स. [इन्द्रसालवृक्ष], इन्द्रसालद्रुम, एक वृक्ष का नाम, सल्लकी या कुटज जैसे अनेक वृक्षों के लिए प्रयुक्त — क्वेहि तृ. वि., ब. व. — कुटजोहि इन्दसालरुक्खेहि सल्लकीहि इन्दसालरुक्खेहि समन्नागतेन ..., थेरगा. अद्. 1.247; — क्खा प्र. वि., ब. व. — इन्दसालरुक्खा च कुटजरुक्खा च, जा. अद्. 4.82;

## इन्द्रसिद्ध

338

इन्द्रिय

अथापि इन्द्रसाला च सत्त्नकी खारका सिया, अभि. प. 568.

**इन्द्रसिद्ध** त्रि., "इन्द्रिय" शब्द के निर्वचनक्रम में ही प्रयुक्त [इन्द्रसृष्टि]. शा. अ., इन्द्र के द्वारा सर्जित, शक्र के द्वारा उत्पादित, ला. अ., परम ऐश्वर्य या आधिपत्य के द्वारा सर्जित — इन्द्र नपुं., प्र. वि., ए. व. — सज्जितं उप्पादितन्ति सिद्धं इन्द्रेण सिद्धं इन्द्रसिद्धं, विसुद्धि. महाटी. 2.174.

**इन्द्रसिद्ध** पु., तत्पु. स. [इन्द्रसृष्टार्थ], आधिपत्य के द्वारा सर्जित किए जाने का अर्थ या आशय — इन्द्रो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रसिद्धो इन्द्रियद्वो, विभ. अहु. 118; विसुद्धि. 2.118; — इन्द्रेण तृ. वि., ए. व. — तेन च सिद्धानीति इन्द्रसिद्धेन इन्द्रसिद्धेन च इन्द्रियानि, विभ. अहु. 118.

**इन्द्रहेति** पु., इन्द्र का वज्र — रतने वजिरो निन्धी मणिवेधेन्द्रहेतिसु, अभि. प. 866.

**इन्द्रा** पु., ब. व. में ही प्राप्त, देवों के एक वर्ग का नाम — न्दा प्र. वि., ब. व. — इन्द्रा पुच्छन्ति, महानि. 250; — नं ष. वि., ब. व. — अग्निष्पमुखा देवाति इन्द्रानं देवानं ... अग्निज्ज, थेरीगा. अहु. 98; सुचिण्णस्स फलं पस्स, सइन्द्रा देवा सब्रह्मका, जा. अहु. 5.269.

**इन्द्रावरी** स्त्री., व्य. सं., नारद बुद्ध की दो अग्रश्राविकाओं में से एक — री प्र. वि., ए. व. — इन्द्रावरी च वण्डी च, अहेसुं अग्गुण्डिका, बु. वं. 11.25.

**इन्द्रायुध** / **इन्द्रायुध** नपुं., [इन्द्रायुध], इन्द्र का शस्त्र, इन्द्र का आयुध, इन्द्रधनु, इन्द्रचाप — इन्द्रायुधं इन्द्रधनु, अभि. प. 49.

**इन्द्रासनि** स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्राशनि, स्त्री./पु.], इन्द्र का वज्र, बिजली की चमक, भूमि पर गिरने वाली बिजली / आग — नि प्र. वि., ए. व. — अथस्स आरद्धमत्ते कम्मडानमनसिकारे इन्द्रासनि विय पब्वते किलेसपब्वते चुण्णयमानयेव आणं पवत्तति, महाव. अहु. 239.

**इन्द्रिखग्गधर** त्रि., चमकते हुए या देदीप्यमान खड्ग (तलवार) को धारण करने वाला — रा पु., प्र. वि., ब. व. — तमनुयायिसु बहवो इन्द्रिखग्गधरा बली, जा. अहु. 7.105.

**इन्दीवर** नपुं., [इन्दीवर], 1. नील कमल, नीली कमलिनी, 2. लसोड़े का पुष्प — रं प्र. वि., ए. व. — इन्दीवरं मतं नीलुप्पले उहाल पादपे, अभि. प. 1003; — रानं ष. वि., ब. व. — इन्दीवरानं हत्थकन्ति उहालकपुप्फहत्थं वातघातकपुप्फकलापं, वि. व. अहु. 165; — रेहि तृ. वि.,

ब. व. — इन्दीवरेहि सज्जत्रं, वनं तं उपसोभति, जा. अहु. 7.303; — कलाप पु., [कलाप], इन्दीवर-नामक फूलों का गुच्छ, नीले कमलों का गुच्छ — पं द्वि. वि., ए. व. — तासु एका अज्जतरं ... इन्दीवरकलापं अदासि, वि. व. अहु. 163; — दलप्पम त्रि., ब. स. [इन्दीवरदलप्रभं], नीली कमलिनी के पत्तों के समान प्रभा वाला — भं नपुं., प्र. वि., ए. व. — उपतित्थं समापन्नं इन्दीवरदलप्पमं अप. 2.14; — पुप्फ नपुं., इन्दीवर का फूल, इन्दीवरपुष्प, नीलोत्पल का फूल, नीलकमल का कुसुम — प्फं प्र. वि., ए. व. — जलितं जलमानं इन्दीवरपुप्फं इव अप. अहु. 1.230; — प्फादीनं प. वि., ब. व. — गन्धो तेसन्ति तेसं इन्दीवरपुप्फादीनं गन्धो अड्ढमासं न छिज्जति, जा. अहु. 7.304; — पुप्फसाम त्रि., इन्दीवर के पुष्पों के समान श्याम अथवा गहरे नीले रंग वाला — मे स्त्री., सम्बो., ए. व. — आमन्तय वम्भरानि चेते, पुत्तानि इन्दीवरपुप्फसामेति, जा. अहु. 7.184; इन्दीवरपुप्फसामेति तं आलपति, जा. तदे.

**इन्दीवरी** स्त्री., इन्दीवर से व्यु., नीले रंग की कुमुदिनी (या उसका पुष्प) — साम त्रि., ब. स., नीले कमलिनी के पुष्प के समान (गहरे नीले रंग का), इन्दीवर के सदृश — मं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — वन्दे इन्दीवरीसामं, रत्तिं नक्खत्तमालिनिं, जा. अहु. 5.87; इन्दीवरीसामन्ति इन्दीवरीपुप्फसमानवण्णं, जा. अहु. 5.88; इन्दीवरीपुप्फसमानवण्णन्ति इन्द्रिया इन्द्रस्स भरियाय वरीतव्वताय पत्थितव्वताय इन्दीवरीतिलद्धनामस्स नीलुप्पलस्स पुप्फेन समानवण्णं, जा. टी. (पालि बर्मी शब्दकोश 4.1.582).

**इन्दु** पु., [इन्दु], चन्द्र, चन्द्रमा — न्दु प्र. वि., ए. व. — इन्दु चन्दो च नक्खत्तराजा सोमो निसाकरो, अभि. प. 51; चन्दो नक्खत्तराजा च इन्दु सोमो निसाकरो, सह. 2.380. **इन्दूपम** त्रि., ब. स. [इन्दूपम], चन्द्रमा के समान, चन्द्रमा जैसा — मो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्दूपमो देवपुरे रमामहं, वि. व. 1045.

**इन्दोभास** पु., व्य. सं., एक स्थविर (थेर) का नाम, स. प. के अन्त. — तस्स सिस्सो बोधोदधिगामवासिनो इन्दोभास-कल्याणचक्र विमलाचारथेरा सहस्सोरोधगामवासिनो ..., सा. वं. 148(ना.).

**इन्द्रिय** नपुं., [इन्द्रिय], शा. अ., इन्द्र से सम्बद्ध बल, शक्ति या सामर्थ्य, पूर्ण आधिपत्य रखने की शक्ति या

## इन्द्रिय

339

## इन्द्रिय

क्षमता, नियन्त्रक धर्म, ला. अ. क. ज्ञान की प्रक्रिया में मन को आलम्बन तक पहुंचने वाले चक्षु, श्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय एवं मन नामक छ आन्तरिक द्वार या ज्ञानेन्द्रियां — यानि' प्र. वि. ब. व. — पञ्चिन्द्रियानि, आवुसो, इन्द्रियानि नानाविसयानि नानागोचरानि, न अज्जमज्जस्स गोचरविसयं पच्यनुभोन्ति, सेय्यथिदं, चक्षुन्द्रियं सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिह्विन्द्रियं, कायिन्द्रियं, म. नि. 1.374-375; अपि च आधिपच्चसङ्गातेन इस्सरियद्वेनापि एतानि इन्द्रियानि, विसुद्धि. 2.119; तेन च सिद्धानीति इन्द्रलिङ्गेन इन्द्रसिद्धेन च इन्द्रियानि, तदे.; पाकटवसेन चेत्थ पञ्चिन्द्रियानि वुत्तानि, लक्खणतो पन छट्ठमि वुत्तयेव होतीति वेदितब्बं, सु. नि. अट्ठ. 2.69; बादीसतिन्द्रियाणि — चक्षुन्द्रियं सोतिन्द्रियं घानिन्द्रियं जिह्विन्द्रियं कायिन्द्रियं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मनिन्द्रियं सुखिन्द्रियं दुक्खिन्द्रियं सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं उपेक्खिन्द्रियं सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पज्जिन्द्रियं अनज्जातज्जस्सामीतिन्द्रियं अज्जिन्द्रियं अज्जाताविन्द्रियं, अभि. ध. स. 51; विभ. 137; 141; — यानि' द्वि. वि. ब. व. — इन्द्रियानि परिज्जाय, दुक्खस्सन्तं करिस्सतीति, विसुद्धि. 2.120; ला. अ. ख. रूपधर्मो में स्त्रीत्व और पुरुषत्व की विशिष्ट अवस्था को निर्धारित कराने वाले स्त्रीत्व तथा पुरुषत्व नाम के दो प्रकार के भावरूप तथा सभी रूपधर्मों की एक प्रकार की प्राणाधायक शक्ति जीवितेन्द्रिय — यं प्र. वि. ए. व. — यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकणो इत्थत्तं इत्थिभावो — इदं वुच्चाति "इत्थिन्द्रियं", विभ. 138; तत्थ कतमं पुरिसिन्द्रियं ? यं पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुत्तं पुरिसाकणो पुरिसत्तं पुरिसभावो — इदं वुच्चाति पुरिसिन्द्रियं, तदे.; तत्थ कतमं जीवितिन्द्रियं ? जीवितिन्द्रियं दुक्खिन्द्रियं अत्थि रूपजीवितिन्द्रियं, अत्थि अरूपजीवितिन्द्रियं, तदे.; ला. अ. ग. वेदनाओं के दुःख, सुख, दोमनस्स, सोमनस्स एवं उपेक्षा नामक पांच प्रभेद के रूप में पांच वेदना-इन्द्रियां — तत्थ कतमं सुखिन्द्रियं ? यं कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना — इदं वुच्चाति "सुखिन्द्रियं", विभ. 139; तत्थ कतमं सोमनस्सिन्द्रियं ? यं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना — इदं वुच्चाति "सोमनस्सिन्द्रियं", विभ. 139; तत्थ कतमं दोमनस्सिन्द्रियं ? यं चेतसिकं असातं चेतसिकं

दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना — इदं वुच्चाति "दोमनस्सिन्द्रियं", विभ. 139; तत्थ कतमं उपेक्खिन्द्रियं ? यं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना—इदं वुच्चाति "उपेक्खिन्द्रियं", विभ. 139; ला. अ. घ. आध्यात्मिक अभ्युत्थान के मार्ग में चित्त की विशुद्धि में सहायक, श्रद्धा, स्मृति, वीर्य, समाधि एवं प्रज्ञा नामक पांच प्रकार के नैतिक बल — यानि प्र. वि., ब. व. — पञ्चिन्द्रियानि — सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पज्जिन्द्रियं, अभि. ध. स. 52; — यं, प्र. वि., ए. व. तत्थ कतमं सद्धिन्द्रियं ? या सद्धा सद्वहना ओक्कप्पना अभिण्णसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं — इदं वुच्चाति "सद्धिन्द्रियं", विभ. 139; तत्थ कतमं वीरियिन्द्रियं ? यो चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो ठिति असिथिलपरक्कमता ... वीरियिन्द्रियं वीरियबलं — इदं वुच्चाति "वीरियिन्द्रियं", विभ. 139; तत्थ कतमं सतिन्द्रियं ? या सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिप्पापनता असम्पुप्पनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति — इदं वुच्चाति "सतिन्द्रियं", विभ. 140; तत्थ कतमं समाधिन्द्रियं ? या चित्तस्स ठिति सण्णति अवद्धिति अविसाहारो अविकल्पो ... समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि—इदं वुच्चाति "समाधिन्द्रियं", तदे.; ला. अ. ङ. आन्तरिक धर्मों के यथार्थरूप का ज्ञान कराने में आधिपत्य से युक्त आज्ञा, आज्ञातावी एवं अनाज्ञात आज्ञास्थामि नामक तीन ज्ञानफल — तत्थ कतमं अनज्जातज्जस्सामीतिन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं अनज्जातानं अदिद्वानं अप्पतानं अविदितानं असाच्छिकतानं सच्छिकेरियाय पज्जा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिद्वि धम्मविचयसम्बोज्झाणो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं — इदं वुच्चाति "अनज्जातज्जस्सामीतिन्द्रियं", विभ. 140; तत्थ कतमं अज्जिन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं ज्ञातानं दिद्वानं पत्तानं विदितानं ... पज्जा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिद्वि धम्मविचयसम्बोज्झाणो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं—इदं वुच्चाति "अज्जिन्द्रियं", तदे.; तत्थ कतमं अज्जाताविन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं अज्जातावीनं दिद्वानं पत्तानं विदितानं ... पज्जा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिद्वि मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं इदं वुच्चाति "अज्जाताविन्द्रियं", तदे.; — नं ष. वि., ब. व. — किच्चाति किं इन्द्रियानं किच्चान्ति,

## इन्द्रिय-असंवर

340

## इन्द्रियद्व

विसुद्धि. 2.120; इन्द्रियानञ्च समतं पटिविज्जा, वि. व. 3.269(बर्मी); अ. 3.331(बर्मी); तं सद्वादीनं इन्द्रियानं समतं समभावं, वि. व. अ. 3.369(बर्मी); — सु सप्त. वि. व. व. — इन्द्रियेसु गुत्तद्धारोति, दी. नि. अ. 1.149; अ. नि. अ. 2.85; इन्द्रियेसु असंवृतं, ध. प. 7; स. उ. प. के रूप में, अञ्जातावि., अञ्जि., अनञ्जातञ्जस्सामिति., अनि., अनुद्धति., अपरिपक्वि., अरूपजीविति., अविकलि., असंयति., असंवृति., अहीनि., आहारि., इत्थि., उपहति., उपेक्खि., एकि., एकेकि., किरियि., किलन्ति., कुपिति., गुत्ति., गोपिति., छाट्ठिति., दरिय., जिति., जिक्कि., जीविति., जीवि., जाणि., तिक्खि., तुट्ठि., दुक्खि., दुट्ठि., दोमनस्सि., द्वारि., दवि., द्वि., निरि., पट्ठि., पट्ठि., पमुदिति., परिपक्वि., परिपाकि., गति., परिपुण्णि., परिमारुति., पाकति., पिहिति., पीणिति., पीनि., पुथुनानि., पुरिसि., फीति., भाविति., मज्झि., मनि., मदि., यति., रक्खिति., रूप—जीविति., रूपि., लोकियि., लोकुत्तरि., वत्ति., विकलि., विजिति., विदिति., पस्सनि., विपाकि., विप्पसन्नमुखि., विरियि., विवटि., वसट्ठि., वसुद्धि., व्यथिति., संवृति., सति., सद्धि., सन्तसमावि., सन्ति., भूति., समद्धि., समाहिति., सुखि., सुसमाहिति., सोति., सोमनस्सि., हदयि. के अन्त. द्रष्ट.

इन्द्रिय-असंवर पु., तत्पु. स. इन्द्रियों की असुरक्षा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण का अभाव — रो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियअसंवरो परिपूरो तीणि दुच्चरितानि, परिपूरेति, अ. नि. 3(2).94.

इन्द्रियकथा स्त्री., [इन्द्रियकथा], दस प्रकार के उपदेशों में से एक, इन्द्रियों से सम्बद्ध उपदेश — थं द्वि. वि., ए. व. — दस कथावत्थूनि कथेति, सेय्यथिदं अप्पिच्छकथं सन्तुट्ठिकथं ... इन्द्रियकथं ... कथेति, महानि. 356; — जीविन्द्रियकथा स्त्री., कथा. की एक कथा का शीर्षक, कथा. 323-326.

इन्द्रियकथा<sup>2</sup> स्त्री., व्य. सं. [इन्द्रियकथा], 1. पटि. म. के एक स्थल का शीर्षक, पटि. म. 191-220; — वर्णणा स्त्री., पटि. म. की अ. के एक व्याख्या-स्थल का शीर्षक, पटि. म. अ. 113-135; 2. कथा. के एक स्थल का शीर्षक, कथा. 475-476; — वर्णणा स्त्री., [वर्णना], कथा. अ. की व्याख्या का शीर्षक — इन्द्रियकथावर्णणा, प. प. अ. 269.

इन्द्रियकिच्च नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियकृत्य], इन्द्रियों का कार्य — च्वं द्वि. वि., ए. व. — अत्तनो अत्तनो

इन्द्रियकिच्चं साधेन्ति, विभ. मू. टी. 80; विसुद्धि. महाटी. 2.175.

इन्द्रियकुसल त्रि., तत्पु. स. इन्द्रियों के विषय में प्रवीण, पांच इन्द्रियों के विषय में दक्ष या कुशल — ला पु., प्र. वि., ब. व. — इद्धिपादकुसला इन्द्रियकुसला, बलकुसला ... निब्बानकुसला, महानि. 49.

इन्द्रियक्खन्ध पु., द्व. स. इन्द्रिय और स्कन्ध — न्धा प्र. वि., ब. व. — यो च पटिच्चुप्पादो इन्द्रियक्खन्धा च धातु आयतना ..., नेति. 5; तत्थ इन्द्रियक्खन्धाति इन्द्रियानि च खन्धा चाति इन्द्रियक्खन्धा, नेति. टी. 179.

इन्द्रियगुत्त त्रि., [इन्द्रियगुत्त], इन्द्रियों के विषय में सतर्क, इन्द्रियों की रक्षा करने वाला, इन्द्रियों का नियन्त्रण करने वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियगुत्तो निपको सत्तीमा, स. नि. 1(1).181.

इन्द्रियगुत्ति स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रियगुप्ति], इन्द्रियों के ऊपर चौकसी, इन्द्रियों पर सतर्कता, इन्द्रियों की सुरक्षा या नियन्त्रण — ति प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियगुत्ति सन्तुट्ठि, पातिमोक्खे च संवरो, ध. प. 375; इन्द्रियगुत्तीति इन्द्रियसंवरो, ध. प. अ. 2.346; — यं सप्त. वि., ए. व. — एकच्च पब्बाजेत्वा सीलसंवरो इन्द्रियगुत्तियं ... च यथारहं पतिट्ठापेसि, चरिया. अ. 211.

इन्द्रियगोचरसुत्त नपुं., व्य. सं., ध. स. अ. में उल्लिखित एक सुत्त — ते सप्त. वि., ए. व. — यं पन इन्द्रियगोचरसुत्ते ... वुत्तं, ध. स. अ. 342.

इन्द्रियगग्ह त्रि., तत्पु. स. [इन्द्रियग्राह्य], चक्षु आदि इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य या ग्रहण करने योग्य, प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ज्ञेय — य्हं नपुं., प्र. वि., ए. व. — पच्चक्खं इन्द्रियगग्हं अप्पच्चक्खं मनिन्द्रियं, अभि. प. 716.

इन्द्रियचरिया स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रियचर्या], इन्द्रियों की सक्रियता या कार्यपरायणता — य तृ. वि., ए. व. — सहजवनाय इन्द्रियचरियाय पटिपन्नस्स, पटि. म. अ. 2.128.

इन्द्रियजातक नपुं., व्य. सं., जा. अ. के एक कथानक का शीर्षक, जा. अ. 3.407.

इन्द्रियद्व पु., [इन्द्रियार्थ], इन्द्रिय का अर्थ या अभिप्राय, आधिपत्य का अर्थ, अपने क्षेत्र में पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त होने का तात्पर्य — द्वो प्र. वि., ए. व. — इन्दलिद्द्वो इन्द्रियद्वो, इन्ददेसित्तद्वो इन्द्रियद्वो, इन्ददिद्द्वो, इन्द्रियद्वो, विसुद्धि. 2.118; — तो प. वि., ए. व. — इन्द्रियद्वतो बलस्स

## इन्द्रियद्वक

341

## इन्द्रियपञ्चकवसेन

- विसिद्धता इध इन्द्रियतो बलं पठमं वुत्तन्ति वेदितव्वं, पटि.  
म. अहु. 2.197.
- इन्द्रियद्वक नपुं. [इन्द्रियाष्टक], आठ इन्द्रियां, इन्द्रियाष्टक,  
आठ के समुच्चय में अन्तर्भूत इन्द्रियां — के सप्त. वि. ए.  
व. — इन्द्रियद्वके उपेक्खिन्द्रियं होतीति, ध. स. अहु. 201.
- इन्द्रियत्ता/इन्द्रियत्त स्त्री./नपुं., इन्द्रिय का भाव,  
आधिपत्य, ऐश्वर्यत्व, इन्द्रिय होने की स्थिति — ता स्त्री.,  
प्र. वि., ए. व. — इध रूपजीवितिन्द्रियत्ता, यो तेसं  
रूपीनं धम्मनन्ति अयमेव विसेसो, ध. स. अहु. 355.
- इन्द्रियदम पु., तत्पु. स. [इन्द्रियदम], इन्द्रियों का दमन,  
इन्द्रियों को वश में रखना, इन्द्रियसंयम, इन्द्रिय-नियन्त्रण  
— मेन तृ. वि., ए. व. — दमसच्चेनाति इन्द्रियदमेन चेव  
परमत्थसच्चपक्खिकेन वचीसच्चेन च अपेतो, थेरगा. अहु.  
2.311; इन्द्रियदमेन उपोसथकम्मेन वा, दी. नि. अहु.  
1.133; इन्द्रियदमेन चेव वचीसच्चेन च अपेतो अनुपगतो,  
जा. अहु. 5.44.
- इन्द्रियदमन नपुं. [इन्द्रियदमन], उपरिवत् — नं प्र. वि.,  
ए. व. — दमोति इन्द्रियदमनं, जा. अहु. 2.45; — ना प.  
वि., ए. व. — अथ वा संयमाति इन्द्रियदमना, जा. अहु.  
6.140.
- इन्द्रियदेसना स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों के विषय में उपदेश  
— ना प्र. वि., ए. व. — खन्धायतनदेसना सङ्घपदेसना,  
इन्द्रियदेसना वित्थारदेसना, विसुद्धि. महाटी. 2.167.
- इन्द्रियधम्म पु., कर्म, स., [इन्द्रियधर्म], एक धर्म के रूप  
में इन्द्रिय, इन्द्रियों का धर्म — मा प्र. वि., ब. व. — ते  
एव अहु इन्द्रियधम्मा, पटि. म. अहु. 1.308;  
सोळसिन्द्रियधम्मा च, अभि. ध. स. 52.
- इन्द्रियधीर त्रि., [इन्द्रियधीर], पांच इन्द्रियों के विषय में  
निपुण या कुशल — रा पु., प्र. वि., ब. व. — इन्द्रियधीरा  
बलधीरा ... निब्बानधीरा, महानि. 32.
- इन्द्रियनानत्ता/इन्द्रियनानत्ताता नपुं./स्त्री.,  
[इन्द्रियनानात्व], इन्द्रियों की भिन्नता (विविध व्यक्तियों में),  
इन्द्रियों की विविधता — तं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. —  
इन्द्रियवेमत्तत्तं वदामीति इन्द्रियनानत्तत्तं वदामि, म. नि.  
अहु. (म.प.) 2.106; — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — एत्थ  
हि इन्द्रियनानत्ता कारणं, म. नि. अहु. (म.प.)  
2.106.
- इन्द्रियनियम पु., तत्पु. स. [इन्द्रियनियम], इन्द्रिय का  
नियम, आधिपत्य का नियम — मेन तृ. वि., ए. व. —

- विपस्सनानियमेन इन्द्रियनियमेन च वुत्ता तयो पुग्गला,  
पटि. म. अहु. 2.149.
- इन्द्रियन्तर नपुं. [इन्द्रियान्तर], इन्द्रियों का विशिष्ट आन्तरिक  
धर्म, इन्द्रियों की विशिष्टता — रं प्र. वि., ए. व. —  
धात्वन्तरं इन्द्रियन्तरं बलबोज्झङ्गकम्मविपाकन्तरं ... उप्पज्जति,  
ध. स. अहु. 13.
- इन्द्रियपकति स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रियप्रकृति], इन्द्रियों की  
स्वाभाविक अवस्था, इन्द्रियों की प्रकृति — ति प्र. वि., ए.  
व. — इन्द्रियपकति हेसा यदिदं इद्धानिद्वविसयसमायोगो,  
चरिया. अहु. 271.
- इन्द्रियपच्चय पु., [इन्द्रियप्रत्यय], चौबीस प्रकार के  
प्रत्ययों में से सोलहवां प्रत्यय, इन्द्रियप्रत्यय, स्त्री-इन्द्रिय  
एवं पुरुषेन्द्रिय को छोड़कर चक्षु-विज्ञान आदि की उत्पत्ति  
में अधिपति या उपकारक अन्य बीस इन्द्रियां, अधिपति-  
सहित चक्षु आदि पांच इन्द्रियां, जीवितिन्द्रिय तथा रूपरहित  
इन्द्रियां — यो प्र. वि., ए. व. — अधिपतियद्देन उपकारका  
इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियवज्जा वीसति इन्द्रिया इन्द्रियपच्चयो,  
मो. वि. टी. 345; अधिपतियद्देन उपकारका  
इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियवज्जा वीसति इन्द्रिया इन्द्रियपच्चयो,  
प. प. अहु. 349; सहजातानमिच्चेव—मिस्सरद्देन पच्चया  
इन्द्रियपच्चयोतेव, तिविधा समुदाहटो, ना. रू. प. 842;  
तेसु तेसु किच्चेसु पच्चयुप्पन्नधम्महे अत्तानं  
अनुवत्तापनसङ्गाताधिपतियद्देन पच्चयो इन्द्रियपच्चयो, अभि.  
ध. वि. टी. 213; पच्च पसादा पच्चन्नं विज्जाणानं,  
रूपजीवितिन्द्रियं उपादित्तरूपानं, अरूपिनो इन्द्रिया सहजातानं  
नामरूपानन्ति च तिविधो होति इन्द्रियपच्चयो, अभि. ध. स.  
59; — येन तृ. वि., ए. व. — अरूपिनो इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं  
धम्मनं तसमुद्धानानञ्च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयोति एवं  
निहिद्धो, मो. वि. टी. 345; — ये सप्त. वि., ए. व. — ... अयं  
इन्द्रियपच्चये नयो, मो. वि. टी. 345; — भाव पु., इन्द्रिय-  
प्रत्यय नामक प्रत्यय होने की स्थिति, चक्षु-विज्ञान आदि का  
इन्द्रिय-प्रत्यय होना — वेन तृ. वि., ए. व. — इन्द्रियपच्चयभावेन  
सामेतव्वं अत्तनो तिवक्खमन्दादिभावेन ..., विभ. अहु. 111.
- इन्द्रियपच्चयालाम पु., तत्पु. स., इन्द्रियप्रत्यय का लाभ न  
होना — भो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियपच्चयालामो  
जीवितिन्द्रियं सन्धाय वुत्तो, प. प. मू. टी. 224.
- इन्द्रियपञ्चकवसेन तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., पांच इन्द्रियों  
के समुच्चय के माध्यम से — इन्द्रियसङ्गहितत्ता  
इन्द्रियपञ्चकवसेन, पटि. म. अहु. 2.72.



## इन्द्रियपञ्जाति

342

## इन्द्रियपाटव

इन्द्रियपञ्जाति स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रियप्रज्ञप्ति], इन्द्रियों का बाह्यरूप में या वचनों द्वारा प्रकाशन, इन्द्रियों की संकल्पना या प्रज्ञप्ति, पु. प. में परिगणित छ प्रकार की प्रज्ञप्तियों में से एक — ति प्र. वि., ए. व. — छ पञ्जातियो—खन्धपञ्जाति, आयतनपञ्जाति, धातुपञ्जाति, सच्चपञ्जाति इन्द्रियपञ्जाति, पुगलपञ्जातीति, पु. प. 103; कथा. 265; कितावता इन्द्रियानं इन्द्रियपञ्जाति ? यावता बावीसतिन्द्रियानि ... एतावता इन्द्रियानं इन्द्रियपञ्जाति, पु. प. 104.

इन्द्रियपरिपाक पु., [इन्द्रियपरिपाक], शा. अ., इन्द्रियों की परिपक्वता, ला. अ. 1. इन्द्रियों की पूर्णता, इन्द्रियों की तीक्ष्णता, ला. अ. 2. जरा अवस्था के कारण इन्द्रियों का अपक्षय या इन्द्रियों का विषयों के ग्रहण में शिथिल हो जाना — को प्र. वि., ए. व. — आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाकोति इमेहि पन पदेहि कालातिक्रमेयेव अभिव्यक्तताय आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसज्जिताय पकतिया दीपिता, म. नि. अ. (मू.प.) 1(1)224; ... इन्द्रियानं परिपाकोति इमेहि पन पदेहि ... आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसज्जिताय पकतिया दीपिता, घ. स. अ. 360; — कं द्वि. वि., ए. व. — भगवा पनस्स इन्द्रियपरिपाकं आगमयमानो न ब्याकासि, सु. नि. अ. 2.294; इन्द्रियपरिपाकञ्च जत्वा ... आसयानुसयचरितानि ओलोकेन्ति, पटि. म. अ. 1.48.

इन्द्रियपरोपरिय नपुं., [इन्द्रियपरोवर्य], इन्द्रियों की उच्च तथा निम्न अवस्था — जाण नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियपरोवर्यज्ञान], (दूसरों की) इन्द्रियों के तीक्ष्ण या मृदु होने का ज्ञान, चक्षु आदि इन्द्रियों की विषयों को ग्रहण करने वाली क्षमता की तीक्ष्णता एवं मन्दता का ज्ञान — णं प्र. वि., ए. व. — पुरिसपुगलपरोपरियजाणं बुच्चति पुरिसपुगलानं तिक्खमुदुवसेन इन्द्रियपरोपरियजाणं, अ. नि. अ. 3.116.

इन्द्रियपरोपरियत्त नपुं., इन्द्रियपरोपरिय का भाव, तत्पु. स. [इन्द्रियपरोवर्यत्त्व], इन्द्रियों की उच्च या निम्न अवस्था, इन्द्रियों की तीक्ष्णता अथवा मृदुता, दूसरे प्राणियों के आशयों, अनुशयों, अधिमुक्तियों की प्रकृति तथा इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मृदुता — चं द्वि. वि., ए. व. — तथागतो परसत्तानं परपुगलानं इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं पजानाति, म. नि. 1.102; पटि. म. 350; इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं जाणं तथागतबलं सावकसाधारणन्ति?, कथा. 193; तत्थ

कतमं तथागतस्स परसत्तानं परपुगलानं इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं जाणं ? विभ. 389; — ते सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रियपरोपरियत्ते जाणं, पटि. म. 4; — जाण नपुं., [ज्ञान], इन्द्रियों के तीक्ष्ण होने एवं मृदु होने का ज्ञान, इन्द्रियों की तीक्ष्णता या मृदुता का ज्ञान — णं प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियपरोपरियत्तस्स जाणं इन्द्रियपरोपरित्तजाणं, इन्द्रियानं उत्तमानुत्तमभावजाणन्ति अत्थो, ... वरानि च अवरियानि च वरोवरियानि, वरोवरियानं भावो वरोवरियत्तन्ति योजेतब्बं, अवरियानीति च न उत्तमानीति अत्थो ..., पटि. म. अ. 1.48; चूलनि. अ. 46; — स्स प. वि., ए. व. — 'अहं एसो विद्य असाधारणस्स इन्द्रियपरोपरियत्तजाणस्स पटिवेधाय उपनिस्सयभूता दस पारमियो न पूरेसिं, जा. अ. 1.87; — जाणनिदेस पु., तत्पु. स., इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता के ज्ञान का व्याख्यान — से सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रियपरोपरियत्तजाणनिदेसे तथागतस्साति वचने ..., पटि. म. अ. 2.1; — जाणनिदेसवण्णना स्त्री., पटि. म. अ. के एक खण्ड का शीर्षक, पटि. म. अ. 2.1-4; — वेमत्तताजाण नपुं., इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता की विविधता का ज्ञान, तथागत का एक बल — णं प्र. वि., ए. व. — इदं बुच्चति परसत्तानं परपुगलानं इन्द्रियपरोपरियत्तवेमत्तताजाणं सत्तमं तथागतबलं, नेत्ति. 82; इन्द्रियपरोपरियत्तवेमत्तताजाणन्ति परभावो च अपरभावो च परोपरियत्तं ... तस्स वेमत्तता परोपरियत्तवेमत्तता, सद्धादीनं इन्द्रियानं परोपरियत्तवेमत्ततायजाणं इन्द्रियपरोपरियत्तवेमत्तताजाणन्ति पदविभागो वेदितब्बो, नेत्ति. अ. 292.

इन्द्रियपरोपरियत्तसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1)376.

इन्द्रियपरोपरियत्ति स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों की (विषयग्रहण में) तीक्ष्णता अथवा मन्दता, इन्द्रियों की विविध प्रकार की क्षमताएं — ति प्र. वि., ए. व. — अत्थि सावकस्स फलपरोपरियत्ति इन्द्रियपरोपरियत्ति पुगलपरोपरियत्तीति, कथा. 264; — जाण नपुं., शा. अ., इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता का ज्ञान, ला. अ., बुद्ध-चक्षु, बुद्ध का विशेष ज्ञान, जिससे वे प्राणियों की इन्द्रियों की तीक्ष्णता आदि को जान लेते हैं — णं प्र. वि., ए. व. — बुद्धचक्षु नाम आसयानुसयजाणञ्चैव इन्द्रियपरोपरियत्तजाणञ्च, बु. व. अ. 42.

इन्द्रियपाटव नपुं., तत्पु. स., इन्द्रियों की पटुता या सामर्थ्य — वेन तु. वि., ए. व. — तिक्खपञ्जस्स

## इन्द्रियपुच्छा

343

## इन्द्रियभेद

इन्द्रियपाटवेन संखितरुचिभावतो, विसुद्धि. महाटी. 1.405.

इन्द्रियपुच्छा स्त्री., [इन्द्रियपृच्छा], इन्द्रियों के बारे में प्रश्न या पूछताछ — च्छा प्र. वि., ए. व. — तिस्रो पुच्छा—इन्द्रियपुच्छा, बलपुच्छा, बोज्झङ्गपुच्छा, महानि. 251.

इन्द्रियप्पत्त त्रि., तत्पु. स. [इन्द्रियप्राप्त], इन्द्रियों द्वारा प्राप्त, इन्द्रियों की पकड़ में आने वाला — तानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — समाधिवीरियानि पन इन्द्रियप्पत्तानि न होन्ति, प. प. अट्ट. 337.

इन्द्रियबद्ध त्रि., [इन्द्रियबद्ध], शा. अ., इन्द्रियों से बंधा हुआ, इन्द्रियों के साथ जुड़ा हुआ, ला. अ., अनुभवगम्य, इन्द्रिय—ग्राह्य, संवेदनशील, सजीव — द्धं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ... इन्द्रियबद्धज्जेव दुक्खन्ति, कथा. 441-442; तत्थ अविज्जाणकं सुवण्णरजतादि, सविज्जाणकं इन्द्रियबद्धं, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.207; यं वा पनज्जम्हि एवरुपं इन्द्रियबद्धं, खु. पा. अट्ट. 141; — द्धा पु., प्र. वि., ब. व. — ततो बहिभूता इन्द्रियबद्धा वा अनिन्द्रियबद्धा वा रूपारूपपञ्चतियो बहिद्धा नाम, मो. वि. टी. 93; — कथा स्त्री., दुख "इन्द्रियों के अनुभवों का विषय है, सभी संस्कार नहीं" इस प्रकार का कथन, प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियबद्धमेव दुक्खं, न सब्बे सङ्गाराति पक्ता इन्द्रियबद्धकथा, मो. वि. टी. 291; — धम्म पु., इन्द्रियग्राह्य धर्म, संवेदनशील धर्म, सजीव धर्म — म्मा प्र. वि., ब. व. — तं अत्तानं अधिकिच्च उदिसस पक्ता अज्झत्ता, इन्द्रियबद्धधम्मा, विसुद्धि. महाटी. 2.99-100; — रूप नपुं., इन्द्रियों के साथ जुड़ा हुआ रूप, संवेदनशील या सजीव रूप — पं प्र. वि., ए. व. — तत्थ सब्बानि चित्तचेतसिकानि इन्द्रियबद्धरूपं तिधा होन्ति, मो. वि. टी. 93; — स्स ष. वि., ए. व. — इन्द्रियबद्धरूपस्स हि मतरूपतो कम्मजस्स, तदनुबन्धाभूतस्स च उत्तुसमुद्धानादितो जीवितिन्द्रियकतो विसो, विसुद्धि. महाटी. 2.90.

इन्द्रियबल पु., द्व. स. [इन्द्रियबल], इन्द्रिय और बल — वसेन तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., इन्द्रियों और बलों के आधार पर — एको द्वेधाति सद्धा इन्द्रियबलवसेन द्वेधा ठिता, पटि. म. अट्ट. 2.208; वि. वि. वि. के संस्करण में इन्द्रियबलवसेन के रूप में अप.

इन्द्रियबलबोज्झङ्गमगगवसेन क्रि. वि., तृ. वि., ए. व., इन्द्रियों, बलों, बोधि के अङ्गों और मार्ग के अंगों के आधार

पर — तत्थ समाधि एको इन्द्रियबलबोज्झङ्गमगगवसेन चतुधा ठितो, पटि. म. अट्ट. 2.208.

इन्द्रियबलवेमत्तजाण नपुं., तत्पु. स., (भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में) इन्द्रियों एवं बलों की मात्रा की विविधता का ज्ञान — णं प्र. वि., ए. व. — तस्स आयस्मतो नत्थि इन्द्रियबलवेमत्तजाणं, पेटको. 223.

इन्द्रियभावना स्त्री., चक्षु आदि तथा श्रद्धा आदि इन्द्रियों का अर्जन एवं विकास, आधिपत्य अथवा ऐश्वर्य का संवर्धन, इन्द्रियत्व का विकास — ना प्र. वि., ए. व. — अरियस्स विनये अनुत्तरा इन्द्रियभावना होतीति, म. नि. 3.361; अयं पुच्चतानन्द, अरियस्स विनये अनुत्तरा इन्द्रियभावना चक्खुविज्जेय्येसु रूपेसु, म. नि. 3.362; सा मे भविस्सति इन्द्रियभावना बलभावना बोज्झङ्गभावना, महाव. 385; — नं द्वि. वि., ए. व. — सो पन अत्थङ्गमो इन्द्रियभावनं अननुयुत्तस्स अप्पटिलद्धा पटिलाभयङ्गमो, पटि. म. अट्ट. 2.123; 'एवं खो, भो गोतम, देसेति पारासिवियो ब्राह्मणो सावकानं इन्द्रियभावनन्ति, म. नि. 3.361; — कथा स्त्री., इन्द्रियों की भावना अथवा विकास के विषय में कथन — थं द्वि. वि., ए. व. — हन्दाहं इमिस्सं परिससि भिक्खुसङ्गस्स इन्द्रियभावनाकथं कारेमीति, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.264; — नानुयुत्त त्रि., इन्द्रियों की भावना या संवर्धन में लगा हुआ, इन्द्रियों का अर्जन एवं परिष्करण कर चुका (साधक) — स्स पु., च. वि., ए. व. — अयज्झि विमोक्खकथा इन्द्रियभावनानुयुत्तस्स विमोक्खसभावतो इन्द्रियकथानन्तरं कथिता, पटि. म. अट्ट. 2.136.

इन्द्रियभावनासुत्त नपुं., व्य. सं., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, म. नि. 3.361-365.

इन्द्रियभूमि स्त्री., [इन्द्रियभूमि], विमुक्ति के परिपाचन में सहायक श्रद्धादि इन्द्रियों के सङ्गमस्थानभूत शमथ, विपश्यना, तीन कुशलमूल तथा चार स्मृति प्रस्थान नामक नौ धर्म — मि प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियभूमिती सद्धादीनं विमुत्तिपरिपाचनिन्द्रियानं समोसरणद्धानता वुत्तं, नेत्ति. अट्ट. 151; समथो च विपस्सना च, कुसलानि च यानि तीणि मूलानि, चतुरो सतिपट्ठाना इन्द्रियभूमि नव पदानि, नेत्ति. 3; इन्द्रियभूमि नवहि पदेहि निदिसितब्बा, नेत्ति. 164.

इन्द्रियभेद पु., इन्द्रियों का प्रभेद, (भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में) आलम्बनों के ग्रहण की क्षमता में भेद — देन तृ. वि., ए. व. — तथा इन्द्रियभेदेन तिक्खिन्द्रिया मज्झिमिन्द्रिया मुदिन्द्रिया, विसुद्धि. महाटी. 2.80.

## इन्द्रियमुद्रता

344

## इन्द्रियवेकल्ल

**इन्द्रियमुद्रता** स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों की मन्दता या शिथिलता — ता प्र. वि., ए. व. — न च इन्द्रियमुद्रता अभवताकरो धम्मोति, प. प. मू. टी. 104.

**इन्द्रियमूलक** त्रि., इन्द्रियों के द्वारा उत्पादित, इन्द्रियों पर आधारित — के सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रियमूलके पुरेजाते एकन्ति ... अब्बाकत्तं, प. प. अट्ट. 455.

**इन्द्रिययमक** नपुं., व्य. सं., इन्द्रियों का विवेचन करने वाले यम. के दसवें खण्डविशेष का शीर्षक, यम. 3.102-486; — कं प्र. वि., ए. व. — तं मूलयमकं ... इन्द्रिययमकन्ति दसविधेन विभक्तं, ध. स. अट्ट. 9-10.

**इन्द्रिययोग** पु., तत्पु. स. [इन्द्रिययोग], (चित के साथ) इन्द्रियों का सम्बन्ध, इन्द्रियों के साथ सम्पर्क, इन्द्रियों के साथ संयोग — गो प्र. वि., ए. व. — एवं इन्द्रिययोगोपि वेदितव्यो विभाविना, अभि. अव. 119.

**इन्द्रियरूप** नपुं., रूप नामक परमार्थ धर्म में अन्तर्भूत पांच प्रकार के प्रसाद रूप (चक्षु, श्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय), स्त्री-इन्द्रिय, पुरुष-इन्द्रिय तथा जीवितिन्द्रिय नामक आठ धर्म, रूप में अन्तर्भूत आठ इन्द्रियां — पं प्र. वि., ए. व. — पसादभावजीवितसङ्घातं अट्टविधमि इन्द्रियरूपं नाम, अभि. ध. स. 43; अट्टविधमि इन्द्रियरूपं पञ्चविज्जाणेषु लिङ्गादीसु सहजरूपपरिपालने च आधिपच्चयोगतो, अभि. ध. स. 181; चक्खादयो पञ्च पसादा, भावद्वयं, जीवितिन्द्रियन्ति अट्टविधमि इन्द्रियरूपं नाम, इतरं अनिन्द्रियं भो. वि. टी. 69.

**इन्द्रियलोक** पु., [इन्द्रियलोक], शा. अ., इन्द्रियों का लोक, ला. अ., क. तीन प्रकार के लोकों में एक, विमुक्ति के परिपाक में सहायक श्रद्धा आदि इन्द्रियों से युक्त प्राणियों का लोक, ख. अरुपावचरभूमि के प्राणियों का लोक — को प्र. वि., ए. व. — लोको तिविधो किलेसलोको भवलोको इन्द्रियलोको, नेति. 11; तत्थ ये विमुत्तिपरिपाचकेहि इन्द्रियोहि समन्नायता सत्ता, सो इन्द्रियलोकोति वेदितव्यं, नेति. अट्ट. 194; सद्धिन्द्रियादिधम्मद्वो आधिपच्चद्वययोगवसेन इन्द्रियभूतो हुत्वा सद्धिन्द्रियादिपत्तनडेन लोको चाति इन्द्रियलोको, नेतिवि. 246; — केन तृ. वि., ए. व. — किं पनेत्थ अरियानमि इन्द्रियलोकेन सङ्गहो होतीति आह परियापन्नधम्मवसेनाति आदि, नेति. टी. 46.

**इन्द्रियवग्ग** पु., व्य. सं. [इन्द्रियवग्ग], अ. नि. के एक वग्ग का शीर्षक, अ. नि. 1(2).163 171.

**इन्द्रियवरोवरियत्तजाण** नपुं., (दूसरों की) इन्द्रियों की तीक्ष्ण और मन्द अवस्था या कोटियों का ज्ञान या बोध,

इन्द्रियों की उत्तम या अवर कोटियों की अवस्था का ज्ञान — णं प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियवरोवरियत्तजाणन्तिपि पाठो, वरानि च अवरियानि च वरोवरियानि, वरोवरियानं भावो वरोवरियत्तन्ति योजेतव्वं, अवरियानीति च न उत्तमानीति अत्थो, पटि. म. अट्ट. 1.48.

**इन्द्रियववत्थान** नपुं., तत्पु. स., छ इन्द्रियों का निर्धारण, इन्द्रियों का विनिश्चय, चक्षु आदि छ इन्द्रियों का व्यवस्थित-भाव या विनिश्चय-भाव — नं प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियववत्थानन्ति चक्खादीनं छन्नं इन्द्रियानं ववत्थितभावो, नेति. अट्ट. 221; — लक्खण त्रि., व. स., वह, जिसका लक्षण इन्द्रियों को व्यवस्थित भाव में लाना हो — णं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियववत्थानलक्खणं छद्वायतनं, त फस्सरस पदङ्गानं, नेति. 25.

**इन्द्रियवस** पु., [इन्द्रियवश], इन्द्रिय का बल, इन्द्रिय का प्रभाव, इन्द्रिय का अधिकार — सं द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रियवसं गतो'ति जत्वा ..., जा. अट्ट. 3.409; किलेसकामवसेन छन्नं इन्द्रियानं वसं गच्छति, जा. अट्ट. 3.409.

**इन्द्रियवसिक** त्रि., इन्द्रियों के वश या प्रभाव में रहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — सो वयप्पतो योव्वनमनुप्पत्तो इन्द्रियवसिको हुत्वा ..., धेर. अट्ट. 1.267.

**इन्द्रियविकार** पु., [इन्द्रियविकार], इन्द्रियों का परिवर्तन, इन्द्रियों का रूपान्तरण, इन्द्रिय-विकृति — रं द्वि. वि., ए. व. — अथस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा सहायका भिक्खू ... पुच्छिंसु, जा. अट्ट. 1.290; सा तस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा, जा. अट्ट. 7.154; कस्सिन्द्रियविकारं ओलोकेतीति, पटि. म. अट्ट. 1.284.

**इन्द्रियविप्पकार** पु., उपरिवत् — रं द्वि. वि., ए. व. — तरस्स इन्द्रियविप्पकारं दिस्वा, जा. अट्ट. 1.459.

**इन्द्रियविमङ्ग** पु., व्य. सं., विमङ्ग के एक खण्ड का शीर्षक, विम. 137-152; — ने सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रियविमङ्गे पन इन्द्रियानं ... वेदितव्यं, पारा. अट्ट. 1.113; विसुद्धि. 1.159; — वण्णना स्त्री., विम. अट्ट. में इन्द्रियविमङ्ग की व्याख्या, विम. अट्ट. 117-121.

**इन्द्रियविसय** पु., तत्पु. स., इन्द्रियों का विषय — यो प्र. वि., ए. व. — सोपि सुपाकटभावेन इन्द्रियविसयो विय होतीति, म. नि. टी. (उप.प.) 3.9.

**इन्द्रियवेकल्ल** नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियवैकल्य], इन्द्रियों की अपूर्णता, इन्द्रियों की अक्षमता, इन्द्रियों का अधूरापन,

## इन्द्रियवेमत्त

345

## इन्द्रियसंवरसील

इन्द्रियों के बल का अपक्षय — ल्लं द्वि. वि. ए. व. — इन्द्रियवेकल्लं न पापुणाति, चरिया. अहु. 281; — ता स्त्री., भाव., इन्द्रियों की विकलाङ्गता या अक्षमता — तं द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रियवेकल्लतं बलपरिक्खाय वलिपलितादिभावञ्च पापुणाति, विसुद्धि. 1.340-341.

इन्द्रियवेमत्त नपुं., भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में इन्द्रियों की विविधता, इन्द्रियों की विविधरूपता — तं प्र. वि., ए. व. — इति इन्द्रियवेमत्तमेत्थ कारणन्ति वेदितव्यं, म. नि. अहु. (म.प.) 2.106; — ता स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व., इन्द्रियों की विविधता — इन्द्रियसंपरिपरितं इन्द्रियवेमत्तता, तेनाह इन्द्रियनानत्तं वदामीति, म. नि. टी. (म.प.) 2.68; — तं द्वि. वि., ए. व. — इन्द्रियवेमत्ततं वदामीति इन्द्रियनानत्ततं वदामि, म. नि. अहु. (म.प.) 2.106.

इन्द्रियसंयुक्त नपुं., व्य. सं., सं. नि. के एक खण्ड का शीर्षक, स. नि. 3(2).269-317; — वण्णना स्त्री., स. नि. के इन्द्रियसंयुक्त की व्याख्या, स. नि. अहु. 3.260-277.

इन्द्रियसंवर पु., [इन्द्रियसंवर], इन्द्रियों का संयमन, इन्द्रियों की रक्षा, इन्द्रियों का दमन या वशीकरण, इन्द्रियों के द्वारों का संरक्षण, तप, संयम — रो प्र. वि., ए. व. — अकुसलधम्मो येव कायञ्च तपतीति तपो ... इध पन इन्द्रियसंवरो अधिपेतो, स. नि. अहु. 1.221; सीलं वतुब्धिं पातिमोक्खो इन्द्रियसंवरो आजीवपारिसुद्धी च सीलं पच्चयनिरिसितं, सद्धम्मो. 342; — रं द्वि. वि., ए. व. — सीधं सीधं इन्द्रियसंवरं परिपूरेतीति — सीधपञ्जा, पटि. म. 370; इन्द्रियसंवरन्ति चक्खादीनं छत्रं इन्द्रियानं रागपटिघण्णवेसं अकत्वा सतिकवाटेन वारणं, थकनं, पटि. म. अहु. 2.241; — रेन तू. वि., ए. व. — सो इमिना अरियेन इन्द्रियसंवरेन समन्नागतो अज्झत्तं अब्बासेकसुखं पटिसंवेदेति, दी. नि. 1.62; — रा प. वि., ए. व. — नाञ्जत्र बोज्जा तपसा, नाञ्जत्रिन्द्रियसंवरा ..., स. नि. 1(1).65; — राय च, वि., ए. व. — भिक्खु इन्द्रियसंवराय पटिपन्नो होतीति, दी. नि. 2.207; दुतियपुच्छायं इन्द्रियसंवरायाति इन्द्रियानं पिधानाय, गुत्तद्वारताय संयुतद्वारतायाति अत्थो, दी. नि. अहु. 2.294; — कथा स्त्री., दी. नि. अहु. के एक भाग का शीर्षक, दी. नि. अहु. 1.150; — परियन्त पु., इन्द्रियों के संयमन की सीमा, इन्द्रिय-द्वारों के संरक्षण की मर्यादा, चार प्रकार के परियन्तों (सीमाओं) में से दूसरा — न्तो प्र. वि., ए. व. — सपरियन्तचारीति यत्तारो परियन्ता सीलसंवरपरियन्तो,

इन्द्रियसंवरपरियन्तो भोजने मत्तञ्जुतापरियन्तो, जागरियानुयोगपरियन्तो, महानि. 364; — न्तो सप्त. वि., ए. व. — आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानो अन्तो इन्द्रियसंवरपरियन्तो चरति, मरियादं न भिन्दति — अयं इन्द्रियसंवरपरियन्तो, महानि. 365; — भेद पु., तत्पु. स., इन्द्रियों के संयम का अन्त, इन्द्रिय-संरक्षण या संयमन का विनाश या छेदन — दो प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियसंवरभेदोति इन्द्रियसंवरविनासो, दी. नि. टी. 3.161; — विपन्न त्रि., इन्द्रियसंवर या इन्द्रियों के रक्षण में असफल, इन्द्रियों के संयमन में असफल — स्स ष. वि., ए. व. — इन्द्रियसंवरं असति इन्द्रियसंवरविपन्नस्स हतूपनिसं होति सीलं, अ. नि. 2(2).73; — विरहित त्रि., तत्पु. स., इन्द्रियों के संयमन से रहित — तेहि पु., तू. वि., ब. व. — यस्मा त्वं इमेहि नेवेहि इन्द्रियसंवरविरहितेहि भोजने अमत्तञ्जुहि सद्धिं विहरसि, दी. नि. अभि. टी. 1.54; — संवुत्त त्रि., तत्पु. स., इन्द्रियों के संयमन अथवा नियन्त्रण द्वारा संरक्षित — स्स पु., ष. वि., ए. व. — इधसद्धो सब्बाकारतो इन्द्रियसंवरसंवुत्तस्स पुग्गलस्स सत्तिस्सयभूतसासनपरिदीपनो, म. नि. टी. (मू.प.) 1.147; अ. नि. टी. 3.117; — समन्नागत त्रि., इन्द्रियों के संवर या संयमन से युक्त, इन्द्रियद्वारों का रक्षण करने वाला — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — संवुत्तिन्द्रियाति इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा, इन्द्रियसंवरसमन्नागताति अत्थो, बु. वं. अहु. 58; — समनुग्गहित त्रि., तत्पु. स., इन्द्रियों के संयमन द्वारा भली-भांति उपकृत — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियसंवरसमनुग्गहिता सद्धा सद्धामूला च सीलादयो धम्मा विरुहन्ति, सु. नि. अहु. 1.115; — सम्पन्न त्रि., इन्द्रियों के संवर या संयमन से युक्त — स्स पु., ष. वि., ए. व. — इन्द्रियसंवरं भिक्खवे, सति इन्द्रियसंवरसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति सीलं, अ. नि. 2(2).73.

इन्द्रियसंवरसिद्धि स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों के संयमन अथवा नियन्त्रण का पूरा हो जाना — द्वि प्र. वि., ए. व. — उपसमाधिद्वानपरिपूरणेन इन्द्रियसंवरसिद्धि, इतिवु. अहु. 13.

इन्द्रियसंवरसील नपुं., कर्म. स., इन्द्रियसंवर-नामक शील-प्रभेद, इन्द्रियों के संयमन अथवा संरक्षण के रूप में शील — लं प्र. वि., ए. व. — यं पन सो वक्खुना रूपं दिस्वा ... मनिन्द्रिये संवरं आपज्जतीति वुत्तं, इदं इन्द्रियसंवरसीलं, विसुद्धि. 1.16.

## इन्द्रियसंवरसुख

346

## इन्द्रियाधिष्ठान

इन्द्रियसंवरसुख नपुं, तत्पु, सं, इन्द्रियों के नियन्त्रण से प्राप्त सुख, इन्द्रियद्वारों के संरक्षण का सुख — खं प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियसंवरसुखं हि दिङ्मादीसु दिङ्मत्तादिवसेन पवत्तताय अविकिण्णं होति, अ. नि. अट्ट. 2.378.

इन्द्रियसंवरसुत्त नपुं, व्य. सं, अ. नि. के छक्कनिपात के धम्मिकवग्ग का इन्द्रियों के संयमन पर प्रकाश डालने वाला एक सुत्त, अ. नि. 2(2).73.

इन्द्रियसंवृत त्रि., [इन्द्रियसंवृत], इन्द्रियों के विषय में संयमित या नियन्त्रित, इन्द्रिय-द्वारों की सुरक्षा करने वाला — तो पु., प्र. वि., ए. व. — निस्सङ्गो रद्धपालो व नन्दो विन्द्रियसंवृतो, सद्धम्मो. 473.

इन्द्रियसच्चनिदेस पु., विसुद्धि. का एक अध्याय, जिसमें इन्द्रियों का विवेचन है, विसुद्धि. 2.118-145.

इन्द्रियसन्निरसय पु., तत्पु, सं. [इन्द्रियसन्निश्रय], इन्द्रियों का आश्रय, इन्द्रियों का सहारा — येन तू. वि., ए. व. — सो च यथाभूतावबोधो विसेसतो इन्द्रियसन्निरसयेनाति इन्द्रियविभङ्गदेसना, विभ. अनुटी. 5.

इन्द्रियसमता स्त्री., तत्पु, सं, इन्द्रियों की समानरूपता, श्रद्धा आदि इन्द्रियों का समभाव — तं हि. वि., ए. व. — इन्द्रियं समाकारेण यत्तेनो इन्द्रियसमतं पटिपादेनो नाम होति, अ. नि. टी. 3.164; विसुद्धि. महाटी. 1.142.

इन्द्रियसमत्त नपुं, तत्पु, सं. [इन्द्रियसमत्त्व], उपरिक्त — ते सप्त. वि., ए. व. — सतिपि इन्द्रियसमत्ते वीरियसमताय च ... समाधिपि न सुद्ध पाकटो, सारत्थ. टी. 1.321; विसुद्धि. महाटी. 1.171; — पटिपादन/ना स्त्री./नपुं, श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि एवं प्रज्ञा, इन इन्द्रियों में समत्व या सन्तुलन बनाना, श्रद्धा आदि इन्द्रियों में समता को लाना — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियसमत्तपटिपादना नाम सद्धादीनं इन्द्रियानं समभावकरणं, विभ. अट्ट. 262; दी. नि. अट्ट. 2.339; म. नि. अट्ट. (मू.प.) 1(1).300; स. नि. अट्ट. 3.192; अपिच सत्त धम्मा धम्मविवयसम्बोद्धाङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति परिपुच्छकता, वत्थुविसदकिरिया, इन्द्रियसमत्तपटिपादना ..., विसुद्धि. 1.128.

इन्द्रियसमुद्धित त्रि., [इन्द्रियसमुत्थित], सौमनस्य, दौर्मनस्य एवं उपेक्षा नामक इन्द्रियों से उत्पन्न, इन्द्रियों से समुद्भूत — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदं रूपं दोमनस्सिन्द्रियसमुद्धितं, पटि. म. 103.

इन्द्रियसमुदय पु., तत्पु, सं, इन्द्रियों का उदय, इन्द्रियों की उत्पत्ति — सुत्तन्तनिदेसे पठमं इन्द्रियसमुदयादीनं

पभेदगणनं पुच्छित्वा पुन पभेदगणना विस्सज्जिता, पटि. म. अट्ट. 2.122.

इन्द्रियसम्पन्न त्रि., [इन्द्रियसम्पन्न], क. चक्षु आदि इन्द्रियों के उदय एवं व्यय की अनुपश्यना करते हुए उनके प्रति निर्वेदभाव या समभाव से परिपूर्ण, छ आयतनों की प्रवृत्ति से युक्त, ख. चक्षु आदि इन्द्रियों से युक्त, इन्द्रियों की अविकलता से युक्त — नो पु., प्र. वि., ए. व. — चक्षुषुन्द्रिये चे, भिक्षु, उदयब्बयानुपस्सी विहरन्तो चक्षुषुन्द्रिये निब्बन्दिता ... एतावता खो, भिक्षु इन्द्रियसम्पन्नो होतीति, स. नि. 2(2).143; इन्द्रियसम्पन्नोति परिपुण्णिन्द्रियो, स. नि. अट्ट. 3.47; स ये इन्द्रियसम्पन्नो, सन्तो सत्तिपदे रतो, धारेति अन्तिमं देहं, जेत्वा मारं सवाहिनिन्ति, इतिवु. 40; सो इन्द्रियसम्पन्नो फुसति, वेदियति, तण्हीयति, उपादियति, पटियति, विसुद्धि. 2.173; इन्द्रियसम्पन्नोति चक्खादीहि इन्द्रियोहि समन्नागतो, विसुद्धि. महाटी. 2.275.

इन्द्रियसम्पन्नसुत्त नपुं, सं. नि. के सत्तायतनवग का एक सुत्त, जिसमें इन्द्रियों की अनुपस्सना का विवेचन है, स. नि. 2(2).143; — तादिवण्णना स्त्री., स. नि. अट्ट. में इन्द्रियसम्पन्नसुत्त की व्याख्या, स. नि. अट्ट. 3.47.

इन्द्रियसहित त्रि., तत्पु, सं. [इन्द्रियसहित], इन्द्रियों से युक्त — ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. — इन्द्रियसहिते सरीरे उप्पज्जमानानि ..., ध. स. मू. टी. 145.

इन्द्रियसुत्त नपुं, व्य. सं, अ. नि. तथा स. नि. के सुत्तों का शीर्षक, अ. नि. 1(2).163; स. नि. 2(2).336.

इन्द्रियहेतुक त्रि., ब. स. [इन्द्रियहेतुक], इन्द्रियों को अपना हेतु बनाने वाला, इन्द्रियों को हेतु बनाकर उत्पन्न — कानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — इत्थिन्द्रियसहिते एव सन्ताने सभावा इतरत्थं च अभावा इन्द्रियहेतुकानि वुत्तानि, ध. स. अनु. टी. 154.

इन्द्रियाधिकभाव पु., तत्पु, सं, इन्द्रियों की अधिकता — वेन तू. वि., ए. व. — पुन इन्द्रियाधिकभावेन भिज्जमाना द्विसुत्तत्तरं सहस्सं होन्ति, थेरगा. अट्ट. 2.459.

इन्द्रियाधिष्ठान नपुं, [इन्द्रियाधिष्ठान], इन्द्रियों का साक्षात्कार, इन्द्रियों की प्रवृत्ति या सक्रियता — नं प्र. वि., ए. व. — विककीळितं इन्द्रियाधिष्ठानं विककीळितं विपरियासानधिष्ठानञ्च, नेत्ति. 102; इन्द्रियाधिष्ठानन्ति इन्द्रियानं पवत्तनं भावना सच्छिकिरिया च, नेत्ति. अट्ट. 325.

## इन्द्रियानुरक्षण

347

इम

इन्द्रियानुरक्षण नपुं. तत्पु. स. [इन्द्रियानुरक्षण]. इन्द्रियों का अनुरक्षण, इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखना — णं प्र. वि., ए. व. — पातिमोक्खसंवरो इन्द्रियानुरक्षणं, सद्धम्मो. 449.

इन्द्रियाभिसमय पु., इन्द्रियभूत अभिसमय, इन्द्रियों द्वारा अर्थ का यथार्थ बोध — यो प्र. वि., ए. व. — आधिपतेय्यहेन इन्द्रियाभिसमयो, पटि. म. 385.

इन्द्रियारक्खा स्त्री., इन्द्रियों की रक्षा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण — क्खा प्र. वि., ए. व. — इन्द्रियारक्खा अत्तहितपटिपत्तियाव मूलन्ति, थेरगा. अट्ट. 2.234.

इन्द्रियूपसम पु., तत्पु. स. [इन्द्रियोपशम], इन्द्रियों की शान्ति, इन्द्रियों का उपशमन — मे सप्त. वि., ए. व. — दुस्समादहं वापि समादहन्ति (कामदाति भगवा) इन्द्रियूपसमे रता, नेत्ति. 125; स. नि. 1(1)57; ... ये रत्तिन्दिवं इन्द्रियूपसमे रता, स. नि. अट्ट. 1.95.

इन्धन नपुं., [इन्धन], लकड़ी, ईंधन, जलावन, समिधा ... नं प्र. वि., ए. व. — समिधा इधुमं वेधो उपादानं तथेन्धनं, अभि. प. 36; निष्पज्जो वा गोचरो आहारो इन्धनं एतरस्साति दुम्मधगोचरो, चरिया. अट्ट. 130; — स्स ष. वि., ए. व. — गतमग्गे इन्धनस्स भस्मभावावहनतो, चरिया. अट्ट. 212; — नानं ष. वि., ब. व. — पंब्बतकूटसदिसानं इन्धनानं वसेन महतियो ... महासिखी, चरिया. अट्ट. 212; — क्खय पु., [इन्धनक्षय], ईंधन की समाप्ति — या प. वि., ए. व. — निब्बन्ति ते जोतिरिविन्धनक्खया, नेत्ति. 157; निब्बन्ति ते जोतिरिविन्धनक्खयाति यथा नाम अनुपादानो जातवेदो निब्बायति, एवमेवं अभिसङ्गारस्स विज्जाणस्स अनवसेसक्खया निब्बायति, नेत्ति. अट्ट. 377; — भाव पु., [इन्धनभाव], आग के जलावन या ईंधन की अवस्था, ईंधन जैसी स्थिति — वं द्वि. वि., ए. व. — सो तद्धणञ्जेव अवीचिजालानं इन्धनभावं अगमासि, पारा. अट्ट. 1.218; — सङ्खय पु., [इन्धनसंखय], ईंधन का पूर्ण विनाश, ईंधन की समाप्ति — या प. वि., ए. व. — उपादानसङ्ख्याति इन्धनक्खया, बु. वं. अट्ट. 189; — नुपादान त्रि., ब. स. [इन्धनोपादानक], ईंधन पर आश्रित, ईंधन पर पूरी तरह से टिका हुआ — नो पु., प्र. वि., ए. व. — इन्धनुपादानो अग्नि विय ... लद्धिवसेन वदति, प. प. मू. टी. 59.

इब्भ त्रि., उत्पत्ति सन्दिग्ध [इभ्य], शा. अ., क. भृत्य वर्ग का, ख. अनेक नौकर रखने वाला धनी व्यक्ति, ला. अ., क. ब्राह्मण तथा क्षत्रिय-कुल से निम्नवर्ण के व्यक्ति के लिए उपाधि के रूप में प्रयुक्त, गृहस्थ, वणिक्, कृषक या खेतिहर के लिए प्रयुक्त, — भो पु., प्र. वि., ए. व. — इब्भो त्वङ्गो तथा धनी, अभि. प. 725; ला. अ., ख. अवैदिक-परम्परा के श्रमणों अथवा ब्राह्मणों के प्रभाव में रहने वाले कृषकों, वैश्यों, शूद्रों आदि के लिए प्रयुक्त, — ब्भा पु., प्र. वि., ब. व. — मुण्डका समणका इब्भा कण्हा बन्धुपादापच्चा, दी. नि. 1.79; इब्भाति गहपतिका, दी. नि. अट्ट. 1.205; यथा इब्भो हत्थिवाहनभूतो परस्स वसेन वत्तति, न अत्तनो, एवं एतेपि ब्राह्मणानं सुस्सुसका सुदा परस्स वसेन वत्तन्ति, न अत्तनो, तस्सा इभसदिसपयोगताय इब्भाति, दी. नि. टी. (लीनत्थ.) 1.263; ला. अ., ग. धनलोलुप तथा विषयभोगों में अनुरक्त व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त — ब्भा प्र. पु., ब. व. — यथापि इब्भा धनधञ्जहेतु, कम्मानि करोन्ति पुथू पथब्बा, जा. अट्ट. 7.58; — भेहि तृ. वि., ब. व. — इब्भेहि ये ते समका भवन्ति, निच्चुस्सुका कामगुणेषु युत्ता, जा. अट्ट. 7.59; — कुल नपु., [इभ्यकुल], गृहस्थ का परिवार — ले सप्त. वि., ए. व. — मगधरट्ठे इब्भकुले निब्बत्तो गोसालो नाम नामेन, थेरगा. अट्ट. 1.82; — वाद पु., [इभ्यवाद], नीच या अधम कह कर गाली देना, नीच या अधम कहना — दं द्वि. वि., ए. व. — इतिह अम्भट्ठो माणवो इदं पठमं सक्केसु इब्भवादं निपातेसि, दी. नि. 1.79; तुल. अशोकप्राकृत इब्भ., जैन. मा. इब्भ.

इम पु., [इभ], हाथी — भो प्र. वि., ए. व. — कुञ्जरो वारणो हत्थी मातङ्गो द्विरदो गजो, नागो द्विपो इभो दन्ती, अभि. प. 360; हत्थी नागो गजो दन्ती कुञ्जरो वारणो करी मातङ्गो द्विरदो सट्ठिहायनो नेकपो इभो, सट्ठ. 2.345; स. प. के अन्तः, मत्तेम तथा सेतिभिन्द. के अन्तः द्रष्ट.

इमपिप्फली स्त्री., [इभकणा, हस्तिकणा, करिपिप्पली, गजपिप्पली], पिपरामूल या पहाड़ी पीपल — ली प्र. वि., ए. व. — कोलवल्लीभपिप्फली, अभि. प. 583.

इम' त्रि., निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक, अत्यन्त निकटता का बोधक, एक सर्वनाम का अविभक्तिक रूप — सद पु., इम शब्द — दो प्र. वि., ए. व. — इमसदो अच्चन्तसमीपवचनो, सट्ठ. 1.267; 'इम' के विभक्ति रूप —

## इम्बर

348

## इरियति / इरिय्यति / इरीयति

अयं पु., प्र. वि., ए. व. — अनुपुंसकस्सायं सिमिह, इमसदस्स सब्बस्सेव अनुपुंसकस्स अयं — आदेसो होति सिमिह विभत्तिमिह, अयं पुरिसो, क. व्या. 172; — अनेन पु., तृ. वि., ए. व. — अनिमि नाहि च, इमसदस्स सब्बस्सेव अन-इमि-आदेसा होन्ति नाहि विभत्तिमिह, अनेन धम्मदानेन सुखिता होतु सा पजा, इमिना बुद्धपूजेन पत्तान अमत्तं पदं, क. व्या. 171; — एसु, इमेसु पु., सप्त. वि., ब. व. — “सब्बरिसमस्से वा”, सब्बस्स इमसदस्स एकारो होति वा सु-न-हि इच्चतेसु, एसु, इमेसु, क. व्या. 170; इमेसु च सत्तसु अपरिहानियेसु धम्मेषु, दी. नि. 2.59; अ. नि. 2(2).169; — दं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदं पीठं ... इदं सङ्गस्स कतिकसण्ठानं, पारा. 251; इदं दुक्खं, महाव. 14; — भानि' नपुं., प्र. वि., ब. व. — इमानीति अभिमुखीकरणं, इतिपु. अ. 158; — भानि' द्वि. वि., ब. व. — इमानि पञ्च ठानानि देतीति, अ. नि. 2(1).37; — मिना नपुं., तृ. वि., ए. व. — इमिना चक्रुना, महानि. 334; इमिना च कारणेन, क. व्या. अ. 126; — मेहि तृ. वि., ब. व. — इमेहि तीहि ठानेहि, अ. नि. 1(1).177; — मेसु सप्त. वि., ब. व. — इमेसु चतूसु अरियसच्चेषु, महाव. 15; — अयं स्त्री., प्र. वि., ए. व. — अयं ... कथा, दी. नि. 1.3; अयं तथागतस्स पच्छिमा वाचा, दी. नि. 2.116; अयमन्तिमा जाति, म. नि. 1.226; — मा/मायो स्त्री., प्र. वि., ब. व. — इमा च मे सज्जा निरुज्जेय्युं, दी. नि. 1.164; उद्धं अधो दस दिसा इमायो, सु. नि. 1.128; — मं स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — इमं गार्थं अभ्रासि, स. नि. 1(1).3; सिञ्च भिक्षु इमं नावं, ध. प. 369; — माहि स्त्री., तृ. वि., ब. व. — इमाहि चतूहि इद्धीहि समन्नागतो, दी. नि. 2.133; — माय स्त्री., सप्त. वि., ए. व. — इमाय खो पन वेलाय, दी. नि. अ. 1.123; — मिस्सा स्त्री., ष. वि., ए. व. — इमिस्सा दिट्ठिया, इमिस्सा खन्तिया, इमिस्सा रुचिया, पटि. म. 168; — मासु स्त्री., सप्त. वि., ब. व. — इमासु वीणासु, वि. व. 1034.

इम्बर पु., क. एक वृक्ष का नाम — सज्जित त्रि., इम्बर नाम वाला — ते पु., सप्त. वि., ए. व. — सो गन्त्वा तङ्गणयेव रुक्खे इम्बरसज्जिते, म. वं. 23.52; ख. गोठक नामक योद्धा का दूसरा नाम — रो प्र. वि., ए. व. — नन्दिमत्तो सूरनिमित्तो महासोणो गोठइम्बरो, म. वं. 23.2. इरन्धती स्त्री., व्य. सं., नागराज वरुण की पुत्री, एक नागकन्या — ती प्र. वि., ए. व. — लब्भा अहं इरन्धती,

जा. अ. 7.158; अहं इरन्धतीति अह्माकं धीता इरन्धती, तदे.

इरिण/इरीण नपुं., [इरिण/इरण], मरुभूमि, उजाड़ भूमि, ऊसर भूमि, नमकीन जमीन, निहाली जमीन — णं प्र. वि., ए. व. — अनिस्सयमहीभागे त्विरीणमूसरे सिया, अभि. प. 886; — णे सप्त. वि., ए. व. — अरज्जे इरीणे विवने, जा. अ. 5.64; इरिणोति निरोजे, जा. अ. 7.336; अरज्जे इरीणे वने, अप. 1.274; अरज्जे इरीणे विवने, जा. अ. 5.64.

इरियति / इरिय्यति / इरीयति ईर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईरयते/ईरते, बौ. सं., ईरयति], 1. गति करता है, चलता है, इधर उधर घूमता है, चक्कर काटता है, मड़राता रहता है — घासेसनं इरियति सीतिभूतो, स. नि. 1(1).167; — यामि उ. पु., ए. व. — उभो पादे उभो पक्खे च भूमिय आकासे च गमनसज्जे करोन्तो पसारोमि इरियामि वायमामि, चरिया. अ. 212; — मानं पु., वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. — पत्तामहं देवमनुस्सलोके, अकिञ्चनं ब्राह्मणमिरियमानं, सु. नि. 1069; — रीयतो पु., वर्त. कृ., ष. वि., ए. व. — भोगे संहरमानस्स, भमरस्सेव इरीयतो, दी. नि. 3.143; 2. विहार करता है, ब्रह्मचर्य जीवन (तपस्वी जीवन) में वास करता है — तथायं पुण्णलो पटिपन्नो तथा च इरियति तज्ज मग्गं समारुहो ..., म. नि. 1.107; पासादिकं खो अयं कुलपुत्तो इरियति, म. नि. 3.287; पासादिकेन इरियापथेन इरियति, म. नि. अ. (उप.प.) 3.216; — य्यसि वर्त., म. पु., ए. व. — कच्चि सुद्धो इरिय्यसीति ... कच्चि त्वं सुद्धो इरिय्यसि विहरसीति, जा. अ. 3.440; — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — यदा च अविजानन्ता, इरियन्त्यमरा विय, धेरगा. 276; — रियानो पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. — सम्मा सो लोके इरियानो, न पिहेतीथ कस्सचि, सु. नि. 953; — मानं पु., वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. — इरियमानं ब्रह्मपथे, वित्तसूपसमे रतं, अ. नि. 2(2).60; — येथ विधि., प्र. पु., ए. व. — सतो हुत्वा भिक्षु परिब्बजे इरियेथ वत्तेथाति, जा. अ. 4.316; 3. पू. का. क्रि. के साथ अन्वित रहने पर, विहार करता है, विद्यमान रहता है, स्थित है — जम्बुदीपमभिभूय इरियति, दी. नि. 3.116; गुणोहि लोकं अभिभूयिरीयति, उदा. अ. 123; भगवा हि कामे अभिभूय इरियति, सु. नि. 1.103; कथंविधो दुक्खमतिच्च इरियति ... तथाविधो दुक्खमतिच्च इरियति, स. नि. 1(1).64.

## इरियन / इरीयना / इरियना

349

## इरियापथ

इरियन / इरीयना / इरियना नपुं. / स्त्री., ईर से व्यु., क्रि. ना., जीवन-स्थिति, जीवित-इन्द्रिय, जीवन का स्पन्दन, आयु, चेष्टा — ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. — जीवितन्ति आयु णिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितेन्द्रियं, महानि. 30; दुहितिकोति एत्थ इहितीति इरियना ... तरिमं इरियना दुक्खा होति, स. नि. अट्ट. 3.103; — नं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि, पारा. अट्ट. 1.132; — तो प. वि., ए. व. — अरियाति आरकत्ता किलेसेहि, अनये न इरियनतो, अये इरियनतो, स. नि. अट्ट. 2.221.

इरिया स्त्री., ईर से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. ईर्या], शा. अ., शारीरिक चेष्टा, शारीरिक क्रिया, ला. अ., शालीन अथवा उत्तम हावभाव, भिक्षु अथवा तापस का उचित एवं धर्मानुमोदित व्यवहार, ऊंची जीवनवृत्ति, उत्तम आचरण — यं द्वि. वि., ए. व. — ये च सङ्घातधम्मसे, ये च सेखा पुथू इध, तेसं मे निपको इरियं, पुटो पबूहि मारिस, सु. नि. 1044; इरियन्ति वुत्तिं आचारं गोचरं विहारं पटिपत्तिं, स. नि. अट्ट. 2.53; इरियं पुटो पबूहीति तेसं मे सेखासेखानं निपको पण्डितो त्वं पुटो पटिपत्तिं बूहीति, सु. नि. अट्ट. 2.277; — य तृ. वि., ए. व. — तायपि खो अहं, सारिपुत्त, इरियाय ताय पटिपदाय ताय दुक्करकारिकाय नाज्झगमं उत्तरि मनुस्सधम्मा अलमरियजाणदस्सनविसेसं, म. नि. 1.115; 'इमायाहं इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेमि तसं वा थावरं वा'ति, इतिवु. 24; सन्ताय इरियायस्मिं पसीदि च महीपति, म. वं. 5.48; — या प्र. वि., ए. व. — ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता — चित्तइरिया चित्तईहा, पारा. अट्ट. 1.132; वेदो पण्डितियज्जेव चिकिच्छामिरिया पि च, सट्. 1.82.

इरियापथ पु., तत्पु. स. [बौ. सं., ईर्यापथ], शा. अ., शारीरिक चेष्टा, चाल ढाल, हावभाव — थो प्र. वि., ए. व. — ... इरियापथोति सत्ते, असप्पाये विवज्जये, विसुद्धि. 1.123; एवं तेसं आकप्पसम्पन्नानं इरियापथो अचिच्छो सण्हो महो दस्सनीयो पासादिको अहोसि, थेरगा. अट्ट. 2.298; — थं द्वि. वि., ए. व. — इरियापथं पब्बजितानुलोमिकं, सेवेथ नं अत्थदसो मुतीमा, सु. नि. 387; इरियापथन्ति गमनादिचतुब्धिं, सु. नि. अट्ट. 2.94; 'यूंनाहं समणं गोतमं अनुबच्चेय्यं, इरियापथमस्स पस्सेय्यन्ति, म. नि. 2.343; तत्थ कतमो गोतमदो? गोतं पटिच्च ... इरियापथं पटिच्च ..., विभ. 400; दस्सनेय्यं सब्बजनं, विहारं इरियापथं,

बु. वं. 23.29; — थेन तृ. वि., ए. व. — अज्जतिथियाति दस्सनेनपि ... आचारेनपि विहारेनपि इरियापथेनपि अज्जे तिथियाति अज्जतिथिया, दी. नि. अट्ट. 3.16; ओक्खित्तचक्खु मितभाणी सुसण्ठितेन इरियापथेन अविकिखत्तेन चित्तेन, मि. प. 102; वस्ससद्धिकत्थेरो विय पासादिकेन इरियापथेन राजगहं पत्वा तत्थ पिण्डाय चरित्वा, अ. नि. अट्ट. 1.116; — थे सप्त. वि., ए. व. — तत्थ इरियापथे पसन्नमनुस्सेहि पण्णसालं कत्वा उपद्वियमानो वस्सं उपगन्त्वा, जा. अट्ट. 4.119; राजा इसियणं दिस्वा इरियापथे पसन्नो अलङ्कृतमहातले निसीदापत्त्वा, जा. अट्ट. 4.402; — थेसु ब. व. — इरियापथेसुपि कस्सचि चङ्गमो सप्पायो होति, कस्सचि सयनद्वाननिसज्जानं अज्जतरो, विसुद्धि. 1.124; ला. अ. 1., चलने, खड़े होने, बैठने एवं लेटने की चार प्रकार की शारीरिक क्रियाएँ, शरीर की चार प्रकार की क्रिया — थो प्र. वि., ए. व. — पत्तङ्गं आभुजित्वा निसीदनं, एवं निसिन्नस्स हि इरियापथो उपसन्तो होति, म. नि. अट्ट. (म.प.) 2.276; यथा इरियतो इरियापथो पासादिको होति, एवं इरियतीति अयमेत्थ अत्थो, म. नि. अट्ट. (उप.प.) 3.216; वत्थु कालो च ओकासो, आवुधं इरियापथो, किरियाविसेसोति इमे, छ जाणत्तिनियामका, पारा. अट्ट. 2.42; — थं द्वि. वि., ए. व. — सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो सीघं गच्छेय्य ... सणिकं गच्छेय्य ... तिह्वेय्य ... निसीदेय्य ... एवञ्चि सो भिक्खवे, पुरिसो ओळारिकं ओळारिकं इरियापथं अभिनिवज्जेत्वा सुखुमं सुखुमं इरियापथं कप्पेय्य, म. नि. 1.171; 'अड्डिसङ्घातघटितो, न्हारुसुत्तनिबन्धनो नेकेसं संगतीभावा, कप्पेति इरियापथं, थेरगा. 570; — थेन तृ. वि., ए. व. — सम्भावनाधिप्पायकतेन इरियापथेन विम्हापनं इरियापथसन्निरिस्सतं कुहनवत्थूति वेदितब्बं, विसुद्धि. 1.25; कार्यं पग्गहेत्वाति निच्चलं कत्वा उज्जुकेन कायेन समेन इरियापथेन गन्तब्बज्जेव निसीदितब्बज्ज, पाचि. अट्ट. 152; — स्स प. वि., ए. व. — या एवरुपा इरियापथस्स ठपना आठपना सण्ठपना भाकुटिका भाकुटियं कुहना कुहायना कुहितत्तं — इदं इरियापथसङ्घातं कुहनवत्थु, महानि. 164; तत्थ कतमा कुहना ? ... इच्छापकतस्स पच्चयप्पटिसेवनसङ्घातेन वा सामन्तजप्पितेन वा इरियापथस्स वा अठपनाति आदि, उदा. अट्ट. 184; इरियापथस्स वाति चतुइरियापथस्स, विसुद्धि. 1.26; — थे' सप्त. वि., ए. व. — लक्खणपरियेसनत्थं आगतं दिस्वा बुद्धा उट्ठायासना



## इरियापथकम्पन

350

## इरियापथज

तिष्ठन्ति वा चङ्क्रमन् वा अधिद्वहन्ति, इति लक्षणदस्सनानुरूपे  
इरियापथे वक्तमानस्त अदस, म. नि. अहु. (म.प.) 2.261-  
262; — थे<sup>२</sup> द्वि. वि., ब. व. — सेय्यथापि, भिक्खवे, ये  
कौंचि पाणा चत्तारो इरियापथे कप्पेन्ति — कालेन गमनं,  
कालेन ठानं, कालेन निसज्जं, कालेन सेय्यं, स. नि.  
3(1).95; चित्तरसादं पटिलभित्वा सुखेन चत्तारो इरियापथे  
कप्पेसि, जा. अहु. 5.254; — थेहि तू. वि., ब. व. —  
“आवुसो, इम तेमासं कतिहि इरियापथेहि वीतिनामेस्सथा”ति  
? “चतूहि, भन्ते ति ...” अहं तीहि इरियापथेहि वीतिनामेस्सामि,  
पिट्ठि न पसारेस्सामि आवुसो”ति, ध. प. अहु. 1.6;  
दुक्खलक्षणं अभिण्हसम्पटिपीळनस्स अमनसिकारा  
इरियापथेहि पटिच्छन्नत्ता न उपद्वाति, विसुद्धि. 2.274; —  
थानं ष. वि., ब. व. — इरियापथानं सन्तत्ता ...  
भिक्षुभावानुरूपेण सन्तेन इरियापथेन सम्पन्ना, पटि. म.  
अहु. 2.127; इरियापथचरियाति इरियापथानं चरिया पवत्तनन्ति  
अत्थो, पटि. म. अहु. 2.127; — थेसु सप्त. वि., ब. व.  
— चतूसु हि इरियापथेसु तयो इरियापथा न सोमन्ति, म.  
नि. अहु. (उप.प.) 3.216; सीतुण्हेसु च उतूसु ठानादीसु  
च इरियापथेसु सप्पायउतुञ्च इरियापथञ्च सेवन्तस्सापि  
पस्सद्धि उप्पज्जति, अ. नि. अहु. 1.387; ला. अ. 2.  
चक्र, रथ का चक्का — थे सप्त. वि., ए. व. — रथङ्गे  
लक्खणे धम्मोरचक्केस्वरियापथे, चक्कं सम्पत्तिय  
चक्करतने मण्डले बत्ते, अभि. प. 781; सम्पत्तियं लक्खणे  
च, रथङ्गे इरियापथे, दाने रतनधम्मूर, चक्कादीसु च  
दिस्सति, पटि. म. अहु. 2.215; “चतुचक्कं नवद्वार”न्ति  
एत्थ इरियापथे, तदे., स. उ. प. के रूप में, अकम्पिति.,  
अद्धानि., अविनीति., एकि., कल्याणि., चङ्क्रमनि., चतु.,  
चतुरि., छिन्नि., ज्ञानानुरूपि., ठानचङ्क्रमि., ठाननिसज्जादि.,  
ठानि., योगानुरूपि., रूपि., सत्त्वि., सम्पत्ति. के अन्त.  
द्रष्ट.

इरियापथकम्पन नपुं., तत्पु. स., चलने, खड़े होने, बैठने  
एवं लेटने की चार प्रकार की शारीरिक क्रियाओं को प्रकट  
करना अथवा उत्पन्न करना — नं प्र. वि., ए. व. —  
अतिसुखुमो अत्तभावो, न तेन इरियापथकम्पनं होति, स.  
नि. अहु. 1.15; — नेन तू. वि., ए. व. — जरसिङ्गालो  
इच्छित्तिच्छित्तद्धाने इरियापथकम्पनेन सीतवातूपवायनेन च  
अन्तरन्तरा ... दस्सेति, स. नि. अहु. 2.204.

इरियापथकोपन नपुं., शरीर की चार प्रकार की क्रियाओं  
का परित्याग या परिवर्तन — नं प्र. वि., ए. व. — अथस्स

अरहतप्पत्ति च इरियापथकोपनञ्च एकप्पहारेनेव होति, स.  
नि. अहु. 1.162.

इरियापथक्खम त्रि., ईर्यापथ में सक्षम, शारीरिक चेष्टाओं  
या क्रियाओं को ठीक से करने में सक्षम, स. उ. प. के रूप  
में, — यो पन महापुरिसजातिको सब्बउतुइरियापथक्खमोय  
होति, न तं सन्ध्यायेतं वुत्तं, म. नि. अहु. (मू.प.)  
1(1).307.

इरियापथगमन नपुं., शारीरिक गमन, काया से गमन — नं  
प्र. वि., ए. व. — कायगमनं नाम इरियापथगमनं, सद्. 2.315;  
— नेन तू. वि., ए. व. — इरियापथगमनेन  
गच्छतीति पि अत्थो भवति, सद्. 2.315.

इरियापथगुत्ति स्त्री., तत्पु. स., ईर्यापथ अथवा शरीर की  
गमनादि क्रियाओं की संरक्षा — या तू. वि., ए. व. —  
इरियापथानं सन्तत्ता इरियापथगुत्तिया सम्पन्ना  
अकम्पितइरियापथा भिक्षुभावानुरूपेण सन्तेन इरियापथेन  
सम्पन्ना, पटि. म. अहु. 2.127.

इरियापथचक्क नपुं., कर्म. स., ईर्यापथ-रूपी चक्र, शरीर  
की उत्तम चेष्टाओं के रूप में चक्र, गमनादि शारीरिक  
क्रियाओं का चक्र — चकानं प. वि., ब. व. — परहिताय  
च इरियापथचक्कानं वत्तो एतस्मिं अत्थीति चक्कवत्ती, दी,  
नि. अहु. 1.202; — चक्के सप्त. वि., ए. व. —  
“चक्कसमारुहहा जानपदा परियायन्ती”ति एत्था  
इरियापथचक्के, अ. नि. अहु. 1.97; — चक्केन तू. वि., ए.  
व. — हत्थाहारिक-अग्गीव हत्थसम्परिवत्ततो,  
इरियापथचक्केन भरणीयं सुदुक्खतो, सद्धम्मो. 604.

इरियापथचरिया स्त्री., तत्पु. स., शरीर की गमनादि चार  
क्रियाओं से युक्त जीवन-व्यवहार, आठ चर्याओं में एक,  
ईर्यापथों का अभ्यास, प्र. वि., ए. व. — अहुचरियायो —  
इरियापथचरिया, आयतनचरिया, सतिचरिया, समाधिचरिया,  
जाणचरिया, मग्गचरिया, पत्तिचरिया, लोकत्थचरियाति, पटि.  
म. 207; इरियापथचरियाति चतूसु इरियापथेसु ...  
इरियापथचरिया च पणिधिसम्पन्नानं, पटि. म. 207;  
इरियापथचरियाति इरियापथानं चरिया, पवत्तनन्ति अत्थो,  
पटि. म. अहु. 2.127; पणिधिसम्पन्नानं चतूसु इरियापथेसु  
इरियापथचरिया, चरिया. अहु. 16.

इरियापथज त्रि., चार प्रकार के ईर्यापथों (गमनादि शारीरिक  
क्रियाओं) से उत्पन्न — जं नपुं., प्र. वि., ए. व. — चेतोसुखं  
कायसुखं, इरियापथजं सुखं, इमे गुणे पटिलभे, तस्स  
निस्सन्दतो अहं, अप. 1.341.

## इरियापथत्त

351

## इरियापथसण्ठपनसङ्घात

इरियापथत्त नपुं., भाव., गमनादि चार शारीरिक क्रियाओं के होने की स्थिति — त्ता प. वि., ए. व. — चतुत्थज्ज्ञानसेय्या पन तथागतसेय्याति बुच्चति, तासु इध सीहसेय्या आगता, अयहि तेजुस्सदइरियापथत्ता उत्तमसेय्या नाम, स. नि. अहु. 3.71.

इरियापथदिब्वब्रह्मअरियविहार पु., शरीर की गमनादि क्रियाओं की दिव्य एवं उत्तम स्थिति — रेसु सत्त. वि., ब. व. — अविससेन इरियापथदिब्वब्रह्मअरियविहारेसु ..., पटि. म. अहु. 2.117; खु. पा. अहु. 90.

इरियापथनियम पु., तत्पु. स., चार शारीरिक क्रियाओं पर नियन्त्रण — मं द्वि. वि., ए. व. — इरियापथनियमं अकत्वा यथासुखं अज्जतरज्जतरइरियापथबाधनविनोदनं करोन्तो, खु. पा. अहु. 202.

इरियापथनिस्सित त्रि., तत्पु. स., ईर्यापथों पर आश्रित, शरीर की चार क्रियाओं पर आधारित — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इरियापथियं पसादनियन्ति परेसं पसादावहं आकप्पसम्पत्तिनिमित्तं इरियापथनिस्सितं सम्पज्जं, थेरगा. अहु. 2.179.

इरियापथपब्ब नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों वाला खण्ड, कायगता स्मृति के कर्मस्थानों के रूप में निर्दिष्ट चौदह पर्वों में द्वितीय — बं प्र. वि., ए. व. — आनापानपब्बं, इरियापथपब्बं, चतुसम्पज्जपब्बं, पटिककूलमनसिकारपब्बं, धातुमनसिकारपब्बं, नवसिवथिकपब्बानीति इमेसं चुदसत्रं पब्बानं वसेन कायगतासतिकम्पहानं निदिद्धं, विसुद्धि. 1.231; यस्मा इरियापथपब्बं चतुसम्पज्जपब्बं धातुमनसिकारपब्बन्ति इमानि तीणि विपरसनावसेन वुत्तानि, तदे.,

इरियापथपरिवत्तन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों (गमनादि क्रियाओं) में परिवर्तन — चतुइरियापथपरिवत्तने सात्थकतादिपच्चवेक्खणवसेन सम्पज्जज्जञ्च सोधेति, खु. पा. अहु. 192.

इरियापथबाधन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों के प्रयोग में उपस्थित बाधा या कष्ट — नं द्वि. वि., ए. व. — एक इरियापथबाधनं अपरेन इरियापथेन विच्छिन्दित्वा, खु. पा. अहु. 90.

इरियापथभञ्जनक त्रि., ईर्यापथों का भञ्जन करने वाला, ईर्यापथों के अग्रास में बाधा खड़ी करने वाला — केन पु., त. वि., ए. व. — आबाधिकोति इरियापथभञ्जनकेन विसभागाबाधेन आबाधिको, अ. नि. अहु. 3.59.

इरियापथमद पु., तत्पु. स., 'मेरी गमनादि क्रियाएं भव्य या प्रासादिक हैं, दूसरों की नहीं, इस प्रकार के विचार से उत्पन्न घमण्ड — दो प्र. वि., ए. व. — इरियापथमदो, विभ. 395; 'अवसेसानं इरियापथो अपासादिको, मय्हं पन पासादिको'ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो इरियापथमदो नाम, विभ. अहु. 442.

इरियापथरूप नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों (गमन आदि शारीरिक गतिविधियों) का स्वरूप — पानि द्वि. वि., ब. व. — अप्पनाजवनं सब्बं महग्गतमनुत्तरं इरियापथरूपानि, जनेतीति समीरितं, ना. रू. प. 321.

इरियापथवाचक त्रि., ईर्यापथ का सूचक, गमन आदि चार शारीरिक क्रियाओं का अर्थ कहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — एतिसहो यत्थ चे इरियापथवाचको, तत्थ आगमनं येव जोतेति न गमनं, सट. 2.319.

इरियापथविकोपन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथ की क्रियाशीलता में अवरोध, ईर्यापथ की सक्रियता का अन्त — नं प्र. वि., ए. व. — न मे इदं भूतपुब्बं, इरियापथविकोपनं, अप. 2.9.

इरियापथविहार पु., [बौ. सं., ईर्यापथविहार], चार उत्तर विहारों (जीवनस्थितियों) में से एक, उत्तम शारीरिक चेष्टाओं से युक्त जीवनवृत्ति — रो प्र. वि., ए. व. — इमिना पदेन मेत्तं आसेवन्तस्स भिक्खुनो इरियापथविहारो कथितो, अ. नि. अहु. 1.55; सद्धाय विहरतीतिआदीसु सद्धादिसमङ्गिस्स इरियापथविहारो दड्ढब्बो, पटि. म. अहु. 2.128; — रेन तृ. वि., ए. व. — दिब्वब्रह्मअरियआनेज्जविहारेहि समुप्पादितसुखविसेसेन इरियापथविहारेन सरीरदुक्खं विच्छिन्दित्वा हरामि अत्तभावं पवत्तेमि, चरिया. अहु. 20; इरियापथविहारेन इतिवुत्तप्पकारज्ञानसमङ्गी हुत्वा अत्तभावस्स ... अभिनिष्कादेति, विसुद्धि. 1.140-141; पारा. अहु. 1.108; इरियापथविहारेन विहरति इरीयति वत्तति, उदा. अहु. 182.

इरियापथसङ्घात त्रि., ईर्यापथ नाम वाली, (ठगविद्या), तीन प्रकार की ठगी में से एक — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अकुहकोति तीणि कुहनवत्थूनि — 'पच्चयपटिसेवनसङ्घातं कुहनवत्थु, इरियापथसङ्घातं कुहनवत्थु, सामन्तजप्पनसङ्घातं कुहनवत्थु', महानि. 163; पापिच्छस्सेव पन सतो सम्भावनाधिप्पायेन कतेन इरियापथेन विम्हापनं इरियापथसङ्घातं कुहनवत्थूति वेदितब्बं, महानि. अहु. 268.

इरियापथसण्ठपनसङ्घात त्रि., ब. स., गमन आदि ईर्यापथों के सम्पक् रूप से (कलात्मक रूप से) प्रयोग या प्रदर्शन

## इरियापथसन्तता

352

## इरियापथिय

नाम से प्रसिद्ध — तं नपुं, प्र. वि., ए. व. —  
इरियापथसङ्घातन्ति इरियापथसण्ठपणसङ्घातं, विसुद्धि. महाटी. 1.50.

**इरियापथसन्तता** स्त्री., ईर्यापथ (गमन आदि शारीरिक क्रियाओं) में विद्यमान शान्तिभाव, शान्त शारीरिक क्रियाकलाप — तं द्वि. वि., ए. व. — इरियापथसन्ततं पन दिस्वा अन्गानेन वदति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.278.

**इरियापथसन्निरसित** त्रि., तत्पु. स., ईर्यापथ (शारीरिक क्रियाओं) के प्रदर्शन पर आधारित — तं नपुं, प्र. वि., ए. व. — पापिच्छस्सेव पन सतो सम्भावनाधिप्यायकतेन इरियापथेन विमहापनं इरियापथसन्निरसितं कुहनवत्थूति वेदितब्बं, विसुद्धि. 1.25.

**इरियापथसमङ्गिता** स्त्री., भाव., किसी भी एक ईर्यापथ से युक्त होने की स्थिति, स. उ. प. के रूप में, ठानसङ्घात ... खड़ा होने के रूप में प्रसिद्ध ईर्यापथ से युक्त रहना — य तृ. वि., ए. व. — ठानसङ्घातइरियापथसमङ्गिताय, गतिनिवर्तिअत्थाय ... सेसइरियापथसमङ्गिताय. बोधको, विसुद्धि. महाटी. 1.401.

**इरियापथसमसीसी** त्रि., गमन आदि जिस किसी भी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) के साथ विपर्ययना आरम्भ करता है, उसी ईर्यापथ में निर्वाण अधवा अर्हत्व का लाभ प्राप्त करने वाला, एक ही ईर्यापथ में रहते हुए अर्हत् अवस्था प्राप्त करने वाला — सी पु., प्र. वि., ए. व. — ठानादीसु इरियापथेसु येनेव इरियापथेन समन्नागतो हुत्वा विपस्सनं आरभति, तेनेव इरियापथेन अरहतं पत्वा परिनिब्बायति, अयं इरियापथसमसीसी नाम, नेत्ति. अहु. 386; निसिन्नोव विपस्सनं पट्टपेत्वा अरहतं पत्वा निसिन्नोव परिनिब्बाति, निपन्नोव विपस्सनं पट्टपेत्वा अरहतं पत्वा निपन्नोव परिनिब्बाति — अयं इरियापथसमसीसी नाम, प. प. अहु. 37; अरहतप्पत्ति च इरियापथकोपनञ्च एकप्पहारेनेव होति, अयं इरियापथसमसीसी नाम, स. नि. अहु. 1.162; समसीसी नाम तिविधो होति इरियापथसमसीसी, रोगसमसीसी, जीवितसमसीसीति, स. नि. अहु. 1.162.

**इरियापथसमायोग** पु., तत्पु. स., किसी भी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) के साथ सम्बन्ध — परिदीपन त्रि., ईर्यापथ के साथ सम्बन्ध का सूचक, स. उ. प. के रूप में, — यथाटितताव यथापणिहितंति, टितन्ति वा कायस्स ठानसङ्घातइरियापथसमायोगपरिदीपनं, पणिहितन्ति तदञ्जइरियापथसमायोगपरिदीपनं, विसुद्धि. महाटी. 1.401;

इध पन ठानगमनासनसयनप्पभेदेसु इरियापथेसु अञ्जतरइरियापथसमायोगपरिदीपनं, पटि. म. अहु. 2.117; पारा. अहु. 1.76; खु. पा. अहु. 90.

**इरियापथसम्पन्न** त्रि., तत्पु. स., भव्य अथवा उत्तम शारीरिक चाल-ढाल से युक्त, उदात्त एवं सुन्दर गमन, आदि ईर्यापथों से परिपूर्ण — त्रि पु., प्र. वि., ए. व. — इरियापथसम्पन्नोति ताय पासादिकअभिकन्तादिताय सम्पन्नइरियापथो, पारा. अहु. 2.186; इरियापथसम्पन्नोति सम्पन्नइरियापथो, विसुद्धि. महाटी. 1.41; — त्रं पु., द्वि. वि., ए. व. — अस्सजिं राजगहे पिण्डाय चरन्तं पासादिकेन अभिकन्तेन पटिकन्तेन ... ओक्खित्तचक्खुं इरियापथसम्पन्नं, महाव. 45; स. उ. प. के रूप में, — एकच्चे इसयो ठानिरियापथचङ्कमनिरियापथसम्पन्ना, एकच्चे इसयो नेसज्जिका निसज्जिरियापथसम्पन्ना, अप. अहु. 1.229.

**इरियापथसम्परिवत्तना / इरियापथसम्परिवत्तनता** स्त्री., भाव., किसी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) का अभ्यास — ता प्र. वि., ए. व. — छ धम्मा थिनमिद्धस्स पहानाय संवत्तन्ति, अतिभोजने निमित्तग्गाहो इरियापथसम्परिवत्तनता आलोकसञ्जामनसिकारो अब्भोकासवासो कत्थाणमित्तता सप्पायकथाति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).294; दी. नि. अहु. 2.333.

**इरियापथसुखसेवनता** स्त्री., भाव., ईर्यापथों का सुखपूर्वक सेवन करने की स्थिति, सुख के साथ ईर्यापथों का अभ्यास — ता प्र. वि., ए. व. — सत्त धम्मा परस्सद्धिस्सम्बोज्झस्स उप्पादाय संवत्तन्ति पणीतभोजनसेवनता उतुसुखसेवनता इरियापथसुखसेवनता ... तदधिमुत्तताति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).307; विसुद्धि. 1.130.

**इरियापथिकचित्त** नपुं, कर्म, स., ईर्यापथों का अभ्यास कर रहे साधक का चित्त — तं प्र. वि., ए. व. — इरियापथिकचित्तजिह इरियापथं सन्धारेतुं असक्कोत्तं रुक्खे वग्गुलि विय, खीले लगितफाणितवारको विय च, ओलियति, ध. स. अहु. 402.

**इरियापथिय** त्रि., ईर्यापथ के अभ्यास से उदित (सम्पन्न), भव्य शारीरिक चेष्टाओं से सङ्गति रखने वाला — यं नपुं, प्र. वि., ए. व. — वारित्तं अथ वारित्तं इरियापथिय पसादनियं थेरगा. 591; इरियापथियं पसादनियन्ति परेसं पसादावहं आकप्पसम्पत्तिनिमित्तं इरियापथानिस्सितं सम्पज्जं, थेरगा. अहु. 2.179.

## इरुब्बेद / इरुवेद

353

इव / व

इरु स्त्री., [ऋक्], ऋग्वेद, तीन वेदों में प्रथम वेद — इरु नारि यजुस्साममिति वेदा तयो सियुं. अभि. प. 108.

इरुब्बेद / इरुवेद पु., [ऋग्वेद], प्रथम वेद का नाम — दं द्वि. वि., ए. व. — ब्राह्मणमाणवकानं इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं अथब्रह्मणवेदं लक्ष्णं इतिहासं पुराणं ... पूजा करणीया, मि. प. 173-174; — पुच्छामि समणं पञ्च इमे पञ्चे वियाकर, इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं निघण्टु पिटु, इतिहासं पञ्चमं वेदं उग्गण्हि सो विसारदो, दी. वं. 5.7; स. प. के अन्त., — तिण्णं वेदानन्ति इरुवेदयजुवेदसामवेदानं, दी. नि. अट्ट. 1.200; सो पन इरुब्बेद—यजुब्बेद—सामवेदवसेन तिविधो आथब्बनवेदं पन पणीतज्झासया न सिक्खन्ति, सट्ठ. 2.390.

इल' कम्पन अर्थ वाली एक धातु — इल-अल-मह-सि-कि इच्चेवमादीहि धातूहि ... इस इच्चेते पच्चया होन्ति, क. व्या. 675; इल कम्पने — इलति, एलं एला, सट्ठ. 2.438. इल' गति अर्थ वाली एक धातु — इल गतियं — इलति, सट्ठ. 2.439.

इलङ्गिय पु., एक तमिल शासक का नाम — इलङ्गियरायरो व तथाञ्चुकोट्टरायरो, चू. वं. 76.98; — यं द्वि. वि., ए. व. — तथा इलङ्गियं येव अञ्चुकोट्टं व रायरं, चू. वं. 76.191; इलङ्गिरायरस्साथ दत्त्वा नाम अभिच्छित्तं, चू. वं. 76.192.

इलति' इल का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलति], कांपता है — इल कम्पने, इलति, एलं एला, सट्ठ. 2.438.

इलति' इल (गत्यर्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलति], जाता है, गतिशील होता है — इल गतियं, इलति, सट्ठ. 2.439.

इलनाग / इळनाग पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक शासक का नाम — गो प्र. वि., ए. व. — इलनागो ति नामेन रज्जं अकारयि पुरे, दी. वं. 21-40, 41; इळनागो ति नामेन, छत्तं उस्सापयी पुरे, म. वं. 35-15, 45, 46.

इल-पच्चय पु., व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त, राज आदि नामों में लगाया जाने वाला तद्धित-प्रत्यय 'इल' — या प्र. वि., ब. व. — घसद्गगहणेन इय-इलपच्चया होन्ति — रज्जो इदं ठानं राजियं, एवं राजिलं, क. व्या. 358.

इलयति / इलेति इल (प्रेरणार्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलयति], प्रेरित करता है — इल प्रेरणे — इलेति इलयति, सट्ठ. 2.564.

इलिस पु., [इलीष / इल्लिश / इल्लीस], एक प्रकार का मत्स्य मछली की एक प्रजाति, हिल्सा मछली — सुरियो,

सिरीसो, इल्लिसो, अलसो, महिसो, क. व्या. 675; सिरीसो, इलिसो, अलसो, महिसो, सट्ठ. 3.873.

इलोप पु., तत्पु. सं., केवल व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त [इलोप], 'इ' स्वर का लोप — पो प्र. वि., ए. व. — सरलोपादिना इलोपो, बालाव. 124.

इल्लिया स्त्री., [ईलिका / ईली], छोटी तलवार, खुखरी — बुध नपुं., द्व. सं., तलवार एवं आयुध (शस्त्र) — घं द्वि. वि., ए. व. — इल्लिया चापधारिणीति इल्लियाबुधञ्च ... धारन्तेहि, जा. अट्ट. 5.251-252; — चापधारी त्रि., तलवार एवं धनुष को धारण करने वाला — रिमि पु., तृ. वि., ब. व. — आरुळ्हा गामणीयेभि, इल्लियाचापधारिभि, जा. अट्ट. 5.249.

इल्लिस पु., व्य. सं., राजगृह के एक श्रेष्ठी (व्यापारी) का नाम — सो प्र. वि., ए. व. — तस्मिं खणं सक्को 'नाहं, महाराज इल्लिसो, सक्कोहमस्मी'ति ..., जा. अट्ट. 1.337; नाहं पस्सामीति अहं 'इमेसु अयं नाम इल्लिसो'ति न पस्सामि, तदे., — सं द्वि. वि., ए. व. — उभित्रं पिळ्ळा जाता, नाहं पस्सामि इल्लिस'न्ति, जा. अट्ट. 1.337; ध. प. अट्ट. 1.211; — रस्स प. वि., ए. व. — इल्लिसस्स मुखं पुञ्जित्वा उदकेन सिञ्चिंसु, जा. अट्ट. 1.337; — सेट्टी पु., इल्लिस नामक सेठ — द्विं द्वि. वि., ए. व. — राजा तं पक्कोसापेत्वा 'इल्लिससेट्टिं जानासी'ति पुच्छि, जा. अट्ट. 1.337; — भाव पु., इल्लिस नामक सेठ होने की दशा — वं द्वि. वि., ए. व. — एकस्सापि इल्लिसभावं न जानामीति अवोच, जा. अट्ट. 1.337; — जातक नपुं., जातक संख्या 78, जिसमें इल्लिस सेट्ट का कथानक है — कं द्वि. वि., ए. व. — इमं इल्लिसजातकं कथेसीति, ध. प. अट्ट. 1.211; — जातकवण्णना स्त्री., जा. अट्ट. के उस कथानक का शीर्षक, जिसमें राजगृह के सेठ इल्लिस की कहानी वर्णित है, जा. अट्ट. 1.330-338.

इल्ली स्त्री., [ईली], एक तरफ धार वाली छोटी तलवार, गुप्ती, प्र. वि., ए. व. — खेटकं फलकं चम्मं, इल्ली तु करपालिका, अभि. प. 392; वण्टानिहारस्साखग्गाकति हत्थकुण्डादि इल्ली, इलीपि, इल गतियं, नदादि, अभि. प. टी. 392; तुल., स्यादीली करपालिका, अमर. 2-8-91.

इव / व 1. औपम्यसूचक निपा., किन्ही दो की समानता सूचित करने के लिए प्रयुक्त [इव], के समान, की तरह, के जैसा, जैसे कि, मानों कि — इवाति ओपम्मवचनं, इ-कार लोपं कंवा व-इच्चेव वुत्तं, सु. नि. अट्ट. 1.12; चक्कवं

## इवण्ण

354

इसि

वहतो पदं ध. प. 1; छायाव अनपायिनी, ध. प. 2; यो ओगहणे थम्मोरिवाभिजायति, सु. नि. 216; महोदधिं हंसोरिव अज्झपत्तो, सु. नि. 1140; समेति बुद्धीव रजं समूहतं, इतिवु. 60; वारि पोक्खरपत्तेव, आरगगेरिव सासपो, ध. प. 401; 2. विशेष. एवं क्रि. वि. के उपरान्त 'एव' के ही समान पुष्टि-सूचक निपा., ही, केवल, कुछ, थोड़ा सा, कदाचित् — पोरणमेतं अतुल, नेतं अज्जतनामिव, ध. प. 227; नेतं अज्जतनामिवाति इदं निन्दनं वा पसंसनं वा अज्जतनं अधुना उप्पन्नं विय न होति, ध. प. अट्ट. 2.190; भन्ते भगवा, भातिरिव भगवतो मुखवण्णो विप्पसन्नता इन्द्रियानं, दी. नि. 2.151; भातिरिवाति, अतिविय भाति, अतिविय विरोचति, दी. नि. अट्ट. 2.207; मिगीव भन्ता सरचापधारिना, विराधिता मन्दमिव उदिकखसि, जा. अट्ट. 5.396; न वा ति कस्मा ? यथा एव, तथा एव, क. व्या. 22; भुसामि वेति इव सदो एवत्थो, मो. व्या. 1.32; 'यथरिव वसुधातलञ्च सब्बं तथरिव गुणवा सुपूजनीयो' न वा ति कस्मा — यथा एव, तथा एव, सद. 3.618; यथा एव — 'यथरिव', एवं 'तथरिव', 'भुसामिव', सद. 3.636; तूलमिव एरितं मालुतेन, पिलवतीव मे कायो'ति, थेरगा. 104; अकामं परिकट्टन्ति, उलूकञ्जेव वायसा, जा. अट्ट. 7.265; तत्थापि भवनं मय्हं, इन्दलट्ठीव अग्गतं, अप. 1.32; आकिण्णं इन्दसदिसेहि, व्यग्घेहेव सुरकिखत्तं, जा. अट्ट. 6.151; उपगच्छसि अन्ध रित्तकं, जनमज्जेरिव लुप्परूपकं, थेरीगा. 396; — सद पु., इव शब्द — तो प. वि., ए. व. — इवसदतो पुब्बस्स आकारस्स लोपो च न होति, सद. 3.614.

इवण्ण पु., व्याकरणों में प्रयुक्त [इवर्ण], 'इ' एवं 'ई' स्वर — ण्णो प्र. वि., ए. व. — पुब्बो इवण्णो सरे परे यकारं पप्पोति न वा, क. व्या. 21; इ ई इवण्णो, सद. 3.606; सद. 3.617-18; अम्भासन्तस्स इवण्णो होति वा अकारो च, सद. 3.826; — ण्णुवण्ण पु., इ, ई, एवं उ, ऊ स्वर — ण्णा प्र. वि., ब. व. — इवण्णुवण्णा इच्चेते झलसञ्जा होन्ति यथासङ्गं, क. व्या. 58; ते इवण्णुवण्णा यदा इत्थिख्या, तदा प-सञ्जा होन्ति, क. व्या. 59; तस्स अन्ते वत्तमाना इवण्णुवण्णा झल सञ्जा होन्ति यथाक्कमं, मो. व्या. 1.9; — ण्णागम पु., तत्पु. स. [इवर्णागम], इवर्ण (इ, ई) का आगम — मो प्र. वि., ए. व. — सब्बेहि धातूहि यम्हि पच्चये, परे इवण्णागमो होति वा, क. व्या. 444; तस्मिं यपच्चये परे सब्बेहि धातूहि इवण्णागमो होति वा, सद. 3.824.

इवा इव निपा. का अनियमित प. वि., ए. व., इव निपा. से — इवा पुब्बाकारस्स लोपो चिस्से च, इवसदतो पुब्बस्स आकारस्स लोपो च न होति, सद. 3.614.

इस/इस्स पु., [ऋश्य], अर्थ अनिशिक्त, संभवतः एक प्रकार का वन्य पशु, श्वेत वर्ण के पैरों वाला कृष्णमृग या भालू अट्ट. के व्याख्यानों में तृणभक्षक, काला सिंह — इस सिस-इच्छायं, सिवं इच्छतीति इसि=तपस्सी, मो. वु. 7.9; कालसीहो काळगाविसदिसो तिणभक्खोयेव, अ. नि. अट्ट. 2.283; अच्छो इक्को च इस्सो तु, काळसीहो इसोप्यथ, अभि. प. 612; तत्थ इस्सोति त्वम्यि एको काळसीहो वनानि चरसि, जा. अट्ट. 4.186.

इसति इस (गत्यर्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इष्यति], जाता है, गति को प्राप्त करता है — इसि गतियं, इसति, सद. 2.453; इस गतियं, इसति चित्तं पविसतीति उसमो, अभो, इससु च, अभि. प. टी. 132; असुरो ति देवो विय न सुरति न ईसति न विरोचति वा ति असुरो, सद. 2.429; — न्ति ब. व. — पकतिदेवा विय न सुरन्ति न इसन्ति न विरोचन्तीति असुरा, उदा. अट्ट. 243.

इसफन्दन/इस्सफन्दन पु., द्व. स., जातक संख्या 475 (फन्दन जातक) के नायक कृष्णमृग तथा फन्दन नामक वृक्ष — ना प्र. वि., ब. व. — मयूरनच्चं नच्चन्ति, यथा ते इस्सफन्दना, जा. अट्ट. 4.188.

इसि पु., [ऋषि], क. सामान्य अर्थ, तपस्वी, साधक, गाथाओं में शुद्ध आचार वाले व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त सामान्य उपाधि, मुनि, बुद्ध, अर्हत्, गद्य-भाग में 'तापस' शब्द इसका स्थानापन्न — सि प्र. वि., ए. व. — तापसो तु इसीरितो, अभि. प. 433; इसेति इसि एसितगुणो, जा. अट्ट. 7.105; एसति इसि, एत्थ पन सीलादयो गुणे एसन्तीति इसयो बुद्धादयो अरिया तापसपब्बज्जाय च पब्बजिता नरा, इसि तापसो जटितो जटी जटाधरोति एते तापसपरियाया, सद. 2.442; इसि गहेत्वा पुप्फानि, आगच्छन्तं महायसं पूजेसि जनसंमज्जे, बोधत्थाय महाइसि, अप. 2.257; इसीति तापसो, थेरगा. अट्ट. 2.304; इसीति एसति गवेसति कुसले धम्मोति इसि, बु. वं. अट्ट. 61; — सिनो प. वि., ए. व. — इसिनोति अधिसीलसिक्खादीनं एसनहेन इसिनो, अधिमुत्तथेरस्स, थेरगा. अट्ट. 2.230; — सिं द्वि. वि., ए. व. — कण्हदीपायनासज्ज, इसि अन्धकवेण्डयो, जा. अट्ट. 5.259; — सि/से सम्भो., ए. व. — तस्मा त्वं इसि मा रोदि, जा. अट्ट. 3.187; सुणोहि वचनं मय्हं इसिपण्डरसक्य,

इसि

355

इसि

थेरगा. 951; इसि—मुनिसद्धानं पनालपनद्धाने इसे मुने ति रूपन्तरमि गहेतब्बं—“पुत्तो उप्पज्जतं इसे, सद्. 1.184; सद्. 3.652; तं ब्याकरोहि भगवा, कद्धं विनय नो इसे, सु. नि. 1031; — सीहि तृ. वि., ब. व. — तस्मा एतं न सेवामि, धम्मं इसीहि सेवितंति, जा. अद्. 3.25; सम्बरो असुरिन्दो तेहि इसीहि सीलवन्तोहि कल्याणधम्मोहि ... उब्बिज्जीति, स. नि. 1(1).263; “अनणस्स हि पब्बज्जा, एतं इसीहि वण्णितंति, जा. अद्. 6.21; एवं इसीहि सपथे कते सक्को भायित्वा ... अन्तरथापेसिं, जा. अद्. 4.278; — सिनं / सीनं ष. वि., ए. व. — ... आयस्मन्तानं इसीनं एकरतमि इमस्मिं अरज्जे वसितं सुवसितमेव, जा. अद्. 4.280; संकिच्चयां अनुप्पत्तो, इसीनं साधुसम्मतो, जा. अद्. 5.255; आचारं इसिनं ब्रूहि, स. नि. 1(1).273; सिद्धत्थं इसिनं सेद्धं, अप. 1.136; ख. विशिष्ट अर्थ, 1. वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि — सि प्र. वि., ए. व. — ... येन त्वं इसि भवेय्यासि, एतं कारणं न विज्जति, दी. नि. अद्. 1.221; — सयो प्र. वि., ब. व. — येपि खो ते ब्राह्मणानं पुब्बका इसयो मन्तानं कत्तारो मन्तानं पवत्तारो ... वासेद्धो कस्सपो भगु, महाव. 322; — सीनं ष. वि., ब. व. — यथा तेसं पुब्बकानं इसीनं तानि महायज्जानि अहेसुं ..., अ. नि. 2(2).205; 2. देवों एवं लोकोत्तर प्राणियों के साथ जुड़े हुए प्राचीन तापस या तपस्वी — सयो प्र. वि., ब. व. — ये चापि इसयो लोके, सज्जतत्ता तपस्सिनो, जा. अद्. 5.6; येसु बुद्धा खीणासवा च पच्चेकबुद्धा च इद्धिमन्ता च इसयो न्हायन्ति, अ. नि. अद्. 3.218; — नो ष. वि., ए. व. — इसिनो देहनिक्खेपकतदानं हि तस्स तं, म. वं. 20.47; परक्कमं तं सफलं, अदसं इसिनो तदा, अप. 2.257; इसिनोति तव महेसिनो सन्तकानि भिसानि, जा. अद्. 4.279; — सयो / सी प्र. वि., ब. व. — सम्बहुता इसयो सीलवन्तो कल्याणधम्मा अरज्जापतने पण्णकुटीसु सम्मन्ति, स. नि. 1(1).261; इसयोति यमनियमादीनं पटिकूलसज्जादीनञ्च एसनद्धेन इसयो, पे. व. अद्. 86; इसयो पुब्बका आसुं, सु. नि. 286; तथेव इसयो हिसं, सज्जते ब्रह्मचारिनो, जा. अद्. 5.232; संयोजनबन्धनच्छिदा, अनीघा खीणपुनब्भवा इसी, थेरगा. 1243; — सीभि / हि तृ. वि., ब. व. — तेहानुविण्णं इसीभि, भग्गं दस्सनपतिया, थेरीगा. 206; 3. पूर्वजन्मों में तापस के रूप में विद्यमान विभिन्न रथविर, प्रत्येकबुद्ध, पूर्वबुद्ध एवं बोधिसत्त्व अथवा बोधिसत्त्वों का श्रद्धालु अनुयायी — सि प्र. वि., ए. व. —

इसीपि अच्युतो तत्थ, जा. अद्. 7.297; अच्युतोति एवंनामको इसि तत्थ वसति, तदे., — सी ब. व. — इमे इसीति इमे पच्चेकबुद्धइसी, म. नि. अद्. (उप.प.) 3.91; तत्थ बोधिसत्तो सब्बज्जुतं पत्तो, जेद्धन्तेवासिको सारिपुत्तथेरो जातो, सेसा इसयो बुद्धपरिसा जाताति ..., अ. नि. अद्. 1.105; 4. सीमित तात्पर्य में, क. गाथाओं में बौद्ध भिक्षु का समानान्तरवर्ती बौद्धेतर ऋषि या तापस, ख. गद्य-खण्डों में प्रत्येकबुद्ध का प्रतिद्वन्दी तापस — सी / सयो प्र. वि., ब. व. — “इसी मूलफले गिद्धा, विष्णुमत्ता च भिक्खवो”ति, जा. अद्. 4.336; द्वितिस महापुरिसस्स महापुरिसलक्खणानि बाहिरकापि इसयो धारेन्ति, दी. नि. 3.107-108; बाहिरका इसयो कामेसु वीतरागा, तेसमि असुचि न मुच्चाति, कथा. 147; 5. वर्तमान बुद्ध के साथ घनिष्ठ रूप में जुड़े हुए तापस, क. असित एवं बुद्ध से उपसम्पदा-प्राप्त अनेक अन्य भिक्षु — सि प्र. वि., ए. व. — असितो इसि अदस दिवाविहारे, सु. नि. 684; दिस्वा जटी कण्हसिरिद्धयो इसि, सु. नि. 694; मोघराजा च मेधावी, पिद्धियो च महाइसि, सु. नि. 1014; ख. बुद्ध के सक्षम शिष्य, अर्हत् शिष्य — सी / सयो ब. व. — संयोजनबन्धनच्छिदा, अनीघा खीणपुनब्भवा इसी, स. नि. 1(1).222; स. प. के रूप में, आकासो इसितापसभूतदिजगणानुसज्जरितो, मि. प. 356; — सत नपुं., एक सौ ऋषियों का समूह — तानं ष. वि., ब. व. — सो पच्चन्नं इसिसतानं ओवादाचरियो हुत्वा ज्ञानकीळं कीळन्तो हिमवन्ते वसति, जा. अद्. 1.414; — नो ष. वि., ए. व. — आरज्जिकस्स इसिनो, चिररत्तं तपस्सिनो, जा. अद्. 4.333; — नं / सीनं ष. वि., ब. व. — ... परामसन्तो, कासावमहक्खि धज इसीनं, जा. अद्. 5.43; “... गन्धो इसीनं असुचि देवराजा”ति, स. नि. 1(1).262; “भासये जोतये धम्मं, पग्गण्हे इसिनं धज सुभासितधजा इसयो, धम्मो हि इसिनं धजो”ति, स. नि. 1(2).254; कदा नु पज्जामयमुग्गतेजं, सत्थं इसीनं सहसादियित्वा, थेरगा. 1098; ग. धर्मदूत एवं आचार्य आदि के रूप में ख्याति-प्राप्त भिक्षु — सि / सी प्र. वि., ए. व. — गत्त्वा कस्मीरगन्धारं, इसि मज्झन्तिको तदा, पारा. अद्. 1.47; रज्जो सत्तरसे वस्से, द्वासत्ततिसमो इसि, म. वं. 5.280; महारद्धं इसी गत्त्वा, सो महाधम्मरक्खितो, म. वं. 12.37; 6. बुद्ध के लिए प्रयुक्त उपाधि — सयो प्र. वि., ब. व. — इसयोति बुद्धादयो अरिया, अ. नि. अद्. 2.298; — सीहि तृ. वि., ब. व. — तत्थ एतन्ति एतं पब्बज्जाकरणं

## इसिगण

356

## इसिदत्त

बुद्धादीहि इसीहि वणिणतं पसत्थं थोमितं, जा. अहु. 6.21; — सिं द्वि. वि., ए. व. — दिस्वा इसिं पविद्धं, अहिनागो ... पावकोव पज्जलि, महाव. 30; एते बुद्धं उपागच्छुं सम्पन्नचरणं इसिं, सु. नि. 1132; 7. सत्पुरुषों या उत्तम जनों के लिए सामान्य रूप से प्रयुक्त, सम्मान-सूचक शब्द — सथो प्र. वि., ब. व. — ये इमस्मिं अस्समे विचरणका इसयो, ते अरुज्जं उज्जय गता, जा. अहु. 4.393; — नं प. वि., ब. व. — अहञ्च इसिनं इध, जा. अहु. 4.393; स. उ. प. के रूप में गन्धारि, देवि, ब्राह्मणि, महा, महे, मातङ्ग, राजी, वेदेहि, के अन्तः, द्रष्ट.

इसिगण पु., [ऋषिगण], ऋषियों का झुण्ड, ऋषियों का समूह — णो प्र. वि., ए. व. — हिमवन्तपदेसे सब्बो इसिगणो सन्निपतित्वा तं ओवादाचरियं कत्वा परिवारेसि, जा. अहु. 1.414; तं सुत्वा इसिगणो मारिस, मा एवं कथेथ, अतिभारियो ते सपथोति कण्णे पिदहि, जा. अहु. 4.274; — णेन तृ. वि., ए. व. — महता इसिगणेन परिवुतो अरुज्जे वसन्तो बुद्धप्पादं सुत्वा ..., थेरगा. अहु. 1.320; — णा प्र. वि., ब. व. — अनेकसहरसा इसिगणा कसिक्कस तापसस्स चन्दनचित्तं कत्वा सरीरं आपेसुं, जा. अहु. 5.130; — णं द्वि. वि., ए. व. — एवं इसिगणं सज्जापेत्वा बोधिसत्तो ब्रह्मलोकमेव गतो, अ. नि. अहु. 1.105; अथ महासत्तो सक्कस्स देवरुज्जो खमिता सयं इसिगणं खमापेत्तो इतरं गाथमाह—सुवासितं इसिनं एकरत्तं ..., जा. अहु. 4.280; — मज्झ पु., [ऋषिगणमध्य], ऋषिसमूह के बीच — ज्जे सप्त. वि., ए. व. — सो इसिगणमज्झे उत्वा 'सचे ते मया भिसानि खादितानि ..., जा. अहु. 4.274.

इसिगिलि पु., व्य. सं., राजगृह के पांच पर्वतों में से एक पर्वत का नाम, (सम्भवतः आधुनिक रत्नगिरि, जिस पर शान्तिस्तूप बना है); प्र. वि., ए. व. — गिण्डकूटो व वेभारो वेपुल्लोसिगिली नगा विज्जो पण्डववकादि, अभि. प. 606; 'अयं पब्बतो इमे इसी गिलती'ति, इसिगिलि इसिगिलि त्वेव समज्जा उदपादि, म. नि. 3.114; स. प. के अन्तः — तज्जि पण्डवगिण्डकूटवेभारइसिगिलि वेपुल्लनामकानं पञ्चन्नं गिरीनं मज्जे वज्जो विय ठितं, सु. नि. अहु. 2.101; तत्थ नगन्तेति इसिगिलिवेपुल्लवेभारपण्डवगिण्डकूटसङ्घातानं पञ्चन्नं पब्बतानं अन्तरे वेमज्जे, वि. व. अहु. 65; — लिं द्वि. वि., ए. व. — पस्सथ नो तुम्हे, भिक्खवे, इमं इसिगिलिं पब्बतं, म. नि. 3.114; — स्मिं सप्त. वि., ए. व. — अरिद्धो नाम, भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं

पब्बते चिरनिवासी अहोसि, म. नि. 3.115; — पब्बत पु., कर्म. स. इसिगिलि-नामक पर्वत — स्स प. वि., ए. व. — तत्थ नगस्स पस्सेति इसिगिलिपब्बतस्स पस्से काळसिलायं, थेरगा. अहु. 2.446; — ते सप्त. वि., ए. व. — ... अकासेन आगत्वा इसिगिलिपब्बते ओतरित्वा ..., उदा. अहु. 237.

इसिगिलिपरित नपुं., तत्पु. स., इसिगिलि-सुत्त के मन्त्र की सुरक्षा या परित्राण, इसिगिलिपर्वत पर निवास करने वाले प्रत्येकबुद्धों के नामों के पाठ द्वारा प्राप्त सुरक्षा, स. प. के रूप में, — ... आटानाटियपरितइसिगिलिपरित्थ—जग्गपरित्तवो ज्झङ्ग परित्तखन्धपरित्तमोरपरित्तमेत्त—परित्तरतनपरित्तानं ..., अ. नि. अहु. 2.203.

इसिगिलिपस्स नपुं., तत्पु. स., राजगृह के इसिगिलि पर्वत का वह पार्श्वभाग या ढालू भाग, जहां बुद्ध तथा अनेक अन्य तापसों का अत्यन्त प्रिय कालसिला-विहार अवस्थित था — स्से सप्त. वि., ए. व. — ... सम्भत्ता भिक्खू इसिगिलिपस्से तिणकुटियो करित्वा वस्सं उपगच्छिंसु, पारा. 47; इसिगिलिपस्से काळसिलायं सेनासनं पञ्चपेहि, चूळव. 178; ... तत्थेव राजगहे विहरामि इसिगिलिपस्से काळसिलायं ..., दी. नि. 2.89; ... सम्बहुला निगण्ठा इसिगिलिपस्से काळसिलायं उब्भट्टका होन्ति आसनपटिक्खित्ता, म. नि. 1.129; — स्सं प्र. वि., ए. व., — अथ खो भगवा सम्बहुलेहि भिक्खूहि सद्धिं येन इसिगिलिपस्सं काळसिला तेनुपसङ्गमि, स. नि. 1(1).143; येन इसिगिलिपस्सं कालसिला तेनुपसङ्गमि, स. नि. 2(1).112.

इसिगिलिसुत्त नपुं., व्य. सं., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, म. नि. 3.113-117.

इसिण्ड पु., इसिण्ड से व्यु., दूसरों को कष्ट देने वाली एक जनजाति — ण्डो प्र. वि., ए. व. — इसिण्डति परेसं मदतीति इसिण्डो, क. व्या. 663 पर क. वु., — ण्डा ब. व. — इसिण्डा मक्कला चैव, आगच्छन्ति मम घरं, अप. 1.394.

इसिस्थ संभवतः इसित के स्थान पर अप., नपुं., भाव. [ऋषित्व], ऋषि-भाव, ऋषि-अवस्था — ताय च. वि., ए. व. — तावता त्वं भविस्ससि इसि वा इसिस्थाय वा पटिपन्नोति नेतं ठानं विज्जति, दी. नि. 1.91.

इसिदत्त पु., व्य. सं., एक स्थविर, जो उपसम्पदा ग्रहण करने से पहले अवन्ति-निवासी कुलपुत्र था, थेरगा. की गाथाओं का रचयिता तथा चित्तगहपति के प्रश्नों का उत्तर

## इसिदत्त

357

## इसिपतन

देने वाला थेर — तो प्र. वि., ए. व. — किमिलो वज्जिपुत्तो च, इसिदत्तो महायसोति, थेरगा. (पु.) 187; — थेर पु., इसिदत्त नामक स्थविर — सो प्र. वि., ए. व. — अथेकदिवसां इसिदत्तत्थेरो तत्थ गन्त्वा विहरन्तो ..., अ. नि. अ. 1.287; — स्स ष. वि., ए. व. — पञ्चकखन्धा परिज्जाताति आयस्मतो इसिदत्तत्थेरस्स गाथा, थेरगा. अ. 1.258.

**इसिदत्त<sup>२</sup>** पु., व्य. सं., एक गहपति का नाम, सदा पुराण/पूरण के नाम के साथ ही प्रयुक्त — तो प्र. वि., ए. व. — पैत्थ्योपि मे, भन्ते, इसिदत्तो अब्रह्मचारी अहोसि सदारसन्तुद्धो, अ. नि. 2(2).63; पञ्चाय इसिदत्तो समन्नागतो अहोसि तथारूपाय पञ्चाय पुराणो समन्नागतो अभविस्स, अ. नि. 3(2).119; — स्स ष. वि., ए. व. — पूरणस्स सीलं इसिदत्तस्स पञ्जाटाने ठितं, इसिदत्तस्स पञ्जा पूरणस्स सीलद्वाने ठिताति, अ. नि. अ. 3.117.

**इसिदत्त<sup>३</sup>** पु., व्य. सं., सोरेय्य का एक शासक, जिसने अनोमदस्सी बुद्ध का धर्मापदेश सुनते ही अर्हत्त्व प्राप्त कर लिया था — स्स ष. वि., ए. व. — तत्थ सोरेय्यनगरे इसिदत्तस्स रज्जो धम्मं देसियमाने ..., बु. वं. अ. 199.

**इसिदत्त<sup>४</sup>** पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के शासक वट्टगामणी के समय के श्रीलङ्का के संघनायक थेरों में एक — त्त संबो., ए. व. — अथ चूलसीवत्थेरो इसिदत्तत्थेरं आह — आवुसो इसिदत्त, अनागते महासोणत्थेरं निस्साय सासनपवेणी वस्सति, विभ. अ. 421.

**इसिदत्तपुराण** पु., द्व. सं., व्य. सं., कोशल के राजा प्रसेनजित के इसिदत्त एवं पुराण नामक दो अश्वपाल, जो बुद्ध के प्रति अत्यधिक श्रद्धावान थे — णा प्र. वि., ब. व. — इमे इसिदत्तपुराणा थपतयो ममभत्ता ममयाना, म. नि. 2.333; इसिदत्तपुराणाति इसिदत्तो च पुराणो च, म. नि. अ. (म.प.) 2.252; तेन खो पन समयेन इसिदत्तपुराणा थपतयो साधुके पटिवसन्ति केनचिदेव करणीयेन, स. नि. 3(2).415; एकमन्तं निसिन्ना खो इसिदत्तपुराणा थपतयो भगवन्तं एतदवोचुं, नेति. 112.

**इसिदास** पु., व्य. सं., इसिभट का भाई तथा कठिन-चीवर नियमों का दृढतापूर्वक पालन करने वाला एक स्थविर — सो प्र. वि., ए. व. — आयस्मा च इसिदासो आयस्मा च इसिभटो, महाव. 391.

**इसिदासिका** स्त्री., एक थेरी का नाम, दूसरा नाम संभवतः इसिदासी — का प्र. वि., ए. व. — पटाचारा धम्मदित्रा सोभिता इसिदासिका, दी. वं. 18.10.

**इसिदासी** स्त्री., एक थेरी का नाम, थेरीगा. की एक कविता की रचयित्री थेरी, थेरीगा. 402-449; थेरीगा. अ. 283.

**इसिदित्र** पु., व्य. सं., 1. थेरगा. के एक कवितासंग्रह का रचयिता एक कवि-थेर, थेरगा. 186-187; थेरगा. अ. 1.340-341; स. प. के अन्त, इच्चैवं सच्चबन्ध — इसिदित्र — महापुण्णादयो पटिच्च अम्हाकं मरम्ममण्डले सासनं पतिट्ठासि, सा. वं. 52; 2. एक व्यापारी का नाम, स. प. के अन्त. — वाणिजगामे च इसिदित्रसेट्ठिआदीनं पि धम्मरसं पायेसि, सा. वं. 52.

**इसिद्धज** पु./नपुं., तत्पु. स. [ऋषिध्वज], ऋषि का (काषाय वस्त्र आदि के रूप में) विशिष्ट पहचान-चिह्न, ऋषि का वेश, चीवर — जं द्वि. वि., ए. व. — सिरस्मिं अज्जलिं कत्वा, वन्दितब्बं इसिद्धजं, अप. 1.45; ... वन्दितब्बं इसिद्धजं अरहतद्धजं बुद्धपच्चैकबुद्धसावकदीपकं चीवरं नमस्सितब्बं ..., अप. अ. 1.303; इसिद्धजं अरियानं धजं परिक्रुत्वा, तदे.

**इसिनाम** त्रि., ब. सं., किसी ऋषि के नाम वाला — मे नपुं., सप्त. वि., ए. व. — इसिनामे मिंगारज्जे, अमतभेरिमाहनि, अप. 1.46; थेरगा. अ. 2.214.

**इसिनामक** त्रि., ब. सं. [ऋषिनामक], ऋषि नाम वाला, ऋषि-नामधारी — का पु., प्र. वि., ब. व. — इसयोति इसिनामका ये केचि इसिपब्बजं पब्बजिता आजीवका निगण्ठा जटिला तापसा, चूलनि. 43.

**इसिनिम** पु., तत्पु. स. [ऋषि-नृषभ], सर्वश्रेष्ठ ऋषि (बुद्ध), ऋषियों में सर्वोत्तम ऋषि, बुद्ध की एक उपाधि — भो प्र. वि., ए. व. — बुद्धो च मे इसिनिमभो विनायको, वि. व. 143; इसीसु निसमो, इसीनं वा निसमो, इसि च सो निसमो चाति वा इसिनिमभो, वि. व. अ. 66; — भं द्वि. वि., ए. व. — सुत्त्वान घोसं जिनवरचक्कवत्तने, गन्त्वान दिस्वा इसिनिमभं पसत्रो, सु. नि. 703; — मा प्र. वि., ब. व. — इसिनिमभाति इसीसु निसम अजानीयसदिस, वि. व. अ. 220.

**इसिपतन** नपुं., तत्पु. स., व्य. सं. [ऋषिपतन/ऋषिपत्तन/ऋषिपट्टन], शा. अ., ऋषियों (बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों) के एकजुट होने (सन्निपात) का स्थान, वह स्थान जहाँ ऋषि लोग आकर उतरते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं तथा पुनः उत्पत्ति हो जाते हैं — ने सप्त. वि., ए. व. — पञ्चमे इसिपतनेति बुद्धपच्चैकबुद्धसङ्घातानं इसीनं धम्मचक्कपवत्तनत्थाय चैव उपोसथकरणत्थाय च



## इसिपतन

358

## इसिप्पवेदित

आगन्त्वा पतने, सन्निपातद्धानेति अत्थो, अ. नि. अट्ट. 2.81-82; — नं प्र. वि., ए. व. — ... इमिना इसीनं पतनुप्पतनवसेन तं 'इसिपतन'न्ति वुच्चति, पटि. म. अट्ट. 2.198; ला. अ., बौद्धों के चार परम पावन स्थलों में दूसरा स्थल, जहां पर सारे बुद्ध धर्मचक्रप्रवर्तन करते हैं, बुद्धों द्वारा धर्मचक्रप्रवर्तन किए जाने का स्थान — ने सप्त. वि., ए. व. — ... धम्मचक्कप्पवत्तनद्धानं इसिपतने मिंगदाये अविजहितमेव होति, बु. वं. अट्ट. 149; चत्तारि हि अचलयेतियद्धानानि नाम महाबोधिपत्तद्धानं इसिपतने धम्मचक्कप्पवत्तनद्धानं ... मज्जपादद्धानन्ति, म. नि. अट्ट. (सू.प.) 1(2).70; कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो बाराणसियं विहरति इसिपतने मिंगदाये, म. नि. 2.250; सो सुदं भगवा वीसति भिक्खुसहस्सपरिवुतो तत्थेव इसिपतने वसति, सु. नि. अट्ट. 1.260; परियोसानं जानातीति पुच्छित्वा 'इमे तात, इसयो इसिपतने विहरन्ति', ध. प. अट्ट. 2.254; ... पच्चेकबुद्धे नन्दमूलकपम्भारतो इसिपतने ओतरित्वा, नगरे पिण्डाय चरित्वा इसिपतनमेव गन्त्वा, थेरीगा. अट्ट. 155; तदा बोधिसत्तो बाराणसियं कुलधरे निब्वित्त्वा वयप्पत्तो इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा इसिगणपरिवुतो इसिपतने वासं कप्पेसि, जा. अट्ट. 2.294; — नं प्र. वि., ए. व. — अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन वाराणसी इसिपतनं मिंगदायो, महाव. 12; ... येन वाराणसी इसिपतनं मिंगदायो येन पच्चवगिया भिक्खू तेनुपसङ्गमि, म. नि. 1.231; — नं<sup>2</sup> द्वि. वि., ए. व. — तेसं धम्मं देसेतुकांमो बाराणसियं इसिपतनं गन्त्वा धम्मचक्कं पवत्तेसीति, स. नि. अट्ट. 1.178; — विहार पु., वाराणसी के इसिपतन में निर्मित एक विहार — रस प. वि., ए. व. — '... पवत्तमानाय एही'ति वत्त्वा इसिपतनविहारस्स पिड्डिपरसेन थोकं गन्त्वा अट्ठासि, पे. व. अट्ट. 47.

**इसिपतन<sup>2</sup>** नपु., वाराणसी के इसिपतन के ही नाम वाला श्रीलङ्का के शासक परक्कमबाहु प्रथम द्वारा पुलत्थि नगर के समीप निर्माण कराया गया श्रीलङ्का का एक विहार, आधुनिक पोलन्नरुव के समीप निर्मित एक विहार — नं द्वि. वि., ए. व. — तथेसिपतनं साखानगरे यतिनन्दनं, चू. वं. 78.79; स. प. के अन्त., — वेळुवनेसिपतनकुसिनारह्येन च, चू. वं. 73-152.

**इसिपब्बज्जा / इसिपब्बजा** स्त्री., तत्पु. स. [ऋषिप्रव्रज्या], ऋषियों की प्रव्रज्या, बौद्धेतर तापसों या ऋषियों के रूप में गृहत्यागी जीवन में प्रवेश, आजीवक, निर्ग्रन्थ, जटिल

आदि श्रमणों के रूप में दीक्षा या प्रव्रजित होना — उज्जं द्वि. वि., ए. व. — इसयोति इसिनामका ये केचि इसिपब्बज्जं पब्बजिता आजीवका निगण्ठा जटिला तापसा, चूळ. नि. 43; प्रायः पू. का. क्रि. के साथ प्रयुक्त — इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा तत्थेव अरज्जे वसिस्सामीति आह, जा. अट्ट. 1.286; इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा उज्जावरियाय वनमूलफलाफलेहि यापेन्तो वासं कप्पेसि, जा. अट्ट. 3.343; ... उग्गाहितसिप्पो इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा ज्ञानाभिज्जा निब्वत्तेत्वा हिमवन्तपदेसे वासं कप्पेसि, जा. अट्ट. 5.184; सत्तसत्तकमहादानं दत्त्वा इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा पञ्च अभिज्जा अट्ठ समापत्तियो निब्वत्तेति, अ. नि. अट्ट. 1.98; पब्बतपादं पविसित्वा इसिपब्बज्जं पब्बजि, ध. प. अट्ट. 1.61; ... पब्बतपादे इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा अट्ठसमापत्तियो पञ्च च अभिज्जायो निब्वत्तेसि, थेरगा. अट्ट. 1.16; यदा कदा भू. क. कृ. आदि के साथ भी प्रयुक्त — अतीते पञ्च जातिसतानि इसिपब्बज्जं पब्बजितोपि, अ. नि. अट्ट. 1.108; — य सप्त. वि., ए. व. — तत्थ येन अतीतभवेपि सासने वा इसिपब्बज्जाय वा पब्बजित्वा पथवीकसिणे ..., विसुद्धि. 1.120; बुद्धादयो अरिया तापसपब्बज्जाय च पब्बजिता नरा, सट्ठ. 2.442.

**इसिपरिक्खार** पु., तत्पु. स. [ऋषिपरिष्कार], ऋषि की सामग्री या उपकरण — रे द्वि. वि., ब. व. — दिस्वा इसिपरिक्खारे पण्णसालवरे तहिं, जिन. 32.

**इसिपलोभिका** स्त्री., [ऋषिप्रलोभिका], ऋषि को पथभ्रष्ट करने वाली नारी, ऋषि को मोहित कर तपोभ्रष्ट करने वाली स्त्री — का प्र. वि., ए. व. — 'निसिपलोभिका गच्छे, एतं सक्क वरं वरे'ति, जा. अट्ट. 5.156; — य ष. वि., ए. व. — पुन इसिपलोभिकाय न गच्छेय्यं, जा. अट्ट. 5.156.

**इसिपूग** नपु., तत्पु. स., ऋषि-गण, ऋषि-समूह — समज्जात त्रि., ऋषि-गणों द्वारा अनुमोदित — ते सप्त. वि., ए. व. — इसिपूगसमज्जातेति इसिगणेन सुट्ठ अज्जाते इसीनं सम्मते, जा. अट्ट. 5.8.

**इसिप्पयात** स्त्री., तत्पु. स. [ऋषिप्रयात], ऋषियों द्वारा अनुसृत, ऋषि द्वारा पकड़ा हुआ — तम्मि पु., सप्त. वि., ए. व. — इसिप्पयातम्मि पथे वज्जन्तं, ओवस्सते तं नु कदा भविस्सति, थेरगा. 1105; इसिप्पयातम्मि पथे वज्जन्तन्ति बुद्धादीहि महेसीहि सम्मदेव ..., थेरगा. अट्ट. 2.395.

**इसिप्पवेदित** त्रि., तत्पु. स. [ऋषिप्रवेदित], ऋषि द्वारा उपदिष्ट, ऋषि द्वारा बतलाया गया — तं पु. द्वि. वि., ए.

## इसिमट्ट

359

## इसिवेस

व. — एते तयो कम्मपथे विसंघये आराधये मग्गमिसिण्यवेदितं  
घ. प. 281.

**इसिमट्ट** पु., व्य. सं., एक स्थविर जो इसिदास नामक दूसरे  
स्थविर का भाई था — ट्टो प्र. वि., ए. व. — तेन खो पन  
समयेन द्वे भातिका थेरा, आयस्मा च इसिदासो आयस्मा च  
इसिमटो, महाव. 391.

**इसिमण्ड** नपुं., तत्पु. स. [ऋषिमाण्ड], ऋषि का उपकरण,  
ऋषि का साजो-सामान, ऋषि की खास चीजें — ण्डं द्वि.  
वि., ए. व. — ... पण्णसालं पविसित्वा इसिमण्डं ओमुञ्चित्वा  
पटिसामेत्वा सङ्गवण्णसाटकं निवासेत्वा ..., जा. अट्ट. 7.373.

**इसिमत्तिक** त्रि., ब. स., केवल स. उ. प. में प्रयुक्त  
[ऋषिभक्तिक], शा. अ., ऋषियों के प्रति भक्ति रखने  
वाला, ला. अ., भिक्षुओं की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक  
या भिक्षुओं का परिचारक — समावको, स्वभाव से ही  
ऋषियों का भक्त पु., प्र. वि., ए. व. — सभावइसिमत्तिको  
सुतमन्तपदधरो अतविकको रोगुप्पत्तिकुसलो ..., मि. प. 233.

**इसिभाव** पु., [ऋषिभाव], ऋषि होने की अवस्था, ऋषित्व  
— वं द्वि. वि., ए. व. — तस्मा पटिञ्ज अगहेत्वाव तं  
इसिभावं पटिक्खिपि, दी. नि. अट्ट. 1.221.

**इसिभासित** त्रि., तत्पु. स. [ऋषिभाषित], ऋषियों द्वारा  
कहा गया, ऋषियों द्वारा उपदिष्ट — तो पु., प्र. वि., ए.  
व. — धम्मो नाम बुद्धभासितो, सावकभासितो, इसिभासितो  
... धम्मूपसज्झितो, पाचि. 26; इसिभासितोति  
बाहिरपरिब्बाजकोहि भासितो सकलो परिब्बाजकवग्गो, पाचि.  
अट्ट. 8.

**इसिभूमङ्गण/ण** नपुं., व्य. सं., श्रीलङ्का में अनुराधपुर का  
वह स्थान, जहाँ महेन्द्रथेर के शरीरावशेषों का आधा भाग  
राजा उत्तिय द्वारा रखा गया था — नं प्र. वि., ए. व. —  
इसिनो देहनिक्खेप ... बुच्चते बहुमानेन, इसिभूमङ्गणं इति,  
म. वं. 20.46; तस्मा तं तस्स इसिनो ... इसिभूमङ्गणं इति  
बुच्चती ति, म. वं. टी. 380(ना.).

**इसिभूमि** स्त्री., उपरिवत् — मि प्र. वि., ए. व. — कतं  
सरीरनिक्खेपं महिन्दस्स तदा यहिं इसिभूमि ति तस्सायं  
समञ्जा पठमं अट्ट. दी. वं. 17.113.

**इसिमिग/इस्समिग** पु., एक प्रकार का मृग, सफेद पैरों  
वाली नीलगाय, गवय, बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता  
है — स्स ष. वि., ए. व. — विपरिवत्तायोति यथा इस्समिगस्स  
सिङ्गं परिवत्तित्वा ठितं, जा. अट्ट. 5.428.

**इसिमुग्ग** 1. पु., [ऋषिमुद्ग], एक पौधा, जिसके फलों की  
दाल बनती है, मूंग की दाल का पौधा — ग्गा प्र. वि., ब.  
व. — आळका इसिमुग्गा च, कदलिमातुलुङ्गियो, अप.  
1.13; अप. 1.381; 2. नपुं., मूंग के पौधे का पुष्प —  
ग्गानि द्वि. वि., ब. व. — इसिमुग्गानि पिसित्वा मधुखुहे  
अनीळके, अप. 1.199.

**इसिमुग्गदायक** पु., व्य. सं., एक स्थविर — को प्र. वि.,  
ए. व. — इत्थं सुदं आयस्मा इसिमुग्गदायको थेरो इमा  
गाथायो अभासित्थाति, अप. 1.199.

**इसिलिङ्ग** नपुं., तत्पु. स. [ऋषिलिङ्ग], ऋषि के वेशभूषा  
आदि विशिष्ट पहचान-चिह्न, ऋषि का चिह्न या वेशभूषा —  
ङ्गं द्वि. वि., ए. व. — इयं इसिलिङ्गं, हारेत्वा राजवेसं गण्ह  
ताताति इमिना किर न अधिप्पायेनेवमाह, जा. अट्ट. 7.373.

**इसिवर** पु., तत्पु. स. [ऋषिवर], शा. अ., ऋषियों में  
श्रेष्ठ या उत्तम, ला. अ., नारद का गुणसूचक विशेषण या  
उपाधि — रो प्र. वि., ए. व. — अथागमा इसिवरो सम्बलोकगू  
सुपुष्कितं दुमवरसाख मादिय, जा. अट्ट. 5.388.

**इसिवातपटिवात** त्रि., तत्पु. स. [ऋषिवातप्रतिवात], विरुद्ध  
दिशा की ओर भी बहने में समर्थ ऋषियों के गुणों या उत्तम  
आचरण की वायु से भरा हुआ — तो पु., प्र. वि., ए. व.  
— ... जेतवनं आगतं सकलविहारो कासावपज्जोतो  
इसिवातपटिवातो होति, अ. नि. अट्ट. 1.55; — तं नपु.,  
प्र. वि., ए. व. — गेहं निच्चकालं भिक्खुसङ्गस्स ओपानभूतं  
कासावपज्जोतं इसिवातपटिवातं, जा. अट्ट. 3.121; —  
तानि प्र. वि., ब. व. — यानि वा पन तानि ... ओपानभूतानि  
कासावपज्जोतानि इसिवातपटिवातानि अत्थकामानि ...,  
विभ. 277; विसुद्धि. 1.18; गेहं पविसन्तानं निक्खमन्तानञ्च  
भिक्खुभिक्खुनीसङ्घातानं इसीनं चीवरवातेन च व  
समिञ्जनपसारणादिजनितसरीरवातेन च पटिवातानि  
पवायितानि विनिद्धतकिब्बिसानि वा, विभ. अट्ट. 324; —  
ता पु., प्र. वि., ब. व. — ततो पभुति च कस्मीरगन्धारा  
... इसिवातपटिवाता, पारा. अट्ट. 1.47.

**इसिवेस** पु., तत्पु. स. [ऋषिवेश], ऋषि का पहनावा, ऋषि  
की वेशभूषा — सं द्वि. वि., ए. व. — किमत्थं दूसायिस्सामि  
इसिवेसं दुरासदं सद्धम्मो. 384; ... जटामण्डलं बन्धित्वा  
इसिवेसं गहेत्वा कत्तरदण्डं आदाय ..., जा. अट्ट. 7.280;  
चरिया. अट्ट. 86; — सेन तृ. वि., ए. व. — काजकमण्डलुं  
आदाय इसिवेसेनागन्त्वा पण्णसालद्वारे अग्गिस्स कारणा  
..., जा. अट्ट. 2.225.

## इसिह्य

360

## इस्सति

इसिह्य त्रि., व. स. [ऋष्याह्वय], ऋषि नाम वाला — ये सप्त. वि., ए. व. — वत्तेस्सति चक्कमिसिह्ये वने, सु. नि. 689; इसिह्यं गमित्वान्, विनेत्वा पञ्चवगिये अप. 2.153. इसिसह पु., तत्पु. स. [ऋषिसह], ऋषिमण्डली, ऋषिसमूह — हे सप्त. वि., ए. व. — इसिसहे अहं पुब्बे, आसिं मातङ्गवारणो, अप. 1.286; अहं पुब्बे बोधिसम्भारपूरणकाले इसिसहे पच्चेकबुद्धइसिसमूहे ..., अप. अहु. 2.191; एकतिसतिमे वग्गे पठमापदाने इसिसहे अहं पुब्बेति ..., अप. अहु. 2.191; — निसेवित त्रि., तत्पु. स. [ऋषिसहनिसेवित], ऋषियों के समूह द्वारा उपयोग किया जा रहा, ऋषि-समूह द्वारा सेवा किया जा रहा — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इदञ्चि तं जेतवनं, इसिसहनिसेवितं, म. नि. 3.314; — तो पु., प्र. वि., ए. व. — ताणो पञ्चावुधो सत्था, इसिसहनिसेवितो, थेरगा. 763; इसिसहेन अग्गासावकादिअरियपुग्गलसमूहेन निसेवितो पायिरुपासितो इसिसहनिसेवितो, थेरगा. अहु. 2.244.

इसिसत्तम पु., तत्पु. स. [ऋषिसत्तम/ऋषिसप्तम], 1. ऋषियों में श्रेष्ठ (बुद्ध), 2. ऋषियों के बीच (बुद्धों के बीच) सातवां (गौतम बुद्ध), विपस्सी, सिखी, वेस्सभू, ककुसन्ध, कोणागमन तथा कस्सप, इन छ बुद्धों सहित सातवें के रूप में गौतम बुद्ध — मो प्र. वि., ए. व. — नागनामोसि भगवा, इसीन इसिसत्तमो, स. नि. 1(1).223; इसीनं इसिसत्तमोति विपस्सितो पट्ठाय इसीनं सत्तमको इसि, स. नि. अहु. 1.245; इसीनं इसिसत्तमोति सावकपच्चेकबुद्धइसीनं उत्तमो इसि, विपस्सीसम्मासम्बुद्धतो पट्ठाय इसीनं वा सत्तमको इसि, थेरगा. अहु. 2.444-445; — म सम्बो., ए. व. — एस सुत्वा पसीदामि, वचो ते इसिसत्तम, सु. नि. 358; तत्थ पठमगाथाय इसिसत्तमाति भगवा इसि च सत्तमो ... पातुभूतोतिपि इसिसत्तमो, सु. नि. अहु. 2.76; ... छ इसयो अत्तना सह सत्त करोन्तो पातुभूतोतिपि इसिसत्तमो, तं आलपन्तो आह, सु. नि. अहु. 2.76; — मं द्वि. वि., ए. व. — तदाहं सन्धवि वीरं, गाथाहि, इसिसत्तमं, अप. 2.149.

इसिसामञ्ज नपुं., तत्पु. स. [ऋषिश्रामण्य], ऋषि का श्रमणभाव, भिक्षु का श्रमणभाव, स. प. के अन्तः, — इसिसामञ्जमण्डुलिङ्गधारणतोपि दक्खिणं विसोधेति, मि. प. 240.

इसिसिह्ण पु., [ऋष्यशृङ्ग/ऋष्यशृङ्ग, बौ. सं., ऋषिशृङ्ग], एक ऋषि, मृग के दो शृङ्गों जैसे मस्तक पर उठे हुए दो चूलों (केशों) के कारण इसिसिह्ण नाम को प्राप्त एक ऋषि,

बोधिसत्त तथा एक मृगी के सम्पर्क के फलस्वरूप उत्पन्न एक ऋषि — ङ्गं द्वि. वि., ए. व. — इसिष्णलोभने गच्छ इसिसिह्णं अलम्बुसे, जा. अहु. 5.147; इसिसिह्णं तस्स किर मत्थके मिगसिह्णाकारेन द्वे वृक्षा उड्ढहिंसु तस्मा एव वुच्चाति, जा. अहु. 5.147; — ङ्गो प्र. वि., ए. व. — महासत्तो तं पुत्तसिनेहेन पटिजग्गि, 'इसिसिह्णो' तिरस नाम अकासि, जा. अहु. 5.146; द्रष्ट., अम्बुसाजातकवण्णना, जा. अहु. 5.145-156; तेन परसावसम्मवेन संकिच्चो च कुमारो इसिसिह्णो च तापसो, मि. प. 129; — रस प. वि., ए. व. — कुमारस्स इसिसिह्णस्स च तापसस्स थेरस्स च ..., मि. प. 130.

इसीका/ईसिका/इसिका स्त्री., [इषीका, इशीका], नरकट, नरकुल, सरकण्डा, सीक, नड — का प्र. वि., ए. व. — 'सेय्यथापि, महाराज, पुरिसो मुञ्जम्हा ईसिकं पवाहेय्य ... मुञ्जम्हा त्वेव ईसिका पवाळ्हा'ति, दी. नि. 1.67; म. नि. 2.219; मुञ्जम्हा ईसकन्तिआदि उपमातयमि हि सदिसभावदस्सनत्थमेव वुत्तं, ... अन्तो ईसिका होति, दी. नि. अहु. 1.179; — कं द्वि. वि., ए. व. — सो ततो ईसिकं लुञ्चित्वा 'परस्सि सीवति, अयं इध पुन घटेतुं न सक्का, जा. अहु. 6.81; — द्वायिद्धित त्रि., मूज के अन्दर सरकण्डे के समान स्थित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — केचि पन ईसिकद्वायिद्धितोति पाळिं वत्ता मुञ्जे ईसिका विय ठितोति वदन्ति, दी. नि. अहु. 1.91; 'सो एवमाह — 'स्ससतो अत्ता च लोको च वज्झो कूट्हो एसिकद्वायिद्धितो, दी. नि. 1.12.

इसु पु., [इषु], वाण — इसु, उसु, सद्. 5.1254.

इस्स ईर्ष्या अर्थ वाली एक धातु — इस्स इस्सायं, इस्सति, 'देवा न इरसन्ति पुरिसपरक्कमस्स, इस्सा इस्सायना', सद्. 2.441; ... कुध-दुह-इस्स इच्चेतेस धातूनं पयोगे, ... तं कारकं सम्पदानसञ्जं होति, क. व्या. 279.

इस्स पु., [ऋष्य/ऋष्य], एक प्रकार का वन्य पशु, संभवतः भालू अथवा कृष्णमृग ? — स्सो प्र. वि., ए. व. — अच्छो इक्को च इससो तु, अभि. प. 612; 'इस्साति वुत्ते 'एवंनामिका धम्मजाती'ति विज्जायति, 'इस्सो'ति वुत्ते पन 'अच्छमिगो'ति विज्जायति, सद्. 1.129; — रसं द्वि. वि., ए. व. — ... इस्साति उपदुस्साति इस्सं बन्धति, म. नि. 3.252.

इस्सति 'इस्स (ईर्ष्या करना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईर्ष्यति], ईर्ष्या करता है, डाह करता है — इस्स इस्सायं, इस्साति, सद्. 2.441; वत्तमानवसेन ताव इस्सति इस्सन्ति,

## इस्सति

361

## इस्सर

इस्ससि इस्सथाति सब्बं योजेतब्बं, सद्. 2.320; परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सति उपदुस्सति इस्सं बन्धति, म. नि. 3.252; अ. नि. 1(2).233; एवं मक्खी पळासी तस्स लाभसक्कारादीसु किं इमस्स इमिनाति इस्सति पदुस्सति, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).114; — न्ति ब. व. — 'देवा न इस्सन्ति पुरिसपरक्कमस्स', सद्. 3.695; सद्. 2.320.

इस्सति<sup>2</sup> इ (गत्यर्थक) के भवि, प्र. पु., ए. व. [एष्यति], जाएगा — इस्सति इस्सन्ति, इस्ससि ..., सद्. 2.319.

इस्सते इ (इच्छार्थक) के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इष्यते], चाहा जाता है, इच्छा की जाती है — इस्सते इस्सन्ते, सद्. 2.319; सो इच्छीयति, एसीयति, इस्सते, इस्सति, यकारस्स पुष्करुपत्तं, प. रू. सि. 476.

इस्सत्त / इस्सत्थ<sup>3</sup> पु. / नपुं., [इष्यत्त्वं], वाणशिल्प, वाण-विद्या, शस्त्र-व्यवसाय — त्तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इस्सत्तन्ति उसुसिप्पं, स. नि. अद्. 1.146; इस्सत्तं बलवीरियञ्च, यस्मिं विज्जेथ माणवे, स. नि. 1(1).118; उसूनं असनकम्मं इस्सत्तं, म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).38; — त्थं द्वि. वि., ए. व. — यो हि कोचि मनुस्सेसु इस्सत्थं उपजीवति, सु. नि. 622; इस्सत्थन्ति आवुधजीविकं, उसुञ्च सति चाति वुत्तं होति, म. नि. अद्. (म.प.) 2.306; सु. नि. अद्. 2.169; — त्थो पु., प्र. वि., ए. व. — इस्सत्थो वुच्चति आवुधं गहेत्वा उपद्धानकम्मं, म. नि. अद्. (मू.प.) 1(1).369; — त्थेन तृ. वि., ए. व. — यदि कसिया यदि वणिज्जाय यदि गोरक्खेन यदि इस्सत्थेन यदि राजयोरिसेन यदि सिप्पञ्जतरेन, म. नि. 1.120; — त्थे सप्त. वि., ए. व. — इस्सत्थे वस्मि कुसलो, दढहधम्माति विस्सुतो, जा. अद्. 6.91.

इस्सतसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).117-118.

इस्सफन्दना पु., द्व. स., प्र. वि., ब. व., शा. अ., 1. कृष्णमृग एवं फन्दन वृक्ष, 2. ईर्ष्या या द्वेष से स्पन्दित या प्रकम्पित होना, ला. अ., सांप-नेवले के समान स्वाभाविक शत्रुता, पारस्परिक द्वेषभाव, पराधिद्रान्धेषणता — सम्मोदथ मा विवदथ, मा होथ इस्सफन्दना, जा. अद्. 4.188; मयूरनच्चं नच्चन्ति, यथा ते इस्सफन्दना, तदे.; यथा ते इस्सफन्दना अज्जमज्जस्स रत्थं पकासेन्ता नच्चिंसु नाम, तदे.; — सदिस त्रि., 1. कृष्णमृग एवं फन्दन वृक्ष के समान एक दूसरे की कमी निकालने वाला, 2. सांप-नेवले

के समान स्वाभाविक बैरी — सा पु., प्र. वि., ब. व. — यावन्तेत्थाति यावन्तो एत्थ इस्सफन्दनसदिता मा अहुवत्थ, जा. अद्. 4.188.

इस्समान / इस्सामान नपुं., ईर्ष्या एवं अभिमान — नेन तृ. वि., ए. व. — न तावाहं पणिपतिं, इस्सामानेन वञ्चितो, थेरगा. अद्. 2.72; थेरगा. 375; इमस्स मयि सावकत्तं उपगतं मम लाभसक्कारो परिहायिस्सति, इमस्स एवं ... परसम्पत्तिअसहनलक्खणाय इस्साय चेव 'अहं गणपामोक्खो बहुजनसम्मतो'ति एवं अबुत्ततिलक्खणेन मानेन च वञ्चितो, थेरगा. अद्. 2.72.

इस्समिग पु., [ऋष्यमृग], एक वन्य पशु, सफेद पैरों वाला कृष्णमृग — गा प्र. वि., ब. व. — इस्समिगाति काळसीहा, जा. अद्. 5.413; — स्स ष. वि., ए. व. — ... विपरिवत्तायोति यथा इस्समिगस्स सिङ्गं परिवत्तित्वा ठितं, जा. अद्. 5.428; स. प. के अन्त., — एवमक्खायति ... इस्समिगसाखमिगसरभमिगएणी मिगवातमिगपसदमिगपुरि-सालुकिम्पुरिसयक्खरक्ख सनिसेविते ..., जा. अद्. 5.411.

इस्सयति इस्सा के ना. धा. से व्यु., वर्त., प्र. पु., ए. व., ईर्ष्या करता है, डाह जैसा करता है — न्ति ब. व. — तिस्थिया इस्सयन्ति समणान्, सद्. 3.695.

इस्सयितत्ता नपुं., भाव., ईर्ष्यालुता, डाहपन — त्तं प्र. वि., ए. व. — यं एवरुपं निद्धुरियं निद्धुरियकम्मं इस्सा इस्सायना इस्सियतत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं, महानि. 330.

इस्सर पु., [ईश्वर], क. स्वामी, प्रभु, ज्येष्ठ, उच्च पदासीन अधिकारी, शासक, राजा, समर्थ, शक्तिशाली — रो प्र. वि., ए. व. — वक्कवती अहुं राजा, जम्मुमण्डस्स इस्सरो, अ. नि. 2(2).228; इस्सरो पण्ये दण्डं, ध. प. अद्. 2.103; इस्सरो धनधज्जस्स सुपहूतस्स मारिस, पे. व. 510; चातुरन्तो विजितावी, जम्मुमण्डस्स इस्सरो, सु. नि. 557; इद्धिमा यसवा होति, जम्मुमण्डस्स इस्सरो, अ. नि. 2(2).228; — रा ब. व. — कते इस्सरा होन्ति, म. नि. अद्. (म.प.) 2.133; तंनिबन्धा अकत्तं सेनासन्ं करोन्ति, जिण्णं पटिसिद्धरोन्ति, कते इस्सरा होन्ति, म. नि. अद्. (म.प.) 2.133; — रं द्वि. वि., ए. व. — वतुन्नमपि दीपानं, इस्सरं योध कारये, वि. व. 194; — र सन्धो., ए. व. — वरं चे मे अदो सक्क, सब्बभूतानमिस्सर, जा. अद्. 7.351; — रानं प. वि., ब. व. — अयज्झि अम्हाकं वचनं अकत्वा कीळाहंसे नो कत्वा इस्सरानं देन्तो बहुं धनं लभेय्य, जा. अद्. 5.339; ख. महाब्रह्मा, सृष्टिकर्ता देव ब्रह्मा, लोकेश्वर

## इस्सरकत

362

## इस्सरनिम्मानवादी

ब्रह्मा — रो प्र. वि., ए. व. — ... महाब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो अञ्जदत्थुदसो वसवती इस्सरो कत्ता ..., दी. नि. 1.16; ब्रह्मा महाब्रह्मा अभिभू ... इस्सरो ... पिता भूतभयान्, दी. नि. 3.21; — रेन तू. वि., ए. व. — निगण्ठा पापकेन इस्सरेन निम्मिता यं एतरहि एवरूपा दुक्खा तिब्बा कटुका वेदना वेदियन्ति, म. नि. 3.8; ग. त्रि., अधिकृत, अनुमोदित — रा पु., प्र. वि., ब. व. — भिक्षू — 'गोमेतुं इमे इस्सरा, नयिमे दातु'न्ति, कुक्कुच्चायन्ता न पटिग्गण्हन्ति, पारा. 77; — रो पु., प्र. वि., ए. व. — निज्जापेतुं महाराज, राजापि तत्थ निस्सरो, जा. अ. 7.276; घ. त्रि., सक्षम, समर्थ, सशक्त, समृद्ध, धनाढ्य — रानि नपुं., प्र. वि., ब. व. — एवं महाकुलानि दुग्गतानि भविस्सन्ति, लामककुलानि इस्सरानि, जा. अ. 1.323; — रो पु., प्र. वि., ए. व. — अङ्गोति इस्सरो, म. नि. अ. 7.293; स. उ. प. के रूप में, अणि, अति.—भेसज्ज, अधिकि.—वचन, अनि., अविनि., असुरि., गरुडि., चित्ति., तम्बपणिकुलि., धतरुद्धमहि., धम्मि., नारि., पठवि., पदेसि., बोज्झङ्गरतनि., मण्डलि., महि., मेण्डि., यति., लङ्कि., सब्बदेसि., सब्बलोकि., समाणि., सालि. के अन्त. द्रष्ट.

इस्सरकत त्रि., तत्पु. स. [ईश्वरकृत], ईश्वर द्वारा रचित, ईश्वर द्वारा निर्मित — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इस्सरेन कतं इस्सरकतं, क. व्या. 329; ... विज्जुप्पसत्थो, इस्सरकतं, सयंकतं ..., प. रू. सि. 351; इस्सरकतं, सत्त्वविद्धो, गुब्बेन संसद्दो ओदनो गुब्बोदनो, स. 3.755; — वाद पु., संसार को ईश्वरनिर्मित प्रतिपादित करने वाला सिद्धान्त — ... — वादी त्रि., संसार को ईश्वरनिर्मित प्रतिपादित करने वाला — दी पु., प्र. वि., ए. व. — तेसु एको अहेतुकवादी, एको इस्सरकतवादी ..., जा. अ. 5.217; — दिं पु., द्वि. वि., ए. व. — इस्सरकरणेनैव इस्सरकतवादं भिन्दित्वा पुब्बेकतवादिं ..., जा. अ. 5.226; महासत्तोपि तरस्स वादं भिन्दित्वा इस्सरकतवादिं आमन्तेत्वा त्वं, जा. अ. 5.226.

इस्सरकरण नपुं., [ईश्वरकरण], ईश्वर की क्रिया, दैवी-क्रिया — णेन तू. वि., ए. व. — ... अम्बं पातेन्तो विद्य इस्सरकरणेनैव इस्सरकतवादं भिन्दित्वा पुब्बेकतवादिं आमन्तेत्वा त्वं, जा. अ. 5.226.

इस्सरकारणी त्रि., ईश्वर को संसार का कारण प्रतिपादित करने वाला, ईश्वरकारणवादी — णिनो पु., प्र. वि., ब.

व. — इस्सरो लोकं पवत्तेति सज्जेति निवत्तेति सहरतीति इस्सरकारणिनो वदन्ति, विसुद्धि. महाटी. 2.204.

इस्सरकाल पु., तत्पु. स., धन-सम्पत्ति आदि की प्रचुरता का समय, समृद्धि एवं सौभाग्य का काल — ले सप्त. वि., ए. व. — 'तथा गहपति परिभिन्दिस्सामी'ति तं वतुकामापि इस्सरकाले किञ्चि वतुं नासक्खि, ध. प. अ. 2.7; अम्हाकं सेद्धि अतनो इस्सरकाले तुम्हे न किञ्चि आह, जा. अ. 1.225.

इस्सरकुत नपुं., तत्पु. स. [ईश्वरकृत], ईश्वरकृत रचना, ईश्वर-कर्तृत्व, सृष्टिकर्ता ईश्वर का सृजन — तं द्वि. वि., ए. व. — एके समणब्राह्मणा इस्सरकुतं ब्रह्मकुतं आचरियकं अग्गज्जं पज्जपेन्ति, दी. नि. 3.20.

इस्सरकुत्तिक त्रि., संसार को ईश्वर-कृत या ईश्वर द्वारा रचित मानने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — अहेतुवादी पुरिसो, यो च इस्सरकुत्तिको, जा. अ. 5.229.

इस्सरजन पु., कर्म. स. [ईश्वरजन], समर्थ जन, सक्षम व्यक्ति, अधिकार एवं धन से सम्पन्न व्यक्ति, महाधनी एवं शक्तिसम्पन्न व्यक्ति — नानं ष. वि., ब. व. — सहेति तथेव इस्सरजनानं गेहं पविद्धो तेसं पयुते गीतवादितसदे सोतुं, उदा. अ. 163; किं उप्पटिपाटिया इस्सरजनानं घरानि अगमंसु, जा. अ. 1.97; — नं द्वि. वि., ए. व. — ... तत्थ जातकोहि पुप्फफलेहि नगरे इस्सरजनं सङ्गहिहत्वा पुन 'किं कतोमी'ति पुट्ठि, जा. अ. 4.120.

इस्सरजातिक त्रि., [ईश्वरजातिक], सक्षम एवं समर्थ, धनाढ्यों के वर्ग वाला, अधिकारसम्पन्न एवं धनी वर्ग का — को पु., प्र. वि., ए. व. — सचे पन कोचि इस्सरजातिको धनं अदत्त्वाव 'भिक्षून् भागं मा गण्हथा'ति वारेति, पारा. अ. 1.275; — का ब. व. — तस्मिञ्च पदेसे नदीकीळं कीळन्ता इस्सरजातिका तिखिणभेसज्जपरिभावितं खीरं पियन्ति, जा. अ. 1.438.

इस्सरनिम्मान/ण नपुं., तत्पु. स. [ईश्वरनिर्माण], सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा की गई सृष्टि या रचना — नादि त्रि., ईश्वर-रचित रचना आदि — दिं द्वि. वि., ए. व. — केचि पन इस्सरनिम्मानादिं निस्साय केन नु खो कारणेन अहोसिन्ति हेतुतो कङ्कतीति वदन्ति, म. नि. अ. 7.5. (मू.प.) 1(1).75.

इस्सरनिम्मानवादी त्रि., "संसार ईश्वर द्वारा सृजित है" इस सिद्धान्त का प्रतिपादक, ईश्वर कारणवादी — दी पु., प्र. वि., ए. व. — अम्हाकं आचरियपाचरियो इस्सरनिम्मानवादी, अ. नि. अ. 2.153.

## इस्सरनिम्मानविहार

363

## इस्सराधिपच्च

**इस्सरनिम्मानविहार** पु., व्य. सं., एक विहार जिसका अधिक प्रचलित नाम इस्सरसमणविहार था — रे सप्त. वि., ए. व. — एकं धूपारामे, एकं इस्सरनिम्मानविहारे, एकं पठमचेतियङ्गाने, पारा. अष्ट. 1.69.

**इस्सरनिम्मानहेतु** त्रि., ब. स., ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया गया, ईश्वर की रचना से समुद्भूत, ईश्वर के कारण से — तु नपुं. द्वि. वि., ए. व. — सत्ता इस्सरनिम्मानहेतु सुखदुक्खं पटिसंवेदेन्ति, म. नि. 3.8; ... तेनहायस्मन्तो पाणातिपातिनो भविस्सन्ति इस्सरनिम्मानहेतु, अ. नि. 1(1).203; इस्सरनिम्मानहेतूति दुतियं, मो. वि. 230.

**इस्सरपुरिस** पु., कर्म. स. [ईश्वरपुरुष], शक्तिशाली अथवा सक्षम पुरुष, धनाढ्य व्यक्ति — सो प्र. वि., ए. व. — ... अत्तकोसो अत्तवत्थो इस्सरपुरिसो विय तस्मिं ..., जा. अष्ट. 1.108.

**इस्सरभक्तिगण** पु., तत्पु. स. [ईश्वरभक्तिगण], ईश्वर या महेश्वर की भक्ति करने वालों (शिव भक्तों) का समूह — गानं ष. वि., ब. व. — इस्सरभक्तिगणानं गावीसु कतं सुललक्खणं, अ. नि. टी. 3.340.

**इस्सरभाव** पु., [ईश्वरभाव], ईश्वरत्व, अधिपतित्व, ऐश्वर्य, शानशौकत — वो प्र. वि., ए. व. — इस्सरभावो इस्सरियं, खु. पा. अष्ट. 184; सद्. 2.451.

**इस्सरभेरी** स्त्री., तत्पु. स. [ईश्वरभेरी], शा. अ., धनाढ्य अथवा महत्वपूर्ण व्यक्ति का ढोल या नगाड़ा, ला. अ., राजा या अधिपति जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति द्वारा जारी कराई जा रही उद्घोषणा — री प्र. वि., ए. व. — चोरा पठमज्जेव भेरिसदं सुत्वा इस्सरभेरी भविस्सतीति ..., जा. अष्ट. 1.273.

**इस्सरमद/इस्सरियमद** पु., तत्पु. स. [ऐश्वर्यमद], ऐश्वर्य का मद, ऐश्वर्य का अहङ्कार — दं द्वि. वि., ए. व. — पहाय इस्सरमदं भवे सम्मगगतो नरो, पे. व. 752; — सम्भव त्रि., ब. स., ऐश्वर्य के अहङ्कार के कारण उत्पन्न — वं पु., द्वि. वि., ए. व. — एतमादीनवं अत्था, इस्सरमदसम्भवं, पे. व. 752.

**इस्सरवचन** नपुं., तत्पु. स., व्याकरणों में प्रयुक्त, (किसी के बीच) प्रधान या प्रमुख होने का अर्थ, प्रधान होने का कथन — ने सप्त. वि., ए. व. — यस्मा उप अधि इच्चेते अधिकिस्सरवचने वतन्ति, सद्. 3.729; ... अधिकवचने च इस्सरवचने च सत्तमी विभति होति, सद्. 3.729.

**इस्सरवता** स्त्री., भाव. [ईश्वरवत्ता], अधिपति या समर्थ व्यक्ति होने का अत्यधिक घमण्ड भाव, हेकड़ी, औद्धत्य —

य तु. वि., ए. व. — सेनासनत्थाय नियमितं कुलसङ्ग्रहणत्थाय ददतो दुक्कटं, इस्सरवताय थुल्लच्चयं, थ्ययचित्तेन पाराजिकं, पारा. अष्ट. 1.307; इस्सरवतायाति मयि देन्ते को निवारेस्सति, अहमेवेत्थ पमाणन्ति एवं अत्तनो इस्सरियभावेन, वि. वि. टी. 1.176; योपिस्सरवतायेव, देन्तो थुल्लच्चयं फुसे, विन. वि. 441.

**इस्सरसमणक** पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के राजा देवानपिय तिस्स द्वारा 247-207 ई. पू. में अनुराधपुर में निर्माण कराया गया एक विहार या आराम, इस्सरसमणविहार नाम से भी विख्यात इस विहार का निर्माण महेन्द्र से उपसम्पदा प्राप्त अरिड्ड आदि पांच सौ भिक्षुओं के विहार करने के स्थान पर कराया गया था — को प्र. वि., ए. व. — पञ्चसतेहिस्सररेहि, महाथेरस्स सन्तिके, पब्बजा वसितद्धाने इस्सरसमणको अहु, म. वं. 20.14; — के सप्त. वि., ए. व. — सो येवुपोसथागारं, इस्सरसमणके इध, म. वं. 35.87; इस्सरसमणके इधा ति इध अनुराधपुरसन्तिके पुब्बोहारेण पाकटभूते इस्सरसमणसङ्घाते कच्छपगिरिविहारे सो वसभो येव उपोसथागारं कारेसी ति अत्थो, म. वं. टी. 608 (ना.).

**इस्सरसमणविहार** पु., उपरिवत् — रं द्वि. वि., ए. व. — अथेकदिवसं पातो येव इस्सरसमणविहारं गन्त्वा ... सीलं आवज्जेन्तो निसीदि, म. वं. टी. 561(ना.).

**इस्सरसमणक्क** त्रि., ब. स., इस्सर-समण नाम वाला (विहार) — स्स पु., ष. वि., ए. व. — इस्सरसमणक्कस्स, विहारस्स अदासि सो, म. वं. 35.47; — हि सप्त. वि., ए. व. — इस्सरसमणक्कहि, तिस्सक्के नागदीपके, म. वं. 36.36.

**इस्सरसमणाराम** पु., कर्म. स., इस्सरसमण नामक आराम — मे सप्त. वि., ए. व. — इस्सरसमणारामे, पठमे, चेतियङ्गणे, म. वं. 19.61; — मं द्वि. वि., ए. व. — इस्सरसमणारामं, कारेत्वा पुब्बवत्थुतो, चू. वं. 39.10.

**इस्सरा** स्त्री., [ईश्वरा], अधिपतिनी, घर की मालकिन, सर्वशक्तिसम्पन्ना गृहस्वामिनी — रा प्र. वि., ए. व. — विजायिस्सति सब्बस्स कुटुम्बस्स इस्सरा भविस्सति, पारा. 101; सा दानि सब्बस्स कुलस्स इस्सरा, जा. अष्ट. 3.377; ताय सकलाय पथविया साव इस्सरा होति, जा. अष्ट. 7.266.

**इस्सराधिपच्च** त्रि./नपुं., कर्म. स. [ईश्वराधिपत्य/ऐश्वर्याधिपत्य], क. नपुं., ऐश्वर्यमय आधिपत्य, सम्पूर्ण रूप से प्रभुत्व, चक्रवर्ती राजा के रूप में शासन, ख. त्रि.,

## इस्सराधिपति

364

## इस्सरियत्त

एकछत्र प्रभुत्व से युक्त, सम्पूर्ण आधिपत्य वाला — च्वं पु., द्वि. वि., ए. व. — इमस्मिं राजकुले खत्तियकञ्जापि ब्राह्मणकञ्जापि गृहपतिकञ्जापि, तासाहं इस्सराधिपच्चं कारेमि, अ. नि. 1(2).235; — च्वे पु., सप्त. वि., ए. व. — महापथविद्या पट्टतरत्तरतनाय मातापितरो इस्सराधिपच्चं रज्जे पतिह्वापेय्य, अ. नि. 1(1).78; इस्सराधिपच्चं रज्जेति वक्कवत्तिरज्जं सन्धायवमाह, अ. नि. अहु. 2.28.

**इस्सराधिपति** पु., [ईश्वराधिपति], चक्रवर्ती राजा, सम्पूर्ण रूप से आधिपत्य रखने वाला — ति प्र. वि., ए. व. — ... अनेकेसं हत्थिसहस्सानं इस्सराधिपति महानुभावो यूथपति ..., चरिया. अहु. 111.

**इस्सरापराधिक** त्रि., [ईश्वरापराधिक], अपने स्वामी के साथ अपराध करने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — पुरिसो इस्सरापराधिको बद्धो सङ्गलिकबन्धनेन गम्भे पक्खितो परिमुच्चितुकामो अस्स, मि. प. 150; — स्स ष. वि., ए. व. — तस्स इस्सरापराधिकस्स पुरिसस्स परिमुच्चितुकामास्सापि इस्ससभया सन्तासो उप्पज्जति, मि. प. 150.

**इस्सरायतन** नपुं. तत्पु. स. [ईश्वरायतन], ईश्वर (आराध्य देव महेश्वर, शिव) का निवासस्थान (मन्दिर) — नं प्र. वि., ए. व. — तथा हि लोके इस्सरायतनं वासुदेवायतनन्तिआदीसु निवासद्धानं आयतनन्ति बुच्चति, ध. स. अहु. 186; तथा हि लोके इस्सरायतनं वासुदेवायतनन्ति आदिषु ..., सद्. 2.361; सद्. 2.577.

**इस्सरिय'** 1. नपुं. भाव. [ऐश्वर्य, दौ. सं. ईश्वरीय], घर की मालिकी, गृह आदि का स्वामित्व या अधिपतित्व, अत्यन्त उच्च एवं प्रभावमयी स्थिति, उच्च पद पर आसीन होने की आनन्दमयी अवस्था, धनाढ्यता, रईसी, शान-शौकत — यं प्र. वि., ए. व. — सचे तुम्हे इमस्मिं गेहे सब्ब इस्सरियं मय्हं देथ, जा. अहु. 1.159; आवासेसु च इस्सरियं पूजा परकुलेसु च, ध. प. 73; किंसु इस्सरियं लोके, किंसु भण्डानमुत्तमं, स. नि. 1(1).51; सब्बं इस्सरियं सुखन्ति दुक्खिं इस्सरियं लोकियं लोकुत्तरञ्च, उदा. अहु. 127; — यं द्वि. वि., ए. व. — मातुरक्खिता नाम माता रक्खति गोपेति इस्सरियं कारेति वसं वत्तेति, पारा. 205; 'मनापकायिकानाम देवता इमेसु तीसु ठानेसु इस्सरियं कारेम, वसं वत्तेमा'ति, अ. नि. 3(1).92; महन्तं ठानं विपुलं इस्सरियं पत्तोति यसेन अनुद्धतो नीचवृत्ति पण्डितानं

ओवादकरो होति, जा. अहु. 3.231; — स्मिं/ये सप्त. वि., ए. व. — ... पत्तोति आदिषु हि इस्सरिये दिस्सति, सद्. 2.354; इस्सरियस्मिं ठपेति, तं परामवतो मुखं, सु. नि. 112; तं यो इस्सरियस्मिं ठपेति, लञ्छनमुद्धिकादीनि दत्त्वा घरावासे कम्मन्ते वा वणिज्जादिवोहारेसु वा तदेव वावटं कारेति, सु. नि. अहु. 1.137; सब्बं पिस्सरिये दानं, न मे हासेति मानसं, म. वं. 32.46; रद्धे सके इस्सरिये तितेन, जा. अहु. 5.474; — येन तृ. वि., ए. व. — आधिपच्चेनाति इस्सरियेन, पे. व. अहु. 119; तद्धणञ्जेव उप्पन्नसंवेगा सामिकं याचित्वा महन्तेन इस्सरियेन पञ्चबलकत्थेरीनं ..., ध. प. अहु. 2.308; 2. त्रि. ऐश्वर्य से परिपूर्ण, महत्वपूर्ण, भव्य — ये नपुं., सप्त. वि., ए. व. — ... अनुरक्खा लद्धयसा विस्सासिका ठपिता महति इस्सरिये ठाने, मि. प. 147; ... कुजातिको महन्ते इस्सरिये ठाने अत्तानं ठपेसि, मि. प. 323; स. उ. प. के रूप में अन., चातुदीप, छ—कामसङ्गा., देव., ब्रह्म., भोग., मनुस्स., सक्क., सब्बत्थ., सब्ब. के अन्त. द्रष्ट.

**इस्सरिय'** पु., व्य. सं., एक तमिल-शासक का नाम जिसे श्रीलङ्का के राजा दुडुगामणी ने हालकोल में पराजित किया — यं द्वि. वि., ए. व. — हालकोले इस्सरियं, नाळिसोब्भहि नाळिकं, म. वं. 25.11.

**इस्सरियकम्म** नपुं. तत्पु. स. [ईश्वरीयकर्म], आधिपत्य या प्रभुत्व का काम, शासन-कार्य — म्मं प्र. वि., ए. व. — नापि तेरससु सम्मुतीसु एकसम्मृतिवसेनापि इस्सरियकम्मं कातब्बं, चूळव. अहु. 9.

**इस्सरियकामकारिकादिकथा** स्त्री., व्य. सं., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 502-504.

**इस्सरियगगहण** नपुं. तत्पु. स., 1. ऐश्वर्यमय का ग्रहण, 2. आधिपत्यपूर्ण ग्रहण — णेन तृ. वि., ए. व. — तस्मा इस्सरियगगहणेन महानुभावे देवमनुस्से सङ्गहाति, पे. व. अहु. 103.

**इस्सरियद्धान** नपुं. तत्पु. स. [ऐश्वर्यस्थान], प्रभावक्षेत्र, स्वामित्व या प्रभुत्व का क्षेत्र — नं प्र. वि., ए. व. — फलसमापत्ति हि बुद्धानं इस्सरियद्धानं नाम, उदा. अहु. 304.

**इस्सरियत्त** नपुं., इस्सरिय का भाव., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, ऐश्वर्यभाव, ऐश्वर्यमयी स्थिति, सर्वोत्तम अवस्था, स. उ. प. के रूप में, ज्ञानि.-त्त नपुं., [ध्यानैश्वर्यत्वं], ध्यान के पूर्ण आधिपत्य की अवस्था — तं

## इस्सरियपरियोसान

365

## इस्सरियसम्पत्ति

द्वि. वि., ए. व. - *ज्ञानिस्सरियतम्पत्तो यो हि ब्रह्मा सहम्पति*, सद्धम्मो. 422.

**इस्सरियपरियोसान** त्रि., ब. स. [ऐश्वर्यपर्यवसान], ऐश्वर्य या प्रभुत्व को अपना अन्तिम लक्ष्य मानने वाला, राज्यपद को अन्तिम लक्ष्य बनाने वाला - ना पु., प्र. वि., ब. व. - *“खत्तिया खो, ब्राह्मण, भोगाधिप्याया पञ्चूपविचारा बलाधिदाना पथवीभिनिवेसा इस्सरियपरियोसाना”* ति. अ. नि. 2(2).75; *इस्सरियपरियोसानाति रज्जाभिसेकपरियोसाना*, अ. नि. अ. 3.121.

**इस्सरियपरिवार** पु., तत्पु. स., आधिपत्य या प्रभुत्व की प्रचुरता, भव्य यश का आधिक्य - रेन तु. वि., ए. व. - *पज्जलतीति इस्सरियपरिवारेन पज्जलति*, जा. अ. 6.17.

**इस्सरियपरिहार** पु., कर्म. स., ऐश्वर्यमयी सामग्री, भव्य उपकरण, शाही साजो-सामान - रेन तु. प्र. वि., ए. व. - *... तस्स महन्तेन इस्सरियपरिवारेन न्हायन्तस्स न्हानपरियोसानं आगमेत्वा ...*, म. नि. अ. (म.प.) 2.199.

**इस्सरियप्पमाण** नपुं., तत्पु. स. [ऐश्वर्यप्रमाण], ऐश्वर्य एवं धन की मात्रा - णेन तु. वि., ए. व. - *इस्सरियमत्तायाति इस्सरियप्पमाणेन ...*, दी. नि. टी.(लीन.) 2.123.

**इस्सरियबल** नपुं., तत्पु. स. [ऐश्वर्य-बल], ऐश्वर्य या प्रभुत्व का बल, उच्च अधिकार का बल, कुशलकर्मों की प्रचुरता का बल - लेन तु. वि., ए. व. - *इस्सरियबलेन अभिभूतं मातुगामं नेव रूपबलं तायाति*, स. नि. 2(2).241; *अधिप्यायो पनेत्थ - नाहं बुद्धोति इस्सरियबलेन वदामि*, खु. पा. अ. 134; - लं प्र. वि., ए. व. - *“अपि च अट्टसद्धि बलानि - सद्धाबलं ... इस्सरियबलं ... दसतथागतबलानि”*, पटि. म. 343; *कतमं इस्सरियबलं ? ... कामछन्दं पजहन्तो नेक्खम्मवसेन चित्तं वसं वत्तेतीति - इस्सरियबलं*, पटि. म. 346; *कुसलेसु बहुभावो इस्सरियबलं*, पटि. म. अ. 2.211; ख. त्रि., ब. स., ऐश्वर्य या प्रभुता के बल से सम्पन्न - ला पु., प्र. वि., ब. व. - *रुण्णबला, मिक्खवे, दारका ... इस्सरियबला राजानो*, अ. नि. 3(1).58.

**इस्सरियभाव** पु., [ऐश्वर्यभाव], अहंकार, दर्प, घमण्ड - वं द्वि. वि., ए. व. - *इमिना अत्तो इस्सरियभावं दीपेति*, जा. अ. 7.231; *अथ वा कन्तभावं इस्सरियभावं निष्कन्तभावं पत्तो*, महानि. अ. 65; स. उ. प. के रूप में, **सब्बलोकि-**पु., समस्त लोकों पर प्रभुत्व की अवस्था - वं द्वि. वि.,

ए. व. - *अभिसेको विय रज्जो सब्बलोकिस्सरियभावं*, पारा. अ. 1.102.

**इस्सरियमत्ता** स्त्री., तत्पु. स. [ऐश्वर्यमात्रा], ऐश्वर्य की मात्रा, प्रभुत्व का प्रमाण, ऐश्वर्य - य तु. वि., ए. व. - *मगधरट्ठे वा महामत्ता महत्तिया इस्सरियमत्ताय समन्नागताति मगधमहामत्ता*, दी. नि. अ. 2.116; *इस्सरियमत्तायाति इस्सरियप्पमाणेन*, *इस्सरियेन चैव वित्तूपकरणेन चाति एवं वा अत्थो दट्ठब्बो*, दी. नि. टी. (लीन.) 2.123.

**इस्सरियमद** पु., तत्पु. स. [ऐश्वर्यमद], आधिपत्य का घमण्ड, अधिकारसम्पन्न होने का नशा - देन तु. वि., ए. व. - *राजा पन खत्तियमानेन इस्सरियमदेन मत्तो हुत्वा ...*, जा. अ. 6.224.

**इस्सरियमदमत्त** त्रि., तत्पु. स. [ऐश्वर्यमदमत्त], ऐश्वर्य के अहंकार से ग्रस्त, शक्ति या अधिकार के मद से उन्मत्त - त्तानं पु., ष. वि., ब. व. - *रज्जं खत्तियानं मुद्धावसित्तानं इस्सरियमदमत्तानं कामगेधपरियुद्धितानं ...*, स. नि. 1(1).119; - *त्तो पु., प्र. वि., ए. व. - एकस्मिहि काले राजा इस्सरियमदमत्तो किलेससुखनिस्सितो विनिक्कयम्पि न पट्टपेसि*, जा. अ. 4.157.

**इस्सरियलुद्ध** त्रि., तत्पु. स. [ऐश्वर्यलुब्ध], ऐश्वर्य पाने के प्रति लालच रखने वाला, प्रभुत्व के प्रति लोलुप - द्धो पु., प्र. वि., ए. व. - *न नं इस्सरियलुद्धो पुरोहितो परिताणं कातुं सक्खि*, जा. अ. 3.139.

**इस्सरियवोसग्ग** पु., तत्पु. स. [ऐश्वर्यव्यवसर्ग], ऐश्वर्य या प्रभुत्व का परित्याग - ग्गेन तु. वि., ए. व. - *... सम्माननाय अनवमाननाय अनतिचरियाय इस्सरियवोस्सग्गेन अलङ्कारानुपदानेन ...*, दी. नि. 3.144; स. प. के अन्त., - *... सम्मा परिहरन्तो भारिय इस्सरियवोस्सग्गअलङ्कारदानसम्माननादीहि ...*, जा. अ. 5.234.

**इस्सरियसंवत्तनिय** त्रि., तत्पु. स. [ऐश्वर्यसंवर्तनिक], ऐश्वर्य या प्रभुत्व को देने वाला, ऐश्वर्य में परिणत होने वाला - यं नपुं., प्र. वि., ए. व. - *ननु अत्थि इस्सरियसंवत्तनियं कम्मं अधिपच्चसंवत्तनियं कम्मन्ति?*, कथा. 294.

**इस्सरियसम्पत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [ऐश्वर्यसम्पत्ति], ऐश्वर्य की सम्पदा, प्रभुत्व या अधिकार का सुख, ऐश्वर्य से प्राप्त सुखों की प्रचुरता, स. उ. प. के रूप में, - *देवराजभोगसम्पत्तिसदिस ...* तिं द्वि. वि., ए. व.,



## इस्सरियसुख

366

इस्साधम्म

देवराज इन्द्र की सम्पदाओं के समान प्रभुत्व या अधिकार का सुख — *सो तत्थ नागरज्जं कारेन्तो देवराजभोगसम्पत्तिसदिसइस्सरियसम्पत्तिं अनुभवन्तो ... चरिया.* अहु. 120.

**इस्सरियसुख** नपुं., तत्पु. स. [ऐश्वर्यसुख], आधिपत्य का सुख, ऐश्वर्य का सुख — *खं प्र. वि., ए. व. — ... यानसुखं, सयनसुखं, इस्सरियसुखं, आधिपच्चसुखं, गेहिसुखं ...*, कथा. 177.

**इस्सरियाधिपच्च** नपुं./त्रि., [ऐश्वर्याधिपत्य], 1. एकछत्र आधिपत्य वाला, पूर्ण रूप से अपने ही प्रभुत्व वाला, 2. चक्रवर्ती के रूप में आधिपत्य, प्रधान राजा या ईश्वर के रूप में राजपद — *च्चं पु., द्वि. वि., ए. व. — ... राजा पसेनदि कोसलो इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेति.* म. नि. 2.338; *... उपजीवमानो देवानं तावतिसानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेन्तो ...*, स. नि. 1(1).251; *राजा चक्रवर्ती चतुत्रं दीपानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेत्वा ...*, उदा. अहु. 85; — *च्चं नपुं., प्र. वि., ए. व. — इस्सरियाधिपच्चन्ति इस्सरभावेन वा इस्सरियमेव वा आधिपच्चं, न एत्थ साहसिककम्मन्तिपि इस्सरियाधिपच्चं,* अ. नि. अहु. 2.192; — *च्चे सत्त. वि., ए. व. — इस्सरयाधिपच्चो रज्जेति चक्रवर्तिरज्जं सन्धायेवमाह,* अ. नि. अहु. 2.28.

**इस्सरियाधिपच्चकारक** त्रि., [ऐश्वर्याधिपत्यकारक], एकछत्र राज्य करने वाला चक्रवर्ती, ईश्वरभाव से अथवा सम्पूर्ण स्वामित्व के रूप में आधिपत्य-युक्त — *का पु., प्र. वि., ब. व. — एत्थ चतुत्रं महादीपानं द्विसहस्सानं परित्तिदीपानञ्च इस्सरियाधिपच्चकारका चक्रवर्ती उपपज्जन्ति,* खु. पा. अहु. 106.

**इस्सरियानुप्पदानसमत्था** त्रि., तत्पु. स. [ऐश्वर्यानुप्रदानसमर्थ], एकछत्र राज्य या पूर्ण आधिपत्य को प्रदान करने में सक्षम — *त्थो पु., प्र. वि., ए. व. — यो चायं चक्रवर्तनस्स द्विसहस्सदीपपरिवारेसु चतूसु महादीपेषु इस्सरियानुप्पदानसमत्थो महानुभावो,* म. नि. अहु. (उप.प.) 3.87.

**इस्सरियानुभाव** त्रि., ब. स. [ऐश्वर्यानुभाव], आधिपत्य के प्रभाव से युक्त, राजा के प्रभाव से युक्त, राजकीय शान-शौकत वाला — *वो पु., प्र. वि., ए. व. — तस्सिस्सरियानुभावो भूतपुब्बं, आनन्द, राजा महासुदस्ससो नाम अहोसि ...*, चरिया. अहु. 40.

**इस्सरियासा** स्त्री., तत्पु. स. [ऐश्वर्याशा], आधिपत्य या राजपद पाने की आशा — *सं द्वि. वि., ए. व. — आसं पुरक्खत्वाति इस्सरियासं पुरतो कत्वा ...*, जा. अहु. 5.397. **इस्ससिन्न** नपुं., तत्पु. स. [ऋष्यभृङ्ग], कृष्णमृग का वक्र सींग — *सं द्वि. वि., ए. व. — वाणिजो विय वाचासन्धुतियो इस्ससिन्निमिव विपरिवत्तायो उरगमिव दुजिक्कायो,* जा. अहु. 5.421.

**इस्सा** स्त्री., [ईर्ष्या], ईर्ष्या, डाह, दूसरों को आनन्दित एवं समृद्ध देखकर मन में उत्पन्न दाह — *सा प्र. वि., ए. व. — इस्सा इस्सायं, सद्. 2.441; इस्सा उसूया मच्छेरं, तु मच्छरिय मच्छरं,* अभि. प. 168; *या परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं — अयं बुच्चति 'इस्सा',* विभ. 413; *यं एवरूपं निद्धरियं निद्धरियकम्मं इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं ...*, महानि. 330; *इस्सायना इस्सा, सा परसम्पत्तीनं उसूयनलक्खणा, विसुद्धि.* 2.97; *परसम्पत्तिउसूयनलक्खणा इस्सा, विसुद्धि.* महाटी. 1.78; — *सं द्वि. वि., ए. व. — परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सति उपदुस्सति इस्सं बन्धति,* अ. नि. 1(2).233; *मय्हां उपासिकाति मानं वा इस्सं वा कातुं न वट्ठति,* ध. प. अहु. 1.292; *इस्सं करिसु तस्सज्जे, राजपुत्तस्स सेवका,* म. वं. 23.36; — *य तु. वि., ए. व. — सवे कोचि इस्साय उद्विस्स कत्तं उपक्खटं परिभोगं अन्तरायं करेय्य,* मि. प. 155; स. उ. प. के रूप में, **महि.**— अत्यन्त प्रबल ईर्ष्या — *स्सया तु. वि., ए. व. — दिन्नं महापसादं तं असहन्तो महिस्सया,* चू. वं. 72.76.

**इस्साकार** पु., [ईर्ष्याकार], ईर्ष्या का स्वरूप, ईर्ष्या का प्रकार — *रो प्र. वि., ए. व. — इस्साकारो इस्सायना,* ध. स. अहु. 398.

**इस्साचार** पु., [ईर्ष्याचार], ईर्ष्या से भरा आचरण, ईर्ष्यामय व्यवहार — *रेन तु. वि., ए. व. — न चापि सोत्थि भत्तार, इस्साचारेन रोसये,* अ. नि. 2(1).33; *न चापि सोत्थि भत्तारं इस्साचारेन मज्जतीति,* सद्. 3.633.

**इस्साजर** त्रि., ब. स., ईर्ष्या के ज्वर से पीड़ित — *रो पु., प्र. वि., ए. व. — कन्दं इस्साजरो मन्दो विरियं न करोति सो, चू. वं. 72.77.*

**इस्साधम्म** पु., तत्पु. स. [ईर्ष्याधर्म], एक (चैतसिक) धर्म के रूप में ईर्ष्या, ईर्ष्या का लक्षण — *म्मो प्र. वि., ए. व. —*

## इस्सानिदेस

367

इस्सास

तस्स कामरसं जत्वा, इस्साधम्मो अजायथ, जा. अहु. 4. 427.

इस्सानिदेस पु., ईर्ष्या की व्याख्या — से सप्त. वि., ए. व. — इस्सानिदेसे या परलामसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्साति ध. स. अहु. 398.

इस्सापकत त्रि., 1. स्वभाव से ही ईर्ष्यालु, ईर्ष्याभरी प्रकृति वाला, 2. ईर्ष्या से अभिभूत — ता' स्त्री., प्र. वि., ए. व. — सा इस्सापकता सपत्तिं अङ्गारकटाहेन ओकिरि ... पे. ... पारा. 143; स. नि. 1(2).236; — ता' पु., प्र. वि., ब. व. — इस्सापकताति इस्साय अपकता; अभिभूताति अत्थो, पाचि. अहु. 199; — तो पु., प्र. वि., ए. व. — सो चन्दिमसूरिये विरोचमाने दिस्वा इस्सापकतो तेसं गमनवीथिं ओतरित्वा मुखं विवरित्वा तिह्वति, स. नि. अहु. 1.97-98; इस्सापकतो मारो पापिमा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्चाविसि, मि. प. 154.

इस्सापकतिइत्थिवत्थु नपु., ध. प. अहु. के एक कथानक का शीर्षक, ध. प. अहु. 2.277.

इस्सापरियुद्धान नपु., तत्पु. स. [ईर्ष्यापर्युत्थान], ईर्ष्या का उभाड़, ईर्ष्या का दृढता से ऊपर उठना — नं प्र. वि., ए. व. — इस्सापरियुद्धानं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं, अ. नि. 3(2).131.

इस्सापरियुद्धित त्रि., तत्पु. स. [ईर्ष्यापर्युत्थित], ईर्ष्या से पूरी तरह से ग्रस्त, ईर्ष्या से भरा हुआ — तेन नपु., तृ. वि., ए. व. — मज्झहिकसमयं इस्सापरियुद्धितेन चेतसा अगारं अज्झावसति, स. नि. 2(2).234; इस्सापरियुद्धितेन चेतसा बहुलं विहरति, अ. नि. 3(2).131.

इस्सापिसाच पु., [ईर्ष्यापिशाच], ईर्ष्या के रूप में पिशाच या प्रेत, डाह का प्रेत — चो प्र. वि., ए. व. — इस्सापिसाचो विहतो अस्सासो परमो कतो, सद्धम्मो. 313.

इस्साभिभूत त्रि., तत्पु. स. [ईर्ष्याभिभूत], ईर्ष्या से बुरी तरह से ग्रस्त, डाह से पीड़ित — तो पु., प्र. वि., ए. व. — न इस्सुकी होति न इस्साभिभूतो, परि. 385.

इस्सामच्छरिय नपु., द्व. स. [ईर्ष्यामात्सर्य], ईर्ष्या एवं आत्मगुण निगूहन की मनोवृत्ति, ईर्ष्या एवं स्वार्थमयी मनोदशा — यं प्र. वि., ए. व. — "इस्सामच्छरियं पन, मारिस, किनिदानं किसमुदयं किजातिकं किंपभवं, दी. नि. 2.204; इति सो इस्सामच्छरियं कुत्सेसु नुप्पादेता होति ... दी. नि. 3.34.

इस्सामच्छरियफल नपु., तत्पु. स. [ईर्ष्यामात्सर्यफल], ईर्ष्या करने एवं स्वार्थपरता का फल, ईर्ष्या एवं मात्सर्य का

परिणाम — लं द्वि. वि., ए. व. — तिरोकुट्टादीसु ठिते इस्सामच्छरियफलं अनुभवन्ते ..., पे. व. अहु. 21.

इस्सामनक त्रि., ब. स., ईर्ष्या-ग्रस्त मन वाला, ईर्ष्यालु मन से युक्त — को पु., प्र. वि., ए. व. — एकच्चो इत्थी वा पुरिसो वा इस्सामनको होति, म. नि. 3.252; नरोति एतकेनैव कारणेन परलाभादीसु इस्सामनको पञ्चविधेन ..., ध. प. अहु. 2.224; — निका स्त्री., ईर्ष्यालु नारी, ईर्ष्या-ग्रस्त मन वाली स्त्री — का प्र. वि., ए. व. — इस्सामनिका खो पन होति, अ. नि. 1(2).233.

इस्सामल नपु., तत्पु. स. [ईर्ष्यामल], ईर्ष्या की अपवित्रता, ईर्ष्या का मैल — लं प्र. वि., ए. व. — इस्सामलज्जस्स अप्पहीनं होति, अ. नि. 1(1).128; इस्सुकी च होति, इस्सामलज्जस्स अप्पहीनं होति, तदे., स. प. के अन्त. — इस्सामलमच्छेरमलेसुपि एसेव नयो, अ. नि. अहु. 2.75.

इस्सामान नपु., द्व. स. [ईर्ष्यामान], ईर्ष्या एवं अहंकार — नेन तृ. वि., ए. व. — न तावाहं पणिपति, इस्सामानेन वञ्चितो, थेरगा. 375.

इस्सायना स्त्री., इस्सा के ना. धा. से व्यु., ईर्ष्यालुता, डाह की मनोदशा, ईर्ष्या भरी मानसिक स्थिति — ना प्र. वि., ए. व. — परलामसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं इदं वुच्चति इस्सा, ध. स. 1126; विभ. 412.

इस्सायितत्त नपु., इस्सा के ना. धा. के भू. क. कृ. इस्सायित का भाव. [ईर्ष्यायितत्त्व], उपरिवत् — तं प्र. वि., ए. व. — ... इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं — इदं वुच्चति इस्सा, ध. स. 1126; विभ. 413; महानि. 38.

इस्सायितभाव पु., ईर्ष्याभाव — वो प्र. वि., ए. व. — इस्सायितभावो इस्सायितत्तं, ध. स. अहु. 398.

इस्सालुक त्रि., इस्सालु + क के योग से व्यु., [ईर्ष्यालु, बौ. सं., ईर्ष्यालुक], ईर्ष्यालु, अत्यधिक ईर्ष्यावृत्ति से ग्रस्त मन वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — इस्सालुका मच्छरियो ते पेतिसूपजायरे, सद्धम्मो. 97.

इस्सावतिण्ण त्रि., तत्पु. स. [ईर्ष्यावतीर्ण], ईर्ष्यालु, ईर्ष्या-ग्रस्त — णा स्त्री., प्र. वि., ब. व. — सचे तुवं विपुले लद्धमोगे, इस्सावतिण्णा मरणं उपेसि, जा. अहु. 5.92.

इस्सास पु., 1. धनुष — सो प्र. वि., ए. व. — इस्सासो धनु कोदण्डं चापो नित्थी सरासनं, अभि. प. 388; चापेत्विस्सासमुसुनो, इस्सासो खेपकम्हि च, अभि. प. 922;

## इस्सासंयोजन

368

ई

2. त्रि., धनुर्धरों का आचार्य, धनुष धारण करने वाला — सो पु., प्र. वि., ए. व. — तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी इस्सासो होति, पाचि. 167; सप्पाणकवग्गस्स पठमसिक्खापदे — इस्सासो होतीति गिहिकाले धनुग्गहावरियो होति, पाचि. अहु. 120; धनुग्गहोति इस्सासो, अ. नि. अहु. 3.279; इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा तिणपुरिसरूपके वा मत्तिकापुञ्जे वा योग्गं करित्वा, अ. नि. 3(1).230; तज्झि इस्सासो तेजं करोति, म. नि. अहु. (म.प.) 2.243; इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा बहुके दिवसे ..., मि. प. 218; — सा ब. व. — इस्सासिनोति इस्सासा धनुग्गहा, जा. अहु. 4. 450; — से द्वि. वि., ब. व. — दुवे तीणि सहस्सानि इस्सासेक्खणवेधिनी, चू. वं. 72.245; स. उ. प. के रूप में, महि.-सा पु., प्र. वि., व. व., महान् धनुर्धर, महान् शूरवीर — 'उग्गपुत्ता महिस्सासा, सिक्खिता दळ्ढधम्मिनी, धेरगा. 1219; ते चिन्तयिसु-मयं सुसिक्खिता कतहत्था कत्तूपासना महिस्सासा, ध. प. अहु. 1.201-202.

इस्सासंयोजन नपुं., तत्पु. स. [ईर्ष्यासंयोजन], ईर्ष्या का बन्धन, ईर्ष्या की बेड़ी या शृंखला — नं प्र. वि., ए. व. — कतमानि सत्त ? अनुनयसंयोजनं ... इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं, अ. नि. 2(2).160; कतमानि दस संयोजनानि ? कामरागसंयोजनं, ... इस्सासंयोजनं ... दससंयोजनानि, पटि. म. अहु. 2.29; इस्सा इस्सायना ... इदं वुच्चति इस्सासंयोजनं, ध. स. 1126; — नेन तृ. वि., ए. व. — अविज्जासंयोजनं इस्सासंयोजनेन संयोजनञ्चैव संयोजनसम्पयुत्तञ्च, ध. स. 1136; 'अहो वत एतं रूपारम्भणं अज्जे न लभेय्यु'न्ति उसूयतो इस्सासंयोजनं उप्पज्जति, म. नि. अहु. (मू.प.) 1(1).298. इस्सासन्तेवासी पु., तत्पु. स. [इष्वासान्तेवासिन], कुशल धनुर्धर आचार्य का शिष्य या सहायक — सी प्र. वि., ए. व. — इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा तिणपुरिसरूपके वा मत्तिकापुञ्जे वा योग्गं करित्वा, अ. नि. 3(1).230; इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा बहुके दिवसे सङ्गामत्थाय ..., मि. प. 218.

इस्साससिप्प नपुं., तत्पु. स. [इष्वासशिल्प], धनुर्विद्या का शिल्प, धनुर्वेध-शिल्प, धनुष-वाण चलाने में दक्षता सिखलाने वाला शिल्प — प्पं प्र. वि., ए. व. — धनुसिप्पन्ति इस्साससिप्पं यो धनुब्बधोति वुच्चति, उदा. अहु. 165; — प्पे सप्त. वि., ए. व. — ... तेसु इस्साससिप्पे असदिदो हुत्वा बाराणसिं पच्चागमि, जा. अहु. 2.72.

इस्सासाचरिय पु., तत्पु. स. [इष्वासाचार्य], धनुर्विद्या का आचार्य, धनुर्विद्या का शिक्षक — यानं प. वि., ब. व. — धनुसत्तिसूलादीति एत्थ इस्सासाचरियानं गावीसु कतं धनुलक्खणं, अ. नि. टी. 3.340.

इस्सासी पु., [इष्वासिन], धनुर्धारी, धनुर्ग्रह, धनुष को धारण करने वाला या उसके प्रयोग में कुशल योद्धा — नो पु., प्र. वि., ब. व. — इस्सासिनो कतहत्थापि वीरा, दूरेपाती अक्खणवेधिनीपि, जा. अहु. 4.447; इस्सासिनोति इस्सासा धनुग्गहा, जा. अहु. 4.450.

इस्सित त्रि., [ईर्षित], क. दूसरों द्वारा की गई ईर्ष्या का विषय, ख. ईर्ष्या से भरा हुआ — ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. — 'सा इस्सिता दुक्खिता चस्मि लुद, उद्धञ्च सुस्सामि अनुस्सरन्ती, जा. अहु. 5.39.

इस्सुकिता स्त्री., इस्सुकी का भाव. [ईर्ष्युकता], ईर्ष्यालुता — य तृ. वि., ए. व. — इस्सुकिताय परसम्पत्तिं न सहति, अ. नि. अहु. 2.314.

इस्सुकी त्रि., [सं. ईर्ष्यक, बौ. सं., ईर्षुक], ईर्ष्यालु, ईर्ष्या से पीड़ित — की पु., प्र. वि., ए. व. — तपस्सी मक्खी होति पळासी ... पे. ... इस्सुकी होति मच्छरी, दी. नि. 3.32; यम्पावुसो, भिक्खु अनिस्सुकी होति अमच्छरी, म. नि. 1.136; इस्सुकीति परस्स सक्कारादीनि इस्सायनलक्खणाय इस्साय समन्नागतो, अ. नि. अहु. 3.110; मक्खी थम्मी पळासी च, इस्सुकी मच्छरी सतो, अ. नि. 3(1).19; ध. प. 262; — किस्स पु., ष. वि., ए. व. — इस्सुकिस्स पुरिसपुगलस्स अनिस्सुकिता होति परिकमनाय, म. नि. 1.56. इह अ., स्थानबोधक निपा., क्रि. वि. [इह], यहां, इस स्थान पर, इस सन्दर्भ में, इस विषय में — इहेधात्र तु एत्थात्थ, अथ सब्बत्र सब्बधि, अभि. प. 1161; इत्थं इदानी इह इतो इध, सद्. 3.676; इह इध-इमस्मिं वा, सद्. 3.682; इध, भन्ते नागसेन, आचरियेन अन्तेवासिहि सततं समितं आरक्खा उपदुपेतब्बा, मि. प. 105.

इहलोकिक त्रि., इस लोक से सम्बन्धित, प्रत्यक्ष दिखलाई देने वाला — कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — सुचरित मथो दिद्दधम्मिकं चेहलोकिकं, अभि. प. 85.

ई

ई देवनागरी लिपि में पालि वर्णमाला का चौथा अक्षर, इवर्ण का दीर्घीकृत रूप, ईकाररूप में भी व्याकरण-ग्रन्थों में

## ईकार

369

ईति / ईती

उल्लिखित — ते च खो अक्खरा पि अकारादयो एकचत्तालीसं सुतन्तेसु सोपकास होन्ति, तं यथा — अ आ ई ई ..., क. व्या. 2; अज्जे दीघा — तत्थ अट्ठसु सरेसु रस्सेहि अज्जे पञ्च सरा दीघा नाम होन्ति, तं यथा — आ ई ऊ ए ओ इति दीघा नाम, क. व्या. 5; एकचत्तालीससदा वण्णा नाम भवन्ति, सेय्यथीदं, अ आ, ई ई ..., सह. 3.604.

**ईकार** पु., [ईकार], वर्णमाला का चतुर्थ अक्षर या वर्ण, तालुस्थानीय इवर्ण का दीर्घ मात्रा वाला 'ई' स्वर — रो प्र. वि., ए. व. — ईकारो चेत्थ उपरि वुच्चमाननिरोधपादकंताय सातिसयाय आनसज्जाय अत्थिभावजोतको दट्ठब्बो, दी. नि. अभि. टी. 2.334; — रस्स ष. वि., ए. व. — सो एव नीकारगतस्स ईकारस्स रस्सतं यकारस्स च द्वितं कत्वा, सह. 3.84; ... ईकारस्स रस्सतं य—कारस्स च क—कारं कत्वा निय्यानिका, म. नि. टी. (म.प.) 108; — रे सत्त. वि., ए. व. — तुस्स तमीकारे, सब्बस्सेव न्नुप्पच्चयस्स तकारो होति वा ईकारे परे, गुणवती, गुणवन्ती, कुलवती कुलवन्ती, क. व्या. 241; — ऊकार पु., [ईकारोकार], ईकार एवं ऊकार (वर्ण) — रा प्र. वि., ब. व. — अतिदेसरहिते विसये कपच्चये परे ईकार-ऊकारा रस्सं पप्पोन्ति सुखुच्चारणत्थं, सह. 3.775; — त नपुं. भाव. [ईकारत्त्व], ईकार होने की स्थिति, ईकार का स्वरूप — तं द्वि. वि., ए. व. — ... इच्चेवमादीनं धातूनं अन्तो सरो ईकारत्तमापज्जति ..., सह. 3.833-34; — न्त त्रि., ब. स. [ईकारान्त], ईकार में अन्त होने वाला — न्तो पु., प्र. वि., ए. व. — घुसी कन्तिकरणे, ईकारन्तोयं, तेन इतो न निग्गहीतागमो, घुसति, सह. 2.449; — न्ता पु., प्र. वि., ब. व. — "खि जि नि इच्चादयो एकस्सरा इकारन्तापि", इच्चादयो एकस्सरा ईकारन्ता, सह. 2.572; "यक्खी" इच्चादयो अनेकस्सरा ईकारन्ता, सह. 2.572; स. प. के रूप में, — पतिभिक्षुराजीकारन्तेहि इत्थियं वत्तमानेहि तिङ्गेहि इनीप्पच्चयो होति, गहपतानी, भिक्षुनी, राजिनी, क. व्या. 240; ईकारन्तवसेन वुत्तता अस्मा धातुतो ... एस नयो अज्जेसु पि आदिसेसु अनेसु, सह. 2.360; — लोप पु., [ईकारलोप], ई स्वर का लोप — पो प्र. वि., ए. व. — अयं अकारादिसु परेसु ईकारलोपो, सह. 3.612; — रागम पु., [ईकारागम], ईकार (ई स्वर) का आगम — मो प्र. वि., ए. व. — ईकारागमो यथा सम्मुखीभूतो, कदमीभूतं, एकोदकीभूतं, सरणीभूतं, भस्मीकतं, सह. 3.875; ब्रू इच्चेताय धातुया ईकारागमो होति तिग्गि विभत्तिहि, ब्रवीति, क. व्या.

522; — रादेस पु., [ईकारादेश], ईकार (ई स्वर) का आदेश — सो प्र. वि., ए. व. — धात्वन्तस्स सरस्स ईकारादेसो च दट्ठब्बो, सह. 2.421.

**ईघ** पु./नपुं. [इघ], दुख, राग, द्वेष आदि क्लेश — रस्स प. वि., ए. व. — ... यो भिक्षु कामच्छन्दादीनि पञ्च नीवरणानि समन्तभदके वुत्तनयेन सामज्जतो विसंसतो च नीवरणेसु आदीनवं दिस्वा तेन तेन मग्गेन पहाय तेसज्ज पहीनत्ता एव किलेसदुक्खसङ्घातस्स ईघस्सभावेन अनीघो, सु. नि. अट्ठ. 1.21; — विरहित त्रि., राग आदि क्लेशों से मुक्त, स. उ. प. के रूप में, — रागादि ... तो पु., प्र. वि., ए. व. — अनीघोति रागादिईघविरहितो, सु. नि. अट्ठ. 2.279-280; — सज्जित त्रि., ईघ (दुख, क्लेश) संज्ञा वाला, दुख के रूप में ज्ञात — ताय स्त्री., ष. वि., ए. व. — ... विसंसतो ब्यापादविरहतो ईघसज्जिताय इति या अभावतो, विसुद्धि. महाटी. 1.332; — सह पु., कर्म. स., ईघ शब्द — दो प्र. वि., ए. व. — ईघ—सट्ठो दुक्खपरियायोति आह निदुक्खस्साति, म. नि. टी. (म.प.) 2.38. **ईज** रगत्यर्थक धातु [ईज], — ईज गतियं, ईजति, सह. 2.346.

**ईति / ईती** स्त्री., [ईति], अकस्मात् आई हुई अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी विपत्ति, संकट, दुख, संक्रामक रोगों से जनित विपदा, प्र. वि., ए. व. — ईति त्तिथि अजज्जं च उपसग्गो उपदवो, अभि. प. 401; ईती च गण्डो च उपदवो च, रोगो च सल्लज्ज भयज्ज मेतं, सु. नि. 51; तत्थ एतीति ईति, आगन्तुकानं अकुसलभागियानं ऽयसनेहूतं एतं अधिवचनं, सु. नि. अट्ठ. 1.79; — यो प्र. वि., ब. व. — गाथासु अनीतिहन्ति ईतियो वुच्चन्ति उपदवा—दिट्ठधम्मिका च सम्परायिका च, ईतियो हनति विनासेति पजहतीति ईतिहं ..., इतिवु. अट्ठ. 97; सब्बीतियोति एन्तीति ईतियो, सब्बा ईतियो सब्बीतियो, उपदवा, बु. व. अट्ठ. 134; — तो प. वि., ए. व. — ते तं अमतं असित्वा अरोगा दीघायुका सब्बीतितो परिमुच्चेयुं, मि. प. 164; पञ्चक्खन्धे अनिच्चतो ... ईतितो ... संकिलेसिकधम्मतो, पटि. म. 406; अनेकब्बसनावहनताय ईतितो, पटि. म. अट्ठ. 2.292; योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये उपासितब्बं, अनिच्चतो उपासितब्बं ... ईतितो ..., मि. प. 392; स. उ. प. के रूप में, — या ष. वि., ए. व. — कीटकिमिआदिपाणकईतिया अभावो एका सम्पदा होति, अ. नि. अट्ठ. 3.228; — तितं द्वि. वि., ए. व. — ईतिन्ति पीळं, उपदवन्ति ततो अधिकतरं पीळं, वि. वि.

## ईतिह

370

## ईदिस

टी. 1.195; — तीहि तृ. वि., ब. व. — अथ वा ईतीहि अनत्थोहि सद्धिं हनन्ति गच्छन्ति पवत्तन्तीति ईतिहा, तण्हादिउपक्किलेसा, इतिवु. अहु. 97; — गाथावण्णना स्त्री., सु. नि. के खगविसाणसुत की एक गाथा पर लिखी गई अहुकथा या व्याख्या — ईतिगाथावण्णना समत्ता, सु. नि. अहु. 1.80; — जात पु., रोग, संकट या दुख की उत्पत्ति — ते सप्त. वि., ए. व. — ईतिजातेति रोगुप्पन्ने, चूळनि. अहु. 71; — निपात पु., तत्पु. स., आकरिमक संकट अथवा विपत्ति का आ पड़ना, संकट का आक्रमण — तेन तृ. वि., ए. व. — ईतीनिपातेन अवुद्धिताय वा, न किञ्चि विन्दन्ति ततो फलायमं, जा. अहु. 5.396; ईतीनिपातेनातिविसमवातमूसिकसलभसुकपाणकसेत-हिकरोगादीनं सस्सुपइवानं अज्जतरनिपातेन वा, जा. अहु. 5.396; — पहान/पटिनिस्सग्ग/पटिप्पसद्धि स्त्री., तत्पु. स. [ईतिप्रतिप्रश्रब्धि], दुख या आकस्मिक आ पड़ी विपदा का उपशमन, संकट का उपशमन — द्विं द्वि. वि., ए. व. — अनीतिकन्ति इति वुच्चन्ति किलेसा च खन्था च अभिसङ्गारा च, ईतिप्पहानं ईतिवूपसमं ईतिपटिनिस्सग्गं ईतिपटिप्पसद्धिं अमतं निब्बानन्ति — तण्हक्खयमनीतिकं, चूळनि. 195; — विरहित त्रि., क्लेश आदि के संकटों से रहित, स. उ. प. के रूप में, — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अनीतिकन्ति किलेसादिईतिविरहितं, चूळनि. अहु. 79; — वूपसम त्रि., ब. स., विपत्ति या दुख के उपशमन से युक्त — मं नपुं., प्र. वि., ए. व. — अनीतिकन्ति ... ईतिवूपसमं ... तण्हक्खयमनीतिकं, चूळनि. 195.

ईतिह त्रि., ईति (गत्यर्थक) एवं जहन (हननार्थक) के योग से व्यु., 1. लौकिक एवं पारलौकिक सभी उपद्रवों को नष्ट कर देने वाला या उन्हें त्याग चुका (शासनब्रह्मचर्य एवं मार्गब्रह्मचर्य) — हं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ईतियो वुच्चन्ति उपद्रवा, दिङ्घम्मिका च सम्परायिका च, ईतियो हनन्ति विनासेति पजहतीति ईतिहं, इतिवु. अहु. 97; 2. ईति + गत्यर्थक जहन के योग से व्यु., अनर्थों या पाप-धर्मों के साथ गमन करने वाला उपक्लेश (तृष्णा आदि) अथवा बौद्धेतर धार्मिक मत — हा पु., प्र. वि., ब. व. — अथ वा ईतीहि अनत्थोहि सद्धिं हनन्ति गच्छन्ति पवत्तन्तीति ईतिहा, तण्हादिउपक्किलेसा ... ईतिहा वा यथाकुत्तेनइदं तिथियसमया, इतिवु. अहु. 97.

ईदिक्ख त्रि., [ईदृक्], ऐसा, इस प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुणों से युक्त, इस प्रकार से दिखने वाला — क्खो

पु., प्र. वि., ए. व. — ईदिक्खो, यादिक्खो, तादिक्खो, मादिक्खो, कीदिक्खो, एदिक्खो, सादिक्खो, क. व्या. 644; ईदिक्खो यादिक्खो तादिक्खो मादिक्खो कीदिक्खो एदिक्खो सादिक्खो, सद्. 3.866.

ईदिस त्रि., [ईदृश], उपरिवत् — सो पु., प्र. वि., ए. व. — इममिव नं पस्सतीति ईदिसो, क. व्या. 644; ईदिसो निरयो आसि, यत्थ दूसी अपच्चथ, म. नि. 1.421; 'निबुत्ता नून सा नारी, यस्सायं ईदिसो पती'ति, बु. वं. अहु. 323; अच्छरियं वत् अभुतं वत्, अज्जलिकम्मस्स अयमीदिसो विपाको, ध. प. अहु. 1.21; — सं' स्त्री., द्वि. वि., ए. व. — कस्स त्वं धम्ममज्जाय, वाचं भाससि ईदिसन्ति, स. नि. 1(1).41; — सं² नपुं., द्वि. वि., ए. व. — 'ईदिसं दानं उपपरिक्खित्वा युत्तहाने दातुं वट्ठी'ति, पारा. अहु. 1.32; — सं³ नपुं., प्र. वि., ए. व. — वेदेसु ईदिसं आगतं भविस्सतीति एवं, भन्ते'ति, म. नि. टी. (म.प.) 2.29; तत्थ या अयं 'ईदिसं ईदिसञ्च सुखुमतमविसयग्गहणसमत्थं चक्खु होतू'ति, अभि. अव. अभि. टी. 2.91; — से नपुं., सप्त. वि., ए. व. — ईदिसे विपिने रम्मे, ठितोयं नवयोब्बने, अप. 2.216; तथापि ईदिसे ठाने पमाणं दस्सेत्तेन याथावतोव नियमेत्वा दस्सेतब्बन्ति, सारत्थ. टी. 1.91; — सानि नपुं., द्वि. वि., ब. व. — 'अहो वत् रे छेका आचरिया, ईदिसानिपि नाम सिप्पानि करिस्सन्ती'ति, ध. स. अहु. 251; तिपट्टादीनञ्च बहुपट्टचीवरानं अन्तरे ईदिसानि असारुप्पवण्णानि पटपिलोतिकानि कातब्बानीति दरसेति, विनया. टी. 2.278; ईदिसानीति पच्चक्खतां अनुभूतपुब्बपरिकप्पितरूपादिआरम्भणानि च व रागादिसम्पयुत्तानि च, सारत्थ. टी. 2.277; ईदिसानीति पच्चक्खतां अनुभूतपुब्बपरिकप्पितागन्तु — कपच्चुप्पन्नरूपनिमित्तादि—आरम्भणानि रागादिसम्पयुत्तानि चाति अत्थो, वजिर. टी. 158; — सेसु सप्त. वि., ब. व. — सब्बथाति ईदिसेसु सब्बहानेसु, सारत्थ. टी. 2.140; अक्खरचिन्ताका हि ईदिसेसु ठानेसु कम्मद्वयं इच्छन्ति, पे. व. अहु. 106; — सेहि तृ. वि., ब. व. — एवं—सहो इदमत्थो, तेन एवं पकारेहीति, इदंपकारेहि, ईदिसेहीति अत्थो, विभ. अनुटी. 66; — सा पु., प्र. वि., ब. व. — न मनुस्सेसु ईदिसा, यादिसा नो घरा इध, पे. व. 429; ईदिसा ते महानागा, अतुला च महायसा, अप. 2.65; — सी स्त्री., प्र. वि., ए. व. — आरोचेसि कुमारस्स 'वळवेत्थेदिसी' इति, म. वं. 10.54; — करण नपुं., इस इस प्रकार से करना,

## ईदिसक

371

ईस

ऐसे करना — णं प्र. वि., ए. व. — वट्ठतीति सञ्जायाति  
ईदिसकरणं सङ्गस्स भेदाय न होतीति सञ्जाय .... म. नि.  
टी. (उप.प.) 3.80; — रूप त्रि., ब. सं., इस प्रकार के  
रूप से युक्त — पो पु., प्र. वि., ए. व. — एवरूपोति  
ईदिसरूपो, स. नि. टी. 2.187; — वचनपटिसंयुक्त त्रि.,  
इस प्रकार के वचनों से युक्त — तो पु., प्र. वि., ए. व.  
— ईदिसवचनपटिसंयुक्तो पुराणकथासङ्घातो इतिहासो पञ्चमो  
एतेसन्ति इतिहासपञ्चमा, दी. नि. अट्ठ. 1.200; अ. नि.  
अट्ठ. 2.143.

**ईदिसक** त्रि., [ईदृशक, बौ. सं. ईदृशिक], ऐसा, इस प्रकार  
का, ऐसा दिखने वाला — का पु., प्र. वि., ब. व. — सन्ति  
ईदिसका अञ्जे जम्बुदीपे यती? इति, म. वं. 14.13; —  
कं नपुं., प्र. वि., ए. व. — चेलुक्खेपं पवतिसु, नत्थि  
ईदिसकं पुरे दी. वं. 13.38.

**ईदी** सदीपन अर्थ वाली एक धातु — ईदी सन्दीपने,  
ईदेति, ईदयति, सद्. 2.544.

**ईदी** / **ईदि** त्रि., [ईदृश], इस तरह का, इस प्रकार का,  
ऐसा — ईदी, यादी, तादी, मादी, कीदी, एदी, सादी, क.  
व्या. 644; ईदी यादी तादी मादी कीदी एदी सादी, सद्. 3.866;  
ईदि उदि एकोदि पण्डितो, सद्. 2.315.

**ईध** अ., निपा., इध का सन्धि के कारण विपरिवर्तित रूप  
[इध], यहां पर — सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेंडं, सु. नि.  
184; बुद्धानुस्सति 'सद्धीध', सद्. 3.614.

**ईर** गति, कम्पन एवं फेंकने अर्थ वाली धातु — ईर वघने,  
गति कम्पनेसु च, ईरति, ईरितं एरितं, सद्. 2.428; ईर  
खेपणे, ईरेति ईरयति, सद्. 2.560.

**ईरण** नपुं., ईर से व्यु., क्रि. ना. [ईरण], प्रकम्पन, कंपा  
देना, हिला देना, स. उ. प. के रूप में, — समी—णो पु.,  
प्र. वि., ए. व., हिला देने वाला पवन — तत्थ समीरणो  
ति वातो, सो हि समीरति वायति समीरेति च ..., सद्. 2.428.

**ईरिण** नपुं., [ईरिण], मरुस्थल, विविक्त स्थल, बंजर भूमि,  
द्रष्ट. इरिण के अन्त.

**ईरित** त्रि., ईर से व्यु., पू. का. कृ. [ईरित], 1. व्या. एवं  
अट्ठ. में प्रचालित, चलाया गया, हिलाया डुलाया गया,  
कंपाया गया, फेंका गया — नुण्णो नुत्तात्तखित्ता घेरिताविद्धा,  
अभि. प. 744; — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — ईर वघने,  
गति कम्पनेसु च, ईरति, ईरितं एरितं समीरणो, सद्.  
2.428; वातेरितं सालवनं, आधुतं दिजसेवितं, वि. व. अट्ठ.  
147; 2. उदघोषित, उच्चारित, कथित, उदघोषित — तो

पु., प्र. वि., ए. व. — तापसो तु इसीरितो, अभि. प. 433;  
पटिवाक्योत्तराङ्गे सूत्तरं उत्तरो तिसु, सेट्ठे दिसादिभेदे च  
परस्मिमुपरीरितो, अभि. प. 830; परं न व्याकरिस्सं, सो  
सासने ईरितो न हि, सद्. 2.341; — तं नपुं., प्र. वि., ए.  
व. — सम्भावने च गरहापेक्खासु च समुच्चये, पञ्हे सञ्चरणे  
चेव आसंसत्थे अपीरितं, अभि. प. 1183; मनोधातुत्तयं तत्थ,  
पञ्चारम्मणमीरितं, अभि. अव. 137; कामावचरपाकानं, छत्रं  
रासीनमीरितं, अभि. अव. 347; — ता स्त्री., प्र. वि., ए.  
व. — आनापानसतिच्चेवं, दसधानुस्सतीरिता, ना. रू. प.  
391; स. उ. प. के रूप में, जिने., अनिले., मालुते.,  
हदये., वाते. के अन्त., द्रष्ट.

**ईरियति** इरियति के अन्त. पाठा. के रूप में द्रष्ट.

**ईरियन** नपुं., ईर से व्यु., क्रि. ना., चेष्टा करना, चैतन्य  
या जागरुक होना, हिला डुला दिया जाना — नं प्र. वि.,  
ए. व. — आयूहनं चेतयनं ईरियनं, विसुद्धि. महाटी.  
2.132.

**ईरेति** ईर का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईरयति], 1. हिला  
देता है, फेंक देता है, भेज देता है, प्रवर्तित करता है या  
सक्रिय करता है — ईर खेपणे, ईरेति ईरयति, सद्. 2.560;  
— रयितब्बं नपुं., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. — विधिना  
ईरयितब्बं पवत्तेतब्बन्ति वा वीरियं, उदा. अट्ठ. 188; —  
यितब्बतो सं. कृ., प. वि., ए. व. — वीरभावतो, विधिना  
ईरयितब्बतो च वीरियं, अ. नि. अट्ठ. 1.377; 2. उदघोषित  
करता है, वर्णन करता है, आह्वान करता है, बतलाता है  
— न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — कसिणानि दसीरेन्ति,  
आदिकम्मिकयोगिनो, ना. रू. प. 388.

**ईळ** स्तुति अर्थ वाली एक धातु [ईड स्तुतौ], — ईळ थुतियं,  
ईळति, सद्. 2.460; ईळ थवने, ईळेति ईळयति, सद्. 2.  
589.

**ईस** ऐश्वर्य अथवा स्वामित्व अर्थ वाली एक धातु [ईश  
ऐश्वर्ये], — ईस इस्सरिये, इस्सरियं इस्सरभावो, ईसति,  
वङ्गीसो जनपदेसो मनुजेसो, सद्. 2.451.

**ईस** हिंसा, गति एवं दर्शन अर्थ वाली एक धातु [ईष  
गतिहिंसादर्शनेषु], — ईस हिंसा-गति-दस्सनेसु, ईसति,  
ईसो, सद्. 2.446.

**ईस** पु., [ईश], स्वामी, प्रभु, ईश्वर, प्रमुख, प्रधान, समर्थ —  
सो प्र. वि., ए. व. — तत्र वङ्गीसो ति वाचाय ईसो इस्सरो  
ति वङ्गीसो, सद्. 2.451; वागीसो वादिसूदनोति वादीनं  
पण्डितजनानं ईसो पधानो 'वादीसो'ति वत्तब्बे द-कारस्स

## ईसं

372

## ईसधर

ग-कारं कत्वा एवं वृत्तन्ति दहब्बं अप. अहु. 2.251; सब्बवेदविदू जातो, वागीसो वादिसूदनो, अप. 2.147; सुवण्णपीळकाकिण्णं, मणिदण्डविचित्तकं, को सो परिसमोगक्ख, ईसं खग्गं पमुञ्चति, जा. अहु. 7.64; स. उ. प. के रूप में, अरियदेसी, ओरसधी, जनपदे., नक्खत्ते, मनुजे., लङ्गे., लोके., वङ्गी, वागी. के अन्त. द्रष्ट.

ईसं अ., निपा., क्रि. वि. [ईषत्], 1. आसानी से, बिना किसी प्रयास के, सरलतापूर्वक — ईस-दु-सु-सद्दादीहि सब्बधातूहि खण्ण्यो होति भावकम्मसु ईसं सयन ईसस्सयो, दुद्धसयनं दुस्सयो, ... ईसं कम्मं करीयतीति इस्सक्करं, क. व्या. 562; 2. थोड़ा सा, जरा सा, अपूर्ण रूप में, हल्के-फुल्के ढङ्ग से — ईसं किञ्चि मन् अप्पे, अभि. प. 1148; आतो गमु ईसमधिवासने, आगमेति ..., सद्. 2.558; म्हि ईसंहसने, म्हयते उम्हयते विम्हयते, सद्. 2.454; ईसं कालं वसन्ता ते मिच्छादिट्ठिकापापिका, चू. वं. 96.24.

ईसकं अ., निपा., क्रि. वि. [ईषत्क], जरा सा, थोड़ा सा, कुछ सीमा तक, कुछ मात्रा में, आंशिक रूप में, अपूर्ण रूप में — वङ्गं वा उज्जुक्कं अतिउज्जुक्कं वा ईसकं पोणं करोति, उभोपि न मुच्चन्ति, पारा. अहु. 2.51; यस्स पन किञ्चि किञ्चि अङ्गपच्चङ्गं ईसकं वङ्गं तं पब्बाजेतुं वट्ठति, महाव. अहु. 293; ईसकं पन खज्जत्ता खज्जदेवो ति तं विदुं, म. वं. 23.78; पत्तङ्कतो ईसकं पाचीननिस्सिते उत्तरदिशाभागे ठत्वा, जा. अहु. 1.86; काक-कुलल-सोण-सिङ्गालादीहि मुखतुण्डकेन वा दाठाय वा ईसकं फालितमत्तेनापि, पारा. अहु. 1.302; एत्थ क्वसदेन ईसकं समानसुतिको सत्तमियन्तो को सद्दो दिस्सति, सद्. 1.128; करण्डमुखं ईसकं विवरित्वा पहारं वा दत्वा, पारा. अहु. 1.291; अच्चाधायान्ति अतिआधाय, ईसकं अतिक्रम्म ठपेत्वा, स. नि. अहु. 1.71-72; द्वारबाहं फुसित्वा पिहितमत्तेपि वट्ठति, ईसकं अफुसितेपि वट्ठति, पारा. अहु. 1.225; तानि पन अत्तनो यमनङ्गानं ईसकम्पि न विजहन्ति, सद्. 2.359; अनोलग्याति लोभवसेन ईसकम्पि अलग्गो, चरिया. अहु. 23; अनुग्घातीति न उग्घाति, अत्तनो उपरि निस्सिन्नानं ईसकम्पि खोभं अकरोन्तोति अत्थो, वि. व. अहु. 27; सीलखण्डनभयेन ईसकम्पि चित्तस्स विकाराभावो, धनं लभापेमीति, चरिया. अहु. 119; — फुट्ठत्त नपुं., भाव., केवल व्याकरणों में प्रयुक्त [ईषत्पृष्टत्व], अपूर्ण या अल्प स्पर्श वाला (य, र, ल, व के रूप में चार अन्त.स्थ वर्ण) — त्तं द्वि. वि., ए. व. — सहसत्थविदुनो वग्गानं फुट्ठत्तं य-र-ल वानं ईसकंफुट्ठत्तं वदन्ति, सद्.

3.607; — कग्गपवेल्लित त्रि., किनारों पर कुछ कुछ घुंघराला (केश) — ता पु., प्र. वि., ब. व. — दीपस्सा केसा असिता, ईसकग्गपवेल्लिता, जा. अहु. 6.287; ईसकग्गपवेल्लिताति ईसकं अग्गोसु ओनता, ईसकग्गपवेल्लिता वा नेत्तिंसाय अग्गं विय विनता, जा. अहु. 6.287; — कत्थवाचक त्रि., अपूर्णता या अल्पता के अर्थ को कहने वाला — को पु., प्र. वि., ए. व. — आदिमु सकिंसद्दो ईसकत्थवाचको अप्पमत्तकत्थवाचको ..., सद्. 3.868; — पोण त्रि., कुछ कुछ उन्नत, थोड़ा सा ऊपर की ओर उठा हुआ — णे नपुं., सत्त. वि., ए. व. — संयथापि, आनन्द, ईसकपोणे पदुमपलासे उदकफुसितानि पवत्तन्ति, म. नि. 3.362; ईसकपोणेति रथीसा विय उद्धित्वा ठिते, म. नि. अहु. (उप.प.) 3.264; — कायतगीव त्रि., ब. स., कुछ कुछ लम्बी गर्दन वाला, थोड़ी सी लम्बी गर्दन वाला — वो पु., प्र. वि., ए. व. — ईसकायतगीवोति च, सब्बेव अतिरोचतीति, जा. अहु. 2.125; ईसकायतगीवो रथीसा विय आयतगीवो, जा. अहु. 2.125-126.

ईसति<sup>१</sup> ईस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईष्टे], आधिपत्य, स्वामित्व या प्रभुत्व स्थापित करता है, ईश्वरभाव दर्शाता है, अभिभूत या वशीभूत करता है, दूसरे का अतिक्रमण कर लेता है — ईस इस्सरिये, इस्सरिये इस्सरभावो, ईसति वङ्गीसो जनपदेसो मनुजेसो, सद्. 2.451; सब्बसत्ते वा गुणेहि ईसति अभिभवतीति परमिस्सरो भगवा नाथो ति वुच्चतीति, सद्. 2.365; तत्र सुरो ति सुरति ईसति देविस्सरियं पापुणाति विरोचति चाति सुरो, सद्. 2.429.

ईसति<sup>२</sup> ईस का वर्त., प्र. पु., ए. व., हिंसा करता है, गति करता है — ईस हिंसा-गति-दस्सनेसु, ईसति, ईसो, सद्. 2.446.

ईसत्त नपुं., भाव. [ईशत्त्व], आधिपत्य, स्वामित्व — त्तं प्र. वि., ए. व. — ईसत्तं नाम सयंवसिता, वजिर., टी. 38.

ईसधर पु., व्य. सं. [बौ. सं., ईसाधार], सिनेरु (सुमेरु) पर्वत के चारों ओर विद्यमान सात पर्वतों में से एक — रो प्र. वि., ए. व. — युगन्धरो ईसधरो करवीको सुदस्सनो, नेमिन्धरो विनतको अस्सकण्णो कुलाचला, अभि. प. 26-27; सुदुस्सनो करवीको, ईसधरो युगन्धरो, नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरी ब्रह्म, जा. अहु. 6.150; — तो प. वि., ए. व. — ईसधरस्स अनन्तरे युगन्धरो नाम, सो ईसधरतो उच्चतरो, जा. अहु. 6.150.

## ईससकखरपासाण

373

## ईसिका

ईससकखरपासाण त्रि., ब. स., थोड़े से कंकड़-पत्थरों से युक्त — णा पु., प्र. वि., ब. व. — ईससकखरपासाणा अद्दु अद्दुलिका सिला, एतानि भूमिकम्मानि कारापेतवान खत्तियो, दी. वं. 19.3.

ईसा स्त्री., [ईषा], रथ-दण्ड, हल का दण्ड, हलश, हरीस, गाड़ी की फड़ — सा प्र. वि., ए. व. — ईसा नङ्गलदण्डके अभि. प. 449; हिरी ईसाति अत्तना सद्धिं अधिविद्धेन बहिद्धासमुद्धानेन ओत्तप्पेन सद्धिं अज्झत्तसमुद्धाना हिरी यस्स मगरथस्स ईसा, स. नि. अद्द. 3.158; ईसाति युगन्धारिका दारुयुगळा, स. नि. टी. 2.106; — सं द्वि. वि., ए. व. — ईसञ्च पटिच्च अक्खञ्च पटिच्च ..., मि. प. 24; — य तृ. वि., ए. व. — अथ खो अम्बपाली गणिका दहरानं दहरानं लिच्छवीनं ईसाय ईसं युगेन युगं चक्केन चक्कं अक्खेन अक्खं पटिवट्ठेसि, महाव. 307; स. प. के अन्तः, — अक्खचक्कईसादिअवयवधातूहि ..., वि. व. अद्द. 138; स. उ. प. के रूप में, — हिरिईसे द्वि. वि., ब. व., लज्जारूपी हरीसों को — तथा मया हिरिईसे पज्जायुगनङ्गले मनोयोत्तेन एकाबद्धे कते वीरियबलीबदे योजेत्वा, स. नि. अद्द. 1.221; स. उ. प. के रूप में, जम्बोनदी, नङ्गली, रथी, हिरि. के अन्तः द्रष्टः; — दन्त त्रि., ब. स. [ईषादन्त], गाड़ी की फड़ जैसे दातों वाला — न्तो पु., प्र. वि., ए. व. — हत्थिराजा तदा आसिं, ईसादन्तो उरुळ्हवा, अप. 2.22; वरनागो मया दिन्नो, ईसादन्तो उरुळ्हवा, धेरगा. अद्द. 2.246; सेय्यथापि, राहुल, रज्जो नागो ईसादन्तो उरुळ्हवा अभिजातो सङ्गामावचरो ... कम्मं करोति, म. नि. 2.85; — न्तं पु., द्वि. वि., ए. व. — रतनं देव याचाम्, सिवीनं रडुवङ्गन, ददाहि पवरं नागं, ईसादन्तं उरुळ्हवन्ति, जा. अद्द. 7.236; — न्ता पु., प्र. वि., ब. व. — सतं हेमवता नागा, ईसादन्ता उरुळ्हवा, वि. व. अद्द. 82; ईसादन्ताति रथीसासदिसदन्ता, थोकंयेव अवनतदन्ताति अत्थो, वि. व. अद्द. 83; ईसादन्ताति रथीसासदिसदन्ता, अप. अद्द. 1.322; ईसादन्ताति रथीसाय समानदन्ता, जा. अद्द. 5.38; — रस ष. वि., ए. व. — एतं नागस्स नागेन ईसादन्तस्स हत्थिनो, महाव. 475; ईसादन्तस्साति रथईसासदिसदन्तस्स, महाव. अद्द. 409; — नेमिरथ पु., तत्पु. स., हलश एवं पहिए के घेरे से युक्त रथ — रस ष. वि., ए. व. — अरानं चक्कनाभीनं ईसानेमिरथस्स च, जा. अद्द. 4.187; — पटिबद्धयुगनङ्गल नपुं., हलश (हरीस) के साथ बंधा हुआ जुआ एवं हल — लं प्र. वि., ए. व. — यथा च ईसापटिबद्धयुगनङ्गलं किच्चकरं होति

अचलं असिथिलं, एवं हिरिपटिबद्धा ..., स. नि. अद्द. 1.222; — बद्ध त्रि., तत्पु. स., हलश के साथ जुड़ा हुआ या बंधा हुआ — द्दं नपुं., प्र. वि., ए. व. — यथा युगं ईसाय उपनिस्सयं होति, पुरतो च ईसाबद्धं होति ... हिरिप्पमुखानं धम्मानं उपनिस्सया होति, स. नि. अद्द. 1.222; — द्दा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — ईसाबद्धा होतीति हिरिसङ्घातईसाय बद्धा होति, पज्जाय कदाचि अप्पयोगतो मनोसीसेन समाधि इध वुत्तोति आह ..., स. नि. टी. 1.237; — द्दो पु., प्र. वि., ए. व. — हिरिविषययोगेन अनुप्पत्तितो पन ईसाबद्धो होति, स. नि. अद्द. 1.222; — मुख नपुं., तत्पु. स., रथदण्ड या हलश का ऊपर वाला अग्रभाग — खं प्र. वि., ए. व. — यथा कुलावके ईसामुखं न सञ्चुण्णोति, एवं इमिना ईसामुखेन ते परिवज्जय, स. नि. अद्द. 1.300; — खेन तृ. वि., ए. व. — कुलावका मातलि सिम्बलिसिं, ईसामुखेन परिवज्जयस्सु, जा. अद्द. 1.201; ईसामुखेन परिवज्जयस्सूति एते एतस्स रथस्स ईसामुखेन यथा न हज्जन्ति, एवं ते परिवज्जयस्सु जा. अद्द. 1.201; ईसामुखेनाति रथस्स ईसामुखेन, स. नि. अद्द. 1.300; — मूल नपुं., तत्पु. स., रथदण्ड या गाड़ी की फड़ का आधारभूत (निचला) भाग — लं प्र. वि., ए. व. — उरस्साति उरो अस्स, रथस्स उरोति च ईसामूल वदति, वि. व. अद्द. 226; — युग्मबलीवद पु., द्व. स., हरीस, जुआ एवं बैल — द्वे द्वि. वि., ब. व. — यथा ब्राह्मणस्स योतं ईसायुग्मबलीवदे एकाबद्धे कत्वा सककिच्चे पटिपादेति, स. नि. अद्द. 1.222.

ईसान पु., [ईशान], 1. दी. नि. के तेविज्जसुत्त में इन्द्र, सोम, वरुण एवं पजापति के साथ उल्लिखित एक वैदिक देवता का नाम — नो प्र. वि., ए. व. — तथा वरुणो ईसानो च, वरुणो पन ततियं आसनं लभति, ईसानो चतुत्थं, स. नि. अद्द. 1.298; — नं द्वि. वि., ए. व. — ये धम्मा अब्राह्मणकारका ते धम्मे समादाय वत्तमाना एवमाहंसु — इन्दमक्कयाम ... ईसानमक्कयाम ... ति, दी. नि. 1.222; सो तं परमत्थब्राह्मणं अहयेय्य, ... ईसानमक्कयाम, याममक्कयाभाति इदं पन अहानं निरत्थकं, स. नि. अद्द. 1.207; 2. यदा कदा देवराज (इन्द्र) के आशय में भी प्रयुक्त, — रस ष. वि., ए. व. — अथ ईसानस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ, ईसानस्स हि वो देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं यं भविस्सति ..., स. नि. 1(1).253.

ईसिका स्त्री., [ईशिका/ईषिका], सरकण्डा, नरकुल, नरकट — का प्र. वि., ए. व. — ईसिकाति कळीरो, दी. नि. अभि.



## ईसिता / ईसत

374

ईहित

टी. 1.347; "पवाहेय्या"ति वचनतो अन्तो उिता एव ईसिका अधिपेताति दस्सेति "अन्तो ईसिका होती"ति इमिना, दी. नि. अभि. टी. 2.129; "तस्स एवमस्त अयं मुज्जो अयं ईसिका, अज्जो मुज्जो अज्जा ईसिका, मुज्जम्हात्वेव ईसिका पवाह्वा"ति आदि, विसुद्धि. 2.34; एत्थ च यथा ईसिकादयो मुज्जादीहि सदिसा होन्ति, एवं मनोमयरूपं इद्विमतासदिसमेव होतीति, तदे.; — कं द्वि. वि., ए. व. — "सेय्यथापि, महाराज, पुरिसो मुज्जम्हा ईसिकं पवाहेय्य, दी. नि. 1.68. ईसिता / ईसत स्त्री. / नपुं. भाव. [ईशिता / ईशित्व]. योगी की आठ प्रकार की दिव्य शक्तियों में से एक, ऐश्वर्य, प्राकृतिक शक्तियों को अपने वश में रखने की अलौकिक शक्ति, पूर्ण स्वामित्व या आधिपत्य, अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की अलौकिक शक्तियों में अन्यतम — ता प्र. वि., ए. व. — सयंवसिता इस्सरभावो ईसिता, विसुद्धि. महाटी. 1.241; वि. वि. टी. 1.53; अणिमालघिमादिकन्ति आदि—सद्देन महिमा पति पाकम्मं ईसिता वसिता यत्थकामावसायिताति इमे छपि सन्नहिता, विसुद्धि. महाटी. 1.241; — तं नपुं. प्र. वि., ए. व. — ईसतं नाम सयंवसिता, वजिर. टी. 38.

ईह चेष्टा अर्थ वाली एक धातु [ईह चेष्टायाम्], — ईह चेतायं, ईहति, ईहा, ईहा वुच्चति विरियं, सद्. 2.457.

ईहति / इहति ईह का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईहते], कोशिश करता है, चेष्टा करता है, प्रयास करता है, स्वयं को सक्रिय करता है, जीवन धारण करता है, इच्छा करता है, जाता है, गतिशील होता है, वीर्यवान् होकर विहार करता है — आकासमिह समीहतीति आकासे अन्तलिक्खे सम्मा ईहति, आरुह्णानं खोभं अकरोन्तो चरति गच्छतीति अत्थो, वि. व. अहु. 27; वेदेन ईहति घटति वायमतीति वेदेही, दी. नि. अहु. 1.117; दुक्खा ईहिति एत्थ न सक्का कोचि पयोगो सुखेन कातुन्ति दुहितिका, स. नि. अहु. 3.143; दुहितिकाति एत्थ इहितीति इरियना, दुक्खा इहिति एत्थाति, दुहितिको, स. नि. अहु. 3.103; — हाभि उ. पु., ए. व. — वेहासगमनयोगो कातुं ईहामीति अत्थो, "पतीहामी"तिपि पठन्ति, तस्सत्थो — पादे पक्खे च पति विसु ईहामि, गमनत्थं वायमामि, चरिया. अहु. 213; अथ वा न ईहामि न समीहामि न उस्सहामि न वायमामि ... न वीरियं करोमि न छन्दं जनेमि न सज्जनेमि ..., चूळनि. 84; — न्ति वर्त., प्र. पु., ब. व. — न च तानि विज्जाणुप्पादनत्थं द्वारभावेन वत्थुभावेन आरम्भणभावेन वा ईहन्ति, न ब्यापारमापज्जन्ति, विभ. अहु. 45; — मान त्रि., वर्त., कृ., आत्मने., कोशिश कर रहा — नानं पु., ष. वि., ब.

व. — पच्चयपच्चयुप्पन्ने, यथावत्थुववत्थिते, पहातुमीहमानानं, निव्यानपटिपत्ति, ना. रु. परि. 1533; निषे., — अनीहमान त्रि., प्रयास नहीं कर रहा — स्स पु., च. वि., ए. व. — तत्था धारा नानीहमानस्साति निच्चकालं कसिगोरक्खादिकरणेन अनीहमानस्स अवायमन्तस्स धारा नाम नत्थि, जा. अहु. 2.195; — थ अनु., म. पु., ब. व. — "पण्णसालं अमापेत्वा, उज्जाचरियाय ईहथा"ति, जा. अहु. 7.279; उज्जाचरियाय ईहथाति अथ तुम्हे, देव, उज्जाचरियाय यापेत्ता अप्पमत्ता ईहथ, आरद्धवीरिया हुत्वा विहरेय्याथाति अत्थी, तदे..

ईहन / ईहा नपुं. / स्त्री., ईह से व्यु., क्रि. ना. [ईहा], प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा, सक्रियता, अध्यवसाय, कार्य, कृत्य, वीर्य, जीवित, जीवनवृत्ति — हा स्त्री., प्र. वि., ए. व. — नासा जुण्हा गुहा ईहा लसिका परिसा दुसा, सद्. 1.198; वायम ईहायं, वायमति वायामो, सद्. 2.413; ईहा चेतायं, ईहति, ईहा, ईहा वुच्चति विरियं, सद्. 2.457; दुज्जीविका, ईहितं ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि, पारा. अहु. 1.132; ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता—चित्तइरिया, चित्तईहा, तदे., स. प. के अन्त., — अनत्तासस्सतन्ता च, ईहाभोगविवज्जिता, ना. रु. परि. 1564; — भाव पु., जीवित रहने की स्थिति, चेष्टायुक्त होना, प्रयास करते रहने की दशा — तो प. वि., ए. व. — मननलक्खणे सम्ययुत्तेसु आधिपच्चकरणतो पुब्बङ्गमो ईहाभावतो निस्सत्तनिज्जीवद्देन धम्मा, नेत्ति. अहु. 303; — युत्त त्रि., प्रयास या चेष्टा से युक्त, सक्रिय — तो पु., प्र. वि., ए. व. — उस्सक्को—ईहायुत्तो, मण्डिते उस्सक्के च ततिया सत्तमी च होति, बाला. 214(पु.); बौद्धभारती. ईहित त्रि., ईह का भू. क. कृ., चेष्टा, जीवनवृत्ति, कार्य, कृत्य, चित्त की क्रियाशीलता, प्रयत्न, प्रयास — तं नपुं., प्र. वि., ए. व. — द्वीहितिकाति द्विधा पवत्तईहितिका, ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता चित्त—इरिया, चित्तईहा, पारा. अहु. 1.132; द्वीहितिकाति दुज्जीविका, ईहितं ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि, तस्मा दुक्खेन ईहितं एत्थ पवत्ततीति द्वीहितिकाति अयमेत्थ पदत्थो, पारा. अहु. 1.132; द्विधा पवत्तं ईहितं एत्थाति द्वीहितिकाति मज्झपदलोपीबाहिरत्थसमासोयमीति दस्सेन्तो आह "द्विधा पवत्तईहितिका"ति, ईहनं ईहितन्ति ईहितसद्दोयं भावसाधनोति आह "ईहितं ना इरिया"ति, दुक्खं वा ईहितं एत्थ न सक्का कोचि पयोगो सुखेन कातुन्ति दुहितिका, दुक्करजीवितपयोगाति अत्थो, सारत्थ. टी. 1.372.

